

H
781.954C
RAG-F4
V.1

सङ्गीत

रागकल्पद्रुमः

भारतीय प्राचीन सङ्गीत-शास्त्रालोचना

और

संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, कर्णाटी, तेलङ्गी, तामिल, बंगला, उड़िया,
अरबी, फ़ारसी, उर्दू, पेगुयान, अंगरेज़ी और राजपूतानेकी
नाना प्रादेशिक भाषाओंमें प्रचलित नाना
सुरका प्राचीन गान-संग्रह

स्वर्गीय कृष्णानन्द रागसागर-विरचित

——0——

सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी लालगोलेके

राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरके

सम्पूर्ण व्यय और उत्साहपर

हिन्दी प्रभृति विविध भाषाओंमें पारदर्शी सङ्गीतज्ञोंके साहाय्यसे

विश्वकोष-सम्पादक

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्यामहार्णव

सिद्धान्तवारिधि-सम्पादित

——0——

२४३।१ अपर-सरकुलार रोड, वङ्गीय साहित्य-परिषत्-मन्दिरसे
श्रीरामकमल सिंह द्वारा प्रकाशित
कलकत्ता
संवत् १९७१

H
781.954C
RAG-F4
V.1

সাহিত্য-পরিষদ্-গ্রন্থাবলী সংখ্যা—৪৫

সঙ্গীত

রাগকল্পদ্রুম

HARVEST STAR
S. No. 5781

ভারতীয় প্রাচীন সঙ্গীত-শাস্ত্রালোচনা

ও

সংস্কৃত, হিন্দী, গুজরাতী, মরাঠী, কর্ণাটী, তৈলঙ্গী, তামিল, বাঙ্গালা, উড়িয়া, আরব্য, পারস্য, পেগুয়ান, ইংরাজী ও রাজপুতনার নানা-প্রাদেশিক ভাষায় প্রচলিত নানা সুরের প্রাচীন গান-সংগ্রহ

৺কৃষ্ণানন্দ ব্যাসদেব রাগসাগর বিরচিত

সুপ্রসিদ্ধ সাহিত্যানুরাগী লালগোলার

রাজা রাও শ্রীযোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুরের

সম্পূর্ণ ব্যয়ে ও উৎসাহে

হিন্দী প্রভৃতি বিবিধ ভাষায় পারদর্শী

সঙ্গীতজ্ঞগণের সাহায্যে

বিশ্বকোষ-সম্পাদক

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বসু প্রাচ্যবিদ্যামহার্ণব সিদ্ধান্তবারিধি

সম্পাদিত

কলিকাতা

২৪৩।১ অপার সার্কুলার রোড, বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ-মন্দির হইতে

শ্রীরামকমল সিংহ কর্ত্তৃক প্রকাশিত

সংবৎ ১৯৭১

Printed by

R. C. Mitra, at the Visvakosha Press,
9, Kantapukur Bye Lane, Baghbazar,
Calcutta.

SANGITA

RAGA-KALPADRUMA

Encyclopaedia of Indian Music

COMPRISING

Popular Sanskrit, Hindi, Gujrati, Karnatic, Telegu, Tamil, Bengali, Uriya, Arabic, Persian, Peguan and various songs of the different dialect of Rajputana as well as some ancient English songs.

COMPILED BY

LATE KRISHNANANDA VYASADEVA RAGASAGARA

—oo—

Vol. I

(REVISED EDITION)

Edited by

NAGENDRA NATH VASU, **Prachyavidyamaharnava, Siddhantavaridhi**

Under the distinguished patronage of

RAJA RAO JOGINDRANARAYAN RAY BAHADUR

OF

L A L G O L A.

—o—

Published

From the Bangiya Sahitya Parishad,

By Rama Kamal Sinha

243|1 Upper Circular Road,

CALCUTTA.

1914



राजा राज्ञो श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बाहादुर
लालगोला

বিজ্ঞপ্তি

উদয়পুরের মহারাণার অন্যতম সঙ্গীতাচার্য্য ৺কৃষ্ণানন্দ ব্যাসদেব মহাশয় এই সুবৃহৎ সঙ্গীতবিষয়ক গ্রন্থ সঙ্কলন করেন। যে সময়ে কলিকাতায় সর্ রাজা রাধাকান্ত দেব বাহাদুর **শব্দকল্পদ্রুম** সমাধা করিতেছিলেন, সেই সময়ে শব্দকল্পদ্রুম দেখিয়া ব্যাসদেবজীর সঙ্গীতবিষয়ক **রাগকল্পদ্রুম** প্রকাশের ইচ্ছা হয়। তজ্জন্য তিনি ভারতের নানাস্থানে ভ্রমণ করেন এবং দেশীয় রাজন্যবর্গের সভায় উপস্থিত হইয়া বহুতর সঙ্গীতশাস্ত্র এবং তৎকালে ভারতের নানা ভাষায় ও প্রধান প্রধান গায়কদিগের নিকট প্রচলিত নানা সুরের প্রাচীন ও অর্বাচীন প্রসিদ্ধ গানগুলি সংগ্রহ করেন। তাঁহার রাগরাগিণী সম্বন্ধে অসাধারণ পারদর্শিতা লক্ষ্য করিয়া মেবাড়ের মহারাণার সভায় তাঁহাকে **"রাগসাগর"** উপাধি দেওয়া হয়। শব্দকল্পদ্রুমের ন্যায় তাঁহার **রাগকল্পদ্রুম** খানিও প্রথমে সাতখণ্ডে প্রকাশ করিবার সঙ্কল্প ছিল। কিন্তু তিনি নানা কারণে অবশেষে তিনখণ্ডে প্রকাশ করিতে বাধ্য হন। ১৯০০ সংবতে (১৮৪৩ খৃষ্টাব্দে) তাঁহার এই বৃহৎ গ্রন্থ সম্পূর্ণ হয়। তিনি অল্প সংখ্যক পুস্তকই ছাপাইয়া ছিলেন এবং দেশের গণ্যমান্য ধনী ও রাজন্যবর্গ সেই সেই খণ্ড গ্রহণ করেন। তাঁহার গ্রন্থের শেষাংশে সেই সকল মহাত্মার নাম প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন।

সঙ্গীতবিষয়ক এত বড় মুদ্রিত গ্রন্থ ভারতে কেন জগতের অপর কোন ভাষায় আছে কি না জানিনা। বহু দিন হইতে অনেকেই এই অপূর্ব্ব সঙ্গীত-গ্রন্থের অভাব অনুভব করিতেছিলেন। সঙ্গীতামোদিগণের সেই অভাব দূর করিবার জন্য স্বনামধন্য লালগোলার রাজা রাও শ্রীযোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাদুর এই মহাগ্রন্থ প্রকাশের আবশ্যকতা অনুভব করেন এবং তাঁহারই যত্নে ও সম্পূর্ণ অর্থানুকূল্যে এই বিরাট গ্রন্থ মুদ্রিত হইতেছে। তাঁহার অর্থসাহায্য ব্যতীত এই বিশাল গ্রন্থের বিপুল ব্যয় নির্ব্বাহ হইত না, তজ্জন্য তিনি ভারতের সঙ্গীতামোদিগণের চিরকৃতজ্ঞতা-ভাজন হইবেন।

এই খণ্ডে প্রথমাংশ প্রকাশিত হইল। অতঃপর মূল গ্রন্থের মুদ্রণ শেষ লইলে সংগ্রহকার রাগসাগরের জীবনী, তিনি যে যে গায়কের গান সংগ্রহ করিয়াছেন তাঁহাদের সংক্ষিপ্ত পরিচয় এবং এই গ্রন্থে যে সকল গান প্রকাশিত হইয়াছে সেই সকল গানের অকারাদি বর্ণানুক্রম সূচী এবং মুখবন্ধ স্বরূপ ভারতীয় সঙ্গীতশাস্ত্রের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস প্রদত্ত হইবে।

বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের পরম হিতৈষী মিত্র লালগোলার রাজা বাহাদুরই তাঁহার পুস্তকাগার হইতে এই রাগকল্পদ্রুমের এক খণ্ড বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ্‌কে উপহার দান করেন এবং সেই গ্রন্থের পুনর্মুদ্রণের ব্যবস্থা করিয়া দেন। তাঁহারই ইচ্ছাক্রমে এবং তাঁহারই সম্পূর্ণ ব্যয়ে বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ এই গ্রন্থ প্রকাশ করিলেন। বাঙ্গালা ভাষা ও সাহিত্যের অনুশীলনই বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষদের মুখ্য উদ্দেশ্য হইলেও এই গ্রন্থের গৌরব বিবেচনায় ইহার প্রকাশ সাহিত্য-পরিষদের অধিকার-বহির্ভূত হয় নাই। সঙ্গীত বিদ্যায় বাঙ্গালা দেশে ভাষা ভেদে কোন পক্ষপাত নাই,—ভারতবর্ষের অন্যান্য প্রাদেশিক ভাষায় রচিত গান বাঙ্গালা গানের তুল্য আদরই পাইয়া থাকে। সঙ্গীতবিদ্যায় হিন্দী-গানের সমাদর এ দেশে বাঙ্গালা গানেরও উচ্চে। লুপ্তপ্রায় বিস্তর বাঙ্গালা গানও এই পুস্তকে সঙ্কলিত হইয়াছে। এই গ্রন্থপ্রকাশে সেই সকল বাঙ্গালা গানও ধ্বংসমুখ হইতে রক্ষা পাইবে। ভারতবর্ষের সর্ব্বত্রই এই গ্রন্থের প্রচলন আবশ্যক, এই বিশেষ কারণে প্রচলিত প্রথা ত্যাগ করিয়া এই গ্রন্থ দেবনাগর অক্ষরেই মুদ্রিত হইল।

সম্পাদকের কর্ত্তব্য আদর্শ পুস্তকের পাঠশুদ্ধির দিকে লক্ষ্য রাখা। আদর্শ গ্রন্থ ১৯০০ সংবতে প্রকাশিত হয়, তৎকালে এদেশে নাগরী মুদ্রণের সুব্যবস্থা ছিল না, এ কারণ মূল গ্রন্থ পাদচ্ছেদবিরহিত হস্ত-লিখিত প্রাচীন পুথির

ভাবেই মুদ্রিত হইয়াছিল, তাহা আবার উপযুক্ত সংশোধনের অভাবে মুদ্রাকরের দোষে এতই ভ্রমপূর্ণ হইয়া মুদ্রিত হইয়াছে যে, অনেক স্থলে অর্থগ্রহ হওয়াই দুরূহ। বিশেষতঃ আদর্শ পুস্তকে নানা প্রাচীন সঙ্গীতশাস্ত্র হইতে যে সকল সংস্কৃত শ্লোক উদ্ধৃত হইয়াছে, বলিতে কি তাহার একটী শ্লোকও ভ্রমশূন্য নহে, এ কারণ প্রত্যেক শ্লোক ঠিক করিবার জন্য নানা স্থান হইতে মুদ্রিত ও অমুদ্রিত সেই সেই সঙ্গীতশাস্ত্র সংগ্রহ করিয়া বহু আয়াসে প্রত্যেক শ্লোকের পাঠশুদ্ধি ও প্রাপ্তিস্থান নির্দ্দেশ করিতে হইয়াছে। এতদ্ভিন্ন নানা পদের যথাসাধ্য প্রকৃত পাঠ ঠিক করিতে তৎতৎ ভাষায় অভিজ্ঞ নানা মহাজনের আশ্রয় লইতে হইয়াছে।

বঙ্গীয় সাহিত্য-পরিষৎ
২৪৩।১ অপার সার্কুলর রোড, কলিকাতা
ভাদ্র-পূর্ণিমা

শ্রীনগেন্দ্রনাথ বসু

विज्ञप्ति

उदयपुर-महाराणाके अन्यतम सङ्गीताचार्य ৺कृष्णानन्द व्यासदेव महाशयने यह सुबृहत् सङ्गीतविषयक ग्रन्थ सङ्कलन किया था। जिस समय कलकत्तेमें सर राजा राधाकान्त देव बहादुर शब्दकल्पद्रुम समाप्त कर रहे थे, उसी समय शब्दकल्पद्रुम देखकर व्यासदेवजीने अपने सङ्गीतविषयक रागकल्पद्रुमको प्रकाश करना चाहा। इसके लिये उन्होंने भारतके नाना स्थानोंमें भ्रमणकर और देशीय राजाओंकी सभामें उपस्थित हो, बहुतसा सङ्गीतशास्त्र, सामयिक भारतकी नाना भाषाओं और प्रधान-प्रधान गायकोंके निकट प्रचलित तरह तरहका पुराना और नया गाना इकट्ठा किया। राग-रागिणियोंके सम्बन्धमें उनकी असाधारण पारदर्शिता देखकर मेवाड़के महाराणाकी सभामें उन्हें 'रागसागर'की उपाधि दी गई। शब्दकल्पद्रुमकी तरह पहले रागकल्पद्रुमको भी सात खण्डोंमें वह प्रकाश करना चाहते थे। किन्तु अन्तमें कई कारणोंसे वह इसे तीन ही खण्डोंमें प्रकाश करनेके लिये बाध्य हुए। विक्रमीय १९०० संवत्में (सन् १८४३ई०) उनका यह बृहत् ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ। उन्होंने पुस्तकें थोड़ी ही छपाईं, और देशके गण्यमान्य धनियों और राजाओंने उन सब खण्डोंको ग्रहण किया। अपने ग्रन्थके अन्तमें वह लेनेवाले सब बड़े लोगोंके नाम प्रकाश कर गये हैं।

नहीं जानते, कि इतना बड़ा सङ्गीतविषयक मुद्रित ग्रन्थ भारतको ही क्या, जगत्को किसी भाषामें है या नहीं। बहुत दिनोंसे कितने ही लोग इस अपूर्व सङ्गीतग्रन्थके अभावका अनुभव करते थे। सङ्गीतामोदियोंका यही अभाव मिटानेके लिये स्वनामधन्य मुर्शिदाबाद—लालगोलेके राजा राव श्रीयोगीन्द्रनारायण राय बहादुरने इस बृहत् ग्रन्थके प्रकाश करनेकी आवश्यकता देखी; उन्हींके यत्न और सम्पूर्ण अर्थानुकूल्यसे यह विराट् ग्रन्थ छप रहा है। सिवा उनके अर्थसाहाय्य इस विशाल ग्रन्थके विपुल व्ययका निर्वाह कभी न होता, इस लिये राजाबहादुर भारतीय सङ्गीतामोदियोंके चिरकृतज्ञताभाजन अवश्य ही होंगे।

इस खण्डमें ग्रन्थका प्रथमांश प्रकाशित हुआ है। इसके बाद मूलग्रन्थ छप जानेपर, संग्रहकार-रागसागरकी जीवनी, उन्होंने जिन-जिन गायकोंके गानको संग्रह किया, उनका परिचय, इस ग्रन्थमें जो सकल गान प्रकाशित हुए हैं, उन सबकी अकारादि वर्णानुक्रमिक सूची और मुखबन्धकी तरह भारतीय सङ्गीतशास्त्रका संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया जायेगा।

वङ्गीय साहित्य-परिषत्के परमहितैषी मित्र लालगोलेके राजाबहादुरने ही अपने पुस्तकागारसे इस रागकल्पद्रुमका एक खण्ड वङ्गीय साहित्य-परिषत्को उपहार-स्वरूप दान और इसके फिरसे छपानेका प्रबन्ध किया। उन्हींके इच्छाक्रम और उन्हींके सम्पूर्ण व्ययसे, वङ्गीय साहित्य-परिषत्ने इस ग्रन्थको छपाया। बंगला भाषा और साहित्यका अनुशीलन ही वङ्गीय साहित्य-परिषत्का मुख्य उद्देश्य होते हुए भी इस ग्रन्थको गौरवविवेचनासे इसका प्रकाश साहित्य-परिषत्के अधिकारसे बहिर्भूत न हुआ। सङ्गीत-विद्यापर बङ्गालमें भाषाभेदसे कोई पक्षपात नहीं,—भारतवर्षकी अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओंमें रचित गान, बंगला गानके समान आदर पाया करते हैं। सङ्गीतविद्यामें हिन्दी गानका समादर इस देशमें बंगला गानसे भी बढ़ा है।

लुप्तप्राय अनेक बंगला गान भी इस ग्रन्थमें सङ्कलित हुए हैं। इस ग्रन्थके छपनेसे वह सकल बंगला गान भी ध्वंसमुखसे रक्षा पायेंगे। इसी विशेष कारणसे प्रचलित प्रथा छोड़, यह ग्रन्थ देवनागर अक्षरोंमें ही छापा गया, क्योंकि भारतवर्षमें सभी जगह इस ग्रन्थका प्रचलन आवश्यक है।

सम्पादकका कर्तव्य आदर्शग्रन्थकी पाठशुद्धिपर लक्ष्य रखना है। आदर्शग्रन्थ विक्रमीय १८०० संवत्में प्रकाशित हुआ। पहले इस देशमें नागरीमुद्रणकी सुव्यवस्था न थी। इसीसे मूलग्रन्थ पादच्छेद-विरहित हाथकी लिखी पुरानी पोथी ही की तरह मुद्रित हुआ था। इसी कारण उपयुक्त संशोधनके अभाव और मुद्राकरके दोषसे इतना भ्रमपूर्ण हो आदर्श ग्रन्थ छपा, कि कितनी ही जगह उसका अर्थ हो समझ पड़ना मुश्किल हो जाता है। विशेषतः आदर्श ग्रन्थमें नाना प्राचीन सङ्गीतशास्त्रोंसे जो सकल संस्कृत श्लोक उद्धृत हुए हैं, उनमें यह कहनेका आवश्यकता नहीं, कि एक भी श्लोक भ्रमशून्य नहीं देख पड़ता। इस लिये प्रत्येक श्लोक सुधारनेके लिये नाना स्थानोंसे मुद्रित और अमुद्रित, उन्हीं-उन्हीं सङ्गीतशास्त्रोंको संग्रह कर, बड़े यत्नसे प्रत्येक श्लोककी पाठशुद्धि और प्राप्तिस्थानको निर्देश किया गया है, सिवा इसके, नाना पदोंका यथासाध्य प्रकृत पाठ ठीक करनेमें उन-उन भाषाओंके अभिज्ञ नाना विद्वानोंका आश्रय लेना पड़ा है।

वङ्गीय साहित्य-परिषत्,
२४३।१ अपार सार्कूलार रोड, कलकत्ता।

श्रीनगेन्द्रनाथ वसु
भाद्र-पूर्णिमा।

रागकल्पद्रुमः

प्रथमखण्ड—सूचीपत्र

विषय	पृष्ठा
रागसागरकृत मङ्गलाचरण	१
सङ्गीतदर्पणोक्त मङ्गलाचरण	१
नारदसंहितोक्त भगवद्वाक्य	१

स्वराध्याय

विषय	पृष्ठा
सङ्गीतदर्पणोक्त नादोत्पत्ति	१
सङ्गीतसंहितोक्त गानप्रशंसा	१
सङ्गीतभाष्योद्धृत नादस्तुति	२
सङ्गीतरत्नाकर तथा सङ्गीत-महोदधिधृत सङ्गीतानभिज्ञ-निन्दा	२
नाना शास्त्रानुसार गान्धर्ववेद तथा नादप्रशंसा	२-३
सङ्गीतदर्पणोक्त रागोत्पादन-कारण	३
सङ्गीतदर्पणोक्त शारीरविवेक	४
सङ्गीतरत्नाकरोक्त ब्रह्मग्रन्थिलक्षण	४
सङ्गीतदर्पणोक्त श्रुतिप्रसङ्ग	४
सङ्गीतरत्नाकरादि नानाग्रन्थ-मतानुसार—मूर्च्छना	४-७
स्वरालाप, पलटाप्रस्तार	७
स्वरप्रस्तार	७
तानप्रस्तार	८

रागविवेकाध्याय

विषय	पृष्ठा
हनूमन्मतानुसार—रागरागिणी	१०
नाना सङ्गीतशास्त्रमतानुसार भैरवराग-स्त्री	१०
मालकोष-स्त्री	,,
हिन्दोल-स्त्री	११
दीपकराग-स्त्री	,,
श्रीराग-स्त्री	,,
मेघराग-स्त्री	,,
वसन्तराग-भार्य्या	,,
नटनारायण-भार्य्या	,,
भैरवरागपुत्र	१२
मालकोषरागपुत्र	,,
हिन्दोलरागपुत्र	,,
दीपकरागपुत्र	,,
श्रीरागपुत्र	,,
मल्लाररागपुत्र	,,
वसन्तरागपुत्र	,,
नटनारायणपुत्र	,,
प्रदीपपुत्र	,,
देवगान्धारपुत्र	,,
कल्याणपुत्र	,,

विषय	पृष्ठा
षड्रागस्त्री	१३
रामरागस्त्री	,,
मधुररागस्त्री	,,
गान्धाररागस्त्री	,,
हर्षरागस्त्री	,,
बङ्गालरागस्त्री	,,
देशाख्यस्त्री	,,
विभासस्त्री	,,
माधवस्त्री	,,
शोभनरागस्त्री	,,
सिन्धुरागस्त्री	,,
मारुरागस्त्री	,,
कुन्तलरागस्त्री	,,
कलिङ्गरागस्त्री	,,
सोमरागस्त्री	१४
हिन्दोलपुत्रस्त्री	,,
आभोररागस्त्री	,,
शुभ्ररागस्त्री	,,
धवलरागस्त्री	,,
चन्द्रकाशरागस्त्री	,,
विमोहनरागस्त्री	,,
मालवरागस्त्री	,,
पूरवास्त्री	,,

विषय	पृष्ठा
श्यामरागस्त्री	१४
हेमरागस्त्री	,,
क्षेमरागस्त्री	,,
हम्मीररागस्त्री	,,
भूपालरागस्त्री	,,
जैतरागस्त्री	,,
दीपकरागपुत्रस्त्री	,,
सुहास्त्री	,,
नायकस्त्री	,,
अड़ानास्त्री -	,,
शङ्करास्त्री	,,
कान्हड़ाप्रिया	१५
विहागड़ाप्रिया	,,
नाटप्रिया	,,
केदाररागस्त्री	,,
मालवरागस्त्री	,,
मारुरागस्त्री	,,
मेवाड़रागस्त्री	,,
मरुधररागस्त्री	,,
मालीगौड़ारागस्त्री	,,
मारुतरागस्त्र	,,
मल्लारस्त्री	,,
गौड़रागप्रिया	,,
स्नेहरागप्रिया	,,
कर्णाटरागप्रिया	,,
जलधरप्रिया	,,
आभीरप्रिया	,,
तैलङ्गप्रिया	,,
नटनारायणप्रिया	,,
घनश्यामप्रिया	,,
कमलरागप्रिया	,,
कुसुमरागप्रिया	,,

रागरागिणी-समय

विषय	पृष्ठा
दिवस-रागरागिणी	१६
रात्रिरागरागिणी	,,
उपराग	,,

रागरागिणी-ध्यानोदाहरण

विषय	पृष्ठा
भैरवराग	१७
भैरवोत्पत्तिः	,,
भैरवी	,,
गुर्ज्जरी	,,
टोड़ी	,,
रामकली	,,
वराटी	,,
मालकोश	१८
वागीश्वरी	,,
ककुभा	,,
पर्यका	,,
सोहनी	,,
खम्बावती	,,
हिन्दोल	,,
वसन्ती	,,
पञ्चमी	,,
हिन्दोलिका	,,
ललिता	,,
मालवश्री	२१
धनाश्री	,,
दीपक	,,
प्रदीपिका	,,
जयतश्री (जयच्छ्री)	२१
भीमपलश्री	,,
नट	२२
श्रीराग	,,
मालवी	,,
मालव	,,
मालवगौड़	,,
त्रिवना (त्रवणा)	२३
गौरी	,,
पूरवी	,,
मेघराग	,,
मल्लारिका	,,
सोरठी	२४

विषय	पृष्ठा
सारङ्गनट्टा	२४
बड़हंसी	,,
मध्यमादि	,,
ब्रह्मताल	,,
लङ्कदहना	,,
गुणकली (गुणकिरी)	२५
सुखावती	,,
श्यामराग	,,
आशाराग	,,
सोमराग	,,
नटनारायण	,,
हम्मीरराग	,,
आभीरी	२६
कर्णाट -	,,
भखार	,,
योगिनी	,,
नागध्वनि -	,,
सैन्धवी	,,
माधवी	२७
मलोहा	,,
गौड़गिरि	,,
बङ्गाल	,,
पठमञ्जरी	,,
टङ्का -	,,
माधव	२८
मधुरराग	,,
देशी	,,
पूर्व्वाराग	,,
सिन्धुड़ा	,,
देशाख्य -	,,
गौड़सारङ्ग	२९
गौड़करी	,,
विभासराग	,,
देशकारी	,,
वेलावल्ली	,,
षट्राग	,,

विषय	पृष्ठा
देवगिरी	३०
आशावरी	,,
योगीया	,,
मोहनराग	,,
गान्धार	,,
गान्धारी	३१
नागशब्दि	,,
भूपाली	,,
कल्याण	,,
अड़ाना–	,,
केदारो	,,
सोहनी	,,
पञ्चम	३२
मालिगौरा	,,
आभीररराग	,,
जयजयन्ती	,,
भैरव	,,
भैरवी	,,
पुण्यक्री	,,
बङ्गाली	३३
मधुररराग	,,

तालाध्याय

एकतालो	३३
धामालताल	,,
यतितालो	३४
चम्पकताल	,,
रूपकतालो	,,
चातुरीताल	,,
त्रेवटताल	,,
जलदतितारा	,,
धामालतितारा	,,
झम्पताल	,,
सुरफाक्ताल	,,
चौतारा	,,
वड़ाचौतारा	,,
सिधाचौतारा	३४
आड़ा चौतारा	,,
पञ्चमुखीताल	,,
पञ्चमताल	,,
फरोदस्ततात	,,
षट्मुखो	,,
सप्ततात	,,
अष्टमुखीताल	,,
गणेशताल	,,
ब्रह्मताल	,,
रुद्रताल	,,
विष्णुताल	,,
सूर्य्यताल	,,
लक्ष्मीताल	,,
भ्रमणताल	३५

नृत्याध्याय

नृत्यभेद	३५
ताण्डव	,,
लास्य	,,
रागनाम	,,
रागाङ्ग	३६
क्रियाङ्ग	,,
भाषाङ्ग	,,
उपाङ्ग	,,
काण्डारणा	,,
रागभाषाविभाषालक्षण	३७

वाद्याध्याय

मृदङ्गवाद्याक्षर	३७
पर्णसागर मृदङ्गाध्याय	३८
तालनाम	३८

गानाध्याय

मङ्गलाचरण	४१
स्वर	,,
त्रिंशद्रागिणी	,,
रागभैरव	४२
भैरव-चौताला	,,
आभोग	,,
गान्धारांश सम्पूर्णभैरव	,,
भैरव-चौताल	,,
दूसरा आभोग	,,
तीसरा आभोग	,,
औड़व भैरव-चौताल	,,
भैरव-चौताल	४३
सरस्वती-वन्दना (ध्रुवपद)	४३
गणेश-वन्दना	४४
गङ्गाजी-वन्दना	४४
सूर्य्य-वन्दना	४५
परब्रह्म-वन्दना	,,
अनन्तदेवता-वर्णन	,,
श्रीभगवत् वर्णन	४६
राग भैरव, ताल रूपक (ध्रुवपद)	६१-७०
,, तिताला	,,
,, तिताला करषा	६५
,, धीमा-तिताला	,,
,, रूपकताल	६७
,, सुरफाक्ताल	,,
,, झपताल	६८
,, ब्रह्मताल	६९
,, लक्ष्मीताल	,,
,, रुद्रताल	,,
,, विष्णुताल	,,
,, धमारताल	,,
,, सुरफाक्ताल	७०
ख्याल	७०-७७
भैरव—तिताला	७०
,, चतुरङ्ग तिताला	,,
,, धीमा तिताला	७०, ७५
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
भैरव चौताला	७१,७६
" सुरफाक्ताल	७२
" रुद्रताल	,,
भैरवी—फरोदस्त	,,
भैरव—तिताला	,,
" जलद तिताला	,,
" त्रेवड़ा	,,
" सुरफाक्ताल	७३
" रुद्रताल	,,
" सुरफाक्ताल	,,
" लक्ष्मीताल	,,
" झपताल	,,
" टप्पा—मध्यमान तिताला	,,
" एकताला	७४
" तिताला	,,
" सवारी	७५
" झुमरा	,,
" ब्रह्मताल	,,
" पटतान (ध्रुवपद)	,,
" पटतारा	,,
आलापाचर	७७
ख्याल (ध्रुवपद)	
भैरव—तिताला	७८-१०६
" धोमातिताली	,,
" तिताला	७८
" तिताला चतुरङ्ग	,,
" एकताला	,,
" तिताला	८०
" चौताला	,,
" तिताला	,,
" चौताला	,,
" तिताला	८१
" विष्णुताल	,,
" धोमातिताला	,,
" तिताला	८२
" "	८३

विषय	पृष्ठा
भैरव धोमातिताला	८३
" तिताला	,,
" एकताला	,,
भैरव—जलद एकताला	८४
,, होरी	,,
,, तिताला	,,
,, चौताल	,,
,, तिताला	,,
,, धोमातिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धोमा तिताला	,,
,, जलद (ख्याल)	,,
,, झुमरा	,,
,, एकताला	,,
,, एकताला	८६
,, जलद	,,
,, धमार वहार	,,
,, एकताला	,,
,, धमार	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
,, होरी	,,
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	८७
,, ध्रुवहर	,,
,, एकताला	,,
,, धोमातिताला	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
भैरव धोमातिताला	८८
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, आड़ा चौताल	८०
,, होरी	,,
,, धमार	,,
,, वसन्त तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, झपताल	८१
,, सवारी	,,
,, खमसा	,,
,, सवारी	,,
,, धोमातिताला	,,
,, तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, तिताला	८२
,, एकताला	,,
,, तिताला	८४
,, झपताल	८५
,, तिताला	,,
,, धोमातिताला	,,
,, सिन्धु तिताला	८६
मूलतान—तिताला	,,
सिन्धु काफी तिताला	,,
आड़ा—होरी	,,
भैरव—तिवड़ा	,,
,, तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
,, एकताला	८८
,, तिताला	,,
,, तिताला	१०१
श्रीभागवतसार	
भैरव—चौताल	१०१
टोड़ीध्यान	१०६
टोड़ी—चौताल	,,

विषय	पृष्ठा
टोड़ी दरबारी	११२
,, चौताल	११३-१२४
देशी टोड़ी	१२४-१२६
बाहादुरी टोड़ी	१२६
लाचारी टोड़ी	,,
दरबारी टोड़ी	,,
टोड़ी—चौताल	,,
लाचारी—टोड़ी	,,
टोड़ी—धीमा तिताला	१३०
देशी—टोड़ी	,,
देशी टोड़ी—ताल सवारी	१३१
देशी धीमा तिताला	,,
टोड़ी चौताल	,,
टोड़ी झपताल	,,
टोड़ी सुरफाकताल	१३३
,, झपताल	,,
टोड़ी—चौताल(बड़े-साहेब कृत)	१३४
,, झपताल	,,
,, गुज्जरी—चौताल	१३५
देशी—टोड़ी	१३५
देशी—टोड़ी सुरफाकताल	,,
देशी—टोड़ी धीमा तिताला	,,
लाचारी गीताङ्गभाषा तिताला	,,
टोड़ी—होली	,,
,, सुरफाकताल	,,
बाहादुरी—टोड़ी	१३६
टोड़ी—तिताला	,,
,, झपताल	,,
,, रूपक	,,
,, रूपक	१३७
,, आड़ा चौताला	,,
,, झपताल	,,
,, तिताला	१३८
,, चौताल	,,
,, झपताल	,,
,, तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
ठोड़ी—तिताला	१३८
,, पटताल	,,
,, धमार	,,
,, धीमा तिताला	१४४
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	१४४
,, तिताला	,,
,, आड़ा चौताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, होरी	१४५
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	१४७
,, तिताला	,,
,, देशी एकताला	१४८
,, टोड़ी तिताला	,,
,, देशी ,,	१४८
टोड़ी तिताला	,,
,, आड़ा तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, आड़ा चौताल	१५०
,, ब्रह्मताल	१५२
,, परताल	,,
,, तिताला	१५२,१५४
,, एकताला	१५२
,, एकताला	१५३
देशी तिताला	१५४
,, धीमा तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
देशी टोड़ी—तिताला	१५५
देशी खमसा	१५५
देशी टोड़ी जलदतिताला	,,
,, ,, एकताला	,,
देशी टोड़ी झपताला	१५६

विषय	पृष्ठा
देशी टोड़ी एकताला	१५६
,, तिताला	,,
,, धमार	,,
,, तिताला	,,
,, धमार	,,
,, जलद तिताला	,,
,, धीमा तिताला	१५७
,, होरी	,,
,, तिताला	,,
,, होरी	,,
,, सवारी	१५८
,, सुहैयर—सवारी	,,
बरवा टोड़ी आड़ा	,,
,, सावनी	,,
,, बहादुरी	,,
बरवा तिताला	,,
टोड़ी—गान्धारी	,,
जौनपुरी—धीमातिताला	१५८
जौनपुरी टोड़ी—तिताला	,,
लाचारी टोड़ी—धीमातिताला	,,
,, फरोदस्त	,,
,, एकताला	,,
,, आड़ा एकताला	,,
जौनपुरी—जलद तिताला	,,
,, कहरवा	१६०
,, टोड़ी—होरी	१६१
,, कहरवा	१६२
जौनपुरी—एकताला	,,
टोड़ी जौनपुरी—तिताला	१६२
,, एकताला	,,
,, सवारी	१६५
,, झपताला	,,
,, तिताला गान्धार	,,
जौनपुरी—जलद तिताला	१६६
,, तिताला	,,
,, सवारी	,,

विषय	पृष्ठा
लाचारी टौड़ी—तिताला	१६६
,, आड़ा धीमातिताला	,,
,, धीमातिताला	,,
,, तिताला	,,
,, लाचारी	१६७
,, तिताला	,,
,, बाहादुरी	,,
देशी तिताला	१६८
टौड़ी तिताला	,,
,, चौताल	१६८
,, तिताला	,,
,, ख्याल तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, तिताला	१७०
,, धमार ध्रुवपद	,,

गुर्ज्जरी—

गुर्ज्जरी—तिताला	१७०
,, चौताल	१७१-१७४
,, सुरफाक्ताल	१७४
,, तिताला	१७५
,, सुरफाक्ताल	,,
,, झपताल	,,
,, तिताला	१७६
,, झपताल	,,
,, तिताला	१७७
,, धीमातिताला	,,
,, जलदतिताला	,,
,, तिताला	,,
,, तिताला	१७८
,, होरी	,,
गुर्ज्जरी—जौनपुरी	१७८
,, तिताला	,,
,, होरी	१७८
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
गुर्ज्जरी एकताला	१७८
,, झपताल	१८०
,, तिताला	,,
,, ख्याल तिताला	,,

गान्धार-राग—

गान्धार चौताल	१८०
,, होरी ताल	१८२
,, चौताल	,,
,, धमार	,,
,, चौताल	१८३
,, धमार	,,
,, चौताल	,,
,, तिताला	१८६
,, रूपक	,,
,, तिताला	,,
,, आड़ा चौताल	,,
,, आड़ा चौताल	१८७
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	१८८
,, धीमा तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, जौनपुरी तिताला	१८८
,, तिताला	,,
,, धीमातिताला	,,

आशावरी—

आशावरी चौताल	१८८-१८४
आशावरी तथा वङ्गाल-चौताल	१८४
,, झपताला	१८५
,, आड़ा चौताल	,,
टौड़ी सादरा	,,
आशावरी रूपक	,,
,, तिताला	,,
आशावरी सुरफाक्ताल	१८६
,, तिताला	,,
,, चौताल	,,
,, झपताल	,,
,, पटताल	,,
,, रूपक	,,
,, तिताला	१८७
,, धमार	,,
,, धीमा तिताला	१८८
,, तिताला	,,
,, झपताल	,,
,, आड़ा चौताल	१८८
,, तिताला	,,
,, रूपक	,,
,, सुरफाक्ताल	२००
,, आड़ा चौताल	,,
,, रूपक	,,
,, तिताला	,,
,, तिताला ध्रुवपद	२०१
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, एकताला	२०२
आशावरी—तिताला	२०३
,, आड़ा चौताल	,,
,, होरीताल	,,
,, तिताला	२०४
,, चौताल	,,
,, होरीताल	,,
,, सवारी	,,
,, झपताल	,,
,, लाचारी	,,
,, सवारी	२०५
,, तिताला	,,
,, चौताल	,,
,, चौताल	२०८
,, तिताला	,,

मूलतानी धनाश्री—

विषय	पृष्ठा
धनाश्री चौताल	२०८
मूलतानीधनाश्री चौताल	२०८-२१६
भीमपलासी चौताल	२१७
मूलतानीधनाश्री चौताल	२१८
राग ऋषभ चौताल	२१८
मूलतानी बरवा तिताला	,,
,, भीमपलासी तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	,,
,, धनाश्री बरवा तिताला	,,
,, भीमपलासी तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	,,
भीमपलासी रूपक	२२०
धनाश्री तिताला	,,
भीमपलासी तिताला	,,
मूलतानी तिताला	२२१
भीमपलासी तिताला	,,
मूलतानी धनाश्री ब्रह्मताल	,,
मूलतानी धनाश्री झपताल	,,
मूलतानी सुरफाक्ताल	२२१
भीमपलासी झपताल	२२२
मूलतानी भीमपलासी—	
सुरफाक्ताल	,,
,, रूपक	,,
,, चौताल	,,
,, आड़ा चौताला	,,
,, तिताला	,,
मूलतानी धनाश्री तिताला	२२३
,, सुरफाक्ताल	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
,, धमार	,,
,, तिताला	२२४
,, धमार	,,
लाचारी धमार	,,
मूलतानी तिताला	२२४
,, धमार	,,
भीमपलासी धमार	,,
,, तिताला	,,
,, झपताल	,,
,, धमार	२२५
मूलतानी तिताला	,,
,, होरी	,,
,, तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	२२६
,, होरीताल	२२०
,, तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	२२२
,, धीमातिताला	२२४
,, एकताला	२२७
मूलतानीधनाश्री—एकताला	२२७
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, तिताला	२२८
,, बरवा फरोदस्त	२२८
,, सवारी	,,
मूलतानी धनाश्री तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	२४०
,, चौताल	,,
,, तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	,,
,, धमार	२४१
,, धनाश्री तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धनाश्री तिताला	२४२
,, तिताला	२४५
,, धनाश्री तिताला	,,
पूरीया धनाश्री—चौताल	२४८
,, तिताला	२५१
धनाश्री होरी—धमार	२५१
धनाश्री—एकताला	२५२
,, तिताला	,,
,, एकताला	२५३
,, सवारी	२५४
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
पुरीया धनाश्री—एकताला	,,
,, तिताला	,,
मालश्री—एकताला	२५६
पुरीयाधनाश्री—तिताला	,,
,, एकताला	,,
होरी ख्याल तिताला	,,
पुरीया धनाश्री—सवारी	२५७
,, पाँच फरोदस्त	,,
,, आड़ा चौताल	,,
जयतश्री चौताल	,,
,, रूपक	२५८
,, आड़ा चौताला	२६०
,, तिताला	,,
मालश्री ध्यान	२६१
सवैया	,,
दोहा	,,
मालश्री चौताल	,,
,, सुरफाक्ताल	२६२
,, तिताला	२६५
,, धीमातिताला	,,
,, चौताल	२६७
,, धीमातिताला	,,
,, तिताला	,,
,, खमसा	,,
,, होरी	,,
,, जलदतिताला	,,
,, तिताला	२६८
पूरवी—चौताल	२७०-२७५
,, तिताला	२७५-२७६

विषय	पृष्ठा
पूरवी चौताल	२७६
" आड़ा चौताल	२७७
" तिताला	"
" धीमा तिताला	
" ख्याल तिताला	"
" तिताला	२७८-२८०
" आड़ा चौताल	२८१
" तिताला	"
" एकताला	"
" तिताला	२८२
" चौताल	२८३
" एकताला	२८४
" तिताला	"
" चौताल	"
" चौताल	२८५
" एकताला	"
" तिताला	"
" चौताल	२८६
" एकताल	"
" तिताला	२८७
" धमार	"
" धीमा तिताला	"
" तिताला	२८८
" जलद तिताला	"
पूरवी तिताला	२८८
" होरी	"
" एकताला	"
" धमार	"
" चौताल	"
" सुरफाक्ताल	२८९
" तिताला	"
मालव-चौताल	२८
" तिताला	२९०
" एकताला	"
" गौरी तिताला	"
" " एकताला	"

विषय	पृष्ठा
मालव वाँड़ी चौताल	"
" सवारी	"
मालवश्रीटङ्क झपताल	"
" सुरफाक्ताल	"
धवलश्री चौताल	२९१
ऋषभ "	"
गौरी तिताला	"
मालव एकताला	"
गौड़सारङ्ग चौताल	"
" तिताला	"
मालव एकताला	"
" तिताला	"
श्रीराग चौताल	"
श्रीटङ्क "	२९२
" तिताला	"
श्रीराग "	"
" आड़ा चौताल	"
श्रीटङ्क तिताला	"
जयतश्री "	"
मैनपुरी "	"
दीपक चौताल	"
प्रदीपकी रूपक	२९२
मालश्री धमार	२९३
श्रीगौरी चौताल	"
गौरी तिताला	"
श्रीराग ख्याल तिताला	"
गौरी "	२९४
श्रीरागध्यान	"
श्रीराग चौताल	"
,, तिताला	"
,, चौताला	२९५
,, धीमा तिताला	२९७
,, तिताला	"
मालव चौताल	२९८
श्रीराग ,,	"
मालव ,,	"

विषय	पृष्ठा
मालव तिताला	३००
त्रिवण चौताल	,,
श्रीटङ्क सवारी	३०१
,, रूपक	,,
,, तिताला	,,
वाँड़ ,,	,,
वाँड़ी चौताल	,,
,, तिताला	,,
गौरी रूपक	,,
,, चौताल	,,
,, पटताल	३०३
,, रूपक	,,
,, झपताल	,,
,, तिताला	,,
मालव ,,	३०४
,, एकताला	,,
,, फारना तिताला	,,
गौरी तिताला	,,
परज ,,	,,
गुर्ज्जरी टोड़ी तिताला	३०५
मूलतानी तिताला	३०५
दमन ,,	,,
छायानट ,,	,,
वागीश्वरी ,,	,,
मालकोश ,,	,,
सोहनी ,,	३०६
केदारा ,,	,,
श्यामकल्याण एकताला	,,
हमीर एकताला	,,
कान्हरा तिताला	,,
छायानट ,,	,,
विहाग ,,	,,
,, एकताला	,,
,, जलद तिताला	,,
पूरीया तिताला	,,
परज ,,	,,

विषय	पृष्ठा
विहाग—जलद तिताला	३०७
" तिताला	"
" पटताल	"
" एकताला	३०८
" तिताला	"
" जलद तिताला	"
" धीमा तिताला	३१०
" तिताला	"
" झुमरा	३११
" तिताला	"
" जलद तिताला	३१४
" झुमरा	,,
इमन् विहाग झुमरा	,,
विहाग—तिताला	,,
विहाग—आड़ा तिताला	३१५
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	३१६
,, तिताला	,,
,, होरी तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, फरोदस्त	३१७
,, तिताला	,,
,, चौताल	३१७-३२२
गनागनभेद	३२२
विहाग तिताला	,,
,, आड़ा चौताल	३२३
,, तिताला	,,
,, चौताल	,,
,, झपताल	,,
,, जङ्गला	३२४
,, सुरफाक्ताल	,,
,, चौताल	,,
,, रूपक	,,
,, तिताला	,,
,, आड़ा तिताला	३२५
,, ध्रुवपद	,,

विषय	पृष्ठा
विहाग—तिताला	३२५
,, तिताला	३२०
,, चौताल	३२२
,, तिताला	,,
विहाग—चौताल	३२२
,, तिताला	,,
,, जयतिश्री	३२३
,, एकताला	,,
सोहनी झपताल	,,
विहाग—तिताला	,,
खेमटा—धीमा तिताला	,,
वरवा—एकताला	,,
मूलतानी तिताला	३२४
विहाग—तिताला	,,
सोहनी तिताला	३२५
भिंझोटी तिताला	"
सोरठ—तिताला	"
" आड़ा तिताला	"
विहाग—जङ्गला	"
भिंझोटी तिताला	३२६
सोरठ—तिताला	"
" जलद तिताला	"
" तिताला	"
काफी तिताला	"
मूलतानी तिताला	"
जङ्गला—तिताला	३२७
कजरी	"
वरवा—खेमटा	"
" धीमा तिताला	"
देश—खेमटा	"
विहाग—खेमटा	"
सिन्धी ठुमरी तिताला	"
मूलतानी तिताला	"
विहाग ख्याल—तिताला	३२८
भिंझोटी—तिताला	"
देशी ठुमरी—तिताला	"

विषय	पृष्ठा
जयतिश्री—तिताला	३२८
विहाग—जयतिश्री	"
" जङ्गला	"
मूलतानी—खेमटा	३२८
कालिङ्गड़ा—तिताला	,,
मूलतानी—तिताला	३२९
प्रदीप—जयतिश्री	,,
,, जङ्गला	,,
देशी ठुमरी—तिताला	३४०
कालिङ्गड़ा—जयतिश्री	,,
परज—तिताला	३४१
खेमटा ,,	,,
परज—धीमा तिताला	,,
धनाश्री—जयतिश्री	,,
सोरठ—तिताला	,,
पहाड़ी तिताला	,,
,, पस्तो	३४२
जयजयन्ती—तिताला	,,
अथ मङ्गलाचरण	३४४
भैरवी	"
" चौताल	"
" तिताला	"
" धीमा तिताला	"
" धीमा तिताला	३४६
" जयतिश्री	,,
" तिताला	३४७
" धीमा तिताला	"
" जयतिश्री	"
" तिताला	३४८
" धीमा तिताला	"
" रूपकातीन	३४८
" तिताला	,,
" चौताल	३५०
" चोराष्टक चौताला	३५२
" धीमा तिताला	३५३
,, जलद तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
भैरवी तिताला	३५३
,, खेमटा	,,
,, सुरफाक्ताल	,,
,, जयतिश्री	,,
,, लक्ष्मीताल	,,
,, गणेशताल नव	,,
,, रुद्रताल	,,
,, चौताल	,,
,, रूपक	,,
,, सवारी	,,
,, धीमा तिताला	३५५
,, तिताला	,,
,, पञ्चसुखी	,,
,, जयतिश्री	३५६
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, जङ्गला	,,
,, जङ्गला	३५७
,, एकताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, जङ्गला	३५८
,, धीमा तिताला (टप्पा)	,,
,, झपताल	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, धीमा एकताला	,,
,, जङ्गला	३५९
,, धीमा तिताला	,,
,, जङ्गला	३६०
,, धीमा तिताला	,,
सिन्धु भैरवी तिताला	३६२
भैरवी वहार ,,	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, धीमा एकताला	३६४
,, धीमा तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
भैरवी तिताला	३६४
,, धीमा तिताला	३६५
,, एकताला	,,
,, झपताल	,,
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	३६६-३७०
,, जङ्गला	३७०
,, जङ्गला होरी	३७२
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, जङ्गला	३७३
,, धीमा तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, झपताल	,,
सिन्धी भैरवी तिताला	,,
भैरवी जङ्गला	३७४
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	३७५
,, जलद तिताला	,,
,, खेमटा	३७८
,, एकताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, जयतिश्री	,,
,, ठुमरी	३८०
,, जलद तिताला	,,
,, ,,	३८३
,, जयतिश्री	३८४
,, जलद तिताला	,,
,, जयतिश्री	३८५
,, जलद तिताला	,,
,, खेमटा	३८८
,, ठुमरी	,,
,, जलद तिताला	,,
सिन्धु भैरवी छपका	३८८
भैरवी पहाड़ी—दादरा छपका	,,

विषय	पृष्ठा
भैरवी खेमटा	३८८
,, सिन्धु काफी	,,
लुम—खेमटा	,,
मूलतानी खेमटा	,,
विहारी ,,	३८०
खम्भावती खेमटा दादरा	,,
देश खेमटा	,,
भैरवी खेमटा	,,
,, एकताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, ठुमरी	३८३
,, जलद तिताला	,,
,, जयतिश्री	३८४
,, जलद तिताला	,,
,, खेमटा	३८५
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	३८६
,, जलद तिताला	,,
,, खेमटा	,,
,, जलद तिताला	३८७
,, खेमटा	,,
,, जयतिश्री	,,
,, छपका	३८८
,, जलद तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, जयतिश्री	,,
,, जलद तिताला	३८८
,, तिताला	,,
,, जयतिश्री	,,
,, खेमटा	४००
,, जलद तिताला	,,
,, ,,	४०१
,, ,,	४०२
,, जयतिश्री	४०३

विषय	पृष्ठा
भैरवी—एकताला	४०४
,, आड़ा चौताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, फरोदस्त	,,
भैरव—सवारी	,,
भैरवी—जलद तिताला	४०५
,, तिताला	,,
,, जयतिश्री	४०६
,, जलद तिताला	,,
,, धमार	,,
,, रेखता—पस्तो	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, जलद तिताला	४०७
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, मध्यमान—तिताला	४०८
,, छप्का	,,
,, जलद तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	४०९
,, धीमा आड़ा तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	४१०
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	,,
,, सिन्धी—धीमा तिताला	,,
,, ,, ,,	४११
सिन्धु भैरवी—तिताला	,,
,, एकताल	,,
,, तिताला	४१२
,, धीमा तिताला	,,
भैरवी ठुमरी—तिताला	,,
,, जयतिश्री	,,
,, झालीया ताल	४१३

विषय	पृष्ठा
भैरवी जत् फारसी	४१३
,, तिताला	,,
,, तथा वरवा—तिताला	,,
,, सोरट—जलद तिताला	४१४
,, भीमपलासी—तिताला	,,
,, एकताला	,,
सिन्धी भैरवी तिताला	,,
भैरवी—जलद तिताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
सिन्धी भैरवी—तिताला	४१५
,, जयतिश्री	,,
भैरवी तिताला	,,
सिन्धी भैरवी—तिताला	,,
भैरवी धीमा तिताला	,,
सिन्धी भैरवी—धमार	४१६

भिंभौटी—

भिँभौटी—चौताल	४१६
विष्णुपद भिंभौटी—	
धीमा तिताला	,,
भिँभोटी—तिताला	४१६-४२१
,, तिताला	४२१
,, एकताला	,,
,, तिताला	४२२
,, जलद तिताला	४२३
,, तिताला	,,
,, जलद तिताला	४२४
,, तिताला	,,
,, एकताला	४२५
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	४२६
,, तिताला	४२७
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	४२८
,, धीमा तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
नूरपुरी भिंभौटी पहाड़ी—	
तिताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	४२९
,, जलद तिताला	४३०
,, धीमा तिताला	४३४
,, तिताला	४३५
,, धीमा तिताला	,,
,, ,,	४३६
,, तिताला	,,
,, ,,	४३७
,, ,,	४३९
,, धीमा तिताला	४४०
सिन्धु ठुमरी तिताला	,,
भिंभौटी धीमा तिताला	,,
,, तिताला	४४१
,, धीमा तिताला	,,
,, तिताला	४४२
,, सिन्धु जङ्गला तिताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
,, सिन्धु ,,	,,
,, जलद ,,	,,
,, जङ्गला ,,	,,
,, धीमा तिताला	४४३
ठुमरी ,,	,,
,, धीमा तिताला	४४४
,, एकताला	४४५
,, तिताला	,,
काफी तिताला	४४६
,, सिन्धी ,,	,,
,, जलद ,,	४४७
,, ,,	४४८
जङ्गला ,,	,,
,, जलद ,,	,,
,, ठुमरी ,,	४४८

विषय	पृष्ठा
झिँझौटी सिन्धु—तिताला	४५०
” तिताला	”
” धीमा तिताला	४५२
” तिताला	”
” धीमा तिताला	४५३
” तिताला	”
” ” ”	४५४
” तिताला	”
” भूपाली ”	४५५
” तिताला	”
” जत्	४५८
” धीमा तिताला	”
” तिताला	”
” ” ”	४५८
” तिताला	”
” भूपाली ”	४६०
” ”	”
” जलद तिताला	४६६
” तिताला	”
” काफी ”	”
” जङ्गला ”	”
पीलु ”	४६८
वरवा ”	”
पीलु ”	४६८
” जलद तिताला	४७०
पीलु ”	”
रेखता ”	४७१
” तिताला	”
पीलु ”	”
” होरी	”
” पीलु तिताला	”
” धीमा ”	४७२
” तिताला	”
” धीमा तिताला	४७३
” तिताला	”
” एकताला	४७४

विषय	पृष्ठा
झिँझौटी धीमा तिताला	४७५
” तिताला	”
” खेमटा	”
” तिताला	”
” एकताला	”

राग जङ्गला—

जङ्गला—तिताला	४७७
,, तिताला झपका	४७८
,, ,,	”
,, ,, ,,	४८०
सिन्धी जङ्गला तिताला	४८७
जङ्गला तिताला	”
,, एकताला	४८८
,, तिताला	”
,, एकताला	४८८
,, तिताला	”
,, एकताला	४८१
,, तिताला	”
काफी ,,	३८५
जङ्गला ,,	”
,, एकताला	४८६
,, तिताला	”
,, एकताला	५०१
,, तिताला	”
,, ,, (दोहा)	”
पीलु जङ्गला तिताला	५०२
,, ,,	”
,, ,,	५०३
,, जङ्गला ,,	”
जङ्गला तिताला	५०४
जङ्गला धनाश्री तिताला	”
जङ्गला परतो	”
पीलु धीमा तिताला	”
पीलु ,,	”
जङ्गला ,,	५०५

विषय	पृष्ठा
पीलु एकताला	५०५
जङ्गला—धीमा तिताला	”
,, ,,	”
मूलतानी तथा जङ्गला तिताला	५०६
सिन्धु भैरवी—तिताला	”
जङ्गला—एकताला	”
,, तिताला	”
मूलतानी ,,	”
जङ्गला—धीमा तिताला	”
पीलु तिताला	५०७
,, एकताला	”
,, धीमा तिताला	”

रागसागर-संग्रहकृत—

सिन्धु—तिताला टप्पा	५०७
,, धीमा तिताला	”
भैरवी सिन्धु ,,	५०८
,, ,,	”
,, धीमा ,,	५१०
,, ,,	”
,, ,,	५११
,, काफी ,,	५१५
,, ,,	”
,, धीमा तिताला	५१६
,, ,,	”
,, टप्पा ,,	५१७
,, ,,	”
,, एकताला	५१८
,, काफी—तिताला	५१८
,, ,,	५२०
,, एकताला	५२०
,, धीमा तिताला	५२२
,, ,,	”
,, काफी ,,	५२३
सिन्धु काफी रेखता तिताला	५२४
,, काफी तिताला	”

विषय	पृष्ठा
सिन्धु तिताला	५२६
,, धीमा तिताला	,,
,, काफी तिताला	५२७
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	५२८
,, काफी तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, काफी तिताला	५३०
,, ,, ठुमरी तिताला	५३१
,, मूलतानी—तिताला	५३५
भीमपलासी तिताला	,,
सिन्धु मूलतानी तिताला	,,
मूलतानी एकताला	,,
,, काफी तिताला	,,
,, धीमा तिताला	५३६
,, ठुमरी ,,	५३७
मिया धनाश्री	५४३
मूलतानी तिताला	५४४
रूपक ख्याल तिताला	५४५
मूलतानी तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, तिताला	५४६
केदारी ,,	,,
मूलतानी ,,	,,
धनाश्री ,,	,,
नट ,,	,,
धनाश्री ,,	५४७
,, तथा सहाना—जत्	५५४
,, तिताला	,,
,, एकताला	५५५
मूलतानी तिताला	,,
,, पस्तो	,,
धनाश्री—आड़ा चौताल	,,
मूलतानी ,,	,,
,, तिताला	,,
,, ठुमरी तिताला	५५६

विषय	पृष्ठा
मूलतानी तिताला	५५६
धानी—खेमटा	,,
,, तिताला	,,
,, सिन्धु तिताला	५५७
,, खेमटा	,,
भिँभौटी—तिताला	,,
देश—तिताला	,,
मूलतानी—खेमटा	५५८
धानी ,,	,,
वरवा तिताला	,,
धानी ,,	,,
धनाश्री ,,	,,
धानी ,,	५६०
मूलतानी ,,	,,
वरवा ,,	५६१
साँवनी वरवा रूपक	,,
सहाना तिताला	५६२
वरवा ,,	,,
विहारी ,,	,,
पीलु ,,	,,
वरवा ,,	५६३
भिँभौटी—खेमटा	,,
पीलु तिताला	,,
जङ्गला ,,	,,
देशी ,,	५६४
वरवा ,,	,,
वरवा ठुमरी तिताला	५६५
जङ्गला तिताला	,,
वरवा ब्रह्मताल	,,
सिन्धु भैरवी तिताला	,,
धानी तिताला	५६६
वरवा ,,	,,
वरवा ठुमरी तिताला	,,
पीलु ,,	५६७
वरवा ,,	,,
विहारी तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
वरवा तिताला	५६८
वरवा—एकताला	५६९
,, खेमटा	,,
,, ठुमरी	,,
,, तिताला	,,
,, कहरवा	,,
,, दादरा	,,
कालिङ्गड़ा दादरा	,,
वरवा—कहरवा	५७०
,, खेमटा	,,
देश विहारी—एकताला	,,
देश—ठुमरी	,,
कालिङ्गड़ा कहरवा	,,
भिँभौटी ,,	,,
विहारी ,,	,,
जङ्गला ,,	,,
वरवा ,,	५७१
भिँभौटी भूपाली—कहरवा	,,
वरवा कहरवा	,,
अलैया तिताला	,,
वरवा—कहरवा	५७२
उमरा ,,	,,
वरवा दादरा	५७३
,, कहरवा	,,
जङ्गला दादरा	,,
वरवा ठुमरी	,,
देश—दादरा	,,
मङ्गला—भैरवी	५७४
भिँभौटी—कहरवा तिताला	,,
सिन्धु—जङ्गला	,,
वरवा सोरठ	,,
पीलु	,,
पूरवी एकताला	,,
मूलतानी धनाश्री	,,
परज	,,
सोहनी	,,

विषय	पृष्ठा
भैरवी—जङ्गला	५७४
" ठुमरी	५७५
वरवा "	"
विहारी	"
सोरठ	"
देश	"
जौनपुरी—जत्	"
सिन्धु—ठुमरी	"
विहारी	५७६
कालिङ्गराग	"
वरवा—कहरवा	"
जोगिया—रेखता	५७७
जोगिया	५७८
षट्राग	"
जयजयन्ती	"
विहारी	"
ठुमरी	"
दादरा	"
वरवा—दादरा	"
विहारी	५७९
विहाग	५८०
विहारी	"
अलैया—जङ्गला	"
भैरवी—तिताला	५८१
आशावरी—तिताला	"
दोहा	"
घाटा तिताला	"
कालिङ्गरा—कहरवा	"
झिंझौटी—तिताला	५८२
अलैया	"
भैरवी—जङ्गला	"
वरवा—देश	"
पीलु—जङ्गला	५८३
पीलु	५८४
जङ्गला	"
भैरवी	"

विषय	पृष्ठा
पीलु—छपका	५८४
जङ्गला—तिताला	५८५
पीलु	"
काफी—वारहयासा	५८६
पीलु	५८७
परज—जत्	"
" जङ्गला	५८८
देश—लूम	"
काफी—जत्	"
खम्भावती—तिताला	"
" ठुमरी	५८९
घाटा—तिताला	"
विवहा रामप्रसादजीका— कहरवा	५९०
अङ्गरेजी अहंग	५९०
घाटा—तिताला	५९१
कहरवा	५९२
अहंग—नेपालवोली	"
अरवी	"
कश्मीरी	५९३
काफी	"
अलैया	"
धनाश्री	"
सिन्धु	"
दक्षिणी	"
कहरवा	"
पीलु	५९४
कहरवा	"
वरवा	"
देशविहारी—तिताला	५९५
तैलङ्गीवोली	"
तिलङ्ग—तिताला	"
झिँझौटी विहारी	"
कालिङ्गड़ा	५९६
गारा—ठुमरी	"
मझगारालुम—एकताला	५९७

विषय	पृष्ठा
दमन—तिताला	५९७
गारा तिताला	"
" धीमा तिताला	५९८
" तिताला	"
अलैया धीमा तिताला	"
" तिताला	"
" कसुर तिताला	"
" जलद तिताला	५९९
" धीमा तिताला	"
" कसुर धीमा तिताला	"
सरपड़दा धीमा तिताला	६००
अलैया धीमा तिताला	"
" तिताला	"
" कुसुर धीमा तिताला	"
सरपड़दा	"
सिन्धु कसुर धीमा तिताला	"
सरपड़दा तिताला	"
अलैया धीमा तिताला	६०१
" तिताला	"
तिलङ्ग तिताला	"
अलैया धीमा तिताला	६०४
,, तिताला	"
रागध्वनि	६०५
,, तिलङ्ग	६०६
तिलङ्ग तिताला	"
राग गौरी	"
,, तिताला	६०७
श्रीराग	"
कालिङ्गा—गौरी	६०८
गौरी	"
गौरी—जङ्गला	"
गौरी	६०९
कलिङ्गड़ादि	"
देश	"
देश लुम	"
विहारी	६१०

विषय	पृष्ठा
देश	६१०
विहारी—जत्	६११
कलिङ्ग	,,
गौरी कलिङ्ग	,,
देश—तिताला	,,
काफी	६१२
आशावरी	,,
वरवा—कहरवा	,,
आशावरी—जङ्गला	,,
,, तिताला	,,
आशा—टप्पा	,,
आशावरी तिताला	६१४
देश—खेमटा	६१५
,, एकताला	,,
,, ठुमरी	,,
सहाना तिताला	,,
,, धीमा तिताला	,,
सोहनी—जत्	६१७
,, तिताला	,,
,, सवारी	,,
,, धीमा तिताला	,,
सोहनी—तिताला	६१७
,, टप्पा—धीमा तिताला	,,
,, जत्	६१८
,, तिताला	,,
,, सवार	६१८
,, तिताला	,,
,, धीमा तिताला	६२०
,, तिताला	,,
,, एकताला	,,
,, तिताला	६२१
,, धीमा तिताला	६२३
,, तिताला	,,
,, तिताला	६२४
,, चौताल	६२६
मालकोष तिताला	,,

विषय	पृष्ठा
सोहनी—तिताला	६२६
विहारी—ठुमरी	,,
कलिङ्ग ,,	६२७
विहारी	,,
,, तिताला	,,
जङ्गला ,,	,,
विहारी खेमटा	,,
,, तिताला	,,
विहाग—ध्रुन	६२८
विहारी	,,
दीपचन्द	,,
वरवा	,,
विहाग—ठुमरी	६२८
विहारी ठुमरी	,,
,, तिताला	,,
विहाग	६३०
विहारी ठुमरी	,,
विहारी तिताला	,,
वरवा	६३१
विहारी तिताला	,,
विहाग	,,
विहारी	६३२
विहाग—ठुमरी	,,
,, तिताला	,,
विहारी	६३२
देश—ठुमरी	,,
,, तिताला	६३४
सोरठ ,,	,,
सोरठ देश तिताला	,,
कलिङ्ग तिताला	६३५
सोरठ	,,
देश	,,
खम्भावती	,,
सोरठ	६३६
देश	,,
भिंझौटी	६३६

विषय	पृष्ठा
सोरठ	६३६
देश	,,
,, जङ्गला	,,
,, लुम	६३७
,, ठुमरी	,,
देश	,,
,, सोरट—ठुमरी	,,
,, तिताला	६३८
,, ठुमरी	,,
विहारी	,,
देश	,,
,, लुम	,,
,, तिताला	६३८
सोरठ—झपताल	६४०
,, एकताला	,,
देश	६४२
सिन्धु तिताला	६४३
सोरठ एकताला	६४४
देश—धीमा तिताला	६४५
सोरठ तिताला	,,
सोरठ—धीमा तिताला	६४६
,, तिताला	,,
देश—सोरठ	,,
सोरठ जङ्गला	६४७
,, देश—तिताला	,,
,, तिताला	,,
,, देश तिताला	६४८
,, तिताला	,,
,, धीमा	,,
,, जङ्गला	६५०
सोरठ धीमा	,,
,, तिताला	६५१
देश सोरठ	,,
सोरठ चौताल	६५४
सोरठ धीमा	,,
,, चौताल	६५५

विषय	पृष्ठा
सोरठ तिताला	६५७
,, जङ्गला	६५८
सोरठ तिताला	६५८
टप्पा सोरठ तिताला	,,
सोरठ तिताला	६६०
देश सोरठ	६६५
भूपाली—झिँझौटी	६७२
कलिङ्ग	,,
सरपड़दा	६७४
कलिङ्ग	,,
सोरठ—धानी—पस्तो	,,
सोहनी	६७५
सोरठ—धानी—पस्तो	६७६
,, सरपड़दा	,,
,, कलिङ्ग	,,
,, झिँझौटी	,,
सिन्धु	,,
खम्भावती	६७७
धानी	,,
कलिङ्ग	,,
जङ्गला	,,
झिँझौटी	६७८
विहारी	,,
सोरठ	,,
जङ्गला	,,
कलिङ्ग	,,
सरपड़दा	,,
जङ्गला	६७८
पीलु	,,
कलिङ्ग	,,
सोरठ	,,
जङ्गला	६८०
झिँझौटी	,,
मारा	,,
सोरठ	६८१
विहारी	६८१
सोरठ	,,
,, कलिङ्ग	,,
सोरठ	६८२
सरपड़दा	,,
जङ्गला	,,
भैरवी	,,
,, जङ्गला	,,
जोगिया	६८३
सोरठ	,,
कलिङ्ग	,,
आशावरी	,,
देवगान्धार	,,
परज	,,
कलिङ्ग	६८४
विहारी	,,
देश	,,
इमन् साझ	६८५
अहंग	,,
कलिङ्ग	,,
भैरवी	,,
कलिङ्ग	६८६
भैरवी	,,
खम्भावती	,,
सोरठ	,,
,, षट्	,,
सिन्धु भैरवी	६८७
झिँझौटी	,,
विहारी	,,
रेखता	६८८
,, कलिङ्ग	,,
अहंग—गज़ल अङ्गरेजी	,,
झिँझौटी	६८८
,, एकताला	,,
,, तिताला	,,
विहारी	६८०
झिँझौटी पस्तो	,,
गज़ल विहारी	,,
कलिङ्ग	,,
विहारी खम्बाज	६८१
सोरठ	,,
भूपाली	,,
एकताला	,,
लावनी—भूपाली	,,
लावनी	६८१
कहरवा	६८३
ठुमरी	,,
लावनी	,,
विहारी—खम्बाज	,,
लावनी—भूपाली	,,
,, विहारी	६८४
,, देश	,,
,, जङ्गला	६८५
अड़ीरो—प्रदीप	६८६
लावनी—कालिङ्गड़ा	,,
,, रेखता	६८७
देवगान्धार रेखता	६८८
कलिङ्ग	,,
जङ्गला	,,
वरवा	,,
धनाश्री	६८८
धानी	,,
राग महअर	,,
गौरी	,,
भटोयाल	,,
भूपाली	७००
लावनी	,,
रागसागररचित गीत	७०१
सोरठ	,,
भगवत्स्तुति	७०२

———0———

रागकल्पद्रुमः

अथ मङ्गलाचरणं

देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं हरिमीश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमं ग्रन्थं कुरुते रागसागरः ॥*
पौत्राऽहममरानन्द-वेदव्यास-द्विजन्मनः ।
पुत्रश्च हीरकानन्द-वेदव्यासस्य धीमतः ॥
कृष्णानन्दाभिधो वेदव्यासो नत्वा सरस्वतीम् ।
रागकल्पद्रुमं नाम कुर्वे ग्रन्थं सतां मुदे ॥
देवीं वाक्पतिमीश्वरं गणपतिं नत्वा हरिं मारुतिं†
सङ्गीतं भरतेश-मारुति मतं सम्यक् विचार्य्यादरात् ।‡
इन्द्रप्रस्थ-समुद्भवैर्विरचितं यत्तानसेनादिभि-
रुक्तं तत् प्रकरोमि§ नादनिलयं श्रीराग-कल्पद्रुमम् ॥

द्युतिकनकसुगौर-स्निग्धमाहेन्द्रनीली
कविभिरखिलवृन्दारण्यमुद्भावयन्ती ।
घनपुरटसुवस्त्री मोहयन्ती त्रिलोकान्
स्मर निभृतनिकुञ्जे राधिका-कृष्णचन्द्रौ ॥

संगीतदर्पणे (१।१—२)—

प्रणम्य शिरसा देवी पितामह-महेश्वरौ ।
सङ्गीत-शास्त्रसकल-सारभागोः मयोच्यते ॥

भरतादिमतं सर्वमालोड्यातिप्रयत्नतः ।
श्रीमता हरिभट्टेन* सज्जनानन्द-हेतुना ॥
प्रचुराह्लाद†-संगीत-सारोद्धारो विधीयते ॥

नारदसंहितायां (१।७)—

श्रीभगवानुवाच

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ! ॥

अथ नादोत्पत्तिः

संगीतदर्पणे (१।२८—३१)—

अथ नादस्य चोत्पत्तिं वक्ष्ये शास्त्र-विवेकतः ॥
धर्म्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैकसाधनम् ॥
नादविद्यां परां लब्धा सरस्वत्याः प्रसादतः ।
कम्बलाश्वतरौ नागौ शम्भोः कुण्डलतां गतौ ॥
पशुः शिशुर्मृगो वापि नादेन परितुष्यति ।
अतो नादस्य माहात्म्यं व्याख्यातुं केन शक्यते ॥

संगीतसंहितायां (१।३६—३८)—

पूजा-कोटिगुणं ध्यानं ध्यानात् कोटिगुणं जपः ।
जपात् कोटिगुणं गानं गानात् परतरं नहि ॥

---

* राग-कल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः । इति पाठः ।

† हनुमद्भिरं । इति पाठान्तरं ।

‡ सङ्गीतं प्रविचार्य्य भरत-हनुमत्स्वेव वागगृम्फितं । इति वा पाठः ।

§ सत्युक्तं प्रकरोमि । इति पाठः ।

* श्रीमद्दामोदरखान । इति संगीतदर्पण-धृत-पाठः ।

† 'प्रचरद्रपसंगीत' इति मुद्रित-संगीतदर्पणम् ।

गीतज्ञो यदि गीतेन* चाप्नोति परमं पदम् ।
रुद्रस्यानुचरो भूत्वा तेनैव सह मोदते ॥
पूर्णं चतुर्णां वेदानां सारमाकृष्य पद्मभूः ।
इदन्तु पञ्चमं वेदं सङ्गीताख्यमकल्पयत् ॥

संगीतभाष्ये—

सुखिनि सुखनिधानं दुःखितानां विनोदः
श्रवण-हृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः ।
अतिचतुर-सुगम्यो वल्लभः कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमश्चोपवेदः ॥

संगीतरत्नाकरे—

श्रुतिस्मृत्यादि-साहित्य-नानाशास्त्रविदोऽपि च ।
संगीतं ये न जानन्ति ते द्विपादाः मृगाः स्मृताः ॥†

संगीतमहोदधौ (१।५)—

संगीतसाहित्य-रसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
चरत्यसौ किं तृणमत्ति नो वा
परं पशूनामुपवासहेतुः ॥

प्रयोजनमाह गान्धर्ववेदे—

त्रिवर्ग-फलदाः सर्वे दानाध्यय-जपादयः ।‡
एकं सङ्गीत-विज्ञानं चतुर्वर्ग-फलप्रदम् ॥
हर्षादि-सुखदो धर्म्मो धनकामो नृपादितः ।
निष्कामं तदनुष्ठानान्मोक्षाख्यात्तदश्नुते ॥

तथा च विज्ञानेश्वरः—

वीणावादन-तत्त्वज्ञो रागविद्या-विशारदः ।
मूर्च्छना-श्रुतिसम्पन्नो मोक्षमार्गञ्च गच्छति ॥**
गीतवाद्यञ्च नृत्यञ्च त्रयः संगीतमुच्यते ।
गीतवाद्योभयं यत्र संगीतमिति केचन ॥

विष्णुपुराणे (१।२२।८३)—

काव्यालापाश्च ये केचित् गीतकान्यखिलानि च ।
शब्दमूर्त्तिधरस्यैतद्वपुर्विष्णोर्महात्मनः ॥
सर्वेषामेव पुण्यानामस्ति संख्या यशस्विनि ।
क्रमाच्च गीयते येन तस्य संख्या न विद्यते ॥

शिवसंगीते—

न घृते तादृशी प्रीतिर्न क्षीरे न च गुग्गुले ।
यादृशी चैव गान्धर्वे मम प्रीतिर्वरानने ॥

संगीतदर्पणे (१।३—६)—

मार्गदेशी विभागेन संगीतं द्विविधं मतम् ।
स्वर्गे मार्गाश्रितं देश्याश्रितं भूतल-रञ्जकम् ॥
नारायणेन यत्सृष्टं प्रयुक्तं द्रुहिणेन च ।*
महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विमुक्तिदम् ॥
तत्तद्देशस्थया रीत्या यत् स्याल्लोकानुरञ्जनम् ।
गीतवादित्रनृत्यानां रक्तिः साधारणो गुणः ॥

संगीतभाष्ये—

द्रुहिणेन यदन्विष्टं प्रयुक्तं नारदेन च ।
कल्पिनाथस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विमुक्तिदम् ॥

नारदसंहितायां† (१।१०)—

यदुक्तं द्रुहिणेनैव स मार्ग इति प्रोच्यते ।
देशे देशे तु संगीतं तद्देशीयं विधीयते ॥

नारदसंगीते—

न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरः ।
न नादेन विना ग्रामस्तस्मान्नादात्मकं जगत् ॥
आत्मा बुद्ध्यादि-सहितं मनः प्रेरयते यतः ।
देहस्थवह्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥
न-कारः प्राणवायुः स्याद्द-कारो हव्यवाहनः ।
तत् समुत्पद्यते यस्मात्तस्मान्नादोऽयमुच्यते ॥
मन्द्रो हृदि स्थितः कण्ठे मध्यस्तारश्च मूर्द्धनि ।
द्विगुणः किं समानेन पूर्वस्मादुत्तरोत्तरः ॥

---

* 'योगेन' इति (३।११६) याज्ञवल्क्यस्मृतिधृत-पाठः ।

† मूल-संगीतरत्नाकरे इदम् श्लोकाभावः ।

‡ सर्वे दानाध्ययनमुखादयः । इति पाठान्तरम् ।

§ निष्कामं तदनुष्ठानान्मोक्ष । इति वा पाठः ।

** "वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥"
इति याज्ञवल्क्यस्मृतिधृतपाठः ३।११५ ।

* द्रुहिणेन यदन्विष्टं प्रयुक्तं भरतेन च । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† नादसंहितायां । इति पाठान्तरम् ।

ध्वन्यात्मको वर्णात्मकः स नादो द्विविधस्तथा ।
आहतोऽनाहतश्चेति स नादो द्विविधो मतः ।
यत्रोभयस्य संयोग आहतः स प्रकीर्त्तितः ॥

न्यायशास्त्रे शब्दगुणं आकाशं । तथा च नारदसंहितायां (१।१५—१७)—

आकाशसम्भवो नादस्तथानाहत उच्यते ।
आहतो नादमाकृत्य तथानाहत-संज्ञकात् ॥
एको ध्वन्यात्मको ज्ञेयः परो वर्णात्मकस्तथा ।
स नादो द्विविधः प्रोक्तो नादशास्त्र-विशारदैः ॥
आहतो रञ्जकः प्रोक्तोऽनाहतो मुक्तिदायकः ।
सोऽयं प्रकाशते पिण्डे तस्मात् पिण्डाऽभिधीयते ॥

नादसंहितायां—[संगीतदर्पणे १।१४—१७]

आहतोऽनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते ।
नादः प्रकाशते पिण्डे तस्मात् पिण्डाऽभिधीयते ॥
तत्रानाहतनादन्तु मुनयः समुपासते ।
गुरूपदिष्टमार्गेण मुक्तिदं न तु रञ्जकम् ॥
स नादस्त्वाहतो लोके रञ्जको भव-भञ्जकः ।
नादो ब्रह्म-समाख्यातं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥
आकाशाग्नि-मरुज्जीवो नाभेरूर्ध्वं समुच्चरन् ।
मुखेऽभिव्यक्ति मायाति यः स नादः प्रकीर्त्तितः ॥

तत्र [संगीतदर्पणे १।३२] चाङ्गनेयः—

नादाब्धेस्तु परं पारं न जानाति सरस्वती ।
अद्यापि मज्जन-भयात्तुम्बं वहति वक्त्रसि ॥
नादेन व्यज्यते वर्णः पदं वर्णात् पदाद्वचः ।
वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीनमतो जगत् ॥

संगीतदर्पणे (१।७—१२) रागोत्पादनकारणं—

शारीरं नादसंभूतिः स्थानानि श्रुतयस्तथा ।
ततः शुद्धाः स्वराः सप्त विकृता द्वादशाप्यमी ॥
वाद्यादिभेदाश्चत्वारो रागोत्पादनहेतवः ॥
कुलानि जातयो वर्णा द्वीपान्यार्षञ्च* दैवतम् ।
छन्दांसि विनियोगाश्च स्वराणां श्रुतिजातयः ॥
ग्रामाश्च मूर्च्छनास्तानाः शुद्धाः कूटाश्च संख्यया ॥
प्रस्तारः खण्डमेरुश्च नष्टोद्दिष्टप्रबोधकः ॥
स्वरसाधारणं जाति-साधारणमतः परम् ।
काकल्यन्तरयोः सम्यक् प्रयोगो वर्णलक्षणम् ॥
त्रिषष्टिरप्यलङ्कारास्त्रयोदशविधास्ततः ॥ इति
ग्रहांशन्यासभेदादिं वक्ष्यामहे यथाक्रमात् ।*
गीतं नादात्मकं वाद्यं नादव्यक्त्या प्रशस्यते ।
तद्द्वयानुगतं नृत्यं नादाधीनमतस्त्रयम् ॥

तत्र (१।१८—२७) शारीरविवेक-प्रसङ्गे—

गुदलिङ्गान्तरे चक्रमाधाराख्यं चतुर्दलम् ।
स्वाधिष्ठानं लिङ्गमूले षड्दलं चक्रसंज्ञकम् ॥
नाभौ दशदलं चक्रं मणिपूरकसंज्ञकम् ।
हृदयेऽनाहतं चक्रं शिवस्य प्रणवाकृतेः ॥
पूजास्थानं तदिच्छन्ति युतं द्वादशभिर्दलैः ।
कण्ठे तु भारती-स्थानं विशुद्धिः षोड़शच्छदम् ॥
तत्र षड्जादयः सप्त स्वराः सम्यक्प्रभेदतः ।
ललनाख्यं घण्टिकायां चक्रं द्वादश-पत्रकम् ॥
भ्रुमध्ये द्विदलं चक्रमाज्ञासंज्ञं मनोरमम् ।
ततोऽप्यस्ति मनश्चक्रं षड्दलं सर्वसौख्यदम् ॥
ततोऽपि षोड़शदलं सोमचक्रं प्रकीर्त्तितम् ।
चक्रं सहस्रपत्रन्तु ब्रह्मरन्ध्रे सुधाधरम् ॥
तत्सुधासारधाराभिरभिवर्द्धयते तनुम् ।
सुषुम्नया ब्रह्मरन्ध्रमारोहत्यवरोहति ॥
जीवः प्राणसमारूढो रज्वा कोलाटिको† यथा ।
ताश्च भूरितरास्तासु मुख्या प्रोक्ताश्चतुर्दश ॥
सुषुम्नेड़ा पिङ्गला च कुहूरथ पयस्विनी ।
गान्धारी हस्तिजिह्वा च वारुणाथ यशस्विनी ॥
विश्वोदरा शङ्खिनी च ततः पूषा सरस्वती ।
अलंबुषेति‡ तत्राद्यास्त्रिस्रो मुख्यतमा मताः ॥

* वर्णाद्विपान्यार्षञ्च । इति पाठान्तरम् ।

* "जातिलक्षयहांशादिभेदान् वक्ष्यामहे क्रमात् ।" इति मुद्रित-संगीत-दर्पण-पाठः ।

† रज्जाकी-ब्राटकी । इति पाठान्तरम् ।

‡ अलंबुषेति । इति पाठान्तरम् ।

एवंविधे तु देहेऽस्मिन्मल-सञ्चय-सम्वृते† ।
प्रसाधयन्ति धीमन्तो भुक्तिं मुक्तिमुपासतः ॥

तत्रैव (१।३४—३९)—

आत्मना प्रेरितं चित्तं वह्निमाहन्ति देहजम् ।
ब्रह्मग्रन्थिस्थितं प्राणं स प्रेरयति पावकः ॥
पावक-प्रेरितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपथे चरन् ।
अतिसूक्ष्मध्वनिर्नाभौ हृदि सूक्ष्मं गले पुनः ॥
पुष्टं शीर्षेऽत्वपुष्टञ्च क्वत्रिमं वदने तथा ।
आविर्भावयतीत्येवं पञ्चधा कीर्त्त्यते बुधैः ॥
कथं कण्ठः स्थितः पुष्टः स्यादपुष्टः शिरःस्थितः ।
उच्यते तत्र शिरसि सञ्चार्य्यारोह-वर्णयोः ॥
संभूतिर्न भवेद्यस्मादपुष्टः शिरसि स्थितः ।
न-कारं प्राणनामानं द-कारमनलं विदुः ।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥

अथ ब्रह्मग्रन्थेर्लक्षणं

संगीतरत्नाकरे* (१।२।१४५—१४७)—

आधाराद्यङ्गुलादूर्ध्वं मेढ्रनाद्यङ्गुलादधः ।
एकाङ्गुलं देहमध्ये तप्त-जाम्बूनद-प्रभम् ।
तत्रास्तेऽग्निशिखा तन्वी चक्रात्तस्मान्नवाङ्गुलैः ॥
देहस्य कन्दो द्युत्सेधो यन्नाभ्यां चतुरङ्गुलः ।
ब्रह्मग्रन्थिरिति प्रोक्तमस्य नाम पुरातनैः ।

अथ श्रुतिः

संगीतदर्पणे (१।५३—५६) [तथा च संगीतरत्नाकरे १।३।३७-३९]—

तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यसु षड्जगाः ।
दयावती रञ्जनी च रतिका चर्षभे स्थिता ॥
रौद्री क्रोधा च गान्धारे वज्रिकाथ प्रसारिणी ।
प्रीतिश्च मार्ज्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमाश्रिताः ॥
क्षिती रक्ता च सन्दीपन्यालापी चैव पञ्चमे ।
मदन्ती रोहिणी रम्येत्येता धैवतसंश्रयाः ॥
उग्रा च क्षोभिणीति द्वे निषादे वसतः श्रुती ।

† मलसञ्चयसम्भृते । इति वा पाठः ।

* ब्रह्मसंहितायां । इति पाठान्तरम् ।

संगीतमाधे (श्रुतीनां नामान्तराण्याह)—

सिद्धिः प्रभावती कान्ता सुभद्रा च मनोहरा ।
साधयन्ति स्वर-षड्जं प्रजापतिमुखोद्गतम् ॥
शिवा दीप्तिमती चैव ह्युग्रा चापि समुद्भवाः ।
श्रुतयः साधयन्त्येवं ऋषभं नामतः स्वरम् ॥
क्लादिनी च श्रुतिश्चेति श्रुतिश्चामृतरूपवे ।
गान्धारे साधयेतं द्वे यथाहं गुणसंयुते ॥
वीरा सर्वसहा ख्यातिर्विभूतिस्तदनन्तरम् ।
मध्यमे साधयन्त्येताः श्रुतयः पृथिवीभवाः ॥
मालिनी चपला लोला सर्वरत्ना प्रभावती ।
श्रुतयः सामपुत्रस्तु साधयिष्यन्ति पञ्चमे ॥
शान्ता विकस्विनी चैव हृदयोन्मीलनी तथा ।
धैवतं साधयन्त्येता यत्तराजविनिर्म्मितम् ॥
विस्तारिणी प्रपन्ना च निषादस्वरमुत्तमम् ।
साधयेतं श्रुती वीर-यमराज-मुखोद्गता ॥

इति श्रुतिनामानि ।

अथ मूर्च्छना

संगीतरत्नाकरे (१।४।८)—

क्रमात् स्वराणां सप्तानामारोहश्चावरोहणम् ।
मूर्च्छनेत्युच्यते ग्रामत्रये ताः सप्त सप्त च ॥

संगीतदर्पणे (१।८२—९८)—

स्थानत्रयसमायोगान्मूर्च्छनारभ्यसम्भवम् ।
तत्र मध्यस्थः षड्जेन षड्जग्रामस्य मूर्च्छना ॥
मध्य-मध्यममारभ्य मध्यमग्राममूर्च्छना ।
आद्यान्यास्तदधोऽधस्थः स्वरमारभ्यषट्क्रमात् ॥
प्रथमः षड्जग्रामः स्यात् द्वितीयो मध्यमस्तथा ।
गान्धारस्तृतीयः प्रोक्तः स्वर्गलोके च गीयते ॥
षड्जे तूत्तरमन्द्रादौ रजनी चोत्तरायता ।
शुद्धषड्जा मत्सरीकृदश्वक्रान्ताभिरुद्गता ॥
मध्यमे स्यात्तु सौवीरी हरिणाश्वा ततः परम् ।
स्यात्कलोपनता शुद्धमध्या मार्गी च पौरवी ॥
हृष्यका सप्तमी प्रोक्ता मूर्च्छनेत्यभिधा द्वमाः

नन्दा विशाला सुमुखी विचित्रा रोहिणी सुखा ।
आलापी चेति गान्धारग्रामे सुरः सप्त मूर्च्छनाः ॥

संगीतभाष्ये —

ललिता मध्यमा चित्रा रोहिणी च मतङ्गजा ।
सौवीरी मध्यमध्या च षड्जमध्या च पञ्चमी ॥
मत्सरी मृदुमध्या च शुद्धान्ता च कलावती ।
तीव्रा रौद्री तथा ब्राह्मी वैष्णवी खेचरा चरा ॥
सदावती* विशाला च त्रिषु ग्रामेषु मूर्च्छना ।
एकविंशतिरित्युक्ता मूर्च्छनाश्चन्द्रमौलिना ॥

नादपुराणे—

गोपी विस्तारिणी चैव जमाली रामिणी तथा ।
आलापिनी वयस्का च प्रमोदिनी सङ्कोचिका ॥
विहारिणी निर्मली च कामिनी च प्रलापिका ।
विनोदिनी शिखरा च लज्जा आधारिणी तथा ॥
विश्रामिणी कोमली च आनन्दी दीर्घिका तथा ।
आमोदिन्या च सहिता मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः ॥
स्वराणां निवहो ग्रामो मूर्च्छना च तदाश्रया ।
नादश्रुति-स्वरग्रामा मूर्च्छनास्तन्निवर्त्तकाः ।
स्वरा ग्रहांशन्यासाद्या ग्रामजातिक्रमादिह ॥

एतत्प्रयोजनमाह—

शिवाग्रे मूर्च्छनां कृत्वा ब्रह्मापि च विमुच्यते ।
मूर्च्छना एव तानाः सुरः शुद्धा आरोहणाश्च ताः ॥

संगीतदामोदरे (१।३५—३७)—

विस्तार्य्यन्ते प्रयोगाय मूर्च्छनाः शेषसंश्रयाः ।
तानास्तेषूनपञ्चाशत् सप्तस्वरसमुद्भवाः ॥
तेभ्य एव भवन्त्यन्ये कूटतानाः पृथक् पृथक् ।
भेदा बहुतरास्तेषां कस्तान् कस्मै न वक्ष्यति ॥
ग्रामाणां मूर्च्छनानाञ्च बहवोपि तथाभिधा ।
प्रकृतानुपयोगित्वादत्रैवालयनेतरा ॥

तदुक्तं तानाधिकारे—

तानाः पञ्चसहस्राणि त्रयस्त्रिंशद्भवन्त्यमी ।
अग्निष्टोमिकताने तु शिवंस्तुत्वा शिवो भवेत् ॥

षड्जश्चलः पञ्चमश्च ऋषभश्चलति स्वरः ।
गान्धारः पञ्चमश्चाथ निषादो धैवतश्चलः ॥
स-रि-ग-म-प-ध-नीति षड्जग्रामस्य मूर्च्छना ।
म-प-ध-नि-स-रि-गेति मध्यमग्राममूर्च्छना ॥
प-ध-नि-स-रि-गमिति गान्धार-ग्राममूर्च्छना ।

तथा च संगीतदर्पणे (१।५७—७०)—

श्रुत्यनन्तरभावित्वं यस्यानुरणनात्मकः ।
स्निग्धश्च रञ्जकश्चासौ स्वर इत्यभिधीयते ॥
स्वयं यो राजते नादः स स्वरः परिकीर्त्तितः ॥
शुद्धाः सप्तस्वरास्ते च मन्द्रादिस्थानतस्त्रिधा ।
शुद्धाः श्रुतादिभेदेन विकृता द्वादशोदिताः ॥*
चतुःश्रुतिर्यदा षड्जो द्विश्रुतिर्विकृतस्तदा ।
साधारणे च्युतः स स्यात् काकलित्वेऽच्युतः स्मृतः ॥
त्रिश्रुतिर्ऋषभः साधारणे षाड्जीं श्रुतिं श्रितः ॥
चतुःश्रुतित्वमापन्नस्तदैको विकृतो भवेत् ॥
साधारणे मध्यमश्च गान्धारस्त्रिश्रुतिर्भवेत् ।
स्वस्थान्तरत्वे भवति चतुःश्रुतिरिति द्विधा ॥
च्युताच्युतादिभेदेन मध्यमा षड्जवद्भवेत् ।
साधारणेऽन्तरत्वे च द्विश्रुतिर्विकृतस्तदा ॥
पञ्चमो मध्यमग्रामे त्रिश्रुतिर्जायते स्वरः ।
मध्यमश्च श्रुतिं प्राप्य कैशिके तु चतुःश्रुतिः ॥
धैवतो मध्यमग्रामे विकृतः स्याच्चतुःश्रुतिः ॥
कैशिके काकलीत्वे च निषादस्त्रिश्चतुःश्रुतिः ।
एतैश्च सप्तभिः शुद्धैर्भवन्त्येकोनविंशतिः ॥
वाद्यादिभेद-भिन्नाश्चतुर्विधास्ते स्वराः कथिताः ।
रागोत्पादनशक्तेर्वदनं तद्योगतो वादी ॥
(बहुलस्वरः प्रयोगे भवति राजा च सर्वेषाम् ।)
श्रुतयोऽष्टौ द्वादश वा भवन्ति मध्ये ययोः स्वरयोः ॥
संवादिनौ तु कथितौ परस्परं तौ निषादगान्धारौ ।
ऋषभयोर्विवादिनौ स्तस्तयोरधो वा विवादिनौ स्याताम् ॥

* मदोवती । इति वा पाठः ।

* "च्युताच्युतादिभेदेन विकृता द्वादशोदिताः ॥" इति संगीतदर्पणधृत पाठः ।

तत्रैव (१।७३-७४)—

शेषाणामनुवादित्वं स्वराणामुपजायते ।
वादी राजा स्वरस्तस्य संवादी स्यादमात्यवत् ।
शत्रुर्विवादी तस्य स्यादनुवादी तु भृत्यवत् ॥

तथा चाञ्जनेयः—

स्वराश्चतुर्विधा प्रोक्तास्तत्र वादी स कथ्यते ।
प्रचुरोऽयं प्रयोगेषु व्यक्ति रागादिनिश्चये ॥
स श्रुतिः स्यात्तु संवादी पञ्चमस्य समः क्वचित् ।
प्रतिविवादिनौ स्यातां रिधयौ वा तु तौ ययोः ॥
अनुवादी भवेदेष य प्रयोगेषु दुर्लभः ।
सेनारागादिप्रचुरो बहुल-पञ्चनिश्चयः ॥
कथ्यते बहुधायुक्तो रागादिकोप्यनिर्णयः ।
स्वरैर्विवादीकुरुते यच्चमस्य समश्रुतिः ॥

य स्वरेषु संवादी क्वचिन्मतेऽन्यभेदः निषाद गान्धारौ रिधयौ वादिनौ इनुमन्यते।

संगीतमहोदधौ (१।५६—५९) [संगीतदर्पणे १।७४—७८]—

वादी नृपस्वरस्तस्य संवादी स्यादमात्यवत् ।
(शत्रुर्विवादी तस्य स्यादनुवादी तु भृत्यवत् ॥)
ग्रामः स्वरसमूहः स्यान्मूर्च्छनादेः समाश्रयः ।
तौ द्वौ धरातले तत्र स्यात् षड्जग्राम आदिमः ॥
द्वितीयो मध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते ।
षड्जग्रामः पञ्चमश्च चतुर्थश्रुतिसंस्थिते ॥
स्वोपान्त्यश्रुतिसंस्थेऽस्मिन्मध्यमग्राम इष्यते ।
यद्वा धस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ॥

संगीतरत्नाकरे—

चतस्रः षड्जमं षड्जे मध्यमे श्रुतयो मताः ।
ऋषभे धैवते तिस्रः द्वे गान्धारे निषादके ॥

तत्रैव (१।२।५९—६७)—

प्राणापानौ तथा व्यान-समानोदानसंज्ञकाः ।
नागः कूर्मश्च ककरो देवदत्तो धनञ्जयः ॥
(दशेति वायुविकृतिस्तथा गच्छति लाघवम् ।)
तेषां मुख्यतमः प्राणो नाभिकन्दादधःस्थितः ।
चरत्यास्ये नासिकयोर्नाभौ हृदयपङ्कजे ॥
शब्दोच्चारणनिःश्वासोच्छ्वासकासादिकारणम् ।
अपानस्तु गुदे मेढ्रे कटिजङ्घोदरेषु च ।
(नाभिकन्दे वङ्क्षणयोरूरुजानुषु तिष्ठति ॥
अस्य मूत्रपुरीषादिविसर्गः कर्म कीर्त्तितम् ।)
व्यानोऽक्षिश्रोत्रगुल्फेषु कट्यां घ्राणे च तिष्ठति ।
समानो व्याप्य निखिलं शरीरं वह्निना सह ॥
(द्विसप्ततिसहस्रेषु नाड़ीरन्ध्रेषु संचरन् ।
भुक्तपीतरसान् सम्यगानयन् देहपुष्टिकृत् ॥)
उदानपादयोरास्ते हस्तयोरङ्गसन्धिषु ।
त्वगादिधातुनाश्रित्य पञ्च नागादयः स्थिताः ॥

तत्रैव (१।२।७८)—

त्वगसृग्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ॥

तथा च संगीतदर्पणे (१।४८—५२)—

हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिसंस्थितः ।
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्व्वशरीरगः ॥
इति वस्तुस्थितिस्तावद्गात्रे त्रेधा भवेदसौ ।
हृदि मन्द्रो गले मध्यो मूर्द्ध्नि तार इति क्रमात् ॥
द्विगुणः पूर्वपूर्वस्मादयं स्यादुत्तरोत्तरः ।
एवं शरीरवीणायां दारव्यान्तु विपर्ययः ॥
स्वरूपमात्रश्रवणान्नादोऽनुरणनं विना ।
श्रुतिरित्युच्यते भेदास्तस्या द्वाविंशतिर्मताः ॥
तदभिव्यक्तये नाड़ी स्थितिर्देहे निरूप्यते ।
इड़ा वामे स्थिता नाड़ी दक्षिणे पिङ्गला तथा ।
हृदि नाड़ी सुषुम्ना च ब्रह्मरन्ध्रावधि स्थिता ॥

नारदसंहितायां (२।४९—६१)—

आकाशसम्भवो नादस्तथानाहत उच्यते ॥
आहतनादमाकृष्य तथानाहतसंज्ञकात् ।
तन्नादं सप्तधाकार्षीत् तस्य तु जातिभिः स्वरैः ॥
आद्यः कायभवो वाणी सम्भवस्तु द्वितीयकः ।
तृतीयश्चापि वंशादिसम्भवः स त्रिधा मतः ॥
एवं बहुभिराचार्य्यैर्नादस्तु बहुधोदितः ।
षड्जर्षभौ च गान्धारो मध्यमः पञ्चमस्तथा ॥

धैवतश्च निषादश्च स्वराः सप्त प्रकीर्त्तिताः ।
आत्मा च स-स्वरः प्रोक्तो शिरो रि-स्वर उच्यते ॥
हस्तौ गान्धारसंप्रोक्तौ वक्षःस्थान्मध्यमस्वरः ।
कण्ठस्तु पञ्चमः प्रोक्तः कटिर्धैवत-संज्ञकः ।
पादौ निषाद एव स्यात् सप्ताङ्गा मूर्च्छना भवेत् ॥
मयूरः षड्जमाख्याति ऋषभं व्यक्ति चातकः ।
छागो गान्धारमाचष्टे क्रौञ्चो वदति मध्यमम् ॥
कोकिलः पञ्चमं ब्रुते मेषो वदति धैवतम् ।
निषादं भाषते हस्ती खेरतद्वह्मादिसम्मतम् ॥
मयूर-वृषभ-मेष-काक-कोकिल-वाजिनः ।
मातङ्गाश्च क्रमेणाहुः स्वरानेतान् सुदुर्गमान् ॥
आरोही वृषभो व्यक्तिश्चावरोही च केशरी ।
व्याहारस्त्रिषु लोकेषु स्वारोही भगवान् स्वयम् ॥
औड़वः पञ्चभिः प्रोक्ता स्वरैः षड्भिस्तु षाड़वः ।
संपूर्णाः सप्तभिः प्रोक्ता रागजातिस्त्रिधा मता ॥
संप्रोक्तः प्रथमो नादः पञ्चाद्देदाः समुद्भवाः ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः ॥
संप्रदायानुसारेण भिन्नभिन्नं प्रगीयते ॥

अथालङ्काराः

सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसा—
सानिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा ॥
अथारोह्यवरोही च स्वरालापः प्रस्तारकः ।
जनपञ्चाशत्कोटितानत्रयभेदाश्च कथ्यते ॥

अथ स्वरालाप-पलटाप्रस्तारः

सारेगमपधनि १ सानिधपमगरेसा ॥ २ ॥
सारेसारेग १ रेगरेगम २ गमगमप ३ मपमपध ४
पधपधनि५ धनिधनिसा६ सानिसानिध७ निधनिधप८
धपधपम८ पमपमग१० मगमगरे११ गरेगरेसा१२
सारेगसारेगम १३ रेगमरेगमप १४ गमपगमपध१५
मपधमपधनि १६ पधनिपधनिसा १७
सानिधसानिधप १८ निधपनिधपम १८
धपमधपमग २० पमगपमगरे २१
मगरेमगरेसा २२ सारेगसारेगसारेगम २३
रेगमरेगमरेगमप २४ गमपगमपगमपध २५
मपधमपधमपधनि २६ पधनिपधनिपधनिसा २७
सानिधसानिधसानिधप २८ निधपनिधपनिधपम २८
धपमधपमधपमग ३० पमगपमगपमगरे ३१
मगरेमगरेमगरेसा३२ सासारेसारे३३ रेरेगरेग३४
गगमगम ३५ ममपमप ३६ पपधपध ३७
धधनिधनि ३८ निनिसानिसा ३८ सासानिसानि ४०
निनिधनिध ४१ धधपधप ४२ पपमपम ४३
ममगमग ४४ गगरेगरे ४५ रेरेसारेसा ४६ ॥

प्रथमः सप्तकः

सारेगमपधनिसारेगम ४७ निधपमगरेसा ४८ ॥

द्वितीयः सप्तकः

सारेगमपधनिसारेग ४८ निधपमगरेसा ५० ॥

तृतीयः सप्तकः

सारेगमपधनिसारे ५१ निधपमगरेसा ५२ ॥

अथ स्वरप्रस्तारः

धनिसारेगमपधनिसा ५३ निसारेगमपधप ५४
सारेगमपधनिसारे ५५ रेगमपधनिसारेग ५६
गमपधनिसारेगम ५७ मपधनिसारेगमप ५८
पधनिसारेगमपध ५८ पधनिसारेगम ६०
सासापपरेरेनिनिगग ६१ निगपरेसाधम ६२
धगमनिरेपसा६३ पनिगधरेसा ६४ निपरेमगधसा६५
रेपगमधसानि ६६ गनिधगसारेम ६७
परेगधसानिमगसा ६८ सारेसा ६८ सारेगरेसा ७०
सारेगमगरेसा ७१ सारेगमपमगरेसा ७२
सारेगमपधपमगरेसा७३ सारेगमपधनिधपमगरेसा७४
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ७५ सानिसा ७६
सानिधनिसा ७७ सानिधपधनिसा ७८
सानिधपमपधनिसा ७८ सानिधपमगमपधनिसा ८०
सानिधपमगरेगमपधनिसा ८१
सानिधपमगरेसारेगमपधनिसा ८२ ॥

अथ तानप्रस्तारः

सा १ ॥ सारे १ रेसा २ ॥—

सारेग१ रेसाग२ गसारे३ गरेसा४ सागरे५ रेगसा६ ॥

सारेगम १ रेसागम २ मसारेग ३ सामरेग ४
गमसारे ५ मगसारे ६ गमरेसा ७ गरेमसा ८
मसारेग ९ सागरेम १० रेमसाग ११ मरेसाग १२
सागमरे १३ सामरेग १४ मरेगसा १५ रेमगसा १६
रेगसाम १७ गरेसाम १८ सारेमग १९ रेसामग २०
मसागरे२१ सामगरे२२ मरेगसा२३ मगरेसा२४ ॥—
सारेगमप १ रेसागमप २ मसारेगप ३ सामरेगप ४
गमसारेप ५ मगसारेप ६ गमरेसाप ७ गरेमसाप ८

मसारेगप ९	सागरेमप १०	रेगसामप	११
मरेसागप १२	सागमरेप १३	सामरेगप	१४
मगरेसाप १५	रेमगसाप १६	रेगसामप	१७
गरेसामप १८	सारेमपग १९	रेसामगप	२०
मसागरेप २१	सामगरेप २२	मरेगसाप	२३
मगरेसाप २४	सारेगपम २५	रेसागपम	२६
मसारेपग २७	सामरेपग २८	गमसापरे	२९
मगसापरे ३०	गमरेपसा ३१	गरेमपसा	३२
मसारेपग ३३	सागरेपम ३४	मरेगसाप	३५
मरेसापग ३६	सागमपरे ३७	सामरेगप	३८
मरेगपसा ३९	रेमगपसा ४०	रेगसापम	४१
गरेसापम ४२	सारेमपग ४३	रेसामपग	४४
मसागपरे ४५	सामगपरे ४६	मरेगपसा	४७
मगरेपसा ४८	सारेपगम ४९	रेसापगम	५०
मसापरेग ५१	सामपरेग ५२	गमपसारे	५३
मगपसारे ५४	रेगमपसा ५५	गरेपमसा	५६
गसापरेम ५७	सागपरेम ५८	रेगपसाग	५९
मरेपसाग ६०	सागपमरे ६१	सामपरेग	६२
मरेपगसा ६३	रेमपगसा ६४	रेगपसाम	६५
गरेपसाम ६६	सारेपमग ६७	रेसापमग	६८
मसापगरे ६९	सामपमरे ७०	मरेगपसा	७१

मगपरेसा ७२	सापरेगम ७३	रेपसागम	७४
मपसारेग ७५	सापमरेग ७६	गपमसारे	७७
मपगसारे ७८	रेपमगसा ७९	गपरेमसा	८०
मपसारेम ८१	सापगरेम ८२	रेपमसाग	८३
गपरेसाग ८४	सापगमरे ८५	मपरेगसा	८६
रेपमगसा ८७	रेपगसाम ८८	गमरेसाम	८९
सापरेमग ९०	रेपसामग ९१	मपसागरे	९२
सपमगरे ९३	मरेपगसा ९४	मपगरेसा	९५
पसारेगम ९६	परेसागम ९७	रेपमगसा	९८
पगमरेसा ९९	पमसारेग १००	पसागरेम	१०१
परेमसाग १०२	पमरेसाग १०३	पसागमरे	१०४
पमरेगसा १०५	परेमगसा १०६	परेगसाम	१०७
पगरेसाम १०८	पसारेमग १०९	परेसामग	११०
पमसागरे १११	पसमगरे ११२	पमरेगसा	११३

पमगरेसा	११४	सारेगमपध	११५
रेसागमपध	११६	मसारेगपध	११७
सामरेगपध	११८	गमसारेपध	११९
मगसारेपध	१२०	गमरेसापध	१२१
गरेमसापध	१२२	मसारेगपध	१२३
सागरेमपध	१२४	रेमसागपध	१२५
मरेसागपध	१२६	सागमरेपध	१२७
सामरेगपध	१२८	मरेगसापध	१२९
रेमगसापध	१३०	रेगसामपध	१३१
गरेसामपध	१३२	सारेमगपध	१३३
रेसामगपध	१३४	मसागरेपध	१३५
सामगरेपध	१३६	मरेगसापध	१३७
मगरेसापध	१३८	सारेगमधप	१३९
रेसागमधप	१४०	मसारेगधप	१४१
सामरेगधप	१४२	मसारेगधप	१४३
मगसारेधप	१४४	गमरेसाधप	१४५
गरेमसाधप	१४६	मसारेगधप	१४७
सागरेमधप	१४८	रेगसामधप	१४९
मरेसागधप	१५०	सागमरेधप	१५१

सामरेगधप १५२ मगरेसाधप १५३
रेमगसाधप १५४ रेगसामधप १५५
गरेसामधप १५६ सारेमगधप १५७
रेसामगधप १५८ मसागरेधप १५९
सामगरेधप १६० मरेगसाधप १६१
मगरेसाधप १६२ सारेगमधप १६३
सारेगधमप १६४ रेसागधमप १६५
मसारेधगप १६६ धामरेधगप १६७
गमसाधरेप १६८ मगमाधरेप १६९
गमरेधसाप १७० गरेमधसाप १७१
मसारेधगप १७२ सागरेधमप १७३
रेगसाधमप १७४ गरेसाधमप १७५
सारेमधगप १७६ गरेसाधमप १७७
सामगधरेप १७८ मगरेधसाप १७९
सारेगधपम १८० रेसागधपम १८१
सारेगधपम १८२ रेसागधपम १८३
मसारेधपग १८४ सामरेधपग १८५
गमसारेधप १८६ मगसाधपरे १८७
गमरेधपसा १८८ गरेमधपसा १८९
मसारेधपग १९० सागरेधपम १९१
रेगसाधपम १९२ मरेसाधपग १९३
सागमधपरे १९४ सामरेधपग १९५
मरेगधपसा १९६ मगरेधपसा १९७
मगरेपधसा १९८ सारेगमपधनि १९९
रेसागमपधनि २०० मसारेगपधनि २०१
सामरेगपधनि २०२ गमसारेपधनि २०३
मगसारेपधनि २०४ गमरेसापधनि २०५
गरेमसापधनि २०६ मसारेगपधनि २०७
सागरेमपधनि २०८ रेमसागपधनि २०९
मरेसागपधनि २१० सागमरेपधनि २११
सामरेगपधनि २१२ मरेगसापधनि २१३
रेमगमापधनि २१४ रेगसामपधनि २१५
गरेसामधनि २१६ सारेमगधनि २१७

रेसामगपधनि २१८ मसागरेपधनि २१९
सामगरेपधनि २२० मरेगसापधनि २२१
मगरेसापधनि २२२ सारेगमधपनि २२३
रेसागमधपनि २२४ मसारेगधपनि २२५
सामरेगधपनि २२६ गमसारेधपनि २२७
मगसारेधपनि २२८ गमरेसाधपनि २२९
गरेमसाधपनि २३० मसारेगधपनि २३१
सागरेमधपनि २३२ रेमसागधपनि २३३
मरेसागधपनि २३४ सागमरेधपनि २३५
सामरेगधपनि २३६ मरेगसाधपनि २३७
रेमगसाधपनि २३८ रेगसामधपनि २३९
गरेसामधपनि २४० सारेमगधपनि २४१
रेसामगधपनि २४२ मसागरेधपनि २४३
सामगरेधपनि २४४ मरेगसाधपनि २४५
मगरेसाधपनि २४६ सारेगधमपनि २४७
रेसागधमपनि २४८ धमसारेगधपनि २४९
सामरेगधपनि २५० सागधमरेपनि २५१
साधमरेपनि २५२ रेगधमपनि २५३
धसारेगमपनि २५४ धरेसागमपनि २५५
धगमसारेपनि २५६ धमगसारेपनि २५७
धगमरेसापनि २५८ धगरेमसापनि २५९
धमसारेगपनि २६० धसामरेगपनि २६१
धगमसारेपनि २६२ धमगरेसापनि २६३
धगमरेसापनि २६४ धगरेमसापनि २६५
धमसारेगपनि २६६ धसागरेमपनि २६७
धरेमसागपनि २६८ धमरेसागपनि २६९
धसागरेमपनि २७० धरेमसागपनि २७१
धगरेसागपनि २७२ धसागमरेपनि २७३
धरेमसागपनि २७४ धसामरेगपनि २७५
धमरेगसापनि २७६ धरेमगसापनि २७७
धरेगसामपनि २७८ धगरेसामपनि २७९
धसारेमगपनि २८० धरेसामगपनि २८१
धमसागरेधनि २८२ धसारेमगधनि २८३

धरेसासगपनि २८४ धमसागरेपनि २८५
धसामगरेपनि २८६ धमरेगसापनि २८७
धमगरेसापनि २८८ धसारेमपनि २८९
धरेसामगपनि २९० धमसागरेपनि २९१
धसामगरेपनि २९२ धमरेगसापनि २९३
धमगरेसापनि २९४ सारेगपनिधम २९५
रेसागपनिधम २९६ मसारेगपनिधम २९७
गसारेपनिधम २९८ रेगसापनिधम २९९
सागरेपनिधम ३०० गमरेपनिधम ३०१
रेमसापनिधम ३०२ गसापनिरेधम ३०३
मगसापनिरेम ३०४ गसापनिरेधम ३०५
सारेगमपधनिसा ३०६ रेसागमपधनिसा ३०७
मसारेगपधनिसा ३०८ सामरेगपधनिसा ३०९
गमसारेपधनिसा ३१० गरेमसापधनिसा ३११
मसागरेपधनिसा ३१२ ॥

अथ औडवः

सागसाधसागमधनिधमगसा ३१३
निधमगनिधमगसा ३१४
सासागनिधधगमसा ३१५ ॥

अथ षाडवः

सागपगसानिधपगमनिसा ३१६
मसापनिधमगसा ३१७
धधपमपनिसाधगसा ३१८
निधमगपगसासाधगमपनिसा ३१९
निनिधधपपममगसा ३२० ॥

अथ सम्पूर्ण-तानः

सामरेगमधपनिरेसाधगसा ३२१
धरेनिधपगसामगरेधगपरेनिसा ३२२
मगरेसानिपधरेसामधरेसा ३२३
सासारेरेगगसमपपधधनिनिसासा ३२४
सासानिनिधधपपममगगरेसा ३२५ ॥

इति श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-रागसागरोद्भव-रागकल्पद्रुमे तानविवक-
श्रुतिमूर्च्छनास्वरप्रस्ताराध्यायः सम्पूर्णः ।

अथ रागविवेकाध्यायः

प्रणम्य परमात्मानं शिवब्रह्मादिकं ततः ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थो रागरागिणयदाहृतः ॥
संगीतशास्त्रे अमराख्यनन्द-
व्यासात्मजो होरकनन्दव्यासः ।
श्रीकृष्ण-आनन्द यदात्मजोऽयं
स एव सर्वं वितनोतु रागान् ॥
संगीतशास्त्रज्ञ-परात्मवादी
वीणादियावत् सुसमिच्छ सर्वम् ।
कल्पद्रुमो राग-सुसङ्गीताख्यो
तेनैव धृत्वा विततेस्म मूर्खान् ॥

अथ हनुमन्मतानुसारेण रागरागिण्यः ।

बृहत्संगीतरत्नाकरे *—

नारद उवाच ।

के रागाः काश्च रागिण्यः का वेला ऋतवश्च के ।
किं रूपं कथमुद्धारो वद देव ! प्रसादतः ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भैरवो मालकोशश्च हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षड़ेते पुरुषाः स्मृताः ॥

मतान्तरे च

वसन्तो बृहन्नाटश्च मल्लारो मालवस्तथा ।
प्रदीपः कौशिकश्चैव षड़ेते पुरुषाह्वयाः ॥

अथ भैरवरागस्त्रियः

भैरवी गुर्ज्जरी चैव टोड़ी रामकेली तथा ।
वराटी चैव संयुक्ता भैरवस्य वराङ्गनाः ॥
देशी रामगिरी चैव देशकारी विभाषिका ।
आशावरी पुनर्ज्ञेया भैरवस्य प्रिया इमाः ॥

अथ मालकोशस्त्रियः

वागीश्वरी च ककुभा पर्य्यङ्का शोभनी तथा ।
खम्भावती पुनर्ज्ञेया मालकोशस्य वल्लभाः ॥

* संगीतदर्पणे रागाध्याये पार्वतीश्वरसंवादे दर्शयति ।

तथा सङ्गीतमहोदधौ (२।१५)—

कौशिकी देवगिरी च वखारी मोहनी तथा ।
लीलाम्बरी पुनर्ज्ञेया कौशकस्य वराङ्गनाः ॥

अथ हिन्दोलरागस्त्रियः

वेलावली च भूपाली मालश्रीः पटमञ्जरी ।
ललिता सहिता एता हिन्दोलस्य वराङ्गनाः ॥

सङ्गीतार्णवे (२।३६)—

हिन्दोली गुणक्री चैव अलैया श्यामगिरिका ।
वैदिका चैव संयुक्ता हिन्दोलस्य प्रिया इमाः ॥

अथ दीपकरागस्त्रियः

प्रदीपिका धनाश्री च जयतश्रीः पलाशिका ।
विहागातु पुनर्ज्ञेया दीपकस्य वराङ्गनाः ॥

सङ्गीतसंहितायां (२।३५ ३६)—

केदारी कानूहड़ी चैव पुरीयाभोरिका तथा ।
मूलतानी पुनर्ज्ञेया दीपकस्य प्रिया इमाः ॥

अथ श्रीरागस्त्रियः

मालवी त्रिवणी गौरी गौरा पूर्वी तथव च ।
रागिण्यो रागराजस्य श्रीरागस्य वराङ्गनाः ॥

सङ्गीतसारे (२।५)—

एमनी टङ्की संयुक्ता माली गौरा तथैव च ।
नागध्वनी चैतिका च श्रीरागस्य प्रिया इमाः ॥

अथ मेघस्त्रियः

मल्लारी सौरठी चैव मारङ्ग वड़हंसिका ।
मध्यमादि पुनर्ज्ञेया मेघरागस्य योषितः ॥

सङ्गीतचन्द्रिकायां (२।३८)—

कामोदी लङ्कदोहिनी सावन्ती च वङ्गालिका ।
तथा जयजयन्ती च मेघरागस्य वल्लभाः ॥

इति श्रीइन्द्रप्रस्थीय-युधिष्ठिर-श्रीकृष्णमतानुयायि-उद्धत-संगीतरत्नाकरे
हनुमन्मतानुसारेण रागरागिण्यः ॥

अथ मतान्तरे संगीतदर्पणे—

मध्यमादि भैरवी च वङ्गाली च वराटिका ।
सैन्धवी च पुनर्ज्ञेया भैरवस्य वराङ्गनाः ॥
टोड़ी खम्भावती गौरी गुणक्री ककुभा तथा ।
रागिण्यो रागराजस्य कौशकस्य वराङ्गनाः ॥
वेलावली रामकली देशाख्या पटमञ्जरी ।
ललिता सहिता एता हिन्दोलस्य वराङ्गनाः ॥
कनूहड़ी देशकारी च कामोदी नाटिका पुनः ।
केदारी दीपका चैव प्रियाः पञ्च इमाः स्मृताः ॥
वसन्ती मालवी चैव माधवी श्रीधनाश्रिकाः ।
आशावरी तु विज्ञेया श्रीरागस्य वराङ्गनाः ॥
मल्लारी सोरठी चैव भूपाली गुर्ज्जरी तथा ।
टङ्का च पञ्चमी भार्य्या मेघरागस्य योषितः ॥*

अथ वसन्तरागस्त्रियः

वसन्ती पञ्चमी दौली वहारी रूपमञ्जरी ।
रागिण्यो ऋतुराजस्य वसन्तस्य प्रियाः इमाः ॥
सरस्वती प्रभावती सुखावती तथैव च ।
मानमञ्जरी विजया च वसन्तस्य वराङ्गनाः ॥

अथ नटनारायणस्त्रियः

गुण्डग्री नाटिका गारा सैन्धवी माधवी तथा ।
बृहन्नाटप्रियाः प्रोक्ताः सङ्गीत-परिभाषिताः ॥

---

* "मालश्री त्रिवणी गौरी केदारी मधुमाधवी ।
तत: पाहाड़िका ज्ञेया श्रीरागस्य वराङ्गना: ॥
देशी देवगिरी चैव वराटी तोड़िका तथा ।
ललिता चाथ हिन्दोली वसन्तस्य वराङ्गना: ॥
भैरवी गुर्ज्जरी रामकिरी गुणकिरी तथा ।
वाङ्गाली सैन्धवी चैव भैरवस्य वराङ्गना: ॥
विभाषा चाथ भूपाली कर्णाटी वड़हंसिका ।
मालवी पटमञ्ज्यौ महैता: पञ्चमाङ्गना: ॥
मल्लारी सौरटी चैव सावेरी कौशिकी तथा ।
गान्धारी हरशृङ्गारा मेघरागस्य योषित: ॥
कामोदी चैव कल्याणी आभीरी नाटिका तथा ।
सारङ्गी नट्टहम्वीरा नट्टनारायणाङ्गना: ॥"

इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृत-पाठ: (२।१४—१९) ।

कोलाहली गौरुडगिरि गंभारी सिन्दरी तथा ।
नटमल्लारी संयुक्ता नटनारायणप्रियाः ॥

अथ भरतमतानुसारेण [संगीतदर्पणे २।१३]—

श्रीरागोऽथ वसन्तश्च भैरवः पञ्चमस्तथा ।
मेघरागो ह्यहन्नाटः षड़ेते पुरुषाह्वयाः ॥

इत्यादि अनेकमतरागरागिण्यः ।

इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं नयुरागमवारिधेः ।

तत्र [संगीतदर्पणे १।३२] चाञ्चनेयः—

नादाब्धेस्तु परं पारं न जानाति सरस्वती ।
अद्यापि मज्जनभयात् तुम्बं वहति वक्त्रसि ॥

यद्यपि बहवो भेदाः सन्ति इदमेव बलि-युधिष्ठिर-श्रीकण्ठोक्त मतभेदत्रयम् ॥

अथ रागपुत्राः

अथ भैरवपुत्राः

नारदसंगीते—

षड्रागो रामरागश्च मधु-गान्धार-हर्षकाः ।
तथा वङ्गालदेशाख्यो विभासो भैरवात्मजाः ॥

सङ्गीतसिन्धौ—

देव-गान्धार-आशाश्च भैरवस्य सुता इमे ।

अथ मालकौशपुत्राः

माधवः शोभनः सिन्धु-मारु-मेवाड़-कुन्तलाः ।
कलिङ्गः सोमः संयुक्तः कौशिकस्य सुता इमे ॥

सङ्गीतरत्नमालायां—

विहार-लीलरङ्गश्च कौशिकस्य सुता इमे ।

अथ हिन्दोलपुत्राः

आभीरः शुभ्र-धवलो चन्द्रकाम्बविमोहकाः ।
चन्द्रकान्तः स्नेहो वेदः हिन्दोलात्मजकीर्त्तिताः ॥

सङ्गीत-पारिजाते—

गुणसागर-गम्भीरा हिन्दोलात्मजकीर्त्तिताः ॥*

अथ दीपकपुत्राः

सूहा च नायका जना शङ्करा कान्हड़ा तथा ।
विहागड़ा नाटः केदारा दीपकस्य सुता इमे ॥

शिवसंगीते—

प्रदीप-शङ्कराभरण-दीपकात्मजकीर्त्तिताः ॥

अथ श्रीरागपुत्राः

मारवाः पूरवाः श्यामो हेम-चेम-छम्मिरिकाः ।
भूपालो जैतसश्चैव श्रीरागस्य सुता इमे ॥

सङ्गीतसाहित्ये—

कल्याणा ध्यानकल्याणाः श्रीरागस्य सुता इमे ।

अथ मल्लारपुत्राः

मल्लार-गौड़-कर्णाट-जलधर-मलाहकाः ।
तैलङ्ग-कमल-कुसुमा मेघपुत्रा इमे स्मृताः ॥

सङ्गीतभाष्ये—

मेघनाटश्च मेवन्त-सावन्त-लूम-लग्नकाः ।
वङ्गाल-नाट-भूपश्च मेघराग-सुता इमे ॥

अथ वसन्तरागपुत्राः

वासन्तः पञ्चम-चम्पक-विहारी भ्रमरस्तथा ।
पञ्चाल अङ्ग-वङ्गश्च वसन्तस्य सुता इमे ॥

अथ नटनारायणपुत्राः

छायानाट-देशनाट-नाटकेदार-सौरवाः ।
राजहंस-रक्तहंस-रेव-कुब्जाः नटात्मजाः ॥

अथ प्रदीपपुत्राः

कोलाहल-विजयश्च आन्ध्रा कोङ्कन-निवारिकाः ।
वैराट-वर्द्धन-भोमः प्रदीपस्य सुता इमे ॥

अथ देवगान्धारपुत्राः

गान्धारः किन्नरः क्रान्तमङ्गलः बहुलः वरः ।
गुणः हीरः गम्भीरश्च गान्धारस्य सुता इमे ॥

अथ कल्याणपुत्राः

हिमालः वल्लभो वीरः जङ्गालश्च कलिन्दरः ।
मुकुन्दः सुरु-सामरश्च कल्याणतनुजाः स्मृताः ॥

इति रागपुत्राः ।

* मुद्रित संगीतपारिजाते इदम्-श्लोकाभावः ।

चन्द्रराग-सूर्य्यराग-शक्तिरागस्तथैव च ।
गणेशः क्षेत्रपालश्च विष्णुवल्लभ-हनुमतः ।
शक्तिः लक्ष्मीः सरस्वती देवलोके च गीयते ॥
षोड़श-सहस्र-भिन्नभिन्नरागरागिणी ईरितः ।
वृन्दावने रासक्रीड़ायां एकैकश्रीकृष्णसन्निधौ ॥

रागरागिणी स्तुतिरूपा गोपाङ्गना, ऋषिरूपा देवरूपा नित्यसिद्धा भिन्न-भिन्न-रागरागिणी। पृथक् पृथक् तालः—एकताली१ आदिताली२ धमारताल ३ यतिताल ४ रूपकताल ५ बे वड़ा ६ जलदतितारा ७ धीमातितारा ८ सुलफाक्ता ९ झपतारा १० आड़चौतारा ११ बड़चौतारा १२ पठताल १३ ब्रह्मताल १४ रुद्रताल १५ विष्णुताल१६ लक्ष्मीताल १७ अष्टताल १८। इत्यादिरासमण्डली नृत्यसमय-प्रकाशितं सवारीफरोदस्त दुवहरकेद पञ्चम-सवारी पस्तो इत्यादि लोके प्रसिद्धमाह ।*

अथ रागस्त्रियः

अथ षड़्रागस्त्रियः

श्यामा शैवी च भौमी च नागध्वनी तथैव च ।
आनन्दा च पुनर्ज्ञेयाः षड़्रागस्य वराङ्गनाः ॥

अथ रामरागस्त्रियः

रामा रमणी रङ्गिका केली कौमारिका तथा ।
भैरवात्मजरामस्य इमा भार्य्या प्रकीर्त्तिताः ॥

अथ मधुररागस्त्रियः

माधुरी मोहिनी चैव रेवती मिष्टिका तथा ।
लीलाम्बरी पुनर्ज्ञेया मधुरागस्य वल्लभाः ॥

अथ गान्धाररागस्त्रियः

गान्धारी गान्धवी चैव कोकिला कामवर्द्धिनी ।
योगीया तु पुनर्ज्ञेया गान्धारस्य प्रिया इमाः ॥

अथ हर्षरागस्त्रियः

हार्षिकी च मनोहारी वैदी च मेघरञ्जिका ।
कामकेली तथा ज्ञेया हर्षरागस्य योषितः ॥

अथ वङ्गालरागस्त्रियः

मृगिणी-मनोरञ्जिन्यौ प्रतापी हंसिका वरी ।
वङ्गालो भैरवपुत्रस्तस्य भार्य्याः प्रकीर्त्तिताः ॥

अथ देशाख्यस्त्रियः

देवनाटी देवक्री च वर्हनी च विनोदिका ।
विलासी तु पुनर्ज्ञेयाः देशाख्यस्य वराङ्गनाः ॥

अथ विभासस्त्रियः **

विभासी श्रीहटी प्राची आन्ध्री च वल्लिका तथा* ।
विभासस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ मालकोश-पुत्रस्त्रियः—

अथ माधवस्त्रियः

माधुरी मौनिका शुद्धा विचित्रा मनोहारिणी ।
माधवस्य प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिभाषिताः ॥†

अथ शोभनरागस्त्रियः

शोभनी चन्द्रकाशी च प्रेमानन्दी तथैव च ।
आह्लादी मोदिनी एताः शोभनस्य वराङ्गनाः ॥

अथ सिन्धुरागस्त्रियः

सिन्धुरी सागरी चैव शास्त्रिका सुखकारिणी ।
श्यामगिरि पुनर्ज्ञेया पञ्चैताः सिन्धुवल्लभाः ॥‡

अथ मारारागस्त्रियः

मारणी पुष्पकी पद्मा लावण्या मन्मथा तथा ।
पञ्चैता वल्लभास्तस्य मारारागस्य कीर्त्तिताः ॥

अथ कुन्तलरागस्त्रियः

कुन्तली कोहली चैव कैलाशी कामिनी तथा ।
कटाक्षाख्या च संयुक्ता कुन्तलस्त्री प्रकीर्त्तिताः ॥

अथ कलिङ्गस्त्रियः ।

कलिङ्गी कुसुमी तारा जयन्ती काञ्चली तथा§ ।
कलिङ्गस्य प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिकीर्त्तिताः ॥

---

* "संगीतभाष्ये" इत्यारभ्य "प्रसिद्धमाह" इत्यन्तं नागराक्षरमुद्रिते पुस्तके नास्ति ।

** सुभासः । इति पाठान्तरम् ।

* अलैयका । इति पाठान्तरम् ।

† कौशिकात्मजप्रथमस्य माधवस्य वराङ्गनाः ॥ इति वा पाठः

‡ सामेरी तु पुनर्ज्ञेया पञ्चैताः सिन्धुवल्लभाः ॥ इति वा पाठः ।

§ मानमञ्जरी । इति पाठान्तरम् ।

अथ सोमरागस्त्रियः

सोमी श्यामा स्वरूपा च शैलिका ईश्वरी पुनः ।
सोमरागप्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ हिन्दोलपुत्रस्त्रियः

आभीररागस्त्रियः

आभीरी वोषिका घण्टा गम्भीरी च सुमेरिका ।
आभीरस्त्री समाख्याता मुनिना भरतेन वै ॥

अथ शुभ्ररागस्त्रियः

शुभ्री च गन्धिका आरा गुण्डी गर्भा तथैव च ।
शुभ्रस्य वल्लभाः प्रोक्ताः हिन्दोलतनुजस्य वै ॥*

अथ धवलरागस्त्रियः

धवली कारुणी धात्री धार्म्मिका जगदीश्वरी ।†
धवलस्य प्रिया एता ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ चन्द्रकाशरागस्त्रियः

चन्द्रकाशी प्रकाशी च धारिणी‡ करुणा तथा ।
कीर्त्तिस्तथा सुविज्ञेया चन्द्रकाशप्रिया इमाः ॥

अथ विमोहनकरागस्त्रियः

मोहनी मुरली मेघा मानसी मानवर्द्धिनी ।
विमोहनप्रियाः पञ्च मुनिना परिकीर्त्तिताः ॥

अथ मारवरागस्त्रियः

मञ्जुषा मालिनी पाली तथामग्नि च चैतका ।**
मारवयोषितः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ पुरवास्त्रियः

पूरवी पार्व्वती प्रीतिर्म्माधुरी मनरञ्जिका ।
पञ्चैताः पुरवा-वामा भरतर्षिकथिता इमाः ॥

अथ श्यामरागस्त्रियः

ललिता सङ्कुली श्यामा सुष्टुरङ्गा च सौरभी ।
एताः पञ्च समाख्याताः श्यामरागप्रिया इमाः ॥

अथ हेमरागस्त्रियः

हेमी हंसी हुलासी च ज्वाला च जगवन्दनी । *
हेमरागप्रियाः पञ्च भरतकथिता इमाः ॥

अथ वेमरागस्त्रियः

मङ्गली कुशली वेमी मातङ्गी मोदवर्द्धनी ।
वेमस्त्रियः प्रगीयन्ते पूर्वयामे विशारदैः ॥

अथ हमीर-रागस्त्रियः

हमीरी कामदा हंसी हरिणी कामकेलिका ।
हमीरस्य इमाः प्रोक्ता पञ्चैताः सुखदाः प्रियाः † ॥

अथ भूपालरागस्त्रियः

भूरची एमनी भीमा भोली आराभिका तथा ।
भूपालस्य पूर्वरात्रौ प्रगीयन्ते विशारदैः ॥

जैतरागस्त्रियः

जैती जन्ती च जाम्बती जगदीशी कल्याणिका ‡ ।
पञ्चैताः प्रथमे यामे जैतरागस्य वल्लभाः ॥

अथ दीपकरागपुत्रस्त्रियः—

अथ सुहास्त्रियः

सूही कार्फी सिन्धुली च धूमी च धारिणी तथा ।
सुहास्त्रिय इमाः प्रोक्ता भरतकथिता मुनिः ॥ §

अथ नायकस्त्रियः

नायकी सुस्तनी नम्रा रम्भा च रूपमञ्जरी ।
नायकस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ अड़ानास्त्रियः

अड़ानी गुण्डक्री गौण्डा लीलरङ्गी सुधावती ।
पञ्चैताः सुष्टुनयना अड़ानावल्लभा इमाः ॥

---

* शुभ्री च गन्धिका गारा गुन्ती गर्भा सुमालिका ।
शुभ्ररागवधूप्रोक्ता हिन्दोलतनुजस्य वै ॥ इति पाठान्तरम् ।

† धवली धारणी धात्री धार्म्मिका धवलश्रीका । इति वा पाठः ।

‡ कारिणी । इति पाठान्तरम् ।

** मञ्जुषा मालवी माली तथामग्नि च चैविका । इति पाठान्तरम् ।

* हेमी हंसी हुलासी च जयन्ती यशोवर्धिनी । इति पाठान्तरम् ।

† पञ्चैते सुखदायकाः । इति वा पाठः ।

‡ जैती यन्ती च यामन्ती जगदीशी जयत्श्रीका । इति पाठान्तरम् ।

§ सुही सुन्नी भूशाखी च लक्ष्मी पूरणी तथैव च ।
सुहास्त्रियः समाख्याताः स्वयं रागविशारदैः ॥ इति पाठान्तरम्

अथ शङ्करास्त्रियः

शङ्करी शङ्कभरणी शङ्खवेलावली तथा ।
केरली कोकली चैव शङ्करावल्लभाः स्मृताः * ॥

अथ कानड़ाप्रियाः

इन्दा आराधा कृष्णा च कृष्णकेली कामोदिनी ।
कान्हड़ावल्लभाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ विहागड़ाप्रियाः

विङ्गी विहारिणी वारो वैणवी योगिनी तथा ।†
विहागड़ास्त्रियः प्रोक्ताः पञ्चैता मुनिना इमाः ॥

अथ नाटप्रियाः

नाटी च नर्त्तनी ‡ नित्या नारायणी नरोत्तमी ।
नटरागप्रिया एता मुनिना परिकीर्त्तिताः ॥ §

अथ केदाररागस्त्रियः

केदारी कामयाली च कारवी योगध्यानिका ।
कल्लोलिनी पुनर्ज्ञेया केदारस्य वराङ्गनाः ॥

अथ श्रीरागपुत्रप्रियाः—

अथ मालवरागस्त्रियः

मतिक्रा मालती मौना मालीगोरा तथैव च ।
त्रिवणी तु पुनर्ज्ञेया मालवस्य च वल्लभा ॥

अथ मारुरागस्त्रियः

मस्तनी मालिनी सुधा गोकर्णी गोणिका पुनः ।
मारुरागप्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ मेवाड़रागस्त्रियः

मेवाती मल्लकी चिन्ता सायङ्का मूर्द्धका तथा ।
सङ्गीते च समाख्याता मेवाड़स्य तु वल्लभा ॥

अथ मरुधररागस्त्रियः

मरुधरी कृष्णचन्द्री मारवी मुक्ता वल्लभी ।
मरुधरप्रियाः पञ्च सङ्गीते परिभाषिताः ॥

अथ मालीगौड़ारागस्त्रियः

मालीगोड़ी गुभारी च मयानी मृदु मिष्टिका ।
मालीगोड़प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिभाषिताः ॥

अथ मारुतरागस्त्रियः

मारुती मधरी मुङ्गी मालिनी सुमुका पुनः ।
मारुतस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥

अथ मेघरागपुत्रस्त्रियः

अथ मल्लारस्त्रियः

मल्लिका वर्षणी गर्जा गुञ्जिका घनवर्द्धनी ।
मल्लारस्य पञ्च योषित् वर्षाकाले सुखप्रदाः ॥

अथ गौड़रागप्रियाः

गुण्डी गुण्डगिरि गोभी गिरिजा जलधारिणी ।
गौड़स्त्रियः प्रगीयन्ते वर्षाकालविशारदैः ॥

अथ स्नेहरागप्रियाः

स्नेही प्रीति माधुरी च कोमली कोहली तथा ।
स्नेहराग पञ्च भार्य्याः सङ्गीते परिभाषिताः ॥

अथ कर्णाटरागप्रियाः

कर्णाटी रङ्गनाथी च मल्लवारी च मल्लिका ।
श्रीरङ्गी सहिता एताः कर्णाटस्य वराङ्गनाः ॥

अथ जलधरप्रियाः

जलधरी वर्षिका घुमड़ी घनश्यामा च घण्टारवी ।
जलधरस्य प्रगीयन्ते वर्षाकाले च सूरिभिः ॥

अथ आभीरप्रियाः

आभीरी अङ्गिका चैव सावित्री कोहली तथा ।
अनङ्गी सहिता एता आभीरस्य प्रिया इमाः ।

अथ तैलङ्गप्रियाः

तैलङ्गी तारिका तन्वी आन्ध्री कावेरिका तथा ।
कुण्डली सहिता एता तैलङ्गस्य प्रिया इमाः ॥

अथ नटनारायणप्रियाः

ब्रह्माण्डी ब्रह्मभेदी च नटनारायणी तथा ।
निरङ्कारी मुक्तिका च नटनारायणप्रियाः ॥

---

* शङ्करावधू कीर्त्तिताः । इति वा पाठः ।

† विहङ्गी विहारी विहाग वैष्णवी च वियोगिका । इति वा पाठः ।

‡ नृत्यनी । इति पाठान्तरम् ।

§ नटनारायणस्त्रीताः पञ्च भार्य्याः प्रकीर्त्तिताः ॥ इति वा ।

अथ घनश्यामप्रियाः

मालती मलुही मोचा वैकुण्ठी विष्णुवल्लभा ।
वर्षर्त्तौ ताः प्रगीयन्ते घनश्यामप्रिया इमाः ॥

अथ कमलरागप्रियाः

कमली कर्षणी चैव मनोहारिणी मनमोदिका ।
अप्सरी सहिता एता कमलस्य प्रिया इमाः ॥*

अथ कुसुमरागप्रियाः

कुसुमी सुमनी पुष्पी सुगन्धि गन्धिका तथा ।
कुसुमस्य प्रियाः पञ्च ख्याता रागविशारदैः ॥†

इति षट्रागपत्नस्त्रियः ।

अथ रागरागिणीसमयः

अथ दिवस-रागरागिणी

भैरवी भैरवी चैव रामकली षट्राम च ।
विभासो देशकारोऽयं प्रातःकाले प्रगीयते ॥
हिन्दोलः पञ्चमः सिन्धुर्ललितश्च वसन्तकः ।
भखारो भटीयारी च आद्ययामे प्रगीयते ॥
अलैया देवगिरिया लच्छशाखः पुनस्तथा ।
देवशाखो भूशाखश्च रामशाखः पुनस्तथा ॥
रामगिरि देवकृति च दिने प्रथमयामके ।
द्वितीय-प्रहरार्द्धे च सूहा वेलावली तथा ॥
सुघराइ माधवो माधो गान्धारो गुणक्री पुनः ।
टोड़ीका गावरी देशी वराटी टोड़िका तथा ॥
तुरस्का योनिका चारिभैरवी ढौड़िका तथा ।
गुर्ज्जरी श्यामगुर्ज्जरी च वैष्णवी वल्लरी तथा ।
द्वितीयप्रहरार्द्धे च वासरे गीयते बुधैः ॥
मध्यमादि च सारङ्गा वृन्दावनी वड़हंसिका ।
सावन्तलङ्कदहनी मध्याह्ने गीयते सदा ॥
मेघमल्लारिका गौड़ी नटमल्लारिका पुनः ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया * मध्याह्नोत्तरतो बुधैः ॥
धनाश्रीर्धवलश्रीश्च जयत्श्रीर्मालवश्रीका ।
मूलतानी पूर्व्वी पूर्व्वा तृतीयप्रहरात् पराः ॥
प्रदीपदीपकाभीरटङ्कमालवसंज्ञकाः ।
गौरामालवगौरा च पूरीया शुद्धधनाश्रीकाः ॥
श्रीरागगौरी चेती च त्रवणी मालवी तथा ॥
सन्ध्याकाले सदा ज्ञेया दिवसे गीयते बुधैः ॥

इति दिवस-रागरागिणी ।

अथ रात्रिरागरागिणी

कल्याणैमनभूपाली-हमीर-जैत-क्षेमकाः ।
हेमाध्यानश्यामशुद्धा निशा-प्रथमयामके ॥
कामोदो नाटछाया च कर्णाटकान्हड़ा तथा ।
नायका डायका टाना शोभनो मोहनस्तथा ॥
वागीश्वरी च केदारो मलोहा जलधरस्तथा ।
निशा द्वितीययामे च गीयते सुबुधैर्जनैः ॥
सोरठी देशसिन्धुरा शङ्कराभरणस्तथा ।
विहागमानमञ्जर्य्यारद्धरात्रौ प्रगीयते ॥
खम्भावती च पर्य्यङ्का कलिङ्गो मालकौशिकः ।
जयजयन्ती सोहनी च तृतीयप्रहरात् परः ॥

इति रागरागिणीसमयः ।

अथोपरागः

झिंझोटी जङ्गला पीलू वरवा धानी तिलङ्गिका ।
आसा घाटा लूहरश्च लूम लहरी तथैव च ॥
सिन्धु सोहरसोहन्यौ गर्भा धवलध्वनी तथा ॥
गारा गोधुनी भटीयारी च विरहा कज्जलिका पुनः ॥
साजगिरि सरपड़दा च जौनपुरी उशाखिका ।
सनम् गनम् नारिजश्च वाकरिजो यवन्निका ॥
लावणी जोगीया जङ्गी अहङ्गसुहाना कोङ्किका † ॥

---

* पुष्पिका कमला क्रान्ति परमानन्दी प्रफुल्लिका ।
कमलस्य प्रियाः पञ्च सङ्गीते परिकीर्त्तिताः ॥ इति पाठान्तरम् ।

† कुसुमी काशिका करुणा करतारी पुष्पगन्धिनी ।
वर्षर्त्तौ ताः प्रगीयन्ते कुसुमस्य प्रिया इमा ॥ इति वा पाठः ।

* च गीयते । इति वा पाठः ।

† सुहासाख्या । इति पाठान्तरम् ।

उपराग इति प्रोक्तो देशे देशे तु विस्तरात् ।
गानभेदोप्यनेकस्तु नाख्यन्तो गानवारिधेः ॥
गीत-प्रबन्ध-छन्दश्च तुरङ्गवेवटस्तथा ।
माठा च परमाठा च धोरा धारु तथैव च ॥
योगी कठरतिल्लाना श्रोष्टा निरोष्टा तथा ।
युगलबन्ध-सरिगमपधनि-प्रेमलु-ग्रब्दिकाः स्मृताः ॥
ध्रुवपद-तुकमखोष्टख्यालटप्पा पुनस्तथा ।
दादरा-ठुमरी-जातिपचरङ्गा-धवलगर्भिकाः ॥
देशे देशे भिन्ननाम तद्देशीगानमुच्यते ॥

इत्युपरागगानभेदः ।

अथ रागरागिणी-ध्यानोदाहरणम्

अथ भैरवरागः

संगीतरत्नाकरे [संगीतदर्पणे २।४६]—

गङ्गाधरः शशिकला-तिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः ।
भास्वच्छिशूलकर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः ॥

इति ध्यानम् ।

पुनरस्य उदाहरणं । सङ्गीत-मञ्जोदधौ—

स चन्द्रहासः फलवां दधानो
निबद्धकण्ठः शशिबद्धचूड़ः ।
व्याघ्राम्बरावेष्टित-गौरगात्रः
शिवस्वरूपः किल भैरवोऽयं ॥—

गान्धारांश-ग्रहन्यासो गान्धारादिकमूर्च्छनः ।
गीयते भैरवः प्रातर्हनूमन्मतकोविदैः ॥

अथ बङ्गलाभाषा-सङ्गीत-तरङ्गिण्यां—

भैरों आदिराग शिवेर वेश ।
शिव अवयव गुणे विशेष ॥
भुजङ्गभिन्दित शिरेते जटा ।
जटाय वेड़िया भुजङ्गघटा ॥
हिल्लोल कल्लोल तरङ्ग वाय ।
झर झर गङ्गा वहिछे ताय ॥
ताल शोभा हरिताल तिलके ।
सुधांशुकला कपाल-फलके ॥
आसन वसन वाघेर छाला ।
दलमल दोले मुण्डेर माला ॥
कोटी शशधर जिनिया काय ।
ताहाते विभूति कलङ्क पाय ॥
वृषभ-वाहन करे त्रिशूल ।
अचिर भाव ढुलु ढुलु दुल ॥
संपूरणभावे वेड़ान फिरि ।
धैवत गान्धार दुरेते गिरि ॥
ऋषभ संवादी गान्धार वादी ।
खरज ताहाते हवे सम्वादी ॥
छय दण्ड निशि थाकिते गावे ।
अरुण उदये समाधा पावे ॥

अथ भैरवस्योत्पत्तिः

रामक्री गौरी टोड़ी च भैरवोत्पत्तिः कथ्यते ।*
क्वचिद्धैवत-संमुख्य ध-नि-स-रे-ग-मस्तथा ॥
गगमगरेसाधमगासापनिधपमपमगमगरेगरेसा ।

इत्यस्थायी ।

मपधसारेसानिनिसानिनिधसासानिध
निनिधपधधपमपपमगममगरेसा । इत्यन्तरा ।

अथ भैरवी (संगीतदर्पणे २।४८)—

स्फटिकरचितपीठे रम्यकैलासशृङ्गे
विकचकमलपत्रैरर्चयन्ती महेशम् ।
करतलधृतवीणा* पीतवर्णायताक्षी
सुकविभिरियमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री ॥ इति ध्यानम् ।

तथा च नादमञ्जोदधौ—

सरोवरस्थे स्फटिकस्य मण्डपे
सरोरुहैः शङ्करमर्चयन्ती ।

---

* रामकली गौरी टोड़ी च भैरवोत्पत्तिरुच्यते । इति पाठान्तरम् ।
करधृतघनवाद्य । इति मुद्रित-संगीतदर्पणपाठः ।

तालप्रयोगैः प्रतिबद्धवाद्य-
वीणाधरा नारद भैरवीयम् ॥

तथा च नादपुराणे—

विमलकमलकान्ति-स्वर्णताङ्कवर्णा
सुखजनितविकाशा पद्मवक्त्रा मृगाक्षी ।
पीतवसनचारुभूषणा रत्नहेन्त्री
सुरगणरमणीया भैरवी भैरवस्त्री ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांश-ग्रहन्यासं धैवतादिकमूर्च्छना ।
सम्पूर्णा भैरवी ज्ञेया प्रातःकाले प्रगीयते ॥
धपमगमगरेगरेसाधनिसासानिसारेगमग-
रेसासारेगमध गमधधनिसासानिधपमप-
धपमगमनिधनिधपमगसारेगम ॥

इति कृतनन्दते ।

अथ भरतमते—

मध्यमांश-ग्रहन्यासं मध्यमादिकमूर्च्छना ।
सम्पूर्णा भैरवी ज्ञेया मपधनिसरेगखरा ॥
मपधनिसासारेगमपमधनिसागरेसा-
निधपमगरेसारेगधनिसानिसागमनिधगमगरेसा-
गगरेसानिसाधधनिसारेगमपमगरेसामगरेसा ॥
ममधधनिसानिसाधनिसारेगमपमगरेसामगरेसा ॥

अथ गुर्ज्जरी (संगीतदर्पणे २।८०)—

श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणां
मृदुल्लसत्पल्लवतल्पमध्ये ।
श्रुतिस्वराणां दधती विभागं
तन्त्रिमुखा दक्षिणगुर्ज्जरीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांश-ग्रहन्यासं सम्पूर्णा गुर्ज्जरी मता ।
सप्तमी मूर्च्छना तस्या बहुल्या सह मिश्रिता ॥
रेगमपधनिसारें रेगमधसारे सानिधपमगरे ।
रामक्री-टोड़ी-संयुक्ता वराटी मिश्रिता पुनः ।
गुर्ज्जरी जायते विद्वन् ! आद्ययामे प्रगीयते ॥
धनिनिधनिनिधरेधगनिधमगगरेसानिरेरेधनि-
रेगमधममगसारेगनिध ।

अथ टोड़ी * (संगीतदर्पणे २।५३)—

तुषारकुन्दोज्ज्वलदेहयष्टिः
काश्मीरकर्पूरविलिप्तदेहा ।
विनोदयन्ती हरिणं वनान्ते
वीणाधरा राजति टोड़िकेयं ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांश-ग्रहन्यासः क्वचित् मध्यम ईरितः ।
सम्पूर्णा टोड़िका ज्ञेया आद्ययामे प्रगीयते ॥
ग-म-प-ध-नि-सा । अथवा
धैवतांश-ग्रहन्यासा सम्पूर्णा टोड़िका मता ।
दिवस-प्रथमयामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
धनिसारेगमपपधनिसानिधपमगरेसा ।
धसामपधसारेगमममगरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ रामकली ‡ (संगीतदर्पणे २।६०)—

हेमप्रभा भासुरभूषणा च
नीलं निचोलं वपुषा वहन्ती ।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा
मानोन्नता रामकली ‡ सतीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांश-ग्रहन्यासा पूर्णा रामकली मता ।
प्रथमा मूर्च्छना ज्ञेया रसे कारुण्यमुच्यते ॥
भैरवी गुर्ज्जरी टोड़ीत्युत्पन्ना टोड़िका मता ।
प्रातःकाले प्रगीयते भैरवस्य च वल्लभा ॥
धगसारेमगधपमगमगरेसाधसाममसा-
पपमसासारेरेसासा पपसासानिरेसा-
धनिधपमपधपगमगरेसा ।

अथ वराटी (संगीतदर्पणे २।५०)—

विनोदयन्ती दयितं सुकेशी
सुकङ्कणा चामरचालकेन ।
कर्णे दधाना सुरक्तपुष्पं
वराङ्गनेयं कथिता वराटी ॥ इति ध्यानम् ।

---

* टौड़ि इति पाठान्तरम् ।

‡ रामकिरी इति पाठान्तरम् ।

मध्यमांश-ग्रहन्यासं क्वचिद्वभ ईरितः ॥
प-वर्ज्या षाड़वप्रोक्ता दिनशेषे हि गीयते ।
मधनिसारेमधमगरेसानिधसागधनिसाधमगरेसा ॥

इति पञ्चभार्य्यासहितभैरवरागः ।

अथ मालकोशम् * (संगीतदर्पणे २।५२)—

आरक्तवर्णो धृतरक्तयष्टिः
वीरः सुवीरेषु कृतप्रवीरः ।
वीरैर्धृतो वैरिकपालमाला-
माली मतो मालवकौशिकोऽयम् ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं पञ्चमवर्ज्जितखरम् ।
षाड़वाजातिविज्ञेया मालकौशिकसंज्ञकः ॥
मालवाकाङ्क्षड़ायुक्ता वागीश्वरी-सुमिश्रिता ।
कौशिको जायते यत्र मध्यममुख्य ईरितः ॥
मगरेसानिधमगरेनिधगसामनिधनिसागगधनि-
धममधनिसागगधनिधमगधनिसासारेनिधनि
मगगरेगमगगसासागसासारेनिधनिधनिमगगरे
गमगगसागसासारेनिधनिधनिसगमगमधधध
ममगमधनिधधमगरेगमधममसा ॥ इत्यस्थायी ।
धनिसासारेरेधधधमगमधमधनि गगगरेरेसा
गधमनिधगगसानिधनिसागमधनिधधमधमम
गधनिसानिनिनिधधममगमधनिधसा
रेगमधगमगनिधनिसा ॥ इत्यन्तरा ।

अथ वागीश्वरी

वीणा-विनोदी कमलायताक्षी
सौन्दर्य्यलावण्यसुगौरगात्रा ।
कान्ते समीपे कमणीयकण्ठा
वागीश्वरी कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांश-ग्रहन्यासा पूर्णा वागीश्वरी मता ।
गमपधनिसारेगसा सम्पूर्णा हनुमन्मते ॥
गमपधनिसारेगरेसानिधपधनिसारेग ।
गरेगरेममसारेसानिधपमगरेसारेग ॥

अथ ककुभा (संगीतदर्पणे २।५७)—

सुपोषिताङ्गी रतिमण्डिताङ्गी
चन्द्रानना चम्पकदामयुक्ता ।
कटाक्षिणी स्यात् परमा विचित्रा
दानेन युक्ता ककुभा मनोज्ञा ॥ इति ध्यानम् ।
षड़जांश-ग्रहन्यासा पूर्णा तु ककुभा मता ।
प्रातःकाले प्रगीयते करुणारससम्भवे ॥
सासारेसासारेगमगरेसापमगरेसामगरेसा ।
मपधसारेसानिरेगरेगसानिनिधधपपममगगरेसा ॥

अथ पर्य्यका

स्वर्णप्रभा सुन्दरगौरगात्रा
कटाक्षिणी स्यात् परमा विचित्रा ।
सौन्दर्य्यलावण्य-कलायताक्षी
सा पर्य्यका रागिणी कौशिकेयम् ॥ इति ध्यानम् ।
पञ्चमांश-ग्रहन्यासा सम्पूर्णा पर्य्यका मता ।
शेषरात्र्यां प्रगीयन्ते कारुण्ये शान्तिके स्मृताः ॥
पमगरेसाधनिसागरेसामपधसारेगरेसारेगमप ।
मपधसानिधमगसागमधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ सोहनी

कर्णे दधाना सुरपुष्पगन्धी
वीणा-विनोदी कमलायताक्षी ।
प्रांशुकुमारी कमनीयमूर्त्तिः
सा शोभनी कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं रिपौ वर्ज्जितमौड़वम् ।
निशीथे तृतीययामे शोभनी गीयते तदा ॥
गमधनिसानिधमगसाधनिधनिसागरेसा-
मगरेसानिधमगसा ।

अथ खम्बावती * (संगीतदर्पणे २।५४)—

खम्बावती स्यात् सुखदा रसज्ञा
सौन्दर्य्य-लावण्य-विभूषिताङ्गी ।

---

* अथ मालवकौशिकः । इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृत पाठः ।
‡ वीरवती । इति पाठान्तरम् ।

* खाम्बावती इति वा पाठः ।

गानप्रिया कोकिलनादतुल्या
प्रियंवदा कौशिकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम्।
धैवतांश-ग्रहन्यासा खम्बावती सुसंवृता।
धनिसारेगमपध्व-रात्रां यामद्वितीयके ॥
पर्यो वसन्तपञ्चमस्य खम्बावती जन्मभूः।
कोकिलानादकण्ठाच मालकोशस्य वल्लभा ॥
धनिसारेगमगपधनिधपमगरेसा।
धधनिधनिसारेसानिधपमगसारेग-
मपधनिनिसासानिधपमगरेसा ॥

इति पञ्चभार्य्यासहित मालकोशः।

अथ हिन्दोलः (संगीतदर्पणे २।५८)—

नितम्बिनी-मन्दतरङ्गितासु
दोलासु खेलासुखमादधानः।
खर्व्वः कपोत*-द्युतिकामयुक्तो
हिन्दोल-रागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्।
वसन्तकौशिकयुक्तः पञ्चममिश्रितः पुनः।
हिन्दोलो जायते विद्वन् रिपौ वर्জ্জित औडवः।
षड्जांश-ग्रहन्यासं सगमधनीति स्वराः।
वसन्तर्त्तौ प्रगीयन्ते आद्ययामे च कीर्त्तिता ॥
सामागगसासाधधनिनिधधगगममगगमम-
सासागगसासा। सागसाधसागमधनिध-
गमधसानिधमगनिधगमग।
सागसामधसागसामसानिधमगसा। धगसानि-
मगसारेगमगसामधगमनिसानिधमगसानिध ॥

अथ वसन्ती (संगीतदर्पणे २।७१)—

शिखण्डिवर्हीच्चयबद्धचूड़ा
कर्णावतंसीकृतगोभनाङ्गी।
इन्दीवरश्यामतनुर्विलासी*
वसन्तिका स्यादलिमण्डलश्रीः† ॥ इति ध्यानम्।
वसन्ती स्यात्तु संपूर्णा षड्जांश-न्याससंयुता ॥
वसन्तकाले विदुषा प्रयोगः कथ्यतेऽधुना।
सारेगमपधसानिधपमगरेसा। सासागरे-
सानिनिधपमगरेसा। रेसानिधनिसा ॥

अथ पञ्चमी

मयूरवर्हिर्दृढ़वेणीबद्ध-
पिक-शुकच्युतलताङ्कुरेण।
सौन्दर्य्यलावण्यमनङ्गमूर्त्तिः
सा पञ्चमी प्रातःसमे वदन्ति ॥ इति ध्यानम्।
ललितश्च वसन्तश्च हिन्दोलः पर्य्यसंयुता।
पञ्चमीभूतसर्वः स्यात् ऋतौ वसन्ते गीयते ॥
पञ्चमग्रहसंयुक्ताः सम्पूर्णाः पञ्चमस्वराः।
पधनिसारेगमश्च हिन्दोलवल्लभा स्मृता ॥
पपधधनिसारेगमपरेसा।
मपधसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ हिन्दोलिका

नितम्बिनी सुन्दरगौरगात्रा
वीणा दधाना सुरपुष्पगन्धी।
स्वर्णप्रभा श्रीकमलायताक्षी
हिन्दोलिकेयं कथिता मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम्।
वसन्तः पञ्चमश्चाथ ललितस्वरसंयुता।
हिन्दोली जायते प्राज्ञ वसन्ते गीयते बुधैः ॥

अथ ललिता (संगीतदर्पणे २।६३)—

प्रफुल्ल*-सप्तच्छदमाल्यधारी
युवा च गौरोल्लसलोचनश्रीः†।
विनिःश्वसन् दैववशात् प्रभाते
विलासवेश्मा ललिता प्रदिष्टा ‡ ॥ इति ध्यानम्।
निषादांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ॥
सम्पूर्णा ललिता प्रोक्ता हेमन्तर्त्तौ प्रगीयते ॥

* 'कपोल' इति पाठान्तरं।
† सुचिता। ‡ मञ्जुलश्रीः। इति वा पाठः।

* प्रीतफुल्ल इति वा पाठः।
† गौरोऽब्जदलायताचः। इति मुद्रित-संगीतदर्पणधृतपाठः।
यस्याः पतिः सा ललिता प्रदिष्टा ॥ इति वा।

निरेसगमगगपपमगगमपगरेसा ।
गमपनिसारिगरेसानिपमगरेसा ॥
हिन्दोलपञ्चममिश्र-वसन्तस्वरसंयुता ।
ललिता जायते विद्वन् प्रातःकाले प्रगीयते ॥

अथ मालवश्री (संगीतदर्पणे २।७३)—

रक्तोत्पलं हस्ततले दधाना
विभावयन्ती तनुदेहवल्ली ।
रसालवृक्षस्य तले निषण्णा
स्तोकस्मिता मा किल मालवश्रीः ॥ इति ध्यानम् ।
षड्जांशस्य ग्रहन्यासं रि-वर्ज्यात्र हि षाड़वाः ।
तृतीयदिवसे यामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
धनाश्री जयच्छ्रीयुक्ता धवलश्री मिश्रिता पुनः ।
मालश्री जायते विद्वन् रागकल्पद्रुमे इमाः ॥
सागपगसानिनिधधमसगसा ।
मधनिसागसापमगसाधमग
सानिधमगसानिधगगसा ॥

अथ धनाश्री (संगीतदर्पणे २।७४)—

दूर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा
कान्तं लिखन्ती विरहेण दूना ।
स्वेदे कपोले दधति दृगम्बु-
र्निष्पन्ननिर्धौतकुचा धनाश्रीः ॥ इति ध्यानम् ।
मालश्री गौरीसंयुक्ता टोड़िका पुनः मिश्रिता ।
धनाश्री जायते विद्वन् कथिता हनूमन्मते ॥
पूर्णा धनाश्री संप्रोक्ता पञ्चमस्वरसंस्थिता ।
शेषयामे दिने गानं क्रियते सुखसंप्रदम् ॥
पमगरेसानिसागसपगमधपमगरेसा
रेसानिधपमगरेगपमगरेसा ॥
गमपसानिसागरेसानिधप
मगपमसारेसानिधपमगरेसा ॥

अथ दीपकः (संगीतदर्पणे २।६४)—

बाला रतार्थं प्रविलीनदीपे
गृहेऽन्धकारे सुभगो प्रवृत्तः ।
तस्याः शिरोभूषण-रत्नदीपै-
र्लज्जां दधौ दीपकरागराजः ॥ †
षड्जांशग्रहन्यासं रिपौ वर्ज्जित औड़वः ।
तृतीययामे दिवसे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
पलासी जयच्छ्रीयुक्ता धवलश्री धनाश्रीका ।
दीपको जायते विद्वन् ग्रीष्मर्तौ च प्रगीयते ॥
सागमधसानिधमगसागगमधसामगसानिधमगसा ॥

अथ प्रदीपिका

रक्ताम्बरा रक्तसुलोचना च
सूर्यप्रभा सूर्यमुखी मनोज्ञा ।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा
प्रदीपिका दीपकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासा ऋषभस्वरवर्ज्जिता ।
तृतीययामे दिवसे प्रदीपा सा प्रगीयते ॥
धनिसागमपसासापमगसाधनिधसागसाध ॥
पलासी धानिसंयुक्ता जयतश्री च मिश्रिता ।
प्रदीपा जायते विद्वन् तृतीय-प्रहरात् परा ॥

अथ जयतश्री (जयच्छ्री)

स्वर्णप्रभा वीणधरा कराग्रे
सौन्दर्य्यलावण्य-कलायताक्षी ।
पीनोन्नता रागिणी जयतश्री
कामिनी चेयं कथिता मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
धनाश्री धानिसंयुक्ता मालश्री तासु मिश्रिता ।
जयच्छ्री जायते विद्वन् तृतीयप्रहरात् परा ॥
मध्यमांशग्रहन्यासा ऋषभस्वरवर्ज्जिता ।
षाड़वा तु हि विज्ञेया जयच्छ्री जायते ध्रुवम् ॥
मगसापमगसासागपमगसानिधममगसा ।
मममधसागगसापमगमधगसानिधपमगसा ॥

अथ भीमपलश्री

वीणा दधाना कमलायताक्षी
गम्भीरनादा सुरपुष्पगन्धी ।

† लज्जाः प्रकुर्व्वन् कृतवान् प्रदीपः । इति वा पाठः ।

कलामयी सा कमनीयमूर्त्तिः
भीम पलासी कथिता मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
धनाश्री धानिसंयुक्ता जयत्-श्री मिश्रिता पुनः ।
भीम-पलासी जायेत करुणा-रौद्रसंयुता ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासं ऋषभो वर्ज्जितस्वरः ।
षाड़्वास्तु सुविज्ञेया सुष्ट भीमपलासिका ॥
पनिसागपमगसामगसानिगरेसा निपनि-
सागपमगसा । निसानिसागरेसागरेसानि-
पमपनिसानिपमगरेसानिपनिसा ।

अथ नटः (संगीतदर्पणे २।६९)—

तुरङ्गमस्कन्धनिषिक्तबाहुः
स्वर्णप्रभः शोणितशोणगात्रः ।
संग्रामभूमौ विचरन् प्रतापी
नटोऽयमुक्तः किल रागमूर्त्तिः * ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं संपूर्णो नटसंज्ञकः ।
द्वितीय-प्रहरादूर्द्ध्वं नटिका गीयते बुधैः ॥
धनिसागरेसानिधपमगरेसाधपमगरेसानिध ॥
मपधसारेसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ श्रीरागः (संगीतदर्पणे २।७०)—

अष्टादशाब्दः सुरचारुमूर्त्तिः
धीरो लसत्पल्लवकर्णपूरः ।
षड्जादिसेव्योऽरुणवस्त्रधारी
श्रीराग एषः क्षितिपालमूर्त्तिः ॥ इति ध्यानम् ।
षड़्जांशग्रहन्यासं क्वचिद्धैवत ईरितः ।
सन्ध्याकाले प्रगीयन्ते श्रीरागनृपरूपिणः ॥
सारेगरेसारेरेगमपसा
सासासानिनिधपममपपगगरे-
रेसारेरेगरेसानिधनिसारेसारेसा ॥
रेगगमधपधधपपममसमधनिनि
निधगरेसासारेगमपसमगरेसा ॥
गपधनिसारेसागरेसा
मगरेसानिधपमपमधमगरेसा ॥

* अङ्गमूर्त्तिः । इति वा पाठः ।

अथ मालवी

पीनस्तनी शुभ्रविलासनेत्रा
नितम्बबिम्बप्रतिबद्धकाञ्ची ।
मुखारविन्दसुरगीतरम्या
नृत्यानुगा मालविका प्रवीणा ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासा क्वचित्पञ्चमवर्ज्जिता ।
सन्ध्याकाले सुष्ठुतरा गीयते मालविकेमा ॥
धनिसारेगमनिधगमसारेनिध धमगरेगमग-
रेरेसानिधधमगपसानिरेधपग ॥

अथ मालवः

नितम्बिनीचुम्बितवक्त्रपद्मः
शुकद्युतिक्रुन्तलवान् प्रमत्तः ।
सङ्केतशालां प्रविशन् प्रदोषे
मालाधरो मालवराग एषः ॥ * इति ध्यानम् ।
धैवतस्तीव्रसंप्रोक्तो मध्यमः कोमलस्तथा ।
गान्धारः कोमलकान्तिर्मालवः पूरणो मतः ॥
धमगरेगमगरेरेसानिध धपमगमगरेगरेसा ।

तथा च संगीतमहोदधौ—

गम्भीरनादो मधुरं सुरज्ञो
पाणिग्रहणान् नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
वीणाधरो मालवराग एषः ॥

अथ मालवगौड़ः

वीणाविनोदप्रतिपन्नपाणिः
गृहाण कथा नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
स मालवो गौड़मुनिप्रणीतः ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं मध्यमग्रामसूर्च्छना ।
तृतीयप्रहरादूर्ध्वं गीयते गौड़मालवा ॥
मपधनिसारेगमधममरेसानिधपमगरेसा ॥

* संगीतदर्पणे २।७२ मालवीध्याने अयं श्लोको दृष्टः यथा—
'स्वकान्तसंचुम्बितवक्त्रपद्मा शुकद्युतिः कुण्डलिनी प्रमत्ता ।
सङ्केतशालां विशती प्रदोषे मालाधरा मालविकेयमुक्ता ॥'

अथ विवणा (ववणा)

रम्भायास्तु तरोर्मूलनिषण्णा पीतवर्णभाक् ।
त्रिवणा सा च विज्ञेया पूर्णाश्री च वराङ्गना ॥ †
श्रीगौरीमारवा युक्ता ऋषभग्रह अंशभाक् ।
त्रिवण्युत्पत्तिराख्याता सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥
रेमपनिसारेगमपमगसा ।
पनिरेनिरेसागमपरेसानिधपमगरेसा ॥

अथवा

त्रिवणा सा च विज्ञेया ग्रहांशन्यासधैवता ।
पूर्णासु हनुमत्प्रोक्ता सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥

अथ गौरी

गौरद्युतिः काञ्चनचारुदेहा
सौन्दर्य्यलावण्यकलायताक्षी ।
वीणा दधाना सुरपुष्पगन्धी
गौरी च उक्तासु श्रीकोहलेन ॥ ‡ इति ध्यानम् ।
मालवा गौरीसंयुक्ता श्रीरागे मिश्रितं पुनः ।
गौराद्युत्पद्यते यत्र दिनान्ते गानमिश्रिता ॥
धैवतांशग्रहन्यासं संपूर्णो जायते स्वरः ।
सन्ध्याकाले प्रगीयन्ते श्रीरागस्य वराङ्गनाः ॥
धनिसागरेमपधसानिधप ।
ममपसागरेसाधनिनिधप ॥

अथ पूरवी

निद्रालसा गात्रकपटेन युक्ता
कान्तं स्मरन्ति विरहप्रपूर्णा ।
सौन्दर्य्यलावण्यकमलायताक्षी
सा पूरवी शेषदिने तुरीये ॥ इति ध्यानम् ।

† "चारुरम्भातरोर्मूले निषण्णा कनकप्रभा ।
नलाक्षी हारललिता कान्तेन त्रिवणा मता ॥"
इति संगीतदर्पणधृत-पाठः २।८६।

‡ "निवेशयन्ती श्रवणेऽवतंसमासाद्धुरं कोकिलनादरम्यम् ।
श्यामा मधुस्यन्दिमसक्तनादा, गौरीयमुक्ता किल कोहलेन ॥"
इति संगीतदर्पणधृत-पाठः २।५५।

पूरीया जैतासंयुक्ता मालवा गौरीसम्भवा ।
पूरवीगानः कर्त्तव्यो दिवसे चतुर्थेयामे ॥
पमगरेसामगरेसा निरेगममधमगममरेगरेसा ॥
मधसानिसारेसागमगरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ मेघरागः (संगीतदर्पणे २।७६)—

नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानचैलः §
पीताम्बरस्तृषितचातकयाचमानः ॥
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्त्ती
वीरेषु राजति युवा किल मेघरागः ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवतवर्जितः ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया मेघरागे घनद्युतिः ॥

तथा च सङ्गीतचन्द्रिकायां (२।८२)—

पर्य्यङ्के प्रियया सार्द्धमासीन उपलालयन् ।
पीताम्बरः सुभूषाढ्यो मेघरागो घनद्युतिः ॥
नीलो महाहसितसन्निविष्टः
घनद्युतिर्वीररसे निविष्टः ।
वर्षासु मेघविद्युच्छटासु चोक्तः
प्रचण्डवीरः किल मेघरागः ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासकृतः गान्धार ईरितः ।
विष्णुरूपो मेघरागो वीररसे प्रयुज्यते ॥
पपगरेसारेसागमपपगमनिपमगरेसा ॥

अथ मल्लारिका (संगीतदर्पणे २।७७)—

गौरी कृशा कोकिलकण्ठनादा
गीतच्छलेनात्मपतिं स्मरन्ती ।
आदाय वीणां मलिना रुदन्ती
मल्लारिका यौवनदूनचित्ता ॥ इति ध्यानम् ।

सङ्गीतमञ्जरी (२।५८)—

मेघागमे रम्यवपुर्दधाना
प्रस्थापनीया सततं मुरारेः ।
मा नर्त्तयन्ती शिखिनां कुलानि
मल्लारिकेयं कथिता नृपेण ॥

सङ्गीतदामोदरे—

सखावदातं प्रणीतं दधातु
प्रसन्नवर्णः कुमुदेन्दुवर्णः ।
वीणा दधानश्चातकयाच्यमानः
मल्लाररागो घनश्यामसूर्त्तिः ॥
मेघगौड़श्च सारङ्गस्त्रये जाता मल्लारिका ।
वर्षाकाले सदा ज्ञेया ज्ञाता रागविशारदैः ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा मल्लारिका मता ॥
मपधनिसारेरेसानिधपमगम ।
पपगगरेसारेसागमपपगमनिधगसारेसा ॥

अथ सोरठी (संगीतदर्पणे २।८५)—

पीनोन्नतस्तनसुशोभनहारवल्ली
कर्णोत्पलोल्लसमरन्दविलग्नचित्ता ।
याति प्रियान्तिकमतिस्खलितबाहुवल्ली
सौराष्ट्रिका मदनमूर्त्तिः सुचारुगौरा * ॥
षड्जे च ग्रहविन्यासमर्द्धरात्रौ प्रगीयते ।
सोरवी सुन्दरी नारी मेघरागस्य योषितः ॥
मल्लारसिन्धुगौड़श्च मिश्रितः सोरठी भवेत् ।
देशसंज्ञा क्वचित् ज्ञेया अर्द्धरात्रां प्रगीयते ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ।
मपधसारेसागरेसामगरेसा रेसानिधपमगरेसा ॥

अथ सारङ्गनट्टा (सङ्गीतदर्पणे २।८३)—

वीणां दधानो दृढबद्धवेणी
संख्यासमं मञ्जुलवृत्तमूले ।
जाम्बुनदाभा च निषण्णदेहा
सारङ्गनट्टा कथिता मुनीन्द्रैः ॥

सङ्गीतरत्नाकरे—

करधृतवीणा सखी सहोपविष्टा कल्पतरुमूले ।
दृढतरनिबद्धकबरी सा सारङ्ग तु रागिणी प्रोक्ता ॥

निषादांशग्रहन्यासं धनी वर्জ্জित औड़वः ।
मध्याह्ने गानः कर्त्तव्यः सारङ्ग मेघवल्लभा ॥

चौतारा । निसारेसामपमपरेसा निसारेसानिधपम ।
रेसानिस्वरप्रोक्ता षड़जादिक-मूर्च्छना ॥

अथ वड़हंसी

अतिचतुरसुगौरा पीतवर्णायताक्षी
दृढ़तरबद्धवेणी सेविता कल्पवृक्षैः ।
अतिचतुरसुगम्या वाड़हंसीति प्रोक्ता
मुनिमतमवलोक्य कीर्त्तिता रागिणीयं ॥
सारङ्गस्वरमेघश्च कामोदो मिश्रितं पुनः ।
वड़हंसो हंसयुक्ता मध्याह्ने गीयते बुधैः ॥
निषादांशग्रहन्यासं सम्पूर्णा वड़हंसिका ।
मध्याह्ने गीयते विद्वन् संगीते परिभाषिता ॥
निनिसासारेरेरेममपपनिनि सागरेसासानिमपरेसा ॥

अथ मध्यमादिः (संगीतदर्पणे २।४७)—

पत्या सह संपरिरभ्य कामं
मंचुम्बितास्या कमलायताक्षी ।
स्वर्णद्युतिः † कुङ्कुमलिप्तदेहा
सा मध्यमादिः कथिता मुनीन्द्रैः ॥
सावन्तवड़हंसस्य वृन्दावनस्ततः परा ।
मध्यमादि च संप्रोक्ता मध्याह्ने गीयते बुधैः ॥
ऋषभग्रहसंयुक्ता रधौ वर्জ্জन्या औड़वम् ।
रेमपनिसा प्रोक्ता सारङ्ग मध्यमादिका ॥

अथ ब्रह्मताल—।०।००।०००।

रेसासानिमपरेरेमपमरे-
रेसारेमपनिसानिमपरेसा । मपनिसानिसारेम-
पमरेसारेसानिपमरेसा ॥

अथ लङ्कदहना

भस्मोज्ज्वलोल्लखपत्रशूलधारणी वह्निस्वरूपा गम्भीर-नादा मध्याह्नसमये हनुमत्सुप्रोक्ता सा लङ्कदहना मेघस्य भार्य्या ।

* 'करमुखे मिलिताक्ष्यष्टिः' । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† 'स्वर्णक्षविः' । इति पाठान्तरम् ।

गान्धारग्रहमाचष्टे वीरे रौद्रे प्रयुज्यते ।
धगौ वर्जितऔड़वा च मध्याङ्गे प्रगीयते ॥
रेसानिरेसापमपमनिरेसामरेसानिपमरेसा-
निनिरेसानिपमरेसा ॥

अथ गुणकली (गुणकिरी । संगीतदर्पणे २।५६)—

शोकाभिभूतनयनारुणदीनदृष्टि-
र्नम्रानना धरणीधूसरगात्रयष्टिः ।
जीमूतचारुकवरी प्रियदूरवर्त्ती *
संकीर्त्तिता गुणकिरी करुणे †शशाङ्की ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् पञ्चमस्वरः ।
मारवादेशकारश्च गौरायां जायते बुधैः ॥
धगसारेनिरेमगसा ॥ निसाधसामगरेसा ॥

अथवा

पञ्चमांशग्रहन्यासं गुणक्री च इति स्मृता ।
सौवीरी मूर्च्छना ज्ञेया कौशिकस्य वराङ्गना ॥

सम्पूर्णा भरतमते ।

अथ सुखावती ‡ (संगीतनारायणे)

वासं वसाना शरदभ्रशुभ्रं
विरिञ्चिदेवोपरिकर्म्मदक्षा ।
कुन्दावदाता चतुराननस्य
सुखावती लब्धसमृद्धसेवा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं खभाती-पर्य्यमिश्रिता ।
नीलाम्बरीसुसंयुक्ता सुखावती भवेत्तदा ॥
गमपधनिसारेगगमधसापसानिरेगसासारेग ॥

अथ श्यामरागः

वीणानिनादे प्रतिपन्नमूर्त्तिः
सौन्दर्य्यलावण्यसुवर्णकान्तिः ।
श्यामघनमेघद्युतिस्वरूपः
स श्यामरागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
कल्याणीजैतसंयुक्तः केदारो मिश्रितः पुनः ।
तस्योत्पत्तिः भवेद्विद्वन् सन्ध्याकालेषु गीयते ॥
षड़्जांशग्रहन्यासं तीव्र-गान्धार ईरितः ।
शेषे कोमलविज्ञेयः श्यामरागः प्रकीर्त्तितः ॥
सागमगरेसानिधनिसारेगमपमगरेसा ॥
निधनिसागरेसानिधपसागरेसानिगरेसा ॥

अथ आशा

योगीयाशावरी गौरी गान्धारस्वरमिश्रिता ।
आशारागो भवेद्यत्र पूर्वपुत्रः प्रकीर्त्तितः ॥
गान्धारग्रहमाचष्टे हे प्रहरार्द्धे दिने तथा ।
गगरेसासासानिधपमगसा ॥

अथ सोमरागः (संगीतनारायणे)

निशाङ्गनां वक्षसि स्थापयित्वा
कलङ्ककुम्भात् सुरतं स्रवन्तीम् ।
रसज्ञो गुणज्ञः सुगौरगात्रो
वीणा दधानः स हि सोमरागः ॥ इति ध्यानम् ।
ऋषभांशग्रहन्यासं सप्तस्वरसुसंयुतः ।
निशायां गीयते विद्वन् सोमरागः प्रकीर्त्तितः ॥
कल्याणकान्हाड़ायुक्तः शङ्करामिश्रितः पुनः ।
सोमरागः प्रगीयते भरतकथितो मुने ॥
रेगमपधनिसासानिधपमगरे ।
मपधसागरेसानिपमरेसारे ॥

अथ नटनारायणः (संगीतनारायणे)

स्त्रीवेशधारी पुरुषो नवीनः
सङ्गीतशास्त्रे भ्रमिमादधानः ।
गायन् सतालं सलयं मनोज्ञः
स्यान्नटनारायणराग एषः ॥ इति ध्यानम् ।
काङ्गाड़ानटसंयुक्तः कल्याणमिश्रितः पुनः ।
नटनारायणो जातः सन्ध्याकाले प्रगीयते ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं सम्पूर्णं हनुमन्मते ।
क्वचिद्ऋषभवर्ज्जितं नटनारायणस्य च ॥
गमपधनिसारेरेसानिधपमगरेसा ॥
मपधसागरेसानिधपमगरेसा ॥

* आमुक्तचारुकवरी प्रियदूरवर्त्ता । इति पाठान्तरम् ।
† करुणातङ्कशाङ्की । इति वा पाठः । ‡ सुस्थावती इति संगीतनारायणः ।

अथ हम्मीरराग:

श्रुतौ दधानो नवकर्णिकारं
सङ्केतशालामनङ्गमूर्त्तिः ।*
वीणा दधानः सुकरैः करस्थः
हम्मीरराग: कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
कल्याणजैतसंयुक्तो तथा कामोदमिश्रितः ।
केदारस्वरसंयुक्तो हम्मीरनामको भवेत् ॥
षड्जांशग्रहन्यासं पूर्णाख्या च हम्मीरिका ।
निशायाः प्रथमे यामे सङ्गीते परिकीर्त्तिता ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसामधगसापमगसासा-
निरेगसामगरेसानिधपमगरेसा ।

आभीरी

विलोकयन्ती अधिकं गभीरे
विश्लेषयन्ती शुभगात्रगौरा ।
पीनस्तनी कुन्तलदृष्टगण्डा
त्वाभीरिकोक्ता हृदये शुभं स्यात् ॥ इति ध्यानम् ।
भीमा-पलाशी सिन्दुरा पूरवास्वरसंयुता ।
आभीरी जायते विद्वन् धैवतग्रहसंस्थिता ॥
षड्जांशग्रहन्यासं ऋषभो राजितो स्वरः ।
यामे तृतीये संयुक्ता आभीरी गीयते बुधैः ॥
सागमगसापगसानिधमगसानिध ।
मपधसामधसानिधपमगसा ॥

अथ कर्णाटः (संगीतदर्पणे २।६६)—

कृपाणपाणिर्गजदन्तपत्र- †
मेकं वहन्तो दक्षिणहस्तकेन ‡ ।
संस्तूयमानः सुरचारणौघैः
कर्णाटरागः क्षितिपालमूर्त्तिः ॥ § इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासो धैवतादिकमूर्च्छना ।
प्रथमे प्रहरे गानं रसे वीरे प्रयुज्यते ॥
शुक्लदेवगिरियुक्ता वेलावली च मिश्रिता ।
कर्णाटोऽयं रसे वीरे प्रयुक्तो भरतेन च ॥
धनिसागरेसानिपमगरेसा ॥
मगपसाधमानिगसारेपसा ॥

अथ भखारः

भैरवी मालकौशश्च ललिता मिश्रिता पुनः ।
भखारे जायते यत्र प्रातःकाले प्रगीयते ॥
निषादांशग्रहन्यासं पञ्चमस्वरवर्ज्जितः ।
निशागमे गायत्यत्र भखाररागसंज्ञकः ॥
निसारेगमगरेसाधनिसागरेसामगरेसा ॥
गमधनिसारेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ योगिनी

काली करालो सुभयङ्करी च
कङ्काली खनिस्त्रिशूलधारिणी ।
संग्रामभूमौ सुपिबन्ती रक्तं
रक्ताम्बरधारिणी योगिनीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं सावरीदेशीजन्यभूः ।
आद्याङ्किके यामे गानं क्रियते योगिनी इदम् ॥
धनिसारेगमपध ॥ गमपधसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ नागध्वनिः

श्रीखण्डशैलशिखरे गजमौक्तिकाद्यैः
सौन्दर्य्यशोभनवती सुस्मृगायताक्षी ।
वीणाविनोदी समयसुयन्त्रधात्री
नागध्वनिः चन्दनेन लेपगात्री ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारो सावरी देशी भूपालीमिश्रितः पुनः ।
नागध्वनिर्जायते स्म मध्याह्ने सा च गीयते ॥
गगपधमधधरेरेनिनिसासा ॥
मपधनिसागरेसानिधगसा ॥

अथ सैन्धवी । सङ्गीतरत्नाकरे—

प्रलम्बकर्णा वपुषा च गौरी
वीणा दधाना सुरपुष्पगन्धी ।
वक्त्रानुरक्ताम्बरभूषणीयं
गीतेषु दक्षा किल सैन्धवीति ॥

---

* 'आलापयन्ति यत्रस्य सारिका ।' इत्यधिकपाठः ।

† 'खड्ग' इति वा पाठः ।

‡ 'निजहस्तकेन' इति वा ।

§ सा कानड़ेयं किल दिव्यमूर्त्तिः । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

संगीतदर्पणे (२।५१)—

त्रिशूलपाणिः शिवभक्तिरक्ता
रक्ताम्बरा धारितबन्धुजीवा ।
प्रचण्डकोपा रसवीरयुक्ता
सा सैन्धवी भैरवरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं सम्पूर्णा सैन्धवी मता ।
तृतीयप्रहरे गेया भैरवस्य च वल्लभा ॥
धनिसारेगमपवपमगरेसानिध ॥
मपधसारेसामगरेसानिध ॥
शक्तिहस्ता महाकाया पुष्पमाला वितन्वती ।
चन्दनपूष्पार्चितागात्रैर्भटो-सिन्धुगौरकः ॥

अथ माधवी

नीलं निचोलं वपुषा दधाना
प्रिये च सा लक्षितमञ्जुभक्तौ ।
तमालतालं शिखरे चरन्तो
प्रियानुरागादिव माधवीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं रिपौ वर्ज्जितषाड़वा ।
लङ्घदहनमेघश्च सारङ्ग माधवी-स्वरा ॥
ममधनिसागमधमगमधसानिपमनिध ॥

अथ मल्लोहा

धैवतांशग्रहन्यासं पञ्चमं परिवर्ज्जयेत् ।
औड़वः स तु विज्ञेयो मल्लोहा निशि गीयते ॥
केदारो जलधरैर्युक्तो मल्लारस्वरसंयुतः ।
गीयते रागपुत्रः स्यात् धनिसागमप-स्वराः ॥
धनिसागमधमगसानिधगमधनिसारेगमध ॥

अथ गौड़गिरिः (संगीतनारायणे)

रतोत्सुका कान्तपथप्रतीक्षा-
मापादयन्ती मृदुपुष्पतल्पे ।
इतस्ततः प्रेषितदृष्टिवार्त्ता
श्यामाङ्गिका गौड़गिरिः प्रसिद्धा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहस्यैव वर्षाकाले प्रगीयते ।
पूर्णा गौड़वधूः प्रोक्ता तृतीयप्रहरात् परा ॥
गमपधनिसागपपगमगरेसा ॥
गमपसासानिरेसामगरेसा ॥

अथ वङ्गालः । रत्नाकरे (संगीतनारायणे)—

मनोज्ञकाञ्ची गुणगुम्फिताङ्गः
स्रजं दधानो धरणीधरस्थः ।
चण्डः कुमारो रमणीयमूर्त्ति-
र्वङ्गालरागः शुचिसाममानः ॥

संगीतदर्पणे (२।४९)—

कक्षानिवेशितकरण्डधरायताक्षो
भास्वत्त्रिशूलपरिमण्डितवामहस्ता ।
भस्मोज्ज्वला निविड़बद्धजटाकलापा
वङ्गालिकेत्यभिहिता तरुणार्कवर्णा ॥ इति ध्यानम् ।
कण्ठे धृत्वाक्षमाला यज्ञोपवीतधारकः ।
वेदे अत्यन्तविद्वान् स शुक्लवस्त्रसमुज्ज्वलः ॥
पाणिपात्रं कराग्रे च शिवार्च्चाध्यानसंयुतः ।
वङ्गालरागः सर्व्वेशो गीयते पुत्रभैरवः ।
प्रातःकाले नमस्यस्त्वं कथितः स्वरसिद्धये ॥
वङ्गाली औड़वा ज्ञेया ग्रहांशन्यासषड़्जभाक् ।
रिधहीना च विज्ञेया मूर्च्छना प्रथमा मता ॥
पूर्णा वामत्रयोपेता कल्लिनाथेन भाषिता ॥
ढोड़ी वराड़ी जयतश्रीर्जयन्तश्च त्रयमिश्रिता वङ्गालिका ।
सागमपनिसासानिपमगसामपसासानिगसागमपसा ॥

अथ पटमञ्जरी (संगीतदर्पणे २।६३)—

वियोगिनी कान्तविशीर्णगात्रा
स्रजं वहन्ती वपुषातिसुग्धा * ।
आश्वास्यमाना प्रियया च सख्या
सा धूसराङ्गी पटमञ्जरीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
देशीमालवमञ्जर्य्या मालश्रीमिश्रितः पुनः ।
पञ्चमांशग्रहन्यासं जायते पटमञ्जरी ॥

* 'शुक्ला' इति वा पाठः ।

पञ्चमस्वरमुख्या च संपूर्णा षठमञ्जरी ।
षधनिसारेगम स्यात् तृतीयप्रहरात् परम् ॥
षमगरेसानिधपमगरेसारेगमप ॥
गमपधसागरेसानिधपमगरेसाप ॥

अथ टङ्का (संगीतदर्पणे २।८१)—

शय्यासु सुप्तं नलिनीदलानां
वियोगिनी वीक्ष्य विषण्णचित्ता ।
सुवर्णवर्णा गृहमागता सा
सुभाषयन्ती * किल टङ्कसंज्ञा ॥ इति ध्यानम् ।
ऋषभांशग्रहन्यासं संपूर्णा हनुमन्मते ।
सन्ध्याकाले प्रगेयन्ते श्रीरागस्य सुयोषितः ॥

अथ माधवः

नृत्ये गीतावसक्ते करधृतसुरसंवादयन्ती सुवीणां
कस्तूर्यामोदयन्ती पिकमृदुवचना चर्चिता चन्दनाद्यैः ।
देवान् साध्यादिसर्व्वानतिपुरुषमतिः खे च वर्णाम्बरे च
गीयन्ते स्मात्र मरुमधुना माधवो राग एषः ॥
चन्दनचर्चितगात्रं शीर्षमुकुटपीतवस्त्रम् ।
प्रभाते गायन्ति स्वर्गलोके माधवराग एषः ॥
सारङ्गकान्हड़ायुक्तो मधुमाधवमिश्रितः ।
निषादांशग्रहन्यासं माधवः स प्रकीर्त्तितः ॥
निसारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ मधुररागः

मधुरस्वरसंयुक्तो सर्व्वार्थगुणसंयुतः ।
गौरगात्रकाममूर्त्तिर्मधुरागः कथ्यते ॥
विहागेमनकल्याणं केदारोमिश्रिता यदा ।
गान्धारग्रहमाचष्टे मधुररागः जायते ॥
गमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

अथ देशी (संगीतदर्पणे २।६७)—

निद्रालसं सा कपटेन कान्तं
विबोधयन्ती सुरतोत्सुकेव ।
गौरी मनोज्ञा शुकपिञ्छवस्त्रा
ख्याता च देशी रसपूर्णचित्ता ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं देशी संपूर्णिका मता ।
गुर्ज्जरी टोड़ीकायुक्ता मिश्रिताशावरी पुनः ॥
मपधनिसारेगमगरेसा ॥ मपधसागरेसानिधपम ॥

अथ पूर्व्वारागः

विमलकमलकान्ती सुन्दरी गात्रगौरा
युवतीप्रियसुखदं कामदेवस्य मूर्त्तिः ।
* * * * †
तृतीयप्रहरे दिवसे पुरवा स प्रसिद्धः ॥
पञ्चमांशग्रहन्यासजातो मालवगौड़ च ।
त्रिभिर्मिश्रो भवेद्रागः पूरवा नामसंज्ञकः ॥
पमगरेसारेगमपधनिसानिध ॥
मपनिसारेसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ सिन्धुड़ा (संगीतनारायणे)

समुद्रनीलद्युतिरम्बुजाक्षी
प्रवादयन्ती सकला सयन्त्रम् ।
रत्नैर्विचित्राभरणा सुकेशी
सा सिन्धुड़ा कान्तसमीपसंस्था ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं सिन्धुरा पूरवा तथा ।
वसन्तर्त्तौ सदा गेया तृतीयप्रहरात् परम् ॥
मपधनिसारेगम ॥

अथ देशाख्यः (संगीतदर्पणे २।६१)—

वीरे रसे व्यञ्जितरोमहर्षः
शिरोधराबद्ध*विशालबाहुः ।
प्रांशुः प्रचण्डः किल इन्दुरागो
देशाख्यरागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासः क्वचित् ऋषभ ईरितः ।
सम्पूर्णा सा च विज्ञेया शार्ङ्गदेवेन भाषिता ॥
काङ्क्षड़ासुहासंयुक्तः सारङ्गसुरमिश्रितः ॥
देशाख्यो जायते दिने द्वितीयप्रहरार्द्धके ॥
गमपधनिसारेगमपधगरेसानिधसा ॥

* कान्तं भजन्ती । इति मुद्रितसंगीतदर्पणपाठः ।

† अत्र तृतीयचरणाभावः । * 'निरुद्ध-सम्बद्ध' इति पाठान्तरम् ।

अथ गौरसारङ्गः

वीणाविनोदी दृढ़बद्धवेणी
कल्पतरुसंस्थितगौरगात्रः ।
तृतीययामे पिकनादतुल्यः
सारङ्गगौरः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
ऋषभांशग्रहन्यासं गौरसारङ्ग एव च ।
गौड़ा सारङ्गसंयुक्ता पुरीया सा संमिश्रिता ॥
दिवसान्ते सदा ज्ञेयो गौड़सारङ्ग ईरितः ।
रेगमपधनिसारेगमपधनिसा ॥

अथ गौड़करी

अवचित्य कुसुमराशीन् वितरन्ती पुष्पदामकामिभ्यः ।
नन्दनवनोपकण्ठे गौड़करी सा प्रसिद्धा स्यात् ॥

संगीतरत्नाकरे—

शैलाग्रशिखरे गौरी वंशशब्देन चारुणा ।
नर्त्तयन्ती प्रियतममेषा गौड़करी स्मृता ॥
गान्धारे श्रीनिवासस्य मल्लारे गौड़मिश्रिता ।
रामक्रीस्वरसंयुक्ता गौड़करी इति स्मृता ॥
गमपधनिसारेसानिधपमगगमपनिसाधरेगम
निसारेगमसा ॥

अथ विभाषरागः

शुभ्राम्बरो गौरवर्णः सुकान्तिः
धीरोल्लसत् कुन्तलघृष्टगण्डः ।
सूर्य्योदये कुक्कुटपक्षिशब्दे
विभाषरागः स्मरचारुमूर्त्तिः ॥ इति ध्यानम् ।
भूपाली देशकारश्च मालवो जन्मभूः स्मृता ।
धैवतादिस्वराः सप्त विभाषे गीयते बुधैः ॥
धनिसागरेसामधपमगरेसानिध ॥
गमधनिसागरेसानिधपमगरेसानिध ॥

अथ देशकारी (संगीतदर्पणे २।७८)—

भर्त्रा समं केलिकलारसज्ञा
सर्व्वाङ्गपूर्णा कमलायताक्षी ।
पीनस्तनी रक्तनतुः सुकेशी
संपूर्णचन्द्रानना देशकारी ॥ इति ध्यानम् ।

मालीगौरा विभाषेषु देशकारस्य जन्मभूः ।
ऋषभस्वरे निवासः प्रातःकाले प्रगीयते ॥
रेगमपधनिसा
तीव्रगान्धार ऋषभ-संवादिमध्यमस्तथा ।
अनुवादिपञ्चमैर्युक्ता संपूर्णा देशकारिका ।
धगरेसानिमपधसागरेसानिध ॥
गमधनिपसारेसागमनिध ॥

अथ वेलावली (संगीतदर्पणे २।५९)—

सङ्केतदीक्षां दयिते च दत्ता
वितन्वती भूषणमङ्गकेषु ।
मुहुः स्मरन्ती स्मरमिष्टदेवं
वेलावली नीलसरोजकान्तिः ॥ इति ध्यानम् ।
पञ्चमांशग्रहन्यासं तीव्रगान्धारमध्यमम् ।
शेषानुदात्ता विज्ञेया पूर्णा वेलावली मता ॥

मतान्तरे—

नेत्रे कज्जलरञ्जितेऽतिललिते नासाग्रमुक्ताफलम्
भाले भाति सुकुङ्कुमस्य तिलकं गौराङ्गचित्राम्बरा ।
वेणी चम्पककेतकीसुकुसुमैः सार्द्धं करैर्विटिका-
नानासौरभचर्चिताखिलवपुर्वेलावलीयोषितः ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा प्रथमयामका ।
दिवसे गीयते विद्वन् वेलावलीतिसंज्ञका ॥
कल्याणा देवगिरिका अलेयामिश्रिता मता ॥
गमपधनिसारेगमपपधनिसानिध ॥
गमधनिसानिधमगरेसामपधनिसागरेसानिधपममरेसा॥

अथ षट्रागः

जटाजूटधारी शिवशिखरकैलासवसति-
श्चिता-भस्मालेपो मधुरमृदुहासो मुनिवरः ।
सदा षड्रागोऽयं सततनितरां ध्येयः सुपदां
प्रभाते गायन्ति मधुरसुरगीतार्थनिलयम् ॥ इति ध्यानम् ।
यदा रागस्यान्ते मुनिगणपरात्मार्थविभवो ।
नमोद्भीरुर्नाम्ना गतिकतरगो भैरवतनुः ॥
भैरवो गुर्ज्जरी टोड़ी देशी गान्धार एव च ।
रामक्री स्वरसंयुक्तः षट्रागश्च भवेत्सदा ॥

धैवतांशग्रहन्यासं धैवतादिकमूर्च्छना ।
सम्पूर्णं सुप्रभाते च गीयते षट् सुसंज्ञकः ॥
धधनिनिसासारेरेगगमपप ।
ऋषभतार । धसासासानिनिधधपपममगगरेसा ।
मपधनिसागरेसासगरेसानिधपममगरेसा ॥

अथ देवगिरी (संगीतदर्पणे २।८४)—

कादम्बिनीश्यामतनुः सुवृत्ता
तुङ्गस्तनी सुन्दरहारवल्ली ।
चित्राम्बरा मत्तचकोरनेत्रा
मदालसा देवगिरी प्रदिष्टा ॥ इति ध्यानम्
अलैयास्वरसंयुक्ता विहागेन सुमिश्रिता ।
देवगिरीत्युत्पत्तिस्तु कथिता हनुमन्मते ॥

संगीतार्णवे (संगीतनारायणे)—

भ्रमन्तो नर्त्तने श्यामा पुष्पहारसमन्विता ।
ख्याता देवकिरी ह्येषा करार्पितसखीकरा ॥
षड्जांशग्रहन्यासं पूर्णा देवकिरिर्मता ।
दिवसे प्रथमयामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥
गमपधसानिसागरेसानिधपधपमगरेसा ॥

अथ आशावरी (संगीतदर्पणे २।७५)—

श्रीखण्डशैलशिखरे शिखिपुच्छवस्त्रा
मातङ्गमौक्तिकमनोहरहारयष्टी ।
आकृष्य चन्दनतरोरुरगं वहन्ती
साशावरी वलयमुज्ज्वलनीलकान्तिः ॥ इति ध्यानम् ।
निषादांशग्रहन्यासं क्वचित् गान्धार ईरितः ।
यामे द्वितीये गीयते आशावरी सुखैनरैः ॥
देशीगान्धारटोड़ी च मिश्रिता त्रयसंयुता ।
आशावरी भवेन्नारी गायने रतिकामदा ॥
निसारेगमपधस्यच ॥
निसारेमनिधपमगरेसाधपमगरेसाममपध-
पमपधसानिसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ योगीया

जटाकलापांशुविभूतिधारी
त्रिशूलसर्पञ्च वीणा दधाना ।
प्रचण्डकोपा रत्नवीरयुक्ता
सा योगिनी योगशास्त्रैः प्रवीणा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं योगीयाशावरी तदा ।
वैराग्यज्ञानसंयुक्ता ब्रह्मध्यानसुमिश्रिता ॥
देशीगान्धाराशावरी मिश्रिता योगीया भवेत् ।
दिवसे द्विप्रहरार्द्धे च गीयते विबुधैर्जनैः ॥
आशावरी च देशीया गान्धारेण सुमिश्रिता ।
त्रये कृते योगिनी स्याद्विप्रहरार्द्धेषु गीयते ॥
गगरेसानिनिधधपपममगगरेसागमपनिसारेसाम
गरेगरेसा सानिधपमगरेसा ।

अथ मोहनरागः

मदनमोहनरूपी वंशीधारी कराग्रे
खगमृगपशुपक्षिमोहिताखिलविश्वम् ।
जगतीतलसुवीर्यः शैवरूपार्थकेतः
विहरतु वनकुञ्जे मोहनो राग एषः ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ।
निशान्ते गीयते विद्वन् सङ्गीतैः परिभाषितः ॥

अथ गान्धारः । संगीतरत्नाकरे—

आदाय वीणा धृतयोगपीठे
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्तः ।
योगासने मौलिजटा दधानो
गान्धारराग: कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।

मतान्तरे (संगीतनारायणे)—

जटां दधानः कृतभूरिभूषः-
काषायवासस्तनुदेहयष्टिः ।
सयोगपट्टकृतनेत्रमुद्रो
गान्धारराग: कथितो मुनीन्द्रैः ॥
सम्पूर्णश्च भवेद्रागो प्रभाते गानमिष्यते ॥

धैवतांशग्रहन्यासं तीव्र-मध्यम एव ।
टोड़ी आशावरी देशी गान्धारोत्पत्तिः कथ्यते ॥
धपपगगरेमपधसानिनिधधपपमगगरेसाममपपधसासासानिनिसा गरेसासामपनिधप ॥

अथ गान्धारी

हारोरःस्थलधारिणी सितपदैः कमलायताक्षी भृशं
दिव्याभूषणभूषितातितरुणी ताम्बूलहस्ताग्रका ।
श्यामा सम्भृतकञ्चुकी मलयजैरादित्यता सुन्दरी
नृत्यन्ती भृतनूपुरा मृदुरतिर्गान्धारिणी रागिणी ॥

इति ध्यानम् ।

धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् मध्यम ईरितः ।
सम्पूर्णा सा सुवक्त्रा च गान्धारी रागिणी ध्रुवम् ॥
धपमगरेसारेगममपधमगसारेसानिधपममगरेसा ॥

अथ नागध्वनिः ।

नागध्वनिसमारूढ़ो जेता त्रिङ्गुलसन्निभः ।
सितवासा कुम्भवर ऐरावतकुलोद्भवः ॥
ढक्कान्वयः शब्दध्वनिः रिपो वर्ज्जितषाड़वः ।
षड़्जन्यासग्रहांशो यो गेयो वीरवरैर्दिवा ॥
सागमधसागसागमधनिसागमसानि ॥

अथ भूपाली ।

गौरद्युतिः कुङ्कुमरक्तदेहा
तुङ्गस्तनी चन्द्रमुखी मनोज्ञा ।
भर्त्तुः स्मरन्ती विरहेण दूना
भूपालिकेयं रसशान्तियुक्ता ॥ इति ध्यानम् ।
रात्र्यां प्रथमयामे च धैवतग्रहसंस्थिता ।
स्यात्तु भूपालिका ज्ञेया सङ्गीते परिभाषिता ॥
धनिसारेगमपगमपधनि सानिगरेसामगरेसा ॥

अथ कल्याणः (संगीतदर्पणे २।८२)—

कृपाणपाणिस्त्रिलकं ललाटे
सुवर्णवेशः समरे प्रविष्टः * ।
प्रचण्डमूर्त्तिः † किल रक्तवर्णः
कल्याणरागः ‡ कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णः कल्याण ईरितः ।
सन्ध्याकाले प्रगेयते कल्याणो नवधा भवेत् ॥

अथ अड़ानारागः

रणे प्रविष्टः स्मरचारुमूर्त्तिः
वीरे रसे व्यञ्जितरोमहर्षः ।
पाणौ कृपाणः किल रक्तवर्णः
अड़ानारागः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ इति ध्यानम् ।
पूर्णाड़ाना सुसंप्रोक्ता मध्यमग्रह ईरितः ।
रात्र्याश्च प्रथमे यामे गीयते विबुधैर्जनैः ॥
मल्लारकान्हड़ामिश्रनायकी स्वरसंयुता ।
अड़ानोत्पत्तिर्विज्ञेया रात्र्यां द्वितीययामके ॥
मपधनिसारेगमगरेसानिसाधनिसा ॥
गमपधनिसागरेसानिधमगरेसा ॥

अथ केदारी (संगीतदर्पणे २।६५)—

जटां दधाना सितचन्द्रमौलिः
नागोत्तरीया धृतयोगपट्टा ।
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्ता
केदारिका दीपकरागिणीयम् ॥ इति ध्यानम् ।
मध्यमांशग्रहन्यासं धैवतो वर्ज्जितः क्वचित् ।
अर्द्धरात्रान्तरे गानं केदारो गीयते बुधैः ॥
विहागशङ्कराश्यामहमीरो मिश्रितः पुनः ।
केदारो जायते विद्वन् योगध्यानतपस्विना ॥
सामपरेसासागमपरेसानिपमगरेसागरेसानिमपरेसा ॥

अथ सोहनी ।

वीणा दधाना दृढ़बद्धवेणी
सौन्दर्य्यलावण्यकलायताक्षी ।

* प्रचण्डः ।

† स्मरम् प्रविष्ट इति आदर्शपुस्तकधृतपाठः ।

‡ 'कल्याणनाट' इति मुद्रित-संगीतदर्पणपाठः ।

§ केदाररागः कथितो तपस्वी । इति आदर्शपुस्तकधृत-भ्रमपाठः ।

सुवर्णकान्तिर्मधुरञ्च गानम्
सा मोहनी मोहितविश्वा एषा ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं ऋषभो वर्ज्जितः स्वरः ॥
षाड़वो शेषरात्रौ च मोहनी मोहनी तथा ।
मालकोशी कान्हड़ा च पर्जकास्वरमिश्रिता ।
मोहनी स्यात्तदुत्पत्तिः निशान्ते गीयते बुधैः ॥
गगममधधनिनिसागगसामधगसानि ॥

अथ पञ्चमः ।

उन्मत्तकोकिलनिनादयुक्तो
वीणा दधानो सुरवेशधारी ।
मदाङ्गमूर्त्तिः सुरपुष्पकर्णः
सुवर्णकान्तिः किल शोभनस्य ॥ * इति ध्यानम् ।
श्यामं ताम्बूलकरधृतकुमुदं वेणुवाद्यं सतालं
चन्द्रार्कौ यस्य भाले पिकवृदुवचनं यस्य आस्ये प्रलिप्तम् ।
देवेन्द्रादियुक्तं शिरसि सुमुकुटं पीतवस्त्रं प्रभाते
गायन्ति स्वर्गलोके दनुजसुरगणाः पञ्चमञ्चात्र सन्तः ॥
ऋषभांशग्रहन्यासं पञ्चमस्वरवर्ज्जितः ।
शेषरात्रौ प्रगीयन्ते पञ्चमो राग उच्यते ॥
रेमपधनिसागमधरेसागरेसानिपमग ॥

अथ मालिगौरा (मालवगौड़ः । संगीतनारायणे)

वीणाविनोदप्रतिपन्नपाणिः
गृह्णन् कथा नारदसंप्रयोगात् ।
श्यामो युवा विप्रकुलप्रसूतः
स मालिगौड़ो गौरमुनिप्रणीतः ॥ इति ध्यानम् ।
धैवतांशग्रहन्यासं मालवी श्री च संयुतम् ।
धनाश्रीमिश्रिता एषा मालिगौरा च काथ्यते ।
धनिसारेगमपधमगरेगमरेसा ॥
निनिधधनिसागरेसानिधपमगरेसा ॥

* रक्ताम्बरी रक्तविशालनेत्रः शृङ्गारयुक्तसरुणो मनस्वी ।
प्रभातकाले विजयी च नित्यं सदा प्रियः कोकिलमञ्जुभाषी ॥
इति सुद्रित-संगीतदर्पणधृतपाठः ।

अथ आभीररागः ।

हेमप्रभा चारुमनोज्ञमूर्त्तिः
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा ।
धीरोल्लसत्पल्लवकर्णपूरे
षड्जादिसव्योर्पितवस्त्रधारी ॥ इति ध्यानम् ।
गान्धारांशग्रहन्यासं पूर्णा साभीरिका तथा ।
तृतीये सुदिने प्रोक्ता रसे वीरे प्रयुज्यते ॥

अथ जयजयन्ती ।

पीनोन्नता सुन्दरी सा मृगाक्षी
स्वर्णप्रभा कोकिलनादतुल्या ।
वीणाविनोदी सुरपुष्पगन्धी
सा जयज्जयन्ती सुरमेघस्य भार्य्या ॥ इति ध्यानम् ।
सोरठी गौड़संयुक्ता वेलावल्या समिश्रिता ।
जयजयन्ती तदोत्पन्ना निशान्ते गीयते बुधैः ॥
षड्जांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवत ईरितः ।
सुसम्पूर्णा जयजयन्ती मेघरागस्य वल्लभा ॥
सासारेसामगरेसारेसानिधपमगमधसानिधपमगरे-
रेसामपधसारेसापमरेसागरेसानिधपमगरेसा ॥

अथ भैरवः । संगीतरत्नाकरे वा संगीतरत्नमालायां—

शुभ्राङ्गः शुभ्रवासः शिरसि शशिधरः शृङ्गवाद्यश्च हारी
शम्भोर्वक्त्राब्जजातो धृतगरलगलो भैरवो रक्तनेत्रः ।
हस्ते शूलं कपालं जलजमणिमयं कुण्डले कर्णयुग्मे
तारं जूटे जटानां शरदि सुरगणैर्गीयते प्रातरेषः ॥
इति ध्यानम् ।

अथ भैरवी

स्वर्णाभसोमवक्त्रा हिमकरधवलं वस्त्रमुत्पावहन्ती
कण्ठे रत्नस्य हारं हिरदवरशिरोजातमुक्ताफलानि ।
सिन्दूरं भालमध्ये प्रहसितवदना हस्तयोः कङ्कणे द्वे
नृत्याङ्गीयमाना चरणकमलयोर्नूपुरौ हारवीथ्याम् ॥
इति ध्यानम् ।

अथ पुण्यकी

स्तनतटकृतरागा कुङ्कुमैः पीतवस्त्रा
विविधकुसुमस्रजां कञ्चुकीमादधाति ।

भयचकितमृगाक्षी कान्तकण्ठे विलग्ना
जितमृगपतिमध्या पुण्यकी पुण्यदात्री ॥ इति ध्यानम् ।

अथ वङ्गाली

वङ्गाली भाति यस्या अलकपटलके शीतरश्मिर्नितान्ता
भर्त्तुः सन्ततिहन्ता मलयजरचिता सर्व्वदेहप्रलेया ।
गौराङ्गी शुक्लवासा रविसमकिरणा हास्ययुक्ता सुमध्या
युष्माकं संमुदे सा युवजनहृदयानन्दकर्त्रीकटाक्षैः ॥

तथा च

अन्तर्वासा जयति विमलामच्छमालाममोघां
धत्ते सूत्रं पठति नितरां वेदमत्यन्तविद्वान् ।
शुक्लं वस्त्रं कनकसदृशं पाणिपात्रं कराग्रे
वङ्गालोऽयं वदति वचनं नृत्यगीतावसक्ताम् ॥

इति ध्यानम् ।

अथ मधुर-रागः

अत्यन्तरूपी मधुरस्वरज्ञो
गुणान्वितः सम्भृतसर्व्वविद्यः ।
वीरावरैर्वेष्टितगौरदेहः
ख्यातो मधुरो लोकहिते सङ्गिः ॥ इति ध्यानम् ।

इति राग रागिणी ध्यानोदाहरणम् ।

——०——

अथ तालाध्यायः

तकारे शङ्करः प्रोक्तो लकारे पार्व्वती स्मृता ।
शिवशक्तिसमायोगात्ताल इत्यभिधीयते ॥
शिवशक्त्यात्मकं पुण्यं यशस्यं भुक्तिमुक्तिदम् ।
ततः प्राणात्मकं तालं योगिनामभिलिप्सितम् ॥

(संगीतरत्नाकरे ५।२)

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम् ॥

अथ तालं

अथ तालं प्रवक्ष्यामि तालरूपं जगद्गुरुम् ।
जनयन्तं सुखं गीते वाद्य-नृत्यविशेषवित् ॥

उत्पत्त्यादित्रयं लोके यतस्तालेन जायते ।
कीटकादिपशूनाञ्च तालेनैव गतिर्भवेत् ॥
यानि कानि च कर्म्माणि लोके तालाश्रितानि च ।
आदित्यादिग्रहाणाञ्च तालेनैव गतिर्भवेत् ॥
ब्रह्मकल्पोऽपि कालेन यतः कालवशं गतः ।
कालक्रियावशाच्छिन्नस्तालशब्देन मन्यते ॥
हस्तद्वयस्य संयोगे वियोगे चापि वर्त्तते ।
व्याप्तिमानो दशप्राणैः करात्तालकसंज्ञकः ॥
आद्यैकतालो धमालो यतिः चाचपुटस्तथा ।
द्वितालो रूपकश्चैव त्रितालश्च द्विधा भवेत् ॥
त्रेवटो झम्पतालश्च अठतालस्ततः परम् ।
सूर्य्यफाकी चर्च्चरी च ब्रह्मचातुर्थतालिका ॥
चतुस्तालः पञ्चतालो मुखः पञ्च बहुलिका ।
षट्तालः सप्ततालश्च अष्टमुखी ततःपरम् ॥
गणेशतालो नागश्च ब्रह्मतालस्तथैव च ।
रुद्रतालो विष्णुतालः सविता च ततः परम् ॥
करुणा त्रयोदश प्रोक्तश्चतुर्दशस्तथैव च ।
देशी पञ्च षोड़शी च लक्ष्मीतालश्च मल्लिका ॥
सरस्वती पार्व्वती च सावित्री-गायत्री तथा ।
सावित्रीतालविख्यातः कौशिकेन प्रदर्शितः ॥
हनुमद्वीरतालश्च भैरवस्ताल एव च ।
राधिकातालः कृष्णश्च मोहनी चक्रतालिका ॥
गायन्ती गोपिका चेयं गोपिकाध्यानतत्परा ।
एकैकं कृष्णसन्निधौ वृन्दावने प्रगीयते ॥
गोपिका श्रुतिरूपा च प्रत्येकं तालमिश्रिते ।
इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुस्तालवारिधेः ॥
रागतानखरालापः वाद्यभेदश्च तालिका ।
न शक्नोतीह केनापि न ययुर्नादवारिधेः ॥
लघ्वादितालो लोकेऽस्मिन् प्रसिद्ध एकतालिका ।

इति एकतालौ ।

द्रुतश्चैव यद्रुतश्चैव धमालताल उच्यते ।

((०) इति धमालतालः ।

लघुविरामो यतिताल: ।

इति यतितालौ ।

द्रुतो लघुश्चैव लघुरचम्पकस्तथा ।

०। इति चम्पकताल: ।

दीलो रूपकतालेऽस्मिन् कथने गायने मति: ॥

०० । इति रूपकतालौ ।

दीविरामे लघुद्रुतचातुरीताल उच्यते ।

।०।। इति चातुरीताल: ।

ं ं । इति लघटताल: ।

द्रुताद्रुतौ विरामान्तौ तृतीये ताल: कथ्यते ।

०० ं इति जलदतितारा ।

लघौ गुरौ च संयुक्ते लहचितालसंज्ञक: ।

।। ऽ इति धामातितारा ।

द्रुतो लघुर्गुरु: प्रोक्तो झम्पतालश्च जायते ।

०।ऽ।। इति झम्पताल: ।

लघुद्रुतो लघुश्चैव सूर्यफाकसुसंज्ञक: ।

।०। इति सुरफाकताल: ।

गुरुद्वौ च लघुसंज्ञो चतुर्थतालसंज्ञक: ॥

ऽ०० । इति चौतारा ।

प्लुतलौ च गुरुर्यक्तौ लहचातुर्थतालक: ।

ऽ ।। ऽ इति वड़ाचौतारा ।

त्रयो द्रुता लघुरन्तश्चतुरतालसंज्ञक: ।

००० । इति सिधाचौतारा ।

लघुर्लघुद्रुतश्चैके लघ्वाद्यष्ठतालसंज्ञक: ।

।०। इति आड़चौतारा ।

लौ द्वौ लघु पुनर्योज्यं पञ्चतालो विधीयते ।

।।०० । इति पञ्चमुखीताल: ।

लघुर्द्रुतो लघुश्चैव द्रुतो लघु: पुनस्तथा ।

पञ्चमेषा ताली प्रोक्ता नादशास्त्रविशारदै: ।

।०।०। इति पञ्चमताल: ।

लघुर्द्रुत स्त्रयो युक्ता य: पुनर्लघुषु युज्यते ।

परातात इमे प्रोक्ता गीतशास्त्रविशारदै: ।

।०००। इति फरोदस्तताल: ।

लघुद्रुतलघुद्वौ च लघुद्रुश्च प्रदीयते ।

षट्सुखितालसंज्ञा च सङ्गीते परिभाषिता ।

।०।००। इति षटसुखी ।

लघुचन्द्रो लघुश्चैव द्रुतइन्द्रो लघुस्तथा ।

सप्त सुर: तालसंज्ञाश्च सङ्गीते: परिभाषिता: ।

।८८०० इति सप्ततान: ।

लघुद्रुतो द्रुतश्चैव त्रयद्रुतलघुस्तथा ।

मुख्याष्टताल: विज्ञेय: ख्यातो रागविशारदै: ॥

०।०।००००। इति अष्टसुखी ताल: ।

द्रुतइंद्रलौ चैव चतुराणुलघुस्तथा ।

गणेशतालसंजात: सङ्गीते परिभाषित: ॥

००।।(((((। इति गणेशताल: ।

लदौ लोदौ लघुश्चैव ब्रह्मताल: प्रगीयते ।

।०।००।०००। इति ब्रह्मताल: ।

गुरुत्रयो लघुद्रुश्च पुनर्लघु: प्रयुज्यते ।

चतुर्द्रुतलघुश्चैव रुद्रताल: प्रगीयते ॥

ऽऽऽ।०।०००००। इति रुद्रताल: ।

लघुत्रयद्रुतश्चैव चत्वारो द्रुलघुस्तथा ।

विष्णुतालोऽतिविख्यातो सङ्गीते परिभाषित: ॥

।।।०।।०००००। इति विष्णुताल: ।

लघुद्रुतलघु श्चैव द्रुतइन्द्रलघुस्तथा ।

व्यापकौ द्वौ द्रुतौ गुरुसूर्य्यतालो निगद्यते ॥

।०।००।०००००ऽ इति सूर्य्यताल: ।

गुरु द्वौ वै लघुश्चैव त्रयाणुश्च लघुस्तथा ।

द्रुतत्रयलघुश्चैकपञ्चाणुलविरामक: ॥

लक्ष्मीताल इति प्रोक्त: सङ्गीते परिभाषित: ॥

ऽ००।(((।०००।(((((। इति लक्ष्मीताल: ।

चत्वार्य्यणुद्रुतश्चैक लघुरेव हि धारयेत् ।
गुरुर्द्वन्द्वप्लुतश्चैव भ्रमणो तालसंज्ञकः ॥

((((० । ऽ ऽ ऽ इति भ्रमणतालः ।

इति तालाध्यायः ।

———०———

अथ नृत्याध्यायः

श्रीविष्णुसुखसंदोहं गुरुं दीपकरूपकम् ।
सुवृत्तमक्षरं नत्वा वक्ष्ये नृत्यस्य लक्षणम् ॥

नृत्यभेदमाह—

वाद्यं नृत्यं ताण्डवं च नृत्यलास्यमिमाभिधाः ।
लावो हंसो मयूरश्च हयः कुञ्जर एव च ।
तित्तिरः कुक्कुटो मीनो त्वष्टधा गतयो मताः ॥

अथ ताण्डवः

वीरे रसे महोत्साहो पुरुषो यत्र नृत्यति ।
रौद्रभावरसोत्पत्तिस्तत्ताण्डवमिति स्मृतम् ॥

अथ लास्यम्

यौवनस्त्रीविलासिन्यः कामभावविचक्षणाः ।
यदङ्गहारवैदग्धात् कुर्य्युर्लास्यमुदीरितम् ॥

तथाच संगीतरत्नाकरे (७।३२)

लास्यं तु सुकुमाराङ्गं मकरध्वजवर्द्धनम् ॥

(तथा संगीतमहोदधौ ५।६-१५)—

ईषद्धास्यः प्रसन्नास्यो सुखरागो भवेद्द्विधा ॥
सहजोऽसहजश्चेति प्रसन्नः कान्तिभूषितः ।
स्वाभाविकः प्रसन्नश्च रक्तः स च चतुर्विधः ॥
स्वाभाविकः स्यात् स्वभावा स्वभावेनैव या भवेत् ।
प्रसन्नो मधुरः स स्याच्छृङ्गाराभूतहास्ययोः ॥
रक्तः स्यात्लोहितो वीरः करुणाद्भुतरौद्रयोः ।
गीयमाने ध्रुवपदे गीते हावमनोहरे ॥
नर्त्तनं तनुयात् पात्रं कान्ताहास्यादिदृष्टिजम् ।
नानागतिं लसद्भावो मुखरागादिसंयुतः ॥
सुकुमाराङ्गविन्यासं दन्तद्योतितहावकम् ।
खण्डमानेन रचितं मध्ये मध्ये च कम्पनम् ॥
यत्र नृत्यं भवेदेवं ध्रुवपादं तदा भवेत् ।
प्रायशो मध्यदेशीयो भाषया यत्र धातवः ॥
उद्ग्राहध्रुवकाभोगास्त्रयो भवन्ति हेतवः ।
उद्ग्राहरहितं केचित् परे त्वाभोगवर्ज्जितम् ॥
उद्ग्राहाभोगरहितमन्वर्थमपरे जगुः ।
खरपार्ष्णिस्रुविकाराः शृङ्गाराकृतिसूचकम् ।
भस्मादिस्वेदलिप्ताङ्गो विभ्रत्मुण्डशिरःशिखा ॥
भ्राजदृघर्घरिकाजालजङ्घाग्रारोरपेशलम् ।
पद्माङ्गकुशलस्तालकलालयविचक्षणः ॥
पञ्चग्रामेषूच्चरन्नाज्ञान् यो नृत्यति स धोरणिः ।
वाद्यः प्रबन्धैः कठिनै त्वक्तमेलादिभिस्तथा ॥
गीतैस्तालगतुण्डस्थैः प्रबन्धैश्च ध्रुवादिभिः ।
लास्याङ्गैरन्वितं यत्र नृत्यञ्च द्रुतमानसः ॥
स्वयं गायन्ति वाद्यञ्च त्रिवलीं वादयेत् स्वयम् ।
तत्पात्रं गौड़लोके चेड़ाद्यं तालस्य मन्यते ॥
त्रिवलीं धारणं स्कन्धे ग्राम्यत्वं कुरुते स्त्रियः ।
अगायत त्वत्कारोरा सैव स्यान्मुखगौण्डली ॥
गौण्डलग्रा मण्डनं प्रोक्तं तद्धि कर्णाटदेशजम् ।
दक्षिणा गाथकाः सर्व्वे कुशलाः गीततत्पराः ॥
मार्गदेशीविभागेन नर्त्तनं द्विविधं स्मृतम् ।
ताण्डवः पुरुषो ज्ञेयः लास्यञ्च स्त्रीरिवेरिता ॥

अथ रागनामानि । संगीतरत्नाकरे (२।१।१६-१८)—

श्रीरागनट्टौ वङ्गालो भासमध्यमषाड़वौ ।
रक्तहंसः कोलाहलः प्रसवो भैरवध्वनिः ॥
मेघरागः सोमरागकामोदौ चाम्रपञ्चमः ।
स्यातां कन्दर्पदेशाख्यौ ककुभान्तश्च कौशिकः ॥
नट्टनारायणश्चेति रागा विंशतिरीरिताः ।

(तत्रैव २।१।३२-३६)

छेवाटी पिञ्जरीत्येका बोट्टे भाषा तु माङ्गली ।
वाङ्गाली माङ्गली हर्षपुरी मालववेसरौ ॥
खञ्जनी गुर्ज्जरी गोड़ी पौराली चार्द्धवेसरौ ।

शुद्धा मालवरूपा च सैन्धव्याभीरिकेत्यमूः ॥
भाषास्त्वयोदश ज्ञेया विज्ञैर्मालवकौशिके ।
विभाषे द्वे तु काम्बोजी तद्वदेवारवर्धनी ॥
गान्धारपञ्चमे भाषा गान्धारी भिन्नषड्जका ।
देवगान्धारः*कच्छेली स्वरवल्ली निषादिनी ॥
त्रिवणा† मध्यमा शुद्धा दाक्षिणात्या पुलिन्दका ।
तुम्बरा षड्जभाषा च कालिङ्गी ललिता ततः ॥

तथा च संगीतदर्पणे रागविवेकाध्याये (२।१-५)—

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः ।
रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथितो बुधैः ॥

अथ रागाङ्गम्

रागच्छायानुकारित्वाद्रागाङ्गमिति कथ्यते ।

इति रागाङ्गम् ।

अथ क्रियाङ्गम्

करणोत्साहसंयुक्तं क्रियाङ्गं तेन हेतुना ।

इति क्रियाङ्गम् ।

अथ भाषाङ्गम्

भाषाच्छायाश्रिता येन भाषाङ्गं तेन हेतुना ॥

इति भाषाङ्गम् ।

अथोपाङ्गम्

किञ्चित् छायानुकारित्वादुपाङ्गमिति कथ्यते ।

इत्युपाङ्गम् ।

अथ काण्डारणा

काण्डारणा तु कथिता तारस्थानेषु शीघ्रता ।
गमकैर्विविधैर्युक्ता कौशलेन विभूषिता ॥

इति काण्डारणा ।

अथ मतङ्गमतेन रागाणां वैविध्यं दर्शयति—

शुद्धाश्छायालगाः प्रोक्ता संकीर्णाश्च तथैव च ॥
तत्र शुद्धरागत्वं नाम शास्त्रोक्तनियमाद्रञ्जकत्वं भवति।

छायालगरागत्वं नामान्यच्छायालगत्वेन रक्तिहेतुत्वं भवति। सङ्कीर्णरागत्वं नाम शुद्धच्छायालगमुख्यत्वेन रक्तिहेतुत्वं भवति ।

इति कल्लिनाथोक्तं लिखितं ।

(तथा च संगीतदर्पणे २।८-११)—

शिवशक्तिसमायोगाद्रागाणां सम्भवो भवेत् ।
पञ्चास्यात् पञ्च रागाः स्युः षष्ठस्तु गिरिजामुखात् ॥
सद्योवक्त्रात्तु श्रीरागो वामदेवात् वसन्तकः ।
अघोराङ्गिरवोऽभूत् तत्पुरुषात् पञ्चमोऽभवत् ॥
ईशानाख्यान्मेघरागो नाट्यारम्भे शिवादभूत् ।
गिरिजाया मुखाल्लास्ये नट्टनारायणोऽभवत् ॥

इति संगीतदर्पणोद्धृतम् ।

(तथा च संगीतरत्नाकरे २।१।३९-४५)—

श्रीकण्ठिका च वङ्गाली गान्धारी सैन्धवीत्यमूः ।
भाषाः सप्तदश ज्ञेयास्ततस्तु विभाषिकाः ॥
पौराली मालवा कालिन्द्यपि देवारवर्धनी ।
वेसरे षाड़वे भाषे द्वे वाह्या वाह्यषाड़वा ॥
विभाषे पार्व्वती श्रीकण्ठाथ मालवपञ्चमे ।
भाषास्तिस्रो वेदवती भाविनी च विभाविनी ॥
ताने तानोद्भवा भाषा भाषा पञ्चमषाड़वे ।
पोता भाषांशकामेके रेवगुप्ते विदुर्विदुः ॥
विभाषा पल्लवी भासवलिता किरणावली ।
शंकाद्यावलितेत्येतास्तिस्रस्त्वन्तरभाषिकाः ॥
चतस्रोऽनुक्तजनका ह्यहद्देश्यामिमाः स्मृताः ।
एवं षष्ठवतिभाषा विभाषा विंशतिः स्मृताः ॥
चतस्रोऽन्तरभाषाः स्युः शार्ङ्गदेवस्य सम्मताः ।
भाषा मुख्या स्वराख्या च देशाख्या चोपरागजा ।
चतुर्विधा मतङ्गोक्ता मुख्यानन्योपजीविनी ।
स्वरदेशाख्यया ख्याता स्वराख्या देशजा क्रमात् ।
अन्योपरागजाताभ्यो याष्टिकेनोदिताः पुनः ।
संकीर्णदेशजामूलाछायामात्रेतिनामभिः ॥

* 'गान्धारवल्ली' इति सुद्रितसंगीतरत्नाकरपाठः ।

† 'तवणा' इति सुद्रितरत्नाकरपाठः ।

‡ पञ्चम षाड़वो मता । इति आदर्शपुस्तकपाठः ।

शुद्धाभीरी रगन्ती च त्रिधा मालववेसरी ।
मुख्याः षड़िति शेषास्तु सुज्ञाताः स्फुटलक्षणाः ।
नामसाम्यंतु कासाञ्चिद्भिन्नानामपि लक्ष्मतः ॥
इति ग्रामरागोपरागभाषाविभाषान्तरभाषाविवेकः ।

अथ रागभाषाविभाषा-लक्षणं

(संगीतरत्नाकरे २।२।१—९)

अथ रागाङ्गभाषाङ्गक्रियाङ्गोपाङ्गनिर्णयम् ।
केषाञ्चिन्मतमाश्रित्य कुरुते सोढ़लात्मजः ॥
रञ्जनाद्रागता भाषा रागाङ्गादेरपोष्यते ।
देशीरागतया प्रोक्तं रागाङ्गादिचतुष्टयम् ॥
प्रसिद्धा ग्रामरागाद्याः केचिदेशीत्यपीरिताः ।
तत्र पूर्वप्रसिद्धानामुद्देशः क्रियतेऽधुना ॥
शङ्कराभरणो घण्टारव आहंसदीपकौ ।
रीतिः पूर्णाटिका लाटी पञ्चवीति बभाषिरे ॥
रागाङ्गान्यष्टगाभीरी बौहाटी खशिकोत्पली ।
गोल्ली नादान्तरी नीलोत्पली छायातरङ्गिणी ॥
गान्धारगतिका रञ्जावित्येकादश मेनिरे ।
भाषाङ्गान्यथ भावक्रीखभावक्रीशिवक्रियः ॥
मरुकक्रीत्रिनेत्रक्रीकुमुदक्रीदनुक्रियः ।
ओजक्रीन्द्रक्रियो नागक्रतिधन्यक्रतिस्तथा ॥
विपायक्री क्रियाङ्गानि द्वादशेति जगुर्बुधाः ।
त्रिणयपाङ्गानि पूर्णाटो देवालश्च गुरुञ्जिका ॥
चतुस्त्रिंशदिमे रागाः प्राक्प्रसिद्धाः प्रकीर्त्तिताः ॥

संगीतभाष्ये मृदङ्गाध्याये—

गीतवादनतत्त्वज्ञश्छिद्राच्छादनपण्डितः ।
ग्रहमोक्षप्रदोषज्ञो गीतनृत्यप्रमाणवित् ॥
न वाद्येन विना यस्माद्गीतं तालं च शोभते ।
तस्मान्माङ्गल्यमस्माभिर्वाद्यमत्र निगद्यते ॥
गीतं निरूपितं तच्च वाद्याधीनं मतं मया ।
वाद्यं निरूप्यते गीतं नृत्ययोरनुरञ्जकम् ॥
चतुर्विधं तत् कथितं ततं सुषिरमेव च ।
अवनद्धं घनं चेति ततस्तन्त्रिगतं भवेत् ॥

सङ्गीतरत्नाकरे (संगीतनारायणे)—

ततानद्धं सुषिरञ्च घनानीति चतुर्विधः ।
ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धमुरजादिकम् ।
वंशादिकन्तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥

सङ्गीतदर्पणे—

वीणादिसुषिरं वंशं कोहलादिप्रकीर्त्तितः ।
चर्म्मणानद्धवदनं वाद्यते पटहादिकम् ॥
अवनद्धं घनं प्रोक्तं कांस्यतालादिकं घनम् ।
आलावली ब्रह्मवीणा किन्नरीति निगद्यते ॥
विपञ्ची वल्लकी ज्येष्ठा चित्रा घोषवती जया ।
हस्तिका कुब्जिका कूर्म्मा सारङ्गी परिवादिनी ॥
त्रिशरी शततन्त्री च नकुलोष्ठी च वंसरी ।
औडुंबरी पिनाकी च निबन्धपुष्कलस्तथा ।

संगीतरत्नाकरे—

वीणा घोषवती चित्रा विपञ्ची परिवादिनी ।
वल्लकी कुब्जिका ज्येष्ठा नकुलोष्ठी च किन्नरी ॥
जया कुर्म्मी पिनाकी च हस्तिका शततन्त्रिका ।
औदम्बरी च षट्कर्णा पीनो रावणहस्तकः ॥
सारङ्गयालापिनीत्यादेः कृतपास्ततवादकाः ।
महाराष्ट्रान्ध्रद्रम्बीरचौलैर्मलयमालवैः ॥
अङ्गवङ्गकलिङ्गाद्यैर्नानाभिनयकोविदैः ।
अङ्गहारप्रयोगज्ञैर्लास्यताण्डवकोविदैः ॥
विचित्रस्थनिकप्रौढ़ैर्विषमेषु सुशिक्षितैः ।
नादस्य कृतपं पात्रैरुत्तमाधममध्यमैः ॥
कृतपानाममीषान्तु समूहो वृन्दमुच्यते ।
ततानद्धं सुषिरञ्च घनानीति चतुर्विधम् ॥
ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् ।
वंशादिकन्तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥

अथ वाद्याध्यायः

अथ मृदङ्गवाद्याक्षराणि

ताधीथुन्ना तथा धीधी टेकिटिगिदिगन्धा ।
तत्ताधीधीथुं थुं नानाधिररधिररधिलाङ्धा ॥

कवग क ख ग घ ङा चवर्गे ज झ ञ पुनः ।
टवर्गे ट ठ ड ढ णा तवर्गे त थ द ध्न च ॥
पवर्गे मस्य संप्रोक्ता अन्तस्था य-र-ल-स्तथा ।
एवं वाद्याक्षरा ग्राह्या मृदङ्गाध्याय ईरिताः ॥

अथ पर्णसागरमृदङ्गाध्यायः । संगीतरत्नाकरे—

ताधिथुन्नाटेक्किदिधा ता त्तित्थुन्ना तत्तधिधिथुन्थुन्न थुन्नन्नाटेताकिटतकघेदिगनधातकिटधाथुंकिटितातकिट किटतकाधिकिटिकिटितक्काथुं किटिकिटितक्कानंकिटि किटितकतकिटिकिटिधुमकिटितकघेदिगिनधा ॥ १ ॥

तकिटिकिटिथुन्थुन्किटितकथुन्थुन्किटतकदि-किटिकिटिथुन्थुन्किटिथुन्थकिटतकथुन्किटिकिटि थुन्थुन्किटथुन्थुन्किटतकनकिटिकिटिथुन्थुन्किट थुन्थुन्किटतककिटकिटधुमकिटतकगेदिगन्धा ॥ २ ॥

तकिटिकिटिधुमकिटिधुमकिटितकादिकिटिकिट धुमकिटिधुमकिटितकथुन्किटिकिटधुमकिटिधुम किटितकनंकिट्किटधुमकिटिधुमकिटितकतकिट किटधुमकिटतकगेदिगन्धा ॥ ३ ॥

तकिट्तकिट्थुन्थुन्किटधुम्किटतकादिकिटदि किटथुन्थुन्किटधुम्किटतक्नकिटिकिटिथुन्थुन्किट धुमकिटतकतकिटकिटधुमकतकगेदिगनधा ॥ ४ ॥

तकिटकिटतकतकिटथुन्किटतक्दिकिटदिकिट तकतकिटथुन्किटतकाथुन्किटथुन्किटतकतकिट थुन्किटतकनकिटकिटतकतकिटथुन्किटततकिट तकधुमकिटतकघेदिविन्नधा ॥ ५ ॥

तकिटतकिटतकतकिटधिकिटतकादिकिटदिकिट तकतकिटधिकिटतक्थुन्किटकिटतकत्किटधिकिट तकनकिटकिटतकतकिटधिकिटतकतकिटकिटधुम किटतकघेदिगन्धा ॥ ६ ॥

तकिटतकिटधुम्किटतकिटतकाकिटतकादिकिटि किटधुमकिटितकिटतकाकिटतकथुन्किटिकिटिधुम किटततकाकिटतकनंकिटिकिटधुमकिटत२किटत किटतकतकिट२धुमकिटतकाघेदिगन्धा ॥ ७ ॥

तकिटितकिटितक्तकाधुमकिटितकादिकिटिकिटि तकतकधुमकिटितकथुन्किटकिटतक्तक्धुमकिटि तका । नंकिटिनंकिटितकातकधुमकिटतकतकिटि किटधुमकिटतकघेदिगन्धा ॥ ८ ॥

तकिटितकिटिधाकिटतधाकिटतकाकिटतकादिकिट दिकिटधाकिटतकधाकिटतकाकिटतकथुन्किटिकिटि धाकिटतकिटतकाकिटतकधाकिटनंकिटधाकिटतधाकिट तकाकिटतकतकिटकिटधुमकिटतकघेदिगन्धा ॥ ९ ॥

तकिटतकिटतकिटतकाकिटतकादिकिटदिकिट तकिटतकाकिटतकथुन्किटकिटतकिटतकाकिटतक् नेंकिटनेंकिटकिटतकाकिटतकतकिटिकिटिधुमकिटि तकगिदिगन्धा ॥ १० ॥

ताकिटताकिटतकिटतकाकिटततकाकिटतकाकिट तकाकिटतकादिकिटकादिकिटतकिटतकाकिटतकिट तकाकिटतकाकिटतकाकिटिनकथुन्किटकिटतकिट तकाकिटतकनंकिटनंकिटतकिटतकिटतकिटतकतकिट तकतकिटधुमकिटतकगिदिगन्धा ॥ ११ ॥

ताधिन्नकधिधिधिन्नकगिदिगिनक तत्तत्तोततातत्त धिधिथुन्थुन्नन्नाकिटतकघेदिगघनकिटतकघेदिघ्न दिदितोदिदितातत्धिधिथुन्थुन्ननाकिटतकघेदिगन किटतकघेदिघनदिदितोदिदितातत्धिधिथुन्थुन्नन्ना किटतकघेदिगनकिटतकघेदिघनथुन्थु न्ताथु न्थु न्ता ततधिधिथु न्थु न्नंनाकिटतकघेदिघनाकटितकघेदि घननंनंतानंनंतातघिघिथु न्थु न्नंनाकिटतकगिदिघन किटतकगिदिघन्धा ॥ १२ ॥

त्रिकटतकताधागेतिटिधागेदिगन्नागेकिटिकिडन कत्रकडतानधीधागिदिगन्नगदित्कडांनधात्रिकडक्कि धकडानधातिकडधाताधाधितानधाधाधिनगदितकडां नधातकगिदिगन्धा ॥ १३ ॥

तांत्रकिटध्रकिटथु न्गिताथारिकुतकिटतकाकिटध्र गड़धागेदिगिन्नंकिटत्रकटतागेदिगिन्नतात्रिकटतागेदिता ध्रगड़धागेदितानंकिटथ न्किटधाधाकिटधुमकिटधा ताड़धाधाधीधाताड़धाधाधीधाताड़धाधाधीधा ॥ १४ ॥

कड़ांनकिटतक्धागेदिगिधागेतिटिकिडनक्त्रिकट तागेदिगिताघड़ांनघिड़्नक्त्रकटतक्तागेतिटिकिटि नांकिटिथुन्किटिधगड़धागेदिटिकिटिकड़ांन्घड़ान्धुम किटतकिटतकाकिटघ्रगड़तागेदिगिताधाताड़धाधाधो धाधोधाधुमकिटत्रकटतकतागिदिगनधा ॥ १५ ॥

धातागथुन्गाधागेदिगिताधाताकिटतक्धुमकिट नंकिटघड़ांनकड़ांकिड़नक्धुमकिटत२किटिकिटतक् घ्रगड़तक्त्रगड़धागेदिगिन्नतान्ध्रांघ्रकटत्रकटनंकिट नंकिटतकतकाकिटधुमकिटधाताड़धाधाधोधाधोता किटतक्थुन्किटथुन्किटतक्धुमकिटत्रकड़तकतातक धुमकिटितकगिदिगन्नगदिधातकघढ़ांन्धेदिगन्ननगदि धात्तकधुमकिटगेदिगनधा ॥ १६ ॥

(तथाच संगीतरत्नाकरे ५।२३७)

द्रुतादिरचनाभिदात्तालभेदोऽप्यनेकधा ।
तालानामधुना तेषामुद्देशं संगिरामहे ॥
अणुद्रुतो द्रुतश्चेति विरामद्रुतलस्तथा ।
द्रुविरामो गुरुश्चेति प्लुतश्चेति यथाक्रमम् ॥
अर्द्धचन्द्राकारस्यादनु इत्यभिधीयते ।
चन्द्रद्रुतं तथा ज्ञेयं द्रुतं चैव द्विविन्दुका ।

८०८।।१ऽऽ

सप्ताङ्गानि सुतालेऽस्मिन् ज्ञातव्यानि सदा बुधैः ॥
अणुद्रुतो वातजातो द्रुतश्च जलसम्भवः ।
समीर-जलसम्भूतो द्वेविरामोह कथ्यते ॥
लघुरग्निभवः प्रोक्तः सविरामजलाग्निना ।
गुरुराकाशसम्भूतः प्लुतो धरणीसम्भवः ॥
अणुद्रुते चन्द्रदेवो द्रुते शम्भुर्विधीयते ।
द्वेविरामे कुमारः स्याल्लघो देवो स्मृता बुधैः ॥
लविरामे स्मृतो जीवो गुरौ गौरीयुतः शिवः ।
दीर्घे त्रयो विरिञ्चाद्या देवता मुनिभिः स्मृताः ॥
तित्तिरश्चटकश्चैव वकश्चाषश्च कोकिलः ।
वायसः कुक्कुटश्चैव क्रमादुच्चारयत्यमी ॥

—०—

अथ तालनामानि

चटपटपुटचाचषट्पितापुत्रसंज्ञकाः ।
सम्पर्केष्टा पुनर्ज्ञेया उद्घटो मार्गतालिकाः ॥

(संगीतरत्नाकरे ५।२३८—२५२)

आदितालो द्वितीयश्च तृतीयोऽथ चतुर्थकः ।
पञ्चमो निःशङ्कलीलो दर्पणः सिंहविक्रमः ॥
रतिलीलः सिंहलीलः कन्दर्पो वीरविक्रमः ।
रङ्गः श्रीरङ्गचर्च्यौ प्रत्यङ्गो यतिलग्नकः ॥
गजलीलो हंसलीलो वर्णभिन्नस्त्रिभिन्नकः ।
(राजचूड़ामणी रङ्गो द्योतो रङ्गप्रदीपकः ॥)
राजतालो वर्णतालः सिंहविक्रीड़ितो जयः ॥
वनमाली हंसनादः सिंहनादश्च कुक्कुटः ।
तुरङ्गलीलः शरभलीलः स्यात् सिंहनन्दनः ।
त्रिभङ्गिरङ्गाभरणो मठकः कोकिलाप्रियः ॥
निःसारुको राजविद्याधरश्च जयमङ्गलः ।
मल्लिकामोदविजयानन्दौ क्रीड़ाजयश्रियौ ॥
मकरन्दः कीर्त्तितालः श्रीकीर्त्तिः प्रतिपालकः ।
विजयो विन्दुमाली च समनन्दनमण्ठिकाः ॥
(दीपको दक्षिणो ढेङ्की विषमो वर्णमण्ठिका ।
अभिनन्दोऽनङ्गनान्दो मल्लकङ्कालकन्दुकाः ॥)
एकतालो च कुमुदश्चतुस्तालो च डोम्बलो ।
अभङ्गो रायवङ्कोलो वसन्तो लघुशेखरः ॥
प्रतापशेखरो झम्पा गजझम्पश्चतुर्मुखः ।
मदनः प्रतिमठश्च पार्व्वतीलोचनो रतिः ॥
लीलाकरणयत्याख्यौ ललितो गारुड़िस्तथा ।
राजनारायणाख्यश्च लक्ष्मीशो ललितप्रियः ॥
श्रीनन्दनश्च जनको वर्द्धनो रागवर्द्धनः ॥
षट्तालश्चान्तरक्रीड़ा हंसोत्सवविलोकिताः ॥
गजो वर्णयति सिंहः करणः सारसस्तथा ॥
चण्डतालश्चन्द्रकलालयस्कन्दादुतालिकाः ॥
धत्ता द्वन्द्वमुकुन्दौ त्व कुविन्दश्च कलध्वनिः ॥
गौरी सरस्वती कण्ठाभरणो भग्नसंज्ञकः ।
तालो राजमृगाङ्कश्च राजमार्त्तण्डसंज्ञकः ॥

निःशङ्कः शार्ङ्गदेवश्चेत्येते सोढलसूनुना ।
देशीताला: समादिष्टा: विंशत्यभ्यधिकं शतम् ॥

अथ मतान्तरे—

अतोऽपि कथिता: सन्ति देशीतालविशेषत: ।
प्रसिद्धा लक्षमार्गेषु कथ्यन्ते शृणु विस्तरात् ॥
चैत्रताल: कण्टुकश्च दृढ़ावान् सन्निपातक: ।
ब्रह्मतालश्चतुस्ताल: कुम्भतालस्तथैव च ॥
लक्ष्मीतालश्चार्जुनश्च कुण्डनाभिरत: परम् ।
सन्निधोऽपि महासन्धि: यतिशेखरमंञ्जक: ॥
कल्याणपञ्चधाती च चन्द्रतालो द्रुतालिका: ।
जगणो मण्ठकश्चैवैकतालो परिकीर्त्तिता ॥
यतिताल: चाचतालस्तथा ज्ञेयाष्टतालिका: ।
पृथ्वी कुण्डलिका ज्ञेया पातालकुण्डलिस्तथा ॥
कुण्डली इन्द्रलोकाख्या विष्णुतालस्तथैव च ।
विलम्बे नाष्टतालो स्यात् झोम्बड़ा सोवड़ा तथा ॥
नीलझोम्बड़कश्चैव तिउटिमस्तत: पर: ।
स्वर्णमेरुश्चक्रतालश्चक्रमण्ठस्तत: पर: ॥
कुञ्जरश्च शङ्खताल: संयोगश्चतुरस्रक: ।
विद्याधरो मण्डकश्च श्रीविष्णुर्गद्यतालक: ॥
नारायणो नर्त्तकश्च मन्मथो हंससंज्ञक: ।
शरभलील: निःशङ्को यूपो विष्णुमतान्तरे ॥
काङ्कालरतितालौ च महाचित्र: पर: स्मृत: ।
त्रिवर्त्तसुलतालश्च परिवर्त्तविवर्त्तितौ ॥
अभङ्ग: शेखरो हंसो मृगाङ्क: कुमुदस्तथा ।
कलकण्ठाश्चित्रपुट: देववत् स तत: परम् ॥
उत्सवो विजयश्चैव पद्माचक्रसुदर्शनौ ।
द्विसप्ततिरिमे ताला: कथिता लक्षदृष्टित: ॥
अत: परं प्रवक्ष्यामि द्वाविंशमण्ठिकास्तथा ।
विजयं मालवश्चैव प्रथम: सरसस्तथा ॥
कीलक: परिमण्ठश्च रविचक्रस्तथोदितौ ।
विराजो मन्दकश्चैव धनञ्जयजयप्रियौ ॥
श्रीरङ्गो रङ्गमण्ठश्च षण्मुखश्च इतीरित: ।
गीर्व्वाणमण्ठकश्चैव विचार: प्रतिमण्ठक: ॥
मल्लो विमल्लकश्चैव विशालो वल्लभस्तथा ।
पुनर्भूं च कलापश्च चित्रमण्ठस्तथा पर: ॥
तालाख्यप्रतिमण्ठश्च मुद्रितश्च करालक: ।
वर्णो भङ्गीरमण्ठश्च श्रीरङ्गो भिन्नमण्ठक: ॥
कल्याणमण्ठकश्चैव सङ्कीर्णो मण्ठक: पर: ।
शतद्वयमिति प्रोक्तं चतुर्विंशतिसंयुतम् ।
तालानां लक्षणं वक्ष्ये तेषां भूरि मताश्रियम् ॥

इति श्रीअमरानन्दव्यासदेवात्मजश्रीहीरानन्दव्यासदेव-तत्त्वात्मज-
श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवरागसागरोद्भवसंगीतरागकल्पद्रुमे
स्वराध्यायतालाध्यायनृत्याध्यायवाद्याध्याय-
रागरागिणीविवेकाध्याय: सम्पूर्ण: ।

गानाध्यायः

अथ मङ्गलाचरणम्

देवीं वाक्पतिमोङ्कारं गणपतिं नत्वा हनुमद्धरिम्
सङ्गीतं प्रविचार्य्य भारतहनुमत् सैव वाग्गुम्फितम् ।
इन्द्रप्रस्थसमुद्भवैर्विरचितं यत्तानसेनादिभि-
स्तद्युक्तं प्रकरोमि नादनिलयं श्रीरागकल्पद्रुमम् ॥ १
परब्रह्मं नमस्कृत्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः ॥ २
देवीं सरस्वतीं नत्वा गणेशं हरिमीश्वरम् ।
रागकल्पद्रुमो ग्रन्थः क्रियते रागसागरैः ॥ ३

श्रीदामोदरश्रोगिरिधरो नामकगोस्वामीस्था श्रीराग-
सागरसुप्रेरित्वाख्य सङ्गीतरागकल्पद्रुमो नाम ग्रन्थसङ्गीत-
सकलालोच्य नादवेदसुपञ्चमश्चोपवेदः ॥*
इन्द्रप्रस्थमतयुधिष्ठिराद्यैर्निलये पृथ्वादिभिर्य समीच्य तेषां*
सारार्थगर्भं चतुरङ्गयुक्तं गीयेति धातोर्वदि वर्णरूपं ।*
तत्सर्व्वमेकं कृतरागकल्पद्रुमो रागाङ्गनाभेदसुरागिणीनां*
सप्त स्वरास्तालस्तदङ्गवाद्यैः स्पष्टीकृतो एष सङ्गीतशास्त्रम्॥*

अमरानन्दो महात्मा श्रुतिस्मृतिनिपुण-
स्तस्यात्मजः श्रीहीरानन्दो
यस्यात्मजः श्रीकृष्णानन्दव्यासदेवनिपुणो वेदवेदाङ्गविज्ञः ॥
वेदार्थं शङ्करोऽपि प्रगटवपुधरो गानोद्धारः क्रियते
रागसागरैर्विष्णुप्रत्यर्थमिमम् ।*
श्रीनारदतुम्बरुब्रह्मणश्च शिवश्च देवीं सरस्वतीं च ।
विघ्नादि गायन्ति सुवेदगीतगान्धर्व्ववेदार्थसुखावबोधम् ॥*

अथ स्वराः

षड्जर्षभौ च विज्ञेयौ गान्धारो मध्यमस्ततः ।
पञ्चमो धैवतश्चाथ निषादश्चेत्यनुक्रमात् ॥
तेषां संज्ञा सरगमपधनीत्यपरा मता ।
सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा रागरागिण्योरुदाहृताः ॥
सङ्गीतं ये न जानन्ति ते द्विपादा मृगाः स्मृताः ॥
सङ्गीतसाहित्य-रसानभिज्ञः
ख्यातः पशुः पुच्छविषाणहीनः ।
चरत्यसौ किं तृणमत्ति नो वा
परं पशूनामुपवासहेतुः ॥
न घृते तादृशी प्रीतिर्न धूपे न च भोजने ।
यादृशी चैव गान्धर्व्ववीणावाद्यविशारदैः ॥
सुखिनि सुखनिधानं दुःखितानां विनोदः
श्रवणहृदयहारी मन्मथस्यायदूतः ।
अतिचतुरसरस्यो वल्लभः कामिनीनां
जयति जयति नादः पञ्चमश्चोपवेदः ॥
वीणावादनतत्त्वज्ञो रागविद्याविशारदः ।
मूर्च्छनाश्रुतिसम्पन्नो मोक्षमार्गञ्च गच्छति ॥

भगवानुवाच

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

नारद उवाच

के रागाः कास्य रागिण्यः का वेला ऋतवश्च के ।
किं रूपं कथमुद्धारो वद देवप्रसादतः ॥

भगवानुवाच

भैरवो मालकौशश्च हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षड्रेते पुरुषाः स्मृताः ॥

इति षट्रागः ।

अथ त्रिंशद्रागिण्यः

भैरवी गुर्ज्जरी चैव टोड़ी रामकेली तथा ।
देशिकारासु विज्ञेया भैरवस्य वराङ्गनाः ॥

१-२ श्लोकद्वयस्य पाठः न समीचीनः पाठान्तरं १म पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।
* आदर्शपुस्तके एतावानेव पाठो दृश्यते । सर्वथाविशुद्धोऽर्थविरहितश्चायं ।

वागीश्वरी च ककुभा पर्य्यङ्का शोभनी तथा ।
खम्भावती पुनर्ज्ञेया मालकौशस्य वल्लभाः ॥
वेलावली वसन्ती च हिन्दोली ललिता तथा ।
मालश्री-सहिता एता हिन्दोलस्य प्रिया इमाः ॥
प्रदीपिका धनाश्री च जयन्ती च पलाशिका ।
नाटिका-सहिता एता दीपकस्य वराङ्गनाः ॥
मालवी त्रिवणी गौरा पूर्व्वी आशावरी तथा ।
श्रीरागस्यात्तमाः पञ्च प्रिया एता विनिश्चिताः ॥
मल्लारी सारठी चैव सारङ्ग वड़हंसिका ।
मध्यमादिस्तथा ज्ञेया मेघरागस्य वल्लभाः ॥

इति इन्द्रप्रस्थीयश्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादानुयायि-हनूमत्संगीतरत्नाकरानुसारेण रागरागिणी-वर्णनम् ।

—०—

अथ रागभैरवः

गङ्गाधरः शशिकलातिलकस्त्रिनेत्रः
सर्पैर्विभूषिततनुर्गजचर्म्मवासाः ।
भास्वत्त्रिशूलवर एष नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः ॥
धैवतांशग्रहन्यासं क्वचित् गान्धारकस्तथा ।
संपूर्णो भैरवः प्रोक्तः क्वचिदौड़वकीर्त्तितः ॥

अथ षड्जांश स-रे-ग-म ।

राग भैरव—ताल चौताला

धनिसारेगमपधनिसानिधपमगरेगरेसा । इति अस्थायी ।
मपधनिसारेसागरेसानिधपमगरेसा । इति अन्तरा ।

अथ आभोगः

सारेसा सारेगरेसा सारेगमगरेसा सारेगमपमगरेसा
सारेगमपधपमगरेसा सारेगमपधनिधपमगरेसा
सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसा सानिध
निधप धपम पमग मगरेगरेसा । इति षड्जांशसंपूर्णभैरवः ।

अथ गान्धारांशसंपूर्णभैरवः

सागमगरेसासामगापनिधपमपमगमगरेगरेसाग-
मपधसारेसानिनिसानिनिधसासानिधनिनिधपधधप-
मपपमगममगरेगगरेसारेसा ॥

सप्तसुरसम्पूर्णगेयो सरगमविचारी ॥
सासारेसारेरेगरेगमगमगममपमपपपधपधध
धनिधनिनिनिसानिसासासानिसासानिनिधनिध-
धधपधपपपमपममगमगगरेगरेरेरेसारेसा ॥
सोई गुरु नम नमान ध्यानधरे ॥
अथ कलावन्ती स-रे-ग-म ।

अथ भैरव चौताल

सारेरेगमपधनि सप्तस्वर सो मनमें ऐसे आए ।
आरोही अवरोही सरेगम कि ऐसे होत निधपमगरेसा
पुन दुगन कीजै तो ऐसे लीजै सुरनकों तव आ
सवनकेमतमें कण्ठकों सुधार ॥
धनिसानिसारेसारेगरेगमगमपमपधपधनिधनिसा
सानिधनिधपधपमपमगमगरेगरेसा ॥

अथ दूसरा आभोग

दुगुन सरगम कियो विचार ।
गुरुनपै सिखके स्वरनको उचार ॥
सासारेसासासारेगरेसासासारेगरेसासासारेगमगरेसा ॥
सासारेगमपमगरेसासासारेगमपधपमगरेसासासारेग-
मपधनिधपमगरेसा ॥ सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा
निधपमगरेसाधपमगरेसापमगरेसा ।
मगरेसागरेसारेसासासानिनिधनिनिधपधधप मपपमग
ममगरेगगरेसारेरेसा ॥

अथ तीसरा आभोग

और दुगनकीजै तो ऐसे होत है
सवनके श्रवणमें नीके सुहावै ॥
सासारेसारेरेरेगरेगगगमगममममपमपपपधपध-
धधनिधनिनिनिसानिसासासानिसानिनिनिधनि-
धधधपधपपपपमपममममगमगगगरेगरेरेरेसारेसा ॥
धुरपद मध सदारङ्ग बनाई ॥

अथ औड़व भैरव चौताल

गगगमगसासागमधमगसासामगधनिसानिधमगसा ॥
गमधनिसामगसानिधमगसा ॥

धनिसागसासागमसानिधमगसा ॥
पञ्चमुख पञ्चस्वर सागमधनिसा उचार
शिवमत औड़वभैरवप्रकार ॥ इति औड़व भैरव ।

भैरव चौताल

निरेसागमपधसानि भैरव पूरन गुणियन गायो ।
सप्तसुर तीनग्राम कोमल अत लेही
निनिनिधधधपपपममगगगगरेरेसासाध्यायो ॥

—०—

अथ तानसेनादिकृत-ध्रुवपदादिगानप्रारम्भः—

अथ सरस्वती-वन्दना

भैरव चौताल

१

जै सारदा भवानी भारती विद्यादानी
महावाक्वाणी तोहि ध्यावै ।
सुरनरमुनिमानी तोहिकु त्रिभुवनजानी
जो जाकी मनइच्छा सोई सो पूजावै ।
मङ्गला बुधदानी ज्ञानकी निधानी
वीणापुस्तकधारणी प्रथम तोहि गावै ।
तानसेन तेरी अस्तुत कहांलो बखाने
सप्तस्वर तीनग्राम रागरङ्गलयअक्षर आवै ॥

२

महावाग्बादिनी सनमुखह्वजै अवह्वजै हो ।
याहीतें त्रिभुवनमानी यातेतु भवानी
जो जाके मनइच्छा सोई सो पूजै हो ॥
ऋद्ध सिद्ध तुवही पाई ये मात जब तुव
चरणकुजैहो ।
तानसेन यह प्रसाद मांगत जहां तहां जुरत फुरत
तहां तहां रङ्ग रङ्ग को करतू जैहो ॥

३

सरस्वती सुप्रसन्न होय मोकु वाक्वाणी ।
स्वरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम
धैवत निषाद गुरुमुख आवत तानसानी ॥

रूपको निधानी दयानी विद्यादानी
जगतजननी सारदा सन्तनमनमानी ।
तानसेन मांगे तालस्वर अक्षर रागरङ्ग
संगत सो गावै इच्छाफलदानी ॥

४

जय सरस्वती गङ्गागणेश ब्रह्माविष्णुमहेश शक्ति-
सूरज सर्वदेव ध्यावै ।
सप्तस्वर तीनग्राम इक्कइस मूरछना
उन्चास कोटतान देहो आवै ॥
उरपतिरपलागड़ाटरागरागनी
पुत्रवधू सहित कण्ठसमावै ।
कहे वैजूबावरे सर्व्वदेव दया करो
राग रङ्ग ताल लय अक्षर गावै ॥

५

तु अम्बे आदिभवानी जगमानी सर्व्वानी
सर्व्वकलादे विद्यावरदानी ।
शिवसङ्गे जगदम्बे असुरसंहारण तरणतारण
तान-तालशुद्ध-राग-रङ्ग-अक्षर-देवानी ॥
सप्तस्वर तीनग्राम इकइस मूरछना
उनचास कोटतान तिनके योरे जोयसेआनो ।
वैजूबावरो रावरो सेवक यह मांगे
नादविद्या सुरतवान राग मेरे गरेमेसानो ॥

६

जै काली कल्याणी खप्रधारणी गिरिजा
घनश्यामा चण्डी चासुण्डा कलधारिणी ।
जगजननी ज्वालामुखी आदिजोत अनन्ता देवी
अन्नपूर्णा आनन्दी तरण-तारिणी ॥
जोगिनी जय रत्नाकरणी विन्दुवासनी
ललिता बहुचरा भवानी असुरदलनी महिषासुरमारणी ।
हिमगिरि हिङ्गलाजरानी काश्मीरी सारदा
कामरुकामाख्या तुलजा वैजूभक्त-सुखकारिणी ॥

७

सर्वाणी सर्वकलाशक्ति सारदा सरस्वती
श्यामा सुन्दरी सुखकरनी दुखहरनी ॥
कामरूकामाख्याकामदायनी काली
कल्याणी दुष्टदरनी ।
कमलवदनी करणकारणी काश्मीररानी
कैलासी कालहरनी ।
परमेश्वरी पार्वती परमपुरुषपावनी
जुगराजदास श्यामवरणी महाकाली तारणतरनी ॥

अथ गणेश-वन्दना

भैरव चौताल

लम्बोदर गजआनन गिरिजासुत गणेश
एकरदन प्रसन्नवदन अरुणभेश ॥
नरनारीगुणी गन्धर्वकिन्नरयचतुस्वर
मिलि ब्रह्मा विष्णु आरत पूजावत महेश ॥
अष्टसिद्ध नवनिद्ध मूषकवाहन
विद्यापति तोहि सुमिरत तिनको नितशेष ॥
तानसेनके प्रभु तुमहीकु ध्यावे अविघनरूप
विनायकरूपस्वरूप आदेश ॥

२

पूजरे गणेशको गुणी ।
ऋद्धिसिद्धिके दाता विघनहरणदूनी ॥
जिनध्यायो तिन पायो मन इच्छाभनो ।
वकसुके प्रभुकों ध्यावत सुरनरमुनि ॥

३

तुमहो गणपतदेव बुधदाता शोशधरे गजशुण्ड ।
जेई जेई ध्यावे तेई तेई फल पावै
चन्दनलेप किए भुजदण्ड ॥
सिद्धेश्वरो नाम तुमारो कहियत जे विद्याधर
तीन लोक मह्सप्तदीप नवखण्ड ।
तानसेन तुमकों नित सुमिरत
सुरनरमुनिगुणी गन्धर्व पण्डित ॥

४

साधो विद्याधर गुणनिधान गुणदाता
सरस्वती-माताको कर आदेश ।
नमो नमो ऋद्धिसिद्धिके स्वामी सकलविद्याप्रवेश ॥
जो इनको ध्यावे मनइच्छाफल पावे
दूर होत तनतें कलेश ।
तानसेनप्रभु तुमहिको ध्यावे ब्रह्माविष्णुमहेश ॥

५

एगण राजा महाराजा गजानन जे विद्याजगदीश ।
सप्तस्वरसों गाऊं वताऊं सबरागरागनी
पुत्रवधूनसहितकृतीश ॥
वाईस सुरत इकईस मूरकुना उनचास
कोटतान आवे जगदीश ॥
तानसेनको दीजे कृ राग कृतीश रागनी
तालल्य सङ्गीतमत सोहोय कण्ठप्रवेश ॥

अथ गङ्गाजी-वन्दना

भैरव चौताल

१

जै गङ्गा जगतारनी जगजननी पापहरनी
वेदवरणी वैकुण्ठनिशानी ।
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा
जाह्नवी जगपावनी जगजानी ॥

२

इससीस मधविराजत त्रईलोकपावन
किए जीवजन्तु खगमृगसुरनरमुनिमानी ।
तानसेनप्रभु तेरोअस्तुतकरता
दाता भक्तजननको मुक्तको वरदानी ॥

अथ महादेववन्दना

भैरव चौताल

१

महादेव आदिदेव देवादिदेव महेश्वर ईश्वर हर ।
नीलकण्ठ गिरिजापति कैलासवासी
शिव शङ्कर भोलानाथ गङ्गाधर ॥

रूप बहुरूप भयानक वाघाम्बर
अम्बर खपरत्रिशूलकर ।
तानसेनके प्रभु दीजे नादविद्या
सङ्गतसो गाऊं बजाऊं वीनाकरधर ॥

अथ सूरजवन्दना

भैरव चौताल

जै सूरज जगचक्षु जगवन्दन
जगत्राता जगत्करता जगन्नाथ ।
आदित्य सविता अरकखगपुषा
गभस्तीमान् भानु दिवाकर जग कारज होय तेरे हाथ ।
ज्ञान ध्यान जप तप तीरथ व्रत
संयम नेम धर्म्म कर्म्म सब उदै होय सनाथ ।
तानसेनपै प्रभु कृपा कीजिए रागरङ्ग-
स्वरनसों निशिदिन गाऊं तेरो गाथ ॥

अथ परब्रह्मवन्दना

राग भैरव—ताल चौताल

निरञ्जन निराकार परब्रह्म परमेश्वर
एकही अनेक होय व्याप्यो विश्वभर ।
अलखजोत अविनाशी जोतीरूप जगतारण
जगन्नाथ जगतपति जगजीवन जगधर ॥
वाहिमें सब जीव जंतु सुर नर मुनि गुणी ज्ञानी
नालकमलते ब्रह्मा प्रगटायो श्री सतरूपामन्वन्तर ॥
कहे बैजू वही ब्रह्म वही विराटरूप वही
आप अवतार भए चौबीस वसुधर ॥

अथ अनन्तदेवताके वर्णन

भैरव चौताल

१

अनन्त ब्रह्माण्डके नायकवर ब्रह्मश्री श्रीधरमहाराज ।
कृपासिन्धु भक्तपाल सुखकारन कृपाल गरीबनिवाज ॥
यह विनती सुन लीजे तेरो अन्त नहींत
अनन्त पूजूं तोहिं बांधु भुजकर जाए दुखभाज ॥

वैजूप्रभु आदि अलख अगोचर निरञ्जन निराकार
भक्तकाज कोटिकोटिरूपधरे सुन्तन शिरताज ॥

२

मोहो मधुसूदन मुकुन्द मुरली धरे मुख सोहत मृदुहास ।
कमलनयन वासुदेव परब्रह्म परमेश्वर विष्णुपूरन आश ॥
नारायण निराकार वनवारी वामन
विठल शङ्ख चक्र गदा पद्म सोहतहै पास ।
पतित-पावन विरदजाको कृपाल दयाल
भक्तवत्सल मदनरायके नित जिय आस ॥

३

विष्णुचरणजल ब्रह्माके कमण्डल
शिवजटा राजत देवी गङ्गे ।
भागीरथीजु सकल जगतारनी भूमभार-उतारनी
अपघनवेली काटाञ्जनके तारनतरङ्गे ॥
हरिद्वार प्रयाग सागरवेनी त्रिवेणी
सरखती विद्या देनी करत दुखभङ्गे ।
धीरजके प्रभु तुम रोग दोष दूरकरो
पापहरो निरमल करो यह अङ्गे ॥

४

प्रभाकर भास्कर दिनकर दिवाकर भानु प्रगटे विहान ।
तेरे उदैते पाप ताप छुटे कर्म्म धर्म्म
प्रेम नेम होय गुरुज्ञान श्री ध्यान ॥
जगमगात जगतपर जगचक्षु
ज्योतिरूप कश्यपसुत जगतके प्रान ।
तानसेनके प्रभु उदै जगतकपाट खुलत
दीजिए विद्या कृपानिधान ॥

५

चन्द्रवदनी मृगनयनी तामधतारका गङ्ग पुतरी
कालिन्दी इह विधि डोरे बनायकीजै तिरवेनी ।
छुटी पोत कण्ठदीपकसुखको जोत होत तामें
गुप्तप्रगट सरखती मिलिए न नैनी ॥
सुन्दररूप अनुपमशोभा त्रिभुवन पाप-ताप-हरनी
करत सुखचैनी ॥

तानसेनको करो निरमल तू दाता
भक्तजननको वैकुण्ठ कीने सैनो ।

६

प्यारे तुही ब्रह्म तुही विष्णु तुही रुद्र तुही शिवशक्ति
तुही सूर्य तुही गणेश ।
जल स्थल पवन पानि तुही तेज तुही अकाश तुहि
अग्नि तुहि ज्योति तुही सुरेश ॥
तुही ऊंच तुही नीच तुही हैं सब हीनके वीच
तुही चन्द्र तुही दिनेश ।
तुही एक तुही अनेक गुरु चेला तुही अलेख
वैजू बावरो तोहि सुमिरत तोहिते कटत कलेश ॥

अथ श्रीभगवानके वर्णन

भैरव चौताल

१

प्रथम उठ भोरही राधेकृष्ण कहो
मन जासों होवै सब सिद्ध काज ।
इहलोक परलोकके स्वामी ध्यानधरो व्रजराज ॥
पतित उद्धारण जनप्रतिपालन
दीनदयाल नाम लेत जाय दुखभाज ।
तानसेन प्रभुको सुमरो प्रातहि जगमें रहै तेरो लाज ॥

ए वंसीनाद सुरसाधके बजाई प्रवीण काङ्ह
सप्तस्वरतान मधुरे धुनि ।
श्रवण सुनत कछु सुध न रही आलो
भनके परोमेरे कान सुनि सुनि ॥
तन मन रोम रोम व्याकुल भईरी जीत लिए
गन्धर्व नारदमुनि गुनी ।
वैजूके प्रभु नरनारी पशुपक्षी मोहैं
और मोहे सुरनर मुनि ॥

२

मोहनमूरतिके आधार तनको अब राख लीजिये गोपाल ।
नैन प्रान सुखदीजै तनते दुःख दूर कीजै
इतनो विनती मेरो सुनलीजिए हाल ॥
पतित-पावन करुणासिन्धु दीनदुख-भञ्जन
अनेक-रूप लीलाधारी भक्तवत्सल युगयुग भए कृपाल ।
मदनमोहन मधुसूदन मुरारी गज-सुदामा-
द्रोपदी-सहायकारी तानसेन प्रभु भक्तप्रतिपाल ॥

४

ए आज वांसरी बजाई वनमध कौन
ढंग कौन रङ्ग झुकि पुकि ।
सुनत श्रवणसुधिरही नही तनको भईहौं
बावरी वृन्दावन दिशि हेरि झुकि झुकि ॥
ब्रह्मा वेद पढ़त भूले शिवसमाध मांह डोले
सुर नर मुनि मोहे देवाङ्गना देखे लुकि लुकि ॥
सप्तस्वर तीनग्राम इकइस मूरछनाले तानसेन प्रभु
मुरली बजावत बोलत मोर कोकला कुहुकि कुहुकि ॥

५

जा दिन तें मोहनमुरली बजाई
ता दिनतेही तन मन गई है बिकाय ॥
सप्त स्वरनको आरोही अवरोही
रस भरी तान सुनाय ।
भूलो सुधखान पान सेजङ्ग को सोयबो
चौक चौक उठरही मुरझाय ।
मेरोतो जीवन धनहै वलिहारि राखोंगी गरवा लगाय ।

मुरली बजाय रिझायलई सुखमोहनतें
गोपी रीझिरही रसताननसों
सुध बुध सब बिसराई
धुनसुन मनमोहे मगन भई देखत हरि आनन ॥
जीव जन्तु पशु पक्षी सुर नर मुनिमोहे
हरे सबके प्रानन ।
वैजू बनवारी वंसी अधरधरि वृन्दावनचन्द
बसकिए सुनतही कानन ॥

७

जै माधव मुकुन्द मुरारी मधुसूदन
मदनमोदन मनरञ्जन मनभावन ।

जगतपति जगन्नाथ जगजीवन
जगवन्दन जगपावन जगप्रगटावन ॥
कृष्ण केशव करुणानाथ कंसारि कंसकाल
कालीनागनाशन कामजलावन ।
वैकुण्ठनाथ बिहारी बद्री बामन विष्णुवल्लभ
बाराह विठल बैजू बावरे प्राणजियावन ॥

८

प्रथम उठ प्रातही हरि हरि हरि हरि
ररेमनमेरे याते होवै सुफल अष्टयाम ।
इहलोक परलोकके स्वामी वैकुण्ठहोवे विश्राम ॥
दीनदयाल कृपाल भक्तवत्सल भक्तजनन-अभिराम ।
वैजूबावरो रावरो कहायके अबकाहेको
भटकत चौरासी लक्षधामधाम ॥

९

मोहन जागो मनोहर मधुसूदन
मदनमोहन मुरारो माधो मुकुन्द मनभावन ॥
जागो जागो जावराय जगतपति जगजीवन
जादोनाथ यशोदानन्द जगतसुख प्रेमवढ़ावन ॥
जागो एजु काङ्ग कुँवर केवल कल्याणराय
जागो ए श्रीकृष्णचन्द्र प्रेमानन्दपावन ॥
जगतके जगैया तुम प्रभु वैजूके स्वामी ।
वलिरामकृष्णजूके भैया पाप नसावन ॥

१०

भोरही भैरवराग आलापेहो प्यारे वंसोआ ६ न ।
खरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषादता ६ न ॥
आरोही अवरोही अस्थाई
सञ्चारी तालकाल और मा ६ न ।
उरपति रपलाग डांटदेगी मारग तानसेनके सुनो
माहअकवर यह विधि मुरलीमे कीने गा ६ न ॥

११

ए मेरे भागजागे प्रियभोरही सुधलई ।
मैंइतनो भलो मनावतइं वलमाही तुमपर वलगई ॥
अधरन अञ्जन महावर भाल मतिगति औरभई ।
तानसेनके प्रभु ठाढ़े रहो वलैया लेहो कह गई तियन ई ॥

१२

भोरही कृष्णमहलके आङ्गनमध
ललितावीण बजावत गावत ।
पिय प्यारो सोवत कछु जागत रसभरी तान
सुन सुन सुन्दर मूँदि नैन मुसक्यावत ॥
गौरश्याम अभिराम परस्पर अति
आनन्दकछु कहत न आवत ।
रसिकगोविन्द युगल छवि ऊपर
वनतोरत बारबार वलिजावत ॥

१३

अनत रितमान आएहोजु मेरे ग्रह
अरसीले नैन बैन तोतरात ॥
अञ्जन अधरधरे सोहै पीक लीकतोहै
काहे कौलजात झूठी सौंहैं खात ॥
पेचहु संवारत पेचहुन आवत
एतेपर तिरछो भौंहैं चितवत गात ॥
नन्ददासप्रभु प्यारीहियमें वसत
यातें भूल नामवाहीको निकसजात ॥

१४

भोर भए आए लाल धरत पग डगमगात ।
पाग लटपटी सीसविराजत नैनउतींदे गति झंपिजात॥
अधरन अञ्जन पीककपोलन
नखके चिह्न देखियत गात ।
चतुर्भुजदासप्रभु गिरिधर न भले
तुम आएहो मोहे देखावत प्रात ॥

१५

रैन गंवाय आएहो मेरे कहाचक ईमो हिकीनी ।
कवन नवल वनितासङ्गजागी सोखसन्देसो ई दीनी ।
निसजागी सङ्केतसन्देसो नेक पल गहो लीनो ।
प्रेमरङ्गके मनकी न जानी मुख बकवेकी कीनो ॥

१६

ते निशा लाल सङ्ग ऋतमानी
मैं जानूं पग डगमग परतन सूधे ।

शिथिलवसन कटिकेश राजत
आननसुदेश बोलत कछु अटपटात बानी ।
यह छवि मो मनभाई मिटिहै
चञ्चलताई पोकलोक पलक लगानी ।
सूरदास प्रभु रीझिरहै धन्य धन्य नवकुञ्जरानी ॥

१७

मैं जानि जहां रितमानि आएहो
लालन जब चोरिया सुहचानी ।
ऐसे पर अखियां रसमसानी
और पाग लटपटानी भाल जावकरङ्ग चिह्नानि ।
अधर अञ्जनप्रगटानी विनगुन मालवनानी
सब अङ्गअङ्ग उलटे निशानी ॥
सूरदास गुननिधानी धन वियजोतुमको
सुखदानी सङ्गजागत रैनविहानी ॥

१८

ए लाला जीओ जैलों गंग यमुनजल तरुनी
धरनी ध्रुवतारो ।
वेगवढ़ो वढ़ होहु विरधलट यसुमति पूत तिहारो ॥
भक्तहेत अवतार लियोहै मेटनको भूवभारो ।
धोंधीके प्रभु तुम चिरजीवो ब्रज जन-प्राणअधारो ॥

१९

प्रथम नाम लीजिये प्रातही
हरि हरि हरि हरि हरि हरि
निशिदिन धरि धरि पलपल अष्टयाम ।
यशोदानन्द आनन्दकन्द मधुसूदन
वालमुकुन्द भक्तवत्सल जनविश्राम ॥
दामोदर दयासिन्धु भक्तवत्सल
भगवान वैकुण्ठपति वृन्दावनधाम ॥
बनवारी बैजूप्रभु वद्रीनाथ बिठल
विष्णु वामनाग्रज विश्राम ॥

२०

बानी चारोकेव्योरे सुनलीजैहो
गुनीजन तब पावै यह विद्यासार ।
राजागुवरहारफौजदारखण्डार
दिवान डागुर वकासी नोहार ॥
अचल सुरपञ्चमऔरचलस्वरवादवा
रत ऋषभ मध्यम धैवत निषाद गान्धार ।
सप्ततीन इकइस बाइसो
उनपञ्चासकोट तानसेन आधार ॥

२१

ऐसे कैसेबनेगी प्रीतरीतकी मिलत नाही मनलाय ।
कवहुक देखत वंसीवटपेग्वाल बालमिडराय ।
विनदेखेकल पल न परत पल सुन्दरस्यामलोभाय ।
प्रेम रङ्ग तन मन धन वारोंविन देखे रहा न जाय ॥

२२

मुरारि त्रिभुवनपति इन्द्रसुरपति शेषनागहैफनपति ।
क्षीर उदधि सलिलपति कौस्तुभमणि
रतननपति दिनकरदिननपति कमलापति ।
शशिउडुगनपति हनुमानवलनपति ॥
नारदभक्तिनपति साजनगृदङ्गवीनपति ॥
चिर चिरजीवो साह अकवर
नरनपति तानसेनताननपति ॥

२३

मोसो ज्योंअवध बद गए सांझको यह आए भोरभए ।
ऐसो को चतुरसुधर नारजिन
तुम बिरमाए ऐसे सुखदए ।
अधरन अञ्जन कहुं पोक पलक लोक
और न सोचित हित वहु भांतिन लए ।
तानसेनके प्रभु वहाहीं पांवधारो
ए जहां कि ए नेह नए ॥

२४

सूरजवंश नमो गुरु इष्ट
हमारे दशरथसुत राजाराम ।
जानकीनाथ नाथ त्रिभुवनके
मोहन सुन्दर श्याम ॥

लक्ष्मण भरत शत्रुघन हनुमान
जनकसुताके पूरणकाम ॥
धीरज के प्रभु अतही चतुरही
प्रगटे अयोध्याधाम ॥

२५

सेव्य महाराज रामपदसरोज अति उदार ।
अङ्कुश यव ध्वजा रेख मीन कमल कुलिश
जगत शेषवन्दित सुर अज महेश
सेवत सनकादि चार ॥
कौशिक मुनि सङ्ग चारि
पाहन मुनि नारि तारि
भूरि भार भक्त हेत गावत गुनिगुण अपार ॥
जै जै जै श्रीधनुषधारी
पवनपुत्र आज्ञाकारी
सीतापति छविनिहारि वलिहारि बारबार ॥

२६

असा नाल कुड़ी कुड़ी गलाङ्कार
दारहंदाप्यारिय औरदेनाल
हंसदा बोलदास देखेजा दानी वे घोलघोल ।
रतदेहाडे ध्यान रहंदातु
साड़ा सोण्या आवदा नाहीं साडडे कोल ।
मायल करसानुधायल कीना
सावली सुरत निरखहु न लीना चितचोर अमोल ।
भौंह कमान तिरछो चलावदा
नैनादे बानतु सोच लावदा तोल तोल ॥

२७

लोचन घूम रहे हरि सङ्ग रजनी जागत ।
कमल प्रफुल्ल छीनभए डग मगतगात
ढहै दूर दूर देखत लाज साजत ॥
रतिरस वस केली चसकेचाखे
हँस हँस कानन कोने लागत ।
जीवन गिरिधरके प्रभु समुद्र-
तरङ्ग झकोरन छाजत ॥

२८

तोकों प्यारे पठई किधों
तू आपते आई मनावन ॥
प्राने सुरके सुखकी बतियां
एन होवेरी हो नीके जानतजैसो
तू मोसोंरी लागी बनावन ॥
या सुखको अब कान नकरहीं
अनमिल पिय से कहो न
परत तेरी सो हेत नावन ॥
कहाकहों राजाराम सों
तोसोरी पठावे हमारे ग्रह बनावन ॥
तानसेन कहे आवत आपनी औरनको
चितलावत मुहकी वात कहलावन ॥

२९

असानुतु छड़ वेमोया औरोनाल हंसदा खेल दारहंदा
गाहेगा हे आंवदा क्या साडे कोल ।
रतदेहा मणध्यानतु साड़ारहंदा
कवोतो मडेनाल मिठे बोल ॥

३०

छल छवि निरत नई भई रीत जैसो
सभा आभा वा सुरपतको ॥
सगण सदन मनमुक्तन रतन छल
वरन वरन मन रङ्गन रङ्गनछवि
विसात निरख नर नरेश ताते सुरेश छते अधको ॥
और मखमल जरवाकतास तिनके समयाने
असपक कञ्चन खंभ लगे औरन
गजगमगेत खत कैसो कही न
जात उपमा या वखतको ॥
साहनसाह किरानसानो साहजहां
जूकोनी रोजदीनो अरवखरव
छीनो गरवीनके गरव तिह
लोकमें चरचा कीरतको ॥

३१

प्रथम खरज साधो औ रिषभ गांधार
मध्यम पञ्चम धैवत निषाद सुरसप्त
तीनग्राम शुद्ध अच्चर प्रमाण यह सब
अपने मनमें जब समझ आवै
तब गुणीजनसों नादको चरचा कीजिए ।
अकइस मूरछना उनचास कोटतान
बाइस सुरतति सब अङ्गनसों गाइये
ठीकतान सुरताल सांचो खरनसो सरिगमपधनि
उलट पुलट फेर फेर जांचबूझ समझ कर
धुरपदको धरनविचार कर लीजिए ॥
नादसमुद्र अपरम्पार काहुन पायो
याहको भेद वार न पार काहेको
अतिरिस नाहक धमण्ड करतहो
सबगुणो जन यह विद्या अटपट महाघोर
अति विकट होतनाद ईश्वररूपो
अमृत रसजितना जाको मिले तितनोई पीजिए ॥
चलदेवी सरस्वती तू वा चार कमरधरि
नाद समुद्रमें पैठि डूबनलगी तबतू ।
वीकाहिर देधरिकेरतन लगी औरनकी-
कहा गिनती कीजिए ।
महानादसेन कहै सुनो बड़े बड़े गायन
सबगेखी औ मगरुरी तनमन न करिए
ज्ञान चितधरि गरब तज दीजिए ॥

३२

प्रथम गाइये सद्योजाते सुख
सुखसम्पूरण अंश न्यासग्रहस्वर सुधङ्ग ।
शेष ग्रीव शशि ललाट भस्म अङ्ग जटा
मुकुट मुण्डमाला सोसगङ्ग ॥
मधुमाधवी भैरवी वङ्गाली वरारी
सैन्धवी पञ्चत्रिय प्रचण्ड शोभा लिए मङ्ग ।
साधपमगमपमगमपधनि
सारीरीसागमपागमपपप धप धप मगरे साधङ्ग ।
दीपक है स्वर यह विधि कहियत भैरव रागप्रसङ्ग ॥

३३

सघन वनछायो द्रुमवेली माधोभुवन
अतिप्रकाश वरनवरन पुष्परङ्गलायो ॥
कोकला खञ्जन कीर कपोत अति आनन्द-
कारी चहूं ओर झर वरसायो ॥
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मूर्च्छना
उक्तायुक्त लागडाट कर देखायो ।
तानसेन कहे सुनो साहअकवर प्रथम राग भैरव गायो ॥

३४

धनबुध पारब्रह्म कीनो जिन अखेवट
ठानो सप्तधर्मते कछुवीजबोन्यो ।
मजल धवल पुनगपैठ नवखण्ड
विस्तार जाको शाखा अष्टसैर
मानो दिगपाल जटाठानों
जलछायो पुहम पवनसानों ॥
तैसोबुन्द तिलसोहाय अमीय बुन्दवरषत यातें ।
तरङ्गन सस उड़गण जेते फल
पशुपंछी जीवजन्तु कमलासन
अगम दीरघ पुरो वासुदेव नाम जे
हरषियत करतार याविधिजानो ॥

३५

एरी प्रात उठेहैं लालन ललनाले
दरपन सुख निरखत आपआपमें हंसबोले ।
प्यारीके दृगनदेख प्यारो रीझ थकितभयो
जैसे अलि पङ्कज लेत सुगंध अघ्रान
अवाय एकी न इत उतडोले ॥

३६

जागतभैरों ज्योतिस्वरूप किरणतें
प्रगट्यो तिमिर घट्यो शशि भयो मन्द ।
दिनकर दिनलायो सबके प्रफुलनको
वढ़वढ़ कियो आनन्द ॥

जगचक्षु ज्योति प्रकाश प्रतच्छ देव जगवन्द ॥
वैजू बावरे रावरे कहावत काटो जनम मरनके फन्द ॥

३७

प्रथम मज्जन अञ्जनकर कारपहर चीर चार ।
आलीसे दिल लेले कमल वहुतेहु
आभूषण रूपसुधा कण्ठमाल रतन मुक्तनके हार ॥
आही अतिभायो दादरूद कटाच्च
सलामुन अलकेकन नाहतसे पिय प्यार ॥
तानसेन गर तनजटितसोरह
सिङ्गारकिए नरलोक इन्द्रलोकहूं नही नार ॥

३८

गौरीशङ्कर राधाकृष्णको नाम
लीने सकाल सिद्धकाम ।
निशिदिनसुसरणसोवत
जागत उठ प्रात कहो सीताराम ।
मीन कच्छप वराह नरसिंह वामनरूप परशुराम ।
हरि हलधर बुध कलङ्की यशोदाधाम ॥
एते प्रभु रच्छपाल खरगसेन शिवकृपाल
हूजीये सहाय अष्टयाम ॥

३९

समुष्टिकसेवा चरण रघुनाथको
नित वहतो है जगतारण ।
दीन उधारन करुणासागर
गावत प्यारो श्रुतआदि अनाहद कारण ।
सीतारवन विहरत तन क्रसान
तेजको होके वाजन साधहितधारण ॥
ज्ञानदास आचरण कमलकी बान सदा चितसारण ॥

४०

भोरही भैरवराग अलाप्यो
अहो प्यारे वंशीसे आन ।
खरज गान्धार रिषभ पञ्चम
मध्यम निषाद धैवत तान ॥
आरोही अवरोही अस्थायी
सञ्चाई ताल काल और मान ॥
उरपति रप लाग डांट देशी
मारग तानसेन सुनो साह अकवर प्रमान ॥

४१

प्रथम अलाप ठीक तानशुद्ध
अक्षरसो कीजिये प्रमान ।
सुरताल श्रुतिग्राम मूर्च्छनाकी
वानीसो करो गुनी जन गान ।
औरको कह्यो न मानै हिय जिय
हठधरे याहीहै अतिमूढ़ज्ञान
नादहीको करविनान ।
महानादसेन कहे गुणके जानकार
एक आदहोतहै तुम बुझो जान सुजान ॥

४२

एमेरे भाग जागे पिय भोरही सुध लई ।
मैं इतनो भलो मनावत हूं वलमाही तु मपर वलगई ॥
अधरन अञ्जन महावर भाल मत गत और भई ।
तानसेन नेक ठाढ़े रहो वलैया लैहों नित नई ॥

४३

एरीहो रीझ देख भोरही उठके प्यारीकजरा
दृगदोउ करसों लागे मलन ।
पुन या छविसों ऐंडात जँभात नीरवही
मानो कमलम धर्त अलकसुत छुटलागे चलन
चन्द्रवदनी मृगनैनी विनदेखे घरी पल कल न ।
तानसेन देख रीझ मगन भए सुन्दर नार अवलन ॥

४४

शुभ नखत तखत वैठो राजत
छाजतहै सबमूलक खलकजे विधना किए
सबछत्रधरे ते सब लागे सबसेवाकरन ॥

Acc. No. 3622

धन धन चक्रवर्ती नरेश अकबर
दुखहरण तानसेन ऐसो सुरपुरी नर नरेन्द्र नर न ॥

४५

सुनजरभई अपनेप्यारेकी
काहेकु चिल्लदुरावत मोते तबही जानीचतुराई ।
रात जागि पगि पौतम सङ्ग मोसों छिपावत गात
नैन उनीदे तेरिलेत जंभाई ।
सुन्दर मृगनैनी बोलत पिकबैनी
प्यारी रंगभरी मूरत मनसमाई ।
तानसेन पिय बसकरलीनी
धन धन महारानी सुखदाई ॥

४६

अकबर प्राणनाथ अनाथनको
यहनाथ ए जापै अष्टसिद्ध नव निध पाइये ।
परमदाता ज्ञाता सबहीको मनरञ्जन
यहदुःखभञ्जन कल्पद्रुम प्रतच्छ धाइये ॥
अन्तरयामी स्वामीजग काज करवेको
ए रस नाल बनाइयें ।
जलालदी महम्मद ऐसे दाता किए
तिहुं लोकमें यश गाइये ॥

४७

सकरगंज गंजवकस सेष फरीद आलमपीर
नींद ऐसेके लीजै निवाज रहे जेगमें लाज जाए तनतेरच्छ ।
जेइ जेइ माँगीए तेइ तेइ फल पाइये
तनको करत दारिद्रभञ्ज ॥
तानसेन कहे एतेही मांगिते
तुमपै जोहो मद तन पुञ्ज ॥

४८

अगज गंज अडंडन डंडतेग वली
अलि मरदान महामरद ।
जे सुभट और काहूसो ना मोरे
जोरे सन्मुखसाहनके आगे खेटकूट किए गरद ॥
एकअन्त दन्तत्रिनले मिले एक भाजगए
गिरिकन्द लतिनछ नींदन परे त्रास दरद ॥
धन धन तज प्रतापतुव जगगाढ़ो
गढ़पति वसो चहुं सरद ॥

४९

जो ताल यहै नवी अलिहँसन
हुसेनके मनमें लाय देखे ।
इमाम जेन लाब दीन इमाम महम्मद ।
वाकर इमाम जाफरसादक परसो
दखलाय देखे ॥
इमाम मुसिकाजम इमाम आली मुसीरजा
इमाम महमदतकीके कदम धायदेखे ॥
इमाम अलीनकी इमाम हसनअसकरी
इमाम महदीके जहरको जाय देखे ॥

५०

प्रथम मज्जनकर अञ्जन कर करपहरचीरचार ।
अलहम्दु लिल्लाको लव लाएछं आभुषण रुकुसु
जूट कण्ठमाल रजत और मुक्तनके हार ।
अतही अतिभयोहादरुदकटाच्छ
सलामनले कमरहत अलापिय प्यार ॥
रवना आतनाफिरदुनीयां हसन तन
तानसेन कहे गीतसागर भयो अपरंपार ॥

५१

बादर जनहआए सो पिय बिनलागे डराए ।
ऐसी अंधियारी कारी डरपावनी लागत
जियकोंभारी तेसमें अवध वचन गए हरि न पाए ॥
दादुर पिक मोर सोर करनलागे
विरही तन लागे दुराए ॥
तानसेनके प्रभु तुम नीके जानो
भली लीनो सुधसो अजहु न आए ॥

५२

बादर भूमि झूमि आए वरन वरन वरसन प्राणप्यारे।
सुनि सुनि घनघोर चातक चकोर मोर
बोलत सुहाए नन्ददुलारे ॥
तैसेई वन कुञ्ज केलि विहरत भुज कण्ठमेलि
अनुरागे जागे दोउ रूप उजारे ॥
सखिजन वलि हारलेत रूपनैननिहारी
सोहे सुहे वसन इमन मैनवारे ॥

५३

जहां जहां युग युग कर आए
अपने जनको सहाय।
नानाविध वपुधारे भोर परे भक्तनपर
जगपत सीतापति रामराय।
सेवरी गजगीध व्याध अजामिलसे असाध
तनक भनक सुनतनाम लीने जमते छुड़ाय ॥
दीनवन्धु बलिहारी रघुनाथ
अशरनशरण कोशलपति क्यो न गाय ॥

५४

रैन गँमाय आएहो लालन
कहां जागे सगरी रात बात कहो प्यारे।
नवकिशोर नवलतियासङ्ग जागे
पागे अङ्गअङ्गको चिह्नन्यारेन्यारे ॥
सवनिश्रा मोहि तलफत बीती
भोरभए आए ललारे ॥
तान तरङ्ग रंग रस भीने कीने
नख चिन्ह भाग जागे आज हमारे ॥

५५

सोहत कामन उत्तमरूप पहरत संवार
चीरओप्रवदाय कुन्दनअङ्ग ॥
टिकको कियो अदोत तातें
तिमिर फटो शरण परे पाछे सीस-
फूलयुत असमान श्रवण कुण्डल कवरी
अचकटाच्च आपजोत वन रहोदोऊ अनङ्ग ॥

द्रग अञ्जनदिए खञ्जन बसकरलिए
करदर्पण हारमुखदेत सुखपैयेअन
निरखे उड़जात य वरनन गुणोगावै
मानिकहीरा कपोल मुक्तालर मुक्तामाल
भुजविनाल कर कमल बाजूवन्द
फुंदन लटका लटक अलियुगसङ्ग ॥
रामकिरण उपज्यो नवल विचित्र
कचुको मधुअतङ्ग अधरसुन्दर छवलो
तरेवा टरनन झनन ठनन अमृतनाम
औरनलोप पोलारस लेत अतजात
तानसेनके प्रभु साह अकवरसों बन रहे
जैसे पारवती महादेव अरधङ्ग ॥

५६

जिन करो मोसों झूठिझूठिवात तिहारो
प्रतीत मोहि नेक नहीं आवत ॥
वे तो लँगरकान्ह नाहिन छाड़े अपनी
बान वरबस मनुहार करत मोहि मनावत ॥
नित उठ सोतनके गृह जावत मेरे
प्रतच्च आय लाखनसोहिं खावत ॥
परस परस निजचूक क्षमाकरावत
वारवारको रीसावन या नाहि सोहावत ॥

५७

गावोरे गावो गुणी प्रथमभैरव खरज सुर राग।
दूजे सुरकण्ठ कोमल अति शोच समझ लेहो
निषाद धैवत पञ्चम मध्यम गान्धार रिषभ साधलाग ॥
सामगमसागमगसासाधपमगसासानिधमगमा
सानिधनिनिधपधधपमयपमगममगसासानि
धनिधपधपमयमगमगरेसगरेसा ॥
संगीत-रत्नाकर-मतसों लेहो सुधार वाक्वानीसों
रागरङ्गलेहो माग ॥

५८

वरषा रित वनिता बन आई।
नैननमें निरखत लगे सुहाई ॥

कञ्चन कौंधि लता अलवेलीसी तरन नई ।
तैसो यह केश श्याम वरन घटाछाई ।
रहसवोले गरजन दशन चमकको धाई ।
वदन ऐसो लागत मानों वदरोके
अशि उदैकोनों सोलह कला सम्पूरन भाई ॥

५८

आवतही रङ्गरङ्ग यसो पिय भोर ।
दिम्वम्विरकिटतकदिदिगनधिरकटतकधिरकिटतक
दिदिगमकिरनिकिरणकटतकधिरकटतकदिदिगनधा ॥

६०

नेक ब्रह्मनायक परब्रह्म सीसादल महाराज ।
कृपासिन्धु भक्तवत्सल पहले सुखकर रक्षक मेरी लाज ॥
या वनितो कबूल कीजिये तुम जग शिरताज ।
श्रीलक्ष्मीनारायण ऐसे राजावहादुरके
पूरणकर सबै अच्छे काम ॥

६१

सुरत शुभट चिन्ह जगे रैन यातें
नैन उनींदे भोरभए आये श्याम मेरे सदन ।
नख रद छद छाय लागे पागे रसवोर
विछद यातें लखिपरत अरुनवरन वदन ॥
सो भीत गात अरसात बातनमें
अरवरात शयनकरो तुम सेवा पगन ॥
तन मन धन जुगराजदास परवारों
आएजीत समर समरकदन ॥

६२

लालन आजु लखि एक नवल वाल नाचत
सकल तियन मध गतिसुधंग ।
झलकत तन जोवनजिम शशिमध सुरङ्ग ॥
देहवदन हसन दशन दामिनी
द्युतिसम भ्रुकुटि धनुष चितवन
शर मारत मन कुरङ्ग ॥
घेरदारघुएटनलों घाघरो
घुमेरदार चुनरीघटक लसत
भूषण सकल अङ्ग ॥

युगराजदास प्यारे ऐसीतो
मैंन देखी वोलनि चलनि चितकी हरनि
अधरसुधर अमृतवचनि करपदनीरज
सुने वचन सरबस करे रसके तरङ्ग ॥

६३

पहिले झुकके अव चली रिसाय लोगनलीमे
मानो वसकीने साहि ए मेलत तुमार ॥
जोरससे रस उपजत तुम इनभांतन रससों
रस उपजावत जै नित नैन-निहार ॥

६४

तरैया नादमहानदको मूरछना गमक
नीर सुरत अगाध तान तरङ्ग ताल तरल वहो
अलापन ओड़ो खाड़ो पूरण धार ।
आरोही अवरोही दोउकुल पुर
अंशन्यासग्राह ग्रह तान भंवर
सरोजवादी विवादी सिवार ॥
नौका अवाज पर राग रागिनो
पथिक चढत उतारत गुनीजन वारपार ॥
हरिदासठाकुर उत्तमनायक धरु धुरपदछन्द
गुन वक्षो पत पतार सङ्गीत गीत अधार ॥

६५

केते रतन जगतमे उते प्रगटकिए
प्रथमे कामधेन सुर विधने बनाए ।
पुन कीने विष वारुणी अमी औ सुधाकर
चारोखान चिरावानो परवाजो रथि रथते पाए ॥
धनुष धन्वन्तर टरन सुरन गजश्रीमणि रम्भा
छन्दधारु धुरपद गायनले वसाए ॥
तानसेन कहे कम्बु कण्ठते हमाउको नन्दन
कल्पद्रुम अकवर पारख पाए ।

६६

अधरनकी लाली कहुं कहुं वनरहीमानो जरीलाल चुनि ॥
पियाके मिलवेको आवत कर दरपनले
देखत हस मुसकानो छविभईहै दूनि ॥

अति रसाल लालसाल लालडोरे
यह छवि मोसों वरनो न जाय सरस सलूनो ॥
साहसिकन्दर जुलकिरणनसो
अत रितमानो होत जात लाजनतनो ॥

६७

अहोहो जाय देख पुहप बिछ रहे
यों लागत मानो तारका मांदसे ।
दम्मत सुरतकार दरपनसे देखतहो
भूलरहो भोरे दोउ मुखलागे चारुचांदसे ॥
जिनके आभूषणको देख जोत होई
जोउ न नैना होई धांधसे ॥
मो मनचकोरके कारन दूर जवार रहे फांदसे ॥

६८

प्यारेनको विछुवा सहजनहीं हों
भई तुमारे दरश विन मानो विन मीन नीर ।
हिए धरत न धीर औसु करत भीर
रोके नाही जाय एतो गहर गम्भीर ॥
च्यार दिनमे जाय चहं देशमे तेग विजय
वेगमिलोगे आयवीर जवदास
आलमगीर होसो च्यार द्रगकीरज
जितो तिहारे काजपर आवै वधसीस
तेरो ताजराखतो तुमारि मानो वजीर ॥

६९

अनवनसुवनढूते नीके आलम
करें सिङ्गार तु अतनमाई ।
कुटीलटे टेढ़ीभोंहपलकन
पीक और लटीअङ्गियाकी कहा कहीय न जाई ।

७०

भोरही भैरवराग अलाप शुनायो
नीकी नीकी नीकी तान ॥
षरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम
धैवत निषाद सप्तसुर गान ॥
उरप तिरप लाग डाटदेशीमारग
देखाय अंसन्यास श्रुतिमूर्च्छना ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकवर
प्रथमही सुरलीधर प्रमान ॥

७१

नयनको नहिं परत कल कमलनयन
विन देखे जादोनाथ व्रजराज ॥
कालिन्दीके तीरभारी भई भीर वल वीर
वासुदेव वनवारीके कारण तजदई लोकलाज ॥
व्याकुल मलिन वदन सदनको न सुधिरही
वुधिहर हरिलीनी कीनी वावरीसी सरो न एको काज ॥
काहेको देरकरी हरि मोरी वेर
वैजूको वेग मिलो प्रभु मनमोहन
माधो सुखनिधाम निधानसिरताज ॥

७२

प्यारे तुही ब्रह्मा तुही विष्णु तुही
रुद्र तुही शक्ति तुही गणेश तुही सौरा ।
तूही जल तूही थल तूही पवन तूही अकाश
तूही अधुरा तूही पूरा ॥
तूही खेल तूही अलवेला
तूही रोवत तूही हंसत तूही
उठत वैठत चलत तूही दूरा ॥
तानसेनके प्रभु एकहि अनेकहोय
जगमे व्याप रहो हजूरा ॥

७३

सेवो चरण रघुनाथ कुंवरके सकल जगततारण ।
दीनदयाल करुणासागर गावत चारो
श्रुति आदि अनाहद कारण ॥
सीतानाथ दशरथनन्दन दाशरथी
भक्तिहित स्वरूपधारन ॥
आनदास अनाथनके कृपासिन्धु
तूही जगत अधारन ॥

६५

कि कर आंखों हाल तेड़ेनाल नेह
विछेजेहा दुखपांटा ।
रतदेहा एहा चन्द जेहा
मुख देखनथो सानुहो निभांटा ॥

६६

बादर जन्द आए सो पिय बिन लागे डरपाए ।
एकतो अँधियारीकारी लागत डरावन
तैसेहि अवध बीतन लागे अजहूं न आए ॥
दादुर पिक मोर सोर करन
लागे विरहीतन लागे डराए ॥
तानसेनके प्रभु तुम नीके जानो
भली सुध लीनी भोरे धाए ॥

६७

भैरों भयहरता सुखकरता
सबनके अभय वरदाता ।
भैरवी अरधंग अरुण अङ्ग कोटि
इन्दुसम छवि दामिनि दुतिगाता ॥
वामकर खप्पर त्रशूलधर
गले मुण्डमाल नैना ज्वाल फिरत माता ।
वाणीवरविलास श्यामरामको दीजै
चारो फल अर्थ धर्म्म काम मोक्ष प्रातहीत जगत्राता ॥

६८

मुरली वजाय रिझाय मुखमोहनत
गोपी रीझ रहीरस तानसो सुध
बुध सब विसराई
घुनमुन मनमोहे मगनभई
देखत हरिआनन ॥
जीवजन्तु पशुपक्षी सुरनर
मुनिमोहलिए सब प्राणन ॥
वैजू वनवारी मुरली अधरधारी
वृन्दावनचन्द्र वसकिए सुनतही कानन ॥

६९

नैननको नहीं परतहै कल कमलनयन
विनदेखे जादोनाथ व्रजराज ।
कालिन्दीके तीर भारी भई भीर वलवीर
वासुदेव वनवारीके कारण तजदई लोकलाज ॥
व्याकुल मलिन वदन सदनको न सुध रही
बुधिहर हरिलीनी कीनी वावरीसी
सरी न एको काज ॥
काहेको देर करी हरि मेरो वेर
वैजूको वेगिमिलो प्रभु मनमोहन
माधो सुखनिधान गिरताज ॥

७०

मोसों जो अवध वद गए सांझके भोरहि आए ।
ऐसी कौन चतुर नार जहा
तुम रसवस किए ऐसे नेहनए ॥
अधरन अञ्जन भाल महावर तिनतिलकठए ॥
तानसेन प्रभु जावोजी जावो नई नार रङ्गए ॥

७१

ऐसे कैसे वनेगी प्रीत रीतको मिलत नाही मनलाय ।
कवहुं देखत वंशीवटमे ग्वालवाल
सङ्ग गैयन वनवन चराय ॥
कवहुंक तुम कुञ्जनमें आवत रहतहो कैल छिपाय ॥
प्रेम रङ्गके प्रभु घरी पल छिन विनदेखे रह्यो न जाय ॥

७२

रैन गंमाय आएहो लालन
कहां जागे सारी रात वात कहो प्यारे ॥
नवकिशोर नवलतिया सङ्गी जागे
पागे अङ्गअङ्गके चिह्न न्यारेन्यारे ॥
सगरी निशा मोहि तलफत वीती
भोर भए आए ललारे ।
तान तरङ्ग रङ्गरस भीने कीने
नखचिह्न भाग जागे आज हमारे ॥

८२

चन्द्रवदनी मृगनयनी हंसगमनी
चलीहै पूजन महादेव ।
करलिए अग्रथार पुहपनके गुंधेहार
सुख दीयरा जराए देवनमें देव महादेव ॥
सोलह शिङ्गार बतीसो आभरण
सज नखशिख सुन्दरताई छवि
वरनी न जाय है निरमल मज्जनकर सेव ॥
तानसेनकहै धूप दीप पुष्प पत्र
नैवेद्यले ध्यान लगाय हर हर हर आदिदेव ॥

८३

जिन करो मोसें झूठि झूठि बतियाँ
तिहारी प्रतित मोहि नेक नहिं आवत ।
वे तो लँगर कान्ह नहि छाड़े
अपनी बान वह सौतिनके गृह जावत ॥
मेरे प्रतच्छ आयलाखन सोहैं खवावत
पग परस परस निज चूकच्छमा करावत ॥
बारबारको रिसावन तानसेन एनाहीं सोहावत ॥

८४

सोवत चन्द्रवदनी मृगनयनी
पिकबैनी मनहरनी चम्पकवरनी
गजगमनी बनठन बैठि रङ्गमहलमें ।
अधर बिम्बधरो दशनन नासिका कीर
भ्रुकुटि धनु तन झलकत प्यारीके
सोना सम सुसक्यात सहलमें ॥

८५

प्रथमनाद सुर सुती गणपति बुधदाता ।
जाकी कृपासे अनधन लक्ष्मी पालनकरे सबजगत्राता ॥
जोइ जोइ आवत मनफल पावत
सब गुणीयन को देत विधाता ॥
तानसेन प्रभु युग युग जीवो
चरणकमल रङ्गराता ॥

८६

शिव शङ्कर सब पिनाकी वामदेव
विरुपाक्ष त्रयलोचन त्रिशूलधारी ।
महादेव महेश्वर ईश्वर वृषभवाहन
मुण्डमाला फुंफुंफुंकारत शेष विषहारी ॥

८७

कौनसों रितमानी सांची कहो मनभावन ।
निशिके जागे अनुरागे आएहो झुकनलागी
तव झूम झूम आएहो मोहि रिझावन ॥
बचन बनावत बन नहीं आवत
कहेदेत नैनबैन दरसावन ॥
तानसेनके प्रभु वाहीं सिधारो
जहां सारी रैन रहे रति रन जगावन ॥

८८

वैदुल्ला सरीक अल्ला अमो कुदरत
रट दुसरो कीनो रसूल जगत सुहाग
आप करतार करसुत हैदर दीयो नबीको ॥
तुम कर बसी सुधारो उमदको
दीन भजव तुम मदीन इलम आली
बहां हसन हुसेन दोउ करत सेवा बन्दगी ॥
हक आखदीन आंख दसा सुंदवाकर
जाफर काजमरजातकी हकीतकी न
कीतक वादी न अशकरी आश पूरणमे
हदी महम्मद हादी रदनुमा ॥

८९

है कालिन्दीपति प्रतापवरे
ओधातरी खरस्वती मिलभई त्रवेणी ॥
पीछेते आवत यमुना श्यामरूप
भरण घोररूप वरषत पाषाण
तोरगो मानते चलि जमके बेनी ॥
अरुण वरुण सरस्वती गुप्तप्रगट होत
चन्द्रकिरण ज्योति अकाश पर छुवत भुज तेनी ॥

तैसे वनवन तेहु मिलन चली लाल अतिरङ्ग भीनी ॥
भागिरथी तूरी भगत तारण सगर उधारण साराणी ॥
सब भुअ पावनपै धार तीरथ प्रयाग
वैतारी जलौधापति धरनी तरनी ॥
तीलों उत्पति नरनारी ब्रह्मा विष्णु मकर
न्हावत करत अस्तुत गावत भरनाद तानसेन गुनी ॥

८०

वरषा ऋतु वनितावन आई ।
नैननिमें निरखत लगी सुहाई ॥
कञ्चनसी तलाअरु अलवैलीसी तरन
नई तैसी यहकेश श्यामवरण छटा छाई ॥
रहस बोल गरजन दशन चमकके धाई ॥
वदन ऐसो लागत मानो वदरी कैसो ॥
चहुं कोनो सोलह कला सम्पूरण भाई ॥

८१

भोरही आए हो लाल देहमहावर
तिलक भाल अरुणनयन अलसाए गात ॥
धन युवती जिन विरमाए
तुमहिको कुञ्ज जगेहो जहां सारीरात ॥
पलनपीकरस अधर अञ्जनकी
वनरही विनगुण माल लाल चिनात ॥
कञ्चन गढ्यो पीठ ऊपर
मुकरले देखो आप मुखराग
छपा काहे वनावत सौसौ बात ॥

८२

आस पास सहचरी नूपुर झनकारकतर
चम्पाकी कली मानो फूलसे समानको ।
सोधिकी लपटजैसे दपटके अभिरनकी
इन्दादिक वदन देखि उठत कुलगानको ॥
झांकत भरोखनके परदा उतार देत
चरण आयलागो शोभा सतभानको ॥
मिट गयो अमङ्गल भयो मङ्गल किशोरसुर
जगमगाय उठो महल जागो जव जानको ॥

८३

दोउ अनुरागभरे आए रङ्गभवन
भागधन विजुलीसी लखि लागत सहलहै ।
बैठे एक आसनपै एकसङ्ग एकरङ्ग
उल्योनए रतिरङ्ग कोमल कहलहै ॥
एकनले अतर लगाय दीने दोउनपै छिरकत
गुलाव किए पंखे जो वह हलके लहै ॥
और लीने वीन सखीने अलाप कीनी
राग रङ्ग सुरपुर पुञ्जन तें गुञ्जत महलहै ॥

८४

नींदन आवत पिय बिन देखे
मोरी आली कैसे परे अबचैन ।
घरी घरी पलछिन योंहि बीत जात
रहत मारगजोहत नैन ॥

८५

चैन न आवेरी मोको
आली बिन देखे अपन पियको ।
एक पल अन्तर सूझत नाहीं दिन
एकहु कैसे समझाऊं अपने जियको ॥

८६

प्रात उठ चली प्यारेपै आपही
मनावनको नव सत शिङ्गार
किए वारे आभूषण पहिरे वनाए ।
प्रथम मञ्जन असनान कर
अञ्जन चखन दीही अधर पान
सिन्दूर भरे मांग केशर कर कराए ॥
यावक पावन हाथ मेंहदी माह
अकावर सुगन्ध अङ्ग अङ्गलाए ॥
श्वेतसारी पुहुपमाल चोली स्तन
चूड़ीवांह गरे मुक्तमाल सुहाए ॥
सीस फुल श्रवणताटंक भुज वाजूबन्द फन्दसुहाए ॥
नथ वेसर सुधार कनककिङ्किनी छुद्रघंटिका
नूपुर विछवानकी धुनि जे हरि सुनाए ॥

कृष्णजीवन लक्ष्मीरामके प्रभुको
रस वश कर नैनन सों लोभाए ॥

९७

तखत बैठो जसनकोनो साहस कवन्ध
पण्डित घरो विचार अचल राज पायो ।
कनकदण्ड चवर छत्र रतन जड़ित
जगमगात सुर नर मुनि गुनी गन्धर्व गायो ॥
मृदङ्ग बजाय इन्द्रलोक देखन आयो ॥
ए समै जो वकस गजमुक्ता तरङ्ग देत
अरब खरब जैसे मेघझर लायो ॥
चिर चिरजीवो जलालदीन अकवर
चहुं चकसीस निवायो ॥

९८

माधो मधुसूदन मुकुन्द मुरलीधर मृदुहास ।
कमलनैन वासुदेव प्रबल वे पुरुषोत्तम
परमेश्वर विष्णु पूरण आस ॥
नारायण निराकार वामन विठल लक्ष्म
शङ्ख चक्र गदा पद्म सोहतहै पास ॥
पतितपावन विरदजाको दयाप्रतीत
जीयमे रची मदनरायके नित आस ॥

९९

यशोदानन्द आनन्द कन्द गोविन्द
गिरिधर मुकुन्द मधुसूदन वनवारी ।
वद्रीनाथ वामन विठल वासुदेव
मथुरापति माधो मुरारि ॥
कमलाकान्त केशो कृष्ण कमलनयन
कृपासिन्धु करतार करम कल्याण कंसारि ॥
राधावर रणछोड़ रसिकराय रङ्गनाथ
रमापति रागसागर प्रभु रासविहारी ॥

१००

प्रथम अल्लाहो अकवर कहोरे ।
तू मेरे मन दूजे रसूल चितधर रे ॥
वेचुन वेचगुन वेसुवे वेचसुन परद
पोश दाना विना पाकजातवाहोको याद कर रे ।
ऐसो आलिम करीम करमको करनहार
जो सुध नित लेत तेरी निश वासर रे ॥
हिदायत अजीजको दीजै सम्पत संपत दीन
दुनी कुशल क्षेम तिहारे नामको आधार रे ॥

१०१

मेरे मन अल्ला अल्लाहु रटरे रसनाज्यो करे आय ।
निशि दिन ज्ञान ध्यान और जप
सुरसदको यह सीख सीखले सप्तधाय ॥

१०२

हजरत महम्मद रसूल अली वली
मखदुल खाजे हसन वसरी ।
हजरत अवदुल वाहद वेनजेद
फजलवेनय आलम सुलतान
इवराहीम अधम करमकाम कीजै
मोपर साहजो फतुल मरारीहै वेरतुलवसरी ॥

१०३

वेचुन वेचगुन वेसुवे वेन मुन दुसरो
रचो महम्मद अचल आखर इकीक ।
पुनकीनो चारो यार वासि पात
वाक रार प्रथम सीदक सावत हजरत
अबूबकर सीदक उमरु अमरन
अलहर शूलको पूरदीन पूर
दीनपूर मजव जैसे दरिया अगम अथाह अमीक ॥
कहत सुजान हजरत इमाम
पाक इमान नवी जूको प्राण चाहत
दितेन जीके अली वली साहव करम सेइ
हाली करतहै जुल्फकार मारफुक
रजेर किए महमदी वलमा कहायो
सवते मनायो वह दुहला शरीक ॥

१०४

या करीम सत्तार जव्वार सहस नाम
पाक परवर दिगार ।
विन अवदुल्ला वरसे नर नाम
महम्मद किताव रशूल करतार ॥

१०५

सब मिल गावो वजावो मृदङ्ग
आज हमारे लालनको वरस गांठ
कनक थार भर मुक्ता हलकर करि न्योछावर पायो ।
नव नव पल्लवनको माला हारन हार बंधायो ।
वंशीधर प्रभुको यश सुनियतहै
सवहीको लागत सुहायो ॥

१०६

आएहो जु भोरभए सब निश अनत जागे
अरुण वरण नैन लिये मेरे आए ।
डग मग पग धरत जात वातनमें
तुतरात झूठी झूठी सौंहें काहेको खात
अतही अलसात जात जिनसङ्ग
रङ्ग रसकीने वलमा मुराद पूजो
रहिए उनहीके डर आए होजु ॥

१०७

प्रथम उठ भोरहि नाम लेत
अली नवी फातमा हसन हुसेन
नैन दोउ जगको निस्तार वेको निहारो आस ।
नूरके जहरते खधाजे मोन दीन अजमेरी दाता
पातसाह हिन्द लवलीहा मांगत गुनज्ञान गुनको गास ॥

१०८

मूरतजा अली वली सांचे साहव दिवान ।
यह सेवक विनती करत तुमसे
तुमही नैन कायम रखा प्रान ॥
तुमारो होऊं तुम्हें छोड़कित जाऊं पाऊं
मन इच्छा फल सुलतान मदनसेवकको
अरजदीन दुनियां मत अचल करहो दान ॥

१०९

सलिल्ला अलहमदल्ला महम्मद रवी रसूल ।
जाको पोतमें रच्यो संसार सकर
मीओकरराख्यो सब सूल ॥

११०

सु सकल आशानकीजे वेगि अलह साहव ।
वास्ते रशूल केहै मेरी सो मोमनको
चिंता विसर जाय दुखपाप
कटे या करीम या रहीम रहमान रव ॥
अरज करत तिहारे दरवारजो
आपवाको देत एक छिनमें
राजपाठ अरव खरव मांगतहौंहों
मंगता तुम दाता सुन लीजे कीजे
निहाल एक पलमें सदा अली वली इवो तुल
सफी सफरको दीजिए अनधन सुत सम्पत अव ॥

१११

रे मन सुमरन करो प्रथम नाम ।
करीम रहीम सब जगके दाता घरी पलछीन अष्टयाम ॥
वाकी कुदरत कोऊन जाने
जाको पूजत सब जगधाम ॥

११२

हजरत अली इमाम हसन हुसेन
मदत कीजिए मेरी सुवे श्याम ।
जलावदीन महम्मद वाकर मसादक जाफर
तुमही इमाम होय इमाम होय ॥

११३

हजरत महम्मद रसूल अली वली
मसबूल धाजे हसन वसरी ।
हजरत अवदुल वाहदवैन जेदफजल वैन
या अली सुलतान इवराहीम
अधम करम करमकीजे मो पर साहजो
फतुल मुसरी वेदतुल वसरी ॥

११४

साह अलावदीन मोजु दरीया
रोशन जंभीर रसूल आलम।
मैंहूं गरीब तुम गरीबनिवाज दे न्यामत।

११५

तू करीम करणको अनन्दा
बकसन हारा नव निधको।
सांई सत्तार पाक परवर दिगार
सब भेदको तुम्ह कीन करमको नन्दा बकसनहार॥

११६

मेरे मन सुमरन करोतो हे
अलह नाम ले जामे होवै सबतेरे काम।
महम्मद रसूल पञ्च तन पाक चारो
यार और हाजदे इमाम॥

११७

जीन महम्मद रचो अरसको रम
लोहकलम सबसे पहले।
अपने आप प्रगट कियो नूर दिए
करम जब करम भयो करतार
निरञ्जन निरङ्कार वहेदुलह ले॥

११८

मोसों जोअवध वद गए
साँझको आए भोर भए।
मोसों को चतुर नार जहां
तुम विरमाए ऐसे सुखपाए॥

११९

प्रात उठ आएहो कहो
कौन तिया रङ्गराते।
अञ्जन अधर नत वोलन
निश नैना नींद घुमाते॥

१२०

पियप्रवीण परम चातुर
मोहन मूरत नागर।
रोमरोम चाहे वरनन जाए
मोपै ऐसे श्यामगुण आगर॥

१२१

वेदन दरद दरि करो हजरत
मोरा अवर कहो सुमरन हजरत
इमाम काम मरसद सांचे हो तुम पीर।
जोफल मांगे सोफल पाऐ राज पाठ सुख तरीर॥
तानसेनके प्रभु रहीम करम कीजे
पाप न रहत शरीर॥

राग भैरव—रूपक ताल

१२२

सुरली बजावै आप न गावै नैन न्यारे
नाचवै यह सबही तयिनके मनको रीझावै।
दुर दुर आवै पनघट काहुके
घटन दुरावै रसना प्रेम जनावै॥
मोहनी मूरत सांवरी सूरत
देखतही मन ललचावै॥
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक
सबहिनके मन भावै॥

भैरव—ताल तिसाखा

१

अनत रितुमान आए पिय भोरहि मेरे।
मोहिंतो सुध भूल गईरी मोहन सुख हेरे॥
जियको औरसों सुंहको हमसों कहत है टेरे।
तानसेन प्रभु ताहिपै सिधारिए
तुअ मन रह्यो जिन तन नेरे॥

२

अब सङ्ग सखा सब लिए
फिरत माई एड़ोरी एंड़ो।

जल थल वन घन और ब्रजबीथन
आय रोकत आङ्गन बँड़ो ॥
नकाहुको कान करत ना डरत
ऐसोहि उचगरो उमँड़ो ।
प्रभु सुरतको कहा खोरदीजै
आलीरो पै गोकुल गांवको न्यारोही पेंड़ो ॥

३

एहो ज्ञान रङ्ग ध्यान रङ्गे मन
रङ्गे सब अङ्गन रङ्गे ।
प्रथम रामकृष्ण रङ्गे रहीम
करीम रङ्गे घट घट ब्रह्मरङ्गे ॥
रोम रोम मनरङ्गे हरिसङ्गरङ्गरङ्गे
जपरङ्गे तपरङ्गे तीरथ-व्रत-नेमरङ्गे
सर्व्वमई अङ्ग अङ्गरङ्गे ।
जीव जन्तु पन्नग पशु एक ईश्वर रङ्गरङ्गे
सुर नर मुनि सङ्गरङ्गे वैजू प्रभु कृष्णरङ्गरङ्गे ॥

४

माई काहेको कहो अबही जो मोहिं
जिन बरजो लाल तनकोरी चितवो ।
मनमोहन प्राणेश्वरकी छवि रीझत
अति मति गति सुध बुध विसारी
सब अजहूं भूल जैहैरी तोहि सिख देवो ॥
लगनसों फल ताको कहा कहिएरी
अब लोगन सुन्दर सखि भायो प्रेमबीजको बोहेवो ॥
परम रुचि रहो साहजहां तिनको पञ्चसरहते सरस
अपबस करके मति गति मनहर लेवो ॥

५

बार बार बरजो मैं तो यह कौन चतुराई ।
ज्यों ज्यों साहको मया त्योंत्यों सबही
मिल चलिए याहिमें बड़ाई ॥

६

इत भांन उत्साह अकबर दो दरस
जो देखे सोई होत पवित्र
इन्दे रजनि मन्द सुरनके वरपावे गुपत आनन्द ।
वे तिमिरहरण ए दुखभञ्जन
ताकि सौंहे करियत साहदिनों मकरन्द ॥
वह सहस किरणप्रकाश कीनो
अतिबुध श्रेष्ठ मया धर जगवन्द ।
तानसेन कहै कहांलों अस्तुतकरे
काटनहार विकार दुखदन्द ॥

७

करम कर करीमतू सत्तार गफार अधार वन्दको
रहनुमा तूही पाक परवर दिगार मौला ।
जोइ जोइ मांगतहूं तुमपैसोइसोइ सब हुकम होए
रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध वही दुनियां
दीन ईमान सहत और जीवन में
सुख सम्पत पाऊं अबगाऊं नाम तुम
गुन रहीम मौला ॥

८

लाय देखावोरी माई प्यारेको चरण ।
श्याम विरह मोहि व्यापतहै वाहीको शरण ॥

९

कौनसें रितमानी सांची कहो मनभावन ।
निशि की जागी अनुरागी आंखे
झुकन लागी तब तुम आए मेरे वचन बनावन ॥

१०

महम्मद नवी हबीव अलहके साहमर्द्दान
अली वली मरद कुफर दारिद्रहरण
हजरत हसन वुजरका इमाम ।
संसारके साहव हुसेन सैयद साहजादे
जैनलावदीन दीन पर्णा महम्मद वाकर
करतार कीने मनचिते करन काम ॥
हजरत जाफर सादक सांचो सीदक
इमाम मुसिकाजम हजरत अली
विन मुसी रजा जाको दरस देखे जाय दारिद्रदाम ॥
हजरत तकी अलीनकी हजरत हसन असगरी

इमाम महम्मद मेंदी साहब जमान
दे सुख सम्पत सन्तत राखो त्रिहुलोकमाम ॥
खाजा पीर निजामदीन औलिया तू
सत्तार परवर दिगार करीम रहीम
दरीयाई पीर रोसन गाजीधाम ॥
हैदर रसूल गोस कुतवदीन अल्ला फकीर
तानसेनको दीजै रागरङ्ग तीनग्राम ॥

११

माई काहेको कान्ह अबही जो मोहे
जिन वरजो लाल तन काहे चतुर ।
मदनमोहनेश्वर पारकी प्रीति मनगति सुधबिसारे
भूल जाएरी तोहि सुखदाई अतुर ॥

१२

मान काहेको कीजै श्रीराधे रसके कुँवर रसभीजे ।
नवल कुञ्जनमें नागर वनसागर
तेरोही ध्यान लाडली लाडलडाए लीजे ॥

१३

मुरली बाजे राजेहो सुखमोहनके
गोपी रीझ भीजरही रसतानन ।
दूरहिते धुनसुन के आई भई मगन मनदे कानन ॥

१४

जनम जनमको मैं मान ठानोंरी
अलिजो छुटाय जानो गिरिआली
ताहे अवगिनहूंरी चातुर अत ।
अपनो सों रुसनो तुम मेरोहु जानत
समझ न सकत गाढ़ो मान होत कौन जुगत ॥

१५

राम हम योंही भले अब योहि भलेहोरा० ।
जो गत गई सो गत आई तुमारी
सेवासों अबमोहिं तो रैन दिन यह कामरा० ॥

१६

प्रथम आदेश गुरुको गुरुके परमगुरुको ।
रैन करन प्रभु एक सहस सखी महिमा
गावै अब यह विधि दूनों दुत अतपति सुरको ॥

१७

अञ्जन रेखता टक लाईरी
लोल मिला वर केलकीए ।
युगल कमल मध ऐसे लागत
मानो सोभा देत सीमली लीक दिए ॥

१८

लोचन भूम रहेरी हरि सङ्ग
जगत कमलछीन भए मृगज्यों लजायगए
सफरि दुरि देखत खञ्जन भाजत ।
तिय सब केलिचसके
चाखे हँसहँस कानकोनें लागत ॥
जीवन गिरिधर प्रभु प्रेमसमुद्र-
तरङ्ग झकोरन साजत ॥

१९

अपनी कहि और पियाकी कही
एरी तोपै वात कहोन आवै ।
पिय जिय की न पावै एते परमोहिं
खिजावै दुतीहोके आवै पै सोहाग न जनावै ॥

२०

रैन गंवाय आए मेरे प्यारे सब निशि जागत गई ।
नैनमें नींद भरे आलस जंभात गात
काहु त्रिया रस वस करलई ॥

२१

लालके सङ्ग ललना रैन जागो और लाललोचन
लागोहि आलीरी मानों वधू पसीठे ।
ता मधपुरी ऐसी शोभा मानों
भंवर लपटात उन मध उड़ परे रङ्गम भीठे ॥

उनके देखे भूँखे रहिहौं मेरे
जान खंजन कमल मीन मृग लागे बसीठे ॥
साह अक्बर पियको मोहेत
दीजियत अरसानें नींदन
अघाने अलख लाड़े पुन वाटछवि ढीले चितवन मीठे ॥

२२

बार बार बरजो तोहिं यहकौन चतुराई ।
ज्यों ज्यों प्यारे को प्रकृत त्योंही
पेचलिए अब याहीमें बड़ाई ॥
धन तेरो रूप सोहाग भाग
यातें सोतें घटछ लागें माई ।
धन तेरो लहनो जाके
साह आजम कृपाकरे सुखदाई ॥

२३

जनम जनमको मैं मान ठानोंरी आलीजो कुटाय
जानोंगी चाहै अब गिनछरी चातुर अत ।
अपनो सो रूठनो तुम मेरोछ
जानत समझ न सकत गाढ़ो मान होत कौन जुगत ॥

२४

सो जागें मोरे भाग जागें
बलमा भोर भए तुम आए ।
हम सो अधव वद अनत
विरम रहे उनके सङ्गरस पागें ॥

२५

रहछन इछा पूजो प्यारे
तेरे मनके मनचिते कारज भए
रोग दोस सब दूर गए मङ्गल गावै नरनारी ।
तूही ऐसो जान सब भए
अपने पराए ख्यावोरी
सबको अनेक नोछावर देत कञ्चनके थारी ॥

२६

दाता तेरा करम तू सत्तार पाक परवर दिगार ।
तू करीम रहीम तूगुन्हे का बकसनहार ॥

२७

हजरत इमाम आली मुसीरजा तुमको
मानतहै सब लवली पञ्ज तन पाक हाजदे इमाम ॥
वाहिदर मासुमसो मांगत न्यामत ताल
वलीए महम्मद इलाही हजरत इमाम अमीरके
लाड़ले जाम ॥

२८

सकरगंज पीर तिहारे
प्यारे आज न्यामत मांग पाए ।
अगरचे खिजमतें दूरबसे
सरमिन्दगी दारंवले
कुमरी सफत हस्तो तो वन्दगी दारं लाए ॥

२९

रहस न ईछा पूजि प्यारे तेरे मन
कीमन चिते कारज भए
रोग दोष सब दूर गए मङ्गल गावो नरनारी ॥
तूही ऐसो जान सब भए
अपने पराए भयोरे
सबको अनेक नोछावर देत कञ्चन थारी ॥

३०

मेरेतो आएहो भोरे सब निसि अनतही बस
तुरत छोमानि रितसों
कैसे दूरत लिए सो आश सब हरे ।
चारो याम जानत जनघेरो हम
सङ्ग जगवेको गरज हरे ।
साहजहां पियपैन गई तुमारी चोरी छोहरे ॥

३१

सकल जगतको इच्छा करनको
विधाता एक ताहे कियो ।

अति समाधान सब विधिको ज्ञान
सुर ज्ञाता ध्यान तानें साहजहां शिरछत्र दियो ॥
अपबल भुजबल दलबल करके भुअलोक लियो ॥
चिरजीव रहो साहसाहब किरानसो
दिलीपत विरच्च रच्यो नवीं यो ॥

३२

बिराजत सिंहासन बैठो गाजे
जगजीवन सकल दरशनको ।
रोज रोज नौरोज होत पुन
अष्टदिशपाल लास करत पुन देशनके
नरेश आए चरण परसनको ॥
दशो दिशाके गुणी मन मिल मान लाए
ते दान लए सुरपति भुअपति
आनन्द भयो अति हरमनको ॥
बड़ो जीय सहस रसनाको
सन्तान सहित पृथीपति नरको
नर साहजहां जहांलों रवि ससि नभ रहे और वसुधा
वर सदा बरस दिन दिन बरसनको ॥

३३

प्यारी बोली तू चलरी हौंहं
तु भई कहतहों तो सों मान जिन गहे ।
नीची नार कहा कर रही सुन्दर ऊंचे
चितें नेक मो तन जो है तेरे जोयमें
सोतू बेग उतर देहे ॥
सबही तियनमें तोही सोभाव रहे
पिय जियको तासों तू हठ कर हिए न रहे ।
साह बहादुर अतिविचित्र तासो रसही रसनिवहे ॥

३४

तू जनम करनहार मोहिं जनम दियो
संसारमें तोपर वलिजे हैं अब ।
और जो वचन मों मन आगे अति कठिन
लागत तिनको छिनहं मे सुदिष्टकरन
सत्तार दीजे सब ॥

३५

मेरे आए भोरे रहे सब निश अनतही जागे ।
सुरत जहां मानी री तुसो कैसे
दुर न लिए मास सुर हेरे आगे ॥

भैरव—तिसारा करषा

३६

ए जहांगीरको साहजहां जिन जगपर
कियो कर साह मरदांनजाको
अपबल दियो एहां अपबल दियो
समपत संग मङ्गाई शिरमोर धोल
शिरसिङ्गीसांई पातसा किए बड़ाई
चारों चकसुनि सहाई तेरी है बड़ाई
जग पर कियो कर सिमर सुरधर ॥
तेरे कुल होते आए तिमरलिङ्ग
अमर बाबर हिमाऊं दीनदार
जाके साह अकवर ताके साह
जहांगीर नरपति नर ।
रावराने लागे डरन मोन दोन अधार
करनराज तेजकायथ दायमको तव अटर ॥

भैरव—धीमा तिताला

३७

बनि बनि वनिता आईहै पिय मन भाई सौतन
मध खेलत लालभँवर मानों फूल फुलवारी ।
एकनसों नैन सैन एकनसों मीठे वैन एकनको
पाछेते अङ्ग भरत अचानक छवि
भई दूनी दुले रागहिण्डोल मिल गाई ॥
उत्तम मधुरित फूली द्रुत कामको वेली
ऐसे पिय तिय दोउ भांत एकदाई ।
अति सुखदयो दोउ बिवसन राई
सुलतान सलेम पिय रसीहै मनाई ॥

३८

करजोर भोर जँभानी ऐंड़ानी
काम न कामको चढ़ाए कमान ।

ध्यान भौंह पलक मध बरनी
ऐंच खैंच लेगो अतिचतुरायो बान ॥

३९

प्यारी तेरो प्यारो आयो प्यारी
प्यारी बातें कर प्यारेको मनाइये ।
अनेक भांतन कर प्यारेको रिझाइए
आली ऐसो प्यारो कहां घर बैठे पाइये ॥
लाइए समुझाइए कौन भांतन
कर सुखदे बुलाइये ।
साह बहादुर तेरे रसबस भए
अनरस कर कर सौतन हँसाइये ॥

४०

अधरन लालीसों कड्ढं कड्ढं रही मानों
धरी लालचूनी ।
पीतम मिलके चीन दरपन ले देखत
याते सुसक्यात छवि भई दूनी ॥

४१

प्रथम नाम लेने मन मेरे अल्लाहो अक्वर ।
और जे जे बातें विकार तन मनते दूरकरो ध्यान
येहे जीकर कीजे हरदम एक तक्वर ॥
जिन तोको ऐसो कीनो दीनो पीड़प्राण
रच्यो ते क्यों न वक्वर ।
रहीम करीम सत्तार जव्वार सांचो जाके
दोउसमै निज लगो नित खवर ॥

४२

लोचन लाललाल सबनिश जागे हो कौन सङ्ग ।
झपकत प्यारे तुम्हारे और शीतल
देखियतहै अङ्गअङ्ग ॥

४३

या हैदरे करारसाहब जुलफकार मोहे निस्तार लीजे
स्मरण जपतड्ढं तिहारे नामको ।
इतनी अरज सुन लीजे जगमें रख लीजे
लाज काहु कोक कीजे मोहताज अन्तके समै दीजे
आसरखतहु तुमते कौशरके जामको ॥

४४

दम्पत क्रीड़ा करत अनेक
कौतुक निशा बीती रैनसारी ।
युगलकिशोरी मानों सुखहुन
बोले जबही पिरात तबही कसकत प्यारी ॥
कबड्ढं लेत हँसाय हँसाय खिजाय
रिसाय रीझ रीझ हँसत दोउ भारी ॥
यह प्रकार विक्रमसाह रीझि देखो सखीए हारी ॥

४५

तार पखावज बाजे आवज धावज मिलत
पटावज नीकी नीकी घातसों ।
बीण रव्वाव सुरबीण सुरमन्दर और
तकीतान बीतत कीमतसों ॥

४६

निशि दिन हँसत बोलत डोलत तेरोही गुण गाव ।
तैं काहाकीनों सजनीरी डर पूजिए गोरी तेरो पाव ॥

मोसां जो अवध बदगए सांझको
भोरही आए ।
ऐसी काड्ढ चतुर नार जहां तुम
रस बश किए ऐसे नेह नए ॥

४८

आजक्यों जग आए पाए मैंतबही
बात करतही तो तराए ॥
ऐसी कौन त्रिया सङ्ग तुम विरमाए
अबभली मनावन आए ॥

४९

प्यारे तुही ब्रह्म तुही विष्णु तुही रुद्र
तुही गुरु तुही चेला ।
तुही जल तुही थल तुही प्रवल
तुही अवल तुही शैल तुही अलवेला ॥

तूही ऊंच तूही नींच पापपुण्य
तूही बीच तूहीसो मेला ।
तानसेन कहे प्रभु कहालों बखानूं
तुही बहुत तुही अकेला ॥

५०

हजरत पीर मूरतजा अलीजो हौं
सेवक तुमारो नितको ।
हौं माङ्गत तुमपै इतनी इच्छा दैया मेरो हितको ॥

५१

ए डरपावै मोहिं यह जान पिय विदेश गवनकीनों ।
एकतो अधारीकारी बिजुरी चमके
दूजे दमक दमक विरह जगावै ॥

५२

कान्हाते अब घर झगरो पसारो
कैसे होय निरवारो ।
यह सब घेरो करत है तेरो रस
अनरस कौन मन्त्र पढ़ डारो ॥
मुरली बजाय कीनो सब वोरि
लाज दई तज अपने अपनेमे बिसारो ।
तानसेनके प्रभु कहत तुमहि सों तुम जितो हम हारो ॥

भैरव—रूपकताल

१

कान्ह ओलर आयोहो घन जिम बरसन
लागो रिमि झिमि रस बुन्दन ।
मुरलीकी धुन सोई गरजन तर-
फन तड़ित मुसक्यान दशन
ओप बकपंख ग्रीव रह्यो पुहुप गुन्थन ॥

२

हलकिन हलकिन रोवतहै
हरिकहा खिजाई ।
हौंजो अकेलीसी करपाई
बहुतही अधकाई जाके असु-
अनते हात धोवतहै माई ॥

३

उमड़ जोवन घन आयोहो ता संग
दामनी क्रान्त सोई दशन झलक
कोकिला ग्रीव किलक मानों वैस बयार लेआई ॥
छविझकोर बरसत चहुं ओर कुच धुरवासे
लागत तन इह विध वरषा रित आई ॥

४

निसागमपधधपमगरेसानिधपपधनिसारेसा
निधपमधनिसाधनिसा ।
मगरेसानिधसानिनिधधपमपपमगमगरेसा ॥

भैरव—सुरफाकता

१

एक ओंकार निराकार जाको सब जगमें विस्तार।
यह प्रतच्छ देख भयो प्रतीत ताको सुमरो वारम्वार।

२

प्रथम उदीपन कैसे होत कौन राग
कौन सुरते आज स्वर जगाइए ।
सारेगमपधनिसा सप्तसुरनके
भेद भिन्न भिन्न करके समझाइए ॥

३

रङ्ग जुगतसों गाय सुनावै ताल मूल सुर संगत आवै ।
दुगन तिगन चौगन सो भेद बजावै
जब लागडाट परमान देखावै ॥
अपने मुखते न गुणी कहावै
तालमूलको व्योरो न पावै ।
तानसेन कहे होवै गुनीजन
छत्रपति अकबरको रिझावै ॥

४

ही ओंकार महादेव शङ्कर तुम
सकल कला पूरण करत आस ।

निहचेही धरत ध्यान सुमरन रमन
मान देखत दर्शन गई त्रास ॥
हरे दुख दन्द सोहत जटा गङ्ग
रुण्ड माल गले सोहे वाघाम्बरवास ।
हर हर करत हरे पाप मिटे सकल
दुख सन्ताप लहे मन हुल्लास ॥
तानसेन सेवा ध्यान कर मन
इच्छा फल पावे होय कैलास निवास ॥

भैरव—झपताल

१

प्रथम नादमूलते उचरे ताल
वन्धानसों गावैजो आवैसो सम परे ।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकइस मूर्च्छना
वाइस सुरत उनचास कोट तान भरे ॥
उरपति रप लाग डाट अंशन्यास
ग्रह आतक खातक खरान्तक उड़व खाड़व उचरे ।
कहे वैजू बावरे सुनोहो गोपाल यह
विद्या अपरम्पार गुण चरचासों लरे ॥

२

एक बल निरङ्कार दूजे बल चन्द
सूरज तीजे बल लोक चौथे वेदप्रकाश ।
पञ्चबल भूत आतम छटए बली
नारायन सतए बल सागर अठए बल
अष्टभुजो नवए बली नवकुली
नाग दशए बल अवतार प्रकाश ॥
अग्यारह बल रुद्र एकादश वराह बल
वामन तेरहे बल त्रईलोक चौदह बल
कहे विद्याप्रकाश ॥
पनरे बल तिथि सोरह बली सिङ्गार
सत्तरह बल सत्यावती अठारह बल वनस्पति
उनबीस बल पिनाकधर बिसए लक्ष्मी
अकइश बल तानसेन प्रकाश ॥

३

शिव महादेव त्रिशूल पिनाकधर जाके
जटा मध सुरसुरी आजाके विविधभूषण
गिरिजाके मन भाईया हईया अइ अइ अइया ॥
ए जगदीशया खवर लिए वृषभवाहन
अतदीयत तदीय अतदीयतरे आईया
मदन दोहाईया आईया चतुरङ्ग अङ्गसो
शम्भु नाचइया ईश निशाद हैया
तीऐ ऐऐऐऐया तीओदेया ३ शिव ॥

४

अश्वपति गजपति नरपति भुवपति
चकतावली चकतारण ।
दारिद्रहारन दिनमणि सूरज शशि उरगन
भुजबलभीम डर तेरो त्रास दान समान कलीकरन ॥
राज साजाके तुव समान इन्द्र
भण्डारो कुवेर आयो तुव शरण ॥
अपबल बली अचल रहो जलालदीन
अकवर साह जोलौं तो नाम मधु अधरण ॥

५

त्रिविध गामनो त्रिलोक उधारणी
त्रईतापवारणी ततक्षिन गङ्गे ।
त्रई देवमणि त्रिस्रोता त्राणी पापहरणी
त्राहि त्राहि त्रईलोचन त्रई त्रवेणी सङ्गे ॥
सुरनदी सुरेश्वरी जान्हवी गङ्गा
मन्दाकनी त्रिपथगा अङ्गे ।
भागीरथी पविता हरशेखरा
विष्णुपदा सुरदीर्घका भीषमसुविहङ्गे ॥

६

प्रथम नाद मूल ते उचरे ताल वन्धानसों गावै ।
सप्तसुर तीनग्राम इकइस मूर्च्छना वाइस
सुरत उनचास कोट तान लावै ॥
अंश ग्रहन्यास विक्रत द्वादशभेद
सो भरत सङ्गीत हनुमत् जतावै ॥

कहे वैजू बावरे सुनोहो गोपालनायक
ऐसी विद्यासो को लरे पाहन पिग लावै ॥

भैरव—ब्रह्मताल

नील-नीरज-वरन तन श्यामसुन्दर वर
त्रिभङ्ग कटितट पीताम्बर राजत मनि नूपुर
नाचत सुरङ्ग ब्रह्मताल प्रवन्ध थुंनुनु
नुनु नुंनुंनु दिग दिग दिग दिग थेइ थेइ
तथेइ थेइ भुनु नुनु भांता भोंता भां भां आनन्द-
नयनानद सम सानिधपसानिनिनि
धपमपमपमपमगरेसारेगगमरे
गरेगमपमपवपिगमगममप
त्रान् त्रकट भ्रकट् नुकी थं कीत् कीट भें त्र भां
डिगीडगी खररथररखभ्जेढींको
थेइ थेइ तत् तत् थेइ थेइ ताधी लाङ्धा ॥

भैरव—रुद्रताल

शिव स्वरूप पञ्चानन त्रिपुरारि त्रइलोचन।
त्रषभवाहन जटाजूट चन्द्रभाल सिरगङ्ग अघमोचन ॥
एक कर त्रिशूल एक कर डमरू
अङ्गभ भूतसङ्ग विरोचन
कामदहन कैलासेश्वर राग-रङ्ग-गुण
गावो करो ध्यानसोचन ॥

ब्रह्मताल

१

श्याम प्यारी तेरे नयना अतिही सलोने।
मनमोहन को रस बस कीनों डारो टोने ॥
केहरि कटि कदली जङ्घा नासिका कीर छोने।
श्रीफल उरोजन कमलनयनी तेरी छवि कोने ॥

२

जय जय ब्रह्मा आनन चारो वेद प्रगटकीने।
श्रीभगवान नाभ-कमलते हुए रङ्ग भौने ॥
चार प्रकार जीव अण्डज उद्भिज स्वेदज अङ्गज लीने।
कर कमण्डल हंसवाहन सावित्रीसङ्ग लीने ॥

लक्ष्मीताल

जानीमैं जानी जहां रितमानी
श्रीपत श्रीधर प्रणतपाल गोपाल।
अवधवदके मोंसे अनत विरम रहे
तिय जियभाए कवन वचन प्रतिपाल ॥

रुद्रताल

शिव शिव शिव शिव शङ्कर शम्भो
पशुपति गङ्गाधर उमापति रुद्र नारायनदेव।
नीलकण्ठ त्रइईश्वर कैलासी काशी निवासी
रूप बहुरूप त्रिशूलधारी भेव ॥

विष्णुताल

चतुर्भुज शङ्ख चक्र गदा पद्म कोट मुकुट सीस
कण्ठ कौसुभ मणि साजै।
लक्ष्मीसङ्ग सोहै पीतवसन गरुड़वाहन
जय जय विश्वरूप स्वरूप शोभा राजै ॥
उर भृगुलाञ्छन कमलनयन करुणासागर
जय जयकार सुर नर मुनि करत नमत
अज शिव इन्द्रसमाजे।
श्रीधर श्रीकर श्रीवर लक्ष्मीपति नारायण
नरोत्तम विष्णु त्रइलोकपति तूही जगभ्राजे ॥

भैरव—धमार ताल

१

दीननाथ मुकुटधरे माथे
माधो झुकरहे कदमको डार।
तक तक गेंद मारत नारिनको
कर गहे झकझोर डारत गरेमार ॥
दामोदर गिरिधर जिन करो ठठोरी
जिन मोरो सुख दूर करो रार ॥

२

तापर तू करन लागोरी यह बात एक
तू वाको कन्त लियो परचाय।
गिनत न काहू अपने आगे ऐसो तेरेही घर न्याय ॥

निश दिन हंसत बोलत डोलत
रहतेहैं तेरोही गुण गाय ।
ऐसोते कहा दीनो सजनी भर पूजी एरी तेरे पाय ॥

३

लाल गरमाने भोरही भाए ।
कौन वाम हित चितसों चाहे मगरी रयन जगाए ॥
ढिग ढिग काजर फैल रहोहै
जावक अधिक सोहाए ।
तानसेनके प्रभु वहांही सिधारो
नवल तिया मन भाए ॥

४

ऐसे देखियत लालन जागे भाग
हमारे आज रस भीने ।
एक वसन्त जान सबको उते देखत
छपाते कर सुगन्ध नवीने ॥
छदे भए गर्भदोउ औरीते आए
अञ्जन अधर लगाय लीने ।
सदा रङ्ग महम्मद साह छन नायक
यातें मन बस कीने ॥

५

एरी मोपै वा हरि बिन रह्यो न जाय
बिन देखे कछु न सुहाय ।
घरी पल छिन युगसे बीततहै
वाको सुरत मन लाय ॥

भैरव—सुरफाक्ता

१

प्रथम कौन राग कौन सुरत कौन मूर्च्छना
कौन ग्राम कौन सुरनते आदि खरज गाइए ।
सारेगमपधनिसा सप्त सुरनके भेद
बयान कर समझाइए ॥

२

गन्धर्व किन्नर गुणी अकारथ जनम
जात एरी सुर नर मुनि जिन ।
सुनि सुनि घटत वादि जात ऐसे
भूल रहे भर साधनको वहि रैन दिन ॥

—०—

ख्याल

भैरव—तिताला

अब तुम जागो क्यों न मोत पिय रव्वा
हमरो प्रोत तुम सन लागी ।
नींदके माते साहआलम सूर जनु
बाग वनवा सगरी रैन रङ्ग रस पागी ॥

भैरव—चतुरङ्ग तिताला

चतुरङ्ग रस लिए गावो बजावो मृदङ्ग
तक्धि लाङ्ग धुमकट तक्धा ।
दारा दीम दारा दीम् दीम्तन
ननन तुम् तननन तुम् तननन
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

भैरव—धीमा तिताला

१

जागे बगरके लोग कैसे आज
तोरे ढिगवा अब भई भोर ।
मोत पियरवा अपनी उमगसों
सौतन को भयो जोर ॥

२

झठे है विशात कर मान पाशा फेर
हरिभजनसों प्रीत कर ।
कहावत खेलरी ए अनारी चलेह न जाने
हारतहै बाजी तुअ आन बूझे रीत कर ॥

भैरव—जलद तिताला

आए तुम भोर हमारे ।
सांची कहो प्यारे कौनके रैन जागे
डगमग पग धरत धरनीपै
आलस अङ्ग अङ्ग झपकात द्रगवारे ॥

भैरव—तिताला

१

नित सुमरन करतहै ए सखि ए तिहारे शरन
मों मन नयनको सुखदीजे ।

महम्मदसाह पिया इतनो मिनती मोरी
सदा रङ्कको सुन लीजे ॥

२

तुम्हारे मिलनको मैं आई दौर प्यारे
तोरे औरेसे लागी दरशनकी ।
सुन्दर सूरत जबते देखी
तबते तपत गई बरसनकी ॥

३

मैं तुमसे न बोलोंगी प्रीतम प्यारे
तुम औरसों लगाई प्रीत ।
हमसे अवध कर अनत रहत हो
तेरी भंवरकी सी रीत ॥

४

निश जागे रस पागे बतियां नयना घूमघुमारे ।
कौन बालको अधरसुधर मध भए पिया मतवारे ॥
आवन लटक मटक भावनसों लटपटात अङ्गसारे ।
सखि शिङ्गारलो भई बावरी तुम जीते हम हारे ॥

५

महम्मद रसूल अरु बीसो नबीयनको शिरताज ।
दीनों अलहवलो अलीसो सार कर कीनों
जगतको राज ॥
जिनको नाम दोउ जहांनमें रोशन
रङ्ग रङ्ग आदिलों आज ।
रफीय सफी-कुल आलमको संवारत दीनके काज ॥

६

मौला करम कर करीम तूही सत्तार जवार ।
आधार बन्देको देहु न्यामत तूही पाक परवरदिगार ॥
जोड़ जोड़ मांगत सोइ सोइ हुकुम होत
और दीन इमान सहत और जीवनमुकत सुख सम्पत
पाऊं गाऊं तुअ गुण रहीमहों गुन्हेंगार ॥

७

तिन मध खेलत लाल भंवर मानों
फली फुलवारी अधरनकी लाली
बन ठन वनिता आईसो पिय मनभाई ।
एकसों नैन सैन एकसों मीठे बैन
एकनको पाछेसे अंकन भरत छवि भई
दूनी दूजे राग हिंडोल मिल गाई ॥

भैरव—चौताल

१

आज सखी लखी मनमोहनी मूरत माधुरी
सुन्दर चतुर सुजन काछ ।
सीस मुकुट श्रवण कुंडल घुंघवारी अलक झलक
चलत चाल ठुनक ठुनक अधरन मुरली बजाई तान ॥
भूली सुध बुध सब गृह काज डार दियो बिसरि गयो
खान पान लखि मनमोहन चतुर सुजान ।
बैजू बावरी रावरी करडारी मोहि
न सुहात आन त्याग दई कुलकान ॥

२

आज सपनेमें साँवरी सलोनी सूरत देखी
सैनन करी मोंसों बात ।
तबते मैं बहुत सुख पायो जागत भई परभात ॥
मधुर बचन बोल मदन मन्त्र पढ़ डारी
उन बिन छिन पल कछु न सोहात ।
बैजूके व्रजकी नारी जन्त्र तन्त्र लिखि सारी
कल न परत गात सब दिन रात ॥

३

आलीरी भोर ही आए गिरिधारी
सङ्ग प्यारी कुञ्ज भवन बसे रात ।
श्रीकृष्णराधिका सकल गुनसाधिका
मुदित मन मुसिक्यात ॥
बीरा परस्पर देत मुखनमें
डारत पीक लीक रङ्गभूमिन रङ्गात ।
धोंधीके प्रभु श्यामाश्याम आवत
ललितादिक कहे बात ॥

४

भोरही आएहो मनभावन
कवन नवल तीय सङ्ग जागे ।

अधरन पीक लीक तोतरात बैनन
नैनन सैनन लागे ॥
सांझ अवध बद गए रहे अनतही
सबनिश कहांतुम पागे ।
बलिहारी वारों गिरधारी सुन्दर सुखपै
प्रातही आए मेरे आगे ॥

५

ए मन भोरही केशव कृष्ण कहिए
लहए श्रीहरिनाम ।
गोविन्द गिरिधारी मधुसूदन वनवारी
जगन्नाथ जगकेधाम ॥
मुकुन्द माधो मुरारि बिहारी वामन बैकुण्ठ ठाम ।
श्रीबिठल वासुदेव द्वारकानाथ बद्रीनाथ
राम नाम भक्तावत्सल पूरण काम ॥

भैरव—सुरफाक्ताल ।

अब याद कररे बन्दे अल्लाहको
जो कुछ तेरा होगा भला ।
निशि दिन ध्यान करो वाहीको याही तू मान सला ॥

रुद्रताल ।

रुद्रदेव त्रिनयन अरुण जटा पिनाकधर नङ्गे ।
शिवहर गिरिजाधर वर नन्दी वाहन गौर अङ्गे ॥

भैरवी—ताल फरोदस्त ।

सागमधपमगरेसागरेसानिधपमधनिसारेगरेसा ।
रेगरेसाधपधनिधधनिधधपमगमपधनिसा ॥
रेगरेसारेनिपमगरेगरेगसानिधप
मगमपधनिधपमगरेरेगमगरेसा ॥

भैरव—तिताला ।

१

कहियो प्यारेसों इतनी बिनती मोरी ।
मो जीयते जिनबिसारिए
मैं हों जनम जनम की चेरी ॥
मोहिं कामसो आय बनीहै जैसे नारन छेरी ।
साहः विक्रमके चरण परसत होत वटरजे हेरी ॥

२

कटि पीत पट गहे कंटका अङ्गअङ्गनमें
जाय निशिही खड़े वनमें ।
पटि किधों कहुंग्वारनसों भई खाई दधि छिड़ाई
ताके शिखरन करण लागेहो तनमें ॥

३

मोहिं तुमारे दरबारको आसरा
मेरी शरम अब तुम रखलीजे ।
इतनी विनती तुमसों करतहौं
मोहिं सुख आनन्द दीजै ॥

४

मौन दीन अनलहक चिस्ती साँचे महरबान
ख्वाज कुतबउद्दीन सेखफरीद सफरगंज ।
महबूब इलाही नाजामदीन तैसेही मुसकल
आसान सेख नसीरउद्दीन दुख भंज ॥

भैरव—जलद तिताला ।

हजरत रसूल मखबूल अपनीकृपाते
मो मन चिन्ता दूर कीजे ।
दीजे बहु भांतिनको आनन्द सदका
अपने मुरसद ऐनका सुखरीजे ॥
तुरत सुधालीजे आय आशाहै दुखदारिद्र
जनमलों जाय पाऊं इमान औ लाजगुण ज्ञान
धन सेवकहूं तुहारे इसनैनका सुखभीजे ॥

भैरव—तेवड़ा ताल

१

गरुड़धर गिरिधर गजाधर सुदरशन चक्रधरणं ।
जय जय माधव मधुसूदनं परमपुरुष पातकहरणं ॥
दैत्यदमन दामोदरं द्युति अपरंपार दारिद्रदरणं ।
कमलनयन कृपाल केशव कंसअरि करुणाकरणं ॥
विश्वनाथ महीधरन खलदहन कृपाकरणं ।
अहिनाथन औ खलबन्धन कालीमर्दन गिरिधरणं ॥

जादोनाथ जगपति जगउद्धारण जगज्जीवन
यमुलार्ज्जुनतरणं ।
अपरंपार अलख निरञ्जन आनन्दघन निस्तरणं ॥
दीननाथ दयालसिन्धु सन्तसिद्ध सेवत सुर
भुवके भार उतारणं ।
भक्तवत्सल धर्म्मरक्षक करतार कुरम करुणाकरणं ॥
गिरिपतिके प्रभु अगम अगोचर निरञ्जन
निराकार सोई साकार सृष्टकरणं ।

२

तिय प्रवीण परम चतुर मोहन मूरत नागर
रोमरोम सुन्दर ।
नेत्रकमल सुआ नासिका श्रीफल उरोज
कटि केहरि गर्भ गञ्जन पुरन्दर ॥

३

देवमणि दिनमणि भान दिन कहाँसे तिमिर हरत
रैनि तपनि त्रिगुण द्वादश आत्म नेत्र मार्त्तण्ड ।
हस्तरश्मपुषा जगतारण जनचक्षु जगवन्दन
पापहरण प्रचण्ड ॥
सूरज सुर सहस्र गरुड तू वेजानपति
अगति तू अगति सप्तद्वीप नवखण्ड ।
रसनिधान सेवकको दीजे सुदृष्ट कीजे
दीजिए सुर ताल अखण्ड ॥

भैरव—सुरफाकता

प्रजापति द्विजपति आदिदेवपति जगत्पति ब्रह्मा ।
सावित्रीपति चारु निगमपति हंसवाहनपति ब्रह्मा ॥
षड्दर्शन मृगुपति कहियत चतुराननपति
चतुर करमा ।
कर उक्त युक्त याचक जन बैजू नित उठकरे
परकरमा ॥

रुद्रताल

त्रिपुरारि त्रिशूलपाणि शिव शङ्कर ज्ञानो ।
डमरु डिम डिम कर नीलकण्ठ फुङ्कत फनेश
चन्द्रभाल कटाक्ष जटा-गङ्गापानो ॥

तिएअवै तिएअवै तियाऐया तिऐऐया तिएऐऐया
आआआआआआआनी ॥

भैरव—सुरफाकता

त्रिपुरारि गरीबनिवाज निवाजन समरथ
पूरि रह्या सब धाय धाय ।
जे तुम्हें ध्यावै मन इच्छाफल पावै
तिहारोही गुण गाय गाय ॥
सुर नर मुनि ध्यान धरतुहैं तिनहुंके मन पाय पाय ।
तानसेनके प्रभु तिहारो असुतिकरुं
तिहारो ही मन भाय भाय ॥

भैरव—लक्ष्मीताल

जय लक्ष्मी रमा कमला करुणामयी पद्मजा दधितनया ।
जय महाराणी विष्णुपदसेवनी जगज्जननी
जगनिस्तारिणी जगमोहिनी रूपया ए तियाई ॥

भैरव—चौताल

जय लक्ष्मीरमणा कमलाकान्त श्रीधरभूधर
गिरिधर नरहरिरे ।
नारायण नारसिंह नरोत्तम निराकार निरञ्जन
निरधार भक्तवररे ॥

भैरव—झपतारा

साधपमगमनिनिधपगमपमगरेसा ।
सारेगमपमगरेसा बाजत रसबीण सारेगमगरेसा ॥
अतिही आनन्द भरे नृत्यकारी नृत्यकरत
उरपति रप लाग ठाट गतिते सुरबीण सारेगमगरेसा ॥
रतन-जड़ित सिंहासन तापर बिराजित
आदिजोत निरङ्कार जगत नाम छायो
मन वच क्रम ध्यावै
रहत सदा चरण शरण युगराज दास गतिले प्रवीण
सारेगमसा ॥

भैरव—टप्पा ताल मध्यमान तिताला

मैंडे वैंडे नुआमीवे तैंड़े घोलघतिवे
नित उठ जिंद तपदी रहंदिवे ।

तैंडे खातर अपनेंपराए लोक देसाई
तैंडे नु चह दिवे ॥

भैरव—एकताला

१

सोना तैंडो बांकी अदासो जोयडर दावे
मैंडा पलक तेरो तिरछी तरवार ।
वांकी तैंडी भौंह कटीली मनरङ्गवर चस्म खुमार ॥

२

जगतनुपालदा वो रामराम जगतके बिसराम ।
तेरी महिमा कहालों बरनूं पतित पावनहै नाम ॥

३

गरीबनुपालदा वो यार रब गरीबनिवाज ।
तैंडी महरदीमें कि गल आखांमहर मसवदे
दिवो यार रबगरी ॥

भैरव—तिताला

१

बांके नैना वाली आवे मैंकी करा ।
मायल कर सानु धाअल कीता बुण्टाबुण्टा
कार पालीआवे ॥

२

पिय मेरे आवत हो रङ्गरङ्गाए ।
धित्ता धिर किट तक् तक् धिर किट तक
धिधि किन् किट् तक् तक् धिलांग
धिधिकनधर मृदङ्ग बजाए ॥

३

पिय तुम वहांही जावो जहां सारी रैन जगाए ।
रातके उनींदे जागे आंख खुमारी हैजू
तुम भलेजु भले सङ्गरङ्ग आए ॥

४

पीत मनकी तुम जानों मोरे हरे
नारायन कृष्ण मनहरण ।
मनरङ्ग सुधबुध जानत हो सब तनको
जगत पोषण भरण ॥

५

कान्हरे आज मोरी बहियां मरोरी ।
पानियां भरन कैसे जाऊं मोरी सजनी
लाज काज जिय मांझ अरोरी ॥

६

हैं सब घरके जागे प्यारे भोर भई
जिन बांह गहो पाय परुं मैं ।
धीर धरो बलबीर बबाकी सोंह करतहौं तुमसों
फेर ऐहों लला जिन आन करो ॥

७

निधनिधपधपमगपमगमगरेगरेसा ।
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ॥
धधनिसारेसानिधधनिसारेगम ।
गरेसानिधनिधपधपमगमगरेनि-
सारेगरेसानिधपमग ॥

८

करीम रहीम बन्दए निवाज पाक परवर दिगार ।
जित देखो तित तुही भरम रहो तेरी कुदरतको
कोउ न पावे एराज नियाज ॥

९

हरि मेरे आएरी ब्रजराज मोंपर मया कीनी आज ।
धन घरी पल सायत सजनी जित देखूं तित
मोहन प्यारो गए दुख दारिद भाज ॥

१०

हजरत महबूब इलाही निजाम दीन औलिया
जर जरी बक्स ।
खाज कुतबउद्दीन सेख फरीद सकरङ्ज अमीर
खुसरो गंजबक्स ॥

११

घरी घरीमें रही निहार मोपै मयाकर आए आज।
निश दिन तेरो याद तोहिंसों लागी
चित जित तित नित नयो लाग्यो ध्यान तेरो
तुम्हारि आवनते गए विरह भाज ॥

१२

मौनदीन मौन लाक चिस्ती सांचो मेहरबान।
ख्वाज कुतबउद्दीन सेख फरीद सकरगंज महबूब
इलाही निजामदीन तैसे ही मुसकल आसान
सेख नसीरदीन सोआव ॥

१३

साहनसाह दीनदुनीके बिन अवतालब
अल्लाय वली आल्ला।
फजल करम कीजे मोसों आज जप रया वसीया
रसूलिल्ला ॥

१४

रैन गंवाय आए हो मेरे प्यारे सब निश
जागत अलसाई।
नयनमें नींद भरे आलसमें जंभात जात
रस बस भए लोभाई ॥

भैरव—ताल सवारी

१

बाजोरे बाजो मन्दिलरा शुभ दिन शुभघरी
लालन घर आज।
सब सखि बनआई करन मङ्गल चार
आज उनके भइला काज ॥

२

दिलको बियामें कासे कहूं जो गुजरे
सो मेरा रब जाने।
मरादरदस्त अन्दर दिल अगर जो गुजरी
सारे हाल पर ॥

भैरव—भ्रमरा

कोयल कुञ्जके माई मोंढिग लालनको बास बसाई।
यासो ते मोसे बोले ढोलन कहे ना टुक टरे
ढोलन नाई ॥

ब्रह्मताल

थुं नुं नुं नुं नुं नुं नुं नुं दिग् दिग् दिग् दिग्
थेइ थेइ तथेइ तथेइ झनु नुनु झांता झांता
झां झां आनन्द नयनानद सम सानि धपसानि।
निनिधपमपमपमपमगरेसारेरेगरेगमपमपध
निगमगममप ॥

भैरव—ताल पटतान (ध्रुवपद)

बक्स दीजिए मोंको रब रहमान दाता
विधाता तेरो नाम।
सदा रङ्गदाता पुर गुन्हेगार तू सत्तार परवर
दिगार धरते दुख दूरकरो देवो आराम ॥

भैरव—पटतारा

तू अल्ला साहब तेरो चाहमें होंहो आयो।
जब तेरो नाम लियो सब दुख दारिद्र्य गमायो ॥
तुही तारण तरन तेरे नाम तें जग दरियाव पैरायो।
लाल प्रभु कहे मोहिं देवो सन्तत सम्पत अनधन
दूधपूत होय मन भायो ॥

ख्याल

भैरव—धीमा तिताला

बिनु अवताल व अलो य वली अल्ला।
फजल करम कीजे मों सों आजज पर
या वली या रसूलिल्ला ॥

भैरव—तिताला टप्पा

हां वे सोना तैने माखीजा बक्सकीनी
और अपनो पनाह दीनो तू सानु अपनारब दीवे ॥
अदारङ्ग सानु यही दवाईदे दान बाब साहेब तू
लाख बरस जिन्दा रखसि तेड़े पुत्र तेंडे खेड़े
तेंडे डवरदी करीम लाज सरस सरब दीवे ॥

भैरव—चौताल

१

पिय प्रवीण परम चतुर मोहन-मूरति नागर ।
रोम रोम चाहे बरन न जाए मोसों ऐसे
सगुण आगर ॥

२

बाजत बीण रबाव किन्नर गावत इन्दर वारी ।
तामें कहियत थाटधुन सुखराई
उघटधि लांग तामें मृदङ्ग धुनकारी ॥

३

करता तुमको कीनो सब लायक
मेरी सुमकल करो आसान ।
जो जो तोहे तकआवे मनइच्छाफल पावे
सब गुणीजनको सुखदाई राजबहादुर
गुननिधान राखत सबको मान ॥

४

भोरहि आएहो लाल दे महावर तिलक
भाल अरुण नयन अलसाए गात ।
धन युवती जिन विरमाए तुमहिको
जगेहो जहां सारी रात ॥
पलकन पीक रेख अधर अञ्जनकी बन रही
बिनगुण माल लाल लजात ।
कङ्कन गड़ो पीठ पै प्रीत नूतन कौनसो अतिही
सो जान पाई चतुराई तिहारो जादोनाथ ॥
मुकरले देखियत अपनो आप मुख
रामकृष्ण कहे बनावत मोसों बात ॥

५

आस पास सहचरी नूपुर झनन करत
चम्पाकी कली मानों फूलवेश मानकी ।
सोंधाकी लपट जैसे दपट देह भोरनकी
विन्दादिक वदन देख उठत कुलगानकी ॥
झांकत झरोखन के परदे उधार देखत
आप लागी शोभा सत भानकी ॥
मिट गयो अमङ्गल भयो मङ्गल किशोर
सूरज गाय उठो मङ्गल जागीजो जानकी ॥

६

भोर भए भैरव गावत भर सुरलीमें
श्रीवृन्दावन मघ घनवारी ।
सप्तस्वर तीनग्राम अकइस मूरछना
लाग ठाट उरपति रूपधारी ॥
मधु माधवी भैरवी बङ्गाली बरारी सैन्धवी
यह भैरवकी सङ्गनारी ।
तानसेनके प्रभु तानन मानन मोह लीनी व्रजनारी ॥

७

धन धन मेरे भाग भोर भए आए
लालन सबनिश कहां जागे प्यारे ।
आलसवन्त जँभात जात मलीन गात
सांचो कहो बात नन्ददुलारे ॥
लट पटि पाग खुल रही पेचनसों
अधरन पीक लीक धारे ।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक सांचे
बोल सांझके तिहारे ॥

८

तेड़े नाल लगे दिल सांवल गबरू छदड़े ।
छदड़े घोलीयां आसिजां दीयां तेंड़डे ॥
रतदेहा मैनु कल नहीं पड़दीरे दडीपातें
तें दडीया मैनु यादे सावल मेडड़े ॥
वेश नजर मैनु घायलको तोहुण लीता मनसेनड़े ।
मनमस्त बा फकीरा कहे मस्ताने नन्द महरदे
सुत वेखननुत रसे साडे नेंनडे ॥

रागसागर

प्रथम भैरव नीके बश प्यारे भए
रविके उदे आए राम किरिया खात ॥

विभस भए देखियत गात उदे शकार कौन
तिय ललित बचन बोलतहो तुतरात ॥
बेला बेर बीतगई अली आश पूजगई
देव गरीब निवाज काको भो सङ्गम खट्पट भईरात ॥
देशाख सुघर तीय सुआ बस्त पहर खड़ो
सुघराई जानि परात ॥
हम आसवारी सारी रैन तुम देव गन्धारी
गावत गुजरी सुन वीती परभात ।
तोरी हमसो प्रीत जौन पुर बसत है
नवल तीय सो देख उन्हे जाय लाचारहो
बहादुर हैंरात ॥
जङ्गल जङ्गल ढूंढ़त हारी भिभवट जिन करो
मेरे प्यारे आशा जोवत बिहात ॥
सारङ्गनयनी पास जावो मधुमाधवी वरहंसनी
सामन्त प्यारे वृन्दावनमध इहा लङ्कदहात
धन धन श्रीमूलतन मन्त्र पढ़ डारो अबहीं
पलछिन निरखत तुमको पूरो या वड़भाग गात ॥
जयतश्री वाको पूरब पूरे पुण्यफल जाको
पूरवा लखात ॥
मारवाने दईहै कामको श्रीमहाराज
गोरी गोरा टकरात ॥
ए मन होत कल्याणको चाहत भूपाल बड़े हमोर
पुरो रातको मोदीयत कर छाया पग डगमगात ।
ऐंड़ात जँभात बहुनायकहोजु कान्हरवागे
केशर कण्ठमाल कौसुभ मणि गहना बोल सुहात ॥
वाके दरवार में गए बहार करन हिडोरे
पांचमें बसत हो भंवर नाम कहात ।
बिहागत भई मेरो खंभा पकर ठाड़ि रहत
बरज्यो दुख बीती मेरी कासे कहूं बात ॥
सो रटना लागी श्याम मेरी जो जो वतियां
करार कर गए साहनी मोहनी कर घात ॥
मोहिं अहोरो जान गोकुल ग्वालिनको
चाल चलत चलक छांद कहि जात ॥
कपोल कहां पोक लागो जानो हैजु जानो
दीपक चन्द्रप्रकाश भए लीलाम्बर
और आए काल गए अवध दे रात ॥
ए घनश्याम मौला नटवर नरहै वाहीके
गोड़े पग धरात ॥
वांके श्रीविहारी लहर लोम पहाड़पै
कङ्कन गड़ात खखिडता नायकाकी बात ॥
बैजू बावरी रावरी तू तिहारि रागसागर गावत
तित तिलक सिर मांझ देखात ॥

अथ आलापाक्षर

सर्व्वरागानामालापज्ञातव्य

ननरीदनाआननउननउआनामअदतनरी
तरिरानाउननानाआनरानननरनुतानाम ॥
अदनतुँआननननूतननरीननाआनतानतनुम
ननुतरीन तानुरीरनानता आननान आनता
नरान तनुम्नननना आननतानुंतन नरीन
तानाननननतान तनुंतननुं तनानाआनन
नतून् नननारनाआन तानरीतानिअनम
ननतानरीन नारीन नानान तुमतुम्
नितना आननरीतननरीता आनरीने
नानतानतुँननानानाआनरीतननभान
निननरीतानपननननातातानतदरतन
नतानतारण दीलतानुम् नानुनरीआनारिं
नरननितनुंनितारण रीतताऩ्तनानु आनुम्
अदनतुन्रि अदतननरीरनन आनामतुनतुम् ॥
अरीतेतनानरीरनानतौननौन उदत तौन आनन
तानरीनन नरानरीननननइउदतनआदतनरी
ररनरानतुम्नननतुम्तरणनतनरितनन
आदनउदननतनरीतननननतौननौनरीरनानताम् ॥

इति सर्व्वरागालापः ।

—०—

अथ खयाल

भैरव—जलद तिताला

हरि हरि लहो मन मेरे अष्ट प्रहर आनन्द होय तेरे ।
यहलोक परलोक स्वामी जपो निशि दिन सांझ सवेरे ॥

२

रामकृष्ण पूरण परब्रह्म सोई साकार वही निरङ्कार ।
जित तित इत उत वही भरपूर रहो
त्रैलोक्य चराचर घट घट व्याप रहो करतार ॥

३

रामकृष्ण पूर्ण अवतार सब घट व्याप रहो संसार ।
अखिल ब्रह्माण्डके नायक करता हरता
मोहन-मदन मुरार ॥

४

करीम रहीम बन्दे निवाज पाक परवर दिगार ।
जित देखूं तित तूही भरम रहो तेरी कुदरतकी
कोउ न पावे एराजनियाज ॥

५

एक पलछिन कबहूं न बिसरे माई
लालन नित नयनन आगे ठाढ़े रहें ॥
श्रवनन सुन तुरत रस उपज्यो मोंमन आगे
सदा रङ्गीले महम्मदसाह कहै सो बन्दीकरे ॥

६

भई आलीरी बहार वन घन कोयलिया
बोले डारो डार ।
सुगन्ध पवन चली पी ओरते सुखसम्मद मिलेहो यार ॥

७

कौनको डर मोहिँ अबतो निड़र भई
भईरी भोर ए पिया सोवनदे ।
रात जहां निकसी तो लोग कहेंगे चोर तिहारोसों
नजर लिखा पिया जो होनी सो होवन दे ॥

८

जागे बगरके लोग अब भई भोर
करत ननदीया सोर ।
कैसे आऊं तोरे ढिग मोता पियवरा
अपनी उमगसों सौतिन को भयो जोर ॥

९

भोरकी चिरिया बोलन लागी कागा बोले
चौंक परी पियआए नहीं औरकी ।
निशा नींद न आवे कल न परत है
वेग दरसवा दीजै पियवा य पूछूं मैं
तोहिं गुसैंया सुनो कर-जोरकी ॥

भैरव—चौताला

चतुरङ्ग हरिगुण गावो गावो नीके तान ।
मान और महाजन गुण कीजिए सुर सङ्गत
सो लीजिए तान मान ॥
द्रद्रद्रद्रतुं द्रद्रतुं तननननारेनारेतारेतदारतददानी ।
धाकड़तक् ताकिट तक धुमकिट तक् ड़ताधाधा
किटधुमकिटगिदिगनधा द्रु० ।
पपधधपपधधधनिससानिधपमगरेसा
सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा द्रु० ॥

भैरव—तिताला

पलक दरियाव मेरा साँई राईको पर्वत
पर्वत को राई करे और करताहै गुसाँई ।
जो चाहे सोइ इच्छासो होय
युगराज वही करे सब कुदरत उसिताई ॥

भैरव—धीमा तिताला

आवो कहा मानों जावो जनि वहां जहांके
जाएते धन जाय मन जाय प्रतीत बचन जाय कुलमा ।
नेक न डरे आवागमनपै ऐसे अरे अरे
निरखत खरे सब वरे परे हसन तुमतो
बड़े मनगेरया गुणनते करतहो
तन मन जराय उलमा ॥

२

जाम पिओ जम जम शुलावको लाभ
तनको होवे सेहत जानको ।
मुखकिल मेंहिल निकलो चोको लो
दस्ती जो निकले खिलत
वगल मसफरा सौदा दस्त वदस्तहो
आनन्द करो हसन युग युग जीवो ॥

३

दरया दरया दरतनदरया ताधिलां गदानी ।
तननाद्रुद्रतुंद्रद्रतुंद्रतनातननननननातुंद्रद्रद्रद्रद्रद्रद्रानि
वेतो नबूवत वहार गुलशान् ऐव कुलसून गारगुलशन ॥

भैरव—तिताला

तानदेर तदेन्नाय लोयलोयालाले
ओननतुंतानदेदाने देन्नादेन्ना
तानदेरनाधितिलेलानारेतुमृतदारेदिमतननदिरतुं
तननदेरनुं तानदेरतदेतदानी ॥
आहेदिमदिमधितिलितिलाना
तानदेरनादेरनारेतदेतदानी ॥
जब तलक सीनेमें दमथा दाग दिल जलतारहा ।
व चिराक जब घरहुवा मालिकथा
जो चलता रहा ता० ॥

२

तोमृतनतानतनदिरनातननननतामृतनना
तारेदानीदीमदीमतननननातननातारेदानी
दीमदीमतननननननातारेदानीदीमदीमतनन
नातुंद्रद्रा गीतुम द्रद्रदानीतुंद्रद्रतदारेदानी ॥
तारेदानीतदेदानीतदरेदानी दीम दीम तननतनना
तननननातारेतारेतारेतदरेदानीतदारेतदतदानी ॥

३

प्रीतम प्रीतहिते परखको जियत
कैसे कहूं रे निपट अटपटी बात ।
सदा रङ्गको यह सुख दीजे ले चली अपने साथ ॥

भैरव—धीमा तिताला

बालमवा तुम बिन अकेली रह न सकतहूं ।
आओ घर सूर जन जावो प्यारे सदा रङ्गीले
मन्द हसन मुख मुसकतहूं ॥

भैरव—तिताला

तोरी वारी फूल रहोरी वरत वरनके
फूल वहां वलिगाऊं तोरे रङ्गनको ।
जेती कलियां दूजे यौवनकी माती और
सबहीको सोहाती वाको तो रखवारी ॥

भैरव तिताला चतुरंग

चतुरङ्ग कृष्णगुण गावो रिझावो नन्दलालको
स्वर तान ताल और राग रङ्गसों घरो घरी
पल पल छिन छिन निश दिन हरि सुमरन चित लावो ॥
पपममममपपपधनिसासासानिनिसानिधानि
धपमगरेसा स्वरसो तान सुनावो ॥
दितिलितिलानाद्रद्रतुंतननारेतारेतारेदोनतुमतदेनारे
तनादेरेमनदेरेनितनितदेरेतुंतननननतान रिझावो ॥
भ्रमकिटद्रिमिकिटिजनकझनकत्रकड़झिझकझननन
द्रयातियाद्रयाऐयाऐयाऐयाथुंकड़तकतकधिंकड़
झकथकतकधिलांगतिधाधगड़धिन्नातगड़धिन्नाधिंधिं
धागेतिटिधागेदिगिन्नागेकिटिकिड़नकत्रकड़तान्
तिधातालधातिकड़धाताधाधितानधाधाधाताड़धिधा
धिधिधिताड़धाधिधिधामृदु मृदुङ्ग बजावो ॥

भैरव—एकताला

आज बांशरी बजावे कान्हा कौन
धुन कौन मन्त्र पढ़ फूंक फूंक ।

प्रेम भरी तेरे मुख धरो और नरनारी
मिले धुनसुनले सोयरे सांसरी आ० ॥

२

रब गरीब निवाज महबूब नपालदावे यार ।
तेड़े मेहर दीकी गल आंखों महरम सवदे
दिलहाल दावे ॥

३

वक्स लीजिए मोंको मौनउद्दीन ख्वाजा
सब जगके तुम राजा ।
ओ शरन तेरी लागी रहतहै दुखदारिद्र सबभाजा ॥

४

करमकी नजर कीजै ख्वाजा मौनदीन चिस्ती
दीन दुनीकी पुस्ती ।
इतनी विनती सुन लीजे सदा रङ्गको दीजे
दया धर्म लाज शरम सुख सम्पत सकल सृष्टन
करे शीश धिस्ती ॥

५

आज रङ्ग है योगी रङ्गहै सो तुम रङ्ग भीने साध ।
अङ्ग अङ्ग वहुभेष तिहारो अलख जगाए नाद ॥

भैरव—तिताला

मोयां राझाओ मैं तेंडे मदके कीती घोल घती ।
सदा रङ्ग झुक मुखड़ावे खेलाजा जानी तेंवा
जु मैनु और सुझदा
मिलणा करणा असोंझललीता मनदा जोवनदालांझा ॥

२

मैं ड़ा वेगुमानी यार मैं तेरी सो दिलवर गुमनी यार ।
अङ्गुरीयां दे पौर पौर छलड़ेवाँहो
लालमुण्डे पोशल मामले वायाद्या
सोणानु गुजरि सारी रात नीकाजेन्हा ॥

भैरव—चौताल

१

वेखन कारण यारनु दिल वगाकी
इयां नदी दूंगे विच तुलहाल पुराना ।
सदा रङ्ग इस्क सच्चा सारातां पेरनाम
नभी गसो पारलङ्के राझणगरलगां ॥

२

जागो क्योंन प्यारे तुम सन मनवा लाग रहिलवा ।
भोर भए चिरिया सुहचानी बोले कगवा कारे
तुम जागे मोरे पियारे अब तो भोर भइलवा ॥

भैरव—तिताला

भए भिनसारु भइलु जागिल पिया मोराए ।
पोहो पखेर बाजीरे गजरवा
जगत तरैया छुपाने लागी ॥

२

अब तुम जागो क्योंन मोरे मोत
पियरवा हमारी प्रोत तुम सन लागी ।
नींदके मातें साहआलम सुरजनुमा भव
नुमा सगरी रैन रङ्ग रस पागी ॥

भैरव—चौताल

भए रवि प्रकाश कौन कौनके भवन बसे आए मोरे प्रात ।
डगमगात अरसात जँभात हो वलमा
काहे को छिपात हो गात ॥

२

तूहो मेरे दाता मैं तेरे कने जाचूं ।
याचनके याचन कौन जाचों तेरे रङ्ग रूपमे राचूं ॥

३

दरवार धाऊं पाऊं दूध पूत और अनधन
बहु विधि रचके गाऊं ।
मौनदीन प्रवीण जगतारण कारण
सुकता चरण चित लाउं ॥
आजज जान मान रख लीजे विने सुनाउं ॥

भैरव—तिताला

अल्लाह करीम रहीम रब रहमान करम
चाहत हों तेरो ।
दुख जञ्जाल तेरे सरन ते दूर होय सब मेरो ॥

तिन स्वर का ख्याल—सारंग

भैरव

लागि रह्यो नेहरा तुमि सन ए मोरे सइयाँ ।
जौलों घट में प्राण तौलों नहिं छाड़िहौं पइयाँ ॥

२

भोरही मेरे आए सो बलमा सो काहे
वहीको जावो जहां रैन रहे सारी ।
जिन करो मोसन रङ्गरस की बतियाँ
भूलहु जहाँ तहाँ तिहारो प्यारी ॥

३

सौत तुमसन वो सोती लगाय छतियाँ
मोको करेजवा धरक गई सर लई विदेस जाय ।
वाकी चिन्ता चितमें जो तुमि करो
मितवा हो बलम मोरा जी जब जाय ॥

४

बेलरियां सब झुकरही है हरे हरे
बागमें लोने लोने पतवा ।
एकी चम्पा गुलाब फूली और फूली चमेलरियां ॥

भैरव—विष्णुताल

एमा भोर भई मोरी अँखियन में
मोरे पिया की छवि नित नई ।
साह आज मेरे बदल गए जो कहें सो सब सहिए ॥

२

बीरा बटोहिया मोरे पिया सन इतना
संदेसवा कहियो मोरा जाय ।
बढियां हेरत नैना मोरे अधीन भइलवा
तुमतो डारी बिसराय ॥

३

तदारेदानौतानुँ दीमतनाउदततननतनरिनादानी ।
नादद्रुतुं द्रुतिलिलानानातदानी ॥

४

जगत में तनदुरस्त रखियो यही जिस्तका मजा है ।
अपनी ओरसों अरज करतहूं आगे तिहारी रजा है ॥

भैरव—सुरफाकताल (ध्रुवपद)

पञ्च सप्त साधे गुणी जो न चतुरदिश आदरीया ।
द्वादश मन धन द्वादश नक्षत्र उनके ब्यौरे कौन तरिया ॥

भैरव—तिताला

मोहिं जान देरे घर कैसे जाऊं निरखतहैं
सब नगर को लोगवा ।
सब रैन अधिक सुख लीनो मोसों थोरी रहोरी निश
काँपत जीय सबन के डर ॥

भैरव—धीमा तिताला

तोरी नगरिया चल बासिहोंमैं सुन सुन
मोरे नाहा बाबुल के देश ना रहिहौं ।
एगुसैयाँ अबकी बेर तुम्हरे कारण
सास ननदको सब कुछ सहिहौं ॥
कान्हकी को गत जाने सो मोरी बात नहीं बूझिए ।
वाकी मुरली बजतही सुधबुध बिसरि जात प्राणतं ॥

२

आईरी हों बावरी प्यारेको छवि निरख
सुन्दर चतुर नाचत ।
रोम रोम विरम भयो अतीत सङ्गत सुध
सोच समाचत ॥

भैरव—तिताला

बहुत दिन पाछे पाए दरसन प्यारे को आज ।
निशङ्क हो गरे लगाय लीनी खड़ेही
तजिभटू दीनी लोगन को लाज ॥

२

कल अब कैसे परे ए पिया कलते नहि आए मेरे ।
हों समझाय हारी आली पै यह निलज्ज
जीया फिरत न फेरे ॥

३

पत्तणा वाली यावे वारी बेड़ी हाल देवन्हे लाँबी ।
विण मज्जुरी वारी नाकरझेड़ावे मीयां
सिख दीजु पार लङ्गामी वेहाल
वेवेड़ी हाल देवन्हे लाम्बी ॥

४

डागों देना लवे छेडवे महिदे नाल डाँगा ।
कुजहोर नीमेहि कुजहोर नीम हर मनाड़ी सिरदा ॥

५

अलसिड़ा वेरा जावारी वेरुड़ो माणे ।
रातदिन नींदी माती खुमारीसी हो रही
भर भर प्याला म्हांणे पावेहो गड़ोमाणे ॥

६

मेघुमाड़याणीहभारे दावेलीयां ।
दामण तेड़ा माचुंगल मांड़ा रोजके आतताड़या ॥

७

मेरा अल्लाभी जाने मोल्ला भीजाने सांइयां
अङ्गुलिया दे पोर पोर कलड़े चूड़ोतें भरीहै कलाइयां ॥

८

चतुर सुघर सुन्दर प्यारे बिनदेखे
कल न परे घरी घरी पल पल छिन छिन
मैंकूं चाटक तुमरी लाग रही ॥

९

ज्ञान ध्यान साहब सुजान तेरो वेग मिलो
मोर मनके भवनवा अवध बदी मोसे जाम ॥

भैरव—तिताला

जागोरे मनमोहन लाल तुमसो बतियां भलीवनी ।
तेरे दरस विन तरसे जीयरा श्रीव्रजपत
गोकुलके धनी ॥

२

ओ प्यारा मैतेड़ो गल्लड़ियां सुनजियां ।
घोल घुमाई सदकेमे जावा वार वार पाणी मे पीवां ।
तनरी ईना तान रीउ आदाम ॥

३

मेरे तो तुही तूही है दाता विधाता रब
रहमान रहीम ।
तोपै इतनो मागत हूं मो मनकी
इच्छा सब पूजिये लाज साज रख लीजिए
करम कीजिए करीम ॥

४

हमनू की परवाह मेरे मस्थ कलंदर पिरछे ।
पानीपत करणाल तेरो तखत चबूतरा मन्दिरछे ॥

५

दरबार दुख दूर करो तन अन्दर ते यादरवा ।
या अली या नबी इतनी अरज सुन लीज्यो
यो जाय कही ज्यो बोलि कलन्दर सो ॥

६

सुकर कीता अल्ला दरगाह तूँ
साड़ा साहब मैड़ा सुमरत उत्तम नाम
जीव दीता शूकर किता ॥
धन धन परवर दिगार वो जिन अपने
बन्देको मानस जनमे दीता मौला अलीजी
करमदी नजर बेखो मेरे रब सांई ।
आसफदौला तू आसरा तेरा औगुन दील जनो भाई ॥

७

या नबी तुम किरपा कीजे में गरीब तुम्हारा ।
बहियां पकर पार उतारो मेरा करो निस्तारा ॥

८

शब हस्त साकी या कद है पुरसर वाकुनू ।
दौरे पल वदिरङ्ग नदारद सिताब कुन ॥
जाँ पेशतर के फेआलमे फानी शवद
खराब भांरा जेजाम् वादए गुल गुबरा वकुन् ॥

९

प्याला ल्यावो ल्यावो यही लव लाई ।
मदके मतवारे सदा रङ्ग तेरे बलजाई ।
प्रेमका मधवा पीला वो सइयाँ सुखदाई ॥

भैरव—तिताला

माईरी जबते भनक सुनी पियाके आवनकी ।
तबते माई पलकन ते मग झारूंगी रिझावनकी ॥

भैरव—धीमा तिताला

प्रभु दाता सबनके रटरे घरी पल छिन ।
जो तू चाहे दूध पूत अनधन लछमी इमान
वाको नाम ले वाकी रबको नाम ले रङ्गराता ॥

भैरव—तिताला

औसर लाग रहीरी पिया आवन कही बलमा
पिया आवे के बुलाव मोरा पिय सुखदाई ।
सगरी रयन मोहि जागत भईहै
भोर भए तुम आए मैं योंही भली वो
तिहारि मनभाई ॥

२

आई डार भवर नदी में हीरासोना ।
फूल रही फुलवारी सदा रंगीली कलीयां
रस लेहो चाहीरा ॥

भैरव—इकताला

तोरे रंगीले रस भरे देखत कहाँ जागी सारी रैना ।
सब गुनीयनमें तू चतुर चतुराई करत हो
मोसों अब काहे वहकानोरी बैनना ॥

२

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे ।
जो घरी सुख सन बीते सोई क्योंन कीजिए
अच्छे अरगजा ले प्यारे तू मोहे क्योंन भरे ॥

३

मैं तो कबहूं न छोडूं तुम्हरे पाँय ।
जबते तुम गमन कीनो सुरत न लीनी मोरी
बिरम रहेहो जाय ॥

४

प्यारे मोरे आ मंदिरवा झपसानु ।
जिंदलगी रहदो निश दिन मेंड़ी सदा रङ्गतानु ॥

५

जबते नन्दनन्दन दृष्ट पड़े आलीरी
सुधरे सघटा भ्रमत तीनरेखा ।
नटवर प्रभु वेश धरे जगरूप विशेखा ॥

६

कही न जात वाकी मोंसो तोसों निकाई
कहा कहों बलजाई ।
मुख निरखत थकत हूं तिहारी बात मोपै
कछू ग कहि आई ॥
बीर बटोहिया मोरे पिया सनवा
इतना संदेसवा कहियो मोरा जाई ॥
बतियां रतियां मोरा मन वस कर लीनी
अवहीं डारी विसराई ॥

७

भरदे मोहु छन्नड़े हम चाखें तू भर भरदे ।
डूंगर माते डूँगर डूँगर तपड़े मोहूं छनड़े
अचण मचण थी एमाड़े नित उदासी नैनड़े ॥

८

मैं ती थाने जाने न देख्यां जाने नदेख्यांराज ।
घोड़ लारो थारो वाग पकड़ेस्यां अजब रंग करेस्यां मैं ॥

९

सखे आंखो मेरे प्यारेनु रातकीथे
वेगुजारी यावेमिया घिन मँजुरीवारी ।
नाकर झिड़ा वेमीयां फंदडातके दीनी मैं हारी ॥

१०

ते उठ चलणी राझण तेनू जोर चांदानी ।
एक वदीमे ठाड़ी वारी बुझत नाहीं एहो
सदा रङ्ग नाल तेनु परे खानी आव दानी ॥

११

मेरे मियां सारी रयन अनत जागी
लोग जरवा बाजत आए ।
चन्द उदोत गवन न कीन्हे महम्मदसाह आए ॥

१२

आए अलसाने राते माते पियरवा
प्यारे कौन कौन सो श्रुतमानी ।
कौन कौनके रङ्ग राते जुलम करो मद्द सन
बलमा जे तुम लुकावत नेह हम जानी ॥

१३

बसूरते इलाही किस तरफकी वस्तियां ।
जिनके बिगर देखे आखें तरस्तियां ॥
क्या लाएथे अदम से क्या लेचले जहांसे
यह मौत जिस दोनो आपसमे हस्तियां ।

१४

दीम् दारा दिरदिर तिल लनारउदन
तुम तन तुं तुं तना तुम तना तदरेतना
दिर दिर नादेर देर तननननद्रद्रद्रद्रदानी ।
तुम तना नित तुम तनारेदीम्दीम्
द्रत तिला नाद्रत तदीमतननननननद्रद्रद्रद्रदानी ॥
तननन तिगधाति गगनागिड़गिड़
धागि धिन धुन किट किट कि ॥
तिड़ि किड़ तक् तागिदि गनेधे तिड़ किगिड़
धिर तक तगन धा गेति ड़िकिड़ तक तान धाधा ड़धा ॥

१५

मोरी आली जबतें भनक परी पियके आवनकी
पलकनतें मग झारूंगो ।
आनमिले सुरजन मैंसो तन मन धन सब वारूंगी ॥

१६

गरीबानुपालदावो यार रव गरीव निवाज
तेड़रे मद्दरदि मे किगल आंखां मद्दर
मसाड़ड़े हाल दावो यार ॥

१७

सोआवे मेरी गलीयां चुन चुन कलीयां ।
मानूंगी रलीयां दीन दयाल कृपा करे मोपै
यद्दी बात भलियां ॥

भैरव—जलद

पिय तुम् वहाँद्दी जावो जहाँ सारी रैन जागे ।
रातके उनींदे जागे आंख खुमारोहैजु
तुम भलेजु वाद्दीके रस पागे ॥

भैरव—इकताला

तननाद्रद्रतुंद्दृद्दनातनदिरनातदानी ।
तनउदतननननाद्रद्रदीनतननननननानतनुमतनुम ।
तदीनयरेतदीयनारेतुमतननननातननननननदीम्
तददमोतदततदानी ॥

भैरव—होरी

मछरीया मेंहदी लागी मेरे लाल हाथनको
हांरे कैसी बनीरे लोगवा ।
सदा रङ्ग मिलिया रङ्ग घुलिया माई
इछरीया पूजों मेरे मनकी ॥

भैरव—तिताला

जिद माड़ी यारांदेनाल लगोवे ।
अदारङ्ग्न जदमे पावा गरे लगावो
बिन दिठियां मैं ठगी ॥

२

सची आंखि मेरे प्यारेनु रातकीथे वेगारियां
आप छड़ जांदे वारी नालमहो यांदे पेड़डा
तकदीमे हारियां ।
दाद सुणी रब सांई यारव मांड़ी
इस नगरी बीच वे जालम वसदे
मद्दर कीसी विच नाहीं यारवा ॥

भैरव—चौताल

कीतावे करिजा शारदा यारदा गम खाखा ।
कि पुछदेवारी आजज दील वेकरारदा
होतो जारी यादे नाल गुजरदा ॥

भैरव—तिताला

मेरे वसन्तकी सुवारकदी ज्यों प्यारे
मद्दबूब निजामदीन औलिया ।
वेला फूले दरवाजे सदा रङ्ग रसिया अभ्यवा मोरोला ॥

भैरव—धीमा तिताला

असकर मधुवा भरभर प्याला मोको पिवावे ।
तोरा वलमुवा अवतो मोको भईरी खुमार ।
आप छकोला और चमकोली कोरी सुरैया
सिरवा भर भर ल्यावे ॥

भैरव—तिताला

श्यामसुन्दरको ध्यान रहत निश बासर एरटना ।
यह बिचार कर देख जगतमे हर बिनको अपना ॥

२

को तेरोइ तेरो सगरो सुमरण करले मन राम ।
इन सुरन कामा आठ पहर चौसट घरी ध्याइऐं नाम ॥

३

तोरी नगरीयामे न रङ्ग गो तूंतो अनत करत रसभोग ।
सदा रंग रस रंग करत हमको दोनों है जोग ॥

४

आजतो रैन जागी आए पियरवा घर मेरे ।
अङ्ग सङ्ग रङ्ग लागी प्रगट दुरावत गात छिन लखे
पल झपकत आए डेरे ॥

५

पलक दरियाव मेरा साँई ।
जो चाहे जुगराज कर वोइ कर सब कुदरत उसी ताई ॥

६

भइली हों बावरी बिन देखे नेंक न सुहाय ।
जबते गवन कीनो विदेशवा
भवन न भावत कुछ नही चाय ॥

७

भइरी बड़ी भोर प्यारे अब जिन बोलो
जानदे घरवा मोय ।
दीपक ज्योति भई पिय राई निरखो नैन उघार
श्याम तुम अब जिनटोके मेरी सोंहे तोय ॥
रस चोरी चोरो निभइतहै जानि बूझि हटना
करिए हरि गुरुजन मध ॥

८

ब्रजके सब लोगवा सास ननदीया कोहै ।
उघर जायगो रस चरचेंगे ज्ञानदास यहनहीं
कछु बातें प्रगट भए ते दिन दिन अधिक लजोहै ॥

भैरव—धीमा तिताला

अबइं न आई तुमरो सुन जर लीनो
क्या पिया जो होनी होय सोहोय ।
सदा रङ्ग सुन जर देखिए जोय ॥

२

लङ्गर ककरिया जिन मारो मोरे अङ्गवा लग जाय ।
सुन पावै मोरी सास ननदीया जिन
दौर दौर घर आय ॥

३

साहनसाह दीन दुनीके बिनु अब तालव
अलीयवली अल्ला ।
अपनी करमको जोम आजज पर या वसी या
रसूलिल्ला साहनसाह दीन दुनीके भला ॥

४

कमली वाले अनोवे मैंड़े कमलीवाले पर कुरवान ।
होंदी मैंड़ी जिदड़ोतु सीर वसाडड़ेबन्दे पै मेहरवान ॥

भैरव—जलद (ख्याल)

सीयरी बहे पुरवैया बिनहीं गरवालाय पियवा मोरे ।
करङ्ं मनुहार दोउ करसों करलेहों
बलेयां परहुं पइयां तोरे ॥

भैरव—ताल झूमरा

लाल मेरे आएरोहों अपने करसों वारो ।
तन मन धन सब उन कों दोनों और जीवन धन प्यारो ॥

भैरव—एकताला

होंसुर जनवा हमारी और प्यारे प्रीत कीनो नवेला ।
अति दुर्जन बिच छोड़ चलोहै मिलिए तोएक बेला ॥

२

बिजरीया चमके पियाके देश हमको दीजे बिदा ।
इनके मनतें मेरो मनहै या तन रैन मिल जाय हृदा ॥

भैरव—एकताला

आएजु आए भोर भलेही सब
निज जागे द्रग अनुरागे पागे रङ्गत वोर ।
भलेही आवो बैठो बिजन ढुराऊं चक्रत
भए नव कुसुम किशोर ।
आनन्दघन रस बसको छवि रहै वाह
औरतें भले आए जोर ॥

भैरव—जलद

प्यारा मेरा माईरी मोसों करत अनरस ।
है कोई हितसो उनही समुझावै
वे ज्योंज्यों मनावत त्यों त्यों होत सरस ॥
२
बार बार बरजी मैतो यह कौन चतुराई ।
जामे साहको प्रकृतहो मिल चलिए
अब याहीमें बड़ाई ॥

भैरव—ताल धमार बहार

मगमध मेरे मगरे धनोसामरेसानो ।
पगमें धरे धरे पगधमधामरे सास रेसानो ।
सारे गाममें सगरे मगमें धाम धामपे पधनो ।
साध साध पग धरे सदापै मोरो एक नमानो ॥

भैरव—एकताला

भवानी विद्या दीजे मोकों ।
सुर सङ्ग तैसे गाऊं बजाऊं यातें पूजूं मैं तोकों ॥

भैरव—ताल धमार

पगमधरिसानोपरेमपगधरेरे ।
रीससमाध होरोगानोसाधसाधसानीधपमगरे ॥
२
नैना तेरे रङ्गीलेरे रस भरे देखत कहां जागे सारीरैन ।
सब त्रिनयनमें चतुर चतुरायो करत
अब ऐसेहि पहिचानें ॥

भैरव—एकताला

आली मोहि लागरो औसरवा प्यारेको
सगरी रतियां जाग जाग कीनों भोर ।
है कोउ करतार सांवरो प्यारा मिलावे
उमगसो वे ज्यों भए चितचोर ॥

भैरव—तिताला

सोवत नगरमें बोल्यो कोहै बगरमें ।
एक डरहै मोहि सास ननदके अलियां
गलियां डगरमें ॥
प्रात समै उठे नन्दनन्दन बिरहा भीजत झरमें ।
आनन्दघन व्रज उठेही सबेरे सास ननदके डरमें ॥
२
तुम गुण गाओ मुरलीधर कैसो
शिव-विरञ्च-सनकादि भेद न पायो ।
ज्ञान ध्यान जप तप अठारा पुराणने नेत नेत गायो ॥
लिखत भवानी दिनरात जाके गुणको पारन पायो ।
चञ्चल सस प्रभु दृग रसाल मूरतजो हिरदे
बसे तुम गुण गायो ॥
३
भोर भइलवा तरसत रस दरशन पाइला लाल तिहारे ।
नेह लगिल प्रीतरसकी बतियां करत मोसे
मीठी मीठी प्यारे ॥

भैरव—एकताला

मैंतो कबहुँ न छाड़े तुमरे पाय ।
जबतें तुम गवन कीनो सुरत न लीनो
मोरी बिरम रहिले जाय ।

होरी ताल

बालमुवा मोरे तुम बिन अकेली रह न सकत ।
सुनो घर डर लगत सदा रङ्ग रत ॥

भैरव—जलद तिताला

भोर हुवन लागे बल जाऊं प्यारे नींदके माते दुलरवा ।
उठ क्योंन बेग बलालु दीजे दरस अखियां
निहाल सुख सुन सोर ॥
२
यलो वलो यलो अवि अपने अवितालव ।
दीन दुनीमे रोशनी तिहारी छविदेत वफपर गालव ॥

भैरव—तिताला

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे ।
सगरी निशा सुख सन बीत गई क्योंन कीजिए
अछे रङ्गीले प्यारी क्योंनहीं प्यारी तुम मोहे
क्योंन बाँह भरे ॥

२

पग्रारे मोरे अब न जगावो ।
सगरी रैन मोहि तलफत बीतीसियरी सेज जिन लावो ॥

३

धाय धाय दोरम दोरम बाजे मन्दिलरा ।
धाकिट तकधुम् किटतक्ध धोगनध धोगनधा
धाधा अच्छे बिधन सों परत मान ॥

भैरव—ताल झुवहर

पञ्चमको सुरताको बिस्तारकरे तब गुनी जाने ।
मधसानीसागधानीसागाने ॥

भैरव—इकताला

दीम तदीम तननन उदानी दानी तदानी ।
तिलिलानातुंद्रद्रदानी अबतो तेरे दावमें आके फसे
बतादे याद क्या कीजिए दीम् ॥

भैरव—धीमा तिताला

तादिरना तनुम दिरना धितिलाना द्रदानी तादिरना ।
हुस्ने शजे वसे सजे मारा करदा मीर
दामीरदा हमरङ्ग जामीवुत् गिरिफ्तार सोदीम् ॥

भैरव—एकताला

मो मन तेरे दुख दूर कीजे हजरत फरीद शङ्करगञ्ज ।
यह सेवक बिनती करतहै अपनी दयाकर
पार लगावो खेवा जाय रञ्ज ॥

२

मौला अली मुशकिल करो आसान ।
तिहारी मदतको अल्ला रसूल हजरत हुसेन
इमाममौला ॥

भैरव—तिताला

तिलाना मायनेके आरे मन्दर दोस्त तूँमोरे तँदानी ।
तूँ दर दर फिरे मत तन अन्दर दरद मानतूँ मेरेआ
दरद जान मन मानी ॥

२

ननन ननन तान लेत मनन मनन गान करत
तेरे तो तनमें दरद क्षीन् है दोस्त ।
तादिन तुमने तन मन रङ्ग रङ्गे तुम न माने
मनहीं मन ध्यान तुंतमतु मनतुं धनतुं तोस्त ॥

३

तान दिरत देना यली यला यलाले उदानी ।
तुम तान्दिरत देना देना देना
तान देरना धितिलेतानातेतुं तदारे दानी
तनन दिरनुतानदेर तदेदानी ॥
आहे दीम दीम धितिलितिलानी
तनदिरनादिरनारेतादानी ।
यललीयलाम ४ यला २ यलललललललले
दरद हराकेआमदीखोदवलकोपसाद ॥

४

जद बादशाहे सुफत लाए कुकीस्तो
दरस्यादकेकुनम् शोरद रवाहो
अजब कारतुं सुश्किल माजराए ॥

५

द्रद्रदीम द्रद्रदीम हैयाहै जा नंमकन बेबफाइ नितरङ्गसो ।
या इलाहो दीन मौला हमोसन यापीरो या
निवाजेना द्रद्रतुंद्रद्रतानरे द्रद्रद्रदानी ॥

भैरव—जलद तिताला

प्रीत मनको तुस सन मोरो हरनारायण ।
अनेकनाम हरहर तुमरी तो रस बतियां
कौन सो कहो मन ॥

२

माइरी मोरो सुन सेज डर लागत पिय बिन मोको
अंखियन नोद न आवे ।

कौन सौत बिरमाए सजनो अजहूं न आए
मह्रबान पीअब मोहब्बत में उनके पड़ना होले गई ।

३

आनन्द भइल मोरे मनचित आए मोरे पासु ।
पग परसन नोछावर करहूं सदा
रंगीले बलमा मोरे पूजो मोरे मन की सबहीआसु ॥

भैरव—एकताला

नयना तेरे सबही निज रहस लिए
कायमजंग लालनके सङ्ग जागे ।
उनींदे अरसाने कजरारे मद छके
और अति कामरस पागे ॥

२

मो पे सुदृष्टि कीजे मनमोहन माधो ।
तुमहो सकल देवनके ईश मेरी इच्छा कामना साधो ॥

भैरव—जलद तिताला

कोलो दिन बीराउ माई उन बिनक्यों समझत नाहीं ।
एहि रात दिन ध्यान करत है मोहिको
कठिन मन तनक समझत नाहीं ॥

२

प्यारे मोसों भोरीसी बतियां
करन लागे रसिक रसीले सुरजनवा सोवतीयां ।
आजज तुम बिन कल न परत है
कैसे कटे दिन रतीयां ॥

३

जानदे छोड़दे मोरारि अचरवा ढीठ लङ्गरवा ।
अब निरखे मोरी सास ननदीया करेचवाव
कवहूं बहीयां मरोर लेत कवहुं गरवा
लगाय चरचा करे सब घरके लोगवा ॥

४

अब मैसों कहतहूँ प्यारि नेकन मोरी मान ।
बाहर और कतन जातहो बलमा सदा रङ्गीले
अत रस पागो जान ॥

भैरव—जलद तिताला

लङ्गरवा ढीठ हो मोसों कहतहै अनोखी बात ।
छांड़ और मग मेरोहो आवत और सखा ले साथ ॥

२

प्यारी सुनले मोरी बात अबतो सों
रङ्गरस करिहों साथ ।
घरी एक कुञ्जमहल पगधारों हाहा छिन अपराध ॥

३

पियरवा घर मोरे अङ्ग मङ्ग रङ्ग लागे
आज तो जागे आए ।
प्रगट दुरावत जात चिह्न लखे पल झपकत आए ।
ज्ञानदास अब एसेकोन्हो जोतोए ठग पाए ॥

भैरव—ताल सवारी

बनवारी आलीरीभोरहो बन जातरह्यो
गउअन सङ्ग औचक भेंट भई रोमंग ।
रूप सरूप सुभग नटनागर आगर सब गुणसागर
नखशिख रूप सुभग अङ्ग ॥

२

रैन जागी बनी सुघर बनाके सङ्ग ।
रसभरे देखोरी शुभदिन केसरीया
बागे नीके लागे ललित काङ्कन सोहै हाथ उमङ्ग ॥

भैरव—एकताला

दीमतदीमतननननउदानीदानीतदानी
हितीलानातदरेदानी ।
जहा कोईदादनहो देवेतहांकी यादक्या
कीजे अनिफ आनफ्से सहीहै ॥

भैरव—तिताला

आनन्द भइलि मोरे मन चितमें जुपो
आए मोरे पास ।
पग परसन नोछावर करहूं सदारङ्गीले
बालमुवा मोरे पूजो मनकी सबही आस ॥

२

भईरी बड़ी भोर प्यारे अब जिन बोलो
जानदे घरवा मोंहे।
दीपक जोत भई पियराई निरखो नैन उघार
श्याम तुम अब जिन रोको मोंहे तेरी सोंहै॥
रस चोरी चोरी करत हों मोहन गुरुजन
और सब ब्रजके लोगवा सास ननदीया जोहै।
उघर जायगी रस चरचेंगे ज्ञानदास यह नहीं
कछु बातें प्रगट भएते दिन दिन अधिक लजोहै॥

३

ऐसो मोरो बतियन पर मन
उरझिए नरहे एरी बस कहो कैसी करूँ।
कहा कहों अँखियनको रीत बसभई श्याम
छबि निरखि सङ्ग नहीं छबि फिरत न होंफरूँ॥
नैन मूँद रही सनमुख धनी मानत नाहीं काहूकी हेरी॥
दास हरि मन बचन काये कहूं पिय प्यासे
चितवन हो दरसन भई प्रीतम मैं चेरी॥

४

पिय बिन रहो न जाय सजनी घरी घरी
पल छिन निशदिन रट लागि रहे।
औरनके बस भए बलमुवा मोहिसन कबहूं नहिं पूँछत
बतियां रतियां रहत उन कैसी करूं सहेली दहे॥

५

बहोत दिना तुम छिप छिप बैठे अब तो हमने पाएहो।
मोमकी चादर मुंह पर लेकर अहमद बन बनआएहो॥
अहद शमद मलकुतम होके सब कुछ तुम्ही कहाएहो।
कहा कहों मैं कमाल तुमारा यहां
महम्मद नाम धराएहो॥

४

रीमें धाऊं पाऊं हजरत ख्वाजदीन शकरगञ्ज
सुलतान मसायक महबूब इलाही।
निजामदीन औलिया अमीर खुसरो केवल बलजाही॥

भैरव—धीमा तिताला

दानी धिति लोतोलाना तिलिलाना तार तदानी
उदनतुं तनि तनि तनि तनि तत दरदानी।
द्रद्रतुं द्रद्रतुं द्रद्रतुं तननननन उदनतुं तननन
तनं तनं तननारे नारे नारे नारे तुं तदरदानी॥

भैरव—जलद तिताला

छैलवा गागर मोरी उतारो क्योंन प्यारेरे॥
गगरी उतारत पानी नाहीं छलके मैं बलजाऊं तिहारेरे॥

२

हजरत महबूब इलाही निजाम दीन औलिया
जरजरी जरबक्स।
तहालौं बड़ाई करहों तिहारी पीर मेरे सरसरी
सरको सकस्॥

भैरव—तिताला

एरी मैंतो रही हौं बदन निहार वापर गई बलिहार।
जहां देखतहों प्यारो भरपूर रहो
वाकी सूरत सूरतको कोऊं न पावै पारावार॥

२

आज भोरही आए पिय मेरे घर कौन तिया बिरमाए॥
सब निश बीती गिनत तारे कौन तीया बिरमाए प्यारे॥

३

हो पिया अनत रैन जाग आए।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे जावक भाल लगाए॥

४

लाल तुम आए भोर भइलवा बहता रस आवै
दरसन पायारे।
नेह लगीला प्रीत लगरही रसकी बतियां करत
मोंसे मीठी मीठी पयारे॥

५

भइलारी भोर गजरवा बाजन लागी
आवो बलमा हिल मिल गरवा लागों तोर।
पार परोसन लोगवा जागे सास ननदीया करे सोर॥

६

माईरी मोरो सूनोसेज डर लागत पिय
बिन मोकों अंखियन नींद न आए।
कौन सौत बिरमाए सजनी अजहूं न आए घर
महरवान पिय बेमहोब्बत मैं उन दिन लाए॥

भैरव—आड़ा चौताल

प्यारीरी मुख खोल देख बोल रैनतो योंहीं बिहानी
अरे बाला कहा जो कहूं तोरे मुखकी बानी।
तूजो बात कहत तोतरानी भोर भए आए
लाल जब चिरियां चुहचुहानी॥

२

अबतो जाने दे मोहे थोरी रैन रही पीउ।
फीको भयो तंबोल बोलन लागे मोरहोवन लागी भोर
सास ननदके डरतें काँपत है मेरो जीउ॥

३

महादेव शिवशङ्कर पिनाकपानि।
आड़म्बर बाघम्बर जटाजूट गङ्गासङ्ग अर्द्धाङ्ग भवानी॥

भैरव—होरी

आएहो भोरही लला मेरे रैन के जागे
नींदके माते कहूं होरी मनाव मनाय।
उर उलटी माल नैन लागो पीक लाल अधरनपै
काजरको टीको कहे देत यह लक्षण अब
कहा होत बात बनाय॥
तुमहो रसिया ठौर ठौरके रस लेवेको
चसको कैसे जीयतें जाय।
याहि सोचमें जोय जातहै मेरो हाहा
तेरे हों कामकी नाहीं
रसखेल उनही सङ्ग खेलिए जासों नयो हित लाय॥

२

आएहो मेरे जामनी जागे और
तियाके बैन करत अनोखे।
रसकरो जाय अपनी प्यारी सों कामजङ्ग बनआए अबचोखे॥
काम नेह रङ्ग उन सङ्ग उपज्यो जोहै
हितू तिहारे लेखे।
मुकर तकों बलजाउ वे कहे देतहै
अनुराग जागे नैन देखे॥

३

मुरली बजावे पुन गावे नैन प्यारे ही नचावे यहि बिधि
तियनके मनही रिझावे।
दौर दौर काह पनघट हीपै आवे घटही दुरावे
रसनामें प्रेम जनावे॥

भैरव—धमार

दिर दिर दिरना तनदिरतदीयनरे दानी तनदिर नादानी
बहार आमद मरा जंजीरद गुलसन ने दवा गंवाद्र
न साल ततबी वतोरे मन कुनद॥

भैरव—वसन्त तिताला

कोयल बोले माई मोरे ढिग लालकी बास पाई।
अम्बुवा मोराने टेसुवा फुलाने
मधमाती वसन्त ऋतु आई॥

भैरव—तिताला

कैसे जाउं भईलो भोर निरखत हैं सब बगर की
लुगाई फरोदस्त मोहिं जानों घर॥
सब रैन अधिक सुख लीनों मोसों तिहारो
रहिलो निश कांपत है सबनके डर॥

२

मोसों नेहरा लागिला रखो मइसन पियरवा
अब जिन तोड़ो।
होंतो बनो रहों चेरो तेरो कैसे जीवन होवे मोकों
तुम जो छोड़ो॥

३

करत रहत हो प्यारे तुम झूंठे बैन।
सदा रङ्गीले सुख सम्पत चैन॥

भैरव—झपताल

साग मध पमगरे सागरे सानीधपम धनी सारेगरेसा ।
रेगरे साध पधनी धध पमगम पधनी सारे गरेसारेनीगम
गरेगरे गसानी धपमग मपधनी धपमगरेरे गमगरेसा ॥

भैरव—सवारी

अनी उठो सुतियां यांणी वो रांझण देमना वणनु
चल्ले जोदाड़ी घुमाय घुमाय गलपाय पाय पल्लेखाक
पेरीले सिरानु मल्लि समझाय रिझाय भिल्लि ॥

२

अनत जाय बिलम रहिला पीउ ना जानूं
कौन तियाके सङ्ग ।
हमसों अवध बदि औरनसों रङ्ग रस करत फिरत
सखियन से नएनए ढङ्ग ॥

३

दोमतना तनदिरना तनदिर दिरना तनदिरना तादानी
यारे मनय लाललेदी० ।
न दिन कों चैन न रातको खाव आंखां में जबसे वो
खान अवाद आंखां में दी० ॥

४

तोरी वारी फूल रही हांरे कलियां
महक रहीली सुगन्ध ।
फूल रहीहैं नई नवेलरियांरी सब बरन बरनके अङ्ग ॥

५

द्रुमद्रुम बाजुरे बाजु बाजुरे मन्दिलरा
साजन के घर काज ।
सब सखियन मिल देहो सुवारकी
नवल बना पाया राज ॥

६

एरी माई हों पहरूंगी चोलरा हरियाला
चोलरा चोलासो ।
पच रङ्ग पाग में पियाकों बन्धाउं सब सोतन घर सालरा

भैरव—ताल खमसा

करत रहत हो प्यारे मोसों तुम नित हित चितके
झूठे झूठे बैन ।
औरनही ते जीयकी बात नित उठ गिरह जात
दुराय२ करत हो नैन सैन ॥

भैरव—सवारी

राधे तेरेरी आंगन अमृत फलियो डालरीयां ।
असुंअन सींच सींच बोऊंगी अंवुवा वोतो
सोह बैठि छावरीयां ॥

२

पिउ भोरही आए अति मोमन भाए लागत रङ्ग सवाए
जावक तिलक लगाए अधरन अञ्जन लाए
बोलत मधुर सुहाए ॥

३

प्यारे मोरे जिन तोड़ो मोसों नेहरा ।
तुम बिन मोंहे कल न परत है भावत नाहीं गेहरा ॥

४

करत रहो पयारे नित रार ।
अवध बदि निशाके सिधारे आएहो भिनसार ॥

भैरव—धीमा तिताला

साजन लागो गरे दुख दूर करो परे ।
जों घरी सुख सन बीते सोई क्योंन करे अतर सुगन्ध धरे ॥

भैरव—तिताला

बनेके लागारी लागारी टोना ।
जब मेरा नशा बना आवै अकेला पटिया
गुंथावै सुगन्ध सना ॥

भैरव—सवारी

हजरत निजामदीन चिस्ती जर जरी जर बक्स पीर ।
जोड़ जोड़ ध्यावै तेंड़ तेंड़ फल पावै
मेरे मनकी मुराद भर दीजे अमीर ॥

२

अनत जाय बिलम रहिला पिउ न जानो
कौन बियाके सङ्ग ।

हमसों अवध बदि कहि औरन सों रसरङ्ग
करत सखियन सों नएनए ढङ्ग ॥

२

तोरी वारी फूल रही कलियां महक रहीलो सुगन्ध ।
फूल रही हैं नई नवेलरीयां अब बरन बरनके रङ्ग ॥

भैरव—तिताला

भए भोर प्यारे चिरियां बोलन लागी
गावत गुनो भैरव राग ।
बन्दीजन बिरदत और गुरुजन पुरजन जागे
बाजत मृदङ्ग धुम किट तक् धिलांग ॥

२

भोर भइल आवत सरमानें दरस आपतें लालन आए ।
नेह लागिला प्रीतम मेरे बतियां करत मोंसों
मीठी चाहे ॥

३

मन बैरागी मेरा करतार मन बैरागी ।
निश दिन सुमरन ध्यान हरिका चरणन में अनुरागी ॥

४

जोगीया रावला भोरही आए मेरे ।
भिक्षादें देलै दाबी नाहीं चितावन करत चितेरे ॥

५

या भली या नवी सुशकिल करो आसान देहो
मुराद मनकी ।
तुम बिन मीत नहीं और न आसरा ऐसे समय मेरी
बाँह गहो सुध न रही तनकी ॥

६

सगरी रयन के जागे पागे सुघर सुरजनुवा तू बलमा
भोरही भोर मेरेही आए ।
हसन और बसन कर लीनो चिरियाँ बोलत
तन मन धन नोछावर कराए ॥

७

मेरी जिय गौर करले दाता रब सांई ।
दे दिलादे हुकम करदे अन धन ए राम गुसांई ॥

८

राति माती अपनें पियाके सङ्ग एमा कोउ होवै
हमरा दुरजनसो तन डरै ।
अनन्द भोगवा करहु मोरि मन रहस रहस कर
अपने पीतमसों काहूसों मोरा जो न डरै ॥

९

जाइए सुलतान के वारने ।
दिलवर दिलारो आकवत खैर चाहे इमान जके बारने ॥

१०

दोउ अनुराग भरे आए रङ्ग भवन भाग
मघवासेभो लखि लागत सहल है ।
बैठे एक आसनपै एक सङ्ग एक रङ्ग
उठ्यो न परत अङ्ग कोमल कहल है ॥
एकन ले अतर लगायो देव दोउनपै छिरकके
गुलाब कियो बीजलो बहल है ।
ले बीन परवीन परवीनो सखि अलाप
समझे सुरपुञ्जनतें गुञ्जत महल है ॥

११

श्रीकृष्ण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में ।
जाके पद पङ्कजकी रेणुकी बलिमें ॥
सोई सुकृत सोई पुनीत सोई कुलवंता ।
जाकूं निश दिना रहे कृष्णनाम चिन्ता ॥
योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं ।
बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥
सब सुखनको सार कृष्ण कबहूं न बिसरिए ।
कृष्ण नाम लैलै भवसागरकों तरिए ॥
श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु परम मङ्गलकारी ।
उद्धरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥

भैरव—एकताला

कृष्ण नाम भावै मोहि कृष्ण नाम भावै ।
बलिहारी ताकी जो कृष्ण नाम गावै ॥
बसुधाको सार कृष्ण मेरे मनको आधार ।
कृष्ण श्रवण मङ्गल रूप कृष्ण सब बिचार ॥

मन्त्रन को मूल कृष्ण हरन सकल खल कृष्ण
ब्रज समुद्र कों धार कृष्ण शिवको आधार ॥
मेरे रसनाको भाग्य कृष्ण मनको सुहाग
कृष्ण सब तन्त्रनको तन्त्र कृष्ण सब मन्त्रन सुधार ।
यह रामराय कहत कृष्ण कोंही जपत भगवान
कृष्ण वारंवार ॥

२

हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण राम राम राम ।
नारायण नारायण बासुदेव बासुदेव गिरिवरधर
गिरिवरधर श्याम श्याम श्याम ॥
दीनबन्धु दीनबन्धु बैकुण्ठधाम ।
होत प्रात बड़ पुनीत लेत हरिको नाम ॥
दामोदर दामोदर चक्रपाणि चक्रपाणि ।
नरहर हरिनर हरहरि सुररिपु मुरारी,
मधुसूदन मधुसूदन साँवरे बनवारी,
यमुनाके नीरे तीरे वृन्दावन धाम ।
सूरश्याम रटत रहत राधावर नाम ।
भोर उठ सुमरन करो होय सबही काम ॥

३

बाँसरो बजाई आज रङ्गसों मुरारी ।
शिव समाधि भूलि गई मुनि मन तारी ॥
वेद भणत ब्रह्म भूले भूले ब्रह्मचारी ।
सुनतही आनन्द भयो लागीहै करारी ॥
रम्भा सब ताल चूकी भूली नित्यकारी ।
जमुना जल उलट बह्यो सुधि न सम्भारी ॥
श्रीवृन्दावन बंसी बाजी तीन लोक प्यारी ।
ग्वालबाल मगन भए ब्रजको सब नारी ॥
सुन्दरश्याम मोंहनी मूरति नटवर वपुधारी ।
सूर किशोर मदनमोहन चरणों बलिहारी ॥

भैरव—तिताला

दध के मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें ।
सीस मुकुट लटा छूटी और छूटी अलकें ॥
सुर नर मुनि हार ठाड़े दरस कारन किलकें ।
नाशिका के मोती सोहै बीच लाल ललकें ॥
कटि पिताम्बर मुरली कर श्रवण कुण्डल झलकें ।
सूरदास मदनमोहन दरस देहों मलकें ॥

२

भोर कोही मेरे भाग जागे सांवरे सजन आया ।
सोहनी सूरत भली अँखिया चढ़िया रङ्ग सवाया ॥
सोंधे भीने बाल सजनदे सखियाँ गर लाया ।
मनदी मुराद पूजिया सब पिय खुशाल पाया ॥
तन मन धन सदके कीती जीवड़ा घोल घुमाया ।
सांवली सूरत माधुरी मूरत देख कवि सुख पाया ॥

३

चिरहीनके सुखुहात प्रात जागी दुलही
गुरुजनकी शंक मान भोरही उठ जागी ।
रमक झमक आयके यशोदाके पाय लागी ।
देत अशीस नन्दरानी अवचल सुहागी ॥
चिरञ्जी रहो सुन्दर जोरी निरख निरख हिय सिराई ।
श्यामा श्याम कवि देख बलि बलि बलि जाई ॥

४

देखोरी एक बाला योगी मेरे द्वार आयो है ।
दिगम्बर ओढ़े बाघम्बर सीस नाग लिपटायो है ॥
माथे उनके तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ायो है ।
भीतरतें निकसी नन्दरानी मोतिन थार भरायो है ॥
भिक्षा लेओ जावो आसनकूं बालक मेरो डरायो है ।
ना चाहौं तेरी दुनियां दौलत ना चाहौं तेरी माया है ॥
जाओ ले आवो अपने बालक कों में दरशनकूं धाया है ।
पांचबेर परकरमा करके सिंहनाद बजाया है ॥
देवकीनन्दन कांसनिकन्दन नन्दको लाल कहाया है ।
श्रवण लाग कुछ मन्त्र सुनाया हंसि बालक किलकाया है ।
सूरदास प्रभु दरशन करके शङ्कर नाम बताया है ॥

५

दशरथ सुत देख देख जनकसुता मोही ।
धनुष बान कोई चढ़ावै मेरो पति सोही ।

सीताजू कहे पिताजो सों धनुष प्रनत होजो ।
ऐसो वर राम साज तिलक को सजो ॥
सीताजू के बचन सुनत सबही सुख मोख्यो ।
तबही तत्काल राम कठिन धनुष तोख्यो ॥
घर घर आनन्द होत अचरज यह कियो बाल ।
तबहीं सीय पाय लाग डारी है गरे जयमाल ॥
जय जय जयकार होत बाजे बहुबाजा ।
अग्रके स्वामी जीत आए अयोध्या के राजा ॥

६

छानो मानो आवै कान्हों पाछलीरे राते ।
बासलिया में भैरव गावै उठीने परभाते ॥
सम खाई सूती हती नहीं बोलूँ इह साथे ।
द्वार उघाड़िके पांय लागी वा सुरली ने साथे ॥
श्या तप कीधा अहीड़े अहीरडानी जाते ।
नरसिया नों स्वामी रीझो अबला ने गाते ॥

७

चीरा फेंटा तुर्रा धरके नाक बुलाकी अधर मटकी ।
मन्द मन्द मुसक्यात कहें या कुण्डल चपला सी चटकी ॥
सब तन साजि सजे अभूषण कटि ऊपर जुल्फें लटकी ।
चरनदास सुखदेव कहत हैं चित चोहटमें
मटकी पटकी ॥

८

मोहन मेरी मटकी फोरी सुनो यशोदा माई हो ।
एसो लड़को दधिको फड़चो मागत दूध मलाई हो ॥
मटकी झटक पटक फेर सटको अब नहीं देत धराई हो
लेकर लठिया यशोदा उठी कत तैने धूम मचाई हो ।
मोरही मोकों देत उलहना सब ग्वालन घर आई हो ।
सुनरी माई बाबा दुहाई बाको दधि नहीं खाई हो ।
सब ग्वालिनी नटखटही हमकों घर पकर ले आई हो ।
तनक सुरलीया टेर दईरे सबको मत बौराई हो ।
ज्ञानदास बलिहारी छविकी मोहन की चतुराई हो ॥

९

आज सखी मोरे अनन्द भयोहै घरमें मोहन लाधोरी ।
बन जोइ वृन्दावन जोइ जोइ बिरज सब बाधोरी ॥
सतवे मलीए अजब झरोखे वाही तें हरिजी लाधोरी ।
म्हारा तो घरमें मही घनेरो हरि चोर चोर दधि खाधोरी ॥
अपने द्वारमें कबकी ठाड़ो बांह पकर हरि साधोरी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर मिलियो बिरह बाजने बांधोरी ॥

१०

हलवे हलवे हलवे हरजी माहे मंदिरीए तुमही लोजो ।
माहिरे पलका सूँ वाल्हा थारो डगर बहारूंजी ॥
घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निश दिन
थारो रूप निहारूंजी ।
भाव प्रीत नेना तर निरखूं म्हाने वाल्हो लागोजी ॥
नारायण नेतु निरञ्जन नटवरबाहु बखानाजी ।
नरसीनो स्वामी सांवलियो घटघट अन्तर छायाजी ॥

११

बास नहीं त्यां वैष्णव केरो तहाँ न बसीए बासड़ियाँ ।
जीभ दुलो जपमाला नाकरें ते जीभड़लो खासड़ियाँ ॥
सांस उसारि सुमरण ना कखो धमण तणाँ ते सासड़ीयाँ ।
नरसैया माए भारे मारी मावड़लो दश मासड़ीयाँ ॥

१२

नवल लाल लाड़ले दोऊ रङ्ग महल जागे ।
घुमत रतनारे नैन भैन के रस पागे ॥
तनकी जोत जगमगात सुखमयंका मानों ।
चिरियन के चुचुहात भोर भयो जानों ॥
आसपास रूपरास सहचरी चहुँ ओरे ।
उमग आयो आनन्द उर जुगल बांह जोरे ॥
अति उदार छवि अपार कौन पै कहि आवै ।
शम्भु शेष शारदा नहीं निगम पार पावै ॥
बोलत अति मधुरे बैन अति सुहावन लागे ।
राम सखि रामसोया आलस सब त्यागे ॥

१३

रामचरण चिह्न चिन्ह सब विध सुख साजे ।
रघुवरके चरण कमल अङ्कन युत निरख अमल
धारे पदचिह्न राम सन्तन हित काजे ॥

रामचरण दाहने सोई सीतापद वामचिह्न
बिंशतीन खास्त काष्ठ कौन श्रीविराजे ॥
हल मूसल सर्पवान अंबराष्ट पद्म जान
बज्र वज्र ऊर्द्धरेख कल्पतरु छाजे ॥
अङ्कुश ध्वज मुकुट चक्र सिंघासन चमरछत्र
पुरुष रेख माला जव दक्षण पदभ्राजे ॥
गोपद घट छित पताक जंबूफल अर्द्धइन्दु
शेष षष्ठकौन नयगदा सुबिंदु राजे ॥
सर्ज शक्त सुधाकुन्द बिवल मीन पूरणचन्द
बीण वेणु धनुष तूण हंस चन्द्रकाजे ॥
सीताराम चरणों शुभ चिह्न षष्ठ चालीस नित
चिन्तत शिव नारद सनकादिक अहिराजे ।
रामचरण ध्यान करत गोपदी इव युक्त तरत
बिरति ज्ञान भक्त भरत सजत सत समाजे ॥

१४

राघव भोरही जागे नींद भरी अँखियन मनभावन ।
उठ बैठे फूलन सेज ऊपर कोटिक काम लजावन ॥
मृदु मुसक्यात जम्भात सीता तन झुक झुक पलन सोहावन।
रामसखे छवि देख बिबस भए कोटि काम सरमावन ॥

भैरव—झपताल

चला चलोका सौदा जगमें भला भलो कर लीजीए ।
सुमिर सुमिर श्रीराधावरकों नाहक बात न छीजीए॥
परमारथ स्वारथ लगके काइ दगा न दीजिए ।
समझ बूझ बलिहारी प्यारे मीत मनोहर कीजिए ॥

भैरव—तिताला

फूलन कों गूथ गूथ पहिरे हैं तन में ।
देखरी अनूपरूप बिहरत है बनमें ॥
शोभित गिरधात अङ्ग लजित लखि ऋतु वसन्त सरस
सन्त निरख निरख ग्वालनके गनमें ।
सुन्दर कपोल लोल तापर कुण्डल अमोल
डोलन अति सुहाई माई दामिनो जो घनमें ।
महा आनन्दित गोपनार भूली सुध छवि निहार
बोलने चलनो अङ्गको झुकनो पदरस गई मनमें ॥

२

काहे कूँ तजिए संसार तजिए अपने कुमत बिकार ।
बासुदेव बद्री वामन बपु बुधवरहि बिहारो ॥
वामदेव बैकुण्ठबिहारी सुमरण करले वारंवार ॥
जिन पायो तिन याहो में पायो करले गुरुज्ञान बिचार।
बेद पुराण साधको सङ्गत में जुगराज दास प्रभु नमस्कार॥

३

नित नित नैना बरजो रहोरे ।
फेर फेर उतही बारबार लरजत प्रभु सों परबस भईरे॥
रूपलाल रचि सीख न मानत श्यामओर
एक टक मग निरखत निमिष न लागत नहीं पलरे ।
लागत तोरत जोरत अति दुख उरझ रही कहा सुरझेरे।
ज्ञानदास मोहनको बतियां चितवन में कछु कर गयोरे ॥

४

पिय प्यारो भोरही भोर निहारे ।
आवत गलबहीयां अलसानें नैना सररूनें
शोभा सदन अपारे ॥
सङ्ग सखी नवरङ्ग रङ्गीली नख सिख रूप सवारे ।
रसिक खुशाल करत निशि बासर कुञ्जनि कुञ्ज बिहारे॥

भैरव—धीमा तिताला

यललो यललु यल यलललेतनना द्रद्रतुं द्रद्रद्रद्र
तदरत दरउत तन तदरत दरदानो ।
महबूब इश्क खूब मारा बहानें
साख्त उस्ताद का न्याज औ रङ्गे बहाना साख्त त०॥

२

ओट किमार को झांकत हूं रो तापर मेरी चवाव करेंगो।
बैरन हैगो मेरो सोतेली ता ऊपरसों मोंट धरेंगो ॥

३

चले हरि धेनु चरावन कूं लकुट ले
कामरोया कारी कांधे पर धरे ।
पीत बमन कसे कटिपै सीस मुकुट कुण्डल दोउ
श्रुतिकपोल मञ्जु मुरली अधरे ॥

सुवर अतड़ी अलसानें जात उर सोहै
मन मोहे या छवि निरखत माल सुमनकी गरे।
ग्वालबाल गोपी जुगराज दास रस चौपीरस
के पिवारन से सकल जगतके पीउ नंदके घरे॥

भैरव—सिंधु तिताला

जय जगदीश विश्वके स्वामी अखिल लोक आधारा रे।
ध्यान धरे निशि वासर जिनकों चतुरानन त्रिपुरारा रे॥
निगम नित्य निरगुणही गावे बदत ब्रह्म निरङ्कारा रे।
सोई हरि भुवभार उतारण कारण अलख भए साकारा रे॥
दीनबन्धु धर्म्मके स्थापक सबको करे सम्भारा रे॥
इन्द्रदमनपै किरपा कीनी करन पतित उधारा रे।
उत्कलदेश नीलपर्व्वतहै महोदधिवारि किनारा रे॥
तहां बिराजे बाल पुरुषोत्तम श्रीमहाप्रभुजी प्यारा रे।
श्रीजगन्नाथ वलभद्र सुभद्रा चरणकमल चित धारा रे॥
पास सुदर्शन अरु सत्यभामा पास समुद्र कुमारा रे।
मन्दिर मध्य रत्नसिंहासन तहाँ प्रभु धरो सिङ्गारा रे।
होय आरती भोग अरोगे रुचिरुचि वारंवारा रे।
श्रीलक्ष्मीजी करें रसोई षटरस बिबिध प्रकारा रे॥
करमाबाई खिचड़ी अरोगावै करि करि के मनुहारा रे।
यह प्रसाद भक्षण जिन कीनों ते नजाय जमद्वारा रे॥
महाप्रसाद देवनको दुर्ल्लभ सोजे करें अहारा रे।
तिनके भाग्य कहालों कहिए ते उतरें भवसों पारा रे॥
कोटि जनम विप्रही होवै सुख निरखे नरनारा रे।
पतितपावन चरणामृत लिए कटिहै पाप अपारा रे॥
कामी क्रोधी लोभ मोह में मन मति गड़े गवारा रे।
श्रीवल्लभप्रभुपादकृपा सों सहज तरे संसारा रे॥
आनन्दघन सब सुख के सागर ले हरि कृष्ण निहारा रे।
त्रिभुवन नायक सब सुखदायक गिरिधर प्रभु निहारा रे॥

२

जगन्नाथ-वलभद्र-सुभद्रा चरणकमल चित लावो रे।
श्रीसुदर्शन लक्ष्मी सतभामा रत्नसिंहासन शिर नावो रे॥
गरुड़स्तम्भको अद्भुतलीला छत्रभोगकों ध्यावो रे।
पतितपावन-चरणामृत लेके परिक्रमा दे आवो रे॥
पुरुषोत्तमपुरी को यहि बसवो बड़भागन जिन पायो रे।
श्रीवल्लभप्रभु-चरण-कृपातें गिरिधर यह यश गायो रे॥

मूलतान—तिताला

ए मन मेरो लागोरे श्याम सुन्दरवा सों।
गोकुलचन्द मनोहर मूरत चित अटक्यो वाही
लङ्गरवा सों॥

सिंधु काफी—तिताला

रङ्ग रङ्गीलो प्यारो श्रीजगन्नाथ।
वलभद्र भैया पास बिराजे बीच सहोद्रा साथ।
सुदर्शन और रत्नसिंहासन कर्म्माबाई खिचड़ी हाथ॥
श्रीलक्ष्मीजी करत रसोई साजे कञ्चन थार।
पतितपावन-चरणामृत लेके परिक्रमा दे उतरे पार॥
महाप्रशादकी अद्भुत महिमा हृदय-अमृतकी धार।
उत्तर दरवाजे श्रीमहाप्रभुजी बिराजे सेवाको सुखसार।
वल्लभ रसिया मोमन बसिया गिरिधर प्राण आधार॥

२

श्रीजगन्नाथ-वलभद्र-सुभद्रा इनके चरण चितलावो रे।
लक्ष्मी-सत्यभामा-श्री सुदर्शन बाल पुरुषोत्तम ध्यावो रे॥
दरसन तें दुख दूर होत हैं रतनसिंहासन शिर नावो रे।
परिक्रमा में सब देव बिराजे दरस परस सुख पावो रे॥
पतितपावन-चरणामृत लेके कोटिन पाप मिटावो रे।
याही पुरीको याही महिमा एकै ब्रह्म बतावो रे॥
श्रीमहाप्रशाद भक्त सों लीजे हर कोई जन लावो रे।
गरुड़स्तम्भ प्रेमसों मिलके कर्म्माबाईकी खिचड़ी पावो रे।
मार्कण्डेय समुद्र महोदधि इन्द्रदमन न्हाय आवो रे॥
उत्तरपौर महाप्रभुजी को बैठक वैष्णव जन भावो रे।
श्रीवल्लभ गिरिधर-चरण-कृपातें परमपदार्थ पावो रे॥

आड़ा—होरी

मुरली बजाई वो मेरा प्यारा।
तुझबिन नैना नींद न आवै सुध बिसराई वो मेरा प्यारा।
एकतो बैरन ननद लालागी नित उठ तेरो नाम लगाई
पोर न पाई वो मेरा प्यारा॥

सुन धुन वंसी कानन परे मोहि सुध बुध सब बिसराई ।
तेरे हित बलिहार बिहारी गुरुजन लाज गंवाई
घर अङ्गना न सोहाई होमैं० ॥

भैरव—ताल तिवड़ा

गिरिधर नागर हो गति चलत पायन बाजत
नूपुर रुणित रुनझुन किंकिन झनकार ।
अङ्ग अङ्ग सुदेश नटवर, बाजत वेणु रसाल ब्रजचन्द मुकुटधर,
दिगि दिगि दिगि द्राँ द्रिमिकिटिना
कुकुकुकुत कुकुकु थेइ थेइता गत लेत
सुरत सँवार नन्दकुमार ॥
ततताकिट तालत्रेवट उघटि तत्ताधीधीथुंथुं
नाना बजतत मृदङ्ग हाव भाव मिलिततता
किटिकिटि तिधा धुमकिटि धीलांग तकधा प्रकार ।.
निरत गोपी मण्डलमें सुरपुरनार भई बलिहारी
वृन्दाविपिन करत विहार ॥

भैरव—तिताला

नन्दके ढिटोनाने टोना कियारे
टोना किया कुछ जादू कियारे ।
टुक मुख दिखाय चित चोराय लीनों
तन मन मेरा बस जो कियारे ॥
मन्द मन्द मुसक्याय माधुरी बैनन
मृदु बचन बोल लिया
राग रङ्गसों बंसी बजायके चेटक सा कछु
पढ़ जो दियारे ॥

२

जागो रघुनाथ कुंवर पञ्छी बन बोले ।
शशिकिरण शीतल भई चकई पियको मिलन गई
अति सुगन्ध पवन बहे पल्लव द्रुम डोले ॥
प्रात भानु प्रगट भयो जिय जन्तन सुखपायो
मधुप करत गुञ्जार कमलन दल खोले ।
तुलसीदास अति आनन्द निरखके मुखारविन्द
दीननको देत दान भूषण बहु मोले ॥

३

जागिए कृपानिधान जानराय रामचन्द्र
जननी कहे बारबार भोर भए प्यारे ।
राजीवलोचन विशाल पीत वापिका मराल
ललित वदन ऊपर मदन कोटि कोटि वारे ॥
अरुण उदित विदित सरवरो तुसंक किरणहीन
दीपजोति अतिमलीन द्युत समूह तारे ।
मनहुँ ज्ञान घन प्रकाश बीते सभोग विलास
आस त्रास तिमरताप तरुण तेज जारे ॥
बोलत खग निकर सुकर मधुरी करि प्रतीत
सुनो धन्य प्राणजीवनधन मेरे तूं वारे ।
मनहुं वेद बन्दि मन बदत सुत मागधादि
बिरद बन्धु ताकै जय जयति कोट भारे ॥
सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अति शिवदयाल
भागे जञ्जाल विपुल दुख कदम्बतारे ।
तुलसीदास अतिआनन्द निरखके मुखारविन्द
छूटे भ्रमफन्द परम द्वन्द दुख टारे ॥

भैरव—एकताला

केते सुख होत प्राण राम नाम जपतें ।
मङ्गल मुदित उदित होत कलिमल कुल छपतें ॥
किमि चाहत फल रसाल बबुर बीज बुवतें ।
एसोई या जनम जात गाल गुल गपतें ॥
काल कर्म्मगुण सुभाव सबके सीस तपतें ।
रामनाम महिमा की चरचा कुल छबितें ॥
साधन बिन सिद्धि बिकल सकल लोक बकतें ।
पावन होय नाम लेत तुलसी सो अपतें ॥

भैरव—तिताला

देखो री एक बाला जोगी मेरे द्वारे आया है ।
दिगम्बर ओढ़े बाघाम्बर सीस नाग लिपटाया है ।
माथे उनके तिलक चन्द्रमा जोगी जटा बढ़ाया है ॥
भीतरतें निकसो नंदरानी मोतिन थार भराया है ।
भिक्षा लेओ जावो आसनको बालक मेरा डराया है ॥

नाचाहों तेरी दुनियां दौलत नाचाहूं तेरो माया है ।
जाओ ले आओ अपने बालकको मैं दरसनको आया है ॥
ले बालक निकसी नन्दरानी शम्भू दरसन पाया है ।
पाँचबेर परकरमा करके सिंघी नाद बजाया है ॥
देवकीनन्दन कंसनिकन्दन नन्दके लाल कहाया है ।
सूरदास प्रभु तुमरे दरशको जसुमत पलने भुलाया है॥

२

चलहु प्राग बुधवर दरसन त्रिवेणी पातकहरनी ।
सुर नर मुनि सब प्रागही आए, मानुष तन तिन दरसन पाए;
मातपिताकी बुरकी देखि समझ चले आपन करनी ॥
प्रागराज परकरमा करके भारद्वाजजी कोंदे साखी
करूं अस्नान दान कुछ देके माधोजी शङ्करशरनी ।
गङ्गा यमुना सुरसुती ए तीनो सङ्गम भई,
सूरज पुराण भागवत गीता इतनो महिमा शिव बरनी ॥
गङ्गा यमुना घाटबन्धेहैं पातककी दलमल-करनी ।
तुलसीदास प्रभु तुमरे मिलनको कोटि जनमकी
भवहरनी ॥

३

शोभा सदन बदन दोउ देखे
नयन मोहनी सैन टगोरी गुण प्रवीण राग नट भेषे ।
आसल अङ्ग अङ्ग निशि जागे भरे विनोद अपार विशेषे ॥
भूषण बसन मणिन हारावली ललित
नयन काजर छबि रेषे ।
रसिक खुशाल बिलोकत यह सुख
राधावर सुख सार विशेषे ॥

४

आवत कुञ्जनतें पिय प्यारी ।
अति रस भरे उनींदे नयना रूपरशि सुकुमारी ॥
भूषण बसन अङ्ग अङ्ग राजत छबि बनमाल अपारी
रसिक खुशाल करत रस वरषत राधे कुञ्जबिहारी ॥

५

जागिए दशरथकुमार सन्तन सुख दाई ।
सुधि लीजिए कृपा कीजे अपना जान रस रीझे
राजा महाराजा गुणगाहक गुणदाई ॥
भयो प्रात भानु उगो जीव जन्तु सभो जागे
कमलन मुख खोलो मधुप गुञ्ज अति मचाई
तिमिर गयो रजनी को छायो जगमें प्रकाश
चारों दिश सुनियत धुन मङ्गल प्रगटाई ॥
उठ बैठे प्रेमजान रामलला गुणनिधान
जन खुशाल लागो ध्यान चरणन चितलाई ॥

६

जगत में आयके ऐसे भुलाए तुम ऐसे भुलाए ।
अपना रूप आप नहिँ चीन्हां अपनी मायामें
तुम आपो नचाए ॥
खान पानमें मनचित राखे सुरत त्रिया रसमें अटकाए ।
सङ्गत छोड़ असङ्गत बैठे हरिसे भजन करार कर आए ॥
भटक फिरो लोँक तीनोंमें हरिसों कबहुं नेह न लाए ।
रसिक खुशाल मिलैंग जबहीं निशदिन
रहो ध्यान हिय लाए ॥

७

भोर भए जागिए नन्दकिशोर ।
गोपीग्वाल कहत मुख खोलि लखो हमारी ओर ॥
पहिरो भूषण बसन पियारे पीताम्बर पटछोर ।
निरखो सांकरी खोर वृन्दावन कुञ्जनिकुञ्जन ठौर ॥
उठ बैठे अलसाने नैना मुसकावत चितचोर ।
रसिक खुशाल प्रेम राधावर मांगतहै करजोर ॥

८

उमा अङ्ग उबटनतें प्रगटे श्रीगणराज विराजे ।
ऊषा सखा सङ्ग सजी सुन्दरी द्वार रखनके काजे ॥
स्नान करनमैं जात महलमें घरमें कोई मत आवे ।
द्वारे रोक जतैय मोंको कहिके कोऊ आवन पावे ॥
नारदमुनि आए तिन रोके शिव समीप द्रुत धाए ।
कुशल पूंछ सुन मुनि हंस बोले किन बालक उपजाए ॥
उमा द्वार रोकनको बैठी घरमें जान न पायो ।
तब पूंछनको आयो शिवजी अचरज तुम्हे सुनायो ॥
तज समाधि शिवमन्दिर आए अन्तर जान न पाए ।
पकड़ जटा वाहनको खींचो बाहुयुद्ध मचाए ॥

पितापुत्र दोउ वारि बूढ़े बल नहिँ कोउ अधकाए।
सगुण निरगुण दोउ ब्रह्म समरमें निरगुण अधिक
उकताए॥
त्रिगुणात्मक त्रिशूल चलायो सगुण ब्रह्म शिर छेदाए।
जाय पड़ा शशिके मण्डलमें कन्या भागी जो बचाए॥
उमा नाथ निहार लाजके केशन अङ्ग छिपाए।
मैं राखे दोउ बाल रोकनको कैसे आवन पाए॥
कहे शङ्कर हम सीस उड़ाया रोकत लड़त जो बाला।
कन्या भाग गई सन्मुखसे अबला जान न वाला॥
उमा कहत कहा तुम कीनों मैं रजत उपजाया।
बाल जिए बिन प्राण तजूंगी रोवत आंसु बहाया॥
गणको सिर ख्यावनको पठए भुवमण्डल नहिँ पाया।
पुनि कहि बीर सीस कोउ ल्यावो दिरग जसुत शिरलाया॥
परसत हाथ गजानन बोले क्षमा प्रभू मोहि कीजे।
अनजाने अपराध तजि रिस कछु वर दीजे॥
हंसि बरदान दिए गणपतिको आप पूरव पुजवाए।
प्रेमरङ्ग प्रभु गणनायकके सुर नर मुनि यश गाए॥

९

हरि हरि हरि हरि जपनारे।
जब लग प्राण रहत घट भीतर तबलग सब जग अपनारे॥
मात पिता दारा सुख सम्पद वृथा जगतकी कल्पनारे।
चन्दसखी भज बालकृष्ण छवि आखिर जगको सपनारे॥

१०

चीरा फेंटा तुर्रा सजके नाक बुलाकी
अधरन मुरली छटकी।
मन्दमन्द मुसक्यात कन्हैया कुण्डल
झलक चपलासो चटकी॥
सबतन आछे सजे आभूषण कटि ऊपर जुल्फें लटकी।
चरणदास सुखदेव कहतहैं चितचोहट मटकी पटकी॥

भैरव—एकताला

लगो मोहिं आन पियारी तीखी सखीरी बोलन
चलन चितवन मुसक्यान।
सीस मुकट झुकनी कनक कुण्डल करनन झलकन
लकुट धर धरनकर कञ्चन डगर डगर डगमग पग
लरबरान॥
रुन झुन पग नूपर बजन घुँघराईं अलकन
पलकन पर फैल रही ललकन मनमोदमान।
छल कैसी सुचरित करत बलके जुगराज
निरखि पलकन परन देरी बलकेन विचार चारप्रानजान॥

भैरव—तिताला

भूपके भागनकी अधिकाई।
टूट्यो धनुष मनोरथ पूर्यो बिधि सब बात बनाई॥
पहरायो जयमाल जानकी युवतिन मङ्गल गाई।
तुलसी सुमन वरषत हरषत सुर सुयश तिहुं पुर छाई॥

राधासुख लाग सुन्दर अति अनेक कञ्ज मृदु अरुण
प्रफुलित गात।
बैठे उठे अलसात नैनन छाईं छवि कहत सब
नारद शारद महेश॥
झुकरहीं अलकें कपोलन पर झलकें सुन्दर सुवेश।
रामचरणके हिरदे बसो जुग मूरत मधुर प्रवेश॥

२

मोकों प्यार कोनों सुरजन गल बहियां डार।
रंग रङ्गीले सुरजन मोरे आए गले फूलबनों की हार॥
तरैयां छिपान लागी कगवा बोले चौंकपरी
पिया भोरकी।
निश नींद न आवै कल न परतु है बिगर दरसवा दीजे
कहीं चलत है मोरे गुसैयां तुमपर जोरीकी॥

गजर फजर नारायण गावै आलस अङ्ग उड़ावैरे।
जासों रैन जरखरी साहबकी साहब पढ़ै पढ़ावैरे॥
सब तरह हाजर रहे सदाही दबत राजीना जतावैरे।
दवतर चढ़सो तबतर तनमें कमतर फैंन छुड़ावैरे॥
परमारथकी बात पूंछतां बड़वा करै बड़ावैरे।
जिनके सङ्गतें दोष उपजे उनसे कुढ़ै कुढ़ावैरे॥

लगन सारतें बिचन बिलाए तारे तारे जोड़ावैरे ।
दीन कहे मन मगन भजनमें गगन निशान गड़ावैरे ॥

५

सोई सन्त कुलवन्त कहावत गावे गोविन्द गीतारे ।
नरगावे नारायण सुमरे जे जन जगमें जीतारे ॥ टेक
सुरत लुरत कर सब साधना बरतें सकल बिदितारे ।
अर्थ गर्थ एक हरि माहीं सहज सुभाव सुनितारे ॥
सबही कामतें सरीखा मानें अन्तर नाहीं अनितारे ।
जन्तर मन्तर काहुन जाने समझन प्रेम समीतारे ॥
ज्यां जैसा त्यां तैसा सबमें परखसु पार पुनीतारे ।
परनिन्दा पैसा नहीं चाहे वाच्छे नाहीं वनितारे ॥
सर्व्व इष्टसों पेखे साहब भरमें सोच न चिन्तारे ।
भरना भराया जलके तांई झलके आधा रीतारे ॥
गावे बेदकों जो शास्तर गावे गान गुणीतारे ।
दीन कहे सोई तीन लोक पर निरभय असन अतितारे॥

६

प्रात समय स्नान करनको गङ्गाजीको धाराहै ।
निरमल बचन सुनोहो प्राणी पाप कटनको आरा है ॥
अमृतजलको पान करो और ध्यानधरो गङ्गाधरको,
नित उन चरणातसों लगाय रहो चित याहीमें निस्तारा है ।
शीश नवाय करो हौं विनती पत राखो तुम शरणागतकी
अधम उधारन जगनिस्तारन महिमा अपरंपारा है ॥
शिव समान नहिकोउ दाता तीनलोककी तुमहो माता
कोट पतङ्गादिक नर पापी सबको तुमने तारा है ॥

७

पतित जन तारो मात गङ्गे पापविनाशनी
ताप उदारनी करुणा कर निस्तारो ।
मोह तरी बही भवसागरमें पवन चलत मझ धारो ॥
तारण तरण तूही वरदाता नइया पार उतारो ॥

८

नीलकण्ठ गिरिजापति शङ्कर शशिशेखर
हर तुव शरणा ।
कण्डमाल समशाननिवासी भक्तजननके अनुशरणा ॥
व्याघ्राम्बर वृषभवाहन शशीधर भूषण शिरगङ्गाधरना ।
कैलाशाचल अचलनिवासी भस्म अङ्ग करुणा करना॥ टेक
चन्द्रहास शशिचन्द्र पिनाकी शूलपाणि डमरु वरणा ।
गजमुख-षणमुख-क्षतमुख-दुरमुख नन्दीभृङ्गीसंग
आचरणा ॥
भाङ्ग अफीम और आक् धतूरा अमल खाय
आनन्द भरना ।
काशीनाथ पशुपति प्रभु मेरे प्रेमरङ्ग प्रभु तुव चरणा ॥

९

परब्रह्म ॐकार नारायण पद्मनाभ मधुसूदन राम ।
मोन कूर्म्म श्वेतयज्ञपुरुष प्रभु नरहरि वामन भार्गवराम ॥
श्रीरामचन्द्र-श्रीकृष्णचन्द्र श्रीजगन्नाथ-कल्की धरनाम ।
अज नारद मुनि सनक शेष शिव ध्रुव प्रह्लाद जपत
हरिनाम ।
हनुमान शुक शौनक वल्लभ पौण्डरीक सुर सरनाम ॥
तुलसी कबीर नृसिंह तरे अबप्रेम रङ्ग तारक परणाम ॥

१०

भोर भए नीको मुख हंसत देखाइए ।
रातके दरशके बिकुरे दोउ पलक मेरे
वारि फेरि डारोंनिकु नैन निदराइए ।
कोमल उन्नत बाहु ऊपर अमित भाव मेरी
तेरी छाति छवि अधिक बढ़ाइए ।
चितस्वामी गिरधर सकलगुणनिधान कहा कहूं
सुख करि प्राणहोतें पाइए ॥

११

जइए वहदेश जहां नन्दनन्दन भेंटिए ।
निरखिए मुखकमल कान्तबिरहताप मेटिए ॥
सुन्दर मुखरूप सुधा लोचनपुट पीजिए ।
लम्पट लव निमिष रहित अचय अचय जीजिए ॥
नखशिख मृदु अङ्ग अङ्ग कोमल करपर सीजिए ।
अरु अनन्यभाव भाव सों भजि मन क्रम बस रसिए ॥
रास हास भाव विलास लीला सुख पाइए ।

भक्तनके यूथ सहित रस निधि अवगाइए।
इह अभिलाष अन्तर्गत प्राणनाथ पूरिए।
सागर करुणा उदोत विविध ताप चूरिए॥
छिन छिन पल कोटि कल्प बीतत अतिभारी।
परमानन्द कल्प दीनन दुखहारी॥

१२

बिलुलित करपल्लव मृदु बैन। हरषित बहुत आवत धेन॥
कोटिमदन द्युतिश्याम शरीर। बिपिन कल्पतरु यमुनातीर॥
दक्षिणचरण चरण परधरे। बामअंश भृकुण्डल चले॥
वरुह चन्दवन धातु प्रवाल। मणिमुक्ता गुञ्जा फलमाल॥
देखन चलहु श्याम नन्दलाल।
ललित त्रिभङ्ग मदनगोपाल॥

१३

तोहि ध्यानलाग्यो सजनोरी।
वारेक दृष्ट परे मनमोहन
देखियत चित्रलिखो सी,
ठाढ़ो मदनसिन्धु जलवून्दन सो,
रूपनिधान कमललोचन तोहि मिले आजुको रजनी।
कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धनधर रसिक-युवती-दुखहरनी॥

१४

आखनमें दुराय प्यारो काहे देखन न दीजिए।
हिए लगाई सुख पाई सगुणनिधि पूरण जोई
जोइ जोइ मन इच्छा होय सोइ सोइ क्यों न कीजिए॥
मधुर मधुर बचन कहत श्रवणनि सुर बढ़ीजिए
निर्मल प्रभु नन्दनन्दन निरखि निरखि जीजिए॥
एसोही धर्यो है दधि बिना मथन किए
देहु यशुमत नेकु अपनो रई॥

१५

जननी जगावत उठो कन्हाई।
प्रगट्यो तरनि करनि गन छाई॥
आवहु चन्दवदन दिखराई।
बार बार जननी बलि जाई॥

सखा द्वार सब तुमहो बुलावत।
तुम कारण हम धाए आवत॥
सूर श्याम उठि दरसन दीनो।
मात देखि मुदित मन कीनो॥

भैरव—तिताला

सोहत घूंघरवारे बार।
उरझरहे मुक्ताहल निरवारत बार॥
रतिमानि सङ्ग नन्दनन्दके छूटे बँध कञ्चुकी टूटे हार।
निशिके जागे दोउ नैना उरझि रहे
चलत जोवन मदभार॥
सूर श्याम सङ्ग यह सुख देत रीझे वारंवार॥

—०—

श्रीभागवतसार

भैरव—चौताल

भक्तके थामरेमें उलहोहै चन्द कहै
जाके द्वादस गोद कहँ ॐकारको जरहै।
तीनसेबतीस जाको शाखा दशो
दिशानमें ज्ञान वैराग दुइ खगनको घरहै॥
पतनो अठारह हजार जाको छत
छायरही ताको छांहबैठ जम तेजको न डरहै।
ब्रह्मजल सींचके बढ़ायो माली वनमाली
सो भागवत रूपो ए कल्पतरवरहै॥ १॥
प्रथमें मङ्गलाचरण व्यासकियो चन्दसुतसों
सौनकादि सम्वाद रससों भर्योहै।
उत्तरमें अवतार वेदव्यासको सन्ताप
नारद मिलाप निज अलाप उचर्योहै॥
भागवत शुकदेवको पढ़ाय विनय
भीसमसे सुत परीक्षत जनम धर्योहै।
कलियुग दण्ड यामें मुनिश्राप गृहत्याग
गङ्गातट जाय शुकजीते प्रश्न कर्योहै॥ २॥
प्रथमें अन्तराजा पूंछो जन करै कहा
दुतीय लोक सुहु जूने सेव्य हर गायोहै।

अस्थूल रूपमें सबलोकचन्द देवादिक
सह्यो सुक्त क्रममुक्तमेघ सरसायोहै ।
पुनि सप्तऋषि नारद ब्रह्मा सम्वाद कह्यो
अनन्त परमभेद करनी समझायोहै ॥
स्वायम्भुके तपसों सबलोक दिखायो नाथ
चतुरश्लोकी भागवततें तत्वरसायोहै ॥ ३ ॥
तृतीयमें बिदुरजू गृह छोड़ बनगए
उद्धव मिलेहैं तिन प्रभु लीला गाईहै ।
सुनि मैत्रमिले प्रश्नोत्तर रस झिले
ब्रह्माजूसों नानासुति सुरचना सुहाईहै ।
बारह अवतार धार हरणाकुश मार
पृथी लाय चन्द करी कदम सगाईहै ।
कपिल देव प्रगट ह्वै ज्ञान वैराग भक्ति
योग कहि माताको उर मन दृढ़ाईहै ॥ ४ ॥
चतुर्थमें स्वायम्भू मनुके सुताको वंश
पुन दक्षके यज्ञको विध्वंस विस्तार्योहै ।
ध्रुव कोर्त्तमान आन सुन्यो ना सुजान बान
काल सोसचढ़ि विमान पलेगु धार्योहै ॥
पृथुको चरित्र सोतो परम पवित्र चन्द
वसुधाको तुही सब जग प्रति प्यार्योहै ।
पुराचीन बिरहसो पुरञ्जनको कथाकहि
नारदजी कर गह भक्त मग डार्योहै ॥ ५ ॥
पञ्चममें प्रियव्रतजीको सब बातें नीके
श्रीऋषभ देवजीके चरित्र बखाने हैं ।
आगे शशि भानु और नक्षत्रकी गति कहि
बिभूषणको नर्क बहु बिधि दरसानेहैं ॥
भक्तजन जाने जो अघाने चन्द काहू भांति
सरस प्रताप यश रहत लुभाने हैं ।
* * * *
* * * * ॥ ६ ॥
षष्टममें अजामिलहुसे नाम तारे दक्ष
सुत समुदाय गृह तज वन गयो है ।
इन्द्र अभिमान सुर गुरुको कियोहै शुक्र
असुरन मिल ताको लोक छीन लयोहै ॥
तब विश्वरूप नारायण कवच दय दधि
धृत वज्र निरभय ताहि करि दियोहै ।
बिलासुर मारो चित्रकेतको उवारोसो
कहरको प्रताप चन्दलोक लौं छयोहै ॥ ७ ॥
सप्तममें युधिष्ठिर नारद सम्वाद कह्यो
हिरण्यकशिपु श्रीनृसिंहजीने मारोहै ।
प्रह्लादको चरित्र अहलाद करि गायो मय
रच्यो जो त्रिपुर शिवजीने भेद डारोहै ॥
नृपवर आश्रमके धर्म्म पूंछे मुनि कहै
राजाने प्रह्लाद उत्तर सरस बिचारोहै ।
कृष्णचन्द सदा गृह रहे सब काज करे
आपको भाग्यमें न औरको तिहारोहै ॥ ८ ॥
अष्टममें चउदेमनु तामें गज ग्राह मोक्ष
सिन्धु मथ सार काढ कृष्ण मोहनी भए ।
सुरनको सुधा प्याई बात भई मन भाई
विष पियो शिव नीलकण्ठ कबिसों कए ॥
शुक्रजीको सेवा करि स्वर्ग राज कियो बलि
वामन ह्वै छले तब इन्द्र स्वर्गमें गए ।
सत्यव्रतजीको मत रूप है दिखाई माया
चन्द हित हरिके चरित्र हैं नए नए ॥ ९ ॥
नवममें पहले सूर्य्यवंशको बरननहै
तामें अम्बरीश महाभागवत भयोहै ॥
औरहू पुन्यमान अनेक राजापै तिनके
कृतारथको श्रीराम जनम लयोहै ॥
जिनके चरित्र बहुकहा कहो अल्पबुध
अबचन्द्र वंश ओर चितमेरो गयोहै ॥
तहां यदुकुल माहं प्रगट होय नीके नेक
कृष्ण भक्ति करे ताहि आप दर्श दयोहै ॥ १० ॥
दशममें नृपति परिक्षतने चन्द्रसूर्य्य
वंशके नीको भेद पूंछो समझायके ॥
तहां कैसे यदुकुल माँह अंग युत प्रगटे
कृष्णको कथामें मन रह्यो ललचायके ॥

तब सुक्राचारज स्याम सुन्दरको
ध्यान धर्यो परम छबीलो गयो रोम रोम छायके ॥
फिर रूप सागरतें निकस आरम्भ कियो
सकल समाज दियो छिनमें छकायके ॥ ११ ॥

* * * *
* * * *

असुरन भार भूमि गऊरूपधार गई
ब्रह्मा जूसों कह्यो चले देव गण सङ्गलै ।
छीरके समुद्र जाय ध्यान हरिको लगाय
भवानी भईहूं मैं सब केर हित मङ्गलै ॥
सोई बानी कहि देव चले चन्द आप
वसुदेव पुरे काम कृष्ण अवतरङ्गलै ।
तहांते पधारे नन्दभवन आनन्दरूप
सब गोप गोपिन खिलाएहैं उछङ्गलै ॥ १२ ॥
नन्दजो श्रीकृष्ण जनम उत्सव कियोहै
महा गोपी गोप अति आनन्द बढ़ायोहै ।
सात तिलपर्व्वत सुवरन बसन युत गऊदीए
गज अश्व रथ पार नहीं पायोहै ॥
वेदके बिधान तान गान प्रकवान ठान
बढ़त बधाई व्रज महामोद छायोहै ।
बिधि शिव इन्द्र सनकादिकऔ नारदये
आए व्रज चन्द पद सोसपै धरायोहै ॥ १३ ॥
पूतनाको मार सकटासुर उधारकर
त्रनाबरत गयो घोट छिनहोमें मारोहै ॥
गर्गाचार्य्य छिपछोके नामकरण नोको कियो
दामोदर रूपतें यमुलार्ज्जुन डारोहै ।
वृन्दावन आय बछरानको चराय
बत्सासुर पांयगह डार बकासुर तारोहै ।
बालकन सङ्ग ख्याल करत बिचित्र लाल
अघासुर मोचके बिरद प्रतापारोहै ॥ १४ ॥
रातहोमें बास खास वल करी प्रात
वन माह छाक छीकनमें लैचले ।
भोर सब वाही भांति बछनके आगे
घर वनको पुलिन मध्य भोजन करै भले ॥
बछरा जे चरतहे तिन्हें ब्रह्मा लेगयो
तातें वनढूंढ आए पाए नहि वा थलै ।
तब बच्छ बाल सबहालही प्रगट भए
गोपी गाए कैतो मिल्यो सुन्दर यह फलै ॥ १५ ॥
यह लीला देख ब्रह्मा चरणमें आनधरो
अस्तुति छमा कराय गयो सत्यलोकको ।
पयोगण्डवही माँझ गाय वन चराय लावै
बाल लीलाके अनेक ख्याल खेल आवै ओकको ॥
कालीको निकार दावानल करपान
प्रलम्बा सुरमार व्रजजन हरो शोकको ।
बेनुको बजाय गाय बच्छनको मोह चन्द
व्रजमांह आय सुख देत निज थोकको ॥ १६ ॥
गोपी कृष्णहेत देवी पूजी तहाँ आय
आप चार हरि वरदे पधारि चावसों ।
छुधा लागी सखनको मथुरा पठाय दए
जोवे विप्र तहां पतनी भांति लाई भावसों ॥
इन्द्र यज्ञ मेटो तातें कोप कर वरसा करी
गोवर्द्धनधार रक्षा करी निज दावसों ।
गोप अवलाख जान ब्रह्म कुण्ड असनान
ठान लोकहु देखायो पै न भायो व्रजभावसों ॥ १७ ॥
सरदकी रैन भली फूली सुखदैन देख
वेनु को बजाय हृषभानुको बुलाईहै ।
सुनतही घुन धाम काम सब छाड़ि दिए
पुन झिनक में आय मिली प्रीति सरसाईहै ॥
तिनसों जोकरी बातें तेतो नाहि लिखिजाय
रास मिल गात गर्भ लखि छटकाईहै ।
बिरह बिललाई रूप देख सुखपाई
तिन कर मनभाई प्रात घरको पठाईहै ॥ १८ ॥
अब काके वन माँह नन्द पांयलग्यो आप
सर्पको छुड़ाय पुन संखचूड़ मारोहै ।
वंशीको बजाय थिरचर मोद उपजाय
हृषासुर सिङ्ग उखारि कर डारोहै।

जो गोप भेष धार व्योमासुर सब सखाको
कन्दरामें रोके तहाँ मार जस धारोहै ।
* * * *
* * * * ॥ १८ ॥
कृष्ण बलदेव लेन आए जो अक्रूर भक्त
नन्दजीसों कह्यो राजा कंसने बुलाएहैं ॥
ओढ़ीके निकट गोपी ठाढ़े दुखरस बूड़े
भोर गाड़ा जोर सबगोप मिलधाएहैं ॥
रजकके पीठ वस्त्र धार कुबजा सम्भार
कुवलीयापीड़ यमलोकको पठाएहैं ॥
* * * *
* * * * ॥ २० ॥
उग्रसेन राजदीनो नन्दजी कोबिदा कीनो
यज्ञोपवीत लीनो अवन्तीगुरुके गए ।
चौषट्ही दिननमें विद्या कला सब सीख
गुरु दक्षनामें मृतक पुत्र लायकैदए ॥
ऊधवको रुखो जान गोपिनके समाधान
ब्रजमें पठाए तहाँ प्रेमरङ्गमें छए ॥
अक्रुर घर जाय हस्तिनापुरको भेज
पाण्डव कहाँहै यह निश्चै सोध केलए ॥ २१ ॥
कंस पतनो गई जरासिन्ध को चढाय भेजो
ताहि सत्रेवार जीत बह्यो धन लाएहैं ।
अठारहोबेर कालयमन सों भाज
मुचकन्द भक्त साज द्वारिकाको रचाएहैं ॥
रुकमणि आदि आठ व्याही पटरानी
भौमासुर मार राज कन्या मन भाएहैं ।
न्यारे न्यारे महलमें चहल पहलमचो
रहे पुत्र प्रपुत्र भए कैतो जानतही गाएहैं ॥ २२ ॥
मिथ्या बसुदेव बन दूत प्रभुन पास भेजो
ताहि मार गत दई भक्त बहु भाएहैं ।
नारदके मन्दिर वो आदि असुर सँहारे
भक्त पुनि प्रतिपाल कारज कराएहैं ॥
सुदामाके चरण धुवाय चामर चवाय
भोजन कराय दुख दारिद्र बहाएहैं ।
* * * *
* * * * ॥ २३ ॥
यशोदाको गोद बैठ रामकृष्ण सुखदियो
गोपिनकों समाधान कियो उरलायके ॥
भक्त सुत बोले सबके घरजाय दई
मुनिन सहित भक्ति बहु भायके ॥
सुतनको अस्तुत कही भृगुजीको लातसही
ऐसो और कौन जाको शरण लीजे जायके ॥
* * *
* * * * ॥ २४ ॥

भैरव—तिताला

उठो नन्दकुमार भयो भोर जगावति नन्दरानी ।
झारीके जल बदन पखारो सुत कहि सारङ्गपानी ॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा भावै सो लीजेहो आनी ।
सूर श्याम मुख निरखि यशोदा मनहि मन जुसीयानी ॥

२

उठे नन्दलाल सुनत जननी मुखबानी ।
आलसभरे नैन उठे शोभाकी खानी ॥
गोपी जन थकित हिए चितवति सबठाढ़ी ।
नैन करि चकोर चन्दबदन प्रीत बाढ़ी ॥
मातु जल झारी लिए कमलमुख पर वारी ।
नीरहीके परस करत आलस बिसारी ॥
सखा हारे ठाड़े सब टेरतहैं तुमको ।
यमुना तट चली श्याम चारण गोधनको ॥
सखा सहित जेवहु बलि भोजन कुछ कीनों ।
सूरश्याम हलधर सङ्ग सखा बोलि लीनों ॥

३

खेलिए अङ्गन छगन मगन कोजिए कलेवा ।
केतसार दधि ऊपरतें काढ़धरी
पहिर लेहु झुगली फेटा बांध लेहु सेवा ॥
ग्वालनके सङ्ग खेलन जाहु,
खेलनके मिश भूखन लाहु,

कौन परि प्यारे लाल निशदिना कीटेवा ।
सूरदास मदनमोहन घरहो
खेलो प्यारे ललन भंवरा चकोर
डोर देहु हंस चकोर परेवा ॥

४

मदनमोहन पियकीजै कलेऊ ।
दूधमें रोटी छानो माखन मिश्री आनो,
जोइ जोइ भावै सोइ सोइ लेऊ ॥
खांड़ छीर और घृत मिठाई मेवा आप खाहु
और ग्वालनको देऊ ।
ब्रजपति पिय फेर खेलकों जाउ वन
सुबल श्रीदामको संगकरि लेऊ ॥

५

जागिए ब्रजराज कुंवर कमल कोस फूले ।
कुमदिनी मुख सकुच रही भृङ्ग लता झूले ॥
तमचुर खग रोर सुनहु बोलत वनराई ।
रांभत तो मधुर नाद बछरा हित धाई ॥
विधुमलीन रविप्रकाश गावत ब्रजनारी ।
सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज करधारी ॥

६

प्राणनाथ प्रात भयो जागो बलिजाऊं ।
सोनाकेरी गोफनसों बेनु मैं गुथाऊं ॥
उगत सुर सजोत भई कुलहरि बनाऊं ।
पांय बाँधूं घूंघरु और नाचवो सिखाऊं ॥
सूरदास मदनमोहन गुण तिहारो गाऊं ।
हरष निरख छवि ऊपर वलि वलि जाऊं ॥

७

जागिए गोपाल लाल जननी वलिजाई ।
उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो
प्रगटे सब ग्वाल बाल मोहना कन्हाई ॥
उठो मेरे आनन्द कन्द गगन चन्द मन्द मन्द
प्रगट्यो असमान भानु कमलनी सुखदाई ।
सिद्धी सबपूरे वैन तुम विना न छूटे धेन
उठो लाल तजो सेज सुन्दर वरराई ॥
सुखतें पटदूर कियो यशोदा को दरसदियो
और दधि सब मांगलियो बिधिरस मिठाई ।
जेंवत दोउ रामश्याम सकल मङ्गल गुणनिधान
थारमें कछु झूंट रही सो मानदास पाई ॥

८

श्रीकृष्णजीके ध्यान मेरे निश दिनारी माई ।
मनके महल प्रीत कुञ्ज तामें जादोराई ॥
साँवरे बदन कोमल चरन नख देखे
चखचौंधि होत पाँय नूपुर पैंजनीसो विधिने बनाई ।
दाहने पदपद्म तातें टेढे धरत आलीरी
ऐसे चरण दुखके हरण है सदा सुखदाई ॥
लाल हजार ताके बिच कञ्चनके तार लगे
काछनी पचरङ्ग तापर किङ्किनी छवि छाई ।
वनमाल मुक्तमाल कण्ठन कौस्तुभमणि
पिताम्बर चटक तामें दामिनी द्युति पाई ॥
बाजुबन्द मुद्रिरी मुँदरीगनको अति चमत्कार
अरुण अधर मधुर सुर मुरली बजाई ।
कमल नैन बिमल कान्ति कुण्डल प्रतिविम्ब
होत आनन्दसो मुख मानो रह्योरी मुसकाई ॥
घुँघरवारो अलक झलक किए चन्दन खौर
और मोर मुकट सीस धरे बनी सुन्दरताई ।
कहे भगवान हित रामराय प्रभुको निहार
आस श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रटलाई ॥

९

श्रीनाथजीको ध्यान मेरे निशि दिनारी माई ।
माधुरी मूरत मोहनी सूरत चितलियो चुराई ॥
लाल पाग लटकी भाल चिबुक बेसर कण्ठमाल
करणफूल मन्द हास लोचन सुखदाई ॥
मोरपङ्ख सीस धरे मोतिन को हार गरे
बाजूबन्द पहुँचौन कर मुद्रिका सोहाई ।
क्षुद्र घंटिका जेहर नूपुर बिछुआ सुदेश
अङ्ग अङ्ग देखत उर आनन्द न समाई ॥

मुरली अधर धरे श्याम ठाढ़े व्रजयुवती मांह
मग्न सुरन तान गान गोवर्द्धनराई ।
निरख रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान
वल्लभ पद किङ्कर दासादर वलिजाई ॥

इति श्रीअमरनन्द्यात्मजेन तस्यात्मज श्रीहीरानन्द्यात्मजेन तस्यात्मज
श्रीकृष्णानन्द्यात्मजेन रागसागरोद्भव सङ्गीतरागकल्पद्रुमे
रागभैरव ख्यालादि प्रथमराग सम्पूर्णम् ।

—०—

टौड़ी

रागिणी टौड़ीध्यानम्

तुषारकुन्दोज्ज्वलदेहयष्टिः काश्मीरकर्पूरविलिप्त देहा ।
विनोदयन्ती हरिणाम्बनान्ते वीणाधरा राजति टोड़िकेयं ॥
गान्धारांशग्रहन्यासं क्वचित् धैवत रंजितः ।
सम्पूर्णा टौड़िका ज्ञेया आद्ययामे प्रगीयते ॥

रागिणी—टौड़ी चौताल

धनीसागरे सामगरे सानीधप धनीसारे गमगरेसा ।
मम पप धसारे सागरे सा मगरेसा सानीधनीधप
धप मप मग मगरे गरेसा नीधनीसा ॥

२

गरे सानीध साग सामगरे सानी धरेसाग
गम धनी सारेगम गरेसानी धपमग
गग मम पप धसानी सागरेसा मगरेसा नीधप मग ॥
मग मम गगरे सापमग सागरेमानी धध नीनीधप
पधनी धप धगनी धपमपगरे सानीधग ॥

३

टौड़ी रागिनी अलापत गावत ।
बीण बजावत उपवन मृगन रिझावत ॥
गान्धार स्वरग्रह प्रथम मूर्च्छना सम्पूर्ण तान सुनावत ।
सप्ततान बाइसो इकईस उनचासको
तान ताको ब्यौरो जनावत ॥
उज्ज्वल बसन पहर केसर कर्पूरचर्चित रतनन
आभूषण तानसेन तान साजत ॥

४

मेरे मनमांह हरिनाम जिन रच्यो
अखिलधाम काम क्रोध तज लोभ बच्यो जात संसार ।
जिन रच्यो स्वर्ग मत्सु और पाताल
निरञ्जन सोई साकार निशदिन जपले श्रीमुरार ॥
दीनबन्धु दीनानाथ काटत दुखद्वन्द फन्द
ताहि घरी पल छिन न बिसार ।
तानसेन कहे निरमल रहिए भजिए
भगवान मनुष जनम नहीं वारम्वार ॥

५

मेरे तो कृष्णनाम आधार जिन रच्यो
जग पसार लोभ तृष्णा काम क्रोध तजो जञ्जार ।
जिन रच्यो आदि अनन्त भुव आकाश त्रइलोक
निरञ्जन साकार निश्चय कर जपो श्रीहरि मुरार ॥
युग युग भक्त हेत अवतार लेत हैं भक्तन प्राण आधार ।
बैजू बावरे प्रभुको चरण शरण गहिए
मनुष जनम नहीं वारम्वार ॥

६

सारेगम पपधनीनी सप्तसुर कुछ साधैते बनाए ।
आरोही अवरोही ऐसे सुन लेहौं नीधपम गरेरे साए ॥
दुगन सरिगम को हौं पाई
दीउ सरिगमके प्रसादतैं नूररङ्ग ने गाए ।
सारेगगरेरेसासारेगमपमगगरेरेसा
सारेगमपधपममगरेरेसासारेगमपधनीनीधधपप
ममगगगरेरेसानीधपधप
नीधपमगमपधनीधपमगरेगमपध
नीधपमगरेगमपधनीधपमगरेसा
तब यह भेद पावै जबही गुरुनतैं सांचो पाए ॥

७

निसगमपपपधगपपधनीनीसा
नीनीधधपपनीधमपपपगगसस ।
नीनीनीधनीसानीनीसानीनीनीसासगागसाधसा
नीधासानीनीधापेसागगसारेधाधानीधा

सनीनीधासानीधापपपगगसस ॥
गमपधनीसारेसागरेसामगरेसानीनीनीनोधधधपपप
मममगगगरेरेरेसासासारेगमपधनी
सानीधपमगरेसाधसापसामसागसारेसा ॥

८

मपधरेसानीधपमपधपमगरेरेसा ।
सासानीनीधधसारेगरेगरेसानीधसा ॥
नीधपमपनीधपमगरेरेसा
मधसागमधसारेगधसगरेसानी
धनीधपधपमगमगरेगरेरेसानोधपपसरेसा ॥

९

तेरे तो सरस्वती घटघट पूर रही नाम धरायो वाक्‌वानी।
जल थल मध पात जाल पा भवानी
यातें कहियत तोको मर्व्वानी ॥
कोटकटानी सृष्टानी समद्वीप प्रमानी ऐसी नग्रकोटरानी
तानसेनको प्रसाद दीजे भवानी
दयानी कण्ठ पाठ ताल स्वरदे महारानी ॥

१०

धीरे धीरे धीरे मन धीरेही सब कुछ होय ।
धीरे राज धीरे काज धीरे योग धीरे ध्यान
धीरे सुख समाज जोय ॥
धीरे तीरथ धीरे व्रत संयम धीरेही करे
सत्सङ्ग साधके बैठ मनको धीरे राखोय ॥
तानसेन कहे सुनो साह अकबर एतो बड़ो राज
एतो बड़ो बादशाही धीरेहीते पाई सोय ॥

११

देखि इन्द्रलीला इन्द्रसभा इन्द्रहूके दरबार
चक्रित भए अचलसुनि ।
दीपकमें अष्टदीप नवदीप सिन्धलदीप ऐसे
दीपे जैसे चन्द्र हीरामणि ॥
एकनको देत दान एकोनको बुलाय लेत
एकनको बकसत जरकसी चीरासुनि ॥
गुणको प्रसाद गाहक राजाराम छत्रपति
जाके घरगुनी करे क्रीड़ाधुनि ॥

१२

आरे मन्दरतुम दरतादानी दरदतिलेतो
नदानी तदानी तरसे ।
तरनरे तारनरेदरतुंदररेतुंदर तुमरेतुम्तनमदरसे ॥
कैसो ए भांति चपला सुधरन बोले ऐसे सुन्दरसो सरसे ।
दरदर और दरवार मता आमेरे मन्दर
सुन्दर तरे रतरेर राखूं सुघरसे ॥

१३

मेरेतो हरिनामको आधार जिन रचो संसार
काम क्रोध लोभ महाजञ्जार ।
जिन रच्यो अरस कुरस जिमी आसमान
निरञ्जन निरङ्कार सांचो क्यों सेवो परवरदिगार ॥
काहेको हूजे गुन्हेगार काहेको लीजे एतोभार
सोई सवाद क्यों न तजिए जाको नाम राजगार ।
प्रभु बिलास कहे पाक साफ रहीए
तयार जनम जीव नहीं बारबार ॥

१४

ज्ञानभूम पर आनन्द घटा गरज गरज बरस
बरस तातें भए बहु बीज अनगिनती ।
चोंप कोंप निकस तार डाँड़ी भई तान अक्षर पात
यह खेती तबही उपजे जोहो एक रमरती ॥
यह याकों मरम जाने जोहोय शेष मशायक
के जाने वलि यह कहे सिद्ध जङ्गम योगी जती ।
मदनराय सोहो पे जांच लिए
जामें नादसों गुणए बातें बनती ॥

१५

रूप यौवन-गुण-विद्यावर रिझाय लीनो
प्यारे सबही त्रियनमें विचित्र धन ।
सब अङ्ग अङ्गनमें प्रचण्डरहो
सम्मूरण यातें तू भावत मन ॥
तोसो तुही तूही विचित्र और कोउ
नाहन जामें नानाप्रकार पद्मयत अनतन ।
प्रभु सुजान प्यारेको कर राखो
आन रङ्ग जान न दीनो अनतन ॥

१६

गावो गुणी सुराग सुतान सुसुद्रासों
सङ्गत रङ्गत लिए सुधबानी ।
बादी समबादी अनबादी बिबादी
तिनकों ब्योरो सोच समझ कर तीजे
हँसहँस प्रगटो गुरुते मुख मयानी ॥
सा-रे-ग-म-पध-नी गायन साधे चतुरबिनानी ।
सब अङ्ग परखन हार गुरुन गुरु साह जलाल
सकल कला गुरुन गुरु ज्ञानी ॥

१७

गढ़पत दलपत देशपत अतमाते
जे गरब अङ्गधीरेही लिए ।
जे सरठ बैठे और कुलगन तिनको
वले सिकार मारजीत लए ॥
चतुरङ्ग दलत तबलया चाल कर धात बलकर
जल पछाड़ प्रवलके देख मद दल खल सों खल
परिखल बलतब वेपग पङ्ग पसार बाजन उड़नको धाए ।
तिन पर वरछी कोउ बनाय कुलम्यान
उतराय दस्तगो भाले पहरायते गगन धाए ॥
बे कोको जाय सुलगी धाय धायके मारे
भुव गिराय शेर भारी औजाय तिनके प्रमाण
चाख चखाय दए ।
साह मौजदीन महावली किएहैं
शिकार देख कांपेहैं थिर थिर नर
सर सफरेस लंकेश दृगपाल सब देख तेज भजगए ॥

१८

अनद्रुत द्रुत बिराम लघु लघुबिराम
गुरु प्लुति तार लय अतीत अनाघात प्रमाण ।
खरज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाद तान ॥
निषाद धैवत पञ्चम मध्यम गान्धार ऋषभ खरज गान ॥

१९

सें कहूं देखोरी नन्दकोनन्दन कान्ह
मटकी झटकके पटक गयो ।
मांखन चोर चोर मन लीनो कीन्हो नेकु
न डर नट ज्यों उलटके सटक गयो ॥
मारग रोक रहत खोरनमें सांवरो
सूरत माधुरी मूरत नैनदे अटक गयो ।
तानसेनके प्रभु तुम सबहीके नायक
रस गोरसले गटक गयो ॥

२०

ऐसी तोरी सूरत रचपच रचो विधाता
धन धन तुव सुरमें सुन्दर अति सुखकारी ।
स्वर्ग लोक मृत्युलोक पताललोक
नागलोक और नाहिन तुव सम नारी ॥

२१

सङ्गत ससुद्रा सुभेद उक्तायुक्त सुध बानो तिनहीमें पाइयत ।
समस्वर तीनग्राम द्रुकद्रुश मुरछना
सारङ्ग म-प-प-ध-ध-नी कण्ठ गाइयत ॥

२२

आनन्दन आनन्द भयो मेरे रोम रोम
नैनन भर निरखेहैं श्यामा श्याम ।
धन घरी धन पल मङ्गरत धन धन ब्रजवृन्दावन धाम ॥
धन धन मेरो भाग सुहाग धनगुरु
चरण शरण दियो मोहिं ठाम ।
सागर आगर गुण रागरङ्ग नागर
दरश परश भए जीवनमुक्त आराम ॥

२३

धर्मसों नीच पाप पापसों नीच क्रोध क्रोधसों नीच लोभ
लोभसों नीच मोहमद मदसों नीच मत्सर कहाइया ।
स्वर्गसों नीच मृत्युलोक मृत्युलोकमें नीच दुष्ट गिरतें
नीच पाँव राजसों नीच प्रजा पाइया ॥
ब्राह्मणसों नीच क्षत्री क्षत्रीसों नीच वइश वैश्यसों नीच
शूद्र धनीसों नीच निर्धन वेदसों नीच शास्त्र भाइया ।
देवसों नीच राक्षस ससुद्रसों नीच नदीनद कहत
कवि तानवर सगुनीसों नीच निरगुनी पाइया ॥

२४

गाऊं राग सभा साहनसाहको जाको अकवरनाऊं ।

जे नरनरेन्द्र इन्द्रसमान चक्री वक्रीसो होत
कबहुँ नाहि निरखत अष्टसिद्ध नवनिद्ध पाऊं ॥
एक एक सङ्गीत प्रति लच्छ लच्छन करे
और एक निरत कालो जच्छारो ताण्डव
समान कावकर और होहुँ गाऊं बजाऊं ।
बिनवे व्यास कोउ जानत नाहीं जलालदी
महम्मदको देन आशिर्व्वाद नित आऊं ॥

२५

नादनगर बसायो सुरपति महल छायो
उनचास कोटी तान अच्छर विश्राम पायो ।
गीत छन्द तत बीतत घन शिखर कच्छन ताल
कालके किवाड़ अलाप तालो हीरापै
पाट नग लगे खरज जच्छीर त्रेवट
कुच्छो तामें ध्रुवपदसों नग छिपायो ॥
आरोही अवरोही अस्थाई मच्छाई जवार
अरब खरब और करोर मन मिलाय कण्ठलायो ।
जौहरी मीयां तानसेन गाहक जलालदीन
जिन याको मोल कीनो अकवर पारखी पायो ॥

२६

छत्र छवि छाजे बिराजे हुमाऊं तखत
बैठो चारोँ चक जोत आयो दिल्लीवर ।
ऐसो हठीलो नर नरेन्द्र नरेश धावत
शत कोस काहू पै न रोको जाय तकवर ॥
राख लई इमर तिमिर लिङ्ग बाबरको
बृद्ध किरात साहन मन बादसाह ताहि दयो अलहवर ।
नायक पूरण करत बखान तेरो बाबरसुत
ताँको सुत हुमाऊं अकवर सबल नर ॥
अकवरसुत जहाँगोर ताको साहजहां
ताको औरङ्गजेब भयो है भुवपर ॥

२७

ज्ञानपति महेश विद्यापति गणेश
प्रथवीपति नरेश बलपति हनुमान ।
सरितापति सागर गिरिवरपति सुमेर
राजनपति इन्द्र धर्म्मनपति दान ॥
बाजनपति मृदङ्ग पवनपति पान
पक्षिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह ।
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह
तानसेनपति अकवर अर्ज्जुनपति बान ॥

२८

हरि बिन और न दूजा समझ मन और न दूजा ।
माटी भीतर माटी बाहर माटीको बन रहो कूँजा ॥
यह माटीको मूरत बाहर भीतर और नहीं सूजा ।
जिन जानो तिन कछून जानो अबजाना बूझा ॥

२९

तेरोरी चन्द्रबदन शोभासदन
मदनमोहन ममरस बसकरन ।
दरश परश परस्पर उपजत आनन्द अपार
सकल सुखद सब बिध दुख हरण ॥
लालन रीझ भींझ रहे तोपर
करत रहत तेरोई गुणवरन ।
जानकीदास करत आस सब बिध सुख
ब्रजविलास रसिक रासमण्डल रसकरन ॥

३०

पिय प्यारी नाचेरी रास मण्डल मध ललिता
उघटत सङ्गीत तत्ताधुमकट धगड़नांधित्या
थोधिधिगनधा ।
उरपति रपगति भेद बतावत मृदङ्ग बजावत
सखि धाकिटकिट धुमकिट किटधोत्ता ततधिधिगनधा ॥
मधुर मधुर नूपुर धुन बाजत कुणत
किङ्किनी झुन तनना अदभुत तान केदारेको ।
गावत प्यारीकों रिझावत बलि बलि
आवत रसिक गोविन्द अभिराम ॥

३१

दियो तुमको विरच्च अटलराज छत्रपति विक्रम नरेश ।
राज समाजसों जसन करो जौलों ध्रुव गङ्गतरण शेष ॥
तोसों तुही और नाहीं भुव मण्डल मध
सकल विद्यागुणनिधान दाता बिधसों काटत जग कलेश ।

गन्धर्व्वसेन प्रभु ऐसो परदुखभञ्जन
शकबन्ध रच्यो करतार ज्यों सुरेश ॥

३२

तुही ऋषभ गुणनिधान ग्रन्थ प्रमाण तेरे रस
बसकार लीनो साह जलाल रसाल परम महाजान ।
मैनका रम्भा उरवसी और तुमसी
और तीयनकों न गिनै पद्मा तुझ न समान ॥

३३

हे कृष्णनाम जबते मैं श्रवण सुन्योरी
तबते भूली भवन हौंतो बावरी भई ।
भरि भरि आवै नैन चित न रचिक
चैन मुखहू न आवै बैन तनको दशा कछु और भई ॥
जैतेक नेम धर्म कीनेरी बहु बिधि
अङ्ग अङ्ग भई श्रवणमईरी ।
नन्ददास जाके श्रवण सुने यह गत
माधुरी मूरतिहै धौं कैसी दईरी ॥

३४

रीझियो रसिक गोपाल विनोदी
तेज अलापी प्यारी अदभुत टोड़ी ।
बदन देखि उड़पति नभ थकित
धरखित मनगति भई निगोड़ी ॥
दम्पति सुघर राय चूड़ामणि
केलि कला कौतुक रसकोड़ी ।
कृष्णदास गिरिधरन बिलोकित
लज्जित मदन लहत नहीं बोड़ी ॥

३५

बहुत प्रसन्न भए पिय प्यारी टोड़ी राग वेणुधरि गायो ।
सुर सङ्गीत बन्धान समसुर
ऐसो कछु अदभुत भेद जमायो ।
नाना तरङ्ग उपत अनेक बिध
प्रतिछिन औरसों और मिलायो ॥

३६

तैं कहुं देखोरी नन्दनन्दन कान्ह
मटुकी झटकिके पटकि गयो ।
माखन चोरो चोरो मन लीन्हों कीनो नेकु न डर
नटज्यों उलटिके सटकि गयो ॥
मारग रोक रहत खोरनमें न जानौं
नैन सैनदे अटक गयो ।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक
रस गोरस लै गटकि गयो ॥

३७

बङ्क चितवनि चित रसिक तन
गुपत प्रीतिको भेद जनायो ।
मुखकी रूखाई कैसे घटतहै
हियको प्रेम नहिं दुरत दुरायो ॥
सगबगे अलक बदन पर बिथुरे
यहि बिध लाल रहचटे लायो ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर
नवनिकुञ्ज अपनो करिपायो ॥

३८

आज कौनधौं वन चरावत गइयां कहाधौं भई बड़ी बेर ।
बैठे कान्ह सुधि लेहौं क्यों न कौन
बिध ग्वालन वारत अब सेर ॥
वृन्दावन आदि सकल वन ढूंढ़ो जहां गाइनको टेर ।
सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि कैसे दुराए
दुरत कहाँ धौं डूंगरिन की ओट सुमेर ॥

३९

गोकुलके गुण्डे एक सांवरोसो ढोटा माई
आंखिनके पैंड़े पैठि जीके पैंजे पर्‌योहै ।
कल न परत छिन अहू भयो समवन
तन मन धन प्राण सकल सुख हर्‌योहै ॥
भवन न भावै माई अङ्ग न रह्यो जाई
करो सहाई माई देखो जैसे हाल कर्‌योहै ।

सूरदास प्रभु नीके गावत मधुर सुर
मानों मुरलीमें पीयूष रस भर्योहै ॥

४०

अरी यह छोट कान्हर बोलि न जानै बरबस झगरो ठानै।
जोइ भावत सोइ कहि डारत ऐसो निधरक
नहीं कहुं देख्यो रूप यौवन अनुमानै ॥
अङ्ग अङ्गके दान लेत नहीं घरके को पहिचानै।
हम दधि बेचन जातहै मथुरा मारग रोकि
रहत गहि अञ्चल कंसकी आन न मानै ॥
ऐसी बात सभारि कहो हरि हम तुमको पहिचानै।
सूरश्याम जो हमसों मांगत सो पैहो
कहुं और त्रियनपै ए बातें गढ़िबानै ॥

४१

माखनकी चोरीतें सीखे करन लागे अब चितकी चोरी।
जाके दृष्टि परे नन्दनन्दन सो व फिरति मोहन डोरी डोरी॥
लोक लाज कुलकानि मेटि करि
बन बन डोलति नवलि किशोरी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि
जबतें देखे निगम बानी भई भोरी ॥

४२

आधो मुख नीलाम्बरसो ढांकि बिथुरी अलकैं सोहै।
एकदिशा मानों मकर चांदनी
एकदिशा घन बिजुरी ऐसे हरि मनमोहै ॥
कबहुं करपल्लव निजसों केश निरबारत तिय पाछे लै
डारति निकसति करठेढ़ी भौंहन मुख जब जोहै।
सूरदास प्रभुको यह छवि निरखत
त्रिभुवनमें उपमा यह सम कोहै ॥

४३

एक कर दर्पण एक कर अंचरा कजरा सँवारत लालना।
ललना मुखकालिम दूरि करतिहै
उलटि भँवर फिरि कमलन परत ॥
सीसफूल अतिराजत नगनि लग्यो
ताकी उपमा कहो शेष सीसमणि मानों बरत।
करणफूल करननिहो संवारति
अलकें निवारि बन्दन बिन्दु लिलार करत।
सूरश्याम टुरि देखत दर्पणको
मुख एक टकते पलकहू न टरत ॥

४४

कहुँ उमड़े घुमड़े गाजत हो पिय
कहुँ बरसत कहुं उघरि जात।
कहुं चमकि चमकि चपला ज्यों चमकत
एकठौर त्यों नहिं ठहरात ॥
श्यामघन केशव लक्षन तुमपै श्याम हो नीके
जानति मेह नेह आड़म्बर ब्रथा प्रात।
मुरारिदास प्रभु तिहारो वामचरण पूजिए
को पतियात कहु किनको कहिबात ॥

४५

लाल तुम जासों रहे लपटाय
दुरे कैसे ताकी हो सुवास।
चिन्ह सबैजु छिपाई आए रङ्गभरे
पाए बदन और विलास ॥
तुम अपनोसों दुराव करत पिय
नैननमें पाइयत जियको हुलास।
चतुरबिहारी हौ क्योंन जानै ए बातें
तिहारो मैंहूं सेवक रावरो पास ॥

४६

लाल सङ्ग रति मानो मैं जानी कहे देत नैना रङ्ग भीए।
चञ्चल अञ्चलमें न समात इतरात
रूप उदधि मानों मीन महावर धोए ॥
पलक पीक जगमगात दृगमानिक
मानों जराय लोनि प्रेम पोए।
नन्ददास प्रभु पियके मुख सुखके लोभ
लालच जानतिहौं निशा नेक न सोए ॥

४७

तेजु दई ग्वालिन सवांरी नैनन सोहै कजरा
और माथे बेंदी।

तेसोए अलकाकी झलक दसनकी ओप
अधरनकी अरुणताई चलत चाल गज गेंदी ॥
छोटी छोटी तरकुली श्रवण बिराजत
पायन महावर हाथन मेंदी ।
चतुरबिहारी गिरिधारी बसकरवेको छाँड़िदई लट फेंदी

४८

ऐसे कैसे कहियतु है हो कुलवधू
वन इतहि आउधों होड़ी ।
बरबस रोकत टोकत मोकह
करिहौं कहा रिसाँई कोहै बबाकी लोंड़ी ॥
दिन दिन की पैड़ोरो माई न जानिए
ओथरी और ओंड़ी ।
राजाराम प्रभुते न होय तिय जे छैहै तुमही कनोड़ी॥

४९

अबहो डारि देरे इन्डुरीया कन्हाई यामेरे पचरङ्ग पाटकी।
हाहा खाति तेरे पइयाँ परति हौं
यह लालच मोही मथुरानगर हाटकी ॥
मेरे सङ्गको दूर निकस गईहों कीनी इह घाटकी ।
तान तरङ्ग प्रभु झगरो ठान्यो हंसत लुगाई बाटकी ॥

५०

मारगके वागे रातिके जागे छूटे बन्दन अरसात ।
जम्भात बहियाँ गहन आगे आवत सकुचन लागत ॥
छियो छाँड़ो अंचरा मोरी भुकिए मै आनि झुकावत ।
लाखजो जतन करो तज न बोलिहौं
लाल ए तुम बातें कबके लावत ।
तानसेन प्रभु रव निरवन तुभ महि
खिजाए कहा पावत ॥

५१

गुलाल जरन नैन भएरी ललना ते
सब निगिरङ्ग लियो लालरङ्ग ।
मेरे जान नई नैन पिय मूरति पाई सुभाई ते
झुकिझुकि परतरी मानों पवन ते डोलत
नीरज ऐसी शोभा पाई मोमन सङ्ग ॥

पुनि पलसों पल लगि लगि जगि जगिनैन अरुण भए
जेतुव देखत तिन तिन कोरी आनन्द मापत है
अङ्ग अङ्ग ।
कल्याणके प्रभु गिरिधर तोसों रतिमानी
ज्योंज्यों राखि करि अरधङ्ग ॥

५२

एमन तूजो अपनो सुख चाहत है
घरी घरी पल पल छिन छिन सुमरले श्रीरामनाम ।
जो जग जप तप नेम धर्म्म व्रत सञ्जम
ज्ञान ध्यान गहे दृढ़ हरिचरणन विश्राम ॥
और उपाव नाहीं कलियुग में
कृष्णकृष्ण कहत होय आराम ।
तानसेन प्रभुको चरण शरण गहले
जासों पावै बैकुण्ठधाम ॥

५३

वा दिन केवल वलि जैएरी जादिन
पीतम तें होय मिलन ।
तन मन धन नोछावर करहूं चरण कमल
पांवड़े बिछाऊंगी नेयन पलन ॥
अनेक दिननमें प्यारे मोहिँ मिलिहै
लेऊंगी वलिया दोउ करन ।
तानसेनके प्रभु सुधाको दृष्ट करि मोर मुटकी हलन ॥

टोड़ी—दरबारी

एरी जशोदा हारे पुकारे आएहैं
एक योगी मांगत हात पसारी ।
मुखदेखूं तेरे बालकेको मैं यही गुरु ज्ञान बिचारी ॥
जटाजूट वाघम्बर गङ्गशिख वहुरूप
शिव डिम डिम डमरु बजावत सिङ्गीनाद हुङ्कारी ।
काशीबासी कैलासनिवासी दरशन कारण
आएहो गोकुलारी ॥
ल्याई यशोदा पुत्र अँचरा ढाक देख मगन
भए धन धन आज दिन सुखकारी ॥

टोड़ी—चौताल

एमन जब लग नैन प्राण तब लग जोयत
सब काहको दिदार।
जब लग जीजिए तब लग कीजिए
राग रङ्ग घरी घरी पल पल छिन छिन
जात न लागे बार॥
साँचही बोलत साँचही तोलत
साँचही कीजे बनज बिहार।
तानसेनके प्रभु साँचहीमें रम रहे यातें
समझ बूझ देखिए जग सपनो संसार॥

२

परम धरम गोविन्द नाम सुमरण मन बीच निज करम।
योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत भक्ति बिना व्रथा जनम॥
मारग आन भ्रम तौलों जौलों न पाए निगम मरम।
हरि नारायण श्यासदास प्रभुको भजीए
एतजीए भरम॥

३

नीके नीके सुर गाय राग देखाय
प्रथम कपट तज रङ्ग जुगत लाय।
बुधि सरसाय काव्य बनाय खुली मुदी मुद्रा तान सुनाय॥
उरपति रप लाग ड़ाट देखाय।
समखर इकईस सुरछना ताको व्योरो जनाय॥
और सङ्गीत रत्नाकर के सप्तध्याय समुझाय।
तानसेनके प्रभुकों रिझाय सङ्गीत विद्या दरसाय।
गुणीनसों गुण चरचा कर परमेश्वरके धरिए पाय॥

४

तै कहुं देखोरी वनमाली आली वंशी बजाय मन लेगयो।
धुनि सुन कल न परत निशदिन उन बिन नैन
तरसत बिन देखे टोनासों यन्त्र मन्त्र कर गयो॥
जब नहिं देखत छिन न सुहावत भावत नहिं गेह
मेरे नैननमें अटक गयो॥
तानसेन सैननकी मूरत कोटी बार डारों सांवरी
सूरत जिय बसगयो॥

५

बागे बनाए आएहो पिय लटक
पागकी चटक अटकन मन।
लटक लटक चलत चाल मटक मटक मुसक्यात
अलसानि सरसानि नैनारी नैना नींद न आवै
निपट सीत नेक छवि छतन॥
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक
रस बस कर लीनो तन मन धन।

६

सौंहें खात तोतरात बात कहत
अरसात आए भए प्रात डगमगात गात।
ऐंड़ात जँभात धकधकात मुरछात
धरधरात भरभरात॥
बहाँजी जावो जहां नवल तिया सङ्गजागे रात।
याहीतें मुसकात मेरो मन मनात बात कहत हंसात
मोहे न सोहात तहांही सिधारिए जाको मन ललचात॥
तानसेनके प्रभु मीठे बचनन बतरात झूठी झूठी
सौंहें खात तेरोसों तेरोसों मैं अब नहीं जात॥

७

रङ्ग गुलाल वरण भईरी नैनसों तेरेरी
ललनासों सब निश रङ्ग दीने लाल।
जादिन नैन पिय मूरत देखाई बाहरतें
झुक झुक परतहै मानो पठनतें डोरत
नीरज ऐसी शोभा आई सो मन सङ्ग रसाल॥

८

बामकर सोहै धनुष दाहने कर सोहै
शिर छत्र उजरे मुखारविन्द सोई रामचन्द्रहै।
नाथनको नाथ अनाथनको सहाय
जोइ जोइतो बिसारे सोई मतिमन्दहै॥

९

तृष्णाको तज देहु क्षमा कौन जन करहु
नित दया हियमें धारो।
पापसों राख दूरचित सत्य बचन
मुख बोलो साधु पदवी जीय बिचारो॥

सत्यपुरुषन की सेवा नम्रता अति विस्तारो ।
सब गुणसों आप गुप्त कर तीरथ पग धारो
दुखित पै दया करो ॥
मदको जोती विद्वान संगत करो अपनी कीर्त्तको
प्रति पारो ॥

१०

तूही ब्रह्म तूही विष्णु तूही महादेव
तूही गुरु तूही चेला ।
तूही सोना तूही सोनार तूही कसोटी कसनहार
तूही दीपक तूही मन्दिर तूही मेला तूही अकेला ॥
तूही रैन तूही दिन तूही पर्व्वत तूही पाखान
तूही जल तूही थल तूहीसों मेला ।
तानसेन के प्रभु तूही सबनमें तूही छैला तूही
अलबेला ॥

११

काहेको भटकत फिरत रे मन जपो
हरिनाम जासों काम ।
तीरथ व्रत नेम धर्म्म षटकर्म तज भए एक नाम ॥
कलिकाल और नाहीं एक रह्यो हरि व्योहार
वही जप वही तप वही है धाम ।
कहे बैजूबावरे सुनोहो गुणीजन साँचो संसार मध
एकही है राम ॥

१२

नाम में रूप नाम में विद्या नाम में जप तप
संयम रञ्जन ।
नाम में ज्ञान ध्यान नाम में सुमरन नाम
तिहारो दुख भञ्जन ॥
नामहीतें जल पाखान तारे नामही प्रह्लाद
दुख गए दन्दन ।
नामही अजामेल बैकुण्ठ सिधारे बैजु नाम
पवित्र भञ्जन ॥

१३

मेरी बला आवे जो घरी घरी मोहे खिजावे मनावे ।
एसो लङ्गर ढीट कोउअन देखो सबन छाड़ मोही
सों नेह जनावे ॥
दुरजन में ठाड़ी तिनमें मोहिं लजावे सगरी
तियन में मोहे रोस चढ़ावे चञ्चल सस प्रभुतुम
बहुनायक काहू भावे काहू नभावे ॥

१४

रिझावत पियको अनुराग रङ्गकर
अनेक तरङ्गी जेइ जेइ अङ्ग तिन तिन ।
हाव भाव कटाच्छ गुणरूप यह विध मन
मनावत लालको बाल तोहे दीनो सोहाग मन ॥
निपट आतुर चातुर खूब पढावत गावत सुरसुती
प्रसन्न भई कण्ठ पाठन सुख रहस न भावन ।
चञ्चल उसि प्रभुके अङ्ग सङ्ग अरधङ्ग
रही तोसी सुघर तुँही धन धन ॥

१५

ए गोही गोही राखोरी ते ललनाकों
आली अपने रस बसकर ।
रैन दिना तुही तुही जपो करे पिय सोतनके
लीने प्राणहर ॥
तोहीसों हंसत खेलत मिलत प्राण पियारो
पल पल सकुचन सकुच न रहे गुमान भर ।
अहो धनमान मतिभाग सुहाग तेरो
बे देखे रीझे सुजान सुन जर भर भर ॥

१६

प्रेम नगरको डगर कठिन है जिन जावो कोऊ ।
पहले तो मीठे मीठे बैनन बस कर लेत पाछे
अलगपासी देत एसे बट पार नैना बसत ठगे दोउ ॥

१७

सोहत तान नारो राग सुरत देखत सुनत
सबही को मन मोहत ।
मुद्रा घटत उपकटाच्छ अच्छर भरन तोही पै
सो जोहत ॥

जोवन उमगन कुच पै तालक लुभए
ब्रह्म अच्चर शबद प्रतच्च सम देखियत उदोहत ।
आरोही अवरोही कर रिझायो ते मदनरायकाँ प्रभु
रस वश कर लीनो लागि मानो कामधेन दोहत ॥

१८

बषत यार बषत बली चली तेरे नाम की कर
सुर नर मुनि गुण गन्धर्व्व कहे नर जहांगीर ।
जे अज्ञान ते भए सज्ञान ये दिन दिन धन कल्याण
करत है अहो सागर आगर तोको है चलगए तीर ॥

१९

तेरे विद्याको कहा अच्चभो जोई
देखियत सोई अदली ।
गुणतो तोमें उपजत है ज्यों कपूर कदली ॥

२०

दशहरा सुवारक होय तुम्कों
सन्तत सँपत और सहित समझाऊं ।
गोत गाय गाय आनन्द बधाए राजाराम
रहस रहस करगाऊं ॥
लङ्काजीत राम घर आए सीता मङ्गल
मिल सखि सोहेला सुनाऊं ।
बैजू प्रभु घर आज वधावा भक्ति दान वर पाऊं ॥

२१

हिन्दमें आनन्द भयो कोटि दुरजन गए
बैठे तखत वली आलमगीर सानी ।
बाजे निशान फहरान सुने गढ़पति
फरर नई गई धाक डर हुकम मानी ॥
चले चहुं ओरको ते मिलत कों जोर जोर
आगे चहुं डोला दार सुघर रानी ।
अदल अदलो उनसपत अदारङ्ग
कहाँ लग कहुं जाके कादर करीमको महरवानो ॥

२२

सब साहन साहको साह शिरताज कीनो
विधना जब धरो अकवर नाम ।
भुव लोक मध लोक उजारो कर थप्यो
तखत बखत तोहि दीनों अचल करके नेहचे
अब जहाँ सोहत साँचो राज ॥

२३

होतहै मध्यम पञ्चम पञ्चम रिषभ धैवत गान्धार ।
अदारङ्ग याको व्योरो काइसों न कहिए
जो जानतहै तिन पायो बड़ो सार ॥

२४

राम नाम लेरे नर चेत जगत जान सब सपना
सोवत निश दिन हितकर हरिसों निभावन हार ।
जिन नेंक धाय पाय प्रेम नेम प्रकार
प्रह्लाद अह्लाद ज्योति जगजीवन आधार ॥

२५

प्रथम ॐकार नाद ब्रह्मतें फिर शिव डमरुतें,
उपजे भेद ताहे बरतन लागे नारदादि गुणी ।
पहिले खरज दूजे रिषभ तीजे गान्धार चौथे मध्यम
पाँचे पञ्चम छटे धैवत साते निषाध ताह धुन सुन
भूले सुनी ॥
पाँचो सुर मिले ताह औड़वे कहन लागे छहो मिले
खाड़व सातो सम्पूरण खरज रिषभ गान्धार मिल
तीनों ग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरन लाग
डाट सुनी ।
नेम बिरछ कर कार उनचाश कोटि तान आरोही
अवरोही अस्थायी सचाई तीवर कोमल अतिकोमल
लैलै प्राण प्यारो प्यारीकों रिझावत सखि भान
प्राण निरख चक्रत धुन सुनी ॥

२६

गोविन्द गोपाल गरुड़गामी
गोपीनाथ गोवर्द्धनधारी गोपमनरञ्जन ।
गरव प्रहारी गाढ़ेगुण रूपधारी
गोपति गोकुलनाथ गजके दुखदन्दन ॥
गोलोकपति गुसाँई गोचारण गुनी मुनिरञ्जन ।

गोकुल गवन करन गोमति प्रिय जुगराज दास
ध्यान धरे राधापति भक्तबन्दन ॥

२७

योगीरे बसो तो बसो चित्रकूट
नगर बसो तो अयोध्याधाम ।
सरिता बसोतो बसो सरयूतट नाम जपोतो राजाराम ॥
दशरथनन्दन पतिहै हमारे मरजादा
मारग लहो ठाम ।
तुलसीदास रघुनाथ आस एक
चरण कमल गहो विश्राम ॥

२८

योगीरे बसो तो बसो गोवर्द्धन
नगर बसो तो मथुराधाम ।
सरिता बसो तो बसो यमुनातट रसना
रटोतो जपो कृष्णनाम ॥
नन्दकेनन्दनपति है हमारे पुष्टलीला
मारगहै हेघनश्याम ।
नन्ददास यदुनाथ आस एक चरणकमल लह्यो विश्राम ॥

२९

कृष्ण मात कृष्णतात है कृष्णबन्धु सखाकृष्ण ।
विद्या कृष्ण द्रव्य कृष्णहै कृष्णहै प्रभ्र ॥

३०

दीनदयाल पतितउधारन राम रघुवर
मोंसो अधम पतितको सुनिए विनती ।
कोटि कोटि अपराध भरे मेरे रोम रोममें
कहांलो गनाऊं कहत लाज मन महामन्द कौन गिनती ॥
जनम जनम लौं पाप कमायो बाज न आयो
कुमति कुटिल खल निलज शिरोमणि तापर सनमुख
भाषत भनती ।
लक्षण दास भरोसो नएको निज करनीको
सुजश रावरो वेदन गायो गणिका गीध व्याध
गज पांवर सुनि सबन की विनती ॥

३१

जोरो रामलक्षणको अहेरो जात चले
सङ्गलिए मधि प्राणजानकी ।
जटाको मुकुट सुकट सीस सरको
दण्डकर कांधे मोहत जात सबको
मन निविड़ प्रवेश मानों कानन कहुँ
निलिनी ससि भानको ॥
जुगल कला पूरण रमत प्रकाश करत बिपत
काल सङ्ग लिए निधन करनके हेतु वृन्द जात धानकी ।
लक्षण दास धनि धनि भाग सबनके रूप उदधि
वाढ्यो वन आनन्द रतन खानि मुक्ति लिए कर
धर्म्म दानकी ॥

३२

जादिन साधुचरण चल आवत ।
तादिन भाग उदै जुगजुगके सुख देखत प्रगटावत ॥
जाके पदपङ्कजके आगे चार पदारथ धावत ।
अष्टसिद्ध नवनिद्धि सम्पदा सुख समूह यह छावत ॥
भुक्ता मुक्ता आङ्गनमें डोलत पुलक प्रभाव बढ़ावत ।
दरश सुफलकी अवध जगतमें वेद पुरानन गावत ॥
गङ्गादिक तीरथ अवगाहन अवलोकत फल पावत ।
अगनित कलुष कलेस धरे उरविन श्रम सद्य नसावत ॥
तीन लोक दश चारो भवनमें के सुकृत सलिल नवावत ।
दुख दरिद्र दीनता मलिनता दरि दुख दोष बहावत ॥
इहफल सरस आन नहिँ त्रिभुवन कोटि जग सकुचावत ।
सुरतरु कामधेन चिन्तामणि यह अनुचर सङ्ग ल्यावत ॥
जाके पदकी रेनु सुअञ्जन हितकर नैन लगावत ।
दूर करत भ्रम तिमिर लोगको अनुभव
अलख लखावत ॥
कहांलौं करूं सन्तकी महिमा कविकुल बुध लजावत ।
लक्षणदास दयाकर जगमें हरिजन हरिही मिलावत ॥

३३

आज दोउ मेरे नैन विवस भए
कवि देख परत नहीं पलकरो ।

कटि पट कसनि लसनि मुक्तावलि
वनमाला हलकानि सुर सुसक्यानि झुकिझुकि
चित चुभरही दोउ अलकरी ॥

३४

वादिन केवल जइएरी जादिन पीतमसों होय मिलन ।
तन मन धन सब वारूंगी इन चरणकमल ऊपर
पांवड़े विछाऊंगी नैन पलन ॥
कारण मोहन अपनोही गरे डार लेहैं
सरस रस ललित अधारण ।
कहे मियां तानसेन कबधौं मिले आय
दरस परस इन संयोगन ॥

३५

तुही अम्बे आदि भवानी असुरसंधारनी
आनन्दी दुर्गे भक्तउधारनी महारानी ।
उमा शिवा करालबदनी त्रिशूल-शूल-परधरनी
ज्वालामुखी योगमाया जगत-जननी ॥
गौरी गिरिजा सिद्ध-सिद्धदानी करहु कृपा
काली धीरज पर शारदा सरसुती वाकवानी ।

३६

कहा जानै सार हमारी गउअनके चरैया ।
ब्रजबनिता सब बन बन आई भई है कुबरी
प्यारी दैया ॥

३७

जबते राम नाम निस्ताख्यो ।
चार पहरमें एक घड़ी भजु तोहि हरि जग ताख्यो ॥
काशीपुरीमधि गौरीपति शङ्कर ध्यान जो धाख्यो ।
कीट पतङ्ग तरे सुमरनतें राधोजी यश बिस्ताख्यो ॥
अजामिल गणिका गृहवासी पुरहित नाम पुकाख्यो ।
गज और गीध तरे सुमरनतें ब्रह्मावेद उचाख्यो ॥
परम पुनीत नाम गिरिधरको हरिजन होय सो धाख्यो ।
नामदेव कहे सोई सन्त शिरोमणि
चिततें नेक न टाख्यो ॥

३८

विठीयो दियो न जाई बैठियो म्हारो ठाकुर
पार परोसन पूछे रैना माछान कीणीने छाई ॥
बिन डांडां बिन बांक वकोडां कुण बन्धान बन्धाई ।
हरिसों जोर जगतसो तोरे तो बैठियो सहजाई पाई ॥
देवल फेरो दरसन दीधा मृतक धेनु जीवाई ।
नामदेव कहे सुनो भाई साधो बैठियाके वलजाई ॥
उमावाई वैठियो दियो न जाई ॥
वैठिया ना गुण गाऊं रेउ ॥

३९

बिपिन मध बिहरतहै पियप्यारी ।
नन्दकुमार वृषभानुनन्दिनी
हिलमिल गलवहियां डारी ॥
भूषण बसन ललित अङ्ग सोहनी
दीपत क्रान्त सबबिध प्रगटारी ।
श्रीमुसकावत कदम तरे ठाढ़े
शोभा-सदन अपार मुरारि ।
कबहुं कुञ्ज निकुञ्जन नाहीं
निरख छवि अतुलित पिय प्यारी ।
झुक रही ललित लता द्रुमननको
हरियाली चहुँ दिश वनचारी ।
बोलत पंछी लगत सुहाए ख्याल बिलोक अपारी ॥

४०

बिहरत प्यारी प्यारी वृन्दावन छविछाई ।
रास बिलास करत जमुनातट शरद रैन उजियारी ॥
नटवर रूप किए नन्दनन्दन राजत व्रज-वनवारी ।
गावत राग रागिनी हिलमिल ख्याल खुशाल अपारी ॥

४१

प्रभु लाल हमको सोंह दिलाके आप सोंह खायके
अब मन चाहत औरनसों करवेको रङ्ग रलियां ।
हमतो झूठेसे तुम कछु सांचेसे नजर आवत
अब समुझो बात नहीं भलियां ॥

४२

ॐकार ब्रह्मा उचारो चारहु आनन
तार करन सप्त प्रमाण ।
सप्तस्वर तीन ग्राम इकइस मूर्च्छना
बाइस सुरत उनचास कोट तान ॥
आरोही अवरोही अस्थायी सञ्चायी
अंश न्यास ग्रह जान ।
औड़व खाड़व सुर सम्पूरन
तानसेन गुरु ज्ञान उर आन ॥

४३

प्रथम ॐकार टेरो ब्रह्म चतुरानन ।
जाको अक्षर सब रङ्ग भरपूर रह्यो बाणी तारण तरन ॥
अलख अपार अगम निगम रहत
करत राग रङ्ग उरधार धरन ॥
गुण गुणरहित सगुण निरगुण सब जग आधारन ।
बेजू प्रभु आदि योति निरञ्जन निराकार
सूक्ष्म बिराटरूप घट घट व्याप रह्यो नारी नरन ॥

४४

जे जे तुरङ्ग अनेक अमोल मोलए रापत
जिनके झूल लागी जरकसी झीनो ।
अनेक रतन नगन बहु भांतिन तिनमें
गज एकन एक नवीनो ॥
षट्ऋतु षट् दरसनके प्रसाद दीनो
हिन्दूपति पातसाह प्रवीनो ।
तोसों तुही और नाहीं मेरेजान राजनके राजा
राजा रामचन्द्र अनगनती दानदीनो ॥

४५

जो जो बचन कहतहौंरी तोसों
तेइ तेइ बचत तू मानले सयान ।
मेरे कहे तू उठ चलरी ललना
धरेही रहेंगे तेरे जियको गुमान ॥
कल न लागे औरतें तेरो तेरो है जीवन प्राण ।
तानसेन तेरो कहालों अगुति करे
क्योंतू जान होरही अजान ॥

४६

तेरे विद्याको कहों अचम्भो जोइ जोइ
देखियत सोई अदली ।
गुणतो तोमें उपजत है ज्यों कपूर कदली ॥

४७

शुभ दिन शुभ घरी शुभ महरत
बैठे तखत मुबारक नौरोज ।
देशपति और गञ्जपतिते जो गए
पराशन खलवली परी रूम शाम कहूं अनपायो खोज ॥
चार दिशा और तीनो लोकमें
तोसों तुही और दूजो नहीं कोज ।
अदण्ड दण्डन अखण्ड खण्डन हाथ जोर
विनती करे साहनसाह पीर गुनी जनको
देत करोरन दान तकत तुमारी मोज ॥

४८

तू साहब मेरा करीम रहीम कहाँलों शुकर करूं तेरा ।
सत्तार जव्वार अजीब कुदरत तेरी
जापे सुदृष्ट चाहे नेरा ॥
तू परद पोश दाना वीणा पाक जात तेरी रचना
सब घट घट तेरा बसेरा ।
हिदायत आजजको दीजे सन्तत संपत
अपने जान सनघेरा ॥

४९

वागरके पातसाह हादी सकर वारहो
आए तक् दरवार ।
मोरी नेवरिया मांझ धारमें तुमही उतारो पार ॥

५०

जो चाहे सो करे तूही तू ऐसो पाक परवर दिगार ।
बेचुन बेचगुन बेशुबे बेनमुन कुनफे कुनके कहे कौन
रचना अपनी अपनी मिकार ॥
जीव जन्तु पवन पानो आसमान सब तोहे रटत
तेरेही नाम को लिए आधार ।
जबते सुन तबते एक महम्मद नामके कारण
कीने नूर मह्मर ऐसो रसना कहो

जो तेरो अस्तुत करे हिदायत आजजको दीजे
सन्तत सम्पत दीन दुनी कुशल क्षेम और चाहत दिदार ॥

५१

सोच कहा रहेहो लाल मनही मन
अब कौन चितवन आनिचढ़ी ।
नेक हौंहूं सुन पाऊं तो करों उपज चतुर
कोउ नईके पुरानो चढ़ी ॥
वाहि वेग लाय मिलाउ परचे उत मोह्न रखिए
गांठ बांध ऐसो क्योंन होय चतुर कढ़ी ।
सदारङ्ग बलमा मोसोंहो छिपावो जिन
बात जातहै बढ़ी ॥

५२

जब आए आपहो मनावन तब समझ
जियमें कैसे धों घर बैठ रहूं ।
हाका करत पाँए परत बोलाय लेत
पोर वासों कहा कहूं ॥

५३

कहावे गुनी जो साधे नाद शवद जाल कर थोक गावै ।
मारग देशी कर मूर्च्छना गुण उपजै मति
सिद्धगुरु साध चावै सो पञ्चन मध दरपावै ॥
उक्ति युक्ति भक्ति मुक्ति गुप्त होवै ध्यान लगावै ।
तब गोपाल नायक अष्टसिद्ध नवनिद्ध जगत मध पावै ॥

५४

आलीरी देखेहो रहिए मोहन प्रीतम पै
कहा चढ़रहो रिसौंहै ।
एतो हट काहेको कीजियत बावरो
जो मिले चाहत तेरो मग ठाढ़ो जोहै ॥
तेरो उनको नेह जैसे सोना सोहागा
एकरङ्ग एक सङ्ग सोहै ।
मदनके प्रभुको मगन मन ए न मानेरी
ऐसो कहाँधौं धरि मन गोहै ॥

५५

महादेवदेव देवनपति सुर-ईश्वर
शङ्कर पारवतीपति दुखहरण ।
वामदेव आदिदेव जटाजूट धुरजटो
डमरु बाजत डिम डिम सब सुख करन ॥
रूप बहुरूप भूतनाथ भुवनेश्वर भोलानाथ गौरवरन ।
तानसेनके प्रभु रीझत तुरतही
देत मन इच्छा करें काज अशरण-शरण ॥

५६

पचत गुनी सब धुरपदको कोउ न पावै
बाज बहादुरके अङ्ग ।
छन्द कवित्त धारु तेवट तोहोपै जो बन आवत
जोइ पावत दरस परस वाके सङ्ग ॥
सङ्गीत-रत्नाकरके लछ लछन भेद हनुमत
कामनाथ भरत जानत मत मतङ्ग ।
ऐसो दाता सुर पूरो राजा रामचन्द
देत करोरन रीझत रागरङ्ग ॥

५७

ब्रज गोकुल मथुरा वृन्दावन कुरुक्षेत्र
हस्तिनापुर हरिद्वार बद्रीनाथ योगध्यानी ।
नैमिसार अयोध्या प्रयाग काशी गया
हरिहर जनकपुर आदिवराह सुखदानी ॥
गङ्गासागर साक्षीगोपाल जगन्नाथ पद्मा-
वृसिंह श्रीरङ्ग रामनाथ पद्मनाभ सारङ्गपाणि ।
विठलनाथ पुण्डरीक डाकोरनाथ द्वारकाधीश
धरणीधर श्रीनाथजी रूप चतुर्भुज
सागर गुन आगर प्रभु देत इच्छा मनमानी ॥

५८

एकदन्तवन्त लम्बोदर कोरत जाहि बिराजे ।
गणेश गौरीसुत महामुनि महिमासागर
गुरु गणनाथ अविघन राजे ॥
हेरम्ब गणदीपक तुही महातुर उग्रतप
वट चन्द्रमागीश विनायक जगतके शिरताजे ।

तानसेनको प्रसाद दीजे सकल बुध नवनिधके
सदा दायक नायक जगतके सरे काजे ॥

५९

एकदन्त गजवदन विनायक विघ्नविनाशन है सुखदाई।
लम्बोदर गजानन जगवन्दन शिवसुत
ढुण्ढीराज सब वरदाई ॥
गौरीसुत गणेश मूषिकवाहन फरसाधर
शङ्करसुवन रिद्धसिद्ध नवनिद्ध दाई।
तानसेन तेरी अस्तुत करत काटे कलेश
प्रथम वन्दन करत द्वन्द मिट जाई ॥

६०

आदि पूजो देवगणेश विघन-हरण सुख-करण
गिरिजापुत्र विनायक।
लम्बोदर हैमात्र एकदन्त गजवदन
सिन्दूरवरण सब विधिनायक ॥
मूषिकवाहन हेरम्ब गणपति जाकहं सुरनर
मुनिगण गन्धर्व किन्नर नमो नमो त्रयदेव
गायक आधीननके वरदायक ॥

६१

प्रथमही आनन्द रचो नीको घरी
मङ्गरत पञ्चो शब्द बजाए।
देश देशके याचक जेते आवत तेते पावत
गज तुरङ्ग नग दान मुक्ता वरसाए ॥
अष्टोधरन मध्यनाम ज्योति
अरिनके मारवेको विधिने बनाए।
तानसेन कहे युग युग चिरञ्जीव रहो
राजाराम तेरो यश तिहूं लोक छाए ॥

६२

नादसमुद्र अपरम्पार काहू न पायो पार अपार भेद।
केते गुणी गन्धर्व यक्ष किन्नर रचिपचि हार रहे
सुर नर मुनि गुनि चारों वेद ॥
सप्त सुर शब्द ब्रह्म निरञ्जन निरङ्कार
निरभय भेष रचिपचि कर थाके खेद ॥
तानसेन जन आरत विनय करत
धन धन नाद अलख अभेद ॥

६३

तूही एक आदि निरञ्जन निराकार
नादरूप तेरोही पसारो पूरो सब संसार।
अलख अव्यक्त जग-निस्तारन-कर तूही
एक पाकपरवर अपरम्पार ॥
जल थल धरणी धवल तूही पूरण
सकल महीमण्डल तेरोही अधार।
तानसेनको दुख दारिद्र दूर करो
कर्त्ता हरता तू करतार ॥

६४

नादगढ़ मन राजा राज सजत छहों राग
उमराव बैठे दुरजन पर नीके रक्षा करत।
नाना राग रागिणी छतीस तुपक
भर भर धर सोई इकइस मूर्च्छना गीत
नाल धारू धोवा माटा परमाटा चतुरङ्ग
जम्बू राग जलवै पारसी छन्द रच्यो
शत जञ्जाल त्रेवट रामचङ्गे सङ्गीत
दारू तानन गजबाँस ढाँस झुमरा गोला भरत ॥
सप्त सुर सप्त पौर औड़व खाड़व किवाड़
आरोही अवरोही खाई बनाई
कौल तिलाना कोतवाल ध्रुवपद वजीर
प्रवन्धको निशानी आय लरवेको
धाय विद्याको लराई लरत।
तानसेन कहे ऐसो अगम अथाह जाको पार न पायो
रचपच हारे कहू न लाग लमोकान पकर पकर धरत ॥

६५

नगरनाद मध चक्र मत चौपर हाट बसायो।
सुरहाटी अक्षर जिनस लेत सुवरन हाथ बिचायो ॥
सुर कोतवाल सुरतले प्यादा गमक गस्त फिरायो।
सुनत भाव सब गुनियन मिलके
तानसेन निरख मँगायो ॥

९६

जे गुणीजन गुरु पावै गावै नीको तान गुणसों रिझावै ।
जब बजावै बीन अच्छी नीको परमाण सोच समझ
तान लेत ध्यान धरत जियामें जब सुर सङ्गत पावै
ढुरन मुरनसों वाकी समझ आवै ॥
सप्त तीन इकईस बाइसौ लागडाट
खुलो मुदी दरसावै ।
सप्तध्याय सङ्गीत मत करके तब तानसेन
प्रभुको रिझावै ॥

९७

अब बन आई कर सोलहु सिङ्गार
नख सिखलों रम्भासी ए नवल नार ।
आतुर चातुर तुम पिय नीके जानत
लछ लछन चार भाँति कोक कला प्रवीण सार ॥

९८

प्यारी तेरे नैनन मीन कर लीने हैं नवीने ।
भौंहै कमान नीके तान कमल मृग लज्जित भए
मोहै कटाच्छन कीने ॥

९९

चढ़ो चिरञ्जीव साह अकबर साहनसाह
बादसाह तखत बैठो छत्र फिरे निशान ।
दिल्लीपति तुम नबीजीको नायब अति सुन्दर सुलतान ॥
चारो देश लिए कर जोर कमान
राजा राव उमराव सब मानत तोरी आन ।
कहे मिया तानसेन सुनियो महाजान तुमसे तुमही
और नाहीं दूजो गुणी जननके राखत मान ॥

७०

आपसमें दम्पति दोउ मिल करत सिङ्गार
एक अङ्गोछे पोंछत मुख एक सुधार पाग ।
सब निश जागे प्रेम मधु छाके तातें झुकझुक गरे लगत
यह बनावे हितुअनके जागे भाग ॥

७१

पियके मनमें न नैनन भावै भावै तेरो जोवन नियको।
तेरे रूप रस बश भयो प्राणपति तो जिय
चाहे आन न काहू तियको ॥
रूप जोवन तोहे दीनो करतार
बनाए आलो कोप ना रहो गर्भ हियको ।
प्रभु विलास नवल लाल रिसाल प्रीत नई
आलीरो आनन्द बढ़ो जियको ॥

७२

तेरो नाम चहुं चक भरपूर रहो तुही
दुरत फिरत तुही सबनमें करत किलोल ।
तुही तान तुही मान तुही रोम रोम
रम रही तुही सुन तुही बोले बोल ॥
शेष सहस रसना तेहू स्तुति न कर सकत
तेरो रूप तुही जाने तुही अमोल ।
गुप्त प्रगट तेरी गति तुही जाने
तुही सागर गुण आगर तुही मूंदत तुही खोल ॥

७३

मेरी तो तोहिलों दौर जानत न और ठौर
तेरी रीझ बूझ मोको और न शरणहै ।
तुही तन तुही मन धन तुही परिवार
तुही मूल वरण है ॥

७४

गोकुल गोचारण गोपाल गरुड़पति
गरुड़गामी गोविन्द गिरिधारी ।
जनार्दन हृषीकेश रङ्गनाथ रणछोड़ वामन वनवारी ॥
जानराय जगतपति जगजीवन जगन्नाथ
माधो मधुसूदन मुकुन्द मुरारि ।
धीरज प्रभु विहारी गोपीनाथ नृत्यकारी ॥
उरपति रपलेत भारी रिझावन गोपनारी
तारण व्रतधारी ॥

७५

श्रीजगन्नाथ रामेश्वर रणछोड़ नीकम
बद्रीनाथ योगध्यानी ।

अयोध्या मधुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका
पुरी द्वारावती चैया सप्तैता मोक्षदानी ॥
पुष्कर प्रयाग अलकानन्दा भागीरथी
गण्डकी सरयू यमुना वेद न बखानी ।
इन हूंको नाम लेत धरत ध्यान
कटत पाप जानकीदास सर्व्व सुखखानी ॥

७६

अति अलसानी रोआली झपक चलन गति मन्द चलन ।
मोहनसों मिल आई तबही मैं जानपाई
चतुराई करन लागी चतुर तरन ॥
प्रेमकी चोरी करतरी सजनी कैसे दुरत
तेरी सोंधेकी हरण ।
धीरजके प्रभुसों रितमान आई
कोटि काम लागी चमर ढुरण ॥

७७

दिनकरतनया तीर परेई रहत
जो जिनको मोहन गोहन लीनें ।
जिन सङ्ग हंसन खेलन तिन सङ्ग विहार
तिनहीको अपनो कीनें ॥
जिन सङ्ग रास विलास शरद निशि
जिन सङ्ग गावत सुर झीनें ।
जीवन गिरिधर अरस परस भए लेत तान रङ्ग भीनें ॥

७८

सप्तसुर तिनग्राम इकईस मूरछना
उनञ्चाश कोटि तान मण्डल मधिगावै ।
चारु करन हस्त शिर नैन भेद भांति भांति
उपजत गत निरत करत भृकुटी नचावै ॥

७९

बरणन को कर सकत हरिके गुणानुवाद
शेष सहस्र शुक पावत नाहीं पार ।
सनक सनन्दन सनातन सनतकुमार
ब्रह्मा शिव व्यास वारद नारद हाहाहुहु गान्धर्व्व
गावत नित नित नाम सार ॥

सुर नर मुनि सब रच गए पच गए
वाको मरम भेद कोउ न जानत अपरम्पार ।
बैजू बावरि प्रभु भक्तवत्सलहै सब जगके करतार ॥

८०

सोंहै सोंहै कत खात बात कहत तोतरात
प्रात आएहो जहांते अब तहांही क्यों न जात ।
चिन्ह देखियतहै गात यातें अरसात जम्हात
याहीतें उपजावत मेरो मन मनावत ॥
अबहु ए न ए कहत न सोहात एक लङ्गर
सो ढीट मन मन मुसक्यात ।
विलासके प्रभु परघर गमन छाँड़ो हमसों
अवध बद अनत विरम रहे आएहो मेरे परभात ॥

८१

सीस फूल मांग टीको वेसर मोती डोले करणफूल
श्रवणन नवरोज मानो जुग रवि करत किलोल ।
गरे कण्ठसरी भाल बेंदी नख शिख
भूषण नग अमोल ॥
कटि किङ्किनी भुज बाजूबन्द रखरी
नैनन अञ्जन मन्द हसन नख छोल ।
वीरवलके प्रभु रीझ थकित भए रस
बस करलीने मोहन नागर रसघोल ॥

८२

परस्पर दम्पत मिल करत सिङ्गार एक
अँगोछाले पोंछत मुख एक सुधारत पेंच पाग ।
सब निश जागे प्रेम रूप रस मधु छके ताते
झुक झुक गरे लाग लाग ॥
ले दर्पण आपसमें निरखत प्यारो प्यारो
ले वीण बजावत गावत राग ।
तानसेन प्रभु दोनो चिरञ्जीव रहो
देत दरस भक्तनको धन धन धन भाग ॥

८३

सङ्गत घङ्गत लिए राग गावत अव गुणी जन
करम अदेख ।

सप्तभेदसों अलाप सुनावै तब गुणीयन मन मनावै
साध साधके लेख ॥

८४

अचानक हौं बैठी आय गए पियासै नको
केतो छल एतो उठि कहा बैठी आप अनछाड़े ।
तुम सब मेरो हितको जानत नाहीं
कोउ भई आए आड़े ॥
जोइ जोइ मन भाए सोइ सोइ कीनो
कबकी टेर दीनी ठाड़े ठाड़े ।
साहब असलेम पिया मिल ऐसो कौतुक कीनो
मेरे आभूषणके मोतिन में पड़ि गाड़े ॥

८५

दिन दिन चिरञ्जीवि रहो राजन
मन राजन जोलों ध्रुव धरण तार ।
मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह वामन परशराम
रामकृष्ण बुध कलंकी मिल रचा करत करतार ॥
जौलों गङ्गा यमुना जल तौलों राजकरो
गुणीजन आशीष देत पावत मनवाञ्छित फल चार ।
धन धन श्रीरणबहादुर साहजू तेरो प्रताप
सुयश फैल रह्यो जगमें अधिक यश विस्तार ॥

८६

शाकेको विक्रम देवेको कुल करण वेद सम नहीं ज्ञान ।
बलको भीम पैजको परशराम वाचाको
युधिष्ठिर तेज प्रतापको भान ॥
इन्द्रसेन राज सूरतको कामदेव मेरु समान ।
तानसेन कहे सुनो साह अकबर
राजनमें राजाराम नन्दन विरह भान ॥

८७

अनुक्रमसों पावै तीवर तरतीवर कोमल
सकारी त्रय भेद सङ्ग लिए सुरताल ।
सप्तसुर तीन ग्राम इकईस मूर्च्छना
उनचास कोट तान अक्षर सुर साचें चाल ॥

औड़व खाड़व सम्पूरन याको
व्योरो बूझवो सङ्गीत बड़ो जाल ।
तान तरङ्ग कहे तुम नीके जानत
समझ कर लीजिए अपने मनमें भुअपाल ॥

८८

धीरे धीरे धीरे कान्ह सीखो परगट्ट आवन ।
हौंतो अबही जाय कहूंगी नन्दराय सों
बिधिते हमको चलावन ॥
कैसे बल छल बोलके कर भेषधरो जब वामन ।
तान तरङ्ग प्रभु ऐसो हौं न गँवार तुम
मोहि लागे बौरावन ॥

८९

करमको नजर कीजे मोपर
महरबान हजरत मरदान ।
कोउ बन आवत नाहीं सुंह आय परिहै निदान ॥
जेह दुख धरत तुअ नामको टेरत
छिनमें होत असान ।
बड़ी बात कहा तुमरे आगे दोजै धन मोहे दान ॥

९०

ऐसे बहुत चले नए नए हुनार ।
ततछिन सीखत रहत विद्याधर वे जो
कहावत जे नहीं समझत जो धन धन मत पार ॥

९१

अनेकप्रकार करम नादसमुद्र अपरम्पार सङ्गीत गुर ।
सप्तसुर तीनग्राम बिचार जानिए सुर
रिषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाद सुर ॥

९२

तनकूप जीवनाद ग्राम लेजो बोले
डोले बारबार अचौसिए ।
तरु मान ऐसो विचित्त सब कासिए आरध उरध
दोउ सुरकिए महिमा वृषभान जोत जोरिए ॥
धरत अलाप अक्षर खरज वरण
वर तान फूलसे लागत सींचत निए ।

चारो तुकन उगत जुगत अछीतान दीरघ एही
लागे मानों तिनको सिखा ओड़व खाड़व
भई मूरछना निए ॥
सप्तसुर सरिता भई सांचीरभ सन नेत्र कमल सवाद
धरोए करिए घरी घरो पल पल रसना रचनिए ॥

९३

गागर ढ़ार देतहै गारी एते
पर कहूंगी नन्द यशोदा सों ए ।
तुम चतुर हम नीके जानत सबन छांड़ लागे
मोसों अहो बातें बन आई करो तोसों ए ॥

९४

जैसे पूरे पूरे कहो तेरेरो अलाप पावत
प्रथम सब गुणी मिल देखो राग सरस ।
अस्थायी सञ्चायीको विलोक करत
देखावत जबहीं वाक्वाणी परस ॥
मेरे भाग जागेरो अब मैं पायो पीतमको दरस ।
होतों तिहारो भिखारी सबबिध जानतहो तुम सरस ॥

९५

नैनन मग जोवत मध भूअ पलक न लागेरो ढगए ।
जादिनतें बिछुरे प्राणपति तबते
निश बासर मोको जात सब एक टगए ॥
हों इनके समीपते कबहुं
न्यारी ना भई न जानों एतो दुख
आलोरी हो विरह सतावेरी अङ्ग अनङ्गए ।
अकबरसाह विचित्र भेटोंगी
अङ्गो भरत बजेहैं मों तन मनमथ दगए ॥

९६

रङ्ग रङ्ग है रङ्ग अलहको सकेतो मन रंगले अपनो ।
भूअकाश रवि शशी एजो
देखियतहै योंज्यो रैनको सपनो ॥
माया मोह लोभ क्रोध तज जियमें
अष्ट याम रख रवको जपनो ।
ऐसो सुख न जगतमें दूजो जिन
बूझे सोइ बिध लपनो ॥

९७

रसमसे आयेहो वाके चिह्न भरे
नैन सैन मधुरे बैनन और तोतरात ।
अति अरसात जम्भात ऐंड़ात हौजू तुम
शिथिल गात पग ड़गमगात ॥

९८

जैसे बन आई पिय पीतकी रीत
तासों क्योंन जाय रित मानिए ।
एतो दुराव कित करतहो प्यारो
बातें सबही अब नीके जानिए ॥

९९

यह युग युग होय तुमको सुवारक ईदको त्योहार ।
ऐसेही करवो करो लाख बरस लौं
सरोपाव भूषण महोरन और दै दै आसीस भर भर थार ॥

१००

गुणी गन्धर्व्व अस्तुत करत है जान सरोमन ।
अङ्ग अङ्गको परछको गुणी जन
सोधतहै तोसें तूहै रार गमन ॥

१०१

शिवशक्ति आनन्दी आदि भवानी
दयानी दयाकीजे दरसन नैनन ।
तिहूं लोकमानी शिवानी मृड़ानी एसो प्रताप दीजे
अब दुख कलेश नारहे रहे शरीर सुख चैन ॥

देशी टौड़ी

चक्रावर्ती छत्रपति साहअकबर नर आयोरे नर आयो ।
जाके चढ़ेते सेस कलम त्योधरन हलोरी
गरद गगन छायो ॥

२

पिय मनहरनी पै मृगनयनी
मान छांड़ोहो चम्पकवरनी तू विचित्रतरणी ।
वे तो नवल लाल हेतसो बुलाय लेत तू चन्द्रमुखी
मेरे जान तरफ तरफ जियंहोत तेरी मरणी ॥

३

कीनो निहाल लाल सब सौतनमें
रखिहौं हो कर उरमाल ।
तिहारो बानक देख रीझ थकित भई
तन मन प्राण रिसाल ॥

४

अनहद शब्द उपजो सो घटमें ताको
ध्यान धरूं अष्टयाम ।
खरज रिषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत
निषाद पावै ज्यों अति अभिराम ॥
अर्थ धर्म्म काम मोक्ष चारो पदारथ पाए
जब प्रगटो नाद ब्रह्म सहसरूप अनन्द धाम ।
धन धन ज्योतिस्वरूप अचरज कर
और परसे तानसेन कण्ठठाम ॥

५

बङ्कासुर चोंप प्रगटि छवि प्रकाश और सुर कटाच्छ दरशन
मनो मध गजगवनी पियूषअधर वदन इन्द्र धरन ।
मन्द अमन्द परमल वास तेरो लछमी और जैतो रम्भा
प्राणपति पीरहरण ॥
उदद मादत ततु अरतन कारण
भस्मनाम सुखसङ्ग भई ऐसी चञ्चलता धरन ।
यह लीन प्रकारन लीनो अक्वरसाह
कामधेनु लागो अति सेवा करन ॥

६

पिय दरसनके लोभी मेरे नेना बैरागो भए ।
लोकलाज कुलकान तजि डार दई सब सोभा पाए ॥

७

बांकेसुर चोप नित नई भाँत न मानो
दयानी गजगन कोन गिने ताराणी ।
रूम शाम खुराशान प्रथोतो
जगाए कमठ पीठ खलबलानो ॥

८

आनन्दित आनन्दो पारवती सरस्वती
दुर्गादेवी गङ्गा गुरु अरधंगी ।
चहुं चक जानो मानि सयानो भागोरथी
विद्यावर यमुना त्रवेणी एमातरङ्गी ॥

९

त्रस्नाको तजि देहु क्षमाको भजन करहु मदको जीत
लेहु नित दया हियमें धारि पाप सों राखो दूर चित
सत्य वचन मुखबोल साधु पदवी जोयधारो ।
सतपुरुषनको सेवन करो नम्रता अति विस्तारो
सब गुणसों आप गुप्त विद्वज्जननको सेवा करो
यामें होवे निस्तारो ॥
मान अपमान त्यागो काम क्रोध दुरजनतें
भागो ज्ञान ध्यान अनुरागो हरिनामको उचारो ।
कोमल बचन मुख भाखो एक ब्रह्म सब जग
राखो बैजू प्रभुको धरो पल छिन निश दिन
रटना रटो तातें होय जग उधारो ॥

१०

कालिन्दीके कूल कदमको छैयां
देखो बनवारो बंसी मृदु बजोयतहै ।
सुनत श्रवण वीर धरत न मन धीर
नेक न परत कल वही भजोयतहै ॥

११

बोल बोल मधुर धुन सुरली बन में
रचपच कर रङ्ग राग कर रस बस ।
सप्त तीन इकईस बाइसो जनचास सप्तध्याय गान सरस ॥

१२

ए तुम सज सज दल चढ़त जब भूप पर भार होत ।
थर थरात देश देशके गढ़पति सुन धाक धर हरात ॥
जाके चढ़ेते खुर रेन उड़त गगन छिप जात खल बल
परत सिंह छूपै बाजत निशान जब शब्द घहरात ।
देव दानो और रावकतें भाज गए
सब पाताल लोक मढ पीठ कलमलात ॥
सहस सहस कुनफाट कटि चूर चूर भयो थरहरात ।
महाराजाधिराज राजा रामचन्द्रको असवारी होत ।

अश्वदल गजदल पयदल सुन सुन
अकअकात धक धकात ॥
एसो सुरोपूरो तप तेज वोसो वोही दूजो नाहीं
मेरे जान तानसेन गुनीजनको अजाच कीनों
बाकी सूरत मूरत पर खल बल जात ॥

१३

राग रङ्ग सुध मुद्रा सुध अक्षर
सुध छन्द पढ़यतहै साँचे गुरुन सो पावे लेख ।
सुर भेद ताल भेद बिचारके साधे ध्याय ताल ध्याय
वाद्य नृत्य प्रकीरण सङ्गीत शास्त्रको देख ॥
धारु ध्रुपद प्रवन्ध छन्द गीत गुनी माटा चतुरङ्ग
त्रेवट तिलानी देश विदेश भाषा संस्कृत विशेख ।
कहे बैजूबावरे सुनो हो मेरे गोपाल नायक हिरन बोलावे
पाहन पिघलावे तेरी लाख मेरो एक ॥

वहादुरी—टौड़ी

काम्ह गाय काहे न लेजे हो
बन तट भएहै प्रेम वैराग ।
एसे वीर हो ग्वाल कविके कहियत
उझकत थिर न रहत अब घरघर नैन सैन कछु लाग ॥

२

दोनो करतार तुमें राज साजको
सकल सोभो एसोनाह और कोउ जानी ।
साहब सुजान समझ तानको राखत हो तुम
गुनो आय गावत ए नीको सुध वानी ॥
जानत है नीके भाग आपन बैजू रहत है
रीझ जगत में तुमारो अमीर रावरानी ।
देतहो दान सनमान दुख दारिद्र विड़यन हमरे कारण
कियो तुमहूं को अब साहव किरान सानी ॥

लाचारी—टौड़ी

रूप निरञ्जन अञ्जन रहत ताहि वरनवे कों
उदित भए छहो शास्त्र अठारहो पुराण ।
ताको भेद नहीं पावत शिव सनकादिक
ब्रह्मा नारद शेष रटत कोउ ब्रह्मा शिव घट व्यापक
कोट कोट ब्रह्माण्ड रचत देखले हों बुधवान ॥
आदि अन्त मध्य वोही त्रइलोक चराचर वाहीको
इच्छाते करत बिनान ।
तानसेनके प्रभु सब जग व्याप रहो
पूरण ब्रह्म अविनाशी निरङ्कार अविनाशी भगवान ॥

दरबारी—टौड़ी

तू असमान को दूजो रच्यो नाह न
गुण समर्थ आयोहै धर्मराज गरीवनिवाज ।
तुम सम और कौन महागान गुण निधान
दाता विधाता रचपच विरञ्च ज्ञान समाज ॥
भरण पोषण दुख दारिद्र हरण षट्दरशन
निवास सकल साज ।
तानसेन कहे प्रभु हिंदू सुलतान भक्त
उधारन भगवान तानें प्रगट कियो सकल गुनसाज ॥

२

गावो गणेश महेश सुर हर महादेव ।
जो शिव शङ्कर गिरिजापति पिनाकपाणि कैलासेश्वर ॥

टौड़ी—चौताल

एरी हूं तो लेन आई लालन मया कर बुलाई ।
हों जो मनावत तू नहीं मानत कौन बदी एसी निठुराई ॥
मेरो कहो तू मान कररी तोहै लालनको दुहाई ॥
उठ चल हिल मिल साहजहाँपे वही तोहि सुखदाई ।
तू अब लागि पियाने पठाई छूटे हार
टूटे हार सखीरी मुख पर आई पिराई ॥

२

बचन निभाइए प्यारे ज्यो मुखतें ए कहै ।
और मेरे करम कर धरसोंह करि और करसों कर गहै ॥

लाचारी—टौड़ी

बावुलरे हो मोहे दीनो विदेश ।
बीरन मागे अपना देश मोहे मिलनको अन्देश ॥

कब हम आवेंगी काज करनको पियासङ्ग
चलि लिखनें जोग सन्देश ।
गुण औगुण मोमें कछु समझ न परतहै
दूर लागत है कैसें निभहैगो वाली वेश ॥
गुड़ीया खिलोना ताकमें धरि रहे
नहीं खेलनको लवलेश ।
हाथी घोड़ा पालको दीनो बहुविध धन दीनो
पालन पोषण कीनो नरेश ॥
देहरी पर्व्वत हो गयो अङ्गना भयो विदेश ।
चली सइयांके सङ्गमें अबतो भयोहै बिदेश ।
भई पियके शरण मोरे बाबुल गाढ़ो चरण गह्यो परेश ॥

टौड़ी—चौताल

हमारी सुरत बिसारी बनवारी हो
सरबस दै दै हारी तोहू न भए सपनें अपनें मुरारि ।
वें मोहन मधुकर समान अनगन वेलि चित लावत धावत
मो विरहिन विरह व्यापत फनपत धीर धरे न धारी ॥
एसे निठुर निरदईके बस भई जोई कही सोई
सही विरह बावरी ।
विलासके प्रभुको हों न पत्याउ जनम छाड़ु,
नरहु न्यारी ॥

२

मनही मनमें तू रार रही धर आप अपबस करके
सबनतें दुराय बिराय कर रहीसो अरघट परघट
नैन बताय देत ।
प्राणिसुरकी प्रीत अति गुपत कियो चाहतरी
तेरि द्रगपालते अबजान जानलेत ॥
जोलो मैं न सीखाई तोलों आई नेह
नजर जनम जनम हित समेव ।
तानसेन प्रभुके रङ्ग रङ्गे जे अरण वरण सेत असेत ॥

३

दिन दिन दिन आनन्द करत रहत री
ललना लालनके अङ्गसङ्ग ।
तोही सों हिलन मिलन तोही सों प्यार
तोही सों मनके तरंग ॥
एतो काहेरी तू लजाय दुरत तरुण तेरि
जोवन एसो भायो सम कुन्दन अङ्ग ।
राजाराम रिझाय रखे ते बहु भांतन कर राग रङ्ग ॥

४

जे दिन ही दिन बखशत राजकुंवर
जे कहियत है रवि रथके ।
मै धर राखी खुंधारी बलको सुन ताजी
तुरकी अरबी जिनके अब मोल महगी कीरतके ॥
दूधके दांत न एही पञ्च लगे चोखे तोखे
कूदे समरथके ।
वीरभद्र नारायणके लागि रहे धाम षटदर्शन
स्वारथके ॥

टौड़ी—तिताला

तान तरवार तारको सिपर लिए फिरत गुनी जहां तहां
जीते सुभट अपने अनुमान जहाँ तहाँ जीतत तुरत ।
सुर कमान बोल बान छूटत जेहि लागत
रीझत जेही सभा जाने विद्याधर सब जुरत ॥
सप्तकके तरकस उचरत सुरत निजा
असमान् वकतर बाजू लय उपज नई पङ्ग वाजू फुरत
तहां सभाके बीच लरत हरदास डागर ज्यों ज्यों कहे
त्यों त्यों सुनो सुघर सुज्ञान अज्ञान आगे फौजे सुरत ॥

२

नित लीजिये नास बनवारी श्याम हरिभक्त
पूरण काम कृष्ण विष्णु जगतारण ।
जगनिस्तारण जनप्रतिपालन कंसासुरमारण
सन्तउधारण भुवके भारउतारण ॥
मछ कछ वराह नरहर वामन परसराम
राम हलधर नारायण बुध कल्की नानाविध वपुधारण ।
बैजूके प्रभु एकतें अनेक होय बहुरूप बहु भेष धरे
अपने सेवकके जनम-मरण-निवारण ॥

३

मौन-दीन खाजा साह अकबरके दुरजन दूरकरन को
एकछत्र राजा ।
अचल करके तोहि दीनो अष्टसिद्ध नवनिद्ध करो काजा ॥

४

भर भर धर धर आवत गागर नागर
नारिरी कोनके रस मिस केरे ।
औरहि दिननमें एकही बेर जावत पनिया भरन
आज कैऊ बेर आय गई एसे कहा भये नन्दके हेरे ॥
जोतू अब सास ननदको कान करेतो पावे हैकुल डरे ।
हरिदास डागुर प्रभुके कहेते मेरे नैन प्राण सब गए डरे ॥

५

गागर ढार देत है गारी एते पर कहोंगो
नन्द जशोदासों ।
तुम चतुर हम नीके जानत सबत छाड़ लगे
मोसों अहो बातें बनाई कर तोसों ॥

६

धीरे धीरे कान्ह सीखो परग्रह आवन ।
होतो अबही जाय कहोंगो नन्दसों यह
बिधसे हमको चलावन ॥
कैसे बल छल बालक कर भेष धरो जब वामन ।
तान तरङ्ग प्रभु एसो हो गँवार तुम मोहि
लागे बौरावन ॥

७

एक कर दर्पण एक कर कजरा अचरा गहे सुधारत ।
ललना एक काजलमें दूर करन उठत भोर
मुखकमल परत सीस फूल अति विराजत ॥
नगन जड़त की उपमा जीय भइपै
मेरे जान वेऊ दूर रहे सकुचन लाजत ।
जे कहियत है मानो फुन दुरत हो
तानसेन देखत दुख भाजत ॥

८

अति छबि छाजत है ललना लोचन तिहारे ।
रङ्गरङ्गीले रसाल छबीले सोहत लजीले सोंहे खात जात
झुकोहै कछू उझकोहै एसे सोहन होत हमारे ॥
अदभुत रूप गोप बरनो न जाय कोटिक
काम द्युति सुध बुध बिसारे ।
साह जहाँगीर जान बूझ कर सकुचावत
इन नैननमें रैन विहारे ॥

९

अति अलसानें मे जानें पिय अनत रङ्गे
जूरङ्गे हो रङ्ग रागके ।
रिझहित काहू पे रीझकसे बाद जानत रसके
बरखाई आज भंवर काहू बागके ॥
दोष तिहारो नाहीं दोष काहू तियाको
तुमें सिखाई सोख अनुरागके ।
तानसेन प्रभु तुम बहुनायक बात
कहा बनावो सुधारो पेच पागके ॥

१०

भान्ति कहो नबनेहो लाल सूरत की
जो वाके भले निश जाग किए नैन लुलाल ।
अधर अञ्जन नख छत बनो माला उपटी अङ्ग भरे है
प्यारी बोल तोहे सुखदे आएहो मेरे हाल ॥

११

तान तरङ्ग भर धरिए अचर पटरी
क्यों रीझे गुरुनको गुरु साहनसाह अकबर ।
धात मात सोई राखेरी ताको मनआगर
और बुधसागर जाय वाणीवक्वर ॥

१२

प्यारेको प्रकृत जो तुम समझत तेरो
उनको एक गांठी ।
तोहो सो नेह बनआयो दिनही दिनरात
सोती रद भई ज्यो करत क्यो कपट ढांठी ॥

१३

हे गोविन्द नारायण कृष्ण मुरारि भगवन्त जगदीश
माधो मुकुन्द गोपाल हरि परमेश्वर गोवर्द्धनधारी
मधुसूदन श्याम ।

भक्तवत्सल जगदीश गुसाँई दीनदयाल दामोदर
निरञ्जन रघुनाथ निराकार नरसिंह पतितपावन
धनधन जगतपति जपत जग अष्टयाम ॥

१४

कौन भ्रम भूल्योरे मन अज्ञानी सीखत
न राग रङ्ग तान अक्षर सुधवानी ।
और स्वारथ सों जनम गंवायो
बिद्या बात अधिक सयानी ॥
जे साधु गुणी भए तिन कौन गुणको मत ठानी ।
विलासके प्रभुको जो भलो चाहत
तो मिलाओ तानसेन गुरु ज्ञानी ॥

१५

करालवदनी काली त्रिशूल खपर सोहै
चण्डी असुरसिंघारन कारण ।
महिषासुरमर्दनी इन्द्राणी महेश्वरी
मैनकात्मजा उमा कात्यायनी गौरी तरण तारण ॥
नारायणी निरग्रन्था काश्मीर अस्थानी
शिवा रुद्राणी अपरम्पारण ।
नग्र कोटरानी महिमा तुम जगजानी
तानसेन निश दिन सुमरत सङ्कट निवारण ॥

१६

वीण क्रम आदिनाथ बजायो सोते
साधो आरानो जगतगुरु सुर नानाविध
विस्तारणको सकल गुणीयनके करन मोहनको ।
और जे बातें तत बीतत घन शिखर गान करें
सङ्ग सोहनको ॥

१७

मेरे नेन न माने हो लालके बैन सुन श्रवण भर ।
एसी कोज केतो बार बार आय गई एसे दयाल
कबहुँ न भए जैसे अबके आए ढर ॥

१८

रसमसे आए वाके चिन्ह लिए मोहे
अरुण नैनन मधुरे वैनन और तुतरात ।
अरसात जम्भात एड़ात होजू तुम शिथिल गात
पग डगमगात ॥

१९

धरत धरणी तरुणी मन्द मन्द गौन चेन रैन
करन आई पिय अङ्ग सङ्ग ।
और नख शिख चिन्ह प्रगट देखियत हैं
बार बार हार मुक्तनसों उरझ रहे अधरन
रङ्ग फीको लागो बलकुल अतिही उमङ्ग ॥

२०

वने आभरण और सोहत कण्ठमाल विराजत गरे ।
सीसफूल टेढ़ी और दुकूल नाकबेसर
या शोभा तियगुण कर आगे सरे ॥
तैसी अरुणसारी और अङ्गिया फुलेल भींजी
तामें राजत माथे टीको मुक्ता मांग लरे ।
यह छवि देख रीझे साहजहाँ पिय रीझके अङ्क भरे ॥
निरत करत रीझ रङ्गभूमिते गहि बहियां
रङ्गमहल ले सिधारे ।
सखो सब रीझ मुसक्याय मुंह फेर रही आपही
हंसत गए रसनिध भरे ॥

२१

साह आलम लुत्फ कियो तोपर सदा ।
बेग डठ चल हिल मिलरी बानक जिन होय नजदा ॥
सबही अङ्गन तूतो भाई बेज हैं गुणरूप सदा ।
साहनसाह महम्मद दिगर गदा ॥

२२

एहों वारोरी हिरदे वार पर ।
झुक झुक मिलई निश श्यामही गई
ताहि काट बाट डारों उनके पाय तर ॥

२३

अनुक्रम बिध देख चलरी आली नादसमुद्र
अपरंपार कर सङ्गीत गुरुर ।
सप्तसुर को कर विचार जानियो कहाँधो कौन
खरज रिषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाध सुर ॥

क्रोध मनकर सप्तध्याय सीखरी स्वराध्याय
रागाध्याय प्रकीर्णाध्याय प्रवन्धाध्याय तालाध्याय
नृत्याध्याय मृदङ्गाध्याय वाद्याध्याय हियधर।
अतक खातक चिरान्तक नेम वृत्त दुगन ठाह
तानलै शरीर वीण लय ताल भर॥

२४

महम्मदी गोस लसकलेन मेरी तुम मुशकल
करो आसान।
दुनोँ पीशाह सुरतजा मेरो कर पकरो उरझावन॥
महम्मद अली हसन हुसेनके लइयद मदत
करो जहाँन।
समूहको देह अष्टसिद्ध नवनिद्ध राखो मान॥

२५

आयो हसन कायम मीर मयानो।
आए दल बादल सब घहराने साजे ढाल धुजा
फहरानो॥
जब कुतब रिसानो गेहकर वर विरधानो।
निशान वाले बन घन घहराने देश देश पर बन्धानो॥

२६

गगगरे गगरे निसगपपधधपपधनि निधनिनि
धमगमपगपपमगरेसा निगरेसानि धनि
धपमपधधनिसा रेगमधमगरेसा।
निनिधनिनिधगमधनिसाधनिसारे गगरेसानिध
गगगमधधसानिनिरेनिसारेगमपधनिसानिधपमगरेसा॥

२७

नित नबीय नाम निस्तारण तारण जगतउभारण
जगजहाज भुवसागर हृते पारकरन।
गोस कुतबदीन औलीया अम्बिया शेख मसायक
सब पलक माझ तारण तरण॥

दूसरा अन्तरा।

उत्तम मुखते कमल कहत और अलह रसूल
ले ले अलेवर कीनो।
औलीया अम्बिया सेख मसायक पलक मौज
तारण तरनो॥

२८

एसे बहुत चले नए नए हुनर तिन छिन सीखत
रहत हो विद्याधर।
बैजू कहे बात जिय नाहीं समझत को धनवन्त
भयो धरन पर॥

२९

सोई सोई प्यारे पै जो तुम गुणकर रिझावत।
और तियन सब बैठीहै देव काहूको काव करत
साँचो यहै गावत॥

टोड़ी—धीमा तिताला

देखोरी एक योगी यह भेष किए जपनेको
अष्ठफण मुण्डमाला हिए।
जटाजूट गङ्गा जाके बरद वाहन और अम्बर
वाघम्बर त्रिशूल खपर डमरु लिए॥
वीण पिणाक गवरी अरधङ्ग गावत तान बजावत
टोड़ी अलाप किए।
तान तरङ्ग सेवक सेवा शङ्कर चन्द्रमा ललाट आड़ दिए॥

देशी टोड़ी

श्रीगङ्गा पातकहरणी करणी मुक्त जननको।
नारदयानी वैकुण्ठको निशानी इच्छा पुजवनहार
मननको॥
ग्रन्थन वरणी उत्तमजल तेरो भुव परसत गत
होत तननको।
चन्द अस्तुति तेरी कहाँलो बखान करों दाता
याचक गुणीनको॥

२

कहोजो तु कोनहो कहाँते आए कहाँ कित हो
जावोगे सवेरे।
हम तुमको पहचानत नाहीं न मेरे घर
आवत दरेरे॥
लाल पाग पीताम्बर सोहत और वनमाल गरेरे।
तानसेनके प्रभु नेक जो ठाड़े रहे सब सखियन
मिल हेरे॥

देशी टौड़ी—ताल सवारी

शिव महादेव त्रिशूल पिणाक धरे
जाके भभूत गिरिजा ताके मन भाई—
आआ आआ।
त्रिशूल अर्द्धङ्गीनार गङ्ग सीस देवरैया॥
खप्पर लिए वृषभवाहन किये डमडम डमरु बाजे
बाजे तान रैया।
तार प्रमाण शम्भू नाचे ताण्डव निरत करैया॥

२

अहोजू अनबोले रहिए कौनहु बोलके साँचे।
कौन कौन भाँतन मन मनावत हो याको एक
पांव है नाचे॥
एसी तो बात उन्हीसों जाय करो जहाँ रैन
रहे रङ्ग राचे।
केतोऊ करो तो कोऊ न पतियाय साहजहां पिय
नेहचे के जाँचे॥

३

महम्मद मेरा यसधारे काम संवारे काज
संवारे जगतके।
औलिया अम्बिया और कुतव सब पायन लागे
तखतके॥

देशी—धीमा तिताला

आँखो मेरी जोग रूप किए जपनकों आंसु माला लिए।
वरुणीजटा किए अञ्जनकी सेली लिए निश दिन
रहत मोरे हिए॥

२

एरी हूं तो लेन आई लाल मया कर बुलाई।
हों जो मनावत तू नहीं मानत कौन बदी एती
निठुराई॥
भरो कह्यो तू मानन कररी तोहि लालनकी दुहाई।
उठ चल हिलमिल साहजहांपे वही तोहि सुखदाई।
तू अब लागि पियाने पठाई छूटे बार टूटे हार
सखोरी सुख पर आई पियराई॥

३

आज नयना रसही भरे मतवारे चलत दिगने
धों कटाच्छ न भरे एसे अलख्ख पिया प्यारे।
रूप चतुर मानो मुक्ता संवारे जोवन थिरमें
फिरत ढुरारे नेक हून ठहरारे जतन कर हारे॥
पानप सेत रङ्ग करारे अनुबंधे मन बंधत न्यारे।
यह छवि देख साहबहादुर रोझत थकित भए
जों ससि चकवारे॥

४

अति दुख पायो मेरी अखियन हो प्यारे
जो तुमारे दरस बिन।
और सब अङ्गनते बहुत पिरानी पीर
न सिरानी एक छिन॥
केते उपाय कर हारी उन विरह भई पिय तन।
साहजहाँ पिय रम रहे अनत पीत और सब सुख
पूजे धन आजको दिन॥

५

दिन दिन मन मेरो अकुलावत है माई।
सूनो भवन मोहे दूनो लागतहै विरहन
अति दुखदाई॥

६

भावत सोई जलालके मनमानी तिय।
और रसबस कर राखो ते साह अकवर पिय॥

७

कटतनरी ननदरी एदिन विकट नन्दनन्दन
मधुपुरीमें विरम रहे।
हँसन दसन सब नैना नींद गई मेरी अञ्जन मञ्जन
बिन चोहर गए चिकट॥

८

जावो पियके देखन को तू सखोरी गई निजधाम।
खेल रचायो अनत जायके बतियाँ करत है वाम॥

टौड़ी चौताल

देवनमें प्रथम ब्रह्म मासनमें प्रथम वैशाख

कार्त्तिक रितुनमें प्रथम वसन्त दिवसमें प्रथम
आदित सो कीजीए ।
वेदमें प्रथम श्यामवेद पुराण प्रथम श्रीभागवत
शास्त्र प्रथम व्याकरण रागमें प्रथम भैरव
सो लिख लीजीए ॥
सुर प्रथम खरज द्वीप प्रथम जम्बु द्वीप नक्षत्र
प्रथम अश्वनो रास प्रथम मेष कहि दीजीए ।
फल प्रथम अरथ गुण प्रथम रजोगुण तत्व प्रथम
आकाश कहत कवि तानवरस सुधा प्रथम पीजीए ॥

२

शब्द प्रथम ओङ्कार वर्ण प्रथम आकार
जाति प्रथम ब्राह्मण प्रणाम कर लीजीए ।
देव प्रथम नारायण ज्ञानी प्रथम महादेव
क्षमा प्रथम धरणी तेज प्रथम भानु लिख लीजीए ॥
नदी प्रथम गङ्गा पर्व्वत प्रथम सुमेर
साज प्रथम वीण भक्तन प्रथम नारद कहि दीजीए ।
गीत प्रथम सङ्गीत नरमें प्रथम स्वायम्भुव मनु
राजन प्रथम राजाराम तानन प्रथम तानसेन
उनञ्चास कोटि रस पीजीए ॥

३

विद्यामें नाद विकट शास्त्रनमें न्याय विकट गढ़में
लंक विकट लोकमें विकट सुरलोक देव विकट
हर जान ।
पशुनमें विकट सिंह मुनिनमें विकट दुरवासा
मणिनमें विकट कौस्तुभमणि पञ्चभूतमें
विकट अग्निमान ॥
पक्षिनमें विकट गरुड़ उदधि विकट क्षारोदिक
अवतार विकट नरसिंह मौन विकट मकर गीत
विकट सङ्गीत प्रमाण ।
कहत कवि तानवरस सुर विकट नाभि
गायन तान विकट तानसेन जाको सुयश बखान ॥

४

वर्णमें पवित्र ब्राह्मण पशुन पवित्र गऊ
भोजन पवित्र घृतसार ।
जलमें पवित्र गङ्गाजल देवनमें पवित्र विष्णु महेश
तृणमें पवित्र कुशतार ॥
धातुमें पवित्र सोनो पत्रमें पवित्र तुलसीपत्र
पोहाप में पवित्र पारिजात पक्षिनमें पवित्र हंसप्यार ।
कहे कवि तानवर ताननमें पवित्र तानसेन
नाममें पवित्र हरिनाम उरधार ॥

टोड़ी—झपताल

पार नहीं पाइए गुणसमुद्र अथाह कौन विध तरीए
कहा करिए कवन भांति जानिए ।
मन ज्ञान नैत्रन असुज लागे सुर तान ताल
किस तरह घटमें आनिए ॥
जब उठतहै ध्यान अति प्राण डरो जाय चरण धरो
धाय धाय कैसे गर ढानिए ।
कहे गुरुज्ञान तानसेन सुरसुती ध्यान धर
अगस्तनो अचपानिए ॥

२

धरणीधरण अधरणदाता विधाता विश्वभरण पोषण ।
भागवन्त सोभाग तरण तारण भक्तजनको
सकल सुख करण मोखन ॥
आदि अन्त तूही रोम रोम रम रह्यो सबमें
तूही चर अचर थावर जङ्गम तोखन ।
तानसेन तेरी अस्तुत कैसे करो अलख निरञ्जन
निराकार ध्यान रहो तेरो दुरनङ्ग बोलन ॥

३

ज्ञानवन्तको रस अगम बुधदेनो तू
सबही अङ्गन मानो हंसवाहनो गिरा महावाक्यवाणी ।
जोई तोहे ध्यावे मनइच्छा फल पावे साधत
करत प्राणी करत बखानो ॥
तोसो तुही और नाहीं विद्यादानी जे साधे आराधे
त्रिहूंलोक जगजानो ।
तानसेनको दीजे रागरङ्ग वरवाणी जोलो
गङ्गा धरन ध्रुव पवन पानी ॥

४

यह लराई लरोरे गुणी ज्ञानी सूर समशेर
मजलिस मैदान ।
अलाप चारी तुरङ्ग चढ़के धुरपद नंगी तरवार
तारसो परिकर रसना कटारी काढ़त जब मुख ज्ञान ॥
कहो राग उमराव नाद गढ़को परीक्षक छत्तीस
भार्य्या तुपक भर धरान ।
धारु वाण धोवा माढा जम्बुसुर दास तानसेन
यह प्रमाण ॥

५

ज्ञान मदमाते जे नर निश दिना तिनको
कबहुं न होत खुमारी ।
सतके प्याला भर भर पीवत रसना सवाद लेत
ध्यान धरत जाको लागी रहत जिय तारी ॥
मनकर मायन तन करो भाटो पाँचो आत्मा
अग्नि जारी ।
हरिदास डागुरके प्रभु ध्यान धरतही मानो खात
बुन्दय डारी ॥

६

करत तू मदत मरदान औलिया जो कौज कैसे
रहे सनमुख अरत ।
एसो धूम न दल मलन मारके विदुराय पवन परताप
कर करके तू मदत ॥

टौड़ी—सुरफाकृता

तेरे मनमें केतो गुणरे जेतो होय तेतो प्रकाश कररे ।
कहूं तोसे बार बार सूरख मनरे जोई सुर आवै
सोई ररे ॥
गन्धारको धैवत पञ्चमको ऋषभ खरजको भररे ।
कहे बैजूबावरे सुनोहो गोपालनायक नादविद्या
अथाह काहूसों न अररे ॥

२

दुखनिवारण संसारतारण राखले अपने जनको
ए सुख कारण ए नारायण ।
कंसासुरमारण दैत्यसिन्धारण भुवभारउतारण
तिहूंलोक मध राज भरण ॥
अवगत गत तेरो कोऊ न पावै पार गर्व्वहरण
अचलस्वामि पतिततारण ।
एतो वार नजर डारत निवाजत लागे वार
भगवान जनको अपने करन सम्वारण ॥

३

शुभदिन शुभ मुहरत महाराजा रामचन्द्रके
कर बांधिए राखी ।
अनेक गुणी गावै पाट पटंवर लाखी ॥
एसो गरीबनिवाज राखत भूप छिनक में कीरत
त्रिहूंलोकमें जाकी ।
षट्दरशन निवास किए सिंहनन्दन चिर चिर जियो
महाराज विष्णुसिंह देत एरापत एराकी ॥

४

शम्भूहररे गङ्गाधररे कामितजन मन चिन्तामणि
कल्पवृक्ष कामधेनु काम सम्पूरण कररे ।
कर त्रिशुल त्रिलोचनरे मात मतिअङ्ग ख्याल
वाघंबर अम्बररे ॥
नीलकण्ठ भस्मभूषण फणि गुणी गले मुण्डमाल
मण्डित खट्वाङ्ग खप्परररे ॥
चन्द्रकिरण भुव कुण्डल मण्डित श्रवण अखण्ड
उर पन्नगरे ।
ताण्डव शिवराजत मुखमण्डन भण्डभण्ड भण्डासुर
तान तरङ्गन रे ॥

टौड़ी—झपताल

प्रबलदल भञ्जन विकटग्रहगञ्जन कौन जोधा
संसार होई ।
अमार मार किए अडंड डंडनजे निपट गढ़
ढहन धाक सोई ॥
धरन धरकत धकत धरक गई छाती भुवपाल
द्रगपाल तिनको चढ़ी रहत नित जोई ।

शाह अकबर डरन तुव दरन थरथर कांपत
रहत अमर हत तुव सम न धीर होई ॥

२

चरण धर धर मेरे ग्रह लालन भय खाए आए मेरे ।
तनके दुख सब दूर गए सुख आए मेरे नेरे ॥
मृदङ्ग बजावहु मङ्गल गावहु भागनहो पाए
कर रही प्रथमही जतन बहुतेरे ।
साह औरङ्गजेब प्रीतम अबमें धन जनम कर मानत
जब आंखन भर हेरे ॥

३

माई आज बनो कहा हजला ।
देख सूरत मदन लोभाय। जोर सुहाया कजला ॥
जदो सारी तन सोहै मुख देखे ससि लजला ।
केहरी रङ्ग कुरङ्ग कोमल भई सबनने बन तजला ॥

४

मनही मन प्रेम बढ़ावे आँखनमें लिपटावे काङ्कको
न जतावे मन्द मन्द मुसुक्यावे एसी हों लखि आई ।
भाँति भाँतिके भाव बतावे हितूबन रिझावे हिय में
आनन्द वरसावे अधिक वाको सोभा सोहाई ॥
गुप्त चाहको चोपसों रोम रोम अति काम
जगावे अति ललचावे यह देख पीतको अधिकाई ।
एते गुणनपे लालके प्रभु कैसे धीरज धरो
साँचो कहत हों तेरी दुहाई ॥

बड़े साहबक़त

टौड़ी—चौताल

अरे मन याद अल्लाको करतू इत बित
काहे को भटकत है ।
अव्वल आखिर जाहर बात न होई है दुबिधामें
काहेको अटकतहै ॥
आपको देखतू आपको प्यारे थोथे धानत्
काहे को भटकतहै ।
आसक प्रभु सब सांसको सांसो कोई दिनमें
यहभी सटकतहै ॥

टौड़ी—तिताला

ले ले नाम लैली काम जनु लैले हुवा आ ।
तालव मतलूब तालव होय तो प्रेम का जूआ ॥
मसपपधधनिसानिसागरेसानिनिधधपपमम
गगरेसासारेगमपधनिसानिधपमगरेसा ॥

२

परब्रह्म परमेश्वरकी सुरतियां जिय राखरे मन ।
पतितपावन दीनबन्धु गुसाँई साँई आपस बनमें
रहो समाई तनमन ॥

३

तननदिरनादीम् तानुम् जानु मनजानान
मनतोम कुन् बेबफाई ।
यलालुम् यललुँ यलललालुम् यलाली याले यललल
लुम् तदेन्ना दिम् तान् दिरनादिम् तनादिर नुम् ॥

टौड़ी—झपताला

सर्व्वमणि ब्रह्म ताको रच्यो संसार
पुरुषमणि पुरुषोत्तम अवतार ।
वर्णमणि ब्राह्मण नाममणि रामनाम
पुराण मणि भागवत ज्ञान मणि कर विचार ॥
भक्तमणि प्रहलाद पंछिनमणि गरुड़
बनन मणि वृन्दावन रसिकमणि मुरारि ।
तानन मणि प्रभु तानसेन ज्ञानमणि महादेव
प्रेममणि नारद बालकमणि सनतकुमार ॥

टौड़ी गुजरी—चौताल

आजकी बानक मोहन तेरी प्यारी
विहारी मोपे वरणी न जाय ।
इनको श्यामता उनको गौरता जैसे
सेत बन रही मानो जो भुयङ्ग धाय ॥
तिहारो पीताम्बर उनको नील दुकूल
ज्यों शशिकुच्छव घन वीजलि चमकाय ।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी को शोभा
निरखत जो मन जोरे कोटि कवि पार न पाय ॥

२

गिरिधर गदाधर चक्रधर गोपाल माधव गरुड़पति
गरुड़गामो मुकुन्द माखनहारो तिया।
ऐ ऐ याते ऐ ऐ या तिया तोय तोय तिया तिया इया॥
जगउद्धारण जानकीरमण कृष्ण केशोमथन
कालीनाथन विश्वपति भक्तन सुखकारो जिया।
पम मग मम गसा मप धसा ए नाम गीतको गाइए
सोई तो सार है संसार सागर भनत गोपाल नाम
कृपा सीख तिया॥

देश-टोड़ी—खरफ़ाख़्ता

आई नार री तू कौनके रस वश मिसकर।
धीर दिननमें एक हो बार तू आवत जात थी
पनिया भरनको आज कई बेर आई गई एसे
कहा भए हैं नन्दके हर॥
जो तू सास ननदको कान न करत आपन कलह कर।
हरिदास डागर ताहि बरजत तू अब भई
है अति निडर॥

२

घरी घरो तू काहे मेरे आवत माई।
इत उनकी बातें आन आन मोसों कहत बनाई॥
तेरे हित चित्तको हों नीके जानत पै मानत नाहीं
न कछु लाग लगाई।
शाह बहादुरको हों हो करूं टहल जो उन चाहो
सोई लगी मैं लगाई॥

३

आज बनत देखी लालो श्री ललना
कुचको कसन पर झूम रही रूम रेश।
ऊदी पाटको अङ्गिया तन कसी फब रही
चन्द्रवदन अनेक प्रफुल्लित अम्बुज मुख लेश॥

४

ऐसे तुम भरे खेल ख्याल काहूसों निठुराई
काहूसों होत कृपाल।
काहू आय देखाय देत सोतनके भए साल
मन्दिर इतने हो आनन्द रस भयो प्रातःकाल॥
अब मिल गुण मन मानत हों पाई
धरहु आउ पहुंचाहु चलो तुम गोपाल।
मनमोहन प्यारे मोपै आवत दोन पर
कहावत हो प्रतिपाल॥

देश-टोड़ी—धीमा तिताला

मोसें वैर कोनो मेरी अंखिया नहीं एक
क्षण धीरज हू न लीन्हों।
बहुत दिननके बिछुरे मिलो पल लाग छतियां
उमंग आई अंसुअन न देखन दीन्हों॥

लाचारी गीताङ्ग भाषा—तिताला

होली लोचन हुवे बले चोली बाघाम्बर गए है धोली
भखे भाङ्ग गोलो भूतेश्वरपै डोलो॥
नागहार सिठोलो सिंहासन मुण्डमाला गले रोली
रहे जोत सचोली।
झकवे बिलकन सिंघा रोली नचव
शिव भोलो चहुं चक्र बं बं बं बं बोली॥

टोड़ी—होली

जिना नाल लगन लगो वे सोणा
उस नाल इश्कदा बेडा भरेणा।
पार गएनु राझण कहे देवार गएनु होरा सदाङ्ग
बिच दोना नाहीं केणो मझ धाए बोचको रेणा॥

टोड़ी—खरफ़ाख़्ता

पक्षीमणि गरुड़ गजमणि एरावत
दिनमणि दिवाकर।
गीतमणि सङ्गीत वन मणि वृन्दावन
तरुमणि कल्पतर॥
नरमणि नारायण तारामणि ध्रुव
तीर्थमणि गङ्गा देवमणि शंकर।
नारीमणि उरवशो पुष्पमणि कमल
दास बैजू मणि मुख मुरलीधर॥

२

तेरे मनमें केतो गुण रे जेतो होय ते तो
प्रकाश कर रे।
हम जाने तुम सूरे पूरे सोई स्वर आवे
सोई भर रे॥
गायन पाइन पिघलावे हिरण बुलावे जो बरसे
मेह सरस्वती वर रे।
कहे बैजू बावरे सुनो हो गोपाल नायक
मनन कर रे धाय गुणी जनके पायन पर रे॥

३

ताल स्वरके भेद गुणी जनको सङ्गति
रहै तो कछु पावे।
सीखत सुनत रहे सदाही ढरनि मुरनि मुद्रा
प्रमाण सो आवे॥
आप ही गावे आप ही बजावे
तान गीतनके ब्यौरे समझावे।
बैजूके प्रभु रस वश कर लीन्हे तब ही
रीझ रिझावे॥

बहादुरी टोड़ी

कान्हा गाय काहे न लेहो घेर वन तट
भई विरह वैराग।
ऐसो विरही ग्वाल कबके कहियत उझकत
थिर न रहत घर घर नयन सैन कछु लाग॥

टोड़ी—तिताला

हमारे ललाके सुरङ्ग खिलोना खेलत कृष्ण कन्हैया।
अगर चन्दनको पलनो बनो है हीरा लाल जवाहर
जरैया॥
भ्रमरो भ्रमर चट्टा बट्टा हंस चकोर मोर चिरैया।
तानसेन प्रभु यशोमती झुलावे दोऊ कर लेत बलैया॥

२

हमारे बबाके दामोदर छैया ताकी हौं लेहौं बलैया।
जीवो जागो कोटि वर्ष लौं जौलौं ध्रुव
धरण तरण रवि शशि तरैया॥

टोड़ी—झपताल

देवी दया कर दयानी जो तुझ ध्यावे
तिन्हे देत सरस मति तो होय परम ज्ञानी।
नगर कोटराणी ज्वाला भवानी जय तव
सम सर को कर सके भवानी॥

२

अति गर्जत नित्य ते कबहुं न बरसत बल्किन भाज
जात मखतें यहे सला सुनिनको कोटि पद्मन गुनी।
जे जे जान ते ते क्या जान जिन जिन नयनन देखा
दिन दिनको जान मला वे काहू ने काहूके
हेटे गुण मन गनी॥

३

वाघाम्बर अम्बर त्रिशूल देवी दयानिधि
आनन्दकरणी।
शेष महेश तेरो नाम जपत है सन्तनको
दयाल भो जल तरणी॥

टोड़ी—रूपक

इन मालनियोंने हिलमिलके
डोर लायो रो मेरो बारो ढिठोना।
हार छबरिया और फूल लाई चुन चुन बेल
चमेली और मरवा दोना॥

२

रुलावत बहियां और सोहतरो
नागर बनिक बनो पिय ढिग तें।
बाट चलत आली अचरा उघर जात
मनो शशि निकस्यो री घन तें॥

३

लाड़ले बनरा बनरा रे चोंक मेहदी
मुझे लावन देरे।
आजको रैन सोहावनी लागत तरुणी
अङ्गरियनके रस लेरे॥

टोड़ी—तिताला

बाजे नौकी घंघरियां ठुमकत चाल सहेलो।

अनुपम चाल चलत मतङ्ग गत मानों पग
परत पवेली ॥
ज्यों जलमें प्रतिविम्ब देखियत चन्दकिरण
तैसी जेहर वेली ।
ते रस बस कियो तानसेन प्रभु खानखाना
पिय पाक अकेली ॥

२

अब कैसे जइएरी माई पनीया भरन
बिच बाट ठाड़ो ग्वाल लिए गैयाँ ।
कन्हेया ना काहूको कान करत न डरत
दीरेहो आवत उतारत मथनीयाँ ॥

३

जैसी जोत दक्षन सुभट पच्छिम जौत
उत्तर पूरव सब लछन बखतवर ।
अगन ईशान वायव नैरत बाजे बजाए निशान
फिरी दुहाई शाहनशाह अकवर वर ॥

टौड़ी—ताल रूपक

फली फूलन अङ्गन माहीं मिलन बनै
जो लाल सों माई ।
सगुन होत आली अचरा फहरात
और फरकत आँख बांई ॥

२

मारगके वागें रातके जागें छूटे बन्धन
अरसात जम्भात बहीयाँ गहे आगे आवत ।
सकुचन आवत न कुओ अचरा मोहे झकहो
में आन झकावत ॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

एसे आज तुमहो कहा अनमने भए हो ।
एसी मोसों कहा चूक परी लालन तुम नए ठए हो ॥

२

मेरी विथा सुन सखीरी मोसों अवध कहि भेजी
आयवेकी अजहूं न आए लाल दरद यह कासे कहों ।
दिनते रैन भई रैन ते दिनभयो देखत पेड़ो अति सूनो
गृह उन बिन दई अब अदारङ्ग बिन कैसे रहों ॥

१

तू जगनिस्तारण आज तो जैसे कृपाकरि
तुम आए अब योही करिए ताही रीत ।
अन्तरजामी अदारङ्गसो सदा राखियो अपनी प्रीत ॥

४

चुलीया में मेरा गात भिरे ए पीतम करन फेरा ।
हों नित नवलासो रहो जोरकसो रहै चीरा मेरा ॥

टौड़ी—झपताल

लड़े हसन हुसेन इमाम सैयद
सुभट धूम मची भई जङ्ग तातो ।
खेत विरछाइयो सिंहके छावड़े भले चले
खड़ग व गिरे हाथी ॥
करवला भूमि पर महाभारत भयो
हुए सैयद जब नवी नातो ।
आई जब इर नूरको तखत ले साहपर
भीस्त कुरवान जातो ।
करे मातम चोदातवक मंजलूमके नालत
कुजीद सदा चलि जातो ॥

२

हों साँची कहत हों अरे मन यह वो खलक
जिन महम्मदको जो गहो डगर ।
दिनके त्रास इन निमाज करि हँस नैनके सङ्ग धनके
कारण को फारके हो रहै आधीन एसे निडर ॥

टौड़ी—तिताला

नसागगरेमपधपपपममममपनि
धधपधमगगरेरेमपधधमगरें
सानिधपमपधनिसारेगसाधनिरेसा ।
मपपधधनिनिधपधमममपधसारें
सानिधपमगरेमपधनिधपपमगरेमा ॥

टौड़ी—रूपक

परब्रह्म परमेश्वर को सुरतीयां जिय राखरे मनमेरे ।
पतितपावन दीनवन्धु गुसांई आपस वनमें
रम रहो रसना रटो नित रोम रोम में रमरहो तेरे ॥

टौड़ी—तिताला

देखे दरबार यह मौन-दीन ख्वाजा
इच्छा पाइए लाइए लोजै नाम मदार मदार ।
मेरे तो यह सुमरण नित तुमही हो
आधार करो निस्तार ॥

२

शाह अकबरके दुरजन दूर करो मौन-दीन ख्वाजा ।
सप्तद्वीप और अष्टदिशा पर हुकम होय
सब मुलक खलक पर और जाय तन मन ते
दुख दारिद्र भाजा ॥

३

जासो बनआई पिय पीतको रीत तासो
कैसे मान ठानिए ।
एतो दुराव क्यों करत प्यारी एबातें
तो सब नीके जानिए ॥

टौड़ी—चौताल

जोहै पिता रव रहोस करम करो अपनी खलक पर ।
एका कीनो औलिया अम्बिया एक कीनो
उमराय तिनको सुख दीनो घरघर ॥

२

सुर मुनिगण अस्तुति करतहै तेरी महिमा को जाने ।
अङ्ग अङ्गकी परछांई को गुनी
सोधत है तामें तू वैराग माने ॥

टौड़ी—रूपक

मिलन बनोरे लालन सो फूलो फुलन अङ्गन माई ।
सगुन होत और अचरा फहरात
और फरकत आंख बाई ॥

२

इन मालनोयोंने हिलमिल कर डोर
लायोरी मेरे वारो ढिटोना ।
हाथ छवरीया फूलन लाई चुन चुन
वेला चमेली और मरुवादोना ॥

टौड़ी—झपताल

वाक्वाणी वराही वैष्णवी ब्राह्मी भैरवी दयाली
दयाकर दीजै ।
महेश्वरी मैनात्मजा सुरेश्वरी पापनाशिनी
महामाया मृड़ानी तानसेन सेवक पर सुदृष्ट कीजै ॥

२

हलहली धरणी कमठ पीठ कल मल गई
गरद उड़ गगन रविते अलोप्यो ।
आयोरे शाह गर्भगञ्जन अकबर मेरे जान
शाह जलालदीन शाहनशाह दिलीनरेश कोप्यो ॥

टौड़ी—रूपक

मदार नूरी नूर बरसावै खलक पर ।
अपने जनके तन मन वैनन आनन सुर रागरङ्ग
रस सरस कर ॥
जोई गति आवै मन इच्छा फल पावै धरम धीर
सेति करम रति माथे पर ॥

२

मारगके वागे रातके जागे छूटे बंदन
अरसात जम्भान वही आँखन आगे आवत ।
सकुकच न आवत न कुओ छाड़ो अचरा मोपै
झकही में आन झकावत ॥

टौड़ी—तिताला

ईद मुबारक होवै जुग जुग नित नित
तुमकों महरबान ।
सकल विद्या-गुण-निधान अतिही आनन्दकरो देत
गुणीनको आदर मान ॥
युग युग जीवो कोटि वरष लों देवो करो नित दान ।
तानसेन कहे सुनो शाह अकबर चहुँ चक राज
करो मरदन महा मरदान ॥

टौड़ी—रूपक

रवि तू जगमगात ज्योतीस्वरूप ब्रह्माण्ड मई ।
निरञ्जन निराकार सहस्रकिरण ब्रह्म तुई ॥

टोड़ी—तिताला

नीके नीके तान सुनाय दरसन देखत मन ललचाय ।
प्रथम कपट मिटाय बुधसागर काव्य रचाय
अनेक भाँति गाय बजाय ॥

टोड़ी—पटताल

कहा कहो केधौं रहे अब कौन महल सुख कीने
जलाल महम्मद लाल प्यारे मृगनैन ।
द्रगन जलभरे सूरत जगे पगे तुम बोलत मलीन बैन ॥

२

तूही कहत अब जाय कहां तोसो भूलोकमें
तूही जानें ।
राग रङ्ग भले बूझत शुभ अक्षर तान तार सकल
कलागुण-निधानें ॥

टोड़ी—ताल धमार

मोहन मेवारी वार डारी नार जिन करो
कपटकी बातें ।
रहत ज्ञान ध्यान तिहारे नामको सुमरण है
दिनरातें ॥
घड़ी पल छिन रहो न जात मोपै करत रहत
तेरी बातें ।
तानसेन प्रभु कृपा करो मोपै नेक चितवो चहातें ॥

२

लङ्गर वटपार ढोट बनवारी वाको लङ्गराई
नहीं जाय निलज अधिकाई भयोहै अनेरो ।
हों लाजन कछू कहि न सकतहूं वे जो आय देत
गार नार मग रोकत रहत सङ्ग ग्वालबाल लिए
आय गहत पट मेरो ॥

३

सलोनी मूरत श्याम लुभान ।
आवोरी सखी मिल होरी खेलन को या
छवको मुखध्यान ॥
कोउ नाचत साँची गत ले कोउ गावत
कोउ डफ मृदङ्ग उघटान ।
कोउ तान तरङ्ग रङ्ग लिए वरषत
करत परस्पर गान ॥

४

गावै दै दै तारी एसी वौरानी का नारी ।
होरीके मिस टोड़ी गावत उपज करत न्यारी न्यारी ॥

५

लाल मदमातें वन वन खेलत फाग ।
छिप छिप लुक लुक देतहो तारी गावत टोड़ी राग ॥
बाजत मृदङ्ग चङ्ग सङ्गतसों ठाय भेदकी लाग ।
सदारङ्ग रिझवार सुनतही होरी लग्यो वारन पाग ॥

६

अबके होरीमें प्यारो लरवे को यह समान तैनें कीने ।
ढफ ढाल नोलासो खड्ग गढ़े सौतिनके गुमान
सुभट मारदीने ॥
मृदङ्ग तोप गेंदा गुलाल धूम ताकी अवाज
तें गरुड़ गढ़ छीने ।
महम्मद साहके सुहाग बढ़ो यातें अनहितुअनके
झुण्ड सुख मोर फेर दीने ॥

७

देखोरी यह आवतहै यह नगरमें
होरी खेलन श्याम सलोना ।
छिनमें मन वस करिहै सबनको वाकी
मुरली मेंहै काणु टोना ॥
मोर मुकुट कुण्डलकी छवि अरुणनयन
अञ्जन धरे कोना ।
रूप देख मन होत वैरागी एसो दरसे
यह नन्दको ढिटोना ॥

८

अब कोकिल धूम मचाई अब गोकुल धूम मचाई री ।
पिय विदेश मोहे पाई अकेली विरहन जान सताईरी ॥
अबके कही न जात जैसी उन कीनी बौरी
करत चढ़ाईरी ।
कुहुक कुहुक डरपावत अतही हिय में हूक बढ़ाईरी ॥

यह सौत मोरे पाछे परी है कहा करूं हौं माईरी।
बोल बोल बानि जब लागत तन मन बेंधत आईरी॥
बीते वसन्त आयोहै फागुन देत काम अधिकाईरी।
यह वैरन मोरे पाछे लगोहै सदारङ्ग होहु सहाईरी॥

टोड़ी—धीमा तिताला

अधर धरे वन वांसुरी बजावै
कान्हमुकुट सीस कटि पीताम्बर सोहै।
सांवरे अङ्ग ढोटा नीको तान
सुनाय सबहीके मन मोहे॥

टोड़ी—तिताला

कान्हन कर मोसे रारें अबही जायकरों
पुकार लङ्गर झगर दीनो गगरी मोरी डार।
अचरा गहत जात यशोदाजी से
कहोंगी अपने ढोट चपलको सम्भार॥

२

यह वैरागी रूप धरे भभूत रमाए समाए मेरे मन।
सोवत उठत नैन मनमें ज्ञान ध्यान धर सोई कर सुमरण॥

३

चिकनीया मोरा सङ्ग न छाड़ई
अरे वलम कहा करूं कित जाऊं।
वाट घाट मोहे रोके टोके बरजो नमाने ढीट लङ्गरवा
सुनले वाको सदारङ्गीले महम्मदसा नाऊं॥

४

उतते कोऊ नहीं आतरी जासे पूछू बातरी।
उन बिन कछु न सोहावै न भावै सदारङ्ग पिय
कोउ आन मिलावै तलफ तलफ जिय जातरी॥

५

किरपा करोरे मोपर गुसैंया मनवाञ्छित फल पाऊं।
होतो सेवक तिहारे दरवारको
याचक मन विच क्रम कर तुमहीको गाऊं॥

६

प्यारे तुमारी तो रसना पानसो पलटत नित।
पहलेतो सदारङ्ग दिखाय रिझाय लेतहो
पाछे वदलत कित॥

७

ताण्डव नाच नचाइरे नैले उरपति रप लाग डाट।
ताल भेद परवन बजावत श्रवण सुहावत
देशी देखावत सदारङ्ग को रिझावत
इन प्रकार निरत गत सांचे यह जानत महेश॥

८

मोहन सो मन लागोरो।
वंशी धुन सुन भई दिवानी सुध न रही तनकी,
घरी घरी पल पल छिन छिन सजनी कल न परत
निशदिन हरि बिन मोहे, सावल सो चित पागोरी॥

९

रुनझुन रुनझुन पैजनीया बाजत लालनको
रीझत पशुमत गोद उठावत।
छैलत छटकत मुख देखत हँस दतुली देखावत
झुक चुम्वत मुख कर ते पकरत निरखत नैना
इत उत मटकत॥
छोड़त धावत और मोहे टेरत जो न गई ढिग
द्रग भरि आवत निकट न लेत चरण कर पटकत।
प्रेमरङ्ग माता सुत विचरत सुर नर मुनि
देख समाज ब्रह्म शिशु अगम निगम जिन
कारण भटकत॥

१०

मोरे भयोछे परमानन्दरो नन्दनन्दन
पिय आए मोरे घरवा।
तन मन धन नोछावर करहुं परहुं पइयाँ लेहो
वलैया सुर तन सइयाँ आए सजनी मोरे
भइल अति आनन्दरो॥

११

सुनहु सखो मोहनको रीत निशदिन और न के
डोलत फिरत घर आव करत मोसो हठ पीत।
छल वल चपल चञ्चल अति आय गई करत
फिरत आलो जो मन भाई आई व्रजकी
गलो अव न्यूहींजाऊं मैं नैन की सैन चलावत चित॥

१२

गोविन्द कोनहीं गावैरे समझ मन मेरे ।
सगे न कोऊ सँवारत हितू सब जग आन मिले बहुतेरे ॥
नाते आन मिले जित तित ते पंछी बसत बसेरे ।
होत प्रात उड़जात जहाँ तहाँ कोउ काहुन सङ्ग हेरे ॥
भूलो मत व्योहार जगतके आन मोह मद घेरे ।
राधावर बलिहार सुमिर पद तू चित चेत सवेरे ॥

१३

मन-मोहन आवन सुनके मेरे भयोछे परमानन्दरी ।
पूजी मन इच्छा मेरे जियको आए गोकुल-चन्दरी ॥
धन धन प्रभुकी मात यशोदा धन धन वसुदेव
देवकी जिन जायो गोकुल-चन्दरी ।
दास जान कर किरपा कीनो दूर किए दुख इन्दरी ॥
अपने जनको परन जो राखो एसे हरि गोविन्दरी ।
करुणाकर करुणामय स्वामी काट दिए सब फन्दरी ।
विष्णुदास प्रभु पतितउद्धारण नाम पायो
किरपासिन्धरी ॥

१४

मन्दिलरा मोरा बाजन लागोलो ।
आज मोरे घर आनन्द वधाई जिय उमग मन
मन हुलसाईलो ॥
श्यामसुन्दर रङ्गमूरत भाईलो सगरी सखी मिल
मङ्गल गाइलो ।
त्रिक धिलाङ्ग २ धुम किट बाजत
मृदङ्ग निरत कतो२ तररररररतार बजावै घेड्या३ ॥

१५

तनदिर तनदिर तदीयनरे नागड़धीना धागड़धीना
धाकड़ तक्ताक्ड़ तक्धिटतिट तिटकिट त्रकड़
तकताधा ।
त्रकट धकट थारीतकीण तकीणता
त्राणा त्राण प्राण प्रकट धकटधा ॥

१६

जीवेजी म्हारा लाड़ला जुग जुग
नित नित तुम जीवो करो ।
रवि ससिलो चतुर सहत सुघर सङ्गत सो
सदा रङ्ग करो ॥

१७

तिलिलानातकदीमदीमतकदीमदीमद्रद्रदीम
दीमतुमतननननननविगनगनगनगनगन
गनगनगतननतननतिग्धेतिग्धे
तिलेलाणातकदीमदीमदीमदीम
नाद्रद्रतिलाणाधितिलाणाआंतिलैलै
लैलाणातिलैलैलैलैलैलाणानाद्रद्रतंद्रद्र
तुमतननननननारेनारेनारे ॥

१८

माई मोहे लाज आवै कछू न भावैरी
आली कह न सकत हों मनकी विथा ।
निश दिन कोलौं मन समझाऊं बहलाऊं
आपन समझन को यो कहूं अब जोथा सोथा ॥

१९

झपक बुढाया आइला जोवनवा चलला रुस ।
दौरीयो नगरके लोगवा यहतो चोर चला घर मूस ॥

२०

मलीयारे तोरी बारी फुल रही महकाय ।
अबतो मो मनही लालते यों ठहरी कब
मिलेंगे सदारङ्गीले महम्मद शाय ॥

२१

वीण बजावै माईरी गावै नीकी तान नएरी
माई यह बाबू का छोहरा ।
मद पी भए मद माते लागत है हांसी
औरके करसे ले छीन बजावै ॥

२२

राज करो या नगरी मैं जामे बातनछ के
चवाव चलतहै ।
और जो धन्धा छाड़ लोगन को हमरे औगुण
कोही खोज रहतहै ॥

२३

जोवनारे ललैया को अति धूमक धाम ।
वरज्यो न मानै काइको ए चपल वाम जैसे घाम ॥

२४

एमाई जबतें मनमोहन देखिला
प्यारा तबतें कछून सुहाय ।
उनके देखे अनदेखे जियामें जोजो आवतहै
सो एकइ कहो न जाय ॥

२५

थेतो म्हारे डेरे आइयोजी झोणामारु रसीया
राजकुमार थेतो म्हाणे घणो प्यारो लागो राज ।
हाथ जोर अरज करांसां अपनी करपा कीज्ये
सायबां सेजड़ोया कृत माणे मैतो वारने जावां ॥

२६

कोणीने विरमायो म्हारो राज,
कोणाने विरमायो हैजी को० ।
हैजी म्हारो सगो ननदलरो वीर म्हारो राज ॥

२७

जोगीवे रावला मैनू भावदा ।
इस योगी दोमें वन्दिनो थीवो आवै बास फुलादा ॥

२८

मैतो जाण्यो देनाल करार को तोही कुडेनी
ओलंभे मैनू देदा वे खलक ।
सुणीयो वेलोका वारी सुणायो वेदे शान्तपदी
सिकदीनु हो यानी कल कहो यानी भलक ॥

२९

मैड़ी आज जीदी वेमीयां कोई नहो सुणदा
जिथ वलजाय पुकारा मियां ।
महम्मद शाह सदा रङ्ग दीतु साथाँई कहाणी ए
पै दादनी देदानी हूं कारा मियां ॥

३०

कमली होई ढोला तैंडे नाल मीयां वो ।
हाल दिलांदा किसनु आखा महरम नहीं
साड़ा कोई ॥

३१

राजा तेरी मालनीया हार सुधार गन्ध लाई ।
वनरा वनरी कायम दायम नर नारिन मङ्गल गाई ॥

३२

लोक लाज मोहि आवै मोरा जीय चाहे तोरे
ढिगवा बैठ रहों ।
घरी घरी पल पल छिन छिन मोको विरह सतावै
कहा करूं किधर जाऊं वे दुख अतिही सतावै ॥

३३

आजरे महम्मद सा घर अनन्द वधावा
ए मा पूजवल मनके काज ।
कर मन भर पाइला सजनी वनरा बन आइला
भइला सदा रङ्गीलरा मोरा राज ॥

३४

सोणा तुसी नाल असी दिल चावदा हांवे सोहणा
साँवला मोहणा वंशीवाले मैड़े यार एहाके हाजा
दुड़ाकी तावे मैड़ड़ा प्यारी याहुणकी तकसीर
कीती तिस दे कारण साड़ेथा क्योंनहो आँवदा ।
छलडा भलडा वाँकड़ा तिखड़ा असी तेँड़े छदड़े
जाँदीया घोलीयाँ घोलीयांरे दड़ोयाँ मैनू यादड़ीयाँ
बिन वेखे जीन्द नित तरस दड़ीया बत्तड़ीयाँ
कित्तड़ीया बिनदीठे कल न पड़े दड़ीया नीकी
तान गावदा वजाँवदा भावदा मन पर चावदा
गवरु छैल क्यों तरसावदा ॥ सो०तुं ॥

३५

अला जाने अला जाने नवो अलोको नूर भर
रहो जगतमें हसन हुसेन चैन जीए ।
जेहराके फरजन्द नवीके जिमर गोसे अली
कासिम हो जकोसर के दोउ जाम हम पीए ॥

३६

दीम उद तनन तदरे दिर नादीम उदतनन
धिधीन्नाधाकिट तक्धुम कोटतक् धिलाङ्
किड़नक तिरकिड किड़नक् धगधेड़नक ।

तघिड़ान् तघिड़ान् घड़ां न घिड़नकतिड़किड़्
नगृदिग् घिड़नक्तिघड़ांनतक्धादीं ॥

३७

तिलीलाणा तक्दीम दीमतकदीम
दीम्तक्दीम दीमदीम तननन्न ।
थिगदिग दिगदिग तननन्न तननन्न
तिगधेग धेग तिलीलाणा तकदीम दीमदीमदीम् ॥
नाद्रद्रतिलाणा तिललाणा आआले लेलेलातं
लेले लाणातन १४ धिलां ३ धाति ॥

३८

मोर पियाको बोलाय लावोरी माय जो कोउ मिलो सो
मिलो आप महो वहोर आवननो आवैगो
मोंसो हो रिसन आइलो लोगवा ले चलई
डोलीया फदाय ।
तुम सन मोरी लागलो पीत
मीत सुरजनवा कैसेका दुरत दुराय ॥

३९

अरे बाबू मया कीजिए फकीर को दरसन
दीजे भिछनारे ।
चित लायके करम धरम को दान मान
सुन एमाटी के पूतरारे ॥

४०

गरजके सबजीव न गरजी कहुं देखन पायो भालो ।
जोलों गरज तोलों ताहि हित चित नित गरज
निकासी जियतं डालो ॥

४१

दिननको थोरी भोरी आईरे अपने
अचरवनि संभार लेत ।
एसो अलवेली अकेली काहको न माने
उत्तर काहु न देत ॥

४२

बरजाइए लोगवा मा ए मिलन न देई पियरवा
कइ कौन भाँत पिवाउ मधवा भर भर सरवा ।
सदारङ्ग विन जीव डरे छतीयां भरे
कुमलावन लागे हरवा ॥

४३

यलली यला यला ललले यलायलाययललले ।
जलवन मुदो वामा वुन्दो गोयान वुन्दो कुजाई
जाफर पीर सोई मन टेरे रे विदेशीया
वहोरो फिर मिलले ॥

४४

जासन प्रीत लगी मईको ए मा वहीके
विछुरत मोर मन दुखवा होय ।
ढिग सन वाट रैन टारे पल पल छिन छिन होत
न्यारे एसो रे मन भवनवा देखा न कोय ॥

४५

मैतो तैंड़ा पैंड़ा तक दीवे आमीसा डोगलोयाँ ।
दिल विच लगी तैंड़ी यादवे सोणा मुखड़ा
वेखामो तोमें जीवा मोयाँ ॥

४६

अतवाजे मन्दर वाजे रोम रोम धुम किट धाय धाय ।
कती धीना धुम किट किट धेत् धुम किट
धुम किट धाय धाय ॥

४७

रावरे मन मेरो लीनो रे कान ।
अचानक जाय निकसी हों सकुच झिझको अजान ॥

४८

मन्दिलरा मोरा बाजन लागिला आज मोरे
घर अनन्द वधावो मन उमङ्ग उमङ्ग हुलसैला ।
श्यामसुन्दर रङ्गमूरत ऐलो सगरी सखो मिल
मङ्गल गैलो ॥
तकधिलांग तकधिलाङ्ग धुम किट मृदङ्ग बजत
नृतकारी नृतकारी लो ॥
ततथेई ततथेई थेइया गगरे गगरे सरगमपधनिको
नाद्र तुंन्द्रदानी तुं द्रदानी यललीयलीयललल
लेललेय ललललल अलङ्कार सुनावो तीयाईया
तीयाइयातीया गावो मन्दिलो ॥

४९

काजरवा झमकै वाहरे हारि आजरे ।
अंखिया भरन आई पलकन लागलोजोमें
एसी जानती करती न्यारोरे ॥

५०

तानुं तन दिर नादीमतननितनितनारे
तदारेतददानी यललो यली यललु
यललललेतनदिरनातादानी ता ।

५१

किठांसो लायो दारु छे वाकडलो छेजो म्हारो राज ।
कौन देशां म्हासो रूस रहोजो सायवां
थारे आवणा म्हाणे काज ॥

५२

सो आनन्द भई प्यारे सब निशी जागी तोरे सङ्ग ।
जैसी सोई तैसी रैनको उनोदी माती
मेरा कहा मानले कौन तिहारो ढङ्ग ॥

५३

आजके दिन मिलन बनीलवा पीतम
आयो घरवाहो बार बार डारि फेरो केरो ।
वादिन मोको कहतेथे विसर गइला
जीउ अबका आइला मेरे मन ॥

५४

दिन को विथा कैसु मोरे कासे कहो सहो न जाय ।
बहोत समाजं जीया अकुलाय विन देखे रहो न जाय ॥

५५

गाकुल गाम को अब जिन जावो माइरो ।
वा नगर को पेड़ोइ न्यारो सबसे करत वरजोरी माइरो ॥

५६

मीत वासङ्ग लागो लोरे जाको सन मेरो
विन देखे रहो नजाय ।
घरी घरी पल पल कल न परत एमा उन
विन कछू न सुहाय ॥

५७

तिलानाद्रतुंद्रतुंतुं ननन ननना द्र-
ना तिलाना देनाना ।
निरफतो तरतो विरफतो ख्याले तदन-
जरम् जस्त तावेगुजस्ती चुआवँशरेमन् ॥

५८

तनदिर दिर तारो ललले तदानी
यललीयाललो यलीय ले ।
गरचे उरीयानुम् जेदस्ते सुफलसोहै
अनवे मकुन वखते जादन हैस्तकस राखल
ते दरवर नबूंद ॥

५९

दानी दीन्न देनत गरे तन उदन
दीम दीम तदीम् तदानी ।
नाद्रद्रधेतेलाद्रद्रतददीम्दीम्
तननन दीम् तदोल तना दां ॥

६०

केलके मन्सुर तकसे सदमानो ।
यरङ्ग अदाकर दयम्गुलसन् तखलसन् तावरवादानी ॥

६१

अनुआईरे कौन गांव कोछैल चिकनीयाँ
छुवत गगरी जात मोरी ।
हों यमुना जल भरन जात रही हम सो करत झगरी ॥

६२

धुमकिट धिलाङ्ग वाजई मन्दिलरा गावत टौड़ी राग
सप्त सुरनके सङ्गत सो सुन सबही आनन्द कराई ।
युग युग जीवो जोलो तोलो गङ्ग यमुनजल
चन्द्र धर ध्रुव भान सलेमा जो पातशाह सुखदाई ॥

टौड़ी—धीमा तिताला

पातुकवा मोरे हमरे मुखको
इतनो जाय कहियो विसर गए सब बतीयाँ ।
और सन्देसो इतनो जाय कहियो कहूं
न पठई पतीयां ॥

२

जीवे जो तुमरा लाड़ला जुग जुग नित नित
राज करो कोटि वरसलो महम्मदसा पातसाह।
चकता तोहे नूर सलामत यह अशीस
हम तुमको दीनो सब गुणीयन को
दियो करोर चतुर सहित सम्मत सदारङ्ग चाह॥

टौड़ी—तिताला

सोचीए नितही सप्तसुरनको
सारेगमपधनिनिधपपमगरेसा।
आरोही अवरोही अलटपलट उनञ्चाश कोटि तान लीजिए
सुर सङ्गतसो निधनिधपधपधपमपमपमगमगमगरेगरेसा॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

मोरी विथा सुन सखीरी मोसो अवध वदि कहि
आयेवेकी अजहूं न आए लला दरद
यह कासे कहों।
दिन ते रैन भई है निशदिन दिन भयो देखत पेड़े
अतिसूनो गेह उनविन दइया कासे कहो अदारङ्ग सो॥

टौड़ी—जलद तिताला

खाजेजो तुमतो बड़े पीर अजमरो दाता
सकल सृष्टि सब ध्यावै तोरे दरवाजवा।
झलमल झलमल झालर झमके
चन्दन किवरीया पोंछत दिवाल पौरवा॥

२

प्रभुदाता तू सबन को रव रटरे मन
घरी पल छिन।
रंग राचे हरिके नाम लीजे
जो देत है दूध पूत लछमी अन धन॥

टौड़ी—इकताला

भलहों सञ्चित भला हुवा सांची जतावन आए।
कोरन अञ्जन फल रहो है वसन मिलन को
हैं उमंग सो काहे को लज्जित हम पाए॥

टौड़ी—धीमा तिताला

उदतननननदिरतदोमतननादोमृतानदिरतदानी
तदोमदोमतननननननननारेदोमदोम।
कड़नकतिरकिटकड़नकतिरकिट
तकधिलाङ्गतकधेधाधेधा॥
धातिकिड़नकतिरकिटथाँकतिधाधिरकिट
धुमकिटधिनधाकतिधाधाधिधाकिड़नकतिरकिट
धाकिड़नकतिकिदोधाधेकिड़नकतिरकिटतकधुम
किटधिलाङ्गतकधातिधाधाकिड़नकतिरकिटतक
धुमकिटधिलांगतकधेधाधेधाधाकिटतकधेकिटतक्
तिरकिट्धुमकिटधुमकिटधिलांङ्गकिड़नक
तिकिटतकधा॥ ३॥

टौड़ी—होरी ताल

रङ्ग सदा नैनया कबूल रवा वोमें तैनु
जान जुदासा इश्कदा।
याह बलल कली आपे आप खुदाया लहुक
कुल भुन सदा रङ्ग गदा॥

टौड़ी—जलद तिताला

भइली होंरि तुरका के सङ्ग रहोमें।
होंतो जातकी बामनी रे अरे भला
इनकी प्रीतने मोहि मोहो लागमें॥

टौड़ी—तिताला

सुघर बना सिर सेहरा मोतीयन का
और सोहै गलसुआ चोलरा।
सब सखियन मिल मङ्गल गाइला सदा
रङ्गीलरा राज दुलारा॥

२

राजा को हम चेरीयाँ बिन दासो को
जनम जनम को हुकम करे हम सोई करें काजा।
हमतो दरस परस के हैं वेरागी मेहर नजरके
जो चाहे तों घरमें आजा॥

३

धेधेधेदानोकिटतकतकधोत्रा
धिरकिटतकधोनाधुमकिटकिटधिलाङ्गत् कधे।
सम औसङ्ग गतन भेदन धिलाङ्गधिलाङ्गधेधेदानि
धाधाकिटकिटधितकिटधेतलाङ्गधातिधा॥

४

फुलवा बीननहों गईहो बाग में भँवरा रे
बहियां लिपटानि मोरी गैलन छाड़ लई ।
रसका माता सर सवार न बावरोरे
ढिगते मोरे से जीयकी बात लई ॥

५

लागी रे नैना दीवर छीवे ।
चालतु साड़ी ऐड़ी बेड़ी भुवे तूसाड़ी तिरछीवे ॥

६

क्यों कर रहीहै मोसो रूसन ननदरी ए ।
एकतो वीरन तेरो कैसे रहतहै तापर
रहे तोहू ननदरीए ॥

७

रहस नचाव करोगी सो वलमा प्यारेकी सुनो
आवन की भनक ।
मो मनकी इच्छा सब पूजे पियकी सुदिष्ट होय तनक ॥

८

आपना घर भला और आप भली न किसीके
जाइए न इतना दुख पाइये ।
गरज नकदा नेवुता उफ्ताद खुसरो गर कशुद
खूवशुद मरते चरावा लाए चाहे तो बुग जरद ॥

९

वाजी निगाह यार गर यार सबीना खुन सरावे नाव ।
सर सारस सारस बीचस्ते तरफे रावच
पय कर दान्दगर वसनो वरीके गुल दार सवी ॥

१०

ध्यान से उठजावे सब बुराइयां उठ जावे ।
जे तू कर्म करे भावे तू जान न जानरङ्ग
रस तेरा कहावे ॥

११

उदतनदिरनातनुतानदिरतदरेदानि
तनुतननतननननद्रतदरेदानि ।
नाद्रद्रतानाद्रद्रादीमतनदीनातनातानदिरनातो
तननननतनदिरनादीमतननननद्रतदरेदानि ॥

१२

जइहों पियाके देश करिहों सोले सिङ्गरवा ।
ए मोरी मा बहोत दिनन पाछे मोको मिले भुज भरवा ॥

१३

छनन छनन बाजेरे पायलिया सुन घुङ्घरवा
बोले छनक मनक रुन झुन झुन झुन रे ।
छोटे देवरा देवर गोदी के खेले सासी
ननदीया जग गई हँसइरे ॥

१४

मलीया रे तेरी वारी भंवर गुञ्ज रहे ।
सरस गुञ्ज भई उलट पुलट कर में
अदा रङ्ग सुमरन के भावे जिय वसे ॥

१५

अब लौ लगई लगन मोरा जियरवा
तुरका के सङ्ग रति मानी ना मानी रति मानी ।
शिर पर दुरजन लोग वहे समझ मोरी आली हमरी
बतीया मानलो पियवा तुम तुरका हम तुरकानी ॥

१६

रव मेकै नू जाणा जुदाहसदा शाह
को विछुरे मानस को आन मिलावे ।
कासे पूंछूं कब मिलैगे अदारङ्ग कौन मिलावे ॥

१७

मजनू जाँदा दीठा वेमी मीयाँ लैले
नाम दिलभर यारदा ।
दरजाके नीमिके दर का लैले नाम पुकारदा ॥

१८

कोउन जाने फकीरवा की बात
दोऊ जगत में आवा गमन रचाई ठाकुर ।
एक आवत एक जात जहाँन में राजा रङ्क
अमीर फकीरा भेद न पावे वाको आकर ॥

१९

कलाली माणि दारुड़ी पिलावै होंतोरा मद छकीवै।
सुनरी भगतण प्रेमका मधवा भर भर भर मोहे प्यावै॥

२०

मेरा जिय चान्दा रैदा सोणामेंड़े यारढोला निरमोला।
मैं तो तेनू ढूंढ़दी फिरेदी सुन मीयाँ
राँझड़ा सदारङ्ग कहि बोला॥

२१

पनघटवा रोकि ठाड़िला ढोठ लंगरवा कैसे कर
जांऊ पनीया भरन।
बाट घाट मोंसों करत ठठोली सास ननद
मोरी लागो लड़न॥

२२

छिकनिया मोरा संगड़ न छांड़े अरे बलमा
कहा करूं कित जांऊ।
वाट घाटपै रोके वरजो न माने लंगर तुरकवा
सदा रंग महमदसा वाको नाऊ।

२३

साजन गलवाँही डार ड़ोलेरी।
हमरी चुनरीया मोरे पियकी पतरीया
उभ रहे कैसे खोलेरी॥

२४

तेरा सो मेरा मेरा सोहै है।
साँच कहत हूं सदा रङ्ग की कोई पूंछे
म्हों मै दांत तेरे केहैं॥

२५

रहस नचाव करोगी आज मोरे आइला पोयरवा।
मङ्गल गावो चौक पुरावो मोतीयन थार भरावो ००००॥

२६

दुनीयां दे कोल डरिए भरिए होते डोर जासो निभहै।
सदा साहवको पहचान वन्दे मत होजा
अयान रखदा सदा रङ्ग दीखदा॥

२७

खानम रजा सानू गरे लगादा दिल नु
दुखादी कानोदी वालीयां।
दुती वेड़ा साड़े वे दुसमन मा पैवे गुजोया सेन चलाँवदा॥

२८

नैनवा मोरा पकावै यार अपनोरे।
नैन तेरे गरम भइला याही पर तोरे॥

२९

सब निश वरजोरी कर फिरत नित बोली
ठोली प्यारे अपनो गाँव।
मेरे तो जियमें जोई आवे सोई करूं
प्यारे दूर तबही हमारो नाव॥

३०

राज मैतो तेरो ताँवे राज मैतो तेरो
वातड़ीया पहचानी गुमानी।
मैतो थारी दासी सायवा जनम जनमरो
थांसो लाग्यो छे म्हारो प्राणरो॥

टोड़ी—धीमा तिताला

सुनो छैलवा मोरा चोर मोंसों नित नित काहे छीनत
निश दिन रोकत टोकत मग मध कासों
कहों यह दुख पीर।
वरवस बहियाँ मरोरी झक झोरी
लंगर झगर मोंसि रार करतहो मानत हो
हलधर केवीर॥

टोड़ी—तिताला

सुनो ननदीया तोरा वोर मइमन नित नित अवध
बदि औरन के जाय कासन कहूं दुख बतीयां ए
दिन रतीया।
सरवस दै दै हारी जानत सकल नारी कोउ अपने
सपने भए वनवारी व्रज सरस जात छतीयाँ मोरी ना
जानो कहूं व्रज नारी कोऊ लंगर हिलो घतीयाँ॥

२

करत रहत नित चोरीयाँ श्यामसुन्दरवा
नन्दके दुलरवा।

घरी घरी पल छिन माखन चोरावै
आयके मोरि मन्दिरवा ॥
लटक लटक पग धरत धरन पर उझक उझक
मुख निरखत निशदिन माधुरी सूरत साँवरी सूरत
रस वस कर लेत दुलरवा ।
मोर मुकुट श्रवणन कुण्डल है झलकत
अङ्ग अङ्ग नग भूषण मणि छम छनन पग नूपुर बाजे
ठुमक चलत गति लेत चरनवा ॥

२

लोक लाज मोहि आवै मोरा जिय तो को
चाहे तोरि ढिगवा बैठ रहूं ।
घरी पल छिन मोको विरहा सतावै
कहाँ करूं मैं किधर जाऊं ॥

४

वनवारी मुरली बंसी सुनावै सुतानन रस छकीयारे ।
सुनिरी सखी प्रेम सो मधुरी रङ्गीली मुरली बजावैरे ॥

देशी—एकताला

नैया मोरी भई है पुरानी केवट सदा मतवार ।
औंघट घाट सूझत नाही तोको आन पड़ी मझधार ॥

देशी टौड़ी—तिताला

योगी भेषलिरे रङ्गको सम्भाल गुणको विस्तार ।
तीवर तर तीवर तमतीवर कोमल
सकारो नीके सुहावत सोच विचार ॥

२

हे दुखभञ्जन श्रीराजा रामचन्द्र रघुनन्दन ।
केते कोनि रङ्क राव दशासुर दन्द दीनो
रावणके गर्व्व गञ्जन ॥

टौड़ी—तिताला

माड़े प्यारीया वेदरदी गवरुणी
वेगइया विदेश मुदता गुजर गइया ।
कोकराँ केहणं आखाँ साड़ा हाल विरह
दावा न मैनु मारीया ॥

२

सुन मैड़ा प्यारी यावे बांह गहेकी लाज ।
अपने किएकी सरमतू सानू शरण रहे
की करो राज नियाज ॥

३

सो आनन्द भयो है प्यारे सब निश जागी तोरे सङ्ग ।
जैसी सोई तैसी रैनको उनीदी माती
मेरा कहा मानलो कौन तिहारो ढङ्ग ॥

४

आज आइला पिया मिलन बनिलवा हो
तन मन बार बार वार डारो विहारीजी ।
आनन्द भइल मन चीते कारज दुख गइला
सुख पाइलाजी ॥

५

वेदिन की बिथा कासो कहों कहोन जाय ।
बहुत दिवस भए आए नाहीं जिया अकुलाय
विन देखे रहो न जाय ॥

६

बावुल मेंतुरकन भई हों तो तुरका के सङ्गवा ।
बारा बरस मेंगङ्गा न्हाई कल्मा सीखी सुनीरे
बांगवा ॥

७

मेरे यार नैण लगा साँवरे संग ।
नैन रङ्ग उनके संगमें भइलो बावरी
याही पर तोरे ताना तरङ्ग ॥

८

साँवलड़ा सानु गरे लगादी मुरली सुना
दानी गावै तान ।
बिन देखे सानु कल नहीं पड़दी मोहन चतुर सुजान ॥

९

साँवल तेरी चेरीयावे साड़ी वात सुन सइयो
वो गुमानी राज ढोलारे ।
मैतो थाँरी दासी जनम जनम की
थासो लागोछे ह्मारो काज साथड़ीयारे ॥

१०

छूम छननन छूम छननन विछुआ वाजे
मोरी मइया तेहों जानो पियको आगम भइल।
दिन चार में सगुन होतहै मोरे तो जो को
सब दुख गइल॥

११

कलाली मोंको दारुड़ी पिलावे हों तोरा
मद छकीयारे।
सुनरी भगतण प्रेमका मधुवा भर भर मोहे
छकावेरे॥ क॥

१२

मेरा जिय चाहँदा रेदा सोणा मैंडे यार
ढोला निरमोला।
मैंतो तैनु ढूढ़दी फिरदी सुण मीयाँ
राँझा सदारङ्ग कहि बोला लोला॥

१३

समझ मन गोरख धन्धा।
जिमि आकाश को दोऊ कड़ोया
पाँच पचीस प्रबन्धा।
जादिन ते उरझो सुरझो नहीं याझगरे सनमन्धा॥

१४

कोऊ न जाने फकीरवा की बात
दोऊ जगतमें आवा गमन बनाई ठाकुर।
बहु रङ्ग बहु भेष बनाए एक एक रङ्ग
सूरत सूरत न्यारे न्यारे चिन्हवा आङ्कुर॥

देशी—तिताला

माण्डे नाल बोलन छड्यावे ढोलन के हो ढ़ाड़ी
तकसीर कीवा घुंडी खोल।
केहो गला मैंड़ी तैंडरे आगे बीतो सदके गइया
तेंड़े गबरू साड़े नाल की तानी कोल॥

टौड़ी—तिताला

अब मोरो विछुवन मोत पियरवा काह
सों न कह्यो जाय।
रुणक झुनक पग नेवर बाजे कैसेक आऊं में
मितवा तोरे पास सुन पावे ननदीया रिसाय॥

२

पिय विछुरे नहीं चैन मोकों वैरी विरहा
करत बावरो।
नैना नींद न आवे सजनी कैसे कटे दिन औ रजनी
सुन्दरश्याम मनोहर मूरत मिलहै कबवे साँवरो॥

३

लागी सुरत सखी मोरो पिया नाहीं आए एरी।
कैसेके पियसों जाय मिलोरी अबही दिननकी थोरी॥

४

घरी घरी पल छिन कल न परत है मोहे
कैसे रहों पिय विन में अकेली।
सदारङ्ग तुम मनके भवन हो तन मन
वस भइली नवेली॥

५

वारी में वारी एवनवारी तिहारी ऐसी
अनोखी हसन पर।
निरख नैन रस वस भई सकुचन वाकी मोहे कसन पर॥

६

तूजे मिलणदी चाह रवा वस नहीं चलदा वै।
सोणा साड़ड़े दिल दाह बाल बुझ दावे
इस्क लगा साड़े हाल दावे॥

७

वन्दे देनाल सोणा करम करीवे।
रङ्ग वरसनतु इस्क वगा कमाल घरीवे॥

टौड़ी—आड़ा तिताला

कब घर आवे मोरा सइयाँ ए बमनारे।
पोथी बांचो सगुन विचारो हाहा करत परु पइयांरे॥

टौड़ी—एकताला

अधिक जियसो सुहावा गातो रामही भावे।
या छवि देख हों बावरो भइहों विन देखे
कछु न सुहावे॥

२

न जानू कौन भाँति मिलोगे तिहारो
भंवर कोसो रीत ।
आनन्दघन व्रजमोहन प्यारे
ठौर ठौर केहूँ रहे हो ए दई परतीत ॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

जा जारे पातंगवा मोरे कंथहु सानु देहे पतीया ।
पहेल सुख सन कहियो बतीयां
तुमरा खुदा और जरो जात छतीया ॥

टौड़ी—धीमा तिताला

माइरी धन धन धन व्योहार तेरो हित जानत
सब गुणीजन ।
एसे हेतु चतुर छवीली करत न काहू की कान ॥

टौड़ी—जलद तिताला

महम्मदसा के आनन्द बधावरा ए माई
पूजलो मनके काज ।
तन मन वारूं वापेरी सजनी सदा रङ्गीले ए राज ॥

टौड़ी—तिताला

मेरी विथा सुन सखीरी कासो कहूं मैं हाल ।
मोंसो अवध बदि कहि भेजो आयवे को
अजहूं न आए लाल ॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

मेरे मन याही कररे जो अपनो भलो चाहव ।
दीन दुनीको मन इच्छा मागो
करीम रहीम सतार दे मोरव ॥

टौड़ी—तिताला

तुरका रङ्गीला छवीला देखत ही मेरो
मन लुवध रहीलवा ।
छवि निरखत मैं एक घरी अति सनपतवा
असद कृपा सुरजनवामिल कर ढोल धरीलवा ॥

टौड़ी—आड़ा चौताला

एरी आली कबकी मनावन गईरी हों पिय
कोपी मोमन में पायो ।
निरख निरख परस परस समझ समझ
जबलों देखिला मनही मनमें समायो ॥

२

तेरे आगे पनीया भरोगी रे साजनू
तूतो मत गमन करे ।
हाथन जोर करूंगी हाहा पांय परूंगी रे
सुरजनुवारे ॥ तूतो म० ॥

३

घर जान दे विहानरा होसी है ।
पायल मोरी रुनक झुनक बाजे
दुरजन लोक परोसो है ॥

४

आनन्द बधावरा सोहलरारे सो इस घर गावो
सब मिल सखी सहेलो रहस रहस फूलो न समात ।
एतू महम्मदसा सदारङ्गीले दरस देख कर जात ॥

५

अबतुम मानो मेरी बात प्यारोरी ।
महम्मदसा पिया गरे ही लगावो
अदारङ्ग सो तेरे हाथरो ॥

६

आज सो दिन कृपा करि हो हम जानिएरो ।
तू जगनिस्तारन अन्तरयामी अदा रङ्गको
सदारङ्ग कीजिए अपनी पौतरी ॥

७

सुघर वनरा वन आयो गावो सखियन
मिल आनन्द बधाव रामा ।
शुभ घरी शुभ दिन मोरे घर आइला
चतुर वना रामा ॥

८

जा जारे पतङ्गवा मोरे पियासे कहि देहु बतियांरे ।
पहले मुखते कहियो तुमरा खुदा हा फिज
तुम विन सदारङ्गीली जरोजात छतियाँरे ॥

८

प्यारे मेमौंकी मोसे जियकी पीत लागी सरस ।
तुमरी बात नेकन मानोँ लाख बरस ॥

१०

जासे तोहे बदनामीया ओछी पीत न
कीजिए प्यारे ।
लाखन झटिको झुठालो हरि विहारे
लाजन कारे ॥

११

हिक् बावुल कित जनमीरे अरे वन
कित जन्मी जन्मी जन्मीरे ।
दान दहेज सब घर वार दीनो ए सुरजन बहियाँ
पकर अपनो ले चले नगरवा रे ॥

१२

अब तोरे पाय लागू बलमा जोया मोरी सीख मानरे।
हाहा करुँ पइयाँ परूं साजनतू
तो मत कहुँ गमन करे ॥

१३

मोरो विथा सुन सखीरी मोसोँ अवध कहे
भेजा आयबे अजहूं न आए लाल दरद कासेँ कहूं ।
दिन ते रैन भई रैनते दिन भयो देखत पैड़ो अत
सूना भयो उन विन ए दई अदारङ्ग कासे कहूं ॥

१४

मलियारे तोरी वारी भँवरुवा करत गुञ्जार
भँवर गुञ्जार ।
यह सुगन्ध वाके फूलसे उतरे अदा रङ्ग खुसवो
पवन चले शीतल वहार ॥

१५

आजसो जसे कृपा करो तो मया कीज्ये
अबही करिए वाही रीत ।
तू जगनिस्तारन अन्तरयामी अदारङ्ग
राखिए अपनी पीत ॥

टौड़ी—एकताला

सुनवे अलवेला गिरधारो खुला तैनु लहरीया चीरा ।
अलकन कुण्डलकी झलक छवि निरखत मन
मोह लीनो और सोहै सुख वीरा ॥
श्वेत झगा झीनो अति राजत छाजत अरुण
सुरली उर सोहै जोत हीरा ।
कृष्णदास नु आस वेगनदो विन देखे
मन न रहत है धीरा ॥

२

न जानू कौन भांति मिलोगे तिहारो
भँवर कोसी रीत ।
जित सुगन्ध पावत तित धावत हो
तुम गरज परेके मीत ॥
आनन्दघन व्रजमोहन प्यारे ठौर ठौरके रस
चाखतहो कैसे करे परतीत ॥

३

करो शिव महरकी नजर निश दिन
घरी घरी पल छिनन ।
काशीनाथ विश्वेश्वर दाता, तुम सब जगके विधाता,
तुमही देवो दूध पूत लच्छमी अनन्दघन ॥

४

घरी घरी जातरे अवध वृथा तोरो
क्यो नहीं सुमरत राम ।
तनते प्रान पयान करत जब कोऊ न आवत काम ॥
जे हरि रांचे तेइ नर साँचे कहाँ लगि
वरनोँ तिनके नाम ।
विष्णुदास प्रभुके सुमरणते पायो परम निजधाम ॥

५

बांके वनवारी २ मोहि सानु करत हो हँस हँस
रस भरी बतियाँ श्रवण सुनत मोहि लगत पियारी ।
तेरी वतरावन सुख उपजावन लख लख सोँ गन्ध
खात थारी गिरिधारी ॥

देखन तेड़ड़ा जीवन मेड़ड़ा जिन्द बस
कोनी हमारी मुरारी ।
विष्णुदास पर किरपा कीजो दीजिए
दरशन हों वलिहारी ॥

टौड़ी—ब्रह्मताल

कौन टेव परी तिहारी ते पियसो रति मानो ।
चतुर सुघर तूही प्यारी एती हट न आनी ॥

टौड़ी—परताल

मीठे बोलन ढोलन आएरी सब मन भाए
घर घर मङ्गल गाए ।
नैन सराहै देखत भाजे हिल मिल करोंगी बधाए ॥

टौड़ी—तिताला

तौं तननननतौंतननननतारेदानिउदानिदानि
तदानितारेदानिदौम् ।
धौतौलौतौलानालौतौधितौलाना नारेनारे
तारेतारेतदारेदानौदौम् ॥

टौड़ी—इकताला

धाय मिलूं जब आवै मोरे घर महम्मद सा
प्यारा गर धाय ।
गाय बजाय नौकी तानसें मेरा मन बस कर
रहिलवा धाय मदङ्गसें भेद परे धाकिट धुमकिट
तक्धितिलानागिड़धाएरेधाय ॥

टौड़ी—तिताला

मेरे मन राम राम रटरे जोतू अपनो
भलो चाहै अब ।
दौन दुनी को मन इच्छा माङ्गो करोम
रहोम दें गौरब ॥

२

करम कीजिए तुम हजरत खाजा तुम
राजनके राजा ।
दौन दुनी में नाम तिहारो जपत रहत नित
चरणन तुमरे लागें आजा ॥

३

सोवन देरे प्यारे मोरे सब निश जागी तोरे सङ्ग ।
अबहो सोईहै रातकोउ नौदो मातो हा हा
मोरा कहा मानले प्यारे कौन तिहारो ढङ्ग ॥

४

बरजोरी ए लोगवा माई मिलन न देई पियरवा
सानु कौन भाँति पौवाऊं मधवा भर भर सरवा ।
एकतो सदारङ्ग वौन वजावै भर आवै
छतीया कुमलावै हरवा ॥

५

आछे प्यारे लल पर बल बल जइए ।
जोई जोई कहे सोई सोई करिए सजनो बनी
वनावत बहे जो चइए ॥
हजरत मीराजी तिहारे नामको अधरवा ।
हमरे तो यह आस रबतैनु
पाऊं कर राखूं गरेको हरवा ॥

टौड़ी—तिताला

भौना ह्मारो रसयो राजकुंवार ह्मानै
घनो प्यारो लागै राज ।
हाथ जोर अरज करासां अबतो साहिव कृपा
कोज्यो सोभड़ीया रङ्ग मानो मै वारणै जावा थे
ह्मारा सिरताज ॥

२

तदेदानी तोमतोमतननन तदौयन
रेनरादरातदेदानितरलेतरलेतरले
उदानिउदानिउदानितदानितदानिदरादरा ।
इस्क खुदाने वहो दिखलाई वहार जिसका
पार निवार हरगिज इस्क कम नहो ज्यो वाग वहार ॥

३

तोरे कारण जग मइकु निश दिन
हित चित सो भरोलवा ।
लोक बौरे जानत नाही विन देखे
नही चैन कैसे रहे सुन्दर मूरत मुख करोलवा ॥

४

प्यारो मोहिसो नितके झगरो करे नितही बढ़ा।
अबवे समझ ने लगेतो लगाही लगा न लगेतो
लगा खुशी वखुशी सोदा बढ़ा॥

५

ह्मारे डेरे आजोजी राजेन्द्र आजोजो
राजेन्द्र अभी अभी जोवा थारी वाटड़ी।
उन विन मोको कल न परत है
को उनके हित मोसो वातड़ी॥

६

चंगे नैना वालीयानी कुड़ीए मदा रङ्गनु तैड़ी सैन।
काँधवे गुदरीया जलवे खाल और चुभ जादे वैन॥

७

आजरे महम्मदसा घर आनन्द बधावरा
में पूजीरे मन के काज।
तन मन धन आइला सजनी वनरा आइली
मदा रङ्गीली मोरे आज॥

टौड़ी—एकताला

दैया वट दुवर भइली मइकु लङ्गरवा
भरन न देत गगरीया।
विहान तोरे सङ्ग कैसे जाऊं सजनी
बीच माझ ठाड़ो सदा रङ्ग उचकैया॥

(ग्रीष० ग्री०)

२

नारी देखहु वैद मोरी कौन काजरे।
विथा पीर कैसे कहूं नातर आवे मोय लाजरे॥

३

माई मैंतो कवन काज आवैला जो जिय डरावे।
विन देखे साहजहां पिउ कलन परत
निश दिन मोको कछून भावै॥

४

झर चश्मे तुरासेदन आज दाम कुनम्।
आंक दर गिरदे तो गरदम के तुरा राम कुनम्॥

५

सुरजन तोरे कारन सबही को बोलो ढोलो सहो।
एतें पै नसुनें न कान धरे यह बात नई भई॥

(निरमोल क०)

६

दारादारा अततददानितन७ दारादारातददानि।
तरलेतरलेतदादानिउदानिउदानितदानितदानिदा॥
वरम आरे मा गरीवां न चरागे न गुले।
न परिवरवाना वा सदना सदाए बुल बुले॥

(महम्मदअली क०)

७

कोयलिया बोले अंबुवा की डार विरह भरी।
सपने अपने दामनी दमकै
लाल बिन निश चोंक परी डरी॥

८

अनमनी पिया सो रहत है काहे सलोनी नारी।
तोरी मनुहार करत नित मनरङ्ग अपनो रूप निहारि॥

९

सुध साधके बजाई है वीन तेतो सदा रङ्गीले लाल
ऐसी अकलमें सवाद दियो एसी निरमोल।
जबते प्राणेश्वर महादेव कों दीनी तबते केतेक
रच पच हारे उनश्वास कोटितान वसुधा करके याको
आदि अन्त तुमही पायो देखायो मन रङ्ग कर
रस डांड़ी को तोल॥

१०

एतो वेपरवाही किन वदीवे मीया
दिल लगा तैड़े नाल तेकदर मेड़ी न जानी।
नित रङ्ग करदा और पहचाने औरां नाल
हँस हँस ढोलन यार गुमानी॥

११

सांचे सुरन गाय बजाय लेहों सब विध अपने
गुरुनकी गुणीयन की सङ्गत सों राग परन सप्त सुर
निधपमगरेसा।

गरेसासारेंगरेसासारेंगमगरेसा
सारेंगमपधनिसानिधपमगरेसासारेसा ।
धाकिटतकधुमकिटतकधिरकिटतक्
तिरकिटतक्धागड़ानदिगनड़धासा ॥

१२

मनुवा मोरा ना रहे कल न परत इतनो
कहत अरज गरज ।
कैसे कर राखो प्राण पिया विन हाँरे
दूजे उमड़ उमड़ घुमड़ गावे गरज गरज ॥

१३

हम योगी परदेशी हमारा गुण औगुण न चित धरिए
जो कछु चूक परी प्यारे तुमही देहो बताय ।
भिच्छा माँगू तोरी नगरीया और डगरिया जानन
पाऊं सदा रङ्गीले महम्मदसा पिया तुमही वाहिको
देहु मिलाय ॥

१४

दीमदारादिद्रितिझिलानातानानेतानाताना
द्रिनोमतनमतदरदानिनादिरदिरदानितुमतद्रद्रदानि ।
तुमद्रतदरदानिहैयाजानमदीमदीमदीमनिगर गइया
तैनुए न चाहिए मान निए हमानो अनी अनी ननन
साता डाड़ोया कोल साड़े सोहरे जावाँ टुकसु यह
गामनी अनोर माननि ॥

१५

बना व्याहन आया भाया मन सुहाया ।
नूर को शिर छत्र तनायो शिर महबूबी याते
सेहरा बधायो सोयह बड़ भागम पाया ॥

१६

छत्र देश महिम रात वसेती बना आयो
माला ड़ोला घर व्याहन आयो ।
करन दीन असलाम करतार आप पठायो
महम्मद नाम धरायो ॥

१७

कुतवदीन कुतव आलम महबूब इलाही
अपनो करम कीजे खाजेजी ।

—।०००००००।—

१८

मान मनावन आए आपही चल उठके हँसके
क्यों नबोलो लालन सों ।
सुन्दरश्याम सलोनो मूरत कैसे तजो यह डरनन सों ॥

१९

मैड़े नाल बोलन छूख्या पूछन भूल्या कहा
काइर को वगहा मेल ।
इतनी अरज मैडो मनवे तुहि सावे दोस्ता दर दिल ॥

२०

आइ एस्ते चस्तेतु साहम तुरा के दरदाम कुनम् ।
आंक दर हरागजतो गर दम राम कुनम् ॥

२१

ननदीया हमी सन झगराई सुनहुरे लोभवा ।
निश दिन मइकुं दुवर भईले पिया विन
मन भईले जोगवा ॥

टौड़ी—तिताला

जिस नाल लगन लगी सुनवे राझा सोणा
जिस नाल इस्क दावे डातरना ।
पार गएनु राझन कहेदे वार गए नु
हीर कहेदे दोनो मझ धार विच तरना ॥

२

मोको लाज वैरन भई अब कैसे
निकसो पियरवा तोरि ढिंगते अगनवा ।
व्याकुल भई जिय कल न परत है
सदा रङ्ग महम्मदसा सुरजनुवा ॥

देशी—तिताला

जोतनके चढ़ो एक डंका दे चढ़ो चहुँ चक में
जोर कर ढिंग ढेरो ।
जान पड़े बड़े वीर दूर गयो सबन होइ गयो निवेरो ॥
सिकार जो कर विकारि धका धक खेच
कमान हाथ घनेरो ।
छटाछट कटाकट झपक जैसे तैसे चांप
चूरो कर ढेरो ॥

२

देखोरी एक बालक सुन्दरश्याम सलोनो छोना।
मोर मुकट कोस्तुभमणि कण्ठमें मुरली बजावत
नन्द महरजीके भौंना॥
साँवरी सूरत माधुरो मूरत निरखत हो
डार गयो टोना।
गुणसागर आगर नटनागर करत रागरङ्ग रंग रौना॥

३

सुनतही बुलावन को बातें आँखन के
जोर धाई हों आगे जो रजा।
मनको फूलन सो अङ्ग अङ्ग अंकको सुलन मलायहो
आगे जो बजा॥
सूरत देखाई मन लाई चाही आभरण सजा।
मन वश कर लीनो तानसेन प्रभु रस वश करले लजा॥

देशी—धीमा तिताला

तोरेरे पायन परहुरे प्यारे अनन गवन मही कीजिए।
जङ्गल पखेरू घरवा बनाय लीनो
बाहर पाय न दीजिए॥

देशी—जलद तिताला

फरकोले भुजवा माई अनुआइरो।
मिलने कारण पीने तरसाई जियरवा उन बिन जबते
सदा रङ्गीले महम्मद सा की बात पाईरो॥

टौड़ी देशी—तिताला

जब लग हित मोरी गाँठ मुठी तब लग सोदा विकाय।
हाट भई सुनि बासन भरीए ते अरे भला
अब कोई आवे जानि अनजाय॥

टौड़ी—तिताला

भटकत काहे बावरे करम लिखा सोई पाइए।
जोराँची सो साँचो सुमर कहा पछताइए॥

२

गुरु साँचो जिन पायो तिन देशीते
मारग सुधार कण्ठ मानो।
तान प्रस्तार कोऊं नेक बूझे सद रस पंगत भेद जानो॥

टौड़ी देशी—तिताला

रङ्गरी वेलरो हितरी वेलरो नवेलरो
ह्मारा आलो जाने कह ज्यों समझाय।
हरि तिरछे अबछे सुन सजनी अब कैसे लिपटाय॥

टौड़ी—तिताला

कुतवदीन खाजा तुम हिन्दके शिरताजा
दीन दुनोमें मेरी रखो लाजा।
करमको नजर कीजे खाजेजी दुख दारिद्र
मो तनते जाय भाजा॥

२

तुम अपनी नजर करो हम पर खाजा
जो राजो हिन्दके निवाजो सब जगको एक पलमें।
पीर अजमेरी मौन दीन चिस्ती
चिराक नित नित जाउं बल बलमें॥

देशी—खमसा

परसत हो पायनको कुछ बात नई
जिय ठानी एहो ठानी प्यारे।
जोई जोई कहिहो सोई सोई करिहों में
पायन लागूं तिहारे॥

देशी टौड़ी—जलद तिताला

दुरजन लोगवारे सब मिल करे चवैया।
सदारङ्ग हमो तुमो करे रस भोगवा वहो देश चलैया॥
तुमजो मोसो साँचो साँचो कहो लाल
सिगरी रयन जगैया।
हमको छोड़ तुम गए सोतन के घर मोसो करत चवैया॥

२

मेरी विनती उनसे जाय कहो पतंगवा।
लिख पतियाँ महम्मद सा कों भेजो सदा रङ्गीले
जबते न आवो सन्देशवा॥

देशी टौड़ी—एकताला

ए सखी श्यामसुन्दरको विन देखे मोको न आवे चैन।
निश दिन मोकों कल न परत है
कैसे कटे दिन रैन॥

२

तनरी इना तानरी इनन उचानाम ।
आननननोतननाननितानतित नानतानन आनन
तानतननरोइनतरनरीनतनन तौननौन ॥

अथ अन्तरा

अदनतुम नदरतनन तदननान आनरी
तदनरी तानानतदरना ।
तदना आनरोतानरनन तुम तननन तदेन्ना
तानननरीनरनानरनतनुमतौम् ॥

टौड़ी—देशी एकताला

गून्ध गून्ध लावोरी मलनिया फूलों दे हरवा ।
आज मोरे घर मोहन आए करहूं
फूलो के सिङ्गरवा ॥

देशी टौड़ी—झपताला

एरी मन्दिलरा गह गह्नो गाजे बाजे ।
रानो यशोदा के पुत्र भयो है श्याम सलोना
आज वधाई नन्द घर बाजे ॥
अतिही मुदित नर नारी नाचत वीण मृदङ्ग
विविध साज साजे ।
कहालोँ वरनों भागन की महिमा पूरण ब्रह्म प्रगटे
नाचत नन्द उपनन्द प्रगट भए हरि भक्त न काजे ॥

टौड़ी—एकताला

मोसो तो प्यारे आवन कहे गए एतें
पर आनके गए ।
बसो तहां जहाँ कीनो नेह नए पहले से हित भए ॥

टौड़ी—देशी तिताला

हमहूं छाड़ गए सोतन के घर एरी सुनो ननदीया ।
सदारङ्ग विन कल न परत है पोसो
मोकोँ मिलाव ननदीया ॥

२

सघन समय हेतु दूर मेरा प्यारा ।
ज्वलति वपु निदानं जीवना क्या हमारा ॥
रुचिर वसन धारी सुन्दरी यह जो नारी ।
काहे तजे वनवारी मदन पीड़ा यह भारी ॥

देशी टौड़ी—ताल धमार

जिन छुवो मोरा अचरवा अतिही ढोठ लङ्गरवा ।
यह डर निकसन पाऊं पैंड वावरो जोर
गहे मोरा हरवा ॥

टौड़ी—तिताला

विछुरे मानस कौन लाय मिलावै अल्लाही मिलावै ।
उनके मिलवे की कासे पूंछू अदारङ्ग यह कौन वतावे ॥

देशी टौड़ी—ताल धमार

वाके रूप रङ्ग मेरे नैम ।
अब हिल मिल होरी खेलोगी गिन होंन दुरजन वैन ॥
लोक लाज कुलकान तजूंगी धरूं मान मनमैन ।
गुरुजन दूर करो जियते जब तब कोऊ कहन सकैन ॥

टौड़ी—जलद तिताला

खाजेजी की नौवत बाजे बाजेरे याही दरवाजवा ।
हाजती आवै पावै मुरादवा पुजावै मन के काजवा ॥

(जौनपुरी)

२

याही दरवाजबा ठाढ़ी ले दरवानु
तनक शरण होंरे सहवसन भेटवा ।
नवीय चली महम्मदके सङ्ग वाले चली
मोरी बहिया पकर अच्छेरे सहवासन भेटवा ॥

३

वेतो आई वसन्तकी सुवारकी देन
सेवकको माय बजाय रिझाय वीन ।
महम्मदसा तेरे दरवार सदा रङ्गीले
छाजे निजामदीन ॥

४

प्यारे मोरे लग गरे सोय प्यारे ।
अववे चितमन रूप रिझमन न तन मनाए मदभारे ॥

५

जो संवारी सो अवमेंतोरे रङ्ग राती माती होंरे ।
खाजे मोनदीन खाजे कुतवदीन निजामदीन
औलीया सङ्ग राती होंरे ॥

६

पियके मिलन न जाइए गाइए बजाइए रिझाइए
धाधाकिट धुमकिट तक धिलाङ्ग ।
तकधिलाङ्गधुमकटताधिलाङ्गतकधातकधा
मृदुमृदङ्ग बजाइए ॥
पपधधपधधधनिसानिधपमगरेरेसासासारेसा लाग
डाट और उरपति रपसाँ स्वरसो नीको मनाइए ।
झनक झनक वकड़ झंझं झनन धागे
तिटितागे तिटि त्रेवट सजाइए ॥

७

सखीरी विकुवा मोरा बाजे माई कहाँ करूं कित जाऊं ।
सास बुरी मोरी ननद हठीली और कुटंवके
लोगवा जागे सदारङ्गको कैसे रिझाऊं ॥

८

लावोरी मलनीया आछे फुलवनके पोके गरे डारूँ हार ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा और सुगन्धके
वसनवा डार ॥

९

तेरी अटरीया केसेके आऊं सुमत पियरवा ।
जागे मोरी ननद सास डर लागतहै
और काँपे जियरवा ॥

१०

सास ननदीया जागे मोरी कैसेके आऊं
मितवा नैनन सैनन मोको बुलावै ।
अगर वगर पड़ोसन और कुटंवके
लोगवा मोको खिजावै ॥

टौड़ी—धीमा तिताला

तोरे कारण मै ढूंढ़ा वृन्दावन तमाम कुञ्जगलीयाँ सारी ।
एक वन ढूंढ़ सकल बन ढूंढ़े कहूं न पायो वनवारी ॥
डगर डगर और वगर बगर में घर घर वनिता
बूझत हारी ।
लगी चटपटी निपट अटपटी विष्णुदास
प्रभु सोंह तिहारी ॥

मोहन तेरे मेरे मिलन की चरचा हो रही ।
डगर डगर और वगर वगर में घर घर
सब वनिता पोरही ॥
पड़ी झकमारन देन ग्वालननारी अनारन
चुपक चुपक तोरही ।
विष्णुदास कोउ कहन सकत है रार करनकों
सब मुख धोरही ॥

टौड़ी—होरी
(शेष)

हमरो सुरङ्ग चुनरोया गहरो वाको रङ्ग ।
हमरे पियको लाल पगरोया उरझ रहे वाके सङ्ग ।
नयो हुलास नई पीत रीत बूढ़ो वाके अङ्ग ॥

२

सबहीतें वरजोरी करत फिरत
बोली ठोली प्यारे अपनो गांम
मोरे तो जीयमें जोई आवै सोई
कर हों तोही हमारो नाम ॥

टौड़ी—तिलाला

हमारे याही आसरवारी हजरत मीराजी
तुमरे नामको अधरवा ।
मन डोरा तामे गुलाऊं कर राखूं जैसे हरवा ॥

टौड़ी—होरी

ननदरीए एतो कहा मोंसों रूसनो ।
एकतो तोरा वीर मोंसों रूसा रहतहै
तापर एतो हूंसनो ॥

२

सबहीते बरजोरी करत फिरत नित
बोली ठोली प्यारे अपनो गाम ।
मेरे तो जीयमें जोई आवे सोई करहों
तबही हमारो नाम ॥

३

दानी तानुमृतनन दिरना शिरावे (दानी ।)
कोनके रोशन गरेवानें सुसाहवे मतो पीरे
मनो जवाने मने एस मनरङ्गदानी ॥

४

आजरे यह आनन्द को दिन प्यारे मेरे
यह आए कैसो नीको छविसों ।
सुघर मालनीया गुन्ध गुन्ध लाई फुली
समात अङ्गन में ढवसों ॥

५

हरवा लेतो रहोरे लागो लो रतन पचासरे लङ्गरू ।
हाथ जिन लावहुरे रहसन गुन्धीलो हरवा
जोआवहु मोरे पासुरे ए लङ्गरू ॥

टौड़ी—ताल सवारी

अबमै कैसी करहूं पिया विन छतीयां
मोरी धकधकन लागी ।
जागत जागत सब निश बीतो भोर भईलवा
चिरिया चक चकन बोलन लागी ॥

२

कवन देश विलम रहे पी नहीं आए
हमरी सुध विसराई ।
हों जानी काह रस वस भये पतियां
लिखन पठाई ॥

टौडी सुहैयर—ताल सवारी

गावोरी सोहनरा सब मिल गायन गुणी
निरत करो निरत कारी ।
पिय प्यारा वोहो मिलिया सब दुख भुलिया
सब इच्छा पूजी विधना हमारी ॥

२

दीमदारा तिल्ला द्रद्रद्रद्र तिल्लरे अहै आता तिल्लरे,
द्रद्रतुंवेतिल्लिल्लानादीम् दीम् तददीम्नरेतदानी ।
वरव हदतें वुजुदतों कसरत निसान एस्त ।
आलम वराए जाते जेतोहि देखान एस्त ॥ दीम० ॥

वरवा टौड़ी—आडा

सुखड़ा वेखामी वो यारना चिर लावी ।
वोराभाना लमेही देवेले विचाया देवे होया साँझवे
वेयार नाचि पई हुणता घर आवी ॥

टौड़ी—सावनी

अब मोरे कन्था आ मिलो एक पल
छिन मोरे सङ्गवा ।
नेह लगीला तुम सन मोरा सुघर महम्मदसा
नेकह न लागीलो अङ्गवा ॥

टौड़ी—बहादुरी

कौन गत भईलो मोरी वरजोरी ले गयो
मन चित चोरी ।
मन फेरनकों वरजत हों वरजो नही मानत
कैसी यह चोरी और सिरजोरी ॥

२

बावुलरे मोरे हम दोनी विदेशवा वीरन
मागे तुम अपनो देश ।
जब हमरे काज परे के लिख पठहै सन्देश ॥

बरवा—तिताल।

कोमलवैन कमलनैन पियकों वदन राजत श्याम ।
भ्रुकुटि कटाच्छन लोयन कोयन मोहत सोहत
आवत गावत भावत मन छविधाम ॥
हेरनि फेरनि टेरनि घेरनि गायन चायन
भायन अभिराम ॥
लछनदास मन्दहास मुखकों विलास
भास लखि लजात कोटिन काम ॥

टौड़ी—गांधारी

भोरकेई मिलन बनीलबा मोरी मा प्रीत सङ्ग
बार हस मदीलरा बाजे मन्दिलरा ।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेली
सदा रङ्ग गर लाग रहोलबा ॥

२

हजरत खाज कुतवदीन के दरबार बरसे नूर ।
इनहीपै क्यों न मागे सदारङ्ग सकल कष्ट
करे सब दूर ॥

जौनपुरी—धीमा तिताला

बाजोलो झाँझ मन्दरबा हमारे गुसैयाँके
दरवाजबा बिछुबन को झनकार।
बाजत मृदङ्ग चङ्ग रबाब सङ्ग साथ
डफवाको धुनकार॥

जौनपुरी टोड़ी—तिताला

वैरन ननदोया मोरीरे पाछेहो परो रहत।
कहा करूं कित जाऊं सखोरी भली बुरी
सासु से कहत॥

२

आवो बलमा हमो तुमो तहाँ जईए
जहाँ दुरजन होय न कोय।
घन अमरैया बनो छाड़ाव पिछोरे
सुरजनुवा मोरे रहिला सोय॥

३

मलियारे तोरो वारो भँमर गुञ्ज रहे सुगन्ध महकाय।
अलसावत अदारङ्ग सम अब वीन कैसे बजाय॥

४

प्यारे छबि तोरी बसत है जियामें दिन रैन।
वेग दिखाउ मोको अपनो दरशबा तो जिय होवै चैन॥

लाचारी टोड़ी—धीमा तिताला

पतंगवारे पिया कने जा पतिया बचा तोरे परिहूं पाँय।
इतनी बिनतो मोरो सुन लीजोरो
जो बने तो वाको ले आय॥
भँवरारे मोरा पिय सनवा ईतना
सन्देशवा कहियो जाय॥

लाचारी टोड़ी—फरोदास ताल

दरजन खदा नेबुता उफताद खुसरो,
गर कशुद खूबशुद मस्ते चोरा बालाए बुक जरद॥

टोड़ी—एकताला

बोयार जिनानु तेनासु सोकतन केहा
अलवेली को करकते।
घायल मायल फिरों दिवानो नैनसाँई
देनालरते बन्हा इश्क चुको मसलत
विसरोया पञ्च सते॥

टोड़ी—आडा एकताला

साजन आवोरे घरे अरे बल तुमरे
कारन मोरा जिया तरसईरे।
तुझ पर सरबस वारी जब परसा वईरे॥

२

प्यारे घर आवरे अरे भला तुमरे
कारन अच्छी नोकी सेजरोया बनाईरे।
चितचाह सो हियरे लगाय लेइ रहस रहस
चरण धराईरे॥

जौनपुरी—जलद तिताला

फरकई भुजबा बाई मिलने कारण पिया
सङ्ग गईलो।
तरसे तरसे जियरबा उन विन जबतें
सदा रङ्गीले महमदसा को बात पाईलो॥

२

बरजईए लोगवा माई मिलन देई पियरबा
कौन भाति पिवाउं मधबा भर भर सरबा।
सदारङ्ग बिन जीउ डरे जान छतियाँ भरे
कुमलाबन जागी हरबा॥

३

रख्या० बा०॥ सुरसुसना

यललोय लायलाय लललेय लायलाययललले।
जलबन मुदी बामा वुदी कुजाइ जाफर पोर
सोई मन टेरेरे बिदेशीया बहोरो फिर मिलले॥

४

जासन पीत लगी मईको एमा बहो के बिछुरत
मोर मन दुखबा होय।
ढिग सनबा टरें नटारे पलपल छिनछिन होतन
न्यारे एसोरे मनभावना देखा न कोय

५

नाद्रद्रतनुमृतननननुम् तननननना आहे
आलाल सेरा बरसुन तश्म वेयारे मनस्त
बजषए दौदन औदादन जाँकारे मनस्त ॥

६

(कहरवा)

सोवाइ दरवाजबा ठाड़ी लेके दरबान बातिन
डराए जात ना कोऊ ।
नबी महम्मद कोनो सङ्गवाले चलउ मोरी बहियाँ
पकरत बबा होरे साहब सन भयो भेटबा ॥

७

अब मोरी ननदल जागे हारवा ठाड़ी रे
कङ्करी मार मौत मोको बुलावे ।
बारबार कङ्करी जिन मारो जागई सब घरके
लोगबा बायलिया मोरी वाजे ॥

८

जब सुध आवे मोको तुमारी तोरे लग रहो पइयाँ ।
जनम जनम सुखबा भईले मौतन अदारङ्ग
सुरजन सईयाँ ॥

९

ख्वाजेजी की नोबत बाजे बाजहुरे यह दरवाजबा ।
हाजती आवे धावे पावे मुराद सब पूजे मोरे
मनके काजबा ॥

१०

सोया मूरित भावनी लागे बदरिया बरसे
पियरबा ढिग होजाय ।
देख बदरिया चोकन उमग जियामें हमरे
सदारङ्ग सों मिलाय ॥

११

कान्हजीको ढिठोनवा हँस हस दीनी
कस कस गारीरे ।
जान सुजान मोरे मनको भवनुवा कहा
हम तोरी चेरीरे ॥

१२

मारी रे मारी हन पिचकारी भरभर मारी ।
हाँती लाजनमें भींज गईरी ए
गुइयां एसो ढीठ वनवारी ॥

१३

दानरे मागे मइसन अबहो ढीढ लङ्गरवा
तोरतार डारी सेहरवा ।
नेक नमानें कहनो वरवस झगरो ठानें
मानत नाहीं मिदुरवा ॥

१४

अच्छा गुणवन्ता सइयाँ राजेन्द्र मानें
आली जाई जेही होरजा ।
रङ्गरसरी तान रिझास्या जासो नीके गाय बजाय ॥

१५

उदतनदिरनादिरनादीमताना ।
एवन्दगी वाय पैङ्गवर जोन्द गौम
जुर नेस्त वुजुरगो अकल नव साल
ताम श्रीव वदल सनव माल दीदीमतननताना ॥

१६

कान्हा बातो कहूंके दिन बड़े कहूंके रातो ।
गह मिशन कुप लुकामी तासानु
कीनकानी इच्छा चाती ॥

१७

याङ्ग डग मग डग मग ड़ारे याङ्ग न आवो ।
पार खड़ा पौउ वार पुकारे नहो आवो ॥

१८

माहिदी मे महि होइ वेभलो वजाय जिन्द
खसले तोही ।
कधी हसी कधी रोई जित वलमाडे
रित वलमुड़ सो महि मोही मोही मोही ॥

१९

राँझणा नैना दाता रा ।
अनी काम नाही है कामण सइयाँ
अखी अखी वचो आदा सारा ॥

भोग विन तारे कुंतन जरन पादा तारण
वेखदातारा प्यारा वेखणहो रवेखि लावन कारण
छड़ आयो तखत हभारातो ॥

२०

वेको माला देवा कोठे गइला रेवेका
भाजा शङ्करा कोठे गइला ।
वम् वम् वम् शङ्ख वाजे सो सुद्र चामेड़ी
शम्भूजीके शम्भुनन्दन लटपट मैणावे ॥

२१

प्याला सुभ भरेदे दीवे मियाँ ।
दोस्त त्यारे मारे दोस्त प्यारे दोस्त
चतुर सुदोस्त ह्मारे प्या० ॥

२२

आयाहो मारुड़ा साहब आया ।
वाँकोइ जोड़ा थाँरो वाँ कोइ घोड़ा सेजड़ीयाँ रङ्गलाया ॥

२३

वहादुरो खानडो रङ्गमाणे ।
एहों खान तेरा चिरजुग जीवे साहनिवाज रङ्गमाणे ॥

२४

हजरत निजामदीन औलिया माई ।
निशदिन चिराक देहली खुसरो अमीर वलि वलि जाई ॥

२५

अवतो कहूंन जारे पिउ नगर पराए ।
ए वतियाँ तुम मोसो करो जिन तुम काहेको
देत डराए ॥

२६

अधकवा जियरा लुभानो सुआवा गानीके लागा ।
याछबि देख वावरो भई है वनरा वनीके सङ्ग जागा ॥

२७

एक दमड़ो देहो वुलायके नियत नाम रजाय खुदा ।
याजसवा तोरा अरस कुरसमें भइला
नियत नाम रजाय खुदा ॥

२८

आज रङ्ग मोरी माए रङ्गहै सजन मिलावरा
आनन्द वधावरा मेरे घरु ।
निजामदीन औलिया जग उजियारो
जो मागो वर पर सनेह आज वरु ॥

२९

राज मैतो तेरीयाँ राज मैतो तेरी वातड़ीया
पहिचानी वो गुमानीडा ।
ह्मे तो थाँरी दासी सायवा जनम जनम
री थाँसो लागोघे ह्मारो प्राणड़ा ॥

३०

याहु दरवाजवा माई ठाड़िलो दरवानु
बातन के चरण वाला जान देमाइ वा ।
नवीय महम्मद के सङ्गवाले चलोरी
मोरी बहियाँ पकर बाहरे साहवसा भेटवा ॥

३१

अति वैरन ननदीया मोरीरे अरे मोरे पाछे परो रहत ।
सुड़ सुड़ पियाकी बाते सुनतहै बात सुनत सासू सोहत ॥

३२

लेतो ह्मारो खबर न लेवी आमोहि वालियाँ ।
करकन कपाल कोई वासो हर कालेनो वेशवा
सुरझाई तेरीया ॥

३३

महम्मदसा पातसा आज हम सन तुम सन
भेट भइ कजवा असवा चौंक पूजोले ।
जीवउ जागउ कोटि वरसनो भेटवा तुमरे
कायम दायम रहो सदारङ्गके मनके चित पूजोले ॥

जौनपुरी टोड़ी—छोरी लाल खा०बा० ।

मूलन लेदा मेड़ीया सारा ।
सेज फुलादो रेतवाजूंदो टुक मैनु होइ तुपक तुपक
कुका भारा ॥
लोग वेले सुहेले विचो रङ्ग रलीया करदा नित उठना
लमैहो देले दाव हारा चटपट
चटापट नैना मेड़ेहो डेरो देरत दे फुहारा ॥

२ ॥ अमौ० ॥

सु अब रङ्ग घुलीया माए सजन मिलावरा भइला ।

निजामदीन औलिया सुख आनन्दसो हेला
माए जनम जनम दुख भुलिया ॥

३

यारे मनवे यावेया यारे मन गरलो
आई न जरे कुन्वर मन जाने मन ।
देखे चैन अन देखे चटा पटी कौन्से
कह यह दुख जाय यारे मन ॥
नेहरे रूसस रस्ता अमदर इश्क तोराजो यम्बर
जायतो अए साहवे मन जाने मवाग बहारे मन् ॥

४

यूंसफे दरकारयबा दारम् ।
या पशमे वरम् आश्रा अए जलेषा हिम्मते
गोया यादरीवाजा वाजानेस्त ॥

५

एरी पिया मोरा कचनमें सोहागा मे सोहागा ।
वोमे में में उनमे रमरही जों कर मैदी रङ्ग लागा ॥

६

मेदनी सब आइली सुन उरस पीरका
खाजे कुतव देहरो ।
शेष मशायक औलीया वन आए
नवीहै रसूल सन रङ्ग वनीला हाकर
रहोस एसाहव इलसन नजर वमेलिया
एस दरवाजे दरव मेलीया मे ॥

७

मगवा कटीले और कोसकोस नदीया हों
कैसे कर जाऊं या नगरवा ।
गौड़वा पिरानो और अत आयो
भानु दुवर भइला डगरवा ॥

८

सो अरी माई झमक खेलै राजदुलारी ।
सुघर मालनीया गुन्थ गुन्थ लाई बेला
चेमेलीके हरवारी ॥

९

झनन झनन बाजे पायलिया
राजदुलारी डोले आङ्गन वाइ ।
मन मत वारो मतवारो हिंडोरे नैनन छवि
अति छाजइ ॥

१०

(कहरवा)

एरी डफवा बाजन लागे निकस आइरे ।
सब ग्वालवाल मुरलीकी धुन सुन मोहेरी
ब्रजमें सब हार हार निकस आइरे ॥

११

सजनीरी कहा जाने जाने तोरे लोग घरकाई ।
खोल किवरीयाँ लेहो ललन कही वर
मे हात पकर पायन२ परके गई ॥

१२

प्यारे मोरे सुनी नगरीया कौनी
अब भली मोरी सुध लीनी ।
तब लगे सुखदिन अब लागे दुख दैन
प्यारे मोरे गौर मथरीया कौनी ॥

१३

ख्वाजेजी एसो बड़ो पीर अजमरी
दाता सकल सृष्टिसो वधावा ।
झिल मिल मिल झालर झलके चन्दन किवरीया
पीर कोरे जग मग जग मग जोत सवाई
मगर हील बारे गजवा ॥

१४

रातके अलसानेरी नैना से जरीयां नही मानेरी गुइयां ।
मोरा पिया एसो मद ठरकावै गलीयन
धूम मचावेरी गुइयां ॥

जौनपुरी—एकताला

कत तेज महोम रात वसेती वना आयारे ।
लाड्ली बनोका वनरा सुघर बन बना व्याहन आयारे ॥

२

माय कहे मोरा लाडला बना मेरी
इछरीया भर पायारे बना मुरादो पायारे ॥
हाथीकी गज मोर केरे भाइयाकी जोरीयाँ
जोरके रे व० सु० ला० व० कत० ॥

३

लाडोका वनरा आयारे सुघर बना जगाई ।
एलाडोमैं नीट गवाइरे सो मैने मातो पाइ
आज सोहाग की रैन जगाई ॥
लाडो मेरो तन केसरीयाए सुचन्दन
भरीया पाय परो गर लाग रहुँगा आई ॥

४

खा० वा० ।

आवो आवो आवो आवो आवो हो
रनझेटा मुख लपेटा यारवो तेड़ी
लटका पर जिंदकुरबाई जिंदकुरवाई
हीर दिमानो देमानी गुमानो दिलवर-
जानो दिल जानी ॥

५

(हाफि)

आसिए जरद किसी राणोए आलमवा ओस्त ।
चश्ममे गुलवे खंदा रुषे खुर रंवा ओस्त ॥
गरचे सीरी दहना बादसाहा नन्द वले
असले माने जमानस्तके खातंवा ओस्त ॥

६

दीम दारातानद्रद्रनातंद्रद्रद्रनातादानी आहे
आनाद्रद्रना७दानीशाहम् जे रङ्गे
रुयतो निसवत् कुनम् बगुल गुलगुल सवद
जेशरमे रूवत् चूं चराक गुल ॥

७

कबीर०

बागेकी कहूंके सोधेकी छवकी कहीय न जाय ।
तखत बैठे साह औरङ्गजेव मोरे नैनन रहिए समाय ॥

८

अए आ दोस्त तनदिर तनदिर तनदिर
तादीन्नातन दिरतादीन्नातनदिर-
तादिन्नातादानी उदनतं द्रद्रद्रतांन तननाआदानी ।
होस मनमु साहवा खेसांबुरदंद
ईकजकल हानु नूपरे शाबुरदन्द ।
गोयद चरातु दिल वखुबां दादी
वल्लाहके मनदादं एसा वुरदन्द ॥

९

अखाई सुल० निजा० अन्तरा अमी० ।

वधावा आवो गावो सोहलरा खुसरो लोग बुलावो ।
कोटवा कोटवा दीयरे बारु निजामदीन पीर मिलावो ॥

१०

कबीर०

डग मग डग मग जेउलो उनाउ ।
पार खरापी उमदूरे बुलावे वाव वहे पुरवाउ ॥

११

वेलीतू आव जब जोवे साँइयाँ आवड़े ।
वोयार तेड़े वेखणदे कारण लगी उभे साहड़े ॥

१२

चांदड़ीयाँ अँखिया मैडड़ी चुक लग गईयाँ
सुतीयाँ पुनु देसाथड़े ।
लड़ सधाने ताँउ घड़ गइयाँ किकुर दिहड़े विहावड़े ॥

१३

रांझणा सोनाल चूक झुमर पाई ।
हावो मैउा दिकत साड़ड़े हथ असाड़ डोगली देवाई ॥
भावा प्यारीयाने नाथे नैना मिलाई ॥

टोड़ी जौनपुरी—तिताला (कबीर०)

धाय धाय धुम वाजोलो मन्दिला वाजोलो
मोरारे साजनघरका जुमाए ।
धिधिना धिधि किट धुमकिट धिधिगन धिधिगन
धाँधाँधाँ धावन परमानसो गत लेत परण
अत सुहाए ॥

टोड़ी जौनपुरी—लाल एकताला

हों नहीं जइहों तोरे देश सुन्दर तूतो
तुरफा हों वामनीरे ।
एक निठुराई छाड़दे मोतन अब हों तो परहूं
तोरे पायन लङ्गररे ॥

२

कगवा बोल ले माई अरी वोतो याहु अगनवा मैं डोले ।
पियके आवनकी भनक सुनिहै कैसे कैसे घुंघट खोले ॥

३

मयाके पाँव धरिए माए बलमा मोरे
गुण औगुणको चिन्ता सबही विसारी।
होंसो तिहारी जनम जनमकी इतनी विनती सुन
लिज्यो मोरी सेवा करो में तुमारी॥

४

याहु चितुअ चिन्ता माए न करिएरे
होनी होय सो होय।
करम लिखा सोई पाइएरे मेट सके न कोय॥

५

दानी इँ दानी काहे बाह्न जनमी हम तुरका सङ्ग
काहे भइली।
हम तुमरा मुराद पूजाईं ए भला सुन्दर सूरत
निरखत छवना रहिली॥

६

दमेके वेतु रवद जिन्दगी नमे समार।
वियाके खुन जिगर मेंरवमूजि चस्म तरवार॥

७

पइयाँ तोरे लागी रहों जब सुध आवे मोंको तुमारी।
जनम जनम सुख पाइला मोतन अदारङ्ग
सुरजन सइयाँरी॥

८

चन्दोड्या इस्क अनी मैंडे गलपया।
इसन कुटदा तेखेड़ण कुटारोँ दियारो
दिया जुसागल गया॥

(भोग)

जो जानदी मैंनु पोषण मामलो जासे मैंड़ी हया।
अनी अनी अनी मूलन रखदो चके तैंनु जेहे
मैंड़ा दिल मुलया॥

९

खाजेजीको नोवत बाजे बाजइरेए दरवारवा।
हाजती आवे मुराद पावे हांरे पूजलो मनसा काजवा॥

१०

भवानी दयानी दयाकर अपने सेवक पर
तोय ध्यावे संसार।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध देत सबनको गुणनको अपरंपार॥

११

आज रङ्ग लागिला लागिला रे।
साजन मिलाव राव मिलवा सोबड़ भागन
पाइला गाइला बजाइला।
सब सखी जन मिल मदारङ्ग वर पाइला॥

१२

रातके अरसाने लङ्गरवा सेजरीया नहीं आवो।
काह्न कलवरीया मधसेकुकायो मन्दर काह्न विरमायो॥

१३

मोरे पिया मोंसे ना बोले कहाँलो करो कित जाऊं।
है कोई मोरो पियाको मिलावे विनती करहूं
परहूं पाऊं॥

१४

अबमें कैसे मिलहों अपने पियांसन ज्यों ज्यों
मनाऊं त्यों रुसोइ जाय।
सुनियोरी मोरी सखी सहेली पिया विन
कछू न सुहाय॥

१५

सुरजन मोरे कैसे आऊं तोरे पास पायलिया
मोरी बाजे झनक मनक।
देखही ठाड़ी पार परोसन करही चवाबए प्यारे
रतीयाँ होवन देरे तनक॥

१६

नवरोज तखत मुवारख होवे तुमको महमदसा
जुग जुग नित नित जशन नयो।
विकामे तो वरदाहमाकार उस खुदविन्द वेतो
निगेदार तो नयो॥

१७

हिन्दनी कवहूं जनन कहोरे तुरका सङ्ग
तुरकानी भइली।

हमतो मुराद मुराज पूजवनहों अरेबल सुन्दर
मूरत निरखत सुध न रहिलो ॥

टौड़ी जौनपुरी—ताल सवारी

अबमैं तोरे सङ्ग माती हूंरे ।
चुन चुन कलीया सेज बनाउं निजामदीन
औलिया सङ्ग रातो हूंरे ॥

२

जाही देश मोरा पीउ बसे मा हों वलगई
वाही देश के मा ।
नैकह नमिले मिलाय हारे मैं अब नहों रहि हों देश
पिया विना घड़ी घड़ी पल पल रैन दिना ॥

३

मलया झूम रह्यो मोरे शोके बैरीयाँ ।
हरे हरे पतुवा लूने लूने लागतही वाही के
तोडले धनही धनवा ॥

४

अरे अरे बीनी आओरे ।
वनरो सो रङ्ग लगाओरे ॥

५

अधर चन्दन घसीले पुरो सखियाँ आज मोरे आइए ।
रसलावन गुणवन्त जुरमिल सखियाँ इन सेजरीयाँ
बनाए साहजहाँ पिय अङ्ग अङ्ग सुख पाइए ॥

६

चुनरीयाँ अब देहो रङ्गरेजवा ।
सो बांधनु एसो बांध सोंस सोहै निरखि पियको
पचरङ्ग पाग ककरेजवा ॥

७

बनी ले घर आया बना जोलो गुञ्जन वही साजन
वनरा व्याहन ।
चोक पुरावो मृदङ्ग बजावो दुलहे दुलहन अब
साजन बनरा व्याहन ॥

८

आज बाजे मन्दिलरा खाजे मोनदीन घर काज
सब सखियन मिल चवर करे पलकन सोंं मगभारो ।
हजरत खाजेको विनती करो अपनो जो वारो ॥

फरो०—खमसा

पातक पतीयाँ लिजावो पिया सने मोरोरे ।
हाहा करूं पइयाँ परूं विनती करूं मैं तोरोरे ॥

अमी०—सुरसा

सुहैयर सलोनी कुड़ीए एहाँ ए सलोनी कुड़ीए
यला यला यला लले ।
अखड़ीयाँ रतनालीयाँ वाल वाँकड़े जुड़े वालीयाँ ॥

सुहै० जौ० फरो०

बना नौंदका माता सो प्रेमरस पागा सेज हमारी
हो आवै ए हमारोही आवै ।
लाडो से मान करेदा अनीहावना से मानकरेदा
अवै लटकेदा मोहे भावै ॥

२

(खमसा)

बने लाग गरे बनो के लाग मरे बने लाग गरे ।
आज मिलाबा कन्यसोंं सखी ए सब जग दीजे
वार याहन वले रातरी सरफा आपन तन वार डाररे ॥

३

पन घटकों सुख लाग रहेगो भूल गयो हो नन्दलाल ।
सदारङ्गीलो कुंजनको शोभा कहांलो करोगो
यह व्रजवाल ॥

४

दोल तोरा जवांही फजल करम बादसाही ।
कादर करीम रहीम रहम तोवर इलाही ताज
शिर देता जमूल कवर सहर माहीं ॥

टौड़ी जौनपुरी—झपताला

माई आज आवो गावोरी वधावा जम जम इसवर काज ।
अपवर तपवर हासी तकतकर दीवान बुदरदीन
पीर प्रथीपतको बस करो राज मोपं सदाआज ॥

जौनपुरी—तिताला गान्धार

सो अबमोरे कन्या अबनको पल छिन मोरे
सङ्गह लागे ।

नेह लगोलो तुमसे मोरा सुघर महम्मद सा लगन
लागिली अङ्गवा पागे ॥

जौनपुरी—अलद तिताला

रे वटोइया जात मेरो मन हर लोनो ।
वरकी ओर विसर गई गोहन न जानू किहि कोनो ॥

जौनपुरी—तिताला

अबतो कहूं न जारे पिउ वगर पराए ।
ए वतीयां तुम मोसों करो जिन तुम काहे को
देत डराए ॥

१

एरी बादर गरज रहे अरे मोरा कन्था घर नहीं आए ।
निश अन्धियारो कारो वीजरो चमके सुझ विरहन
को अतिही सताए ।
मोरवा करन लागे शोर वरसन लागे घनघोर
विरह सजाए ॥

२

वेदानावे किकर आँवदे दिनराती ।
इस जवानि दोवे गल सुन जामी भावदा नही
और सङ्गाती ॥

४

नौरोज अवहोलवा शुभ घरी शुभ दिन बैठे तखत
सुवारक हजरत औलिया वलि सादीन पना
भइलो जगत आनन्द दरवार ।
साहसाहनके शिरताज दीन दुनीके सरस काज
नरनारी गावो वजावो ।
तो ऐयाइ ऐयातन उदन तुं तनुम् तकात कात
कदि गदि गदिग झननन वाजोरे मन्दिलरा वाज ॥

जौनपुरी—तिताला

मै कैसेके आऊं अपनें घरवा दुरजन लोगवा
कहत है ऊंचे नीको इहां कैसे जाऊं ।
ए मोरा जियातें वस कर लोनो पार परोसन अतिही
चवावे राज करिहों ननद को ढिठोनवा रे
राजा एसो ढीट लङ्गर गरे लागने दे मैं आऊं ॥

२

मेरे वैरागी भए हो नैना तेरे दरसके लोभी ।
लोक लाज कुल कान तजी है तेरे चरण चित शोभी ॥

जौनपुरी—ताल सवारी

कैसे के आऊं पिया तोरे पास दुरजन
लोग करे हास ।
एक डरहै मोहे सास ननद को री दूजे सौतन के वास ॥

लाचारी टोड़ी—तिताला

आनन्द वधावरा रे चलो आय हिल मिल गाओ वजाओ ।
एकते एक सरस भातन तें रङ्ग भाव भरें
नन्दरायको रिझाओ ॥

२

पातकवा रे पतीया लेजा तोरे परोहों पाँय ।
इतनी विनती सुन लीजे रहसन जोवनवा पोको बुलाय ॥

३

मदवा भर ल्याउरे कलरीया जो मोरे पिय घर आवे ।
मोको भर ल्यावोरे कलरीया रहस रहस गर ल्यावे ॥

टोड़ी—आड़ा धीमा तिताला

वचन निभाइए प्यारे ए सुरजन चित धरिए
करिए निहाल ।
एरी प्रकृत हो नीके जानत तेरेही आलवाल ॥

टोड़ी—धीमा तिताला

धिति लीति लानाद्रद्रतुम् तनुम् यललीय
ललीयल लललले ।
नाद्रद्रनाद्रद्र दानीतुम् तननननन ॥
भ्रगड़तक भ्रगड़ तक्धुम् किटकिटतक् तकड़ धाधा
तान धातिधाधा गतिटि धागे ॥
दिगीना गकिट् किड्नक तानधातिकड़धाता
धाधीतानधाधा ॥

टोड़ी—तिताला

तदोम्तनन तनदिरनातनदिरतदानी धाधा किटतक्
धुमकिट्तक् धुमकिट तक्धि ताकटतक्दिधेना
कड़ान् धुमकिट तक्नगदिनधा ।
नाद्रतनुम्तननउदतनननननारे तारेतनद्रद्रतननारे
तननारे नितनुम् धाकिटतक् धुमकिटतक् धिताकिट
तक् घड़ान्त घड़ान् धिन्ना धा किड्तक् ॥

टौड़ी—लाचारी

रे मन लाज न आवत तोहि वृथा दिन रामभजन
विनु वीतत ।
मोह उदधि मह मगन भयो तहाँ चिन्तालहरी
न लीतत ॥
श्रवणमें उपदेश कियो गुरुनहो सो वचन प्रीतत ।
ताहि विसारी कामके फंदन पस्यो लोभ तोहि जीतत ॥
स्वामीसमरथ अतिदयाल प्रभु तेही चित
दे नही चीतत ।
जाको शरण अभय पद पावत यम किङ्कर नही भीतत ॥
जासु चरण सुमिरे सुखसागर भरत न कबहूं रीतत ।
लछनदास वेद यश गावत युग युग सुयश विनीतत ॥

टौड़ी—तिताला

तरणतारण तुंही अग जगमय तुंही अगम निगम
तुंही व्यापक तुंही अनन्त ।
चर अचरमय तुंही पवन पानी तुंही गुप्त प्रगट तुंही
तुंही निरगुण सगुण अविचल चल आदि अन्त ॥
अवल सवल तुंही स्थूल सूक्ष्म तुंही रजनी दिवस
तुंही सूरज चन्द तुंही तुंही अव अतङ्ग ।
लछनदास नाद तुंही वेद गावत अनुभव भव तुंही
आवत जात तुंही धरणी आकाश तुंही
ध्यावत जेही सन्त ॥

टौड़ी—वहादुरी

तो समरथ साहेवको दिन दिन शरण परेकी
अव लाज मेरी ।
विधिह्न न लिखी भाल तनक भलाई मोरे तापर
छिन छिन कुमति रहत नित घेरी ॥
मोहपाश बान्ध्यो अङ्ग अङ्ग रचि रचि अपर
पगन परो कठिन माया वेरी ।
लछनदास मन्दमति गति नहीं जानत याते
भुलान्यो मन एते दुख महाराज राम सखे निवेरी ॥

टौड़ी—तिताला

कौन कौन कौनधनि गलिए गए रावरे नामके ।
अधम कोटि कोटि लौं तारे कहालौं गनाऊं
कह बड़े केहि कामके ॥
जुग जुग वेदनमें महिमा यह पहु चावत हरिधामके ।
लछनदास छूटे जनम मरणतें अन्त कहे यह रामके ॥

लाचारी टौड़ी—तिताला

एरी कौन वानी परी मेरो आली विनु देखे नहीं चैन ।
वासर असन वसन नहीं भावत नीद न आवत नैन ॥
औचक देखो जात वृन्दावन दीरघ पङ्कजनैन ।
लछनदास देख नटवर वर सुन्दर सूरत मैन ॥

टौड़ी—तिताला

मति मन्द मूढ़ मनारे क्यों न रसना राम रट ।
जगत्कारण मुक्तिदायन जनम कोटिन पाप कट ॥
ईस अज सनकादि नारद जपत चारो
निगम जप अरु शाखपट ।
दास लछन ज्ञानदृष्टि विचारि देखो
रमि रह्यो है सकल घट ॥

२

दिल लगा तेड़े नाल नन्दकुमार ।
तेड़ो सूरत वेणु वेखे दिल विच नहि रहदा करार ॥
लाज निगौड़ी गुरुजन विच घेरे को गल
आँखा सिरदा भार ।
लछनदास मुझनू चैन न आवे नैन माही
आंसुले जारजार ॥

३

कन्हैया प्राण मोरे घेरि लै आवो गैया ।
वेगि जाहु वन देरन लावो सखन सहित दोउ भैया ॥
साँझ होत घर तुरत पधारो अबहि बहुत लरिकैया ।
लछनदास यह श्याम मूरति पर वलि वलिहारो मैया ॥

टौड़ी—ताल वहादुरी

कुञ्ज कुञ्जमें आली उठत उदोर मोर चातक पिक करत
शोर चहुंओर भँवरनको भोर मनभावनो ।
लपटी लपटी रहि ललित लताई तैसो
तरुण तरुण मानो रमरीति उपजावनो ॥

कबके निहोरत लछनदास आसपास तेरी
तो अनोखो जवान अनखानो।
मिलिकर रहिए विलास हास जिय दुखत आई
वसन्त रितु सुखद सुहावनो॥

देशी—तिताला

मन्द महामूढ़ अज्ञान क्रूर कुटिल अबतो
शरण राम रावरे निवाहे बनै।
अधम निलज्ज खल कुमति कमायो अघ आपने॥
के जानत अन्तरजामी घट घट कहालो गनावो जु
पाप आपने॥
गनिका गीध गज अधम अजामिल कोल किरात
पशु आपही सुगति दीनी आगम निगम भने।
लछनदासकी वेर हेरीए कृपाको कोर सुन्यो
कबहूं मैने॥

टाँड़ी—तिताला

विहारीलाल की विहसन हँसन बोलन
मेरो मन कर बावरो।
ठमक ठमक धरत चरण थरर धड़ कंपे
छकित भई रोम रोम थकित भई बावरी॥
लछनदास तरफ तरफ खञ्जनद्रगन सो
लागी उरझावरी॥

२

जौवन मदमाती ग्रहमें डोले सुख
संपत सो छतीयाँ खोले।
यह लगवा लाल गिरिधर छविरूप रसिक तन तोले॥
नेत्रन सुनसो देत वानी हँस हँस कर घूंघट खोले।
वरनो न जात ब्रजनिध छव तेरी गांठ घुली गठ खोले॥

३

निरतत है पिय प्यारी।
रासमण्डल सङ्गीत गत लेत सुन्दर वनवारी॥
तत थेई थेई थेई तत तत तादिगिनग४ झिगिनग२
थोलाङ्ग थोलाङ्ग देदे तारी।
बजत मृदङ्ग तता धिधि थुं थुं ताना किटतक
धकट तक् धिकट तकधा परण परत सुखकारी।
राग रङ्गसो सुरली मधुर धुन तुंही राधे
तुंही राधे राधे सहस्रन गोपो निरतकारी॥

४

काङ्ग कांधे कामरी हाथ लकुटि लिए गैयन घेरे हो।
वृन्दावनमें धेनु चरावे धोरो धूमर टेरे हो॥
वंशी बजाय रिझाय लियो मन जहाँ तहाँ
बन बन फेरेहो।
सूरश्याम त्रिभुवनपति मोहन पीताम्बर फेर हेरे हो॥

५

आवतही यमुना भरे पानी श्यामवरण काहको
ढोढा निरखि वदन घर गैल भुलानी।
उन मोतन में उनतन चितई तबही ते
उन हाथ बिकानी॥
उर धक धकि लागि तन व्याकुल मुखसो
फुरति न वानी।
तब कह्यो मोहन मोहनी तू कोहै या
ब्रजमें हौंमें पहिचानी।
सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु वारिध
जलबूंद हिरानी॥

६

भक्त हेत अवतार धरो।
करम धरमके वसमें नाहीं योग यज्ञ मनमें न करो॥
दीन गोहारी सुनी श्रवणनि भरि गरव
वचन सुनि हटै जरो।
भाव अधीन रहो सबही अवरण काहू ते नेक डरो॥
ब्रह्मकोट आदिलों व्यापक सबको
सुखदे दुखही हरो।
सूरश्याम तब कहि प्रगटही जहाँ भावत हाँ ते न टरो॥

७

बड़ी है कमलापतिकी ओट।
शरण गए ते पकरी न आये कियो कृपा को कोट॥

सभा एक रस बैठत कौन बड़ो को छोट।
र नाम अघे भवभञ्जन कहा पंडित कहा वोट॥
ा काल वली अति समरथ नाहि न ताको चोट।
ानन्द प्रभु पारस परसते कनक लोह नहो खोट॥

८

जापर कमलाकान्त ढरे।
करी घासको बेचन हारो ता शिर छत्र धरे॥
विद्यानाथ अविद्या समरथ जो कुछ चाहै सो करे।
रीते भरे भरे फिर ढोरे जो चाहे तो फेरि भरे॥
सिद्धपुरुष अविनाशी समरथ काहू तें न ड़रे।
परमानन्द देइ मन सँपति यातें कछू न टरे॥

९

ए मेरे मन नैनन रोम रोम मधु कृष्णहो रम्यो है।
कहूं बेचत कहूं लेत गोपाल गोरस सो घर घर
फिरत बिकात जात कहूं नोको नेह जम्यो है॥
गोकुल प्रेमकी पैठ सुहाई जहाँ जगजीवन
एसो भ्रम्यो है।
आनन्दघन अचरज रस शिव शनकादिक शेष
शङ्कर गिरिजा सीस नम्यो है॥

१०

रे मन जब लग पिण्डप्राण तब लग जग नातो
सबहीन सो व्यवहार।
जब लग जिए तब लग हरिनाम लीजिए राग रङ्ग
कीजिए यह तन मन नैन प्राण जात न लागे वार॥
वालापन तरुणापन और वृद्धअवस्था
पुनि पुनि जनम मरण होत संसार।
तानसेन करले ध्यान विश्वंभरको
यही पूंजी यही जमा यही है सार॥

११

जाँसो बनआई प्रीत की रीत तासो
क्योन जाई रितमानी।
एतो दुराव कत करत प्यारी एबातें तो
सब नीके जानी॥
एतें पर आवत उत्तर बनावत खिजावत हो यातें
चतुर सुजानी और न जानतहों निपट अजानी।
साह अकबर पिया तोय परसत मागत यातें
विनती करूं चानन तनकसो भोंहे तानी॥

टोड़ी—चौताल

री जाको योगी जपत जगत जपत ऋद्धि जपत सिद्ध
जपत ऋषि मुनि गन्धर्व्व जपत आवत नहीं ज्ञान
ध्यान मत गत अपार।
चन्द्र सूरज इन्द्र जपत, अग्नि पवन पानी जपत
पण्डित गुणी ज्ञानी जपत भूपत नरनार॥
सती सुर सन्त जपत, पंछी जिय जंत जपत
सबही उर अन्त जपत कर कर मनुहार।
रूप रङ्ग चरण शरण, सङ्कट दुख घोर हरण
आनन्दकन्द दीनबन्ध दशरथसुत रामचन्द
पतितनके तारवेको धारो अवतार॥

टोड़ी—तिताला

रे मन कृष्ण सुमरण कररे।
अघहरण दीन धरन कीरत विस्तरण
निस्तारण जगतको नाम प्रगट कररे॥
अरे जिन कंस केशी शंखासुर
तारे हरि भेट तन खउर उदररे।
चतुरभुज शङ्ख-चक्र-पद्म-गदाधरका रायन
गज ग्राहन छुड़ाए भक्तन काज
साज नरसिंह-वपुधर-प्रह्लाद उधररे॥

टोड़ी—ख्याल तिताला

सुरजनु तुम जावो पइयाँ परुं गोरे।
तन मन धन तुम पर वारो हाहा करुं चरण धरुंगोरे॥

२

सोए जान तेरे कारण सबनकी बोली ठोली जो सहोरी।
बातें ए सुनाई कौन कौन लरे एसी कोन बात कहोरी॥

टोड़ी—सवारी

सो व्याहन आया रङ्गभीनो वागा गल सोहेरे।
राता माता रातका सेहरा सीस बंधायोरे
रहस रहस बना बनरी ने इल गायारे॥

२

गोविन्द गोपाल गरुड़गामो
गोपीनाथ गोवरधनधारी गोपमनरञ्जन ।
वंशीधारी गिरिधारी कुञ्जविहारी वहुरूपधारी
कंसारि मुरारि गर्व्वप्रहारी दुष्टगञ्जन ॥
मधुसूदन माधव मथुरापति मुक्तेश्वर
मनभावन दुखभञ्जन ।
वासुदेव विट्ठल वनवारी वद्रीनाथ
वौधरूप विष्णु तानसेन भक्त मनमञ्जन ॥

३

निति आवै नन्दको छोहरवा मुरली बजावै
मोको रिझावै टौड़ी गावै मनही मिलावै ।
श्यामदास मोहे वाहीको आस लगी रहत घरी
पल छिन निश दिन विन देखे नहीं चैन सखी मोहे
वार वार वलि जावै ॥

टौड़ी—तिताला

एरी तेरो भाग बड़ो तू सबनमें पिय मन भाई ।
देख तेरे रूपको रीझ रहे निश दिन हृदे लगाई ॥

२

मेरे बबा के हो दामोदर भैया तेरो मैं लेहो वलैया ।
इतनो मागतहो अलह महमद पै कहन
चतुर ललैया ॥

टौड़ी—धमार ध्रुवपद

पिय के मन नैन न भावै भावै तेरो वदन नीको ।
तेरे रूप रस एसे वस भयो प्राणपति
जो न चाहे आनन काहू तियको ॥
रूप जौवन तोहि दीनो करतार
बनाए आली आनन्द सब जियको ।
प्रभु विलास नवललाल रिसान लेत
पठई आनन्द सकल तियको ॥

टौड़ी—तिताला

मो विथा सुन सखीरी मोसो बात कहि गए
आवनको अजहूं न आए लाल दरद जाय कासे कहों ।
दिनते रैन भई रयन ते दिन भयो देखत पैड़
एसे सूनो ग्रह उन विन अदारङ्ग सन कासे खकारी ।

२

दमदम मदार लाड़िली खाज पीर मेरे
तिनको विथा दूर करो तकारी ॥
खाज मौतदीन कुतवदीन तुरक मान
राखले तुम अपनी घेरे हो ।

३

दोमवोंदननननतनदेरनादीमवोदतननतनदीदीता
धिरिकिटतकधुमकिट तक् घड़ान् किडनग तिरकिट
नगदीत धुमकिटितक् घड़ानकघड़ानघड़ाकिन
कतिरकिट नगदित धुमकिटितक धड़ांधीधा ॥
ओदनउदतननतननदिरनदीमृतदारधितीलेतिलाना
केदीमतकनगतिरकटतकधुमकिटकिटतक्
दीदोगननगदीधा ॥

इति श्रीअमरानन्द व्यासदेव तस्यात्मज श्रीहीरानन्द-व्यासदेव तस्यात्मज श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे टौड़ी-देशी-जौनपुरी-लाचारी आदि सम्पूर्णम् ॥

अथ गुर्जरी

श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणां
मृदुलसत् पल्लवतल्पमध्ये ।
श्रुतिस्वराणां दधती विभागं
तन्त्रिमुखा दक्षिणगुर्ज्जरीयं ॥
धनिसागरेसानिधपमगरेसा ।
मधनिसामधगसासानिधमगरेसा ॥
सगरे गुणीन साधा राग पारन पारा ।
धन धन सोनर राग मनधारा ॥

गुर्जरी—तिताला

सुमर सुमर मेरे मन रामनाम ।
राम राम सुमर सुमर मन धर धर
मन सगरे नर सुरधाम ॥

गुर्जरी—चौताल

ए आज भोरही आएहै कान्हरे गुर्जरी के धाम ।
सप्तसुरसो गावत तानन सुरली में गुर्जरी नाम ॥
उरप तिरप लाग डाट आतक खातक स्वरान्तक
ओड़व खाड़व सो रिझावत वाम ।
तानसेन प्रभु नित प्रति आनन्द देत
घरघर गोकुल गाम ॥

२

आदि परब्रह्म देवन देव नारायण
निरञ्जन निरङ्कार सोई साकार ।
वाहीते त्रइलोक रचना रज सत तम पञ्चभूत
वाहीते अट्ठाइस तत्व जगत पसार ॥
वही आदि वही अन्त वही चराचर मध
भरपूर रहो संसार ।
बैजू प्रभु करै सो होय करता अकरता सकल
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड एक एक रोम प्रति ताहि
भजो वारंवार ॥

३

अदभुत अनूप रच पच कर विचार नादमन्दिर बनायो ।
अनेक भांति वहुप्रकार त्रइदेव मिल ता मध
उनञ्चास कोटि तान अच्छर अस्थान पायो ॥
सप्तसुर सीढी तीन ग्राम खण्ड कीने मुरछना झरोखे
राखे दुरन मुरन् ताक बंदी सुरत सायवान
आगे ज्ञान खंभ अचल अस्थल कर जमायो ।
ओड़ो खाड़ो पूर्ण पुस्ति वान रङ्गत अस्तरकारी
तान गरदश हाता सुर ताल शुभ दरवाजे लगायो ॥
उगत जुगत कुफल कुंजी शब्दको जंजीर लागो
लाग डाट चौकीदार कण्ठ राग राजा राज करायो ।
रागिणी पटरानी उपराग खवास आसपास
मुरछल पंखा हिलावते रागरूपरङ्गको समाज
सान सुघर धुरपद सुध मुख गायो ॥

४

मकरकी सङ्करान्त कुम्भ मीन मेष वृष मिथुन
करक सिंह कन्या तुला वृश्चिक और धन ।
माघ फागुन चैत वैशाख जैठ आषाढ़
श्रावण भादो आश्विन कातिक मृगशिर पोषगन ॥
प्रतिपदा द्वितीया तृतीया चतुर्थी पञ्चमी
षष्ठी सप्तमो अष्टमो नवमो दशमी एकादशी
द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी पूरणिमा भन ।
रवि सोम मङ्गल बुध वृहस्पति शुक्र शनि नामलेत
कटत पाश होत नौके सकल काज तन मन धन ॥

५

महादेव आदिदेव महेश्वर ईश्वर हर ।
शम्भु शतकण्ठ कपरदी ईश विरूप डिमरू कर
त्रिपुरारि त्रिलोचन गङ्गाधर ॥
नीलकण्ठ भस्मभूषण वृषभवाहन पारवतीवर ।
जटाजूट वहुरूप शिव जोगाण्डवरधर
तानसेनको दीजे सुख सम्पतवर ॥

६

जमल विमल विलोल लोन दीरघ तेरेरी
आली ईषदके रङ्ग ।
जे मीन मृग खञ्जरीट ते सब वारो तेरी छवि पर
जब जब चित चंदन अधर उपङ्ग ॥
वदनको सम कौन देहौं वन आवै अङ्ग ।
रीझै असलेम साह कीनो मया कर अरधङ्ग ॥

७

भान उदीतकरण तिमिरहरण प्रकाशपति
ज्योतीसरूप अपनो दया जनावै ।
सप्तद्वीप नवखण्ड परजौरी किरण तनो तनावै ॥
दृष्टि न जुरत महाप्रताप तेज एसो करतार
दियो जनावै ।
साह अकवर प्रभुको प्रसाद व्यापत भयो याते
जग रसाल लेआवै ॥

८

अस्तुत कही न परै जो मोपै जो मोमै एती कहां मत ।
जानो इतनो जो आजके विधाता लै लै
रूप चतुराई निकाई कोसत ॥

याहीते लैले बहु भाँतिन रचपच बनायो जापत ।
शेष सहजादो मोह अति भए एजात अधिक प्रथीपत ॥

९

आदि सुरतार दुतिया तृतीया वाद चातुर
निरत साधे गुनी गान ।
द्रुत मध विलम्पत तामें अस्थायी सञ्चारी करमध
औदख तन सरगमको भेद उनञ्चास कोटि तान
प्रमाण सब भेद वन्धान ठान ॥

१०

या अल्ला मोमन तू आपसो एसे कर लगा ।
झाँही नमत तू प्रवीन सुतदे कुमत भगा ॥
जिन तेरो नाम लियो तिनको दुख गयो तू
अध्यान पगा ।
तानसेन माँगे सुख सम्पत सन्तति तानन रङ्गरङ्गा ॥

११

हजरत अलीको सुदिष्ट भलो मोपर
जो दुख जाय सबतन तेभाज ।
हौं सेवक तिहारो तुम जात पाक करीम
करम कीजे राख लीजे यह जगत में मेरी लाज ॥
वेचुन वेच गुन वे सुमेवे नमुन पाक
जात रियाज न्याज ।
तानसेन रव रहमान करीम रहीम विनतो
सुनिए आवाज ॥

१२

सोखी सुनी बातें कोलों रोको जोलों न
आवे गरे की तान ।
जो कुछ जानी तो साधो रङ्गरङ्गके प्रमाण ॥
विनही पढ़े विनही समझे विनही सीखे
कहावत ज्ञान ।
गुरुनगुरु साह जलालदी साह अकवर सब विध जान ॥

१३

याते खरज रिषभ गान्धार पञ्चम धैवत निषाद
औ सप्तसुर तुम नोके भजेरी गूजरा ।
तीनो ग्राम नायको इकईस मुरछना वाईस
सुरत ताके भेद बूझरी ॥
ओड़व खाड़व सम्पूरण कर दिखावे वादी विवादी
अनवादी संवादी तिनके व्योरे न्यारे करत आगे
कण्ठ मतको वानी कैसी सूझरी ।
उनञ्चास कोटि तान दिखावे देशी मार्ग सोतो
धाय वाके चरण पूजरी ॥

१४

कटा छवाढ़ देत करपल्लव वस्तर लिए
अञ्जन सुधारत तिय चाहत अवासरे ।
एक कर दरपण लिए वदन निहारत एसी लागे
मानो नायक दृष्टि परत तब रहे न सुध सम्भारे ॥

१५

तू हठ छोड़ देरी लाल कहे सोई कीजे ।
तेरे रूसे सोते सब फूलत वादही को कत कीजे ॥
अधर कोप किए भ्रुकुटी भोहन तन
असुअन अचरा भीजे ।
साह बहादुर सी क्योन बनआई जिनको
मया से जीजे ॥

१६

बातें तेरी चङ्गी अनेक विध तरङ्गीव
अङ्गी सबनको तुही शिरताज ।
चार कवर चार वेश वर आयदन आद सरत गजका
खेलन लागे अवताफ महतानेइन नहोवे सब काज ॥

१७

एरी गँवार ग्वार तू कहा जानेरी गोपिनको मरम ।
कान्धे कामरी और हात लकुट लिए ताको
जिय कहा होत नरम ॥
कटि सोहै पीतवसन डारो फिरत
याहीते जानी जात तेरे धरम ।
तानसेन कहे ग्वरगेको झूंठो खायो
ताके जिय कहा होत सरम ॥

१८

रीमोको चारो जाम जागत बीते तो
एरी हठ छाड़ मान मति मान निवार ।
सुरज उपङ्ग दल चकवा चकवी मिले तू मिलिरी
आली देख छन्द वन्दवार ॥

१९

आज वन वन मुरली बजावत सूधी सूधी
सुध तानके लिवैया ।
कान्धे कमरीया हाथ लकुटीया टेढ़ेही टेढे
आवत नन्दको कुवर कन्हैया ॥
साँवरी सूरत माधुरी मूरत वृन्दावनके वसैया ।
तानसेन प्रभु वनवारी गिरिधारी ब्रजविहारी
बलजू के भैया ॥

२०

नींद न आवत पिय विन देखे मोरी
आली कैसे परै अब चैन ।
घरी घरी पल छिन योंही बीत जात रहत
मारग जोहत नैन ॥
विन देखे कल न परतहै मानो मनमोहत है मैन ।
अब कवधों मिल है प्राण प्यारो यह प्रभु तानसैन ॥

२१

चैनन आवैरी मोकूं आली विन देखे अपने पियकों ।
एक पल अन्तर सूझत ना दिन दोए कछु
कैसे समझाउँ अपने जियकों ॥

२२

प्राकृत लाए चलिए पियके जियको अब तोही
पै सुहाग लइए ।
जे विध लाल को मन मानेरी तेही तो करिए ॥

२३

वादी विवादी संवादी प्रतिवादी तोसे कहत हों आज ।
वादी राजा विवादी प्रधान अनवादी मुनसी
कार अरि संवादी रार साज ॥

२४

आदिदेव महेश्वर गवरीईश विरूप
आछे गङ्गा जटाजूट ।
यह अनुचर वन्दन कर माँगत तेरे पादप्रसादते
पाऊं राग विस्तार तान उनञ्चास कोट ॥
तो समान और नाही अविगत अविनाशी ह्वै
रहे या भुवलोक मध अटूट ।
भोलानाथ भस्मभूषण गङ्गशिखर डिमडिम डमरु बाजे
तानसेन सेवकको दीजे अन धन दूध पूत अखूट ॥

२५

कानन मुद्रा मुण्डमाला गरे भस्म विराजे अङ्ग ।
कर त्रिशूल चन्द्रमा लिलाट पारवती अरधङ्ग ॥
वृषभवाहन शीश जटा सोहत जटाजूट गङ्ग तरङ्ग ।
त्रइलोचन त्रिशूल खपर डमरु लिए
तानसेन तान गावत रङ्ग ॥

२६

तिरछे पिय तन चितवे प्यारी चञ्चल
नैन पेखेहै आछे ।
जाकी उपमा मोसन आई मानो मीन
चली जलमीनके पाछे ॥

२७

एरी आली आज शुभदिन गावहु मङ्गलचार ।
चोक पुरावो मृदङ्ग बजावो रिझावो
बन्धावो बान्धो वन्दनवार ॥
गुणी गन्धर्व्व अपसरा किन्नर वीण रवाव
बजे करतार ।
धन घरी धन पल मङ्गरत तानसेन प्रभु पर वलिहार ॥

२८

शिवशक्ति आनन्दी आदिभवानी दयानी दया
करो दीजे दरस इन नैनन दारिद्रदरन ।
तीनो लोकमें जानी मृड़ानी एसो प्रसाद दीजे
दुख द्वन्द दूर होय सुख शरीर आनन्दकरन ॥
महामाया भद्रकाली कल्याणी शिवानी
मैनात्मजा दुखहरण ।
चण्डमुण्ड महिषासुरमर्द्दिनी तानसेन सेवक
सुखकरन तूही जगतपोषणभरण ॥

२८

महादेव देव देवनपति ईश सुरेश नीलकंठ शिव
पंचानन पारवतीपति दुखहरण ।
वामदेव महादेव जटाजूट गंग शिखर डिम डिम
डमरू बाजत पुनि रीझन सुखकरण ॥
वृषभवाहन जटाजूट गंगशिख वहुरुप द्रुम द्रुम
डमरु बाजे त्रिशूलधरण ।
तानसेन शिव शङ्कर दया कीजे भोलानाथ
जगतपोषणभरण ॥

३०

वादी संवादी प्रतिवादी तोसो कोहै आज ।
सप्तसुर तीनग्राम उनचास कोटि को जहाज ॥
उरप तिरप ड़ाट लाग नेम वृच्छ आतक खातक
खरान्तक साज ।
रूपमति प्रभु गुणसागर चौदे विद्या गुणनिधान
महाराज ॥

३१

कटाच्छ वाट देत करपल्लव वस्तर लाए अञ्जन सुधार।
अञ्जन किए चाहत एक कर दरपण लिए
वदन निहार ॥
कटिके हरि कदलीजंघ शुकनासा पै वार ।
तानसेन के प्रभु एसी प्यारी सुन्दर निरख वलिहार ॥

३२

तब जानो बड़ो वाको जो कण्ठते कर
दिखलावै विस्तार ।
मध्यम पञ्चम पञ्चम धैवत धैवत निषाद
होत है गान्धार ॥
गान्धारको मध्यम मध्यमको धैवत धैवतको निषाद
निषादहि रिषभ मधार ॥

३३

ताल मूल खरज आदि भरत सङ्गीत कहियत तुम
सब विध गुण पारखी जान ।
सुधि विक्रत अलङ्कार इकईश मुरछना
रागाङ्ग भाषाङ्ग क्रियाङ्ग उनचास कोटि तान ॥

देश देश पर पूरण गुणी उचार करत है
जैसी जाकी विद्याके परमान ।
औड़व खाड़व सम्पूरण तुम सब विध निपुण
साहजहाँ साह तुम गुणनिधान ॥

गुजंरी—सुरफाकता

धन धन प्यारे जाको सङ्गतमें तू निपुण भइरो ।
तू लागिरी तोख चोख बूझन एसे गत नइरो ॥
गीत छन्द धारु धुरपद बोन बोन ताल लेत नइरी ।
चिर चिर जीयो साह बहादुर जाके सदाराग मइरी॥

२

पाँवड़े पलकनके करो धारो जब
राजबहादुर मोतन धरे चरण ।
वार वार डारो सकल आभूषण मोको तो
पियकी सुदिष्ट आभरण ॥
वन वन माने सो न माने सुधारे पिया अपने करन ।
रूपमतिके विछुरनको दुख भूल जाय
सब सुख लेहो आसरन ॥

३

मोसो अवध बदि गए गुसाँई रहे कवन भांति ।
रैन दिना मग जोवत जात एसो कौन
तीय जिहि रिझाय कीनो मात ॥
अञ्जनधर भाल महावर नवल तिया ललचात ।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहाँ जागे सारी रात ॥

४

तेरे नेत्र गुलाल वरणजो पियसो रितमानो ।
छूटे वार टूटी उरमाला कञ्चुको दरकानो ॥

५

पाप गए तन मनके मेरे परसतही रसूलके चरण ।
दुख गए सब सुख आए तेरे शरण ॥

६

साह तुरक मान इतनी विनती सुनियो महरवान ।
हसनहो गुनेगार तुम बकसन हार
करो निहाल पाऊं दीन ईमान दान ॥

७

कान्धे कमरी गो अलापके नाचे जमुना तीर नाचे पीछरे
पाँवरे तिले लोई चिना माँगवा ।
वो आली मृदङ्ग वाँसरी बजावे
गोपाल बैन वतरले अनले मुराद मलवा ॥

८

तेरो सो निरत तोहि बन आवे सोची मोहनराय ।
उरप तिरप लाग डाट सहत सुध अङ्ग देशी दिखाय ॥
जेते गुणीयन धन धन अपा अपा कर
पूज तेरे कमलपाय ।
साह बाहादुरके रिझाय अपवश कर
अब करो माई पुरोदाय ॥

गुर्जरी—तिताला

मेरे मन अति हुलास तुव दरवार देखवे
को मौन दीन ख्वाजा ।
अपनो रहम करम कर दीजे दरस मोहे
शरण आइवे को तोहे लाजा ॥
जोई जोई धावत ते फल पावत दीन दुनी
आलम निवाजा ।
चिस्ती चिराग लीजे खवरमो आधिनको
सङ्गत बढ़े ज्यो रहे दम ताजा ॥

२

लगगुरु समझ धरे ज्यो कहे ग्रन्थन गुरुन प्रमाण ।
जेहि लग तेही गुरु लग गुरु विवेक अँछर लख
सोई उलट धरे ज्यो कहे ग्रन्थन गुरुण प्रमाण ॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगन नजान ।
छन्द वन्ध प्रवन्ध सङ्गीत मत गोपाल नायक
करत विनान ॥

गुर्जरी—सुरफाकता

नमो रट शङ्कर देवा मनरे वृषभवाहन
तपसी प्रवल ईश्वर महायोग ईशान ।
गङ्गाधर जटाजूट ललाट शशि सोहै हरिध्यान ॥
नीलकण्ठ उरशेष कपालमाला विभूतिभूषण
गरलपान ॥
गवरी अरन्धग डमरू करपिनाक पान ।
धन धन धन महादेव गुणसागर आगर गावत
तानसेन विनान ॥

२

शेष सलेम करम कीजे तुमही सिद्ध सिद्धिदाता ।
मनको मनसा पुजवनहार तुमही विधाता ॥

३

हाँरे साहव साँचोही नमत मोरोरे ।
कौन भाँति सेवा करहों अवरे गुसैयाँ तोरोरे ॥

४

देखत सपनेहूं अपने पीयको जेते
धन धन धन माई ।
मेरी तो वैरन नोद गई तादिनते जादिन
ते विछुरे सुखदाई ॥
झूंठहूं न आई सहाई रस लेत सो मेरे
जानवे को यह कौन सों पाई ।
सो प्रथम प्यारे साहजहाँ सङ्ग जागतमें
कबहूं वाको बात न चलाई ॥

५

यह विध सो गायो गुणी रिझायो साह विलातको ।
तकिट तक् धुमकिट तक धीधी कट तकधी रीकिट
तक धिधिगनधा मृदङ्ग बजायो ॥

गुर्जरी—झपताल

हादी रहनुमात सतार करम कुनन्दा पाकव
ऐव भुजभर गफूर रहीम करीम गफार ।
यार जा याफता वाल तोफ आई तया कादरनु
सरत या हक्का यार वमार वीर वकुसीर अलाह
समद दिदार ॥
जम्वुल अजील तेरे तुफुर कान चावे
किताव दीन अवाव कर उमर उसमान
अमर अलीवर ।

हक चारो यार सुजानको दीजे ईमान महम्मद
विन अबदुल अबदुलह विमुतलव मुतलव विनहास
हास वाधन सुनाचारो कुरसी चारो मजवचारो
ईमाम जग पैर हम रहमल मालिका इमाम शाफ
इससमाई मामनमि वुजरक इमाम आजमए
पैदा कीने विस्तार ॥

२

तू तपतको मत ले चली तो तेरे वस भयो
ते मनभावन ।
तेरो सुहाग भाग अनुराग दिन दिन
वढ़त ज्यों शशिकला लावन ॥
सोते धन लागे जों चन्दजोत उड़गण दुति नसावन ।
साहब सुमान पिया वहोनायक वे तुम
अनूप भली जनावन ॥

३

नारायण हर तुही करतार जगत पालनहार ।
तुही आदि अन्त तुही करतार तेरोही विस्तार ॥

गुर्जरी—तिताला

तिमिरहरण प्रभातकर दिनकर ते यशकर
जन मन द्रगमणि विभाकर ।
हसम रसम झसम करण पतङ्ग गुपत मे को
मिनिरवान महामार्त्तण्ड महर ॥
तोही ते चन्द तोही ते अग्नि पानी नाग तोही ते
अनेक रङ्ग तोहीते चोख तोही तोही ते
भोग गत तोही ते छूटत डर ।
तेरे उगे तें सब जगे चन्द्र मान विषभान सहवी
सविता कविता तानसेन यह विनती करत
जोलो तू नितही नितरहे जो तू सुरतीलो रहे
छत्रधरे साह अकवर ॥

२

सुरभेद जाने वहुमाने सकल गुणीके गुणी
निपुण पुन कर करि दिखावत ।
उनञ्चास कोटि तानके अनमाने निरखत
ललना मेरो सोरो निपट कपट मेरो प्राण
उनको एकहैं सुनो या जीयते छियरा फटत ॥

३

तोको लाल पीत रङ्ग दीनो रङ्ग गहरो
जामे नेह कर रैनी ।
अनेक रङ्गन तन चूनर कीनी श्याम द्रगभई वैनी ॥

४

पल पल रस राखतहों रंभा पातुर ।
चलत चाल गत देशी सुधङ्ग नेत्रकमल ग्रीव भुजभर ॥

५

जबही इशक शरोद अवाज भई कलाम
रूप तेज तव जाय भेद भयो ।
ॐकार निरञ्जन अपार जाको विस्तार ब्रह्म पठायो ॥

६

वहुमाने शङ्ग गुणीगण भेद जाने ।
निपुन पुन पुन कर दिखावे उनञ्चास कोटि ताने ॥

७

पल पल रस राखत रम्भा पातुर ।
चलत चाल गत देशी सुधङ्ग नेत्रकमल ग्रीव भुजभर ॥

८

तोको गल पीत रङ्ग दीनो रङ्ग रंग
हरो तामे नेह कर रैनी ।
अनेक रङ्ग नगन तन चूनर कीनो श्याम द्रगन भई वैनी ॥

गुर्जरी—झपताल

चढ़ो दल साज अवनिदल मलनको
धरण प्रताप करण सो यश जगतमें ।
जाके बाजे सुन इन्द्र डरप गयो निरास भयो
जो सकल भूपतमें ॥
लंका परी धाक जमहिर हिरानों कलवलानो
शेष भूमि हलतमें ।
साह अकवर छत्रपति नरेश लीनो
सब देश पल झपकतमें ॥

२

एरी सखी मोहे बतावो पिय मिलवे की जुगत ।
जा प्रकार रीझे न मोहन वलमा कौन भाँति उगत ॥

३

तत्कार धुङ्कार धुनि मधुर धुं धुं कात तकिट
तकाथों तकिट तक्धुम किट तक् गदि गतक्
तकधिलाङ्ग धिलाङ्ग धिलाङ्ग धा ।
वीण सुर गावत उपजावत रङ्गनाद प्रकारके
शास्त्र प्रमाण सप्तसुर साधो सारेगमपधपमगरेसा
सारेगमपधनिधपमगरेसा ॥

गुर्जरी—तिताला

बाजत मृदङ्ग अंग तरङ्गके जामे उठत
अनेक रङ्ग तार तरङ्ग मत गुरुज्ञानके ।
डग डग डिग डिग ढुंकि ढाँकी दिगथो दिगथो दिगि
डगी डगी डुंगी डग डग डां डां वीणा बजो मानके ॥

गुर्जरी—धीमा तिताला

एरी माई आज वधावरा साजनुवा घर
अति आनन्द सन बाजीला मोरे मन्दिलवा ।
सुघर मालनीया बीन लाई चतुर मालनीया
गुन्ध गुन्ध लाई वेला चमेलीके हरवा ॥

गुर्जरी—तिताला

तुरका रङ्गीलवा छवीलवा देखतही
वाकी चितवन मोरा मन लोभाय रहिलवा ।
जे घरी मिलही हम ते हितसन मितवा
चन्दन छिपा सुरजनवा मिलकर ढोल धरीलवा ॥

(खु० बा०)

२

राँझण आवण छड़दि तोही इश्क मचायानो
घुमा अनीमा ।
कोज समझावोनु मोड़ले आवोजी मेड़ाकु
कदाले दानी वहुमा अनीमा ॥

३

चार देहाड़े राझण मेही चारके मैड़ी जिन्द खसलई ।
हुण ता मैनु रुठ दाजा दानी सद्दयो
मैड़ी शिरके ही आण पई ॥

गुर्जरी—जलद तिताला

दीमदारादीमदारातानदिरनदनतुंतननदानी ।
द्रुतुम्३तुंतुंतननननाताआ७दानी ॥
इश्क रावा हुण उल्फत बूंद अज रोजए
अलल तो हमते वेछदा वालेलीओ मजनू वस्ताअन् ॥

गुर्जरी—तिताला

एसी तुमी सन् लागी लौ रहे
जोउ पीउ घरी घरी पल पल छिन छिन ।
वेग आवहु चतुर वलमुवा कटिहों रङ्गरस दिन ॥

२

पीउ न पूछे ना करे कछु बात मइसन ।
पाँचो कुतव मुलक सइयाँके परसन पायन ॥

३

(मिरजा अबदुल्ला कृत)

रङ्गभीनी दुलहन के मुदरी कर सोहै वरण
वरण अनेक अनूप ।
उमग चाँप सन आई सखीयन मिल बनेरी कई
रीझत थकित भई देख रूप ॥

४

दीमदारा तिलेलाना तुम्दिर दिरतदानी ।
नादिर दिरतुम्तान दिरनातननतदरे तदतदानी ॥

गुर्जरी—धीमा तिताला

आजरे आनन्द को यह दिन है जो लालन
आए घर मेरे ।
याते तन मन नैनन अति सुख पायो गए कष्ट सबेरे ॥

२

नाहिन जइहों पनीयाँ भरन ढीट लङ्गरवा
मगवा ही में ठाड़ो रहतहै ।
मेरी तो एकहु न मानत ना सुनत है और कहा
कहूं आलीरी कछु कहिबे को ना कहत है ॥

३

(मी० जा०)

डरत ना काहूसे एसो निठुर ढीट लङ्गर मग
चलत लीनो अङ्क भर ।
सारी मसकी चोलिया चसकी टीको खसको
आलीरी अब कैसे जाँऊ घर ॥

गुर्जरी—तिताला

आली एरी तोरे देखन को सुरजन
उठ क्यों न नींदवा के माते ।
भोर भए उठ मन रङ्गीले छबीले जोवन राते ॥

२

पियरवा मोरा जियरवा तुमरे मिलन को
अति हुलसायो ।
जबते नेह लायो तबते सुधना लीनी मोरी
पीत कियो के वैर बसायो ॥

३

दोमदारा तिल्लेलाना तिल्लेलाना यललीयललो
यलला लाले ।
धिति लितिलानालाना दरादीम्दीम्
तनायलालुं यललुं यलल ललेदीं ॥

गुर्जरी—होरी ताल (जीवन)

डोरे डोरे फिरत मोहे लागो ढीट लङ्गर वरजो
न माने ।
भँवर समान श्याम भयो मोपर सजनीरी भली
बुरी ना पहिचाने ॥

गुर्जरी—तिताला

चतुरङ्ग ख्याल अङ्गपरण मिरदंग गति ऐया तराणा
सप्तक सुधा आर धरो ।
निरेगमधमगरेगमधनिधसानि रेगगरेसानिनिधनिनिध
निनि धमगरे गमधरे धपरे गमधगधधमगरेसा ॥चतु०॥
दिरनदिरन दीमतुँतन दिरनादीम् उदनितनि
तानतनदिरना दीमतुम् तदारदानि तुमतननननदीम
तननननतदरे दानी । चतु० ।

डुमकट डुमकट झनक झनक त्रिकड़ झंझं
झननन तो ऐयातोऐया अमोअमो आमोइया थुं
किटिकतकथुं किटितकतकधिलाङ्ग धिलाङ्ग
तिकधा नगड़धिन्ना नगड़धीन्ना धींधींधाग
तिकटधागदिगनगतिटर्कडन नतिर किटतक्तान
धिता गिदिगननगदित् कड़ानध त्रकड़तक्ताँनधीधा
तानधा तिकड़धाता धाधीतानधाधी ॥ चतु० ॥

गुर्जरी—जौनपुरी

चिरञ्जीव रहे तेरा वालका नित नित आनन्द करो
निश वासर सुनो हो यशोदा सुख सम्पतसों कोटिन
वरसलों राज करो ।
श्यामसुन्दर मनमोहन सोहन नन्दनन्दन जगवन्दन
सजनी जोलों ध्रुव धरन शशि भान दिन रजनी
राग रङ्गसो समाज करो ॥

२

प्यारी वनरी तेरा प्यारा वनरा अब बन आया। (माई)
मोतोयन चोक पुरावो शीश सेहरा बंधावो
सदा रङ्गीला महम्मद सा वर पाया ॥

गुर्जरी—तिताला

एरीहों तो चक्रित भई लालन को रङ्ग रूप देख ।
निशाके जागी भोर भए मेरे आए
और कहा कहूं मेख ॥

२

तुम कौन नगरके बसैया क्योंरे तुम
आएहो मेरे वगरवा ।
चोर मूसे कोतवाल हंसे दुवर भइलो दुरवा ॥

३

सबही में वरजोरी करत रहत नित
बोली ठोली प्यारे अपने गाम ।
मेरे तो जिया जोई आवै सोई करहों
तवही हमारो नाम ॥

४

सुमहुरे लोगवा ननदोया हम सन झगराई ।

जीवन दुवर भइलो एमा पिय विन दुवर
भइली जो गँवाई ॥

गुर्जरी—होरी

बाजे घुङ्घरवा मोरे कैसेके मिलो पिय सन भाए।
सूरत मूरत देखन कारण जिय हटके भटके
मोरा सदा रङ्गीला मो मनवा जनाए ॥

गुर्जरी—जलद तिताला

रङ्गभीनी दुलहिन कर सुदरी
सोहै वरण वरण अनेक रङ्ग।
सुआ चोला बहोत अनमोला बनरी
अरगजा लिए अङ्ग ॥

गुर्जरी—तिताला

दुमतनन दिरना उदन तिलाना नादरेना तदरेदानी।
नाद्रद्र२तुंद्रद्रद्रतनननननतारेतारेदानी ॥

२

तुमो सो लौ लागो रहे पिया घरी घरी
पल पल छिन छिन।
वेगि पाय धरो चतुर वलमा निश दिन दिन ॥

३

नजरन आवदा वेसोणा वेखणदा मैनु चाव घनेरा।
मैतो तैनु ढूंढ़दी फिरेदी सोणा
मिया राझण कित वल तैड़ा डेरा ॥

४

कैसेके जाऊं माइरी पनघटवा कैलवा रोके डगर।
अनघट चाल प्रकाशी लङ्गरवा फिरत
रहत वगर वगर ॥

५

प्यारा वनरा आइला कैलवा केसे बनरा अमोल।
कर मन वर पाइलो वनरा बनी वन
आइलो गायो बजायो ढोल ॥

गुर्जरी—एकताला

तोरी छवि मो मन हो भाए अधिक सोहाए।
नरनारी मिल देहो मुबारकी बधाई सुन्दर पिउ
मोहे मिलो गाय बजाय रिझाय सुहागन मिल गाए ॥

गुर्जरी—तिताला

अरगजे वागे करम मो ढिंग तो किधों उठ चल सुन्दर।
होंड़ तुमरे सङ्ग जाय देखो कौन मोसो
अति सुघर अति चतुर ॥

गुर्जरी—एकताला

वानीम निगाहे यार गदर यार शवी।
ना खुरद शरावे नाव सरसा सवी चश्मे
तर फेरास्तव च पय करद दीगर
वस नोवरीके दिल दासवी ॥

२

तनानाद्रद्रतुमदिरप्नादारेतदरेतदानिदीमत
नानितनातनातनननननाद्रतुंतनाद्रतुंतना
द्रतुंतानदेरनादेरनातरानतनुंदेरेदेरना।
तदानी उदानी दानी तुम तननन तुं
निगनिगधुमकिटततिरकीड़ानधीधगनधा ॥

३

अदारङ्ग भली बात पहिचाने और सुरनके
विस्तार कर जाने श्रवण गहे शीश नवाय हर बार।
तबहै तीन खाई सुर को मधम मधम सुर को सुर
सुर को पञ्चम पञ्चम को रिषभ रिषभ को धैवत
तबही होत धैवत सुरके गान्धार ए देखोस्त भार ॥

४

अललेदीम्तननतुमतननबाद्रद्रतुम
तननतुमतनतदरेदानीतदानी।
होंरे धितौलेधितिलेतनननननननननधिरकटतक
तकधिरकिटतककड़ानधाधीतौलेधीत्ता ॥

गुर्जरी—तिताला

किरपा करोरे मोमन सइयाँ तन मन धन
नोछावर करहूं परहूं पइयाँ।
महम्मदसा सुजान अब कहि भाग हमारे जागे
लेहु वलैया सुरजन सइयाँ ॥

२

रङ्गभीनी दुलहन को सुदरी कर सोहै
वरण वरण अनेक रूप।

उमग चोंपसे सुनरी सखी बनआई बनरे
कही देखत थकित भई रङ्ग सरूप ॥

३

पोऊ न पूछे बात मइसन कैसे करूंरी माय ।
गुण नहीं मोपै औगुण बहुतेरो धरहै चरण न धाय ॥

४

बन आयारी वनरा बग्राहन शिर सोहै
फूलनको सेहरा ।
हाथ सोहै कंगना गल सोहै सुआ वागा वनरी सो
लागीलो नेहरा ॥

५

सोमें तोहे पूंछूंगी बामनुवा कब घर
आवै पियरवा मोरा ।
झगवा देहों पगवा देहों और देहों गर हरवा
एसे सगुण विचारो नीको सांचे लगन है तोरा ॥

गुर्जरी—झपताल

नाददल कटकआलाप तरवार लिए
ताल छुरी दार और वावन गारो ।
तानकमान और सप्तसुर तरकस सुरछना गोली
पार मारो ॥

गुर्जरी—तिताला

अनुआइरे जोगनीया मइरे पीउ तोरे कारणवा ।
कानन मुद्रा हाथ खप्पर अङ्ग भभूत लाई
मन मालीके नामकी रे अरे भला ज्ञान ध्यान
सुमरणवा ॥

गुर्जरी—ख्याल तिताला

पचरङ्गी गुदरी सोहै मानो लागी प्यारी
वरण वरणके वस्तार गोविन्द जरत गरी ।
नमस्कार मोहि करना तिसनु साह जमाल कर
करम उड़ाई हम कांधे धरी ॥

गुर्जरी—तिताला

सुनावो मोहि ध्यान बाल कोरे श्याम प्यारे की बात ।
निश दिन तड़फत नीद न आवत थकित
भयो मेरो गात ॥

इति श्रीअमरानन्द-व्यासदेव तस्यात्मज श्रीहीरानन्द-व्यासदेव तस्यात्मज
श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे
गुर्जरी रागिणी सम्पूर्णम् ॥

गान्धार-राग प्रारम्भः

आदाय वीणा धृत योगपीठो
गङ्गाधरो ध्याननिमग्नचित्तः ।
योगासने मौलिजटा दधानो
गान्धारराग: कथितो मुनीन्द्रैः ॥

गान्धार—चौताल

धपपगगरेमपपधसानिनिधधपपमपपनिनि
धधपपममगगरेरेसा ।
ममपपपधधसासासानिनिसागरेसासानिनि
धपमपनिधपधपमपधसासाधधसाधधपम ॥
निनिनिसारेसागरेसामगरेसामपधसानि
साधनिसानिसारेगमपममपधपधनिधनिसा ।
सानिसानिधधपमगमगरेसाधपमगरेसाम
गरेसामगरेसागरेसा ।
जब सङ्गीत विद्या सीखे गुरुनसो तब यह भेद जानै ॥

२

निधपमगरेमधपमगरेसासासारेसानिनिधपधनिसा
सारेगनिधधधधपपधपमगरेसासासारेसानिनिधधसा ।
सासानिनिधपपधधपपधनिसासारेगगग
मपधमगमगरेसानिधनिनिधपधनिसा
निनिधपपगरेनिनिधपेनिधरमगरे ॥
एक सुरके कोटिहैं कोटिन कोटिन के आदि सुरके
विस्तारके बहो रूप बहो भेद गैधपै धगगरे
रेसासासारेसा ॥

३

धधधपपममगरेममपधसानिधनिधपधपमपम
गरेगरेसानिसा ।

मपधसारेसारेसनिसानिधपरेधपमपनिधपध
पमगरेमपधसारेमनिधनिधपधपमगरेगरेसा ॥

४

मपधरेसानिधपमपधपमगरेरेरेसा ।
सानिधधधसारेगरेगरेसानिधसानिधपमपनिध
पमगरेरेसा ॥

५

सुन्दर तेरे नेत्र वेणी तीरथ मध अस्नान भोंहे
वङ्क वर निवार ।
इनही में सकल सलीखा इनही में पइयत
परम पुरुष परमेश्वर इनहीमें लीजो निहार ॥

६

कहियो जधो तुम जो नेह बीज बो गवन
कीनो माधो विरवा लागो राधा के मन ।
द्रग तारे कूप कीने असुअन जल भार भरे पलकन
सींच सींच यातें और विरवा भयो सघनवन ॥
भूमि हरी भरी रोम रूख बन रहे पाँच बेल
कामकी चढ़ी त्रिया तन ।
कुच काछी रखवारे फूल फल होन लागे आयके
जो देखिए जोवनधन ॥

७

आज को छविको रस मोहे दीजे प्यारे पाछे
जइए जाको मन ललचात ।
अनत को गोहन नेक बकसीए रहिए जो सब रात ॥

८

प्रगट चतुर वरने नारी तेरे किधों खञ्जन कमल
फसे कहे कटाच्च मात पिता सुख सुखसागर जी
पङ्कज कछाय सरोवर में मीन करत कलोल ।
किधों चन्द हे सुतन गोदन बैठो कजरी भोंहें
डाड़ी कर पुतरी न होय दोउ पल कीनो आलीरी
तामेरी विध अनूप रूप जोवनन छवि तोल ॥

सुख सुख सलिता बिच दोना व फिरत भाव भरी
वरनी चोप सोहत किधों जुग कुरङ्ग
फन्दे हो अञ्जन फंफ खुलत न खोल ।
किधों जुगल मञ्जीर पलक पाट मूंदत खोलत
काम भण्डारी साह आजम के हुकमते तोल
देत जात विंब कटाच्च हीरा मुक्ता हलसों
तोल तोल मोल अमोल ॥

९

सेत असेत तारे जा तारकों निरमल अमल नवल
पुतरी मानो कमलन मासी ।
पूरण चन्दकी छाय परी इन नैन की तपन यै
मञ्ज कहे खञ्जनने दगा देने कासी ॥
कमलन में मञ्जन छिप करि बीधे रीधे अकवर साह
कों छाजत एक सरस मद अली जुग सार समाती
सो आप आपकों अफर उमड़ चल दियो
पठान वरणी धरक भयो नीरज तिन में हठ
कियो दाना की बुध नाटी यह अँखिया जलाल
महम्मद की आरसी ।
तिनमें आपनमें आप नहीं देखो चाहे
मानो हों अञ्जन कों मञ्जन से लोभ सम लई
मनमथ तपन कों ए चाई मानो अग्नि वासी ॥

१०

तुमारो असवारो बहो दल भारो के सुनत सोच
भयो अति भुव गिर नाव सुर सिन्ध पावत यह
हम कौन गत चतुर दल चलेंगे जब ।
भुव कहे चलो दल तब हालो दलवर शेषकमठ
व्रषभ दै दै और राखे न सम्भार देहै डार गिरके
जो गड गड़ गफ सेवे चार खोरतार और दव ॥
नभ कहे चल मोहे दूत बराबर पठेहै कंकर
नाहन वाय उड़ाय दए सूर कहे प्रताप तेज जीत लेहै
सुतीर काजे सोतो पान चलो रहो न जाय हैहै सब ।
सुभ नखत बली वखत बैठो पातसाह साह आलम
जग जीतवेकों आएहै अब ॥

११

ध्यायन गायन गाब बाजन बजावत ।
आनन्द भयो नरनारी इच्छा भर पावत ॥
पुनि कही न परत शोभा सभा तू केहि विध
कमल न दुरावत ।
साह औरंगजेव जियो कोटि वरसलों वरस गाठन
को शादी फरमावत ॥

१२

जैसो है साधन कोई ना बचाई तैसो एराय
उमराय भूपन की भीर लागत सुहाई ।
जैसोई राग रङ्ग सुगन्ध सरसाई दुंदु विछुरत बहो
विध चलत सभा बनआई ॥
शुभ घरी तोलों साह आय बैठे रतन जड़ित तखत
साह आनन्दन आनन्द आशीश बढ़ाई ।
साह औरङ्गजेव तुम कोटि वरसलों एसेही
करो वरसगाँठ वधाई ॥

१३

मलक पुर मलयाबाद मारू मरहठ सुगेर मालवा
महावन मकनपुर मेवात मुलतान मेवाड़ मिसर ।
बगदाद वङ्ग बरार बन्दर बदाऊं बुखार बुन्देलखण्ड
बून्दी वृन्दावन विजेपुर और विधनोरपुर ॥
समरकन्द सोलापुर सारङ्गपुर सारसन सूरत
समशावाद सीरोज सुन्दरपुर सुरङ्ग सिङ्गलदीप
सेलाज शेखपुर सकरपुर सम्भरसर घर घर ।
काशी कमाऊं काबुल कच्छ वा कनोज काशमीर
करोली केदार करवला केगर कोकन शाह आजम
जम जीत अप वस कर लिए मानत दोहाई नर
नरेन्द्र सकल भुव पर ॥

१४

वालापन गयोरी अब आयोरी जोवन रोम
रोम की बतीयाँ ।
पीतम सों हम खेलें बावरी काहेको
करत धो कपटीयाँ ।
वे चतुरनायक रिझाय रहे रहस रहस
सकुच ठटीयाँ ॥
वेग मिलो साह बहादुर सो वैजो परे रस हठीयाँ ।

१५

सुन्दर अति प्रवीण महाचतुर अचलराज करो
रवि शशि जोलों भूमि पर ।
चिर चिरंजो रहो जोलों ध्रुव धरव तरन पवन
पानी राजव मणि राजा रामचन्द्र रघुवर ॥
तोसो तुही और दूजो नाही मेरे जान सब जग
को विश्वम्भर ।
तानसेन तेरो असुत कहालो वखानै भक्तवत्सल
तोहे ध्यावत सुर नर मुनिवर ॥

१६

अवध इलाहाबाद अजमेर अकवरपुर ।
वहराइच बनारस बागर ओ बरेली बीजापुर ॥
जौनपुर जलानपुर जगदीशपुर जावली जालुपुर ।
दील्ली और दारानगर द्रावड़ दानापुर चार अच्छरसे
अहोवो अजवके दस्तुर ॥

गान्धार—होरी ताल

आजुरे माए गली गलीयाँ सदारङ्ग
पायो बात भलीयाँ ।
सखी सब मिलकर देहो सुवारकवादी ला ला
लागर अलह मिलाई दोउ कर रङ्ग रलीया
सो नकसो ते जलीयाँ ॥

गान्धार—चौताल

विछुरे भेंटत भेट किशोर किशोरी ।
जों जों होत उजीयारो त्यों त्यों गुरु जन लाजत
लजात पुनि लट पटात निहोर निहोर निहोर ॥

गान्धार—ताल धमार

कान्हा छाँड़ देहु अट पटी यह बातें ।
निश दिन होरी के मिस मोसे करत रहत ही घातें ॥
ले अबीर मुख मोड़ो चाहो आप फिरत छिपातें ॥
चतुराई यह कौन बदी हों दृष्टि न आवत तातें ॥

२

मोहन होरी खेलत डोरे व्रज में
पिचकारी कर लिए।
वगर वगर वो ढूंढ़त तोको उठ चलरी हर लिए॥

३

कर पकर कर खें च खें च ले ले जात कुँजन को
ओर सबमें मोहे देखोरी मोहन मधमाती।
एसो निलज्ज वरजो नहीं माने सब सखीयन
मैं यह हठ ठाने काम करे अपनो मन भाँतो॥

४

रङ्ग मधे प्रेम पगो गगरी सिर धरे सुनार।
सुरङ्ग सारी सोंधे सो रङ्गे सगरे गाम मध गगरी
सिर धरे सुधार॥

गान्धार—चौताल

सुन्दर अति नवीन प्रवीण महा चतुर नार
मृगनैनी मनहरनी चम्पकवरनी वार।
केहरिकटि कदलीजंघ नाभिसरोज श्रीफल उरोज
चन्द्रवदनी शुकनाशिका भोंहधनुष काम ढार॥
अङ्ग अङ्ग सुधङ्ग पद्मिनी भँवर गुञ्जत सुवास आवत
क्रोध नाहीं शांति सरूप लघु कृश नाहिन
दवी जात बारन के भार।
धन धन जाको भाग तोसो तिया ता घर
बैजू प्रभु रस वस कर लीने काम जाल डार॥

२

मुखकमोद वदन मध नैना एसे लागत
मानो जैसे अरुण अरविन्द में पुतरी तोरे।
चितवनमें यो भ्राजे जैसे भँवर भार कमल डोरे॥
और दोजो खञ्जरीट उपमा न पावे एसे
दीरघ लोचन तेरे तातें सुन्दर निरमोरे॥

गान्धार—धमार

आज गईहों नन्दमहरके अदभुत देखो पलना।
रतनजड़ित मुक्ता झूमत सखी पड़े नवरङ्ग ललना॥
पीत झगुलीया अतिही वनोया भूषणको छवि
निरखो व्रज वलिना॥
केशव दास प्रभु नन्दसुवन जवतें देखे कलन
परत मोहि पलना॥

गान्धार—चौताल

नैन जुगल जुगल मध तारे श्याम अपान
लेत है माई।
मानो मकर सुगन्ध धवल विशाल डोरे
लालपै रूप छक्यो चित चञ्चल अञ्जन दीने आई॥
खञ्जन रस लेत उड़उड़ अपने आपनही
विराजत आई।
कुँकू चंपा पियारे भएहैं पूजत न परछाई॥
दामिनी सकुच लगाय आकाश गई है छवि
निरखत दरशन जोत दारम हियो दरक दरजाई।
मारग मृगजे मीन वन गह्यो याते सनमुख होत लजाई
एसी उजारी प्यारी सुख दाई साह बहादुर पियको
सवत सरमाई॥

२

तूं जो अवतो मुख देखन कहत एतो गुमान
गुस्सो करे रीझे ललना भावे।
बादही बकवो करत पूंछत ते उत्तर न देत कंचनको
सम काचक्यों भावे॥
साही कसोटीके माह मेरे जान ताही की महिमा
जिसे मनमें रहे आवे।
रूपमति कहे ताहीको लहनो बाज बहादुरको
रिझावे॥

३

प्रथम चतुर तूं सयानी री तेरो मान कछु अयानो हो
जो कहत तो सोँ बतीयां तू ऐसी न बूझी।
घर घर चाह भयो सब सोँतनको तूं हठ
छाड़ देरी अनोखी नई कहा सूझी॥
मेरो कह्यो अन्त मेरो गुण मानियत छाड़ो
गुमान सोँ झूझी।
उठ चल हिलमिल मेहरवानके प्रभुसोँ प्रीत कर
परस्पर सकल तियनमें सरस कर राखोगी गुञ्जी॥

४

नैनन झपके झुमी घुम उघेर मून्दे सरसात ।
जबतें दरशन पायों श्यामसुन्दरको घरी घरी
कछू न सुहात ॥

५

आइए जी आइए मेरे महल ।
तन मन धन नोछावर करों जोई वारों सोई सहल ॥

६

नैनारी जेसे तोहे दीने करतार एसो ना
दीसत काहू नीको ।
श्याम कौन केवल खञ्जन नैन मीन मृग तिनको
सजाए नाहिन कौन दिन को ॥

७

कहाँ जाने बालक दधिकी चोरी ।
दौरी आवत हाथ नचावत जीभ न करहो थोरी ॥

८

तूंजो अपनो मुख दिखावत गहरो
गुमान कररी जो लालन भावै ।
बादही वकबो करत पूंछत न उत्तर देत
काञ्चनकी चौकी छबि पावै ॥
साहकी कसोटी कसाई मेरे जात ताहीकी मै
मारग सोतन के जिय आवै ।
सोंहे किए कहत तोही को लेन साह
बहादुर को रिझावै ॥

९

ए आएरी बादर सन्यासी सावन गुरुसे सीख साख ।
एक गजरत एक वरषत ऐक मुनिवर
खिन खिनाख करे मिलन तिनको कहा डर जिनको
वीर नए पाँचो वेलाख ॥

१०

वरागी भएरी नैना तरसा मानो भरम लगाय लए ।
श्याम पूतरी मानो सिङ्गीनाद अरुण डोर तप तेज ठए ॥

११

जोगी भएरी नैन भस्म मुद्रा धाए ।
भोरही से तात श्याम सिङ्गीपुर नगरे
मेखली डोरे अरक वरण तापन ताप ताए ॥
कोरे वैराग वरणी अलके जटा जोर ठायो
चञ्चल शशिप्रभु तुव रूप नगररी भिक्षा लेन आए ॥

१२

आज नौरोज नयो रोज कर दिखायो
इन्द्र नरलोक बनायो ।
अकाशदल वारिदल वीजलता कनक खम्भ
वादर साखोसे छायो ॥
पोहोपावली धरन सुरन वरन बिछोना
घन बरसत समान जलधर तनाव तनायो ।
बाजन गाजन निशान इन वनिता वन इन्द्र वधू
हाहाहूह करे गुणीयन यश गायो ॥
साहव किरान शाहजहाँ पातसाह झरलायो
जगजे पायो मुक्ताहल ज्यों मेह बरसायो ॥

१३

एरीहाँ तो रहसन फूली अङ्ग न समात
मया कर मेरे आए साहजलाल लाल ।
धन धरम धन जर करम मोहै कीनोरी है निहाल ॥
तनमनधन नोछावर कीजे वलैया लेहों
कटे जञ्जाल ।
चञ्चल शशिप्रभुको वलवल जैए सुदिष्ट
पर प्रफुलित भई सब वाल ॥

१४

विनती मेरी सुन लेहो गोपाल
सब ब्रज तुम विन वेहाल ।
तुम प्रतिपाल जगततारण हो सुध लीजे नन्दलाल ॥
अधम उधारण निस्तारण कीजे अपने भक्त प्रतिपाल ।
चञ्चल शशिप्रभु वेग दरस दीजे कीजे जी मोहे निहाल ॥

१५

वश कीने सुन्दर एक विचित्र वाल एरी
विश्वासन तो तन रस माते ।
मदन सरूप नेकही निरखत पियके
कामको रूप लग जाते ॥

ज्यों ज्यों वे भेदन ते सरस अति त्यों त्यों तेरो
रूप उजारो चन्द्रकला तें।
दिन दिन दूनो प्रीत बढ़े अति देख एहो
साहजहां पियको निज कृपातें॥

१६

आज नौरोज नयो रोज कर दिखायो
भुवलोक नरलोक इन्द्रलोक बनायो।
सदल बादल वोजल कनकखम्भ वदासान
वेदल छायो वादर समान नवदल तें तनायो॥

१७

गावत सुघर गुणी गन्धर्व सुध मुद्रा सङ्गतसो नाद।
सुश्रुति कला ध्वनी मुरछना पूरण लगे
तब रागको सवाद॥
रङ्ग लिप्त रस रूप लय ताल काल लव समान
वर रहे ईद काद महानाद।
सेन कहे ग्राम ताल अलङ्कार सब समझके कीजे
गुनीयन सों संवाद॥

१८

तूजो अपनो मुख दिखावत
काहे एतो मान करेरी आली जोलों लाल मन भावै।
वादही वकवो करत पूछेते उत्तर न देत
कञ्चन सारदा छन्दजो क्यों छावै॥

१९

आइए आइए मेरे महल।
तनमन धन नोछावर करहूं जोई वारों सोई सहल॥

२०

अतीत भएरी नैना मोरे दर्पण मुद्रा धाए।
भस्म भुरंगी दरशन भिक्षा मागनको चाए॥

२१

नैनारी सो तोहे दीने करतार
गुण और दीने पिय मनको।
सोमे कौन कमल खञ्जन मीन मृनशावक
एसो जोत नाहिन कुन्दनको॥

२२

सुन्दररूप अति नैक न न्यारे कीजे।
ता समे सखी कौन वन आवे जहाँ देखे ते जीजे॥

२३

विकुरत भेंटत दम्पत दोऊ किशोरी किशोर।
ज्यों ज्यों होत उजियारो त्योंत्यों गुरुजन
लाजन लजात पुनि लटपटात निहोर निहोर निहोर॥

२४

रवकी कुदरत चली हजरत नवी अलिया
पाई सिपत करत करीम की बातें।
पहले अल्ला दूजे पञ्चतत्व पाकदाज दे
इमाम चाहर देमा शुभको वनायो अपनी
जात सफा फयातें॥

२५

जगतपति भरणपोषन शुभ दिन दिन
अविचलधर्म्म राजाधिराज कुलकाज।
चारो जग चेर कीने चकता वलवण्ड
देश देश भक्तवत्सल देत गुणीयनको सकल साज॥

२६

अगर ओड़ीसा अजमेर और अजीमाबाद
आरकट रायन और अरव खण्डमें।
उत्तर आसाम और इलहाबाद और बलिया आजमगढ़
अवध उज्जैन आप आखण्डमें॥
अकबरनगर आमेर अमदाबाद इन्द्रप्रस्थ
एही प्रचण्डमें।
अमरनगर अमरावती अलकानन्दा एते पुरमें
प्रताप तेरो राजाराम अखण्ड खण्डमें॥

गान्धार—तिताला जलद ध्रुवपद

गोवर्द्धनधारी कृष्णमुरारि सोहत मोहन
मुरली मुख भारी।
जब जब बजावत तब तब रिझावत
मोहत सुर नर नारी॥
वे अति थकित झुकत झुकत ह्वै रही धुन सुन
मनमोहत सङ्गीत गत नाचत हंस हंस देत तारी।

धींधीको प्रभुकी लीला कही न जात मोर मुकट
विराजत धस पताल ले काढ़ लियो नाथ शेषकारो ॥

गान्धार—तिताला

अरी देखत देख रही देख रही मनही मनमें हों माई ।
सुध बुधछ बिसराई कौन अमृतबैन सुनाई
मोपै कछू जात न कहाई ॥

२

मैं निहार देखो शाह अकबर जग पर
रोशन जम्बीर दीदार ।
तुंही धरणीधर तुंही महीप कर राखो साँचो हो
कल्पतर ॥

३

भलेही पै आए हो भले आए मेरे गृह
अङ्गना भलो मान पलकों के करहों पाँवड़े ।
पहली सकुच कछू मनमें आनहों मन बिज करम
किए विनती करतहों अब तुम वरणीनतें
हृहो जुलाल के नावड़े ॥
वेगी चरणकमल नवल धरिए करिए हो मन चीते
कारज पतरीनके जिय अलसा जावड़े ।
अतिसुख पायो नैन प्राण शाह अकबर जो पियके
जिय की हों सब जानत यह गृह तज पग मग
डगन धरे आवड़े जांवड़े ॥

गान्धार—ताल रूपक

सुवन शाह अडंड डंडन आयो आयो हो आयो
जीत वलक ।
कर समान लोहरनगर तें लपक झपक लीनो
लगत पलक ॥

२

कठिन माई पियको री नेहरा गेहरा नहीं भावै
रहों नित उदास ।
सबन समान मेरे जान आलो अरध उरध दोऊ साँस ॥
मोहे जगत रैन चैन नहीं नैनन ताते सुपने हूं में
कहा सो भई सुपने नही आस ।
तानसेन प्रभु समझ समझ कियो भोग विलास ॥

३

अडंवर डंवर भूल गयो हो भूल गयो योग ध्यान ।
तब पशुपति निरगुण ललाई सगुणरूप अति
गिरिजा पाई यह सन्त गाई तब रीझ झीझ कर
अरधङ्गी धर वस ज्ञान ॥

४

कहा जानत बालक दधिकी चोरी ।
दौरे आवत हाथ नचावत जीव करो थोरो थोरी ॥

५

तैसो कहत न बानै पिय सों जैसो पिय
मूरत नैनन पीत ।
अति कोट कटाच्छ सब वस करबेकों बहोत कियो
अतिही अकेले ही लियो सब जीत ॥

गान्धार—तिताला

कहत न आवत जियके हुलास मेरो अँखिया
दारुण भई सुखदाई बहत रस ।
जैसे ग्रीष्मके तपत ताप लाल इतरात माईरो रोम
रोम तन ते आनन्द बरसे याते होत रसन रस ॥

२

तैसो कहत न बने पिय मोपै जैसो पिय मूरत
जिय बसो चित ।
कोट कटाच्छन सबही को मनरञ्जन अकेलेही
कर लियो सब जीत ॥

गान्धार—आड़ा चौताला

मेरो योंही जनम जात विहानो ।
जासों बात कामको पूंछो सोई कहत दिवानो ॥

२

मौनदीन अजमरी ख्वाजा तुम तन मनतें कष्ट
दूर कीजे ।
तू मनसा पूजवनहार सबकों अष्टसिद्ध नवनिद्ध दीजे ॥

गान्धार—तिताला

आज हरि लिए और अन हिली गइयां एकही
लकुटही हांकी ।

क्यों क्यों रोकी मोहन तुम सोई त्यों अनुराग
हम पर देखत मुखाँकी ॥
हम जो मनावत कहूं तुम मानत बतीयाँ गड़वाँकी
तृण नहीं चरत वछरा नहीं चोंखत हम कहाँ जाने
कोहे कहाँकी ।
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजे सब मन्तर पढ़ आँकी ॥

२

प्यारो प्यारोरी प्यारो प्यारो साहजहाँ प्यारो निपट ।
हंसत खेलत प्यारो सोवत जागत प्यारो अङ्गो
भर प्यारो झिपट ॥

३

शाह अकवर निपट बड़ो ढीठ कर मान तेरो
वेहदङ्ग और महम्मद महबूब प्रगट रहम करम
हो मनायो ।
वारगाह विशात ऊंचोहाँ सुन्दर वरवर वरको
इह माने विध अध आसमान बनायो ॥

४

सुनोहो पिय ध्यान धर विथा मोरी कौन सों कहों
और कौन सुने तुमहो अन्तर जामी सुखदायो ।
तिहारी सुदिष्ट तें जनम जीतवे कोफल पायो ॥
सब विध उमेदवार जोलो जियघट कौन
भाँतिको नाहींनहीं कामी जनायो ।
जिन चाह उनको सम कोऊ कर सके कैसे
कत राखत लेई जीत निहचे जानत हो तुम मेरे हो
स्वामी करो मनभायो ॥

५

मेरा मन लागे तुमसो तुमसाँ चितलावो ।
यह दिन अङ्ग सङ्ग सङ्गके रङ्गके उमङ्गके हिलन
मिलन रस सकुच छुड़ावो ॥

६

मोहे जागत भरे चेन न रहो नैनन तामेंते सुपने में
करा समाइए ।
तानसेन प्रभु समझ कैसे कीजे भोगविलास कठिन
सुध बुध सबहो लेरी पुनि अमृत भेट सोना दे रतन
जड़ाइए ॥

७

शुभदिन माई चाहतरो साह तेरो यह चतुराई ।
कबको मनावतहों आलो उन कहूं न बतराई ॥

८

होंतो ढूंढ़ फिरिआई माई सगरो
वृन्दावन तोउन पाए नन्दनन्दन ।
चलत पग थके थके दोउ नैना और बोल रसना थको
ना जानो कौन देश गए यशोदानन्दन ॥

९

कह न आवे जियको हुलास मेरी इच्छा
पूरण भई सुख दई दरस ।
जैसो ग्रीष्मको तपत जात सिरात माई
दिल मलीलो तिन अँके वास वस रहो वर वरस ॥

१०

नन्द-नन्दना जगवन्दना सुरासुरन मिल
सागर मिल मंथना गिरवरधारना हिरण्यकश्यप
हिरण्याक्ष-केशी कंस-बिदारना ।
मच्छ-कच्छ-वराह-वसुधा-स्थापना-देव-वामना
परसुराम-धर-रहराम-रूप रावण-कुम्भकरण मारना ॥
हलधर-मूसल-धारणा वुध कलंकी नाथ कालो
विदारना ।
शनकादि शेष महेश ध्यानहो धारना गोपी ग्वालबाल
ब्रजरक्षक गिरिवरधारणा तियाइयातातीया इया
इयाइया राम-रमणा जगकारणा ॥

गान्धार—आड़ा चौताल

मेरोहो यों जनम जात विहानों जनम जात विहानों।
जाते बात कामकी पूंछो सोई कहत दिवानो ॥

२

मोनदीन अजमरी खाजा तुम तन मनतें
कष्ट दूर कीजे ।
तुम मनसा पुजवन हार सबको अष्टसिद्ध
नवनिद्ध दीजे ॥

गान्धार—धीमा तिताला

आएहो जू तुम रसमाते चिन्ह भरे प्रतच्छ
देखियत झपकोहि गालन लागी पीक ।

याते मैं जानी अनत रितमानी साह बहादुर
पिय तिहारे दुकूलन सोहै कजरा लीक ॥

गान्धार—तिताला

मोरी खवरियां लाय देरे मतवारे हमरी
सुध वुध गइली भइली खुमारीयाँ।
नींद मोरी उचट तब गइली कोउ मधुवा
आन पिवावै जान रङ्गसो कहे हमारीया ॥

२

अवतो नेहा लागीला मोरा हामा लागिला मा
महम्मटसा सुन्दरसन।
अपने में सो पे नोछावर करहूं तन-मन-धन ॥

गान्धार—धीमा तिताला

भोर के मिलन वनिलवा मोरी मा पीतमसनवा
रहस मन्दर वाजे मन्दिलरा।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेली
सदारङ्ग गरे लाग भेटलवा ॥

गान्धार—जलद तिताला

वरसे नूर हजरत खाज कुतवदीनके दरवार।
उनही पे क्यो न मागें सदारङ्ग करत कष्ट सब छार ॥

गान्धार—तिताला

सङ्गवा नहीं छाँड़ो तोरा तुमही और निभावो
मोरे मितवा।
वाल संगाती हमरे तुम सइयाँ तुमहूं
जाय तबते कितवा ॥

२

तेरेही रित वावरी गईरे बुन्दरीया बरसे पियरवा
झरवा डारे अमराइया।
देख बदरीया चोंक परी मनमें हमरे
सदारङ्ग सो मिलाइया ॥

३

तान पहले गुरुनके अङ्गसों कीजिए तबही पाछे
मन रङ्गसों बढ़ाइए ज्ञान-ध्यान-मन।
जितनो सकत होय लैले उपजो उकत जुकत
जो रागरीत और सुरसङ्गतसो दीजीए मन ॥

गान्धार—जलद तिताला

पटभूषण न समात जबते भनक सुनी पियके
आवन कहि प्यारो।
कबहूं आङ्गन कबहूं द्वारे कबहूं अङ्गनवा फिरत
न्यारो न्यारो ॥

गान्धार—तिताला

दानी तनुंतांनतननितनमतनमतननना
तदानि तदरेत दरेदानि नानानाना तारदानी।
दीमदीमदीमदीमतननातदानिदीकदीकतक्दीकट
तक्धीतलांथुंनाद्रकटतकथुंगाद्रकटतकधानी ॥

२

रैनके जागे आए पियरवा मोरे घर राते माते।
पेच पागके लटपटे सारे नैना अलसाने
बात करत मोसे लजाते ॥

३

तनुमका अन्तरा

दीमदीमदीमदीमतननानातदानितिकिट
धिकिटधिरलाङ्गथुंनाधिरकिटतकथुंनाधिरकिट
तिकदिगन्दिगन्तानथुंनाधिरकिट
तकतकतदिकटतकथुंथुंनितनुंता० ॥

४

बरजोरीए लोगवा माई मिलन नदे पियरवा सों
कौन भाँति पिबाऊं मधवा भरभर सरवा।
सदा रङ्ग विन जीउ उरावै लाज आवै छतीयाँ
कुमलाना हरवा ॥

५

करो दूर दुख दारिद्र साहनके साह
शाह नजफ मुरतजा अली मेरी पीर तुम हरो।
तुमहो सबके मनको इच्छा पूरण करन हार
करतारके प्यारे नवी के दुलारे इतनी विनती
वेग सुनो लाज सरम पर नजर धरो ॥

६

सुनो ननदीया तोरा वीर मईसन नित नित अवध बदी
सौतिनके जाय कौन सुने कासे कहों यह दुख बतियां
एदिन रतीयां।

सर्वस दैदे हारो जानत सकल नारी तोऊ अपने
सपने भए न बनवारी या ब्रज सरस जार कृतियाँ
मोरी न जानो कौन ब्रज नारीको लाग रही घतीयां॥

गान्धार—जौनपुरी तिताला

महमद सा पातसा आज हम सन तुम सन
भेंट भइलो कोटि वरस सुरजनुवा कजवा सब पुजीला
जीवो जागो कोटि वरस लों ढोटवा तुमारे
कायम दायम इहै सदा रङ्गीले कर मन चीते हुजीला॥

गान्धार—तिताला

अंखियां लागी रहत निश दिन प्यारे तहारे
देखन कों।
घरी पल छिन मोहे जुगसे वीतत है
निश दिन छट पटी लगी रहत मोकों॥

२

कैसे मिलन कहाँ आवे जिय तरसावे मोरा
रीझ रीझ वलसुवा मोरा मन तुमी सन अटके।
एकतो नेवर मोरी पायल बाजे या समै वैरी भए
अगर वगरके लोगवा सुन पायन खटके॥

३

धाय धाय द्रुम द्रुम बाजहो मन्दिलरा बाजे
माई मोरारे सुरजन घर काज।
आज वधाई नीकी सुहाई गावहु मङ्गल साज॥

तानुंदीरनातादानीदीमतननननरेततदरेदानी।
यललमयललमयलायलाययललले॥
तनुमृतानतनानितनुमृनितनुमतनना
तदानितदरतदरत दारेदानिनातारेदानी।
दीमदीमदीमतननितदारेदानितकिटधिकिट
धिलाङ्ग धुनिदिरकटतक्थुंनादिरकिटतक्
दिगदिगतानथुंनाधिरकटतक्तकिटधिकिट
तक्तक्थुंथुंधा॥

५

तुम विन मोरी यह गत भईरी कलन परत घरी पल
छिन मोकों तलफत जीय बहुत दुख सहोरी।
सदारङ्ग जिन जावो विदेशवा घरवा
बैठ रहो सुख अतिही पाईरी॥

६

वीर सोना वराहो सुधार जो मोरी होवै
इन लोगन में नेक न घटाई।
जो तुम एसो यत्नो रे फूंक नीके सुहाग बढ़े
सदारङ्ग सङ्ग सुहागन चाई॥

७

आवो वलमा हमी तुमी जहां जइए जहां
दुरजन होवै न कोय।
घनी अमरैया ठनी गलबहियां डार पो सों
बहीं सो रहिए होनी होय सो होय॥

८

मेरा देहो रङ्गाय बाबुल चोला।
जैसी रङ्गीलो पियको पगरी तैसेही
मोती लागे सदारङ्ग अनमोला॥

गान्धार—धीमा तिताला

साहजहाँ लंगर पिउ सुन्दरवा
आज कौन रङ्ग रस राते।
मद पीए मस्त भए डोलत फिरत इत उत मदमाते॥

गान्धार—तिताला

अबतो मोरे कान भनकवा परी लो मोरी मा
लालन आए मोर मन्दिरवा।
जब पग धरिहै जाऊं दरवाजवा तन मन धन
नोछावर करहूं सदारङ्गीले सुनल झनकवा॥

——०——

अथ आशावरी

श्रीखण्डशैलशिखरे शिखिपुच्छवस्त्रा
मातङ्गमौक्तिकमनोहरहारवल्ली।
आकृष्य चन्दनतरोरुरगं बहन्ती
साशावरी वलयमुज्ज्वलनीलकान्तिः॥

आशावरी—चौताल

मलयागिरि के वनमें वनिता हरिवल्लभ आनन्द भरी।
हार सुढार मरे मजमोतिन मोर पखौवन सारी करी॥

चन्दनके द्रुमतें गहि नागिनी के लरमें गरवानी खरी।
निज देहकी दीपतिहीसों आसावरी
दीपति श्याम घटाकी गरी ॥

२

ओज पहरि चीर छविसों विराजी अति वनी
अङ्ग अङ्ग श्याम नीलवरण सुहावनी।
नागिन लपटी रहो तन परचण्ड सब शीतल
शिखर जल अति मन भावनी ॥
चन्दन को खोर किए बैठी द्रुम तरि वाम
निसधरेगप सुरमें आनन्द बढ़ावनी।
पूर्ण जाति निषाद भवन रति हेम दिन डेढ़ प्रहर
आसावरी कों गावनी ॥

३

मलयागिरि नीरि झरे झरना वनकी छवि
देखत आनन्द भारी।
करमें लिपटाय विहार करे तरुचन्दनतें
गहि नागिनी कारी ॥
गजमोतिनको उर हार बन्यो शिखिपंखन को
शिर शोभित सारी।
निज देहकी दीपतिहीसों आसावरी छिपति
जयों श्याम घटारी ॥

४

निसारेमनिधनिसारेमनिधपधसानिधपम-
धनिसानिधपमगमधनिसानिधपमगरेसा।
मपधरेसानिसानिधनिसागरेसामगरेसा-
निधपमधपमगरेसामगरेसानिध ॥

५

धधममरेरेसारेरेरेनिनिसारेमपधपमगरेरे-
सासानिधधमपधसारेरेसानिनिधनिरेसारेसा।
धधसाधपधधधसासासासाधधनिरेसारेसानिधधममरे
रेमपधनिसारेमगमगरेसानिधपमपनिनिधरे-
रेसानिनिधनिरेसामगरेसागरेसा ॥

६

आयोरी जीत राजा रामचन्द्र लङ्कानगर।
जित तित सुनियत चहूं देश बाजे बाजत राजत
आनन्द भयो घर घर ॥
जब कोप कियो चढ़े हनूमान अगवानी कर जो धाए
लङ्केश कांप्यो थर थर।
रावण मार धाय लियो देश दियो विभीषणको
अब सीता लायो रघुवर ॥

७

नवल लाल रिसाल बैठे रङ्गमहल
तूंवर समय वैरन सीत लगाई रिसाल।
प्रति प्राणेश्वर इच्छा करहों पठाई उठ चल
हिल मिलरी हित चित नित करहो निहाल ॥

८

कर उदयाचल अस्ताचल लीनो खड़ग बांध
जलालदीन शिर छत्र धरकर।
तोसो और न दूजो तुंही नरेश भुव पर
तुअ सनमुख जोवत जोरे भुव पर ॥
एसो प्रताप तेज सुरो पुरो सप्तद्वीप नवखण्ड सबल वर।
साहनशाह हुमायूंको नन्दन जगवन्दन जाके नाम
महा निडर ॥

९

देखियत आनन्द होत तिहारे दरस जबहीं।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध सुख सँपत सन्तोष पइए तबहीं ॥
सुर नर मुनिजन ध्यान धरे वाको पंडित सो कबहीं।
धन राम कृष्ण आधीनन को देत मन इच्छा-
फल सबही ॥

१०

गौरी ईश्वरी शिवा भवानी आनन्द देजै।
रुद्राणी सर्वाणी सर्वमङ्गला रुड़ानी मैनका
दारिद्र भंजै ॥
दक्षणी उमा कात्यानी सुवर्णा पार्वती दुर्गाराणी
तिहूं लोकमानी मन विचक्रम तजै।
चण्डिका अम्बिका आरजा गिरिजा सैनकात्मजा
निरमोल सेवकको अनेक विद्या कर सजै।

जो रीझै शाह आजम सुजान नरेन्द्र और होय
सदा समा में जय ॥

११

तोहिसों शारदा प्रसन्न भई लई सब वीतए ।
अपनेही बस करहों रस रङ्गत सो मेहो जंगतए ॥
तूंही अति रागकी तोख चोख खरी कर जानत
मानतए ।
और तेरोही अलाप ध्याय तान तेरोही
अक्षर मन लागतए ॥

१२

आज माईहों आनन्दी आनन्दन मेरे ग्रह
धरे पिय चरण ।
अब साँचो पायो पूर्वलो फल मोहे मिलोरी
कामहरण ॥
लट लटके मुख देख दुख गयो अनगन सुख भयो
अमृतवचन ।
सुन श्रवण जनम घरी मोकों मिले शाह अकवर
मानो जानोरी पीत परन ॥

१३

तू नोरङ्गी लाल रङ्गीलो जलाल रङ्गीलो वानक
वनक छबीलो ।
जाके रसाल रसक्यों भईरी जे रोम रोम
रसिक रसीलो ॥
तो उन विन निश दिन कबहूं न रहों माई परम
कठोर तिह नेक नेम निरखत अजहूं न लगीलो ।
शाह अकवर प्यारो न्यारो न कीजिए और है
मेरी सीख सुन धुन काम हठीलो ॥

१४

जल थल में और जहाँ तहाँ इत उत जित तित
नित नित तुंही भर रहो शाहनशाह सतार रव ।
तोसों और नाहीं दूजो तोसो तुंही नरेश तुंही
दीन तुंही दुनो तुंही धनो तेरो सरव ॥
ना मोमें जप तप न संयम ना तीरथ व्रत लुवधो दरव ।
तानसेनको साहब दुखियनको दुख दूर करन हार
भंजन गरविन को गरव ॥

१५

आलीरी मान जिन कर घड़ी घड़ी निश घटत
मिलवेको वेग उठ चल गरे लाग ।
याही बातमें तू अति सुख पइए और रेहै तेरोरो
सबनमें आदर सहत सोहाग ॥

१६

सोई सुन्दर नारि सकल तियनको रिझावै ।
और जो कवि पँडितन के गुण नाम प्रकाशे रस उपजावै ॥

१७

प्रकारन कर रिझाय लीनों प्राणेश्वर विचित्र
अङ्ग अङ्ग अनङ्ग ।
मेरे जान यही अक्षर होतहै अपरागन तातें
सकल त्रियनमें तोहिसों रङ्ग अनङ्ग ॥

१८

उत्तम लगन शोभा सगुन गिन गिन ब्रह्मा विष्णु
महेश व्यास कीनो शाह औरङ्गजेब जसन तखत
बैठो आनन्दन ।
नग खेंच दाम विशात वर मायन मोहनप्रत
ब्रह्मा रचो तिन मध गायन गुनी जन गावत तिनके
हरत दुखदन्दन ॥
एक निर्तत निर्तत लास ताण्डव रङ्ग भावन एक वन-
बावत वन्दिक पण्डित कर कवि सरस पूरण चन्दन ।
शाह औरङ्गजेब जगत-पीर-हरण लोक तारे
निस्तारे फन्देहो रहत दुख दारिद्रके गञ्जन ॥

१९

दूलह आयो अकवर नारि दिल्ली दुलहिन वरपायो ।
चित्रकला विराजत अलमंत घनश्याम फानूस
मसार वखत प्रताप जगमगायो ॥
जब धिंगाने ठेल पेल लीतहै दुरजन देश देश
दहेज मगायो ।
राखो निशान वजाय घर घर मङ्गल गाय चिर चिर
जीवो हुमायूंको जायो ॥

२०

माइरी महा कठिन भई मिल विछुरेको पीर ।

घड़ी घड़ी पल छिन जुगसे बीतन लागे नैनन
भर भर आवत नीर ॥
जबसे प्यारो भयो न्यारो कलना परत मेरी वीर ।
तानसेनके प्रभु बेग आवन कीनो जियरा
धरत नहीं धीर ॥

२१

सोहै उत्तम गढ़ औ रङ्गमहल बनाए तिनहूं में
सुन्दर नारन ।
अतिही रहो और पवनकी छवि ऐसी लागतहै
मानो पहिरे हरी सारी फुलवारी आनन पर वन
रही धरन ॥
और जे छूटतहै फुहारे मानो अलम बनाए नोछावर
करत तन मध धन ।
डारु भाग जागे दिल्लीके श्रवणनको सुख दिए शाहपति
पातसा चिरंजीव रहो करोर वरस नरन ॥

२२

सोहै साहबी साहव सुलतान औरङ्गजेव जाहीको
जे परम वली महासावर महाजान ।
साहजहाँ-नन्दनके दरवार भई भीर नृपनकी
अतिर्त पावत खिलत गुनीजन देत अशीसप्राण ॥
जुग जुग जीवो अकवर-वंश कल्पवृच्च जगत गिरखान ॥

२३

सगुन होत पिय मिलवेको आलीरी ताके लागे
अंखियन ।
प्राणेश्वर कव आवे गे छोड़ परी सब सखियन ॥
भली भई तुम आवन कीनो तन मन रोम रोम
फूली छतियन ।
शाह वहादुर तुम वहुनायक जागे मेरे करम
भाग रतियन ॥

२४

वेंदी उलट रही छूटे वार टूटे हार फैल रहो
काजरा धुर दरशननके ।
काचकी पटिया दरकी दरकी डगमगात चलत
चाल धरन पर धकधकनके ॥

२५

धायोरे सजदल रामचन्द्र कर लङ्कानगर ।
सप्तउदधि त्रसित शेष कमठ कलमलानो महि
डगमग उठत धूर गगन थकित छिपत दिनकर ॥
अरिन दर दरेर चढ़ो महावली एसो सुरो पुरो
अडंड डंडन अखण्ड खण्डन नरवर ।
वैजू प्रभु चले जीत कनकपुरी घर घर निशान
नौवत वाजत आयोहै रघुवंशभूषणवर ॥

२६

प्रथम सुर साधे आराधे ते पावे नादकों मर्म ।
और इकईस सुरछना वाईस सुरत विक्रत तान
उनञ्चास कोटि तानको धर्म ॥

२७

प्रात उठ चलरी पियपै तूं मुक्तमाल विसार ।
उलट मारग मध यो चितइरी मानों गजराज
रहत आर ॥
जैसे मानो पवन लागे कमल जाके सुगन्ध मराल ।
राधाने वहारजो देख राजा रामचन्द उलटे सो
छविरी राखिए जियधार ॥

२८

अनेक प्रकारन कर उपाय वस कीने प्राणेश्वर
विचित्र अङ्ग अङ्ग ।
मेरे जिय यह अचर होतहै उपजान यातें सकल
तियन में तोहीसो रङ्ग ॥

२९

गौरी ईश्वरी सरस्वती भवानी आंनदी और भवानी
शर्वाणी सती मंगला चण्डानी मैनाकजा दुख-
दारिद्रहरे जाल ।
अंविका काली कल्याणी महिषासुरमर्द्दिनी पारवती
उमा शक्ति करदे वांछित काज करो निहाल ॥

३०

पुन कैसेक दुरतहो तुम अपनों सो करहो
दुराव केतोइ ललन डरत ।
और काइ बूझत देख धों पीतम एजो अन कहे
देत जो गाजेहो समै मूरत ॥

अरसानि नीदन अघानि वाके पीतमसों नैन पाए
याते थोरि ढरत सूरत ।
असलेम साह येह जान पार मोसो सुधहि खिन
जानो तुरत ॥

३१

लालन तुमसों जो बातें पाई कुअत पैए हाथ एहो
धर सकत माथे ।
लाख करोगे तोह्र नाहीं मानोगी ते ताही पै
सिधारिए पिय जहाँ तुम रैन रहे पीत गाथे ॥
अब आए आतुरहै मोहि मनावन भोरावन
माँझको गए भोरे आवत भोरके गएहै आथे ॥

३२

अहो तुम झूंठो झूंठो बातें कथत ज्ञानकी रसना
नाहिन बनत मानत नाहिनरी आली कहूं तूंधों
कहा भयो लाभ ।
दादर निशदिन नाल मूलहै चाहहुन पइयत है
कैसे पइयत पद्मनाभ ॥
काहे योगी जपी तपी सन्यासी काहे शेष मशायक
जो इच्छा पूजवे एसो कौन को भयो ज्ञानलाभ ।
शाह अकबरको मन मनाइ जो कहो तुम ताही के
शीश धरो वमदाभ ॥

३३

तेरेरो सुर मरन अलाप करत धरत पुनि जानत
मन गान गुणनिधान औरङ्गजेब नर ।
सुगायन गावत बजावत गीत छन्द धरु धुरपद पिय मन
रिझावनकों अब तोसो तुंहो अङ्ग अङ्ग सुन्दर ॥
पुनि सङ्ग वर विद्या पइयत लोनोरी माग विद्यावर ॥

३४

प्यारे तू मन मेरे तनमें बसत रजनी दिन तोहीसों
जीवन बनत मेरो ।
सोवत सपने अन्तर अनत फिरत तोऊ सङ्ग
लागो रहतहों पिय छाड़त नाहीं औसेरो ॥
नेत्रनकी पुतरीनमें मोहमोसूरत देखवोई
करत तोऊ व्यापत न मोमै काम अनेरो ।

विरहनी नारन तारन अकबरशाह सुजानहो आई
रेवा कारण काह्र सोतनके कहैते अब तुम जिन
मोपर तेजो फेरो ॥

३५

ताल सुर लाल राग निरत अङ्गभाल प्रवन्ध प्रकीरण
अपने रस ।
सुध विक्रत नेम विरस ओड़व खाड़व सम्पूरण देशी
मारग तत वीतत घन शिखर बाजत गावत गुनीजन
पानके परस ॥
पूरे यों तेरेरो अलापत याते सबसों तिन मिल
देख राग रस ।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाईके व्योरो न्यारे
करजो भई मई वाकबानी वस ॥

३६

सुधारक जशन नौरोज नयो जातें भयो जनम अवण
कोंजो पुनि देखो उदै दिल्ली तखतको ।
कोटि कहत धन हमज्यो इच्छा भई सबनकी विधना
राखे राज कायम साह आलम वादसाह प्रथ्वीपतिको ॥
आनन्द हुलासन गुणीजन गावत बजावत पावत जरी
सरोपाव तुरङ्ग पावै हम तुमतें समरथ रविरथकों ।
अशीस देत सुरभावन अटल रहे तुमारि अव्वा
कीनों तुमकों सजाई सदा रहो हिम्मतकों ॥

३७

अतिबुध कारीगर रच पचके सुनखत वखत
वली करन तखत अनुपम बनाए ।
जहाँ लगे रतन जड़ित गुण सबगुणके पुनि चिन्तामणि
कामधेनकों एसे नगनकों कापै जाय मोल मनाए ॥
सो गावत बजावत निरत करन लगे जहाँ तहाँ हीर
चीर आरायश और नगन जड़ित खंभन नील
जर वाफ तारी तनावन बनाय बनाए ।
शुभघरी साध बन बैठो मध नायक दिल्लीपतकों
जेवदा औरङ्गजेब पातसाहो सबन आशीस दई सब
गुणीनको दुख दारिद्र हनाए ॥

३८

नीलवरण पहरें दुकूल रही घटासों कामन दामन
लगत माधौ रैन ।
ताको पचरङ्ग किनारी सोई मेरे जान धनक भई
बून्द अमजलको और बोलत कोककला बैन ॥
पीहपनके हार छूट रम रहे सोई वग पंथ एसो
लागो मेरे नैन सैन ।
यह कवि देख रीझे तानसेनके प्रभु एसी लागत
मानो मूरत मैन ॥

३९

धन धन तूं चक्रवर्ती नरेश जलालदीन सब देश लिए
किए जेर द्रुवन अपनें खरग किवार ।
सब विध ग्रथ्वीपर तुम समान परमान उदयाचल
भरती नेहचे जहाँ तहाँ सकल भूपन पर ॥
तोसाँ तुँही एक अपवली महा सुभट और
समकौन देहों पटतर ।
जलालदीन महम्मद गाजो चिरञ्जीवो तोलों चन्द्र
मेरु गङ्ग जमना छत्रपति शाहनशाह दारिद्रहर ॥

४०

आलस भरे खड़े ही रङ्गीले रग मगे बानक बनतें ।
तूं जो रित मान आई पिय पैतें प्रगट लच्छण
देखियत सुख कीनेरी रस परस मनतें ॥

४१

रोजा निमाज कर बन्दगी इबादत याद
साहबदीनकों सवाद जानो जगतमें तुम सब ।
आयत हदीस सिवाय अब कछू नहीं तुमारे
मुख बीच दीनी हिदायत तुमको रब ॥
पाँचो वखत सङ्ग सुनि लात मुसफति लावत कीनो
जिकर फिकर और सब ।
मदत अल्लाह पञ्चतत्व पाकइाज दे इमाम ईद
मुवारक होय महम्मदमा पातसा तुमकों अब ॥

४२

धन धनरी प्यारी सिगरी नारीन में पिय मानो
रूपनिधान सारङ्गगमनो सारङ्गनैनो सारङ्गरङ्गसमान ॥
परननसों प्रेम नमानें आसक प्रभु प्यारो प्राण सगरे
गुणी गन्धर्व सगरे नाद समुंदरन पान ॥

४३

गगरेसाममपपधधपपममगगरेरेसाधधसासागगरेरे
सानिनिधधपपममपपधधपपधधपपममगगरेरेसा ।
ममपपपधधसारेरेसासानिनिधधपपममधधसाममम
पपधधसासासारेरेममगगरे सासानिनिधधपपमम
गगरेरेसा ॥

४४

या हजरत अली मुरतजा अली पोर दुख दारिद्र
दूर करो मो तनतें ।
जो तुमे ध्यावत सोई फल पावत सदका हँसन
हुसेन औलिया अम्बिया शेष मशायक जिनपै
महर करो अपने करमकी मीरनको पीर हरो
सुख सम्पत्त देहों अब शेर खुदावली रसूलतें ॥

४५

आयो आयोरे वलवन्त छत्रपति द्रुवन मिलिवो
माई दलमें ।
ज्यों वरषा ऋत उमगत नारि सूख जात एक पलमें ॥

आशावरी तथा वङ्गाल—चौताला

४६

प्रथम मज्जन कीनोरी आली उदियाको दोउ
घदरस लीनों ।
हसन बोलन डोलन मानो सरस्वती लिए वीण
हुमायूंको नन्दन अकवर वस कीनों ॥

४७

नातेहै नवीके अस्तुत हजरत अलीको मकबूल
दोऊ जगके प्यारे चिस्त भोरके ।
दुख दारिद्र दूर करो निश्चय मनमें धरो दरशनके
चकारा सुक्राधिक भोरके ॥
गुरुहै साधनके दाताहै सन्तनके दयालहै दीनके
एसे पूत नासरपोरके ।
तुमको जानामे आश चरण गह विश्वा वीस पावन
में राखो अपने सीम खाजे मोरके ॥

आशावरी—झपताला

कोज तो मोहे बतावोरी पियसों मानकरवे कोढव ।
ए एसे कीजे जामें वे नेक मलीन न होय और
अपनोहूं बात रहे सब ॥
उनको कहा कहों वेतो निपट प्रवीण सकल लाल
अनेक आँखनकी फरकत देख रहे तिनसों
छिप सके कब ।
यह मूल मन आय गई सो तुमसों कहो तातें
सदारङ्ग रीसहु में मरूँ एसो कबहूं अब जब तब ॥

आशावरी—आड़ा चौताला

महागणेश कहत सुख चैन ।
भेटत हूं नछाड़े भावे साह किरान लागे विचकैन ॥
नाम लेत कटत पाप अन धन लच्छमी दैन ।
तानसेन सेवक पै कृपा करो ज्यों कल्पवृच्छ कामधैन ॥

२

ढोलत मान न करिए गुमान न करिए ।
जिन नाल महोव्वत लइए तासों हित चहिए
प्रीत रीत जिय धरिए ॥

३

कीनो एसो सर तुष कर वर बर वर डर काटे
अपार और दीनो बिड़ार ।
सैन भर कमठमानी अरु शेष डगे गोलो सडार ॥
खल कमव्यो इन्द्र गहत मया कीजिए जिय डर
जब सुने बाजे इन्द्र बजावत कीढार ।
अतपे वरषा डर बरषायो अधिकर एसो मचो मार ॥
एक गैरन चाहे जाय कनको बाद भजो जातरो लार ।
मिटि डार उड़ प्रवल उड़गए जित तित जुतें न
लगत वय पड़त चरण कीरत चल महावली साह
मौजदीन लीजिए पग पर वार जो जगमें व्रतच्च
राम अवतार ॥

टोड़ी—तारसादरा

गज घण्टा बिभार अरुण सिङ्गार त्रिविधि दुखतें
उधार सकल रैयामान मरदन त्रैलोकताप
निवार आए ।
समझ अजम झुझार गहे करवर भुजन फेर फेर
दलन विस्तारण दूलह शरण मुख्तार धाए ॥

आशावरी—ताल रूपक

गगरोया लेदे मोरी पनघट भरन न पाओं
कान्हा हेरी ।
उतकल लाज तुंहो जानतहै इतए रहनन देरी
हाहा तेरी चेरो एरी ॥

आशावरी—तिताला

रामजू विष्णु दामोदर नारायण कृष्ण
हम गरु तुम ग्वार गुसाँई जनम जनम रखवारे ।
कबहूं तो पार उतारो चराइ कैसे प्रभु हमारे ॥

२

चौंक डर ढुर लागी पियके उर देख बेणीको परछाँई ।
याही बातको आनन्द भयो परे ख्याल मन भावन
तातें गहे किए नाही नाही ॥

३

बह जाय एसो चलन जो नेकन होत नरम ।
पी तोको चाहत पोकों न चाहत फिर पछतायगो
योंही जायगोरी तेरो मरम ॥

४

मेरे नैननही लागो रहत पियको मूरत
सोतो एक पल क्योहूं नटरे ।
हों नहीं जानू कछू मोहनोसी पट डारो यह मन
धीरज न धरे ॥

५

हजरत एसो होय तुमते मुझको मिलावो प्यारा ।
तुझ कारनमें सब जग घाला विरह सुहाग में गाला
आला आप कुन्दमहै हम नम झाला नेक न करो न्यारा ॥

६

तूंजो कर नचाय नचाय बातें करत हो अङ्गुरी धर
अधर झूंठो भईरी मोसों करत चातुरी ।
तूंजो अपनो दुराव छांड़ नाहिन आलोरी
अब घट ढूंढ़ पड़ए सच आतुरी ॥

अब नग मेंट करत है आली सो मोह खीज लागत तेरे
तो जीमें डोरे एकही तुरी ।
उजारे दौलतखाँ सो मिले कपट कर एसी
भांति क्यो जो पतयातुरी ॥

७

तेरी चितिवन हसन वस किए लाल को
नैन मनरी आली रीझ रहे मनमोहन ।
कोटि भांति रिझाय बुझाय समझाएरी पै कहूं न
अटकेरी रीझे तेरेही अब किए जतन कौन कौन ॥

आशावरी—ताल सुरफाक्ता

निसारेमनिधपमगरेगरेसानिधपमगरेगरेसा ।
मपधरेसानिधपमगरेमपधसाधसारेमगनिधनि
धपमगरेसा ॥

आशावरी—तिलाला

हजरत शेष सलेम पीर रोशन जम्भोर
जानत तुमहूं विथा मेरी नीके कर ।
या जग बीच सब जानत है हम तेरे
कहावत तुअ दर ॥
कृपा करो तुम हमहूं पर जैसी करी तुम भावतेपर।
समूह को देहो अष्टसिद्ध नवनिद्ध राखो
अपनो मान आदर ॥

२

मेरे मन बीराव राखो इन गोविन्द वैनन ।
हों पाछे पाछे पछताय रही वेतो अन्तरजामी
स्वामी कहियत है मन वस कीनो मैनन ॥
सूरत ठगोरी मोहे ठग जो चले सो पीर हरण
चितए मोतन सूधे इन नैनन ।
तानसेन को प्रभु सुखसागर सुनो वे
देखेही निहचे चैनन ॥

आशावरी—चौताल

आज माई आनन्दी आनन्दन मेरे ग्रह
धरेरी पिय चरण ।
अबमें पायो साँचो पूरवलो फल मोहि
मिलेरी कामहरण ॥

२

नवन लाल रिसाल रङ्ग महल में बैठे तुअ दरस
बैरना लगाई वाल ।
पति प्राणेश्वर अरथ कर हों पढाई उठ चल हिल
मिलरी हित चित कर हेरी निहाल ॥
एसो गाढ़ो मान कबतें कीजिए किन सोतनको
चितवतरी तन तब आपस मन काम सुख रहे
धन धन धन ततकाल ।
रस तें अनरस रसाल सो कबते मन धरि वेभए
दयाल तोही सों बोलत साह जलाल ॥

३

जहाँ सभा पण्डितन निरत कारी मनरञ्जन
श्रवण दुखभञ्जन कलावन्त कलानिधान ।
सुन राजा राणा बादसा राजारामको
जानत चक्रवर्ती जहाँ रिद्ध सिद्ध नवोनिधान ॥

आशावरी—तिताल

सब जगत सरफराज कीने सरफ को
शाहजहाँ पातसाह बैठे तखत ।
राजा राव वस किए किए द्रगपाल उमराय
भुवलोक मध नर नारियनके जागे वखत ॥

आशावरी—झपताल

ढोलन आवरे आवरे तुझ वेखन दामें तूचावरे ।
तुझ विन मुझे कछु सुहावरे और सूरत
उठि है भावर रैन दिना मुझे दरस दिखावरे॥

आशावरी—षटताल

मिठ बोलन ढोलन आएरी मोरे मन भाए ।
घर घर मङ्गल गाए नैना सिराए हिल मिल
करोगे वधाए ॥

२

एमोहे रटत गई रैन परी पछिन चापन चलीरी
आप आप मिलीरी ।
औरहूं सखी हिलि मिलि रसाल भुँवर दरशन
देखे तो आनन्द भयो रसीली ॥

आशावरी—ताल रूपक

आनन्दन रसदानी तू जालपा भवानी
बुध दानी नग्र कोटरानी।
अतिबुध दृढ़ दे सयानी भुव मध प्रगटे जो जानी
मनसा तन मन जियमें जानी॥

२

ढोलन गुमान न करिए वेमानी न करिए।
जिन्हा नाल महोब्बत लाई तासों डरिए॥

आशावरी—तिताला

सो पलहूं न भूलेरी माई मोकों अपने
ललनको बतियाँ।
छविनायक उन जबतें गवन कीनो तलफत कटे
दिन रतियाँ॥

आशावरी—ताल धमार

कान्ह किन सङ्ग जागे हो रङ्गीले छबीले नन्दलाल।
लट पटी पाग पेच अटपटे चलत डगमगी चाल॥
अञ्जन अधर पीक द्रग सोहै जावक लागे भाल।
विन गुण माल लसत छविनायक तापर मुकरत लाल॥

२

आज तोहै ना छाँड़ोंगी मोड़ोंगी मुख में गुलाल।
औचक आन फेंट गहे मेरे दै मारो गए काल॥
अपनी ओर जोर युवतिन सों हंस रस चाखत लाल।
छविनायक अब बस परे मेरे छीनोगी मुरली माल॥

आशावरी—तिताला

हार गुन्ध लाई मालनिया गरे डार प्यारी पियके।
भर भर थार नार सब वारें छविनायक मोतीय के॥

२

मङ्गलरा गावो सब गुणी कुंवर प्रगट ब्रज लोनो।
जैसो भाग उदै यशुमत को एसो भयो न होनो॥
द्वार द्वार भीर याचक ठाड़ो बचो कहूं न कोनो।
छविनायक नर नारि परस्पर मणिगण वारत सोनो॥

३

श्रीमाता भवानी मोपर दयाकर जगज्जननी दयानी।
तुमसो नहीं कोई सृष्टिमें सुखदानी
महावाक्वाणी कृपानिधानी॥

४

बढ़ैया लावरे आज सुघर घढ़ पलना।
रतन जतन सो जड़ित हिंडोलना झूलत है
यशुमत ललना॥
जो छवि निरखि सकुच श्रुति शारद लघु
लागे सुर आलना।
छविनायक नोछावर करिहै अरब खरब ग्वालना॥

५

मन्दिलरा बाजैरी आज मोरे
घर आनन्द भइलरा माई।
वर पायो सबके मग भायो छविनायक
मिल गावत मङ्गलवा गुणी गावत सुख पाई॥

६

कहा करों आली सो रट मोहे लागोरी पिय पिय।
छविनायक अब विन पिय देखे अकुलाय
आवे मोरा जिय॥

७

साँवरारे तें मन मेरो वस कीनो।
तू जीवन की शोभा कहा कहों
जैसे अञ्जन कजरोटी में भर दीनो॥

८

बहुत दिनन तें भटकत हम तेरी दरगाह
देखन आएहो।
धन जन्म हमारो जो अब तेरो शरण धाएहो॥
अलह करम कर पदाए तुमको तन मन
इच्छा फल सब बिध के सुख पाएहो।
चिस्तगांव के सेवक कहावत जनमहूंतें तुम जानत
हजरत मौनदीन अब कौनके ढिंग जायेहो॥
एसो कीजे कृपा जासों सुख होय समूह को
सब मिल रहे एक ठौर चाहेहो।
ज्ञान ध्यान बढ़े या कारन ए पायन पर ने आएहो॥

आशावरी—धीमा तिताला

देखिए दरवार मौनदीन को दीनन नियामत
ही भरो ।
जे तोही ध्यावत ते फल पावत एसो रहम करम
तुमको करीम ही करो ॥

आशावरी—तिताला

मोसों करत चतुराई तू जो चायन चायन
करत चातुरी ।
बातें करत और अङ्गुरी धरे अधरन
झूंठी भईरी दूजे अपनी दुरावत घातरी ॥
छाँड़त ना अब घूंघट होड़ पाई याही
मो खिज लागत तेरी बातरी ।
तेरे औ उनके दुलार कहाँ जात आली उजारे
दौलतखां सों मिल क्या कपट करो एसी
भांतिन कौन पतियातुरी ॥

२

होंतो ढूंढ़ फिरी माई सिगरो वृन्दावन
कहूंन पाए नन्दनन्दन ।
हेरत हेरत मेरे पाँव थक गए ब्रजनाथ कवन
देश गयोरी कामकंदन ॥

३

गोविन्द गोकुल ते जो चले इन हमसों
अवध वदी गुसांई ।
एसेही निठुर खरेही भए एकतो दुखित वाम
धामते अकेली दूजे काम विन प्राण दलमले माई ॥

४

कहांधो लगाई एतो वेर हमारे माई गोविन्द न आए ।
कौनधो अङ्ग लाए कौन दूतो विरमाए
पलक के विछुरे ते भएहैं पराए ॥

आशावरी—झपताला

मुवारक वादी इशादी होय तुमको
वरष गाँठ गाँठन की ।
चिर चिर जीवो कोटि वरषलों गावो
बजावो ब्रह्मा आरवलकी ॥

आशावरी—तिताला

मुवारकवाद होय तुमको ब्रह्मा अरवल कौना
ए सोती वरस गाँठ गाँठनके वरके ।
शुभदिन शुभ मङ्गरत तुला चन्द्रमा नीको वखत
छभको घरके ।
चिरञ्जी रहो खानखाना सुजान आशीर्वाद
देत नरनारी तिहूं पुरके ॥

आशावरी—झपताल

सबलवीर अति सुभट अरि दलनको
चढ़ो दल साज दलवल भारा ।
अरिन खलवल परो आवत प्रचण्डन भीम भुजन
ज्यों नाहर सुकारा ॥
खेंच खेंच तीरन कमान बीच मचलो भयो
एसो सुरो पुरो टरत नाहि अबजो टारो ।
एक घायल भयो एक रनमें घूमत फिरत एसो
कौन जोधा तोसे जङ्ग झारो ॥

२

धवल प्रचण्ड वलवण्ड नवधा की नवखण्ड जिह लई
भूमि अडंड डंड जाकी धाकको पारन ।
औरसे सुभट नरते झटपट पग पटकत सब गए
डरकर वार झटकत बहुत भटकत गरदके गए
खुर तारन ॥

आशावरी—तिताला

मेरे नैनही लागी रहे पियको मूरत
आली एक पल क्योहूं न टरेरी ।
हों न जानत कछु मो पर मोहनी डारी आली जोलों
नैन देखूं यह मन धीरज न धरेरी ॥
वे वहुनायक उनहींके कारन मो चित यों चाहे
पै औगुण गुण खरे समझेंगो तो मान न करेरी ।
यह को नाह देखो समाई आली रूसे
हमे रसना राजाराम रटेरी ॥

२

काहू देखन न देहों एसे पीतम को हों
आली नित नित केहो ।

होंही राखोंगी तनमें दुराय जाजा भांतिन
अनुरज जाय सो विध केही ॥

२

तुंही मुराद करो मन भावन ।
दिन दिन सुहाग बढ़े लाड़ले दुलहा कोते
अब वसकर पायोहै लाड़ लड़ावन ॥
विनती सुन लीजो कान धर हमारी
अहमदसा बादसाह प्यारे मनभावन ।
होंजो धरतीपै मेघ वरषत तैसे वरसे वरषका चाहिए
मोपरज्यों सावन हरो भरो डह डहो देखो करो
लागी रहों तिहारोहै दावन ।
कहत सुरभावन नाम धरो नोको तिहारे
नामतें निहाल होत मोसो करोरन वामन ॥

आशावरी—आड़ा चौताल

ए जित तित सुनीयत बावर वंश जीतो ।
अरिनन मार हदसद कोनोरी दरीया पार खाँड़ो
पखारो कियो अपनो चीतो ॥
देश देशनके नरेश काँपत डरपत कहत
जरव जोरके कहा कियो एसो पीतो ।
चिर चिर जियो शाह अकवर सबन तोड़
कियो अजीतो ॥

२

एरीए वह हमसों रहन लागी है हमको
माने पहचान नाहीं ।
उनको पीतको कछु अन्तर परे ताको
विलग न मानो याही ॥
भूलेहूं न कह्यो जाय कही जब तब दरस परस में
कहूंते हम तुम एसी निबाही ।
जैसो कछु निभइ तैसो तुम देखहुं अपने
प्यारे औरङ्गजेब सो तुही क्योन दृष्ट जोही ॥

आशावरी—तिताला

आलीरी सकुचन बोल व सको बोली ।
इन लाजन मुसक्याय नाशको यह विध जियत अकेली ॥

आशावरी—ताल रूपक

आज बजाई मुरली मनोहरने सुध न रही
कछू मो तन मनमें ।
हों यमुनाजल भरन जातही कान्हा ठाड़ोरी
वृन्दावनमें ।
सुध न रही कछु ठगनको अगनमें भूली काम काज
सब घरनमें ।
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक मेरो मन मोह्यो
आली मदनमोहनमें ॥

२

चटक चित्र मित्रङ्ग मिल तज मल नवल चित चढ़त
रूप रङ्ग मरत जगत मनहरत ।
प्रथमही आभा मादरत पुनि अरतन कुक करत
बड़ी बड़ी वार परत ॥
रस ढरत लटपटात थरथरात बे रूस भट ह्वै लरत ।
एक मारत मरत एको दरत वसरत हेरत रोर
दारिद्र इनको दरत ॥
वही ज्ञान जो में धरत परसत संसार नित तार
मनमें यातें फूलन परत ।
तानसेन कहत अकवर अल्ला भरके नाम गाए
एव दरस नहीं सुरत निरत ॥

आशावरी—तिताला

तोहि अति भावेरी शाह औरङ्गजेव उजारो ।
दरस देखेतें रोमरोम सुख होतहै डर होत हेरी
दुख अधियारो ॥
एक रसना अस्तुति कैसे करों कही जाय
प्राणहूं ते प्यारो ।
राखोंगी हियमें दुराय कर नेक न करहों न्यारो ॥

२

मङ्गल गावत मृदङ्ग बजावत निरत करत हेरो कठतर ।
साहिवशाह शाहजहाँको अल्ला देहो
लाख वरस गांठ गांठन पर ॥

३

ए साह अकवर तुमसों न बोलो मनमाने हो
नहीं माने ।

जे तुमारे औगुन मोहि कैसे भूल गए सोतनको
वांही गए गेह आन डोलत सो तो मेरे हियमें
जो भले जासें ॥
अब आवो मोपै मान छिपावन न जानें जोजानें ।
साहजलाल अब कैसे आए हो पीत कर
घरछानें पिछानें ॥

४

सोतो नन्दनन्दनरी अनबोलही रहे ।
जेतोहूं बात पूंछतहै भुराई एसो काहू वार सोतनको
खिजाए प्राण राखेरी अनरूषक सर
बात मोसे नेक रहे ॥

आशावरी—सुरफाकता

निसारेमनिधपमगरेगरेसानिधधपमगरेगरेसा ।
मपधरेसानिधपमगरेमपधसाधसारेमगनिधनिधप-
मगरेगरेसा ॥
पपनिधधधनिरेरेसानिसारेरेसानिनिनिधधमपधधनि-
धधनिसागगरेसा ।
धधनिसानिसारेरेसानिनिधधमपमपधनिसानिनिधनि-
धपधपधपमपममपमगमगमगरेगरेरेसाम ॥

२

तोरे कारण मोरी सुध विसरनी मोहन
तेरे रूप लोभानी ।
पिया पूंछेगे तो कहूंगो कहानी जिस घर कँथहै जो
ठकुरानी यार जानी यार जानी ॥

आशावरी—आड़ा चौताल

माईरी जाहरपीर मीरा जाहरपीर मीरा
साह आलम होय सुफल ।
दीदार देखेतो सकल पाप हरत और दीनको वल ॥

२

एरी आली इन लाजन सकुचन बोल न सकों ।
मुसिक्याय तन सबकों यह विध जियते
अकेली बकों ॥

आशावरी—ताल रूपक

कैलको छकावे छवीली उमगीली मदकी
भरलाई काई ।
तूं लाल करजाने लाल रसाल पियारे लालको
लपक लातरी जोहे प्रेम सुरा लोक ताई ॥

२

बुरो जिन मानो हो नन्ददुलारे यशुमतके
प्राणनके प्यारे जान बुरी बुरी ह्वै जैहै ।
एसी टेव न लगाइए तुम आप बड़े बड़ो लाग
बड़ो प्रताप नीके बोलो चाहे सूतो मोसों
जानीनकों को कहै ॥

आशावरी—तिताला

मयाकी दृष्ट नटरे जातनके हिय लागी ।
वे वहोनायक जहाँ जात तहाँ रङ्ग उपजावतही
अवध वचन सब निश जागी ॥

२

आपन मोरीहै भोरीसी बतीयाँन कर कर मोहन
तोहितें भोरायो ।
हों जो जानत तूं अब निपट जान भोरी तेरो
मरम अबहीं पिय पायो ॥

३

प्याला पिलावे महबूव कलालो जो जावे
तन मन तें खुमारी न्यारो ।
जो बस अङ्गही रिझाय पुनि अधररस धरले
कौन चखाय साव पावे प्राणेश्वर यारो ॥

आशावरी—ताल रूपक

अल्ला मालो जग लासवास फुलवारो भाँति भाँति
बहु वरन वरन ।
एक जोगेश्वर एक भस्म किए एक सिद्ध साध
एक उत्तम वरन ॥

आशावरी—तिताला

ए दारू पिलाव कलालो तानसेनकों खुमारी
भई अन्त विहाली ।
दुहाई साहजलालको प्याला भरभर
पीवाउहो लाल दुलाली ॥

आशावरी—तिताला ध्रुवपद

मेरो मन ना रहे मेरा यार वे तुझ विन
फिरोँ गली गली वेकरारवे ।
तुझ देखत तन ममतेँ भई जिय मन हालवे
अब सुझको नेक न विसारवे ॥

आशावरी—तिताला

वह जाय एसो चलन जो नेक न होय नरम ।
पिय चाहत तुम न चाहत तुम न चाहेरी
नहीं तो फिर एसेही जायगो जनम ॥

२

हरि विन पापी प्राण गए न गए ।
अब न गए पाछे पछितइहै अब कौन सए ॥

३

पिय विछुरत न गए सङ्ग प्राणए नैन कहत
मानो लागे दुख पावन ।
तोउन समझत निलज्ज कठोर जोन फिर
चितए भोरेसे मनभावन ॥

४

निपट मन मैलो कीनो ललना कहालों धीरज धरीए ।
औरसों हँसत खेलत सुनीयत है वलमाए
न अनखनरी अनखन ना जान न मरीए ॥

५

घर घर धुन मथन होतहै सुनीयत दुनीया तेरी
गुण मेरी पीत और पियके जैसे कहे ग्रन्थन ।
जैसी कैसी आन एसो कहत हों तेई तेई आलीरी
जहां तहांलों सुहाग चरचा लागी कटाच्छन ॥

६

डार देरी इंडुरीया मेरी पचरङ्ग पाटको ।
पायन परत निहोर करतहूं यह लालच आवे
जो गोकुलनगरके हाटको ॥

७

झुलावत लालकों वनवारी वारलेत कोर ।
अगर चन्दनको पलनो घड़ाऊं और पचरङ्ग
पाटकी डोर ॥

८

छैलकों छकावे छवीली रङ्गीलोरी
उमगी लाल मधकी भर लाल सुरैया ।
भर भर पिलावो मलनीया विनविन लावो
मरूवा दोना फुलैया ॥

(अभी०)

९

एरी माई भागु करम मोरा पीउ पूंछे ना करे बात ।
उन विन यह गत भइली दिन दिन
पीरी भइली कछू न सुहात ॥

(खु०)

१०

तपदीयाँ सिकदीयाँ नैन पके जिना जाई
राझण फेरे पाए वोसी जाई मैड़े सुके ।
यारां दीया अखियाँ कमन आवण विन दीठे
यारा दे सुके ।
कीकुर जीवा में जालम लोगाँ विछोड़े दे लगदे सुके ॥

११

जबतें तुम निठुर गए मोतें तबतें तो
मोरी सुध वुध तनतें गई ।
में निरगुणीके आए मया कर तुम
पूरण माग मेरे आज भई ॥

१२

तेरेरी गोरे मुख पर कटाच्छ भरे नैनकको काजर सोहै ।
और कहा कहूं तोरी तो एक नजर मनमोहन
को मन मोहै ॥

आशावरी—जलद तिताला

पल्ली न दाणीया वो दिलवर मै डावे ।
प्यारे नूंमे खड़ी डड़ी कांवखतन जाणांवे रावे
आस जण मैड़े सामणो तेरी तुमै डावे ॥

आशावरी—तिताला

सइयोनी मै कीकरा माए
जालम आँखि मैड़ी लगीवे ।
हाल दिलादी वारी किसनु सुणावा
वावन लगे तेनु तेनु रातो ततोवे ॥

२

परी है प्रेमकी गाँठ सजनी घुरगई घुरगई ।
मारग में ठाड़ोरे मोहन दृष्टि अचानक जुरगई ॥

३

नैना लाग चले सङ्ग पियाके आवे रोको घेरोरी ।
कहोत सूरख कहाँ चलेहो नैननको
गत मानो विधोजे दूतो फेरोरी ॥

४

मैं नहीं जाणदी पै डड़ा सुणवे सोणां
मैड़ड़े कोल तैड़ा खेड़ा ।
किसनु आँख देखावो एहा नैणांदा उलझेड़ा ।
ढूंढ़दी ढूंढ़दी कमली हुई खजानै दिलदा मैड़ा ॥

५

मिल विछुरेन कोरे दुख सह्यो न
न जायरी विरहन फिरत वावरी ।
तुम विन नीर बहे आँखन ते तेवारी
विरहन फिरत वावरी ॥

६

आवो वलमा हमी तुमी तहाँ जइए
जहाँ दुरजन होय न कोय ।
घनी अमरैया बनी छाँह कर डार पिछोरा
सुरजनवा मोरा रहोए आन सोय ॥

७

छजई तुव मन्दिलरा तुअ दरवार नौजामदीन ।
ऋत आई बसंतको सुवारकी देन सदारङ्गको
गाय बजाय वीन ॥

८

राम तेरा भला करेगा दिलकी घुंडी खोल ।
साड़ा मन तुमसो लागा जो भामी त्यों बोल ॥

९

मथुराके वासी लोरी लोएरी मेरा अति
लोरीलो सुखरैया ।
चन्दनका घड़ पालना बनाओ रेशम की डोरीया ॥

१०

हांजी म्हारे अङ्गना में चंपा बोई म्हारो राज ।
मै तो थारी दासी जनम जनम की थे म्हारो शिरताज ॥

११

माई आज मेरा ग्वालोया रूस रहोरी ।
अन्न नहीं खांदा दूध नहीं पीदा वार डारु
कान्हादी कमरीया डार दियोरी ॥

१२

भंवरारे पिया सङ्ग जाय इतना सन्देसा मोरा
कहियो जाय ।
तेरे विना मोंको कल न परतहै अब कैसे सुख पाय ॥

१३

जब तें तुम निठुर होगए मोपै तबतें मोरी
सुध वुध तनतें गई ।
मुझ निरगुणीके आए मया कर तुम पूरण
भागमें आज भई ॥

१४

गोरी तेरो जोवन एसो जैसे भोरकी तरैयां ।
आवत न देख्यो जानत जान्यो जैसे धरनी परकैयां ॥

१५

एसे मुखकी वलैया लेहौं मैया सुन्दरश्याम
कन्हैयारे ।
जो मेरे ललाको देखन सकतहै वहको आखन
लुनरैयारे ॥

१६

तेरेरी दुलरवा जोवेरे हंसत खेलत दूध पीवै ।
एतना माँगतहों देहो गुसैयां भूलत पलना चिरंजीवै ॥

१७

ढोलन हुण आवणा तैंड़े नाल
ढोलण तैंड़े मिलण दामै नुचाव ।
रात देहा एहा दिल मैड़ा चाहदा तुसी वेखणनु
हाल वेख सुखकरी सानु निहाल वेहुण आव ॥

आशावरी—एकताला

बंशीमें श्याम मगता बोल बोल सुनावे ।
सुनरी वीर धीर न धरों जो विन देखे न भावे ॥

आशावरी—तिताला

अरे मन लागे याहूते जो अपना हित चित होय ।
दरद बिथा कथा सब कह दीनो तोहै
जोई दुख बाढ़े चल आगे जोय ॥

२

जोगी काके मीत भए जो कोऊ उनसे
हित करे सो बड़ोही नादान ।
बिना नाथको प्रीत और काहू सों न जानत
अदारङ्गको बात साँची मान ॥

३

मलीयारे तोरी वारी फूल रहोलो सुगन्ध लाय ।
अबतो मो मन लालसा एसो वलमि कब मिलेगे
सदा रंगिले महम्मद साय ॥

४

मलीयारे तोरी वारी भंवरू गुंज रहे लेत रस
सुगन्ध लियसे ।
खुसवो महक रही उनके अदारङ्ग लागे मन जियसे ॥

५

अरे जिन कभी नकिया सो करत अब ।
अदारङ्गजो विधना लिख दीनो सोई भुकतत सब ॥
ते सुनो नाहीं किस्सा जैसों देश तैसो भेश
करिए देश काल चलन वेश ॥

(नूरखाँ कृत ख्याल)

आशावरी—आड़ा चौताल

प्यारे मुखको मोसों जियको वासों
जासों लागी प्रीत सरस ।
केतोहि साँच बनाव तिहारी बात
एक न मानो लाख रस ॥

आशावरी—तिताला

सावल मैड़ी बात न बूझदा कसनु आँखे साहाल ।
नूर रनुकेही गली कह दे इश्क लगाउ नादे नाल ॥

२

वेरुख होनो खूब नाहीं प्यारे हमसे
तुमसे परेगा काम ।
जबक्या करोगे जानो याद आवेगा
सदारङ्गीले आराम ॥

३

जातन लगी सोई तन जान और लोग देत मोहे ताने ।
इश्ककी वेदन छूटे अजीज दानलखाँ
लनालाखाँ स्याने ॥

आशावरी—होरी ताल

इहाँ कोई जग विच नजर न आदा किसनु हाल सुनावा ।
मनदी मुराद वारी पुनि यानी सइयं
चलो सई जुलसन पीर मनावा ॥

२

अरे अरे साँइ जीवन तुझ ताईनु औरन सो रङ्गराता ।
तिहारो प्रीत पतियारो नाहीं तुमारे औरन सो नाता ॥

३

अबतो सेलो गल मेलो हों तो भई पियाको भिखारो ॥
नैन खप्पर दोऊ भए हमारे दरशन भीख तिहारो ॥

४

माँझरी आन पड़ी मझ धार नइयाँ ।
वाव वहे पुरवैया पियको मिलन अब कैसे बनेगो
हमारो पार उतारेंगे दैया ॥

५

द्रुतमद्रुतमतनदोयनरेना आआआआआआ-
तारेतदरेदानो ।
तरललेलेदिरतुमतांनदोयनरेनायलालेय-
लालमूयललले ॥

६

मोहन मेवारो वारडारो नारी जिन करो
कपटको बात ।
रहत ज्ञान ध्यान तुअ नामको नित
सुमरनहै दिन रात ॥

७

पहरवा जागरे चोरवा लगोली तोरी घात ।
जागत जागत सब निश बीतो चेत पिछली रात ॥

८

धनरा ढ़ोलीयारे उावर नैनी जीरा भँवर
सुजान तागा होयतो तोड़ीए कहीं पीत न तोड़ी जाय।
बालक होतो वरजिए कही छैलन बरजो जाय
कुवं होयतो फन्दीए काइ मगर फादो न जाय॥

९

इहाँ कोई जग बीच नजर न आदा किसनु हाल सुनावां।
मनदो मुरादा वारी पुनीयानी सइयो चलो
सइया गुलशन पीर मनावा॥

१०

हजरत शेख सलेम चिस्ति पीरको झालरो नूर
ते भरीया।
अल्लाके महबूव खुव जहर हीरा मोती
लाल जवाहर जरीया॥

११

मोरे कँथा आन मिलावो पल छिन मोरे सङ्गवा।
नेह लगीलो तुमरे सुघर महम्मदसा
नेकन लागीलो अङ्गवा॥

आशावरी—तिताला

धाय धाय ढुम बाजेहो मन्दिलरा बाजे
माई मोरारे साजन घर काज।
बाग वहारको देख सखो आवत है
पिया मोरे घर आज॥

आशावरी—चौताल

देखत देखत सब दिन वीतो तेरे
आवनको मग पियारे।
निश दिन मोको नींद न आवे न भावे सेज तलफ
तलफ बीतत घरी घरी पल विरह देत बन जारे॥

आशावरी—होरी ताल

हरवाले तोरे रे लागीलो रतन पच्च सुरङ्गए लँगरु।
हाथ जिन लावहु रहस सन गुधोलो हरवा जिन
आवहु मेरे पासरे धगरु॥

२

होरे डफवा बाजन लागे खेलन आईहै सब ग्वारवार।
तनकही धुन सुन मोह लिए ब्रजमें
नेक रस कर लागे धमार॥

आशावरी—तिताला

सुनहु सखो मोहनको प्रीति निश दिन औरन डोलत
फिरत घर आय करत हठ मोसों प्रीत।
छल वल चञ्चल चपल अति आय गई करत रहत
आली जोमन आई भाई ब्रजको गलीयन
अबनहीं जाऊं मैं नैनको सैन चलावत चित॥

आशावरी—ताल सवारी

राजदुलारीके गोरे गोरे पायन गुजरीया सोहै।
तापर महावरङ्गकी लाली न जात मोपे सम्भली
और घुंघरु की झनक मनक मोहै॥

आशावरी—तिताला

गुजरीको मान याही ते अति बढ़ो
जे सुघर गुणीके लागी गरे।
औरस रे जुरेते झिझकी डरी सकुचि ठाड़ी
कोई जाय परे ए जोय परे॥

आशावरी—झपताल (मी०)

कौन सिखाई तोहे लाल एसी नोकी ढिटाईकी वानी।
वाट चलत मई अचानक अङ्ग भरज
लीनो न जानो कहा जिय ठानी॥

२

आयारे अलवेल रा मोरे घर आज।
देखतही प्यारी वाको सूरत जियते गई भाज सब लाज॥

आशावरी—ताल लाचारी

मग जात हती दृग लाग गए
प्यारेकी ओर निहारतही।
दृष्टचार कब होंगेरी सखो मेरे तन
तपत उठी वाको राह हेरतही॥

२

होरी खेलन आईहै बनठन चतुर
सुघर झिलमिल के नार।
हमतो चाहत रससों खेलीए वेतो
सबनकों रिसावतहै वारबार॥

बाजत वीण रवाव मृदङ्ग डफ और बाजत कठतार ।
अबीर गुलाल सों सुख मोड़त है वरजोरी देत है गार ॥

आशावरी—साल सवारी

चरखा सुझतें तनदा लम्बी कहाँ हरण
वाला होया मैडडा हत्ते ।
कत्तण तमासा अवे हामें थोन
छुटदा भाल बल्ली मैडडे मत्थे ॥

आशावरी—तिताला

मेरी अँखियनके भूषण गिरिधारो ।
वलि वलि जाऊं छवीली छवि पर
अति-आनन्द-सुखकारो ॥
परम उदार चतुर-चिन्तामणि दरस-परस-दुखहारो ।
अतुल सुभाव तनक तुलसीदल मानत सेवा भारी ॥
चितस्वामी गिरिधरन विशद यश गावत कुलनारी ।
कहा वरण गुण गाथ नाथके श्रीविट्ठल हृध्यविहारी ॥

२

मेरी अँखियन देखो गिरिधर भावै ।
कहा कहों तोसों सुनि सजनी उतहीको डठि धावै ॥
मोर मुकुट कानन कुण्डल ललितन गति सब विसरावै ।
बाजूवन्ध कण्ठमणिभूषण निरखि निरखि सचुपावै ॥
चितस्वामी कटि क्षुद्र घण्टिका नूपुर पदही सुनावै ।
इह छवि बसत सदा विट्ठल उर मो मन मोद बढ़ावै ॥

३

मेरे नैन निरखो वान परी ।
गिरिधरलाल सुखारविन्द छवि छिन छिन
पीवति खरी ॥
पाग सुदेश लाल अति सोहत मोतिनकी दुलरी ।
हरि नख उरही विराजत मणिगणजड़ित कण्ठसरी ॥
चितस्वामी गोवर्द्धनधर पर वारों तन मनरी ।
विट्ठलनाथ निरखिके फूलत तन सुधि सब विसरी ॥

४

नैनन निरखो हरिको रूप ।
निकसि सकत नहीं लावननिधि तें मानो
पखो कोऊ कूप ॥
चितस्वामी गिरिधरन विराजत नखसिख रूप अनूप ।
विन देखे मोहे कलन परत छिन सुभग
वदन छिनु जप ॥

आशावरी—चौताल

हों पनिया न जैहौंरी मेरो मटुकी पटक के झटकी ।
अचानक आय गही मेरे प्यारे मो सङ्की सब भूली
भटकी सब सटकी ॥
कालि दुपेरी गई हों कुञ्ज में को जानै मेरे या घटकी ।
प्रभु कल्याण गिरिधरकी माधुरी सों मेरे मन अटकी ॥

२

निपट मन मैलो कीनो ललना कहाँलो धीरज धरोए ।
औरनसों हंसत खेलत होरी ललना
इन अनखरी अनखन सरोए ॥

३

भारी भार भरी मन पारन पावत पार ।
चिड़िया चोंच चुड़ावन वोझि अब आई मझधार ॥
जरी जरजरी करन धारत न फेरन हार ।
प्रेमरङ्ग हमवार छूटेको कर पकरो करतार ॥

४

कैसेके जानो तुमरे गुण अगणित राम ।
चार बदनसों ब्रह्मा हारे पाँच सोससों ईश
गणत राम ॥
सहस शीश सों शेष रुकत नहीं वदन वदन
रसना दो बनत राम ।
प्रेमरङ्ग दृढ़भक्ति भाव वल एक जीभ
गुण यशहै अनत राम ॥

आशावरी—तिताला

तुम ग्वालवाल सब याहीं छाड़के उठ चलो वरसाने ।
गोरस चाहो अघाय खिवाऊंजो विनती प्रभु मन माने ॥
जो कहोगे सोई में करोंगी मत मेरी कोऊ सखी जाने ।
प्रेमरङ्ग पूरण पुरुषोत्तम ग्वालन आई घर लाने ॥

२

हरि हरि भज मन वावरे ।
निशदिन घरी घरी पल पल छिन छिन भरम भरम
लख चौरासी मनुस जनम पायो दावरे ॥

विविध भाँतिके भोजन तोहै दिए एसे
प्रभु दयालको गावरे ।
जानकीदास इस भरतखण्ड सुर वाञ्छित
सो तोहै सिले दावरे ॥

३

उनमें हममें भेद नाहीं वेतो कहनेको दूजे कहाए ।
कृष्ण समाधि राधिका लीनी राधेकृष्ण समाए ॥
उन रङ्गी हम और हम रङ्गी उन वे दोऊ
एकही रङ्गरङ्गाए ।
केसर चूनर हम रङ्गी तो वे प्यारी पाग रङ्गाए आए ।
उन रीझी भीझी रङ्गरङ्गीहो हसन
हमअपने रङ्ग में भिजाए ॥

४

प्रभुमें बड़ो अधम संसारी अन जानत ए
भोग रह्योहूं अपने मतकों नारी ।
सत्यधरम पितु माता मेरे सोई परम हितकारी ॥
शील सन्तोष सखा दोऊ मेरे तिने विगोवत भारी ।
काम क्रोध याके दोउ भैया ते घरके अधिकारी ॥
तृष्णा बहु भटकत घर घर निश दिन
मिथ्या जनम ज्यों हारी ।
आन परी जब कठिन गुँसाई तब यह बात विचारी ॥
करि कहा लाज अब मरीए अपनी जांघ उघारी ।
सूरदासकों हसत कहाहो राखो लाज हमारी ॥

५

प्रभु तेरा बचन मरोसा सांचा ।
पोषण भरण विश्वम्भर साहब जो कलपे सो काचा ॥

६

जब गजराज अटक्यो अजगर सों बली
बहोत दुख पायो ।
नाम लेत ताही छिन हरिजी गरुड़ छांड़ छुड़ायो ॥
दुशासन जब गही द्रोपदी अवला अतिदुख पायो ।
सूरदास प्रभु भक्तवत्सलहैं चरण शरणहों आयो ॥

७

प्रभु तुम वलिसों कहा छल कीनो ।
वांधन गए हरि आप बंधाए कौन सयानप कीनो ॥
तीन पेड़ वसुधाके कारण आप सरवस सुख दीनो ।
ले लकुटी कर द्वारे ठाड़ो निशदिन रहत अधीनो ॥
जो जैसो करे सो पावे तैसो वेद पुराण कहीनो ।
सूरदास स्वामिता तजके सेवक नाम सहीनो ॥

८

हरि विन कौन दरिद्र हरे ।
कहत सुदामा सुनो सुन्दरी जाको
मिलन मन न विसरे ॥
और मीत एसो को जगमें जाको सम को करे ।
विपत परे कुशलात न पूंछे बातन हूं विचरे ॥
उठि मोसे हंसि तंदुल लीनो मोहन वचन फुरे ।
सूरदास स्वामीकी महिमा टारी विध न टरे ॥

९

जिनके प्रभुकी परतीत नाहीं अनरीत
सदा उनके वरतें ।
शुभबात नहीं निकसे मुखतें सगरो
दिन जात सदा लरतें ॥
विषया विष मारग भूल रहे नहीं दान दियो
कबहूं करतें ।
ध्रगजीवनहै तुलसी तिनको जर क्यों न
गयो सगरों धरतें ॥

१०

मथनीयाँ दधि समेत छिटकाई ।
भूलीसी रह गई चिते उत छिनु न विलोवन पाई ॥
आगे ह्वै निकसे नन्दनन्दन नैननकी सैन जनाई ।
छाड़ि नेति करते उठि पाछेहो वन धाई ॥
लोकलाज अरु वेदमरयादा सब तनतें विसराई ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन मन्द हँसि कठिन ठगोरी माई ॥

११

मेरो माई हरि नागरसों नेह ।
एकवेर कैसे छूटतहै धूरव बढ्यो सनेह ॥

अङ्ग अङ्ग निपुण वन्यो नन्दनन्दन श्यामवरण तन देह ।
जबतें दृष्टि परे यदुनन्दन तबतें विसस्यो गेह ॥
कोऊ नीदो कोऊ बन्दो मनको गयो सनेह ।
सरिता सिन्धु मिले परमानन्द भयो एक रस नेह ॥

१२

एरी गोपालसों मेरो मन मान्यो कहाँ करेगो कोउरी ।
अबतो चरणकमल लपटानी जो भावै सो होउरी ॥
माय रिसाय बाप घर मारै हंसै बटाऊ लोगरी ।
अब जोय एसो बनआई विधना रच्यो संजोगरी ॥
वरु इहलोक जाओ किन मेरो अरु परलोक
नसाइरी ।
नन्दनन्दन हों तऊ न छांड़ो मिलहों निशान बजाइरी ॥
बहुरि यहै तनु धरि कहा पैहों वल्लभ भेष मुरारिरी ।
परमानन्द स्वामी के ऊपर सर्ब्बस देहों वाररी ॥

१३

चले हरि वच्छ चरावन भाई ।
रेरे तोपै तें तोक श्रीदामा लीने सङ्ग लगाई ॥
कहत गोपाल सुनोरे गोपो वृन्दावन अनुसरीए ।
मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लागे तब खईए ॥
खेलत हसत करत कौतूहल आए यमुनातीर ।
परमानन्ददास को ठाकुर रामकृष्ण दोउ वीर ॥

१४

ध्यावत कान्ह विमल यश तेरो ।
गावत शिव शारद मुनि नारद प्राण जीवन धन मेरो ॥
गावत वेद वन्दीजन अहर्निशि
अरु मुनि जूथ घनेरो ।
गावत शेष महेश रसना रस रसिक सुखकेरो ॥
गिरिधर पिय गावत ब्रजवासी मिले प्रेमके घेरो ।
कृष्णदास द्वारे दुलरावत श्रीवल्लभ को चेरो ॥

१५

मैया कब बाढ़ेगी चोटी ।
बहुत दिन मोहे दूध पीवत भए हैं
अजहूं अति छोटी ॥
तूंजो कहत बल कैसो वैनी ह्वै है लम्बी मोटी ।
काढ़त गुहत नाग नागनी ज्यों फिरिहै भूमें लोटी ॥
धुप धुप काचो दूध पिवावत देत न माखन रोटी ।
सूर वालरस त्रिभुवन मोहे हरि हलधर को जोटी ॥

१६

चुटिया तेरी बड़ी कीधों मेरी ।
अहो सुबल तुम बैठि भैया हो हम
तुम मापे एके वेरी ॥
ले तिनुका मापत उनको कछु अपनो करत बड़ेरो ।
लेकर कमल दिखावत ग्वालन एसो काहू न केरो ॥
मोको मैया दूध पिवावत तातें होत घनेरो ।
चर्तुभुज प्रभु गिरिधर इहि आनन्द नाँघत दैदै फेरो ॥

१७

सुनि मेरो वचन छबीली राधा ।
तें पायो रस सिन्धु अगाधा ॥
तू वृषभान गोपकी बेटी ।
मोहन लाल रसिक हंसि भेटी ॥
जिहि विरंचि रमापति नाए ।
तापै तें वनफूल बिनाए ॥
जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यो ।
ताको ते अधर सुधारस चाख्यो ॥
तेरो रूप कहत नहीं आवै ।
हित हरिवंश कछू यश गावै ॥

१८

हरिके नामको आलस कत करत हैरे
काल फिरत सर साँधे ।
वेर कुबेर न जानत चढ़यो रहतहै काँधे ॥
हीरा बहुत जवाहर साँचे कहा भयो हस्ती दर बांधे ।
कहे हरिदास महलमें वनिता बनि ठाड़ी भई
कछून चलत जब आवत अन्ध को आँधे ॥

१९

देखो इन लोगन को लावनि ।
बूझत नाहीं हरिचरणकमल को मिथ्या जनम
गवावनि ॥

जब यमदूत आइ घेरत हैं करत आप निभावनि ।
कहे हरिदास तबहीं चिरञ्जीवहु
कुञ्जविहारी चितावनि ॥

आशावरी—चौताल

हौं वार डरौंरी जगत व्रजईश शेश
आधे टेढ़ी पगौया ऊपर ।
टूण तोरतवा लजात युवतीजन
जहाँ सुनीयत चटकत कर ॥
तब चन्दन पर सेत पिछोरा अरगजा
भीने रह्यो सुन्दर वर ।
कल्याणके प्रभु गिरिधरनलाल छवि
निरख मदन मन मन्द हर ॥

आशावरी—तिताला

धरे शीश जटा गङ्ग भस्म भारो अङ्ग कर त्रिशूल
डमरु पिनाक त्रइनेत्र सोहै मुण्डमाल गरे ।
फननन फन फुङ्कत शेषनाग गौरी अर्द्धङ्ग अङ्ग रङ्ग
करत सप्त सुर तिन ग्राम सिंहीनाद ॐकार करे ॥
भूत पिशाच साथ लिए योगी के भेष किए चन्द्रमा
ललाट दिए लेत मन हरे ।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध को धरत ध्यान सकल सुर नर
मुनि गुणी गन्धर्व्व यक्ष तुवर करत वखान रूप
रङ्ग शिव शङ्कर शरण परे ॥

२

नयो नेह नई पीत नईरी हाथन मेहदी
नवल दुलइया चलीगे लटक सों ।
नयो हार नयो चीर नयोही जावक दीनो
नए आभूषण सोहत चटकसों ॥

३

नाद समुद्र अथाह सुनीयत है
ताके सहल करन को लागे गुणीयनके मन ।
अकारको जहाज कीनो तीन ग्राम सप्त सुर ले ले
ताल मूल ते बैठो सौदागर बन ॥
इकईस मुरछना बाईस सुर तेतेइ
मिलाय भए बन ठन ॥
ओड़व खाड़व सम्पूरणको ध्यान विवादी
अङ्गरेजो सन ।
अलाप की धमकसों उनञ्चास कोटि तान तुपक
छूटन लागो तानसेन बजन ॥

४

शिव शिव शङ्कर हर हर महादेव भोलानाथ
पशुपति पार्वती अर्द्धङ्गे ।
अविनाशी कैलाशी वनवासी सन्यासी नाथ शम्भु
स्वामी दिगम्वर यागेश्वर योगेश्वर सुर सिद्धेश्वर
महेश्वर सुरमसुर देवनदेव आदिदेव अनादिपुरुष
निरञ्जन भवभयभञ्जन दुख दन्द यम फन्द
काटन गौराङ्गे ॥
नीली कण्ठ खप्पर डमरु पिनाक कर त्रिशूल ध्वजा सेत
फहरात सिंहीनाद फूंकत अलख जगाए भस्मभूषण
वृषभवाहन वाघाम्वर वसन आसन पद्म राजत
नीलकण्ठ त्रइलोचन मुण्डमाल ग्रीव सोहै
चन्द्रभाल शेष शीश जटाजूट गङ्गे ।
रूप रङ्गको प्रसङ्ग दीजे दरस सरस सुख सम्पति
आनन्द रिद्ध सिद्ध ज्ञान ध्यान भुक्त मुक्त ताल अक्षर
नाद विद्यावर अवर गुणीन परसङ्गे ॥

इति आशावरी रागिणी सम्पूर्णम् ॥

——o——

मूलतानी धनाश्री

दूर्वादलश्यामतनुर्मनोज्ञा कान्तं लिखन्ती विरहेण दूना ।
स्वेद कपोले दधति दृगम्बु निष्यन्यनिर्द्धौतकुचा धनाश्री ॥

धनाश्री—चौताल

रतिमन्दिर सें ढिग बाग तहाँ जल शीतलता
सरसाय रहे ।

तनको तन पीर मिटावनकों तिय बैठि
कछू दुख नाहीं कहे ॥
मनभावन को सुध आय गई विरहानल
अङ्ग अनङ्ग दहे ।
कवि हीन धनासिरी दीन भई द्रगखञ्जन ते
जल धार बहे ॥

मूलतानी—धनाश्री चौताल

खरज ग्रह खरेगमपधनि पूरण सब सुर लीन ।
तीजे पहर धनाश्री ससिर दिवस वर वीन ॥

२

सागमपगमधपमगरेसारेसानिधपमगरेगमपमगरेसा ।
गमपसानिसागरेसानिधपमगमपसारेसानिधपमगरेसा॥

३

सामपधपमगरेसानिनिसागमपधपममपनिसानिधप-
मगरेसा ।
मपनिसागरेसामगरेसानिधपधनिनिधपमगमगरेसा ॥

४

नाद वेद कों न्यारो कर देखलावे जो कोउ गुनी
ताहि हों जानो सोमानो ।
नाद साहित्य अष्टादशक हिए विहद नाद द्वैभेद
तीजे अनाहत नाद चतुरङ्ग नाद यही बाईस सुरत
युगल बाद पहचानो ॥
तत अच्चर वीतत ताल छन्द घन उरप तिरप लाग
डाट आतक खातक खरान्तक नेम वृत्त खुली मुदी
तनरी इना तानरी उनन आ आ नाम जानो ।
निसागमधपमगमगरेगरेसानिरेसानिधपमगरेसागसा-
मगसाधरेमानिगधमानिधपममगरेसा मानो ॥

५

सोहत भौंह वार चन्द्रवदन धनकसी बनी ठनी
श्रवण कुण्डल शीश फूल कपोल लोचनरतनारे ।
नेत्रकमल नासिका सुन्दर अधर विद्रुमदशन
दारुमचिबुक सुन्दर सुघर कण्ठकोकला के
शब्द सों प्यारे ॥

भुज माय एसे उतारे कुच कञ्चन के बनाए
साँचे में ढारे ।
उदर अलप लङ्क छीन कटिकेहरि कदलीजंघ
तानसेन एसो प्यारो पर सर्वस वार डारे ॥

६

प्यारी तेरे रूप सुघर गुण पूरण समुद्र मयो तामध
शोभा एसो वुध जहाज ।
योवन तरङ्ग लिए कमलाको मुख मानो मोतो हद
सेवा कुण्डल खरग चम्वर जानो मोन हंस लाज ॥
क्रोध को घूंघट किए तामध मत मयंक नहीं है
कलङ्क तामें मेरो जान वुध समाज ।
तान तरङ्ग प्रभु निरख अस्तुति कीनी महाजान
बड़ो रानो महाराज ॥

७

ए ईश्वर मोहोको जानत गत जो बीतत
विना देखे तुअ दरस ।
एक निमिश पे नाहन निरखत मैं सांस अकुलात
कछू न सोहात मन नैन दोऊ जात तरस ॥
भवभञ्जन मनरञ्जन काटत दुख इन्द फन्द एसो
जगमें व्याप रहो सरस ।
तुंही आदि तुंही अन्त तारण तरण तानसेन
तुंही अरस परस ॥

८

जे गुण विवेक कर साधे ते चतुर अति प्रवीण
ह्वै रहत नीको ।
तिनमें सुध सङ्गत अति बहोत पइयत है तार
तानको गहनहीको ॥
सप्त सुर तीन ग्राम मुरछना श्रुति कोटि तान
औड़व खाड़व संपूरणहीको ।
वादी समवादी अनवादी विवादी अंस न्यास
तानसेन समझ जी को ॥

९

सोवत उठि रैन रस लेत अति सुन्दर सोहत
वदन प्यारीको ।

ले दर्पण मुख देखत अपने मनमें सोच सकुच वही
नैन होत लजोहै नारीको ॥
सुकमलवदनी मनहरनी मोहनी मूरत पिय रस
रस कर कामआतुर चितहारीकों ।
तानसेन प्रभु सङ्ग रङ्ग रात जागी पापो आलस
जंभात गात तिरछे नैन निहारी कों ॥

१०

ए आयो आयो मेरे गृह छत्रपति अकवर
मन भायो करम जगायो ।
पाछलो पुण्य मेरो प्रगट भयो याते अर्थ धर्म काम
मोक्ष मन चायो चारों फल पायो ॥
काहूको न इच्छा रही तेरे दरस देखे पाप तज
धर्मराज अचल कर पढ़ायो ।
तानसेन कहे यह सुनो छत्रपति अकवर
जीवन जनम सुफल कर पायो ॥

११

प्रथम नाम करतार को ले तासों
पाप कटत दुख हरत सब होवे नीके काम ।
और जो साहू अपरंपार परवर दिगार
उनसो जो नाहीं दूजो जो सकल जगतको ले थाम ॥
उनको करम समुन्दर ज्यों धरे धीरज
तब होवे आनन्द दिन दिन दूनो देत आराम ।
इतनो कहतहों उनसों रब रहमान इमान
दान पाऊं कहाऊं उनको निशदिन अष्ट याम ॥

१२

जाको पीतम पर तियन हितकर बनाय आवे
ता विरहनको नींद कैसे आवैरी ।
वरषाऋतु दादुर मोर चातक चपल घनघोर शरदचाँद
चाँदनी नाहीं न भावैरी ॥
हेमंत ते अतुल असन वसन शिशिर शीत अरगजा
अबीर ऋतु वसन्त न ग्रीष्म न सुहावैरी ।
जाहिन मिले मोहि गुलाबको प्रभु प्यारो तेहि
छिन निरख नैन प्राण जिय सुख पावैरी ॥

१३

तनको तपत तबही मिटेगी मेरी जब
प्यारे को दृष्टि भर देखोंगी ।
जब दरस पाऊं प्राण पीतमको जनम जीतव
सुफल अपनो लेखोंगी ॥
अष्टयाम मोहिको ध्यान रहत वाको
आलो कोलों भेटोंगी ।
तानसेन प्रभु कोऊ आन मिलावे ताके
पावन शीश टेकोंगी ॥

१४

दीजिएजो हमें ब्रज बसवो वाँसरी न बसे
बांसरी बसाय कान्ह हमें विदा दीजिए ।
वाँसरी को टेर सुनत रहो न परत मोपे
कान सुन सुन बन बसेरो कीजिए ॥
जेते उन सुर गाए तेते हम भेद लीने
जहाँ राग तहाँ दाग रोमरोम छीजिए ।
तानसेनके प्रभु मया कीनो मोपर अङ्ग अङ्ग
चीर चीर सिन्दूर माङ्ग दीजिए ॥

१५

आजसें कीनो पिय समीप रहस माई
सो जहाँ देखे कुंवर कन्हाई ।
तन मन को तपत तबही गई आलो जब मोहि
मिले सुखदाई ॥

१६

दरश देखेतें पियको रोम रोम सुख भयो
मोंको दुख गयो जियको ।
अंखियनको तारो नेकु न कीजे न्यारो अति सुन्दर
महास्वरूप विधना सवारि धन आजको घड़ी
मेरे लेखे हियको ॥

१७

जहाँ लग लगन लालन सों तहाँ लग चित
ललचाऊं ।
कौन मन्त्र मोहन पढ़ डारो अपने
हरि वस करपाऊं ॥

हाहा करों हरिको कैसे देखों साँवरो
सूरत हृदय ख्याऊं ।
बेजू बावरे रावरी कृपातें तन मन धन
वार वलिवलि जाऊं ॥

१८

आनन्द भयो आज आयो विजय कर घर घर मङ्गलचार ।
अनेक गज तुरङ्ग साजे नौवत नगारे
बाजे गज तुरङ्ग साजे सवार ॥
तन बीतन घन शिखर नानाविध बाजत
सुरपतिके द्वार ॥
ब्रह्मा वेद पढ़े नारदमुनि गावें राजा रामचन्द्रजी केवार ।
तानसेन कहे सुनो शाह अकवर
दशहरा सुफल भई तिथि वार ॥

१९

पच्छिम पहाड़ बीच जागे जोत ज्वालामुखी
हेमगिरि हिङ्गलाज गाजे पापनाशिनी ।
दक्षिण दिशामें देवी तुलजा त्रिशूल लिए
काश्मीर शारदा बुधकी प्रकाशिनी ॥
कामरु कमच्चा देवी राम रोम रच्चा करे
काली कलकत्ते वारो जगतापत्राशिनी ।
नगरकोट महाराणी सन्तनपै दया होय
विन्दके पहाड़में विराजे विन्ध्यवासिनी ॥

२०

पाक महम्मद अल्ला रसूल तेरोही नूर जहूर ।
धन धन परवर्दिगार गुन्हैगार तुवक्सन
तुंही जग रमरह्यो भरपूर ॥
वेचुन वेच गुन वे शुवे वे नमुन अव्वल
आखर तुंही निकट तुंही दूर ।
जित देखू तित तुंही तुंही व्याप रहो जल थल
धरणी अकाश तानसेन तुंही हजूर ॥

२१

शिवसुत गणपति तें ज्ञान पावे अनेक प्रकार
जाते अतिही बुध आवे ।
गायन विद्या सब निगम मूल चार वाजे
सुरवाणीसों गावे ॥
गिरिजाको नन्दन आनन्दकन्द
जगवन्दन सब देवनमें सोहावे ।
लक्ष्मणदास पै अपनो मया कीजो
दीजो मन इच्छा फल पावे ॥

२२

एऊधो जोगी जग तजे हम जग जोग दीऊ तजे
जोगीया की जुगतसों कहा करिए प्रतच्च दरतहैं ।
जोगी छेदे कान हम छेदे हीया तन प्राण
योगी साधे पवन हम पवन होतें हरिध्यान धरतहैं ॥

२३

सोहत बनी बाल भाल चन्द्र भ्रुवधनुष नेत्रकमल
श्रवण कुण्डल सुन्दर कपोल विलोकत रंभारे ।
नाशिका कीर विद्रुम अधर दाड़म दशन चमक सुन्दर
वीनरीसी बोलत स्वरन मानो कण्ठकोकलारे ॥
ग्रीव कपोत कुच श्रीफल नाम कटिकेहरि कदली खम्भ
जांघ रचके धरेरी ।
तानसेन निरखि मैन रति लजित भई आवत
गजमतचाल मनकों हरेरी ॥

२४

प्रथम नाद ओंकार तीन ग्राम सप्तसुर
गावत गुणीजन कर विचार ।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई वाणी भेदले
सहित उचार ॥
उनञ्चास कोटितान इक्कईस मुरछना
बाईस सुर गावत आकार ।
भनत गोपालनायक अतिरिसाल निरत रस
लेत अठारह भार ॥

२५

दीनबन्धु दीनानाथ याहीतें कहाएहो ।
जैसे तुम द्वारकामें द्रोपदीको टेर सुनो
एसे तुम गज काज नागे पायन धाएहो ॥

जैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ एसे तुम
भीलनीके झूंठे फल खाएहो ॥
जैसे तुम भारतमें भीषमकों प्रण राख्यो और तुम
राजनको बंधते छुटाएहो ।
मेरी वेर एती देर कान कहां मूंद रहे अशरण
शरणनाथ सूरदास मन भाएहो ॥

२६

ए आयो आयो मेरे गृह नन्दको नन्दन
मन इच्छा फल पायो ।
कहा कहों मेरे भागको महिमा अर्थ धर्म काम
मोक्ष चारों पदारथ पायो ॥
अनेक पतित उधारे गिरिधर भक्तनके मनभायो ।
बैजू बावरे कहावत चरणकमल चित लायो ॥

२७

जाके वैजयन्ती माला ताके मृगछाला जाके
मुरली अधर डमरु ताके कररे ।
जाके जटाजूट गङ्ग त्रिशूल ताके शङ्ख चक्र गदा पद्म
रुंडमुण्डमाला जाके पीताम्बर पटरे ॥
वृषभवाहन ताके गौरी अरधङ्ग गरुड़गामी
गोपीनाथ हरिहर रटरे ।
बैजू प्रभु हरिहर निशदिन ध्यान धर
छांड़दे जगकी सब खटपटरे ॥

२८

आज देखो करतार नन्दको नन्दन नन्दकुमार
गए पाप ताप दुख जंजार ।
जगके तिमिरहरण आनन्दमई सुखके करन
श्यामसुन्दर मनके भवन मदनमोहन हरि मुरारि ॥
पतितपावन दीनवन्धु काटत कलेश फन्द
सब जगके करतार ।
गुणके सागर आगर नन्दनन्दन गुणी गन्धर्व्व
नारद तुंवर सुर नर मुनि भजत वारम्वार ॥

२९

लागो हेरे निरमोहियो तोहीसों जियको लाग ।
घरमें बैठी कहालों साधो ए विरहा वैराग ॥
अबतो सब डर डार सदा सङ्ग विहरोंगी वन वाग ।
प्राण पपीहानके आनन्दघन उचत कोंहूं न त्याग ॥

३०

विद्या सोई क्यों न गाईए जासों मिलहेरी नन्दलाल ।
वृन्दावन सघन कुञ्ज रमित नाचत रास बजे मृदङ्ग
ताकट तक ताकट तक धुम कट तक गावत
विविधि देदे ताल ॥
सप्तसुर तीन ग्राम इकईस सुरछना प्रमाण वंसो मध
टेरत तान थकित सुर मुनि सुनि विमान रखत
है कुसुममाल ।
बैजू प्रभुके साधे तीन लोक मोह लियो ब्रह्मा महादेव
ध्यान थकित चन्द्र सूर्य्य पवन पानी शेष पताल ॥

३१

विद्या सोई भली जामें पइयत हेरी लाल ।
कुञ्जभवनमें आय बैठे रीझ दई मृगछाल ॥
गुप्त सप्त प्रगट छत्तीस डांड़ी बांध आयो नायक
गोपाल ।
बैजूके गाए तें सप्तसुर भूल गए पिघले पाखान
बूड़े ताल ॥

३२

जै जै कर पूजो घों लागि ढरकी महाराणीने ।
पान सोपारी ध्वजा नारीयल पहले भेंट मवानीने ॥
तेल फुलेल अरगजा अम्बरले चढ़ावो वाकवाणीने ।
तानसेन प्रभु तुमहीकों ध्यावे दीजे बुध और वाणीने ॥

३३

कहा कहूं उन विन मन जरो जात है अङ्गन वरतें
कर मन कियोहै विसार ।
वह मूरत सुरत विन देखे मावे न मोहे घर द्वार ॥
इत उत देखत कछू न सोहावत वृथा लगत संसार ।
वेर करतहै दुरजन सब बैजू न मावे मन पियके
अचरज भयोहै व्योहार ॥

३४

हित करे तासों ना कर रार गरव न कीज्ये रे गुणी ।
गर्भ किए कछू हाथ न आवे मरम गमावत क्यों
आपनो ॥

गीत छन्द धारु धोवा माठा प्रवन्ध चर्चा घनो ।
कहै बैजूनायक सुनिए गोपाललाल रचपच गए
मुरारि सुनी ॥

३५

योवनगर्भ सखी जिन कीजे रह्यो न काहू
पै और न रहेगो ।
रावण कुम्भकरण हिरणाकुश बड़े बड़े
छत्रपति सूर ढएगो ॥
मधुर रसना से पिय सङ्ग बोलले आगे
पाछे कोईन कहेगो ।
बैजूके साधे सप्तसुर बाजे पिघले
पत्थर मांझ ताल ढएगो ॥

३६

वृन्दावन ब्रह्म मधुरि मुरली बजाय
गोपी ग्वाल सब मिलि करत प्रशंस ।
उदत उदत मृदङ्ग धुम काट धिधि काटरे
सङ्गीत गीत उचारि कर अवतंस ॥
आरोही अवरोही ढरनि सुरनि प्रमाणसों
आज्ञान न चाढ़े श्रीध्यानांस ॥

३७

नादसमुद्रको पार न पायो सुनियत गुणी कहायो
प्रवन्ध छन्द धारु धुरपद मार्ग देशी द्वैविधि गायो ।
ब्रह्मा बेद उचारायो सारङ्ग वीरायो भरथ मत
कलिनाथ हनुमत मत सप्ताध्याय गायो ॥
अनेक सृष्टि रचि गए पच गए ब्रह्मा विष्णु
रुद्र महामुनि प्रश्न भए सारङ्ग वीरायो ।
सप्त प्रगट सप्त गुपत नायक गोपाल ध्यायो
तानसेन ताको बैजू पाषाण पिघलायो ॥

३८

द्रगन झपक अतिही नीद घेरी
रजनी जगे कवनके सङ्ग ।
अधरन पीक लीक अञ्जन फवि रह्यो
डग मगात धरत चरण शीतल अङ्ग ॥
जावक भाल विशाल विराजत लाजत
जम्भात आलस रङ्ग ।
जानकीदास करत हांस चतुरतिया पिया सङ्ग
अजब ढंग देखी रङ्ग ॥

३९

सोवतही सपने चोंक परी तबही
नैनन उघर गई अब क्या करूंरी ।
पलक मून्द अंवर ढाँक ध्यान लाए
वाहसे वाकी सूरत मिलो अङ्ग भरूंरी ॥
सपने सजन मिलन वस भए
यह नैन वैरी मेरे इनसे लरूंरी ।
साहब सुन्दर मौज बखान अबके जो पिया पावै
आवेंगे मेरे दौर पायन परूंरी ॥

४०

बावरेके सङ्ग साथ बावरी सोभई मैं बापड़
विवाह दीनो बावरोसो जानके ।
जानोइ न जात कौन गुरू कौन नाथ
लीलो धारी लीलो भेष सर्पविष लपटानके ॥
त्रिशूल खप्पर हाथ नैना जो अघात जात
आड़म्बर वाघाम्बर सिङ्गीपुरी आनके ।
बैजू बावरे पै काकोजे रोष अपने करम दोष जीवै
मेरा भोलानाथ भाला में जो लीनो मानके ॥

४१

मन्दिर मुसकात गोरी भारी तिरिया सुनो आली
परम सुन्दर चातुरी दुमकत चलत चाल गजगतकी ।
रङ्गीली छवीली नार पिय चित वस कीनो
काहूको कहे न सुने अपने मतकी ॥

४२

तान गजराज ज्ञान कीनो महावत
त्रेवट घण्टा बाँध ताल अङ्कुस भर ।
खरज पाखर डार तीन ग्राम सकल आधार धुरन
सुरन रणसों जीत मारत सब एक एक पर ॥

गीतनादकी असवारी ध्रुरपद प्रबन्ध
तुपक त्रेवट तिलाना चतुरंग प्यारो सोहत भूपर ।
कहे बैजू नायक उक्त जुक्तको बुध वजीर
मनराजा राज करत हरिको ध्यान धर ॥

४३

री जाको योगी मुनि जन जपत रिद्ध सिद्ध ऋषि
जपत गुणी गन्धर्व्व नारद शारद जपत अष्टजामरी ।
चन्द्र सूर्य्य जपत इन्द्र पवन पानी अग्नि वरुण
सुर नर मुनि पशु पतङ्ग जपत कर प्रणामरी ॥
सती जती सुर वीर जपत असुर अखिलविश्व
विश्वम्भर जाको नाम सबको विश्रामरी ।
ब्रह्मादिक सनकादिक जपत शिव पावर्तादि
तुंही तुंही बैजू जपत ब्रह्मको सुखधामरी ॥

४४

आज रच्यो करतार दोज बन्ध होय
अबतखो उत कश्यप सुत इत हुमायूं को नन्द ।
वे तिमिर हरण तू दुखदारिद्र दूर करण
वाको तेज तेरो तप क्षिति छायो एकही सङ्ग ॥

४५

महाराजाधिराजनके राजा छत्रपति राजाराम
अचलराज करो कोटि वरषलों यह भूमि पर ।
चिर चिरंजी रहो जोलों ध्रुव धरन
तरन पवन मेरु पानी शशि दिनकर ॥
गुणीजन पण्डित आवै मन इच्छा फल पावै
जावै दुख दारिद्र टर ।
अटल अखण्ड प्रताप रहै यही अशीस देत रागसागर
खाज खिदर कोसी उमर होय नरनरेन्द्रनर ॥

४६

एगाजुदीन हैदर पातसाह शाह जमन
पिय कब आवेंगे मेरे घर सजनी ।
चिर चिर जीयो ध्रुव धरन तरन जोलों
मेरु पवन पानी राज करो दिनरजनी ॥
गुणी पण्डित नायक गावे मन इच्छाफल पावे
दुख दारिद्र दूर तजनी ।
अचल राज करो महिमण्डल में देत अशीश
यही रागसागर अविचल रहो मन रजनी ॥

४७

शाहनशाह महावली सलामत जुग जुग जीवो
गङ्ग यमुन जोलों धार ।
देश देशके गुणी नाम सुन आवत पावत इच्छाको
फल गावत यश जित तित तिहार ॥
एकनको देत गज तुरङ्ग पट भूषण भूमि भूमि
अतिसोहत उरहार ।
राम रङ्ग इतनोही मागत निशदिन
सरफराज जहाँपना वारम्वार ॥

४८

सगरी रतियां मा सगरी रतियां जागलो ।
रैन दिना मोहे कल न हरि विन पलकन
सों पलक लागलो ॥

४९

पिया मोसे काहे न बोलोरे आज मोसों
क्यों सोए दे पीठ ।
किन सखियन पिय तुम विरमाए कौन
धों लगाई दीठ ॥

५०

अबमें आगम पायोरी माईरी पियके आवन कोसो
कुच भुज फरकोनो और आंख बांहो कगवा
सगुनवा सुनाई ।
नीके सगुन सबही होतहैं मन इच्छा पूंजूं में मनको
तानसेन मिले मोहे सुखदाई ॥

५१

इन्दुसे वदन नैनखञ्जन से कण्ठकोकल वचन सुहाई ।
नाश कोर अधर विद्रुम दाड़िम दशन दमकाई ॥
श्रोफल उरोज ग्रीव कपोत वैनी नागनसी झुकी
सुखदाई ।
कटकेहरि कदलीजंघ पदसरोज पद्मासो
तानसेन एसी तें वल वल जाई ॥

५२

ए आज आयो आयो सूरजवंश छत्रपति
राजाराम लङ्कानगर जीत मन इच्छा फल पायो ।
आनन्द भयो मेरे आलो जीवन जनम सुफल हुवो
चित चायो ॥
कोऊ सुकृत मेरो उदय प्रगट्यो प्राप्त चारफल धर्मार्थ
काम मोक्ष निजचरण शरण दासनदास कहवायो ।
अनेक पतित उधारे रघुवर गीध व्याध गजणिका
गीतमनारि खेचर भूचर निशीचर अजामिल
वैकुण्ठ पठायो ॥
जाकों रटत शिव ब्रह्मादिक सनक सनन्दन
सनातन सनतकुमार वैजूबावरेके प्रभुको
नारद तुंबर गुणी गन्धर्व हाहा हूहू गायो ॥

५३

मनको भटक सबही गईरी मेरो आलो तबही
दरस पायो वनमाली नटनागरको ।
रोम रोम आनन्द भयो तनको दुख दूर गयो
कृष्ण कृष्ण रटना लागी रागसागरको ॥

५४

ए सखी नन्दकुमार बालापनमें मेरो मन हर लीनो ।
जिय अकुलात और नैननसों नीर जात मेरे
हियको दुख दीनो ॥
साँवरो सलोनो श्याम वाट रोक ठाड़ो भयो
मोको बुलाय पास अधरनको रस लीनो ।
नैनसों नैन मिलाय हृदयसों हृदय लगाय
तानसेन वंशी बजाय जादूसो कीनो ॥

५५

आजु रच्यो करतार दोऊ जग होय प्रगट्यो उत
श्रीकमलापति इत श्रीनन्दजीके नन्दन ।
उत सुरन सुखकरन इत मक्तन दुखहरण निरगुण
सरगुण दोऊ स्वरूप एकही बन्दन ॥
उत विष्णु वैकुण्ठनाथ इत कृष्ण ब्रजकेनाथ उत
मोहनी मोहे ईश इत मोहनीगोपी ईश
गज द्रौपदी काटे कष्ट फन्दन ।
उत गदा पद्म धर इत मुरली मुकटधर
वैजू प्रभुकों ध्यान धरो जनम मरण जाय सब दंदस ॥

५६

आज कान्ह वृन्दावन मुरली बजाई सुखदाईहै ।
स्वर्गलोक नरलोक पाताललोक सब सुन धुन सुध
विसराईहै ॥
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मुरकना बाईस सुरत
उनञ्चास कोटितान रंध्रन में छाईहै ।
तानसेनके प्रभु रस वस कर लीने ब्रजवधू घर छोड़
श्यामजूपै आईहै ॥

५७

कुञ्जन मध रच्यो रास अदभुत गत लिए गोपाल
कुण्डलकी झलक देख कोटि मदन ठठक्यो ।
अधरतो सुरङ्ग रंग वाँसरी सुहाय सङ्ग टेढ़ी छवि
देख देख मेरो मन अटक्यो ॥
एरी अब देखो जाय एसेसों कहा बसाय
अलकन की गत निरख शेष नाग सटक्यो ।
निरतत सङ्गीतरी ततततथेई ततततथेई त्रिभङ्गी
अङ्गी रङ्गी चाल देख इन्द्रधनुष पटक्यो ॥
रुनक झुनक नूपुर ठुनक रुन झुन रुन झननननन
सननननन वंशी बाजे मन्द मुख सों मटक्यो ॥
रासविलास सुखकी रास भनत वैजू सुन गोपाल
यह स्वरूप दरस परस वृन्दावनकों सटक्यो ॥

५८

काहेको गरव करत गुणी कहायोरे ।
गीत छन्द ढोवा माठा नीके गाय सुनायोरे ॥
गीत सङ्गीत जुगल बन्ध एते राग काहेको गायोरे ।
कहे वैजूबावरे सुनहो गोपालनायक झगरत
झगरत जनम गंवायोरे ॥

५९

नादसमुद्र पार नहीं पायो सोखत पण्डित कहायो
धारु ध्रुपद धोवा माठा जुगन गायो ।
प्रथम नाद वेद भयो ब्रह्मा वेद उचरायो
शारद नारद तुंवर गन्धर्व हाहाहूहू गायो ॥

ब्रह्मा विष्णु रुद्र चायो हनुमतमत भरत भायो
सुर नर मुनि रचपचायो शिव सनकादिक गायो ।
कहे बैजू बावरे सुनोहो गोपाललाल सारङ्ग वौरायो
पत्थर मध डूबे ताल पाहन पिघलायो ॥

६०

जाके मृगछाला ताके मोतियनको माला
जाके नाद डमरु जाके सिङ्गी अधरे ।
डिम डिम डिम डमरु बाजे जटाजूट गङ्ग छाई
रुण्डमुण्डमाला जाके वाघाम्बर पटरे ॥

६१

एजी नाद दरीयाव तापे तन जहाज कीने
उमड़ फिर लागेरी चोंप ढ़रन ।
सुरके वरद वान कीने अचराके वैन तापे
गुणी लागे तान तरन ॥
गीत सङ्गीत जुगल वन्ध त्रेवट ताके लागे भार भरन ।
कहत आधीन प्रवीण सागर समुद्र उतरे पार
बैजू लागे चरन ॥

६२

भक्तज्ञान भक्तनको सेवा करेरे जब तेरी
भक्ताई सुमरण कर हरिको ।
कौन भरम भूलो भटकत फिरत अष्टयाम
याद रख राम कृष्णको पारब्रह्म परमेश्वरको ॥
निरञ्जन औ निराकार अलखजोत जगतपति
भक्तवत्सल गिरिवरधरको ।
तानसेनके प्रभुको ध्यान धर निश दिन घड़ी घड़ी
छिन छिन वा विश्वभरको ॥

६३

तनको तपत बुझावन आए मनभावन कह गए ।
यह आवनको पल पलमें देखत मग
जाते अष्ट याम भए ॥

६४

लागी हेरे निरमोहिया तोहिसों जिया की लाग ।
घरमें बैठ कहाँलो साधों यह विरह वैराग ॥

६५

सुनोजी जोगी जती सती जपी तपी सन्यासी सुलतान
यह एक ठौर नहीं रहत इन सबको आवनो जोवनो
मलो ए सब जापर ।
औरजो एक ठौर रहे तो कछू न कछू औगुण
होय पै होय यह साँची कहत ए सुघर ॥

६६

नादसमुद्र परखन पायो सीखत पण्डित कहायो
धारु ध्रुपद मार जुगन ठगायो ।
सप्त गुपत सप्त प्रगट नायक गोपाल लायो
ब्रह्म वेद उचरायो सारङ्ग वौरायो गायन भाव
तेरी मार जुगन ठगायो ॥
जित तित सृष्टि गुणी ब्रह्म भेद रुद्र मुनितों
उपजके गायो पाषाण पिघलायो ।
कहे प्रभु तानसेन जिनहो रच पच गायो
तिनहो रिझायो ॥

भीमपलासी—चौताल

वा दिन कैसो बने गोरे कियो न हरिसों प्रेम ।
निशदिन ज्ञान करले हरिको घड़ी घड़ी पल पल
छिन छिन नित नित कृष्णभजन कर नेम ॥

२

बोलीयो न डोलीयो ले आजंहू प्यारीको
सुनोहो सुघरवर अबही में जाजंहूं ।
नाननी मनायके तिहारे पास ल्यायके
मधुर बुलायके तो चरण गहाजंहूं ॥
सुनरी सुन्दर नारि काहे करत एती रा
मदन डारत मार चलत पत बुझाजंहूं ॥
मेरी सीख मानकर मान न करो तुम एसे
बैजू प्रभु प्यारे सों बहियाँ गहाजंहूं ॥

सुखतानी धनाश्री—चौताल

जो है करतार देत सब विधसों ज्ञान अर्थ प्रमाण
तान ताल राग भरनको ।
सत युग त्रेता द्वापर हनु भरत मत गत गावत
समझावत नई उपज किए सप्तसुरनको ॥

आरोही अवरोही ओड़व खाड़व सम्पूरण
ज्ञान ध्यान अनेक भेद गुरुनको।
प्रभु गुलाव तब ताहे मानत गुणीजन सुध मुद्रा
सुध वाणी ओप देत गुरुनके चरणको॥

२

सुन धुन मुरलीको मगन भईहैं सखा सहेली
सब श्यामसुन्दरको।
एकनतें एक पूछत है कहा भयोरी सुध न रही
गेह को रहीना मन्दिरको॥
ब्रह्मा वेद बांच भूले भूले ध्यान त्रिपुरारि उलट वहे
नीर थकित रहे उड़गन औ जोत चन्दरको।
सुर नर मुनि गुणी गन्धर्व उरवसी औ सुरगणा
रमति गति कछु भई नारद किन्नरको॥

३

दए जो तुरङ्ग मोल अमोल तिनको जाहेर
जग मगात भयो ले आयोरी जरकसी जीन।
अनेक नगन कौन गिनावे एकन को दीने
एरापत के सम केसों तिनमें एक एक बीन बीन॥

भीमपलासी—चौताल

संसारतारण तुंही विधाता तिहूंलोक प्रथ्वी
नमो नमो संसार तारण।
असुर सिन्धारण रावण मारे लङ्का गढ़ जारन
तूंही विधाता तिहूंलोक प्रथ्वी नमो नमो संसार तारण॥
कुम्भकरण इन्द्रजीत हिरण्य हिरण्याच्च रक्तवीज
महिषासुर मस्मागर मारण।
दन्तवक्र शिशुपाल कंस केशी अघा बघा
बैजू प्रभु किए उधारण॥

२

ए चित चैन न परे मोकों चंचल चपल चतुर
चक्रधारी विन न जधो चैन।
तजो सब खान पान निश दिन मोहन ध्यान
घरी घरी पल पल छिन छिन थको में गिन दिन।

३

एही सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मुरछना गीत
छन्द धोवा माठा प्रवन्ध त्रेवट तान।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई वादी विवादी
संवादी अनवादी जान॥
षड़ज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत
निषाद तान आन।
सारिगमपधनिसानिधपमगरे तानसेन कह्यो
ग्रन्थ प्रमाण॥

४

तेरे नैनन निरखत प्यारो कामबानन मोह मारो।
कञ्ज खञ्ज मृग मीन ते सब बार वार वार डारी॥
सम सर को नाहिन दूजो तिय तो सम मो जिय
भावत भारी।
ऋषि सेन प्रभु मन मोह लीनो कोटि खरब शशि
जोति धारी॥

५

प्रथम आदि ऊंकार तीन ग्राम चवदे सुर जब
जब पावन गुणीजन कर कर विचार।
आरोही अवरोही अस्थाई सञ्चाई चारों वानी
सुवर हारी खण्डारी डागुरी नोहार॥
उनञ्चास कोटि तान इकईस मुरछना उरप-
तिरप बाईस सुरत गावत आकार।
भनत गोपाल जानत सङ्गीत पण्डित अति रिसाल
नेम ब्रत्त लेत ढरन मुरन यह विद्या अपरम्पार॥

६

नाद ब्रह्म अपरम्पार किनहूं न पायो पार सीखत
पण्डित कहायो गीत सङ्गीत गुणी जनम
रजोया ह्वै नग लायो।
सात सप्तक गुपत प्रगट तीन सप्तक गोपाल
गायो ब्रह्मा वेद उचरायो सारङ्ग वीरायो मोतिन
माल परायो॥

गरव धर पार चलो वार उलट ठहरायो
देश देशके गुणी सकल सृष्टि महामुनि तेऊ
रच पच गए भेद नहीं पायो ।
तबही बैजू आयो पाहन पिघलायो जिनते पायो
तिनही लुकायो गूग बोलायो गर को हार
गोपालही दिवायो ॥

७

प्रथम नाद रूप गावत सुर ब्रह्मा श्रवण सुनत
उठ धाए गवरी अरधङ्ग ।
महादेव विलास सङ्ग लिए बजावत
मृदङ्ग ततथेई ताथेई थेई तत ता धिलाङ्ग ॥

मूलतानी धनाश्री—चौताल

मन्दिर मध भाज दौरो निरख यति प्राणेश्वर सों
तिय पिय के डरप गई तप तेज ।
प्रसेद छूट छूट जात जिय बूड़ बूड़ जात चोंक
चोंक परत यातें वदन जोत पियरो भई सौतन मुख
देख देख अलक पलक भई सेज ॥
प्रथम छूट्यो औकास जिय बूड़ बूड़ जात उमग
चोंक परो तामें अपने पायन सम्भाल अकल
विकल परो सेज ॥

२

जा दिनतें विछुरे नन्दनन्दन तादिन तें सुख नोद
भर ना सोईरो ।
निश दिन घरी घरी पल पल छिन कल न परत
मोहि एक टक मधुवन मग ओर जोईरो ॥

३

बकशीस देत तुरङ्ग सुखपाल वसन पट रीझ रीझ ।
चिरञ्जीव वरष करोर महाराज चतुर सुजान
आनन्द रसमें भींझ ॥

४

तुव तनमें सुगन्ध मलयागिर सुवास बसे
तन मनसा पवन लहरे लेत ।
है सुजान सुन्दर सुलक्षण नारि दरशन आनन्द
कारण निकेत ॥

५

गङ्गाको तरङ्ग देखि सब जग तरो जात सुर नर
मुनिनको लागत हित चित ।
केतेक छल लम्पट कायर कपूत पापी तिनहूं के
पाप भाजत कित ॥
ब्रह्मलोक विष्णुलोक रुद्रलोक कथा जाको
जैसो भावना ताके काज सुफल नित ।
गङ्गभक्त आगे पाप रोवे पाप आगे यमदूत
रोवे चित्र औ गुप्त रोवे कादग चित चित ॥

६

घर घर तें व्रजवनिता जो बन निकसी आज कञ्चन
थार भर भर नग नोछावर करन लालकी ।
सप्त सुर ले गावत कण्ठ कोकला लाजत उपजत
अति रसाल गमक तान तालकी ॥
मदन-महोत्सव साज समाज गोपीनवृन्द मिल
चलत चाल मरालकी ।
तानसेन प्रभु रस वस कर लीने तिरछो चितिवन
मदन गोपालकी ॥

७

उत्तरा मेंदा रजनी उत्तराय तामत सरी
अति क्रान्ता उदयात ।
सौबौरी हरना कपोलनता संडा मध्य माङ्गी
पौरवी ऋषि कान्तात ॥
नन्दा विशाला सुमुखी विचित्रा रोहिणी अलापनी ज्ञात ।
धंधी रसाली निशानी गगसानिनिधा इकईस मुरछना
चेत विख्यात ॥

८

सीखिए विद्या उत्तम साधे गुणी गुनगावो आनन्द
प्रेमको का काहूको कौन ।
जो इच्छा कर ध्यावे ते फल पावे गुपत
प्रगट निहचे कर पावे ऋषि मौन ॥

९

तेरोरी वदन देखत प्यारेके दृग खञ्जन अति राजत ।
कोटि कला नीके कटाक्षण मन मोह तीनो कपट
रत धीर न धरात ॥

राग ऋषभ—ताल चौताल

चरण धर आएरी मो पर मया कर आली धन
धन मेरे भाग ।
धन आजकी घरी धन यह पल महरत मोंहे लोनो
अपने शरण धन सुहाग ॥

मूलतानी वरवा—तिताला

तन नगर हिरदे तखत मन बादशाह मत बजोर
दोऊ सेवक शाहके ।
ज्ञान नैन अहेरो श्रवणन जासूस ए द्रग दोऊहैं
अमीर चाहके ॥

मूलतानी भीमपलासी—तिताला

माइरो होत कहाहै समझाए ।
नैन प्राण कवि निरख जोत कों मन भयो हाथ पराए ॥

वरवा भीमपलासी—तिताला

बोल बोल सुरलोरी मधु वचनो बात कहत
पिय भावनके आवनको ।
अवध बदो मनमोहन वलमा मोसों आवनको ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

कौन दिशाहै अजहूं न आए सखीरो हरि न आए ।
औरजो जान जिय ध्यान मेरे वसना नाम लियोरो
मानो उनहीं सो मिलाए ॥
मृगमद घन सार कुंक चन्दन नहीं ले लाए ।
एसी को कृपा करो करन के प्रभु तुम हसहूं मङ्गल गाए ॥
वल या चन्दन कुद्र घरिटको इन्होले बतलाए ।
तानसेन प्रभु वेग दरस दीजे हसहीं मङ्गल गाए ॥

मूलतानी धनाश्री वरवा—तिताला

खञ्जरीट मृग मीठा सांवल दीठा मन मोहावे ।
नैन सलोनो काजर देनो इन अंखियन हालवे ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

ब्रह्मगत अपरम्पार न पाऊं ।
प्रथ्वी पार पताल ढरा और गगन लों धाऊं ॥
जोलों नहोय सुदिष्ट तुम्हारो मन इच्छा फलहो पाऊं ।
तीरथ प्रयाग सरस्वती त्रवेणी सब तीरथ
होकर गुरुद्वार जाऊं ।
भागीरथी गौतमी और गङ्गा तानसेन गावे
हरिद्वार चाँऊं ॥

२

कैसे धीरज धरों ऊधो जोग सिखावन आए ।
जिन कानन पिया अपने करनन करनफूल पहिराये ॥
तिन कानन माटीके सुन्द्रा मधुकर हाथ पठाये ।
वेणी सुभग गही कर अपने चरणन जावक लाए ॥
अब हित लाग रहे कुबजासे निपटही कठिन
मन चाए ।
सुन सुन पाती जोगको ऊधो चित्त स्थिर नहीं पाए ।
सूर श्याम विन छिन छिन पल पल घरी
ए नाह सुहाए ॥

३

कहा कहूं उन विन मन जरो जातहै अगन बरतें
करमन कियो है विगार ।
बेर करतहै दुरजन सब बेजू न भावे मन पियके
अचरज भयोहै व्योहार ॥

मूलतानी भीम पलासी—तिताला

मागतहों तुमपै विधना देउ बकशीस ।
सकल कष्ट दूर होवे मुक्त होवे शरीर जग विच ईश ॥

२

जै जै कर पूजो धोलागढ़को रानीने ।
पान सोपारी ध्वजा नारियल पहले भेंट भवानीने ॥
तेल फुलेल अरगजा अम्बरले चढ़ावत वाक्वाणीने ।
तानसेन यह प्रसाद मागत दीजे बुध और वाणीने ॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शङ्कर ध्यान समानीने ।
वीरवल वंश ब्राह्मणकुलतारण तानसेन वरदानीने ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

धन धन आज सलोनो आली सब मिल बांधो राखो ।
मगन करो बिप्रन दे दक्षिणा चिरञ्जीवनको साखो ॥

२

कमलनयन कान्हको शोभा नैनन तें टरेरे ।
ऊधोजो आए जोग सिखावनको जञ्जाल करेरे ॥

सुन्दर श्याम सलोनो अँखिया कमलवदन कर धरे
गिरवरैरे ।
सूरदास प्रभु अमृत छाड़के को धूर धरैरे ॥

भीमपलासी—ताल रूपक

पिया प्रेमरस छके छके अजहूंन आए मेरे गेह ।
विरह खिलोना टोना भई आलीरी प्राणपतिको
यातें व्याकुल कोनो नेह ॥

मूलतानी—ताल रूपक

आज कान्ह मुरली बजाई है ए बजाईहै ।
दादुर मोर पपीहा बुलाई श्याम बदरीया छाईहै ॥

२

उरज उतङ्ग अभिलाषी श्वेत मैन कञ्चुको होय
राखो ना कछू चित चोप रङ्ग रेजेमें ।
मोतिनको माल मलमलवारी सारी झलमल
जोति होत चाँदनो अमेजेमें ॥
विहंसि वदन विमलासो सो अटापै गई देखन
प्रवीण पिय वेनो सुख सेजेमें ।
मर्द भई है यह दरद बतावै कौन शरद मयंक मारो
करद करेजेमें ॥

३

कङ्कण कलित वेंदी नगन जड़ित भाल मोतिनको
माल गरे सोहै भलो भाँतिहै ।
चन्दन चढ़ा चारु चाँदनीसो चन्द्रमुखो प्रातही
अन्हायके पधारो घर पाँतिहै ॥
चुनरी विचित्र श्याम सिजक दुवारक जो ढांप नख-
शिखतें निपट सकुचातहै ।
चन्द्रमा लपटके समेटके नखत मानो दीवेश्वरको
प्रणाम किए रैन चलो जात है ॥

धनाश्री—तिताला

हरि नाचत गतिले थेईं थेईं ।
तक थुंगा तक थुंग धिधि किट तक धिलाङ्ग तक
धिलाङ्ग तकथो तोदो माग तोदिगा गधिधि कन
तकधिलाङ्ग तक थेईं थेईं ॥

पञ्चानन पञ्चराग कह्यो श्रीराग सद्योजात वसन्त
वामदेव ते भैरों अघोरतें पञ्चम तत्पुरुष तें मेघ
कह्यो ईशानतें तापर तान लेत नईं नईं ।
नारद वीणा बजावै सासा निनिधपगमपधनिसासा
समानिधपमगरेरेसा जुगराज सकल गुण ताल देत
डमरु धुन ठगन गनिनि गनिनि गनिता
कट तक थेईं थेईं ॥

भीमपलासी—तिताला

अति गत मंत्र गंम् मम गंम् मगं मम गम मग
ममग अति गत मन्त्र गाइया ।
लैलोक मूमि कमलरे हरिकोलरे सन्तोलरे मकरन्द
अइया उदध चन्दधरो मनमें अति गत मन्त्र गाइया ॥
तडतक झुमणरे जुगलरे ततकाल निरत अपाररे
अधाररे धरु गावत नायक गोपालरे राजा राम
चतुर भए अइयारे रेरे अति गत मन्त्र गाइया ॥

२

रच ब्रह्मा विद्या अमरे अगम निगम कोटि पचहार ।
नाद आदि जोति सुर समुद्र ग्राम त्रैलोक
गुण द्रगपाल पवन कोटि तान अंग चतुर दिशि
धिमि किटि तथा ।
सङ्गीत यादो यश संपूरण रस नवखंड तारनि सेला
रागन दीन दुअन हद बाजत ततीया तियेयेयेया ।
कवि कोविद वेद देवा भेवा नितरे अगम निगम साधे
अनुराधो साधक वसुआ धाये गान गन्धर्व गाये तिन
अन्त न पाये कछू न सचुपाए बड़ गोत राग नरन
कर काहूंसों वाद विवाद लघु गुरु प्रसाद कनक
गगर हैया ॥

३

जग मगत जग पर जन भवहर सह कर सब रक्षा
करत अचर चर ।
कनक वसन तन असन अचल अछ अनलन दहन
सम जल थल कर अजर अमर ॥
अज वरद चरणधर परम धरम मन चरण शरण
धर नर हर परम करम यह मरम कर कररररररर ।

अमल कमल कर वदन मदन नम यशकरन मदन-
हरण मदन-कदन डर डर ।
धर-धरन नगधर जलधर गरभहरण परम परम
करम धरम भवभयडरन मन धर धर ॥

मूलतानी—तिताला

सजना मैड़ा मन तैड़ी ओर जो तुंसो
मिल दाँमा डेनाल जोर ।
साँचो कहत तोसे सरस इशकसे पीत कीजे
एक ठौर जैसे कूकत वनके मोर ॥

२

अरिदल मलरे जोधा नरदल भोम कर्ण समान ।
तड़तक झुमन युग लरे तत्काल निरत अपाररे
धारु गावत नायकगोपालरे ते ऐया ऐया आइया
आइया आमान ॥

भीमपलासी—तिताला

औ तुअ गत मन्तगे उमगे ।
मेरे आइया ममगे उमगे उमगे ॥
वरचोर घवंग तुअ अङ्गरे। अली गोल सङ्ग अमोलरे ॥
मस्तक कुण्डल डुल्लरे । धारु गावत नायक गोपालरे ॥
राजाराम चतुर सुजानरे । तुअ चञ्चल अलसुआनरे ॥
तिया इया इया तिया गावे तानरे ।
आइए आइए इया इया तिया इया तुअ मानरे ॥

मूलतानी धनाश्री—ब्रह्मताल

चन्दे भाला शीश गङ्ग गौरी अरधङ्ग लिलाट भस्म
सुण्डमाला कर पिनाक रैया ।
महादेव महाजती अमरा मन रैया त्रिलोचन
नीलकण्ठ अन्धकरिपुरैया ॥
शङ्कर शम्भु त्रिपुरारि डमरु डिम डिम बजैया ।
नांचत ताण्डव कैलाशपति रीझत विष्णु रिझैया ॥
बैजूनायक सङ्गीत निरतत देवपति रैया ।
तिऐ ऐया याया आमो आमो आमो अैया ॥

२

शङ्कर विषधर वृषभवाहन धरे वाघाम्बर धरे मुण्डमाल
गरे कर त्रिशूल धरे त्रिलोचन डमरु पिनाक धरहर ।
भूत प्रेत पिशाच सङ्ग सखा धरे फणीधर गङ्गधर
नीलकण्ठ धरे अष्टसिद्ध नवनिद्ध सुख सम्पत
आनन्द धरे हर ॥

३

कौन टेव परी तिहारी तूं पियासों रितमानी ।
चतुर सुघर मानो तियरी पिय मन मानी ॥
एसो रसन ना करो प्यारो एतो हठ ना ठानो ।
रङ्गसमुद्रमें रङ्ग करो तुम सुन्दर श्याम लुभानो ॥

मूलतानी—झपताल

चलत चितवत जैसो मदत औ दौर तच पेचकसों
उड़न चही सहजही उरदलके ।
योवनको जेव पर लहर लहर कर ठहर
ठहरके छविसों छवि छलके ॥
उमग उमग अंग अंग न समात दोऊ श्याम
सारी विचमानो बदलीसी झलके ।
अधर सुघर लालो सींचत सुमन माली तेई अवलाके
अलि सबन मालि ललके ॥

२

दिल्लीपति नरेन्द्र अकवर शाह जाको डर डरे
धरणी पुहुपमाल हलायो ।
दलसाज चतुरङ्ग सैना अगाध जहाँ गुण ठनो चहूं
विद्याधर आय आय नाद भेद गायो ॥
गुणीजन जगतके ताकों दियो अघाय तुअ प्रताप
सुन धायो ।
कहत नायक गोपाल तुम चिरञ्जीव रहो शाह देत
करोरन आवत धाय धाय मृगमाला पहरायो ॥

मूलतानी—सुरफाकता

अति सुघरलाल मेरेही आए अति सुख पाए भाए
अङ्ग अङ्ग बसाए ।
प्राणचरण चेरे प्राणपतिके और नोछावर करो
तिहारे दरस पाए ॥

२

शम्भू हररे गङ्गाधररे कामितजन मन चिन्तामणि
कल्पवृक्ष कामधेनु कामासुद पूरण कररे ।

कर त्रिशूल तिहूंलोक अनाथनरे मात पिता गततान
पट अम्बरे फणि मणि मुण्डमाल षटरुण्डनरे ॥
२
चन्द्र कुण्ड कुण्ड कुण्डालो अटक जलनाथ नरे ।
डंडडंडडंडडंड नवकुल डंडनरे नीलकण्ठ
भस्मभूषणरे सुर-नर-मुनि आनन्द मौनो
प्रतिपालन कररे ॥

भीमपलासी—ताल झपताल

पैनिसागपममसामगसानिगरेसानिपनिसागपमगसा ।
निसानिसागरेसानिपममपनिसानिपमगरेसानिप ॥

मूलतानी भीमपलासी—सुरफाकता

निनिसागगमपमपधधपपममगमपमगरेसा ॥
पैनिनिनिनिनिसारेसारेसानिसानिपसानिधपमगरेसा ॥

भीमपलासी—ताल रूपक

निगमपमगनिसागमनिनिनिधधधपपपममममगगरेसा ।
मपनिमपनिसागरेसानिधपमगरेसा ॥
गमपमगनिसागमनिधपधपमगनिसानि-
पमगगनिनिसा ॥

भीमपलासी—चौताल

निसागरसामगरेसानिनिधपमधपमगरेसा ।
मपनिसानिसागनिसामगनिसानिधपमधपमगरेसा ॥

मूलतानी—आड़ा चौताला

कहे कोऊ वाको समझाय माई जे विन मोरा
जिय अकुलाय ।
निश दिन तलफत बीतत रहो न जाय ॥

मूलतानी—चौताल

ए बालमरे मोरा बालम अनत न जाओरे ।
अङ्ग अङ्ग भर गरवा लगाय मोहे जीवाओरे ॥

मुलतानी—ताल रूपक

यहे वन अचल चलन चलाई कन्हाईरी सो कौन
ठौर मागे दान ।
जो न भई सो अब भईरी सो कौन सयान ॥

मूलतानी—सुरफाकता

मदनमोहन मधुसूदन मुरारि मुरलीधर मनोहर
मुकट शीश राजे ।
उपेन्द्र पीताम्बर गरुड़ध्वज इन्द्र तृज गोविन्द
मुखवंशी धुन बाजे ॥
२
वनिता बन रही सङ्ग लाल ललना सोवत
पलङ्ग पर उजरे वसन ।
औदे रङ्गको अङ्गिया सोहत नैन काजल रेख खुल
रही दाड़िम दशन ॥

मुलतानी—चौताला

भादों निश अँधियारो कार महादुख भारी
कार्त्तिक दिवारी देख मैन तन तायोहै ।
अगहन दहत शरीर पोष पौसाँ कहो महाके
महीना चन्दराङ्ग सतायोहै ॥
फाल्गुण पतझार भए चैत अति चिन्ता भई कहत
विहारी वैशाख कहूं छायो है ।
जारवेकों जेठ आयो खड्ग ले आषाढ़ धायो
सावनतो आयो पै मनभावन न आयो है ॥
२
मोसों नन्दको सुवन उरझि कैसें हों पनघटवा जाऊं
अब मोरा जिय लरजे ।
और सखीको मनहो न भावै हमहो सों हठ रार
मचावै ब्रजमें भयो यह निपट निडरको नायक वरजे ॥

मूलतानी—तिलाला

तुम उन सन हँसि बोले अब जागे छैल जिन सङ्गरात ।
छवि नायक अलसात बात गात तापर कर सोहैं
मुकर जात हम जान लई पिय तुमरी घात ॥
२
सखीरी सुरजन नहीं आए मग जोहत बीती सारी
रैन अब किन सोतन विरमाए ।
डमड़ घुमड़ घन ज्यों ज्यों गरजे त्यों त्यों
सखी मेरा जियरा लरजे छविनायक पिय मिलवे
कारण इन नैनन झर लाए ॥
३
वैरन वरषा ऋतु आई बोलन लागे वन विहङ्ग
पपीहा मोहे पिय विन कछू न सुहाई ।

रिम झिम रिम झिम मेहा बरसे मोरे जिय
देखनको तरसे छबिनायक जो आन मिलावै
दोउ करलेहुं वलाई ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

सखोरी पीतमको बतियाँ धरक उठत जियरा
बारबार मोहि नहीं भूले दिन रतियाँ।
जबते गए मोरी सुधहून लीनो छविनायक
जिय अकुलाई आवे धड़कत है मोरी छतियाँ ॥

२

सगुन भइलवा पिया मोरे आइला आज मन्दिलरा
बाजुरे।
हीरा मोतीयन सों चोक पुरावूं गरे लाय छियरा
हुलसाऊं छविनायक तन मन सुख उपजो
सुफल भयो सब काजुरे ॥

३

वन वांसुरीया बाजे कलन देत पल लगे न छिनज्यों
निशि वासर घन गाजे।
लागी रहत अधर लालनके बेधे छिय सब ब्रजवालनके
छविनायक अब वस कर निशदिन तुमही
भई शिरताजे ॥

४

नाददल कटकअलाप कर वार लिए ताल
छुरी दार और बावन गारो।
तान कमान और सप्तसुर तरकस सुरत मुरछना
गोलो पार मारो ॥

५

जोगनिया भईरे पीउ तोरे कारणवा कानन मुद्रा
हाथ खप्पर अङ्ग भभूत लाई।
मनमालीके नाम कोरे अरे भला ज्ञान ध्यान
सुमरन जाई ॥

६

पचरङ्गी गुदरी सोई मानो लागे प्यारी वरण वरण
वस्तर गोविन्द जरत जरी।
नमस्कार मोहि करना तिसनु सुन शाह जमाल
कर करम उड़ाई हम कांधे धरो ॥

७

सुनावो मोहि ध्यान वाहूं कोरे श्याम प्यारे को बात।
निश दिन नलफत नीद न आवत थाकित भयो
मेरो गात ॥

मूलतानी—सुरफाकता

लज्जा नीद तजगो वदनतें चितदे मन समझात।
लछनदास तुम साँचो कहत कहूं ओसन प्यास बुझात ॥

मूलतानी—एकताला

अब डर लागेरो या यमुना जल जात भरन सुन
मोरी आलीरो यह वनमालो भल।
रोकत चाहत मोरी बंहिया धरत निपट चवाई नहीं
एसो देख्यो नैनन में बहो फन्द करन
लछनदास नित करत कपट छल ॥

२

हम वैरागी विदेशोयारे सखो गुण औगुण न धरत
मनमें जो कछू ध्यान धरो जियमें वाहीमें रहो समाय।
नगर नगर डगर डगर जङ्गल जङ्गल फिरत रहत
सदारङ्ग ज्ञान ध्यान को बतियां सोईसें रहे रमाय ॥

मूलतानी—तिताला

मन लागो लाको लालसों जाकेई मन कों चैन।
इत उत काहे भटकत सजनी ध्यान लगावो
निरखो नैन ॥

मूलतानी—ताल धमार

प्यारे विन मर आए दोऊ नैन।
जबतें श्याम गवन कीनो गोकुलतें नाहीं
परतरो चैन ॥
लगे न भूख प्यास न निद्रा सुख आवत नहीं वैन।
वैजू प्रभु कोई आन मिलावे वाको वलिहार
चरन रैन ॥

२

वरज्यो जो अरीए मा वो ढीट लङ्गर चतुर
नेकन माने लागोही आवे मोसों।

तेरो क छून जावैगो मोहि खिजावैगो सब नगरके
लोगवा कैसे देखाउंगो मुह सबकों ॥

मूलतानी—तिताला

दुवर भइलो एमा पियाके कारण एमा जाके विन
देखे कलन परई ।
जबतें सुवन गवन कीनो प्यारे नेत बतें विरह
धीरज न धरई ॥

मूलतानी—ताल धमार

देखियत राधे तेरे नैन वैन मधसों भरे ।
घूंघुट ओट वदन राजत मानो बादर चन्द ढरे ॥
जेहर बनी जड़ाव कोरे बिकुवा सुघर घरे ॥
कर शृङ्गार पियपे चली मानो गजगति चरण धरे ॥

लाचारी—धमार

ठाड़ोरो पिछवारे तेरे वोतो बोल सुनावैरो ।
बोल बोल मधुरे सुर बोले याके बोल सुहावैरो ॥

२

लाल कहां रस पागे कहो क्योंन साँचे वैना ।
वदन भाल अधर अञ्जन छवि रङ्गन चुम्बत
एसे नैना ॥
जाके भवन कियो सङ्ग सुख जागत वीती है रेना ।
विन गुण माल दई जिन तुमकों दीनवन्धु सो मैना ॥

३

राखले पाहुनो आज मोहे राखले आज गवन
जिन देहु मैया ।
मिलना होय सो मिल लोरी सजनी काल मिल
नहीं हैया ॥
बांह पकर पिया ले जावेंगे जब सङ्ग सहाय न कैया ।
उमर डूंगर हो गयोरे अङ्गना भयोरे विदेश ।
हिल मिललो मेरी मैन भानजो में चलो पियाके देश ॥
नैहर में हम खेल गमायो औगुण कमायो अनेक ।
गुण औगुण ले चलह सइयांपे मोहे नाहीं विवेक ॥
रूप सोना घोड़ा हाथी बहोत दिया सइयाँ लार ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने साँईके वलिहार ॥

४

एरो बन बाजो बाँसरोया कैसे रहूं घर दैया ।
कलमलात जियरा मिलवेको है कोई धीर धरैया ॥
गाज लगो यह लाज निगोड़ो करिहै कहा चवैया ।
आनन्दघन पिया उघर मिलोंगो अब डर
करत वलैया ॥

मूलतानी—तिताला

पियाके कारण एमा जाके विन देखे कलन परे
एमा दुवरी भई ।
जबतें गवन कीनो प्यारे ने तबतें विरह एक कल
न परई ॥

मूलतानी—ताल धमार

अहो मेरो अचरो गह पकर कहाँ जावो ।
हाथ न लावो मेरी अङ्गिया कुच पर राजा
कंसको गाघो ॥

२

मोरे रामरे कवन घरी मवन कीनो पिऊ ।
एक पल वा दिनतें कल न परत है मोरे जीऊ ॥

भीमपलासी—ताल धमार

में जोति प्रकाश वारले दियरारे सारङ्ग ।
अनाहत आदि नाद वेदाङ्गगुणकार सङ्गीत साधंग ॥
आदि नाभ कुमार रे सत सङ्गत सो नारद
तूंवर सरस्वती साधङ्ग ।
भनत वैजू बावरे नायक गोपाललाल सब गुणो-
यन में असाधङ्ग ॥

भीमपलासी—तिताला

पावत कोऊ नहीं पार सुर नर देव मुनिजन अपार ।
गुणी गन्धर्व्व किन्नर नाग सेवत सोई सनतकुमार
पायो दाव अबकी वार ॥

भीमपलासी—झपताल

सोहलरा जो जाने सो जाने राजा रामके घर ।
इच्छा पूजो भयो आनन्द घर घर वनिता वन आवै
गावै बजावै सुघर सुन्दर वरके घर ॥

२

सुवारक वादी इसादी होवै तुमको ब्रह्मा और वरकी ।
चिर चिरंजी रहो वरस हजारां वरस गांठ गांठनकी ॥

भीमपलासी—ताल धमार

रसम से लाल भींजे माजे घर आए मेरे ।
आँखन भर अबीर जिन डारो हाहा पहुंगोमें
पइयां तोरे ॥

मूलतानी—तिताला

ममझत सो चले मूरख निदानरे ।
जगमें दोय दिनके हैं तेरे अभिमानरे ॥
आदि अन्त वोही सबको प्राण रे ।
कर ध्यान रे हरि उर अन्तर घट घटमें समानरे ॥
जल थल भूमि अकाशरे । सब ठौर जाको प्रकाशरे ॥
जाको धरो नित आसरे । सोईहै वैकुण्ठ निवासरे ॥
और विकार दुविधा तजरे । बेजू हरिचरण भजरे ॥
प्रभु होत रजरे । गोपाल भजत जलजरे ॥

२

एनायक बनजारे तू सङ्ग लादे फिरत है इतनो
टांडो भारो मै पूंछत हों तोसों ।
कहूंसे भरत कहूंसे बेचत लेत नफा डौढ़ा दूना
हर भरती में धड़ा धड़ो करत मन तापै सेरन होत
यह कोन पनसे रीत बांट तेरे आई तू पासङ्ग
घाको जो भयो है बड़ो चतुराई और पूरो तुल
रहोहै यह कहदे सब भाव मोसों ॥
कहूं मार महमूल हाकिमको दवे होत नटि आवे
आप वाकी बदियां करत फिरे काल दिन कोऊ
चौकीदार वाको घेर खेप और तेरो पला आन
पकरेगो तब कैसे गौन छुड़ावेगो बिन जगात
या मंडो के थानो गठीयावे आगेहूं निकासे तोहे
अनाज वाको तो तलासो फेल रहोहै कोसों ।
जा साहकारको पूंजीसे तू या जगत में वनज करतहै
कहावतहै वेपारो वाको भी कछूमें सुध या भूलोहै
निरमूल समझ सो चले टूंक जियमें जब काढ़ेगो
बही तेरे हिसाबको देखले वो कोठी में बुलाके लेखो
सिगरो तब तेरो एक न चलेगो वाके आगे अबतो
करत मौज मोहे तो कटेहै दिन रैन दूनो अवसोसों ॥

३

बनजरवा मोरे कवन देश कवन नगर
कवन ग्राम फिरिला ।
समझ सोच के भला वनज कर जो साहबसों
साँचा होवे दूना माल भरिला ॥

मूलतानी—होरी ताल

गोकुल गामको छोहरारे वरसाँने की नार ।
यह दोऊन मन मोह लियोहै रहे सदारङ्ग निहार ॥

मूलतानी—तिताला

एरे हाँरे लोगवा मनमें रहीली पिय मिलवेकी बात ।
यह दुखवा में कासे कहूंरे बिन सदारङ्ग
जिया निकस जात ॥

२

ढोलन मैंडे घर आमिवे सोणा मीया तो
मैंवी ताडे सदके जावां ।
मुख वेखां तोमें जीवां सदारङ्गीले दरस ताआं पावां ॥

३

डावर मैणी मृगानैणीदा चूड़ा रंग लायारे ।
सुधारंग चुनरी साड़ी देखण की सदा रंगदे
मन भायारे ॥

४

वे ऊधो वा दिनको मै वारी वारो वारो जासे
मोहन कब घर आसी ।
तन मन धन नोछावर करहूं परहूं पइयां लेहों वलैयां
जादिन मोकों मुख वेख लासी ॥

५

मार हसन गावहुरे मङ्गल चार याह वनरा आया ।
इच्छरोया सब पूजी मनकी सदारङ्गीले
महम्मदसा वर पाया ॥

६

कहाँ जानोरे अरे कोऊ लोगवा जो कुछ हमरे
मन पर बीती पीर ।
पिय परदेशवा सन्देशवा न पठाई अदा रङ्ग
उनके गुण गावत धीर ॥

७

सुरजनवा तोसेरे प्रीत कैसे दुराउं तुम
सन लागल हितवा मितवारि मोरे वालसुवा ।
सदा रङ्गीला छवीला रङ्ग रस सों करले बतीयां
कहां करेंगे दुरजनवा मनके भवनवा ॥

८

एरी ए माई में दुवर भइल पिय कही
आवनको ए माईलेम ।
घरी पल छिन मोहे कलन परत है विरहा
अतिही सताइलेम ॥

९

मगवा जात हतो एरी एमा मोरा मनहर लीनो ।
कोऊ कहे वाको ढीठ लङ्गरवा में तेरो कहा कीनो ॥

१०

नैणां साड़े अड़ियावे करन लगे जालम जारी यावे ।
आमिल सजनारे लगना टुक करले गलड़ोयाँ
साड़डे नाल हां प्यारी याहावे ॥

११

छन्दुवा बन्दुवा कर गइला कर गइला मोसों कनवा ।
जोमें एसा जानतो तो काहेको लगावतो
उन सङ्ग अपना मनुवा ॥

१२

तैतो कौन नगर को बासी रे जोवनवा
आवत देखो जात न जानो कौन गांव को रीतरे ।
तूं जिसमें समावे अच पल होवे चञ्चल होवे
गात बिछुरेते तोहे तरस न आवे क्या तेरी यह पीतरे ॥

१३

मेरी सुध लीजिए कृष्ण मुरारि मेंरे बनवारी ।
जनम धरम सब तुमको दियो तुम कहा कियो
सहस्र गोपिन में तुमहो अच पल मोहितो
आस तिहारी ॥
जितनो सुनो न कहो न काहूसे सहो जीयानि सदारो ।
विनतो करूं और चरण गहत हों और मोर
मुकट पर वारी ॥

१४

वार वार डारी और वार वार डारीरे तुरकवा
तुमने तो हमकों चित से विसारी रे ।
मेरे कहेसे कहा होत है अच पल या बात को सब
जाने नरनारी रे ।

१५

नाम साँई का भजरे अच पल नाम साँई का भजरे ।
अरे भजरे अरे भजरे अरे० ॥
इसमें तुझको बहुत नफा है ध्यान लगा और
माला जप मायाही सब तजरे ।
गङ्गा जाय जमुना जाय जाय न्हाय त्रिवेणी
सांच की नदी में जो पैठे उनको एकूं हां धजरे ॥
जङ्गम हो या जोगी हों या कनफटा या सेवरा
इन बातन से कहा होतहै लाख बना तू तजरे ।
दोहरे जाया मशीत जाया पढ़ पढ़ देखो पोथी
झूंठ बोले ते पाप बढ़तहै साँच बोल कर रजरे ॥
नीमाज पढ़या रोजे रखया उठ उठ पढ़ वजीफा तू
जो सांचे जिन के हैं रवसों उनको यहीं हजरे ।
रामकृष्ण निशदिन सुमरण कर यासों भवपार पररे ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

मिठ बोलना केहो तकसीर कौनी बावला
झटपट मैंडे नाल बोलना ।
अटसट नहीं जणदी नटखट अच पल दिल
दांदी घुंडी खोलना ॥

मूलतानी—तिताला

महबूब पायारे हजरत सुलतान निजामदीन औलिया ।
सब सखियन मिल देहो सुवारकी रवने
सानु मिलाया ॥

२

एरे मन हरि सुमरण करले निशदिन घरी घरी
पल पल छिन छिन हरिचरण चित धरले ।
इत उत जित तित काहे भटकत है सदारङ्ग
रस भरले ॥

३

मागले महबूब नाल भिक्षा होंतो तोरे
दरशनको भिखारी ।
वेखणदे मुस्ताक सदारङ्ग लाग रही साँई
आस तिहारी ॥

४

कोऊ जासन मोरी पीत लागो बाही देश जाउरे ।
यह दुखवा मैं कासें कहूं इन ठगीयाने एसी
ठगी चाउरे ॥

५

लोग चवाव करो कितनो सखी प्यारे की प्रीत
करूं नहीं न्यारी ।
काहेको करत इतनी बतीयाँ मोसें तूं माई
कोन सुनो कहे तेरो तू चल अब जारी ॥

६

ऐ साँवरा अच्छी नोको तान बजाई रे ।
सप्तसुरन और तीन ग्राम सों मधुर मधुर सुखदाईरे ॥

७

बांके नैना वाली याते मेरा मनडा लोभाया मेरी जान ।
उठ देखि रैन मार सलोनी रस दे भोनडे आए जैसे
तेरे नैन सलोने तैसेई कजरा पाया मेरी जान ॥

८

सुरजन सोतन सों उरझो कौन भांति समझाऊं ।
अरी एरी मैं कौन भांति समझाऊं ॥
तुम डार डार के भवरा तुमसो रङ्ग रस कैसे करिए
इत चितवत उत बात करतहो कैसेके विरमाऊं ।
सदारङ्ग पिया मनके भवनवा वेग दरसवा पाऊं ॥

९

मानु तानि देदीया वेसंदल परीया पञ्जाव
दीयावे लोकाँ ।
मैवी अयाणी वारी वे नेहा की जाणी मैडा साणीया
दृश्क तू साड़े नोका झोकाँ ॥

१०

दिलवर मेरा वे वेगी वाग तमासे क्यों नहीं आया ।
जल विच कमल कमल विच कलीयाँ तापर
भंवर लोभाया ॥

११

अरे हाँरे वीरा वामणारे हाँरे मोरे पीका मिलना
कहो तो मोसे कब होसी ।
कोइ कहे आज कोइ कहे काल पूंछत जोशी ॥

१२

झगवा देहों पगवा देहों और देहों लाल पाग ।
मोतियन थार भर भिक्षा देहों जो पिया
मिले बड़ भाग ॥

१३

कोनी अल्ला वाकी दासी वेगोरा ।
दासो दासो तुह्मारा मनु छाउ भिक्षाको वेगोरा ॥

१४

वालम तर गई यार तिरछी करम दानी पला ।
कोई किसीदा वारीवै ठोलन साडा मुझ वेनी
मानीदा मानीदा अला ॥

१५

मोरी ननदी रिसाय कुवो छेडो नाहीं ।
होंजो निकसो अपने आगनमें दौर मिले गरवाहीं ॥

१६

ननदोया तोरा वीरन मोंको छाड़ नइला परघरवा ।
यह दुखवा कासे कहूं नवदो निकस जात सइयां
विन जियरवा ॥

१७

मुड़ आमी मैउढे प्यारे इस दुनिया दा
वेखीवे तमासा ।
इन वे लोगानु देख सदा रङ्गीले दाला
झामर नेदा सासा ॥

१८

गुम चढे कड़ी एव तेड़ी कतण वालो जोवे
इसी चरखे चोंच पेसी इसी चरखे खासा ।
साह हुसेन फकीर वाणा दमदाको भर वासा ॥

१९

तोहैन पहरन दऊं में सिङ्गार और सभी
पहरूं हरवा ।
बारा बरस पीछे सइयाँ मोरे आइला बीच
पड़ोरे दे मोरे हरवा ॥

२०

जचाँ वचाँ घोखो छड़ी भेजी बाबुल तोहे हस्ती लदा
लदा बाजे गाजेसो पाँचन घीमेले ।
पहना बनीयाँन नजर बफ़त जरी,की जरी जरी कर बूदे
वाले कों हसली कड़वे चटे वटे झुन झुने हिन्डोला
तासतमामी टोपी कुंडते ढेर लगावहो कहावत
भईहै लालन अब कहां गया घी खिचड़ो मैले ॥

२१

कनक सुन्दरीया मोरी घड़ देरे अच्छे वीर सोनरवा ।
एसी घड़ ज्यो लोक सरावे दुनी लागे नोको
कुन्दन को जरीया ॥

२२

जानिया जियका जञ्जाल ।
विन देखे जिय घनो दुख पावे देखे होवे निहाल ॥

२३

मै किसनु जाय सुनावां अनमेणा सांवल क्यों
नहीं आया ।
जिसदी सूरत साड़े दिल बिच बसदी कितहूं
खोजन पाया ॥

२४

हांजी ह्यारो राज गुमानी घर हालोरा ।
मैतो थारो दासी थे ह्यारा सायवा वाटडो
जोवेछे भालोरा ॥

२५

श्रीरामा लो कटतारो रामालो ।
प्राणका जीवन पूरण कामा सुध बुध हारो मै विश्रामा
आत्मा याणी परमा राणा जपले रामालो ॥

२६

सुन मोरी दैयारी हमरो विथा पियाने
विसार डारी माय ।
एही खामी आज की रैन अकेलो डर पाऊं मोरे
पिया रहीलो विदेश विलमाय ॥

२७

लाल दरवाजे बरा जाय बसो और नगरो ।
जोतुम आवो खामो हमरो बखरो चन्दन
छिड़कों में तोरो पगरो ॥

२८

मीराजी की नौवत बाजे बाजदूरे सो याह्न दरवाजवा ।
हाजती आवे पावे मुराद सब और
पूजिल मनकाजवा ॥

२९

पियाके में वारी वारी जाऊं खेलूं फागरे ।
पियाने छिरक केसर चोलीमें मैने कुसुमी पागरे ॥

३०

सइयां मोरे सुरजनवा मधवा पिवावो ।
मइलो खुमार मई रहिलो न जाय छकेहो
छकेहो छकावो गरे है लगावो ॥

३१

दारातिलारेतदानिएतदानि आहे आतन दीमदारा ।
गरतरीकें इश्कको गर कजमेखम् वाज मन्मन्
चिकारे कारे माने उर जरे मस्तुन मेन दानम्
वतारे आहेआहे त० ॥

३२

दरख वेखन देख मुस्ताक रहं देहाँ तैडड़े ।
अब मदद होवो असरप पीर पीर अतायहो
गला सानु सुखतें दवा देड़डे ॥

३३

मेरा वनो अच्छो तेरो वर आवेगा ।
सिर सोहै गुजरातो चीरा वनरो के मन भावेगा ॥

३४

सूतोहै वहु जनमको अजहूं आखें खोल ।
जनम सिरानो जातहै तू क्यों भटकत डोल ॥

३५

नैणा साड़े आड़ो यावो करन लगे जालम जारो यावे ।
आमिल सजना गले लगना टुक करले गल्लडोया
साडडे नालहाँ प्यारो यावे ॥

३६

जनोया जिया जिया का जञ्जाल ।
विन देखे जिय घनो दुख पावै देखे होवै निहाल ॥

३७

कनक सुन्दरीया मोरी घड़ देरे सोनरवा ।
एसो घड़ जो लोगवा सराहै दूनो लागे नीको
कुन्दनको जड़ीया ॥

३८

सदा फकीरा दो मान लेते राम न मानै सोकहे रे दीवानै ।
अल्ला रहो वाको कुल विन फानी तेचो माने ॥

३९

गुसैयाँके रङ्ग मिले चाहे एसा रङ्ग सके ।
उनके रङ्ग विन और कोबन आवे नासेती
देखिए यह रङ्ग छके ॥

४०

हमरी मदत कीज्यो दरवार ।
हम तक आए शरण तुमार ॥
तुमहो दुख दारिद्र विडार ।
जमाल देशा नाल वलीका कीजो हमरा वेड़ा पार ॥

४१

आड़ीयां वे तैड़ड़े नाल दोस्तो कर दाजो दर दाँवै ।
विपर याही नालदि लगा रहंदा वे परदावै ॥

४२

हार सुधारलो शाह मैं तो तेरी मालनी गुन्थलाई ।
वनरा घनरी कायम दायम नरनारी मिल मङ्गल गाई ॥

४३

वलैया लूंगी रे मितवा विदेशवा जिन जाय ।
बिन देखे पछन तिहाय विरहा सतावै मन डराय ॥

४४

मोरे सइयाँ सुन मोरे सन्देशवा वेग ले आवो
पतङ्गवा पतियाँ ।
घरी पल छिन मोहे जुग से बीततहैं
आमिलो वेग सोयरो होय छतीयाँ ॥

४५

मा हमरा वालमुवा लोना सलोना मनभावना
पियवा पाइला ।
शाह आजमको मोहनी मूरत चितवन में लुभाइला ॥

४६

शुभ दिन ए दिन आजहै जे लालन आए मेरे स्थान ।
सोतन को उर दरको पुनि यातेंजो बाढो मेरो मान ॥

४७

एरी मोहे सैनन दे गयो लाल सुनरा सखो मोरी ओर ।
सोतन ले कहे हो गए अबतो महरवान चित चोर ॥

४८

सहस्र गोपी एक कन्हैया जामें देखूं ताहीमें ।
कठिन करत असान जगत को तन मन धन वलिहारी
बापे धन धन एसे गुण देखे वाहीमें ॥

४९

प्यारे सुरजन सों मिलादे मोको तोरे पांय लागूं
लेहों ए वलैया राम प्यारे ।
उन विन रहो न जाय महरवान चित चढ़ी सूरत
काम प्यारे ॥

५०

अरे रस मालो केरे पचरङ्ग महन्दो लावरे ।
नवीय महम्मद व्याहन चढ़िया मोतियन चोक
पुरावरे ॥

५१

मोरी गत रामहो जानेरे ।
मेरे मनको हरहो जाने घरी घरी पल पल
छिन छिन ध्यानेरे ॥

५२

मेरी गत तेरे हाथ है नाथ ।
सुन्दर श्याम पतितपावन धरिहो माथे हाथ ॥

५३

हम देखिलो लखोलो चोरा जासोरे ।
एकतो अँधेरी रात दूजे दिया न बाती तीजे ना
कोऊ सङ्ग न साथोरे ॥

५४

बार बनै तेरे घूंघर बारे ।
इस वनरेके शीश सेहरा सोहै दो मोती एक
लाल बनारे ॥

५५

गईरे बालम तोरी सेजरे मेरी लाल सुन्दरीया
नगीनेकी ।
हाथनकी सुन्दरी गई मेरी गईरे कील कङ्गनवाकी ॥

५६

कुञ्ज पर मोर भई मोरी गईरे नथुनीयाकी गूंज ।
नयो कुञ्जटा और नई पनिहारी नयो जोवन नयो रूप ॥

५७

बुढ़िया सोच सोच मनमें पछतावत अपने अब क्या
कीजे चरखा हुवा पुराना चलता नाहीं
फेर फिरहों हारी ।
डगमगात पटरी दोऊ हिलन लगी सब
गुरीयां मूल लाठ लरजत तकला झुको हतो धरनी
खान तकले वल परो चमर खस कदम सुकड़ो
भई पखड़ीया न्यारी न्यारी ॥
जब था नया अति रङ्गीला और चटकीला नवन
बांधो मनको तार काती पुनि हीन कुकड़ी
चित दे अटी अटेर नएको गाले रुई जोती माल
सभी न सभाल चुटकी पीत दोया दो डाल
अब रीती घड़ीहै पिटारी ।
डरतहूं जब आन बोले उघाही बालो मागे जो जमा
दाम तब क्या करूंगी मोपै सूत न कपास नहीं गुदड़ी
की आस रही सखियनके साथ मौज करत नित
योंही उमर गई मैने मैने करते अपनी सारी ॥

५८

मत सोच करे मन मेरे वो आप धनी देखत है जैसे
जाको देत तैसोही रख वापै नजर एरे ।
कोड़ी कोकन और हाथीको मन जैसो जाको
भाव होय ताही कों तैसे देरे ।
वनादा आचुनारो जी रस नादकी दाना अदराहे
राव मानद मौज से वाहीको नाम लेरे ॥

मूलतानी—होरी ताल

चिस्ति चिराग को ढोटारे सब चिस्तीयनको नूर ।
राज दुलारो जग उजियारो अल्ला नवी को हसन जहूर ॥

मूलतानी—तिताला

कहा करूं मोरी माय तानन मानन वस कर लोनो ।
वंशी बजाय रिझाय सदारङ्ग मेरो चित हरि लोनो ॥

२

परदेशी तुम सन कौन करे एसी प्रीत ।
आज इहां रहे काल वहां बसे जोगी काको मीत ॥

३

सुध विसराई मोरीरे ना आए आली मानो कौन
औगुणवा ।
हर दरशनकी लालसा मनमें निशदिन गनत सगुणवा ॥
कहा करूं वस नहीं मेरो अब दुख दे गयो दुनवा ।
ज्ञानदास वोसो श्याम विलम रहे इत व्रज कर गयो
सुनवा ॥

४

काहे कों फिरत भ्रम भूलोरे मन ।
या घटमें है हरिको वासा आनन्द मङ्गल मूलरे मन ॥

५

लागोहो आवे ढीट लङ्गर चतुर न माने वरजो अपनोरे ।
तेरो तो कछू न जायगो खिजावेंगे नगरके लोगवा
कैसे देखाऊं मुंह सबमेंरे ॥

६

मोरे मन्दिरवा गावोरी बधावरा सुरजन आइला ।
इच्छरीया सब भई जिन मनको मनभावता सुरजन
पाइला ॥

७

राझण आयानी बैठा साडड़े कोल ।
रे राँझण आया मेंड़े मन भाया छदड़े कीती हुण घोल ॥

८

तेरा मन माने वेसो कहेरे दिवाने सदा फकीरांदो
मानले ।

अतन वतन कतन कुडेर वनु तेंडे नाल मानले ॥

९

लङ्गरवा ढीट सलोनारे जिन रोकै बाट मेरी ।
पनीया भरन हम जात हतीरी सास ननद को चोरी ॥

१०

अगर चन्दन कामें पलना बनाऊं झूल झुलाऊं
लालनीयाँ ।
नगन जड़ित हीरा मोती देहों पालनीयाँ ॥

११

दान मोयाँ हैजो वदो रुसम मैं ह्मारी अला दे हवाले
चाको तामें तैनु बेखी को कि दुख मरणावै दाना
सखियाँ ।
रबदे महरवानो वेरखवे घरी पल छिन छिन
पहचान वे याहो बात जानीया ॥

१२

वृन्दावनके वासीरे कौन आसु कौन जासु कौन
करीलो हासुरे ।
जब लग ध्यान तुमारोरे वन्धु मनुवा रहिलो उदासु ॥

१३

माई तेरा लाल अयाना रे ।
साड़ा कहा सईं मानदा नाही लङ्गराई
पङ्गरदा सयासारे ॥

१४

रहस घर समधिन आई । सब साधन मन भाई ॥
समधिन आई सब मन भाई अच्छा कियो है सिङ्गार ।
ले समधी समधन के डारे गज मोतीयन को हार ॥
समधिन को साकरो अस खिरको समधी आवन जोग ।
आधा बाहर आधा भीतर सब समधीके लोग ॥
समधिनको हाथो का भावै अच्छा नोका पूरा ।
रङ्ग रङ्गीला और चड़कोला हाथो दाँतका चूरा ॥
समधिन ठाड़ी मरावन लागी समधीके खातर बकरा ।
पिछलो रात करावन लागो मूंग भात घोउ सखरा ॥

१५

वनक बन समधिन आई समधिन के घर काज ।
ठाड़ो निश दिन आप करावत अपने घर को साज ॥

१६

अरे साधो तेल ले तेलले फूल ले बेलले चमेलीले ।
अतर अरगजा कुमकुमा ले केसर कस्तरी रङ्ग रेलले ॥

१७

मैचूड़े ठड़ीयाँ माँई साहब दी सरकारा ।
पैरों नंगो सी राँझड़ लालो सबे जो उतरो पारा ॥
तड़ फड़ात उन मिलवन कछू नहीं वणदाते
किण लेना संसारा ।
पक राझोली हीर बढ़ावाँ सरम रहे दरवारा ॥

१८

घर घर मसलत शिर शिर मसलत मन मसलत
दा थानो ।
कहे हुसेन फकीर रबाणा विन मसलत उठ जानो ॥

१९

वल वल गई सुरजन मोरे कबहूं नहो तू मोसों
एक पल न्यारे ।
घर घर नगर नगर डगर डगर में तुमही देखतहों
वार वार जाऊं तोरे ॥

२०

सइयाए मोरे सुरजनुवा भइला खुमार मधुवा पीवावो ।
मई रहीलो न जाय छकेहो छकेहो छकावो गरेहै
लगावो ॥

२१

बाजोरे आज मन्दिलरा साजन भयो घर काज ।
रङ्ग रङ्गके विस्तर पहर पहर हितू सब करे
आनन्द मन साज ॥

२२

सोए मेरो मन लागो मारत न हिंडोलना ।
गोकुलचन्द उमगसों झूले पहर पीत पीत चोलना ॥

२३

अबतो सुनले बनके टेसुवां ते केहि कारण जरवो कोनो ।
मैतो कहतहूं वोर वटाऊछैल अधिक दुख
दीनो हम तर बैठके ना सुध मोरी लीनी ॥

२४

अरे मोरे बमनारे सगुण विचार मेरे सइयाँ
को मिलना कहदे कब होवेगा ।

घरी घरी पूंछे सदारङ्गीले महम्मदसा दिन
चाव बढ़ावैगा ॥

२५

राजराजेन्द्र म्हारे डेरे चलो राज
खड़ी वाटड़ो जोवेछे म्हारो राजा रानी ।
कबको मे ठाड़ो ठाड़ो अरज करिश वे योंहीं
रैन विहानी ॥

२६

वेखो सइयो जगमें जीवन असी दरशन पाया ।
अवधपुरी मध रामजी दीठा गोकुल कृष्ण जादुराया ॥

२७

रैमन यही गनीमत जाजो तुमने पहचाना ।
तुमही हमारे वारी हमही तुमारे जो दीपक परवाना ॥

२८

एरी गुण मानले वारी चंपे दासां वर ।
पीतम के सङ्ग वावरी भई बाजूवन्द वे सूणि
रैन दिनारे न दिन गइली भँवर ॥

मलतानी धनाश्री—तिताला

एरी वीर कहा कहिए तोसों लग गई लगन मत
पूंछे मोसों ।
रूप दिखाय वावरी कर डारो लग गए नैन
अब का कोसों ॥

२

मोकों बतलायदे भला यहां कोहै तेरा ।
तात मात भैया सुत नारी झूंठ जगत वखेरा ॥

३

हरि बहोत ढूंढा नहीं पायारे ।
गोकुल ढूंढा वृन्दावन ढूंढा ढूंढी कदमकी छायारे ॥

४

म्हाने बतलावो क्योन राज काँई जियमें ठानी ।
थांके कारण मैंतो सेजड़ा बनाई शोक रङ्ग अब
आवो क्योन काँई मन मे जानी ॥

५

चकलाई कुड़ेनी धांगर रोदा वहँदा नाहीं ।
इस जग बीच कोई नहीं अपना तैड़ा है रव साँईहीं ॥

सोने दानी मैं महल बनावाँ रूपे दानो छज्जा सदका
शाह हुसेनदा मैंड़ानी गड़ खेलन लगा बुड़ेनी ॥

६

मोसं नाके दारवे दिया राम दइलो न जाय ।
जबरं दई वाको सास रिसानी मधवा ऐंड़ो ऐंड़ो जाय ॥

७

मोया तुसी वेखले दुनियादा अजव तमासा देखा ।
समझ समझ कर मन में रसोया जादिन पी
पूंछेगे लेखा ॥

८

कोई मोहे आन मिलावो पीया ।
जो कोई पियाको खवर ले आवै तन मन वारूं जोया ॥
जैसे खाल लुहार कोरे सांस लेत विन जीया ॥

९

जिन मोरा बालम मोहा वो कैसे सुख पावैगो ।
जो कोऊ काहू कलपावैगो सो अपने आगे आवैगो ॥

१०

बगीयां जान न देहों सइयां दारो जार ।
रङ्ग रङ्गीले फलवा बहार तो गुन्थलातो नीका हार ॥

११

देई पछतई दिल तुमको लालन नहीं बूझत हो मेरे
तनको ।
बात कहों जब तोसों प्यारे खोल बतावै अपने
मनको ॥

१२

मितवा मोकों छैलवा मिले अरी ए मा
कैसे कर जाऊं पनघटवा पनीयाँ भरनकों ।
अगर वगर के लोगवा देखे महरवान नहीं
मानत पइयां परनकों ॥

१३

प्यारे सुरजन सों मिलायदे मोकों तोरे परिहों
पइयां लेहों वलैयां रामरे ।
विन देखे रहिलो न जाय महरवान चित चढ़ो
सूरत श्यामरे ॥

१४

अब जिन जाय छाय विदेशवा बालमवा
तुम सन लागोला मोरा मन।
तिहारोही ज्ञाव ध्यान तिहारोही सुमरण रटना
रटत घरी पल छिन॥

१५

अनि देखो सइयां अजव तमाशा दीठा।
दिल्लीदा पीर निजामदीन औलिया जम्बुदार सामोठा॥

१६

जानो तोरो चितवन मोहे विसरत नाहीं।
नीखे नैन कजरा रे चुभत मन मैं दो देखे
एसे कहूं नाहीं॥

१७

उन विन देखे कल न परत सुन मोरी आली घरी घरी
घरी घरी छिन छिन पल पल मेरो मन पिय
सङ्गही रहत।
सोवत सपन जागत फिरत निश दिन सुरत रहत
मोरी आली श्यामसुन्दरकी पीत मोरे मनतें
नहीं विसरत॥

१८

घर चालो जी चलो म्हारो राज गुमानो।
मैंतो थारी वाटड़ली जोंवा अरज करेछे महारानो॥

१९

बावरो नारसो मेरो मन लेगई।
सोलह शृङ्गार बत्तीसो आभरण पहरके सुन्दर नैन
सैन देके गई॥

२०

देखो देखो रे मगज अलवेलोका।
गलियन गलियन में फिर आई रस्ता न पाया
हवेलोका॥

२१

सोतनोया सोतन संग उरझो कैसे सुरझाऊं।
एरी वेतो माने न मैं कौन भांति समझाऊं॥
एरी एरी मैं कैसेके समझाऊं।
कह कह हारी बहो भांतिनसों अनेक जतन कर
सदारङ्गीले बरवस ठानत निश दिन महम्मदसा
वर पाऊं॥

२२

मेरो मन ले नीसोरे ऐ दैया यो बटपार।
चोरा चोरो जात ठग ठग चितवत चोरो
जो वस कोनो कन्हैया यों बटपार॥

२३

अबतो सुनले वनके टेसूवा तोरे कारण तें
जरवो कोन।
का पूंछत हो बोर बटोइया छैल बहात दुख दीन
अन्तर बैठके मन हर लीनो सुध बुध लीनो छीन॥

२४

वे मैं चली वे मेरे बाबुलसा अपने में साहुरे हू हू हू।
पाय डोली में ले चल कुंजा बांगु कर लानोया
कू कू कू॥

२५

गमपनिसानिधपमगरेसा। सगमपनिपमपमगरेसा॥

२६

मैं मिलिवे सोना तैडे नाल तुझ विन मैनु न भांवदा।
आंवदा जांवदा मुरली बजांवदा तुझ विन मैनु
न सोहांवदा॥

२७

वनरा अजब तरेसों आया।
सिर सोहै पचरङ्गी चीरा वनरो के मन भाया॥

२८

अबतूं जोगी भेषले जग जीवन थोड़ा थारारे।
सीख मानले सदारङ्गकी बहोत कियाहै वखेरारे॥

२९

हां हां हां हां बावरी कैसे डोलेरी साज।
म्हारे आंगन नीबड़ोरे ता चढ़ बोले काग उड
उड काग सुलक्षणा पिय घर आवे आज॥

३०

मैं वारोयांवो मैनु तैड़ी याद।
ढूंढदी फिरेदी मिलदा मो नाहीं किसनु करां
फिरियाद॥

३१

घूंघट में मजा मारणी मारणी सालू बालणी ।
सालु वाली बुक्कड़े वाली अनवठ विकुवा बालणी ॥

३२

जिन्दुड़ो दा साहव बेलुरे ।
प्रेम दिवाणे कोई नहीं संग साथो जब जिंद
चले अकेलोरे ॥

३३

रुनक झुनक मेरी पायल बाजे विकुवा कुम
कुननन साजे ।
सेज चढ़त मोरी झाँझन हाले सास ननदको लाजे ॥

३४

तेरे माथे दुशाला लालरे बहोत दिनन पर मोरे
पिया आइलो गरवा हो फुलवनको माल ।
हाथीयां चढ़ कर पिया मोरा आइलो गरवा हो
मोतियन की माल ॥

३५

मंवर कहूं वेलड़ीयाँ वस कोनोरे काहू बागको ।
उन वेलड़ीया फुली कलियाँ अतही सुहागको ॥

३६

गोरी तोरे अँगियामें फूला फुलावांसरे ।
मैंने बुलाया तू क्यो न आया अरे मोरा मानले
घूंघटके पासरे ॥

३७

सुन सुनरे सइयां मोरे मैं परहों पइयां तोरे
परदेशवा जिन गवन करो ।
इतनो विनती महम्मदसा पिय सदारङ्गीले रसको
बतीयां कुतीयां विरह दरो विदेशवा पग डग
जिन धरो ॥

३८

सुघर सुन्दरवा वालमुवारे मोको देहो
पायलिया घड़ाय ।
झनक मनक नेवरियाँ बोले विकुवमको झमकार
सदारङ्गीले महम्मदसा पिय रहस रहस गर लाय ॥

३९

अबतो सुनले वनके पपीहा तू पिउ पिउ
पिउ पिउ जिन बोलो ।
सदारङ्ग पिया पाती न पठाई छाय रहे अज होलो ॥

४०

अबतो सुनले वनके कगवारे मगवा ।
अगवा आवे पियरवा उठ उड़ जावो अटरवा ॥

४१

आज श्यामसुन्दरवा चितके हरवा सुघर चतुरवा
मनकेभवनवा आवे ।
उन विन कछुन सोहावे न भावे घरो पल छिन
मोकों विरह सतावे ॥
काग उड़ावत वहोयां थक गई निश दिन जुग सम
सेज न चहावे ।
सदारङ्ग भरे कान भनकवा वेय दरसवा दिखावे ॥

४२

अरे मोरे मनके मीतरे मोरे मोत पियरवारे कासन
कहिए दुखवा जाय ।
सदारङ्गीले महम्मदसा पिय जब आवें तब मिलोंगो
धाय ॥

मूलतानी—धीमा तिताला

उन विन मोकों कलन परत है सुनरो मोरी
माय घरी पल छिन जुग सम वीतत हैं धरहों
उनके पाय ।
सदारङ्ग विन कछुन सुहावे नाहिन मावे मोकों
सजनो कैसे रजनो विहाय ॥

मूलतानी—तिताला

तारे दानि तुम ननन दिरना तदोयनरे तदोयनरे
तारदानो ।
यललोयललुमलुमलुमयलायलाययललललेनाद्रद्र
तुंद्रद्रतंद्रतनदिरना ॥

१

हरवा गरवा डारूंगो मा जब पिया अइहैं मोर
मन्दिरवा करिहों सोलह सिङ्गरवा ।

जब पइहों मैं पीतम प्यारे सदारङ्गीले छबीले
सुन्दरवा घर पाइन महल अन्दरवा ॥

३

की करे गुमानी जाँदावे मीया कुकन सकदी
ड़रदी लोकाँ तलफ तलफ जिय जान्दा ।
हाल हकीकत माल विर वनु इश्कदी रही
पोहो चान्दा ॥

४

राझण मैंड़ा मिलिया मीया हो की करो रव करो
एसी पावदी गलां ।
सदारङ्ग दी गलां अति सर वर कीती आशक नु
मिल देनी मला ॥

५

रे मन काहेकों फिरत भ्रम भूल ।
या घटमें है हरिका वासा आनन्द सूरत मूल ॥

६

तुम सङ्ग लाग्यो नेह मितवा जोवना में कैसेके दुराऊं ।
तुमही हमारे वारी हमही तुमारे सदारङ्ग मन
भाँऊं ॥

७

सजन सन मोरो प्रीत लागिलो वाहीके देश जाऊंगो ।
यह दुखवा में कासे कहूं पियके चरण हों पाऊंगो ॥

८

सुघर सोनार वाको छोहरा रे मोकों देहो
गहनवा घढ़ ।
पहरतही दिन दिन बढ़े सुहाग भाग कौन
मन्त्र पढ़ ॥

९

लङ्गरीया तोरे सइयां अन बोलना तूक्यों नैना लगावे ।
हां मोरे ललना जाके पिया परदेश रहतहैं सो
कैसे दिन जावे ॥

१०

एरी मेरो प्यारो आयो नाहीं मोरे घरवा ।
पायन परहूं दूजे डारहों गले हरवा ॥

११

तेरे नैना आलोरो पियाको मन बौरायो ।
काहू सोतन सों बात करत नहीं बहु आनन तोहे
भायो ॥

१२

सखीरो पीको पीत अनोखो देखो ।
औरनसों पिय हँसत बोलत हैं हमसों करत है
बतीयां तीखो ॥

१३

सइयां वो मोरा बहीयां मरोरोरे लड़ तोड़ोरे ।
कौन गाँवको ढीट लङ्गरवा कौन गावको रीत प्रीत
करी वरजोरीरे ॥

१४

मैतो तैडे नामदी वारी वारी जादिया भलावे
सजन साइयां ।
जीवन तैड़ा चाहोदा विगाणा जोते रहो जग माहीयां ॥

१५

जानी तोरो चितवन मोही विसरत नाहीं ।
तीखे नैन कजरारे कारे चुभत मनमें ए दोऊ
देखे एसे ना काहीं ॥

१६

अणी कोई देशी वैरावल देशी ।
दासी दासी वारी रावल दासी कौन करे गला दासी ॥

१७

सइयां मोरे माधुरी सूरत मन बसोरी ।
साँवली सूरत रस भरी अँखिया कुण्डल कान लसोरी ॥

१८

तैडरे घोल घतो तानु राहत कादो ठाड़ो आन ।
दोगलां अदारङ्ग तूसी मान ले तेनु खादो अमान ॥

१९

सजना दे नालवे माड़ो जिन्द लगो वेमोया ।
याद लगी असानु महीं दवाई दे दे तूसानू
हावेख मिलावे को कर वेखा वेमोया ॥

२०

दानव चतुरङ्ग दल भाजे ए चण्डिके जबहीं
कोपि खड्ग लै सिन्घ चढ़ो चलत धाय ।
ससगमपधधपमगमरेसानिधनिधपमगगरेसासारे
रेगममपधधनिनिधधपपमगगगरेरेसा ॥
नादर दिरतादो तदारे ततदानिद्रियानारेद्रियानारे
तदारे तदारे नादर दरतोम् ददरतियाइयातक
धिलाङ्गतक्धा ।
धाकिटतक् धुमकिटतक् धित्ताकटतक्दिगदिधाधा
कड़ां कड़ांतक्तरिकिटतकेतकुकुभंकतकुकुभङ्गकिण
किणथों गथों गतकतकोटधातकिटनगदिधा ।
नवलकिशोर लह्यो आनन्द सुख मन वाञ्छित
तुव सुयश गाय ॥

२१

मेरा बनवारीजी से मेरा मन लागारे ।
सोवत जागत विहरत निश दिन तन मन धन रस
धागारे ।
आठ पहर और चौसट घड़ियां हरि हरि लौ लागारे ।
कृष्णानन्द आनन्दमें रङ्ग रहे चरणकमल अनुरागारे ॥

२२

कान्हर काहे करतहो ढिटाई ।
आय रोकत पनघट वरवस मोहे देहो नन्द दुहाई ॥

२३

एसे कान्हर कहूं नाहीं देखे ।
जहां तहां जित तित इत उत चितवत रोकत
नाहीं विवेके ॥

२४

मो मन भाएरीमा कान्ह कन्हैया प्यारा ।
रैन दिना मन चाहे उनको कबहूं न कीजे न्यारा ॥

२५

मृगनैनी राम मड़ा वस कर डारारे ।
तिरछी भोहें बांकी चितवन नैन कटाच्छन सों मारारे ॥

२६

ढोलण मैड़े घर आमीदे सोणा तोभी मैंतैड़े
सदके सदके सदके जावां ।
रत देहा मैनु औरन भादा साडड़े और असीम न
चान्दा घोल घुमाइयां जिन्द छदड़कीती राँझण तु
मो किस विध पावां ॥

२७

सुनरे अब मोरे पातकवा इतनो विनतो तोसे
करतहूं सइयांकी खवरियां लादेरे ।
कहत रजासों विनती लिख दूजो तू वाको जादेरे ॥
मनमोहनको आम मिलावे जो चाहेसो पाता देरे ॥
झगवा देहों पगवा देहों और गरेको हरवारे ।
जो मेरे पियकों वेग मिलावे जोमन इच्छा तू पावेरे ॥

२८

गरवा हरवा डा.ंगी मा जो पिय आवे मोरे आङ्गनवा ।
चतुर सुघर बालमुवा मोरा कवन देश रहिलवा ॥
सदारङ्ग कोई जाय सुनावे उनके कान भनकवा ॥

२९

सोतनके मनमें एसी विधना चढ़ आवे मत अब जानो ।
तुम हमको विसरायके बैठे किस विध मिलना होय
अजीज दिन उमग जातहै जोवना और बह्यो जात
है पानी ॥

३०

दारा तिले दारा तिले तुंद्रतनादारातिलेधितिलि
तितिलिल्लिलेद्रद्रतिलेतारदानि ।
द्रद्रद्रद्रतुंद्रतनानारेतारेतदेतनातुन्नाधेत्लांधुमकिटि
तकधिन्ना धादा० ॥

३१

दोम दारा तिले तानादिले दाना दारादोम्दोम्
नाद्रतुंद्रदरादरादोमतनातदानि ।
नारेतारेतदेदानिधितिलितिलानिनारेतुंद्रतनातदरेतारे
तारेतारेदानि ॥

३२

यललोयललुम्यलायलालेयललोयललललोयललल
ललुम्ललललुमरललुँयाललाले ।

तिललतिललतिलतिलललललेतललरललरललरललर
ललेरालरालउललरुललंरलारलायलललललले ॥

३३

तनदेरे२ मनदेरे तन तारणनाथ मन देरे ।
धन धन तेरे तन मन नैन नैत्रनाथ मन देरे ॥
नादरदर नादरदरदरदरतरतरतरतर तन मन मत देरे ।
राम राम रररररररररतन मन दे मन तन देरे ॥

३४

आहेआहेवाद्रद्रतिल्ला दारादीमृतनुंतनतिल्लातारेदानि ।
तिल्लातुंद्रदिल्लादारादारादीमतिल्लानायललली
यललीयलयाललेनारेदानि ॥

३५

तूं तन मन सों राम लेले ररे नररे मन मेरो
कह्यो तू मान ।
दर दर मटकत काहे फिरतहै रररहरि हर नाम
तनदे मनदे धनदे नारायण तूं मान ॥

मूलतानी—एकताला

तोरे परिहों पइयां बहियाँ मोरी छांड़दे कन्हैया ।
सुन पावै मोरी सास ननदीया करिहैं शोर चवैया ॥

२

याह्न दिन गनत गई घड़ी आवत विधों भई
आधीराती ।
मगरे जोवत सांझ भईहै कर राखूं दियरा न बाती ॥

३

गई मईरी मुरली राधे आज तेरे सङ्ग या मगमें ।
काहे बजाऊं श्यामा काहे गाऊं बंशी विन कल न
पल न द्रगमें ॥

४

कैसो तोवा ना कर यार कैसो तोवा पढ़ले अस्तफार ।
छके पछे करे सवाएरे बड़ोया देले खिलाए जोवन
मोयाँ फकीर रवाणा यही कहे करतार ॥

मूलतानी धनाश्री—एकताला

मन्दिलरा तू बाजरे बाजु मन्दिलरा सब सहेलो
मिल बरण वरण वसन साज ।
सात सखी मिल देहो मुवारकी महम्मदसा घर काज ॥

मूलतानी—एकताला

वे मोयाँ जब मैंनु दरस वेखाँ असो तेड़े बेखणदे
मुस्ताक ।
अदारङ्ग दे नाल मिलले मोयाँ करदार बाद जवाव ॥

२

हरगिज नहीं छूटे वारी दिल फसा हुवा मोया
मुझे नसोहत न कर वेफ़ायदा ।
दिलको मेरे मौलाही जानें इस बन्दगी का यही
कामदा ॥

३

नैनन में आन बान अब कौनसो परोरे ।
निश दिन सोवत पलकन खोलत जब देखूं मूरत
श्याम को खरोरे ।

४

सुन्दरोया नगोने को गई गईरे वालम तेरो सेज ।
सुन्दरी को सुन्दरी गईरे अरे वोतो गईरे कगनवा
की कील ॥

५

मेरा मोयां बड़ा गरोबनिवाज ।
करम रहम सों जगमें राखले पैदा किए की लाज ॥

६

एरी हौंतो प्रोत न करिहों काह सङ्ग दुख दिवैया
मिलेरी ।
रस बतियां कर मन मोह लीनो बोच ही छाड़ चलेरी ॥

७

सुन मेड़ा मोया वे पैदा किए को लाज ।
पैदा किया की लाज तू सानू बांह गहेको लाज ॥

८

नित कहूं तो भलो बुरो लागे आली मेरी बात को
हिए ही न लावै ।
मूरख याको बातमें कछून सवाद योंही अकारण
मान बढ़ावै ॥

मूलतानी—तिताला

आज अचानक सखीने जगाईरी आन कैसो कही
काननरे बोलाईरी ।

सुन्दर बचन सुन्यो तिहारे सुखनको सुन कर
आनन्द उरन समाईरी ॥
सासु को सकोच लगे ननदी को डर मोहे छानो
अँधेरीमें छिप कर आईरी ।
श्यामसुन्दर मनमोहन निरखत शरण चरणकमलन
सुख पाईरी ॥

२

धन धन राग धनाश्री धन धन गोकुल गाँम ।
धन धन नन्द यशोमति जहां प्रगटे सुन्दरश्याम ॥

३

श्याम मिले तो वृन्दावन जाऊंरे ।
तनकी तपत मेरी तबही बुझेगी नाथ निरखिके में
अति सुख पाऊंरे ॥

४

जाजारे बटोइया में बहोत दुख पायो तेरी वाटरे ।
जबतें गए मोरी सुधह न लीनी सोतन कीनी घातरे ॥

५

मोरी गईरे नथुनिया की गूंज कुंवे पर भोर भई ।
नयोरे दुलहैया नई पनिहारिन नए यार कौन हठई ॥
नयोरे कुवटा नई पनिहारिन नयो जोवन नयो रूप नई ॥

६

जाको मन अल्ला सङ्ग रहे जैसे पाछे पाछे फिरत नरद ।
वो कौन है चलो देखियो हजरत खाजि मीर दरद ॥
जिन भूख प्यास मार राखो वो कहावत जगमें मरद ।
कबहूं होत है सुए वरग हो कबहूं होतहै जरद ॥

मूलतानी—ताल सवारी

बेसर केरे मोतोया तेंतो महातप कीनों ।
सुवरणके सङ्ग लायके अधरन को रस लीनो ॥

२

अरे वीरा खेवटोया रे तू मोहे पार उतार ।
बीरा दूंगी पानको और गरे को हार ॥

३

सो अरे अरे मैं सुरजन पाइला रावरे ।
शेख फरीद दीन जाके निजामदीन धन धन भावते
मोहे आवरे ॥

४

मोरे पियको खवर सुनाव अरे बमना ।
सगुन विचारो पोथो बांचो मोतो थार मरदूं दक्षिना ॥

५

द्रद्र तिल्ला दारा तिल्ला दारा तिल्ला दीमतानुम् ।
तकड़तकधिकिटधीटीकतानधीधीधाधीधाधकटतक
तकीटतकदिगनगधिटोनीटीक्रिगड़ाकीटतकदिग
तगकताधातागणधाधीधाधाताड़धागिदिगनधा ॥

मूलतानी—तिताला

फुलदरे मोरी बारी कोलो करूं रखवारी सात ।
फुलबन बांस बसीलो तोरी वारी प्यारे और अतिही
रसीली चेत पिछली रात मोपे सवारो न जात ॥

मूलतानी—ताल सवारी

कसे के हु स्ते रुखे दोस्त दरु नजर दारद ।
मोह हकीकस्त श्री हासिले वसर दारद ॥

२

बाट बटोइयारे मोरे पिया सन कहियो इतना
सन्देशवा बाह्र देश रहे मन लाय ।
तुम विन दुवर भइलो मोरे नाहा कैसे कटे
रतियाँ कैसे करूं बतियां बाझको ले आवो राखों
मन समझाय ॥

३

हाँरे गोरी लाल बुलावे ।
तूं काहे अनमनी भईरी उनते मान किए कछू
हाथन आवे ॥
जोतूं उनसे मान करत है मान किए पछितावे ।
जब इश्क रिमावेंगे उनसों तब काहको कछू न
सुहावे ॥

४

आहे दीम् दारा तिलेतानुम्तनदिरतनदिरनातदिरना
तुम तारेदानि ।
खलकमें गोयद के खुसरो वुत परस्तो मे कुनद
आरे आरे मे कुनवा खलके आलम नेस्त कार ॥

मूलतानी—ताल वरवा फरोदस्त

तुम विन चैन परे नहीं मोकों कैसे रहे वल जाई ।
सूनो भवन अकेलो पल पल जोया घटतहै मेरो
वलम जिन गवन करई ॥

मूलतानी—ताल सवारी

वांस केरो वंसोया तेंतो कौन व्रत कीनों ।
मोहनमुख लागके अधरनको रस लीनो ॥
तिनतोनातोन्तोनाकतकि धींधींताधींधींताधात्रकड़
धोधोतागेदिन्नागतुन्ना ॥

२

मोहन सुन्दरश्याम पिया मो घर आइलो ।
गावो बजावो रिझावो नचावो गुणीजन मङ्गल
गाइलो ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

अजी म्हारा माधोजी हो थाँरो गत जाय न जानो ।
मारण कारण चलो पूतना आँचर जहर लगानो ॥
ताकों गत माताको दीनो निज वैकुण्ठ पठानो ।
सतयुगमें एक हरिचन्द राजा बोले सत्यको वानो ॥
ताको एसो निर्धन कीनो भरे नीच घर पानो ।
कोटिन गऊ नित दान जो देतो नृगराजा सो दानो ॥
सोतो किरड कूप में डास्यो थाँरो अदभुत वानो ।
बड़े बड़े राजनको बेटो जिनको जोग टढ़ानो ॥
एक कुवज्या दूजो कंसको दासो ताहे करो पटरानो ।
पाँचो पाँडव अधिक सनेहो गले हिमालय पानो ॥
दुर्योधन वैकुण्ठ जान कों सो राजा अभिमानो ।
बल राजा वैकुण्ठ जान कों तापर रचना उठानो ॥
ताकों तो पताल पठाए आप भए दरवानो ।
जो जाके मन उपजो कामना सो मन माहीं टढ़ानो ॥
करत राईकों पर्वत पर्वत राई करे करता
अकरता दानो ।
जो जाके मन उपजो कामना सो ताहे दिर ठानो ॥
विजय छरा जयपुरे मव आनन्द सो तलपूरे रुच मानो ।
परमानन्द सोई भागवत इच्छा सों रची विधाता आनो ॥

२

जे नर राम राम रट लावे ।
अंतह मरन सुध होय ताकों बहुरि जनम नहीं आवे ॥
करे सेवा गुरु सिद्ध साधको सुर दुर्लभ पद पावे ।
छविनायक ता जनको महिमा वेद पुराणहो गावे ॥

३

जेवत सीय रघुवर एक सङ्ग ।
गावत मारो आनन्द भारो उघटत तान तरङ्ग ॥
वामो घहर रचो मुख वीड़ा आभूषण अङ्गअङ्ग ।
छविनायक पर कृपा कीजे दीजे भक्त अभङ्ग ॥

४

जा दिन साधुचरण चले आवत ।
तादिन भाग उदे युग युगके सुख देखत प्रगटावत ॥
जाके पद पङ्कजके आगे चार पदारथ ध्यावत ।
अष्टसिद्ध नवनिद्ध सम्पदा सुखसमूह गृह छावत ॥
भक्ति मुक्ति आंगनमें डोलत पुलकि प्रभाव बढ़ावत ।
दरस सुफलको अवध जगतमें वेद पुराणन गावत ॥
गङ्गादिक तीरथ अवगाहन अवलोकत फल पावत ।
अगणित कलुष कलेश धरे उर विन श्रमसद्य नसावत ॥
तीनलोक दशचारभुवनके सुकृत सलिल अन्हावत ।
दुख दरिद्र दीनता मलिनता दूरि दुखदो बहावत ॥
इह फल सरिस आन नहीं त्रिभुवन कोटि युग
सकुचावत ।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि यह अनुचर सङ्ग ल्यावत ॥
जाके पदको रैन सुअञ्जन हितकर नैन लगावत ।
दूर करत भ्रम तिमिर लोकको अनुभव अलख
लखावत ॥
कहाँलो करूं सन्तको महिमा कविकुलवुध लजावत ।
लक्ष्मणदास दयाकर जगमें हरिजन हरिहि मिलावत ॥

मूलतानी—तिताला

क्यों छैला म्हारो आनके रुकाई बाट जमुनाघाट ।
करेंगो चवाव मोरो पाड़ पड़ोसन सास ननदको नाट ॥

निडर हठीलो नन्दमहरको लोक लाज दई छोड़ गाँठ।
सरस रङ्ग रस दृग उरझानो प्रेम प्रीतको डाट ॥

२

मुरलीया बाजे मोह भरो अति धुन सुन कलन परे।
अधर सुधा वरषत आलो मो तन अति अनुराग भरे॥
दौर दौर कुञ्जन कों जोए देखत नैन ढरे।
नेक चित मनहरत छबीलो सरस रङ्ग रसकरे ॥

मूलतानी—धनाश्री तिताला

ऊधो गिरिधारीजो सों जाय कहोरे।
विन देखे कल परत न छिन घरी ब्रजहो आन रहोरे॥
यह वृन्दावन यह कुञ्जलता रास केल मन मान
गहोरे।
सूरश्याम कछु नाहिन भावै विरहिनी डूबत बांह
गहोरे॥

मूलतानी—चौताल

मेरे गिरिधारीजो सों काहे कों लरी।
चलरी मैया में तोहे बताऊं जो मोसे झगरी॥
मेरे गिरिधरके चरणकमल पर वार डारों सगरी।
गोरेसे गात लीलाम्बर पहरे चितवत चपल खरी॥
तूं तरुणी गिरिधर मेरे बालक कैसेकै भुज पकरी।
गिरिधर रोवत असुअन भर भर तू मुसक्यात खरी॥
गोरीसी भोरी थोरे दिननको चितवन वस जो करी।
सूरदास प्रभुकी लीला ब्रजमें नित नईरी॥

मूलतानी—तिताला

आछे मेरे ललनाहो एसो अड़न कीजे।
मधुरमेवा पकवान मिठाई जोई भावै सो लीजे॥
दधि माखन सादो दहो वलि मीठा पय पीजे।
कमलनयन जक जिनि करो सो खीजत तन छीजे॥
सूरश्याम इनके कहे मोपै मांगे सो चन्द कहा दीजे॥

२

महावल कीनो हो ब्रजनाथ।
इत मुरली उत गोपीनसों कृत उत श्रीगोवर्द्धन हाथ॥
इत बालक वय पान करतहै उत सुरभी तृण खात।
उत सब बच्छ चरत अपने रङ्ग ग्वाल बजावत पात॥
कोप्यो इन्द्र महाप्रलयको झरलायो दिन सात।
परमानन्द राख लीनो गोकुल मेटी इन्द्रकी घात॥

३

केते दिन है जू गए विन देखे।
तरुणकिशोर रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुख रेखे।
वह चितवन वह हास मनोहर वह वानिक नट भेषे॥

४

भावै तोहि तोड को घनो।
काटे घने गोखरू डूवे फाटो जात टनो॥
सिंघे कहा लोखरी को डर एसो बानक बनो।
कुम्भनदास लाल गिरिधर विन कौन रांड़को जनो॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

मेरी सुध लीजो हो ब्रजराज।
और नहीं जगमें कोउ मेरो तुमही सुधारन काज॥
गणिका गीध अजामिल तारे औ शिवरी गजराज।
सूर पतित तुम पतित पावन हो बांह गहे की लाज॥

२

नरसिंह महाप्रभु आरोग।
छप्पन भोग छबीसो व्यंजन नाना विधके भोग॥
लच्छो भोजन आप सुधारे मनमें बहोत आनन्द।
पनवारो नारद मुनि ल्याए जल भर ल्याई गङ्ग॥
भाव प्रीति कर भोजन कीजे तुम मेरे प्राण आधार।
अन्तर घटके अन्तरजामी सब विध जानन हार॥
आरती साज इन्द्र ले आयो खोल दिए पट चीर।
सनक सनन्दन चंबर ढुरावै प्रह्लाद भक्त है तीर॥
गावत सूरदास यह लीला निजजन हरि भय भीर॥

३

दूर खेलन जिनि जाओ लालन मेरे हाऊ आयो है।
हाऊ मोहे बताय मैया मोरो हाऊ कैसोहै॥
तब हँसि बोली कान्हकी माता इनको किनि पढ़ायोहै।
जमुनाके तट धेनु चरावत जहाँ सघन बन जाऊं॥
पैठि पताल काली नाग नाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ।
अब डरपत सुनि सुनि यह बातें कहत हंसत
बलदाऊ॥

सप्त रसातल शेषासन रहे तबकी सुरत भुलाऊं।
चार वेद ले गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊ॥
मोन रूप धरिके जब मार्‌यो तब रह्यो कहां हाऊ।
मथि समुद्र सुर असुरनके हित मन्दिर जल
विष साऊ॥
कमठ रूप धरि धरणी पीठ पर सुख पायो सुरराऊ।
सात समुद्र कियो मटुकिया मेरु कियो प्रवाऊ॥
बासुकी नागको नेतो कियो है तोउन देखे हाऊ।
जब हिरण्याक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरभाऊ॥
धरि वाराह रूप रिपु मार्‌यो ले क्षिति दन्त अघाऊ।
विकट रूप अवतार धर्‌यो जब सो प्रह्लाद बताऊ॥
धरि नृसिंह जब असुर विदार्‌यो तहां न देख्यो हाऊ।
बामन रूप धरो बल छल कर तीन पैड़ वसुधाऊं॥
श्रमजल बहन कमंडल राख्यो दरस चरण परसाऊं।
मार्‌यो मुनि विनहीं अपराधे कामधेनु लेआऊ॥
इकईस बार करी निक्षत्रि क्षिति तहां न देखो हाऊं।
राम रूप है रावण मारो दशशिर बीस भुजाऊ॥
लंका जराय छार जब कीनो तहां न हाऊ।
माटीके मिश बदनत विकास्यो जब जननी डर पाऊं॥
मुख भीतर त्रइलोक दिखायो तोऊ प्रतीत न आऊ।
नृपति भीमसो युद्ध परस्पर तब यह भाव बनाऊ॥
तुरत चीर युग टूंक जो कियो धरी एसे त्रिभुवनराऊ।
भक्त हेत अवतार धर्‌यो अब असुरन मार बहाऊं॥
सूरदास प्रभु को यह लीला निगम नेत कहि गाऊं।
कैसो है दूरि खेलन जिनि जाऊ लालन मेरे हाऊ॥

मूलतानी—ताल धमार

गोपाल माई खेलतहैं चौगान।
लड़का सङ्ग गोकुलके लौने वृन्दावनमें दान॥
चञ्चल पात नचावत आवत होड़ लगावत पान।
सबहो तन हस्तन चलावत कहत बबाको आन॥
करत आनन्द निशंक महावल हरत नृपन को मान।
परमानन्द दास को ठाकुर गुण अगरो निधान॥

६१

मूलतानी धनाश्री—तिताला

महा चित चोर नयनकी कोर।
लाज गई घूंघट पट विसर्‌यो तज चितए इहि ओर।
वे सखी सिंधद्वारे नित ठाड़ी हौंखरिक उठी चली भोर॥
दैकै सैन मैन रस भारी नागर नन्दकिशोर।
कमल मीन मृग खञ्जन दे न उपमा को जोर॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख विधु मेरी अँखिया
भई हैं चकोर।

२

गोपाल माई खेलत हैं चक डोर।
लड़का सात पचास सङ्ग लौने निपट सांकरी खोर॥
चढ़ि धौ राह झरोखा झांकत कुँवर हंसत
मुख मोर।
सुहाई रहे वलैया लौनी कर अञ्चरकी छोर॥
चार नैन मए जब सनमुख सखी लिए चितचोर।
परमानन्द स्वामी सुखसागर चित लई रति जोर॥

मूलतानी—तिताला

मोहन लाल के रङ्ग राची।
मेरे ख्याल परो जिन कोऊ बात दशों दिश माची॥
कंत अनन्त करो जो कोऊ बात कहों सुन साची।
यह जिय जाऊं भले शिर ऊपर मणि कञ्चन
जों पाची।
श्रीहित-हरिवंश डरों काके डर हौं नाहिन मत
काची॥

२

रोम रोम रसना जो होती तऊ तोरे गुणन बखाने
न जात
कहा कहों एक जीभ सखीरी बातकी बात॥
भान अमित और शशिछ अमित भए औ
युवतिनको जात।
हरिदासके स्वामी श्याम कुञ्जविहारी कहत प्यारी
तू राखतो प्राणजात॥

३

तेरो मन गिरिधर विना न रहैगो ।
बोलेंगे मुरलीको धुन सुनि तुव तन मदन दहेगो ॥
जानोगी तब मानोगो आली प्रेम प्रवाह बहेगो ।
कुंभनदास गोवर्द्धनधर नित उठ कान कहेगो ॥

४

तातें नवधा भक्ति भली ।
जिन जिन साधी तिन तिनको मति नेकु न
अनत चली ॥
श्रवण परीक्षत तरे राजऋषि कीर्तन करी शुकदेव ।
सुमरण करि प्रह्लाद निर्भय भयो कमला हरिपद सेव ॥
अर्च्चन प्रथु वन्दन सुफलत सूतदास भाव हनुमान ।
सखा भाव अर्जन वस कीन श्रीपति श्रीभगवान ॥
बलि आतमा समर्पण कीनो हरि राखे अपने पास ।
अति मति प्रेम वख्यो गोपाल सों बलि परमानन्द दास ॥

५

गोपाल माई नीके फिरावत बंगो ।
भीतर भवन भरे बहु बालक नानाविध बहुरङ्गो ॥
सेह सुभाव डोर खेंचत है लेत उठाय कर सङ्गो ।
कबहूंक डार देत भुव ऊपर कबहूं बजावत जङ्गो ॥
कबहूं करले श्रवण सुनावत उपजावत शब्द तरङ्गो ।
परमानन्द स्वामी मनमोहन खेल चलो मर रङ्गो ॥

६

पनघटवा जान नाहीं पाऊंमें ।
बीचही नाच नचावत मोहन कैसे जल भर ल्याऊंमें ॥
जो कहिये काहू सों यह गत तो कुल लाज लजाऊंमें ।
नित जुगराज यही मग जैवो कोलों रार बचाऊंमें ॥

७

प्रभुजो दीन वचन प्रतिपालो ।
भक्त हेत खंभते प्रगटे नृसिंहरूप जो धारो ॥
जै जै कार भयो त्रिभुवनमें हिरणाकुश नख उदर-
विदारो ।
हरिदास प्रभु तुम चिरजीयो सब सन्तनको ताप-
निवारो ॥

८

आली मोहि छल गयो छैलवा नन्दको कुमार ।
पीत पिछोरी काछनी काछे गल गुञ्जनको हार ॥
प्रीत लगाय करकीने वस नैकन लागी अवार ।
या ब्रजनिधको प्रीत कपटको भई मोरे अङ्गपार ॥

मूलतानी धनाश्री—तिताला

सो मेरो मन लेगयो ।
डार ठगोरी वंशीमें कछू मदनमन्त्र पढ़के गयो ॥
प्रीत अटपटो लागो चटपटो चेटक सो चित है गयो ।
वा ब्रजनिधको प्रीत कपटको लपट झपट दुख
दे गयो ॥

२

पतितपावन प्रभु करुणासिन्धु मैतो तुम पर वारीवा
विहारीजू ।
गणिका गीध अजामिल हस्ती गोतमनारी शिला
तारीजू ॥
तारे पतित अनेक एक तुम अधमउधारण हो
व्रतधारीजू ।
जानकीदास पतितशरण आयो अबकी बार
हमारीजू ॥

३

बाजो बाजोरे मोहन तेरी बाँसरी ।
सप्त सुरन और तीन ग्राम सों गावत राग धनाश्री ॥
श्रवण सुनत सुध रहत न तनको उठत हूक जैसे पासरी ।
जानकीदास मिल हों हरि प्रिय सों कोउ करों क्योन
हांसरी ॥

४

एरी तेरो कौन जाति पनिहारी ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी बीच मिले गिरिधारी ॥
सुन्दरवदन नयनमृग मानो विधाना आप सम्वारी ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर तुम जीते हम हारी ॥

५

मैतो तेड़े वेखन दी रहँदी मुस्ताक मैनु तो तेड़ो
तलाक ।

सुन मोहन जेड़ा पंथ निहारत अँखियां भई हैं हलाक ॥
रैन दिन मेनु कल न परत है सहन्दो विरहदो आँच ।
विष्णुदास तेड़ो वरदो कहांदो घरो घरो कहांदो भाख ॥

६

हमरी तुमकों लाज हरि ।
जानत हों हरि अन्तरयामी जो जिय माझ परी ॥
कहे और कछू और कमायो प्रभुजो सो ढगनो करी ।
अतिप्रपञ्च को मोट बांधके अपने शीश धरो ॥
अपनो औगुण कहांलों बखानो पल पल घरो घरो ।
सुत वनिता सङ्ग मोह लियो है सुध बुध सब विसरो ॥
लीजे पार उतार दीनबन्धु अब मेरी नाव भरो ।
कहे नानक अति विरद तिहारो हरि बांह और
पकरो ॥

७

एसो जिनि बोलहु नन्दके लाल ।
बार बार मैं तुम्हैं कहत परीहों फिरि जञ्जाल ॥
छोड़ि देहु अचरा मेरो नोके जानत वैसी बाल ।
योवन रूप देखि ललचानें अबहोतें यह ख्याल ॥
तरुणाई तन आवन दीजे कत जिय होत विहाल ।
सूरश्याम उरते कर टारहु टूटहिंगे मोतिन माल ॥

८

गिरिवर धर्यो आपने घरकों ।
ताही केवल दान लेत हो रोकि रहत हमकों ॥
अपनेही सुख बड़े कहावत हमहूं जानत तुमकों ।
एह जानत पुनि गाय चरावन नित प्रति जात रहे
हो वनको ॥
मोर मुकुट मुरली पीताम्बर देखीयत अतिही भूषणको ।
सूर कन्ध कमरी हौं जानत हाथ लकुटिया वरकों ॥

९

कहो शुक श्रीभागवत विचार ।
हरिकी भक्ति युग युग वरते आन धरम दिन चार ॥
चिन्ता तजो परीक्षित राजा सुनि सिख साखी हमार ।
कमलनयनको लीला गावत मिट गए अनेक विकार ॥
खट्वाङ्ग दिलीप मङ्गरत में तरे तुमरे दिन सात आधार ।
एक पलक में काज सुधारे एसे नन्दकुमार ॥
सप्त दिवस रहे हैं अवधिके सुनि राजा मति धार ।
सतयुग त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा सार ॥
भजन करो विश्वास गहो दृढ़ छांड़ो संशय जार ।
एकहो ब्रह्म सकल घट व्यापक पूरण कृष्ण अवतार ॥
कहां कहों शिवरीको महिमा ध्रुव प्रह्लादहो तार ।
अजामिल गज गणिका तारो और अहल्यानार ॥
अष्टादश षट तीन चार मिल नेति नेति उकार ।
सूर भजन कलि केवल कीजे लज्जा कान निवार ॥

६

जो रस-रसिक कोर मुनि गायो ।
सो रस रटत रहत निशि वासर शेष सहस्र मुख
पार न पायो ॥
गावत शिव शारद मुनि नारद कमलनयनको रस
यश जो चखायो ।
यद्यपि रमा रहत चरणनि तर निगमनि अगम
अगाध बतायो ॥
अरुणतनया तर वंशीवट निकट वृन्दावन विथनि
बहायो ।
सो रसरसिक परमानन्द वृषभानुसुता कुच बीच
समायो ॥

७

पोवो श्रीभागवत सुधारस ।
सावधान श्रवण पुट भरि भरि श्रीगोपाल विमल यश ॥
निगमकल्पतरुको फल परम मृदुल आनन्द लस ।
कठिन ज्ञान गुठली नाहीं जामें करम जाल को
निपट नस ॥
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष पद प्रेम भक्तिको
कनक कस ।
काम क्रोध मद लोभ गलित भये सन्त शिरोमणि
सर्वस ॥
परमहंस कुल भूषण श्रीशुकवदन-कमल ते पस्यो खस ।

खान पान तजि रसिक परोक्षित पीवत कियो नहीं
आलस ॥
सोई अब प्रगट विराजत भू पर कियो अमृत को
उपहस ।
कहै हरिदास परम यह सुन्दर जो न पीवै सो
महा पस ॥

८

धन्य शुक मुनि भागवत वखान्यों ।
गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो ॥
धन्य श्याम वृन्दावनको सुख सन्त मया ते जान्यो ।
ज्यो रस रास सङ्ग हरि कीनो वेद नहीं ठहरान्यो ॥
सुर नर मुनि मोहत सब कीनो शिवहि समाधि
भुलान्यो ।
सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूं पतिआन्यो ॥

९

व्यास श्रवणको करो प्रणाम ।
जाको नेह सब पुराणनके जीवन प्रगट कियो
भागवत पीवत रस श्रवणन भर भर होत भक्तिनके
पूरण काम ।
मोचन दुख दारिद्र हरत है सुर नर मुनि गावै
गुण गान ॥

१०

नमो नमो श्रीभागवत पुराण ।
महा तिमिर अज्ञान बढ़्यो जब प्रगट भयो जग
अदभुत भान ॥
जग जीव निशि सोई अविद्या भयो प्रकाश
विमल विज्ञान ।
फूले अम्बुज श्रोता वक्ता मति रो मन्द मदन
अभिमान ॥
छूटे कठिन करम बन्धनतें मिट्यो मोह सूझे
सब स्थान ।
दामोदर सुर नर मुनि गावत जै जै जै
श्री कृपानिधान ॥

११

हमारे धन सरवस भगवतगीता ।
गाय गाय रसना को लड़ाऊं हरिजन हरिरस पीता ॥
श्रीमुखवचन सुनत कुन्ती सुन मन आई परतीता ।
या गीता के पराक्रम सों दुर्योधनदल जीता ॥
जो नर गीता पाठ करत है जगसें रहै न चिन्ता ।
जिनकों कहा मुक्ति को संसार तारि कुटम सहिता ॥
तीन लोक और भवन चतुरदश वेद पुराण मथलीता ।
हृषीकेश प्रभु अघमोचन सतगुरु दए पलीता ॥

१२

कौन वन बाजीहै वांसरीया कैसे रहो घर दैया ।
कलमलाय जियरा मिलवेकों कीहै धीर धरैया ॥
गाज पड़ो यह लाज पै निगोड़ी करहै कहा चवैया ।
अब आनन्दघन सों उघर मिलोंगी अब डर
करैंगी वलैया ॥

१३

प्यारे विन भर आए दोऊ नैन ।
जबतें श्याम गवन कीनों गोकुल नाहीं परतरी चैन ॥
एकतो धाम अकेली डरतहों दूजे सतावत मोहे मैन ।
कहा करों कित जाऊ सखीरी चलन सकत
मग पैन ॥

१४

एरी मेरो नाहारो अति चतुर सुघरमें निपट
वेसको वार ।
हौं वाके गुण जानत नाहीं अतिही ढीट गवांर ॥
ऊंचा गढ़ ग्वालियर कारे बीच कटोरा ताल ।
रानो खेले हैलु वारि राजा डारे जाल ॥
आठ कुवा नव वावरी रे सोलेहसो पनिहार ।
गोरी तिनिमें कौनसो वाला पनको यार ॥

१५

हरिप्रेमरस छके छके अजहूं न मन अघाए ।
विरह बावरी रहत निशदिन आनन्द उर न समाए ॥

सोवत जागत विहरत हरि हरि याही पछि छन
चित लाए।
बैजू बावरे प्रभुकौं ध्यावत और नहीं मन भाए॥

मूलतानी—तिताला

पिया प्रेम रस छके छके अजहूं न आए मेरे गेह।
विरह खेलो तारो ना भई आलीरी प्राणपतिके
यातें व्याकुल कीनी नेह॥

२

सुहागन सुन्दरी नेक विलम वलि जाऊं।
नेक ठाड़ी रह जाओ सुहागण सुन्दरी०॥
कौन गांवके तुम वाट वटोई कौन तिहारो गाम।
कौन बडे भूप कहावत कहा कहियत है नाम॥
कौन देश तेरो वास सखोरी कौन तिहारो ठाम।
कौन कारण नंगे पांय फिरत हो काहे तज्यो है धाम॥
कौन कारण वन वन विहरत हो उजर गहर गम्भीर।
उत्तर दिशा एक नगर अयोध्या वसे जो सरजू तीर॥
बड़ेहैं भूप बड़े बहु राजा ए दोऊ सखी वीर।
कटि कसे धनुष कर दोऊ लिए सुन्दर दोहैं तीर॥
मैं तोहे पूंछूं बात सखोरी दोउ मृदु मूरत कौन।
कौन तिहारो नाथ मनोहर कौन अनुज सुख दौन॥
पीताम्बर कटि पर सोहत है हाथ धनुष दोउ तीर।
गोरेसे वदन सखी मोर देवरवा पिय मोर श्याम शरीर॥
एरी एरी नार सुहाग ए सुन्दरी सब मिल पूंछे धाय।
किस कारण तुम वन वन डोलत चलिहै पियादे पाय॥
सासुको सौत पियाको सुहागन सन्तति पियहो पियार।
अपने सुतकों राज तिलक दियो हमकों देशनिकार॥
इतना बचन जब सुनाहै सखोरी नैन न डारो नीर।
आजको रैन बसो ग्रह मेरे तुम सहित रघुवीर॥
फिरतो बेर तुमरे अहैहों सखी चउदेवरस बिताय।
वन वन फिरत रहत निशिबासर तज वन ग्राम न जाय॥
तीन जने त्रईलोकके ठाकुर छाड़ चले सुख धाम।
तुलसीदास प्रभु रूप ठगी रही देख पथिक विश्राम॥

६२

३

सजनी हैं कोऊ राजकुमार।
पन्थ चलत मृदु पदकमलन पर रूप शील आगार॥
आगे राजीवनैन श्यामतन शोभित अमित अपार।
डारूं वार अङ्ग अङ्गन प्रति कोटि कोटि शत मार॥
युगल बीच सुकुमारनारि एक राजत विनहि शिङ्गार।
इन्द्र नील हाट के मुक्तामणि जनु पहरे महि हार॥
पाछे गौर किशोर मनोहर लोचन वदन उदार।
कटि तुनीर तीर वर कर धनु चले हरण चिति भार॥
अवलोकहु भर नैन विकल जिन होह करहु
सोच विचार।
पुनि कहे यह शोभा कहाँ लोचन देह नेह संसार॥
सुनि प्रिय वचन चितए हितके रघुनाथ कृपा
सुख सार।
तुलसीदास प्रभु हरे सबनके मन तन रहो नाही
सम्भार॥

मूलतानी—धनाश्री तिताला

आली कहांके पथिक कहां कौनो रे गवन।
कौन गांव कौन ठांव के वासी किमि कारण तुम
तजेरे भवन॥
उत्तर दिशा एक नगर अयोध्या नृप दशरथ वसे
देशरे तवन।
पिताके वचन सुनि वन कों सिधारे इमि कारण
हम तजोरे भवन॥
सीता के वचन सुनि सखी पूंछे पुनि पुनि दीयरे
पथिक पीव तेरो है कवन।
सीय मुसकाय बोली मधुरी बैन गोरे रे देवर
पिय साँवरे जवन॥
पइयां लागूं वलिजाऊं सूरति पर कबहुंक एहो
मग करेंगे अवन।
तुलसी प्रभु विन गेह न भावे मेरो मन हर लीनो
जानकीरमन॥

२

करम गति टारोहू न टरे ।
कहाँ वे राहु कहाँ वे रवि शशि आन संयोग परे ॥
गुरु वशिष्ठ मुनि अति ज्ञानी रच पच लगन धरे ।
दशरथ मरण हरण सीताको वन विपतमें विपत परे ॥
रावण जीत कोटि तेतीसो त्रिभुवन राज करे ।
द्रुपदसुताको राजसभामें दुशासन चीर हरे ॥
पाण्डवके हरि हुते सारथी तेहजो बन निकरे ।
हरिचन्दसो को जगदाता सो घर नीच भरे ॥
दुरवासा सों आप दिवायो यदुकुल प्रलय करे ।
मित्र बांध कूप में राखे भावई के वस मरे ॥
कई लच्च करोड़ गज्ज दान जो दीनो नृग किरकिट
योनी परे ।
जोगी छांड़ देश बहु धावे ताहू सङ्ग फिरे ॥
भावी के वस तीनलोक हैं सुर नर देह धरे ।
सूरदास प्रभु लिखी सो ह्वै है काहेकों सोच करे ॥

इति श्रीमूलतानी धनाश्री भीमपलासी
रागिणी सम्पूर्णम् ।

——०——

धनाश्री—चौताल

सुमरण हरिको करोरे जासों होवे भव पार ।
यह सीख जान मान कह्योहै पुराण में भगवान
आप करतार ॥
दीनबन्धु दयासिन्धु पतितपावन आनन्दकन्द
तोसे कहतहों पुकार ।
तानसेन कहे निरमल सदा रहिए नर देही नहीं
वार वार ॥

२

धन धन भाग सुहाग तेरो तूं पियके मन भाई ।
धन जोवन तेरोरी चतुर सुघरनारि जो पिय तेरी
करे मुख सों बड़ाई ॥
धन जनम जीतव धन तरुणताँई ते रस वस कर लिए
पिय सुखदाई ।
धन धन तानसेन प्रभुकों रिझाय लीनो तुँही
सबनमें देत दिखाई ॥

३

लाल मयाके बोलाई सोतन दुख पायो ।
जे मेरो हितू तिनके आनन्द भयो मृदङ्ग बजायो
मन भाए मङ्गल गायो ॥
पियाको मया मोपै कहिन परत है सब तियन
छांड़ मेरे गृह आयो ।
तानसेन के प्रभु पलकन सों मग झारों जीवन
जनम सुफल करायो ॥

४

धन भाग मेरो धन आवन धन धन पोत प्रेम भयो
मन दरस देखत इन अँखियन सोतन इन अङ्ग
सङ्गते विरह गयो टर ।
इन आनन्दन आनन्दो बांदो भईहों इन चरणन
रहन कहत मर वगर अगसर अगसर ॥
जनम जीतव सुफल सखो मदनमोहन मया कीनो
लीनो रस वस कर ।
तानसेन प्रभु सुखकेऐन नैनन सैन न हाव भाव
कटाच्चन सों मोह लीनो जब मिट्यो दुख डर ॥

५

नवरङ्गी अकवर शाह जलाल करिए हो निहाल
आएहो मेरे मया कर कर ।
तन मन धन नोछावर करौं आवन पर तपत
बुझावन और रङ्ग उपजावन पर वलमा हो इन
भांतिन जनम जनम के सब दुख मए सुख पायलीनो
अङ्कम भुज विनाल भर भर ॥

६

सुमरन ताको करो क्यों न जोहै सतार ।
यह सुनले कान और निहचे जान मान एक
पाकपरवरदिगार ॥

जोई जोई ध्यावै सोई मुराद पावै एसोहै गव्वार ।
तानसेन कों दीजे अन धन लक्ष्मी यह मांगत
बार बार ॥

७

मखदूम शेख अमर कागारोर और न्यामत भरपूर ।
अष्ट सिद्ध नवसिद्ध देत सबन कों है तुम गई है
बहोर ॥
तेरी दरगाह तक आवै माँगे सोई पावै तेरो हो
रह्यो शोर ।
इतनी अरज सुन लीजे तनतें दुख दूर कीजे यह
अरज करे नायक मोर ॥

८

अरि कुरङ्गन जिमि भाजत फिरत वन त्रासके हरि
जब आवत जानत ।
अत कार छल कर कारे जिम चिक्कारे जो दूर
जाए गिरिन में वाही आन मानत ॥
फुनसारनी सीख देत तूं जित लालची तल
भूमि तन मिलहै प्रबल शाहजहाँ को मानत ।
जो मिलत रक्षा कर तन तलफत अहद शिकारगाह
कर राखो यह ठानत ॥

९

हसन हुसेन प्यारे नबी के दुलारे जगत उजारे
शाह मर्दान अली बली ।
वेअप वली ना सुन मलकूत जबरूत लाईत
इन मकानन में तिनकी कीरति चली ॥

१०

योंही जात जनम अकारथ अचेत चिन्ता कर ताको ।
जोहै निरञ्जन निराकार सबमें व्यापत ताकों
ध्यान धरत नाहीं अज्ञान मत अजहूं समझ करहै
कछू वाको ॥
जेमन विच कर लौ लाई श्रीधर पद्मनाभ परमेश्वर
की सूरत कों तुम चाहे दाता विधाता और रखि
बन्ध वाको ॥

११

अरुण बरण सेत इकन तिकनरो उनीदे वीधे कुरङ्ग ।
जागे पागे अनुरागे एरी आलीरी मानो नीरजनेत्र
दीरघ दिवानी कसत वो चाहत उमाहै उपङ्ग ॥
खञ्जन अञ्जन निरञ्जन दोनेरी जमल विमल
विलोल लोयन ढरा ढरारे उतङ्ग ।
ग्वालदास पिय लौ लगोहै लजोहै हाय भाय
कटाच्छ तुरङ्ग ॥

१२

तुमसों जो बोलत हो लाल ज्यो तुमसों
होय साँचो ।
वहाँ हो जाओ जहां होय तिहारो काम अहो सिधारो
प्रीत नीभे के बांचो ॥
उनको प्रकृति रीतहोसे अधीन के जेई मलो
तेई सोई नाचो ।
शाह बहादुर तुम नीके जानत अब तुम बोलवेको
खांचो ॥

१३

बानक है तेरो नीद कोरी रैन गात और मिटो टीको ।
यातेतूं सरस भई टरत नाहिन कबहूं शाह जलाल
भाँथोहै जियकों ॥

१४

आज बदन बदले अधर सधर लागो नैनन पोक ।
पीत अदल बदले कीनो ताके बल छल प्रगट
देखिए सो रस भीने कहूं पोक वरण कहूं अरुण
कहुं रही काजर लीक ॥

१५

तारण तरण सुमरत पीर जो हौं रिझाऊं शाह
बार बार ।
यातें जो कहियत तुमसों जो तुम मनसा पुजावन
हार जेतू अगुण अपार समार ॥
जाकी सुन जड़ तें होत निहाल एसे रस पारस
जान दूर करन दुख सुधा विस्तार टरे जञ्जार
कलेश मेंटन को आधार ।

सूरतप्रशादी माँगे यातें जो न्यामत भर पाऊं
सुख सम्पत अमोघ अपरम्पार ॥

१६

या अल्ला हादी रहिमान या रहीमा ।
धन धन परवरदिगार बकसन हार सतार जीवार
कादर करीमा ॥
एसी सुमत दे हमकों जो तेरी जिकर में रहे
निश दिन करम करीमा ।
आनन्द बरस रस बरसे साहब कुमत दूर होय
एसी ही कर या करीमा ॥

१७

सुनजर कीजे मोपर विधना हौं बन्दा गुन्हैगार
तुम बकशन हार साहब सतार ।
तुम करीम रहीम रव रहिमान साहब दुख
दारिद्र सब दूर कीजे जल्लार ॥

१८

मेरी तो तक्सीर माफ कर यह हजरत शाह मरद
मुरतजा अली पीर कहत हों कर जोर तुअ द्वार ।
अलीजी के प्यारे दुलारे नवी के तुम साहब हो
हसन हुसेन परत न मन वार वार ॥

१९

तिय पिय विनही यो मशकत ।
लाल के विछुरे ते बहोत दुख पायो जों दिया मध
बाती जरसी सकत ॥
चात्रिक पिक मोर शोर खड़ेही सतावत सोते
दामनी करत शीश पर लसकत ।
जेन खाँन मिले तो भलेही जीवन बने लेहों अँको
भर गसकत ॥

२०

कान्ह को कर आँखेरी मत मूरत नामही में देखे ।
ज्ञान लेखक ध्यान निशा चित्र चिते श्यामकों
हिरदे उरेखे ॥

२१

जाको कहे सरस्वती सो कोऊ देउरी बताय ।
जो गुण सुन उन धुन अति मानी गुण कैसेके समाय ॥
कबहूं न आवे सो गावतहै मया चाय एक रसना
अस्तुति क्यों कर जाय ।
जानन मन जान शाह साहब वेगम सुजान धन धन
बाणी रस लराय ॥

२२

नैनन शीश हाथ देखवेकों और श्रवण वचन
सुनवेकी ।
कर छुवन और अङ्को भर भेंटत सुख पायी यह
घरी जनम लेखवेकी ॥
पाछले विरह कों दुख दन्द गयो सोतन अनख
सुख पेखवेकी ।
अकवर शाह पिय सुजान मिले मोकों परम
विचित्र यातें निधरी सुख विलसवेकी ॥

२३

नारन सुमरन मीत जों रिझाऊं साहब वार वार ।
यातें कहियत तुमसों जोतू मनसा पूजावनहार ॥
जेगुण अपार तुम सुनजरतें होत निहाल एसे
रस परस अज्ञान दूर करन बुध विधाता भरे जल्लार ।
तिनके पैरनकों किए जगत आधार सूरतप्रसाद
मागे याहीतें न्यामत अमोघ अपरम्पार ॥

२४

वना वनी नोद भरे होरे बोल खोल मैं मद मकना ।
अरगजे बामे मैं मरगजे शीतलरज फूल मालकेतकी
कर आभरण जोहै कगना ॥

२५

चतुर पिकार किए कण्ठ भुजवे कों पै कोऊ
कोऊ जानत है भजाय ।
नामसों सब लेत नेम वरस करके सुनावै गाय ॥

२६

चन्दन खोर अङ्ग अङ्ग चढ़ाय अबीर लिए ऐड़ो
ऐड़ो डोलत पनघटहों आपन मन भाय ।
वरवस परधन कण्ठ लगाए तोहि सुख भए कहा
होत है उनके दुख पाए और न मानत तेरे भाए ॥

कबहूं तिलक मुद्रा देत कबहूं वागे बनाए नैनन
नेह जनावत वनमें गाय चराए।
हरिदास डागुरके प्रभु इन तिय नेह जनावन
वेणु बजाए॥

२७

तेरो प्यारो ज्ञानगम्भीर बुध प्रकाश एसे भए
जोहै सब विधको।
मन सों मन मिलायो तें अनेक सुख लेगो जो है
प्रत्यक्ष खाँन नवनिध को॥

२८

मन अदल बदलो पान जाय बदलो जायतो बदलो
लाल प्राणपियारेसों पै बदलो नाहीं जात।
वाको चञ्चलताई निठुरताई सब मो जिय आई
मेरो मन वाके गात॥

२९

तप तेज वल वल वल जाऊं उन पर प्यारे भरे
उजीयारे राजा नरेन्द्र नर।
हितुवन हितूदे मोहे अन हितुवन तन मन दन्द
दइए अलह मिलाए तो इन्द्र वन डर॥

३०

संसारतारण सुमरत पिय जो रीझउ शाह वार बार।
याहीतें कहिये तुमसों तू मनसा पूजावन हार
जे कहे गुण अपार॥

३१

सुमरण वाको करो काहेन जोहै साहब सतार।
यह सुनलेहों श्रवणन और नेहचे मान आन एक
पाक परवरदिगार॥

३२

मेरे मन याही हरि नाम लैले जासे होवे तेरे
नीके काम।
निशिवासर वाही के सुमरणमें रहोंरे और मग पग
जिन धरो सूधे कोंन धों धाओ धाम॥
जोतू एक बार याद करे तोहै याद राखे अष्टयाम।
मदनके साहबकों यों पहचानों अलख अखिल नाम
रिद्ध सिद्ध निधिदाता वैकुण्ठधाम॥

३३

तोहे विराजत साजत शीशफूल जद वेसर गुणी
मिल अङ्गोया मोतियन को गजरा।
ऊदे ऊदे वस्तर सोहै कुचन पर कञ्चन खर सर सोहै
सारी जरकसो धजरा॥

पूरीया धनाश्री—चौताल

इन सैनन लाल के मीठे वैनन एहीं बिकानी।
तिहारे लालनकी प्रकृति मनमानो यातें मैं
जान बूझ होत अजानी॥
प्रेम पियाके जियकी तुम सब जानत तोसे
कौन सयानी।
तोही सों रहस सरस शाह जलाल प्यारे की तें
कौन ठांव रहो ठयानी॥

२

तुव गुण रवि उदै कीनो याही तें कहत तुमकों
बाई उदैपुरी।
अनगिन गुण गायन के अलाप विस्तार सुर जोत
दीपक जो तोलों सों विद्या है दुरी॥
जब जब गावत तब तब रससमुद्र लहरें उपजावत
एसो सरखतो कौन कों फुरी।
जानन मन जान शाह औरङ्गजेब रीझ रहे याही तें
कहत तुमकों विद्यारूप चातुरी॥

३

नीको जुनीको तिहारो प्रीत वालम कहा कहो
जाय जैसो वाको बड़ाईहै।
जित देखूं तित लागोई डोरे पीत कीधों परछाई
बनाई है॥

४

तुम अवध दे आए उन सों वापे अबहों इहाँ
आए होजू सो धन धीर न धरेंगो।
बैठ रहेहो और तियनमें वलमा सों यह रीत कैसे
निभहेगो॥

५

तुम विन रह्यो न परत नेकह मोपै प्यारि ललनारे ।
नेक जो नैनन ओझल होत है तातैं रहत जल भारे ॥

६

मोकों तो सब निश गई प्यारे उड़गन गिनत ।
अवध के वचन झूंठे भए पिय आप रहे कहूं अनत ॥

७

पुरी पै गायन तूंही चातुर रङ्ग रह्यो याह ।
और लाग डाट पैग लाल लागी तिनके भेद लेत ठाह ॥

८

शीश पर चीरा बांधे जबहीं कर धराय ।
मत गत होत अरन के अरन पेच सिर काय ॥

९

परमगुणनिधान सब आस पूजो ।
ए नवाव सलामत जंग दिन दुलह गाजो ॥

१०

ए मेरी पत राख लीजे हजरत शेख सलेम पीर ।
अल्लह महम्मद के कारण हो गुलाम आधीन
तिहारो कहावत तुमहो जगत निस्तारण वीर ॥

११

पाती आई प्यारे पैतें पढ़ी न जात आलीरी यह
गत जब बांचत बोल सब श्रवण सुरत ।
आवत मनमोहन मुख की यातैं जिय हो पिय
और इत आँख निरखवे कों कहत मत ॥
जोलों मूरत रहत आँखियन में तोलों चैन नैना
जल भर आवत तातैं देखबे कों कठिन अत ।
कोऊ जाय लालसों कहो निशिवासर विरह विथा
बीतत मोहे प्रभु सुजान प्राणपत ॥

१२

रिसानीसी हों ककुक रिसानी तिहारे रूप
वाल ममोमें समाए है ।
जकी थकी क्यों रहत जात तुमारे उनीदे आप
लख मेरे अङ्ग अलसाएहो ॥

द्रगन में लाली और असुआ काहे ते प्यारी तुम
बहो रङ्ग रचे देख ए चरण सकुचाए हो ।
और कछू जिन बूझो शाह आजम तुमजो जम्हात
याते मेरो मन भरमाए हो ॥

१३

शाह आजम आनन्दपत तुम मेरी तो यह गत भई ।
सुध बुध भजी नीद भूख तज गई सब सुखन मोतें
आन लई ॥
भूल गए हो सब विसरो विलास रोम मरमको
कहा कहो जैसी विथा छई ।
शाह जलाल चाहत हो पै सवल तैं निवल हौं
रही यातैं नाह गई ॥

१४

हौं तिहारो विध कर तू विधना मेरे सोई विध
कीजिए जा विध हों सब पूरण मेरी ।
एसी जगत की ईशता करुणानिध करत मो पर
हों वन्दन करन हार तेरी ॥
एसो महा अपराधी शरण तेरे की नीके दएसो
मोकों मग न सूझत नैनन तें पाप काटत साकल
तिमिर वेरी ।
छादे छदका कर महम्मद रसूल रूप कुन्दन आधीन
को जीत घनेरी ॥

१५

एरी तेरे रूप की निकाई मोपै वरणी न जाई ।
रच पच विधना तोहे बनाई उरवसी रम्भा तोरी
सम नाई ॥

१६

श्रवण तराजू कीनो रच पच विधना तोहे राग
जोखत आय गई घटी बढ़ी कहे लीनो परल
परी तान ।
सप्त स्वरनको जोती विच एक मन मेरो पूरो
तोल कर ध्यान ॥
अक्षर जिनस जवाहर ध्रुपद कों जल गाहक
जलालदीन अकवर मोल लेत गुणीयन पहचान ॥

पूरीया धनाश्री—तिताला

एरी तेरी सेजको सुसक्यान मोहन मोह लीनो ।
जाको यश रटत सुनि सजनो सो तेरे आधीनो ॥
औरकी संवार के घर किए रहत है आपुन पो
तज दीनो ।
नन्ददास वाको चितवन मेटोना सो कुछ कीनो ॥

२

तू तो नेक कानदे सुन्दर बांसरी में बजावे तुव नाम ।
पुनि पुनि राधे राधे प्राणेश्वरी वह गावै घनश्याम ॥
तुव तन पर सोजो पन जात ताकों उठ परि रम्भन
सुख को धाम ।
नन्ददास एसे पिय सों क्यो रूंठिएरी वल पूरीए
मधुरिपु काम ॥

३

कानको मुरलिया रङ्गन वरसे रङ्गन वरसे ।
नाद अमृत को नवल घटा घुमड़ी अनुराग ही सरसे ॥
सङ्गीरण तान तेरे चपलाको चमकन धुन व्यापन
धुरवा घुमरसे ।
मोहन मधुप मधुर महारस में आनन्द घर पिय के
अधरन पै परसो याही सुन सुन के मेरे जियरा तरसे ॥

धनाश्री होरी—ताल धमार

भलोरी तेरो जोवन ग्वालनीया ब्रज में कैसी ऐड़ी
ऐड़ी डोले ।
वाट चलत हँस देत निशङ्क ह्वै सूधे मुख हूं न बोलै ॥
ग्वालन नारी गँवार बड़ी तू घट घट बतियाँ छोले ।
मस्त भई माने न काहूको कृष्ण सों करले कलोले ॥

२

गहे पकरो काहे वाथ कान्हजू नन्दके वारे ।
वरज रही वरज्यो नहीं मानत सुन्दर ढोट लबारे ॥

३

मानत नाहिन रसिया गहे पकरो मेरो हाथ ।
शिर तें सारी छीन लई मोरी उघर गए सद गाथ ॥

४

एरी तेरी अङ्गीया पर किन मारी है मूंठी ।
दुरक गई कुच खोल दिखावत एसो बनो ज्यों अङ्गठो ॥
एरी सुहाग भरी लालन सङ्ग सुख मौजत क्यों रूंठी ।
मन में रीझ खीज सुख तें गारी यह विध को
तूं झूंठी ॥

५

लाल वस कीनोरी मन मेरो मुरली बजाय बजाय ।
सुध न रही कछू तन की मनकी जवे सुन्दर
दरशन पाय ॥

६

अबतो महमदसा पिया घर आए ।
चहल पहल फागको देखो जित चित
सदारङ्ग वरसाए ॥
चैनन गावो रहस रहस कर लाखन लाखन पाए ।
एक होरी दूजे मिली पियासों यह छवि
कहियन जाए ॥

७

जोबनधन भाग जगत विच खेलो सखी सब फाग ।
कर मज्जन तन रूप सवारो चलहु पिया सङ्ग लाग ॥

८

मेरो मन मोह लियो सुन्दर नैन रैन चैन परत
नाहीं यहो वनवारो ।
मेरे तो एक आधार तिहारे नामको गत मत
तुंही गिरिधारो ॥
जप तप नेम व्रत कछूअन जानो नाम तेरोही एक
अधारो ।
कृष्णानन्द रङ्ग रस छाके दीजे भक्त रस सुख राग
रङ्ग कर शरण तिहारो ॥

९

कवन गुण कौन मन्त्र पढ़ डारो साँवरे अहो तेरो
मरम न जाने नन्दके रावरे ।
एक व्याकुल एक भई जो बावरी सब व्रज गोकुल
हरहि मावरे ॥
सुन धुन मुरली बाट घाट कुल छकीसी रही अपने
अपने ठावरे ।

प्रेम जान प्रभु डार आए पूँजु तिहारे नन्दके नन्दन
दोऊ पांव रावरे ॥

राग धनाश्री—एकताला

मेरा मन वीराय वीराय लीनो लङ्गर तुरकवा
अनार नचाय ।
थकित भई न रही कछु कहिवेको नई पीत रिझाय ॥

२

मन भावन लाड़ लड़ावन रङ्ग उपजावन जगत
जीवावन ।
भाग बड़े सबहीके मिल देहों अशीश जो पायो
महम्मद सा अपरम्पार गुण आमोघ पावन ॥

३

देखे दरवार खाजे कुतवदीन को पूजे मो मन की
मुराद ।
मदत कीने सब औलीया अंबिया और शेख फरीद
दीन अराद ॥

४

आया वना लाड़ली वनी व्याहनकों सुघर चतुर
सुन्दर वना ।
मो तीयनके शीश सेहरा सोहै गल सुआवागा
अति ठना ॥

५

नाद्रद्रतंद्रद्रतनातुम् तननतितनारेत दारेतुम्
तनाद्रनातुम्तनानितदीम् दीम्दीम्तारेतारेदानीदीम् ।
नितनुम्तानदिर तदीयन रेतदानी तकिटधकिट
धुमकिटतकतिड़कड़ानथुं निगनिगतगिनधिगिन
धाधाधातिड़किड़धा ॥

६

ऋतु आई सांवनकी रिमक झिमक झिम झिम
बुंदरीया वरसे ।
या समय मेरो सुहाग भाग पिया सन देखतही
आलीरी सोतें अति तरसे ॥

७

वल वल जाऊं मोता मोरे तोरे रे कारण
लोगवा बुरेरे ।
ले चल अपनें देश सदारङ्ग पाछे घरे निगोड़ेरे ॥

८

एरी मेरो लालहिसुन्दरीया नगीने की जा जारे
वालसुवा की सेभरी ।
उंगरी की सुन्दरी गई मोरे हाथ कंगनवा की कीलरी
न भावे सुन्दरी ॥

९

महाराजा सुणि नाहक छेड़ोजी नाहक नाहक काँई
करोंछो महाराज ।
ओघड़ ह्यासों रस क्योंन करो सायवा हम यह
बात तजि ॥

१०

तूं जिन तोरहु मोरा हरवा प्यारे हौं तो रिसाय
रहोंगी तुम सन जनम जनम तें न बोलूंगी ।
अतही सतावे सास ननदीया मोरी देवे गालियां
करही शोर डोलोंगी ॥

धनाश्री—तिताला

तूं तो बोल सांचे मनकी मेरे आगे कबहूंन झूंठ
बोली प्यारी ।
वे आप महम्मद चतुर सुघर सदारङ्गोले उनकी है
बात मेरे आगे से फेर फेर वार डारी ॥

धनाश्री—एकताला

जिंदड़ी दामा लकवे मैड़े अल्ला साँई असो तैडे
नाल जोड़ व्याकुल रहँदी ।
तुझ विन मैनू होर न मांदा वेसो जो चाँदो सोई
कहँदी ॥

धनाश्री—तिताला

सुरत विसार दई मेरी काहे तें करुणानिध ।
हौं अतिदीन आधीन तिहारो निश दिन तलफत
कहो जीवों किहि विध ॥

देत नाहीं दरशन अपनों इतने में कहा बढ़त रिद्धि।
रसिक प्रीतम अब जीव जीवावन को नाहीं उपाय
दीजे अधरामृति सिद्धि ॥

२

पठावत नाहीन प्रीतम पतियां प्रीतम पतियां।
मेरे कौन अपराध श्याम न ऐसे निठुर भए भूल
गए वे बतियाँ ॥
जो सुमरो तो दुख दूनो बिन सुमरेहू दुख बहु
भतियाँ।
रह्यो न परे बिन देखे छिनहू बिन देखे विरह दहत
अति छतियाँ ॥
परो पुकारूं हाय हाय दई कारी धीरज परी
हरिदि रतियाँ।
तुमहि न बूझे ऐसो रसिकपिय मानत नाहीं
बिन बतियाँ ॥

३

हो मैड़ा हाल सदारङ्गीले महम्मदसा प्यारे।
तिखियाँ निगाह भोहों जटियाँ पलकाँ नाला सीयाँ
सबे जिन्द वक्स लेवे कों टारे ॥

४

मान तूं करवो ना जानेरो।
देखने कों उठ चल वेग काहेकों करत एतो गुमानरो ॥

५

सबल वेख लेवे अपनो अपनी बाको जूड़ेवाली
वाली चवाली।
फिरे लटकेदी काना सोहै बुंदे वाली ॥

६

तेंड़े वेषणदा दिवाणा हो रह्यो मैड़ा हाल
सदारङ्गीले महम्मदसा प्यारे।
तिखीयां निगाह भौंहो जटीयां पलका नाला सीयाँ
सबे जिन्द बकस लेवे कों टारे ॥

धनाश्री—एकताला

अरे मन धीरा रहोरे करिए नाहीं उतावली अबहीं।
जैसो बनो तैसो सहिए बावरे समझिए जबकी तबहीं ॥

२

पियारे तुमारे लाल होठन के लाग रही है
काजर रेख।
कुच मुख पोंछ वेने आयो कियोही खिजायवेको
एक कीनों यह भेष महम्मदसा सदारङ्गीले
पाछे मोसों बात कीजे पहले तो करमें करले
काहू देख ॥

३

ज्योंई जाको मावर सोतो चाहिए जैसे चन्द विन
चोर चकोर को एक छिन न सराइए।
दीपक पतङ्ग मीन नीर विन सदारङ्ग कैसे कर
जराइए ॥

४

टीनवा मोंको कर देरे जो वस होवे पिया मोरा।
गलेको हार टूंगो कर को कङ्गणवा गुण मानोगो
तोरा ॥

५

माई कुहुक कोयलीया बोलेरे विरहा की तान।
अम्बुवाकी डारन महुआ टप टप टपके रोवन
अम्बुवा गदरान ॥

६

सुरजन जिन छाड़िए महम्मदसा पीर हरनको देहली।
देखत कों सब दुखवा गइला सदारङ्ग तन सुखवा
भइला ऐसी निभाय लईरो पीत पहली ॥

७

तुमो सन मनुवा लागीला मोरा मितवा सुरजन राज।
मनकी इच्छा पूरण भई मनभावन मिलिया भई
आज भए काज ॥

८

मेरो मन घटत जात घटही में अटके ऐसी पीतसों।
कोऊ काहू का मरम न जाने महरवान होय
ऐसी रीतसों ॥

९

ऐसो हमें कहा परी जो कहें रङ्ग रस भरे आवो
हमारे घरे।

जावोजो जावो उनी सङ्ग बोलो जिनके लागो गरे ॥

१०

एनो कुड़ीए बांके नैनां बालो ।
अलबेली नवेली नबेली फिरे लट्केदी कानासो
सोहै बुंदे वाली ॥

११

सदारङ्ग नित उठ कर लाए दवाई तैनु निरोग
रखसी रव साँई ।
काज दुनीयादि पुरेथों गुमान न करवे दुनियां
विच वे कदम दरवे शारद बलाई ॥

१२

रङ्गदेरे मोरो सुरख चुनरीया रङ्गरेजवा लाल ।
आज सुहाग की रैनि चढ़ी है मन बांधे बेश
मिशोदीरे खशोका कजरा नैनादा जाल ॥

धनाश्री—ताल सवारी

निरमल वे गावे जो सुध सालङ्ग सङ्कीरण के
भेद जानै ।
और तिवर कोमल सुध वानो बादी विवादी ते
बचाय ओड़व खाड़व सम्पूरण को पहचानैं ॥

२

ए एसो नेहरा कोऊ जिन करो जामें जिया
दुख होवै ।
देखे चैन विन देखे चटा पटी विरह वेदन जाने
न कोय खोवै ॥

३

हरवा हरवा रे ए माइरी गुंध गुंध लाई ।
अब शुभघरी शुभदिन शुभमङ्गरत धन धन धन
भाग तिहारे पाई ॥

धनाश्री—एकताला

नैनादा देख मिशोदी रेख सोहै कजरा ।
मृगनैनी सुन्दर अतिप्यारी चन्द्रवदनी हाथ गजरा ॥

२

मृगानैनी थारे मुख पर चन्द वारो
डावर नैनी चन्द वारो ।
कुच पर श्रीफल कण्ठ पर कोकिल चालपै हंस
वार डारो ॥

धनाश्री—तिताला

चले तुम जावो लङ्गरु अपने मगवा सास ननदीया
रिसाय ।
सदारङ्ग रङ्ग रसकी बतियां करत हो मीठी बात
सुनाय ॥

पुरीया धनाश्री—एकताला

खाजे कुतवदीन के देखे दरवार ।
पूजो मोरे मनको मुराद देवो मुराद सब औलीया
अम्बिया शेख फरीद दोदार ॥

२

एरी हौंतो न जाऊं न जाऊं याहीसों नगरु
बेतो ढाड़े आगे लङ्गरु ।
अब वाङ्ग देख भई डर लागत वरवस बइयाँ
मरोरत करत झगरु ॥

पुरीया धनाश्री—तिताला

बाहों आँख झरके सो अब फरके मा देखा
कवधों मिले साँई ।
हमरे मनमें एसो आवत है उमगत रङ्ग अबहीं
डाल मिलो गल बाँही ॥

२

जबसों पीत लागली मन अपना बस कर लीनों
सबसों ।
रैन दिना नहीं चैनन नैनन कों विन देखे जीया
दुखसो ॥

३

रङ्ग लावे मारु हां वे राजोद लाल पियरवा सजन
माडा आया ।
ऊंचो थांड़ी माड़ी स्यावा अलग झरोखे झों झोलो
मुजरा न पाया ॥

४

छे काई म्हाने हो तकसोर हो सायवां वा कांई
बांको बांको बोल ।

प्राणपति सो ह्यारा मनडो लाग्यो कहो प्रेम को
घुंडो थे खोल ॥

५

जिन्दडी मैंडी राझणवा जुरेदो नजर मिलावै ।
वन्ही होमै विसदो सइयो जो कोई आन के लावै ॥

६

वालमजी सुने सालुडा रङ्ग रङ्गादे ।
सोनेदा हाँस घड़ादे वालमजी ह्याने नथुनीदा
मोती मगादे ॥

७

चूड़ा मैड़ा रङ्ग लावै मैं नाहींयाँ देशावे मोयाँ ।
दरीयापो चोली अनी तनो में कीकर खोलावै मोयाँ ॥

८

आमिल जावै सामी देशोडा विगारणवे ।
वङ्गला छवायदे शायवां खिडकी लगाय दे मनदो
मुराद पुजायणावे ॥

९

चाहो आँखे जरसाँ छल वल कर छैल सो आई ।
छैल छवीला चातुर चित चढ़ सुन्दर पिय कोँ सोहाई ॥

१०

दीमतनदिरनातदारे तददानो ।
नाद्रद्रदानोतुंद्रद्रदानोतारेदानो ॥
न्याए आशके माशूक रमझे कि राम न कातवो
हम खवर नेस्त ॥

११

मैड़ा राँझनु आन मिलावोनी सइए मोया
तांडी कुड़ी गला सानु भावदो नाहीं ।
जो कोई खवर मित्रांदी बोलावो वन्दी हुइयाँ
विन दामोदी मोला साहीं ॥

१२

वालम आयोरी हम चीनोरी ।
शाह आजम पियकी मोहनी मूरत चितवन में
कछु कीनोरी ॥

१३

रव में जोवे मैडा प्यारा जोवे रव तेड़ो दरगाह
विच याही मुरादे मगदो ।
उसदा खेडा सुब सब सावो जान सलामत रख
असाड़ो नित उठ यहो वन्दगी करदो ॥

१४

तननाद्रद्रदीमनाद्रदीमतदीमतननननातननननननीत
ना२तदरेदानोदानो उदानोदानो तदारेतदारत ।
वियारे वाद गेके मोना योम्नला बरे जार मरोज
राद में याखरचे जाए पहरेज ॥

१५

आहे नाद्रदीम् दिरना दिरना दिरना दिरना
दिरना तदानो ।
खलकमें गोयद के खुसरो बुत परस्ती मै कुनद यारे
दयारे मैकुनद वाँ खलके आलम् कारनेस्त ॥

१६

अवतो नेह नजर ही राखे बनी प्यारे ।
तुमरी मया तें जग जीवत नित महम्मदसा
सदारङ्ग कों देत सुख न्यारे ॥

१७

सवल वेखले अपनो अपनो वाको जूडे वालो ।
वालो चवालो फिरे लटकेंदो काना सोहे वुन्दे वालो ॥

१८

पियाके खन को इनकार खानेकमन शवद जिजोहदे
हमचो ।
तेएया वफिस्के हमचो मने ॥

१९

जाजारे अपने मन्दिरवा सुन पावैगो सास ननदीया ।
सुनहो सदारङ्ग तुम कों चाहत है क्या तुम हमकों
छोड़ दीया ॥

२०

मोरे पिय की खबर लावो सगुण विचार अरे बमना
पोथी बांचो मोती वारों आवो अङ्गना ॥

२१

कारे श्यामो नैना नाचत कुँवर कृष्ण वनवारी ।
धीकड़काकड़कड़कड़तकधिलाङ्गतकथुंना ॥

२२

शू करिला म्हारा जोवनीया विलम्बोरे ।
ए सायवाजो म्हासे नित राजो राखो विरह दे रहा
विश्राम म्हारा प्राणीरे ॥

२३

वे कुमाजा शङ्करा कुढे मइलोरे ।
बं बंबं शङ्ख बाजे सामुद्रचा मैड़ा शम्भु के शम्भु
नन्दन लट पट मैनारे ॥

२४

अकेला हेर वन्दी आइयो ।
सुलतान सलेम सुरजनवा आइयो घघाड़ मैंको
घघड़ेल बंदी पाइयो ॥

२५

कुड़ी गल्ला कर दासे थाँरो झा मैंण छड़ मेही
नाल वेले विच रहँदा ।
तपदो सिकदो साड़ा हाल न सुनावो वे परवाहन
वेखोनो मइयो को करदा ॥

मालश्री—एकताला

नेस्त तुम गुलचो बटोयम् दरव वन्द जवा गवा ।
विन सीने गोसे अवाजे बुलबुला वैश नवद ॥

२

अततन्दीम्तदीम्तनुम्तनुम्तननतनन दिरनदिरन
तदरत दरदानी आनुआआतदरेतदरेदानी ।
मकाशो देन सवाए नमुरग नाम वरेक सेजे वकसीए
मानमे वरद खवरे ॥

३

द्रतुं दिरनातुमतननननदीमतदीमतननतारेदानीदानी
दानीदानीउदानीतदानीदरादरातुमदीरनादीमदीम
तुमतरतददानी ।
नाद्रद्रदानी तुंद्रद्रदानी तददानी दीमदीमतुम
तनदिरना ध्रगिड़धाधीत्ता गिदिगननगतिटकतकधिट
तकतकधिटितक तकधिटित तड़ानधा ॥

४

करहों सकल शृङ्गार सजनी सुधार आज पिया
घर मोरे आवेंगे ।
दरशन भए श्यामसुन्दरके रोम रोम सुख पावेंगे ॥

५

अततन दिरतदानी उदानीदानीतुमतनतुमद्रेत
दरेदानी ।
तुमद्रेतनातुमद्रेतननननतदरेतन देरेदेरेतुमद्रेतदरेदानी
उदानीदानीतुमतनतुमद्रेद्रद्रद्रदानी ॥

६

एसे कोहै सुरज्ञानी जो मोहे देह बताय सुरछना
ओडवकी केती ।
सासागगसानीनीपनीनीनमगपमगसागगमपनी
गसासासा ॥

पुरीया धनाश्री—तिताला

भला वे मोयाँ मानु साडे कीसी नाल करदा गलाँ ।
इश्क महोब्बतरी एसी रीत ताड़ी सदारङ्ग ढङ्ग
वेखण नु भलाँ ॥

२

विरहा विथा कासें कहोंरी आली मोरे मनकी ।
तनकी तपत अति रहत होए बढ़ क्योहूं न जात
याद श्यामघनकी ॥

पुरीया धनाश्री—एकताला

आहेदोस्त यारयललोश्री आहे दोस्त तानुंतनं
तनदिरना तदानो दोस्त ।
अच्छे महबूब वादी यहो गल्ल आखाँ नाही छड़दे दोस्त ॥

पुरीया धनाश्री—तिताला

पायलिया झनकार मोरीरे झनन मनन बाजे
झनकारी ।
पिय समझाऊं समझत नाहीं सास ननद
देंगी गारी ॥

होरी ख्याल ताल—तिताला

हरि सुमरणकी माला मत पहर कर जिय विचार ।
हरे हरे मुडीया हरे हरे भगता तुलसी गुरीया
लेहों सम्भार ॥

२

घड़ियाले आज मिलोंगो मैं पिया सन अरे तूं
घड़ी न बजारे ।
पोथी बांचो मोती वारो घड़ी घड़ी रैन बढ़ारे ॥

३

गले आएहो बालमा मेरे सुरत जोवाय काइ
त्रिया सङ्ग ।
तिहारो यह ढङ्ग देखतही पीत को सवाद गयो
अब बाहीतें जाय करो रस रङ्ग ॥

४

तेनु रवदी अमानवे चाहिदड़ा जग दावे तुसी
जीवी जम जम ।
तुसी तखत मुलक अलाने दियो मुवारकी होवो
महम्मदसा मक्के मदीने के थम थम ॥

५

गोहन लागो रहूं तोरे पायन ज्यों तारन को छइयां ।
अरद उरद दोऊ दहरीयारे बाट चलत नहीं पइयां ॥

६

सुरजन वेलो अल्ला दोठडे मुख घोवा दिल राजी
वो काजी ।
तुज्जेहा मानु और न दिसदा को कोकरे
मुल्ला काजी ॥
रुठड़े मकाम थोवो दिल राजी मेरी तेरी दोस्ती नु
आलम जानें कोकरे मुल्ला काजी दिल राजी ॥

७

ए अब मोरे जियको बात अबरे भुजा को ए ।
जरद वरण भई पिय विन मोरो मा जाय वीतो
जानें सोए ॥

पुरीया धनाश्री—ताल सवारी

होए जामे वारी वारी जांबा ह्मारो राजरे यासों
न्हारो मन लाग्यो महाराजरे ।
प्रभु लाल सेज पर सुखवा करो यासों लाग्यो
के ह्मारो काजरे ॥

पुरीया धनाश्री—ताल पांच फरोदस्त

पिउ आइला मोरे मन्दिर सखीरी करिहौं आनन्द
वधावरु ।
सब सखीयन मिल मङ्गल गावो बजावो आनन्द
वधावो मोरे घरु ॥

२

एसो नेहरा जिन लावोरी जासों जिया दुख होवै ।
देखे चैन विन देखे चट पटो यह विध या विधना
अब मोरो सेज न सोवै ॥

पुरीया धनाश्री—आड़ा चौताल

एतू जम जम जम बाजुरे बाज मन्दिलरा साजन
मिलावरा भइला ।
इच्छरीया सब पूजो विधना मेरो यातें भाग बढ़ोला
कष्ट गइला ॥

जयतश्री—ताल चौताल

एरो अब आनन्द भयोरी व्रजमें श्रीकृष्ण जनम
लियो आज ।
शुभघरी शुभदिन शुभही महूरत प्रगट भए व्रजराज ॥
ब्रह्मा वेद पढ़त महादेव दर्शन आए नाचत गोपी
ग्वाल नारद वीण बजाए स्वर साज ।
बैजू नन्द महोत्सव देख मगन भए पूजे मन इच्छा
सुर नर मुनि काज ॥

२

सुफल जनम भयोरी आनन्द गोकुलचन्द वखत
वलि वंश उजियारो ।
नीके दिन नीकी घरी महूरत शुभयोग प्रगटे बड़े
भाग नन्ददुलारो ॥
एक नाचत एक मङ्गल गावत एक मृदङ्ग वीण एक
घन शिखर उचारो ।
एक हरद दूव दधि अक्षत रोरी ले छिरकत बैजू
करत कोलाहल भारो ॥

३

आगन मोर भई व्रजपति के आज नन्द महोत्सव
आनन्द भयो ।

हरद दूव दधि अक्षत रोरीले छिरकत परस्पर
गावत मङ्गल चार नयो ॥
ब्रह्मा ईश नारद सुर नर मुनि हरषित विमानन
पुष्प बरस रङ्ग ठयो ।
धन धन बैजू सत्तन हित प्रगट नन्द जशोदऐ सुख
जो दयो ॥

४

भोर भई आगन बजराजके मङ्गल चार ठयो ।
वलिहारी आज यशोदा की हो पुत्र जनम भयो ॥

५

सब व्रज सुखसमुद्र ह्वै बादो जो उपजो
गोकुलचन्द सुछन्द ।
धुन गरज्यो अमीघ मङ्गल यह सुन दूर होत दुख दन्द ॥
हरषे द्रुम वेली नर नारी प्रेमपियूष मयूष आनन्द ।
आनन्दघन वरसो सरसो नित सुखधन यशोदा
को नन्द ॥

६

कान्हार जनम भयो हो औतारवर ।
जागत पहरुआ सोय गए टूट गए तारे झर ॥
डार छवरीमें ले चले वासुदेव सिंह राह आगे धर ।
चरण छुवन को कालिन्द्री ह्व आई हूंकरत तरुवा तर ॥

७

हेरो लीला भई और जन्म भयो सो लीला भई ।
धन धन धन त्रिभुलोकके ठाकुर उपजे नन्द घर
कान्हर दई ॥

८

प्रसाद दीजे मोकों अपनो दयाकर गुणको वाक्वाणी
तिहारो नाम ले गाऊं ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मुर्च्छना बाइस सुरतके
व्योरे पाऊं ॥

९

दए जो तुरङ्ग अनेक अनमोल राजाधिराज
मोतिन के माल जग मग आछे धरे जात सकल
आभूषण जीने ।
अनेक गज कौन गिने बहोतन पाए हैं एरापत
से एसे पाए समके सो दए कुंजर नवीन नवीन दीने ॥
चहूं रच पच दरशन तुमको प्रसाद दीजे हिन्दूपत
पातसाह अष्ट सिद्ध नव निद्ध लक्ष्मी लीने ।
जहाँ जहाँ जात तहाँ तहाँ भूपन डरने हमकों
किए अयाचक जान राजा राम छत्रपति मौज
दरीयाव दारिद्रभञ्जन वेद विद्या नवीने ॥

१०

जैते गुणी रच पच हारे पै काउन पावै तेरे भेद
वरन न नाहीं ।
और जो निरत भाव कहियत है ते सब लेत अत
गत मत सरम नाहीं ॥
तरो निरत इन नैनन देखो सेवा करे जात तोको
जोइ चरण माहीं ।
दरीयाखाँन पैदे चन्द फिरावनको जो तेह मेरे
जान सीखन को सरस्वती प्यारी तुअ कण्ठ वरणन
चाहीं ॥

११

हे बाज बाजरे मन्दिलरा तू बाज आज व्रजराजके
घर काज ।
नन्दराय घर नीको काज मोतियन चौक पुराय
गावै मधुर धुन साज ॥

१२

व्रजराज सांवरे सुरलो में गावत नीको तान ।
धुन सुनि थकित भए सुर नर मुनि देव गुणि गन्धर्व
चक्रित हैजू विमान ॥
उरपति रप लाग डाट ढूरन सुरन सुर प्रमाण ।
तानसेन नैन सैन वैन दैन गायन करत
राग रङ्ग बन्धान ॥

१३

मेरो मन मोह लीनों सुन्दरनैन रैन परत नाहीं
बनवारी ।
मेरे तो एक ध्यान तुमारो तुमरो गति तुमहो
जानो अवगत गत गिरिधारी ॥

जप तप नेम कछू न जानू नागर नन्दकिशोर
अबतो कोटिन कोटि जतन कर हारी ।
प्राण प्यारे दरश दीजे सुख सम्पत आनन्द कीने
तानसेन शरण तेरे एहो कुञ्जविहारी ॥

१४

मेरे नहीं आएहो नन्दलला जाओ क्योंन तिनके
यह जिनके रस बस भए रहे सुख वाई रैन जागे ।
धन धन भाग सुहागनि सरस सुन्दर तिया रङ्ग
अंग अभूषण रङ्ग देखि व्रजभूप प्रेम पागे ॥
तुमहो गोपालजू बाल जाति अहीर वेपीर
परनारिन सों हित चितरो तुमरे नैना लागे ।
बैजू प्रभु निडर ढीट लङ्गर डगर डगर घर घर
फिरत छैल लागे जावक चिह्न रस चाखे मदन तें
सुखसदन देखो बदन ढोले वागे ॥

१५

यह छिन जिन परसे पाई साह केरी भई तीनकी
सम विध को मुक्त उन मन अतहो आनन्द बाढ़े ।
जिन तन देख्यो भर सुदिष्ट को नजर ना हरत
उनके दुख दन्द दाढ़े ॥
ए सो अवल बलो जाके त्रासतें त्रिहूं पूरने अरि काढ़े ।
धन अँखियन जो देखो यह महम्मदशाह को
दरस धन रसना गुणहु बाढ़े ॥

१६

एसो निडर है जात सबन तें आगे एसो चसको
परो तोहै काहे होरीतें ।
वरजत जेतो नाहीं मानत क्यों हूं डरत नाहीं
श्याम देखत कामदृष्टि चोरीतें ॥
उघर रही अँगिया उर परतें सरक्यो जात
दरडीयो डोरीतें ॥

(न्यामतखां कृत)

१७

अब कित लागी जू खिन खिन टप टप ।
जबतें सीख हमारो मानो तुम नाहीं न अरत
परिहै सटपट ॥
हित बात कों सब समझत है दूर कीजो
यह अट पट ।
कठिन समय काम आवत है कुबोल बोल
गुरुजनके सट पट ॥

१८

भालही में शीशफूल मांगन ही को टीको दियो
भगवान अनेक रङ्ग जवाहर जड़े जाको
जगमगाहट जोत जगत में छाय रही ।
माया मुक्त कर मोही किलारी में गुम्फाय सजल
तासों जीवन माँग पै चढ़ाय अति विराजत सुन्दर
सुहाग सेज लालको गत भाय रही ॥
जासोँ चन्द्रसुखी के मुखचन्द्र सबसों आनन्द
कुशल सुख मोहै लगे अदोत किरण सितारको
बसन भूषण फहराय रही ।
वन ताल तरुणीवर जोरतो सङ्गत वखतके तखत
बैठ सुन छत्र छत्र धरन धर शीतल सङ्ग सब शोभा
की सुगन्ध सो महक रही ॥

जयतश्री—ताल रूपक

तू घट देरे वीर बढ़ैया पालनो राजदुलारो झले ।
लाखन देहों घढ़ावनी और दुख दारिद्र सब भूले ॥

२

हालरो हुलराऊं झूलराऊं कंचन के पालना ।
नगन जड़ित को पलनो पद्मरङ्ग जोती बनी तामें
बत्तीस लक्षना ॥
रङ्ग भरो नन्दवारो झूलत सब तियन गावै लालना ॥

३

लाला जियो कोटि बरस जग उजारो नन्दके वारो ।
रतन जतन कर पायो बड़े भागन सब जगके
उजीयारो ॥

४

दूलह मदनगोपाल राधेजू दुलही ।
मनहु श्याम गौर मिल घन उमड़े उत्तम कनक
उलही ॥

जयतश्री—आड़ा चौताला

नन्दमहरके घर आज माई सोहलरा ।
यशुमत तपत कूंख सिरानी जायो कृष्ण कविलरा ॥
धाधा किट धुम किटि किटि मृदङ्ग बजतहै द्वार
मन्दिलरा ।
आज बधाई व्रजमें छाई कृष्णानन्द भइलरा ॥

२

अचानक आएरी लाल मेरे घर धावतें ।
हों अपनें भवन में ध्यान करतथी मोमनके भावतें ॥

(जीवन खाँ)

जयतश्री—ताल तिताला

नमो नमो गुरु इष्ट हमारे तुँही विद्याधर
त्रिलोक के पति ।
असुरसन्घारन भक्तउद्धारन सीतापति राखले
हनुमत जति ॥

२

एरी मेरो वार सुहायारी एरी मेरो लाल खेले द्वार ।
सुन्दरवदन मदनमनमोहन प्यारो नन्दकुमार ॥
चकई भोंरा चटा वटा लिए बङ्गी फिरावत बार बार ।
सप्तलोक और चउदेभवन मध वही कृष्णानन्द
खिलार ॥

३

सगुण विचारहु पियके आवनकों आली वेग
मिलहैके नाहीं ।
मग जोहत युग सब बीते सदा आँखन आगे
फिरत परछाँहीं ॥

४

एरी मेरा वगर सुहायारी एरी मेरा लाल खिलवार ।
चार पीर चउदेखानिवा दे करम कियो करतार ॥
एक आवत एक जात कार करन कों एक दौरत
चरण गहे धार ।
चिस्ति मया कर जगमगाहटन सों सुख जीते
दुख हार ॥

हजरत सैयद सलार वाला कहियत है मौज
मसुन्दर डार ।
श्रवण सुनो मैं अपनों गरीबनिवाज दूर करत है
दरिद्र विड़ार ॥

५

आनन्द वधावरा हो मेरे मनभावना हो ख्वाजा
मौन दीन दरवार ।
जोई जोई ध्यावे तेई फल पावे विनान कर दूध
पानो न्यारो न्यार ॥

६

दीजीए मोहे मगाय नन्दजो अपने कुंवरको
आनन्द बधाई ।
गावो बजावो चौक पुरावो आँगन ढोल बजतहै
सुर नर मुनि ध्यान धरत है मन इच्छा फल पाई ॥

७

हेली म्हारी पायल बाजैरी ठुमक ठत !
बहोत दिन पाछे आवन भइलवा अब कैसे जाऊं
सबेरे बिकुवा बाजे छन ॥

८

जिन कुओ अचरा मोरारे ढोट लङ्गरवा
श्यामसुन्दरवा वरजोरी करत हो मोसे आन ।
बाट घाट मई रोकत वरवस बहियाँ मरोरत लङ्गरवा
एसे ढीट नादान ॥

९

एरी आज आनन्द भइलवारी इस घर जनम लियो
लालन ।
ख्वाज खिदर कीसी उमर बक्स दीनी अल्ला
चिरंजीवो जगपालन ॥

१०

एरी अब आनन्द भयोरी लालन आएरी मेरे महल ।
तत बीतत घन शिखर मृदङ्ग बजावो ताल तानकी
करोगों सहल ॥

११

सो एरी आज पिया को मिलावोरी सुनों सखी
व्रजबधू सब साथ ।

उन सोतन के जाय रित मानी हमसों करत
झूंठी बात ॥

१२

हमकों देखत रैन बीत गई सगरी अजहूं न आए
पियरवा ।
निशदिन सुमरण तिहारो करत हित चित दे
जियरवा ॥

१३

अम्बुजनैनी म्हारो मन भँवर थारो सम्पट ।
रूप फूल सुगन्ध चतुराई नृतत कटाच्च सुखरे
डोलो भाले अब लाडन सकत रस लम्पट ॥

इति पूरीधा धनाश्री मियाकी धनाश्री जयतश्री
रागिणी सम्पूर्णम् ।

—— ० ——

रागिणी मालश्री

अथ ध्यान

रक्तोत्पलं हस्ततले दधाना विभावयन्ती तनुदेहवल्ली ।
रसालवृक्षस्य तले निषण्णा स्तोकस्मिता सा किल
मालवश्रीः ॥

सवैया

तप्त कुन्दनकी दुति दूरि करै मुख चन्द महाकवि
छाजत है ।
पट लाल प्रवालकी ज्योतिहरै कर कुच्च को
फूल विराजत है ॥
विन नेह की बात सुने मुसकात लजात सखी
सुख छाजत है ।
तैसो यह बिशाल रिशाल तिरे यह मालसिरी
अति राजत है ॥

दोहा

खरजगेह स-ग-म-प-ध-नि खाड़व अतही लसन्त ।
वसन्त ऋत तृतीय पहर मालसिरी सरसन्त ॥

मालश्री—चौताल

सागपगसानिनिधधममगसापसानिधसासासानिध
सासागमगसापमपमगसागमपसानिधसामग
सासागपगसा ।
मपधसासानिधसानिधपपमगमपधनिसापधपम
गधामगपगसागमपसानिधमगगसा ॥

२

सुवर्णवरणस्वरूप सो नार रति एकन में अनेक
भाँतिन को बतियां घड़त ।
पहलेही बात तो पढ़ाय लेत पुनि बतराय लेत
जंत्रि लेरो तन्त्रो कढ़त ॥

३

खरज साधे गाऊं मैं श्रवणन सुनहु सुनाऊं ।
बेद पढ़ाऊं जोई जोई कहे सोई सोई उचराऊं ॥
भैरव मालकोश हिण्डोल दीपक श्रीरागमेघ
सुरहो लेआऊं ।
तानसेन कहे सुनोहो सुघरनर यह विद्या पार
नहीं पाऊं ॥

४

कुच महेश नख क्षत दुतीया को चन्द मुक्तमाल गङ्ग ।
अलकसारी लुबध रहो सोई और सोहत अरजन
के सङ्ग ॥
पोहपन के हार पहराई एसो मानो कारो पूजा कर
धरत सपत सोखत रस परस करत अनङ्ग ।
एसे विध के पीउ रति रस कीनों शाहजहां राखी
अरधङ्ग ॥

५

मैं तिहारो रूप देखो मरम न पायो जियाको ।
सुन्दर लोचन कुचकठोर मुखचन्द भोंह धनुष
रंभासो तियाको ॥

६

प्यारी तुअ नैनन जोत को समुद्र तामध डोरे एसे
लागत मानो कहीं वर तकत मनोज जाल परोयोहै।

पियचितमोनके प्रकरवे कों कटाच्छ अञ्जन चारो
लगाय धरोयोहै ।

७

शिक्षा कार अनुकार रंचक भावक गायन तान प्रमाण ।
धात मात योग ध्यान इन भेदन भेद ध्यान शरीर
को सुरत मन्त्र बखान ॥
जे अलङ्कार सुर ताल प्रस्तार विस्तार जानत सब
वहु विध अङ्ग अंग सुजान ।
शाह अकवर गुरु न गुरु सङ्गीतकलानिपुणन
किए भए न गान ॥

८

पूरे पूरे काहो गुणीयन मिलके जाय रङ्गभूमिमें
प्रथमही लागरे चरण धरन शरण ।
इन्द्रछके जा नी रत कारी सो मेरे जान आन वरण
सूधे सुमरण ॥
चन्द्र विलास को विधना रचो प्राण हरण ।
याहीतें रस वस भयो रामचन्द कोनो राजाधिराज
छत्रपति धरणी धर तरण ॥

९

वालापन गयो तरुणपन आयो अब थोरे थोरे
भयो गज में मंत ।
ज्ञानमहावत गजवाग लाज किए घूंघट अन्धारी
डारे कुलटाके काम खुभी दंत ॥
पञ्चकला श्रोच को क्षुद्र घण्टिका पायल में वरु
घुँघरू मन श्रोर हसंत ।
चलहो सखी मिल जइए जहाँ तहाँ बैठे राजा
वीरमशाह मन कन्त ॥

१०

जेते गुणीजन रच पच हारे पैकोउन पावे तेरे
भेद वरण नहीं ।
जे कछु सप्त त्रवट विकार कहियत है ते सब
लोत भत गत चरण नहीं ॥

११

जाने तार सुर के भेदन को गत साधे असुध को सङ्गत ।
श्रोर जे जे सप्त त्रवट पिकार कहियतु है तिनके
व्योरे उमत जुगत सो एसी भरत के मत पंगत ॥
जानत गीतछन्द धरु धुरपद गावे गुणी बजावे तिनहूं
को बिलोच कर मानत नाही साज रङ्गत ।
शाह अकवर गुरु न गुरु सकलकलासम्पूरण विव
विवेक चित न अङ्गत ॥

१२

जे छिन छिन लगन के समीप रहो एसो घरो लेखे
में गिन लइए ।
सोई तो विचित्र चातुर अधिक सुनिरो जो उनको
प्रेम प्रकृति लिए रहिए ॥
भाग सोहाग ताही को गिनोरो जासों पिय हँस बोले
जियकी बात कहिए ।
शाह अकवर प्यारेके मन रञ्जन घड़ी घड़ी घड़ो
घड़ो पल पल चहिए ॥

१३

आदि महेश कंचन को छत्र द्वितोया को चन्द
मुक्तमाल गङ्ग ।
अलके सारी लुवध रहो सोई श्रोर मोह तजो उरझो
जन काके सङ्ग ॥
पोहपनके हार पहराई अरस परस करत अनङ्ग ।
एसो विधके प्रीत रस कोनों शाहजहाँ राखो अरधङ्ग ॥

१४

हो लालन जानियत जासों प्रीत को तुमरो साँचो ।
काहेकों झूठेही बहरावत पीतम बतियां मुखको
दे काँचो ॥

१५

तेरोरी वदन जोत चन्द्रछ तें अधिक निर्मल
सो समोप लगेहो रहत है मुक्ता ढिंग जैसे पोत ।
प्राणपियारे को प्राण में बसे झूठेही श्रवण कारण दोत ॥
शाह अकवर छत्रपति रहसन अरी तुव पलक के
श्रोट होत ॥

१६

सागमगसागमगपमधपममगरेपगसानिमगसानि ।
गगमपसारेसागसामगससापमगसागगसागगमपनि-
धपमगनिनिधधपपममगगमगगमगसानि ।

१७

जब करता करम करे तो सब कछू पावै
नाद विद्या सुध सङ्गत आवै ।
जान बूझ भूलो फिरेरे क्योन बोही नाम जा
सुमरतही सुर तान गावै ॥
जे नर सुनि गुणि पच पच हारे विना कादर कोउ
ना बतावै ।
तानसेन प्रभु निशिवासर अब तेरो नाम ध्यावै ॥

मालश्री—ताल सुरफाकता

सुर सोच लेत सोही गायन बजायन निरतकारी
निरत करे इत उत जित तित दृष्टि परे ।
प्रथम अति दृढ़ होय तो पावै साधे विद्या नाना
प्रकारन को अब गुरुन माव मन अत धरे ॥
वितत बजाय वेद रङ्ग उपजाय लेत तान करम
सुधङ्ग गिरहे गीत धारो त्रविध तान दृढ लाग
डाट त्रिवट निशङ्क लेत ताल समरे ॥

२

आज को दिन नोकोरो माई मोहि मिले मनभावन।
तन मन धन नैन करोंगी बधाई पायो मैं अब
रङ्ग उपजावन ॥

३

दान कर्ण समान भुजपति ज्ञान विक्रम जोत
दीप मधम वुध विनान ।
गोपीचन्द को दीनो ए राजा राम रावण मार
सीता गहे लायो चतुर सुजान ॥

४

जबतें विछुरे मनमोहन बलमा तबतें यह अखियाँ
पलहु न लागी ।
सब दिन मग जोय जोय निश उड़गन गिन यह
विध जागी ॥

५

अब घरो आवत हैरी लाल माईरी अवधको दिन आज ।
वेग प्रफुलित भयो सुगन्ध मज्जन कर कर आभूषण
वसन बनाय पहरे प्यारी तबही अरगजा भेटत
लगाए तब होवै मन भावतो काज ॥
यह देखो वे गए मनमोहन वलमा अन्तरयामी
स्वामो कवन वरण कारण विरहन कारण तेरे
अनगन मानो पतितन को दीनो सुखसमाज ।
शाह औरङ्गजेव लीनो गलेहो लगाय कीनो निहाल
तोहै वाल दीनो ढिग विव सुहाग भाग आनन्द राज ॥

६

गावत बजावत गुणीयन आप आपन बन्धन राग
धुन गायन सूझे ।
जे कछू करम ते कहे गए सङ्कीरण सुर नर मुनि
तिनको तीख चोक बूझे ॥

७

होड़ो लोचन हुवे वले चोलो वाघम्बर भरे थैली
भखे भाँग गोलो भूतेश्वर ।
वपु डोलो भभूत गङ्ग मोलो मुक्तामणिहि डोलो
नागहार सङ्ग डोलो सिन्धासन हर ॥
रुंडमाल गल रोली रहत सचोली जगवे विन
गुण भंटोली जन वेशो भोली चकवे होली जटा धर ॥

८

सागपगसानिनिधधममगसा ।
पसागरेगगरेसासापपनिनिधपगसा ॥

९

आदिमणि ब्रह्म अवतारमणि कृष्ण युगमणि
सतयुग दिशामणि पूरव सब घट रमण मणि रमैया।
दिवसमणि भास्कर निशामणि चन्द्रमा उडगन
मणि ध्रुव द्वोपनमणि जम्बूद्वीप खण्डनमणि
भरतखण्ड चतुरत हैया ॥

स्वर्गमणि वैकुण्ठ राजनमणि इन्द्र गुरुनमणि
बृहस्पति वेदमणि ब्रह्मा सब जग रचैया ।
हस्तिनमणि ऐरावत विहङ्गमणि वैनतेय पुराणमणि
श्रीभागवत परमहंसमणि शुकदेव कहैया ॥
ज्ञानमणि महादेव ध्यानमणि रोम ऋषि आर्वलमणि
मार्कण्ड गिरिनमणि सुमेर थिरैया ।
तरुनमणि कल्पवृच्च वीरनमणि महावीर सागरमणि
पयसमुद्र सरितामणि विष्णुपदा तीरथमणि
ब्रजस्थान हरि प्रगटैया ।
भक्तनमणि प्रह्लाद जतीनमणि लक्ष्मण नारिनमणि
उरवसी तुरङ्गमणि उच्चैश्रवा इन्द्र धाम रहैया ।
रागनमणि भैरव ऋतुनमणि वसन्तऋतु शास्त्रनमणि
वेदान्त रञ्जनमणि सङ्गीत पार न लहैया ॥
तानवमणि तानसेन गायनमणि नारद गन्धर्व्वनमणि
हाहा हूहू वीणनमणि सरस्वती प्रातही नाम लहैया ।
स्वरनमणि स्वरजसुर सुरत मणि तीव्रा मूर्च्छना मणि
आनन्दी तिथीनमणि एकादशी उत्तममणि गोविन्द
नामले कृष्णानन्द भवसागर पार परैया ॥

१०

निगमगसागमपपमधपममगगमपनिधममरेगम
मगसागसा ।

११

इतराय न चलिए इतराय न चलिए थोड़ेही
में थोड़ेही में गर्भा आँ आँ आँ आँ नौ ।
सोतन में रहबो कठिन है अयानी शाह अकबर
कों जो रिझावै सो होवै वारे पाणी ।

१२

नाद ब्रह्मको अगाध व्योरो जानत गुणीजन
बखानत याको कोउन पार पाइया ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मुरछना उरपति रप
लाख साट राग छत्तीसो तिया इया आई आईया ॥
आरोही अवरोही बाईस सुरत उनञ्चास कोटि तान
के विध गाइया ।
कहै नायक बैजू मृदङ्ग भेद ताल ध्याय सङ्गी मत
कहे तिया इया ऐ ऐया ॥

१३

ओदन नाल और विद्या विरद विरमनरे सुमेर
मारण यज्ञ तरैया ।
एक गज नाल एक बूंदन घुमरोरे प्रति छवि छाज
तान रूप सुज्ञन तिऐ ऐ ऐ ऐया ॥

१४

विद्या श्रवण सुघर सुन सो दिन दिन ही बढ़े
चौंप्स उपज लेत ।
जे सुर सोच कर गावत जो लय सो ताल देत ॥

१५

सिपतमणि अल्ला नवीयमणि महम्मद दीउ जगमणि
चत्रदिग मासूम पीरनमणि मुरतजा अली कौन ।
वासरमणि दिनकर रजनीमणि चन्द्र तारनमणि ध्रुव
मलकनमणि जबरइल यह सब जगत में लीनो बीन ॥
पातालमणि शेष शेषमणि अवनी अवनिमणि नाभ
नाभमणि अरस अरसमणि कुरस लोहमणि कलमा
तुरङ्गनमणि बुराक गजनमणि एरापत राजनमणि
इन्द्र गिरनमणि सुमेर चञ्चलमणि मीन ।
कितावमणि कुरान दीनमणि कलमा अवदनमणि
आदम कामलहवा रागनमणि भैरों भाषामणि
व्रजकी जोतमणि दीपक दीपकमणि नार दीजक
शीतल मलो भिहिस्त एसो भात सुजान अस्तुति कीनी ॥

१६

यह कमल कुदरत कादर तेरी रचतही काहा
थकली यला ।
सबही में छायो याही ते पायो है काल अला ॥
दो दो ते सबही की दीउ आप बनाय राखो लेलेके
महा मरद विल्ला ।
से न सेंन प्रभु पै विल्ला विल्ला तिल्ला सम विल्ला ॥

१७

मैं तोहे पूंछूं गायन बजायन कौन गुरु ज्ञान सङ्गी
कौन मूर्च्छना कौन सुर कौन ग्राम विस्तार ।

कौन मूल ताल कौन प्रथम उचार कौन गुरु को
प्रकार ॥
कहाँ राग बसत कहाँ रङ्गत सङ्गत कौन नाड़ी में
पवन धार ।
कहाँ तीख चोख नेम वरस उरपति रप लाग डाट
आतक खातक औड़व खाड़व सम्पूर्ण तानसेन तत
वितत घन शिखर तार ॥

१८

सर्वमणि अल्ला बडेनमणि खुदाई जोतिमणि नूर
थिरतामणि आकाश कारणमणि करता भोगन
मणि भुगतो सृष्टि करन ।
वेदमणि सामवेद मारण उचाटन मणि अथरवण
नादनमणि अनाहत पञ्चम वेद कलमणि कलमन
पुराणमणि भागवत भाषामणि अखि बननमणि
छन्दावन ॥
आसानमणि अरस कुरस नरनमणि नारायण छत्तन
मणि कल्पवृच रसिकनमणि रासबिहारी भूषणमणि
कौसुभ माण ।
सुखमणि सन्तोष लाभनमणि हरिनाम जातमणि
ब्राह्मण धर्ममणि ईमान तानसेनमणि तानसेन
अखिलमणि भगवान ॥

१९

चिरञ्जीव अवचल मम पर शाहन मणि शाह जलाल।
नर नारी पशु पंच्छी जीव जन्त आशीर्वाद देत
लेत प्रसाद अप अपने होत निहाल ॥
कल्पवृच प्रतच विमोहन धरे त्रिहुंलोक जानत
क्रम क्रम कर ए हाल जो होवै दयाल ।
कहत गोसो सुनियत शाह सवाल सो कीजे जाको
लगत सोई प्यारो गोपाल ॥

२०

अब गुरु गोरख जागे पागे राग रङ्ग नाँच नाद
सप्त कार नाँचे ।
नारद तुम्बर और शिव भाख्यो गानांग जो पेग भेद
मारग देशी जो सुधङ्ग सङ्गीत गत माँचे ॥

२१

नाद अगाध सम्पूर्ण सोध साध समझ सोच ताल
विस्तार ओकार ।
सुर संवार सप्त सलिल सुर सुर सों संगत नाद विस्तार ॥
स्वराध्याय रागाध्याय तालाध्याय नृत्याध्याय
प्रकीर्ण प्रवन्धमृदङ्गाध्याय सप्ताध्याय विचार ।
गुणी गन्धर्व्व सुर नर मुनि पच हारो के उन
पायो तानसेन अपरम्पार ॥

२२

कुतकुततकोतकुभुकीभुकीलुकीलकीढकीढुंकीगते ।
टेकी टकी ढुकी ढकी डिगी डुगी गतले नट
नटीत थुं के थगतें ॥
झैंत झैंत झिड़ झिड़द गत लेत ततत्त ताथेईं थेईं
तातांधिलांग थों गते ।
जनक जनक वगड़थुं थेईं तत् धागिना धागे
तिटितत्ता धिधोथुत्ता ठग नगखिरर थिरर लेत
उघटत मृदङ्ग त्रिकड़तकते ॥

२३

नाद मूल जानत ताल प्रवीण ।
सङ्गीत को ब्योरो सो जानै जो धरे कर वीण ॥

मालश्री—ताल तिताला

उन सङ्ग जो समझि अपने गुण को अन समझके
सङ्ग पौत करवो कौन सवाद पौत करिए ।
जानत नाहीं उनको जाने बलाय जान बूझ काहेकों
दुख में पड़िए ॥

मालश्री—धीमा तिताला

नारायण साधो विष्णु परमेश्वर भगवन्त अविनाशी ।
कोटि भांतिन की जोत मुकट विराजत पीताम्बर
डारे काशी ॥

मालश्री—तिताला

प्रभुजी अबकी बार उवारो ।
दीननाथ दीनदुखभञ्जन है यह विरद तिहारो ॥
अजामिल पै कृपा कीनो नाम लेतही तारो ।
ग्राह मार गज फन्द छुड़ायो वाको कियो विस्तारो ॥

खभ फोड़ हिरणाकुश मारो टूंक टूंक कर डारो ।
गरभ परीचित रचा कीनो चक्र सुदर्शन चारो ॥
दुखदारिद्र तुम हरो सुदामा मनमें कहा विचारो ।
ठाकुरदास दास चरणन कों याकों काहे विसारो ॥

२

करत हौं सकल शृङ्गार सजनी सुधार आज पियारे
घर मेरे आवेंगें ।
दरशन भए श्यामसुन्दर के रोम रोम सुख पावेंगे ॥

३

तुरकेम सितार होई जब तोरी कमान चढ़ाई
तान ताल सुर सङ्गत सो सुनरे दिल सङ्ग ।
जबहीं चिल्ला खेंचो उनको नाम लेतो रसना तीरको
सो लागे पागे गुणीयनके मैदान नैनाके रंग सुनरे
दिल संग ॥

४

औगुण बगस मेरे तू कृपा कर करतार ।
सुनले इतनी विनति करत हों तोसों दिन दिन
बढ़े मेरो सरस राग सुर तान अक्षर मोहे तार ॥

५

मया के बोलाई लाल सोतिन दुख पायो ।
जे तेरी हितू तिनके आनन्द भयो मन भायो सङ्ग
ले गायो ॥

६

दरद न जान दावे मीयां क्यों नहीं सुणदा मांडड़ी
गलां ।
विन वेखे सानु कल नाहीं पांदी खकरे तेड़ा भलां ॥

७

अबतो आए प्रेमके फन्दे कहां गई जो हठ बढ़ोई ।
नारि निभाय सूधे ह्वै चलिए मिलिए रङ्ग में जों
पानी की नाई ॥

८

अनत रित मान आएरो पिया तिहारो बात में जानी ।
काहे कों दुराव करत हो महम्मदशा चिन्ह प्रगट
देखियत एसो मन आनी ॥

९

मैड़ी जिद तू सांडे नाल लगो वे मीयां मैड़ी वल
वेखन जर भर ।
इण बन्दो तू साड़ा साँई मैड़ी अदा रङ्ग करे मैड़े
नाल तू सुघर ॥

१०

आया जोवन धुए दासरो कनाकर अत वाव लगे
उड़ जांदे ।
इश्क दी भाय सों तत्ती बुझादी नाहीं मदारङ्ग
असुआं नाल एती अगन कोट मरजांदे ॥

११

सुन्दर वदन पर लोयन वार वार परत करत घर
जितमें आली तेरेहो रूप की निकाई ।
अनेक भाँतिनके तू कटाच्छन करत निशदिन मन वस
करवे कों एरी चतुर तिय एसो वाँन किन सिखाई ॥

१२

एतू अपने मनमें कहा समझो है प्यारी जे तू
पिया के प्यार इतरानो ।
इतनी बात तू सुनरी सखीरो हम सुन्दर वे ज्ञानो ॥

१३

चरण तक आए हो पीर अता तुमारे द्वार ।
करतार तुम सब विध कीनो निस्तार वेको राग
ताल तानसेन सो आज ॥

१४

सरस रस रङ्ग रचाइए राजा नन्दकिशोर ।
अशीश देत तुमको सब गुणी मिल जियो वरस करोर ॥

१५

एरी सहचरी तेरो मनसा सब गई ।
पिया विन वदनद्युति मलिन परी जो मुख पवन
सुकर में मन लई ॥

१६

अब मोसों बोलो क्योंरी ए ढोट लङ्गर वर जोरी ।
सोतन तें रङ्ग रलीयां करत है मेरी चोरी ॥

मालश्री—चौताल

सुधाकर सो मुख आछो उजेरो कैसे कहूं उपमा
याको मोहत हसत वाणी सुधासो।
सकल कलामें प्रवीण चल लालद्रग सुफल करो
जोवन गुण कीजो रूप जोवन मधको तामें वही
है सरितासो॥

२

मन कों मार रहिए जोई चाहे सोई करन न दीजे।
औरको मन बांधवे कारण दरद आपनों मन आप
बांध कर लीजे॥

मालश्री—धीमा तिताला

मीयाँ तैनु भाँदो वे एहो गलां रुसणदो सानु भाँदो
गर लगणिदो हाँवे।
होंदा वे करार रेंदा जार जार वे एक घरो पल
छिन विन बाजू बन नहीं सकदीया हाँवे॥

मालश्री—तिताला

वलिहारो महबूव पीरके डग मगी आवन पर।
पग धरत मन हरत इठिलावत ललचावत
मुलकावत रिझावन पर॥

२

दिल दीवे कलीयाँ मैंड़ो तु दिल वर नाल
अँखिदा किसनु सुनावा जाय।
वेले वीच मेही नालो हसदा खेड़े दात पदीनु कधीना
पुछदा उस वे परवाहनु तुसो समझावण माय॥

३

लम्वी लम्वी जुलफें वालीया मैड़ा मन लीता।
ना जाना मैंड़ो भुलदो मा एफें हाजा टुकीता॥

४

अब तेरे मनमें यह कैसी बात समाई जेतू बान
बात वे झगरावत।
तं तो सकल त्रिनयन सें सज्ञानो है समझ देख
यह मेरी सीख मान प्रेम रस कोज एसो न धरावत॥

५

अबतो मोंकों जानदेरे तुरकवा मोरे मन्दिरमें।
बाट घाट गलीयन में रोके टोके चतुर व्रज सुन्दर
मोरे मन्दिरमें॥

६

एसो सुघर चतुर पिय प्यारे के घर काज आवतरे।
हो रङ्गीले कहत सदारङ्ग रङ्ग रसरो बातरे॥

७

सुंदरीया मोरीरे पियरवा कौन के अङ्गरीया में
नहाँ चीनो।
प्रेम रीत परतीत न जानू तें मोरी पायल गरको
हरवा कीनो॥

८

अब मेरे प्यारे बनरे रे बनरी सों हित चित लारे।
कोट मल लाड़लो कों मन मनाय लीजे सुख
दीजे एक बारे॥

९

अवधि के दिन बीतन लागईला अजहूं न आइला
पिया मो गेह।
ना जान कौन काज रहे किधों लाए काहू सों नेह॥

मालश्री—ताल खमस।

धन धन धन भाग तेरो जो तूं सकल त्रियनमें
पिया के मन भाई।
तोसो रूप जोवन को जोत गुण ज्ञान कों ओप
तोही तें उपजत देखियत सुधराई चतुराई॥

मालश्री—होरी ताल

मैंड़े नाल करतू सदारङ्ग दो गलां मान गुमावो।
जो चाहें तैन उसनु तूं चाहे दुश्मन ताक दोस्त
पहचानो॥

मालश्री—जलद तिताला

वलिहारो महबूव पोर को डगमगे आवन पर।
पग धरत मन हरत इठिलावत मुसकावत
रिझावन पर॥

२

प्यारे सुरजनु भूल आए घर मेरे ।
जासों नहिं लगन लगी तिहारी ताही के जावो सबेरे॥

मालश्री—तिताला

दिमतन दिरना तारे तददानी यल लीयलीयलालले।
नादद्रतंद्रद्रतदो अरे तदेतदा आआआआआआनी ॥

२

गोरी गुजरिया दही बिलोवे अपनें जोवन के जोरे ।
प्रेम मुदित बालगोपाल यश गावे मन्द मन्द
घन घोरे ॥
नूपुर कङ्कण क्षुद्र घण्टिका रज्जु आकर्षत बाजे ।
मिश्रित धुनि उपजत तिहि औसर देखत शचीपति
लाजे ॥
मङ्गलघोष सदा कौतूहल अजन जनम हरि लीनों ।
नन्द यशोमती को सुकृत फल बपु दिखाय सुख दीनो॥
शिव विरञ्चि जाके पद वन्दित सो गोकुल के बासी ।
परमानन्द दासकों ठाकुर पलना झूले सुखरासी ॥

३

काधे लकुटि धरि नन्द चले वन दोऊ बालक
दीने आगे ।
रामकृष्ण सों प्रीति निरन्तर सखा पायो विभागे ॥
पूरव सञ्चित सुकृत रास फल अपनी आँखिन देख्यो ।
सो समान अब कोऊ नाहीं जनम सुफल करि लेख्यो॥
खेलन हंसत पंथमें धावत लड़कार्इ की बानी ।
परमानन्द भक्त वस माधौ चार पदारथ दानी ॥

४

एसे माई लड़िकनि सों आदेश कीजे ।
दूरहिते भए दरस देखिए पांय लागि मागि कछु लीजे॥
अबही हरि ढंढोरि मार सब माखन खाय मोन
ह्वै बैठे ।
हों पचिहारी मेरो कह्यो न मानत विनति करत
जात है ऐंठे ॥
सुनहु यशोदा करतव सुत के चोरी करि करि साधु
कहावे।
यद्यपि एगुण कमलनयनके परमानन्द दास
जिय भावे ॥

५

नाहिन गोकुल बास हमारो ।
वैरी कंस बसे सिर ऊपर नित उठि करे खगारो ॥
गांव गांव प्रति देश देश प्रति लोक लोक प्रति जानी।
इह गोपाल कहाँ ले राखों कहति नन्द की राणी ॥
प्रकट पूतना तृणावर्त्त तें इहै विधाता राख्यो ।
कैसे मिटे कहो हो संतन गरग वचन तब भाख्यो ॥
यद्यपि परब्रह्म अविनाशी महतारी डर मानें ।
परमानन्द प्रीति है एसी पुनि पुनि व्यास बखानें ॥

६

देखत व्रजनाथवदन चन्द कोटि वारों ।
जलज निकट नैन मीन उपमा विचारों ॥
कुंडल शशि सुर उदित अघटनकी घटना ।
कुन्तल अलि माल तामें मुरली कल रटना ॥
जलदकण्ठ सुन्दरतन पीतवसनदामिनी ।
वनमाल शक्र चाप मोही सब भामिनी ॥
मुक्तामणि हार मण्डित तारागणि पाँति ।
परमानन्द स्वामी गोपाल सब विचित्र भांति ॥

७

गाय चराएवे को व्यसनु ।
राधामुख लाय राख्यो नैननिकों रसनु ॥
कबहुंक घर कबहुंक वन खेलन को जसनु ।
परमानन्द प्रभुहि भावे तेरे ए मुख हसनु ॥

८

माई लेन देहु जो मेरे लाले भावे ।
दधि माखन चौगुनों देउगो या सुतके लेखे जाको
जितनो आवे ॥
पलना झूलत कुलदेव आराध्यो जतन जतन वारि
घुटुरुअन धावे ।

सर्व्वस ताहि देउंगो जो मेरे नान्हरे गोविन्दे पाँ पाँ
चलन सिखावै ॥
यह अभिलाष लेत दिन प्रति कब मेरो मोहन
धेनु चरावै ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालकों निरखि निरखि
उर नैन सिरावै ॥

९

यशोमती बूंदति है गोपाले ।
काहू देख्यो मेरो अलक लड़ैतो खेलत हो सङ्ग वाले ॥
इत उत डोरी रही नहीं पावत सुन्दरश्याम तमाले ।
चक्रित नैन अतिशय अकुलानी भई भई बेहाले ॥
सांवरे वरण पोत सेभगुली कच लर लटकत भाले ।
पग पैंजनी कुणित कहुं देख्यो चाल सुराल मराले ॥
घर घर टेरि कहति कहुं देख्यो वरु बूझति गोपी
ग्वाले ।
जो मेरे कगन मगन ही दिखावै ताहि देउं उर माले ॥
काहू ब्रजसुन्दरी लेराखो निजग्रह नेह विशाले ।
नन्दरायजूको आनि दिखावो सुन्दर रूप रसाले ॥
गए प्राण मानो फिरि आए लियो उकंग उताले ।
चूमति नैन शीश मुख ढोड़ी अरु चूमति दोऊ गाले ॥
निज ग्रह आनि करी न्योछावरि तन मन धन
तिहि काले ।
चतुर्भुज प्रभु कों खेलत जानें जिंवावति गिरिधर
लाले ॥

१०

नैन कुरङ्गी रतिरस माते फिरत तरल अनियारे ।
नवलकिशोर श्यामतम धन बन पाएहै नवनिध वारे ॥
नाना वरण भए सुख पोषे श्याम श्वेत रतनारे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कृपा रङ्ग रङ्ग रङ्ग रुचिर
संवारे ॥

११

एकहि आंकजए गोपाल ।
अब यह तन जानें नहीं सखी और दूसरी चाल ॥
मात पिता पति बंधु वेद विधि तजे सबे जञ्जाल ।
श्याम स्वरूप चितमें चुभ्यो परिवोतें जो बहु काल ॥
गहनें मोतिन तोरि जबै हसि चितए नैन विशाल ।
चतुर्भुजदास अटल भए उर घट परसे गिरिधर लाल ॥

१२

तेरे माई लागत हौंरी पैयाँ ।
एक टक बात कहो मोहनको आलीरी लेहूं वलैयां ॥
या गोकुल विधि सें दिन कोने आप चरावत गैयाँ ।
निघटा निघटत नहीं सजनो घड़ी घड़ी जुग भैयाँ ॥
छिनु व्रजतें बाहर ह्वै बूझत जाय लुगैया ।
गोरज छुरित अलकहु देखो आवत कुँवर कन्हैया ॥
कछून सुहाय ताहि बिनु देखे सुत पति पिता न मैया ।
चतुर्भुज प्रभु देखेही जीजे श्रीगोवरद्धन रैया ॥

१३

युगलवर आवत है गठ जोरे ।
सङ्ग शोभित वृषभानुनन्दिनी ललितादिक तृण तोरे ॥
शीष सेहार बन्यो लालके निरखि हंसत मुख मोरे ।
निरखि हरषि वलिजाई गदाधर छबि न बढ़ी कछु
थोरे ॥

१४

हरिको मुख मोहि माई अनु दिन अति भावै ।
चितवनि चित नैननिको सबै छत विसरावै ॥
लाल कों लेले उकंग अधिक लोभ लागे ।
निरखनि न देति निमिष करति ओट आगे ॥
शोभित सुकपोल अधर अलप अलप दशना ।
किलकत इनि किरणनि में ह्वं मोहत मनु रसना ॥
नासिका लोचन विशाल सन्तत सुखकारी ।
सूरदास धन्य भाग देखति नन्दनारी ॥

१५

ललना हो या मुख ऊपर वारि डारो ।
बालकृष्ण लागो मेरी अंखियां रोग बलाय तुमारो ॥
लोचन ललित कपोलनि देखत सच उपजतहै भारो ।
रुचि आनन्द बढ़ावत है अति हसत दे दे किलकारो ॥
लट लटकत भौंहन मसि विन्दु काल सत ललाट
छवि न्यारो ।

भौंह नासिका वरणिन आवे मनहीं मन अति प्यारी॥
अलप दशन अलकन वल बोलन वुद्धन परत विचारी।
अलकनि बीच त्रसरेणु उड़त मानो विध में बीज
उज्यारो॥
सुन्दरताको पार न पावति निरखि नैन मतिहारी।
सुरसमुद्र की बूंद भई सब मिलि मन दृष्टि हमारी॥

१६

कहां लगु वरनो सुन्दरताई।
खेलत कुंवर कनक आगन में नैन निरखि सुख पाई॥
कुलह लसति श्यामसुन्दरके बहु विधि रङ्ग बनाई।
मानहुं नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाई॥
श्वेत पीत अरु असत लाल मणि लटकन भाल झराई।
मानहुं असुर देव गुरु भूमि जसनि रविसों समुदाई॥
अति सुदेश मृदु चिहुर हरत मनमोहन मुख
वगराई।
मानहुं मञ्जुल कञ्ज ऊपर वर अलि पावलि फिरि
आई॥
दुधदन्त छवि कही न जात कछु अलप तलप झलकाई।
किलकत हँसत दूरत प्रकटित मानो विधुसें विध
लताई॥
खड़ो वचन देत पूरण सुख अदभुत इह उपमाई।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास वलिजाई॥

इति मालश्री रागिणी सम्पूर्णम्।

रागिणी पूरवा—चौताल

मोरमुकट पीतवसन सोहत मोहत नवल छैल
नन्दलाल।
यमुना के तट तट नट ज्यों नाचत गावत तान
रसाल॥
तन मन धन नोछावर करहूं वारूं मोतिन माल।
तानसेन प्रभु तुमारे दरशकों सुन्दर रूप गोपाल॥

२

तुह्मारे होत असवार सह नाना राग विस्तार मिल
सुरसलनकार धुंकार बनो रङ्ग उपाय तिन
प्रतिधुन उन सुरपत डर विचार समझ सवारो गुणो
गावत पठाए।
करनान रवन लगो नवदर्पण उड़न मानो असुरन
डर घरन छोड़न लगे अस्तुति करण दुंदवान
दमकन लाग्यो वे मड़ हलन मानो घन गरजन इन
तरफन झाँझ झनकत मानों दाँत तन गहे इन्द्रमें
घर साल लाए॥
तुरई बाजत यों लागत मानो ऐरावत बोलत आवत
बाजत मानों नरसिंहा नकिरो मानों उचैश्रवा
आदिदे सुर सब लगे हैं नए।
शाह मौजदीन को यह असवारो सुनत दिगा
द्रगपाल लङ्केश फनेश छिपो पताल सबन पर
विकराल अरि कोउन ठहराए॥

३

सुआ वागा नोका लागा लागा जागा सारो रैन बनो
के सङ्ग बना।
चौसर गले हार बांध वेले चमेली के विचित्र मालन
गुन्थ गुन्थ लाई और हीरा लाल नग मोति पना॥

४

कहाँ सोखे हर कान्हार रङ्ग ढङ्ग भरे।
मुरली बजाय रिझाय लई सब ग्वालिन घर घर को
वसके प्राण हरे॥
लटपटो चाल अट पटे पेच डग धरत पग परसत हरे।
जगन्नाथ कवि मोह लियो मन छल वल कपट करे॥

५

देखिए जगमगाहट जित तित जरी सरोपाव
सबहो कों पहराए।
वसन भूषण अनगन धन बहु विधि के दाम बरसाए॥

६

रहत न अटके नैन अपनों सो दुराव कियो चाहत
हो वो देत जनाय।

जाके रङ्ग रस रीझे भींझे समझाऊं नाहीं समझत
हिल मिल देत वाही तानसेन बनाय ॥

७

नैकही नैन सैनन दइ होंलेरो लगाय हर जग ठग।
मन और नैन दोऊ पियके पियके सुखदायक
तज ग्रह कौन को कोउ परत पग डग ॥

८

मीठे मीठे हो मीठे मीठे लागत फरिदी गज्ज शकर।
सब कोऊ कहतहै मीठेई मीठे ज्ञान ध्यान कर देखो
शाह अकबर नाम लेत रसना कोनों पवित्रकर ॥

९

लाडली लटक चलत पिय सनमुख अलबेलो।
लटकन में मन अटक्यो लालको गजगत पायन पेलो॥
कमल फिरावत नैना ढरावत रीझ रिझावत दासु
ग्रहेली।
आली गिरिधर पीय वेणी गूंधनमें सोच फूल गुलाव
चमेली ॥

१०

धरे ढेढ़ी पाग ढेढ़ी चन्द्रिका ढेढ़े त्रिभङ्गी लाल।
कुण्डल किरण मानों कोटि रवि उदय होत
उर राजत वनमाल ॥
साँवरे वरण पीताम्बर ओढे चलत डगमगी चाल।
वल्लभ वनतें बन ठन आवत सङ्ग लिए ब्रजवाल ॥

११

एहाँको हटकि हटकि गाई ठठको ठठको रहो
गोकुल को गली सब साँकरो।
जारी आटारी झरोखनि मोखनि उझकत दौरि
दौरि ठौर ठौर तें परत काजरी ॥
चम्पकलि कुन्दकलि वरषत रसभरो तामें पुनि
देखियत लिखे से आँकुरी।
नन्ददास प्रभु जाके द्वारे जाय ठाड़े होत
तें इते बचन माँगत लटकि लटकि जात काहू से
हां करी काहू ना करी ॥

१२

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय गोविन्दको
गायन में बसबोई भावेरो।
गायनके सङ्ग धावे गायनमें सुच पावे गायनको
खुररज अङ्गही लगावेरो ॥
गायनसों ब्रज छायो वैकुण्ठ विसरायो गायन के
हेत गिरि करले उठावेरो।
योचितस्वामी गिरिधारी विश्लेश वपुधारी
ग्वालीया को भेष किए गायनमें आवेरो ॥

१३

मेरे तू जियमें वसति हो नवलप्रिया प्राण प्यारो।
तेरोही दरस परस राग रङ्ग उपजत मान जिनि करे
हाहा हारो ॥
तुँही जीवन तुँही प्राण तुँही सकल गुणनिधान
तो सम कोऊ और नाहीं तोसो हितकारो।
व्यासको स्वामिनी तेरी मयातें ए पायो है नाम
कुञ्जविहारो ॥

१४

सोधे सों न्हाय बैठो पहिरि पट सुन्दर जहा फुलवारो
तहां सुखवति अलकें।
शोभा कल नख कर केश संवारति मानो उड़ुगणमें
उड़पति झलकें ॥
विविध शृङ्गार लिए आगे ठाढ़ी प्रियसखा भरि
आयो आनन्द रतिपति दलके।
हरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी छवि निरखत
मलके ॥

१५

केली कला कमनीय किशोर उभे रस पुंजनि
कुञ्जके नेरे।
हास विलास विनोद करो वलि आलो केतो सुख
है हेरे ॥
वेली के फूल प्रिया गहि पिय पै डारेको उपमा
यो मन मेरे।
नन्ददास मानो सांझ समय बगमाल तमाल को
जात बसेरे ॥

१६

तुव धन कामवेलि अङ्कुर कटाच्च अधर पल्लव पुहुप
तेरो हसनो ।
श्याम तमाल रसाल सों लिपट और गसीहै प्रेमगसनो ।
प्रेमदृष्टि चकोरनि अङ्ग अङ्गछविकी लसनो ।
यह शोभा मोपै कहतन बनि आवै मुरारिदास
प्रभु स्वामिनी गुणकी तो मैं वसनो ॥

१७

गायनके पाछे पाछे नटवर वपु काछे मुरली बजावत
आवत हेरी मोहन ।
अतिही छबीले घग धरणी धरत डगमग उपजत
मग लागे जिय मोहन ॥
खरक निकट जान आगे पाय धरत श्याम ठठको
गाय लागी सब गोहन ।
चितस्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी आवत
निरखि निरखि गोपी लागी हेरी जोहन ॥

१८

छबीले लालकी यह बानक वरणत वरनी न जाय ।
देखत तन मन करी नोछावर आनन्द उर न समाय ।
कन्द मूल फल आगे धरके रहत सचल शिर नाय ।
गोविन्द प्रभु पियसों रति मानी पठई रसिक रिझाय ॥

१९

आगे कृष्ण पाछे कृष्ण इत कृष्ण उत कृष्ण जित
देखूं तित कृष्ण है मईरी ।
मोरमुकट कुण्डल किरण भरे मुरली मधुर तान
लेत नई नईरी ॥
काछनी काछे लाल उपरना पीतपट तिहि काल
देखनही शोभा थकित भईरी ।
चितस्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी निरखत
छवि अङ्ग अङ्ग ठईरी ॥

२०

धरे बांकी पाग बांकी चन्द्रिका बांके विहारीलाल ।
बांकी चाल चलत बांकी गत बांकी मत बांके वचन
रसाल ॥
बांको तिलक बांको भौंह रेखा बांको पहिरे
गुञ्जमाल ।
बांके कर गोवर्द्धन धर्यो बांके मए गोपाल बांकी
है चाल ॥

२१

तेरे मनायवे को नोकोरो लागत मान जोलों
रह्यो प्यारो तोलों लाल ले आउरी ।
और को हस्यो मुख तेरोतो रुखाई आली सोरह
कलाको पूर्यो चन्द विलखाउरी ॥
आङ्गले भरत डग पाछले परत पग एसो छव छाड़ि
किधों पांजं के न पाउंरी ।
नन्ददास प्रभु प्यारी दोऊतो कठिन मई लाडली
मनाजं केधों लालने रिझाजंरी ॥

२२

बाजोरे आज मंदिलरा साजनघर भयो काज ।
रंग रंगनके बस्त्र पहर पहरहो तू सब करे आनंद
मन साज बाज ॥

२३

एरी मैं मान कर पछताय रही बहोरी किधों
मिलेगो मनभावन ।
वेजो मनावत पै हौं नहीं मानत जोवन गरभ
अब कहा कीजे लग्यो विरह तन तांवन ॥

२४

मन मतङ्ग मदनमद मातो फिरत सिय तरेल के सङ्ग ।
गुरुजन पीलवान सीख आंकुश दे दे हारे तेउन
छाड़त तरङ्ग ॥

२५

ढोला लागो गले मुझको गले तुझ लागवे
जैसे होय सोतन नजर जदा ।
बहियां लटकेटी टकेदी चाल जोवन मदा ॥

२६

शुभदिन भई सांचक भई साचक ।
चिर चिर जियो दुलह दुलहिन आशीष देत
सब याचक ॥

२७

आलीरी आए मनभावन
मेरे गृह प्राणजीवावन रङ्ग उपजावन ।
शुभघरी शुभदिन शुभहै सायत मनमोहन ।
सोहन सुन्दर नन्दनन्दन कीनो आवन ॥

२८

करत सब जग काम शुभ होत तबही जब पहले
कह लेत बिसमिल्ला ।
जाते बढ़त दीन अहित पावत एलम अत बिध कों
तत छिन पढ़त कला मुल्ला ॥
अरम कुरस के लोह कलम के बिध जानत
पहचानों रसनाते ररत फिरत लै लै अल्ला ।
अरज सुनत सो लगावो ध्यान सेवहु हजरत
महम्मद रसूल अल्ला ॥

२९

मेरे मन याह याद हरदम याद कर जो होय
तेरे नीके काम ।
निशिवासर वाही के ध्यान में रहोरे ररे अज्ञान
औरमें पग जिन धरे सूधे क्योन जावे दीन धाम ॥
ज्योतूं एक वार याद करे तो तोय याद राखे अष्टयाम ।
मदनराय के साहब को यों पहिचानीए जो क्षण
में देत अष्टसिद्ध और माम ॥

३०

आशिक आशिक महबूब अल्लाह कबहूं
निजामी महबूब ।
कबहूंवे तुमारि रङ्ग रस ह्वै रहत हैं कबहूं तुम
उनके रङ्ग भीने कीने भुवलोक मध इमामी महबूब ॥
तुम तन उन मन एसे ह्वै रहे साहब जिन जानो
नजाय मोहित यह बिध कीने सब घट अंतरयामी
महबूब ।
रवि शशि कहत है ज्ञान ध्यान धर तुम दर्पण वे
दीदार आपस में निशि दिन करत रहत हैं
शूकरजामी महबूब ॥

३१

मैं सुनोरी कान भनक लालन के सुध आवनकी ।
गयो दुख भयो सुख छतीयां आनन्द भई सुध पाई
मनभावनकी ॥

३२

बानप भारे भारे भारे बिन काजर कजरारे
ए द्रग तेरे ।
मानो रूपसागरमें नीलकमल युगल फुल
भ्रुकुटी भृङ्ग गञ्जत एसेरी मन हेरे ॥
मीन हीन मृग छीव किएते खञ्जन बांधि
किए पग चेरे ।
अनियारे उजियारे प्यारी प्यारे तेरे जिन बस कीने
धीरज प्रभु लाल मेरे ॥

३३

सब समूह करिहै तू नर नारी रहसन ले चले
करन लाड़लरिकी मङ्गनकी ।
सहनाईए करलिए और टकोरन वीण रवाव गारनकी
झाँझ झनकारन की ॥
बाजत ए धूम धाम धावत याके अनेक दल
गजदल पयदल अखदल सङ्गनकी ।
तानसेन सब नगर नर नारी प्रफुलित भए गुणीजन
गावत छिरकत अतर गुलाव सुबास आवत
सुगन्धनकी ॥

३४

अजहूं न आए मो घर एरी कौनकें विरमरहे लाल ।
साँझते अधरात लों मग जोवत जोवत भई विहाल ॥

३५

तुमही औलिया निजामी तुम जानो नीके
अल्लह जाने तुम नीके नीको विध नीके रङ्ग वाके
अबूढ़े हो यातें जिकर फिकर ।
जिकर जाहर सावत करना सुत मलकूत जबरुत
लाहुत मजकूर सुनो कहूं गुपत प्रगट समझत
ताकर राखो यातें त्रिहूं लोक मानत जानत
घर घर हो जोय वर ॥

कबहुं अल्ला आशिक होत तुमहूं माशूक कबहूं आशिक
करत रहत अल्लह अल्लह आशिक किए एक पर।
निजामी तुम वे तुम पर रीझ रहे दोऊ रीझ रीझ
रीझत है रीझको वल जात आनन्द गुन्हेंगार
सर्व सर ॥

३६

शोम सोखत तुम को होय नोके कर निजामदीन
औलिया पवित्र तुमारो मरातव सब मलायक जानत
और खलक खलक के जन अमरत।
निरधनो धनो होत अंधा आंख पावत पूत सपूत दें
तुमारे चरण सुलतान मशायक मोहे दीजे जमैयत
और दीन दुनी को यह आनन्द करत रहत सेहत
पोहत कलहत ॥

३७

एसो लियो नाद गढ़ महा तख्ड आरोही अवरोही
अस्ताई सञ्चाई महाविकट निपट अति आगत।
छहो राग वुज मए तीसो भार्य्याके कोट इकईस
मूर्च्छना रंग बाईस सुरतके कंगूरे तीके नीके लागत॥
सप्तस्वर सप्तपीर औड़व खाड़व के किवाड़ तामें
करताल चलत गोला ओला भयो धुरपद को चारो
तुक चतुर दिशामें चुनेतो दोनों एसेई वाको
कीनो लियो रङ्ग जल भरि राखे कण्ठ गुणी के
रिसाल लालके गुण पागत।
हरिदास डागुर गुरुन गुरु ज्ञान कहे एसे जैसे
लरे झगरे रच पचे अटूट टूटमें रीझ देत होरा
मोती रतन फल लागत ॥

३८

एसे वलवन्त प्रचण्ड अडंड डंड जाके डर कांपत
नवखण्ड थर थर।
सुनत धाक धक धक होत छाती द्रगन पालन को
धीर न रहत सकल अरिन जबते गहत कर ॥
तुम अपवलो भुजवलो दलवलो जाके चढ़े धरन
धसकत धर धर।
चिर चिर जीवो शाहनशाह अकवर हुमायूंनन्दन
वीरन वीरवर ॥

३९

री या तनको मत कर मान मनमें नहीं चाहे
मन मन करत हो मान।
मानो मेरी मति मोहनी माननो मो मति मन में
मानो मत करो मोहन सों मान ॥
नुर सुर चितवत मनही मनभावन को माधो
मुकुन्द वेहैं मथुरापति मुरारि नंद दान।
मानरी मान मैंनकाखो माधुर्य्यता तानसेन प्रभु
मनमोहन को मान ॥

४०

हाकिम हादी हकीम करीम मौला करमको
एवन आवे।
गफूर गब्बार रहिमान रहीम पाक परवरदिगार
तेरो नाम सब गावे ॥

४१

रङ्ग भरे दरस देखत मन इच्छा उपजत रसके
रङ्गीले लाल।
तुम अतिसुखदायक सबलायक लागे प्यारो
जाके निरखत ही दुख दूर होत जञ्जाल ॥
रङ्गीले लालको रङ्गीलो मूरति एसे विराजत ज्यों
कण्ठमाल।
गुलाबके प्रभुके रस वस कर लीनों मोहनलाल
कृपाल दयाल ॥

४२

पमगरेसामगसानि सागरे मपमगरेसा।
मधनिसारे सागरे सामगरे सानिनिधपपममगरेसा ॥

४३

निरेगमममधमगगरेसा।
मधसारेसागरेसामगरेसानिरेममगगमध-
सानिधपमगरेसा ॥

४४

रङ्ग रङ्ग के अनेक रङ्ग रङ्गे विधना ताको
वार न पार।

पशु पक्षी सुर नर मनि परमहंस भांति भांति के
भाड़े बनाए श्वेत पीत श्याम रक्त है करतार ॥
तुँही आदि अन्त तुँही तुँही सब में रम रह्यो
तोहितँ सब जग विस्तार।
एकही अनेक होय व्याप रहो घट घट बैजू प्रभु
निरञ्जन वही साकार ॥

४५

मन राजा चित हस्ती असवार बुध मन्त्री सङ्गले
सोच सैना सवार विद्या देश वस करवे कों चढो अब।
पुनि आरक्ष आगे निशान धर रसना तोप बजाय
कुमत सैन दल मार विड़ार दए सब ॥

४६

तानंतदोयनरेना आतननतदानोतनदिरना आतदानो।
उदतनदिरनतदोयनरेनातादानो तनदिरदानो
उदनतदनता आदानो ॥

४७

मुरलिया कैसे बाजे रस सानो गरजि धोँ करे
अमृतवाणी।
अतिहो नाद प्रवाह ताल मूल जिय धरे एसो रस
कहां ते उपजत एसो स्थानो ॥
सप्तस्वर तिनग्राम इकईस मूर्च्छना यह गावत
सब गानो।
तानसेन के प्रभु मुरली अधर धरे जाको त्रईलोक
राजधानो ॥

४८

लालकी बास आवत हैरो तेरे अङ्ग।
मानो मिल आवत है मदमदशा सों पूंछत कहत
हित तङ्ग ॥

पूरवी—तिताला

अकवर सर वर देहो उनके नर वर।
हौं न करोँ अंत न्यारो प्राणपियारे को मेरे
काम दन्द महेज को जपोरो पहर हर ॥

२

कन्हैया काहून देख न देहौं।
पूर्वपुण्य भागन तेँ पायो निश दिन हिया बिच
थिर कर लेहौं ॥

३

तेरे आली रूप पियके तनकोँ खिलोनों निशदिन
लिए रहत सङ्ग।
कबहुँ वागो बनाय कबहुँ बोरो खवाय कबहुं
निरख रीझ दिन दिन बढ़त तरङ्ग ॥
तुँही तन तुँही मन तुँही कर रहो पोय मन
अरधङ्ग।
तानसेन प्रभु प्रवीणके चित चढ़ो एसे जैसे ईश
शीश बसत गङ्ग ॥

४

दीदार पुर नूर एसो जाके दरशकों परसत नैना मेरे
लुबध रहे एसे जैसे चन्द्रकिरण पर चकोर।
एक पल अन्तर रहत न सकों रहौं तुव पायन
समीप तन मन धन जोवन वन दो कोर ॥
जाको अमृतवचन श्रवण सुख होत मेरे प्राण
लेत झकोर।
एसो जोहै तानसेन प्रभु सो दिन दिन सोतन
मो वकोर ॥

५

आयो आयोरे वलवन्त शाह छत्रपति अकवर।
सप्तद्वीप नवखण्ड देश देशान नर नरिन्द कांपे
थर थर डर ॥
अश्वदल गजदल पयदल भारो एकसों एक
योधा अजगर।
एक एक औ सुभट मेधा मे वे कमान गुरुजन जात
सवर ॥
हुमायूं-को-नन्दन जगवन्दन दुशमन अरिगञ्जन
सुनियत जहां तहां जीतत आवत शाह मौजदीन
को लशकर ॥

पूरवी—ताल रूपक

गुजरीया कञ्चनके गात कञ्चनकी जेहर कञ्चनकी
चोली सब कञ्चन भूषण पहरे ।
श्याम वरण पोरी कोरन को लहंगो और ता पर
क्षुद्र घण्टिका लाल चुनो रङ्ग गहरे ॥

२

दीदार पायो मैं शाह अकवरको मई निहाल वन्दी ।
रोशन जम्वीर पूर नूर मरो देखियत आंखन पूतरीन
हिल मिल करन मानो स्नान किए अमृत नन्दी ॥

३

सलोना बड़ी बड़ी आँखन साँवरो सो ढिटोना ।
नित उठ आवत जियकी ना जनावत पनघटही मेरे
सङ्गही रहत है नैन सैन चातुर सुख मोहना ॥

४

तू एकन मानीवे ठोलन अकवर मै तुझ कारण
क्या क्या न कियो ।
और जो कोऊ बातन सुख देत मै जोवव धन तन
मन तोहि दियो ॥

५

तूतो निपट ही कपट कियो हो लाल बलैया बोलै ।
मोसों हिय गाढ़ि अलिंगन को यों कञ्चुकी के बंध
खोलै ॥

६

तोही जानो मन विच करम कर जो एक नाम
वरहकका ।
जे चत्र दिश मारग तार गत तेतोही परसत जो
मानीए हरिनामका ॥

७

ताहि क्यों आवै हो चेन कहांते जावो पिऊ परदेश
गवन कियो ।
मन नाहीं न कल निशदिन तपन तन नेक न
अवनन कियो ॥

८

गरभोलो अति ऐंड़ो भरो कहीं चाल चलत मद
गजको ।
अन खिलो वहु पुष्प स्रोण पर कहि कहों छव धजको ॥
गायन सङ्ग आवन मन भावन खेद खेद मुख लपट
नजरको ।
मुरली बजाई रिझाई सङ्गके कहा कहों ब्रजनिधके
सजको ॥

९

मेरे आए लाल मयाकर अतिही मेरो परम सुहाग ।
मनहुके मानो प्राण पियारे यह नैननही मैं पइयत
अनुराग ॥

१०

आधी रात बाजे मुरलीरो मुरलीरो मुरलीरो
सुरधुन पवन झकोरन ।
बाहीके रङ्ग राते माते मन बिचरे वंश तेरे सुनि एरी
कांन दे दान करोरन ॥

११

बजावै मुरली नन्दलाल मन सुख पाए श्रवण सवाद
दरस लिए जो जो प्राण तरसेही ।
सास ननद को बहानो करके सुनन आई हेरी
धेनु चरावन के मिसही ॥

१२

जाको लाल परदेश बसे ताहे आवै हो नींद कहांते ।
मनही मथत मैन तनको तपत तन अन तन अन
चैन विछुरे जहांते ॥

१३

सब निश जागो हौं हो तिहारे सङ्ग अबही नेक
सोई ए हा हा सोवन देही ।
अबही नेक फिर जगायो चाहत है सो कच्ची नींद
जिन जगाय लेही ॥

१४

तेतो तेतो निपट ही कपट कियो मोसों
लाल वलैया बोले ।
गाढ़ि आलिङ्गन को सहे सो कञ्चुकीके वन्ध खोले ॥

पूरवी—चौताल

सोहत माही मरातव मानो पातुर शोभा रव निशान
जा मन काते निरत कवि सङ्ग गुरु विद विराजे ।

गायन सहनाइन अलापन सुनाय अस्तुति गाय भखो
सुरसली मिरदङ्गी नैन सङ्ग रङ्ग पखो कर नायन
सब दिन उघटन कखो ताल धारी झाझी झर
विस्तार मिल तुरही औ पङ्गी ने सुर छाजे ॥

पूरवी—आड़ा चौताल

अब हरि काहे ब्रजवासो एहैं ब्रजवासो ।
गुपत प्रगट जो मरजादा कौल वचन को हासो ॥

पूरवी—तिताला

शाह अकवर को यश कीरत गाऊं रिझाऊं सकल
सृष्टि के मन श्रवणन ।
चन्द्रभान कहे गुरु के प्रसाद तें सभा में नित
पाऊं अनन्द मनन ॥

२

तू अली कलन्दर शाह असरफ रोझे तन मन सुख
कण्ठ रस करले ।
ज्ञान ध्यान सों पाऊं बजाऊं तेरी अस्तुत रहस रहस
होय समाजेले ॥

पूरवी—धीमा तिताला

पीर निजामी औलिया सब मेरी इच्छा जो भर पूर ।
दीन दुनीमें दीन ईमान पाऊंमें आनन्द सहत
धनसों कीजे हो मामूर ॥

पूरवी—ख्याल तिताला

पियरवा की बास तोमें आवे तू मोहे भावे लग गले
मोरे पिया प्यारी ।
तू जिन लीं लाई तोसो तुही बड़ भागन गहे
सुलक्षण न्यारो ॥

पूरवी—धीमा तिताला

पिया मोरो नथ गई चोरी तुमही लीनी छीनी ।
पूंछेंगे सब घरके लोगवा तुमही अचानक लीनी ॥

२

मोजा माणी मेथे माणी गर रसीया रैण समै राणी ।
भांगडली पोवो सुख करो मन रङ्गमें सालुडारे
अञ्चल छाणी ॥

पूरवी—तिताला

चरण परसत आनन्द सुख भइला मोरे तन मन ।
एसो पीर जरा जरी जर वकसन निजामदीन
औलिया ए धन धन ॥
तनदिरतनदिरनाहैयादोस्ततनदिरतदानि दोस्त
यारे मन मकुन वेबफाई ।
हमचे मरगीनो बीशमील मदा एदरदामे तोया वकुशया
दानादेया अजक पसआ जात कुन् ॥

२

नाजो तेरा चूड़ानो झमकैदा ।
चूड़ा तेडा रङ्ग विरङ्गी वो रङ्ग सुख सोहै पान रङ्गैंदा ॥

३

थारो जोवणरो असभाव मानें नहीं विसर राजीन्द्रजी ।
चटक भरो थारो सुन्दर सूरत यह जब कब आवे
नैननो सरजी ॥

४

कान बजाई मुरली तबतें तनकी भई आन गत ।
श्रवण वेधे प्राण मन वेध्यो काममन्त्र भई विबस
भई सुन मेरी मत ॥

५

दिल वहु वुवादो कल फेर देवो साइयां तुसो ज्यो
आशिकानु जाने सदा रस माने ।
सुकल वल कुलवे तुसो दान थोणा एहों ।
केहा दरद बंदादा हाल पहचाने ॥

६

ए माई आज सो दिन नीको मोहे मिले प्रेमपिया
को सङ्ग ।
गयो दुख द्वन्द होत है आनन्द और वारों नगत
जड़ित गहना रङ्ग ॥

७

जपदे तैड़ा नाम बंदे डरदे जोई ताड़ी महर
नजर नाल पार उतरदे डरदे हजार बार ।
वेशोयंद हाजे सुशुक गुलाब फनो जना मैतो
गुफ तन कमाल वे अदली ॥

८

मत कर बात वे मीया तु साडडी नाल वे ।
मिल करवे असी तरसादा तू सानु ना चहिए
मीया पालवे ॥

९

अततदीयनरेतादरेदानिदीमनादानितुंदरनातदारेदानि ।
पेश मेयद जमने वारि खुदाजा मन्श वद एक परोदन
दासरे दिवारे मेखा हद दिलं ॥

१०

मैड़ाअक्ला जानेदा मैड़े दिलदी बातवे ।
अदारङ्ग यह गला सच कहदे दुख दारिद्र बीच
और कोई नहीं बोसदी जातवे ॥

११

आंदावे नहीं चैन मैनु विन दीठे मह्बूबादे आड़ नावे ।
मैं कोकरा दिल भर आंख देवे लोक दिवाणो मांगोल
सुनजर प्यारा जो नहीं रहस कदा मैनु साडावे ॥

१२

सुनरो मालिन मेरे पिया कारण करदे फूलन के मोल ।
पात पात में आप छिपे हैं रूपन के सङ्ग तोल ॥

१३

कगवा बोले मोरी अटरीया सगुन मयो कछू नीको
कुच भुज फरकन लागो आवन करो तुमहो पियरवा ।
गले डारूं फूलनको हरवा सुहाग तिहारे कारण
करों सोलह सिङ्गरवा ॥

१४

अब मैं कासे करूं प्रीत प्रीत कोऊ नहीं
जगमें मीत ।
इश्ककी कदर कोऊ चातुर जाने मूरख की यहो
परतीत ॥

१५

मैनाल बोलदा क्यों नहीं माए इश्कदी वान पइवे ।
रुठड़े तुकी होदा जान रङ्ग विरहे दोजा झाल लवे ॥

१६

मै तैड़े बारीयां जावां ढोलन साड़े नाल गलां करोवे ।
सदके कीती उथे फन्दी जीथे तू आवणा चल फिरवे ॥

१७

तनदिरनातुमनातदीयनरेदोम दोस्त जावे मन दरया ।
नाद्रद्रदानितुंद्रद्रदानिदोमतानुं दोस्त जाने मन ॥

१८

देखत फुलवारी वार डारी तुम कौनसे आँख मारी ।
जानी तेती कदर न जानी हमारी राज करो एसो
झूंठो प्रीत तुमारी ॥

१९

देख दरवार गाजी सलार को कष्ट जावे धोवे ।
दरिद्रहरण पीर सुखदाई सबन के मेरी तो
मुराद तुमी तन होवे ॥

२०

मक्दूम साहब बिलायत सब विध लायक अल्लाह
रसूल ।
साहब जलाल साहब कमाल घड़ी पल छिन में
केतोई कीनो औलिया चहूं चकमें तिहारी धूम ॥

२१

मोरी नइया पार करो रे अब निजामो ।
तुमहो पीर गंभीर ज्ञान अन्तरयामो ॥

२२

कनगुरीया की मुन्दर मोरी देहो मीत पियरवा
मोरे ए पियरवा मीता मोरे ।
जैसो वैदनीया दिरानीया जेठानिया सब मोरी
उन तन मोरा जो डारे वारीरे जाऊं मैं तोरे ॥

२३

अबतो तोसों लगन लगी नोद क्यों तरसामो ।
पहले तो हंस बस कर लीनो अब जिनि करो
अनीति स्वामो ॥

२४

मैंडा ढोलना है नादान हो सांवरे नूर वदी अमान ।
अँखिया तेड़ी वारी वे दिल बीच खूबी कभी तो
कर पहचान ॥

२५

मैडा नेह तुमोसन लागोला मीत पियरवा
सुरजनुवा वलमाँ ।
सदारङ्ग सन हँस बतीयाँ करले रङ्ग रस वलमाँ ॥

२६

पीर चिस्ती हजरत सुलतान निजामदीन
औलिया ए महबूव ।
करतार आप बनायो नूर तें मामूर सूरत खूव ॥

२७

तेरी वलैया लेहूंरे मनके भवनवा सुरजनवारे ।
निजामदीन औलिया मोपें कहा पढ़ डारो जन्तर
मन्तर टौनवारे ॥

२८

पियरवा से तोरोरे सजनवा मोरे वालमुवा
मीत पियरवा ।
जा कारण हमीसन रूस रहो वलमा जाओ
ताही के तुम बसो जियरवा ॥

२९

मेरो मन तुमीसन अटक्यो लालन चरण धरत गत
ठुमक ठुमक नीको चालन ।
ताता थेई थेई निरत करत हो छूम छननननन
घुंघरु बाजि मोह लई ब्रजवालन ॥

३०

एरी मोकों सब सुख दीनोरी दूध पूत और अन धन
लक्ष्मी पिय पायो गोविन्द रङ्ग भीनो ।
अधमउधारण यशविस्तारण कृपाकरण दुखहरण
सुखकरण आजज कों सब लायक कीनों ॥

३१

आज बाज बाजरे मन्दिलरा पियके आवनके काज ।
सात सखी मिल देहों वधाई वादो नन्दराय घर
मन चित भइले काज ॥

३२

सवाजो मानें साँगानेरो सालुड़ा मङ्गाय दे ।
घट मालवारा चुड़ला मगायदे अँगिया में
अतर दिवायदे ॥

३३

यारो मैं क्या जोरी पियारे हां हां हां हां हां पियारे ।
मुरली बजाय रिझाय लियो मन गई बहियाँ
झक झोरी पियारे ॥

३४

लइरे मोरी श्याम इंडुरोया कैसेक भरूं जलकी
गगरीया ।
बाट घाट मोहि रोकत टोकत अब न रहों तेरी
मथुरा नगरीया ॥

३५

घोली अलावे रुढ़डे मकाम थोंवो दिल राजी ।
मैड़ो तैड़ो दोस्तोनु आलम जाने को करीवे काजी
दिल राजी ॥

३६

सेहरा मोरे लाडले दावो गुँधलावो मोरी
मालनोया ।
वेला चमेली दौनामरुवा जोहा जुही हार पहरायो
लालनोया ॥

३७

सब मीता मोरे मोती लर गईलो तुमही लोन ।
सुन पावै मो घर के लोगवा कौन उत्तर हम
देवही तोरे हार लोने छोन ॥

३८

मत कर बात वे मीयाँ ।
तूं साडड़े नाल मिलकर असीत सादे तू सानु
नाच हो के मीयाँ ॥

३९

मैड़ो अल्ला जानदा मैड़ो दिलदी बातवे ।
अदारङ्ग यह गलाँ सच कहदे दुख दरिद्र बीच
और कोई नहीं विशदी जातवे ॥

४०

जब निरखूं सुन्दर दरशन तोरा तब व्याकुल हो
चित नित लागी रहेत मूरत नैननमें ।
निशिवासर कलन परत विन देखे सइयाँ घरी पल
एक एक छिनमें ॥

४१

जे कारण हमीसे रूंस रहे वलमा ताही के वस
आए निश बसो एहो ।
एती निठुराई काहसे न कीजे हो पीतम
निपट कपट कर ना हँसोएहो ॥

४२

सोहलरा मावो सब मिल सखो सहेलरी साजन
घर काज ।
तत्ता धीधी थं थुं ननना तकट तका धिधि किट
तक्धुम तक्धिधिग नधा बाज ॥

४३

तोरेरे रङ्ग मातो वनरे ए वनरे ए मेरे मेहदी लावन दे ।
चंदुवा तनाइला मण्डवा छवाइला सुवासन सब आईली
बधावा गावन दे ॥

४४

जो जो बतीयां कही हतीं तब कछू नथा पोया सनवा ।
एछ न जाने वेछ न जाने उन कर भेद बतावा ॥

४५

सुलतान निजामदीन औलिया मकदूम चिस्ती
चिराग रङ्ग रङ्गीले पीर घर आनन्द बधाई ।
राग जमावे गुणी गायक आवे देश देश ते
सात सुहागन पूरवी गाई ॥

४६

तूं जो करले घर अपनो परमेश्वर पास ।
और नहीं कोई तेरो छोड़दे सबनको आस ॥

४७

मै कुरवान कीतो यावे माड़डे मोया जोधे तू वे
पैर धरे नीवे ।
जिन्द कुरबान दीतो तेड़े नाल विन दीठो या सानु
कलन परे नीवे ॥

४८

तोरीरे रङ्ग मातो वनरीरे वनरे मेहदी लावनदे ।
चन्दवा तनाइला मडवा छवाइला सुवासन सब
आइला रङ्ग बधावा गावनदे ॥

४९

की तकसीर पाइवो मेड़ी भला यार मुख छ न बोलेरो ।
विनती मान लेहो जरा विहारी बलिहारी यादे
जियदी गांठन खोलेरी ॥

५०

गुजरीया गरवन करोरी दै दै दधि को दान ।
कबके गोपाल माँगत तोसों इतो निठुराई ना कर
मानले अबहीं अजान ॥

५१

प्यारे मोरे आवो घरूं मै करूंगो आनन्द वधाई ।
शुभ घरी शुभ दिन शुभही महरत आनन्द मङ्गल गाई ॥

५२

हर दम याद करेरे मौला नाम को जीय धर नित ।
अदारङ्ग सांची कहे बात अब तुम सुनहो उनहीं
को जहर जित उत तित ॥

५३

मगवा जोहत याछ बीतत निशदिन आलो
कहा कहों उन विन रहन सकत मोरा जीऊ ।
हमसों अबध वद अनत विरम रहिले पीऊ ॥

५४

कगवा बोलइरी तू आगम आवन कों पिय करही
बात आय ।
कुछ भुज फरके और आँखि बांही वेग मिलही
सों धाय धाय ॥

५५

मुंह को तू अति मीठो लागत ए मीसरीरी पोके ।
अमृतवचन सोइके लडुआ खात गुप चुपही रहीली
कोऊ तियान लागत तेरे नीके ॥

५६

एनगरु विगानो तुम जो कहो सो घर आयनोरे
ए नगर गए ।
अदारङ्ग दी गल मानोगे मे उठवे दानाए ॥

५७

वे क्यों नहीं साडडी गलियां यार वे हो भला वे
यार वे आवदा ।
ए बातें नहीं भलियां दिलदा भेद ना बदावदा ॥

पूरवी—आड़ा चौताल

पियसनवा मोरी मा जो जो बतीयां कही हती
तब वहां कोऊ नथा।
एह न जानै वेह न जानै माइरी उन कर भेद
बताव मता॥

पूरवी—तिताल

करत कोऊ कैसे जान मिताई।
रच पच चितवत तोख पोक सी भ्रू कमान दुखदाई॥
प्रीत करी कामर वारे सों मै कछू जान भलाई।
वे अंखिया देखन कों तरसत अदारङ्ग एसो कौनो
खोट कमाई॥

२

योंही रे पीया विन एक टक लागी।
निशदिन निरख निरख देख दुख दूनो भइयो
नैन सइयाँ अनुरागी॥

पूरवी—एकताला

वाको नगर वेतो ढीट लङ्गर जिय ना रहे एरी
हौंतो न जाऊंरी।
जबहो देखों दूरतें आवत दौर धाय परीहौं पाऊंरी॥

२

दिलीया नगरमें यश गाऊं जै जै हरफ दक्षिणा
के सोई मै पाऊं।
सुलतान निजामदीन तुमहो प्रवीण हो आधीन
कैसेके रिझाऊं॥

पूरवी—तिताल

मेरी नथ चोरी गइली तुमही लीनी।
जब पूंछेगे नगरके लोगवा तब में कैसे करिहों
आचर में छीनी॥

२

आयो भंवर रस ले गयो माली।
आवैगो माली सींचैगो क्यारी तोड़ेगो कलियां
संवारेगो डाली॥

३

अणी अणी अणी मैड़ा दिल विच चाक चाक चाक
वाको चाक।
पुनि यानु लगन अंगो दोमे निया चरखे दीसोर खाक॥
चकिया दीन जरीण निकलवे नोया एहो डाढा
चालाक अणी अणी अणी।
हँजुवा नालो चिकड़ होदा आण नैना नु लगी ताक॥

४

अहेके हाज टेढ़ा सइयो नीजे जाणदा लख आदाई।
नाहक नजर बिचो गोलिया करले बड़े बड़े
महका दीया झाँई॥
इसदी गल्लां गुझा तु सानू बूझी मैदी में दीया
क्योंलेही लाई।
जिन वेले दीमे वल छाती पाई खेड़ेदो मैड़ी मिन्द
चाइ माई॥

पूरवी—एकताल

वैरन लाज मेरे पाछे परी हैरी अब मैं कैसे करूं
मन वौराए।
घरवा न उन विन लगत मेरो मन माधो मूरत
हियमें बसाए॥

२

द्रतुमद्रद्रनातनमदिरनाआसारेदानिहैयायारम्
यललीयलीयलललललेद्र।
गरचे पुर आंहको मम केचे आवुरदो निजाम सोज
खुसरो राव दरगाहत ते याज आंवुरदअम्॥

३

जब निरखों सुन्दर दरशन तोरा तब व्याकुल होवै
चित नित लागो रहे मूरत नैनमें।
निशिवासर कल न परत विन देखे मइयां घरी पल
एक छिनमें॥

४

तिहारो कौन कौन बातन को परेखवा करिहों
बलमा तुमतो हो ठौर ठौर के मनभावन।
तेरो नेह जग उर लाय रहो जैसे वरषाऋतु सावन॥

५

दूरसों मारना वे नजारा।
खलक साँईदा मूल करामदा क्याहै वो किसीका
इजारा॥

६

मन्दिलरा बाजइरे मोरी माई ।
धाक धिला धिला धीधी कुकुकुकुकुकुकुझाँझां ।
आई चुंगीतरे लगाई बाजत भेर मृदङ्ग धिकोटिन
किटिन कोटिन किड़ किड़किड़किड़झाँझां ॥

७

मोयाँ मैनू तेरी सूरतदा हेर नहीं दीसदा जोदार
है जग ताई ।
मुजवैनो मीणीदा वोही मेरा साँई राखो मोहे
अपने नेड़े गरे लग जाँई ॥

८

एरी माई हौंतो जाऊं वाही देश जहां मोरा पीय
वालम रहीलो ।
पिय विन मोकों भावे न सुहावे घर आंगन दुवर
भइलो ॥

९

मै नाल बोलदा क्यों नहीं माए इश्क दीवान पइवे ।
रुठड़े तुको होदा जान रङ्ग झाल नइवे ॥

१०

घर मेरे महबूव निजामदीन आयो माई घर मेरे
आयोरी ।
आज सुहाग को रातरी सदारङ्ग न्यामत लायोरी ॥

११

नथड़ी मङ्गाय दे साजना मोंको मोती डालुवा
लगायदे ।
गोरे वदन अति छवि छाने म्हाको मनडा रीझायदे ॥

१२

नथ मुरकानीजो राजोन्द्र ढोला मारु ।
मोती मगायदे सायवा अनमोला वेसर मगायदे
म्हाने अच्छो नीको सारु ॥

१३

मुवारक बांदीया शादीया तोहे दीनो अल्ला रसूल ।
चोक पुरावोनी मङ्गल गावो आनन्द भएहैं चुहल ॥

१४

मै तेड़े वारीयां जावां ढोलन साड़े नाल गला करवे ।
सदके कीतो इथे फन्दी वदी जिथे आणा चल फिरवे ॥

पूरवी—तिताला

विन मद पिये मतवारो अंखिया अँखियां वे काँई
अंखिया ।
काहेको अञ्जन डारो सखीरी तेड़े नैन कटारीयां
लखियाँ ॥

२

आयो भँवर रस लेगयो मालो ।
आवैगो माली सींचेगो क्यारी तोड़ेगो कलीयाँ
सँवारेगो डाली ॥

३

माई अतत दनुतारे दानी अततदनु ।
तातिले२तनदीयनरेतुमतननतुमतानन ॥
पंज जादे इश्क लेवा सेपरसाई परसोदत तार्ते
सालहु मता राजे पियाके नोहभार सो यश ॥

४

खवी वे मोयाँ यार मोयां मेवारो तेरी वाको अदा मेरे
दिल विच ।
सोहनो सूरत मद भरी अँखियां जादुड़ा कीता वो
यार एक पल विच ॥

५

पिया महबूव पीर के घर आ मोहे बन्धावो धीर ।
सुलतान निजामदीन औलिया महबूव पीर ॥

६

मेरा दुख दूर कीजिए सुख दीजिए तुम एसे
गरीवनिवाज हजरत सुलतान औलिया ।
तिहारे दरवाजे गुलाम ठाड़े अरज करे या हजरत
महबूव अपने गरीव पर फजल कीजिए दान दिया ॥

७

तदानीतानदीरनुदीमतदीम ।
तदोम सारेगमपधनिसासानिधपमगरेसा ॥
चतुरङ्ग गाइए बजाइए रिझाइए महम्मदसा को
धाकिटतकधुमकिटतकधेतलाङ्गधुमकिटतकधा ॥

८

है यारे मन यलायलायाललललेतनदिरना उदानो
दानोतदानो ।
नाद्रदीमतुमद्रदीमतनदिरनाओदानोदानोतदानो
तदानो ॥

९

मारु रङ्ग लावै मारु ह्वांवे मारुरा राजीन्द्र पै
पीयारा सजन मेरे आया ।
ऊंची थारी माँड़ी सायवा लाख झरोखे झाँखीला
सुजरा न पाया ॥

१०

कहते थे यों नेह लगे कबहूंन छूटे ।
जावो जू थार ह्वो तुम उनीके भला सदारङ्ग झूंठे ॥

११

हेयारेमनयला२लेदोमतनद्र६दानो ।
तननाद्रद्रतंतननननतननननदीमतनतनतनतन
द्रद्रद्रद्रदानो ॥

१२

अतता द्रनुम तारेदानो नादानो तादानो अहे याहां ।
तातिले२तानाद्रियनरे तुमतनन२ननपंजदये इश्क
तलेवाशिपार साहिपारे सुद तातें सतसाल अमृता
राजेय कन जरा सुद ॥

१३

मीत सुरजन मोरे तुमरे बिना कल न परेई ।
निशिदिन मोकों ध्यान तिहारो सूरत न मोरी
बिसारी रहत ध्यान तेरेई ॥

१४

नईरे लगन मोरी लागी ।
तेरे रङ्गमें मैं निशिदिन रहत ह्वों रंग पागो ॥

१५

दानोदीमतनदिरनातदीमतननतननननतदारदानो ।
उदतनउदननधितिललाअतिलिलानातननन
द्रद्रद्रदानो ॥
वुल वुल नयम् किनार जनम् दर दसर दयम परवान
अम् केसो जमोदम वरन यावरम ॥

१६

पूरवी मुरीद ह्वेवै कुठाड़ी हजरत सुलतान
निजामदीन औलीया पीर महबूब के आगे आयके ।
दारन के खल फुलवन सन भरके सबही बाजन
बाजन लागे कठताल वे हाथ बनायके ॥

१७

धन धन रातरीयां सुहाग की प्यारा मोरा
मिलिया मा ।
सुलतान निजामदीन मेरे घर आया सो अब रंग
घुलीया मा ॥

१८

एरो सखी आनन्द मङ्गल गाऊं अपने लालन
कों गाय बजाय निरत के नीकी भाँत रिझाऊं ।
उघटत सङ्गीत ताथेया ताथैया थैया लासब तांव तत्ता
धीधीथुंथुंनानाधाकिटतकधुमकिटतकधड़ान मृदमृदङ्ग
धाधीगनधा बजाऊं ॥

१९

धुमकिटि२बाजेमन्दिलरा ततताधाधाथुंथुंनाकिट
तकधुंकिटविकिटतकधा यशुमत जायो कबोलरा ।
आवो गावो गुणीजन रंग जमावो नन्दमहर घर
आज बधावो मृदुधुन मृदङ्ग बजावो रसोलरा ॥

२०

काजर कारे अतिसुकवारे नैन तिहारे प्यारे ।
निरखत लगत करत मन वसमें चपल चोंप
अनोयारे ॥
माते मदन प्रेमरस बिलसे रित जीते रण झांरे ।
निधड़क ख्याल खुशाल करत हैं भरे नेह रस सारे ॥

पूरवी—चौताल

एसो बनमाली व्रजचन्द है नवल आली नागर
फुलवारी बन वृन्दाबन लगाई है ।
कोई द्रुम ठाड़े कोई झुके कोई चलत फिरत
कोई कोई योधन ऊपर उमग उमगाई है ॥
कहूं कहूं उरन में राजत विराजत मेवा कहूं कहूं
फूले फल वेली हरियाई है ।

छाय रहे अतिहुलास जहां तहां रस विलास
नित प्रत खुशाल श्रीवर दिखलाई है ॥

पूरवी—एकताला

माई मेरे नैनन वान परीरी ।
जादिन नैना श्याम न देखो बिसरत नाही घरीरी ॥
चित बस गई साँवरी सूरत उरतें नाहीं टरीरी ।
मोरां हरि के हाथ विकानी सरबस दे निवरीरी ॥

२

बंशी गोपाल को आज बाजे ।
अदभुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्त सुरन सों साजे ॥
लाज धीर कुल कान मान डर सुध बुध श्रवण सुनत
सब भाजे ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम सों मिल सब
जपर माजे ॥

३

रहे दोऊ वदन निहार निहार ।
फूलन बीनत श्याम सखी उत इत राधा सुकुमार ॥
लता करणमें रह गई इतवितसों कौन सके निरवार ।
नागरी मिल नैन दोऊन के बड़े ठगन ठगवार ॥

पूरवी—तिताला

डमरु डफ बाजे और बाजे ताल घुंघरु मुरछङ्ग
वीण रबाब किन्नरी झाँझ मृदङ्ग ।
डिम डिम डमरु दारा तवले सारङ्गी सितार तम्बूरा
तुरही नफीरी मुरली सुरनाय करनाल जीलवन्ध
बकालुन कटताल ढोलक जलतरङ्ग सुरमण्डल
मोन ख्याल रङ्ग ॥
राग जहाज पुङ्गी अलगोजा सारङ्ग बंशी वीण बजाय
निरत करत तांडव लास्य गाय कबही एतेरे आगे
अलख रङ्ग ।
एकतारा उपङ्ग पैना पोट वेला अरगन तुरही
नृसिंहा मञ्जीरा नादवीण सुरवीण सरस्वतीवीण
तम्बूरवीण इसराज सरोद स्वरसागर हरि आगे
करत है रागरङ्ग ॥

पूरवी—जोताल

समुझिन परत गति मति राम तिहारी अकथ
कथाकी बात ।
जग प्रपञ्च रचि कियो तामें अनेक जीव भिन्न
भिन्न प्रकृतिरूप मायारत मोहवस जन्मत मरत
केते आवत केते जात ॥
योगी यती तपसी तप करत त्यागी ज्ञान कथत
अरू पढ़त विवेक सहित भ्रमण सकत टारी फिरि
फिरि जात अरुझात
लक्ष्मणदास जबलोन रावरी कृपा होत तबलो न
बूझि परत काम क्रोध मोह मदतरु सेवत
आठोयाम कुमति क्षुधा सोई फल खात ॥

रूपश्री

शरणकी लाज करिए महाराज ।
कृपासिन्धु प्रभु अन्तरयामी राम गरीबनिवाज ॥
कोटिन अधमतारे छिन माहो भये सकल शिरताज ।
लक्ष्मणदास ठौर निज हेरिये कलिमें नाम जहाज ॥

२

मन मूढ़ न मानत कितो समझावत फिरि फिरि
वाही गैल भ्रमत ।
मोह निशामें मातो सोवत जागत काम क्रोध मद
मत्सरताही में मति रुचि उपजावत सांच मानि
जग जानो श्रमत ॥
ज्यों मतङ्ग मधुरस वस डोलत अङ्ग साँकरो बेड़ो
पायन ज्ञानन अङ्कुस शीश रमत ।
लक्ष्मणदास न सुरति करत बलराम रावरे पदपङ्कज
में जाकों सुर मुनि ईश नमत ॥

पूरवी—एकताला

तिहारो बान निपट निठुर दैया हौं नाहीं करी पहचान ।
हौं भोरी तूनिपट सनेही कौन रची विधना विध आन ॥
अब आनन्दघन घुमड़ भरोसे प्राण पपीहा नदान ॥

२

लहरी मोरी श्याम दृढ़ नैया कैसेके भरूं मैं जलकी
गगरीया ।

बाट घाट मोहि रोकत टोकत अब न रहूं तेरी
मथुरा नगरीया ॥

पूरवी—चौताल

काजर कारि अतिसुकमारि नैन तिहारे प्यारे ।
निरखत लगत करत मन वसमें चपल चोप अनियारे ॥
मातें मदन प्रेम रसविलसे रित जीतें रणभारे ।
निधड़क ख्याल खुशाल करत हैं भरे नेह रस सारे ॥

२

एसो वनमाली व्रजचन्द है नवल आली नगर
फुलवारी वन वृन्दावन लगाई है ।
कोई द्रुम ठाड़े कोई झुके कोई चलत फिरत कोई
योधन ऊपर उमग उमगाई है ॥
कहूं कहूं उरनमें राजत विराजत मेवा कहूं कहूं
फूले फूल वेली हरियाई है ।
छाय रहे अतिहुलास जहाँ तहाँ रसविलास नित प्रति
खुशाल श्रीवर दिखलाई है ॥

पूरवी—एकताला

माई मेरे नैनन बांन परोरी ।
जादिन नैना श्याम न देखों बिसरत नाहीं घरीरी ॥
चित बस गई सांवरी सूरत उरतें माहीं टरोरी ।
मीरा हरिके हाथ विकानी सरवस दे निबड़ोरी ॥

२

बंशी गोपाल की आज बाजे ।
अदभुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरन सों साजे ॥
लाज धीर कुलकान मान डर सुध बुध श्रवण सुनत
सब भाजे ।
रसिकगोविन्द अभिराम श्यामसों मिल सब ऊपर
गाजे ॥

३

रहे दोऊ वदन निहार निहार ।
फूलन वीनत श्याम सखी उत इत राधा सुकुमार ॥
लता करणमें रहगई इत वित सों कौन सके निरवार ॥
नागरी मिले नैन दोउनके बड़े ठगन ठगवार ॥

पूरवी—तिताला

डमरु डफ बाजे और बाजे ताल घुंघरु मुरछङ्ग
बीण रवाब किन्नरी झांझ मृदङ्ग ।
डिम डिम डमरु दारा तवले सारङ्गी सितार
तम्बूरा तुरही नफीरी मुरली सुरनाय करनाल
जोलवन्ध बंबकानुन कटताल ढोलक जलतरङ्ग
सुरमण्डल मौन ख्याल रङ्ग ॥
राग जहाज पुंगी अलगोजा सारङ्गी बंशी वीण
बजाय निरत कर तांडव ख्यास्या माय कबही
एतेरे आगे अलख रङ्ग ।
रुकतारा उपंग पैना पोट वेला अरगन तुरही नृसिंहा
मजीरा नादवीण सुरवीण सरखतीवीण तम्बूरवीण
इसराज सरोदय खरसागर हरि आगे करत है
राग रङ्ग ॥

पूरवी—एकताला

जानकी कनकभवन में राजत सङ्ग सहेली ।
रूपउजागर सब गुणआगर नागर मरव गहेली ॥
सासन ढिंग बैठ जाय पायन परत घाय बोलत
मधुर सुरवानी बोली ।
लहारामदास का नर भज नित नित प्रीति नवेली ॥

पूरवी—तिताला

योगी डारे सेली कर जप माला फेरत श्याम गर राजे ।
भस्मअङ्ग अहिमाल विराजे डम डम डमरु बाजे ॥
वाहन वृषभ बसत सब माही जोई करों सोई छाजे ।
याछवि की उपमा को कर सके कोटि काम लख लाजे ॥

२

तान तरङ्ग है सप्तसुर रङ्ग जिन लगाम सुध अलापन ।
मुरछना गज गाह ताल तरल अदभुत गत हय कल
लेकी धुरापन ॥
धारु धुरपद काव्य सजजो ताल सवार गज गमक
निड़ेशन ।
हरिदास डागुर उत्तम नायक जो गुण लहे
गरुवाये मन ॥

पूरवी—चौताल

कमलदललोचन गुणनिधान सुजान जानराय
रामचन्द्र सुखसागर अतिदया दुखहरण ।
दुर्वादल श्याम लाग कोट मुकुट विराजत धनुषबाण
सोहत मोहत सबको मन सरजूके तीर तीर डोलत
सखा सङ्ग कोमलचरण ॥
नख शिख भूषण शृङ्गार मनिगण गर मुक्ताहार
केसरिको तिलक भाए कटिपटवर पीतवरण ।
लक्षणदास शीतल नेन अवलोकत नारि नर थकित
होत अङ्ग अङ्ग रघुवर मूरति जगतारणतरण ॥

२

गरुड़ चढ़ि धाए आए गजहि उवार्यो बार्यो क्षण
मार्हि प्रणपालन गोपाल ।
दीनबन्धु करुणामय केशव आरतहरण शरण राखन
निज एसे दीनदयाल ॥
भक्तन लाज काज वपुधारन दुष्टसिन्धारन कारण
युग युग जब कीनों प्रतिपाल ।
लक्षणदास विरद सम्भारण कृष्णकमलदललोचन
स्वामी कीरति विशद विशाल ॥

३

जानकीरमण सुखभवन दुखदवन प्रभु जान शिरोमणि
सूरजकुलमणि राजाधिराज ।
दशरथनन्दन असुरनिकन्दन जगवन्दन प्रण तारत
भंजन युग युग जन राखत लाज ॥
जनक प्रतिपालन कठोरधनुष खण्डन भूपन
मानगञ्जन राज समाज ।
लक्षणदास यश प्रताप तीन लोक चौदहभुवन
गावत यश सुर नर मुनि धन धन राम महाराज ॥

पूरवी—एकताल

सुनो सखी बांसरिया की तान ।
श्रवण सुनत सुध रही न तनको मोहन मोहे प्राण ॥
घर अङ्गना न सोहावे न मावे विन देखे श्याम सुजान ।
जानकीदास कोई आन मिलावे हरि सब गुणको खान ॥

२

छबीली नागरी हरिजो सों मान न कीजे ।
जागे रङ्ग रङ्गो व्रज सगरो ताको मया सो जीजे ॥
काहेकों बड़ो बड़ो सांस लेतहै असुअन अचरा भींजे ।
शङ्कर्षण प्रभु नीलकमलदल मधुकर होय रस पीजे ॥

२

रङ्गीलो रामको अँखिया ।
सुर नर मुनि जन जीवनखञ्जन मनरञ्जन पखोयाँ ॥
कृपाकटाक्ष लक्षण छवि आछे मृग छोना छकीया ।
सुन्दरवदन सुधा सरोवर मध मानहुं युगल गुरो
भँखीया ॥
प्रेमरङ्ग कारे विन कजरा नैन मिलाय लखोयाँ ॥

४

भली भई आए हरि मेरे ।
हौंरङ्ग रलीयाँ आनन्द मानहूं काज भए मन केरे ॥

५

मोकों माई निशिदिन सुरत लागो रहो नित
पियको ।
कहा कहों कित जाऊं सखीरी कासो कहूं
जियको ॥

६

लगो है साँवरे को सैन ।
अति तीखी चुभ रहीरी मनमें परतन क्योंहूं चैन ॥

७

व्रजके निवासी अरे होरे कान्हा ।
हौंरङ्ग रलीय अपनी उमगसों वंशी बजाय मेरो
मन वौरान्हा ॥

८

भाग सुहाग वाहीको बड़ोहै जोई सखी पियके
मन भाई ।
जाकी छवि प्यारी लगे पीयकों राखे सदा हियरे
लगाई ॥
वोगुण कौन है कोई बतावे जौन गुणन मन
पियकों रिझाई ॥

जब तक जागत तो पिय रहे सनसुख सोवत
कण्ठ लगाय सुवाई ।
पिय सङ्ग तेरी बन रहे काजम अस पिय कैसे
बन आई ॥

२

छैलरे मोरी कान डगरीया जानेदे घर कहूं
फूटे न गगरीया ।
तूं छेड़त लोगनके आगे लाज आवत जिय मोरे
सगरीया ॥
जाय छेडो केहु औरको मोहन मोहीसे कहा
तोरी अटकी पमरीया ।
देर लगत मोरी सास लड़तहै यही कारण कल
मोसे झगरीया ॥
यह विध जो नित छेड़े तो काजम कैसे रहे वह
मथुरा नगरीया ॥

पूरवी—तिताला

यशोदा अन्त हमारा कर राखोरी राम राम
करलेरी ।
माथे खवरू कर लिए माला नाम साँई का लेरी ॥

२

निरेगममपमगममगगरेसा ।
गगमधसारेसानिधपमधनिरेधनिमधगगममगगरेसा ॥

३

लाल तिहारी बतोयन मेरो मन वस कर लीनो ।
जो कछू कहों सो नेक न मानत एतो दुख काहे दीनो ॥

४

पियकी खवर मोहे आन सुनावै ।
जारे कगवा तोरी लूंगी बलैया सुख आवै दुख जावै ॥

५

नैनन लागी एरी मेरे तिहारो श्याम सलोना ।
जानकीदास मिले हरि प्रीतम एक सुगन्ध
दूजे सोना ॥

पूरवी—धमार

गोरी तू गर्भ गुमान भरी जोवन मद छकी
डोले आज ।
मदनमोहन सों सैन करतहै छोड़ दई सब लाज ॥

पूरवी—तिताला

मा पइयाँ लागोलो सइयाँ विन रहोलो न जाय ।
जबतें देश विदेश गइलवा तबतें कछू न सुहाय ॥

२

सुन मोरे नाहा हमसों जिन बोलोरि तुमरे पाय लागूं ।
घरी पल छिन मोहे कलन परतहै रैन दिना मा जागूं ॥

३

एरी हौंतो जाऊं वाही देश पिया जहाँ मोरा
लोभाइला ।
जबहीं देखो नजर सदारङ्ग चरणनमें जाय
समाइला ॥

४

कनगुरीया की सुन्दरीया मोहे देहों मङ्गाय मोत
पियरवा वलमा मोरे अनुयाईरे ।
एकतो वैरन मेरो सास ननदोया दिरानोया जिठानिया
सब मिल हम सन मोरा जियरा डराइरे ॥

५

जो पीऊ दरवजवा लागी ठाड़ी रहूं मैं ठाड़ी
जोऊं बाटड़ी ।
रुणक झुणक बजत बजन वान बसत साज शृङ्गार
पियरवा पिय आवनकी वेर भई थाटड़ी ॥

६

भली भई हरि मेरे आए पूजी इच्छा मनकी ।
हौं रङ्ग रली मन मनावो साल भए सोतनकी ॥
पूरव पुण्य प्रताप तें श्यामसुन्दर देख तपत
गई तनकी ।
रागरङ्ग प्रभु पायो मैं अपनो रतन जतन कर
राखों ध्यान उर उनकी ॥

पूरवी—धीमा तिताला

आज चलो माई औलोया पोरके दरवार देखो
पूरवी दुलहिन बन आई कर जोरे गावत राग रङ्ग ।
सुलतान मशायक मानों व्याहन चढ़िया सब प्रथमो
वरातो मन रङ्ग वाको धन धन रात रङ्ग सङ्ग ॥

पूरवी—तिताला

मौज दरीया का लेखारे।
दिलदरियाव सांई नाम खेवटियारे उतरे वो
नाम परेखारे॥

२

देश देशनकी पातुरन तेरो बहुत यश करो।
तोरे रङ्ग राय तोसीको पै सरघर बाँधे को धरो॥

३

करीम रहीम अब चल पातसाही तुम कीनें
करतारके।
धन करम जान आए खिदमतमें तुमारी सब सरस
भट आवत संसारके॥
जैसो नीमरुद भूलो आपन तन सम मकरन लामा
सकत आगे साहबको भारके।
अहमदशाह राज करो कोटि वरसलों आलम
हुमैनन के सिपाई सरकारके॥

पूरवी—जलद तिताला

मेरे आए लाल मया कर अतिही मेरे परम सुख आज।
मनहूको जानी प्राण प्यारे नैननही में पइयत लाज॥

पूरवी—तिताला

पीर निजामदीन औलिया सब मेरी इच्छा दो भरपूर।
दोऊ जहाँन मे दीन ईमान पाऊं आनन्द सहित
धन ज्यो कीजे मामूर॥

पूरवी—होरी ताल

लाडले वनरे वनरीसे रङ्ग लागा।
अतिही जोवन मद मातो सब निश जागो वनरी
सों तू घामा॥

२

बांका सुरजन नैन मिला सांई रव विन दिठडे नाहीं
राजी।
मेरी तेरी लगन लगी काकरेगा मुल्ला कहा करेगा
काजी॥

पूरवी—एकताला

मस्त फकीरी रुडो लागोरे वैरागी रामारे।
अङ्ग भभूत गले मृगछाला राम नाम पागोरे॥

२

नजर भर दूरसे देखनावे अजव तरे जग वेखनावे।
खलक रामदा मुलक मोहन क्या कोसीदा वेखणा
नजारा दूरसे मारणावे॥

पूरवी—ताल धमार

लङ्गरीया गरभ गुमान मत कर पियासों तेरा
जोवनाहै दिन चार।
तन जोवन अङ्गूरीके जल ज्यों जातन लागी वार॥

२

अहो कैसे मानेगो मन तुम अनत जाय रित मानी।
सुखको मोह से जियको औरनसे कहा मनमें ठानी॥

३

अहो कैसे जान पाओगे भर होरीमें कल जो गए
तुम भाग।
गारी दूंगी दिलाऊं सबनपे मुख मोड़ोगो आज॥

पूरवी—चौताल

करपे गुलफ धरे तिय दुचित अनमानो करके
शृङ्गार विरहन ह्वै के बैठिरी।
पिप पिय रट लागी मग जोहत मोहत रङ्ग
उमंग भरी आलस अङ्ग अङ्ग मरोरत ह्वै कर ऐंठिरी॥
नखशिखलों आभूषण भूषण जग मग रह्यो पिय
आवनको उमाह नाहन पल नेक लेटिरी।
बैजू प्रभु मन मानो आय गए वाहो छिन धन धन
भाग सुहाग नार अङ्ग सङ्ग भेंटिरी॥

२

मुरलो बजावो रिझावो मनमोहन मधुर मधुर
स्वर तान।
सप्ततोन इकईस बाईसो लाय डाट और मान॥
ठाह भेद विलम्बत आतक खातक खरान्तक औड़व
खाड़व पूर्ण आन।
तानसेन प्रभु सङ्गीत गतले नृतत करहो सुगान॥

३

बहुरि बजावो वंशी कान्हर रचक हांहां।
तेरी मुरली मन मोह लियोहै मधुर बजत यमुना
तट हांहां॥

४

माइरी कठिन कठिन कर विहानी आजकी रैन
मोहे लागीहै काम लूक।
सुनरी सखी जैसी मोपर बीती गिरद उरद आन दई
चालिक कूक॥

५

दैरागी आवत मेरे जान।
जाको मिलन वैराग ढूंढ़ फिरी काहू भेद न पायो
करेहै नित ध्यान॥

६

काजर कारे अनियारे रतनारे नैन बनी अञ्जन
कजरारे।
तीख चोंक चटक लागी रहे भौंह कमान तिरछी
चितवन रहत मतवारे॥

पूरवी—सुरफाकता

तुम राखत गुणीयनकी महिमा मान।
अनेक गज तुरङ्गगण और हीरा नग देत करोरन दान॥
इच्छा पूजवो तुम मेरी मनसाके दानी दान।
अल्लाह के नजीकी नबीके दुलारे प्यारे पीर मन पोरन
मो आजजकी विनती मन आन॥

२

सोगत क्यों न लेजो साधे गुरुकी।
औड़व खाड़व सुर सम्पूरण तान पूरण परत
सांचे सुरकी॥

३

मैं पलन जानन देहों प्यारे कों बहोत दिनन बीते
मेरे आए।
मेरे जान काम सूरतसों अब शाह विक्रम पाए॥

४

अकवर गुणसागर गुणविद्याआगर गुणी पावे राग
रङ्ग पाग।
जर कामर और पट पटपर अनेक लाल हीरा दए
एसे सेत मन्दिरमें रागो अन वैराग॥

पूरवी—तिताला

हरिनाम बोलले सुगमा तेरो जनम सुफल सब होय।
एक दिन प्राण पिञ्जराते जब उड़ जायगो तब
कछून बस चलिहै हरिके चरण चित पोय॥
वृथा जनम जात है तेरो तनके पातक ले धोय।
बैजू प्रभु परम कृपाल दयाल है पतितपावन है सोय॥

२

है यह माननी मनायवे कों अतिही इलास जिय
मनहू न माने पिय कैसेक मनाइए।
बहोतही सोंह दई उठ चल फिर प्यारी वाके पाय पर
धरी सीस नवाइए॥
माने न मनायो नेक रच पच हारी कैसे कर वाको
समझाइए।
तानसेन प्रभु प्यारे आप नेक चलिए वल पायन में
शिर नाय विवती कराइए॥

इति श्रीपूरवी राग सम्पूर्णम्।

अथ मालवः

नितम्बिनीचुम्बितवक्त्रपद्मः
शुकद्युतिकुन्तलवान् प्रमत्तः।
सङ्केतशालां प्रविशन् प्रदोषे
मालाधरो मालवराग एषः॥

मालव—चौताल

हारि हमेल सों नौकी लागत और गोरे हाथन
चुरी हरी।
कण्ठ पोति वदनजोति कानन वीरी और वेसरके
सरकी खोर तापर लट पटात लटकत लट सुथरी॥
भुजमृणाल श्रीफल से कुच कटि केहरीजङ्घ कजरी।
चन्द्रवदनी शावकनयनी बोलत अमृतवैन धजरी॥
तानसेन प्रभु रिझाय लायो सोलहु शृङ्गार बत्तीस
आभरण सजरी॥

२

भांति भांतिके भरे घड़े एसो वेधना कुंभार ।
एकन उत मनवावत एकन मध मनावत एकन
नेक सुनावत एकन राखो खालो कर मिकदार ॥
ऐकन देत रीझत एकन लेत रीझत एकनको करोरन
दए एकनको हाथ पर दए मागत भीख द्वार द्वार ।
एकन को नरक एकनको सरग देत तानसेन प्रभु
रचो संसार ॥

मालव—तिताला

जोया अकुलाई आवे आवे मोरी माइरी पोया
गवनको गइलवा ।
उन विन मोकों विरह दुखवा निशदिन नित भइलवा॥

मालव—एकताला

माई मोहे काहकी कहा परी अपने पोयको राखोंगो
गरे लगाय ।
कोऊ लाख कहोतो एकन गिनोरी एरी हौंतो देख
रीझ थकि रही उनको सुभाय ॥

मालव गौरी—ताल तिताल

यह माटीको मूरत यह कुम्भरवाकी जान ।
जिन जानी तिन कछूअन जानी अन जानी पहिचान ॥

मालव गौरी—एकताला

राजा श्रीराम रामचन्द्र ।
पतितपावन करुणासिन्धु सेवकको दीज्ये आनन्द ॥

राग वांड़ी—चौताल

विरहिन बावरी देग सुध लेहो प्यारे ।
जियते कछ कहत वैनन नैनन झरलाय मग जोहत
पाती न आई रावरी ॥
उत्तर बनावत बनहो न आवत यह झक लागी
मोहि पोय पोय बतावरी ।
चञ्चल शशि प्रभु विन तन तलफत रहत और निशा
लागत मयावरी ॥

२

तुम भएहो पोयचन्द वारकी आरसी ।
देखत देखत दुराय राखे पोय चतुर तिय तुम महारसी ॥
प्रगट कहे देत तिहारी यह चित रहो चारसी ।
जगन्नाथ कवि रायके प्रभु जोवन जोर वहारसी ॥

३

प्यारे मेरे आवेंगे ए मनभावन ।
समझ बूझ यह बात सदारङ्ग महम्मदसा के घर आवन ॥

राग वांड़ी—ताल सवारी

आधी रात मोरवा बोलाई प्रीत मगवन कीनो विदेश ।
कहा कहों कौन तीया विरमाए ये ज्यो चित लाय
रहे वाहो देश ॥

२

ए सरस्वती कहन आई कहा भयो ज्यो कहूं
पाछे ते बड़ाई लड़ाई लड़ाई ।
पूरण गुण नायक ने सिखाई पै तेरोसी तानन गाई
न गाई ॥

३

सरस्वती देवी दयानी देवी दया वाकवाणी ।
ऋद्ध सिद्ध दानी तुमही मनमानी दे इच्छाहों
विद्याधर राग रङ्ग रस सानी ॥

मालव श्रीटंक—झपताल

अतिप्रचण्ड प्रभुप्रेम रचायन तूज्यों चढ़ो राजा
रामचन्द्ररे ।
निडर निडर ते सबही ते गज्जन राजनमणि राजेन्द्र
रघुवंशवररे ॥

मालव—ताल सुरफाकता

धमगरेगमगररेसानिधधमससासारेगमनिधमगरेगम
निधधनिससागमनिधमनिमगधसगरेगमगररेसानिध ।
सासानिनिधमगरेनिधनिधमगरेनिधमधममगिरि
धमगरेनिधमगरेगमगररेसानिध ॥
सासानिनिधमगरेनिधनिधमगरेनिधमधममगिरि
धमगरेनिधमगरेगकगररेसानिध ।
सुधवाणी लिए अलापत गीत के प्रमाण नाद को
सुक्ष्म करे ताको कहीयत है गायक सब विध
लायक जाको वादी विवादी अनुवादी के बगैरे
न्यारे न्यारे कर दिखलाये तब सगरो जगत रहस
कहत सब गुणीयनके नायक ॥

निरेगमगरेनिधनिरेनिधरेनिधमगमधनिधमनिरे
गनिरेगमनिधरेनिरेनिधरेनि ॥

धवलश्री—चौताल

तेरो छवि मोपे वरणो न जात ताहे देख रीझे नर
वो नारि ।
उरवसी रम्भा लगन हो लागत और काहे गिन हों
सम तिहारी ॥

ऋषभ राग—चौताल

चरण धर आएरी मोपर मया कर आली धन धन
मेरे भागरी ।
धन आज की घरी धन यह पल महरत मोह
लीनो अपनी शरणरी ॥

राग गौरी—ताल तिताल

ननदीया चवावन मोरीरे ।
सब घर घर करत फिरत कहत झूंठो साचो काहके
लगाए बुझाए कहा होतहै आली सांच कों
कहो आंचरे ॥

२

बाबूको मन्दिर बाजे नाथ गोरख जागे ।
निज ढिग बैठ तो मै सेवा करोंरे बाबू सदारङ्ग
घर काज ॥

मालव—एकताला

यह जग मेला ठेला कहूं गुरु कहूं चेला ।
बाट घाट तीरथ मूरत अतिथ हो विरम रहो
गांव गांव ठांव ठांव रव नाम सो सकेला ॥

गौड़ सारंग—चौताल

[illegible] कित जिय धरीये ॥
जहाँ नेक रीझे तहाँही करत हित ऐसे पोतम
से डरीये ।
बहुनायक प्यारो शाहजहाँ जान सोतन तें वावरी
घरी घरी पल पल छिन छिन अङ्ग सरीये ॥

४

सुनीयत छत्रपति शाहजहाँ किरान सानो की
चढ़वे की आवाज ।

२

जिन करो लरकइयां सइयां रे छाड़दे मोरी बहीयां ।
सास ननदको डरहे महरवान छाड़दे बातें नइया
सइयांरे ॥

३

इन सैनन लाल के मीठे वैनन एहौं बिकानो ।
तिहारे लालनकी प्रकृति मन मानो यातें जिन बूझ
होत अयानो ॥

गौड सारंग—तिताल

मै मिलोंगी अपने पोयसों मोरी माय करोंगो
अनन्द बधावरा ।
मैबंदा तेड़ा नाम साँइदा तुझ वेखनदा चावणा ॥

मालव—एकताला

समधिन अलख लाडली गहलो डोरे भोरे सदारङ्गीले
रङ्गमें ।
समधीको बतीयां सुन सुन फूली अङ्ग नाहीं समाये ॥

२

यह जोवना मोहे अरे मोकों दगा दोए जातरी ।
कारे बार गए घर अपने पल पल सेत समातरी ॥

मालव—तिताला

झुझाय झुमकत झमक गहे कर वार अडन [illegible]
भुज पर चंड ओ वलवंखड डखड अडंड [illegible] आए तिहो ठ
अखखड खखड [illegible] हैं भाव तो दा
धारु गावत नायक गोपाल छत्रपति [illegible] प्रभु राधारमण व
[illegible] ऐया ऐया ऐ

राग ख्याल—तिताला

बतीयां दिन गिन [illegible] अस का हमसन भइली
[illegible] तीयां सदारङ्ग कहो चोर
आजहु धीरज अपराधन प्रो[illegible]

२

एरी घन निठुर धन मेरी छतियां विन प्रो[illegible]
विरह घेरे कल
जोलों दरशन देखों प्राणपति को तोलों आनन्द
सखियां लेहों सखियां ॥

२

मिलावो पियरी पियरी पियरी हौंतो पियरी पियरी
कहत भई पीयरी।
निशदिन सोचत जात कछून सोहात उमग उमग
छतीयां वरषत असुआन तासों अब निशनोद न
आवे नीयरी॥

शीटंक—चौताल

वंशीधर पिणाकधर गिरिवरधर गङ्गाधर चन्द्रमा
ललाटधर होहो हरिहर।
सुधाधर विषधर धरणीधर शेषधर चक्रधर त्रिशूलधर
नरहरि शिव शङ्कर॥
रमाधर उमाधर मुकटधर जटाधर भस्मधर
कुङ्कुमधर पीताम्बरधर व्याघ्राम्बरधर।
नन्दीधर गरुड़धर कैलाशधर वैकुण्ठधर कहे
बैजू बावरे सुनहु गुणीजन निशदिन हरि हर
ध्यान उर धर॥

शीटंक—तिताल

एरी मेती आसन मइली पासन गइली लोगवा
धरे मई कों नाम।
पतितपावनीज परदेश गवन कीनो देहरी न दीनो पाव॥

२

विरहिन बाकें गजरवा बाज बाजन लागे आइरे।
जियत कछ कहतघट घड़ी एमें कहारे करों दई॥

राग—तिताल न आई रावरी॥
उत्तर बनावत बनहो न आ..त यह झक लागी
मोहि पीय पीय बतावरी।
चञ्चल शशि प्रभु विन तन तलकत रहत और निशा
लागत भयावरी॥

२

तुम भएहो पीयचन्द वारकी आरसी।
देखत देखत दुराय राखे पीय चतुर तिय तुम महारसी॥

१

माईरी ग्वालीया आएरी मेरे ग्रेह।
तन मन धन सब उन पर वारों उनसों लागो नेह॥

शीराग—आड़ा चौताल

तू देखरी हरिको मग जोहत खरी।
तुम विन मोकों कठिन बीतत है मिलहै कौन घरी॥

शीटंक—तिताला

घूंघट में मोजो मारणी मारणी सालुवा लड़ीए।
उड़देय देनमा रसल नीरस दे भीनडे लायो॥
जैसे तेरे नैन सलोने तैसेई कजरा पाया मेरी जान॥

जयतिश्री—तिताल

एरी आज आनन्द नन्द महर घर गावहु सखी
सोहलरा।
यशुमत रानी सखीनीको जायो कृष्ण कुवीलरी रारा॥

२

एरी आज आनन्द भइलवारी सोई सव्वर जनम
लीयो लालन।
खाजा खिदर कीसी उमर बकस दीनो रव करे पालन॥

सैनपुरी—तिताल

सो एरी आज पिय को मिलावोरी सुनो सखी ब्रजवधू
सब साथ।
उन सौतन के जाय रित मानो मोसों करत झूंठी बात॥

राग दीपक—चौताल

नाद पार किनहू न पायो रच पच नर जनम गवांयो।
—न मन्ट सप्त सुरन छायो पटदे दीपक
सासानिनिधमगरेनिधनिधमगरेनिध... गायो॥
धमगरेनिधमगरेगकगरेरेसानिध।
सुधवाणी लिए अलापत गीत के प्रमाण नाद को
सुक्ष्म करे ताको कहीयत है गायक सब विध
लायक जाको वादी विवादी अनुवादी के बगैरे
न्यारे न्यारे कर दिखलाये तब सगरो जगत रहस
कहत सब गुणीयनके नायक॥

कुञ्जभवन सुकैया चतुर गायन दीपक राग जमैयारे।
बैजू नायक प्रदीप गाय चिराक जलइयारे॥

मालश्री—धमार

जोवन मदमाती नारि आवत कुञ्जभवनमें सङ्ग लिए
व्रजराज।
हो हो कर धावत गले लिपटत नेकन आवत लाज॥

श्रीगौरी—चौताल

परसत हरि पांय पांय परम प्रेम जाकों महेश शेष
गणेश दिनेश नित नित ध्यावे।
जाकों सनकादि आदि नारद शुक मुनि व्यास अर्थ
धर्म्म काम मोक्ष पावे॥
शंख चक्र गदा पद्म धनुष वज्र जम्बूकफल ऊर्द्धरेख
त्रिकोण षटकोण अष्टकोण धेनुक जब मीन चन्द्र
कल्पवृक्ष चिन्तामणि सोहावे।
विद्विज्जन कुली जै चरण रज जातें रुचिर रुचिर
गुण गावे॥

२

धौरी धूमर पीयरी काजर कहे कहे टेरे।
मोर मुकट शीश श्रवण कुण्डल कटिमें पीताम्बर
पहिरे॥
ग्वाल बाल सखा मण्डलमें आवत व्रज नेरे।
तानसेन प्रभुमुखरज लपटानी यशुमति निरख
सुख [illegible]

[illegible] काहूका कहो
कित जिय धरीये॥
जहां नेक रीझे तहांही करत हित ऐसे पोतम
से डरीये।
वहुनायक प्यारो शाहजहां जान सोतन तें वावरी
घरी घरी पल पल छिन छिन अङ्ग सरीये॥

४

सुनीयत छत्रपति शाहजहां किरान सानो की
चढ़वे की आवाज।
टेढ़ी चाल चलत चितवन टेढ़ी भृकुटी भङ्ग
मटकत अत॥
टेढ़ी तान मुरली में बजावत टेढ़ी लकुट लिए
गायन हटकत।
जोवन गिरिधर टेढ़ी युवती देख लेत वलैयां दोउ
कर मटकत अत॥

६

अहो विधना तोपे अचरा पसार मांगो जनम जनम
दीजे याही व्रज वसवो।
अहीर की जात समीप नन्द ग्रह घरी घरी घनश्याम
हेर हेर हंसवो॥
दधि के दान मिस व्रजकी विथन में झक झोरत
और अङ्ग को परसवो।
क्षितिस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल शरद रैण रस रास
को विलसवो॥

गौरी—तिताल

मुरली वारे सांवरे नेक मारग देहो बतावहो।
भूल परी सङ्केत मधुवन में हौं अवला कित जावहो॥
सङ्गन सहेली फिरत अकेली कितहूं न दीखे गांवहो।
मृगनैनी के बचन सुनत ही हरि आए तिही ठांवहो॥
आय मिले अङ्क भर भेंट यो भए हैं भाव तो दावहो।
कहे भगवान हित राम राय प्रभु राधारमण वाको
नावहो॥

गौरांग ख्याल—तिताला

बतीयां दिन गिनत [illegible] अस का हमसन भइली खोर
[illegible]तीयां सदारङ्ग कहो चोर॥
आजह धीरज अपराध

२

एरी धन निठुर धन मेरी छतियां।
[illegible]हे कलना॥
जोलों दरशन देखों प्राणपति को तोलों आनन्द
सखियां लेहों सखियां॥

यह गोकुल गांवको पैड़ोई न्यारो निपट चवाई गाम।
मारग मिले नन्द को ढोटा मोहन वाको नाम
कपटी पीत वलिहो श्याम के मोह लेत व्रजवाल ॥

गौरी—तिताला

आवे माई व्रज ललना डर विमोचन।
गौधन सङ्ग कुणित कर मुरली शरद कमलदललोचन ॥
दुख आगे आगे धेनु पाछे नन्दनन्दन कर गहे
कमल फिरावे।
मोर मुकट वैजंती माला कुण्डल झलकत आवे ॥
कटितट लाल काछनी काछे ओढे पीत पिछोरी।
आपुन हसत हँसावत ग्वालन राग अलापत गौरी ॥
तुलसी पत्र पुष्प की माला गूंथ गोपनको पहरावे।
बालगोपाल नन्दजूके ढोटा मधुरीसी वेणु बजावे ॥
वरषत कुसुम देव मुनि हरषित मोहीहैं व्रज की नारी।
कृष्णदास प्रभु रसिक मुकटमणि लाल गोवर्द्धनधारी ॥

२

बनतें आवत गावत गौरी।
हाथ लकुट मउअनके पाछे ढोटा यशुमत कोरी ॥
अटन चढ़ी व्रजवधू निहारत देख रूप भई बौरी।
नन्ददास जिन हरि मुख निरख्यो भाग बड़ो उन कोरी ॥

३

मोहन नेक सुनावो गौरी।
बनतें आवत कुवर कन्हैया पुहपमाल ले दौरी ॥
ग्वाल वाल के मध्य विराजत टेरत न आई रावरी ॥
परमानन्द प्रभुको छवि निरख यह झक लागी

४

जय शिव ओंकारा भज शिव [illegible]हि पीय पीय बतावरी।
ब्रह्मा [illegible]फत रहत और निशा
लागत भयावरी ॥

२

एकानल पीयचन्द वारकी आरसी।
[illegible] देखत दुराय राखे पीय चतुर तिय तुम महारसी ॥
तीनो रूपनिरन्तर त्रिभुवन जग मोहे ॥
हर हर हर० ॥ ३ ॥
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी शिव
रुंडमालाधारी।
चन्दन मृगमद चन्दन भाले शुभ कारो ॥
हर हर हर० ॥ ५ ॥
करमें कमंडल सोहै चक्र त्रिशूल धारी शिव चक्र
त्रिशूलधारी।
त्रिपुरारि मुरारि ब्रह्मा कर कमंडलधारी ॥
हर हर हर० ॥
लक्ष्मी औ सावित्री पार्वती शिव सङ्ग शिव पार्व्वती
शिव संग।
गायत्री सावित्री हरि गौरी सङ्ग ॥
हर हर हर० ॥ ६ ॥
सितावर पीताम्बर वाघाम्बर अङ्गे शिव वाघाम्बर अङ्गे।
सनकादिक विभूतादिक भूतादिक सङ्गे ॥
हर हर हर० ॥ ७ ॥
इतिश्री त्रिभुवननाथजी को आरती अन्तर कर गावे
शिव अन्तर कर गावे।
भणत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥
हर हर हर० ॥ ८ ॥

श्रीरागध्यान

[illegible]ष्टादशाब्दः स्मरचारुमूर्त्तिः धीरो लसत्पल्लवकर्णपूरः।
[illegible]न मन्द सप्त [illegible]गुरौ श्रीराग एषः क्षितिपाल-
सासानिनिधमगरेनिधानध[illegible]
गायो "
धमगरेनिधमगरेगकगरेरेसानिध।
सुधवाणी लिए अलापत गीत के प्रमाण नाद को
सूक्ष्म करे ताको कहीयत है गायक सब विध
लायक जाको वादी विवादी अनुवादी के बगैरे
न्यारे न्यारे कर दिखलाये तब मगरो जगत रहस
कहत सब गुणीयनके नायक ॥

सारिगमपधनि हेम दिन चोथे पहिर वखान
खरज ग्रह ॥

२

जाति सम्पूरण वसन जु लाल अठारो वरष कामदेव
मूरत भूप समान ।
अमृतवचन कर कमलफूल श्रीराग यह प्रमाण ॥

३

ससरेगमपगमपधानिनिधानिनिधपमगरे ।
मममधधनिसानिसाधानिधपमगरेसारसा ॥

श्रीराग—चौताला

प्रथम नाद सुर साधे आराधे सोई गुणीयन में गावे ।
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मूर्च्छना तिनके व्यौरे
तब कछू पावे ॥
आरोही अवरोही उलट पुलट के होत द्रुत मध
विलम्बत आवे ।
तानसेन के प्रभु महा वाक्‌वादिनो प्रसाद तें गान
कण्ठ करावे ॥

२

आज अधिक अलसाने देखोयत लाल लोवन और
रेख काजर अधरन सोहत पान ।
आलस अङ्ग नयो सुख आनन्दन हो कहे देत तूतो
चाहे देख आरत सोहत आरआन ॥

३

पाइयें जेह लाल सोई विध करोये काहे कों गुमना
भरोये ।
ता पर मान मया विच पोय को काहको कहो
कित जिय धरोये ॥
जहां नेक रीझे तहाँही करत हित ऐसे पोतम
से डरोये ।
वहुनायक प्यारो शाहजहाँ जाँन सोतन तें वावरी
घरी घरी पल पल छिन छिन अङ्ग सरोये ॥

४

सुनोयत छत्रपति शाहजहाँ किरान मानो की
चढ़वे को आवाज ।
चढ़त पौठ कलमलो दक्षिण देश दलमलो भुवपति
राजा कर जोरे अरज करत हेरो मिलवे को आवाज ॥
कायम रहो जोलों चन्द सूरज गगन तार कोइ सुनो
आपन फौउज चलवे को कियो हुकुम आवेंगे आज ।
दिल्लीपति चिरञ्जोव रहो शाह अकवर महाप्रतापी
जो लों धरन ध्रुव धीरन धरवे को आवाज ॥

५

नरहर नरोत्तम नारायण परब्रह्म पुरुषोत्तम परमेश्वर
अखिलनिरञ्जन अवगति अविनाशो ।
अलख पुरुष आत्माराम आनन्दरूप अगोचर अङ्ग
अंग सकल घट प्रकाशो ॥
जगन्नाथ जोतीस्वरूप जगतपति जगवन्दन जगचक्षु
धीरज प्रभु नन्दनन्दन व्रजके निवासो ।
माधो मधुसूदन मथुरापति मुरारि मनमोहन
मुकुन्द में वासो ॥

६

जैसे गुणी तोधा गावे ढोलन क्योंही लागा मेरो मन
तुझ नाल लगो रहे परछाई ।
रोम रोम मेंते धरही जैसे कमल अलिके गुण एकन
जानो ॥

७

रैन गई मोहे जागत ललना तिहारोही मग जोवत ।
नेकह्न जो मोरी अखीयाँ लागी ता छन छन
तुव मूरत के जान में रहत सोवत ॥

८

बतीयां दिन गिनत हारी कठिन भई कर पल्लवरी
कहूं कासेरी यह दुखरे ।
आजह्न धीरज अपराधन प्रीत लगाव नहीं जायरे ॥

९

एरी धन निठुर धन मेरी छतियां विन प्रीतम वोभत
विरह घतीया ।
जोलों दरशन देखों प्राणपति को तोलों आनन्द
सखियां लेहों सखियां ॥

आलोरी एसी प्यास कैसी होत कहा जो भयो पीय
पठाई पतीयाँ ।
शाहआलमशा के निठुर मिल कहा ठाकुर होत है
अब दूसरे अब आवतरो वैरन रतीयाँ ॥

१०

सोई दिन सोई घरी जो प्यारे सों मिली मोरी अखीया ।
सोहत तिलक सो सबन में डाह मारत सोतें देखिया ॥

११

लालन दे गए मोकों एक घरी अवध कैसेक मन
वहलाऊं ।
ठौर ठौर के रस वेलेवे सबके भूषण रङ्ग रङ्ग धराऊं ॥

१२

भस्म भूषण अङ्ग चर्चित गङ्ग शिखर बहुर रूप शिवजी
गाणडवर में डमरु बाजत फुंकत फणीश भारी ।
योग युगत ज्ञाता शिव सत स्वरूप शङ्कर शतकण्ठ
कण्ठा मर विषनागव वरण राजत पद्मआसन
ध्यान धरत भक्तरूप अवतारी ॥
यती शती जङ्गम योगी नवी सन्यासी दुग्धधारी
अघोरी उर्द्धवाहु अवाकर और दूतन गण कर
धिणाक कर आदेश करत है आचारी ।
धन धन धन महादेव सिद्धदेव देवन रिद्धसिद्ध दाता
शाहन शाह शाह आजम को होय सुखकारी ॥

१३

निपट कर जो दुराव करत मोसों हौं नहीं जानत
पीय अधिक चतुर तुमही और हौंही अयानी ।
कोटि यतन करत है तिन गुण कर प्यारे तुम्हारे
देखीयत जे करत फिरत घर घर मनमथके वस
जगो तिया अङ्ग सङ्ग रङ्ग करत वहु ज्ञानी ॥
अटपटी पाग पेच लट पटे कीन्हे बोलत मन्द वचन
चक कहत कहानी ।
शाहआजम विचित्र छत्रपति की बातें तेज मेरे
जान पाई तब त्योहीं मुवारकना आवत तुमारो
गत हम मन विच क्रम कर पहचानी ॥

१४

अवध पीता मङ्ग गुईयां विरह आनन्द खेलत मो
सङ्ग चोपर ।
विशात तन मन योवव सबन पर सारे छिन लगन
तापर मोहे अङ्ग धरे सुध वुध गुण पार से बनाय कर ॥
ध्यानन चलाय सारे पकाय लाई पीत अवध सब घर
अवध सब घ
तिनके बांध पंजे छक्के कर ध्यान तक जक जीत
लई पकाय बाजी लाई शाह मौजदीन रूप सुन्दर ॥

१५

रस विनोदी गुण गहरत विवेक चिन्तामणि ध्यान
शाहजहाँ जान ।
जेजे तारध्याय सुरध्याय रागध्याय तिनके करे
लक्ष लक्षण विद्या प्रमाण ॥
वल वल करना उनङ्ग से देत एसे कोटिन दान ।
चिर चिर जीयो छत्रपति प्यारो जोलौं भुव ध्रुव रहैं
शशि भान ॥

१६

वहोत भावत है वह तुमे होई नीके कर जानत ।
इतनो तोङ्ग कान करो तुम एसो न बूझिये
जो मेरेही आगे वाङ्ग को नाम ठानत ॥
दैया कैसे अपनी टेक के नेकङ्ग लाज जीयमें नहीं
आनत ।
शाह औरङ्गजेव वहोत भलेहो हौं बौरी जे यो बातें
बखानत ॥

१७

देवसभामें गुणी कहिये तेऊ प्रतक्ष देख मे विवेक
करन साहवदी महम्मदी सुलतानके ।
भरत मत सङ्गीत दृढ़ काव करन को मत गत
अप अप अङ्ग सर सम हाजाँनके ॥

१८

मिल मिल मिल बातें करतहै लाल ललना प्यारो
सों एसे जैसे सब सोतन में कोऊ न जानत ।

कबहूं हंस मुसक्याय कटाच्छन मिलाय कबहूं
दृष्टि डराय करन सों कर पल्लवरी सकल तीयन
के मन कों सकुचन सुख पर नाहन आनत ॥

१९

तू अब विद्याधर भुवलोक में सुनीयत रंचक
शोर शोर सभामें ये देखे पर दच्छिनन तुव शोभा
जग नैनन ।
सप्तस्वर तीनग्राम चारो अङ्ग सम सम्पूरण अलाप
कर रिझावत गावत कोकला कण्ठ बोलत मधुरे बैनन ॥

२०

सवा सेवा करत हैं वे तेतीसो कोटि महादेव तुव
नाम जप तप पार्ब्बतीपति पतितपावन पातक हर
तेनु गन केसे सुमरत ।
त्रईलोकनाथ शम्भु शङ्कर त्रिशूल धरे तपोभूत
त्रिपुरारि मानो महेश देश देश के नरेश को धावत
जोई जोई मागत सोई सोई पावत है हरिदास
डागर होत सुरत ॥

२१

भस्म अङ्ग गले रुण्डमाला आशा नद ढुभावेरी ।
देव देव करत सेवक त्रिशूल वाघाम्बर माथे गंगा
बहावेरी ॥

२२

एती वेर भई मोकों मनावत तोय आली अजहूं
न उनें समझी बतीया पीय के रसकी ।
वेग उठ चल मिल प्यारो पतिप्राणेश्वर पास मलिन
जोति होत है शशिकी ॥

श्रीराग—साल धीमा तिताला

मुरली की धुन सुन चकित भई सब व्रजकी नारी
सुध न रही कछू आपन तन मन धरकी ।
झक झक कर रीझ रीझ कर लेत वलाई कान्हर
हरि की ॥
एसें सुरतें बजावत जामें नोके सात सप्तक तान
विरह भरी सुरकी ।
जिनहो सुन्यो तिनह सुख पायो तानसेन प्रभु तान
राधावरकी ॥

२

ए राजा जहां जहां जाइये तहां तहां सुनीयत
तिहारो नाम ।
जेते नर नरेन्द्रपति तुव प्रताप तें उतरे तेरे दर्शनकी
लालसा और तुअ अस्तुति सुनके श्रवणन पावे
विसराम ॥

श्रीराग—तिताला

चलो जाय सुने मुरली धुन कान्ह बजावतरी
ए बजावतरी ।
या वनमें अब रीझ रहे सुर नर मुनि मोरमुकट शीश
कर लकुट लिए टेढ़ो टेढ़ो आवतरी ॥

२

चन्द की जोति मलिन होत तेरे आननआदित्य
आगे आलीरी देख दृग मृग खञ्जन वन वास लीने ।
आंखनकी अरुणाई अरविन्दह नाह पाई सफरी
तो सरता में पाई तेसी हे नासिका की निकाई
कापे जात वरनाई विनती सुरचाईने सबके मन
दास कीने ॥

३

जाको ऊधो एसो सखा कान्ह कैसे समीप भाव
भक्त कछून कहीये ।
योग योगत शुष्कज्ञान रुखोई रहत प्रेम भक्त
सुध नाहिन पइये ॥

४

ए आयो आयो रे वलवंत शाह आयो छत्रपति
अकवर ।
सप्तद्वीप और अष्टदिशा नर नरेन्द्र घर घर
थर थर डर ॥
निशदिन कर एक छिन पावे वरण न पावे
लङ्का नगर ।
जहाँ तहाँ जीतत फिरत सुनीयत है जलालदीन
महम्मद को लशकर ॥
शाह हुमायूंको नन्दन चन्दन एक तेग जोधा तकवर ।
तानसेन को निहाल कीजे दीजो कोटिन जरजरी
नजर कमर ॥

५
चारोंग रट एकही बार तें विसरायो हो वहराम खांन
खांनन खांन ।
प्रथम निजामी शाह कीरत दूजे वेदलशाह सवाई
तीजे राम राजा चौथे वदरी वदर कोसो हलखांनके
देखत चले हार ॥

६
एसो इन्द्रह के नाहीं जैसे देखी सुढङ्गन फुन गायन ।
गीत सङ्गीत धारु धुरपद गाए सुधवाणी सुकण्ठ
भरण रसना रस रसायन ॥

७
सांझ भई आवोरि तुम आवो हरि गुण नीके
गाय सुनावो ।
नैन प्राण में तुमहो वसतहो श्यामसुन्दर दरस
वेग दिखावो ॥

८
सुध लीजो हो करणाकारि तुम विन गोकुल सूनो ।
नैन चट पटी लागी तुव मूरत विन देखे दुख दूनो ॥

९
आज बहोत दिनन पाछे सुरत भइरी ।
कौन दिशा धौं अजहूं न आए दइरी ॥

१०
रीत पीतकी जानत नाहीं जानत नाहींन जेतो
संसार रीत पीतकी ।
को प्रगट पावे को सुध लावे मोनर धनतो ॥

मालव—चौताल

शम्भू श्याम जगदीश शिव शिव हर हर पुरुषोत्तम
महेश्वर ।
शर्व ईशान सर्वव्यापक शूलीश चक्रधर शिखरचन्द
पीतवसन वाघाम्बरधर ॥
मुरारि त्रिपुरारि परम राम परमानन्द पिणाकी
मुरलीधर ।
पशुपति गरुड़ापति विश्वम्भर विश्वपोषण
गुणसागर नागर वर ध्याया करो गोविन्द गिरिजधर ॥

श्रीराग—चौताल

तूतोरी भाग सुहागी तेरे पांयन को सोंहे दिखाऊं
तोसो तूंही और दूजो नाहीं जगमें कहो यहो बता
तेसो वेसज्ञान जित कित तेरेही गुण गाइये ।
बहु मदारङ्ग महाजान सुखदायक तेतो हित चित
मनके जात तिनसों हठ करवो ना चाहि

मालव—चौताल

भुजंगी लाल तें दो कीनी दुरङ्गी गातही गात पी
उम
कङ्क बोर बोर दरकी दरकी एसो लागत
मेरे जान आली मान कास ओप प्रगटी तन यंगी
और प्रसेद प्रेम अब जगमग रह्या जोवन तोय
भर उम
याकविसाँ ओप भईरी अकवरशाह और तुअ
अङ्ग सङ्गी

२
कर विद्या तूंरी जहाँ पढ़ पूरण काम करत अज्ञान
उगत जुगत विधना भले
प्रगट कर शाह अकवर जगत गुरु जलालदीन
अष्टयाम विनान करत राग रङ्ग महावली ॥

३
प्रथम अस्तुति सुनत सुनत मोकों श्रवण सन्तोष भयो
तब तोइन अवलाखन लख सेवा चरण गुरु पोरते
योगायोग ते कर ध्यान
ता शब्द भयो शङ्कर ते त्रइलोको पारवतो इह विध
विवस राखो विचार याहो में पइयत अष्टसिद्ध
नवनिद्ध राखो सुरत करो ज्ञान

४
योग उपज पायो नाम तार विस्तार गुणी ।
प्रथम अङ्गजा तक लौंजाँच किये अङ्ग अङ्ग इह विध
पहिचान कीये सुर नर मुनि ।

५
ओनम विन सुरचो विद्या ताहो गायवो बजायो
प्रसाद हित आई सुरत ।
खरज याद नहि राखियेत षट् सुर जग मोहे सुआदत ॥

६

पूरि पूरि हो सकल गुणोन गहै कान ।
नारद तुंवरते गाये हाहा हूहू करत अपा अपा
एजव लेत तान ॥

७

पाइये जिहि लाल सोई विध करीये काहेको
मान करीये ।
तो पर माया मन विच पीयको काहूको कहो कित
जीय धरीये ॥

८

अनूप विराजत विछुवा चोंचहात भोर भए चिरोयां इन
बकत अपराध सुन दृढ़ ।
रूप रैनको झनकार धूम परी शावक जेहर तेहर
जैसे सोसो हिला झलमिलात गज तुरङ्ग कठोर
आनन्द दृढ़ ॥

९

रागसमुन्द्र तामें थके नर रच पच तेहू न पायो
अन्त पारको ।
ज्ञानमाझो कर बुधको नाव पर चढ़ाय मन विचित्र
और साज साजे पतवार को ॥

१०

प्रथम मज्जन कर अङ्गराग अञ्जन दीप लागत
नैनन नीको ।
नाक को नथ आनन में विरोअलके फुलेल सिन्दूर
माग माथे केसर टीको ॥

११

प्रथम अस्तुति सुन सुन मोको श्रवण सन्तोष भयो ।
तब तो इन अवलाखन लखवो करत रावरे सुन्दर
चित दरस दियो ॥

१२

करत है कवि धुरपद कठिन जोवन तो करिये
सुसेलो तानन सौं सङ्गत ।
विचार अक्षरोटी सों मेरे जान रिसाल रङ्गत ॥
रेमपनिसारेसानिध-
धनिरेनिरेसामगरेनिरेसारेस।

१३

चिल मिल गुण चरचा
मन कर कर ।
फुन भुगत मुकत दयाके गुणी अनगुण गाहक तेई
अब समझ समझ जिय धरिये यह सयान पर
मान तन ते जाय दुख अज्ञान टर टर ॥

१४

नैन तेरे घुमर भए आज विन देखे एमनभावन ।
कलन परत मोहेरो एको पल कब होई यो पिया
आवन ॥
सुवे कुहुक कोयल को कवधों होय गर लगावन ।
शाह बहादुर तुम वहुनायक कैसे करूँ दिन सावन ॥

१५

नवरङ्गी तेई अङ्ग कीनो गुणी काव साधे आराधे
जो जानें अकवर ।
कौन विद्या अतपूरो नर एसो कौन को पूरो सरस्वती
दृढ़ अव अङ्गी वृषभवाहन शीश जटा कर डमरू
त्रिशूल खप्पर चन्द ललाट वाघाम्बर ॥
मङ्ग अरधङ्गगवरी हिये मुण्डमाला सोहै त्रिलोचन
तुही है हर हर ॥
और सुर नर मुनि गुणी गन्धर्व ते तोहि जपत है
दूसरतन सेत वलवाय भंवर विसतर तापर हित
निवाजनो बात तानसेनको देहु इच्छाभर ॥

१६

वालम कहा करो जो जो सुन्दर वार जोयते उतार
राखो ज्यो वरषाको कमान ।
मन पद चित चिलातो चढ़ायो रङ्ग मैदान रस परम
देखदे रस गोसा देखो सूधे द्रगन वान ॥
धुनतें गूढ़ राखत तुम हित कर इहो सुर वर वेचन
खेंचो आवत नयन इक वाल पदजान ।
अपनो कृपा तक बाध सोतनके गुमान निशानो
टोक मार लेहो अचानक आन ॥

१७

सब मिल विचार लेहु या बातको सुध ताई सुध
अक्षर तान रागको सङ्गत धरन सुरन में सुन्दर तब
कहिये वाको गायक ।

और उगत जुगत काम में धरन धरे अनुप्रायस वेसों
तैव ध्रुपद विनाय गावे एसो जो होवे सृष्टि श्रवण
सुखदायक ॥

मालव—तिताल

पार्वतीपति नाथ अनाथ विष्णुनाथ कर
त्रिशूल विराजत ।
वसन भूषण गज चर्म्म कपाल माली पशुपति तांडव
डमरु धुनि गाजत ॥

२

पीय विन नाहीं बनेरी मोकों एक छिनन पल ।
उठ चल वेग मिल सङ्गले मोकों पल पल भए
वरष समान अब रोय रोय भरे जल थल मोपर
मया करके मिल ॥
वे पीय जीय जीय में नाहीं प्रेम गलीमें चल गई
विरहके छल आनन्द प्रभु विन तन तलफत और हिय
उड लेत चल दल ।

३

गर्व गरवानीरी आयानी मै होत सयानी कहेते
कब कियो कहा टेक टेक ही टेका ।
हातो और तोय सबही मथन रीझी पीय चिन
बनही तिन तन याते निपट अधिकानी ॥
पीयको प्रकृत लीये जो चलहे धन तो पावेहे सुरव
अनगन सुवनरी पीत मनमानी रूसेमें कौन सवाद
कौन विवाद उठ चल मिल शाह अकवर प्रतपानी ॥

४

न्हात जिन वारखसी सोवत बड़ी वेर नहाय तुम को
दोष साद दुसमन पे माल ।
इतनो मागत हों येही विधना तुम पेजो जाय कष्ट
जञ्जाल ॥

५

साधन गई मोरे मनकी वालापन तरुणपन
विरधपन आयो ।
भूलो फिरत जीय नाहीं समझत एसो कुमत
आयोही अकारण जनम गवांयो ॥

६

चतुरङ्गर सेना चलत गज रथ तुरङ्ग पैदलको हंसो
तेह आवरण दर दर भुवलोक इन्द्र माव सम कले
कोप सरस इए न गाजन सन नाद गन गंभीर रम
अवे मेर राजत अपवली तपवल शाह मर्दान भूमव
वलकरन प्रताप अपवली कीरत प्रगट कृतुअ
जमराजन अटलन अटालअ
तिअैअैअैअैअैतीती आइयेरे तीया तीया पापापा
आकरी करवर कण्ठ लेत और दल भुअवल
अटुल डुले

७

आआ आइये लालन अङ्ग सङ्ग रङ्गके तरङ्ग उपजेरे
जब सब निश जगाई
सबहीको मनमथ सों नीय जानत नीको के रस व
आनन्द सोतन गाजनी गाई

राग विवण—चौताल

माता जालपा भवानी जाके नगरलोक नरलोक
भुवलोक इन्द्रलोक त्रिभुवनमानी सर्वानी सकल
जगत जानी और दारिद्र मयहरणी महाराणी ।
जे मन वच करम कर तुमको ध्यावे तिनको
बुधदानी एसी प्रसिद्ध महावाक्वाणी ॥
असुरनदलमलन अंबे आदिशक्ति सुरनर रटत
रहत गुणी ज्ञानी ।
तानसेन सों मन मानी करम कर तू दया कर दयानी
तान ताल अक्षर दे शारदा भवानी ॥

२

गुणी अकवरको जो गोष्टके जो जगमें जगमगाय रही
प्रगट प्रसाधमङ्ग ।
जिनको गुण हमपे वरनो न जाय एसे विद्या
सम्पूरण तिनको अस्तुत न आ मुनि ।

श्रीराग—चौताल

जेही जेही अग बूझि २। गायवो बजायो
प्रसाद हित आई सुरत ।
ाहे राखियेत षट् सुर जग मोहे सुआदत ॥

तालध्याय सुरध्याय रागध्यायके भेद जानि सरस्वती
सनमुख मो दीयो हिरदे ज्ञान ॥
लाग डाट उरप तिरप नेम वृत्त आतक खातक
स्वरान्तक के ब्यौरे पहिचाने ।
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत तीवर
तरतीवर कोमल अति कोमल ग्रह अंश न्यास जे
सङ्गीत प्रमाण ॥

थीटंक—ताल सवारी

काहे को प्रतीत सब डगमगी हो काहे न आए
राजर हेरो ।
प्रताप में जादू रखण महा चढ़िवे को नन्दनवीर को
गवेरो ॥

थीटंक—ताल रूपक

जोगी तेरी सूनी मढ़ैया क्योंरे ।
उठ गई हाट जोगी नहीं आयो धूनी ज्योंकी त्योंरे ॥

थीटंक—तिताला

अरिदलगञ्जन कामनीमनरञ्जन हैं तुअ दरस ।
एसो चतुर सुजान चौदह विद्यानिधान तुम सबन
में सरस ॥

राग बाँड—तिताला

मालन ल्याई चुनचुन कलियां भर भर डलीयाँ ।
सहस रस सिकन्दर रहस पुलन्दर एक उड़ावत
वन मनरलियां ॥

बांड़ी—चौताल

सुमरण करोरे जोय रव को ले ले नाम ।
मेरी कही तू मानलेरे छांड़ दे सब लोभ काम ॥

बाड़ी—तिताल

निनिरेगगरेसानिनिनिरेरेमपधमपमगरेधम सानि
पपपममममगगरेगगरेसा ।
गगममसानिरेससरेगसानिधपधधमपमगरेगगरेसा
रेसारेरेपगरेपमधसारेसागरेसानिधमगधधमपमग
गरेगगरेसा ॥

गौरी—ताल रूपक

रेमपनिसारेसानिधपममगरेसानिपनिरेनिसा ।
पनिरेनिरेसामगरेनिरेसारेसानिनिनिधधपप
मममतगरेरेसा ॥

सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत
उनञ्चास कोटि तालके यह प्रमाण बकस प्रभु यह
अथाह विद्यारेनी रे सारे सानि निनि धधपप मम
गगरेरेसा ॥

गौरी—चौताल

हौंही वैरागी कीनो लागोरी लाल अकवर अनुरागी।
इन सम्बोधन पतियन पतियन पीय वेग मिलन कर
आप तेरी हौंही गँवार भई न अवध बदी बहुत दुख
दीनो मोहि सुखध त्यागी ॥
उमगपतिकी मूरतको ध्यान धरें री मेरी अखियाँ
रेन एक टक जागी ।
रेन दिन सुमरण करत रहत हेरी ललना तरें या
गिनत जात रसना रट लागी ॥

२

दिन गिनत हारी कठिन भई करपल्लवरी अब कौन
सों कहोंरी में यह दुख बतीयाँ ।
कोलों धीरज धरों अपराध न पीत लगन न आदख
होरी धन धन मेरी निठुर छतीयाँ ॥
जौलों दरशन देखूं प्राणपति को तौलों आनन्द लहों
आलीरी वस सुप्याम केसी होत कहा भयो जो पीय
पठाई पतियां ।
शाह आलम शाहके विन मिले कहा ठाकुर होतहै
और दूसरे अब आवतरी बैरन रतीयाँ ॥

३

अपनो सो बहुत दुराव कीयो चाहत हो पीय
सो क्योंहूं नाहिन दुरत ए प्रगट कहे देत अरुणनयन
तुम्हारे हेतु मेरे ।
तीय कर हार रह्यो विन गुण आली गणको पीठ
पाछे वलया और चिह्नको गिने घनेरे ॥
अल बोले से कहा होके रहे बोलत नाहीं पीतम
दुचित्त से देखीयत अजहूं मेरे जाँन तुम वाहीके ओसेरे।
हौं जब वरखाण सुन्दर वाको सहज अङ्गो भरण कैसे
देहो तोहुन देखन देहो प्यारे जो सोते कर कर
जाए सौ फेरे ॥

४

आएहैं रितमान अलसाने अपनी प्यारीके सङ्ग ।
हमहो कहा दुरावत आन बूझ लेहो नैना भोजे
रस रङ्ग ॥

५

एक कर जानो ते अल्लह दूजे नवी रसूल वरहक ।
पुनि पैदा कोनो चारों इयार पञ्च तन पाकइाज
दे इमाम एक कोनो औलीया अम्बोया बुजरक ॥

६

देखत मोहन नैन लालके धीरज क्यो ह्वं न रहेरी ।
जेतो घरी मोहे दरस भयोरी पीतम को ते सुख
कहेन जात मोपेरी पल पल केरी ॥

७

रैन गई मोहे जागत ललना तिहारोहो मग जोवत ।
नेकह्व जो मेरी अखियाँ लागत तो छिन छिन तुव
मूरतको ध्यान मेरे चितमें रहत सोवत ॥

८

ए तुव गोहनहो लागीरी आली प्रेम पीया केरी
चलत भूल रही हेरहो जों बावरी ।
अबके पाछे पछतानेरी मेरे कहा जो होत है
आली या समय मोहै तो अब एकन भावेरी ॥
अब नैनन जल भर आए ग्रीव लागी लागी रहत
विकुरत सुध बुध भूली बोज करो उपावरी ।
मोहे अबके मिलें राजा राम तो कबह्वं न विसरों
जान करों नोछावरी ॥

९

हो सुभानअल्ला जल जलाल जाहर बात ॐ कुदरत
कमाल ।
धरतो अम्बरले ग्रह बनायो नूर सप्तदीपक
जगमगात जगमें धन धन सुरत जमाल ॥

१०

साध रही जिय को जियमें तुम तरल पीया परदेश
सिधारे ।
विधना तोहे वेग बुलाय लियो सङ्ग जाय न सक्योह्व
रह्यो मन मारे ॥
चूक कछू जो परी हमते तुम माफ करो वलि जाऊ
तिहारे ।
अनुहार निहारण प्रतच्च कहौं ये सुपने मत आवो
समीप हमारे ॥

११

प्रथम रस जानले ही सुरहो दूजे अलाप को ज्ञान कर
तोजो सुध सङ्गत उचार चाहत उपजको वरुस्तावधर ॥

१२

शेख फरोदी गञ्ज शकर जाकर पइयतहै न्यामत
मौज मनको मुराद मर तुअर ।
दोऊ जहाँन कबूल मकबूल अब सेवक सेवा कर
पावत एक पावत तत छिन नाम लेत तरङ्ग एसो
पाटाम्बर वस्त्र ॥
मो मनको मुराद तुअवर एक जाहर बातन सों
हिलमिल रहे एते पर सुमरण करि सब नारी नर
बात यह जाँन तानसेन विनती कर दीपक चेम
कुशल आनन्द गुणवर ॥

१३

मेरे नैना लाग रहेरो पीय मूरत सों निशदिन
आली नैना तारे रहत लाल ।
कह्वं ध्यान धर राखे आनन सब माने ललनारी
को जाने को पीर मेरी हौं जो कहत इन मधु पुतरीन
आगे लाल ॥

१४

अहो प्यारे कों कौल वचन देहो पीत कोलों जो
एसोही और निभाइये ।
जाते या बढ़े नित घटह्व और कहा चाहिये ॥

१५

नव सत शृङ्गार बनाय कर दिखावो मेरे प्यारेको
मेरोहतो होड़ो होड़ा ।
कछ न तन लालन कोरह्व न देखतहे हिरदे मध यों
रहे कमल मध डोड़ा ॥

औरजो मेरी सरवरको कोयो चाहत मोह देखो कैसो
खिसानो अहोड़ा ।
शाह विक्रम वे जोय कोले चलेहो तोर वन विन
गुण गत नहीं अकोड़ा ॥

राग गौरी—पट ताल

पटताल नोको ताल अचर धाय चोसट ताल गत
प्रस्तार हो अधार हो मेरे जियको ।
शाह अकबरकों रिझावन पटताल रस लावन और
अनेक भेद उपजावन ॥
ताकिटतकताक्टतकधिकट्तकधेधोना धाधिलाङ्
धाधिलाङ्धिकिट धिधिकन धिधिकनधेधिनाकिट
दिगथो ॥

२

जेहो तेहो केछ भांत मान मन मनाइये सोहाग
लाड़लीको ।
शाह अकवर परसतहो वाको प्राणपतीहै जो घरी
घरी पल पल नित नित चाड़लीको ॥

३

केतीक बात यह तेरे आगे जोतू मोपर करे कृपा ।
जे अज्ञानी ते ज्ञानी होय निरगुणी गुणीते गुणी पूरे
कहे अपाअपा ॥
जो जामिलके तारो वारो व्रज सलो विष्णु गोवर्द्धन
कराना कर करम कुटिल तेजे दिनकर छिपाया
विलासको मनविलास ॥

४

यह तेरो कौन टेव परोरी मोहे हसत खेलतरो
विलगो ना मान मनावे ।
ऐसी न बझिये प्राणपियारे जो तनक तनक बातन
को दुख पावे ॥

५

झुकन हेरे फेरे करतरी हौं डरतरी तू जिन रहेरो
विन आई ।
हँसत खेलत कोऊ विलगोन मानूगोरी आली ताहि
शाह जलाल रसाल दुहाई ॥

गौरी—ताल रूपक

द्रगनको हौं मारी मरों एकतो और कहा कहों तोसे
अनोखे जोयको लगनको ।
परवसहै रहोना सुरत कछू तनको मनको गाढ़े
परीहे खड़ो आय फासो ज्यों प्रेम फन्दनको ॥

२

लङ्का लई राम जो रावण मार उड़ाय दियो ।
जीत चले घरको बाजे तत वितत शिखर धन राज
विभीषणकों दियो ॥

३

राणा रावरे अरिदलगञ्जन भञ्जन इन सुभायरो ।
और जो सनमुखन होत जासों करत सनेह
तन घावरो ॥

४

लेरी अपनो नगर ग्वालन अपनो नगर नित उठ
करत हैरी रार ।
जिन पर तू अभिमान कहोसो वेछ गएरी रतहै
गौरका डगर ॥

गौरी—झपताल

यजेते दिन अनमिल गए तिय पिय विन मोकों तेते
दिन मेरे आन लेखे ।
औरजो तपत वाके तनके तिनके सुखको अँके भुज
भर चाहत नैन कहे कब देखे ॥
न पोय पाती पठाई न आवन कोनो मेरी एक न भई
होरहो है रखे भेखे ।
असलेमशाह पिय जीको ना समझत जोवन
जात परेखे ॥

२

कान्ह बजावतरो वे बजावतरो चलो जाय सुने
मुरलो धुन ।
मोर मुकट शीश कर लकुट लिए टेढ़ो टेढ़ो आवतहै
वन में रीझ रहे सुर नर मुनि ॥

गौरी—तिताल

दुर दुर सुर सुर जुर जुर नैनन चितवत और
कटाचन चाचर चितवत जहाँ बैठे हरि मनमोहन
सङ्ग सोहत सखी सुन्दर सांई ।

अपनो कहै और को न सुने बातें सब लेत चुराई
और यह दृष्टि करत दुरन दुराई ॥

मालव—तिताल

अपने करको मुदरीया मोकों देहु मोर करको तूले।
मोकों नोको लागे तोही जिन भावे सांचो कहले
मोर शीश छूले ॥

२

ठगोरी डार गयो मोपर माई ऐसो दीट लङ्गर
वटपार।
जबते कछु न सोहाय तबतें सदारङ्ग चतुर खिलार॥

३

सोतन गई जल देख अधिक मोपे रैन एश
वरको प्यार।
आनन्द मङ्गल भयो मोहि सखोरी और राधावर
बलिहार ॥

मालव—एकताल

कासे कहों हौं अपनो दुखवा ज्यों ज्यों निश आवे
त्यों त्यों बढ्यो मनमें अन्देशवा।
जबतें पीतम परदेश गवन कीनो तबतें न आवे
सन्देशवा ॥

मालव—फारना तिताला

छुम छननननन बाजे घूंघुरु और बाजे पायलीया
झननननननन कैसे मिलों गुरुजनवा।
जागे सदारङ्ग लाज आवत मोरे मन कैसे चलो
ठननननननन ॥

२

रदरा तिले दिरनंउदनतुंतदरे दानी आहे आहा।
आशकाने खाज गाँने चिस्तरी अजक दमना शर
निशामे दाग रखत ॥

३

तिहारो अब मों के दिए फल नित अहीयो
सुने पीर चेरो।
शाह असरफ बुहली कलन्दर दोज सुख सम्पत
सुन लीजे पीर औलीया अजमेरी ॥

४

एरी हौंतो जाऊं पग परसनकों निजामदीन पीर
औलीयाके आगे आज।
बाट घाटमें तिहारोई नामहै मोकों फल दीजे आज ॥

५

नाहा मैंतो हँस हंस करोंगी वधाई धूम गजरसों
आया।
बनाके शीश सेहरा मोहो हाथन महदी सुघर वनी
सों लोभाया

गौरी—तिताल

अब कैसे कहोंरे लोगवा पीयके ढङ्ग रङ्गी।
सदारङ्ग लालन विन देखे निशदिन रहत जगी ॥

२

हौं नित नित मितवासों चितहे निशदिन ना रहे
पियके विन घरी पल छिन आली मेरो मन कलत
परतहे हित नित मितवा
सासके त्रास उसांस भरत हों ननद निगोड़ी दिन
रतीयाँ कुतीयां दहे हित नित मितवा अवगत
चित लेत इत उत चित नितवा

३

आनन्द जशन दिन दिन सुवारक होय तुमको
नित नित महम्मदशा वादशाह।
जीवो जागो अशीस फकीरवा सदारङ्ग कीनो दीने
इलाही मन चाह ॥

राग परज—ताल तिताल

मृत मण्डल नहीं जइहों गङ्गा शिव सों कहे।
शम्भू मृतमण्डलके लोग महा अति अधम विकारी।
गऊ जगतकी माता ताहि वह देहैं गारी ॥
सोच विचार न आवही मूढ़ अधम वे जीव।
महा अधरमी एसे तिनको दरशन होय गो शीव ॥गंग०॥
गङ्गा उत्तम जीव सोई तेरे दरशन पैहैं।
पापी पूरण पतित निकट कबहूं नहीं जैहैं ॥

सुमरण भजन करेंगे तेरो लहेंगे लहर तरङ्ग ।
आवा गवन ते रहित होय गए वसत तिहारे सङ्ग ॥गंग०॥
शम्भु सत्य कोई नहीं कहिहै असत्य सभी नर भखिहै।
कुलकी वधू निकाल बनमें दासी रखिहै ॥
पिताभक्त कोऊ विरला होइहै हरि गुरु सेवा माहीं।
सुरापान सभी करेगें कोई विरले तीरथ जाहीं ॥गंग०॥
शम्भु करिहै करम कुकरम सभी उठ मोपे धोहिहै ।
हुइहै बहोत अपराध आन मोरे सलिलमें वहहिहैं
तिने देख में काँपिहों जैसे सिन्धसों गाय ।
उनके हृदय कल्पेंगे होइहैं दुख अधिकाय ॥ गंग० ॥
गङ्गा मुनि माधो अस्थान तहां तुमको ले जैहैं ।
कोटि यज्ञके किए तुरन्त नर सो फल पैहैं ॥
सातखण्ड नवदीप में तुम समान नहीं कोय ।
जो नर तेरे आश्रित होंयगे शिवपुर वासी होय ॥गं०॥
सत्यशरण होय रोह निकट तोहि ध्यान लगावे ।
विमुख जाने न देहों काहूके दरशन पावे ॥
भागीरथ तपस्या कीनी चोबीस गई विताय ।
तिनके पित्र वैकुण्ठ तरेंगे परिहैं तिहारे पांय ॥गं०॥
शम्भुवचन कर जोरि गङ्गा आगेहू आई ।
भली करी भोलानाथ निकटतें दूर बहाई ॥
पिछली प्रीत न छाड़िओ यही बड़ोंकी रीत ।
एसी प्रीत करी हर हमसों ज्यों बालूकी भीत ॥गंग॥
महावैष्णव जपी तपी सिद्ध मुनी जो तोमें नहिहैं ।
पातकी जनके पातक तेरे तें दूर सब होजैहैं ॥
अघहरणी वैकुंठनिसैनी किते पतित उधरिहैं ।
जीव जन्तु खग पन्नग पशु नर जो परसे सोइ तरिहैं ॥गं०॥
शम्भु कुमत कही नहीं जाई सुमत हर भली विचारी ।
तुमरी कछु न दोष करमकी रेख हमारी ॥
आज्ञा मांगके चलीहै कलिमें वेग लीजो बोलाय ।
गङ्गादास तिहारे दरसकों वार वार वलिजाय ॥गं०॥

गुर्जरी टोड़ी—तिताल

एरी माई आज वधावरा साजनुवा घर अति आनन्दन
सन बाजोलो मोर मन्दिरवा ।
सुघर मालनिया गुन्थ गुन्थ लाई चतुर मालनोया
बीन बीन लाई वेला चमेलीके हरवा ॥

सूलतानी—तिताल

गोकुल गांव को छोहरारे वरसाने को नारि ।
इन दोउन मन मोह लईरी रही सदारङ्ग निहार ॥

ईमन—तिताल

सुमरण तोरा करीम रहीम रव रहमान ।
हों बन्दा गुन्हेगारतूं वकसनहार और दाता विधाता
सबही कों देत सदारङ्ग को दीजे ईमान ॥

२

आईरी में तोरी नगरीया तुमसों लागीलो मेरो नेहरे।
वाट घाट मग रोकत टोकत वरजोरी गरवा लगावेरे॥

कायानट—ताल तिताल

तारी दोऊ कर बाजे पीतम अतिही नेह बटे दोउ
ओरतें।
तोरा जीय संकुच मोरा जीय लाजे सदा रसकी
बतीयां श्रवण सुनत दोऊ ओरतें ॥

३

जब मिलेगो माई पिय प्यारो तब उनपर वार
वारोंगी रे तन मन धन ।
उन विन मोकों घर अगना दुवर भइलो अब कहो
कौन कीजिये जतन ॥

वागेश्वरी—तिताल

प्रीति लागली मोरीरे ए सुरजन साँईरी ।
निश चहुं ओर ते विजली चमके सगरी रैन में जागरी ॥

मालकोश—तिताल

पीरन जानोरे पीऊ देखी तिहारी अनोखी रीत ।
एसे निरमोही भइलवा वलमा अजहूं न आए यह
कहांकी रीत ॥

४

आज मोरे आइला सुमत प्यारे करोंगो अदारङ्ग
से रङ्ग रलीयां ।
अतर अरगजा सुगन्ध वसन पहर फुलवन सेज
विछांऊं चुन चुन कलियाँ ॥

मोहनी—तिताल

आमिल गलवांही मेनु वेराभ्रा ।
तेंड़े कारण वे ओलंभे रेहदे असी तु साड़दे सुख साभ्रां ॥

२

राजण माँड़ीं खवर न लोनी किसनु जाय सुनावां ।
जो बीती सो दिल बिच बीती नूर रङ्ग ढण्ढड़ी सांसां
लेले रह जावां ॥

३

फरीयदसा नूरबा तेनुकर दावे सुन दावी नाहीं
मेडा ढोलन यार ।
दिलदी रदवारी किसनु आँखे मौला जानै नाहीं
देदा दाद ॥

केदारा—तिताल

निश नीद न आवे न भावे मोंको पिया विन सेज ।
जैसी सदारङ्गीली चादनी तैसेही अभूषण ते वनिता
बन आई या समय महम्मदसा सुन्दर की कोज
देहो भेज ॥

२

केती सीखेहो छलवल नटनागर है नट नागर ।
मन भावन मन मोह लियो है निरखत अनेक
कला कर ॥

श्याम कल्याण—एकताला

मोर बुलाई सावनकी ऋतु वन घन डार डार ।
साजन आए मोरेरी अङ्गना लेहों वलैया हौं वार वार ॥

हमीर—एकताला

मेरा अलवेला मीत पियरवा ।
लाड गहेला अतही नवेला सदारंग सब खेल खेला
सोमैं कर राखूंगो हार हमेला ॥

काफ्रा—तिताल

आवन आगम जानो हौंतो पिय को अङ्गवा भुजवा
फरकै और फरकै आँख बांई ।
पायल बाजे बार बार यही सगुण मङ्गलवा
रिम झिम वेग मिलिहै सुरजन सांई ॥

२

हौंतो जनम न छाड़ूं तुमको प्रेम पियरवा को सङ्ग ।
विधना तोपे इतनो मागत हौंरे प्यारे को
कीजिये एक रंग ॥

कायानट—तिताल

एरी अब गुंध लावोरी मालनोयाँ इस वनरेके शोभ
देहरा ।
लागी लगन सुलतान सालम सों वनरे वनरी सों
लागो नेहरा ॥

२

मोरो आँखन आगे ठाड़े रहो ।
मोहनो मूरत हिरदे बसोली मन अबतो
कोऊ लाख कहो ।

विहाग—तिताल

मेरो मन अटको आली वा मूरत के ध्यान ।
निशिवासर मोहे पलक न लगत निकसो जात प्राण

२

परोहों पांय प्यारे मोरे आजको रैन जिन जगावोरे ।
निशदिन जागली तोरे उमाहे लेहों वलैया हौं
वार वाररे ।

विहाग—एकताल

श्याम मोरी आँखन बीच समाय रह्यो लोक जाने
कजरारे
घूंघट ओट छिपाए न छिपत महरवान प्रेम प्रीतको
झगरारे ॥

विहाग—जलद तिताल

आनन्द करो निशदिन मोरे राजा ।
बहु भांतिन रङ्ग तुमोसो उपज्यो बहोत बनेगो साजा ॥

पुरीया—तिताल

सुघर बना माई सुघरवना अब बन आयो माई
सुघर वना सब मिल गावो दार बकस पीय प्यारो ।
चिर युग जीवो करोर वर सलों शाह आजम को
नन्दन जोलौं धरन ध्रुव तारो ॥

राग परज—तिताल

थोरेरे दिनकी नवल दुलहैया नयो योवन नयो रङ्ग ।
नई प्रीत रीत नए आभूषण शाह आजमके सङ्ग ॥

विहाग—जलूद तिताल

नन्दरा नागर नैन सलोना पाँच वरस दानी मनमोहन
अजहूं बड़ डाहोना।
रसिक प्रीतम विनए जनुन भावे खाना पीना सोना॥

विहाग—तिताल

जबते देखे नैन मर मर कुंवर श्याम मोही वा रूप पेरे।
सदारङ्ग बनी वनिता सब निकस ठाड़ो पे ऐं वाको ना
कोऊ सोहोरे॥

२

एतू मोरारि सुरजनुवा घर आव तोरे कारण मोरा
जीउ तरसाई।
वटवा छडवाके भेटवा हों बंदीछं सदारङ्गीले
महम्मद सा जानै ना देहों फेंट गह राखो कर सोही॥

३

दरवा देहों मोरे कंथ पिया मोरा नाहीं पास।
विछुरे मिले आज सदारङ्गोलरा पूजिले कहो मेरे
मनको आस॥

४

सुन मोरी सजनोरी करूंगो अनन्द निशदिन वा पिय
आइला मोर भवनवा रहस रहस कर गावहुं
मङ्गलचार।
तुलसीला चित मगन भइलवा गइलवा दुख दूर
पराय रसिक सजनवा आवन कहिला लावोरी
मलनीया हार॥

विहाग—पटताल

सुन मोरी सजनोरी रहसन गावोरी बधावरा
आइला पिय मोरे मन्दिरवा।
जनम जनम के सब दुख गइले मोर सजनवा
पियरवा तत वितत घन शिखर बाजोलो बजारवा॥

विहाग—तिताल

विनरी वालमुवा ए वालमुवा मोरीपे वाहते विछुरे
दुवर भइलो अधिक दुख पाए दिन दिन निशदिन
पीरी भईरी जैसे हरदी।
कुसुमसी भई अधिक दुख पाए दिन दिन निशदिन
पीरी भइली जैसे हरदी॥

२

कबहूं न आवत मोरे मन्दिर छैल छवीला चञ्चल
खेलंद्रा निडर सुन्दर परघरवा हरवासे कबहूं
मनके मन्दिरवा।
इतनी विनती मोरी उन सङ्ग कहियो जाय पातगवारे
औरत सङ्ग तुम हँसत बोलत हो महीते
करत यह ढङ्गवा॥

३

सुन सुन रे भोरे नाहा तहाँही जा।
जिन सोतनके रस वस भइला ताहीके रीझा॥

४

नाहा में दुवर भईली अबहों कैसे वाके करूं सिङ्गरवा।
उन विन मोरी यह गत भइली मोरे नाहा
कनगुरीया की मुन्दरिया सुर आलीवा॥

५

यह लाडल वनरा वनरी तू लेहो जुलवा तोरे वावुल
लियो मोल।
शुभघरी शुभदिन पल मङ्गरत रससों घूंघट देत खोल॥

६

ए मा हौंतो पइयाँ परहो लेहों वलैयां रहस रहस
कर गरवा लगाओ।
जोलौं देखूं आवत तोलों पलकन मग झार पायल
सन्दलवा लाओ॥

७

रैन अँधेरी डरपावे पीया नहीं मोरे पास।
जबते पीतम परदेश गवन कीनो तबते आलो टूटो
जात मनकी आस॥

८

मोरी चोलीया सौ सौ वार फरकाई एहाँरे एमोरे
सुरजनवा वलमा तुमरे मिलन कारण छतीयाँ
धरकाँई।

तन मन धन नोछावर करहूं जीय भर नैन सदारङ्ग
निरखो उनकाँई ॥

९

जग जीवन थोरा थोरा समझ समझ कर देखले।
सोख मानले सदारङ्ग बहोत गई अबतो जोगी भेषले॥

१०

डगर डगर डगर चले आइरे तब नीमे धुर ओरको।
जब एसे चले सदारङ्ग तब शाह कहावे नातर
मार खाए चार चोरको ॥

११

हाँजो मेको जाणा तेढ़ो गला साँई जानदा दिल
विच रखोवे।
हम दम में ताँड़े वारी जावाँ इश्कदे गलाँ नाल कोई
बुरा मानदा ॥

१२

दिल दी गला किसनु आखें मेड़ार जान दावे मोयाँ।
घट में रोम रोम साँई रव दाढामे बोतेनु आखाँ
वेमोयाँदो ॥

१३

अणो वेखोणो माएनो अणीको होयार भेट डावे दरद।
भूल गया साड़े दल दीगलाँ सुखनो दड़ो कीत
सो सोया ॥

१४

माइरी पीया मोरा गुणवंता हेरो गुणवंताँ।
सबही सखी मिल वाहो के मना लीजेग सबही
पको मन भावता ॥

विहाग—एकताल

बोलरे रङ्गीले वनरे मोसे बोल होवे तूं मोसे बोल।
एक पग ठाड़ो दोऊ कर जोरे हँस हँस घूंघट खोल॥
आज वनी से बोल बोल रे रङ्गीले वनरे मो० ॥

विहाग—तिताल

दानी उदतनदीरना दामतदीयन रेना आदानी।
नादरदानी तुन्द्रदानी तनातुन्द्रदीम तनन दिरदानी ॥

२

मेरी बतीयाँ मानले प्रीतमवा सुरजन साँई।
सदारङ्गीले लालन विछुर मत करहो अबमे हाहा
करहूं परहूं पाँई ॥

३

जिन छुवो छतीयाँ मोरी ढीट लङ्गरवा मनहरवा।
बार बार में तोहि समझाऊं चपल छैल चतुर
सुरजनुवा जिन तोरी हरवा ॥

४

सुन मोरी सजनीरी रहसन करोंगोव धावरा
आइलो पीय मोर मन्दिरवा।
जनम जनम के सब दुख गइले मोर सुरजनुवा तत
वितत घन शिखर वजवो मन्दिलरा ॥

५

सजनीरे अब वीत गइली रजनी।
जागत जागत सब निश बीतो भोरही आए लजनी॥

६

एरीहौं चो क परी पिय आय गएमें मद सों
छकी मोराम
और कछू नहीं वन आयो हौं घरही जाय लुकीम

७

मन चीते कारज भइले हमरे सखी सहेली गावोरी
आनन्द वधावरा।
आपही आयो लालन मोरे मन्दिरवा हौंतो करहूं
सुखवा रहस रहस कर मन रङ्ग सों अब जनम
जनमके अबतो दुखवा गइलवा ॥

विहाग—जलद तिताल

कगवा बोले मोरी अटरीया अरे उड़रे कागा पिय
कब आवे।
कइयो बार तेरो सगुन साचो भयो याहीते हौं
पियपे उडाऊं ॥

विहाग—धीमा तिताल

वालम रे मेरे मनके चीते होवन देहो वन दे कहो
मीत पीयरवा।

सदारङ्ग जिन जावो विदेशवा सुखदो गलोया
सोवनदे ॥

विहाग—तिताल

अतगत कामनीरो तेरो सुन्दर जोवन मदमातोरी।
खञ्जननैना मृगलोचन मुखते चटक चादनोरी ॥

२

घरी पल छिन विव लालन मोकों वीतत निशदिन
एमा जोवन तन मन धन सब करिङ्ग लेखा उन
विन धरीहौं कैसे।
ना डरिहौं नाटरिहौं अपनो बान ते आलो नरहौं हौं
विन मिले पोया सन अब बने जैसे ॥

३

कौन ढङ्ग तोरा सजनोरी कित इतरात उत रात
वीनी जात।
छाड़ मान उठ चलरी वलालु उत सोतें लगाय रहो
घात ॥

४

टरुन दरोया तादानी नादानी मकुनवा मनु अए दोस्त।
माए मपुर गुणा वोहतो दर याये रहमतो जाएके
फजले तुस्त चिवाशद गुने हेमा ॥

५

सदयोनो राभेटा मेडे हाथना आया। कुक ४ कूकां।
रत्नाले मेड़ो चस्मा भूलना जां देशुकां ॥
राति देहा मेणो नोदन आवे दम दम उठदो हुका।
सुहो चोलो हो रसवे सिङ्गारनु लायानो माए लूका ॥

६

अणो अमो मेदड़ो मेदड़ी सुहोवे सो कामितो
अब लजाय लगोनो शेनु रणो अणो अणो।
घंड विच्चा कुजमें आंख नासिका देवे मुवारको
मेनो जणो जणो जणो ॥
खुअहे धन्धालो पाय खसालो खोल मिल लगदीया
गलोया धणो।
नोवता वजाय रङ्ग रचाय साहुर डेनु चलो जो आवे नो
शोवे खण वणो ॥

७

कैसे सुख सोवूं नोदड़ीया काम मूरत चित चढ़ी।
सोच सोच सदारङ्ग उकलाया हिय वेदन अति बढ़ी ॥

८

आहे आजा नन्दरतिले देरेनुम।
जिनहार शोश ए दिल मनवर जमो मुजनु पस गाने
कुएतो अजार नेकन ॥

९

आज सजन सङ्ग मिलन वनोलवा लावोरी मलनिया
हरवा।
अच्छी नीकी लड़ मालनिया लावो मध पान अञ्जन
मञ्जन कर पिय सङ्ग मिलहूं आज मिलन वनोलवा ॥

१०

जान देरी जान दे तू जोगी काहे के मीत।
गर कथा झोली अंग भभूत रमाए काह होरी
सों करत नवप्रीत ॥

११

तदीमतननानितनादिरनातदानितददानिदोस्त
धिकटतगनधगनगधिताधितगनकड़धानथुंनचुँधिगन
तानधाधाधा।
तुँ तुमतुमतननतनदिरनादीमतददानिदीमधीच धीन
धीनाक्रड़धानतकटधिकिटधिविकिटधितिकटतकधात
धातकटधिगनधितिकटतकधाधिगतानधिगतान
धगड़तकधगदिगन२नगनगकड़धाकड़धाधा
ड़धाड़धाधाधा ॥

१२

प्यारि सुरजनवारे मदसे सजनी रहस रहस रस
बतियां कीनी सोतन ते लुकाय लुकाय छिपाय।
द्रगनसों द्रगन जबही मिलाय हित चित दियो
बढ़ाय आलो तबते लागो उन तन मोरा मनुवा ॥

१३

तुमसे मनुवा लागिला सजनीरो मिलिहु भुज भर
गरव श्यामसुन्दर नन्दके दुलरवा।
चितवन में मोरा मन वस कर हर लीनो चतुर
सुघर सदारङ्ग पियरवा ॥

१४

मैतो तोहे जानन देहों साची कहो तुम कौन
नगर के वासी।
एसो न कीजे श्याम सांवरे जामें होवे जग हाँसो।
तुम तो नये भये ब्रजके ठाकुर हौंतो तिहारो दासो॥

१५

आँखड़िया तेदड़िया उदनोड़ोया दिसे दड़ोया
सेनड़िया नालोजो दड़ोया सें दड़ोया हालवे।
नाले दड़ोया नादे दड़ोया ना बोले दड़ोया ना सुने
दड़ोया रोते दड़िया मुवे खवे हसे दड़ियां॥
विन सुरमें कजले दड़िया चमकननु विजले दड़ोया
मोड़े दड़ोया तोड़े दड़ियां।
चोरे दड़िया छिपे दड़ियां केदे दड़िया कहे दड़िया
मारे दड़िया तारे दड़ियां तड़के दड़ियां दोने ना
विच वसे दड़ियाँ॥

बिहाग—धीमा तिताला

कानरवा हम या कामको नाहींरे।
तुम चीनत हो तो हम तन चाहो देखत शंकासों
डर नाहोरे॥

विहाग—तिताला

सुनरी बहरी या मोरा मन तुमोसों अटक्यो
अब घर जिन जावो एरी बहरी।
सांची बात गोपाले मावे जाको सदारङ्ग चाहे ता
सोई बड़ भागके बड़े भागरी॥

२

अब घर जिन जावो मोरे प्यारे तुझ देखन कों
जिय तरसई।
तुम विन मोकों कल न परत है छतियां धर धरकई॥

३

ऊधो मेरे दुख हरवेको पातो पठावत हो।
हौंतो भिखारी नन्दलाल दरस के सुखो सलों
कांसे कहों ऐसे अघात हो॥

४

आइला पो मोरे मन्दिरवा सुन मोरी सजनी रहमन
गावहु वधावरा
जनम जनम को सब दुख गइले मो सजनी तत
वितत घन शिखर बाजे बजाय मारा

५

मेरो मन अटके आली वा मूरतके ध्यान।
निशवासर मोहे पलकन लागत निकसो जात पिरान

६

एरीतू आजावे मेरे पास।
माई उमगत आवे जियरा मोरा निकसत नाहीं सार

७

कित लुवधे माई पिय मोरा सुधहन लोनी तनकवा
सोच समझ जिय कछू हुलसानी आवनको अबतो
भतकवा

८

कैसे रहिहों सजनी पिया विना मोपे रहो न जाय
घरी घरी पल पल छिन छिन अबतो उन विन देखे
मो मन दुखवा होय
पइयां लागूं तोरे सजनी चतुर सुघर सुरजन सों
वेग मिलावो मोंकों तबहीं गुण मानो तेरो जनम लो
कहे हेतु करङ्ग सोय॥

९

आज जागी सारी रेनको बनो ह्वै है नैन उनीदो
सोहे सोहे।
धसनमें चन्द्र शरीर झुमकत तापर अभूषण
जगमगात यह सबही मन मोहे॥

१०

गोरी तेरो राज सुहाग कायम दायम रहैगो।
नाकदी नथ दतिदी मशहरी हरी चुरीयां मेहदी
रङ्गीली और चटकीली जोड़ेपे नमें भूलोंगी॥

११

सुरत विसारीरे मेरे पो अनत रहे जाय।
विरहके सिन्ध परो हौं कहा करों उपाय॥

१२

नदीया मझधार नाचे बड़ो अप रूप गोरे ।
अलक थलक मुख सोहे वंशी रस डूब डूब करे रङ्ग
दुति अँखियांरे ॥

१३

फरकन लागी आँख बांही याँ मोरीरे वेग मिलो सइयाँ ।
पियको सगुन आवन जो विचारो वमना विनती
करङ्ं परङ्ं पइयाँ ॥

१४

माथे धर धर बैरागी नैनाँ मूंद बैठ रहीये जोगी
काके मीत ।
डार गुदड़ीया गले डारो सङ्ग अङ्ग चलो परदेश
काङ्ग से प्रीत न रीत नैना मूंद बैठो रहीये जोगी
काके मीत ॥

१५

मेंहदीदा रङ्ग लाल अनी सइयाँ तेड़े हाथों रे
चङ्डि वेहा ।
महदी किणवे बणाइयाँ असी तुसाडडे चङ्ग डेवे ॥

१६

एरी तेरी लाल पगोया कैसी नीको लागी लागीरे ।
चतुर वलमा एसो मोड़े ओढ़नो देहो रङ्गाय नातर
पिया जो रीझे सब मिलके एहो व्रजवालरे ॥

१७

मालनिया गुंध लावोरी सेहरा अरी सेहरा ।
मोतिया मदनवान और गुलाब केतकी वेला चमेली
केवरा ॥

१८

दरद मदारु परवाह किसदीवे दरद दीदारु रांझा ।
मरण जीवन तू एक रजानदा दिठे सदारङ्गीला
ख्याल उनोदा एहो गल बीच बसें दी ॥

१९

उमगेरी दोऊ बदरा श्याम विना ।
सुनरी सखी पिया सपने में देखे भर आए नीर ढरक
गयो कजरा ॥

रूपमती पी बाज बहादुर तज गए गोकुल
मिट गए झगरा ॥
श्याम विना० ॥

विहाग—झूमरा ताल

करीम रहीम रव रहमान पाक परदिगार करतार ।
दुख दारिद्र सब दूर करो पाप हरो मो आजज पर
रहम करम की नजर करो सुख देहो सबन के दाता
विधाता वकसन हार ॥

विहाग—तिलाल

तनदिरना दीमतदनुतुमतनाद्रदरतारदानी ।
दिरनुमरतानदिर नुम तादारदानी ॥

२

नाद्रि दीम दीम तनन दिरना अतदानी दीम ।
तनुमुदिरना दीमतान दिरनादारे तददानी ना
तददानी ॥

३

तनना द्रद्रतुंद्रद्रतानदीरनातन दिरना ना दानी
उदानी दानीतुंमतननत कटधकधुमकिटतकतड
कड़ान् धुमकटतकधा ।
दृतिले तिलाना तुं तान दिरतुम नितनत दीम दीम
तनुमतानं नातानतुँ तनउदन तानतुं तनन न दिरना
किटतक धुमकिटतकतड़कड़ानधा ॥

४

हारे बन्दी हौं ताहीके उमोह जहाँ मोरा पोया
देओ बतायरे ।
परघर को सों लेहो नाम माए बात कहारे ॥

५

केसे रहिहौं सजनो पिया विन मोपे रहोई न जाय
घरी घरी पल पल छिन छिन अबतो उन विन
देखे मो मनवा दुखवा होय ।
पँइया लागूं तोरे सजनो चतुर सुघर सुन्दर सुरजन
सों वेग मिलावो मोकों तजहौं गुण मानो तेरा
जनम लौं जो कहे हेतु करङ्ं न मोय ॥

६

दैया भलो बात मईरे सुरजन मई आप मनाय
लईरे दैया ।
अति सुख पाईला मोमन सजनो जबते आइला
सजनो गोकुल गांव को बसैया ॥

७

जबते विछुरे लाल अति दुख पायो मोरे तन मनवा ।
अवध वदो हतो उनके आवन को सजनोरो सेत
भए मोरे नैननवा ॥

८

अब मन चीतारे काज भइला मोरे ।
अतर अरगजासों नाहाम्हया मानोगो रातरो हौं अब
मोहे अल्ला मिलावो ॥

९

विलापनमें कैसो अनवनो सुनियेरो सजनो ।
राम राम को नाम लेत मोहे रैन वहिनो ॥
अवध वदो अजहूं नहीं आए ना जानू अचलपको
जियमें कैसो वनो ॥

१०

जिन कुवो छतियां मोरो सुन लङ्गरवा ।
इतनो विनतो मोरो मानले महरवान तान वरस सों
कहो परम चतुर पोयरवा ॥

११

रङ्गीले वनरे मोंसे बोलरे अरे मोंसे बोल ।
होरा मोतियन मुकता जो लगाऊं मोतियन लरो
अनमोल ।
नौजामदीन के आजम दुलहा वनरो लोनो अनमोल ॥

१२

मनचीता कारज भईले आज गावहु सखी सहेलरी
बाजत तुरही मन्दिलरवा ।
दूम धाधा किट किट दूम किट किट विल गाया ॥

१३

वेरो भए मेरे सब नगरके लोग ।
पिय सों कहा कहों वेधो सखीयां जो गये सखी तोसों
यह कहों कैसेक मन आवे वियोग ॥

१४

किन राखोरी विलमाय धन धनरी मेरो लाल
लडवंता लडवंता ।
बरोंरा इन दूतोयन को जिन नाहीं जान गुणवंता ॥

१५

सुनरी सजनो यह बात आज मोरे नाहा कहीं देख ।
आतन देखो जातन जान्यो जोवन जात परेख ॥

१६

उर बसो मोरो देहो पियरवा ।
जोई जोई कहियो सोई सोई करहों जियरवा ।

१७

हौंतो चङ्गेरा माणू बोलगो ना जाणो लगो नाह जाणो ।
मेड़े दिलदो लगो नाहक जाणा माणु बोलतो नजानो ॥
होजाणू अपणा हमजाती बुझ के गल उन हादो माणो ।
चील झपटे बाग तेनु बलले गए मसोनु बूझ विगाणो ॥

१८

ए सनम कार इश्क वाजी नेस्त ।
इश्क बाजी मकुनके वाजी नेस्त ॥

१९

सोयरी बयार बहे पिया विन मोरा अङ्गवा जड़ाय एमा ।
अबध वदो हतो मोरे नाहा विरहा हाथ दईमा ।

२०

हरचन्दके वादे रूज सवजा वाशद ।
मस्तो सह माई मशवो फरदा वाशद ॥
खवर लवे औ नेह मए तारो जेज जा हुशियार
मुदन नबीव आदा वाशद ॥

२१

तदरे दाना तनदिरतनद्रनातदार तद दानी तदीम
दीम तुम तननन दिरना तद तदानो ।
नाद्रद्र तुंद्रद्रतनाद तानदिरना तानदिर दिरना
तदरदानो तुम तनन कड़ानधा ॥

२२

प्यारो तेरे नैनन लाल लड़ेते हो लजाय लजाय
कहत हैरे।
काह मग रैन जागो अधरन अञ्जन नैन पीक लागी
आत देखिए यह लक्षण सब देखे तापे एतो मान
जनावत है गरे लागरे॥

२३

मैं तोहे जान न देहों साची कहो तुम कौन नगरके
वासी।
एसी न कीजे श्याम रावरे जासें होवे जग हाँसी॥
तुमतो भये नये ब्रजके ठाकुर हौंतो तिहारो दासी॥

२४

अरे एहो माईया आजको दिन मोहे नीको
लागतहै अरे।
कानन वीर पहर नकवेसर माथे तिलक दिए
कनेर कोरे॥

२५

मोयारे असो तेदड़ वारी जावाँ साड़ा अखड़ीयाँ
आगे तू सिरावे।
घाल घुमाई छदके कीती गले लग लग सुखवा मीवे
साड़ो॥

२६

भाभी सों सनेह लगा जबते तबते तूने दिया
सब विसराय।
वदन विलोकत मोह लियो मनजीवन जनम
सुख पाय॥

२७

सो अब सुगन्ध लावोरी अरी एमा।
हाथों से पहरां लगाय और रङ्गीलो साथ अरो एमा॥

२८

तेरे वारने अल्ला जाऊं।
तुही देवे तुही दिलाये तेरा दिया में पाऊं॥

२९

दोऊ सोतें हो आज लड़ीहैं लड़ी।
चूक चूक चतुराई सीखी पिया प्यारी दोऊ
उरझ पड़ी।
धीर धर नाक अगुरीया बोलतरेरे लात जड़ी॥

३०

महदी अति मही भीनी लावो चोरी वनरेके हाथ।
सारी रैनमें वनरा बनाई भोर भए दीनी साथ॥

३१

आलीरी अपना सपना में कासे कहूं जो पिया
देखे हम आज।
उमगोही आवे मन मिलवेकों सुनो महरवान भूल
गए सब काज॥

३२

पिया विछुरण मोरा तोरा एरी गुण मानू गुसैयाँ
एक पलरे।
एसी लगन पर उन पर महरवान जैसो चन्द चकोररे॥

३३

ठकुराणीया अचरा मोरा छोर लई आजान भई
आराम कहा कर नेम धरम सों बात कहो।
एरी तू कैसे कहत है पनघट में गगरीया मोरी
छुय लीनी कैसे छुवे तोरा फकीर होदनीया हतको॥

३४

हौं निरगुणी भईलो माईरी पीया मोरा गुणवंता।
शाहजहाँ पिया मोकों बुलावे कैसे जाऊं अरे भला
सबही के मनवंता॥

३५

कवन गाँवको वाट वटोइयारे पूंछूं तोसों बाट यह
पूंछूं तोहे वाट वटोइयारे।
हौं ब्रजनारी ढूंढ़न निकसी पूंछत लीनी डाटरे॥

३६

जोवन हमरो जो कोऊ राखेरी माई उसके गरवाँ
लागूं रहस रहस कर।
सदा न फूले तोरई सदा न सांवन होय।
सदा न जोवन थिर रहे सदा न जीवे कोय॥

३७

साहबा अलबेलेनो शाम चुन चुन लावो कलियां ।
सोताहै उठ जाग प्यारे किस बेलेदी मेखड़िया ॥

३८

मोरी मा कैसे मिलहों उन तन जाय यह बालम
अपनो अटके ।
रैन दिना उन बिन तलफत हों निश नोदरोया न
आवे कहा करहूं जोयरा भटके ॥

३९

बीतो सारी रैन लावन आए ।
चेरी होंगो तेरी सजनी मोहे आन मिलावे ॥

४०

दरुवा देहों माए मोरे मीत पियरवा मोरे पास ।
बिछुरे मिले सदारङ्गीलरा मोरे पुजई मनकी आस ॥

बिहाग—जलद तिताल

बाबूरे मोसन जिन चित लाव ताही के देखत हिया
हुलास ।
एक ठगनी ठगत फिरत है हमी सन रहस बिलास ॥

२

सपनेमें आए जबते तबते मोरी मा सुख चैन कोरी
कल बिगर गइली ।
हौंजो चाहों सदारङ्ग गहवे कों पकरन इनकोरी
पल उघर जइली ॥

३

अरे निरदई लङ्गर मोह लई ।
जबते सुनो मुरली धुन श्रवणन सुध बुध बिसर गई ॥

४

सुर ज्ञान ले तिरवट अक्षरसों गावत चतुरङ्ग ।
निसा गम नि पामामगमग सासानिनिसानि
पमपसासागामापानिनि सानिपामामगासाममगसा ॥
नाद्रद्रतुंद्रद्रद्रद्रतुंतुंतननतननिततददानिकड़धान
कोतोकड़नकतकधुमकिटतक्गिदिगनधागेनगं
तिरकटतकधुमकिटतकधेतड़ाङ्गकड़धाधोताधा ॥

बिहाग—ताल झुमरा

लगन लगेकी पीररी वीर कासे कहिये ।
धरत न धीर अधीर रहत जिय बिन देखे बलबीररी
दहिये

२

जिन कुवो कतियां मोरी ढीट लङ्गरवा मनहरवा ।
बार बार मैं तोही समझाऊं निरत तम लगे रहत
निडरवा

ईमन बिहाग—झुमरा ताल

आज सोहाग की रात नवलवर पाया बनरे बलैया
लूंगी
बदन जोत पायन पर झिलमिलात मुखतँबोल
बोरी गिन गिन दूंगी ॥

बिहाग—तिताला

हमरा बाबू उमद सनि जन बतलावहु ताहीके
देखत जिय हुलास ।
हौंतो ठगनी ठगत फिरत रहत ना काहू के
निशि पास ।

२

धन धनरी एरी लाल लाड़ली लाड़ लडवँता ।
बारोंरी इब दुतीयन कों जिन नाहन समझो गुणवँता ॥

३

मोही वा रूपपै जबते देखो नैनन भर भर कुंवर श्याम ।
जब सदारङ्ग बिनवत बाम ॥

४

बिन बुलाए आई झुक आगे पांय परी ।
मेरी बला अब तोसों बोले अदारङ्ग उनसे जाके
प्रीत करी ॥

५

लालके ब्रज बानके लोएन अतरल सों अत धाय आरे ।
रूप देख जित तित सतल उन बिन कछू न सुहाएरे ॥

६

लेहो सोतन तुम अपनो पियरवा हम सन करती
रारेरे ।
सेवा करत मो जनम गइलवा तुम जीते हम हारीरे ॥

७

भलो सो वाटड़ीया मेरा सो आवेगो ।
आड़ा वेज सुलतान रसके रसीले सेजरीयां रङ्ग
लावेगो ॥

८

आज सोहाग को रात पिया अपनो में पाऊंगो ।
बहोत दिनन के विछुरे अबमें पायो पइयां लाग
मनाऊंगो ॥

९

वो राभ मेंडी गलीयां जिन थांते पैर धरे दाज
न्हाजाई थोमे घोलीया ।
खेड़ोदे सनेह सुन सुन खोल घूंघट अंग लसे
मुख बोलीयां ।
नामें तु साड़ी ना तुसी अस साड़े वेमे वन्दड़ी
राँझरणी अनमोलीयाँ ॥

१०

मेड़ा ढोलारी आज आया सो मेड़ा ढोला आया ।
चन्दमुख चाँद अङ्ग लिपटाया सो सुरजन मेरे
मन भाया ।
हौंतन मन धन वार वार सखो निरख निरख गरे लाया ॥

११

लाड लडंता लडवंता बनरा व्याहन आया ।
बाज मन्दिलरारे तूबाज सुन्दर साहव जैन अलावदीन
वर पाया ॥

१२

आयोहे राज दुलारा ओरीए वनरा ।
सातसखो मिल देहो अशीस एरी नवल एरीए वनरा ॥

१३

बाजत तुरई मन्दिलरा शिर छत्र धरे व्याहन
आयोरी वना ।
जग उजियारे अलह सवारो निजामदीन औलीया
शिर सेहरा सोहे कर सोहे कगना ॥

१४

बने मुख खोल देख बोल तिहारो वनरो सुहाग भरोरे ।
गर सोहे सुआचोली कर सोहे चुरीया हरीरे ॥

१५

मोघर आवरे नाहा मैं मन वलिहार कियो ।
कौन मन्त्र पढ़ डारो मोवे वाट चलत मनमोह लियो ॥

१६

भँवरारे तू मण्डलात मण्डलात मोरे पोय कहां बसेरे ।
तुमरी वास तुमहो में आवे तुमरी सुरत मोय भावेरे ॥

१७

सुन्दर रसरूप सुघर वनरीरे घूंघट खोलन दे ।
घर पोया वन आए हँस हंस बोलन बोलन दे ॥

१८

आज कैवार पुकारोना जो साहव ठाड़ी रहो
जमुना के तीर ।
पानी एसो घतला और फूल एसो वासरे रानोयो
जो बैठो जमुना तीर ॥

विहाग—आड़ा तिताल

वलहु सुवासरो या मा मेरा सो आवेगा ।
सुलतान दूल्हे रसके रसीले सेजरीया रंग लावेगा ॥

२

मोरे घर कंत बसे एरी सुखियारी ।
मोरा कहा पोया मानत नाहीं अततू बड़ो
बड़ो कहावेरी ॥

३

आहारे वमना सगुन विचार कब घर आवे वोया मोरारे ।
परहों घइयां लेहों वलैया विनती करों आवे
अगनाहाँ वखरे जागरे ॥

विहाग—तिताल

पइयां सुराहीहीं कोंलों प्याले पइयू वेपरवाही ।
कियो पूर्ण पातसाह सुतड़ीनु छड़गई यूं वेपरवाही ॥
कीती तुल विहाणे मेनु लगण पाण से फूलणदी ।
अड़े यार दीसी हुण यार वलोच दाजी न्हाएही
जुलेया खाक उन्हाए युन होदी ॥

विहाग—जलद तिताल

रमता जोगी आयारे बाबू कहूं गुरु कहूं चेला कहाए।
वामठ में योगो आयही अकेला चेला बहोत कहाए॥
आप गुरू और आपही चेला अपनेही अलख जन गाए।
बहो दिन तुम छिप छिप बैठे अबतो हमने पाए॥
जमीन आसमान तेरी ताव न लाए मनमें कैसे समाए।
कहा करूं तारोफ तुम्हारी सब कुछ तुमही कहाए॥
घर आए साहब कदर न जानें होत कहा पछताए।
हीरानें ढूंढ़ी तखत हमारा राँझा वगले पाए॥
वालही जोबन नैन रसीले प्यारी सूरत मन भाए।
करनअली वलिहारी तेरे तेरेही वल वल जाए॥

विहाग—तिताल

अब सुध लीजे कृष्ण प्यारे तुम विन गोकुल सूनो।
नैन चटपटी लाग रही है कृष्ण कृष्ण यह धुनि॥

२

वनरे जागरे रैन रङ्गीली नीको वनरीके गरवा लाग।
खोल घूंघट मुख देख वनीका बनरीके नीके भाग॥

विहाग—जलद तिताल

श्याम विना उमगीरी दोऊ बदरा।
रूपमती के बाज बहादुर तज दियो गोकुल
मिट गयो झगरा॥

विहाग—तिताल

अरे मन हर सो करले प्रीत करले प्रीत।
माता पिता सो दारा भाई उनको है यह रीत।
जीवत केहैं सब पीतम अन्त नहीं कोऊ मीत॥

विहाग होरी—ताल तिताल

जा डोरीया पीतम माथे बांधो सो डोरीया क्यों कूट।
जित डोरूं तित एड़ी डोरू खेचे खेचे टूट॥
रडी न डोरन भरे लोयन बरकी गुड़ीया काकाटे लट।
यह कहावत सब कोऊ जानत बछीया कूदत भल कूट॥

विहाग—तिताल

अनी मेड़ी सइयानी गारत कीता विछाहे
सुखादे महले लट लीतें सुखीया ढाले।
दुखोदे जालां पायके कंकटा चुकाय के भाहे
नेणादे ममोले॥
भोग अग लगातण नु दाम दीला मण नु सोनेदे
विछो पए फफले॥
वेसरम काड़ि विकुवे विछो कीते माले वन आए
सपोले॥

२

आज कोयलिया बोलइरे फिरवा देखो बोलन लागो।
पीऊ परदेश अब कौन गयो सदारङ्ग या समय मोपर
विरहन को मन तोरन लागो॥

३

तिखोयां निगाह यार दीजो राजोरो भेहाक मानाय
पलक कीतो चलां दीया।
घायल मायल कर अपना नैनन खुमारोयां वेरतलो
डोर नाल दिलदे घाव सिला दीखे॥

विहाग—जलद तिताल

या शुभरात लाड़ोका बनरा आयारे हाँरे आयारे।
रतन जड़ाव का सेहरा गुंध सुवासन हीरा मोती
तखत बना शिर छत्र धरायारे॥

२

जा जा तन बुरदी वदरजानी हनोज दरद ही दादा
वदर मानी हनोज।
मुलके दिल कर दिखराव अस्ते गनाज कन्दरीवे
रोना सुलतानी हनोज॥

३

नेहाके रङ्गमें डूब रहो है तन मन सोच विचार।
दिलही गुल देख है आपसमें गुलशनको वहार॥

विहाग—ताल सवारी

बनो जाग सोहाग की माती शोके रङ्गराती झूलवे
की बारी।
जगभांवता वर तोहे व्याहन आया जागे तोरे भागरी॥

२

जग जीवन वनरा आया रेमो जिय आज सुहायारे।
कर कगना विराजे सोहा वागा गरे सोहे मोतियन
को सिर सेहरा बंधाया निरखत ही सब नर नारी के
मन भायारे॥

विहाग—लाल फरोदस

मालीरे तेरे केवरे चङ्गी बास केवरे चङ्गी बास।
यह बारी अली सँवारी महक रही बास अकास॥

२

आयारी साथी सुभ घर अवमें कैसे कैसेंयग वारूं।
कैसे के पलकन ते मग झारूं आली कैसेके
गलबहियां डारूं॥

३

बाला बलन्द अस बगरे सरवे नाज मन कोताह
करद सए उमरदराज मन।
महमूदरादमें चुव आसरसी उमर मेदा जावत लखी
ओमो गुल्फ आया जेमन्॥

४

आयारी दोदल जोर व्याहन सुघर वनीको चतुर वगा
सुमकना सिर सेहरा विराजे सोरी सुगन्ध सना
सोहे जड़ाऊ कर कगना॥

विहाग—तिताला

तुम हम मिल मध पीवे प्यारे सगरी रैन।
मो ढिग बैठ बैठ और तोय सङ्ग देखत हो अब
तुम सेन॥

२

को समझावोनी उसनु रुठडा जाँदा दिलदार माँडा।
विन दिठ सानु कलन पड़ेखा दिल लगा नहीं छूटदा॥

३

आड़ा वेमिको जाँणा ताड़ड़ो गला साँई जाने दिल
विच रखोवे।
हमदम तेंडे वारी जावाँ तुसी इश्कदी गलाँ मानले॥

४

दिलदी गलाँ किसनु आखाँ माँड़ा रव जाने वे मीयावे।
हालदा महरम साँई रख दाढ़ा इश्क दी गला
पहचाँने॥

५

साड़ा दिल लगावे यार ताँड़रे वेखनमु माँड़ी जानवे।
मेवी अयाँनी मेका जाँणा इश्कदी गला जेनु ठगा॥

६

एणी चङ्गड़ी बोलले जिन्द जान्दीया फन्दीया
ताँडड़े नालवे।
इश्क लगाके निभाणा तुं करदा साडे नाल ठठोलीया
नेणावा वीयाँ॥

७

नालो रमके झमके आजा नाजो रमत डरी सूरत
देख लाजा।
तेंडरी सूरत साड़े दिल विच चुभ गई साडड़ी
आस पुजा जाजा॥

८

दलगानी ढोलन पायाहो रव किताके साडरे दिलदा
भायावो।
आनन्दघन व्रजमोहन जानी मोरे पिक गृह
आयाहो॥

विहाग—चौताल

गणपत विघन हरण गजानन विराजत चन्द्रमा भाल।
एकदन्त चतुरभुजी आनन्द कारण और गले
सोहत मुक्तमाल॥
अष्टसिद्ध नवनिद्ध मूसक वाहन विद्यावंत ध्यान
विशाल।
चञ्चल शशि प्रभु अस्तुति करत है शुभदायक बुधि
कृपाल॥

२

अजहूं समझ अजान सुमरले हरिनाम जनम
बीतो जात नेक रहत यह जग सों काम।
बादिन की सुधि नाहिन तोको जब घट गृह तजेगो
प्राण॥

लख चौरासी भटक भरमके मनुस शरीर पायो
सज्ञान ।
रागी प्रभुको मन वच क्रम कर ररे भवसागर पार
परे नदान ॥

२

जनम हमारो अकारथ भयो यह विध जो कबहूं
ना कियो हरसों हेत ।
चार दिना के सवादके कारण विसार दियो अन्त
अन्देश अबहूं नाहन चेतत एसो अचेत ॥
निशदिन आधीन रख वाहीको आधार जो तोसे
गुन्हैगार एक पलमें हजारन बकस देत ।
ओगुण छाड़ उनही को ध्यान धरो तोवे तोहे
अपनो कर लेत ॥

४

दुख दूनो दूनो होत सरस देख देख सूनो भवन
मोको माए ।
निशदिन सुमरण जपत रहत हों नामके औसेर लाए ॥

५

असुअन जल भरे नैन तेरेरी आली देख आवत में
देख अवते प्रगट भयो तेरो विरह तूरो क्या दुराए ।
नहीं जानत तिय अवला पिय विकुरे की विथा बड़े
मन तोखयो काम दहाए ॥

६

उत्तम गायबो गाय गाय सुनाय सब गुणीयन में
साँचे सुरनको उपज सों परत मान ।
सुध वानी सुध सबके व्यौरे न्यारे न्यारे कर दिखलावे
सब पँचनमें वादो बिवादी अनवादी संवादी
करके करत विनान ॥

७

परवस कौनोरी मेरो मन इन नैननको कहो
में कहा विगारोहै ।
जब जब दरसन पिय को इन चाह्यो तब तब हीं
हेरी अन बिकायो एवज याको यह पायो
अकाजही मोह मोज मारे है ॥

८

तीन भिखारी भानुजा को धूप भिखारन चन्द्रमा
भीचेरो जाको चाँदनी भीचेरो ।
रुकमण भी चेरो जाको राधिका भी चेरो
जनकसुता आधीन भई तेरो ॥
इन्द्रपरी पग धो धो पीवे विजरी से उजरो कनोड़ी
भई रहेरी ।
कहै बैजू बावरे सुनो हो गोपाललाल ऐसो
त्रिया कौनसो जो विधना सवारो ॥

९

आज कहा तज बैठो है भूषण एसे अङ्ग कछू
अरसीले ।
बोलत बोल रुखाई लिये तुम काहे कुठङ्ग किए
अहसीले ॥
क्योन कहों दुख प्राण पिया सों असुअन रहे भर
नैन लजीले ।
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मनभावन छैल
छवीले ॥

१०

तूचल मेरो मान राख आवन को आलीरो ।
वेतो तिहारो मग जोवत है अतही चतुर सुजान ॥
काहूकी कही सुनी अवखन धरिये करिये जनमन
इतनो वाख्यान ।
उठ चल हिल मिल कहत हिदायत नेक कर
कुलकी कान ॥

११

पल छिन बीते मोकों निशदिन जबते गवन कीनो
मोरे पिय ।
घड़ियां वरस जात जो जिन एते विरहा महादुख
दिय ॥

१२

बाज आज मन्दिल बाज या घर काज नित राज ।
हीरे मोतियन को शीश सेहरा बिराजे मनको
इच्छा सब पूरख भई और सुफल सब काज ॥

अलह करम रहम कियो दोऊ जगरा पल इस्ताज ।
नित निशदिन बाजे साज तन मन और दोऊ
कर और कण्टक सगरे दुख दारिद्र गए भाज ॥

१३

रस पागो आई प्यारी पेते मोह भाई ।
ठौर ठौरके भूषण मोमन वन रहो याते सुहाई ॥

१४

मन नहीं चैन परिरो धीरज कैसे धरूमें ।
द्रग जलद को प्रवाह बढ़ो याते द्रवए सखी
विरह अगन तपत जरूमें ॥

१५

मेरे मन समझ समझ कर चेत ।
जब लग सेवा निहचेके करो तब लग हरियारो खेत ॥
यहतो जनम अकारथ खोयो चुहर श्याम भये सेत ।
वीर सुजान भरम जिन भूलो कर विधना सों हेत ॥

१६

वदन ढांप पोढ़ो नीलपट पहरि रूप रहो है प्यारो ।
जबहो घूंघट पट न्यारो करत पिय मानो होय जात
उजियारो ॥
एसे एश खेल परे हैं पीतम विचित्र महारो ।
साह बहादुर निहारो करत मेरो सोख सुन उठ
चल हौं हारी ॥

१७

एन नातोहे बरजों तू नहीं मानत मेरो सोख ।
वरज रही वरजो नहीं मानत घर घर मागत
रूप भीख ॥
चित चाहत है प्यारेके सरूप को अब कैसे मिल ना
होय देख ।
आनन्दघन प्रभु मोहन प्यारे टारे न टरत नहो
करम रेख ॥

१८

केते बरजोरी लालन को कहो गवन करो तुम जिन ।
समूह उनहो को चित है चढ़ेगो जब कैसे कटेगो
निशदिन ॥
डर लागत आलो मोहि उनहीं ते बैरस काम ते विन ।
जोकोऊ उनके आवनको कहो मोको देहो नग मुक्त
हस बाको वह छिन ॥

१९

नीलकंज गात सुभग लोचन अनियारोरी ।
देखत छवि भूल जात गनत गुण तिहारे सुनरी
सखी कासो कहों शोभा अति भारोरी ॥
जाकी छवि देख देख सुर नर मुनि धरत ध्यान
वाही छवि काशी माझ शङ्कर उधारो वाही छविरी ।
जनक नगर देख मुनिन ध्यान छूटे वाही छवि धीरज
प्रभु काम कोट वारोरी ॥

२०

अब रस राखिये हो कुमत न चलिये चाल ।
करबो जो चाहिये जो रङ्ग रहे जामें रच पच के
कल्याण कियो नवल लाल ॥

२१

संयोगो विन विलपंत निशदिन वोहरो कहे सब लोग ।
मन गयो मनोहर के सङ्ग हितसे न रखियो
सो लोनो ओग ॥

२२

चढ़ो रहत चित पे वह मूरत विसर गयो सब भोग ।
औषधि न याको नहीं जगतमें विरह एसो रोग ॥

२३

केते सुख सोवे नोदरोया श्याम सूरत चित
चढ़ी रहत नित ।
अवध बदी अजहूं नहीं आए मोहन मीत ॥

२४

मान जिनके सुन्दररूप एतो हठ नहो कीजे हो ।
काहूके लगाये बुझाए श्रवण न धरिये हो रस पीजेहो ॥

२५

एक ओढ़नो ओढ़ पोढो तिया पिया प्रेम परजङ्क ।
सुरत न सङ्गत रीझि भीजे आपने आपने करत है
निशंक ॥

२६

गत गई मत गई बोलवेकी जत गई कुलहूकी
पत गई परी प्रेम भीरसी।
कुल लोक लाज गई नीद भूख घट गई लुटगई
झटदे निपट अधीरसी॥
यमुना के कूल कालसी बजाई बाँसी हाँसी की
जग गौर सुखत होगई नगीरसी।
आहनके घावन से घायल भयो तन आखिनते आँसु
जात ठाड़े की वहीरसी॥

२७

मोतियनके मानकनके और लालन के जरी जरी
जीन बनाएते।
अरबी एराकी ताजी तुरकी कोऊ कोऊ का जनाय
सके एसे मुअ घग नखनके बसदेमें आएते॥
जा सकुचन उन लागो श्याम बावरीसी जोरे
बाजे बाजे आप बाजीके चलाएते।
वरे तेह व्यार खुलेते हजार पाव लाख पाव होत
एक पाव के लगाएते॥

२८

तूं उठ चल सुह बात तज आना कानी।
बहुतसे घर बसे हैं वह देखो राजा मानी सो ईरानी॥

२९

सोयरी सोयरी पवन चलतहै माई फैल रही चाँदनी
निथरी निथरी।
निशदिन पलहूं न लागत कपोलन लागे अलकें
बिछुरी विथुरी॥

३०

बालापन तरुणापन गयो आयो है विरध पन
अजहूं समझ मन मेरे।
निशदिन सुमरण वाको कररे जियररे जाको
नाम करीम खरे॥

३१

आलोहों पूंछत हों तोसों नकरे बैन कहो केसे
परे चैन वाके मनको।
दुरजन लोग मेरे पाछे परेहैं कोऊ विध नाह बन
आवे मोकों तज देहों वास वृन्दावनको॥

३२

रुम झुम भर आएरी न ना तिहारे।
विथुरीसी अलके श्यामघनसी लागत झपक झपक
उघरत मेरे जान तारे।
अरुण वरुण नैना तेरे तामें लाल डोरे तापर अंबुज
वार वार डारे।
कहे सोया तानसेन सुनो शाह अकबर उपमा
कहालों दीजे बिन अञ्जन कजरारे।

३३

एरी अब लुक भजजावो सनसुख होवे पियारे
सों सुरङ्ग भरो कीजिये बतीयां।
मान सीख मेरी काहकी कुमत न लीजिये छाड़
यह हठ चल लिपट लाग पर गुलाल की छतीयां॥
देख तू एसी फुलवारीसी होरही कर अपवस
सुन्दरमें मनाय रही बतीयां।
कबके जोवत वाट प्राणेश्वर प्यारो जानबूझके
काहेकों करत है तानसेन प्रभु सों घतीयां॥

३४

सो अब मेरी पीर नहीं जानै न माने धरे एकन मनका।
सोच सकुच काह को नकरे एसे निपट नदान॥

३५

तरसत रहत मेरो जिय माई पिय विन कछू न सोहाई।
तेसी दामन कुंध चोध घन बोल करत ते सोई
पपीहा बोलत दुख दाई॥

३६

वनरा उनीदा नाहिन आली वनरी के नेह में अखीयाँ
छकरही।
सोंधे सिरो झुको सुवास ते आली तरुणी वारी
सब महक रही॥
जे सखी पोत पहलेते वनरे आगे टोन कर झूंठ
साच बहुत कर रही।
उन मानी नक्योहूं तब नवलवधू को पोत देखत
सब जक रही॥

३७

अत कछू नाहरे मन अजान अजहूं समझ सपने
लोभ मद क्यों खोवत जनम अपनो।
जादिन पिय ठिग जायगो तो कहा मुख दिखलायगो
अन्तके समय यही काम आवेगो हरि नाम जपनो॥

३८

झलक झलक आयो लाल आखनमें नीर सुरत
करे असुअन ढलक ढलक बह गयो कजरारो।
सुख की देह पलक एक में दुवरी भई खलका खलक
करत भूषण और मुकतनके गजरारो॥

३९

भूलो मन भूलो फिरत है अपने घट परघट को
लोभ लगेगो।
इते परंद मेरे पर जैसे पतङ्ग जोति देखे जलेगो॥
हाथ पाँव आँखे कान जीभ तरुवारे बसहै कोकल
बोलेगो।
लाखनमें तुँही अकेलो तेरोही नाम लेले जपेगो॥

४०

मेरो ध्यान राखिये ऊधो गुण मानोगो मैं तेरो।
नेक श्याम को समझावत रहियो तब जानोगो
वेग करो जो फेरो॥

४१

..दर आएरी लाल पिया विन लागे डरपावन।
एकतो अधेरी कारी विजुरी चमकत उमर घुमड
वरसावन॥
जबते पिया परदेश गवन कीनो तबते विरहा भयो
मोतन ताबन।
सावन आया अति झर लावत तानसेन न आए
मनभावन॥

४२

छत्रपति मान राजा तुम चिरञ्जीव रहो जोलों
ध्रुव मेरु तारो।
चहूं देशते गुणीजन आवत तुमपे धावत पावत
मन इच्छा सबही को जग उजियारो॥
तुमसे जो नहीं और कासे जाय कहूं दौर वही
आजज कीरत करे मोपे रक्षा करन हारो।
देत करोरन गुणीजननको अजाचक किए तानसेन
प्रतिपारो॥

४३

तनदिरना उदानी तनुमतन दिरना तनदिरना
तनन दिरना दिरना तदानि तनि उदानि दीम।
नाद्रद्रदीमतननदिरनादिरनातननननतनदिरनादिरना
दिरनातननाद्रद्रदीम॥

४४

भूलोसी फिरत बौरात कुञ्जनमें एतो कहो मान
प्यारो देख रहोरो घरमें।
तबतो न मानी आन जातो सुनवे को तान
मानत नाहीं आन तरुणाई केते अब हमे॥
तोड़सो विरह भुवङ्ग हाथ रघुनाथजूके रोम रोम
रम रह्यो विष सारो देहमें।
सासरो भरन लागो आसरो टुरण लागो आसरो
निकस आई बांसरो के नेहमें॥

४५

चक्रित हो रहे नेन तेरे आलोरो निरखत प्यारेको
यह छवीलो छबि।
चन्द्र समान वदन तामध सोहे अञ्जन अधर और
जावक भाल याको निकाई बरन सकै कौन कवि॥
वले पीऊ तर भुजन औरको चकोरन को छाप दई सब।
रङ्ग रङ्ग के प्रभुके हितति जामें मनभावत जितही
विकानो अब॥

४६

जिनसों पावे गुण तिनको मानत नहीं।
हो कहाँको सयानप एक रख सुजान गुरुनको
ध्यान छाड़ कर अज्ञान॥

४७

सुमरण कररे यह जिय धररे रवको ले ले नाम।
मेरी कही तू मानलेरे छाड़दे क्रोध और लोभ काम॥

४८

अरज मो गुन्हैंगारकी कबूल कीजिये वास्ते
रसूल के मेरे तन मन ते ।
मुश्किल मोपे आय परी सुन कीजिये सोधिये
आसान या करीम या रहीम दुख पाप हरनते ॥

४९

मेरो मन नाही बहलियेरी ऊधो श्याम मधुपुरी जात ।
कैसेके धीर धरों इन सोचन वह जात हम जानत
हमरो जिय वहरात ॥

५०

कहा तुम गावत हो गायन नादविद्या अति
अपरम्पार ।
गीत प्रवन्ध चारु धुरपद को कहो कौन प्रमाण
केते गुणी रच पच हार ॥
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना बाईस सुरत
उनञ्चास कोटि तान की सम्भार ।
कहत बैजू बावरे ताकी छुरन मुरन आरोही अवरोही
अलाप अस्थाई सञ्चाई प्रथम वोंकार ॥

५१

काशी काश्मीर कामरू करनाटक बूंदी बुंदेलखंड ।
मालवा सुलतान मेवाड़ खुराशान वल्खबुखार
गोकुल मण्ड ॥
बीजापुर वङ्ग दवदकसान रूम श्याम भरत सम डण्ड ।
कहत तानसेन सुनो हमायंके नन्दन जलालदीन
अकवर जाके डर डरात ब्रह्मण्ड ॥

५२

इन अखीयन विरह का बेल भई सींच सींच जल
असुअन पानी निशदिन होत नई ।
उलही लता पोहोपन ते अल पताल गई
युगल चिरण को छपाते सब तन ठाठ ठई ॥
मड़ डड़ याडड़ रडा डम् । ड०तड डाजाड़ाभड़ानि ॥

अथ गनागन भेद

५३

मगन नगन अरु सगन गिन यगन चार शुभ दान ।
जगन रगन सगन यहि तगन अशुभ पहचान ॥
मगन तीन गुरु जानिये नगन तीन लघु होय ।
भगन आदि गुरु होतहैं यगन आदि लघु जोय ॥
जगन मधि गुरु होत हैं रङ्गन मधि गुरु पेख ।
सगन अन्त गुरु ढूढ़ले तगन अन्त लघु लेख ॥
भूमि देवता मगन को नगन सुर गही होय ।
जल जानो तुम नगनको चन्द भगन को जोय ॥
सूरज जानो जगनको अगिन रगन को जान ।
सगन देवता पवन है तगन अकाश पयान ॥

विहाग—तिताल

लोग निठुर माईया मधुवन के लोग ।
वेग पठयदे श्यामसुन्दर को सब व्रज विरह वियोग ॥
हमना जानत तुम एसो करोगे प्रीत करी किधौं योग ।
सूरदास स्वामी तुमारे मिलन को कब बनहेगो संयोग ॥

२

कैसेके सहोंगी माई पिय विन निशदिन दहत
अङ्ग अनङ्ग आग भभूके ।
सेज समय सुवास शीतल हँस प्रवल होतहै
या समीरके झुके ॥
वन उपवन ज्यों दामिन कोक चहुं देशते
देतहै फूके ।
शाह कीरत मेरे मनमें योंँ बसतहै यह डर
डरपत हों जिन लागेरी आँच तन बाहुके ॥

३

इन अँखियन मनमे विरहको बेल भई ।
सींच सींच जल असुअन पानीरो दिन दिन होत
चाह नई ॥
उलहत पातन नए सो बून्द पताल गई ।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस विन सब तन छीण भई ॥

४

कठिन जियरारे पिया विन कैसे रहे ते अब न रहों ।
गयो न निकस तबही जब ललना चलन चलन कहो ॥
कलन परत एक पल छिन एतो दुख मोपे
न जात सहो ।

अपने मरत जीवत दोलतखान विन निशदिन
विरह मनमें रहो ॥

विहाग—आड़ा चौताल

भाज भाजरे गढ़पति शाह जहाँगीर शाह रिसानो ।
चहुँचक जाको आन कबूल खुरासान लपक
झपक लीनी पग लागो राजा रानो ॥

विहाग—तिताला

सोहेरी यह शीश सेहरो वनरेके यह ।
मुक्तालरी मुख पर विराजतहै वरणन जात काहूपै ॥

२

है अवला कछू भेदन जाने सेज चढ़ी तब पिया
सोंडरी ।
सोवत कँथ जो जाग परे तब कंथन धायके बाँह धरी ॥
दोउअनके झकझोरन में अम्बर चूनर करत छूट परी ।
कर कामिन दीपक झपक दियो तेहि कारण सुन्दरि
हाथ जरी ॥

३

लोचन चुवत है चेत अचेत देखेमें ।
कवल पतर ते तैसेही सेत धन धन मुक्ता विंव
यह तो देखेमें ॥

४

.या लहंगो शोभित वनी सो भले बनो ।
वोएकी तोहे तिलक सोहे गरे एसोरी मानो तनी
है तनो ॥
रूप रङ्ग कीतो कहा कहिये अतर अरगजा सोंधसनी ।
यह छवि देख रीझे शाह बहादुर धनो ॥

५

देख सखी पिय विन नागन कारो रात ।
कबहूं कबहूं जोहोत जुन्हैया मानो उहट लटसी जात ॥

६

तूअब छाड़ दे गलवाँही छाँड़ आनाकानो ।
बहोत हसे घर बसे हम देखे राजा मानो सोई रानो ॥

विहाग—चौताल

एतू देख देखरी प्यारे को उलट रूस रहन ।
मैंजो गई कहाँहै सोतें मेरी आई कहन ॥

२

बैनी रात समय उर परचोनी बहोत लागारी कारो
सोठोरो ।
कहुँ कहुँ पोके भोर भोर लागी मनोहो सुहाग
कारेनो ॥

विहाग—तिताल

अल्लाका नाम जप मन मेरे जो तू चाहे तब हो
तनको आनन्द ।
औगुण जेते करत सो सब छांड़दे बाहू सोंचित
लावतो जाय तेरो दुख दूंद ॥

२

इन अँखियन को कहो मत जिन भूल करो कोउ
देखो यह परवस करेंगी ।
वेही अयाँनो जिनन पहचाँनो एक पलमें उठाय
यह मन देंगो ॥

३

माईरो तेज भलो जे सो सुख अपने सपनेमें पोया
मिलत ।
जादिन ते मेरो नोद हर ले गए वारों इन इन
अँखियन भोरह लागत ॥

४

जीवन क्योंकरहो अरे जानिये ।
ते जीवन जग करुवा लागत मुझे न भावे को ॥

विहाग—चौताल

चलरी चल चलरी चल लेचलो तो पीयपे मेरो कहा
जो करिये ।
हौंजो हेतु पठाई कित तोसों प्यारे सोंकबहूं
न लरिये ॥

विहाग—झपताल

प्यारे देख देख तिहारे आवनको सब निशि वाट
अवहो सोई है ।

बहोत भावत हों अधिक जीयते बाकों पीतम तुम
तबही इतरात उत रात रहे जात उनही उनही
मांतन तिय मोही है ॥

२

अब सुध लीजे मेरी करीम रहीम हों पतित तुम
पतित उधारनहार करतार ।
और काहूको नहीं आस तुमही करो सहाय दुख
चिन्ता सब जाय सब तनते यही रटतहों वार वार ॥

विहाग—जङ्गला

जीवन अब सब जगमें मेरो पिय कीनो जामें वास ।
विलपत छांड़ गए अब हमको अबलो न बुलाए
अपने पास ॥
सांवरे एतो विसार दियो मोहे नाहीं हती यह
उनसे आस ।
किधौं एसे फन्द फन्दे जो मिलत सपनेहुन
आवनको लगी प्यास ॥

विहाग—सुरफाक्ता

आज पियके मिलवे की बात काहू सेतिय सुन आईहै ।
मनही मन मुसक्यात अधरनमें आनन पर पीत
जनाई है ॥

२

अति मन चाहे देखन कों श्यामसुन्दर पिय विन
कल न परत है आली हित उमगत नित हियमें आय ।
जो कृपा करे हर मिलाय तो जिय सुख पाय दुख
द्वन्द दूर होवे तनते तब जब अङ्ग भरे वो मिले धाय ॥

विहाग—चौताल

गई नीद उचट सखी सोवो हरो नेकन आई ।
एक टग रहे पाटी लग मग निरखत तेसी चलत
पवन पुरवाई ॥
वेकल रहत रोम रोम तलफत परी विरह जो
नमाने मोरी माई ।
मीन जल जोई शाहजहांके दरसन विन अङ्ग अङ्ग
सताई ॥

विहाग—रूपक

नैन सलोनेरी तेरे नैननहो हरि वस कियो हरि
वस कियो
दीरघ जमाल विमल विलोल कटाच्चन मर रहे
तापर कजरा दियो
भोंहे धनुष और चन्द सो वदन और कंचन सोतन
तेरो कमलकलिसो उठो हियो
तानसेन प्रभु जान बूझ कर बोलवे को नेम लियो

विहाग—तिताला

कान्ह कहूं पाए नहीं हो हरि ।
एक वन ढूंढ़ो सकल वन ढूंढ़ो सो कहूंअन दृष्टन
आएहो हरि

२

कौन उपाय कीजिए सजनीरी छिन छिन हियो
अकुला
दरसन विन दृग तपत रहत तापे अतिही अन्त
तन ता

विहाग—रूपक

ऊधो मोरोरे दुख हरवेको पाती पठाई देखातरे
हौंतो भिखारी हो नन्दलाल के दरसन को सखी
प्यासे कहूं ओसते अघातन

२

ललन परदेश घुमड़ आई श्याम वदरीया महावट
साजन विन मोहे विरह सतावे बुंदरीया न रहे ह

विहाग—तिताल

अथरवनको भेद जो ज्ञानी सोई जाने ।
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मुरछना को सुरत पहच

२

अल्लहके प्यारे नवी के दुलारे हसन हुसेन जगत
उजिया
तू करीम रहीम समीव बसी रहम गुन्हैगारके
वकसन हार

३

सदान काहू की रही प्रीतमके गलवांह ।
ढरती फिरती यों गई जों तरुवरकी छांह ॥

४

मेहदी लावन दे बनरे अबही गारी दूंगीरे न डरूंगीरे।
कबकी में ठाड़ी ठाड़ी रङ्ग लिए रङ्गमें महारङ्ग
आली रैन बड़ीरे मेरी निट गई है तुज तनरे॥

विहाग—आड़ा तिताला

वदन ढांप पोढ़ी लीला पट पहेरे सीस रहोहे प्यारो।
जबही घूंघट पट न्यारो करत पिय मानो जीत लजारो॥
आरस प्यारो पहरे पीतम परम विचित्र महारो।
शाह अकवर निहोर करत तिय है उठ चल हंस
बोल हों वारी॥

२

भाँदो कैसे दिनन माई श्याम काहेकों आवेंगे।
कोकलाकी कुहुक सुन छाती माती राती मई विरही
आगे ऊधो फूंक फूंक जरावेंगे॥
शाहजहाँ पिया तुम वहुनायक विरहिन के अँसुअन
को तपत बुझावेंगे॥

विहाग—ताल ध्रुपद

एतू देख देख प्यारेको उलट रुस रहन।
जो कहंसे आएहो पूंछो कहाहै सोतें मेरो यह कहन॥

विहाग—तिताला

कोटि वरषलों कायम दायम होय अटल दरवार
जामें सरसाईको उनही कर सकत काह सङ्ग।
और जो जाको अरजताको ध्यान धरे करत निहाल
सब अङ्ग अङ्ग॥
वेतो निपट प्रवीण अधिक चातुर तिनसों कैसे
छिप सकै अच्छर तान राग रस रङ्ग।
धन धन विधना जे एसो नर एक बनायो प्रताप वली
एक नवाव सालारजङ्ग॥

विहाग—आड़ा तिताला

है आजरे लोयन रस माते।
तोही सों पीत तोही सों हिलन मिलन तेरेही रङ्ग राते॥

२

वदन ढाँप पोढो लीलो पट पहेरे रस रहो है प्यारो।
जबही घूंघट पट न्यारो कियो चाहत पिय मानो
है जात उजारो॥

३

ललनारे परदेश घुमड़ आई श्याम वदरोया महावटको।
एकतो विरह मोहे सतावतरी दूजे बदरिया
नारहे हटको॥

४

क्यों छैला छल कर दावे देवी मेनु छैला छेल तेनु।
हवे शोरीतुं को जाने इश्क दी गला भलावे॥

५

आज इस्थे रहणारे मोयाँ हारे पंछी दिल
मिलाणा जानवे।
शोरी फकीराँ दामान लेन दाना रहजाँदे ईश्कदी
गला पहचानवे॥

विहाग—तिताला

तेरी यानो वे माही ड़ाड़ यार तेरोया गुमानी डाहाँ
वेयार।
ले चल मेनु लख थों उनादे जिदड़ो माड़ो फेरी यांवे॥

२

मिलजा जानवे जिन्द तोलावी हुण साड़रे नालवे।
दौद निजारेदा मेला ठेला शोरी फकीरो दारखले
मान॥

३

साथों राजी रहणावे मोयाँ भूलदी को नाही मेडा
सोणा मिलना।
तेरे मिलननु मेडा जीय चादे ईश्क दीगलाँ
चङ्गणावे माहे मन विश नोके इमसब॥

४

गड़ीयाँ निमाणी वेसुख देवी वे सुख तेनु हावे।
एही राजी रहे नित तेनु सेमे मङ्गी ताड़े दरवाजे
देवी मुराद रवाणावे॥

५

साड़े नाल खुशी रहणावे हांवे माँड़ा सोणा।
महबूवांदी मान ले गला शोरी भलो बूरी
शर चहणा वे॥

६

कहोरे कोऊ वा कपटी की बातें।
श्रवण सुनत सुखहों मिलन में पंकुत हो तातें॥
सजनी तपत मिटाई समरको वाको मिल न करोरो
कहांतें।
व्रजनिध विन मन धीर धरहो कैसे भटकत हो
उन साथें॥

७

मिल विछुरन की पीर धीर लगावे सोई जानेरो वीर।
दीसा दुहेलोहेरो आली झेली सबही शरीर॥
या वेदन छेदन है तनकी जों मछली विन नीर।
अबके फेर मिलावो व्रजनिध धरहूंगो मन धीर॥

८

मैं तेरो गुण मानोगी हिता चितचोर मिलायदे।
वा रसीयाके अधर सुधारस हाहा मोय पिवाय दे॥
मे यह तेरो यश कबहूं न भूलहों प्रेम झलकको झक
मिटायदे।
व्रजनिध अङ्ग सङ्ग रङ्ग करहों अनङ्गहि जग मिटायदे॥

९

ऊधो कछुअन श्याम करो जिन प्रतिपाल करत
अद आचक काटत डरोय डरो।
ठग बटपार करत श्रवणनमें यातें वालगरो हम
न नित प्रीत उन हरि सन अबहूं आन परो॥
यह अङ्कुर कुव कुवन्याको लेगो रतन हरो।
भयो व्रजहीन अजहूंन श्याम विन डार परो तगरो।
जाको चोरता नन्दनन्दन को चह्न लता वगरो शम्भु
आसमान जब फाड़के देहोहे थिगरो॥

१०

ऊधो काहे कों आवत जात।
वेनिरदई पोर नहीं जानत फिर बूझत बात॥
जोगत भई मौन जल निकसत तलफत निशदिन जात।
तज तन देह प्राण यह कैसे दरस लोग ललचात॥
जबतें विछुरि गये नंदनंदन पल पल युग सम जात।
विनति करत मान माधो सुखजे बसैयो नन्दतात॥

११

मत जारि जानो अपनो दरस देखाजा।
चुन चुन लकड़ो चिता चुनाजं अपने हाथ लगायजा॥
जल वल भई भस्मको ढेरी बदला होतो बूझाय जा।
शाह हुसेन फकीर साँईदा दिल दाग मिटायजा॥

१२

मोकों पिया विना हेमा रैन अधेरो डरपावे।
घरी घरी पल छिन मोहे कल न परत मो विरहिन
आन सतावे।
मदनमोहन विन मदन जगावे तातें कछून सोहावे॥
जानकीदास मोन जैसे जल विन तलफ तलफ
मुरझावे॥

१३

जन मन हेरवा खेल भुलानो जननो।
गर्भ जनक जायो मम पायल प्राण तन कौन सयानो
घरी पल छिन सुख चूम ललचायो सखोन सङ्ग
जाय न यानो।
निशदिन खेल करत गुड़ीयन को सुध न रहो
कछू देह अपानो॥
जहाँ जहाँ वर व्याहन कों खोजत समझ समझ
मन होत गिलानो।
एको गुण ढङ्ग भयो न मोको देखो मोह पिया
पहचाँनो॥
लगन सोधा व्याहन आए सज दुलह बनो रूपको खानो।
देख नगर नारी नर मोहे सादर लेन चले अगवानो॥
चले लिवाय सदन अपनेको हार चार आदर
बहु कीने भावर परत विप्रवर वाणो।
गांठ जोर सिन्दूर लगावत पानो ग्रहण कीयो
निज जानो॥
चले लिवाय सदन अपनेको विछुरत मात बहोत
अकुलानो।
सुनो सास दारुण अत मेरो ननदो कठिन करो
किलकानो॥

कौन उपाय जनम भर निभवत हँसहो लोग
ससुर अभिमानो ।
सब तें कठिन कलेश रैनदिन मेरो सोत बड़ो
दुखदानो ॥
एक उपाय समझ मन अपनो छिन छिन भरव
पीया घर पानी ।
लछणदास निभाव करे वे जनम जनम
जिन हाथ विकानो ॥

१४

मृदु धुन वंशी कान्ह बजावें ।
दिसा दुहेलो एरो हेलो सुन सुन मनल लचावें ॥
कलन परत एक पल दरसन विन घर अगना
न सुहावें ।
जानकीदास श्याम सो मिल हो कोऊ कलङ्क लगावें ॥

१५

बंशी में राग विहाग सुनावें ।
सप्तसुरन और तीन ग्राम मिल मधुर मधुर स्वर गावें ॥
लाग डाट और उरप तिरपसों सुनतहो मनल लचावें ।
कृपा सखी रस वस करलोनें वार वार बल जावें ॥

१६

रव्वको तादिक अहो दिल जानो ढोलन पाया ।
दाभोया आनन्दघन व्रजमोहन प्यारा घर बैठे घर आया ॥

१७

प्यारो पग होरे होरे धररो ।
जो गज चलत सुधररो ॥
अनवट विछुवे पायल बाजे लोग जागे घर घररो ।
लुक छिप चल मिल श्यामसुन्दर सो मेरो कह्यो
अब करोरो ॥
विष्णुदास कोई टोक उठेगो मोहे लागत है डररो ॥

१८

मेरो कह्यो मान लेरी मद माती कहा फिरत इतरातो ।
श्यामसुन्दर सोर सोया पायो ताहि मिलन नहीं जातो ॥
हों जो मनावत तू नहीं मानत झूंठो सोगन खातो ।
विष्णुदास प्रभु सो मिलवेको सुव धरि हात नआतो ॥

१९

छोहरा छाड़ देरे कर मोरारे ।
बाट घाटनोहो रोकत टोकत पनघटवा पनोया
भर जान देरे ॥
ऐसो लङ्गर ढीट वरजो न माने कहाकोता मेतोरारे ।
पीर पराई जानत नाही सास ननदको होरे ।
विष्णुदास तोरे पइयाँ परहूं हाहा खात निहोरारे ॥

२०

मेरा दिल ले गयावो प्यारा कित वल जाय पुकारा ।
सुनरी इयो असोवे दलकोता दुख दोता हम यारा ॥
सब निश लगदो पलक नलगदो बैठ रही लाचारा ।
अमेराम कृष्णदेव ऊपर तन मन धन सब वारा ॥

२१

धुतारा जोगो एक वैरोया सुख बोलेरे ।
कानन कुण्डल मल विच सेली अवतेरो सुन खोलोरे ॥
रास रच्यो वंशीवट जमुना तादिन कोनो कोलोरे ।
पूरव जनमको मेहूं गोपो का अधविच पड़गयो
झोलोरे ॥
जगत वन्दी ते तुम करो मोहन अबक्यो बजाऊ ढोलोरे ।
तेरे कारण सब जग त्यागो अब मोहें कर लों लोरे ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चेरी भई विन मोलोरे ॥

२२

रासमें खेलत है पिय प्यारो ।
सुभग विलास वृन्दावन कुंजन रास करत बनवारो ॥
बाजत तान मृदङ्ग झालरी श्रीमण्डल सुवल सुखकारो ।
जय जय कार होत वसुधामें गावत है सुर भारो ॥
नृत्यत प्रभु मेरो कालिन्दीतट मण्डली व्रजनारो ।
चतुर-शिरोमणि युगल जोरी पर सूरदास वलिहारो ॥

२३

हमार आखन को दोउ तारे ।
राधामोहन मोहन राधा ए दोऊ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अमिराम मनोहर वज वरसाने वारे ।
शुक सारद नारद वलिहार उपमा वरनत हारे ॥

२४

श्याम तुम मुरली कहांते पाई ।
करत नहीं अधर नते न्यारी कहां ठगोरी लाई ॥
ऐसी दीठ मिलतही हो गई उनहीके मन भाई ।
हम देखत वह पीवत सुधारस देखोरी अधिकाई ॥
कहा भयो मुंह लागी हरिके वचन लियो रिझाई ।
सूरश्याम को विवस करावत देखत मन ललचाई ॥

२५

मोहन प्रीत करी मैं जानी ।
दे विश्वास गयो तज मथुरा रति कुब्जा सों मानी ॥
कपट भरो यो कारो तन तेरो कपट भरी सब बानी ॥
आनन्दघन हित चितकी बात जानतही विरानी ॥

२६

कबीरा बिगडार मोरे भाई तूम त विगरे राम दोहाई ।
पारसके सङ्ग लोहा विगड़ा सो लोहा पारस होजाई ॥

२७

सिन्धुके संग सरिता विगरी सो सरिता सिन्धुहि जाई ।
कोयलके संग कौवा विगड़ा सो कौवा कोयल हो जाई ।
साधुजनके सङ्ग कबीरा विगरा सो कबीरा साधू हो जाई ॥

२८

बैठे सुखपाल लाल आवत महलमें ।
आगे आगे मोर भारी पीछे असवारी सारी बीचमें
रघुवर चलत चहलमें ॥
चुन चुन कलीया में सेज विछाऊं चोवा चन्दन
चरचो चहलमें ।
पोढ़ीय श्रीदशरथराज-कुंवरवर अग्रदास जन
दासी टहलमें ॥

२९

पौवाढ़े सुख सेज सीताराम ।
प्रभुजीके कनकमन्दिर पुहप सेज्यों कोटि उदय
भए भान ॥
देवता सब चोकी आए सगमुख हे हनुमान ।
सरयुके तीर अयोध्यानगरी तहां विराजे सीताराम ॥
कौशिकनन्दन जगत-वन्दन सूरत सुन्दरश्याम ।
चोवा चन्दन और अगरजा कनक-डब्बा भर पान ॥
दास तुलसी लाल ठाड़े खाना जाद गुलाम ॥

३०

पढ़े पढ़े सारङ्गपानी । अखीयां में नीद रमाणी ॥
प्रभुजीके मुखसे जम्भाई । आई है लो देत कोशल्या माई ॥
प्रभु धनुष बाण धर दीजे । आवन महलामें कीजे ॥
लछमनजी आज्ञा दीजे । तुम रङ्गमहल सुख कीजे ॥
गावे मलूक दिवाणा । मेरी अरज मान भगवाना ॥

३१

उनीदे नैन रतनारे राम सोनार चले शीतलजल
कञ्चनकी झारी दीपक जोय होवारू ।
वलि वलि जात कोशल्या माई तन मन वारोंगी वारू ॥
खावो खाड़ खुरमा अरु मेवा मधु पकवान काया
चूना लोंग सोपारी ।
अरु चावत पानार कटि पर लाल काछनी काछे ला
ओढ़े पीत पिछोरी ।
सकल भवन की शोभा वारों रघुवर जानकी जोरी ॥
हास विलास विनोद परस्पर सुधीर रघुवीर ।
तुलसीदास आस चरणों की हरहु विषम भवभीर ॥

३२

लालनके नैनन निद घुलानो ।
मृदु मुसक्याय कहत पिकवैनी यामिनी बहोत विहानी ॥
ललित सेवे ललिता रच राखो रङ्गमहल रजधानी ।
रतन परजक मनोहर जोरी सहज गात अरसानी ॥
पाय पलोटत रुचिर कर सहचरी अङ्ग अङ्ग पुलकानी ।
दासन दास सेन पिय प्यारो रसिक-जनन सुखदानी ॥

३३

वंशीवट सखी पुलिन यमुनतट नीको मोहे
नीको लागे चन्द ।
शरद सोहाई जामिन भामिन रास रच्यो नन्दनन्द ॥
मण्डल निरत करत सब युवती प्रमुदित सकल आनन्द ।
जानकीदास विलास रास रस सुरत रतिपति मयो मन्द ॥

३४

प्यारो आगे चली आगे गहवर वन भीतर जहां बोले
कोयलरी ।

अतिही विचित्र पुष्प पत्रनको शय्या रुचि रुचिर
सवांरी तहां तुव सोईलरी ॥
घरी घरी पल पल तेरोही कहाँनी तुव मग जोइ लइरी।
श्रीहरिदासके स्वामी श्यामा कुञ्जविहारी कामरस-
मोह लइरी ॥

३५

रङ्ग भरे लाल रङ्ग भरी राधा रङ्गीलो प्यारी राधा ।
एकतन एकमन एकही समान दोऊ नेकहू न न्यारे
होत सकत पल अगाधा ॥
कविसों कवीली भांति नैननिसो में मुसिक्यात
मुसकन में मन बढ़ोहै रङ्ग अगाधा ।
तैसेई नवल सखी तैसेई कुञ्जविहारी तैसी मेरो प्राण
प्यारी पजोमन साधा ॥

३६

अङ्ग दुराय चलिए सङ्ग मेरे ।
कहि सुख मोन अधर वोट दे दसन दामिनी
चमकत तेरे ॥
तजि नूपुर कटि क्षुद्र घण्टिका
नाद सुनत खग मृग सब घेरे ।
कुंभनदास स्वामिन वेग चलो
निपट निकट गिरिधरन के नेरे ॥

३७

मधुर मधुर चलत आज को रतिनन्दिनो ।
लोचन अलो ललित पलक मन्द मन्द हंसत अलक
सुन्दर मुखकान्ति कमल चन्द नन्दिनो ॥
सोरभ भरि भरि दसन बसत करो सुवन वेश
रूप हेरो अमरनारो चरण वन्दनो ।
मानो तन जलद वसत वरसत रसम सरसन
वल्लभ प्रताप विनय करत हरि कन्दनो ॥

३८

तिहारोहो दास अनन्य कहाऊं ।
प्रेम भक्त कर चरण कमल तव उमगि उमगि दुलराऊं ॥
तुमरो दरस [illegible] कर बहु विध तुमको शीश नवाऊं।
तुमरे बसन अजीरान पहरूं तबन तब प्रसादों पाऊं ॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम प्रभु
तुम तजि अनत न जाऊं ॥

३९

अद्भुत रास रचारी एहाँ व्रज युवतिन मध रङ्ग मचोरी।
यह अन्त गान तानही सचोरी
मुरली मधुर धुनसों जचोरी ॥
नवरङ्ग अङ्गन सप्त सुर सङ्ग सोहन नवल वर मिल
राधिका दोउ करत निरत सुमोहन जचोरी ।
वलके अलके हलत वेसर डरत ग्रीवन मध रचो झमक
आखन जमक पावन रमक गिरिधर तन जचोरी ॥

४०

ये दोऊ आनन्द भरे हैं उमङ्गे दृगन कटाक्ष होत
एक सङ्गे ।
नवदामिन घन सोहत अङ्गे बढ्योहै चौगुनों
रस सुख रङ्गे ॥
रङ्गरस वस दिवस दम्पति सरस सम्पति रस लहे ।
वलित भाल विशाल श्रमकण त्रिविध त्रिविध तहाँ
मारुत बहे ॥
पहर नल सों पीतपट दोऊ भूषणादिक जग मगे ।
अरगजा और अगर अम्बर अतरसों अङ्ग सङ्ग वगे ॥
हैईश सुधर समाज हो रह्यो वो कवि निरख नैनन
खुल रह्यो ।
यह रासमण्डल सोज छायो हैरो अति आनन ओप
उजास भयो ॥

छन्द

भए आय सङ्गीत प्रीत सों ललितादिक सुख उघटे ।
तथेई तत तथेई थिरर थिरक सुघटे ॥
बजत मृदङ्ग सुढंग धिधिकट धिधिपक्रक्रड़तान धिलाङ्ग
धाकुकुकुकु धिनन धिनन धिड़धांधमंकधा ।
वजत वीण मृदङ्ग महोचङ्ग सुनत अतन सोतन तयो ॥
रमा रंभा शची तरसत जात नहीं कौतिक कह्यो ।
हे व्रजभूमि धूम शोभित भई वरषत सुमन देवधरन
शुभ छई एहां दुंदुभी घोर सुहाई कोकल सुर
नवछवि छाई ॥

विहाग—तिताल

मैं बलिहारो रामको जाको पतित उधारन नाम ।
किरीटमुकुट शिरभाल तिलक कटि पीताम्बर
तनश्याम ॥
कर सरोज धनु बान विराजत भुज विशाल अभिराम ।
कमलनयन मूरति साँवरो लख लाजत कोटिन काम ॥
शरणागत आरत-जन-पालन अति कृपाल सुख-धाम ।
मृदु मुसकानि बाणी करुणामय भक्तजनन-विश्राम ॥
मत्तगयंद लजात चलनि पर अङ्ग अङ्ग वर दाम ।
लछनदास विसारो न अस प्रभु निशिदिन घरो पल याम ॥

२

निदरीया गई आली हरि विन मेरे नैनसों ।
निश दिन सुरत लगी उनसों मन क्रम वैनन सों ॥
कोटि करो विसरे नहीं घरी पल
भूल गयो चित चैननसों ।
लछनदास सुरति सर वेधत पैननसों ॥

३

कुञ्ज कुञ्ज दोऊ व्रजराज लाडली रमत रजनी विमल
अरस परस करत केली ।
रसयुत नखशिख स्वरूप नन्दलाल रसिक भुव वन
विहार सङ्गसङ्ग अमित भए प्रेम खेली ॥
लछनदास सुख विलास छिन छिन अधिकात जात
रजनी बढ़त न ढिगई रसिक ढुरनि सुरति वेली ॥

४

रसना बौरी रसमें अनुरागी राम नाम काहे न रटत ।
आगम निगम सारही आपन आदि अन्तको बीर
निभावन हेतु जगतको ताहि विसारत यामें तेरो
कहा घटत ॥
जाको जपत शम्भु ब्रह्मादिक रमत सकल घटसों
न विचारत पर अपवाद लागत भूल काम क्रोध मंद
हरत बढत लछनदास भलो जामें सब को न सभारत ।
मानो जानी जिय पाप विमोचन कामधेनु सुरतरु
फलदायक सुखद सदा दुखमूल कटत ॥

५

नैन हमारे लागेरी वाहो ठौर ।
नटवर रूप वन्यो नखशिखलो जात लख्यो आज
अङ्ग अङ्ग छवि कहत न आवे शीश मुकट पर
लछनदास कमलदललोचन सुन्दर नन्दकिशोर ॥

६

चाल बांको प्यारी लागोरो मोहनको ।
आज अधिक छवि देखो आलो गोपन गोहनको
लाजत कोटिकाम भूषण लखि अङ्ग अङ्ग सोहन
लछनदास मनमोहत चितवनि बांको टेढ़ो मोह

७

शरदसरोवर सुभगअङ्गमें वदनकमल चारु
फूल्योरो
ता ऊपर बैठे जुगल खञ्जन मत्त भए मानो
करत लरा
कुञ्चित केश सुदेश सखीरी मधुपनको माला जुरि
कुंभनदास प्रभु गिरिवरधरन लालन
है युवतिन सुखदा

८

तेरे शिर कुसम विथुरी रह्यो भामिनी शोभा देत
मानो नभनिश
श्यामअलक छूटी रहोरी वदन पर चन्द छिप्यो
मानो बादर को
मुक्त माल मानो मानसरोवर
कुच चकवा दोऊ न्यारे न्य
कुंभन दास प्रभु गोवर्द्धनधर वस कीने
नन्दलाल प्या

९

वह देखो बरत झरोखन दीपक
हरि पौढ़े ऊंचो चित्र सा
सुन्दर वदन निहारन कारण
राख्यो है बहुत जतन कर प्या
कण्ठ लगाय भुजदे सिरहाने
अधर अमृत पीवत सुकुमा

तन मन मिली प्राण प्यारे सों
नूतन छवि बाढ़ी अति भारी ॥
कुँभन दास दम्पती सौभाग सोवाँ
जोड़ी भली बनी एक सारी ।
नव नागरी मनोहर राधे नवललाल श्रीगोवर्द्धनधारी ॥

१०

आज मेरे धाम आएरो नागर नन्दकिशोर ।
धन दिवस धन रातरी सजनो धन भाग सखी मोर ॥
मङ्गल गावो चौक पुरावो वन्दनवार धावो पौर ।
नन्ददास प्रभु संग रसवस कर जागत करहूं भोर ॥

११

देखो देखोरी नागर नट निरतत कालिन्दी तट
गोपिनके मध राजे मुकुट लटक ।
काछनी किङ्किनी कटि पीताम्बरकी चटक
कुण्डल किरण रवि रथकी अटक ॥
तत थेई ततथेई शब्द सकल उघट
उरप तिरप परै पगकी पटक ।
रासमें राधे राधे रटत रहे एक टक
नन्ददास गावै तहाँ निपट निटक ॥

१२

मोसों क्यों रूंसत है प्यारी मेरे तो तुमही तन मन धन।
मोहन लाल कहत राधा सों मेरेतो तुमही सो नितपन ॥
अब कबहूं जिन मान करेरो यह कहि कहि लागत
उर मोहन ।
चितस्वामी गिरिधरन अन्तर रति सोई हरे नागरके
गोहन ॥

१३

मोहन मुखारविन्द पर मनमथ कोटिक वारोंरी माई।
जोई जोई अङ्गनि दृष्टि परतहै तेई तेई रहत लुभाई ॥
अलक तिलक कुण्डल कपोल छवि
एक रसना मोपै वरणी न जाई ।
गोविन्द प्रभु की वाणिक पर
वलि वलि रसिकचूड़ामणि जाई ॥

१४

माई मोको चन्द लाग्यो दुख दैन ।
कहांवे श्याम कहांवे बतियां कहांवे सुखकी रैन ॥
तारे गिनत गिनत हौं होरी टपकन लागी नैन ।
सूरदास प्रभु तिहारे दरस विन विरहन को नहीं चैन ॥

१५

दोऊ मिल करत हैं भावती बतियां ।
गिरिधरलाल कुंवरी राधाके नखमणि अङ्ग
लिखित उर छतियाँ ॥
तैसो यों छिटक रही उजियारो
पूरणचन्द शरद की रतियाँ ।
केलि रूपनिधि यमुना श्रीभट वृन्दावन
फूल्यो वहु भतियाँ ॥

१६

सखोरी होत कहा समझाए ।
नैन वैन थकि रहेरी निरखि छवि
मन परो हाथ पराए ॥
गड़ी कोर उर वङ्क विलोकन कटतन क्योंहूं कटाए ।
ब्रह्मदास तबहो भले जीवन मोहन वदन दिखाए ॥

१७

वेणो सुन्दर श्याम गहो ।
सोहत सुभग शीश श्यामा के चम्पा और जुहो ॥
अङ्ग अङ्ग पहराय आभूषण देखोरी मुखहो ।
श्री विट्ठल गिरिधरन कहत यो रसको रास तुहो ॥

१८

राधे तेरे नैनन किधौं वट पारे ।
नैनवान लागे उर अन्तर घूमत ज्यों मतवारे ॥
अञ्जन देके पिय मन मोह्यो खंजन नैन सवारे ।
सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को नाचत ज्यों नटवारे ॥

१९

मेरी आखन सों ड़गर बहारो ।
जो एही घरो मेरो पीउ पाऊं धारे तन मन प्राण
नैननही वारो ॥

सेज सवारूं चमर ढुराऊं मधुर मधुर सुर गाऊं।
रसिक प्रीतम पिय अबके मिले जो
तो नैननि सों समझाउ ॥

२०

माई हौं हरिकी अरु हरि मेरो जिन कोऊ बीच परो।
रस अनरस की होंही समझौं न टूटे प्रीति मेरी
कोऊ कछू करो ॥
कोटिन छाड़ो हरिको सङ्गम गुण औगुण या चित धरो।
रसिक प्रीतम सों प्रीत हमारो दुरजन देखि जरो ॥

२१

विन गोपाल नहीं कोऊ अपना।
कौन पिता माता सुत घरनी
यह सब जग रैनका सपना ॥
धन कारण निशदिन भटकतहै
वृथा जनम गयो सबहो खपना।
अन्त सहाय करे नहीं कोऊ निश्चय काल अगन
मुख झपना ॥
सब तज हरिपद-कमल-युगल भज मोह निगुड़ तजि
हरिचरण जपना।
कहत दास वल्लभ गोवर्द्धन नाथ वल सदा सर्वदा जपना ॥

२२

तर हरि श्रीगोवर्द्धन को रहोये।
नित प्रति मदनगोपाललालके चरणकमल
चित दइये ॥
मन वच करम ध्यान धरिये नित गोविन्दकुण्ड-
में नहिए।
रसिक प्रीतम सुख दुखको बातें श्रीगिरिधारीजो
से कहिये ॥

२३

मोहे वलहै दोऊ ठौरको।
एक वलहै मोहे हरिभक्तनको दूजे नन्दकिशोर को ॥
मन क्रम वचन यह व्रत मेरे नाहिन भरोसो औरको।
चितस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल श्रीवल्लभ कुल
शिरमोरको ॥

विहाग—चौताल

जेते गुण तेरे नाथ तेते औ गुण मेरे गने नहीं
जात गरुड़ध्वजगामी।
हौं अपराधी कछू नहीं जानत
कपटी कुटिल कुटिचरकामी।
और पतित तुम बहोत उधारे तुम सब जानत
अन्तरजामी।
कृपाकटाक्ष तरे भवसागर
सूर पतित पतितन में नामी।

विहाग—तिताला

हमारे आखनके तारे।
राधामोहन मोहन राधाए दोऊ रूप उजारे ॥
गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज वरसाने वारे।
शुक शारद नारद वलिहारी उपमा वरणत हारे।
सूरदास प्रभु तिहारे दरस को वार वार बलिहारे ॥

२

मत जारे जानी अपनो दरस दिखाजा।
चुन चुन लकड़ी में चिता चुनायधो अपने हाथ
लगाजा ॥
वल जल भई भस्मकी ढेरी वदलाहो तो बुझायजा।
शाह हुसेन फकीर साँइदा कुलदा खोज मिटाजा ॥

विहाग—चौताल

चितवन पर मेरो मन वस कीना सांवरे सलाने
तेरे रङ्ग भीनो।
दीरघ द्रगन विलोक कटाक्षन जिन मधकजरा दीनो
यन्त्र मन्त्र टोनासो कर कर सुन्दरश्याम सरस प्रवीनो
सूरश्याम मनोहर सुरत विन देखे तलफत जों मीनो।

विहाग—तिताला

अवतो यही बात मन मानो।
छाड़ो नहीं श्याम श्यामाको वृन्दावन राजधानी ॥
भम्यो बहुत लघु धाम विलोकत क्षणभङ्गर
दुखदानी।
मर्यो परो आनन्द अखंडित सूरदास मरम लपटानी।

२

सो केते दिन हैजु गए विन देखे तरुण किशोर
रसिक नन्दनन्दन कछुक उठत मुख रेखे।
वह चितवन वह हास मनोहर वह वाणिक नट भेखे॥
वह शोभा वह क्रान्ति वदनको कोटिक चंद विशेखे।
श्यामसुन्दर सङ्ग मिल खेलन को आवत
जीयउ परेखे॥
कुँभनदास लाल गिरिधर विन जीवन जनम अलेखे॥

विहाग—ताल जयतिश्री

नींद नहीं आवेरी सजनी विन पीतम मोरे नैन।
नेक पलक नहीं लागल मेरी जागिल सारी रैन॥
एकतो विरहा आन दहै मोहे दूजे सतावे मैन।
रूपरङ्ग जिनके पिउ घरै सोवत हैं सुख चैन॥

विहाग—एकताला

चल बसीये वह गाँव जहाँ न बाजे वाँसरी।
वनन डोलूं कटाऊं बांस सब उपजै न बांस और
बाजे न वाँसरी॥
काहेकों विरह विथा तन उपजे काहेकों नीर
बहात आंसुरी।
रूपरङ्ग वैरन वंसरी कैसे कैसे दाग मिटाऊं गासुरी॥

२

सँइयाँ मोरे बारीके भँवरा कलीय कलीय रस लोरी।
छाड़त नाहीं सुभाव आपनो कोटि जतन कहि हारी॥
कर जोरे पांय परी बहु भातिन और करी मनुहारी।
रूप रङ्ग करमकी रेखा अरे टारी टरत नाहि टारी॥

३

ज्ञान विज्ञान वेदान्तकी कथन जात मथन करि देख
रस नाहीं जीको।
तीर्थ व्रत योग ध्यान श्रमवादहै लोन विन असन
जिम लागे फीको॥
विषय सुख स्वाद दिन चार का पेखना भक्ति निरवेर
नीर पाद ठेकी।
होय ब्रह्म प्रति पाद नो प्रेम न गान जिमि हैरु
मन कृष्ण नहीं और नीको॥

सोहनी—झपताल

कहो कौन सुखराज परिवार सुख क्षणिकहै क्षणिक
धन धाम स्थिर नाहीं।
क्षण करत भोग संयोग जिहि स्वादको क्षणिक
संसार जेही काल खाही॥
क्षणिक यह देह क्षण वन्ध धन जीय सों रहै पुनि
जाय क्षणिक क्षणिक माही।
क्षणिक सुख लाग दुख सहेंतो क्या कृष्ण जन भजहु
सुखसिन्धु सुख अचल ताही॥

विहाग—तिताल

चरखा जरि बरि जाई ताग नहीं टूटइरे नाहक
सब मरी जाय आग नहीं बुतइरे।
चरखा देहो बनाय बढ़इया मोरा मितइरे॥
जब लग तेल दीयामें बाती सूझ परे सब लोग।
जर गयो तेल भस्म भई बाती लेचल लेचल होय॥

राग खेमटा—ताल धीमा

बाजो बाजो मोहन तोरी बाँसरीया वाही
वृन्दावन ओर।
पहरे उलट पुलट सिङ्गरवा तन मन सुध नहीं रही
अब मोर॥

बरवा—एकताला

जहान में देखो ज्ञान बुझाय
अपना कोऊ नाहीं सङ्ग हरि विन साथीरे।
दुनियाँ दौलत जिनस खजाना मुलक घोड़ा
और हाथीरे॥
जिनोके महल सोनेका जवाहर खंभ सोँ जड़ोया
झूमैहै द्वारपै हाथीरे।
तिनके नाहीं सङ्ग कोऊ साथीरे॥
जवाहर दाँत में जड़िया। कुन्दन से अङ्ग रङ्ग भरोया॥
जिनोके चमकता हीरा। तिनोको खाय गयो कीरा॥
जिनोके पहरने मलमल। सुगंध फुलेल अङ्ग मलमल॥
परीरु निरख करते सहल। तेई सब मर गए जल बल॥

सुलतानी—तिताला

प्रभुजो मेरे एकही तुम अधार ।
अब नहीं कोई मेरो बन्धु तुमही हो संसार ॥
तन मन धन सब तुमको अरप्यो
ब्रह्म सम्बन्ध लीनो धार ।
कृष्णानन्द मो रङ्गरंगीहैं वार वार वलिहार ॥

२

हरि विन और नहीं कोई दूजा ।
वही निरञ्जन वही निराकार वही अलख
अगोचर सूझा ॥
वही करता वही हरता जगतके
वही घटघट व्यापक बूझा ।
ब्रह्म सम्बन्ध वही जगत उद्धारण
तन मन धन कृष्णानन्द सों बूझा ॥

विहाग—तिताला

नटवर नाचत है सङ्गीत विवध भाँति गत लई नई ।
बजत मृदङ्ग सरस भेदनसों तकिट धुमकिट तक
धिलाङ्ग तक धुमकिट धिधिकट थेई थेई ॥
तापर पग नूपुर धुन बाजत थरर थरर थोभा
गिन गिन गिन गिन ठा गिन गिन गिन फिरत
चितवत आनन्द मई ।
अवलोकन मुसक्यान परस्पर थो दिग दिग धदा
धदा थो दिग दादिग धिधि कट थेई ॥

२

वन वन नाचत है पिय प्यारी सखी शरद रैन
उजियारी ।
कुण्डल चमक भ्रुव मटक चटक मुख कुण्डल अलक
कपोलन पर झलकत ललकत निरख निरख
मुनिमन जुग मैन रूप मनहारी ॥
ठुम ठुम चरण धरत धरणीतल छल वल करत हलत
कुण्डल श्रुति राजत मृगमद तिलक भाल पर
वे हंस देत कर तारी ।
थेई थेई करत सकल गोपीजन उघटत सङ्गीत
आगरी थारी कुकु झन छिन छिन छिन अनुपम
छिन छवि छक कृष्णरङ्ग वलिहारी ॥

३

कौनके गए धाम कहाँधो कीनो विश्राम कासों
बचन बोल आए मेरे ।
कासों करोहै प्रीति कासों धों तोरी है रीति कासों
छलवल कीना को मई भावती कौन युवती के
जाय परे फेरे ॥
कौनें यो पढ़ाय दई वशीकरण मन्त्र मानो सांची
कहो लाल बाल कैसे घेरे ।
लछनदास धन धन भाग हमारे जाके जाके विकाने
हाथ ताके भए चेरे ॥

४

पिया प्यारी छांड़दे गलवाहीयां ।
रास विलास सकल रस विलसे मृदु मुसकावत
कदमकी छाइयां ॥
वरसत नैनन रसमाते नोर करत वस मृदु मुसकाइयाँ ॥
ललित निशारी कपूरन छवि छाई व्रजकी सब ठाँइयां ।
कबहूं छवि निरखत गहकरके कबहूं ठुमक चलत
मत पांइयां ।
रसरञ्जित श्रीराधामाधो ख्याल खुशाल करत मन
भाइयां ॥

५

मृदु मुसकात नैन अलसाने ।
नन्दनन्दन वृषभानुनन्दिनी भरे नेहरस उर लपटाने ॥
छवि लखि सकुचत रति मनोज गुण निकुंज कुञ्ज
सुख विलस लुभाने ।
बरसत चकरस घुमड़ि घुमड़ विंव शोभित छवि
दामिनि सुहाने ॥
शोभा निरखत ललित निशाको रास विलास केल
उरझाने ।
ख्याल खुशाल करत त्रिभुवनपति वृन्दावन मध
सब सुखखाने ॥

६

चितवन चितसे उरझोरो श्रीराधे कुञ्जविहारी ।
रास विलास करत नागरनट गहवर वंशीवट
यमुना तट जित तित देखत शरदरैन उजियारी ॥
वृन्दावन शोभा बन आई हरियाली द्रुम द्रुम पर छाई
वेली नवेलिन फूल रही फुलवारी ।
वेणु बजावत मृदु मुसकावत रितु लख मदनरूप
लाज खावत ख्याल खुशाल विलोक पिया प्यारी ॥

७

श्याम कहाँ जान पावोगे लेहौं अंग ल्याय ।
दाव बनो है रसिक खेल में करूंगी सकल मन भाय ॥
उमगी मनमथ चोप मिलो क्योन नैनन नैन मिलाय ।
याद बाढ़ी खुशी घरी पल पल में मोहन गोकुलराय ॥

८

कहोंगो किन रैन जगाए रङ्गीले छैल मेरे आए ।
हमसे अवध बदो अनत विलम रहे किन सोतन
विलमाए ॥
सांचो कहो तुम कौन पियारी होरीके खेले पलाए ।
ख्याल खुशाल भरे नैनन में अबीर गुलाल लगाए ॥

(गोस्वामी श्रीवल्लभजी कृत तान)

९

कहोरे कोऊ वा प्यारीको बात ।
जब सुध आवत वा रूपकी मन न रहत मो हाथ ॥
चन्दमुखी अनियारे लोचन सुन्दर बबे सब गात ।
वल्लभ रसिक मग जोवत तेरो उठ चल मेरे साथ ॥

सोहनी—तिताला

लागोरो मेरो श्यामसुन्दर सों प्रीत ।
वेणु बजाय रिझाइरो मोकों नाचत गत सङ्गीत ॥
लोकलाज छाड़ि गुरुजन डर मिलिहौं होय नचीत ।
एसो दाव करोंरो आली वल्लभ को योहीं जीत ॥

२

सखीरो छवि गोकुलचन्द निहार ।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल उरवर गुञ्जन हार ॥
वेणु बजावत मधुरे गावत मोह लई व्रजनारि ।
श्रीवल्लभ पियकी छवि ऊपर कोटिक मनमथ वार ॥

भिंभौटी—तिताला

कमलो वाला यार मेड़ावो में तेड़े वारो वारी
जाँदी याँहो ।
गँवरु साड़े आजा नन्द दे मेनु रहदा ध्यान तेडाहो ॥
वल्लभ रसिक सानु दरस वेखाजो प्राण जीवाये मेडारे ॥

२

रे मन भजिये श्रीगोकुलचन्द ।
इन्हें सुमरेते सब दुख मिटिहै सुखहै सुख
आनन्द कन्द ॥
काहेकों रे तू मटकत डोलत अजहूं समझ मतिमन्द ।
श्रीवल्लभ प्रभुके चरण शरण गहे छाड़ि सकल
छल छन्द ॥

३

छैल छबीलो प्यारो श्रीरणछोड़ ।
भूपति जीत लाए रुक्मिणी शिशुपाल भागि गयो भोड़ ॥
उग्रसेन कों राज करावत यादव कृष्न करोड़ ।
वसुदेव देवकी के तुम जोवन वल्लभ कहै कर जोड़ ॥

सोरठ—तिताला

दरसन दीज्ये श्रीगोकुल-चन्द ।
ललित त्रिभङ्ग सांवरे सलोने निरखत मिटै दुख द्वन्द ॥
शेष महेश पार नहीं पावत ग्राह ते उवारे गयन्द ।
श्रीवल्लभ पै किरपा कीज्ये जपत श्रीनन्दनन्द ॥

सोरठ—आड़ा तिताला

देखो सखी प्यारे मोत सुजान ।
जबते दृष्टि पड़ी मो ऊपर विसर गए सुध ज्ञान ॥
यह शोभा कछू कहत न आवे हैं सब गुणको खान ।
है वल्लभ रसीया मो मन बसीया वारों तन मन प्राण ॥

विहाग—जङ्गला

कठिन लागी सोई जाने दृग उरझनको पीर ।
को समझे कासों कहै सजनी लगेहै कामके तीर ॥

सुधि आवत कृतीयाँ दहै भर भर आवत नीर।
वल्लभ पिय विन कल न परत है हिये धरत नहीं धीर॥

भिंभौटी—तिताल

जय जय श्री गोकुलेश काटो कलेश मोई।
सात समुद्र सात दिवस प्रलयवृष्टि होई॥
बूड़त व्रज राखि लियो मघवापति खोई।
गोपीग्वाल बच्छ गाय इक टक मुख जोई॥
ऐसे प्रभु अधम उधार दूसरा न कोई।
अधर गिरि लियो उठाय आनन्द सब सोई॥
सुरपति चलि शरण आयो चरणरेणु धोई।
सुरभी अभिषेक कियो गोविन्द यह नाम दियो
कुसुमनकी वृष्टि करी प्रेमरस जो बोई॥
गर्ग मुनि बांची पत्री नारायण सम होई।
सुनत नन्द हरष भयो वल्लभ पति सोई॥

२

कुञ्ज भवनके द्वार रङ्ग रस माच रह्यो।
रास विलास करत प्यारी प्यारो मुरली मधुर सुर
गाय रह्यो॥
उरप तिरप और लाग डाट सों थेई थेई तता
थेई नाच रह्यो।
वल्लभ युगल नृत्य करत है ता धिलाङ्ग गत ताण्डव
लास रह्यो॥

राग सोरठ—तिताल

प्यारी राज मानो जो बात हमारी हूं तो दासो कहाऊं
थारी।
अब जिन अन्तर राखो मोंसों तेरी छवि पर जाऊं
वलिहारी॥
सुघर सलोनी चतुर कहावो चलिये वेग सवारी।
वल्लभ पिय पै किरपा कीजे तुही है बड़ा हितकारी॥

२

तूं तरुणी सुन्दर मन मोहन मुखसूं न बोलेरी।
काहे मान कियो तें प्यारी क्यों अब कृतियां खोलेरी॥
विरह विथा काहे तन तावे सांचे क्यों नहीं खोलेरी।
पायँ परौं मिलों पिय वल्लभ सों प्रेम रङ्ग क्यों न
घोलेरी॥

सोरठ—जलद तिताला

अरे प्यारो जाने देखो जब कोरे।
सुध न रही मो तन कोरे। प्यारो जा॰॥
नैन बान लागे उर माहीं माधुरी मूरत चित अटकोरे
प्यारी जा॰॥
रति रम्भा सब देख लुभानो शोभा यह जगकोरे।
प्यारी॰।
जियको प्यारो वल्लभ साथ न जनम जनम कोरे॥
प्यारी जा॰॥

२

सुनहो छबीलो प्यारो रूप भरे छे थाँरो गात।
धन जोवन को गरव न कीजे चाली करो ने धीय
सों बात॥
समझाई समुझत नाहीं न सुनो थोड़ी रही अब रात
वल्लभ पियको जीवन तुंही वेगो जोड़े छे थाँसूं हाथ॥

सोरठ—तिताल

म्हारो मन मोहे छे श्रीगोकुलचन्द।
कृपाकर म्हाने अपना थापा काटे सबही फन्द॥
सोहनी सूरत माधुरी मूरत पर वारों कोटिक इन्द।
श्रीवल्लभ प्रभुकी छवि निरखत बाढ्यो मन आनन्द॥

काफी—तिताला

कृष्ण नाम है सारे मूरख नहीं जानो।
विषय वासना भूल रहो है बांध्यो मोह के जालरे॥
वेद पुराण श्रीभागवत भाषत हरि भजि उतरे पारे
जप तप तीरथ नेम धरम व्रत श्रीवल्लभराज कुमारे॥

मुलतानी—तिताला

प्यारो बतियाँ मानले रङ्ग भीनी रतियाँ जाय।
जो दिन जाय आनन्दमें आलो सो दिन आवत
हथोयां धाय।
इतनो अरज मेरी मानले प्यारी प्यारेकों रस
रतीयां बताय

श्रीवल्लभ पियको जीवन प्यारो प्यारे कों काहे न
छतीयां लगाय ॥

राग जङ्गला—तिताला

प्यारे को समझायोरे सौ सौ बार ।
इतनी अरज मेरी मानले प्यारे मति जाय सौतिन
द्वार ॥
सौतन मनको तुंही मालक राखूं होय को हार ।
लागी लगन छूटे नहीं वल्लभ में तो पागी तेरे नाल ॥

कजरी

प्यारी मेरा लुभाना मन तोरे अगना ।
आधीरातके पिछले पहरे प्यारो में देखा तोरा सपना ॥
रतन जड़ावके हार बनाऊं कर पहरूं होरो कगना ।
वल्लभ पीय को जीवन तुंही निशदिन नाम तोरा
जपना ॥

राग बरवा—ताल खेमटा

कुआ पानो न जइहों मेरी पतलो कमर लचकाय ।
घर बाहर जब निकसूंरी आलो
प्यारो देखि देखि ललचाय ॥
हाथ जोड़ कर विनतो करत है प्यारो हाहा करे
परे पांय ।
सकुच रही में बासुरी आलो प्यारो देखि देखि
मुसिकाय ॥

राग बरवा—ताल धीमा तिताला

प्यारी लागी हो प्यारोजो तोरी छोटी छतीयाँ
छोटी छतीयाँ आई कौन मतीयां ।
दरस दिखायके मोह लियो मन तेरे फूल झरत
सुन्दर बतोयाँ ॥
तो विन छिनन सुहावे न मोकों कैसे कटे प्यारो
दिन रतोयाँ ।
वल्लभ पोयाको वल्लभ तुंही काहे भई प्यारो
उनमतियाँ ॥

देश—खेमटा

छबीलो प्यारी मन मेरो मोह लियो ।
एकतो सुन्दर वेणो दूजे मीठे वैनो वल्लभ चित हर लियो ॥

विहाग—खेमटा

प्यारी तेरे नैना जादू भरे सनमुख रहत अरे ।
समझाए समझे नहीं याते दिन दिन होत
खरे हो खरे ॥
दरसन विन अकुलात पल छिन घरी घरी कल न परे ।
श्रीवल्लभ पियको प्राण प्यारी दुख मेटे सुख करे ॥

२

पिया मुख जोवत मतवारी भई मैतो देखतही
सुध भूल गई ।
मैं जानू पिया मोहे मिलेंगे पोयाके मिलन कों
हौं गई हौं जो गई पोया हम जो नई ॥
तन परसो दुख विसरेगो प्यारे जबते कंठ
लगाय लई उधन ताह दई ।
श्रीवल्लभ पोयाको प्राणप्यारी जो तन मनमें
प्रेम भई पीया प्रीत नई ॥

सिंधी ठुमरी—ताल तिताला

प्यारे पीया परदेश गमन कियो तबते मदन सतावेरे ।
जैसो अधरातो तैसो जेउ दुपहरो मितवा क्यों
नहीं आवेरे ॥
सास ननद मेरी घरमें नाहीं या समय वन आवेरे ।
तब आनन्द होय मन माहीं जब वल्लभ आन
मिलावरे ॥

२

सजि सिङ्गार प्यारो बन बैठो प्रीतमको चित चाहेरी ।
नख शिख रूप निहार दर्पण में चकित भई
उठि धावेरी ॥
नारे गिनत गिनत में हारी तन में मदन सतावेरी ।
मग जोवत बीतो निश सगरो श्रीवल्लभ पिय
कब आवेरी ॥

सूहतानी—तिताला

और सिङ्गार सबे पहरूं बीच बड़ोरे दई मोरे हरवा ।
बारा बरस पाछे सइयाँ मोरे आइला बीच परो दई
मोरे हरवा ॥

विहाग ख्याल—तिताला

नन्ददा निगर अतिहो ढिटोना श्याम सलोना
रीझ रिझोना बाको चितवन में है टोना।
रूप उजागर रसके सागर गुणआगर नटनागर
रसिक प्रीतम मन मोह लियो है मोहे ना भावे
खाना पीना सोना रहना भौना॥

भिंझोटी—तिताला

तुमसो लागिला माँड़ा मन मनड़ा कलन परत
घरो पल छिन साँवल वालो गोरी हो।
विरह विथा को में मारी मरत हूं रे विन देखे जीय
धीर न धरत एरी गोरीहो॥

देशी ठुमरी—ताल तिताला

सांवलीया प्यारा सइयाँ मोरा जावे परदेश।
गोड़वा में परी परी सइयाँकों मनाऊं तुम मत
जावो पी विदेश॥

२

मढ़ पर किन बहाई नवरङ्गीया।
राजाभी आए बारी बाबूभी आए आए अमान सिंह
रङ्गीया॥

जयतिश्री—तिताला

प्यारे सुगनारे वारी लेले जाय।
दाना खाते पानी पीते बोलत मधुर सुहाय॥
चन्दापुर हम खेती कइलूं सूरजपुर खलीयान।
एदोऊ जोवना के बैल बनाबूं सइयाँ कों
करिहों किसान॥

२

प्यारे सों उमरीयारे योंहीं बीती जाय।
आप तो राजा नगर कों सिधारे हम लख जोग पठाय॥

भिंझोटी—तिताला

नैन कटरीया ने मारारो मेरो जान।
नामें मारूं कुरीय कटारीया न बरछी तरवरीया ने मा०॥

२

धराय देती दोय झूलनी तुम काहे कों रूंसो जाय।
बाबुल विदा करो मोरो काहे कों वलमा रिसाय।
घरमें भौजी डोलीया सँवारे बाहर चार कहारवा॥

अब तोह तोहैन पहरूंरे करके कगना सइयाँ के
अङ्ग चुभ चुभ जाय।
लोने सुलोने पी श्याँम सुन्दरवा पोठ नरम पर
चुभ जाय।

विहाग—जयतिश्री

ढुरक गईरे मोरे सिरको मटको नन्दनन्दन
धर बहोयाँ झटको।
जात हती बृन्दावन सजनी लपट झपट गहे
गान खटको।

विहाग—जङ्गला

बाजोरे बृन्दावन वंशीहो।
भनक सुनत सुध बुध सब विसरी लागी प्रेम रङ्गसोही।

२

मुरक गईरे मोरे कानोदी मुरकोरे।
जावो नन्दलाल पीया हमसे न बोलो गुञ्जा मुरक
गई चुड़ीयाँ करकोरे।

झूलतागी—खिमटा

सुन मोरी सजनी वंशी मधुर सुर वसको।
श्रवण सुनत सुध रहो नहीं तनको हंस वस कर
अपवसको।
बात कहत सुनो नन्ददुलारे यह गउअन व्रज
को घेरो।
एसो समय बहुर नहीं पइयो कदम तरे धर मटको
बतीयाँ करो रस वसको।

३

मन मोहन मेरी अङ्गीया केसर रङ्ग डारी।
फागु खेलन आए नन्ददुलारे ग्वाल बाल सब घेरो।
मर पिचकारी मोरे मुख पर मारी भींज गई तन
सारी सारी।

राग कालिंगड़ा—तिताला

हमसें नजरीया काहे फेरी हो बालम्।
हाहा करत हूं पइयाँ परत हूं वारे वारे जाऊं
सौसौ फेरीहो।

मूलतानी—तिताला

सइयाँ मोकों सालुडा रङ्गायदे अनमोलनो ।
चुनरी रङ्गायदे रङ्गोलो चटकीलो सोवनाकी नारी
लगायदे ॥

२

दौड़ी दौड़ीरे लोगो विकुवा काटारे काटारे काटारे।
आधी रात के अमलेमें बिकुवा बैठा डवेमें आय हाय
उयल्लय काटारे ॥
वैद बुलावो मोरी नाड़ी दिखलावो कड़ कड़ कड़
चुड़ोया बोले हाय हाय उय उय काटारे ॥

३

पचरङ्ग महदी ल्यावरे अरे रसमाली के छोहरा ।
मनमोहन पोया व्याहन चढ़ोया अरे नोशा बना
के घर चावरा ॥

राग प्रदीप—ताल जयतिश्री

चिलम भरत मोरी जरली चुटकीया सइयाँ
निरमोहोयाके साथहो ।
आब बहे पुरवैयारो ननदी गोहटा न सुलगत आगहो ॥
नान्हेसे मोरे सइयाँ चिलम शब्दले जरगईहो
नरम करेजहो ।
आगी लगाऊं कोयरी तेरे कोयरनुवा जइवाँ
सुरतीयां न होय हो ॥
अगवा सुलगावत हाथ थकीले पखवा झपकत
कर दोयहो ।
बाबा जो दिहले नोमन सोनवा माई ज्यो दिहल
पटोरहो ॥
भाई जो दिहले चढ़ने कोँ घोड़वा भोजी
मदुरवाके गांठहो ।
नोमन सोनवा में नोदिन खेहाँ फट जैहे लहर
पटोर हो ॥
भैयाके घोड़वामें नगरकी दैहों भौजीके अपयश
हो रहो ।
पाकल पनोवा तूं खाले ननदुईया पोयउ
सुरगइयाका सुधहो ॥

हालो वे डोलीया फन्दायदे ननदुइया कंथ चले
बड़ी दूरहो ।
बाबा के रोवले गङ्गा बहतहै माई रोवल जल धारहो।
भाईके रोवल भींजल पटुकवा भौजो कठिन कठार हो ॥
भादौं नदीया अगम भई सजनी सूझत न आरन
पार हो ।
केवट दईजर वादर दोया न बूझे कौन विध
उतरव पारहो ॥
निरगुण सिन्दुरा मगायो रे बाबुल सबों से भरा
तो मागहों ।
सांचो भव फिरायोरे बाबुल गाँठ दई निरङ्कारहो ॥
अबके गवनवा फेर नहीं अवनवा भेटों सखो
एक बारहो ।
कहै कबीर मोरे नैहर छूटे अपने सइयाँके बलिहार हो ॥

२

बार बार वृन्दावन जाइबोरी सजनी मोहन
मचावत रारहो ।
दधिया के मिस मागे जोवन के दानवा केह विध
देहवो मुरारिहो ॥
नित प्रति यह मग अबोरे जैबो कैसे निभहे
करतारहो ॥

३

दधिया के भूंखल देवर कन्हैया गहल अचरवा मोरहो।
लेकर चीर कदम पर बैठो हम जल माँह उघारो हो ॥
नवकचोर मेरे दे डालो मोहन होय जाऊं जलसे
न्यारी हो ॥

प्रदीप—जइला

हाथ धनुइया गरे मोहन माला बहुत कुंवर लीने
साथहो ।
मज्जन करत नीर सरजूके सङ्ग सोहे लछमन
भ्रात हो ॥
छोटे छोटे हाथन छोटो धनुया मारोहे ताड़िका
नाथहो ।

छोटे जान मत भूलो जनकजी सब वीरनके हैं वीरहो
तीनलोका वाके उदर वसतहैं भवभञ्जन रघुवीर हो ॥
सांवल वरण वर है हमारा हम वाकी अरधङ्ग हो ।
भूमि भार उतारण कारण मैं हूं वाकी नित सङ्ग हो ॥
हरे हरे बांस मगावो जनकजी ऊंचा छवीवो माँड़ हो ।
तिरवेणी को नीर मगावो लगन धरवावो पाँड हो ॥
हाथी आवे घोड़ा आवे आवे सब परिवारहो ।
झिनवा चलवाके भात करावो विवध मिठाई अपारहो ॥
तुलसी दासी मङ्गल गावे व्याह रच्यो जनक द्वारहो ।
हीरा रतन जवाहर मोतिन दीनो दान अपारहो ॥

देशी ठुमरी—तिताला

सांवली सुरतीया मीठो तोरी बोलीयारे जानी जानीरे ।
गङ्गवा नाइले दीए महावरीया कांधे तेरे धोतीयारे
जानो भला जानीरे ॥
खिरकी पे बैठल जनुवा मारल नजारवा गुंडवा
तड़फेरे जानो भला सुन जानीरे ।
सोनेके कटोरवा जनुवा तेलवा फुलेलवा सोनेकी
कङ्घीयारे जानो भला जानीरे ॥
मिसीया लगावल जनुवा जीय तडफवले के जियरा
मारसरे जानो जानीरे ।
तोरेरे कारण जानीया लाटी पाटी चलिहै
विकुवा बाजीरेरे जानीरे ॥
आधो आधी रतीया जनुवा पिछली पहरवा मोरवा
काहुके है जानो जानीरे ।
तोरेरे कारण जनुवा माय बाप तजलुं तुझको न
तजली ना जानो जानी रे । सा० ॥

२

गोरीया केकोरे सुरतीया पीया मोर भूललरे गोरी ।
सिंधियामें चीरी चीरी बङ्गला छवीवतो खिरकी
रखतीरे गोरी ॥
सोवनाकी थरीयामें जेवना परोसतो घोड ना
छोड़तीरे गोरी ।
जेइवेको बिरीया सइयां मोरे हंसलेरी गोरी गोरी ॥
चुन चुन कलीयां सेजोया विछावत रे
सूतवेको बेरीया सइयां हंसेरी गोरी गोरी ।
पइयां पर परके मनावत रे गोरी ॥
भोरे छोड़दे अचरवा पीया भोरवा भइलोरी ।
सगरी रयन पीया मिलनी वटोरली हो
सौदागर पीउरी ॥

३

कोरीरे मटुकीयामें जमाय रख दीना ।
जोतू हैरे कान्हा दधियाके भूखल जमाय रखूं दीना
कान्हा ॥
कोरी कोरी नदीया में दहीया में जमाबूरे को
गेडुरिया हमरी ना कान्हा ।
दही मेरो खाए कान्हा मटुकीयो मोरो फोरलरे
गिडुरीआ हमरीना कान्हा जमुना बहावलरे
गेडुरिया हमरो ना कान्हा ॥
इहि पारे जमुना कान्हा ओही पार गङ्गारेके ताही
विचवाना कान्हा जोड़ले सनैया ताहि विचवाना
कान्हा ।
सोलेसे गोपी कान्हा पार उतरले अकेली गुजरीयारे
कान्हा रखले लोभायरे अकेली गुजरीया कान्हा ॥

४

अरे माधो बीतली उमरीया अब कहा करिएरे माधो ।
पोषी पालीके माधो करिला सयनवा सुखवा
दिहलरे माधो अरे माधो ॥
जो मैं होती माधो बनकी कोयली शबद
सुनातीरे माधो ।
पीया मेरे आते बगीचवा नाके गाबती गीरी
अरे माधो ॥

राग कालिङ्गड़ा—ताल जयतश्री

श्याम बजावत वीणारी आली श्याम बजावत वीणा
कवन विधि देखन जई हरि सजनी श्या० ।

करके सिङ्गार पलङ्ग पर बैठो रोम रोम रस भीना ॥
अङ्गियाके बन्ध तरकन लागे जोतन छूटे पसीना ।
आलीरी श्या० ।
आठ मास नो कातिक न्हात शिवका बरत मलाकीना ॥
ए विधना तोरा कहा विगारा छोटे कँथ मोहे दीना ।
आली० ॥
अन्न बिना जैसे प्राण दुखित भए जल विन
तलफत मीना ।
छोटे कँथ की नारि दुखित भई फागुन
मस्तीका महीना ॥
सजनी श्या० ॥

परज—तिताला

वेसोरी लागावे राज पानी ।
हौंतो थारी दासी वारी तू माड़ा सायवा अरज
करेके महारानो ॥

खमटा—तिताला

मैला दिल मत रखो मूरख उजला दिल चाँदनी चौक ।
दिलको सफाउको आई जास बहेतर दमके हमदम ॥

२

कौन देश देश वे बालमराज विलम रहेजो ।
दूशक दो वेड़ी वारी ना पहरूं थर थर काँपे माडाजो ॥

परज—धीमा तिताला

मेरा माहीढ़ा झोखे वालो मीया मेड़ा माही झोखे
वालो मीया भूल क्यो गयानो वे मेरा ।
ताँड़ो मिलनदो वारी चाव धनने रीसोरी तूतो
जोरन जान रमझा वाला मेरा ॥

धनाश्री—ताल जयतिथी

आज गोकुल में गोपीनाथ कहूं देखे तोको
मोको बतावोरे लोग ।
जोमें जानती हरि मधुवन जात रखती चरण
धरावोरे लोग ॥
वह शोभा वह रूप मनोहर नटवर वेश
वनावोरे लोग ।
नहि विधना पंख मोहे दीनो उड़के वहां हम
जावेंरे लोग ॥
कारे करूं कछू वस नहीं मेरो लोक लाज भई
दुरावोरे लोग ।
कृष्णानन्द में रीझ रहाहों कोऊ बाको
मिलावोरे लोग ॥

राग परज—धीमा तिताला

चञ्चल नैन मतवारे तिहारे क्यों वड़मारे ए दई
मारे कजरारे ।
मोया शोरी तेनु घायलकी तारण अरी
विच डारी मोरे प्यारे ॥

२

मेवारो आज रह जावे मेंवारो आज गुड़ो रातवे
वीणां रुण नहीं रहदा भला वेमोयाँ ।
सासड़ीया तानु पुत्र मने रामे वल भूलन वेखे
जाव खाँतो फेरीया पाँदे जीवन की थे न लेखे ॥
सासड़ीए समझाय पुरनू नहीं उठ जासो पाखे ॥

३

लाल बनोजी जीव महाराज ।
साज केशरीया वागा आया थे म्हारा शिरताज ॥

भीरठ—तिताल

बारी जाऊंरे साँमलिया तुझपे वारना हो ।
मात पिता की बंध छुड़ाई, नन्दराय की धेनु चराई,
यशोदा भरम भुलानी झूले पालना हो ॥
केशी कंस हतन व्रज रक्षक, अघा वघा तृणावर्त्त भक्षक,
यमलार्ज्जुन और पूतना तारना हो ॥
व्रजमें प्रगट भए हैं जबते, सबके दुःख गए हैं तबते,
कूद परे काली दह बिषधर टारना हो ।
इन्द्र रिसाय गयो व्रज ऊपर, कोई न राखन हारो भूपर,
कृपा करी कान्हार कर गिरवर धारणा हो ॥

पहाड़ी—तिताला

दे बताय नन्दलाल प्यारे वंशी कहां विसारी हो ।
मुरली को टेर जगाय बोलावत हमको अति प्यारोहो ॥
हंसी के हिय बलिहारी मोहन सों अधरन
वंशीधारी हो ॥

२

आज वृन्दावन कान्ह वंशी बजाई ।
लोक लाज कुल कान तजो सभी व्रजयुवतिम
उठ धाई ॥
रवि शशि थक्यो थक्यो जल मारुत भूमण्डल
धुनि छाई ।
चक्रित भए देव ब्रह्मादिक शिवको ध्यान टराई ॥
पशु पक्षी अमरा नर मोहे कालिन्दी न बहाई ।
कौन मन्त्र पढ़ डार कान्हरते तेरो मति कहो
न जाई ॥

पहाड़ी—ताल पस्तो

राम कहो राम तेरे मुखमें जवाँ हैं के नाहीं ।
जिसको तू कहता है अपना सोभो सुपन है के नाहीं ॥
जिसको तू देखे है नजरसे सोभो फजर है के नाहीं ।
कुछ नहीं करता है उसको कुछ भी मिलता है के
नाहीं ॥
जानाहैं रहनाहै नाहीं कालबतो कयामत के नाहीं ।
उलफतो महोब्बत इश्क उससे करनाहै के नाहीं ॥
हाहा कर कहता हजार दिल तू माने है के नाहीं ।
तिफलगी खोके जईफ होके समझहै के नाहीं ॥
वे अकल कहता है कल पल तुझे कल है की नाहीं ।
नेक नामी की फिकर अबभी करना है के नाहीं ॥
लाखोंही इस तखतेपे आए हस्मत की है का नाहीं ।
खाक भी पाते नाहीं गवांके हुवेहैं के नाहीं ॥
गुलजार चार रोज सिर पर जाँहै कै नाहीं ।
बोलते से बोली बोल प्रेमरङ्ग है के नाहीं ॥

२

मदनमोहन बिन देखेरी सजनी घर अगना
न सोहावे ।
जब देखत तब होत चैन जीय बिन देखे अकुलावे ॥
चित चढ़ रही है साँवरी सूरत उर ध्यान नहीं आवे ।
जानकीदास विलास सकल सुख जो पिय
दरस दिखावे ॥

जयजयन्ती—तिताला

मन बसमें नाम जपाय करत रघुबरको अनुराग
अनोखो ।
गरभ बासते अपनो कीनो अपनो प्राण तन
मेरो पोखो ॥
भोर परे भव टारत तुरतही सुख सम्पत
पहुंचावत चोखो ।
प्रेमरङ्ग कियो भगत जगतमें निजपद पावन
कों गयो धोखो ॥

२

जगमें दीखत कोई नहीं देख सब जग देखा
राम तुमही ।
लख चौरासी भेष बनाए जो जैसो तुम तैसे वही ॥
जहां जिय जात तहां तुम संग हो जान देत चले
जाहु कहां ।
प्रेम रंग भक्तन सों परते करमनके बस वहत नहीं ॥

३

माई आजतो वन वंशी बाजो नवलकिशोरको ।
एक फिरे दौरी दौरो एक ठाड़ी बाही ठौरी
एक चले होलो होलो जैसे गत चोरको ॥
एक सखो आवे जावे एक सखो तान गावे एक वस्तर
पहरे आधे साधो मौन चन्द्र चकोरको ।
रास रच्यो ब्रज माहीं वृन्दावन तेही ठाहीं
सूरदास निरखि छवि चित वाही ओरको ॥

४

गेंद चुराई माई काहूको ने आयके ।
करकी मुरली लीनो काहू समय पायके ॥
कानन को कुण्डल लीनो मुकट जरायके ।
चोरनके भाग जागे येही सुख चोरायके ॥
सूरदास मदनमोहन हरिगुण गायके ।
वृन्दावन कुञ्जन मध श्यामा श्याम रिझाय के ॥

५

वंशी बाजो साँवरे को कालिन्दी के तीरहै माई ।
हौं निकसो सिर धर मटको भरन जमुना नीर माई ॥

चल न सको भूलो में मगको व्याकुल भयो है शरीर।
प्रेम के वस भई मोरो सजनो तासुन भोंजि चोर ॥

६

मान न कीजे अपने पोया सों मान लीजिये
राधा रानी।
तुमतो महाप्रवीण सकल गुण यह विनतो मेरो
मान सयानो ॥
विपिनविहारो कुञ्ज बुलावत चित सनेह रितु
तुम उठानो।
करिए ख्याल खुशाल रात दिन रास विलास
सकल मन मानो ॥

७

राजत कुञ्ज निकुञ्ज भवन में सुख विलसत मिलके।
पोया प्यारो।
मोहनो रूप धरे मनमोहन शोभित लोभान लाल
निहारो ॥
लजत फिरत सेन मेन लखि मृदु मुसुकान विंव
सम छवि भारो।
निशदिन रसिक खुशाल करतहैं भाउन ललो
नन्दनन्द अपारो ॥

८

नैन लगे व्रजराज राज से छूटत ना सखो छुटाएरो।
करत चपल रस केलि रात दिन मरे नेह उमगायेरो॥
लख लख ख्याल खुशाल लोभाने अटके टरे न
टगाएरो ॥

९

बसत हैं साधनके मन राम।
कामिनके मन काम बसत हैं सूमन के घर दाम ॥

१०

पर गए किधों काहके पाले सखो गुरू लोगन के
दुरसों दुरगए।
दिया बारतही किवार लगे हरि आए नहीं न
विथा हर गए ॥

अधरात भई मग आए नहीं हमउमर कों सइया
कर गए।
कहो ठाकुर अवध दिन बीततही हरि आवन कीजो
किधर गए ॥

११

बहोत दिन बीतेरो आली अजहूं न आएरो लाल।
जबते भवन ते गवन कीनो भयो है मन विहाल ॥
नैकन सुरत लई पिय मोरी पाती हू न पठाई हाल।
श्रवण सुनत जुगराज दास प्रभु मोहन वचन रसाल ॥

१२

सब सखो आस करत प्रीतमको हमतो निराल
भई वृन्दावन बसके।
जङ्गलमें कुटी डारों वसन उतार डारों अङ्ग में
भभूत डारों दोय कर घसके ॥
आली ऊंचे ऊंचे धाम देख विरह सतावे मोको
सखी समझाके राधे चोर बांधो कसके ॥

१३

अपने हाथन हाँकत रथ को रथ बैठे रणछोड़जो
आये।
लक्ष्मो रथ पर आप सारथो तुर्रा कलँगो छवि
झलकाये ॥
चोरा पटका और वकतरो कलमन कान पटो
कैसेहो आये।
काँखमें वहो भक्त के कारण प्रभु बनिया को भेष
बनाये ॥
हांकत हांकत द्वार लग आये तहीं नरसो जो
नाचत पाये ॥

१४

कौन कहां ते तुम आए कहा तुमारो नाम है।
कौन कौसि के चाकर कहियो कहाँ तुमारो गांवहै ॥
पुरी द्वारिकासों हम आए नरसो हमें बुलावहै।
चाकर तो नरसोके कहिये साँवलिया साह नामहै ॥

१५

.सब विध काज सवार विदा भए गोविन्द पियारे ।
पुरके लोग निकट सब ठाड़ो कर जोरे विनती
उन सारे ॥
कहै सुने को बुरो न मानो हम नरसीजो दास तुमारे ।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग भक्तनके आधीन
हैं प्यारे ॥

१६

जगन्नाथ बलभद्र सहोदरा चक्र सुदरसन रटरे ।
ब्रह्मा शेश महेश शारदा पारन पावे भटरे ॥
मच्छ कच्छ वाराह अवतार रूप धारो जों नटरे ।
नरहरि वामन परसराम मुनि रामकृष्ण भए भटरे ॥
मा हिंसा परमोधरम इति वाक्य पर गटरे ।
वृन्दावन के वासी मन्नाप्रभु कलकी होय परगटरे ॥

इति श्रीविन्नागरागः ।

अथ मङ्गलाचरण

श्रीकृष्णाय नमस्तस्मै सच्चिदानन्दमूर्त्तये ।
रूपनामविभेदेन जगत् क्रीड़ति ब्रह्मणे ॥१
या पूर्णचन्द्राधिकसुन्दरास्या
या शुद्धचामीकर-देहकान्ती ।
या कृष्णवक्त्रोत्सवपानमत्ता
श्रीराधिका मङ्गलमातनोतु ॥२

तथा च गीतगोविन्दे (१।१)—

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्व-कुञ्जद्रमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥
श्रीः स्वैरं कुहदादिभिर्मुहुरिदं निर्मीय विश्वं पुनः
सस्मित्रेव चराचरेऽनुभजतां निश्रेयसप्राप्तये ।
ये ये तु प्रतिभूभुवः स्वयमहो नानावतारैः कृता-
स्ते ते हन्त जयन्ति शश्वदजयोः श्रीकृष्णयोः केलयः ॥

अथ भैरवी

संगीतरत्नाकरे—

सरोवरस्थे स्फटिकस्य मण्डपे
सरोरुहैः शङ्करमर्चयन्ती ।
वीणाविनोदी कमलायताक्षी
पीताम्बरधारिणी भैरवीयं ॥

तथाच सङ्गीतमहोदधौ तथा सङ्गीतदर्पणे—

स्फटिकरचितपीठे रम्य कैलासशृङ्गे
विकच-कमलपत्रैरर्चयन्ती महेशं ।
करतलधृतवीणा पीतवर्णा मृगाक्षी
सुकविभिरीयमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री ॥

रागिणी भैरवी—ताल चौताल

धनिसासारेगमपधपमगरेसा ।
मपधनिसानिसागरेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

रागिणी भैरवी—ताल धीमा तिताला

सारेगमधपमगमगरेसाधनिसासानिसारेगमगरेसा ।
गमधधनिसासानिधपमपधपमगमनिधनिधपमग ॥

रागिणी भैरवी—ताल तिताला

सारेगमधपमगधधपधमपगमनिधपमग ।
मपधनिसाधसागरेसारेसानिधपमगरेसानिसा ॥

२

निसगमनिधगमगरेसागगरेसानिसाधधनिसारेगम
पमगरेसामगरेसा।
मममधधनिसानिसाधनिसारेगमपपम
गरेसामगरेसानिसा ॥

३

निसारेगमपमनिधपमगरेसा ।
मधनिसारेसागरेसामगरेसानिधपमगरेसा ॥

४

सारेगमपमधनिनिसागरेसामगरेसा ।
निधमपधनिसानिनिधधपपममगगरेरेसा ॥

५

धसामपनिपमनिमरेसा ।
मधनिरेगमपरेनिपमसामधरेसागरेसा ॥

६

परिम पगे रङ्गे मेरे धाम मम मुरारि मेरे राम श्याम।
सुर सुर सरस रङ्ग रङ्गे सगरे नगर में सगरे गाममें
मेरे रङ्ग रङ्गे राम श्याम ॥
निसा सगरी रमे मेरे सङ्ग नाना रस सरस मधुर मधुर
राग रङ्ग सगे मगे सामर नाम।
धन धन मेरे गेह पधारे प्रेम सामरे धन धन
दिन दिन मेरे गराम ॥

(तथा गीतगोविन्दे ८।३)

रागिणी भैरवी—धीमा तिताला

अस्थायी

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम्।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥

अन्तरा

रजनिजनित-गुरु-जागर-रागकषायितमलस-निमेषं।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदित-रसाभिनिवेशम् ॥
कज्जल-मलिन-विलोचन-चुम्बन-विरचित-नीलिम-रूपं।
दशन-वसन-मरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपं ॥
वपुरनुहरति तव स्मर-सङ्गर-खरनखरक्षतरेखं।
मरकत-शकल-कलित-कलधौतलिपेरिव रतिजयलेखं ॥
चरणकमल-गलदलक्तक-सिक्तमिदं तव हृदयमुदारं।
दर्शयतीवबहिर्मदनद्रुम-नवकिशलय-परिवारं ॥
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदं।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदं ॥
वहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम्।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनं ॥
भ्रमति भवानवला-कवलाय वनेषु किमत्र विचित्रं।
प्रथयति पूतनिकैव बधू-वध-निर्दय-बालचरित्रं ॥
श्रीजयदेव-भणित-रति-वञ्चित-खण्डित-युवति-विलापं।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोऽपि दुरापं ॥

रागिणी भैरवी—ताल तिताला

(गीतगोविन्दे ४र्थ सर्ग)

माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ (ध्रु)
हरिरभिसरति वहति मृदु-पवने।
किमपरमधिकसुखं सखि भवने ॥१
तालफलादपि गुरुमतिसरसम्।
किमु विफलीकुरुषे कुचकलसम् ॥२
कृतमनुनयवचनमनुपदमचिरम्।
मा परिहर हरिमतिशय-रुचिरम् ॥३
किमिति विषीदसि रोदिषि विकला।
विहसति युवति-सभा तव सकला ॥४
सजल-नलिनी-दल-शीतल-शयने।
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥५
जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम्।
शृणु मम वचनमनीहित-भेदम् ॥६
हरिरुपयातु वदतु बहु-मधुरम्।
किमिति करोषि हृदयमति-विधुरम् ॥७
श्रीजयदेव-भणितमतिललितम्।
सुखयतु रसिक-जनं हरिचरितम् ॥८

(तथैव ५म सर्ग)—२

रतिसुख-सारे गतमभिसारे मदन-मनोहर-वेशं।
न कुरु नितम्बिनि गमन-विलम्बनमनुसर तं हृदयेशं ॥
धीर-समीरे यमुना-तीरे वसति वने वनमाली।
गोपी-पीन-पयोधर-मर्दन-चञ्चल-कर-युगशाली ॥ (ध्रु)
नाम-समेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदु वेणुं।
बहुमनुते ननु ते तनु-सङ्गत-पवन-चलितमपि रेणुं ॥१
पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कित-भवदुपयानं।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानं ॥२
मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलं।
चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलं ॥३
उरसि मुरारेरुपहित-हारे घन इव तरल-बलाके।
तडिदिव पीते रति-विपरीते राजसि सुकृत-विपाके ॥४
विगलित-वसनं परिहृत-रसनं घटय जघनमपिधानं।
किशलय-शयने पङ्कज-नयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥५
हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामं।
कुरु मम वचनं सत्वर-रचनं पूरय मधुरिपु-कामं ॥६

श्रीजयदेवे कृत-हरि-सेवे भणति परम-रमणीयं ।
प्रमुदित-हृदयं हरिमति-सदयं नमत सुकृत-कमनीयं॥७

३

पदकल्पद्रुमे—

दामोदर-रति-वर्द्धन-वेशे ।
हरि-निस्कुट-वृन्दा-विपिनेशे ॥
राधे जय जय माधव-दयिते ।
गोकुल-तरुणी-मण्डल-मोहिते ॥
वृषभानूदधि-नवशशिलेखे ।
ललिता-सखीगण-रमित-विशाखे ॥
करुणां कुरु मयि करुणा-भरिते ।
सनक-सनातन-वर्णित-चरिते ॥

४

अरे मन किन बातनमें अटको तजत सुभावन सटको ।
साध सङ्गन और कथा भजन कों नाम सुनत ही
सटको ॥
निश वासर मतवारोही डोले रूप देख कर मटको ।
रङ्ग रूप यह थिर न रहसी अन्त जायको भटको ॥
तातें तोरे पाय परतहों अब घर घर जिन भटको ।
जोतू चाहे मुक्त आपनो मेंट मदनको खटको ॥
दारा सुत सम्पतिके साथी विपत पड़े नहीं छटको ।
अन्तसमय कोई काम ना आवे जब यम देगो झटको॥
काम क्रोध मद लोभ मोहमें आठ प्रहर रहे लटको ।
बारम्बार तोहे समझावों अपनो पूरो हटको ॥
काल बली तेरे शिर पर खेले तिन सगरो जग गटको ।
मानुष जनम बहोरि नहीं पावे लाख तरे शिर पटको ॥
चलिये वेग बिलम्ब न करिये सुख लख वंशीवटको ।
श्यामसुन्दरको सुमरण करले धरले ध्यान मुकुटको ॥
परम पुनीत वृन्दावन बसवो कालिन्दीके तटको ।
बिष्णुदास निश्चय कर पावे दरशन नागर नटको ॥

भैरवी—ताल धीमा तिताला

एरी एक सपना मैंने देखा पोढ़त पोढ़त परभात ।
आज० ।
सुन सजनी मैं तोसों कहत हूं ध्यान लगासेरी बात ॥
झूंठ कहूं तो राम दुहाही साँची सोहों तातकी खात ।
लाल लाडली बैठे परस्पर हँस हँस कर बतरात ॥
रवि शशि कोटि वदन को शोभा युगल मूरत लखि
मदन लजात ।
जब रजु श्याम शोभा सुखसागर जों घन से दामनि
दरसात ॥
अङ्ग अङ्ग भूषण सोहत सुन्दर वेसो निरख नागिन
सरमात ।
अलकन देख नाग मुरझायो लोचन पे मिरग
लोभात ॥
कटिकेहरि नाशिका शुक श्रवणन के पल जात ।
नख ऐसे दमकत नागन से चमकत अधरन लाल
से लगात ॥
पीताम्बर सारो पचरङ्ग पगोया सुरङ्ग परी
या रङ्गमें चबात ।
करसों कर जोरे अङ्गुरी मरोरे अङ्गवाइ तोरेले
जंभात ॥
अङ्कन भर भर लेत लालजू कुसुमसेजके रहे कुमलात ।
कर विनोद विहार विहारी मन्द मन्द मुसिक्यात ॥
यह सुख देत नींद उचट गई जागत भई तब
नजर न आत ।
विष्णुदास प्रभु प्रिया विन देखे निशदिन कछू न
सोहात ॥

रागिणी भैरवी—ताल जयश्री

बार बार समझाय रही मैं मान लेरे मन मेरी
कहीकों ।
सुख दुख सों बीतो सो बीतो याद न कर बरबाद
वही कों ॥
एक ब्रह्म देखो सब जगमें छोड़ कपटकी गांठ
गहीकों ।
जानकी दास सुमर श्रीरघुवर गई सों गई अब राख
रहीकों ॥

२

राम गुमानो साड़ो पीरन बूझ दावो ।
तेंड़े दरस विन व्याकुल रहदे जानकीदास फकीर
न बूझ दावो ॥

भैरवी—तिताला

मन हरिसुमरण सों लागरे अरे और बातन सों
भागरे ।
मानुष जनम वृथा क्यों खोवे जन्म जात जैसें फागरे ॥
या संसार रयनका सपना सोवे कहा अब जागरे ।
विषय वासना स्वाद जगतके सब जियते तू त्यागरे ॥
विष्णुदास सुख जो चाहे हरिचरणन चित पागरे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

काँई गुना में थारो कियो जो क्यों हमसे दिल
ऐंच लियोजो ।
कौन लगा रिपु कान तिहारे जिन तुम कों बहकाय
दियोजो ॥
सांच कहो तुमरा मन मोहन को तकसीर लखो
है पियाजो ।
विष्णुदास तेरो वरदो कहाँदो ऐसा न कीजे
कठोर हियाजो ॥

२

बात कहो साँचो मोरे प्यारे आजको रयन कहाँ
जो सिधारे ।
अञ्जन अधर भाल महावर पीत वसन तज
नीलाम्बर धारे ॥
हार चुभे मोतियन उर ऊपर कङ्कण पीठ प्रगट
चुभारे ।
सूरश्याम प्रभु वहाँही जावो जाके तन मन अङ्ग
लमारे ॥

३

भली रतियाँ सखियाँ आज सुन्दर अङ्गसो अङ्ग
जुरे यदुराई ।
मनमोहन बड़ भागन पाए आज रङ्गीली रात सोहाई ॥
सब विध आस पूजो मोरे मनको अखिललोकपति
पीतम पाई ।
कृष्णदास की इच्छा पूजो कृतियाँ हरिके हाथ कुवाई ॥

भैरवी—तिताला

कृष्ण नाम सुमरो मन मेरे कटे कलेश दुख पाप
जरे तेरे ।
ब्रह्मके ब्रह्म ईश ईशनके तन मन जपले साँझ सबेरे ॥
यह संसार सार एक नामहै तासों होय भवसागर
पार मेरे ।
सूरदास सुमरण कर निशदिन आनन्द होय शरण
हरि लेरे ॥

भैरवी—ताल जयतश्री

आज सोहाग की रयनरी प्यारी,
क्या सोवेगी मिलने को वारी ।
आए ढोल बजावत बाजन, वनरी ढ़ाप रही मुख
लाजन ।

खोल घूंघट मुख देखेगा साजन ॥
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कगना ।
झूमत आवे नोशा मोरे अगना ॥
कहत कबीर हाथ दर्पण लीज्ये,
दरसनमें झुलवा दीज्ये ।
अब मन माने सोई सोई कीज्ये ॥

२

सइयाँ बुलावे मैं जइहौं ससुरे जलदीसे महरा
डोलिया कसरे ।
नैहर के सब लोग छूटत हैं कहा करूँ अब कछू
नहीं बसरे ॥
वीरन आवे गरे तरे लागूं फेर मिलन हो न जानू
कसरे ।
चलन हार भईमैं अचानक रहे बाबुल तोरी
नगरी सों बसरे ॥

सात सहेली तापे अकेली सङ्ग नहीं कोऊ एकन दुसरे।
गबना चाना तुराव लगोहै जो कोऊ रोवे बाको न हँसरे॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो सइयाँ के महल में बसहूं सुजशरे॥

भैरवी—तिताला

जाग पियारी अब क्या सोवे।
रैन गई दिन काहे कों खोवे॥
जिन जागा तिन माणिक पाया।
हम विरहिन सब खोय गमाया॥
पोया चातुर हम मूरख अनारी।
कबहूं न पोया को सेज सवाँरी॥
मैं बौरी वौरापन कीन्हो
कहैं कबीर सुनो मान मनैया।
तज अभिमान मिलेंगे रमैया॥

२

समझ देख मन मीत पोयरवा आशक होय कर सोना क्या।
रूखा सूखा गमका टुकड़ा फीका और सलोना क्या॥
पाया होतो देते प्यारे पाय फेर खोना क्या।
गुल वोहा जो गुल को जानै तकीया और विछोना क्या।
कहै कबीर सुनो भाई साधो सींस दीया तब रोना क्या॥

३

समझ बूझके देखो गुइयाँ भीतर यह को बोलता है।
वलवल जाऊं अपनें गुरुकी तिन यह भेद को खोलताहै॥
आदम में वो आप समाया जो सब रङ्गमें बोलताहै।
कहत कबीर जुगी का सपना कहेन सके वा बोलताहै॥

भैरवी—धीमा तिताला

जो कोई हरि रस गावेगा। सोई परम पद पावेगा॥
ध्रुवजी नाम सुन्यो नारद सों बैठ तपस्या कीन्ही।
प्रभु दयाल भए जब वापे पदवो अटलकी दीन्ही॥
गज को पाँव ग्राहने पकरो अई नाम हरि लाई।
छाड़ो धाम तजि गरुड़ सांवरे वेगहो लियो छुड़ाई॥
अजामिल ने अन्त से सुत धोके नाम ज्यो लीनो।
अघफँदन काटे वाही छिन वैकुण्ठ वास दीनों॥
लाज द्रोपदी उतरन लागी सुमरे कृष्ण मुरारि।
राख लीजे विरद अपने की बढ़ गयो चीर अपारी॥
गणिका गई सुधाम नामते औगुण गणी प्रभुताई।
सुआ पढ़ावत नाम लियो जब वैकुण्ठ पठाई॥
कुबजा काशी करवट लीनी देहहे मारि गारी।
चौरासी तें छूटगई जब नाम धरायो प्यारी॥
कुन्दनपुरकों आप पधारे रुक्मिणी करत सहाई।
भूप जीत कर रुक्मिणी लाए एसे हरि सुखदाई॥
भीलनीके बेर जो खाए घिन हिए नहीं आई।
साँचो प्रीत गोपाल प्यारी सों वैकुण्ठ झुलाई॥
चरणामृत में जहर घोलके राणा पठयो जाई।
विलपट कर अमृत कीनो मीरा पियो अघाई॥
जन प्रह्लाद खंभ से बाँध्यो ध्यान कह्यो वनवारी।
नरसिंह होय प्रगटे नारायण वेगहि लियो उवारी॥
दोदल झंठो महाभारतमें जहाँ ठठोरी व्याही।
घण्टा टूट पड़ो तिन ऊपर रक्षा करी यदुराई॥
धना वीज बोए साधनकों काँकर मट्ठी बोई।
तिल धरने को जागे नाहीं इतने गेहूं होई॥
साध आय उतरे सेनाके टहल करी मन भाई।
जन अपने की इच्छा कारण आप भए हरि नाई॥
दास कबीरा लुकोई डीलो विप्रन करी चढ़ाई।
वनजारा को भेष धर हरि बलद ले पहुंचाई॥
वामदेव के भोजन कीनो नाम देव प्रतिज्ञा राखी।
मन्दिर फेरो गऊ जिवाई भक्तवत्सल हरि साखी॥
विप्राने मिल मसलत कीनी जन रैदास सतायो।
सुमरण करके अङ्ग चीरिके कनक जनोउ दिखायो॥
परजापति की पतिनी लेके आवे पावक लाई।
भूल गए सुत राख लिए हरि प्यावे दूध बिलाई॥

सङ्कट में एक सङ्कट उपज्यो अरज करे मृगनारी।
नाँचत कूदत चलो मिरगणी उबरो शरण विहारी॥
दुरयोधन के मेवा त्यागि मनकी प्रीत न जानी।
साग विदुर घर भोजन पायो सुखसों रैन विहानी॥
नरसी को हुंडी सिकारी भात हार गर लाए।
झाँझताल बजावन लागे रथ बैठे हरि आए॥
गौतम ऋषि ने शाप दियो अपपतिनी शिला बनाई।
रामचन्द्र चरणन रज लागी सो वैकुण्ठ पठाई॥
पोपा कूद परो सागर में दरसन दिए कन्हाई।
छाप लगाय पठायो बाहर निरखत लोग लुगाई॥
कोप्यो इन्द्र व्रजके ऊपर वरषा कीनो भारी।
गोवर्द्धन करमें प्रभु धारे राखे गिरिवरधारी॥
गेंदखेल मचायो मोहन ले जमुनाजी में डारो।
कालीदह कूदे नन्दनन्दन जाय जगायो काली॥
जिन जिन शरण गह्यो तेतारे नाम कहानों वरणों।
विष्णुदास सुखजो तूं चाहे राम नाम ले शरणों॥

रागिणी भैरवी—ताल रूपकातीन

सब घट व्यापक एसो रामभक्ति मोहे दीजिये।
अज महेश वेद चार, नाम अनन्त को करे उचार,
नारद शारद शेष नाग सुमरण निशदिन कीजिये॥
वालमीक और वेदव्यास ध्रुव प्रहलाद विभीषण दास
शिवरी केवट खगमें वायस अपनो जन मोहे कीजिये॥
पाराशर पुण्डरीक अम्बरीषा,
शुक शौनकादि ब्रह्मादिक ऋषा,
पाण्डवादि भीषमरन्तिदेवा,
जनक वशिष्ठ शतानन्द सेवा,
एसे ध्यान रस पीजिए।
गणिका गीध अजामिल, सुपच कुबजा के असल
दीनो रूपक सदन कसाई और वदासो पाहन
होय पय पीजिए॥
नामदेव और दास कबीरा, रंका बंका बाई मीरा,
द्रौपदी गज और विदुर सुदामा एसो सुयश लीजिए।
गोविन्द परमानन्द चितस्वामी,
कुंभनदास नन्ददास हरिस्वामी,
कृष्णदास चतुर्भुज दास एसे रसमें भीजिए॥
सूरश्याम सूरज प्रभु दासा, नरसो माधो वामदेवासा,
चरणदास सन्तनको सेवक सेवा में चित कीजिए।
भक्तनाभा मनहे भरपूर, गावे गुदर चरण रज धूर,
दास गरीबी तुलसी सूर मिनती कहाँ लग कीजिए॥

रागिणी भैरवी—ताल तिताला

गङ्गाजीका स्तव

सगरज-तारिणि विश्वविलासिनि भाविनि देव-
सुरेन्द्रनुते।
जलभवजन्म मुरारि-हरार्चित-पाद-सरोरुह-हंसगते॥
कलिकृत-कल्मषनाशिनि तारिणि भक्तजनेष्ट-
भावरते।
जय जय हे हरमौलिविलासिनि पाद-सुधामय-
हंसगते॥
हिमगिरिनन्दिनि नेत्र-कटाच्चदभङ्ग-सुलङ्घित-रोषभरे।
जलामृतरूप-विलासिनि नीरज-विचिकराकर-
वल्गु परे॥
क्षितितलभूषण-सागरवंशज-भगीरथ-पवित्रकरे।
भवभयभञ्जिनि दुष्टनिसूदिनि करुणामव-स्वभावगुणे॥
मदरिपुशेखरि सुन्दरचारिणि मव्यकपर्दिनि भावगुणे।
शशिधरखण्डविदारित-केवल-मालशिरोधर-पाशचरे॥
त्रिभुवनपालिनि मत्त-मतङ्ग-कुम्भमदाकुल-भृङ्गवरे।
सुरवधू-गात्र-विलेपित-कुङ्कुम-कर्दम-शोभित-
पिङ्गकरे॥
हेमगिरिकान्त-दुकूल-विभूषित-शोभित-तारक-
हारयुते।
सितमकरस्थित-पादसरोरुह-सौरभ-षट्पद-मत्त-नुते॥
करिवरकुम्भकुचाग्र-विराजित-कञ्चुक-विद्रुम-वज्रयुते।
मवजल-दुस्तर-मग्नजनार्चित-पापसमूलकदूरीकृते॥
पतितमहातुर-दुष्करसञ्चर-तूल-महानल-भावगते।

अतिकरुणामयि विश्वविलासिनि शारदचन्द्रकला-
भगते ॥
विधिहरिरुद्र-सुरवर-किन्नर-भालसकुङ्कुम-पादगते।
तव जल-विचिदुरत्ययनाशिनि पातकतारिणि केलिरते ॥
सुरवरलोकपवित्रविधायिनि हेमनख-प्रभु-भेद-नुते।
जगदुत्पत्ययस्थितिसंहृतिकारिणि केलिकलाभव-
तापहरे ॥
सुरहर-विष्णुपदोद्भव-पातकजाल-विनाशिनि मूर्त्तिवरे।
भवजनताप-सदागतिपातकजालनिवारिणि शीलकरे ॥
तवतटवासिविलासित-वामनयोगिजनार्पिततोरवरे।
सुरवरकामिनी कुङ्कुम-चन्दन-पुष्पफलार्च्चित-नीर-धरे ॥
कलिभयनाशिनि सेवकपोषिणि दुष्टजनैर्पित-
भक्तिकरे ॥
भवे महावर्त्ते विषमविषये पन्नगगणैः प्रकीर्णे
तापानां त्रितयजलधौ मोहनिलये महामोहान्धाख्ये
विगतशरणे पापजटिले महामाये गङ्गे
चरणकमले देहि शरणम् ॥
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा गुरुचरणवाक्यामृतरसं
मुहुः पीत्वा गङ्गे परमपदयानामलिखितम् ॥
शुचि प्रातः सायं यदि पठति नित्यं तव तटे
सुपुण्यैरेकान्ते तव पदनिलये याति विलयम् ॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं गङ्गापुष्पाञ्जलिस्तोत्राष्टपदं समाप्तम्।

रागिणी भैरवी—ताल चौताल

अस्थायी

दीजे कृपाल दयाल हमको तिहारो भक्ति
निजचरण शरण करतार।
तुँही आदि तुँही अन्त तुँही निरगुण तुँही सगुण
तुँही है जगत आधार ॥

आभोग

एकही अनेक होय व्यापो है जगतमें नानारूप
रङ्ग नाम भेद बहुत प्रकार।
कहुँ जल स्थल कहुँ पर्व्वत कहुँ पखान कहुँ सुर
असुर नाग पशु पंछी कहुँ रङ्गराग सागर होय कहुँ
नर कहुँ नार ॥

२

कुटिल कुन्तल कुण्डल काछिनि कान्ति कुवलय भाषरे।
किंवे कुञ्चिताधर कुमुद-कौमुदो कुन्द केरव हासरे ॥
कान्ह कालिन्दीकूल कानने कुञ्जे कुञ्जरराजरे।
किंवे कामिनी-कुच-कुमकुमाञ्चित-कामकोटि
विराजरे ॥
कनक किङ्किणी कङ्कनाद कुण्डलाञ्चित अंशरे।
केलि कोकिल कण्ठ कुण्ठक काकली कृत वंशरे ॥
केशरीकटि कम्बु कन्दर कुञ्ज केशर दामरे।
कलिकाल कालीय कवले कम्पित दास गोविन्द
नामरे ॥

३

तारणी श्रीयमुना श्याम कमलदलनयनी।
दरस परस दोष दूर होत है अघकाटन कौं छैनी ॥
सात समुद्रकौं मेंट करतहै भक्ति-मुक्तिको निसैनी।
शरण आए गुण गावत नित प्रति वल्लभ कों वाञ्छित
फल देनी ॥

४

अचलराज करो कोटि वरस लों चिरञ्जीव रहो
यशुमत तेरो लाल दरस देख भए निहाल में जोगी
सुख पायो मेरे जिय आनन्द भयो उरन समात है।
जोंलौं ध्रव धरणि तारो जोवे तेरो राजदुलारो तोलों
रवि शशि सुमेर गगन पवन पानी लोमश कोसो
आवेल होय यह अशीश दे जात है ॥
डिम डिम डमरु बजाए सिङ्गी नाद कर मुखसे गाए
महादेवजी दरशन पाए अलख को कवि निरख
मन्द मन्द मुसक्यातहै।
पाँच वार फेरो कर कछु श्रवण लाग मन्त्र धर
बैजू नाथ कैलाशके वासो प्रेम मगन नाचे ताण्डव लासो
तकथं गात कड़ थुं गा निरतत अपने मन सुख पातहै ॥

५

बड़े बड़े नैन लाल लाल डोरे कारे कारे भौंरा नीके
मँड़रातहैं।

अतिरस चातुर भएहैं त्रियाके वस जाके द्रग देखे
मीन खञ्जन लजातहैं ॥
जोलौं देखियत सखो तोलौं पाइयत सुख देहके
दरद दुख तेह मिटि जातहैं ।
लाल गिरिधर पिय नीचो नजर किये लाजके जहाज
मानो मोती भरे जातहैं ॥

६

नाद अगाध बहोत गए हैं साध सुर नर गुणो गन्धर्ब्ब
रच पच गए सिद्ध समार ।
काहुन पायो पार कर कर थाके विचार कमल
अख तर शिवश्रवण धार अञ्जनीनन्दन कहे उचार
सरस्वतो तरन लगो हिय मैं दो तुंवा डार ॥
सप्तसुर तिनग्राम इकईस मूर्च्छना बाईस सुरत
उनञ्चास कोटतान अंश न्यास विक्रत धार ।
छेराग छत्तोस रागिणो औड़व खाड़व के भेद सुध मुद्रा
सुध वाणो तानसेन करो विनान जाको सूझत
न आरापार ॥

७

चातकचकोर-चक्रवाक-चञ्चरीककुलकाकलि-कलाप-
केलिकाकलीक-कमलं ।
दरदर-विन्दुविन्दुगन्धवन्धगन्धवाहमन्दमन्द
तुलित-लता-विशेष-विमलं ॥
वृन्दावनमनुचलितालिवालिशतया मादधान-
ऋतुवल्लमकरन्द-सकलं ।
सुन्दर-शिरोमणि-मुकुन्दमरविन्दमुखमंतरेण
हन्त नैव यातु जीवनमलं ॥

८

अतिसुख देनो एरी सजनी प्यारेकी मिहीं मिहीं बतियाँ
लागत मोहे अङ्ग अङ्ग रोम रोम रहोयत सोहाग ए।
प्रेमभरो रङ्गरूप रसभरो दोउको सोंह कहत हौं मैं
तोहे में वाहे चाहे वे मोहे मिलिहैं आस पूजाए
होनो होय सो होए ॥

९

करत फिरत मीत मेरो तेरो करताहै राम
गरीवनिवाज ।
सप्तद्वीप तिहुँलोक सकल मध भर तिहारो हिएको
छतराज ॥
लखचौरासो जीव जौन जेते चराचर सबन को काज।
दास आस करन शरण आयो राखो सबन को लाज ॥

१०

अचलराज करो कोटि बरसलों चिरञ्जीव रहो
राजाधिराज राजा रामचन्द्र ।
जोलौं ध्रुव धरणो तरुण पवन पानो गमन मेरु लोमश
कोसो आरवल होय मार्कण्डेय आदि ऋषि आशीष
देत जोलौं जगमें भान इन्द्र ॥
गुणो गन्धर्ब्ब किन्नर गावे नारद मुनि वीण बजावे
ब्रह्मा वेदधुनि करे अमङ्गल सब दूर होवे दुख
दन्द फन्द ।
सिंहासन बैठे शुभघरो शुमदिन शुभपल मङ्गरत
शुभनक्षत्र साध अमृतयोग शुभचन्द रागसागर
मन मयो आनन्द ॥

११

दोजो दोदार होवे करार मन कों तुमहो जगत
के आधार ।
अलख जोत निरङ्कार रच्यो अखिल सरदार भक्ति
मुक्ति दातार तुमहो मधुसूदन मुरारि ॥
तिहारो गति अपरम्पार एकहो अनेक ह्वै व्यापो
संसार तुंही ब्रह्मा विष्णु त्रिपुरारि ।
तुंही आदि तुंही अन्त तुंही सब जग भरपूर रह्यो
रागसागर के प्रभु निरञ्जन निरविकार ॥

१२

सुन्दरमृगनयनी कामिनी ऋत मानत पतिसङ्ग ।
भुज पर शीश कपोल दशन मध कुच पर कञ्चुको तङ्ग॥
जाँवन पर जाँघ मुख तँवोल अधरन पर टपकत रङ्ग ।
यह भाँतिन के सुखदे सुखले रङ्ग लावो लाज केल अङ्ग ॥

१३

मेरी सुध लीजो तुमही सबेरी हरि गोपाल तुम
मत कीजो देरी।
मन इच्छा सबही पूरण करो हरि मोहे आसरो
शरण हूं तेरी ॥
गीध व्याध गज गणिका अजामिलादिक पतित तुम
तारे काहे भूलेहो हमरी बेरी।
रागसागर प्रभु आसरो तिहारो चरणकमल में
चित उरझेरी ॥

१४

अचलराज करो लाख वरस लों कायम रहो
महम्मदशा अकवरशा पातशाह कों सोहत छत्र
तखत सब देश देश तें लीजे खेरात।
अनेक जशन नोरोज करोर करोर होए एसेही
जैसेही शुभ नखत जागे सब दुनिया के भए मनके
काज चात ॥

१५

भेदन सुर सप्त सुरनके पावे जब तब गुरुनको सेवा
करे जीव अपनेकों।
साँचे गुरुन सों सीखे जो आवे विद्या नीको तोकों
गुरु ज्ञान ध्यान कर वाहकों मन में तब गुणीयन
कहे वाकों ॥

१५

आज मेरे भाग जागे पिय मोरहो सुध लई।
इतनो भई निहाल पिय तुमपे वल वल गई ॥
तन मन प्राण तुमहो निश दिन तुमरे रङ्ग रङ्गई।
तानसेन प्रभु तुम चतुर शिरोमणि रस वस
तिहारे भई ॥

१६

बीनत हम पर जैसे हो हमसों कहत हो रावरे।
का मुझे और पहचाने हम जानत जहाँ जावरे ॥
रैन दिना मोहे कलन परत है तूं तूं लो लावरे।
शाह बहादुर तुम वहोनायक हमसों भए लड़ वावरे॥

१७

तखत बैठो महावली ईश्वर होय अवतार।
देश देश के सेवा करतहैं बकसत कञ्चन थार ॥
जोई आवत सोई फल पावत मन इच्छा पूरण आधार
तानसेन कहे शाह जलालदीन अकवर गुणिजननके
काज करन कों कियो करतार ॥

१८

रास मका सधु रागन तासु सदा वसो मैनन वे हरसों।
राज मका निशिवासर से रसता लखसों अखियाँ
सरसों ॥
रास रची रसुजाल जहीजर विषना हलधखे रससों।
रागमें श्याम लसे रचि हासन सों रस ले वसके
मतसों ॥
मारस वाणी सरा समरा सिसो राम सरासन वा
रससों।
मातन सारो हँसे रस चैन नचे रस में हरि सानन सों॥
मास बड़े महतारि कछाई इछा करि नाह बड़ो
वस सों।
माग रचे रसमें सुनिबो ससवेनि समो सुरचे रङ्गसों॥

भैरवी चौराष्टक—चौताला

१९

पँचदस साधो गुणी चतुर दिश दरिया।
द्वादश विन घन विचित्र पिगके गरजत सप्तध्याय
तिरोया।
सप्तस्वर तीनग्राम इकईस मुरछना बाइस सुरत
स्वरोया ॥
उरप तिरप खाग डाट अतित अनाघात घिरोया।
आतक खातक स्वरान्तक औड़व खाड़व सम्पूर्ण
बैजू करोया ॥

२०

चन्दवदन प्यारी बैठि सिङ्गार करत हेमचौकी
मध्य प्यारी धरे भूषण साज।

नृत्यकार निरत करत सप्तसुरन होत गान ता विच
प्यारो लीनो मोठी तान बजत साज ॥

२१

भए रवि उदै होत आए हो भैरवी से लागत
भए रमणी वस प्यारे ।
भैरवी तान मुरली मैं बजावो रिझावो वाही
तिया रैन के जागी नन्ददुलारे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

अधम उधारनी जय ओगङ्गा ।
दरस परस अघ दूर होत हैं सदा रहत शिवके
सहसङ्गा ॥
वामन चरण परसके धाए सगरवंश पावन भए अङ्गा ।
वल्लभ निहाल भए जबही तैं छवि निरखत मन
उठत तरङ्गा ॥

२

प्यारो मुसक्यान लियो मन मोही ।
प्यारे आज जोही प्यारी तुह्मारी वोही ॥
प्यारो छवि देखि चकित भयो चन्दा तो पटतर नहीं
है कोई ।
प्राणजीवन मुरारे वस प्यारो पिय हिय तो
गलमाला पोई ॥
प्रेमकथा जाने सोई वल्लभ जापर बीती होई ॥

भैरवी—जलद तिताला

प्यारो तेरे मनमें क्या जो सोहाई ।
रत्ती रत्ती जोड़ी बहात दिनन तें तोड़त लाज न आई ॥
निरमोही हो रही वेदरदी यह सिख कौन सिखाई ।
तेरे जियको तूं जाने प्यारी वल्लभ और निभाई ॥

भैरवी—तिताला

दिलजान मोरी जानी तोसों लागी अँखियाँ निमानी ।
तेरो ध्यान निशिवासर मेरे तें क्या मन में ठानी ॥
अपनो जानके किरपा कीजे नेकह्ह दया उर आनी ।
वल्लभ पियको जीवन कहिये सदा रहूं गुणगानी ॥

भैरवी—जलद तिताला

किसनू कहोरे मेंड़ी जाई दीलों दी गला ।
सोनेदे अँदर छकें उठदी विरह सतावे मैनु आई दिला ॥
रात देहाड़े कल नहीं पड़दी उसनु वेखणदी चाई ।
वल्लभ पियको प्राण वियारो वेगि मिलोरो मैनु धाई ॥

भैरवी—तिताला

सजन विन बहुत रहोरे पछिताई ।
मेंड़ा दिलवर रूंसि रहाहै कोई लावोनी समुझाई ॥
कहोरे दशा सब नाड़े तनदो बरब रात दिन जाई ।
वल्लभ पिय पर रीझ रही हौं उस विन कुछ न सोहाई ॥

२

प्यारा मेरा सुनदा भी नाहीं फिरियाद ।
विरहदो मारो मैं वन वन कूकां वल्लभ करदा
नाहीं याद ॥

भैरवी—ताल खेमटा

प्यारो ना जानू जादूसा क्यारे किया तन मन रस वस
कर जो लिया ।
नैनवान दिये उर माहीं सोने घायल वे मार किया ॥
रैन दिना तलफत जिय मेरा विन देखे कल नाहीं
हिया ।
वल्लभ पिय पर किरपा कीजे दरस दिखावो
सुख पावे जिया ॥

२

प्यारो जान सफरी जयों तलफै हिया ।
प्यारो मिले सुख पावे जिया ॥
महाकठिन बीती निशि सगरी सुमरण करत विहान
किया ।
तुंही प्राण तुंही ध्यान एक तन मन धन सबही
प्यारो तोहे दिया ॥
प्यारे जियको प्यारो वल्लभ तो समान नहीं कोई
ति ॥

भैरवी—सुरफाक्ता

तननननन तन दिरना तदानी दोस्त ।
नाद्रद्रदानी तुंद्रद्र धित्लाँ तुंद्रद्रदानी ॥

जो मैं कभो आवे जाह जारे मित्रवार ।
पास बैठा जिसे चाहे जगा न दीजे यार ॥

भैरवी—तिताला

मित्र विछोहो अतिहो कठिन है वे जिन दे करतारी ।
जब सुधि आवे प्यारे तेरो वरसतहै नैन वारो ॥
काठ रुखे तन व्यापत प्यारे युग विछुरे मरे सारे ।
वल्लभ पिय अब मिलहै प्यारो सदा रहूंगो लारे ॥

भैरवी—जयतश्री

होरी खेलनकों प्यारो आवोने हमारी गलोरे ।
केसर रङ्ग उड़ावों मन मान्यो फूली गुलाब की कलीरे ॥
अबीर गुलाल की उमड़ घुमड़में घूंघट ओट चलीरे ।
प्यारे पियको प्यारो वल्लभ अङ्ग सों अङ्ग मिलीरे ॥

भैरवी—तिताला

प्यारो चलोनी निकुञ्ज वने रङ्ग ठने तत बीतत
शिखर बजाय घने ।
सप्त तीन इकईस बाईसो छत्तीस छत्तीस गाय गुने ॥

भैरवी—लक्षीताल

वारो वनवारो वृन्दावन सखोपति सखापति करत
रास गोपाल ।
नृत्यकारो झनकारो बजे गत धृमङ्ग कट धिधिक
धुम तक त्रकट तान ताधा ॥

भैरवी—गणेशताल नव

मनमोहन मनमानो यातें तू ब्रवीण सयानो ।
सुन्दरवदन चन्द्रकला लजानो तोसी तुहीं तिया
और नाहीं तिहूंलोक सानो ॥
तानसेन चिर चिर जीवो एसो प्रोत रहो जोलों
जमुन गङ्ग पानो ॥

भैरवी—रुद्रताल

आरे श्याम मोरे घर तू मनमोहन मेरे मनको प्यारे ।
तुम विन मोकों कलना परत है मुरली टेर सुनारे ॥

भैरवी—चौताला

उठ भोर चल किधों मेरे आंगन प्यारे कौन वियन
सङ्ग सरसाने आए होजू ।
चञ्चल चरण गतिमन्द चलन देख दृगन मिले मेरो
होयरा सिराए होजू ॥
जोई करो तुम निडर अनत जाय सरस रङ्ग रस
मनके भाए होजू ।
जाहिकों भाग ताही अङ्ग लाय लई अनत विलंभे
जाय कहूं मन ललचाए होजू ॥

भैरवी—ताल रूपक

वना व्याह ले चल्यो माई चन्द्रमुखो वनरी कों
घरले आय ।
सूनो मन्दिर कहे वाको हमारो अपनो अपनो
घर बसाय ॥

२

आदेश कर गुरुकों जो गुरुनके गुरुकों ब्रह्म
गुरु कों तासों सप्तसुर तीन ग्राम आवे सुरभरकों ।
इकईस मूर्च्छना उनञ्चास कोटि तान अस्थाई सञ्चारी
अलंकार बैजू प्रभुके चरण धरकों ॥

भैरवी—ताल सवारी

फुलवन सेज बनैहूँ करिहूं सिङ्गार पिया मिलो
भावतो मोहे आज ।
गावोरी बधावा सब सखियन मिल सङ्गत सों मेरे
घर रचो काज ॥

२

आहे नाद्रदीम्दोम्तन दिरनायललीयललीयला
यलायललेतनजे आशकताँ वेगस्तम्वरके याव
विस्तादये मन्चुं हुवावे तावेरा ॥

२

वेरखा मेनु आसरा तुसाड़ा वे रखले साडडो लाज ।
रैन दिना मेनु ध्यान तुसाड़ा रहदा मेरा मोयाँ
और नहीं कोई काज ॥
चोना मस्ता नादरा आतस नजर कर के अजवद
मस्तोयस आतस नजर कर ॥

भैरवी—चौताला

सारेगमगरेसारेनिधरेसानिधसासानिधनिधपधप
मपमगमगरेसारेसा ।

गमपमधसासानिधपधनिसागरेसामगरेसासा
सानिनिनिधधधपपपममममगगगरेरेरेरेसा ॥

भैरवी—धीमा तिताला

धनिसारेगमधधपममगमगरेसागगरेसाधनिसासानि
सारेगमगरेसा ।
गगमधधनिसागसानिधपधपममपधपमगम
निधनिधपमग ॥

भैरवी—तिताला

निनिनिसगमधनिधगमगरेसागगरेसामगरेसानिसा
धधनिसारेगमपमगरेसामगरेसा ।
मममधपधनिसानिसानोसाधनिसारेगमधप
मगरेमगरेसा ॥
मपमपमधसानिसागरेसानिधपगमगरेसागरेसा ।
सासानिसानिनिनिधनिधधधपधपपपमपममममगम
गगगरेगरे ॥

२

ससारेगमपधनिधपमगरेसा ।
निधनिधमधनिसासानिधपमगरेसा ॥

३

साँचो कहो हमसे मनमोहन आज कहाँ मारो
रैन जगे हो ।
रङ्ग रङ्गीलो अँखियाँ कङ्कं देखो कौन रङ्गीलोके
रङ्ग रङ्गे हो ॥
मोतीयन हार चुमै उर ऊपर याहो तें काङ्के अङ्ग
लगेहो ।
सूरश्याम तुम वहाँही जावो तन मन काङ्के प्राण
पगे हो ॥

४

आज सोहाग भलो रतियां छतियां ब्रजनाथके
हाथ छुवाई ।
मै बड़ मागिन हूं तिहुंलोकमें तीनलोकपति
पोतम पाई ॥
देख सखी मुनि मनसों न देखत सो देखत मेरो
गात लोभाई ।
कुवरकों वर वरजोर न साई बसाई मेरे तन
सुन्दरताई ॥
एक नेकान मई कितियां बतियां सखियन उसांस समाई ।
रूप अनूप सुधानिध राधा सङ्ग कैल प्रेमरङ्ग रमाई ॥

भैरवी—ताल पञ्चमुखी

ताण्डव-नृत्यत-पिणाकपाणि-डिमि-डिमि-डमरु-
वर्षित-वर्णम् ।
जगदीशात्मजः शृणोति शब्दं श्रुति-पटलध्वं
पीयूषपानम् ॥
सुरर्षिसिद्धचारण-गायक-यक्ष-रक्ष-विद्याधर-पानम् ।
सनकादिकस्मृतिसारविचारं मुनिराजर्षि-
समाधिध्यानम् ॥
नारदवीणाविद्याविशारद-शारदाश्रयति मुखाम्बुज-
पानम् ।
यक्षपतिविस्मृतिखगटङ्कः गोविन्दगौरसन्निधि-
पानम् ॥
स्थावरजङ्गमगतिप्रतिबद्धसस्मिताकाशजलाशये
शयानम् ।
सरीसृपार्पितसर्पतिसर्पजड़वजगति जगङ्गतो मानम् ॥
आनन्द-उद्गम-विष्णुपरायणचित्तचक्रधरचलायमानम् ।
षट्पद-निर्मितशिवश्रुतिसारं प्रेमरङ्गकृतनित्य-
स्नानम् ॥

भैरवी—तिताला

राम नाम जपले मन मेरे कटत पाप एक छिनमें
तेरे ।
परब्रह्म जगदीश गुँसाई रसना रटले साँझ सबेरे ॥
धन जोवन कछु थिर न रहैंगे कोटि उपाय करो
बहुतेरे ।
सूरके प्रभु अन्तरयामी ठाकुर हम दास हैं तेरे ॥

२

बेड़ा पार करोवो रामा कठिन धार पार करोवो ।
भवसागरको दीनदयाल दशरथके लाला शरणागत
कौला धरोवो ॥

गीध व्याध गज गणिका तारी शीवरी गौतमनारी
तरीवो ।
जानकीदास निवाणि नू रखले साड़ो जिंद तेरि
वार परीवो ॥

२

वारवार समझाऊंरे मन क्यो नहीं राम कहे ।
विना हरिभक्त जगत दुख पावे शिर यमदण्ड सहे ॥
ज्यो चाहे आराम नाम जपतो सुखसों निभहे ।
वेद को भेद ज्ञान ज्ञाननकों जानकीदास यहे ॥

भैरवी—जयतश्री

वार वार समझावत हूं तोहे मान लेरे मन तू मेरो
कहीकों ।
दुख सुख सोंबीती सो बीती याद न कर वरवाद
वहीकों ॥
एक ब्रह्म देखो सब जगमें छाड़ कपटकी गाँठ
गहीकों ।
जानकीदास सुमिर श्रीरघुवरकों गईसो गई
अब राख रहीकों ॥

भैरवी—धीमा तिताला

गावत हरिकों यश प्राणीते जग में धन धन गुणी ज्ञानी ।
सोई सुखिया सोई बड़ भागी जिनकी प्रीत रामसों
लागी ॥
सोई पण्डित सोई दानी मीठे बचन सबन सों बोले
तेजन जगमें निभें डोले ते कुलमंते परम सुथानी ।
प्रभुपदरति मन वच क्रम जिनकी चरण धूल राखु
शिर तिनकी जानकी दास परमहितमानी ॥

२

कृष्णगुमानी मेरे मन बस दावे ।
इस जगमें वारो और नहीं भाँदा निशदिन उर
विच वही लसदावे ॥
वही ध्यान वही मान वही सब वही तन मन धन
कुटंव वसदावे ।
प्राणपति परमेश्वर श्रीहरि नन्दनन्दन मृदु मुख
हसदावे ॥

खान पान जग बीच नहीं नादा और सुरत दिल
विच नहीं धसदावे ।
कृष्णरि रङ्ग मूरत वसोली गावत हरि हरि हरि
यश दावे

२

राम गुमानी साड़ो पो नजर बूझदावे ।
तेंड़रे दरस विन व्याकुल रहदे जानकी दास फकीरन
बुझदावे ॥

भैरवी—तिताल

राधे वंशी किन लीनो चोर ।
चञ्चल चपल नारि एक सुन्दर अबही गई याही ओर ॥
हाहा मोय बतावो प्यारी विनती करूं कर जोर ।
जानकीदास की आस पुजावो निरख दृगनकी कोर ॥

२

श्यामसुन्दर गिरिधारी वनवारी धुन वंशी फेर
बजावरे ।
जैसी बजाई वादिन प्यारे तैसी तान सुनावरे ॥
ग्वाल बाल सब सखा सङ्गले मेरी गलियाँ विच आवरे
जानकीदास रसिक ब्रजमोहन भुज भर कण्ठ लगावरे

भैरवी—जङ्गला

लगाय दे साँई झुझाने झुझाने बेड़ा पार ।
गहरीमी नदियाँ बारी नाव पुरानी आन पड़ी
बिच धार ॥

२

मैतो जोयनु वो तेरा समझाय रही ।
बार बार जोयरा मानत नाहीं समझ समझ
पछताय रही ।
जानकीदास श्याम बेदरदी बार बार वलिहार गई ।

भैरवी—तिताला

यारदा मुखडा मेनु भाँदानी भाँदा वे साँवल साड़ी
वल आँवदानी जाँदावे
जानकीदास सोहनो सूरत नजर पड़ी जबसे वो
मूरत गल लगणिनु जो चाँदनो चाँह दावे ।
वंशी बजावदा छैला जोर नागर नन्दकिशोर ।
विन वेखे कलन परतहै क्या सब क्या भोर ॥

२

चेरी न तेरी न तेरे बबाको घेरी गली में क्या पैर
लडैहो ।
जोतुम चाहत चाखन माखन सो तुम माखन
नेक न पैहो ॥
कंस के राज में धूम नहीं बरोआई बबाको सोंह
बूँद न देहों ।
टूटेगो हार हजार को तब नन्द यशोदा समेत
बिकेहों ॥

भैरवी—जलद

तेरे साथ लागे मोरे नैनरो ।
कहा करूं कछू बन नहीं आवे बीत जात
सारी रातरो ॥

भैरवी—ताल एकताला

नैना वो तेडा जालमजोर ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा वे सोना तुही तूही सब
ओर ।
जानकीदास निमानेंनु रखले आमिल नन्दकिशोर ॥

२

प्यारावो सोना सांवलयार ।
तेंरे दरस विन कल नहीं पड़दी रैन देहा वेकरार ॥
दरस वेखाजा साड़ी आस पूजाजा मैं तुझ पर
वलिहार ।
जानकीदास निमाने नु रखले दे अपना दीदार ॥

३

मिल जानाहो प्यारा नन्दकिशोर ।
वेख नजर भर घायल कीता वाँकें नैनाँ दी कोर ॥
तेंड़े दरस विन फिरावे दिवानी ढूंढदी फिरा चहुं
ओर ।
जानकीदास वेख तुसी हरखां जैसे चांद चकोर ॥

३

वे सांवलडा यार लागी तो ओर निभाना ।
तेड़े मिलननु सब जग चाँदा विन दीठीयाँ दा दिवाना ॥

४

विन वेखे वारी नैनादी झरी वरसांवदे दरसदी पोस
मिलावना ।
प्रेमरङ्ग मग दानी वो नित नित नेहडा वो मन भावना ॥

भैरवी—जलद तिताला

रघुवर वेडा मेंनु पार लगायदे ।
भवजल थल दानि वे पारन मिलदा भवदे पार
पहोंचायदे ॥

भैरवी—तिताला

पावन नाम तुमारो रघुवर मोसे पतित कों तारो ।
जल थल चल चहुं दिश मन चिपटत सब दृग दोष
निहारो ॥
प्रेमरङ्ग रङ्गे घनश्याम के लगे तन रक्त पियारो ॥

२

वेड़ा पार लगाय दे मेरा माँझीवाला माझिधारमें
वयार बहावत मत पतवार फेरादे ।
सतगुरुकों गुण लगन सकत है सम दम दण्ड
दिखायदे ॥
प्रेमरङ्ग भवसागर उतरत निजपदथाह थँभायदे ।

३

सुमिरन राम सुमिरन सुमिरन जो साधन काम
साधन साधन जो ।
जगत जो धाम जगत जो जगत जो भगत जो नाम
भगत जो ॥
मतकर साम मतकर मतकर जोंलग तन दाम
लगतन लगतन जो ।
निशदिन जाम निशदिन निशदिन जो रङ्ग तन चाम
प्रेमरङ्ग रङ्ग तन रङ्ग तनजो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

पश्यघने व्रजकुञ्जवने व्रजदार मनोहर वंशधरम् ।
रन्ध्रसमुत्थित धैवतराग-विमोहित दैवत दैत्य नरम् ॥
मान मपा कुरङ्गछवि लच्च चलं सकलं हरिरूपवरम् ।
विच्चवियोगी जनास्मरंदुसहा किंशुक जाल सरम् ॥

तिज्यैया तिज्यैया वंवं द्रग गड़दाँ गड़दाँ केलि
विलास राधावरम् ॥

२

कृष्णलला शरणागत तेरो राख लाज अपने जन केरो ।
अशरण शरण तोकों जग जाने नित दीनदयाल
दया कर हेरो ॥
दूजो और न कौन समर्थ है जाके नाम कटे भवबेरो ।
कृष्णरङ्ग प्रभु प्रणतिपाल सुनि तरिये कटाच्च कमल
दृग फेरो ॥

३

भलो भलो भाँतिहै जो मेरे कहे लागो है ।
मन राम नामकों सुभाय अनुरागो है ॥
राम नाम मोदकसुधा सनेह पागो है ।
पाय परतोष तौन द्वार द्वार माँगो है ॥
राम नाम को प्रभाव जान जूड़ो आगो है ।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागो है ॥
राम नाम कल्पतरु जोई जोई मागो है ।
तुलसी सारथ परमारथ न खाँगो है ॥

भैरवी—जड़ला

हरिनाम भजो थोरी जिन्दगो ।
अवसर बीत पीछे पछतैहो यमपुर जैहो गरे फँदगो ॥
निशिबासर हरिनाम उचारो तजो मनुवा कपट
रिदगो ।
कृष्णदास जगमें जो कहावो दूर करो सब छल
छिंदगो ॥

२

कृष्ण भजो तोहे कृष्ण दुहाई और न दूजो तोहे सहाई ।
द्रोपदसुता की लज्जा राखो डूबत गज ग्राह आन
छुड़ाई ॥
खंभ फार हिरणाकुश मास्यो प्रहलाद भक्त हित
नरहरि आई ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म लिए हरि अपनें जनकी और
निभाई ॥

भैरवी—धीमा तिताला

टप्पा

भोला भोला मुखडा जानी यारदा एक पल नहीं
भुलदा की कराँ दिल दुख दावो मीयाँ ।
रात देहा मैनु ध्यान तुसाड़ा वो मीयाँ तुसी घरी
घरी क्यों रूंसदा मीयाँ ॥

भैरवी—झपताला

तेंड़ी भुवे कालीयाँवे आड़िया सुनिवे नैनादी नोक
संभाल आद्या सुनि तेंड़ी ।
वहमस्त सुरावसद पेच ताव गिरह दाद शवरावये
आफताप तेंड़ी ॥

भैरवी—धीमा तिताला

झोखों वाले मियाँवे विरहदी सार न कमलावे ।
मैंतत्ती दाको उन ज्योमत दे हालवे ॥

२

सांवले हो मुरली वाले हो रावरे हो कान्ह ।
प्रेम उमगी उमगाई नेक भली वीण बजाई हो प्राण ॥

३

खेड़ों दा पर वेला भला मियावे सानू चकाज वों
जवाँ भादा कोइवे ।
विछोनु सुनु वेले वल खेड़े वे मियाँ सानु चाक जवा
नाद कोईवे ॥

भैरवी—धीमा एकताला

मानु भाँदो गलियाँ वे सोनें दी मानुभाँ ।
जावो नो कोई वे मुडले आवो मियाँ राँझे विना
जिन्द वे कलियाँ ॥

२

तेनु समझाय रहो दिलवर वेखन कारण
लोकोदियाँ बदियाँ सहेदे ।
इश्कदी गला समझदा नाहों नादम् हाल सुनाये
केहनु ॥

३

सांवलियादी जोर महोव्वत इश्कदे नाल दिल
मांड़े लगदी ।

इश्क लगा करके कूटदा भी नाहों मेंड़ा मियाँ तेरे
रखे नहीं रहदो ॥

४

जालम् जारिया वे रब्बा जारीयांदे नाल गुजारीया
दोठीया जमानेदी कुड़ियारीयाँ ।
मनो करो उस निधड़ेनु भावना साडरी गली तू
क्यों नहीं आँव दारीयाँ ॥
लाल चोरा हाथ सब छड़ी वेखां कोई नैनादी आन
मारीयाँ ।
तू तवीव दिल्दा साड़े सोरी मियाँ मन्होदे थांग
चल चंगी साड़ी इश्कदी बीमारीया ॥

५

दिल मजनु कीता हम फरेमस्तहो कूबकु सहरा
बसेरा लैली ।
मदहोशो से शोरी ने जिस दम् लव् लव् अप शुभ
रिनयली ॥

६

नई नई नए न्याज सों भरी ऐसी सोज गुदा जिसे
कोन फूंके हरे कदममें दम साज मियाँ ।
नए दरूं तिन्हो सदायना इसे बोले शोरी हर दम
बोले परी परी ॥

७

राँझेदे नाल करार मेरावे कीकरां जी नहीं
लगदा मेरा ।
राँझेदी सूरत मेरे मन पर बसदी वे मियाँ राँझेदे
नाल मन पग दावे ।
आशिक उसे मत जान जो बदनाम न होवे ॥
दीवाना वोही है जिसे आराम न होवे ।
रवा तेगो निगाह उमोखको मर दम रहे बाको
तड़फा करे विसमिल जो अगर काम न होवे ॥

८

तकके चलाई सानू साँग विरहदी नैनो वाले मियाँ ।
दिलते आ लगी शोरी दिल रह गया उचकके
लाई मियाँ ॥

९

दोनें ना देनी आगे वे सिपाईडा मेरा मोयां तू
राजी रहना मेरोयाँ ।
आप न आवे वारी वे ना लिख भेजें मेरा मियाँ
सुख बसे मुलतान वे सिपाइडा मेरोयां ॥

१०

मस्ति सहेरा में जा मोस्त कोजिये पीजिए पियाला
मद होशीका मस्ती ।
सनम् अपने अपने दिलमें शोरी है हजूर मोजूद
हस्ती ॥

११

तेड़े मिलनदा चावे मेनु आमि पियारा वे मियाँ
डर दियाँ वदनामी कूल तेड़ी ।
तेड़े कारणमें सब कुछ छड़ियां वरदिवां विन दामोदी
अनमोल तेड़ी ॥

१२

मदशानु भूल क्यों गया वे महिदे चावन चाक ।
आप छड़ जांदे नाल मेहिदे शोरी मियाँ माहिनु
उड़ी कनियाँ वे पेड़े दियांनी उड़दी खाक ॥

१३

आमिल राझा जानवे आमिल मैंतो ताड़े सदके
कीतो यार गुमानीड़ा ।
आशिक तें माशूक करम करे साडरी जान इस जग
विच जोवन महमानड़ा ॥

भैरवी—जलद्

होवे ढोला मन पर चांदिया भंग सिंघ लेदी जटियाँ ।
आँखि लड़ादियाँ भोंवा फुटकोंदे चित वढ़ जांदिया ॥

भैरवी— तीन तिताला

इश्कदा फन्दा क्योंकर छूट देखवे भला कोई
बतलाव मेनु ।
आप छाड़ लगी लड़ तेरी वे मियाँ कभी तो दरस
वेखावें मेनु ॥

२

सोना वेदरदीया रवे मानु तो रहंदा तेडा प्यारवे।
तुझ विन शोरी मैनु कल नहीं पड़दी साड़ी लेदा
क्यों नहीं सारवे ॥

३

टपाटप कार सादी गाँठ प्रेमकी घूंट पीवे सोई जाने।
इशकदा गुलफुल शोरी खुशवो आँदी जब चढ़ जांदी
दमटी ओर ॥
मियाँवे छोड़ क्यों चला नैनो नैना तकदी चुपकोती।
भट पई तेंड़ी चाकरी खेड़ांदी शोरी जोजांदी मै
तेड़ा भला ॥

भैरवी—जड़ता

चुगल बसेदे वो मोयां नाकर भेड़ा खेड़ोदे कोलवे।
शोरी तू तो बदमामल हांहाँ वेफन्दी विच साथों
मत बोलवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

किवों तू मेड़डा दरद गवांवो यारवे।
राझण मेड़ा वारी वे मेराझे दिवे मेरी मिया तेरी
भलाई सैला जीवो मीठो तू साड़डा दरद
गवांवो यारवे ॥

२

चोरा चंपेदावो वालमजो वस पाया कौसोदे शोरी
सिर तेरे।
चम्पेदा माला वेसोणा वस पइयाँ वे में तेंड़े सोणा
जो नहीं लगदा शोरी कौकरा बहानावे॥

३

खाला लड़दे भड़के झगड़के आए भोर भए मेरे
चढ़के।
डगमग पग ढिग धरत [illegible] पर बात बनावत
हौ घढ़ घढ़के ॥

४

प्यार [illegible] तोसाड़े नाल नहीं मिलनावे जावोनी
समझावो उसनु कोई।
तुझ विन जिन्द मेंड़ी वे कल रहदी शोरी
ख्वाबोनी समझा उसनु कोज ॥

५

माहिया वे तुमाहिया वे की गुजरी साड़ी हालवे।
बीच पङ्गुरा दोवे पइवे तरफेदी मेरा मियां
सुई पई दमनाई ॥

६

लाला वाला जोवन कौसो दावे रति रहजा जोवन
बालावो।
गुलबो लाला बाग बहारां विगुल विना फरमानी
दावे दाग जिगर विच कालाला ॥

७

राँझा मेनू न विसारी मैतो तोडे सदके कौतो यार
गुमानोड़ा।
एही गला पश्चावदी मेड़ी दिल विच कारिया
मानून विसारियां ॥

८

सइयांदे मरदान वे बून्दी तखत मकान चहल तन।
पञ्च तन पाक दोवे जारत चलियाँ रोशन सकल
जहान चहलतन ॥

९

मानिवे वसँति यारवे चोरा करोदा शिर देवन
आया तुरी जरोदा सोनि हरीवे।
मुखड़ा तेड़ा बाग बहारोंदा शोरी सोणा जम जम
मुबारक वादोवे जानो ॥

१०

लाइयाँ वे मैनु लाइयाँ कइयाँ तू तंगा सैला लाइयां।
राँझा तू तखत हजारांदा साइयां हो रसिया
लेदी जाइयां ॥

११

फूलीं सांझी वेख बहार दावे सोणा सोणा लगदा
मुखड़ा जानी यारदा।
शोरी हजार गुल लालाना फरमान दिवे सदके
कौतो सदके जांदी प्यारदा ॥

१२

जालम मुखडा परीदा पाया तेतो जोर लगदा
तवड़े दार।
शोरीदे सरदार यार परियादा कर गइयाँ परियाँ
शिरथे साया॥

१३

झोको बेखण जाँदियाँ वे रंझेटा तेंडियावे।
राझण मिलिया मैंनु बे सब दुख भूलिया शोरी
फुली अङ्गन समादियांवे॥

१४

मिरजा जानवे जिन्द तोलाइ इन तेंड़े नाल।
दिदनो जारेदा मेला ठेला शोरी मियां गरीबोंदा
रखले मान॥

१५

मुखड़ा सोणेदा परी पैर कर पायावे।
भली लगदी शोरी यारांदो सेनवे॥

१६

लानो जियरातें बाजू साड़ा भूलदा नाहीं मानुले
भी संभाल।
अखियाँ लग खटकेदी भटकदा दिल कीता कोल
तेंड़े नाल॥

१७

ठग ठगीले नैना तेरे लेंदे साड़े भला क्यों दिलनू।
एकतो दिल वारी वेतें ठगली तावे मियाँ दूजे नहीं
होंदा मिलनू॥

१८

दिल नहीं लगदा वे आखा तुझनु वेखों तो जीवों।
वेमियाँ तुसी जोँदा रहियो लाख वरसलोँ
अदारङ्गनु पार उतार ठण्डा पानी पीवोँ॥

१९

मिलना हो तो मिलजा ढोलन क्यों कुड़ेलावे।
साड़ी मै देख चुकी तेंड़े नित दे वायदे सुनवे राझा
विरह सानु रहदावे॥

२०

वोमियाँ जानी रब तेंड़ा भला करे कभीतो आमि
मांड़डे कोल।
वन्दी होवी तेंड़े विन दामोदी गुण मौत गले
लगमेदा सानु देइ मुड़ बोल॥

२१

जाले वेदरदा नाल पाले सुन मेरे सदारङ्ग अल्ला वाले।
दोस्ती कीतो क्या कहूं में पै दुश्मनके विपदा न डाले॥

२२

मै किस गुख उसनू समझावे दरद मेरो मल
नहीं मानदा।
अपनो तो आप जाने परवो किसीदा भला बुरा
नहीं मानदा॥

२३

महोब्बत लगीवे मियां कीकरां मेंड़े तेंड़े नाल तुसी
जानदा नाहीं।
महम्मदसा पिया सदारङ्गीले जोरधि माना में ठगी॥

२४

वे तेंड़े वेखण दावो मेंड़े सांइयां मैनु चाव घनेरा।
कहा करूं किन जाऊं सखीरो दरद अबतो
इश्कने घेरा॥
याद लगी तेंड़ी मियां तू भी करदा याद के नाहीं।
दरद क्या इई यारांते जोर दस्त मरेवाहीं॥

२५

अपने जियको वोथा तूही जानदा मेड़ा हाल।
तुम सिवामें कासे कहूं तुही समस्त प्रतिपाल॥

२६

वेखण कारण यारनु दिल ठगा दिल वगा यारनूको
इंइयाँ डूंगो बोच थक्का।
पुराणा इश्कदा सोई सजा पार लगा
राँझण मले लगले॥

२७

वेड़ा वदनामिवो मैनु मेंड़ा सयानु सलार दावे।
वेला चमेली दवना मरुवा गले फुलांदा हार दानिवे॥

२८

छड़के न जानावे मैनु मेरा महर मया रस पाही ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा नेहड़ा लगातो निभाही ॥

२९

प्यारेदो कोई ल्यावो खबरां जोवन जादा रखो
साड़ी अबरां ।
रैन गुजरे मान उड़िकानि खड़ियाँ दिन गुजरे
मेनु कहरां वे जबरां ॥

३०

वेदरदांदा वालो तुसाड़ा वो सवाजो माँडेवे ।
कोई किसोदा वारिबे कोई किसोदा मेरा मियां
असनो मानोदावे ॥

३१

चम्मेदो डालियां बोवां बहारांदे नाल भलियां वे रब
मिले तोमै वारियाँ ।
मुखड़ा तेंड़ा वारीवे अजव बहारदा शोरी मियां
कानाँ सोहै वून्दे वालियाँ ॥

३२

दिर दिर दीम दीम दीम तननन तननन यललल
यलललल्ले ।
लगाहै इश्क प्यारेका जिगर में छूटता नाहीं
मिलावो साँईकों अपना एहो जोवन हमाराहै ॥

३३

मै जानू मेरा जीव जानें लोक दिवानें क्या जाने ।
कासे कहूं आली कोई न जानें मेरी दिलदी दाद
खुदा जाने ॥

३४

सांतो कित ल्याईयांवे मैनु साङ्ग भलो नैना
वाले मियां ।
जंग शियाले मैनू चोरी गइयां मेरा सियां चकवीवा
नैना वाले मियां ॥

३५

आमिलवे प्यारा सांवल मेंड़े मे भो चलां सोना
नाल ताडडड़े ।
तांना भो देंदा वारो मैना भो देंदा मेंड़ा क्षणा
सदके कोतो जिन्द मेंड़े ॥

३६

सानूवो कारण लोथो फकोरो मरज नहीं कछू तेरोयाँ
निमेरियाँ ।
शाल दुशाला मेंड़े मन नहीं भावे कर्म लिखो साड़े
कामर कारियाँ ॥

३७

कोई यार मझां लाइयां वे मेनू मेड़ा प्यारा
मनमोहन सांवलावे ।
इश्क लगा तेंड़ावे कित वल छूटदा हो तुम हर
मयर कन्हाई ॥

३८

झोखों नू सँभाल वेछाड़ महो घर आमिसवे ।
थारो चोरे वालियाँ वे वावुल साड़ा चाक छोड़ मेहों
रावे ऐसो तो माड़ड़ो कोलवे ॥

३९

यार नालवे दिलदार नालवे मियाँ आशिकानु
तलव दोदार नालवे ।
हाथों सोना पैरों सोना गल सोनेना सोना नाल सोना ॥

४०

आएछो म्हारे डेरे वो मनमोहन नन्ददे गुमानो
छैला यारवे ।
कोंई मनुहार करा म्हारे सायवा झोना लोना सोना
करले म्हासूं प्यारवे ॥

सिन्धु भैरवी—ताल तिताला

सोनेनू आन मिलामि ताँड़ड़े कुरवान कीतो ।
वस रहो ताँरो सूरत मन पर ते मेड़ो जिन्द खुश
कर लोतो ॥

भैरवी वहार—ताल तिताला

लालाना फरमान इश्क दे जनु में पोछे रस ताई ।
वेवावुल शोरी आए दिन वहारदे इश्क न कीता सार ॥

२

सोबियादो वहार वेसाड़े नाल कितो मेंड़े यारवे ।
बिन वेखे कल न पड़दी सुनवे मेड़े प्यारवे ॥

३

भाँदावे साड़े दिलनु महेरम यारदे निजारेदो गमजा।
वेखतो शोरो हुनविलो रमझ तुझ नैना दिया गमझा॥

भैरवी—धीमा तिताला

दरदीम तदोम तदोम तुम ननन ननन तवदिरना
तनदिरना तनदिरना दानि दानि दोस्त।
नाद्रद्र तंन्द्रद्र ननन तदीयनरे तदियनरे तदियनरे
नाद्रद्र ननन दिरना दानि॥

२

बोल मेड़े नाल बोलवे प्यारा बोल मेड़े नाल बोल।
मैतो तेरी सोवो एक लग देशाँ में दो लग देशाँ
भारन देशाँ तोल॥
रांझण मेड़ा वारीवे सेंरा भनदो लोकादो को जोर॥

३

वेखोनो माड़ो सद्दयों होर रांझेदा को मान।
इश्क लाल महाव्वत सब जग छूटा क्या अपना क्या
विगान।
लटक चाल चले वारोवे मुड़के न वेखे मेरी जान एही
महबूवदी आन॥

४

राँझेदा मैनु दाग लगावे सुन लोजे खेड़े वालो
नीकुड़ीए।
विन वेखा सानु कल नहीं घड़दो हो रसियाँलो
सङ्ग जुड़िए॥

५

को बहाराँदे नाल चम्मेदो ड़ालियाँ क्यारियाँ।
खिल रहियाँ गुलजारोयाँ हाँहारे वे वणजारा तोमें
बारियाँ॥
केवड़ा चम्पा चमेली गुलाब फूल रहो अपनो उमग
से जब प्यारा मिले तो वन्दी थारोयाँ॥

६

नाजा महरम नाजा वे कभो तो साडड़े मन मान
गलावे आजा।
तू शोरोदो कसम मतकर समझ रमझ दिलजा॥

७

जोथे चलो उथे लेचल मैंनु मैभो चलाँ तेंड़े
नाल मेरा प्यारा।
महोब्बत लगो तेंड़े साथ शोरो मियाँ ज्यो भामि त्यों
पाल मेंड़ा प्यारा॥

८

तूं आपो नाहोया मियदावे भूल गई सुध मेंडो
तेनु सोनावे।
तुझ जेहा मैंनु होरन दिसदा तूतो महरम दिल दावे॥

९

मेरा महो बालोयाँ वे मियाँ।
मेहीदे कारण वे चाक सेहीडा वो मोयाँ बूटा बूटा
कर पालियाँ॥

१०

सेंदोयाँ देनो वेले तुमेड़ा साँइयाँ आन मिले तोमे
जोवाँवे।
सुणनो होरे राँझा तखत हजारेंदा साँई चाक
मेहोदा मझो बालावे॥

११

आदम् आदम् आदम् दमदे दम् विना नाहीं
किसो कमदे।
किभरवासा मेनुं जोदड़ोदा प्यारा ए जोगी जग
विच रमदे॥

१२

काँई गुन्हा में थाको कियोछे मानु बताय दो
सायबा राजा।
कोटा भो देशाँ थाने बून्दो भो देशाँ थासो लग्यो छे
म्हाको काजा राजा॥

१३

साथोड़ा महानु साथ भो भाँना हम परदेशी
लोग विगाना।
इस गलियाँ विच आँदानो जाँदा अपना सो अपना
विगाना सो विगाना॥

१४

नाम लैलीदा कों लीता मजनू मीयां सहरा सहरा
हुए मस्त।
चीना आशीक सुन्द जाएके हर दम् मे रवद
होश मजनु अहस्त मे गोयद मुवारक बादर गोस्त ॥

१५

भलीया साड़ोयां बनो तांड़े हतां बिच खुबदा छला।
हाथो मेहदो पावाँ मेहदो किये जे तरहां दारनी
अनी भला ॥

१६

प्यारका उठ पीवो प्याला।
शोरी को नशेमें अबहका बहका फिरे मस्त प्याला ॥

१७

नामदा नामदा नामदा मेंनु आसरा इभांदा वे मेनु।
तुझ विन मेड़ा औरन कोई शोरी तहां तइजबदानु ॥

भैरवी—धीमा एकताला

वे मोहिदि मेनु भांदी भलीयां।
राज पीयारा मेडा दरद न जानसिवे मीयां रांझेदे
लाल रहांदो वे कलो यां।
वे जाबोनो कोई मड़ले आवो खबरां राझे विना
नहीं भलीयां ॥

२

देखोरी मोरी गुझां कजरवा देख।
पांनादी लाली वाखि अजब सोहावदी देख
मिस्सी देख ॥

३

सोपाई मांरी अरज सुनजाइयो हो जाने बालेहो।
कबकोमें ठाड़ो ठाड़ो अरज करेंगा इतनी अरज
माड़ी मानबो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

वे नजारा महर मन जानोयां वेतेड़ो वलानु
कभी तुसाड़ा मान।
तेनु शोरी एक दम हठ मत कर नजा प्यारा लगनावे
कीतानी कौल करार।

गहरी नदीया वारी वे थेलड़ा पुराणा मोला
लगावे बेड़ा पार ॥

२

तांड़े विछुड़े मोहे चैनन आवे कों छांड़ चला परदेश।
मुसलमान साजनि दिल न जाए खेश।
नेसहा सना सुद बकशो चुं असनाए खेश नेस्त ॥

३

वालम याना नालवे कमली अपी लायानी पछतावा
लगोयानी मत वे जीवे लाख वरसहो तू मेड़ा
साईयांजी।
रात देहा महोब्बत सुख साड़ी लगा रहदा
ध्यान तेड़ावेजी ॥

४

लखा तेड़ा सुभदा दिल विच गुमानीड़ा यार मीयां।
चंपे जेहा तेड़ा रङ्ग विरङ्गीला सोणा आंखा विन
वेखे सानु कल नहीं पड़दां साँवल मेनु भायानि
खेड़ा सला आंबांदो फांकां ॥

५

रब्बा मिलामी सोणा यार मिले।
आठ पहर मेनुवे ध्यान तुसाड़ा मेरा मीयां मौला
करे तुसी जीन्दा रहियो एही मांग दियां दोहाईं
सोणा यार मिले।

भैरवी—तिताला

माहीड़ा ठग बजारदा ओमेनुदा।
रेंदी तेड़ी याद तेरी सोगे मांनोड़ा हो तूतो दिलवर
हजारदा।

२

जानी जीयरा ते बाजूवे मीयां मांडे महरम दानी
विसे मालावे।
अखियां लड़ खटकेंदी भटकदा दिलकी कल भरे
पारवे मीयांवे।

भैरवी—धीमा तिताला

अली वेमीयां नैनो दगा भर भारा।
घायल कीता साडे दिलनु मीयां इश्क लगा
शोरी यों ठग लीता॥

भैरवी—एकताला

किन फूकीयांवे मीयां तेड़े कानो बीच एही गला
झूंठीयां साचीयां।
मन्दीर मन्दीर बारी वो ध्यान तुसाडा वो मीयां
नाहक मेंडो जिन्द लुटीयां॥

२

जादू कीना वो मीयां घरी पल छिन नहीं कटदी।
तुझ विन जिन्द वे कल रहदीं इश्क लगा ठग लीता॥

३

मैतो तेंड़ी बातन मानी तुसी आमिल मोहन
नन्द दे गुमानी।
रैन दिना मैनु ध्यान तुसाड़ा वो श्याम एक घरी
पल छिन कलन परत जानी॥

४

वे मियां तैनु कीतावे यार जीन्द मैंडी कुरवान।
तुसाड़ी बन्दियाँ भली नहीं लगदी गुण मीत
रवनु मान॥

भैरवी—धीमा तिताला

काशिद भेज भेज मन रखना।
तेंड़ी जुदाई मैनु भली नहीं लगदी इस दुनियाँ
बिच कोई नहीं अपना॥

२

दिन वहारांदे भांदावे महबूबा तानु जम जम।
गुलफल मियां गुलशन बिच तेरे वुल वुल बोले
चहचहा बागबहारां गुलाला नाल मान दे नरगम॥

३

शोरी बागबहार यारको शीबत कारण हमकों
रङ्ग भर दीजे।
कोंजो पीवो प्याला सजन इस कैफीयत का नशा
प्यारे कीजे॥

४

चढ़ताजो तुरङ्ग तुरंग तें मेरा मीयाँ चलीयाँ सकार
सहरा गस्तनु सजदे सुबू।
हमा आह्न न सहेरा सरे खुद निहाद वर कफसरे
मन फिदा हैरा हे विसियार मेहो खाद॥

५

असी तेड़े सदके कीतो जानो मिल जावे मिलजा।
घोल घुमाई मेड़ा साँवला आजा॥

६

दरदीमतदीमतदीमतुमतननतननतनादीरना
तनदीरनातनदीरनादानिदानिदीस्त।
नाद्रद्रतंद्रद्रतननतदीयनरेतदीयनरेतदीयनरे
नाद्रद्रतननदिरनादानि॥

७

हीर रांझेदा की माणावे अनि वेखो सइयों मेड़ीयां।
लटक चाल चले वारीवे मुड़के न वेख मेरी जान एही
महबूबादो आन॥

८

चली नेणानु भाल वेमीया जालम जटिये पंजाबदी
वे मेरा मीयां।
जोतूं चाँदा इश्कनु जंग शियाले जाय जंग शीयाले
दी जटणी रखेंगे विलमाय॥

भैरवी—झपताल

हावे मोनु भांदिया जटीयाँ भोंवे कालीयों।
घूंघर वाले तेड़े मुख पर सोहै झमक रहो कानो
बिच बालीयों॥

भैरवी—तिताला

हीर रांझेदा नुवे सइयां वेखोणी।
सावत साँई अल्ला का जीवो होणी को करेगा कोई॥

२

जिन जारे बालम सेजड़ीयां सुतड़ोनु आनके जगाई।
हाहा करूं तोरे पइयां परूं पति करत निठुराई॥

३

नित दिन नजारा नैनादा तेड़ा भला लगदा मैनु
टुक मुखडा वेखामी।

अजब खुमार मरे झुख रही अखियां निमानि
दे घर आमी ॥

मैरवी—धीमा तिताला

प्यारा वो घर आमि सबेरे खाय गया गम तेड़ा
वे गुमानोड़ा ।
उठ शोरी मिल जारत करिए भूल करो कभो भी
फेरा गुमानोड़ा ॥

२

तेंड़ी याद मेंनु हरदम दिल में तुझ विन नहीं
किसी नाल लगदे ।
गुजर गई गुजरान शोरी मीयां होय जोगी इस
जगमें रमदे ॥

३

आओ सजन हिल मिल जुल रहिये जगमें जीवन
थोरारे बलमा ।
तुम्ही हमारे वारी हमी तुमारे जिय मोरा मन
तोरारे बलमा ॥

४

सइयां वैलो आँखो दूर म जा बसदे लोग विगानेरे ।
मिन्नत करदी मैं खड़ोयां सोणावे साँई करे मुड़ आवोरे ॥

५

सुनवे जालम यार बस कीतावे जिन्द मेंड़रीणु ।
नेह लगा कर वे भूल क्यों गया मेरा मीयांकी इइयां
जिन्द मेडरीणु ॥

६

मेरा मुजरा लीजोजो सिपाइड़ा अपनो नला
से दो नेंनादे ।
सलाम दस्तसे करना मौजूद रहे मेरा दिल चाहे तो
मन रङ्गलो ॥

७

तारन वालावे आसरा मैनु तेरा ।
देवी मुराद मेंड़ी वे मुश्किल करो आसान रब्बजो
पीर मेरा ॥

८

भाँदावे साड़े दिलनु महरम् यारदे निजारेदा नमजा ।
वेखतो शोरी हुण बीतो रम गइयां मेंणा दिया गमजा ॥

९

राबीनु चलत गिरूँ मैं तो ताँड़ो लेवां बलाईं ।
जँग सियालेदो जालम जटो मेनु विलमाईं ॥

१०

अपमें खेंरादो दो नेंणादोमें मैंतो मनदो
रहदोयां मान ।
घूंघर वाले बाल तोड़े मुख पर सोहे पलका तीर
भौंवे कमान ॥

११

माही यारदो बेखी वहारणु वेमें भूल गईयां रात
बहारनू ।
जोमें जानतो कित वनफूल खिलोना मैं जानतो
गुलजान ॥

१२

उस परीदा नाम लेले दिल दिवाना होगया ।
जो गया मुल्के अदमको सो वहीं का हो रहा ॥
फेर उसे इस मुल्कमें दुसवार आना हो गया ।
जो लिखा किस्मत का शोरी होना था सो हो गया ॥

१३

साजन सानू मिलि मेंड़े इलाही वाँके सजने नु दिल
समझा की बेकदरादे नाल जागी रात सारी ।
मैंभी याणी वारी नेह की जाना सांची गलां सांची
आँख आँखी भला ॥

१४

माड़े रतीयन लगदा जोयरा महरवान हो मीयाँ हाँबे ।
ते कहदियां मांड़े साहवाने बेखो मोरा रब्ब जान दाबे ॥

१५

हाँवे मेनु किसी दे नाल ।
मम नाहीं सायबा मेनुड़ा दे नाल ॥

१६

प्यारियाँबे नहोरेनोयाँ निरखियाँ बे मेरोयाँ ।
आप छड़ जाँदा वारी नाल मेहोदे आजज कीती
इन राँझेदी कठियानो मेरोयाँ ॥

१७

साथोडा विलंभावे राजी रहणा माड़ा ।
ढूंढ़दी फिरेदो बारी हुई दिवानो आन मिलावो
माँड़ा वालोड़ा साथोड़ा ॥

१८

रव्वावे माड़ी जीन्दडीदे नाल जहानवे ।
मदत होवी शहर कुल आलम मदतशा मरदानवे ॥

१९

साड़े साथोड़े नू ल्यावो हो माड़े माहोड़ेनु ल्यावो ।
हाथ रङ्ग भर मलदो मेड़ेवालेनु ल्यावो राँझेदी
सूरत अजब करेशाँ दुलहा ते लाल बनावो ॥

२०

आसी वोख नैनानु भूले आडावो ।
राँझेदी सूरत सब जग भाँदी मेरा मियाँ लह सकल
हनि भाँदा ॥

२१

नैना चोरोदा जोरोदा न लाईये वेयां साँनोड़ा हाँवे
दरद नहीं मान परवत हादी सदा सुध विसराई ।
अति भोंवन मोड़ो तनक भनक सुनत श्रवण मुरली
सुखदाई सप्तसुरन गति मत सुध विसराई ॥

२२

तारण जग साँई साँइयाँ वे समझ मन भाइयाँ ।
यह दुनोयादा मेला ठेला कोई किसीदा नाहोयाँ ॥

२३

वे गुमानी यार दिलवर माहिड़ा यारमें तेरोया तेरोयाँ ।
ले चल मेनु तें ड़े नालो जिन्दड़ो वारो वारो फेरियाँ ॥

२४

वेमे घोलियाँ घोली दानी गुसानो मियाँवे कीकराँ ।
मेडा वस नहीं चलदा सुझ वेनी मानीदा ॥

२५

वे महर मयाना हाँ सोणावे महर मयाणा मैं वारो
माड़ा रती पल लगदा जीयरा ।
कहदीया माँड़े सायवानु बे माड़ा रब जानदे हियरा ॥

२६

या रव्वा माँड़ा दोस्त मिलामो कीकराँ जनही
मान दावे सजन साँइनु मिली माड़े इलाहीया
बकस सजनानु गल समझावो वेकदरादे नाले
जागी निशि सारी ।
मैंभो अयानी वारोवे नेह को जाँन मोयाँ सांचो गला
आँखि मेवारो ॥

२७

सैयो निमाही जादावे माहिदा रख वालो साड़ी
आंख लडाँदा सरमादा जाँदा नेहडा तुसा कित
गुण लाया ।
सकुचदीयाँ कहदियाँ उमगदो गला तें ड़े कारणमें
इश्क किया नेह वे मोयाँ ॥

२८

वेमियाँ तेड़े मुखड़े दो लेवों बलइयाँ तूझो तखत
हजारेदा साइयाँ हिरसिया लेदो जाइयाँ ।
तकीया लगाया परदा जोरा जोरी भोंए तु पलका
तीर चलादियाँ ।
घायल सायल कर के वो अपनो नैन खुमारोयाँ देरत
नालीयाँ डोरे घाव सेलादीयाँ ॥

२९

रेदड़ियाँ तेदड़ियाँ मेनु यादड़ियाँ नुबे सोणा मोलेरे ।
मानो घतड़ियाँ कदड़ियाँ निकतड़ियाँ मजो दड़ोयाँ
दोतडीयाँ कुरवानड़ियाँ नोवे सोणारे ॥

३०

पलके दड़ियाँ लटके दडोयाँ झमके दड़ियाँ अलके
दड़ियाँ ।
भोंवा तीर चले दड़ियाँ मरटके दड़ियाँ हसे दड़ियां
लसे दड़ियां साड़े जीय बसे दड़ियां ॥

३१

भला मैने रोझीया मेनु इश्कदावे नशा आशिकनु
होया यारवे मेनु संभाल।
कैफीयतदी वगलां मानले वे अचपल सर सारीयां
होइँया वेकमाल॥

३२

जेतुजांदा तेड़े नाले जीन्द जान्दीया जाने वाले यारवे।
मत जाना नेणाहि निभाना अचपल कदीया
सरमादियावे॥

३३

जिमदा दिल वेकरार उसनु कहे सुने नाल कद
होदा करार।
भला मैतो आपो समझांदियाँ सुन मेरा अचपल एक
अनार सदबीमार॥

३४

गरीबांदी हाय बुरी होदीं विन जानवे नादान वे
न जान मेरा प्यारा।
जिसनु लग जादी बला अचपल यही तो किस्सा
सारा॥

३५

फ़रियाद रब्बा दरद न कीता साड़े हालदावे
संभालना सांई।
अचपल फन्द बिच फन्दे गइयां मेंड़ी अरज
तुझ ताँई॥

३६

दिल मेड़ा आँखोंसे करां टोना करां तो कीकरां
इस दिनमणि।
बारीवे बनदी नाहीं अचपल कितबल आँखो में
जो धरानो॥

३७

लाल हुसेन अल्लह सलामदा मोजदा दिल बिच
समझ के पाल।
हाल कल रब्बी न उसको चिट्ठी औकात शोरी
उसनु भी देख भाल॥

३८

या करीम या रहीम तेड़े कारण मेडी निगाह
चाहिये तो होंवे निस्तार मेड़ावे।
तेरो वे परवाहियों से मेड़ा जो डरे तू बड़ा
गफूर रहीमवे॥

३९

साहबकों साचा जानोजी साहबकों साँचानु और
कहेतो क्या मानू।
एक मागे एक ठाड़ो रहो एकन कों वो देत सभी
वे हत भगवान साहब और कैसे न पहचाँनू॥
एक कहे एक चुप रहे और एक करोरन देत सोचत
सोचत सोच करूं तो दिल मैं नित यह ठान।
एक बीज में क्या क्या उपजे आँखो सेति देख डाल
फूल फल पात अचपल क्या क्या और बखानू॥

४०

मतवाला जोवनदो सदा वेइथे रहणा साँवलड़ा बांके
नैना वाला चाल चलत मतवाला॥
गजचाला बंशीदो ताँन सुनावो नन्दलाला॥

४१

दमका सब आदम से नाता दम में आता दम में जाता
अपना नगरमें कोई नहीं दिसदा रब सों नेह करो
दिनराता॥

४२

सुनहुरे लोगवा ननदीया हमीसन झगराई।
निशि दिन मोकों दुवर भइले पीया विन
मन जो गवांई॥

४३

मन मेरो लीनोरे रावरे कान्ह।
अचानक जा निकसो कहो सच कुच झझको हो
अजान॥

४४

मैंतो फन्दी वे फन्दा तेरीयांवे मेड़े दानियावे।
आपन आवे वारी ना लिख भेजें वे न पढ़े में तकदी
तकदो तेरीयांवे॥

४५

दिलवर मेंड़डी गलो तुसी कर फेरा बहाल
दिलाँदा वारो ।
वे किसनु सुनावा मेरा मियाँ चुप रहदे लाचारो ॥

४६

सुनवे जालिम यार वसकीवो वेगीद मेंड़रोनु ।
नेह लगाकर वे भूल क्यों गया मेरा मोयाँ कीहुइयाँ
वेरे मेड़ीनु ॥

४७

हमतो तेरे देखन के गरजो मरजो जैसो कीजिये
हमतो तेड़े वेखण वारे ।
करोजो हुकम करो हौं बन्दगो हमतो गुलाम
तिहारे नजरकों देखन हारे ॥
ऐसा न जान मुझे सुन्नान दान मोहो हम जिन्द करे
कुरवान नजरके देखन वारे ॥

४८

वे मृगानैनो तारण साँई अल्ला ।
इस जगमें वारो कोई नहीं अपना सुझवे
गरीवान्दा अल्ला ॥

४९

वेखोनो यह कौन हो दावे ।
महीयांदा रख वाला आंखि लगांदा सरमाँदा जांदावे ॥
चोरो सो शरो सानु वेख वेख जादा कमली यार
धिगाँनावे ॥

५०

भला हुआ उमर गुजर गई करदा वो मरुर जोवनदा ॥
सइयां साड़ो जान सलामत नोका रङ्ग नहीं मिलदा ॥

५१

यारे मन यलायलले दोमतनु तानुम दिरना
आतानु दोमतननतदनु मकुन वेवफ़ाई ।
टुक खुदा सों डर प्यारे सोणा यारे मन ॥
दिलवर चीन जुलफ कमन्दे तो वस्तए ।
मवर मनज का जोर मकुन दिल शिकस्तए ॥
मखने न करदे एमक सेरन कोस्तए ।
मंजूर मन हमीको आशको रूहे गस्तेए ॥

५२

विरहदोवे जटीयाँ दावे मौंया जादूगर सुनवे
मौयां मांग ।
शोरीनु की इश्क लगाकर के तब लेचला मार थांग ॥

५३

प्यारेदे मन चाव घनेरे जो मिल जामी सानु
साँझ सवेरे ।
साँई माँड़ा मानु आन मिलामी औसरतां नाल मानु
साँझ सवेरे ॥

५४

सोणावो सानु मिलजा प्यारा गम नहीं खाँदा
सांई वेगुमानोड़ा ।
साँई दे नाल नित अरज मेड़डी असरतां नाल
प्यारा असमाना ॥

५५

हाँ वे खूब परीवे मेड़े हाथ परी नैनन सोहै नेरे
गात परी ।
गले सोहे तेंड़े मोतीयांदी माला शोक दिल
देवे तू साथ परो ॥

५६

तेंड़ी भूवें कालोयांवे आडा नैनादी नोंक सम्भाल ।
विन देखे कलन पड़दी ज्यों भामो त्यों पाल ॥

५७

वे खाय गया गम तेरा मैं तेरीसों यार झोखां वालीयां ।
मेहोदे कारण वे छाड़ चला मोयाँ रांझा कौन सोहै
वुन्दे वालीयाँ ॥

५८

वोसें बारो वोमेवारो मेवारो मेरा मोयां वोमेवारो
मेवारो मेवारो मेरा मोयां ।
नैन जटो दे तरकस तोर कलेजे कारो वो मोयां
राझण हुवाहै फकीर वो सोयालि मेरा मियाँ ॥

५९

माहुड़ा वालम यानामें तेरो सोमां ।
कसम नवोदो मत मानले शोरीका हुइया हुण
तेड़े आगेमां ॥

६०

भंवरु मत तोड़ कलियाँ फसले नो बहार वे रस भरिये ।
मदियोमो बो लाला दे चार दाग जिगर पर मलीए ॥
शोक रंग हजार गुल नैनादी निरगस कभी चिन
चोरिये ॥

६१

जोवोजो थांसो म्हारो मनडो लागो वेससो ताया ।
पुनुदा दिल हुइयां ढंढ़िया वेले सुख पाया ॥

६२

करदा गरूर जोवन दानो के रङ्ग नहीं मिलदा
साड़े नाल संइयो दिल चांदा ।
लेलर नग नैनु सुभ से में कभी कैवार तुझे
कोली में भलंगा ॥

६३

वे मियां विरहदोमें नहीं जानदी साड़े दिलादा
तुझे नहीं मौनदानी ।
जो तू चला वारी वे चलन न देंगा मेरा मोयां पलुडा
पकड़े में खड़ोयानो ॥

६४

यार अदा मेनू मुखड़ा भांड़ा बहार दाइया पार बू
महक रही है ।
गुलशने ये शोरी वहका फिरे मस्त बुलबुल
चहक रहोहै ॥

६५

नैनो नैना तकतो चपको तीवे मोयां छांड़ क्यों चला।
भटपई चाक चाकरो खेड़ांदो शोरी जाजादो
तेरा मला ॥

६६

वे माहोयां वे नैनो सार वे यह मुराद मांगी ।
वे माहोयां आवन आस पुरी सानु होंभो तो
दाद मांगी ॥

६७

मेनु तेड़ड़े वेखनदी थांगरे ।
चढ़ वेखां वारी राबांनु वरदावे सोणा रव सुनले
साड़ी चांगरे ॥

६८

आयानी संभाल वो राझण यार की हुइयां तेनू यार।
होरनी मानोनुको पूछदा पोरु दिलदी हुइयां सार ॥

६९

आज बजाई कान्हा बाँसरी निकसत नहीं मेरो
प्राण सांसरी ।
वंशी बजाय मेरो मन हरलीनो बहो जात मेरे
नेणा आंसुरी ॥
मुरलीको धुन सुन भई हौं दिवानो विकल भई
गड़ो हिये मेरे फांसरे
रसि रङ्ग रस बस करलियो लग गई मेरे मन
प्रेम गांसरो

७०

जो मरजी सेड़े यारदी वो जों सोई सोई मेनु करना
अरजी मरजो ।
सांची कहना सुखो रहना शोरी मियां भली नहीं
खुदगरजी ॥

७१

दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया कासे कहं या
दिलदी अरजी ।
सब जग देखा कोई नहीं अपना जो मिलिया सोई
अरजी गरजी ॥

भैरवी—जङ्गला

विरहदी नोके मे सेदीयां तेड़ी झोखां वालीयां ।
कभीतो आन मिलो रब दाड़ा नहींतो राह तकेदियां ॥

भैरवी—धीमा तिताला

मला कोई बतलावना मेनु इश्कदा फन्दा क्योंकर
छुटदावे ।
कोई ततीनू छुड़वारो वेलगो लड़ते तेड़िये मोयां
कधा तू दरस वेखावनावे ॥

२

दूर न जा बसेदे लोग विगाने सइयां नवेलिया वे ।
मिन्नत करदी वारी वे पइयां न पड़दिवों मोयां रव करे
तुसी मुड़ आवे ॥

३

कदर न जाने दरकदर मोयां क्या जादूडा
कीतावे दिलनु ।
वेखननु मूश्ताक जो मेरा इश्क लगा मन लोता
दिलनु ॥

४

चल उठ कर दौद निजार मोयां दोद निजारेदां
आवदा जाँदा मोयां ।
ग बहारानोवे वेखण चलिये हो मोयां मेड़ा दिलवर
आबदा बजार मोयां ॥

५

करना होय सो करले प्यारे नहींतों जनम जात दिन
रैन सवारे ।
सगरी उमर बीत जइहै छिन पल माँह विनस
होजारे ॥
धन जोवन कुछ थिर नहीं है चेतना हो तो चेत
सवारे ।
मनरङ्ग प्रभु मत भूल जगत सङ्ग काहे को सिरपर
लेत तू भारे ॥

६

साथोडा मेरा और निभाना हम परदेशी मुल्क
विगाना ।
इस गलियां विच आँदानि जाँदा शोरो अपना सो
अपना विगाना सो विगाना ॥

७

परखले परखायले एमोयां देखना दीदार यारांदा ।
खोटा खरा पहचान शोरी मोयां सोई गनोमत
ईमान प्यारांदा ॥

८

कोजाल माँड़ोवे मोयां जो किसदी यारोदा ले
विसडड़े नाल न जानू नाल न जानू को करवे ।
मुख वेखाँ तेड़ा सांवरो या मेंड़ो जानें जिदड़ो दिवानो
मेंड़ा जो डरवे ॥

९

दरकदी आइयोरे जानो मेनुभी दरस दिखाइयोरे ।
तुझ कारण वारोवे जोग कमाया मेंड़ा क्षणदिल
दोत बुझाइयोरे ॥
तुझ विन देखे मोहें कल न परतहै आकर
हित सों जगाइयोरे ।
सरसाई मनभाई कर कर अचपल पीय घर
आइयोरे ॥

१०

कदो मिल जाना यार नदाना तुझ कारण दिल
अतिसुख पाना ।
जो गत लिखो सो प्राण पगो सब सुन्दर रूप निमाना ॥

११

जादूड़ा कमाल कीतावे ।
इश्क लगा मेड़ा जो तरसाँदा हाल जिगर
पर बीतावे ॥

१२

कौन गति भई मोरो आन न मिले पीय मोकों ।
उन विन कल न परे पल छिन कैसे रैन विहाय आन
मिले पीया मोकों ॥

१३

मार चला क्यों छोड़ चलारे मजनू इश्क गरीबां
क्यों मोयां ।
या खुदा याद सुन मेरोदा है फिरियाद शोरो मियां ॥

१४

खेड़ांदा पर वेला वे भला मोयाँ वेसानु चाक चाक
जवाँ भाँदा कोइवे ।
आदानी जाँदा साड़े घरवे शेरो लगो महोब्बत पाकवे ॥

१५

ए चतुरङ्ग सुअङ्ग सन गाइये गुणियन सुरजनन
रिझाइये मनमें संकोचन न लाइये ।
धाकिट तकधुम किटतक गिदिगन धेतलां३
धइ दीम द्रद्रद्रद्र दोम चतु० ॥
सारेगमपधनिसानिधपमगरेसासारेसारेगरोगरो
गमगमगमपमपमपधपधनिधानिधानिसा ॥

१६

चतुरङ्ग सबै मिल गावो गुणी तरना त्रेवट ख्याल
सरिगम अमो अैयतो अै अैं या अमो अै अै या।
धधपपपपधधनिनिनिसासासासानिनिधधपप
ममगमगरेसा त्रकट तक ताधकट तक ताधा
गेदिन नुतान धात्रकट धकट थँताता विकुकु
झेंझें धाताड़ा धाधा धोधा धा ताड़ धाता दि धाधा
तड धाता गिदिगनं धा॥

१७

केही कूड़ी गलाँ करदा साड़े नाल मियाँ वे असी
तो तालब तेंड़े मोयाँ।
तुझ विना होरन दिसदा विन वेखे नाहीं चैन जियाँ॥

१८

छांवे ढोला मन परचोदोयां।
आँख लडाँदी भोंवा मटकोंदो चित चढ़ जादोयां॥

भैरवी जङ्गला—होरी

जिस घड़ी तेंड़े फन्द विच पइयां जबसे
या लगा तेंड़ा ध्यान।
जबतो तोरे दाव में जायके फसे सैयाँ हम आह के
ताक नाहीं कैसे करे फरीयाद॥

भैरवी—धीमा तिताला

मेंड़ा प्यारा झम झम झम झमके बाला सोहना
मोहनानो सांवलड़ा आयानो।
सांवली सूरत साड़े मन पर बसदी मनदी
आस पुजयानो॥

भैरवी—तिताला

द्रनाद्रना तुम तन उदन तुम तननन उदनत तुम
तननन नित नतनतुना द्रद्रद्रत दानितन तु द्रद्रद्रत
दानो ताद्रद्रतु तारेदानि तारदानि तारे दानि तुंतन
उदन तुमनन उदतननन मतं।
सुन्दर चतुरङ्ग बनाय के राग राग रूप स्वरूप
अति त्रिवटँ तिलाना गावो सरिगम चतुरङ्ग धा
किट तिक त्रिकट तकधुम किट नगदिति कड़ानु
गिधि गन धातुँ तुम तनमतन॥

सारेगमधपमगधनिनिधनिनिसागसानिनिधपमग।
सारेसारेगरेगमरेगमपधनिधनिसानिधपमगरेसा॥

भैरवी—धीमा तिताला

दोतिना देनो जागे वेसपाईड़ा तू राजी रहना।
नैंनाँ तुसाड़े वारीवे वरछोदी नोकों वे मोयां
इश्क दे नाल सानु बहाना।
तू शोरी तू सानु भलावें जो तरसाँदा नेह लगाकर
की सानु दहणा॥

२

बालम याना नाल साड़ा दिल लगियांवे।
कमलोतू आ पिलायांनि पक्कतावण नेह लगियांनो
जालवें॥

३

वोमें कीकरां अरजो जोसांई तेरी मरजो।
नवाज सुजात दोल साईं सलामतें मेरा मोयाँ
आशक रङ्ग तेरो गरजो॥

४

आदम आदम आदम दमदा इस दुनोया विच कोई
नहीं कमदा।
नहीं भरोसा घरी पल छिनदा नाथन दिल जोगी
होकर रमदा॥

५

चल फिर करदोद निजार दे आया गादा महरम
दम दमदे।
सोरखे गुजरी गुजरान शोदरी दे भाल परोसे
एक नजरदे॥

६

मातें नैनादी भुलोयांवे मोयां।
नैन लड़ेदे लड़लड़ जादे गम जामा तें नैनादी
बालीयां॥

७

उठ शोरी मिल जारत चलना भले बुरे दोदभी
करना।

नेह लगा करके तरसादा देखो तेरी चाल नदाना ॥
इस गलीयां बिच आना जाना कुछ तो समझो यार
नदाना ।

८

बाग बहारां दामकी सुन तो सोना यार यावे ।
तेड़े कारण चमन बनाया चल शोरी सुन प्यारो यावे ॥

भैरवी—जड़ला

अम्बुवाकी डारो डारो कोयल बोलेरी ।
कोयल बोले शब्द सुनावे एकविकी तेरो बारो ॥
अनवट बिछुवा पायल बाजे चलने की गतिरो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

देखो मोरी गुइयां मोकों लाखन गारी दीनोरी
बरजोरी ।
मोरो दधिरस चाखो तापर हरवा लीनोरो ॥

भैरवी—जलद तिताला

आबतही रङ्ग रङ्गाय सो पोय मोर ।
सगरो रैन जागे रस पागे होवन लागी भोर ॥

भैरवी—झपताल

तानुं द्रनातन दिरना तदर दानो ।
नाद्र नाद्र दोम दाम दोम दोम तननन उदत तिला
तान दिरना तदरे दानो ॥

भैरवी—धीमा तिताला

मेरी अरज करो सानु सोणा नाल ।
जिस दिन मौला मेरा हाकिम होवे फजल करो तोमें
भी निहाल ॥

भैरवी—झपताल

यारां सुनो तेरी भुवां कालीयांवे ।
चंदा जैसा तेड़ा मुख वेखावणवे सूरतदा जिन
करो मानवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

तानदिर तदेनी दोम दिरना दिरना दोम यारंमल
लियललियलोयलललले ।
धितिलितोलाना द्रद्रतिलातालले तिलोलानातदेना ॥

खुद राह दररि राहाके आमो दीर कोल वलके फसान
दारहो मिलिलातिलो लीता लत लल्ले ॥

२

रावो काजी कजाक की कर शवे ।
मन सारा वेमोयां राझे कोलों
मेराजी इस खेडांदीवे ॥

३

दिलवरीयां नाल वे सजणा यारां मैंतो फन्दीया
वन्दीयां तेरीयांवे ।
और किसनू में जानदीभो नाहीं यावे तेरो
तो शरमा दीयावे ॥

४

आशुमानो यार प्रेम तेड़े घोलघती ।
तुझ विना मेनु कल न पड़ेंदी आधरती ॥

५

एमनु भदियां जटीयां भुंव कालीयांवे ।
घूंघर वाला सोणा मूरख बिचा वह झमक रहो
कानों वालीयांवे ॥
मीयां मेनू छाड़क्यों चलानुनो नाल तकदो
चो पकतोवे ।
बटपई खड़ चाकरी कर दे शोरो जाजा दावे
ताड़ा भलीवे ॥

सिन्धी भैरवी—ताल तिताला

मैंतो मर चुकी तेनु शोरो चक सानु क्यों
देदा जबाव ।
तूभी तो जानदे गुबा मियां मेरी उसदी प्रीति लगरही
तेनूकी होय शवाव ॥

भैरवी—धीमा तिताला

आदमी बन आया ढोला आदमी बन आयावे ।
हाविल काविल किसका बेटा आदम किसदा
जायावे ॥
वलिहरोमें जिसको जो ऊपरदा गोद खिलायावे ॥

२

तूक्यों रोदी यानी होरे राँज नोकर चाकर तेरे।
तन फूंकदा दुखदा गाहक शोरो चाव रहदी या
धीरे धीरे ॥

३

चाह करे बाको चाकरी कीजे।
नाहीं करे वाको नाम न लीजिये ॥
आचपेको चाहे ताको आपह्न चाहिये।
आपह्न न चाहे ताकों आपहन चाहिये ॥

४

भैरवो प्यारे भोरहो गाई श्यामसुन्दर ले वंशी बजाई।
सप्तस्वर ताल तीन ग्रामले मधुर मधुर धैवत
गहह लाई ॥

५

ओमेनु रेदी नेड़ी आशा तेंड़ो ओमाहोड़ा
ठग बजारदा।
गुमानोडा तुसी शोरी दिलवर अजब सोरदा ॥

६

लिया एव सन्त तुम मुराक दीजँग प्यारो निजाम
दीन औलीया महबूद यार यासाँई।
जद वेली चढ़ी चदरवासों सदा रङ्गीले अम्बुवा
वौराई ॥

यारो दम अदम बिच आया जद आदम नाम धराया।
आतेहो जग बिच नाम धराया सुख दुख दो फल
पाया ॥
गठरी बांध बोझ रख शिर पर दुनियादार कहाया।
दुनियादारी लागो प्यारी भारो बोझ उठाया।
गठरी फेंक बोझ दे शिरते जहाँ के तहाँ समाया ॥

८

मातें नैना वालियाँ वेमियाँ नैना लड़ादे लड़भिड़
जादे गमजाँ।
शोरो तूँभो नोरतो समझ मियाँ को इद्दयाँ उनानु
विरमातें ॥

९

वालिनो जटोवे तेंड़ो वालियाँ थो जिंद वालियाँ
वालियावे।
मुखड़ा तेंड़ा वेवाग वहारोनोवे सन्दल भोनो ताँड़ी
पटोवे ताँड़ी वालो ॥

१०

समझ मियाँ वे दिलवर सोणा हाँवे इश्क दिया
हाँ हाँ रमझा।
शोरी रमझ नजारे वालां मैंभो मुश्ताक उठदिया
हाँ हाँ रमझा ॥

११

अणो मेंड़ा नाज करेंदा नाजुक नाज मियाँ झम् झम्।
सुरख पेच तुर्रा जरीदा शोरी मुख वदेदा
झमकडेदा झम झमोदा झम् झम् ॥

१२

जानें वाला वेसोनावे मेराभो साथ निभाहोये मेनु
भी ले चल नाल सोणावे।
तुझ जेहा मानु कोई नहीं अपना मेंड़ा सोणा
किसनु सुनावें साड़ा हाल सोणावे ॥

१३

तूं आपो नाहीं मिलदा वे भूल गई सुध साड़ड़ो
सजना।
अखड़ोयाँ सानु मिलादेमो नाहों या आपो सरमां
दियाँ ॥

भैरवी—जङ्गला

पालना गढ़ देरे बढ़ैया।
अगर चन्दन को पलनो बनाऊँ झूलत कृष्ण कन्हैया ॥
मोतियन को पलनो बन्यो है सुन्दर रतन जड़ैया।
सूरदास प्रभु पलना झूले यशुमत लेत बलैया ॥

२

मेरा राज बंशी वाला वे काहे को प्रीत लगाई।
प्रीत लगाय चले मधुवन को छांड़त लाज न आई ॥
दौलत छोड़ी दुनियां छोड़ी छोड़दी पत सांई ॥

भैरवी—धीमा तिताला

पार करिवे बेड़ा पार करिवे बेड़ाभो औगुण
गारों दावे।
सांवत साँई तेड़ी आस पूजामि वांह गड़ेको लाज
करिवे ॥

भैरवी—तिताला

यार खड़ावो दिलदार खड़ावो सूरतदा मतवाला
खड़ाहो।
तैंसेरा प्यारा दिलदा महरम तैंड़े मिलननु
मुश्ताक खड़ावो ॥

भैरवी—जलद तिताला

लैली लैली करदा फिरे मजनू आपो लैली होरहा।
आपो लैली आपो मजन आपो लैलोदो चेरियां
होरहा ॥

२

मेरे पासरी पिया न आएरि।
क्यारे करूँ कछू वस नहीं आवे निकसत नहीं
जिय साँसरे ॥

३

सइयां रमझां लाइयां वे मैनु मेरा महरम यार
सिपाई।
रैन देहा मानु ध्यान तुसाड़ा आसरा लगाहै
तुझ ताँई ॥

४

मैंतो कमलिनो हुइयां साड़ो मैंड़ा हाकिम हुइयां
माँड़ो को तकसोर।
अम्माभो मारे बारो वाबूल झड़के मियां वोरन
दे दासानू धोर ॥

५

मैंतो तेनु आँख बिरहदो राझनावे।
ढूंढ़दो फिरेदो वारोवे मिलदा भो नाहीं मेरा
सोणा सदके कोतो जिन्द मेरोवे ॥

६

तोड़न कों कलियाँरे चलो धन हमरो बारोरे
हमारो बारो।
नेह लगा तैंड़ा घूम घुमेरा धुरपटने दो सारो।
अनवट गढ़ादे विछुवा मँगादे पाँयलको झनकारो ॥

७

फुलवगियां मैं कौन गुण जाऊंरे।
वेला चमेली का मैं बंगला लगाऊं चुन चुन
कलियां बनाऊंरे ॥

८

नैना वाले मेवा मैनू वस कोतानि।
शोरोदा दिल वे घायल कोता इश्क लगाय
मन लोतानि ॥

९

आवोरे मोरे सइयां डोलियां ले आव।
चोक पुराऊं मङ्गल गाओं पिया मिलनकों चाव ॥

१०

एसी ताल वसोणा दोदारदो।
जिन गलां थे वारी चुपके सोथों असो चाकर
ताँड़े प्यारदो ॥

११

जानो यार गवरू न जारे।
चुभ गइयां साड़े दिल बिच सूरत जोवन जातहै रख
आवरू भला न जारे ॥

१२

दिलनु कैसे समझावे जानो यार।
नेह लगा वारी वे नजर न आँदा मेरा मियां महरम
तुसाडड़ो न पाई मैंड़ा यार ॥

१३

छोड़ चलावे करके बदनामो।
चोरो चोरो आँदा बारो छिप छिप रहदा नाहक
नेहड़ा लगामो ॥

१४

रूसे कन्हैया कों मनावोरे ग्वालिन मगरूरो।
रूसे कन्हैया जूड़ो कदम को छइयां मुरली बजाय
मन मोहोरो ॥

१५

वे मैंड़ी दिल भर देंदा कभीतो दाद ।
मौला मेरा काजभी होसी पकड़ करौं फिरीयाद ॥

१६

सोणा चीरे वाली यानी वो मियाँ ।
औतुँ को गल करि नाल सदारङ्ग दे हालनु मैंनु
हँस हँस मुख वेखला मियाँ ॥

१७

रव फकीरों दी एही गुजरानवे ।
भली बुरी शिर ऊपर झलदे शोरी गरीबोंदा मानवे ॥

१८

सोणा वेमियाँ कीहुदयाँ साड़े हालदी तदवीर ।
दुश्कों जाल वारी वे कीकर छूटदा हाल नहीं
तदवीर तकदीर ॥

१९

रांझा वेमे तैंड़े सदके कीतो वो गुमानीड़ा
मेंनू न विसारणा ।
निगे मरके निभाई छैला राझण वाले हो लगदे
तीर जिगर विच भी मारणा ॥

२०

के वरजोर लगा नैंनोदा ।
उठ दियाँ हुका वारीवे कूंकों नैना वाले वस नहीं
चलदा दिल भर यारदा ॥

२१

चीरा चँपेदा वो जालम जो शिर तेरे चीरा
बंधवाया आया ।
पचरङ्ग शिर चीरा सोहै बिच रङ्गीवो दुशाला
एक रङ्ग लख पटका सोहै लाल खड़ा मतवाला ।
कांनुदा बून्दावाला मोतियांदी माला इस बनरी
मन भाया ॥

२२

पिया बोलो नाहीं सोवत निदियाँ जगाई अटरिया ।
मगरी रैन मोहै तलफत बीती मरहूं खाय कटरिया ॥

२३

दाग दिलों विच दे गयो जानी ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे वेला भी ढूंढ़ा मेरा मियाँ ढूंढ़त
ढूंढ़त मईहौं दिवानी ॥

२४

तेरे जोवना नें धूम मचाई ।
उमगे जोवन सावन भादों नदिया जोर बहाई ॥

२५

कहा करूं मोरी आली नहीं पाए वनमाली ।
कुञ्ज कुञ्ज वन विथन डोलत ढूंढ़त भइहौं विहाली ॥

२६

राँझनु मनावन चलिया हीर अकेलड़ी ।
मनदी मुराद पुजावोनि साँई मेड़े रव्वा जिथे
राझण तिथे होवे साडि मेलड़ी ॥

२७

नैना अन्ता लगाय कहो वोर आइरे ।
सालू सरस कसूमी अँगिया शिर को गागर
कहीं तोड़ आईरे ॥

२८

एमैं कैसेके मनाऊं अपने बालमको वोतो रूसोई
जाय वो रूसोई जाए ।
वालि वेश भोलाइ शोकरङ्ग जों जों सुलझाऊं
त्योंत्यों उलझोई जाए ॥

२९

हाँवे दिलवर मैंडडी गलो कर फेरावे ।
हाल दिलोदाँ वारी किसनू सुनावों मैंड़ा मियाँ
चुप रहदे लाचार मलावे ॥

३०

गागरिया चटकाई राम सइयाँ मोरोरे ।
कहत लैलो मजनु को कसम नहीं खाने को बहोयाँ
पकर झकझोरी सइयाँ मोरी मैं ठाड़ो करत
निहोरोरे ॥

३१

मारूजीसे कहियो मेरो जैश्री जैश्री कृष्णा ।
थारे विना माने काँईन सूझे थांके मिलनरी
हो कृष्णा ॥

३२

कैसेके समझाऊं अपने सांवल कों ज्यो ज्यों बोलाऊँ
त्यों त्यों रूसोई जाय ।
रसिक रङ्ग पिया मनके भवनवा उन विन जिय
तरसाय ॥

३३

पनिया भरन कैसें जाऊं मोरे रामा सिरते उतार
लीनो गगरिया मोरी ।
बाट घाट मोहे रोकत टोकत काहूको न मानु
मैंतो होउँगी तोरी ॥

३४

जानी मेरावे महबूबाँदो गल मानले ।
मुखड़ा तेड़ा वारी बाग बहारां शुभ रङ्गनु
तू पहचानले ॥

३५

देगयो मोहे सैनमें गारी वसकी रसोली पीत की प्यारी ।
लुक छुपके वोतो दौरोही आवे सुनो सखियाँ
यह विनती हमारी ॥
सगरे व्रज में है वोमोहन शोक रङ्ग देखा
चतुर खिलारी ॥

३६

मोहनावे आमिल मेडड़े नाल ।
ताँड़े कारण जिन्द तपदी रहदी इश्क तुसाड़ा पाल ॥

३७

दिवानी रहदी जादूड़ा जालमजोर ।
किस रसियालि ने जादूड़ा कीता राझण
हिरदी ओर ॥

३८

पीया कों देहो मिलाय आनन्दो माई ।
तैनु भी ध्यावे वारी जम्बुदे राजा दिन दिन जोत
सवाई ॥

३९

हँस हँस मुख ताँड़ा भला मैनु लगदा
महबूबाँदो गलाँ मान ले जानी मेरा ।
मुखड़ा ताँड़ा वारीवे बाग बहारांदा मियाँ पचरङ्गनु
तूं पहचानले जानी मेरा ॥

४०

सोनावे मियाँ की हंदयाँ साड़े दिलांदी तदवीर ।
इश्कदी फाँदा वारीरे छुटदा नाहीं मेरा मियाँ हाल
नहीं तावीर ॥

४१

जान वन्दिदा राँझा भलावे मैनु ।
हिरनी मानोनू आमिल खेंडेनू ॥

४२

तू अचरा सम्भालरी सालूवाली ।
बड़ी बड़ी अखियाँ कजरा सोहै घूंघट में मुसकानी ॥
चलो पनघटवारी है कोई राम दिवानी ।
आगे चली जैसे मङ्गल हाथी बीचमें मस्तानी ॥

४३

अच्छो नोको कजरा देके का जियरा मार डरिहो ।
बड़ो बड़ो अँखियन कजरा सोहै तीखो चितवन
मोहे मार डरिहो ॥

४४

राम नजर लगी मैं चलत रहीली मगवा ।
सारीरे मसक गई वहियांरे लचक गई छूट परे मोरी
अङ्गुठिया को नगवा ॥

४५

प्यारी प्यारी बतियाँ करके जीयरा लोभाय लीनो ।
लाख कही पिया एकन मानी सनमुख होके बुलाय
लीनो ॥

४६

मौलासे मैं मङ्गदी रहदी अमानवे ।
भला जान वाले तोरे शरमदी अमानवे ॥
दूर गया वारी वेख वरन लीतो मौला मिलावे आनवे ॥

४७

बड़ी बड़ी अंखियन कजरा दोनों घूंघट में
मुसक्यातरी ।
गोरे मुखपर बिंदिया सोहै घूंघट में लजातरी ॥

४८

मस्तानु कोई पूंछे वे यार जिसनु इश्क तिसनू
कतण केहा ।
घायल मायल फिरे दिवानो नैन साँइदे नालर
तेरे लया इश्क छूटी मसलत विसर गइयां पंजे सेतें
जिनानु इश्क तिनानू कतण केहा ॥

भैरवी—खेमटा

वंशी सुनतेही अङ्गवा में लग गईरे मोकों सुनायदे
वंशीरे ।
वंशी सुनाय मुख दिखलादे वृन्दावन दीरो में गईरे ॥

भैरवी—एकताला

तुम आए मेरे बालम रैन कहीं जागी ।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो भोर भए गर लागी ॥

२

कैसी बाजो वंशी यमुना तीर ।
मुरली को धुन सुन भईहों बावरी सुध बुध गई है
शरीर ॥

भैरवी—जलद तिताला

अङ्गनैया मोरो मसक गई राज ।
इस अङ्गिया में लाल लगोहै छुवो न लगावो हाथ
व्रजराज ॥

२

सङ्ग सोवे मोरो बलायरे बलम तोरे ।
ऊंचो अटरिया चन्दन किवरिया देखत जिय
घबरायरे ॥

३

पिया मोरे भवना ले आएरे ।
चार कहार मिल डोलिया ले आए आए बरात
ले गएरे ॥

४

कन्हैया मोरे यमुनामें कूद परे ।
कूद पताल काली नाग नाथ्यो फण पर नृत्य करे ॥

५

कन्हैया तोरी मुरली बाजोरे ।
साँवली सूरत देख सखो मन भए राजोरे ॥
जहाँघना तुम युग युग जीवो रैयत राजोरे ॥

६

व्याहन आया मा लाडलो बनोका बन्ना ।
मुसकना शिर सेहरा विराजे हीरा लगे मोती पन्ना ॥

७

सोना मैदरदो यारवे मानु तो रहदा तेंड़ा प्यारवे ।
तुझ विन शोरो मैनु कल नहीं पड़दो साड़ो लेंदा
क्योंनहीं सारवे ॥

भैरवी—तिताला

यारदा गम खा खा केवे कोतावे कलेजा फाड़दा ।
सदारङ्गदो गलां कोई नहीं जानदा चेरी दे नाल
गुजारदां ॥

भैरवी—जयतश्री

जब तुम हमते एक स्वरूप ।
हमारा तुमरा एकही रूप ॥
जब आया काया में साँसा ।
तुम भए ठाकुर हम भए दासा ॥

भैरवी—जलद तिताला

कहत प्रहलाद पिता सों मेरे तो आधार नाम ।
अगड़ बगड़ पांड़े कहा पढ़ावे हमतो पढ़व
राम नाम ॥
विन हरिभजन मुक्ति कहो कैसे जगजीवन विश्राम ।
पढ़त पढ़ावत पण्डित थाक्यो कहों नृपत सों जाय ॥
ब खड़कन को पढ़वो भुलानो ताल मिरदङ्ग बजाय ।
इतना बचन सुना ज्यों असुरपति बांध्यो खम्भ
सों लाय ॥
खड़ग निकास ठाड़ भयो ऊपर कहां हरि तेरा सहाय
आधार पिता मुझे नहीं तोकों जल थल व्यापत राम।

मोमें तोमें खड्ग खम्भ में कोकर सके संग्राम ॥
नरसिंहरूप धस्यो हरि जबहीं निकस्यो खम्भा फार।
हिरणाकुशको उदर विदार सूरदास कों उबार ॥

२

मद मतवारो पिय जागें न जगायरे।
पड़यां परतहूं विनती करत हूं जागत नहीं सइयां
मोरे जगायरे।
सोवत है सुख नींदन आवे मोहन मरवां लगाय
मोरा जिय तरसायरे ॥

३

मोरी प्रीत की रीत न जानीरे।
मगरो रयन मोहै तलफत बीतो सइयां निदरद
पहचानीरे ॥

४

सुध सारी मोरी सइयां विसराय डारीरे।
उनसों मेरा नैन लगत है चरणको में लेहों
वलिहारीरे ॥

५

कैसेन प्रीति लगाई मेरा सब ठौर पियारा।
प्रीत तें संसार बनोहै प्रीत छांड़ कहां जाई नहीं
वासों कुटकारा ॥
विरह अगिनमें जरतहूं निशदिन वाहीने चिननो
लगाई जो दिन दिन हो अङ्गारा।
साहब आप बचो नहीं प्रीतसों और कैसेंक
बचाइ रहे कोउ कैसे न्यारा ॥
आदिअन्त सब प्रीत से बांधो फन्द यह कसे छुटाई
अरे मारारे मारा।
प्रीति लगाय मुख मूंदे कायम पीऊ जो करत
निठुराई मेरो करो सहारा ॥

६

धोका धोको जनम जात मत जाग कहां रहा
सोईरे।
चार दिना का जीवन जगमें अमर भया नहीं कोईरे ॥
अपने अपने सब स्वारथके मात पिता सुत जोईरे।
सोते इनको सङ्गत करके वृथा अवस्था खोईरे ॥
यह सुखहै सपने की सम्पति छिनमें जात
विछोईरे।
तासों अबही चेत बावरे डार हिये मिल धोईरे ॥
गुरु कृपा कर तोहे बतायो राखो न कुछ गोईरे।
छबि नायक हरिनाम भजे विन मुक्त कहूं नहीं
होईरे ॥

कजरवा देके हम पछितानो।
पिय विन कौन सिङ्गार कजरा को जब हम
मोचद्द ठानो ॥
एक दिन अँखियां मोरी खजुवारी औषधि जावके
कजरा दीना तिहूंपै, सास रिसानी।
करिए ते डरीये क्योंकर भरिए जीयहि जियमें
मानी।
कायम पियाकों अपने मैं पाऊं मेरे गुण औगुण
जानी ॥

बैठ रहूं तो रहे ठिग बैठो जो कहूं जाऊं तो
आगेही धावे।
सोय रहूं सपने में सतावे चोंक उठो हंस कंठ लगावे ॥
मौन रहूं तो रहै घट भीतर बोल उठो उर माह
समावे।
सङ्ग मुरारि रहे निशिवासर हाथ पसारूं तो हाथन
आवे ॥

९

मेरो मन लागो राधारमण सों।
जगमें और कछ न सोहावे छोड़ी प्रीति सखी और
सबन्सों ॥
तन मन धन अरपन सब कीनों नेह लगायो
सुन्दरश्यामसों।
घरी घरी पल छिन निशदिन रस रटना राधाकृष्ण
कहोंमें प्रभसों ॥

वह वृन्दावन वह वंशीवट वह यमुनातट कुञ्जन वनसों।
वह गिरि गोवर्द्धन तरहटी मानसीगङ्गा
राधाकुण्डनसों ॥
वह नन्दगाँव वह बरसानो चरणपहाड़ी वह
महावनसों ।
वह गोकुलहै धाम हमारो वल्लभ रङ्ग रङ्गो
मैं रङ्गनसों ॥

भैरवी—ठुमरी

परवत बांस मंगाव मोरे बाबुल नीका मेड़ा
छबाबोरी।
सोना दीना रूपा दीना बाबुल दिल दरियावरी ॥
हाथी दीना घोड़ा दीना दीना बहोत मन चावरी।
डोलीया फन्दाय पिया ले चलेहैं तब सङ्ग कोई नहीं
आवरी ॥
गुड़िया खिलौंना ताक मेँ रह गए नहीं खेलन
को दावरी।
निजामदीन औलीया बहियां पकर चले धरिहों
नीके पावरी ॥

भैरवी—जलद तिताला

मेरो मनडो लगो हरिचरणनसों सखी अब
मोपे रह्यो नहीं जायरी।
निशवासर मोहे कलन परत है विन दरसन
तरसायरी ॥

२

मेरो लगन लगी प्रीतमसों सजनी यह दुख
कासो मैं जाय कहों।
निश दिन मोकों कलन परत है विन देखे पीयाके
मैं कैसे रहों॥

३

तन मन धन मोहन पे वारों मोहेकों उन विन कछून
सोहातरे।
घरी घरी पल पल छिन छिन निश दिन युग सम
सखी मोहे जातरे ॥

कुण्डल चमक चटक भृकुटी मटक अति मुकटलट
अटकी दृग पीत पट वंशीवट कट निकट यमुना
तट मधुर मुरली सुर सुहातरे।
श्रवण सुनत सुर नर पशु पंछी मोहे यमुनानीर
उलट बहत भए ऐसी वंशी बजातरे।
रागरङ्ग सुधङ्ग अङ्ग सों बजत सुर सम्पूरण गत मत
सों रागसागर प्रभु आन मिलो हरि तुम विन जुग
नहीं भातरे ॥

४

तुम जागो मोरे बालम रयनीया बीती जातरे।
भोर भए नैहर को जाना कुटिहै मोरा साथरे ॥
करो चैनको रतियां बतियां मिलेन ऐसी घातरे।
अवसर बीते मिलन न बनीहै हो जइहै परभातरे ॥
कहत कबीर राम सुमरन करो नातो फिर पछतातरे॥

५

बंसिया काहे को बजाई सोवत जगाई मोरी नींद
गंवाई।
चोंक उठी घरसों चली जब उमगे दोउ नैन ॥
कुंज कुंज पूंछत सखी कौन बजावत वैन।
कोऊ तो देहो बताई ॥
वंशी हो गंसी लगी बेधन कियो शरीर।
नन्दमहर को लाड़लो हरि हमारो पीर ॥
यह दुख सह्यो न जाई ॥
एक कहै सुनरी सखी खोटी जात अहीर ॥
कहबे को मनमोहना हैगो बडो वे पीर।
घर घर करे छल छाई ॥
मोर मुकट शिर पर धरे गल डाले वनमाल।
त्रिभङ्गी जादू भरो देखत रूप विशाल ॥
ढूंढे हूं नहीं पाई ॥
कित जाऊं पाऊं श्याम को दीजे मोहे बताय।
दास नारायण चरण तर रहूं सदा लपटाय ॥
अबतो दरस देखाई ॥

६

चढ़ियावे लाडल बनरा संदल भीनी रात।
वाँकोई थारो कमर कटारो वाँकोई तेरो साथ।
शिर सोहै जरकसी चीरा सज कमानी हाथ॥
मोहन बनरा बन ठन आया कोटिक काम लजात।
श्यामा श्याम दोउ छवि ऊपर राग रङ्ग वलिजात॥

७

सखीरो आज वंशी बाजो है वनमें।
सुन धुन विरह भई तन मनमें॥
नाजाऊं कछू जादू कियो है।
मेरो मन सखीरो हरि जो लियो है॥
तान बान कस बेंधो हियो है।
सरवस आली मैं जो दियोहै॥
मुकट लटक पीताम्बर कटितट।
भौंहैं मटक ठाड़े वंशीवट नट॥
वृन्दावन कुञ्जन वनवारो।
छवि निरखत राग रङ्ग वलिहारो॥

८

छैल छवीला रङ्ग रङ्गीला श्यामसुन्दर है गातरी।
पाँच वरषके मनमोहनवा ढीट लङ्गरवा मनके भवनवा
सुन्दर चतुर सुघर नन्दनन्दन बोलत मधुरी बातरी॥
रुन झुन रुन झुन पैजनी बाजत पग नूपुर अतिही
धुन छाजत ठुमक ठुमक पग धरत धरणी पर
नन्द यशोदा मन भातरी।
बाललीला व्रज केलि विहारन सुर नर मुनि वस भए
निहारन परब्रह्म शिशुरूप निरख छवि रागसागर
वलि जातरी॥

विरहको तान सुनाइयो नहीं वंशी बजाइयो
नहीं गाइयो नहीं मेरे मनको लोभाइयो॥
वंशी को धुन सुन भई हौं बावरी बोलत धुन सखी
कहै आवरो विरहको जरोको जराइयो॥

वृन्दावन को विथनमें चल करारी वंशी सुनी
मनमोहन को सुन्दरश्याम कमलदलनैना वंशी
अधर धरी मुख वैना इन्द्रवधू सब वस करी
विसराइयो॥

१०

मोपे यह दुख सहिलो नजाय वेदरदी।
इश्कदे कारण मैंतो मरदी कर आए सैल बंगाल
मुलक पर शुक रङ्ग आशक गरजी॥

११

भोर भइल आइल मोर प्यारे कित जागल सब
रतीयाँरे।
मई कई अवध बद कतउ विलम रहे बोलल झूंठी
बतीयाँरे॥
अधरण अंजन भाल महावर उर नख दीहल
क्षतीयाँरे।
डगमग ते पग धरत धरणि पर हमसों करत हो
घतीयाँरे॥
वहीं जावो तहाँ रैन जगैहो जिन सिखलाई
मतीयाँरे।
राग रङ्ग तुम भूल परेहो कैहाँ सीखे यह
लतीयाँरे॥

१२

सुन्दरश्याम कमलदलनैनन सैनन वैनन मोहीरो।
छिन छिन घरी घरी पल पल निशदिन मनमोहनवा
ढीट लङ्गरवा चतुर सुघर लङ्गर वनवारी नटनागर
गुणआगर सागर जित देखो तित वोहीरो।
बंसरी बजाय रिझाय धायके गाय गाय व्रजवनिता
सबही हँस हँस कर वस कर नन्दनन्दन निरख
निरख छवि जोहीरो॥

१३

भोर भए उठ जाग मेरे प्यारे कहाँ नींदमें सोएरे।
सबही वयस अकारथ खोई महा मोह में मोहेरे॥
जैसी करणी वैसी भरणी दर्पण ले मुख जोहेरे।

बार बार अवसर नहीं पैहे वृथा उमर क्यों खोएरे ॥
हरिसङ्गत हरिसुमरण कीजे दया दीनता सब मोहेरे।
हरि भज लीजे विलम न कीजे हरि विन जगमें
कोहेरे ॥

१४

मैंतो रहो अटरीया निरखतरो वनवारो गिरधारी
के आवनको ।
हरि विन कछू मोहे कलन परत है घरी घरी पल पल
छिन छिन निश दिन जबते भनक सुनी मनभावनकी ॥

१५

वनवारी गिरिधारी मोहन मनडा लिए जातरी ।
एसो मन्त्र पढ़ो वंशीमें छिन पल जुगन सोहातरो ॥
मनमोहनवा श्यामसुन्दरवा रागरङ्ग वलिजातरी ॥

भैरवी—जयतश्री

सुनहो बात मोरी सखोय सहेलरी ।
पियाके देश मैंतो चलीहूं अकेलरो ॥
को जाने मिलना कब होई ।
यह नैहरवा मेरा दिन दोई ॥
पियाले डोलीया दुआरवा में आए ।
बाजन बहोविध सकल बजाए ॥
बाबुल विदा करो मोहे वेगो ।
हारेको चार करे सब नेगो ॥
सइयाँ का देश बहुत नगिचाना ।
अब छुटा नैहर हम जाना ॥
कागत होहो मोरी ससुरारो ।
ज्यो पूछे कुछ बुध विहारो ॥

२

यहरे यौवनवा मोरा दिन दशरे कहारे करूं
कुछ नहीं मोरा वसरे ।
चोलीया मैली चुनरीया पुरानो का ले जइहूं सखी
अब ससुरे ॥
पिया ले डोलीया गवनवा कों आए सङ्ग लिए नेगो
सरवसरे ।
वुधविहारो मैं चेरो तुम्हारो औगुण हारीकों
अबके वकसरे ॥

३

झाँझरी मोरो नैया पार करो ।
गुण नहीं एक औगुण बहोतेरो छोटो नइया बड़
भार भरो ॥
विना दीए कोऊ पारन जैहो खेवनवारे कों
याद करो ।
गावे गुदर मेरो नाव तेरे कर आपन जान
निभाव करो ॥

४

अलवेला वे छैला नन्दके गुमानो तेरो बात मेरे
मन मानो ।
तुंही जोवनधन तुंही तन मन तुंही रोम रोम
रह्यौरे जानो ।
अलवेलो का जोयरा मानेना आन मिलो अलवेला
मेरा जानो तुंहो जोवनधन हो प्राणो ॥

५

मनरे यहां नहीं कछू तेरा योंही कहत मेरा मेरा ।
किसको मढ़ो और किसका मण्डप झूंठा
जगत बखेड़ा ॥
कौन कौन यहां आयके वस गए वहोर न कोनो फेरा ॥
धन माया सपनें को सम्पति तापर गरब घनेरा ।
कोउन राखे घरो एक घरमें जब आवे अंत बेरा ॥
शाहपना कहै यह वाणी ज्यों बूझे प्रभु केरा ।
जो बूझा सो पार उतर गया चढ़ सतगुरु केबेरा ॥

६

दारु लगोरे करेजवा अरेहो रसीयाको पकड़
मँगावोरे ।
महुवा की दारू लगी करेजवा अम्बुवाकी फांक
चुसावोरे ॥

७

आवो सइयाँ हमी तुमी मरे लागी ।
भोर कैसे होगा मिलनवा पी ॥

भैरवी—जल्द तिताला

मोरे बाबुल दीनो गवनवारे।
मैंतो चलीहूं सइयाँ के नगरवारे॥
मिललोरी मोरी सखोय सहेलरी फिरन होइ है मिलनवा।
नैहर में हम बयस गमाई सासुरे भएहै चलनवा॥
न्हाय धोयके वस्तर पहरे शीतल तिलक चन्दनवा।
चार कहार मिल डोलीया ले आए छिल मिल लगी रोवनवा॥
गुण औगुण मोमें एको नहीं कहा कहां पीय सनवा।
कहत कबीर सुनोरी दुलहिन पोय के धरले चरणवा॥

२

समझ बूझ के देखो गुइया मोतर यह को बोलताहै।
बलबल जाऊं अपने गुरुको जिन यह भेद बताया है॥
आदमीमें आए आप समाया जिन ढूंढ़ा तिन पायाहै।
कहै कबीर सुना गई धोखा कपट कों भेद खोलताहै॥

३

जब तक सोनेमें दमथा दागदिल जलता रहा।
बे चिराग यह घर हुआ मालिक जो था चलता रहा॥

४

चेत नामको अबहीं सबेरा है काई जगमें देखो तेरा॥
इधर उधर जीव काहे भटकावत कोई है जगमें देखो तेरा॥
हरख जी कों भूल न पोकों आनन्द होय काज मन केरा।
सुरत लगायके घटही में देखो दूर नहीं साँई निपटहै नेरा॥
कछू कहे न गए समझाव मोरे लाल जोवन हमसे विदा मागेरे।
काहाके हाथ लिखो में पाती काहाके हाथ सन्देशवारे
अब की बार मिलले मोरेप्यारे राखो सरम हमारोरे॥

५

नित नईरे नई प्रीत नई।
नई सखी नई कान्ह नई प्रीत भई॥

६

साँवरे हाथ बिकानी सइयों मैंतो भईहौं दिवानी।
मेरे मन बसो सोहनो सूरत लोग कहैं बौरानो॥

७

वालनो अलवेलो ने कीनो विहाल अरी।
झांकीको झकाई देखेगो याके मनमें लग गई विरहा को भाल अरी॥

८

मैंतो राह कों भूलोहों सइयां।
इस नगरी को सगरो गलोन में कैसोहै भूल भूलैयां॥
इधर उधर जो मत भटकावे पो नमिल गलबहोयां।
बाह गहेका लाजतो कोजो हादो परे तोरे पइयाँ॥

९

सइयां बोली तो बोलो ननदोया क्यां बोले।
अपने नैहरको मैं कहा कहों सजनी बाबुल मोतीयन तोले॥

१०

राम दिनबा चारो महीकों जानदे नैहरबा।
सासूजीके पूतबा ननदजूके बिरना जुदा सुत चोलीयाँ भींजे रैनपसोनबा॥

११

बारे करेजवा को विरहा सतावेरे।
कासे कहूं मोरा जो तरसतहै यासों बेदरदीको कोऊ जाके लावेरे॥

१२

राजदुलारा बनरा व्याहन आयारे।
यासों बना मेरा जोबन बारा वनरोके मन भायारे॥

१३

चलो मेला लगा है बगीया में ढूंढ़न जाँऊंरी।
यासों पोया बगीयामें मिले बरजोरो गरवा लगाऊंरी॥

१६

अनोए सइयोंने मोरी खबर न लीनीरे ।
उस विन मैंतो जरत मरत याह समय याद
नहीं कीनीरे ॥

१७

बिरहा चैन देतन मइकों आली जीय घबरावतहै ।
प्रीतकी जो कोऊ नाम लेतहै या समय पीया
याद आवतहै ॥

१८

बीरारे बटोइया सन्देशा लेता जाइयोरे ।
पूरव जाइयो पच्छिम जाइयो नैम धरममें रहियोरे ॥

१९

बिलखाय गयो गोरो को वदनवा राम गोरो
को छोजि जीवनवा ।
जालोकी कुड़ती बनात की नारी तापर
दमके निखुवा ॥

भैरवी—जयतश्री

जिन्डडीदे नाल वे करार वे मेरा मीयां ।
आँदा जांदा दम किसनु आखे जोरहदा
वे करार वे मेरा मीयां ॥

२

मोरी बारो निंदिया जगाय दईरे ।
एकतो निंदिया रसकी रसीली छतीयां सइयां ने
लगाय लईरे ॥

भैरवी—जलद तिताला

तोरे आगे मोरी अखियां लगाई जानी ।
छोटे देवरा मोरे गोदीके खिलैया अङ्गना में
बालम फिर फिर जाय जानी ॥

भैरवी—जयतश्री

गोरो जायरो वदनवा समेटेरी ।
गोरे वदन की छविहै निराली घूंघट में मुख फेरेरी ॥

भैरवी—जलद तिताला

जानी तोरे रङ्गमें मैं मातोरे ।
बांह पकर पोया ले चलेहो कोऊ नहीं सङ्ग साथीरे ॥

२

कीती वेपरवाही यावो मेरो जान भलावो नैना वाले ।
प्यासे नैना नजारे नू तरसदे शोरो मियां टुक
मुखड़ा वेखलाइयोरे ॥

३

म्हारो जैश्री जैश्री रामाले ।
रामा लेरे कृष्णालेरे वैकुण्ठे सुख धामादे ॥

४

जैश्री रामा जय श्रीकृष्णा सुन्दर मूरत श्यामारे ।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलीनमें मिल गए घनश्यामारे ।
रामाभो तारे कृष्णा मो तारे पायो अचल विश्रामारे ॥

५

गोपीनाथ प्यारे रजा तोरीरे ।
दरस दिखावो तपत बुझावो बिनती सुनो
प्रभु मोरीरे ॥

६

श्रीश्यामा प्यारी दे डारोने बंशी हमारीरे ।
इस बंशीमें मेरो प्राण बसतहै सो बंशी गई चोरीरे ॥

७

श्यामा श्यामा करदा फिरे कृष्णा आपही श्यामा
होरहा प्यारा ।
आपही श्यामा आपही कृष्णा आपही रिझावन
हारा न्यारा ॥

८

मोरी बैरन ननदीया जगाय गईरे ।
नींदको माती सोय रही झिझक उठी इठलाय गईरे ॥

९

अरज करो सोई सांने नाल साड़ो ।
निशि दिन तेनू में खड़ी उड़ो
का कर्म करी तो मेहांवो निहाल साड़ी ॥

१०

सइयांने मोकों गारी दीनी गोकुलमें रम रहिहों ।
राम दुहाई गङ्गाकी किरीया सइयांके पइयां
परी रहिहों ॥

दुखमें हरिकों सब भजे, सुखमें भजे न कोय।
सुखमें हरिकों भजे तो दुख काहेकों होय॥

११

पवन झर लागीरी गुइयाँ।
उमगत बदरा बरसत मेहा भींजे मेरी सारीरे दैया॥
खोलो पीया चन्दन किवड़ोयां बरोटबामें
ठाड़ीरे गुइयां।
चमकत बिजुरी बरसत मेहा अरे जान भींजेगी
मोरी सारीरे गुइयां॥

भैरवी—जयतश्री

गोरीया सिङ्गरवा करके सइयाँ कों विलमायोरे।
आज जान कों ढूंढन निकसी सोतनीया गरवा
लगायोरे॥

२

भोर भये तुम आए मनमोहन कहा बनावत बातरे।
बंदनमाल विराजत मुख पर सबही हो चिन्ह
लखातरे॥
विनगुण माल मरगजे वागे सोहत चन्द दुरातरे।
धोंधो के प्रभु वहांहा जाबो जहाँ जगे सारी रातरे॥

३

वेणी गून्थ कहा कोऊ जानें मेरीसी तेरी सों राधे।
बिच बिच सेत पीतराती सोहत फूल को करि सके
तिहारोसों राधे॥
बैठे रसिक सवांरन बारन कोमल कर ककईसों
राधे।
हरिदासके स्वामी श्यामा नख सिखलों गुंथनहीं
सोंराधे॥

४

मोर मुकटको लटकको चटक मन देख निपट
लोभाय गयो।
नन्दकिशोर और कँजनको नैनन सैन दुलाय गयो॥

५

मेरा राझाँ मियां न जामो परदेश।
मेरा मारु ढोला न जामो परदेश॥
राँझे दे कारण वे कमलिनी हुंइयाँ ढूंढ़ फिरी
चहुँदेश।
बाबुल भड़के वारी वीरन भाँदे छूटे लम्बड़े
साड़े केश॥

६

मेरा मारू ढोला कहीं गया परदेश।
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे वेला भी ढूंढ़ा मेरा मियां ढूंढ़
फिरी चहुँदेश॥

भैरवी—जलद तिताला

अरी मेरा प्यारा मिले तो मैं पँज तनकी वलजाऊं।
पँजतन पाकदुवाज दे नाँशाकों दोना चढ़ाऊँ॥

२

जान जान प्यारा क्योंकर आवे चैन।
रैंदे मीयाँ वेकल परे दिन रैन॥

३

नजर नहीं आँदा प्यारा मेराभी दिल रहदाँ वेकरारेरे।
बाबुल आधीन वारी वे याद बिच रहदे नित
रहदाँ तेरा ध्यानरे॥

४

एसी ताल व सोना दोदारदो।
जेन गलाँ थे वारी बे चुपकर आँदेवो मियाँ असी
चाकर तेंड़ो प्यारदो॥

५

वेसोणा मैतो तकदी रहदी राइयाँ।
दूर गया वारी बे खवर नलीतो वे मीयाँ मीला मिलावे
मेंड़ा साँइयां॥

६

आयोजी आज म्हारे डेरेवे।
ताँड़े कारण मेड़ो जोडड़ो तपेदो वस पइयाँ हुण
तेरेवे॥

७

तेरे कारण वारी बाग लगाया रे मीयाँ वेखो जाँनो
यार बे बाग बहारां।
बिच महबूबांदा बङ्गला वेखों जानो यारवे इश्क
कोताहै जहारां॥

८

रामा जोगोरा बना बन ठन मेरा ।
शीश गङ्गाधरे भभूत जटाधरे मौजूद पीया नेरा ॥

९

कोई आन मिलावोनी बंशी वाले श्याम पियारेनू ।
मन्द मुसक्यावन बाँकी चितवन सोहे सइयों
दरस दिलावोनी मेनू ॥

१०

माड़ो की तकसीर सोणा मेड़ा माहोड़ा ।
दिलदी दरद वारी वे कोई नहीं पूछदा असीकों
भूलामि साईंड़ा ॥

११

मेंड़ो जान सुजान सोजान बैन बजावरे ।
मैंतो थारी दासी तू मेंड़ा साहबा आज रहो
म्हारे डेरे काजरे ॥

१२

मेड़ो सइयां उसवे राँझन मेंड़े घर आयोनो ।
रांझणदी मै लेवों बलाइयां वे मनदो मुरादें
भर पायोनो ॥

१३

असो तेड़े मिलनेदी रहदीं मुश्ताक भला मैंड़ा
सांवला यार ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा आन मिलो साड़े यार ॥

१४

बांलीयां किन झमकाइयां मेरी यावे ।
कांनो विच करनफूल सोहै मेरा प्यारी चूड़ी
भरोवे कलाइयां ॥

१५

सजन बोले नाहो मेड़ो फरोयांदवे ।
सबसे छोड़ो लगी लड़ तेड़े ज्यों भावे त्यों पालवे ॥

१६

साँई तेड़ा भला करे बाँके नैना वालियाँ ।
नैनादी वरछी वारोवे भौंह कमान तिरछी
कर मुझे मारोयां ॥

१७

राँझा मेंनु प्यार करेदा मैं राँझादे लायक नाहियाँ ।
राँझा मेरा वारी मैं राझेदी रांझा मेड़ा प्यारियां ॥

१८

मेरा मियां जिन्दड़ीदे नाल वेकरार वे ।
जोद तो तेंड़े वस पई नाहक इश्क लगाकर
हुई बीमारवे ॥

१९

मैं तो भूलियां भी नाहोयां मेंड़ा राँझनानोवे ।
दूर गया वारो वे खवर न लीतो मीला मिलावे मेंड़ा
सांइयानो ॥

२०

बलखाय गयो गोरोका बदनवा राम गोरो
का छोजे जोवनवा ।
जाल को कुड़तो बनातको नारी तापर तोरे निम्बुवा ॥

२१

सोणा यार वेदरदी आमिलवे ।
जो तू तखत हजारेदा सोई हो रसोयां लेदोका
मिलवे ॥

२२

जाने वाले यार आमिल वो मेड़ो जान ।
जो तूजादे तोंड़े नाल जिन्द जादियां राझण
मेड़ा प्राण ॥

२३

बलमा तैने कैसो जगाई सारी रात ।
क्यारी करूँ कित जाऊँ सखोरी पलकन
लागो परभात ॥

२४

सांई मेड़ा राझा केतोक बसे दूर ।
आपन आवेना लिख भेजे आमिल मेड़ड़े हजूर ॥

२५

कोयल बोले सज रङ्ग बगोया मेरे ।
इस बगोया मै लाल लगेहैं देखनकों जोय लगोयारे ॥

२६

कोयल बोले अम्बुवा की डारी डारी।
तेरे कारण वे बाग लगाया सींचत माली
क्यारी क्यारी ॥

२७

अम्बुवा पर झूमर डारोरी।
डारी डारी कोयल कुहुके कुहुक लागी बाकी प्यारोरी ॥

२८

राँझनसों मैं लागी सजनो छोड़ा सकल जहानवे।
बाबुल वैन भई सब छोड़े जोडा राझन साथ
पहचानवे ॥

२९

तदरदानो दोम तनन तन दिरना नादरतूँ दरदिर
दिरदिरदिरतदारतददानो।
नादरद्रद्रतूं द्रद्रद्रधेतलाँ धुमकिटतक्धा ॥

३०

रात सइयां से न बोलो पछितानोरे।
सुनियोरी मेरी सखो सहेली सइयां मोरे
निपट अनारोरे ॥

३१

मोपे यह दुख सहो नहीं जायरे वेदरदी।
दुश्कदे कारण मैं तो मरदीवे ।
छड़िया शहर बङ्गाल मुल्क पकड़ गुजरात
एरो एरो दैया शोक रङ्ग आशक गर जोवे ॥

३२

साँवरेनुमें मिलने चलीयां तोथे नैना लगीवे।
सखो सहेलो हिल मिल चलियाँ हाथ चम्पेदो
कलीयांवे ॥

३३

रसिया वेदरदी मैं पनिया न जइहँरे।
घर मेरा दूर गगर शिर भारो यसुना को रेतो
मैं खड़ोरे लजैहँरे ॥

३४

सइयां रात तेरे गरे लागमें बड़ो चैनसों सोईरे।
उठो हाथ मल मल पछितानो नींद चैन सब खोईरे ॥

३५

युग युग जीवे मेरा सावलानो।
तेरो सूरतदो मैं बार बार गई तुझ विन मेरा
रावलानो ॥

३६

करवटोयाँ सइयाँ नैना लगाय जालम जोररे।
सगरो रयन मोहे तलफत बोती इतनें में
होगई भोररे ॥

३७

सइयाँ के आवनको भनक सुनो हमरहो डगरोया
ताकतरो ।
घरो घरो पल पल छिन कलन परत है निशदिन
मगमें झाँकतरो ॥

३८

सखो कहीं अगवा नचावत हथनो।
यामत जानो वालरूप व्रजसागर सिन्धु जिन
कियो मथनो ॥
खेलत गेंन्द गिरो यमुना में पैठ पताल कालो
नाग नथनो।
गए शिशुपाल हारि ग्रह अपनें लई चढ़ाय रूक्मिणो
मम रथनो ॥
अज महेश जाको ढूंढ़त थाक्यो भूल मत जावो
कियो एक कथनो।
गावें गूदर मत वालक जानो कंस मारे केश
गहे हथनो ॥

३९

रयनोया भईलो भोररे तुम आयोरे कन्हैया घरवा।
हमसोँ अवध वद अनत विलम रहे कवन तिया
मनहरवा ॥

४०

बाकें दरस कों जिय ललचावे।
मनमें रहें और नजर न आवे ॥
हाफिज अधीन वासों कैसे बन आवे।

बात सुनावे और गात छिपावे ॥

४१

हरिसों ध्यान लुलायारे बाबा ।
हरिमें हरिकी सुमरण करले जिन यह भेद बताया ॥
पाँच चोर तेरे सङ्ग लगाहै चोर चोर धन खाया ।
जो जागा सो माणिक पाया मूरख सोय गमाया ।
कहत कबीर सुनो माई साधो हरि सुमरण चित
लाया ॥

४२

काहे दियो दुख तैं मोरा होयरा ।
घरी पल छिन मोहे कलन परत है जान वारूँ
तोपे तन मन जोयरा ॥

४३

सइयां उमगी जोवन नहीं आएरे ।
मैं रात जान पोया सपने में देखे भोर होत नहीं
पाएरे ॥

४४

बिंदोया मोरी कन्हैया लोनो छीन ।
यमुनाके नीरे तीरे नन्दकोरो लाला ठाड़ो बजावे
वीण ॥

४५

दडुरोयाँ मोरी कन्हैया लोनो छीन ।
ग्वाल बाल सब सखा सहेली बनमें बजावत वीण ॥

४६

उन विन सजनी कैसे कटे दिन रतोयाँ ।
विरह वियोग मोसे सहो न जावे पोयाको सुनाओ
मोकों बतोयां ॥

भैरवी—खेमटा

सोते में नींद उचट गई रतोयां मैना जाने पो
किधर गयोरे ।
आपन आवे ना लिख भेजे पतोयां में कैसेक पढ़ूँ
सन्देशवारे ॥

२

करके नादान तेरी दोस्ती इन्तजारी में मेरी तो
जान गईरे ।
झाँकत निरखत सब निश बीती कवन नवल तोया
पिलमाय लईरे ॥

३

मोरे सइयां नें चकवा सों प्रीत करी अपनेसे
मुझको विगानी करी ।
जोमैं जानती शादी न करती ऐसी दोस्ती सोंमैं
जियसों जरी ॥

४

बनरे कों कहियो बुलाले मुझे क्या दिल से मुझको
भूल परे ।
उमगो जोवन अब रहत है नहीं मदन सतावे तेरे
पाँय जो परे ॥

भैरवी—ठुमरी

उन विन सजनी कैसे कटे दिन रतोयांरे ।
विरहा वियोग मोसे सहो नहीं जावे पोयाको
सुनावो मोकों बतोयांरे ॥

भैरवी—खेमटा

विरहाकी माती सताइयो नहो जराइयो नहो ।
सास मोरी गोदे ननद देती ताने बालसका जोयरा
जराइयो नहो ॥

२

चरखला ते मोरी नींद गवाई ।
सोने रूपेदा चरखा बनाती इश्क दे तार लगाई ॥
सगरी उमर मेरी चरखेनी कतियां साहब मान
बढ़ाई ।
शाह हुसेन फकीर रवाणा विन मसलत उठजाई ॥

भैरवी—जलद तिताला ।

बोरारे बटोइया सन्देश लेता जाइयोरे ।
पूरब जाइयो पच्छिम जाइयो नेक नजर सों आइयोरे ॥

२

दारु लगी करेजवा जानीवा कों पकर मगावोरे।
महुवा कोदारू कारो लगत है अम्बुवाको फांक
चखावोरे॥

३

मैना जानू सइयां कैसे नोका लागारी ।
रसिया सइयां मेरे मनही में बसदा सारो
रतियां छतियां गरवा मेरे लागारी॥

४

मेरो कैसे कटे दिन रतियां सइयां बिन मोकों
कलन परत।
वेग लेजावो कोऊ मेरो पतियां चञ्चल तोरे विन
कल नहीं परत॥

५

कहा करूँ कित जाऊँ मोरो दैयारो वारे करेजवा
निकसोई जावे।
हित करके में सुख नही पायो कौन घरीते प्रीतमें
कोनी चञ्चल मोरा दुखका दिवैया मोपे तो
कछू बन नहीं आवे॥

सिन्धु भैरवी—ताल छपका

मान करे नामाने मन मोरा वस कोनो बंसी वालेने।
एसी बजाई बंशी वादिन वाने मन हर लीनो कारी
कामर वालेने॥

भैरवी पहाड़ी—दादरा ताल तिताला

विसरत नाहीं यह बांको ओढ़न पटसाज मटकन
कटि लटकन लट।
झूमन झूलन झमक भूषण मुक्तन श्रवणन नैनन
कोलाज खटकन चट हट कनहट।
हेरनि मुख फेरनि टेरनि जन राम सखीन के सङ्के
काज झटकन पट सटकन झट॥

भैरवी—खेमटा

अलके विथुरी उतलानी लली।
देखो चली यह जात गली॥

वसनके सम लग जे सुधारत हरि कञ्चुको दली मली।
अरुणनयन जन राम निरख वह अरसानी छवि
लगी भली॥

भैरवी—सिन्धु काफी

उन विन कल नहीं एक घरी कहो कैसे बीते
दिनरात। सखी अब०।
वेग मिलनकी रीत सुधारो गिन गिन रैन विहात॥अब०
सपनेमें कहूँ देख परत मन भावन की यह गात।
कब ऐहै फिरि फिरि बात भाँत। सब उ०।
सुन्दर छवि चौंक परत जनराम झझक फेर बचन न
कहो जात॥ अरी तब उ०॥

२

नवल लली एक जातरी लचकत यह मगमें।
हेरनि हंसन वसन तें छिन छिन बन ठन छवि
दरसातरी॥
उझकन वह इठलात निरख जन राम कियोसो
घात मन फसनों डग मग में॥

राग खुम—ताल खेमटा

गोरे गोरे अमल कपोलन पर दूनी दुत अरुण
रेख सरसत।
लटपटात मुख वैन सग वगे नैनन में नई छवि
वरसत॥
कछु एक अधरन धरत ललन धरत कछु कछु
नई दरसत।
यह निरखत रूप जन राम ललीको अंचर
खोल पवन परसत॥

मूलतानी—खेमटा

दिन दिन नैनन और मनकी वान नई दरसत।
दोष उन्हे नाहीं विछुरनमें निश दिन नहीं टरत
मूरत तिहुँ असुअन जल वरषत॥
मन नित उत जन राम रहत जापे अति अकुलात
सो मिलवे को तरसत॥

विहारी—खेमटा

चञ्चल मन अटको यह चितवन द्रग कोरनमें ।
बन्ध कञ्चुको कसन फिर देखन मन उरझाय लियो
वह मसकन अङ्ग मोरनमें ॥
झझकन मुख फेरन मटकन हेरन लख जाय फसो
बरबस इन चित चोरनमें ।
श्रवणन लोल कपोलन पर डोलन निरखत जन राम
अधरन की औरनमें ॥

खम्माइची—खेमटा दादरा

गोरी तेरे गोरे गोरे मुख पर सोंधे सुगन्ध सनो
लट लटकत ।
मई सुघर समेंट झट पट अट पटो यह बात सखी
तोह नाहीं डर यारो देखत लालन मन अटकत ॥
जबतें देख लियो जन राम वो छवि निशदिन
छिन छिन गिन गिन कर तोरी गलीन में नित
नित भटकत ॥

देश—खेमटा

गोरी तेरो बान ठगोरो परो फिर फिर मुसिक्यात ।
बाट बटोही चलन नपावत अटक:रहों नहीं जात ॥
मान कही जन राम अरी अबहै यह घात ।
(इति रामसहाय कृत नवरत्नगीत) ॥

भैरवी—खेमटा

घड़ी हंसके बोले घड़ी होवें खफा एसे बेदरदीको
दोस्तो क्या ।
मेरो कही तु मानत नाहीं तेरे रूसे मेरा
होवेगा क्या ॥

२

इंतजारी में हाय मेरो जान गईरे करके नदान
तेरी दोस्ती में ।
आपतो सइयां सौतन सङ्ग सोवे मेरी गिनत तरैयां
विहान भईरे ॥

३

मोरे सइयांने चकवे किसी प्रीत किया अपने से
मुझको विगाना किया ।
जोमें जानती प्रीत न करती नाहक दिल जग्रो
मैंने दिया ॥

४

दरवजवा टटिया लागेला सइयां हमारे विदेश
गइला ।
बांकी डुमनिया कों कोज समझावे नैना सें नैना
मिलावेला ॥

५

मेरा दिल जग्रो थासों घबराना हुआ मैंसे जाना
जनीया जादू किया ।
जादू कियारे टोना कियारे चितवनमें मन जो हरके
लिया ॥

६

बंशी वालेनें मेरो मन हरलीनोंरे ले चलो
ब्रजके बङ्गलेमें ।
गोकुल ढूंढ़ वृन्दावन ढूंढ़ो ढूंढ़ फिरोहों जङ्गल में ॥

भैरवी—एकताला

भला वो बंशी वाला मुखड़ा तेंड़ा जोर ।
चन्द सूरज सों सदके कीत वारे काम करोर ॥
मन व्याकुल तन शिथल चलत नाहीं नैन तकत
वाही ओर ।
बुध विहारी मैं वलिहारी जलदी कीजे गोर ॥

२

यह कहियो जाय समधन से करे जोवनकी तैयारी ।
हम सब मिलकरके आवेंगे करें तेरी खातरदारी ॥

भैरवी—जलद तिताला

चमकता माथे पे बेना ।
बताती है हमें सेमा बने है क्या तेरे नैना ॥

३

भिरे हैं मस्त मतवारो ।
चलेहैं चाल ठुमकसे बजे:तेरे बिछुवे झाझन पड़े हैं,
चौंक सब साजनके सुन बिछुवन की झनकारी ॥

चमन में इश्क सामुसान होगा बागबां रसोया,
कैसें समधन किस्तो चुंगा हमेशां चाहसे क्यारो ॥

४

बंशीया काहेकों बजाईहै कान्ह,
बंशिया बजाय मन मोह लियो मेरो ।
बंशीया बजाय बजाय मधुर सुर वस कीनों
मेरो प्राण ॥
तेरी बंशिया असबस कीनों विसर गयो गुरु ज्ञान ॥
धर अङ्गनान सोहाई है कान्ह ॥१॥
तेरी बंशीया बाँसको हम व्रज युवती जीव ।
बंशिया में कछू जाद पढ़त हो साची कहो मेरे पीव ॥
अधर रहो रहत लगाई है सदा बंशी कान्ह ॥२॥
यह वंशिया बैरन भई वेधत सकल शरीर ।
भए वेदरदी कृष्ण सांवरो आखिर जात अहीर ॥
टेरत लेत बुलाई है मोहे कान्ह ॥३॥
याव्रजको बसबो अब छाड़े करें अवर पुरवास ।
बाँक वरस कहै राधा गोरी करो यहाँ तुम रास ॥
यह व्रज छैला छाई रहो है कान्ह ॥४॥

५

नैना काहेकों लगाया नैना लगाय परदेश चले ।
नैना लगाय चले दूर देशों सुनोजू श्याम सुजान ।
तुम विन देखे कलन परत है तलफतहै नित प्राण ॥
जोयरा काहे कों लगाया नैना ॥१॥
हँस निज अङ्ग कस गतले बाँको किया चलाकी पीव ।
अनी दार यह तनय पाय सिर फेंक वेध लियो जीव ॥
सैना काहे कों चलाया नैना ॥२॥
तव नहीं पीर भई कुछ हमको अब बड़ भयो कलेश ।
तुमे द्वार कों जान नैना कों छैला कौन दियो उपदेश ॥
विरहा हमको सताया० ॥३॥
बाँकवरस कहै राधा व्याकुल करत कृष्ण सों बात ।
लज्जित भई छिनमें अति गोरो श्याम वरण भयो गात ॥
एसी मुरली काहे को बजाई० ॥४॥

६

पतिया लिखन पठाईहै सइयाँ करी निठुराई सुरत
विसराई मोरो ।
विरह व्याकुल कीनो राधा कों रटत रहत नित पीव ।
पीय निरदइया खबर न लीनों तलफतहै मेरो जीव ॥
किन सौतन विलमाई मोरे सइयाँ करो० ॥१॥
मैं पतीयाँ लिखि हूँ सखो निरखत करे न मोरो बार ।
ले मसि भाजन लेखनी कर सुमिर विरह अनुसार ॥
विरहा मति बौराई मोरी० ॥२॥
पतीयां लपेट लई विन अङ्क को दियो जधवके हाथ ।
और सन्देशा सब लिखोहै यह न लिख्यो ज्यो साथ ॥
यह दुख कहियो जाई० ॥३॥
गयो उलङ्घ दीनो हरि हाथ नू यह दुख कहो
कर जोरी ।
तब तकी जानीन निज तिय हिय गति जान्यों लखो
पतीयाँ कोरो ॥
उठ चले कृष्ण कन्हाईहै सइयाँ क० ॥४॥
आए लाल ठाड़े भए राधा निज गृहद्वार ।
राधा तुम मम प्राण पियारी तुमहो प्राण आधार ॥
भुज भरि लियो है लगाई है क० ॥५॥
बाँक बरस कहै राधा श्याम दोउ करे एक सङ्ग रास ।
जो यह ध्यान करे लहै वृन्दावन बास ।
मुरली की धुनि व्रज छाईहै गुइयाँ क० ॥

७

वंशी में जादू डारे मेरा मोहना जन्त्र मन्त्र कर
मन वस कीनों ।
मधुर तान सुनाय वंशी में मोह लियो मेरा प्राण ।
आन ध्यान मनमें नहीं सजनी रटत रहो नित कान्ह ॥
कौन तन्त्र पढ़ दीनो मेरे मोहना ॥१॥
मन मतङ्ग माने नहीं मदनमस्त गम्भीर ।
दोहरो ते हरि चोहरो परो प्रेम जञ्जीर ॥
अङ्कुश देदे हारी मेरे मोहना ॥२॥
शुक ताल पटतर भयो हँसा कहूं नजाय ।

बांधि पिछली प्रीतके कङ्कर चुंग चुंग खाय ॥
इन मोतियन पर वारो मेरे मोहना ॥
मारीए मर जाइये छूट परे जञ्जाल ।
एसा मरना को भला दिन में सोसो बार ॥
मरनेकी गत न्यारी मेरे मोहना ॥३॥
भंवरा बैठे डाल पर कली कली रसले ।
कांटा लागा प्रेमका बार फेर जीयदे ॥
लग गई प्रेम कटारी मेरे मोहना ॥
प्रेम कटारी मारके रह्यो कबीरा सोय ।
मरने कोगत औरहै घायलकी गत और ॥
घायल कों पल भारी मेरे मोहना ॥

८

जाद काहेकों कियारे सांवरे मुरली बाले यार ।
जन्त्र मन्त्र जादू टोना कर कर वेधा तन मन हिया ।
सांवरी सूरत माधुरी मूरत सरवस में अब दिया ॥
वेग दरसदे पियारे सांवरे ॥
दया करो गुण मान दइके अब कोई बूझे पीर ।
दई बनाई सो मोहनी मूरत धरी जात नहीं धीर ॥
घाव लगी हृदय कारी सांवरे० ॥
घाव लगी कारे हिरदे में कौन सुनें दुख मोर ।
कहोतो कहो बनत नहीं मोसे चुप रहो बालम और ॥
अब मान ले दईके सँबारे० ॥
एक नजर दिखलावो मूरत हूं मैतो वलिहारी ।
नित सङ्ग रहो सजनी सुन्दर रूप निहारी ॥
मोकों विरह सतावे प्यारे सांवरे ॥

९

काहे कों प्रीत दुराईरे ऊधो प्रीत दुराय परदेश
गवन कीनों ।
अचल राज कुञ्जा को दीनों हमकों व्रज को बास ।
हम को जोग करन कों कुंजन कुञ्जा कों कैलाश ॥
कौन से मंत्र पढ़ाईरे ॥
यश अपयश दोऊ होतहै ऊधो कबहुंक
अवसर पाय ।
सोने कुय माटी भई हाथ कछु नहीं आय ॥
विधि से नाह बसाईरे ॥
कहे करे सो नीतहै सतवक्तन की बात ।
अचल मेरू ध्रुव नाटरे टरे न पुरुषकी साख ॥
सोई जग रहत बड़ाईरे ॥
एक वेर दया करहु गोकुल पर वंशी देहो बजाय ।
आस सुआस लगी गोपाल को इनकों देहो जिवाय ॥
तब व्रज बजत वधाईरे ॥
सोवत जागत ज्ञान ध्यानमें अब करहु हरि जोग ।
वे गुदर मेरी दीनता व्याकुल व्रज के लोग ॥
दरसन देहु दिखाईरे ऊधो प्रीत लगाय० ॥

१०

चेटक काहे कों कियारे सांवला जुलफाँ वाला यार ।
मानो लटको नागनीरे वास कीयो है शीश ।
ताछवि मेरे उर विच लहरे क्यों जीओ जगदीश ॥
अब मोरे जीयकों जियाबहुरे साँवला जुलफा० ।
जन्त्र मन्त्र एको नहीं लागे कर हारी सब जोग ।
ब्रह्मा इश्क छूटे नहींरे छूटे न करमके भोग ॥
मोरे मनकों चाहोरे सा० ।
जब सुध आवे तिरछी चितवन लहर देत तन गोत ।
लोग कहे व्रज कहा भयोरी अजब तमासा होत ॥
अब गुणीवैद बोलावो सां० ॥
एक सुभावको औषधि नाहीं जानत है सब कोय ।
छूटे न कबहूँ जनम मरीरे दाग विरह तन धोय ॥
कोटिन करो उपायरेसां० ॥
गावे गूदर कवि मोहनी लागी कारी घाव ।
एक सखी सबसे कहे चुप कर भेद बताव ॥
मोहन आन मिलाउरेसा० ॥

१२

जगमें बाँटत यारो अरे मन मानत नाहीं ।
देखो जग व्यवहार यह इन्द्रजाल विस्तार ।
अन्त न आवे काम कछू होत होयेमें साल ॥
भजले अवध विहानरोरे ।

भजन हेत यह सुभग जनम पायो नर अवतार।
विषय वासना परहरो भूलो सब जञ्जार॥
सो सब सुरत विसारोरे॥
हरि पदरत विनु जगत दुखो
सुख हरि भजन सों होय।
जीवन नर जमधन सोई प्रेम लगो चित सोय॥
दिन दिन आनन्द कारोरे म०।
बहोत गई थोरी रही अजहूं सुरत सँभार।
सर्व्व जोत हरि सुमरण विनु कलमें नहीं उबार॥
फिर फिर कहत पुकारोरे म०॥

भैरवी—ठुमरी

अरे मन कहाँरे भुलानो राम सनेहो विसरे।
जो विसरावन सो हितकारो ढूंढ़ उपदेश करे॥
छिन छिन खबर लेत सन्तनको कर शरचाप धरे।
नित उठ सङ्ग कियो विषयन को तोनो ताप जरे॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वस माया हो करत मरे।
सुन्दरवदन कमलदललोचन देखत पतित तरे॥
आठ मास गरभमें पाल्यो ताको सुध न करे।
रामदीन के बन्धन काटे करुणाशील भरे॥

भैरवी—जलद्तिताला

जादू टोना काहेको कीयारे रावरे हो वंशीवाले कान्ह।
तड़फ तड़फ बाह सङ्गबीते बीत गई सारी रैन।
कहा करूं ककू वस नहीं मेरो विन देखे नहीं चैन॥
अरो वाको विरह सतायारे सांवले हो॥
सुहेदा क्या पहरना बूंद पड़े रङ्ग जाय।
आशकदा क्या मारना झड़क दीए मर जाय॥
सुखड़ा काहे को छिपायारे सा०॥
सोनो होतो करूं रखवारो मोतो राखूं पिरोय।
बाला जोवन कैसे राखूं दिन दिन मैला होय॥
विरहा काहेको सतायारे सा०॥

२

कित गए कुंवर कन्हाई मोरी आली सुरत भुलाई
मेरी सुध विसराई।
नैन सैन देहमें बुलाई हम आई व्रज मांह।
उन हरि हमसे एसो कीनो छाड़ गए वन मांह॥
मोरी आली अब हम कितेहो जाहो मो०॥
वा कान्हा सों परसके जरत आजलों देह।
इन मनमोहन एसो कीन्हो भलो निवाह्यो नेह॥
सुध बुध सबही गमाई मोरी आली।
हम हरि कों ढूंढ़त फिरे यावन आधोरैन।
प्राण हमारो लेगए सखो कलन परतहै चैन॥
बांक वरस समझाई मोरी आली करो निठुराई सु०॥

३

भगतन क्या नैना झमकावे रूपा पहरके रूप
दिखावे।
सोना पहर रिझावे गले डाले तुलसी को माला
तीन लोक ललचावे॥
धरतो बरस अम्बर धावे मेंड़क ताल बजावे।
कपड़ा पहर करगधा नाचे ऊंट विसुनपद गावे॥
बैठा सिन्ध जो पाय पलोटे घूंस विलोरो लावे।
मूसा मूसो मङ्गल गावे भैंसा अर्थ बतावे॥
रूख चढ़े मछरो फल तोरे ककुआ बिन बिन लावे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो याकों भेद बतावे॥

४

सइयाँ मोसें जिन बोलो गगरोया गइलो फूटरे।
हाहा करत हूँ पइयां परत हूँ सारो सरक गई
कूटरे॥
आह करूंतो जग जले वारो जंगल सब जल जाय।
पापो जियरा ऐसा जला वारो तिसमें आह नसमाय॥

५

रात सइयाँ तोरे गरे लागमें बड़ो चैनसों सोईरे।
बालापनमें खेल गमायो सारो उमर योंही खोईरे॥
अब पछताने कहा होत है असुअनतें मुख धोईरे॥

६

वास नहीं तहाँ वैष्णव केरो तहाँ न बसोये बासड़ियाँ।
जोभड़ला जप माला ना करे तें जोभड़लो खासड़ोयां॥

साम उसासें सुमरण न कस्यो धमन तनाति सासड़ीयां।
भने नरसैया भारे मारो मावड़लो दश मासडियां॥

७

मोरे सइयाँके यौवनवा करत जोर अरी एहो सूनो सेजमें करत शोर।
जालको अङ्गोया मसकन लागो उमग आए दोउअनके तोर॥
यह दोउ यौवना सइयांकों खेलोना कहवाँ छिपाऊं यह अङ्गके चोर।
सारो अवधमें बैठ गमाई तड़फ तड़फ जोय भयो है भोर॥
योगोन होके में भस्म चढ़ाऊं पोयको में ढूंढ़ वनको ओर।
मावे गुदर प्रीतम वस नाहीं जनम ममायो कहि मोर मोर॥

८

मोरी नईरे लगनोया लागोरे साँवरे कन्हैया सों मैं पागोरे।
सौतनके मङ्ग दुसह भयोहै वैरिन परोसन बागोरे॥
तावित दतो अचानक आई नैन मिलाकर भागोरे।
जाकर भेद कहो सौतन सें तुमसें प्रीत प्रभु त्यागोरे॥
जाके रहत प्रभु वाहोर तरे हम रहवें चरणन लागोरे।
गावे गूदर यह भाव दूतोकों पानोमें लावे आगोरे॥

भैरवी—जयतश्री

मे तुझसे पुछं अहा विदशो कौन और कहाँ के हो।
इस दुनियां में रहना नाहीं टेढ़े होके बाँकेहो॥
आतेहो तुम राने लागे क्या कुछ छूटा तुमसे वहाँहो।
होश हुवे पर याद करोगे अचपल इहां के नहीं वहांके हो॥

२

जाग पोयारी अब क्या सोवै।
रैन गई दिन काहे को खोवै॥
जिन जागा तिन माणिक पाया।
हम विरहिन सब सोय गमाया॥
पोया चतुर हम मूरख अनारी।
कबहूं पोयाको सेजन सवांरी॥
मेंबोरी बौरापन कोनाँ।
भर यौवन पोया अपनाँ न चोनाँ॥
कहत कबोर तन मन रम रहोये।
तज अभिमान हरिशरण जइये॥

भैरवी—जत्त्द तिताला

सुनोंजो हैवान भोला डमरु बजावे।
छे राग छत्तीस रागिणो नाना रङ्ग उपजावे॥
सप्त तीन वारो इकईस सुध सुन सुरमुनि ध्यान लगावे।
जानकोदास बारो हमकों निरखत हरख हिय सुख पावे॥

२

देवोदा भवन सुहावना सुभनूभो दरस देखावना।
पान मिठाई तेरो जारत चलोयां भोलो मा जो मांगो सोई पावना॥
विन्ध्य पहाड़ों बिच बसना तुँसाड़ा भोलो मा निश दिन बजन वधावना।
प्रेमरङ्ग दासनु आस तुँसाड़ो भोलोमाँ चरण कमल परसाँवना॥

३

तैनु वेले दोक्षा वाले जावाँ अनो भला गोरो एनो।
फँदाय डोलो मैनु लेचल खेड़ेनु कित वलकूक सुनावानो॥

४

सखो सासुरहै बड़ो दूरे।
चलत चलत थक रहो मोरे साहब पायन पर गई धूरे॥
एसो गुण ढङ्ग सीखो नहीं नैहर का लेहवर मिलव हजूरे।
कहै गूदर दोऊ रङ्ग बरोबर सुख पर वरसत नूरे॥

५

शामेर बंधु कोंथा गइलो रहोलो के मनें घोर ।
जेखुनी तेखुनो पीरीति करोलो रहोलो अङ्ग मोर ॥

६

शिव तोकों बुलावे चलोनी गोरी सइयों ।
सप्त सुरन और तीन ग्राम सों रागरङ्ग उपजइयो ॥

७

नैहरवा रूंसल जाय हांरेमें कहा करूं रामा ।
सोवत थो में कदमको छइयां सब सखीयनके साथ ।
बोलत सुने गवनेके लोगवा हाथ पसारे जात ॥

८

एरो एरी मतवरबा मइकुं भर भर मधवा पिलावे ।
आप पीवे मइकों पियावे दैया मोहे लुभावे ॥

भैरवी—खेमटा

हांरे वेदरदो डुमनोया मेरे डुमरेकों किया खराबरे ।
आगे आगे डुमरा पीछे डुमनोया बङ्गलेमें बोतल
शराबरे ॥

भैरवी—तिताला

छाड़ महिघर आमी सबेरा झोखानु सँभाल वे ।
असी तुसाड़े कोलवेमै मोहो तेड़े नालवे ॥
बाबुल देशा चाकरे वीरन देशा चाकवे ॥
रहदो महोबत पाकछा० ॥

२

आजादा महरम हम दम चल फिर कर दीद
निजारेदा ।
खुश गुजरो गुजरान शोरो मियाँ नाज परोदा
एक मजारेदा ॥

३

को मजाल साड़डी वे जो किसुदो यारोदा नाम लेना
जानो को करेजा ।
दरस वेखामो तो में जीवों सिपाइड़ा नदानावे
जिन्दड़ो दिवानो भाड़ाजो डरेदा ॥

४

दिन वहारोंदे यारदा सानु भाँदे वे महबूबों
कोंनो तेड़े आदे झमझम ।
वेला गुल फूल मोयां गुलशनों बिच तेरे बुलबुल ॥
बागबहार गुलालाना फरमान दे निरगसे गुलखिल ।
आय जीवावरो यांको जांदे आंदा जांदा
जमजम जीवे साड़ा हमदम ॥

भैरव—जलद तिताला

ताँड़ी याद लगीवे माड़ा प्यारावे ।
हुणतो शोरो कियेनूल दोयां जङ्ग सोया लेबालावे ॥

२

मही बाला मांड़ो खबरन लीतोवे ।
आप जांदा वारो वेंनाल महीदे साड़ो खबर
विसार दीतोवे ॥

भैरवी—तिताला

तेज नजरा नजराँदा वेनैना वाले करदा मोयां ।
चश्में वदर क्या खूब लगदा शोरो नामें खुदा ॥

२

बालम तोरे सङ्ग सोये हमरी बलाय ।
ऊंचो अटरिया चन्दन किवरियाँ देखत जीय
घबराय ॥

भैरवी—एकताला

रावला में तेरी सोंवे मेनून विसारना ।
तपदी सुखेदी वारोवे मुदत गुजारोवे तू मेनू
न विसारना ॥

भैरवी—जलद तिताला

अङ्गोया मोरी मसक गई छीन ।
उमगे यौबन मोरे पोया घर बाहीं एसे कर्मके होन ॥

२

सइयाँ न छूवो छतोयाँ बैरन भईरे ।
कहत निरंदर कि गरवा लगावे लुटगई
दुलरी तिलरीरे ॥

भैरवी—तिताला

कौन खड़ा मेरी जान नौबू तरे।
छोटे छोटे नौवुला अधिक रसीले छविरस
लियों नदान॥

भैरवी—जलद तिताला

नैहरवा रूंसल जाय हौंरे मैं कहा करूं रामा।
सोवतथी मैं कदमकी छईयां सब सखीयनके साथ॥
बोलत सुनि गवनैके लोगवा हाथ पसारि जात॥

२

एरी एरो मतवरवा मइकुँ भर भर मधवा पीलावे।
आप पीवे मईकों पियावे दैया मोहे लुभावे॥

भैरवी—खेमटा

हौंरे बैदरदो डुमनीया मेरे डुमरे कों किया
खरावरे।
आगे आगे डुमरा पीछे डुमनीया बंगलेमें
बोतल शरावरे॥

भैरवी—तिताला

झूंठी काया माया का तू क्या गुमान करताहै।
जोतू काया मलमल धोवे, सोभी तेरे सङ्ग न होवे,
लोक कुटुम्ब सब ठाढ़े रोवे, तन माटीमें परताहै॥
माया पाय भया अभिमानी, इतवित चितवत
त्यौरी तानी,
सङ्ग न चाले कोड़ी कानी, नाहक पच
पच मरता है।
जानकीदास सोई जन साचा जो साहेबके रङ्गमें रांचा,
निर्भे होके जगमें नाचा, सो भवसागर तरता है॥

२

भैरवी अर्द्धङ्ग जाके वृषभ वाहन डमरु मृदङ्ग साज।
माधव रङ्ग उमाधव शम्भु देवनके शिरताज॥

३

रामरस पीवत जन विरले।
झूंठी भक्ती सुवाने कोनी बोलत बंध परे॥
साची भक्त पपीहाने कोनी बोलत विन पकरे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि हरि हरि उचरे॥

४

फेर वंशी बाजीरी मजनो।
वृन्दावन द्रुम कुञ्जनमें सखी लाजगई तजनी॥
गुरुजन पुरजन सोवत छाड़े छाड़ दई लजनी।
चांदनी रात छिटका रहे तारे बहोत गई रजनी॥
सूरदास स्वामी तेरे दरसकों चरणकमल भजनो॥

५

राम भजे तेई बड़ा साहूहै नाह भजे तोहै बड़ा चोर।
तन मन धन कछू थिर न रहेगा काहे कों झूजीये
एता कठोर॥
तेई धनवंत तेई सुखवंता कृष्ण नाम कहे निश भोर॥
काम क्रोध लोभ मोहमें विषय वासना लागी डोर।
सूरदास प्रभु सुमरण करले नहीं तो जावोगे
यमको घोर॥

६

रामको जाने सोई धन धन है।
उत्तम चारो वरण कहावत वाको जाने सो उत्तम
वरण है।
उदे अस्त तक राव कहावे वाको न जाने तो सब
निरधन है॥
छार लगाय भेष कर नाना भटकत फिरत मोह की
वन है।
गावे गूदर गुरु मोहि सिखायो वाको जाने सो
वाहो कों जनहै॥

७

अबहीं कछू जंचो नितम्बही अबही कटकी कनी
फोरतही।
अबहीं उरमांह उरोज नहीं अबहीं कित अंग
मरोरत हो॥
अबहीं कछु मोहन भाव नहीं अबही टगते
टग जोरतही।
वृषभानुसुता अब मान भरी अबही रसमें
विष घोरतही॥

८

मार चले मेरे मरम कटारो ।
मृदु मुसकाय बजाय बांसुरी दिल लौतावे
बांकेविहारी ॥
ईश्क लगाकर कित बलजादा तुम विन कौन करे
दिलदारी ।
सांवलीसूरत मनमोहनीमूरत रूप रङ्ग तन मन
वलिहारी ॥

९

नहीं भूलदी थारी याद विहारी ।
घड़ी पल छिन मारी जिंद तरसावे यार क्यों नहीं
आंदा गैल हमारी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तलफ तलफ
सारी रैन गुजारी ।
न्याज भरा मुखड़ा वेख लाजा रूप रङ्ग तुसी
दरस भिखारी ॥

१०

मेरे ऊधो जाय कहो माधव सों प्रणाम ।
कहा ऐसी चूक परी है हमसे जो तज दियो व्रजधाम ॥
सुनीयत भई कुवजा पटरानी चलाय चामके दाम ।
ये बातें सोहत सब हरिको अब बाही से काम ॥
जो बीते तैसो सब कहियो जैसो सहावे राम ।
रूप रङ्ग समझोंगी वादिन आय भेंटोंगो श्याम ॥

११

तन दिरना तुम् तना तनना द्रद्रद्रतुद्रद्रद्रतननतनन ।
मिसाले आवले अएवा यह क्या जिन्दगानी है ।
जिसी के पांव पड़ते हैं विसीको गिरानी है ॥

भैरवी—जलद तिताला

कैसी वंशी बाजी यमुनाजीके तीर ।
मुरली सुन सुन भईहौं बावरी सुध वुध गईहै
शरीर ॥

२

मन अन्तही लगाय कहीं बीर आई ।
सिरकी गगरीया सालुरे सरस कुसमका
लहंगा कहो वुहरी कहां फार आई ॥

३

रोवत आज वाल यशोदाको ।
ललित खिलोना ल्याईहै लालपे मचले फिरत
आंगन वो नन्दको ॥
उठाय लेत गिरि परत धरणि पर मरमन जाने
तनको मनको ।
उठीहै रिसाय नन्दको रानी राज करो या लरकों ॥
नन्दकों बहीयां पकर दिखलावत सैनन मांगत
चन्दकलापे नन्दकों ।
कंचन थार वार भर लाई पकर लेहो अहीनन्दकों ॥
सूरदास कवि देख मगन भए यह सुख होत व्रजकी
सखीनकों ॥

४

मोरे सइयांने पठई बुलायरे ।
मोकों सइयां ने पठई बुलाइ पठाय कूटा घर
बाबुलदा आजरे ॥

भैरवी—खेमटा

मिललोरो असि सखोय सहेलड़ो देदे साड़े गलवांह ।
बालपनेसें खेल गमायो अब पीयर खेलदो चांह ॥
कबीर चलो चलो सब कोउ कहै मोहै अंदेशो और ।
साहबसे परचे नहीं बैठोगेकै ठौर ॥

भैरवी—जयतश्री

चिठोयाँ दरद फराकों वालीयां असि गोंसे
बजब चाइयां ।
बांचन वाल्या सची आखोंवे मोयां तेरीयां अजुआ
क्यों भर आइयां ॥
दोष को देवे अमाए वावे मेंनु वहद तलोकों लाइयां ।
पिया विछोड़ा उन्हों दोस्तो नालों जद रजक महारो
चाइयां ॥

२

कारो सांध रंझेटे मारो साड़े मुड कलेजे रडके ।
ज्यों भोंचाल पवन गड़ड़ा शिर तत्तोदे कड़के ॥

मा मैनु लख ताने दे दी वीर बोलेदे लड़के ।
अत्तण वत्तण नदे दाया सइयां जनो जणी मैनु झडके ॥

३

जिस तन लगे सोई तन जाने कै जाने ज्वल लाई ।
मेंजाना मेंड़ा दिवुर जाने तुसी विच्चिन आवो काँई ॥
जुवारो यांदे गुणना जुण असां सिर सिर बाजो लाई ।
कावुल यार मिले तौथो वाँचंगो नहीं तो घोल घुमाई ॥

४

पंथ असाड़े कोई पावन रखो असो लखिलो
गहसाया ।
इश्कनु गरदे अन्दरनु असि शिरदे पैर चलाया ॥
मत्थे बेंदी हत्थों मेंहदो अखियां कज्जल पाया ।
छके छवीले छैल पर वल्लभ रसिक कहाया ॥

५

गम् फराक कोना बोच बँगला दर यार ढुंढ़ाया हुरबा ।
इश्क चन्द्रो हुन जगसावन अत्तन वहन
बजाया हुरबा ॥
ठंडो ठंडो छाइयां अंजुनो थोया सूले बहुत
सताया हुरबा ।
हुमहो मदी कौन विचारे सइयों अनु हाल
बन जाया हुरबा ॥

६

खोलत वीवों पटियांतु अलड़े घावन छेड़ ।
जेतुँ दरद मिटावना तोरुठडा साजन मेल ॥

७

अयत विंब उठजा घर मत कुवे मेंडा हाथ ।
चढ़े इश्क देके कहै उतर शिरदे हाथ ॥
इश्क खेतसों नाटरे आबे बैठ उसास ।
चश्म चोटसे शिर उड़े धड़ चाले शावास ॥
चलनाहै रहना नहीं चलना विसवा बोस ।
अहम्मद सहेज सुहाग पे कौन गुंधावे शोश ॥

८

तनको तनक सराय में किनइ ना पायो चैन ।
शाम नगारा कूंचका बाजतहै दिन रैन ॥
को रूप छवि देखके चित न रहा एक ठोर ।
अहमद अपनें मौतको वह चितवन कछु और ॥

भैरवी—कृपका

देखो ऊधो बजो कहीं वोण ।
कान्ह कों ढूंढ़न निकसो राधिका सब सखोन
सङ्ग लीन ॥

२

नजानू रसिया कैसे होके लागारीमें नाजानू ।
गोरा पारवतीके आगे सुहाग माङ्गत गइयाँ
चोवा चन्दन होके लागारो मैना जान ॥

३

सालु वालो तूं अचरा संभालरी ।
जेहर तेहर अनुवट विछुवा उर मोतीनको मालरी ॥

भैरवी—जलद तिताला

कान्ह वंशी बजाय मन ले गयोरी ।
श्रवण सुनत मोरी सुध वुध विसरो चितवनमें
कछु दे गयोरी ॥

२

देखो मोरी गुइयाँ मइकुं लाखों गारी दोनोरे ।
अङ्गरी पकर मोरा पौंचा पकर लोनो
बहोयाँ पकर रस लोनोरे ॥

भैरवी—एकताला

अनो देखो सइयों होर राँझेदा कोमान ।
लटक चाल चलेंदे भुड़के यही महबूवांदी आन ॥

भैरवी—जयतश्री

सइयाँरे मतवरवा मइकुँ वार वार बरजो ।
आप पीवे और मईकुँ पिलावे माने नहीं अरजो ॥

२

अम्बुवा पर झूमर डारोरे ।
सब रस पिया वन वन मिलवन बन आए गारी
देत मोहो प्यारीरे ॥

३

साँवरे हो सइयाँ तुम सन लागल मेरो जियरवा ।
तुम विन मइकुं सुहावेन भावे ढोट लङ्गरवा मीत
पीयरवा ॥

निश दिन घरी पल छिन आन बसो मोर होयरा ।

भैरवी—जलद तिताला

तुम आवो मोरे सइयाँ लागो हूँ तोरे पइयाँ ।
भवन भवन के मोत पोयरवा ढोट लङ्गरवा अतिहो
चतुरवा सुरजनुवा ए गुसैयाँ ॥

२

साँवरेने सुरत विसारो मोरोरे ।
विन देखे मोड़े कलन परत है आन मिलो
गिरिधारोरे ॥

३

तू मेरा वे साँई सुरजन यार ।
तुझ बिना मैनु कलन पड़ेदो विन दोठे सांझ सवेरा ॥

भैरवी—तिताला

प्यारावे झरलाई इश्क धगाना दे विच दानोया ।
इश्कदो खेतो वारोरे हासल भरना मेड़ा सोना
जो भामो त्यों मानोया ॥

२

जादूगर मोयां करदा फिरदानो मेड़ो सइयां ।
सोहनो सूरत वे रसभरो अंखोया साडडा दिल
फन्द गइयाँ ॥

भैरवी—जलद तिताला

साँवला तोरे आगे मोरे नैन लजानो ।
सोहनो सूरत देख लोभानो लोक कहै दिवानो ॥

२

रैनके उनीदे कहीं जागो मोरे बालम ।
सगरो रयन मोहे तलफत बीती भोर भए
गर लागो मोरे बालम ॥

३

कोयल बोले शब्द एक बगोयामें ।
उस बगोथामें एक फूल लगेहैं जो सइयां तोरी
पगोयामें ॥

४

सांवलदा मुखड़ा मैनु भांदानो भादावे साड़ोवल
आँदानो जांदावे ।
जानकीदास सोहनो सूरत नजर पड़ो जबसें वह
सूरत गल लगनेनु जोय चांदानो चाहदाँनोवे ॥

५

वँशी बजावदा छैला जोर नागर नन्दकिशोर ।
श्रवण सुनत सुध बुध सब विसरी वा यमुनाको ओर ॥

६

मानले मोरो अरजो गुमानोड़ा मैतें ड़े वारो गई
सांवलड़ा ।
दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया जो मिलिया
सो गरजो गुमानोड़ा ॥ मैतें ड़े वारो० ॥

७

रैन किथे गुजार आइयाँ मेरी यावे ।
तुझ विना मैनुवे वेकल रहदोवे बोबो तेड़े चेरेदो
में चेरोयांवे ॥

भैरवी—जयतिश्री

रात प्यारे सों न बोलो पछतानोवे ।
सइयाँ मोरा में सइयाँ को सजनी सइयोंके रङ्गसेंमे
सानोवे ॥

२

कजरवा मैं न देहों सइयाँ हो दगाबाज ।
गोरीके आँखन कजरा सोहै सांवरी के मुख पर पान ॥

३

तू आपो नाहों मिलदावे भूल गइयां सुध मेड़ो
तेंनु सोना ।
तुझ जेहा मैनु औरत दिसदा तूँ तो महरम दिलदा
हांवे सोना ॥

४

कहाँदो दुनोयां कहांदा दिवाणा खेड़े तु करदा
साथों जोर धिगाना ।
शकरगंज वारोवे लखांदा दाता पोरां देवे
सानु नैन पिराना ॥

भैरवी—जलद तिताला

रब फकीरांदी यही गुजरानवे ।
भली बुरी शिर ऊपर सहदे शोरी गरीबांदी
तुसी मानले ॥

२

कासे कहूं मैंदिलदी अरजी
वे मरजी जासे दिल माबेवे ।
दिलदा महरम कोई नहीं मिलिया जो मिलिया
सो गरजी ॥

३

वे रांझे तेडी गला माड़ा मनुड़ा चाहेरांझे वँदी
होँ रहीयां ।
भूल गया मेंड़ी सुध बुध सारी टुक टुक कहेदाँ
शोरी मियां ॥

४

एसोरी कजरवा मोपें दियोइ न जाय ॥
इस कजरे से मोरी आंख लजायमा ।
नैन बैन सुख मोही दे गयो कजरा मोरा नैना
लजायमा ॥

भैरवी—खेमटा

सुख चुम्वा न दैहोँ बिना झूलनीको बिना झूलनीरे
बिना झूलनी ।
बड़े बड़े मोती गुंधावेला झूलनी वारी मारे
नजर भाला ॥

भैरवी—जलद तिताला

अब कैसे लाज रही दई मोरी श्याम सुन्दर मोरी
बहियाँ गहेरी ।
वरवस आय झटक लई चूनर मोतीन लर
टूट गई अब० ॥

२

सुन एरी बीरी केकी मैं बात सहूँ मनमोहन बिस
पलन रहूं ।
सास बुरी मोरो ननद हठीली सइयाँके विरह जरूं ॥
मेरे तो जीयमें ऐसी बसतहै यमुनामें कूद परूं ॥

३

राँझा मेंनु गाली देदानी वे ततीदा सिखलाया ।
काढ़ कलेजा वारी वे हाजर कीतावे आखर
पूत पराया ॥

४

मोरी छोटी ननदीया बैरन भईरे ।
काहेकों रार करतहो रंगीले हमर तो जिय कपट
नाहींरे ॥
मवानी तोरे मन्दिर पान चढ़ैहों ।
जो मवानी मोरे मनसा पूजे सोनेके छत्र चढ़ैहों ॥

५

रात सइयाँसे न बोली पछतानीरे ।
सगरी रयन मोहे तलफत बीती भोर भए
अलसानीरे ॥

६

सइयाँ मोरी डोलीया ले आवोरे ।
चार कहार मिल डोलिया ले आए मैंतो चली
पीयाके पासरे ॥

७

मैंतो पनिया भरन कैसे जाऊं मोरी ननदी
देखो यमुनामें बाज रही बाँसरी ।
बाँसरी बजावत जियरा ललचावत निकसत नाहीं
जिय साँसरी ॥

८

कन्हैया मइकु गारी दीनी गोकुल में छिप रहिहौं ।
बाबुलकी सौं विनकी सौं सइयाँकी कसम न खैहों ॥

९

तुम तनन दिरना तदर दानी यललो यलायल ला
यलललले ।
दीम दीम तनातनना तननारे धिति लितिलाना
दिग्दिग् थों किट धागड़ान धिकिटक धाँधाँ
धिलाङ्धा ॥

१०

दीम् तनुम् तनदिरना दानी नाद्रद्र तुंद्रद्रतुंतदार
तद्रदानो ।
ध्रतिली ध्रतिली तिली लाना तनुम् तादेरनादेरना
तदेरना तददानो ॥

भैरवी—जल्द एकताला

छदड़े जाँदीयाँ हण तेंड़ीवे राझना यार ।
दरददा मारूड़ा क्यों नहीं आयारे राँझना यार ॥
चलो सइयों असी वेखन जाइये राँझन जोगो हीदाँ ।
कानन कुण्डल गल बिच सेली हीर हीर कहै रोंदा ॥
चलो सइयों असि वेखन जाइये राँझा सूली चढ़दा ।
सूली चढ़दा खिल खिल हंसदा मोतो लालन डरदा ॥
चलो सइयों असि वेखन चलिये राँझन देनो हटी ।
दध बिकांदा दही बिकांदा सास निमानी खटी ॥
चलो सइयों असी वेखन जाइये राझन दे चोबरों ।
हीरनी मानो इटे ढोदो राँझन ढोंदे गारों ॥
चलो सइयों असी वेखन जाइये राँझन देनी घेरों ।
इथे बैठके उमर गुजर गई राँझन कोतानी फेरों ॥

२

यार तेंजवे रंझेरा दरद दोदा छदड़े जादीयाँ ।
सइयां प्यारा किन विलमायो यारन आया वेखो
दारूँ रांझा मेहोयों आइयाँ ॥
मानु दिलोंदे अन्दर कुछ नहीं भाया कीकराँ माड़े
सजना वे तेंड़े नाल राजी हुइयां ।
रांझेदे सोहागदी असिवी रङ्गरलीयाँ ॥
दस्त सजन नाल जिन्द लगीयाँ मेड़ो रोंदी जंद भलियां ।
नन्दरानी तेरा वालानो वे कुंड़ो गलां मोसों
करे तोभी मैं चुप करहो रहियाँ ॥

३

सुनरी यशोदा फिरयाद करो तकसीर सुनो अपने
सुतको ।
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन बांह पकर हम
झटको ॥
लाजको बात कहाँलों कहूं सखीयां मुसकाय सबे
सटको ।
दधि माखन खाय लुटाय दीयो चित चोहटमें
मटको पटको ॥
तुम ग्वालिननारि गवांर बड़ो कोउ जानत ना
तुमरे टरको ।
दस बीस मिलो बनकों जो चलो तुम केल
करो अपने हटको ॥
केल करो रस कुंजन मैं दया मोसों कहो
मटको पटको ।
बाँसरो जो बजो नन्दनन्दनको सुनके घनघोर
हिये खटको ॥
कुलकान तजो वनको जो भजो हरि दीसत नाहीं
फिरों भटको ।
मो भागन भेंट भई सजनो सुधि भूलि गई अपने
घटको ॥
छवि देखि नया रसिया नटको चित चोहट मैं
मटको पटको ॥

४

आवतहो रसके चसके तुम जानत हो रस होत
कहाहै ।
नेक रहो मशि भींजन देउ दिना दशके अलवेले
ललाहो ॥
तंतके मंत वेही दिन आवत ग्वालनके तुम सङ्ग
सखाहो ।
लेहो कहा इन बातनमें घर जाओ लला अबहीं
लरकाहो ॥

५

आईहो आज नई व्रजमें कछु नैन नचायके रार
मचैहो ।
चाहतहो हमसों छलके दधि बेचन जावो सोंजानन
पैहो ॥
लेहों चुकाय सबे रसखान तबे पाछे मनमें पछतैहो ।
जोतुम होजू बड़े घरको इठलाती कहाहो
जगाति नदेहो ॥

६

कहा करूँ मोरा गुइयाँ बलम लरकैयां निकस गयो ।
अपने सइयाँ को मैं ढूंढन निकसी फूल परे वहो
ठइयाँ ॥

वारे वालम सइयां चोठो न भेजो रोबत हमरो
वलैया ॥

७

सोवत नींदीया जगाई अटरीया पोया बोलोनारे ।
आए अचानक बांह गहारो ठरोहुँ नछड़ोहुं
कटरियारे ॥
जो पोया मोसों बोले नहीं मरिहों रसको कटरियारे ॥

८

नजानूरी कहाँ भूल आई बिछुवा ।
हौं यमुना जल भरन जातरही रातको जागी
भुलाय आई बिछुवा ॥

९

सांवलेकां मेरा जीय चांदा ओर नहीं मेरे
मनमें भांदा ।
लोक लाज कुलकान तजो सब एहो रूप
मोहि चांदा ॥
सूतोथो मैं अपने मन्दिरमें सजनो आय कर
वंशी बजांदा ।
चौंक पड़ीमें उझक कर देखूं नैनन रूप लोभांदा ॥
रसिक रङ्ग अङ्ग सङ्ग रङ्गराती बारबार मेरे आंदा ॥

१०

जाहो जुही में कन्हैया बिराजें गुल लालोंमें राधा
प्यारोरे ।
चंपेमें चतुर्भुज गुलसब्बोमें विहारी दौनामरुबेमें
गिरिवरधारोरे ॥
गेंदामें गरुड़ध्वज चमेलीमें चक्रधर मेरे बेला में
वंशीधर वारोरे ।
बांकवरस कहे वैजंती में वांकेविहारो मेरे
कमल में कमलोधारोरे ॥

भैरवी—जलद तिताला

सपने में गरवा लाग रहोमें ।
वांकवरस कहै सुख लूटत रही चौंक उठी अब
सोच रहोमें ॥

२

विरहिया सैन चलावे नैना लगावे का जिय
ललचावे ।
वांकवरस कहै बंसीया बजावे हँसि हँसि गरवा
लगावे ॥

३

जबतें भई मैं तो पीयको सोहागन तबते चहे जोय
गमने चलनकों ।
कर सिङ्गार मन्दिर निज बैठो आशा लगी मोरे
पीयके चरणकों ।
अब जोय चाहे गवने चलनकों थोरो रह्यो दिन गरवा
लगनकों ॥

४

उमड़ घेरो घन कारो बदरिया कैसो करूं घर नाहीं
पियारे ।
वांकवरस कहे मोहनी मूरत बिन देखे नहीं
चैन जियारे ॥

५

गोरी बालारी जोवनवा छिपाय लेरी ।
वांकवरस कहै तेरोरी जोवन एसो पोया को जिय
ललचाय रहोरी ॥

६

सइयां ल्यावोरी जोवनवा की मातोरे ।
वांकवरस कहै अजहूंन आए पिया कैसे कटे
दिन रातोरे ॥

७

तेरी बंशी मधुर सुर बाज रही धुन गाज रही ।
बंशीवट कट निकट यमुनातट सप्तसुर तीन ग्राम छई ॥

८

अंचरा सँभालरी सालु वाली ।
तू गोरीके मुखपर अचरा सोहै नैना लगे मोहे
प्यारनी ॥

९

रब्बा साड़े भाग जागे प्यारा घर आयानो ।
मनमोहन सोंहन मृदुबोलन अखोयाँ बीच
समायानो ॥

१०

कितो वे परवाहोवो मेरो जान भला बे नैना वाले ।
दुखोदे नैना नजारिनू तरसदे शोरो सियां मुखड़ा
वेखलाजा रहदियाँ वेकरारे ॥

११

एखन रजनो आछे बल कोथा जावे प्राण ।
चञ्चल होयेछ केन हबे निशि अवसान ॥
कमल उदित हइये, रजनी प्रकाशिये,
शशी जावे निज स्थान ॥

१२

मोरो कैसे कटे दिन रतोयां सइयां बिन मोंकों
कलन परत ।
बेग लेजावो कोउ मेरो पतियां चञ्चल तोरे बिन
कल नहीं परत ॥

१३

कहा करूं कित जाऊँ मोरो दैया वारा करेजवा
निकसोई जावे ।
हित करके मैं सुख नहिं पायो कौन घरीते प्रीत
मैं कीनो चञ्चल मेरा दुख का देवैया मोपै तो कछू
बन नहीं आवे ॥

१४

नींद गइलो पिया बिन मोरो सजनी कलसे
बेकल भई सारो रात ।
चौंक चौंक परूं खाब ख्याल में नागर समोहे
आन जगाई ॥ कलसे बे० ॥

१५

बेकल रही तोरे बिन सारो रात विरहा जगाई
मोहे नींद की मातो ।
तुमतो चञ्चल सौतनके सङ्गातो हौं एसो जरो
जैसो दीपक बाती ॥

१६

मोसें मोसें नाहीं अटक कन्हैया तोहै जानत हौं
नन्दके नटखट ।
लपट झपट कर चूनर झटकत चटकत हो शिरको
मटको पटक ॥

१७

मतकोई करियो गुमानरे छैला बड़े बड़े छत्रपति
गएहैं अकेला ।
कालके हाथ कमान रहत है बाल तरुण
विरध सकेला ॥

१८

जटी तेरें जादू नैना जुलम करे देनो ।
भर मर बाण वारी विरहके मारे वे सियां आशिक
चोट सँहे देनो ॥

१९

बांको भौं है नैना कारे रँदे मतवारेनो ।
एक तो जटी तेरे नैन रसीले सर भर वाकीं मारेनो ॥

२०

मेरा गोना लेने कों आयारो ।
तुझ जैहा मानु और न दिसदा मै तुझकों चाहानो ॥

२१

जननी मैं नजोवूं विन राम ।
कपटी कुटिल कुबुध कुचाली आग लगो तेरे गाम ॥
सुर नर मुनि सब दोष देतहैं भलो नकोनों यह काम ।
राम लछन सीय वनकों सिधारे नृपति गए सुरधाम ॥
प्रात होत हमहूं वन जैवे अब घर है केकाम ।
वार वार विनतो करूं मैं नोको न कियो काम ॥
रघुवरचरणकमलनयन विन मोहि नहीं विसराम ।
तुलसीदास प्रभु तुमारे दरसकों भए विधाता वाम ॥

भैरवी—जयतश्री

सावलियाँ भावको भूखो ।
दुरयोधन का सेवा त्यागे साग विदुर घर रूखो ॥
शिवरोके बेर सुदामाके तंन्दुल भर भर मुट्ठो बूकों ।

गजके काज पियादो धायो कियो ग्राह दो टूंकों ॥
करमाबाईको खोचरो अरोग्यो रूखो सूखो गिन्यो
न सूखो ।
नन्दके घर नवनिध राजे अहीरड़े घर टूंकों ॥
सोलाशहस्रशत आठ पटरानी कुवजा नाहीं न मूकों ।
नरसीको स्वामी सामलियो औसर कबहूं न चूको ॥

२

कान्हा तेरे औलंभ हारो ।
दूध दह्यो घृत माखन मेरे और मिठाई सारो ॥
यामारग जिन जावो छुँवरजी हौं तूनें राखूंछूं वारी ।
हूंभी हारी और विहारी झूंठो विरज कोनारी ॥
तूतो व्रजको ठाकुर कृष्णजीको थारो वलिहारी ।
नरसैयाको स्वामी सामलियो मानले विनति हमारी ॥

३

वार वार नित नई भईरी ।
आम कोडार कोयल एक बोले समुझ समुझ
पछताय रहोरी ॥
जानकीदास आस चरणनको गई सोगई
अब राख रहोरी ॥

भैरवी—एकताला

नैना वाले मियातूं कीतो लाई साड़े हाल दिलाँदिवो।
इश्क लगाके मन लेगया गोरी आवी तुमेड़ी जिंद
खिला दीबो ॥

२

राम राम राम कहुरे मेरे मन ।
दुखहरन सुखकरन उन चरण गहुरे मेरे मन ॥
जगमें जो जनम पाय साध सङ्ग रहुरे ।
काम क्रोध लोभ त्याग हरिके चरण गहुरे ॥
ऊंचो नीचो बात कहै सबको तुम सहुरे ।
नेति-धर्म्म कामतं तुम शीतलचरण लहुरे ॥

भैरवी—आड़ा चौतारा

गदाए बादशाए मुल्ला राए ।
किश्तो दर श्याम मेकुनम शोर दरवाहे
अजव कारे तुम शकल माजराए ॥

भैरवी—एकताला

तोरे रङ्गमें मैं मातोरे ।
बांह पकर पिया लेचले कोई सङ्गन साथीरे ॥

भैरवी—जलूद तिताला

तेरे दरसन की बान पड़गई मोकों ।
वाट चलत मोही रोकत टोकत सुन्दर वाकी आन ॥

२

काजर नदेहों सैयां दगावाज ।
गोरी के मुखपर कजरा सोहै सांवरी के नैना लाज ॥

३

असीताल व सोना दो दारदो ।
जिंद मलातो वारी चुप कर रहना आशिक रहदां
देते प्यारदो ॥

४

तुझको देख ललचायरे जियरवा।
सुन्दरवदनी मृगलोचनीरे निशदिन लागो तोहीसों
होयरवा ॥

५

एरी लाज बैरन भईरी ।
क्यों कर देखन पाऊं सुन्दरश्याम को एलाज कहे
यह नेह कहाहै नेह कहे यह लाज जरोरी ॥

भैरव—फरीदस्त

आहेना द्रदोम तदोम तदोयन रे तदरदानी तुम
तननन तारेदानो ।
तदोयन तदोयन तुं तननननन आहे दोस्तयललेयल
यललो ॥

राग भैरव—ताल सवारी

बरजो मोरी बहियां गहे कन्हाई ।
अगन बिच झगरत नित नित आय,
लङ्गरढोट कह्यो नहीं मानत धाय धाय,
लपट गहोरी कासे कहों यह बतियां सुनाय माई ॥

२

एरी मैंतो जागी सारी रात भोर भए पिय आए मेरे।
कहाँधौं रति मानी उन विन सुध बुध भूली मेरी।
पियकों मुख देखत जब छिन लछन जबहीं
पहिचानी प्यारे मैंतो वैन बिनोरो ॥

भैरवी—जलद तिताला

गुणी गायन चतुरङ्ग गाबोरी गावो अङ्ग चारिसों
सरिगम त्रिवट तिलाना।
सानिनि सानि सानि धपम ससरेगमम धधरे सारे
सा सारेगम गमपधनि सानिधपमगरेसा सानि सानि
सानि सानि सानि यललोम्यललोम्यलोयललल ॥
द्रद्रद्रद्रतननदोमदारादीमदोमदीमतनदेरना
देरनातदीमदोमतदीमतदोमतननेनँकिटिकिटिता
किटिकिटिकिटिथुंकिटिकिटिक्रांक्रांतक्रांतधुमकिटधा
धुमकिटधा धाधाधाधाधोनाक्रांक्रांक्रांधुमकिटि
तक्रांक्रांत ॥

भैरवी—तिताला

पनीया न पी वारी दातसों मोरा जियरा तोसें डररे।
कूकर कुइयां पताल जल पानी भरत भरत मोरी
कमर ढररे ॥

२

बांसरी बजाई जादू डाररे सांवलीयाने।
सुनरी सखीमें क्या कहूं तोसां कौन मन्त्र पढ़
डाररे सांवलीयाँने ॥

३

मोसों बोलदा क्योंनहीं बोलियां किस वेलेदामें
खड़ीयांवे।
तेंड़ो सूरत मेंड़े मन बिच बसोया असि हाजर वन्दो
तेरीयां किस वेलेदोमें खड़ीयांवे ॥ मो० ॥

४

सो मोरे सइयां भींजे लाल लहरीयारे।
चमकत बिजुरी वरसत मेहा भींजे मोरी लाल
चुनरीयारे ॥

५

अटरीया पिया बोलो नाहीं सोबत नोदीया जगाई।
हमरे बलम मोरी कदर नजानी मरोहों डरोहों नाहीं ॥

६

बोलन लागो चिरियां वे भए फजरवा बाजे गजरवा
हरि सुमरणको विरियांवे।
सोबत सोबत सब निश बीतो चेत पौछलो विरियांवे ॥

७

मुरली बजाई भली मनमोहनने।
मुरली बजावत सब रङ्ग भीने कलन परत घरी
पल छिन तनमें ॥

८

दिल बिच गुमानीडा यार मियां लाखा तेड़ा कुभदा।
चँपा जेहा तेड़ा रंग वेरङ्गी सोणा आँखा आवांदी
फाँक खुवदा ॥

९

मौला वारे मियाँ रखले दामन नाल।
चरण लगेदी लाज तुसानु जो चाहे करो पाल ॥

भैरवी—जलद तिताला

बालियां किन झमकाई मेरी याँवे।
बावुल दो वेरी वे वीरन दोवे तेरी सोंमें नहीं
खादियांबे ॥

२

पलमें होत विहान मोकों नोको सोवनदे।
निश सङ्ग जागो बलमा तोरे उमाहे अबतो मोरी
सीख मानले ॥

३

सइयां तोरे आगे मोरी अँखिया लजाय।
छोटे देवरा मोरी गोदीके खेलोना उन विन रहीलो
नजाय ॥

४

सोबत काहेकों जगाई पिया निरखो नाहीं नजरिया।
जो पिया हमसे रार करोगे मरहूं नटरीहूं फजरिया ॥

५

रे पनियाकों कैसेके काऊं कन्हैया तेने पनघट घेरो।
वाट घाट रोकत नित टोकत बहियाँ पकर झकझोरी ॥

भैरवी—जयतश्री

मैनुतो तलव दीदारदी यारदी भलावे मे ।
नाकोई बोला वारीवे नाकोई पुछदा वो मियाँ
शोरी नवरङ्गीला मेनु प्यार दीवे ॥ मैंनु० ॥

२

छदड़ जादीयाँ में तेड़ेवे गबरू यार दीदा माड़ा
साँवल साईयांवे ।
में हुइयां आइयां यारन आया कभीतो करजा
साड़े फेरीयांवे ॥
लकड़ो जल कोयला भयो, कोयला जल भई राख ।
पापी जियरा एसा जलो, कोयला भईन राख ॥

भैरवी—जल् द तिताला

दिल जोरोदे नाल गुजरार आईयां वे वीवां ।
सगरो रयन सानु तलफत बीतो भोर भए सानु
गर लाईयांवे वीवां ॥ दि० ॥

२

चलो सखीहे सहेलड़ी साँवलेनु मनावन ।
सइयाँ सखी मिलवी मायके लावो विन दीठे कल
नाहन ॥ सा० ॥

३

तेदड़ीयाँ रेदड़ीयाँ मेनु यादड़ीया निवे सोनियालें
वेदड़ीयां वले दड़ियां सेनड़ियां करें दड़ियां पूछे
दड़ियां नोसाड़डीयां हालडियां । नीवे ।
घोलड़ीयाँ नोघतड़ियां कितड़ियाँ नोछदड़ियाँ
जिंददि तड़ियाँनो करवानड़ियाँ नीवे ॥
आँखड़ियां सरमें दड़ियां नालगते दड़ियाँ
नी मोदड़ियाँ जाले दड़ियाँ सबरात तड़ियाँ नीवे॥

४

मोला तेनु चङ्गो रखे चङ्गे नैना वालोयांवे ।
तेड़ो सूरतदामें भए दिवाना चाल चले मतवालीयांवे ॥

५

वंशी वाले सोना रखले सानु नाल ।
विन दीठे मेनु कल नहीं पड़दी विन वेखेहो बे विहाल ॥

६

मैंतो वावरी नो हुइयाँ साँवल जाँदे विदेश ।
जङ्गल जङ्गल फिरदी दिवानो कर लोगनदा भेश ॥

(अथ व्रजनिधके)

भैरवी—ताल धमार

आज रससे आए जो मेरे गेह कहो तो डगन
डगमगे पग धरत हो नैन रङ्गीले रसीले ।
अतिहो बनावत हो अब वह बातें देखो पाग पेच सोंहैं
ढीले ॥
सब निशि सूरत रङ्ग में राते तातें कपट करत हो
मनमोहन रहै मौन गसीले ।
अब रस प्रीत रीत व्रजनिधजू कहाँ सोखेहो छलवल
घात छवीले ॥

भैरवी—जयतिश्री

आए जु आए प्राणपियारे रूप छके रस वस
मतवारे ।
जामनो जगे पगे भामिनो सङ्ग रहे नसम से अरुण
नैन तिहारे ॥
पीक लोक शोभित कपोल अञ्जन अधर अमबुंदन
जल छाय छवि भारे ।
व्रजनिध मदनदेव प्रज्वल करले भोरहो इत भले पधारे ॥

भैरवी—रेखता ताल पस्तो

दरद काभी दरद डारा दिल मेंतो धरो ।
वेदरद होना नहीं नजरमें फिर क्याकरों ॥
तुमरे नहीं है भाव कोऊ जोयो या मरो ।
अबतो रहोमको कीजेग मेरे दुख सब हरो ॥
व्रजनिध वेजोर होयके मैन पोर हरो ।
इश्क रङ्ग रङ्ग सूरत के रङ्गमें रहों नित भरों ॥

भैरवी—धीमा तिताला

सोणा वंशीवालड़े वे प्यारा जीतू फलज करो
मेड़ा साइयाँ ।
कंकदी फिरदी वारी नजरन आँदा साड़ी सूरत
विसारोयांवे ॥ सो० ॥

२

सोणा चारे वालीयांवे सोणा ओ तोकों गल करो
साड़े नाल।
सदारङ्गनु वारी हँस हँस मुख वेखलामी क्यों
भामी त्यों पाल॥

भैरवी—जल्द तिताला

सांवरेदे नाल सानु हिलि मिलि रहिये।
सुन्दरश्याम चरणन चित दइये॥
जोदमहै सो श्याम रङ्ग रङ्गीये।
औरांदे नाल नाहीं चित लइये॥

२

नाल ढोलनदे हिल मिल रहीये एजग जीवन मोठा
बोलनावे ढोलना।
चोली चुनी सानु माप्यानें भेजो और पढ़े सुवा
चोलना वे ढोलना॥

३

हौ नैना वालियाँ सानु सुख वेखलाव।
रैन दिना मैनु कलन परत है तेड़े वेखन दे चाव॥

४

जोगना में हुइयांनो रांझेदे उसो नाल।
जोगो रांझा जोगण होरि इश्कदा पाया जञ्जाल॥

५

जोगण हुइयांनो हुई तजे खेड़ादे वास ते एसे
मोहिनी सोनीयां देवास्ते।
तखत हजारा वारो सब कछु बसई देखे क्या देखे
तब वल रास्ते॥

भैरवी—धीमा तिताला

मेहर नजर नाल आशा बल वेखियां कितो तेड़ियां।
चोरी सोणा किस वेलेदी में कूंकदो खड़ियां हुना
हुइयां बंदो तेड़ियां॥

भैरवी—जल्द तिताला

खस खस की टटिया बांध आवे वलम मेरे जानो।
टटियाके ओट मेरे नैन लगे हैं सुन्दररूप लुभानो॥

२

बङ्गलवाको टटिया बांध आए वलमा देख डरानो।
टटिया बांध मेरे नैन लगेहैं फेंक लकड़ीया मारी॥

३

जोबो लाख बरस जीबो लाख बरस हो तूं माड़ा
साइयाँ सोणा खेड़ा सलामत तेड़ावे।
रात देहा महोब्बत तुसाड़ो लगा रहटा ध्यान तेडावे॥

४

रातके उनीदे नैना काहेकों जगाईवे।
नामें बोलो नामें चालो विरहा आन सताईवे॥

भैरवी—तिताला

मेरा प्यारावे चोरे वाला यार मेरावे मन लेगया।
साड़े दरद वारी किसनु सुनावे मेड़ो जिदड़ोनु
दुख देगया॥

भैरवी—जल्द तिताला

चाहोयांवे मानु चाहोयाँ तुहींतो सांवल सांई
चाहियाँ।
सांवला तुसाड़े वारी गोकुलदे साईयाँ राधे कीरतदी
जाईयाँ तुहो तो सांवल सांई चाहोयां॥

२

लाईयां वेमेनु लाइयां कहीयां तू तंगा छेलो
लाईयां वेमेनु०।
रांझा तू तखत हजारेदा साइयां हिरसोया लेदी
जाईयां वेमेनु०॥

३

बसदे लोग विगाने सईयां नवेलियावे दूरन जामो।
मिन्नत करदी वारी वे पायन पड़दी मेंड़ा सोना
रव कर मुड़ आमो॥

४

मौला मिलावे मेरी और खुशी माथ दिखावे।
तेरी कसम बेऊ देत दिल रङ्गहद वेकरार और
खभी न मिलनेके दुख उसके सब में सहे भला अने जोसे
वह जोता रहे॥

५

यार दावे निजारा दमदा मेंतो साड़े नाल पङ्गोया
मेड़ा मोयांवे।
दे दोदार जमाल करदे तेड़े मिलननु चावमें दमदा
अदारङ्ग मेड़ी गला नहीं मान दावे॥

६

अबमें राम राम कहि टेरों।
मेरे मन लागो उनहींसों सोतापतिपद हेरों॥
चरणसरोज श्रवणमन मेरो भुज अङ्गुश सुख केरो।
तानसेन प्रभु तुम बहोनायक इन तरवन पर फेरों॥

भैरवी मध्यमान—तिताला

क्योंजो पीवो प्यालो सजन अत केफोहद कान
साहोवे प्यारे।
उदोतसेन लोगोदो बदनामो सह देवे प्यारे॥

२

फेर कहदा मेनुवे छलिया छलिया।
आंवदा जांवदा होय दुख देला उदोत उसनुमें
इहा कद दीवलोया॥

३

कौन गत भईलो मोरी आनन मिल पोया मोकों।
उन विन कलन परत घरो पल छिन कैसेके रैन
बिहाय मोकों॥

४

इश्क लगा जादूड़ा कमाल कीतावे।
मेड़ा जो तरसाया अब जिगर पर बीतावे:॥

भैरवी—रूपका

रात सईयां तोरे गरे लाग मैं बड़ी चैन सों सोईरे।
बालापनमें खेल गमायो सारी उमर योंही खोईरे॥

भैरवी—जल्द तिताला

उठो हाथ मलमल पछितानी रैन चैन सब बहोईरे।
अब पछताए कहा होतहै असुअन सों मुख धोईरे॥

२

सजन सकारे चल बसे, मोसे पूंछीन बात।
सोवत सों रोवत उठी, पाटो पटकत हात॥

३

देदरदांदी लगा दिल एवे कीजाने इश्कां दाग जालम।
उदेत उनसों तू नहीं मिले तेनु याद करे वेग
मिलजा जालम॥

४

टपाटपका रसकी गांठ प्रेमका घूंट पीवे सोई जाने।
इश्कदा गुल फुल शोरी मियां खुशवु आंदो जब चढ़
जांदी दमदो आने॥

५

विरहदा जानो यार बे मेंतो मरदोयां खाँदिम
तेरा झुकझुक नैनादा तीर।
शोरीदे मेनु रव देखमो जांदे जांदे रति झुक झुक
नैनादा तीर॥

६

रे सारी रात मेनु तेड़े कारन नवेलो काँदो बंदोया
सहदे विहानो।
लागदो जागदो इनको आँखि लगई शोरो गलांदो
थां सोया सयानो॥

भैरवी—तिताला

नैनो नैन तकदो चुपकोतो मोयाँवे छांड़ क्योँ चला।
मटपई चक चाकरी खेंड़ादो शोरो जान दिया
तेंड़ा मला॥

२

दो नैना बेनो आगे बेसपाईड़ा तू राजो रहना मेरीयां।
आपन आवे वारी वे लिखना मैंजे मेरा सोणा
सुख बसे मुलतान॥

भैरवी—जल्द तिताला

हांवे ढोला मन पर बोदोया हांहांवे जङ्ग सोया
लेदा जटिया हांवे॥ ढो०।
आखे लड़ांदो भोंरा मटकेंदो चित चढ़ जादोयां
हावे॥ ढो०॥

भैरवी—तिताला

देदा क्यों नहीं दाद बेसाहब मेरेवे।
रैन दिना मेनु ध्यान तुसाड़ा बे किस नाल करे
फिरियादवे॥

भैरवी—जलद तिताला

अजब तरह की बातें हैं जो हससे तुमसे दिल लगाया
फेर बेबफाई की।
समझ लेतू अपने दिलकी बातें हम सानु फिर
निठुराईकी॥

भैरवी—धीमा आड़ा तिताला

मस्तनु कोई पूंछदे जिनादे इश्क कीता हड़ केहा।
घायल मायल ढूंढ़दो फिरदा दिवाला साईंदे
नाल रता॥
लगदा इश्क छुरी मसलत उघर गइयां पजा सताँ॥

भैरवी—एकताला

किन फकियां वेमोयां तेंड़े काना बीच एहो गाला
भुठीयां साड़ोयां।
बीच पगरादो वे पाई तरफेदोयाँ मोयां मुइ पइयां
दम नाहोयां॥

२

इस हालमें कछून लिखव मेरो तुम साहब में
चेरो तेरो।
हाल हवाल कोजगो खबर तुमी पार करो अब नाव
अजमेरी॥

३

मोयां दमके रङ्ग चमके झम झम झमके वालीयां।
शिर सोहै पल्लू जरजरोदा दिलनु देखत भलो लगदो
वालियां॥

भैरवी—जलद तिताला

तू सोवोरी सोब तिया सइयां के सङ्गरे जायरे।
जबसें सइयां मोसे मिलके विछुर गए तबतें सोरी
छतीयांरे॥

भैरवी—धीमा तिताला

मेंनु दरस दिखाजा दरकदि आइयोरे जानी।
तुझ कारण वातरो जोग कमाया सोणा दिलदो
तपत बुझाइयो॥
तुझ बिन देखे मोहे कलन परत है आकर हितसों
लगाइयो।

सरसाई मनभाई कर कर अचपल पीय घर
आइयो रे जानी०॥

२

तेड़ी भुवें कालोयां वे आखा सुनो नैनादो
नोक सभाल।
वहँ मस्त सुरि वसद पेच ताव गिरहँ दाद शवरामशे
आप तब॥

भैरवी—तिताला

तेड़ो अखड़ियाँ मेरो मन हरलोनो देखतहो सुन
दशरथ ललवा।
होंतो भई बावरीसी अब डार दियो पढ़के कछु
छलवा॥
फिरिहौं सङ्ग तुव बदन बिलोक तानदरस वेपुर
गुरुजन वलवा।
गमसर वे छवि देख विवस भई कलन परत घरी
घरी छिन पलवा॥

२

समझ बूझ बर खोज वोयारे आशिक होकर सोना
क्यारे।
पाया होय सो करले सौदा पाय पाकर खोना क्यारे।
गुल वहो जगो गुलहो पहिचाने काट काट
फिर बोना क्यारे॥
रूखा सूखा गमका टुकड़ा फीका रस अलोना क्यारे।
शाहोसेन फकीर साईं दा शीश दिया तब रोना
क्यारे॥

३

तेड़े नाल वो तुसी जानन जान मेड़ी जान दिल लाया।
मोयां सुखडा वेखननू जो तरसे मेड़ा गवरू आधीन
को सताया॥

४

नैन करेंदे सैनरवा हाँवे हो दिल कीता वे चैन।
गवरू आधीन नाल पोत लगा कर यार रहन लगे
दुख दैन॥

लेहव पियरवाके विन दीठे मेड़ जानो क्योंकर
आवे चैन।
गवरू आधीन तेड़ी याद विच रहदी वलना परे
दिन रैन॥

७

मैनुभी लेचल नाल मैं तेरोया जिँदोति वेहाल
मेरीयांवे।
गवरू आधीन वारोवे कलन परेदो नित रहदा वारो
अब ध्यान तेरो यांवे॥

भैरवी—धीमा तिताला

सुध काहे मोरी पोयाने विसराय डारोरे।
ववरू आधीन सुनो मोरे वालम नेहा लगाय
हम मन हारोरे॥

२

पोया काहे मोरी पीरन जानोरे।
ववरू आधीन तोसों सौ सौ कही प्यारा तें मोरो
नेक नहीं मानोरे॥

३

मैंड़ा जिन्दड़ो तैंपर बारोवे असी विरहदी वारोवे।
ववरू आधीन दीठे हुन तेंड़े तोर निगह लगा
कारोवे॥

भैरवी—तिताला

जोयको विथा में तोसे कहियाँ तें मोरी नेक
नमानोरे।
ममझ सोचले ममर्में सइयाँ मेरी प्रेम कहानोरे॥
ववरू आधीन अब मन लागो तोसों तुम मोरो
नेक न मानोरे॥

भैरवी—धीमा तिताला

बकस गुन्हा साँईं अल्ला तैंड़ि बन्दो हुइयां।
तुंही करीम तुंही रहीम तेरे हात निवाह मेरीयां॥

२

क्योंसोणा मैंड़े प्यारा हंतो दुतो नाल रैन सुजारे।
आशक जिँदबार फेर डारे रङ्ग भोने यह कहे
कहे हारे॥

नहीं डरदे दिल दुखवनवारे शिर पर चलदे नित
करदे आरे न्यारे॥

भैरवी—जलद तिताला

मेने तेंड़े घोलो घति कोतियां जिंद कुर्वान।
मालपा कर सानु घायल कोता सुनवे महबूब सुजान॥

भैरवी सिंधी—धीमा तिताला

मानु तलब दीदारदो यारदो मेनु।
जग सियालेनो वे राझन मिलोयां मोयाँ आँखे
दीठो मानु प्यार दीयाँ मेनु॥

२

सोणा यार मिले मैंड़ा रवावे मिलामो।
आठ पहर मानुवे ध्यान तुसाड़ा वे मियाँ मौला
करे तुमि जिन्दा रहोयो यही माँगदो दुहाई॥ सोँ०॥

३

एमन मेरे श्याम हरोरो गुइयाँ।
मुरली को धुन सुन मईहूं बावरो मन अटको कोऊ
लाख कहोरो दैया॥ एमन०॥

४

साँवलोया ने जादूडारा मेरा बाजूवन्द खुल खुल
जायरे सा०।
जादू डाला तूने भला कियारे अचरा खुल
खुल जायरे साँ०॥

५

चलो मिला लगाहै बगोयामें ढूंढन जाऊंरो।
इस बगोया में पिया मिलेंगे हम हंस गरवा
लगाऊंरो॥ चलोमे०॥

६

मन सांचोई सुमरन करले हरिके चरण चित
रखले। एमन०।
काहे कों भटकत फिरत बावरे हरिके चरण तूं
धरले॥ एमन०॥

भैरवी—जलद तिताला

साँईंमें सचा पाया जट अपना इश्क लगायारो
गुइयाँ। मैंसा०।

दुनीया दौलत माल खजाना नाहक भरम गमायारी
दईया॥ सैंसा० ॥

२

कोई दीजो विरहदा कंगना एरी मैंतो ढाड़ी
विरहकी मातीरे। को०।
इस कंगनेसें लाल लगेहैं हीरा लगे मोति पन्नारो ॥
कोईदो० ॥

भैरवी सिंधी—धीमा तिताला

साँवलियादो जोर मोहब्बत इश्कांदे नाल आँखे
माड़ी लगदी।
नेहा लगा कर मैनु भूल क्यों गयावे मेरा मोयां
तेरे रखे नहीं रहदो॥ भलावे सां० ॥

२

नैनादा सांई भला लगदा सजन सांई
भला लगदा प्यारे नैना तेड़ा नदाना वेनिजारा।
आखेनु समझावे दिल वर होंदा होंदा क्यां नहीं
दम दमदा गुजारा ॥

३

बींवा वे माड़ो दुखोंदो कान्होदी वालीयां गाड़ो
होले होले छेड़ बींवावे।
कणका पकीयांरे घर कामननी आएना घर ढोला
वारी आमादे जाए जोवे वेखेवे उथे लोक घराए ॥
चहुं ओर वेले वेखड़ोनि कूंकांए मैनू लेचल अपने
नाल वोवावे मैंतेडे नाल राजो हुइयां।
बोल पपीहारो तू सावन आए चहुं ओर मोर बोले
कूक सुनाए राह मुसाफिरानू घर भेज वीवां
में झुक रहियां चंपेदी डालियां ॥

पड़दीयां धूपा वो साड़ा जोय दुखेदे रव रव कहै
असी साह कूकै देई हुथे साड़ा जोथे धउ कैंदे
आमिल हीरदे नाले रायांवे गवरू तैंड़े नाल राजो
हुइयां।
ढोले वगदियां एहो मुरादे मगदीयाँ इनकानुगो हो
लिखन हारेनु पगदोयाँ जिन्दड़ोयां असो तैंड़े
नाल लदीयाँ ॥
ज्योंज्यों घन गरजे त्योंत्यों जीयरा लरजे दीयां
बीबांवे तैंड़ी वाटड़ो खड़ो जोवां सोणा हीर नाल
दिल पगीयां।
एकतो अँधेरी दूजे रातो कालीयाँ मान करेंदे घर कैंथा
वालीयां ॥
आमि आमि वेतू मेंड़ा चन्दा चोलीदा लड़कन
मैंड़े सोने में बन्धा ढोलन दे चला नेवे वगदीयां।
कुरोयाँ साड़े दिलदे अन्तर मानु लगदोयां नीबुरोयां ॥
कंथ विछोड़ो दूजे रैन कालियाँ खड़ोनि कूँ कैंदी मैं
चंपेदी डालियां।
साड़ा दिल लगा तैंड़े नाल बींवावे
मैं झुक रहियां विरछोदी डालिया गारिहों० ॥

सिन्धु भैरवी—तिताला

सखी अपना पियामैं पाया।
सच्चा इश्क लगायारी गुइयां ॥ मैं० ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह सब दूरहो डार बहाया।
सोवत जागत विहरत निशदिन हरिचरणन चित
लायारी सखी०
कृष्णानन्द मैं रङ्ग रहोहूं यह गुरूने भेद बतायारी ॥

२

धुन सुन घरन सुहायरो गुइया वंशी बजावे
बाकों मारूड़ा।
सप्ततीन इकईस मूरछना लाग डाँट बजावे ॥
सुर नर मुनि सब भएहैं शिव सनकादिक सुख पावे।
कृष्णानन्द मं मगन भएहैं मुरली रसिक सुनावे ॥

३

बीबावे माड़ी बातडिया सुन जाइयो छलड़ा भलड़ाँ
बाँकड़ा तिखड़ा निकड़ा सांवलड़ा सोना वे॥ माड़ीवा०
तैंदड़ी सूरत सारे मन वश गइयाँ रङ्गड़ा चुनड़ा
मारूड़ा ढोलना बीबांवे० ॥

सिन्धु भैरवी—एकताला

एरी गुइयाँ अपने करम कीयाको सोच पोत
मानो जैसो ओस।

हम तुमको क्या समुझावें आसी अब काहू कों दोष ॥

२

मैं क्या जानू पीत करी पछताईरे ।
बेकदर बलमा मोरी कदर न जानी आईरे कछुन मैं पाईरे ॥

३

पिय प्यारेको गरवा लगाय रखतो ।
मेरा कहा एक मानत नाहीं ठाड़ो रहा माला जपतो ॥

४

अरो एरो गुइयां लागी कलेजे फाँस निकसत नाहीं मेरो साँस ।
नैन थकित भए धंधुरू तन मन भयो सुकास ॥

सिन्धु भैरवी—तिताला

एरी भीजो दारूड़ा पिलावै बांका मारूड़ा ।
सोरेदी सुराही पोनेदा प्याला गरवा लगावै नीक मारूड़ा ॥

२

जादू जादूरे सांवलीया नैना वालीयां ।
तेरो जुलफैं सोहै घुंघर वालिया तेड़ी बांको भौहैं मुझ मारियाँ ॥
तेडी लटक चाल पर वारी सांवलवा रंगाई तेरी चितवन तिरछो मुझे प्यारीयां ॥

३

रङ्ग रङ्गावे गुले अतर चमनमेल किन खिल गया ना फरमा मेरे मनमें ।
गुले लाल गुलेना फरमा हजारा गुले हमचूं हमचूं गुले सोनानका नजारा ॥
बोतो आपी हजारो दिलवर हंजरी राग बीच गुलशन ओ गुलटारा ॥
नूरदे नूरदेरवा नूरदे अल्लहनू चीर देखे तू सूरतदा प्यारा ।
लेकिन जिसके तनमें लागे सोई जाने सागरी का जैडा वस गया मेरे तनमें ॥

४

राति कोरा राति कोरा राती कोरारे ।
राती गोरा राति भोरा राति चोरारे ॥
रङ्ग रङ्गके रङ्ग में रङ्ग बोरारे ।
राति कलियां रङ्ग रलीयां रङ्ग भौंरारे ॥

५

राति जागे राति पागे राति भौंरारे ।
राते माते जाए नींदें के भौंरारे ॥
मइको लोया रङ्गरलिया मलिया मलियांरे ।
कवि लागे भलियाँ रलियाँ मलिया भौंरारे ॥

सिन्धु भैरवी—धीमा तिताला

हे सखी सुध श्याम को आई कहा करों जिय थिर न रहाई ।
सोवत चोंक परी पलंगमें तलफ तलफ सारी रैन विहाई ॥
ना कोई एसो हितू हमारो जासों वेदन कहौं सुनाई ।
कवि नायक जो आन मिलावै ताके दोउ कर लेउ बलाई ॥

भैरवी ठुमरी—तिताला

आवो पियरवा वेग दरसदे क्यों तरसावे मोहिरे ।
तलफत तलफत कैसे कटै निश दिन जबसे गए विछोहेरे ॥
कहा करूं कछु वश नहीं मेरो ना जीए धीरज होहैरे ।
कविनायक पर कृपा मिलो जो नैनन राखे मोहिरे ॥

भैरवी—जयतश्री

मिथ्या जनम जात जग माहीं ।
जो सुख लाग भ्रमत हों निश दिन सो सुख जों तरवरकी छांहीं ।
अबहूं चेत हेत कर हरिसों सुर नर मुनि जाको ध्यान धराहीं ॥

छवि नायक संशय सब मिटिहै अभय करैंगे
गहे दोउ बाँहो ॥

भैरवी—झालीया ताल

कर याद रवाको दम बदम निश दिन घरो घरो
पल छिन हर दम ।
टेढ़ो घड़ो विसराय डार वहो राखे लाज शरम ॥

सुमरण कर हरि का दम बदम जामें रहै तेरो
लाज शरम ।
घरो घरो पल पल छिन छिन निश दिन मनन
बिसारो परो हरदम ॥

भैरवी—ताल जत फारसी

चुँने वाजम होरिमा महरू आमि वत्ख वहरमद ।
रङ्ग आमेज बखूबों कर दम रूये गुले रुखे लालेरा ॥
मे पाशंवर अराजे खवा अतर अबीर गुलालेरा ।
अज मएना बाब मंदेशा वोमो शमे वोस
कीनारा मद ॥
होरिमा महरू आमि० ॥

२

कल कुछ जो आय गई यारो तुममें बैठ बैठ कुछ
मोको लहर मेरे मनके अन्दर ।
चला गया धुनमें अपनी उस परो के घर के सहन
के अन्दर ॥
देखा रूसाप तन तन तनके अन्दर रुमक डामकया
जोरथा चितवनके अन्दर ।
दिल कों मौज भई देख देख कर वदनके अन्दर ॥

३

धन घरी धन पल धनहो महरत धन धन
आजको वेलो ।
धन वृन्दावन धन वंशीवट धन यमुना करतहै केलो ॥
कृष्णानन्द रङ्गमें रङ्ग गई रहोहूं आप अकेलो ॥

भैरवी—तिताला

अब लग रहे अचेत चेत मन छाड़ जगतको आशारे ।
यह तन अपना अचलन जानो जों घुलजात
बतासारे ॥
सुत बनिता सों नेह जो कीन्हों पहिरो मलमल
खासारे ।
कोटि जतन कर कर धन जोड़ो सङ्ग न जैहै मासारे ॥
बहु बिध चुन चुन महल चुनावत करहु इहांको
लासारे ।
सो सब मिथ्या जान बावरे पल पल पलटे सांसारे ॥
एक आवत एक जात चलले अब यह जग यहो
तमासारे ।
छविनायक हरिनाम भजन बिन होइहैं
यमपुर त्रासारे ॥

२

बाँसरी कन्हइयाने बजाई आली आजरो ।
तनक भनक सुनत सुध न रहो तन विसर गई
गृह काजरो ॥
छूटो संयम खान पान और टूटी गुरुजन लाजरो ।
छविनायक अधरन बस निश दिवस कोने ब्रजराजरो ॥

(बंगला गान)

भैरवी तथा खरवा—ताल तिताला

ओर ओ गोकुलोवासो, केमोने बजावो बाँसो ।
तुमि अन्तरे बजावे बाँसो, आमार अन्तरे
पशिलो आशो ॥
चूड़ाय मयूरपांखा मुखे मृदु मधु हांसो ।
एकि अनङ्ग शयत हये कदंवेर डाले बांशो ॥
वेणुर वेणोर वहैये एसब ब्रजवासो ।
दुकुल हराइ तार यमुनार कुले आशो ॥

२

अरेहो काला आमार मनतो मानेना ।
एकते चिकनो काला, गले शोभे वनमाला,
हाथे शोभे मोहन वांशो, मुखे मृदु मधु हाँसिरे ॥

३

श्यामेर वंशो किहोले घोरे राहि तेना दिल ।

सुनि जे श्यामेर बाँशी, मोने होइलो उदासी,
कुलो मानो सबे गेलो, बाँशी कुलो नासोलो ॥

४

सखोहे प्राण आमार विरहवा चेना आर ।
बाँसरी सुनिलो सजनि दिवस रजनी रुदन कोरिछे
वार ॥

५

आर केधोना राधा प्यारी तुमार एलो वंशीधारी ।
जार लागे दिवा निशि रुदन कोरीते बोसो
सनमुखे धाइये देखो मोहन वंशीधारी ॥

भैरवी तथा सोरठ—जलद तिताला

कि अपरूपो हेरिलाम जमुना तटे ।
गजे रूप देखे छिपटे, सेइ वंशी बटे बटे ॥
त्रिभङ्ग अङ्ग हेरिए, अनङ्ग अङ्ग छाड़िए,
आसे बूझिलो काये कोटीतटे पीतपटे ।
मोनो होइलो व्याकुलो, आर नारहे गोकुलो
आशु सदुपाय बोलो केमोने घटना रटे ॥

भैरवी तथा भीमपलासी—तिताला

लागिलो नयने मोने किखने ।
नवीन किशोर सुन्दर अइ सोई यमुना पुलिने ॥
आरतो किछु भालो लागेना बुझिना रहे कुले
मुरली सने चलिते चरण बांधे चरणे ।
पदे पदे आरोपिये त्रिभङ्ग अङ्ग हेलाइये
इन्दीवरो निन्दीए नीलम्बरने ॥
नटवर वेशे मृदु हांसो मोनासे सखी राखो केमोने ।
आरो ताहे राखो शर सन्धाने ॥
भालो बांसो बोले तेइ कि एतो दुख दिले ।
अबला सबला पाये पाथारे भसाईले तेइकि एते
दुख दिले ॥

भैरवी—एकताल

बामा हरो हृदि परे विहरे केरे ।
हेरो उलङ्गे दज सङ्गे रङ्गे रंग करे ॥
लोलो रसना भीषण दशना खारो असि करे ।
ईषत् हासे दिक् प्रकाशे असुर संहारे ॥
अरो शिरधरा बराभयकरा घोरो रव करा
पीनो पयोधरा श्याम अङ्गे शोणित धरा वदन विस्तरे ॥
चन्द्रभाल मुण्डमाल गलित चिकुरे ।
दानव गर्व होईलो खर्व आशुतोस हरे ॥

सिन्धी भैरवी—तिताला

हृदि पद्मासने केरे विहरे मा भैरवी ।
चतुर्भुजा अक्षपूतो माला वरमा भैरवी ॥
रक्तवर्ण त्रिनैना मुण्डमालोद्भूषणम् ।
भाले खण्ड शशी प्रतिपदे प्रभा करे रवि ॥
सुने सुने मनोयोग करो यहो मनोयोग जदि है
अयोग जोग शिव होइये पदे रवी ॥

भैरवी—जलद तिताला

भीष्मजननी भागीरथी मा गंगेगो ।
तारण कारण भवभयतारण स्थावर जङ्गम
कीट पतङ्गेगो ॥
हरिद्वारावती अतिद्रुतगती अनुमनी धन गङ्गेगो ।
सगर सन्तति जारे दिते गति विरह सागर सङ्गेगो ॥
कारणवारणी पतितउधारणी नारायणी दुव शङ्केगो ।
कलुषे कातर कालो कलेवर घड़े शच पाप तदङ्गेगो ॥

२

भैरवी भवतारिणी भागीरथी भवानी भवरानी ।
भवसिमन्तिनी भवसी भीषणा रूपिणी तुमसी
भूप वेहाहिनी भवभयभजनी ॥

भैरवी—धीमा ताला

कामली बोलोडा कोरे सोदा ।
सुखा सुचोनाहि इथे नाम लीते कौनो माते
वाधाको मोन ॥
आशो दीवे निशि कोरिलो भ्रमन
तबतो न गईला तुमार विषय येधोधा ॥

२

परे जो परेरोपरे वृथा ए जतन कोरे आपनो
भाविए पोरे आघातो प्राणो पोरे ।

परे शोभा वीए पोरे सुखी हों परस्परे एहान भावो नको
अन्तरे किहवे एहार परे ॥

सिन्धी भैरवी—ताल तिताला

राधाकृष्ण गावोरे काहे को भुलानो मन ।
कूकर सूकर खर जौन जिनावर हो वारो चोरासी
सों छूटनो अब पायोहै मनुषतन ।
बालापन बालसङ्ग तरुण तरुणोसङ्ग ऐसेहो
बितायो प्राणी लागो अब चोखेपन ॥
जगत स्वारथ साचा तेरो साथी कोऊ नाहीं
मृगतृष्णा नीर जानो दारा सुत धाम धन ।
सो करे सहाई कोनो संतनके सुख दीनो
सुनके शरण आयो कृष्ण रङ्ग दोनजन ॥

सिन्धी भैरवी—ताल जयतश्री

मिलवेकों मेरा जीय चाहैरे तुम आन मिलो
मेरे प्यारे ।
कहा करूं कछू कहन सकतहूं इतनी अरज मेरो
माँनोरे ॥ तुम आ० ॥

भैरवी—तिताला

मियां मैंतो चाल पहचानोरे तेज नजरसों
जानी मियां ।
सूनें पाएन दहन सें तेरे दुशनाम तमाम जभी
शेल भोनें अपना तो किया काम तमाम मियां ॥

सिन्धी भैरवी—तिताला

साँवले साईंहों दिवानो तोरे जोबना को साँझ
सबेरे ढूंढ़ फिरोहूं कुंज गलोन वृन्दाबनको ।
कहा चाहत उसवो दरदी को खबर नरखे जो
काहू चनको कभी हलाहल कभी है अमृत
यासन पूंछ इन चितवनको ॥

२

तेरी चितबनको मेंवारो बांकेरे सिपैया ।
यासं तोरे देखत चितवत बरछी लगी जैसे कारीरे ॥

३

गरवा लगायले सइयां न मानोगी न मानोगी ।
मेरे पीया तोसें ध्यान लगाहै बरबस बहियाँ
झक झोर ठानोगी ॥

४

हांरे वींबाबे रजवाड़े का जाना छांड़दे हो जटोरज० ।
रजवाड़ेदो जालम जटियां जाय बसो रजेबाड़े
सौणावें ॥ र० ॥

५

राणाजी मेंतो गिरिधररा गुण गास्यां ।
तुमारो तो प्राण चरणामृतरो नित उठ देवल जास्यां ॥
गुरुप्रताप साधरी सङ्गत सहजहो तर जास्यां ।
मीराके प्रभु गिरिधरनागर चरणकमल लिपटांस्या ॥

६

सदके जादा याइन तेंड़ेवे सांवलायार ।
वंशी बजाँवदा गाय नचाँवदा करदा सानु प्यार ॥

७

कोयल बोले शब्द इस बगीयामें ।
इस बगीयांमें फूल लगें हैं जो सइयां तोरे पगीयामें ॥

८

चीरेवाला यार मेरा मन लेगयो हो ।
दरद साड़ा वाको किसनु सुनावे मेड़ो जिदंड़ो
ने दुख देगयो ॥

९

भाल मेंड़ो जानवे तेड़रे कारण लानवे ।
इत सहबूबांदो बात बनेदो वे मोयां एहि गलामें
तौचड़ी वैठोले बैगन यारवे ॥

भैरवी—धीमा तिताला

फूली संझिखे वेखू बहारदा वेसोणा सोणी
लगदा मुखड़ा जानो यारदा ।
शोरी हजार गुलना फरमानीदे सदके कोती
सदके जानो ॥

२

जानी जीयरातें बाजवे मोयां माड़े मरदानीं
भी संभालवे ।

आँखि लड़ खटकदी मटकदा दिल कीता कलेजेरे पारवे ॥

२

मेरे पीयानि भेजो गवनवारे अबन होय अबनवारे।
मिलनो मोरी एसखी सहेली फिरन बनोहै मिलनवारे ॥

सिन्धी भैरवी—ताल धमार

झोखानु संभालवे छाड़ मेंही धुर आमि सबेरे
असो तुसाड़ड़े कोलवे में तेड़ेरे नालवे।
बावुल सहदा चाकवे वीरन सहदा चाकवे असो
तुसाड़ारे कोलवे में मोंही तेड़ो चालवे ॥

इति श्रीभैरवी रागिणी सम्पूर्ण:।

भिंभोटी—ताल चौताला

आलीरो झूम झूम झुक झुक परत भूमि पर घूम घूम।
दृष्टि परे नन्दनन्दन जबते मनमें परोरी मेरे काम धूम ॥
कलन परै निशिदिन घरी पल छिन हेलो मारत विरह उमग दूम।
जानकीदास प्रभु श्यामसुन्दर विन अतही बेदन रूम रूम ॥

२

सुन्दर छवि छाजत राजत मोहन कहा कहों
रूपकी निकाई मोसों वरनी नजाई आली एसे श्याम कन्हाई।
श्रवण कुण्डल मकराकृत कटि पीतवसन हाथ लकुट
मुख मुरली मधुरधुन गावत अति सुहाई ॥
सप्त स्वरन और तीन ग्रामले बाईस सुरत उनचास
कोटि तान लाग डाट लखाई।
ओड़व खाड़व सम्पूर्ण आतक खातक खाराँतक
बादी विबादी सवादी अनुवादी तानसेन लेरिझाई ॥

२

सुन्दरबदन पैलोयन बार बार परत करत घर जीयमें
आली तेरे रूपकी निकाई।
गुलफकी सफाई कहूँ ग्रीवकी गुलाई
कुचनकी सुन्दरताईके कटिकी क्षीणताई निरखत
ही सबनके मनदास कीने यही अद्भुत चित्र कर तार
बनाई ॥

४

तुम्हारो प्रीत ऊधो पूरब जनमको मनहु भयो मोरे
जीयके गरजो।
बहुतकदे वश मङ्ग रहे ऊधो सङ्गको विछुरो
हमहूं भई मरजो ॥
अगम निगम जो भरोई रहतहै आघटे न बढ़े
तो लेउ नरजो।
सूरदास प्रभु बहुर कहांलो तन तन भयो व्योंत
मन भयो दरजो ॥

विष्णुपद भिंभोटी—धीमा तिताला

कुवजाने जादू डारा निरमोहिया श्याम हमारारे।
निशदिन चलत रहत नहीं राखे इन नैनन जल धारारे ॥
अबये प्राण कैसे कै राखूं बिछुरत प्राण पियारारे।
ऊधो तबते कलन परतहै जबते कान्ह सिधारारे ॥
अबतो मधुबन जाय लेआवो सुन्दर नन्ददुलारारे।
सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारारे ॥

भिंभोटी—ताल तिताला

सांवला मैनुं भांवदा।
सोहनो सूरत रङ्ग भरो मूरत नैनादी सैन चलावंदा ॥
आंदा जांदा बेण बजादा वे शाड़ा दिल ललचांवदा।
जानकीदास नन्दनन्दनदी कवि लखि लखि सुख पांवदा ॥

२

एते दिन नहीं पायावे तेड़ा मरम।
जगमें दोष कौन को दीजै दोष किह्यां साड़े करम ॥

दरस दिखायजा प्रीतमप्यारे लोक धरैगा साड़ा भरम।
प्रेम दिवाना कहै मस्ताना देव दरस कर धरम ॥

३

महोब्बत बाँसरी बालेसों जोरोरे।
लोक कहत कारी कामर धारो मेरो लाख करोरी ॥
लोकलाज कुलकान सबनको ले यमुना में बोरी।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों अबिचल रहों
यह जोरी ॥

४

रघुबरलाला पीताम्बरवाला हो।
क्रोट मुकुट मकराकृत-कुण्डल उर मोतिनको माला॥
साँवलीसूरत मोहनीमूरत सुन्दरनैन-विशाला।
जानकीदासको शरण राखले निज-भक्तन-प्रतिपाला॥

५

तेरी वंशीने जुलम किया वे।
तानकमान बिरहरे मारे वेधा तन मन हीया ॥
वेदरदी तोकों दरद न आया मैं क्या तेरा लिया।
जानकीदास सांस अध शसकत जीया तो जीया न
जीयाहो ॥

६

कोई दम बोल दे दी असनाइयाँ।
माय बाप भाई कुटम्ब कवीला सङ्ग चले कोऊ
नाहीयां ॥
नरतन पाय भजे नहीं हरिकों नालत उसके ताइयां।
बार बार अबसर नहीं पावै लाहक जनम गवाइयां ॥
हरि भज लीजे कपट तज दीजे और नहीं जग माहीयां।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां॥

७

भलावे घर कीधे नीवे समझ नदानीयां।
एवी एवी राहे कीथ्धे जाँदड़े न दीठा मेड़ा प्यारियां
मीर मूलक सुलतानीयां ॥
आपही पाले आपही मारे जवराईल बहानीया।
शाह हुसेन फकीर रवाना मेड़ा प्यारियाँ विन
मसलत उठ जानीयां ॥

८

अजब अचंभा दुनीयादावे।
तरह तरह का रङ्ग बनाहै जैसे चमन गुलमुनीयादा ॥
कर हरिभजन मनुषतन पायो दात पूरवला
पुनीयांदा।
जानकीदास लखे कोई बिरला होय चेला गुरु
गुणीयांदा ॥

९

यार तेड़ो गला जबही याद आदीयांहो।
जानकीदास खासरु करहदी अखीयां जल बरसौं दीया ॥

१०

विलम रहे पीया कोने देश।
जारे पथिकवा लेआवो पतियां पीयको सुनावो
सन्देश ॥
बीती अवध अजहूं नहीं आए खेत भए शिरकेश।
जानकीदास श्याम मिलवेकों करूं जोगनको भेश ॥

११

दुनियाँदा अजब अचंभा दम गनीमत जानवे।
नातू पवन नातू माटी है तू कौन पहचान ॥
होगए भूप रूप धन सूरे रह गया नाम निशान।
समझ खेल कर केल जगतमें जानकीदास तज मान ॥

१२

सइयोंनी मैं साँवल ते नाल सङ्ग सोइवे।
कोकहों सखी रतीयांदी बतियां श्यामसुन्दर
मन मोहिवे ॥

१३

एरी मेड़े नैना लगे नटनागर नन्दलालसों।
वंशी बजादा वारी जीय ललचांदा साड़े दिलनु
चेटक लाँवदा ॥
जानकीदासदे मन विच भाँवदा चञ्चल नैन
विशालसों० ॥

१४

मत मारोहो प्यारा नैनवा निदरदी छैला मेड़ी जान।

जानकीदास निमानु रखले सुन्दरश्याम सुजान
अरज गरीवाँदी मान ॥

१५

तैंड़ी वंशी सितम करैंदीहो सांवला मनहर लेदीवो
भला ।
जन्त्र मन्त्र जादू टोना पढ़ पढ़ जीवड़ा बशकर
लेदीहो ॥
जो सोऊंतो नीदन आवै औचक चौंक परैंदीहो ।
जानकीदास दरस विन अखीयां पल पल जल
बरसैंदीहो ॥

१६

वंशीवालेने मन वश कीयो रसभरो तान सुनाय
जादू करके ।
निरत करत मनहरत सखिनको क्षण मोर मुकट
शिर धर के ॥
देख रूप छवि चक्रित भई सजनी नेत्र कमल
चित हरके ।
जानकीदास आस दरसनको चाकर श्यामसुन्दरके ॥

१७

मदनमोहन चितचोर भएरी अब ।
अब कछु और और ढंग दीसत छलवल करत
कठोर भयोरी ॥
सीखे श्याम आंखन में चोरी देखत देखत और ।
जानकीदास व्रजतिय यों कीनी जैसे चन्द चकोर ॥

१८

साधो भाई ठाकुर मेरा यार ।
ठाकुर मेरा में ठाकुरका ठाकुरका अखत्यार ॥
सबघट पूरण पूर रहा है बाग बहार गुलजार ।
जानकीदास हरि हरि भज हरदम तर भवसागर पार ॥

१९

रङ्गीला छैलातें जादूड़ा मोपै डारारे ।
रस भरी तान सुनाय वंशीमें बश कीनो प्राण
हमारारे ॥
तेरी जान विच आन फसोहीं हंसी करैं जग सारा ।
जानकीदास की आश यहीहै एक पल होवन न्यारा ॥

२०

जो दम है सो बाहबा प्यारे ।
तज सकल जग भरम समझ जारे ॥
जानकीदास सोई नर धन धन जो पल छिल नहीं
नाम विसारे ॥

२१

अबतो अति जीय मगन भयो मेरो मखो बात
बन आई ।
सुन्दर-नरतन जनम-विप्रग्रह रामभक्त-निधि पाई ॥
भवसागर तें बूड़त राखो जमको त्रास मिटाई ।
जानकीदास को भले भाग सो गुरु नृसिंह सुखदाई ॥

२२

बदरा बैरी झूम झम आए सजनी उमड़ घुमड़
जल वरस गरज घनघोर ।
पवन चलत सननननननननन दहत विरहतन
पीया विन निशदिन चमक चपल चहुं ओर ॥
कहा करिए कित जाय सखीरी तरसतहै जिय मोर ।
जानकीदास प्रभु मदनमोहन विन एकहो जान मोहि
घरी घरी पल छिन मदन कसकत कर जोर ॥

२३

प्रीत कर किन किन सुख पायो ।
प्रीत करी पतङ्ग दीपक सों सरबस अङ्ग जरायो ॥
प्रीत ज्यो कीनी हिरन राग सों सनमुख शायक खायो ।
झख रसना सों प्रीत करी तब कांटो कण्ठ फंसायो ॥
गज गजनी सों प्रीत करी तब एसो डील बंधायो ।
प्रीत जो कीनी ब्रह्म जीवसों आपुहो जीव कहायो ॥
धनसों प्रीत करी जिन जिन तन सरप रूप धरायो ।
लोक कुटम्बसों प्रीत करी तब होय भूत डर पायो ॥
देखत सुनत प्रीतकी बातें मेरो मनहु डरायो ।
गोपिन कीनी प्रीत कृष्णसों रोवत जन्म गंवायो ॥
प्रीत किए सुख होय अचलित गुरु कहै मन हरषायो ।

जानकीदास सुखसागरमें जिन रामकृष्ण हित गायो ॥

२४

अचँभा कौनसों मैं कहूं ।
मैं नहीं जानू मैं कौनहौं तापै कहौं मैहूं ॥
मैं भूला और सब जग भूला समुझ समुझ चुप रहूं ।
जानकीदास कों आश नामको जप तप मगन मैंहूं ॥

२५

हरमें हरका झलका झमका ।
याविध यह छवि रहत निहारत नाश भयो भ्रम
तमका ॥
गोविन्दयों विचार गोविन्दको यह लहजाहै दमका ॥

२६

यमुना किनारे किनारि मोहन धेनु चरावैं ।
कारी कारो पोरी पोरो धोरी धोरी धूमर लेले
नाम बुलावैं ॥
सङ्ग सखा सब ग्वाल बाल मिलि मधुर मधुर
स्वर गावैं ।
बलिहारो वल सांवल ऊपर सुर नर पार न पावैं ॥

२७

राजै श्रीकृष्ण जनमदिन घर घर मङ्गल राजै ।
नाचत गावत मङ्गल मुदितमन मृदङ्ग मधुरधुन
गाजै ॥
हरद दूध दही छिरक परस्पर आनन्द मङ्गल
साजै ॥ राजै श्रीकृष्णज० ।
जैजै धुन उचरत सुर विचरत वलिहारो दिन
आजै ॥ राजै श्रीकृष्णज० ॥

२८

मैं अवधूत हूं जोगीया मैंतो देखन को आया
तेरा लाल ।
अलख-निरञ्जन प्रगट भए हैं मोहन-मदन-गोपाल ॥
धन तेरो भाग सोहाग है राणी धन धन गोपी ग्वाल ।
तीनलोक का साहेब मेरा देख भए हैं निहाल ॥
काशीबासी शिवहै सन्यासी सुमरो तीनो काल ।
यह मेरा मैं उनकारो माई पुरुषोत्तम प्रतिपाल ॥

२९

मोहन मुरारि बेड़ा पार लगामोवो ।
नदीया गहरी वारो नाव झँझरी आन पड़ो
मझधारीहो ॥
तिहारोहो ज्ञान ध्यान तिहारोई सुमरन विनती
सुनलो हमारीहो ।
भवदरीया अति-गहर-गंभीरा सूझतन पारावारीहो ॥
हम पतित तुम पतितपावन युग युग भक्त उवारीहो ।
चन्दसखी भज बालकृष्णछवि तन मन धन
बलिहारीहो ॥

३०

मेरो मन हरि-चितवन उरझानो ।
फेरत कमल हार हूं निकसो दरसन कर
सिङ्गार भुलानो ।
अरुणअधर दशनन-दुतिराजत सांवलो-सूरत
फिर फिर सुसकानो ॥
यह रस मगन होत निशिबासर हार जीत कबहुँ
नहीं मानों ।
सूरदास चित मगन होत क्यों हँसि चितवन और
हियरो लुभानो ॥

३१

कृष्णचन्द्र गोपाल अबतो तेरे हाथ निवाह ।
मोर मुकुट वैजयन्ती माला पीताम्बर फहराय ॥
दीन जान मोहि दरसन दीजे सुजान मोपै किरपा
कीजे सूरपतित अपनो कर लीजे बाँह गहेकी लाज ॥

३२

तुम विन कौन हरै मोरो पीर ।
जानत हो अन्तर को बातें मुनि-मन-रञ्जन-धीर ॥
दीनदयाल कहावत हो तुम सुन्दरश्याम-शरीर ।
रामलला निजदास जानके कृपा करो रघुबीर ॥

३३

तुम तजि कौन नृपत पै जाऊं ।

मदनगोपाल मण्डली-मोहन सकल भुवन
जाको ठाऊं ॥
तुम दाता समर्थ तिहुंपुरके जगके दीए अघाऊं ।
परमानन्द दासके ठाकुर मनवाञ्छित फल पाऊं ॥

३४

राम-रङ्ग रङ्गे सोई जाने ।
महरम होय रसिक पहचाने ।
अमल चढ़ेको औरन सूझत निशिदिन रघुबरके
गुण गाने ॥
तन मन धन जन राम निहारे एसोई मनको
मनावे तो माने ।
प्रेम-रङ्ग सतगुरु-बदरज हो जीयतहीं रामके
रूप समाने ॥

३५

जो कोऊ वृन्दावन-रस चाखें ।
खारो लागे खांड़ गुखोपरा आन देशकी दाखें ।
अन्न समान मूल नहीं औषधि लोभ दिखावे लाखें ॥
भूखे रहे और पावे भाजी निरखि रहे द्रुम साखें ।
जन गोविन्द बलवीर बिहारी जो वृन्दावन राणी राखें ॥

३६

औसर बार बार नहीं आवे ।
जो जानी सो करो मलाई कत कोऊ दुख न पावे ॥
गोधन जोबन सबही झूंठो कोऊ काम न आवे ।
तन छूटे धन कौन कामको काहेको छपण कहावे ॥
जाको मन ठाकुर सो सांचो ताको झूंठन भावे ।
सूरदास प्रभु तिहारे दरसको विमल विमल गण गावे ॥

३७

कदम तरे गावे गिरिधारी मुरली बजावे बनवारी ।
मोहत सुर भरि धरि अधरन पर तान लेत अति प्यारी ॥
ढवन त्रिभङ्गी मोहन रङ्गी धरत उक्ति न्यारी न्यारी ।
लछनदास मोहनी वंशी घाव करत उर कारी ॥

३८

राम शरण भल भावत नीको ।
जाको शरण अभयपद पावत जगत बासना लागत
फीको ॥
विषय मनोरथ में चित लागो करत भरोसोया
जड़ जीको ।
तारीदै भागेगो छिनमें तन ज्यों गिरे करार नदीको ॥
यह संसार विषहुते अति विष चाखत हितकर
जान अमीको ।
हरिसों विमुख न जानत खलमति सन्त प्राण
सुख-दायक हीको ॥
त्याग मूढ़ मन कपट कुमारग मन वच क्रम
अबदे प्रण टीको ।
लछनदास सकल झूंठो लखि साँचो एक शरण
सीयपीको ॥

३९

सानु वृन्दावन जानाहो भला ।
लाख कहै कोई एक न मानी विन मसलत उठ
जाना वरसाना नन्दगाम बतलाना ॥
उठ चल मिल जधो श्यामसुन्दरसों चीरघाट
यमुनाजीका न्हाना ॥

४०

आज मोहे मिल गयो श्याम विहारी ।
श्यामा तेरी हसन बोलन मुसकानि पर वारी ॥
मोर-मुकुट कटि काछनिकाछे चितवनकी
छवि न्यारी ।
राजबहादुर सांवली मूरत चितवनपे गई वारी ॥

४१

जबते मन परतीत भईरी ।
दिन दिन औगुण छूटन लागे उपजी प्रीत नईरी ।
थोरे वणिज बहोत विभव बाटी उपज न लागे
लाल मईरी ॥
अगम निगम दोऊ खोज निरंतर राम-नाम गुरु मूल
दईरी ।

तुलसी भजन साधको सङ्गत रहइ तिविकार
सों दूर भईरी ॥

४२

तन अभिमानो समझनदे ।
आठ पहर नित चढ़ी रहत है मौत तोरे कन्धे ॥
आवत जात सकल सुर नर मुनि करम डोर वन्धे ।
जानकीदास सुमिर श्रीरघुवर छोड़ कपट धन्धे ॥

४३

आज नागरो किशोर भावत विचित्र जोर कहा कहों
अङ्ग अङ्ग परम माधुरी ।
करत केल कंठमेल बाहुदण्ड गण्ड गण्ड परस्पर
सरस रास विलास मण्डली जुरी ॥
श्यामसुन्दर विहार बांसुरी मृदङ्ग तार मधुर पोखनु
पराग किंकनी चुरी ।
देखत श्रीहरि वंश आज निरतनि सुधंग चाल बार
फेर देत प्राण देहसों दुरी ॥

भिंभौटी—ताल एकताला

राम जनम अवध पुरी सरयू के तीरे ।
असुर सब शंक कियो जादिन जनम राम लियो
लङ्कापति कम्प गयो धरत नाहीं धीरे ॥
सुरनर मुनि हरष होत अवध मानो देख जोत
मङ्गल सबकर कोलाहल दरशम रघुवीरे ।
गावत गुणि गन्धर्व्व मिल ऊंचे सुर कर जों लग दर
दरयाव सिन्धु निरमल होनीरे ॥

भिंभौटी—ताल तिताला

प्यारे रघुवर क्योंन रहो यांही ।
घर रहो सोय करूं मलवांही ॥
प्रभु वन गमन अचल जब ठानो ।
बचन कहत कौशल्या राणी ॥
राज त्याग सों कछून डरानो ।
विरह विथा व्याकुल भई वाँणी ॥
जहां तुम जननो वाहीं वाहीं ।
तुम विन जीवन नाहीं ॥
उत प्रभु इत मेरो जीय जावे ।
जल विन मीन को कौन जिवावे ॥
दुर्व्वल गौ बछरा धावे ।
खान पान कछु सुध नहीं पावे ॥
माता पिता सम वेद बखाने ।
सोते वचनसों नृप ललचाने ॥
भरत राजके काज लोभाने ।
प्रेम रङ्ग मोहे मार पराने ॥

२

हरिके सङ्ग मैंतो तबन गईरी ।
तबन गई पाछे पछितानो प्रीति पुरानो विपत नईरी ॥
जब जातो कंचन ह्वै रहतो अब माटीके मोल भईरी ।
मेरे सङ्गको सब मन आई हौं भई बावरी सकुच
रहोरी ॥
जारों लाज इन दूतिन कों जिन मो ऐसो तबन
कहोरी ।
सूरदास प्रभु तिहारे दरसकों जनम सिरानो
योंही रहोरी ॥

३

जगन्नाथ मन मोह लियोरी ।
घर अङ्गना मोहे कछुन सुहावे लोकलाज सब
छोड़ दियोरी ।
नीलचक्र पर ध्वजा विराजे परसतही आनन्द भयोरी ॥
सांवली सूरत पर रज लपटानी लाल दुशाला
ओढ़ लियोरी ।
श्रीवलभद्र सहोद्रा सङ्ग लिए कृष्णदास वलिहार
कियोरी ॥

भिंभौटी—एकताल

जबतें मोहि नन्दनन्दन दृष्टो परे माई ।
कहा कहौं सुन्दरताई वरणीह्न नजाई ॥
कुण्डल को झलकनि कपोलन पर झांई ।
मनहु मीन सरवर तज मकर मिलन आई ॥
भ्रुकुटि कुटिल चपल-नैंन चितवन में टोना ।
खञ्जन औ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥

अधर सधर मधुर सखी मन्द मन्द हाँसी ।
दसन दमक दामिनि दुति चमकत चपलासी ॥
चारु चिबुक नासिक शुक ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर प्रभु भेष धरे रूप जग विशेषा ॥
क्षुद्र घण्टिका अनूप नूपुर अति सुहाई ।
गिरिधर प्रभु अङ्ग अङ्ग मोरा वलिजाई ॥

२

मेरे गिरिधर गोपाल और नहीं कोई ।
मैंतो आई भक्त जाँन जगत देख मोही ॥
असुअन जल सींच सींच प्रेम वेल बोई ।
जाके शिर मोर-मुकट मेरो पति सोई ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म कण्ठ माल जोई ।
साधन सङ्ग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
छाछमें सों धृत काढ्यो जानै सब कोई ।
मोरा प्रभु लगन लगी होनो होय सो होई ॥

भिंझोटी—ताल तिताला

जय जय सीतापते दशरथनन्दन राम ।
राजीव लोचन भवभय-मोचन मुनि-जन-मन-विश्राम ॥
करधनु-शायक और वरदायक सुन्दर हैं अभिराम ।
जन-उधार वलिहार पार कियो पँहुचायो निजधाम ॥

२

नचलत तेरो नाव माझो गुण राम बिनावे ।
ममता मोह पड़ो जल गहरे तृष्णा तरंग कुदावे ॥
कामवाम कर पवन झकोरे करिहो कवन उपाव ।
जोबलिहार पार गयो चाहै रसना रघुपति गाव ॥

३

लोक अयाना हरि नहीं जानावे ।
तन तरुणाई भूल मत जियरा थिर नरहै कोई
रावन राँणा ॥
आये मिले सब सजन सङ्गाती स्वारथ लागे सयाणा ।
चलतो वेर कोऊ सङ्ग न चलिहै उठि गए हाकिम
लुटि गए थाना ॥
काज सँभाख्यो जिन हरि चीन्हा और भूलि पछताणा ।
अवध घटे दिन वादि गँवाए सिर पर काल पयाँना ॥
कोट उपाव किये नहीं छूटे आखिर मरणा जोय
ललचाना ।
राधावर सुमरो वलिहारी जे हरि रूप समाना ॥

४

गोविन्द गायले सुख पायले जो जीय चाहै भला ।
राजा रँक फकीर मीर क्या लग रहो चली चला ॥
गुरु उपदेश नाम-नौका गहि मेरो मान सला ।
नाहीं तो मझधारह्वै बूड़िहै आगम यातें कर हरि
मीत मला ॥
सपनेको व्योहार जगत को सब तू क्यों जात छला ॥
यातें समुझि साध सङ्ग करने हरिसों रङ्ग मिला ।
पूरण-चन्द्र आनन्द भज व्रजपति उरधार नन्दलला ॥

५

मिलो क्योंन प्यारी दे गलवाहीं ।
कौल असाड़ा कीया महरदे यार कदमदी छाँई ॥
सुरत तू साड़ी दिल विच बसदी न्यारा कीया न जाई ।
एकवार हँसि बोल वलिहारि तो जीवन जग माँहीं ॥

६

आज रामजी कोँ राखौ विलमाए ।
राम चले लछमन भए साथी सीतहुं सङ्ग लाए ।
ठाड़ी कोशिल्या रुदन करत है विनति करत सुनाए ॥
एसो कठिन कठोर प्रधान जिन रथते राम गमाए ।
तुलसी दास प्रभुको कोऊ ल्यावो दशरथ प्राण जीवाए ॥

७

इस दमदा मैं नू कोवे भरोसा आया आया
आयान आया ।
सोच विचार करो मत मन में जिसनू ढूढ़ा उसनू
पाया ॥
या संसार रैन का सपना कहीं देखा कहीं न
दिखाया ।
नानक हरि यशके पद परवे निशदिन रामचरण
चितलाया ॥

८

जादिन मन पँछो उड़ जैये ।
तादिन तेरे तन तरवर को सुखपात झर जैये ।
यह देही को गरभन कीजे स्यार काग गीध खैये ॥
तीन नाम तन वोष्टा कर्म ह्वै मातर खाक उड़ैये ।
कहँ वह नीर कहाँ वह शोभा कहां रूप रङ्ग दिखइये ॥
जिन लोगन सों नेह करतहै तेहो देख घिनैये ।
घरके कहत सबेरे काढ़ो भूत होय घर खैये ॥
जिन पूतन का बहुप्रतपाल्यो देवी देव मनैये ।
तेईले बांस दोयो खोपरी में सोस फार बिखरैये ॥
अजहूं मूढ़ करो सतसङ्गत सन्तनिमें कछु पैये ।
कहै कबीर सुनो माई साधो आवा गमन नसैये ॥

९

चेतन मानले मेरी बतीयाँ ।
यह देहो तेरे सङ्ग चलिहै क्या पोषत दिन रतीयाँ ॥
जो हिंसा कर नरक परोगे आंच सहोगे ततीयाँ ।
विन भगवान कोई नहीं अपना यही सचहै मतीयाँ ॥
काम क्रोध मद मोह झकोले बहा जातहै घतीयाँ ।
सूरदास प्रभु को रटले तू हरि सुमरण में रतियाँ ॥

भिंझौटी—जलद तिताला

रङ्गीला छैला वंशी बजाय जादू कीतावे ।
रङ्ग भरी तान सुनाय श्रवण मग साड़ा दिल
हर लीतावे ॥
रत्त देहा मेनू हीरन भाँदा तेड़े नाल जित दीतावे ।
वलिहारीयां वारियां तुझ ऊपर मेड़े मोहन मीतावे ॥

१

मला घर कित्थेनो समझ नदानीया ।
एवी एवी राहे कित्थे जादेडे नदीठा मेरा प्यारा
राजा रंक सुलतानीया ॥
आपही मारे वारी आपही जिलावे जबराइल
बहानीयां ।
शाह हुसेन फकीर रवाना विन मसलत उठ जानीयां ॥

भिंझौटी—तिताला

साड़ा डेरा कित्थेनो समझ मन माहीयाँ ।
वोही पाले वोही मारे वोही वोही घट घट ठाइयाँ ॥
राईको पर्व्वत पर्व्वत राई सागर रङ्ग मिलाइयाँ ॥

२

तेड़ा घर इथथे नहींरे नदानीयाँ ।
राजा रंक अमीर महाजन चला जात सुलतानीया ॥
आपही पाले आपही संहारे आपही रङ्ग निमानीयाँ ।
एक आदा एक जादा सगर विन मसलत
उठ जानीयाँ ॥

३

मिलनाही दिलवर महबूब ।
कीत कोल करार मिलनदाजो कीता सो खूब ।
वलिहारी हँस बोल विहारो तीन लोकके भूव ॥

४

मही वालाही बंशी फेर बजाव ।
अरज हमारी सुनहु विहारी वलिहारी चाहै
जीव जिबाव ॥

५

इस तनदावे गुमान न करना साहब कोलो पल
पल डरना ।
वेख सभी जग चलदाइ जादा जानकीदास
तै नू भी मरना ॥

६

क्षमा करो अपराध हमारो पाहि पाहि सोयपति
सोय प्यारे ।
नन्दनन्दन दुख-भञ्जन जगतके भक्त हेत युग युग
वपु धारे ॥
जब जब दुष्ट भए या जगमें चक्र धनुष गदा खड्ग सों
मारे ।
जानकीदास को शरण राख ल्यो जगन्नाथ जगके
उजियारे ॥

अधर सधर मधुर सखी मन्द मन्द हाँसी ।
दसन दमक दामिनि दुति चमकत चपलासी ॥
चारु चिबुक नासिक शुक ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर प्रभु भेष धरे रूप जग विशेषा ॥
क्षुद्र घण्टिका अनूप नूपुर अति सुहाई ।
गिरिधर प्रभु अङ्ग अङ्ग मोरां वलिजाई ॥

२

मेरे गिरिधर गोपाल और नहीं कोई ।
मैंतो आई भक्त जाँन जगत देख मोही ॥
असुअन जल सींचं सींच प्रेम वेल बोई ।
जाके शिर मोर-मुकट मेरो पति सोई ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म कण्ठ माल जोई ।
साधन सङ्ग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
छाछमें सों धृत काढ्यो जाने सब कोई ।
मोराँ प्रभु लगन लगी होनो होय सो होई ॥

भिंझौटी—ताल तिताला

जय जय सीतापते दशरथनन्दन राम ।
राजीव लोचन भवभय-मोचन मुनि-जन-मन-विश्राम ॥
करधनु-शायक और वरदायक सुन्दर हैं अभिराम ।
जन-उधार वलिहार पार किये पँहुचायो निजधाम ॥

२

नवलत तेरो नाव माझी गुण राम बिनावे ।
ममता मोह पड़ो जल गहरे तृष्णा तरंग कुदावे ॥
कामवाम कर पवन झकोरे करिहौ कवन उपाव ।
जोबलिहार पार गयो चाहै रसना रघुपति गाव ॥

३

लोक अयाना हरि नहीं जानावे ।
तन तरुणाई भूल मत जियरा थिर नरहै कोई
रावन राँणा ॥
आये मिले सब सजन सङ्गाती स्वारथ लागे सयाणा ।
चलतो वेर कोऊ सङ्ग न चलिहै उठि गए हाकिम
लुटि गए थाना ॥
काज सँभाल्यो जिन हरि चीन्हा और भूलि पछताणा ।
अवध घटे दिन वादि गँवाए सिर पर काल पयाँना ॥
कोट उपाव किये नहीं छूटे आखिर मरणा जोय
ललचाना ।
राधावर सुमरो वलिहारी जे हरि रूप समाना ॥

४

गोविन्द गायले सुख पायले जो जीय चाहै भला ।
राजा रंक फकीर मीर क्या लग रहो चली चला ॥
गुरु उपदेश नाम-नौका गहि मेरो मान सला ।
नाहीं तो मझधारह्वै बूड़िहै आगम यातें कर हरि
मीत मला ॥
सपनेको व्योहार जगत को सब तू क्यों जात छला ॥
यातें समुझि साध सङ्ग करने हरिसों रङ्ग मिला ।
पूरण-चन्द्र आनन्द भज व्रजपति उरधार नन्दलला ॥

५

मिलो क्योंन प्यारी दे गलवाहीं ।
कौल असाड़ा कीया महरदे यार कदमदी छाँई ॥
सुरत तू साड़ी दिल विच बसदी न्यारा कीया न जाई ।
एकवार हँसि बोल वलिहारि तो जीवन जग माँहीं ॥

६

आज रामजी कों राखौ विलमाए ।
राम चले लछमन भए साथी सीतहुं सङ्ग लाए ।
ठाड़ो कोशिल्या रुदन करत है विनति करत सुनाए ॥
एसो कठिन कठोर प्रधान जिन रथते राम गमाए ।
तुलसी दास प्रभुको कोऊ ल्यावो दशरथ प्राण जीवाए ॥

७

इस दमदा मैं नू कोवे भरोसा आया आया
आयान आया ।
सोच विचार करो मत मन में जिसनू ढूढ़ा उसनू
पाया ॥
या संसार रैन का सपना कहीं देखा कहीं न
दिखाया ।
नानक हरि यशके पद परचे निशदिन रामचरण
चितलाया ॥

८

जादिन मन पंछो उड़ जैये ।
तादिन तेरे तन तरवर को सुखपात झर जैये ।
यह देही को गरभन कीजे स्यार काग गीध खैये ॥
तीन नाम तन वोष्टा कृमि ह्वै मातर खाक उड़ैये ।
कंह वह नीर कहाँ वह शोभा कहां रूप रङ्ग दिखइये ॥
जिन लोगन सों नेह करतहै तेहो देख विनैये ।
घरके कहत सबेरे काढ़ो भूत होय घर खैये ॥
जिन पूतन को बहुप्रतपाल्यो देवी देव मनैये ।
तेई ले बांस दोयो खोपरी में सोस फार विखरैये ॥
अजहूं मूढ़ करो सतसङ्गत सन्तनिमें कछु पैये ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन नसैये ॥

९

चेतन मानले मेरी बतीयाँ ।
यह देही तेरे सङ्गन चलिहै क्या पोषत दिन रतीयाँ ॥
जो हिंसा कर नरक परोगे आंच सहोगे ततीयाँ ।
विन भगवान कोई नहीं अपना यही सचहै मतीयाँ ॥
काम क्रोध मद मोह झकोले बहो जातहै घतीयाँ ।
सूरदास प्रभु को रटले तू हरि सुमरण में रतियाँ ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

रङ्गीला छैला वंशी बजाय जादू कीतावे ।
रङ्ग भरो तान सुनाय श्रवण मग साड़ा दिल
हर लीतावे ॥
रत्त देहा मेनू हीरन भाँदा तेड़े नाल जित दीतावे ।
वलिहारीयाँ वारियाँ तुझ ऊपर मेड़े मोहन मोतावे ॥

१

भला घर कित्थेनी समझ नदानीया ।
एवो एवो राहे कित्थे जादेडे नदीठा मेरा प्यारा
राजा रंक सुलतानीया ॥
आपही मारे वारी आपही जिलावे जबराइल
बहानीयाँ ।
शाह हुसैन फकीर रवाना विन मसलत उठ जानीयाँ ॥

झिंझौटी—तिताला

साड़ा डेरा कित्थेनी समझ मन माहीयाँ ।
वोही पाले वोही मारे वोही वोही घट घट ठाइयाँ ॥
राईको पर्व्वत पर्व्वत राई सागर रङ्ग मिलाइयाँ ॥

२

तेड़ा घर इथ्थे नहीं रे नदानीयाँ ।
राजा रंक अमीर महाजन चला जात सुलतानीया ॥
आपही पाले आपही संहारे आपही रङ्ग निमानीयाँ ।
एक आदा एक जांदा सगर विन मसलत
उठ जानीयाँ ॥

३

मिलनाहो दिलवर महबूब ।
कीत कोल करार मिलनदाजो कीता सो खूब ।
वलिहारी हँस बोल विहारो तीन लोकके भूव ॥

४

मही वालाहो बंशी फेर बजाव ।
अरज हमारी सुनहु विहारो वलिहारी चाहै
जीव जिबाव ॥

५

इस तनदावे गुमान न करना साहब कीतो पल
पल डरना ।
देख सभी जग चलदाँइ जांदा जानकीदास
तै नू भी मरना ॥

६

क्षमा करो अपराध हमारो पाहि पाहि सोयपति
सोय प्यारे ।
नन्दनन्दन दुख-भञ्जन जगतके भक्त हेत युग युग
वपु धारे ॥
जब जब दुष्ट भए या जगमें चक्र धनुष गदा खड्ग सो
मारे ।
जानकीदास को शरण राख ल्यो जगन्नाथ जगके
उजियारे ॥

१

अब हम फेर भए लरिका ।
बालक जान करैं हित सब जग शरण लिया हरिका ॥
जानत नाहीं पहिचानत नाहीं कौन कहां सों आया ।
जानकीदास अँचभा अद्भुत सत्गुरु भेद बताया ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

तेरो वंशीने कहर कीयारे ।
भ्रुकुटी कमान दृष्टि सर मारत वेधत प्राण पीयारे ॥
निरमोहिया मानत नहीं सजनी कठिन
कठोर हियारे ।
ब्रह्मदास रस प्रेम प्रीत को पीया पीया सो पीयारे ॥

२

मैया मेरी वंशी कहा भई ।
प्रातही धेनु चरावत मधुवन दाऊ मोहे दई ।
कैधौं वन बिसराय गई है कि कोई ग्वाल लई ॥
वंशी लेहों तौ वन जैहौं हरि यह टेर कही ।
ब्रह्म दास मोहि गोधन की सौं लेदेउ और नई ॥

३

मोपर डार गयो हरि टोना ।
वंशी बजाय आय गृह मेरे सुन्दर-श्याम-सलोना ॥
एक समय दधि मागत मोपै पत्र लिए कर दोना ।
ब्रह्मदास मोहे छले जातहै नन्दमहरिको छौना ॥

४

तेरी वंशी कहर कियारे ।
सुर कमान कस तान बान हँस मार विकल
जिय कियावे ॥
रहिन सकत अब देह गेहमें चाहत मिलन पीयावे ।
जानकीदास सांस तन ये सब मिल जब गाय जियावे ॥

५

दुनीया लंडी झूंठी है हो यार ।
मतलब हीका इसका प्यार ॥
जोकोई इसके रहै भरोसे सोउ लण्डो होगा खार ।
जानकीदास दया सतगुरुकी निश दिन पल छिन
सुमरो करतार ॥

झिंझौटी—तिताला

लोभी लोभ भरम भरमाया झूंठा जग
लालच सों लोभाया ।
कच्चे कांच चमकत चिपटे राम-रतन अनमोल
गमाया ॥
कोटि जन्मके जतन तन पाया खावन सोवन को
नहीं आया ।
प्रेम रङ्ग प्रभु तोहे जिवाया जान मूरख विष
विषय क्यों खाया ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

सुनीयत कान्ह ले जानेकों आयो अक्रूर नहीं
अति क्रूर कहायो ।
मत रजनी परभात करे तू मो सोंपो सो
दाँव लगायो ॥
गाज परे कोई एक ऊपर लख आप सगुण सूनो
घर आयो ।
प्रेमरङ्ग यशुमत दुखित अति व्रजजीवन परदेश
चलायो ॥

झिंझौटी—तिताला

एक ओरकी प्रीत कठिनकी ।
तान सुनाय बधिक मृग वेधत अलि अटकायो
कली कमलनकी ॥
मत्त गयंद फंद मानुषके मीन मौत गुटिका
निगलनकी ।
दीपक देख पतङ्ग अङ्ग जरे एकको एक बान
मरनकी ॥
मानुषको पाँची एक तनमें अचरज सुध राखत
जिय तनकी ।
मन वच कर्म समर्पण कीने प्रेम रङ्ग प्रभु
मौत मिलनकी ॥

२

डिम डिम डमरू वाला लाला लाल पीयाला पीवै
मतवाला वाला ।
लटीयाँ विच कालीयाँ काला कानो विच मुद्रा डाला
गले विच सेली माला ॥
संतोदां तू रखने वाला दुष्टां देदा देश निकाला,
जिसनु चाहदा तिसनू करदा वो निहाला ।
प्रेम रङ्गदा दिल चरणो भाला भैरोँ भवदा तारण
वाला ईश पूरी रखवाला ॥ ला० ॥

भिंभौटी—ताल एकताला

नेक चितवो नेक हंसवोरी गोरी ।
टेढ़ी बातें तैनू किन सिखलाइयाँ मनमोहन
मन धसवो ॥
मान किये अब नाहीं बनैगी एक कुञ्जको बसवो ।
नित प्रति कवि बिथिन वृन्दावन निशदिन को
यों निकिसवो ॥
सुन्दर-श्याम कमल-दलनैना मन्द मन्दहै हंसवो ।
कृपा सखो कैसेके छिपिहै यह रास विलास विलसवो॥

भिंभौटी—तिलाला

हरी हरी वंशी बजावै हरी ।
हरे हरे वसन आभूषण हरे हरे उर वनमाला हरी॥
हरी हरी भूमि लता सब हरी हरी द्रुम कुञ्जन सब
हरी हरी ।
जानकीदास हरीको कवि निरखत सखीयन को मति
हरी हरी ॥

२

प्रभु तुम भक्त वत्सल निज जनके जो जैसा तैसे तिनके।
तीन लोक के लोभसे इन्द्रने विप्र किये जोचनके ॥
वेद सुनाय किये वस वलिको मन वाञ्छित मागनके ।
दोय चरण भर भई त्रिलोको तीसरा और चाहनके॥
वलिको धरम बंधनसों बांधे धर यर दीन धरनके ।
सुतल धसायो प्रेमरङ्ग प्रभुको राखे हार रोकनके ॥

३

क्या रघुवर तेरा चेरा चाकर जोई जोई चाहत
सोई करावत ।
विन मरजी अरजी नहीं सुनदा विन चीठो नहीं
चरण चलावत ॥
तन मन धन गुरुसों छिनवाए पोषन प्राण
दिए पावत ।
प्रेम रङ्ग मत प्रीत करो कोई नेह लगे फल
एसेही पावत ॥

४

खासो खिजमत पाया सीता राम सनेही ।
सतगुरु सङ्ग समाज बांहुवल चरण-कमल परसाया ॥
धर्म्म कर्म्म दोउ भेंट देवाई भक्तादो मा ले ओल उढ़ाया ।
प्रेम रङ्ग दशकत निजकर कर हाजिर रहो
फरमाया ॥

५

मरत भइया हो कपि सों उरण हम नाहीं ।
सौ योजन मरयाद सिन्धको कूद गये छिन माँही ॥
लंका जार सीय सुध लाये नेक गर्म जोय नाहीं ।
लछमन वीर पस्यो धरणी में सकल सखा विलखाहीं ॥
दोनो गिर सजीवन लायो आन दई सुख मांही ॥
पैठ पताल तोर जमकातरले प्रगट्यो पल माहीं ।
फेरी दुहाई रामचन्दको राज मकरध्वज पाई ॥
ज्यो नहोते हनुमत से योधा को ल्यावे जग माँही ।
तुलसीदास दासन की महिमा सीयपति निज
मुख गाई ॥

६

मन भयोरे सेलानो भजन बनत नाहीं ।
खाने कोतो अच्छा नोका और ठंण्डा पानो ॥
पानको गिलोरी चहिये और पोक दानो ।
हाथो घोड़ा रथ चहिये और तंबू आसमानो ॥
सेज तो अनूठी चहिये और रूपवंतो राणो ।
किलातो अटूट चहिये और महलानो ॥

पूत तो सपूत चहिये कुलको निशानो ॥
अरब खरब द्रव्य चहिये और कुल शानो ।
कहै गङ्गादास दुनोयाँ मायामें भुलानो ॥

७

हाटड़ोवे छाड़ चला बनजारा ।
इस हाटड़ी बिच सब कुछ सौदा कोई नहीं
परखन हारा ॥
इस हाटड़ी बिच सात समुद्रहैं कोई मीठा कोई खारा ।
इस हाटड़ी बीच महल ओमाड़ो सबका
होगया गारा ॥
इस हाटड़ी बिच नौ दरवाजे दशमा धरम द्वारा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो भजलो राम आधारा ॥

८

ऊधो जाके माथे भाग ।
विलपत छाड़ सकल ब्रजयुवती चेरो चपल सुहाग ॥
आए जोगको वेलि लगाँवन काट प्रेमके गांठ ।
कुबजाकों पटरानी कीनो हमकों देत वैराग ॥
लौंड़ो को अब डौड़ो बाजो बन्यो श्याम-अनुराग ।
निलज्ज भए दोऊ खेलत हैं बारामासो फाग ॥
भलो मोहायो साथ बनोहै राज हंस और काग ।
सूरदास प्रभु ऊख छाड़के चतुर चिचौरत आग ॥

९

न नित्यं लभते सुखं न नित्यं लभते दुःखम् ।
सुखातरं दुखं प्राप्तम् दुःखात्तरं सुखं ध्रवं ॥
यहो समझ सुन मेड़े मन यार ॥

१०

हो चोरे वाले गवरू यार फिर गई वंशी की दुहाई ।
ब्रज गलोयाँ गलोयाँ ब्रजजोवन होय रहे
हिरदे कन्हाई ॥

११

झोंकावालेनु घलेया जानवे मनेहा साड़ो ।
घर आजा वर रूंवलड़ावे सोयालीनु विरह सतादा
रहदा तेड़ा ध्यान ॥

१२

महरम यार मेरो तेरो अँखिया लग
गइयाँ सांवरे सुनवे ।
लोकाँदो बदनामी थे मत डर गोरी कम आदो
अपनो धुनवे ॥

भिंभाँटी—धीमा तिताला

झम झम झमके बालानो लाल पोयाला कलालो
मद मरके ।
लट छटोलो जोर चमक चमकेदो नेड़े गोरो साया
रखड़ा मत वाला ॥

२

कालड़ो धारा मन पर वस रहोयाँवे आडा ।
नूर परेदा वारोवे खेड़ा अजव सुहावना मन रङ्ग
रङ्ग रङ्गोलो बहारांवे याड़ा ॥

३

मतवारे नैना मिलावननू अनो आयानो प्रेड़ा माता ।
गोरीनू ले साथ मोयांवे जटोयानू विरमाता ॥

४

परोयाँदा झूमर परी जात भलावे ।
कोई हंसदी कोई बोलदी करेंदो केल कोई
छिपावत गात ॥

५

जींद लीतो नैना नाल मोयाँवे ।
सानु फन्द कर विरहदा जाल मोयाँवे ।
चञ्चल नजर सहर भर भारी सानु कोता विहालवे ॥

६

वो मृगनैनी क्योंजीवल मा थारेहों ।
अति कजरारे प्राण हते प्यारे रवने आप संवारे हो ॥

७

छैलादा खेमेवे नाल भरोयाँ तेड़े बागेदो डारोयां
झूम रहीयाँ ।
जोथे निजारा रहदा महबूबादा मनरंगा तिथे
अँखोयां भर निरखेड़े परीयाँ ॥

८

कब लावेरजो रेणदो ।
मिलन चली गलवांही गोविन्द पत राखे
भगवानदो ॥ क० ॥

९

माँड़े विछुरेनु मिलांदे रब्बां एहोतो तुझसे मुरादे
मङ्गदो रहदो ।
छच्चल विन तेनु चैनन आंदा टुक मुखड़ा वेखला
जादे ॥ रब्बा० ॥

१०

मुखड़ा वेखला जावे महबूबां कभीतो साड़ी वल
आजावे ।
इश्कदो मलां तुसी मानले बीच चलदो वानोदी
तपत बुझा जावे ॥

११

विरहांदो संग चलाँ दोयां नैनादो नांके झोके साड़े
दिलन भांदिया ।
आंदिया जांदिया चांदिया शोरोनु साड़े दिल बिच
भांदिया ॥

१२

माहोड़ा भूलोयांवे क्यों मेनु सुनो एवेंदरदो हत
बिच कोपया ।
किन सिखदीतो हुण दूता रङ्ग तुसानु रङ्ग भोने
ते नाहक दिलनु लगाया ॥

१३

भलावे राजो रहना कबले ततो ताँन विरहदे ।
शोरो सभल संभाल महबूबांदे अगोरतो दम दमले ॥

१४

भलावे जादूगर मोयां केहा सहर कीता सेन
कर करके ।
भावें तू जामन जांन शोरो मेंतो बचोया मर मरके ॥
धिङ्गाने वालोयांवे करदोयां नेड़ा जोरा जोरो
कमला जांनके ।
मेनु मारन खोलोते करन मजाका लग गइयां शोरो
टपेदी तान तानके ॥

१५

रांझेदे मिलनदी तंगवे मेनु ।
जिथे वाज घड़ो रहदोयां नैन हटोले सङ्गवे मेनु ॥

१६

विलमाया जालम जटोने ।
सुनवे महबूबां कीतो वेपरवाही करदा
समझाया जालम जटोने ॥
भले लगदे तेड़े नैन शोरो मोयां आशिकनू को
सताया ॥ वि० ॥

१७

आव पियारा मिलजा मिलजा कित वेलेदी
मेंखड़ीयां कूकां ।
तकदी राह बूहे तू शोरो नजरन आंदा चारे वाला ॥

१८

रांझेदा मुलक सोहावना भलोयांवे ।
एकतो राझा मीठा बोलत जम्बूदी घाटो सोनो
सोम बलायावे ॥

१९

बारोयाँ इश्क रांझेदी नगरीयांवे उमगनु नित
घर लावें ।
चाकर हाजर होके रहना भला मोयां शोरोनू ले
साथ सोणाकी करनो तुसी नौकरो वैंनावे दूजे
बज देनो ढोल ॥ चा० ॥

२०

फिरक्यों शरमादे वे जानो यार दिलभी लेजांदे ।
खुल रहदी चाकरी चलदा नाहीं शोरो यारदा
शिर पेंचवे ॥

झिंझौटी—तिताला

सोणा माहो वालोयां मेंतो ताड़े वारो जावां ।
विन दीठे वारीवे बेकल रहदीरे मोयां मैं तेनु प्यार
करें दोयां ॥ सो० ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

वारीवे सोहावना मुखड़ा तेंड़ा मानु भांदा
भांदावे सोहावना ।

इश्कदी गलाँ हाँ कीकरदा शोरो भाँड़े दिल
बिच भांवना ॥

भिंभौटी—तिताला

छांवे मैं कीकरांवे रावल मझड़ीया छड़ गइयां ।
जिनादे नाल एसांवे बालापन खोया सो
सइयां लद गइयां ॥

२

राहे राहे वेराहे राहे वेजादीयां नीमें ।
अनी कही दिठानी महरम यार कैल कवीले जानदे
गवरू नीमें ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

ऐसी कमले नाल वे चाकर दो नैनादी तेरेवो
सिपाहिडा यारवे ।
विन वेखे सानु कल नहीं पड़दी चाह रहैंदी
नित मेरे ॥

२

मेरेहो मैंतो सङ्गीया राजा मैं तो सङ्गीया राजा
मैं तो सङ्गीया ॥
अंखी भरी तेरी कज्जरे काजरदी नभरी कैसी उतरो
और दिनामें पोउकें जाँदे भला जानें क्योंजो
मैं तो संगीया ।
राजा हमारेने बाग लगाया अरू पके हनु दारू
नहींतो मानु हटड़ी देदे नहीं तो मानु पथड़ी
जादू मैंतो संगीया ॥

भिंभौटी—तिताला

रांझा राहनू तकैंदी परगइयां ।
कब घर आवे वारीवे राझन मेरा ढोलन मेरा वेमोयाँ
ढूंढ़ फिरी मेहो वालेनु पर गइयां ॥

२

सइयां मेड़ा नन्दनन्दन व्रजके बसैया बागोंदानो
सनेहा ।
सब सखीयन मिल चली नन्दके मोहन मांगोदे
चादे हांदे साड़े नालदे निसाड़ा बठे सनेहा ॥

नूरपुरी भिंभौटी पहाड़ी—तिताला

तेड़ा खेड़ा अजब सोहावणा जटीनुवो कालियां
कानां सोहे वुंदे वालीयां ।
नूरपुरेंदा वारीवे पुर अजब मोहावणा वोवाँ चाल
चले मतवालीयां ॥

२

मृदु मृदङ्ग बाजत आज वेखो सइयोँ ।
तक्टधि किटि तक् धुमकिटिधिधिकन बाजत मृदङ्ग
धुमकिटिधा ॥
त्रिकटधा धिकटधा धिधिगन त्रिकट तकताधा ।
तकिटतकाकिटत्रकधतात्रात्रकधृकिटतकिनागोस्तो
थरीकीथुं गोनाँनीत्रें तभैं तभैं तरितटुगीनाँगीनाँगाठुङ्गो
थादुगदुगदुगगेदीगनधिधिगननगदितधिटकिटतिट
किटिगिदिगनधाधाधाधा ॥

नूरपुरी भिंभौटी—धीमा तिताला

ओजी झलकैदीयाँ परीयां नैनादीके हीयाँवे
लगन लगीओ ।
नूर शहर दीयांवे ठंडड़ी छइयां मेरा मोयाँ बिचवेंमें
वारी चन्दा बिचवे महबूबांदा थाना ॥

२

ओजी झलकै दीयां परियां नेनादो ।
टेढ़ो घाटी वारीवे विखरा पेड़ावो चढ़के सोणा
तीरवल पहदे मेरे सोणा गोदो तेरे वालक
यानावे मोयां ॥

३

पर्व्वत तेरा: सोहावना राजाजो ।
सुखवे वसें राजा श्रीनगर तेरोओतू जोवी मेड़े
मनभावना राजाजो ॥

भिंभौटी—तिताला

जम्बूदा पहाड़ वेख लाजा मोणा जम्बूदीवे कला
राहे पानो असो लाय कलेजे में धाय याड़ा ।
सतवे सहेलीयां सबे इन चालीयां उतरी राबोदे घाट
झनकार सोथाट सभी वेल धाय याड़ा ॥

२

जोनर बंबंब शिव शिव रटे ।
र होत तन ताप तुरतहि आनन्द उर प्रगटे ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

वंशी बजावे नन्दके गुमानी हैलावे ।
सुन्दर-श्याम-मदन-मनमोहन उर वैजंती माल ॥
वंशी बजावेदी तान सुनावे सुन्दर नैन विशाल ।
कृष्ण रसिक मन मोह लियोहै मोहन-मदन-गोपाल ॥

२

काहने बांसुरी बजाईरे मुरली की टेर सुनाईरे ।
मुरली की धुन सुन भई वावरी सुध बुध सब
विसराईरे ॥

३

दाखा भूरयांवे हांवे ।
राह मुसाफरानु घर मेज उठदी मैं वेरीयांवे ॥

भिंभौटी—तिताला

मैंकित्थे दुढ़ेदी आईयांवे मैं कित्थे गोरीदा
कगणा यारवे ।
नथनीदा मोती फौजदार बनोछे कजरा थानेदारवे ॥
मैं इत्थे० ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

वोशोरीया परीहै तिहारे वसमा दिलोंदा दरद
कोई जाने ।
दर्द बन्दी दर्द वेदानारा रहो दर्द आशिकके पहचाने ।
तेड़ा ध्यान लगा उमगसे जब इश्कोंदो
रमज पहचाने ॥

२

सांवलड़ानी वेगुजरदी नाहीं गुजरान ।
रात दिना मैनु ध्यान तुसाड़ा मला बुरा पहिचान ॥

३

असल सोयालीदा चूंड़ा रङ्ग लाना ।
रावीदे पारा राझेंदा डेरा जङ्ग सोयाली रङ्ग थाना ॥

४

मैं नगड़यां तेड़े नाल मैं भूली माड़ी जान ।
कबकी मैं ठाड़ी ठाड़ी अरज कराशाँवे मोयां
इतनी अरज मेड़ी मान ॥

५

वोमे बन्दीया आपने चाकदी सोज माहीदा
दिल राखदी ।
राँझण मेंड़ा वारी वेमैनु मिले मौज मिया तेंनूभी
गल आखदी ॥

६

जिन्द दिवाने तैनु वोपरी रमझे अदाए सिख लाइयां
नाज भरी ।
मनदी मुराद तेंड़ी नित रव देवे और तुसी मौज
करो घरीए घरी ॥

७

गुमानी मोयांवे नेह लगा तेड़े नाल ।
अपनी मौजसे असी दामन लगो तेड़े तुंभी मैनु
चितसे न निकाल ॥

८

मोयां राँझे मेड़ें नाल बोल आवे कर महर नजर
दिलदी घुंडी खोल ।
अपनी मौजसे तुझ पर रहदी एदिन रात अशी घोल ॥

९

भलोयांवे नैना वालोयां असी तेड़े नाल दिल लोता
सालु वालोयां ।
मायल करसानुवे घायल कीता तिरछो चितवन
भालोयां ॥

१०

एरे हांरे जादू करके मेरो मनहरके अपने वशमें
करके जावो कहां अबसरके ।
कहु अखीयां तोरे पायन परके शीस नीहरके सोय
रहों टुक लगकर गरके दिलवर जानी झिगरके ॥

११

यार लगी तेरे नैनादी अदा मैनु प्यारी ।
दूर दूर जांदा नेड़े नहीं आंदा आशिक रङ्ग फकीर
गरीव सांवरी सूरतदे वलीहारी ॥

१२

हौ रव्वादे मैं वारीयां मैंड़े प्यारेनु कोई समझाणा।
देशडा पराया मुलक विगाना बन्दीनु साथ निभाना ॥

१३

मेरा मेंहो रांझाको किस गुण लिया थारे देश ।
तखत हजारेदा वेगबरु नदाना नूरपरेमू छाड़ चला
परदेश ॥

भिं भौटी—जल्द तिताला

लाखा बार सदा समझायानौवे ।
साड़ी गला वारोवे एक नहीं मानदा शुभ रङ्ग कहदा
हजारवे ॥

भिं भौटी—तिताला

जटोदे नैन संभाल जादूड़ा मतडार ।
नैंन तुसाड़े वारो बरछोदी नोकै मेरा प्यारा
लगदे वेख साड़े नाल ॥

२

समझले मन अपना परी जोगीड़ा चाहने नाल
तेँड़ा निरभाव करो प्यारे ।
एतो मगरूरीना कर जोवनदी अपने उमगसे
सोहनो प्यारो इस दुनीया एक पलदा सपनारे ॥

३

क्यों रव्वा वेखनदी दिवानियाँवे तेंड़े नाल इश्क पाया।
जोगी बनके सब जग ढूंढ़ा अजहूंन जोगीदा
भेद आया ॥

४

इश्क सिपाहीयांदे नाल लगावे विन देखे नहीं
चैन रव्वावे ।
नैनादा हासिल इश्कोंदी बेड़ो कैलातू बाग तमासे
नजा कलियां गुण भरीयांवे ॥

५

जानो मियाँ तुसाड़ी गल सुन जावे ।
याद रहदियां जुलफों वारे तखत हजारे दावे ॥
तेरी मारी मरेंदीवे जानीह्न दरसन वेखा बनावे ।
इश्कदा हासिल शोरी यहो मरदो विन वेखे
वेकरार दमनावे ॥

६

लगे चकाला रूपो अमर अन्तरे ।
पित धरवाका जूड़ा सुरलो अधरे ॥
तड़ित जड़ी आभा रूप किस्वा मनो लोभा प्रभाकर
शशि धरणि खरे ॥ अन्तरे० ॥

७

तेंड़ा इतना मान गुमाव भला गोरी सुनवे ।
नरपुरेदा लहंगा सोहै लावन छापेदार ।
आखां तेरे कजरा सोहै चलो मुसाफिर मार ॥
भला गों० ॥

८

सुखांदा सुखांदा साजान जावे महरम यार हुनक
मरें निगह मोयांवे ।
मानूतो रहंदी शोरी येहो फिकरवे हिरदे दुखांदा
नाजावे ॥

९

जोर नहीं चलदा मेंड़ावे जानो यारदे आगे धिङ्गाना ।
क्योंशोरी अरमान चाखदे मिलनेंदा एक दम आपो
आणा मिल जाना ॥

१०

सुखांदा सुखांदा सानु रांझेदा मिलनावे ।
शोरी तेंनु कसम समझ वतलाणा दुख चन्दड़ा
कीयेसे पालावे ॥

११

नैन सोपाइयांदे जोर जोर लड़ेंदे लड़जांदे खांदे गम।
ओशोरी मेंभो सुनोयां कहीं शोर निजारेदी जिथे
महबूबां वीथे तूंभो रमजा ॥

१२

मैनु चुभदे रहदे तोरवे अँखि बहांदे नीरवे ।
अति रङ्ग नेह खड़ी पुकाराँदी जङ्ग सीयालेदी हीरवे ॥

१३

हियरे मिलनेंदी मैनु आसवे बैरन मई मोरी सासवे।
अतिरङ्ग विन कैसे मन समझाऊं नेह रङ्ग विन
जोयरा उदासवे ॥

१४

तेज निजारेदा गमजावे तेजना वाले मोयां
हमने समझा ।
गिजगुलका कल बाले यार मेरे शोरीदे मन
विच रमजा ॥

१५

चोरा बलदार बांधो शोख मेरो जानवे ।
तेरेतो चोरने बारोवे सब जग मोह्या मोरा मोयां
इश्कादा बड़ा जञ्जालवे ॥

१६

तेरावे मोयां पलकांदी कुछ कही नजाय कज अबरु ।
चुश्त चालाँकियांदे नाल मन मेरा छोन शोक रङ्ग
कज गबरु ॥

१७

बो लोकाँमें जांदिया खेड़ा पूंछदो राँझेनु कोई
बतलावे ।
तानुतो इश्क पाया नाल महियांदे रङ्ग भीने इन
गलांदा गम खादियांवे ॥

१८

बनरीका माई राता चोलरा ।
जोकुछ शोभा बदन को मेड़ो जान सुखड़ा
तुसाड़ा परीदा ॥

१९

दीठीयांवे पाक मैंताड़ो यह दोस्ती मही वाले चाकवे ।
परियां मरदी क्योंनहीं देखदा रङ्ग भीने इन गलोन
रहियां ताकवे ॥

२०

अच्छा गुमानीडावे मैं तेडे वेखणदी मुश्ताक
रहँदो दिल जानो ।
यमुना तीरथ गोरी चली उमगसे भरके घड़ा
घड़ुला पानो ॥

२१

विरहानु संभालवे गुझो गूझो सूंला आशिकदे
होंधो पार ।
नाकर झेड़ा शोक रङ्ग सुन लेनो अरज निहार ॥

२२

मिलायां सानु राँझणावे मैंतो तेरो राजी यार ।
इश्कदी मसलतदा कौन होंदा काजो शोक रङ्ग
इश्कका जो यार ॥

२३

मैं चुकोयां नेह लगायके प्यारे तेड़े नाल एसो
महोयांदे कोलवे ।
रम रहा एसो गरीबांदो खबर लेदा होर
निमानीदीवे ।
जिन्द फेर देवो राता रङ्ग भीना योंही चावनके
साड़ो जिन्दरु कोतीवे ॥

२४

मेंहीयां चराँवदा होयार ।
होर सोयाले तैनु रव उड़ो कदो आजिज़ दिल
तुसो नेड़े नहीं आँदा वेयार ॥

२५

साड़ो यार तैड़े नाल वेमोयां लग गइयाँवे जालम
अखीयां ।
इश्क छिपाया छिपदाभी नाहीं आजिज़ दिल नाल
फन्दीयां वेमोयाँ ॥

२६

तुसीन जामो सैड़ा प्यारियाँ आशिकानु रोंदे छड़के ।
जिन्द तुसाड़ो रङ्ग भीने सुनवे महबूबाँभो रमणावो
आजाना सानु मुड़के ॥

२७

जिन्द लगी तैड़े नाल मोयाँवे ।
वेखनदा मुश्ताक साड़े आजिज़ दिल नहीं जानदा
मेड़ा हाल मोयाँ ॥

२८

यार जाने बाकी आगो यार होंदा बार बार ।
अगर दरआशको खाँई मेरा यार न्याजदा विन मया
दस्त वरदार रङ्ग भीने तबही करां शुंकरह आर ॥

२९

रहदो रहदोवे आस रहदो भला भला विदेशी तैड़े
फिर आवनदो ।

कोई जाय लेआवो बिसनु मछली जेहा तड़फै रङ्ग
भीने गुच्चदो फिरूं जगंल बिच आमी मेंडे पास ॥

३०

खैंडे चाकरी मैं करदियां हो नाहोयां ।
शोरीदा मैनु दम गनीमत मिलना राँझेदे नाल
सुख पाइयां ॥

३१

मुलक गुजरात दानी गोरी एदा ।
उमगे जोवनदा तैड़े धोबां पइयां सुजरा पहली रात
दानी गोरी एदानी० ॥

३२

वे जालम आलम मरदानीरे तीखे नैना सँभाल ।
नजर तुसाड़ी तिरछी बरछीरे मीयां उमग दिलदीं
वेख भाल ॥

३३

एलटक चलैदड़ी ठुमक चलैदड़ी होजूड़े वालीदा
जोवन जोरनी जोरनी भला गोरी ।
नथन दिल नाल करदीं मुजाका कानो बिच सोहै
वुन्दे वालीयां भला गोरी ॥

३४

लगोयांवे म्हाड़ाहे रैनाजो ।
हाँरे सायबांवे नोकी लागे चाँदनी हाँजो मैड़ा यार
खाड़ा ताँड़े बगोयाजो ॥

३५

दुपट्टे वाले बोमीयाँ मोही माही मैड़ो जान ।
दमन लगैदी वारी शरम तुसानु ज्यों भामी त्यों पाल ॥

३६

मेंशरमादीयांवे तैंड़े नाल गला करोदीयाँ ।
बाबुलदी सोंवीरमकी सौं मेरा मीयाँ मैं तेड़ी कसम
नहीं खइयाँ ॥

३७

मैनहीं जानदी सजनावे ।
बसदी मैं राज पुरैदीयां तू साहब मेरा मैं पहचानवे ॥

३८

राँझा जानवे मैं तक आइया ।
राँझण मिली मैनुमैं वारणे जाँदी कर रही सौंत
बुराइयाँ ॥

३९

क्या बाला बतलावे लाला तेरे गले विच
मोहनमाला ।
क्या कलीयाँ कछनार की सोहे तूतो फुल गुला
लालाला ॥

४०

साँवलीयाने जादू डारारे ।
एकतो विरहिनी विरहको मातो दूजे मन वस
कीया हमारारे ॥

४१

सावलड़ा प्राणवे आन मिलावो मुझनु मैड़ो जानवे ।
उस विन दीठे कलन पड़दी क्या संझा क्या विहानवे ॥

४२

देदा क्यों नहीं दादवे माड़ी ।
मैं खड़ी करों फिरीयादवी तेड़ी ॥
कबको मैं ठाड़ी ठाड़ी अरज कराशां बंदीदा मानो
फिरियादवे ॥

४३

गोकुल मधिवे तेड़ी गोर गलीयां ।
अलीयां मिलीयां भलीयां हिलीयां चलीयां कुञ्ज
गली रलीयाँ ॥

४४

मेरा माहीया वेवालम याँणा नाल सहीयां साड़ीयांणी
नाल नेह लगणदा खेलवे ।
बेपरवाही नाकर नाल नवोदे गरीव तैड़े असी
आगेकी होणावे ॥

४५

क्यों भुलीयांवे यार याद मैड़ीयां होगरीवाँदे
रमदे लोकाँ ।
आपन आवे वारीवे नालिख भेजें कीहुइयां तेह
मिलदेनी मिलदे

४६

पवनन लगें तैड़े नैड़े वो सजन सांई तू मेंड़ावे ।
जिन्द डरावीपे दोसन लागे जङ्ग सोयालिदे खेड़ेवो ॥

४७

मेंवारी वेमींया सोनेदा जमाल ।
जंग सोयले मैनु छोड़ कित जाँदा मेरा मियां बुझदा
क्यों नहीं हाल ॥

४८

मना सानु मिलकर जाणावे मिलकर जाना ॥
जानो सिपाई मिल० ।
मुश्ताक नजर नजराँदे नाल शोरीदा कौन ठिकाना ॥

४९

मेंड़ो तैंड़ो लगन लगीयो लोक दिवाने हसदावे ।
बाँके नैणादे यारीदे नाल कैहड़ाहो जीय डरदा
इश्कतैं डरे नाल हँसदा जींय बसदावे ॥

५०

जालम जटीवे नैणावाले जटीवे ।
चली सद्दयों असो वेखन जद्दयें राझण वाली हटी ॥
हीरणी मानी इटेठींदी राझण ढोदा मटी ॥

५१

वरकनदा जानु रब्ब मेंड़ाना वाला ।
वरकनदा जादीकेहीं असी नाल इद्दयाँ पोदे
लड़ाद्दया वारी सोणा लड़दे अपने लाजेनु
रब्ब सुडवे लाव ॥

५२

आगम तैंड़ावे मेड़ो जाग मेड़ावे सुजाहौला साँई ।
आशक रङ्ग तेनूवे देंदावाद्दयां मेरा मोया लाख
वार जाँदे सिपाई दिलदो मुराद भरपाई ॥

५३

मेड़ा ड़ोगर दानीवे मैनुले निराला रखदावो ।
सब जग जाँदा तैनू घर घर बणादे मेरा मोयाँ नाल
मगोंदे काले पठावो ॥

५४

निरत रहदी तैंड़ी याद मेरा सांवला प्यारावे ।
कितवल वेखां वारीवे कितवल जाँदा किसनु करां
फिरियादवे ॥

५५

साँवला आजानी मेंड़ा मन चाहै तैड़े मिलननु
आमिल गुमानी गोरी ।
चाल चलत कुढ़ियांना सजन मोतीयांदा दाना गो० ।
सात सखी मिल पानीयानु चलीयां असांवी
पनीयानु जानागो० ॥

५६

चूड़ा नाजो झमकेनी लाल लवाँ विच दांत जावां
हरख मिसोदी दमकेनी ।
हाथाँ विच मेहंदी लाल रचरही अखीयांदा कजरा
मेड़ी जान का नाद बूंदा वाला दमकेनी ॥

५७

राज करें तैड़ा चहनाबो तू लोकां नाल मिलदा
साथो करदा रहणा ॥
छैला इश्कदीयां झाकी किरतेनु नोशा बना मेरा मियां
अशीयाना तू सयाना ॥

५८

समझत रमझे हजार मोयांवे इश्क दोयां हांहांवे ।
इनवे महबूबांदी अखीयां बिचवे असो खुमारां मोयाँ ॥

५९

जिन्द मेंड़ो तरसेंदो तैड़े कारण ढोला तू मिलावन
मेंड़े होहोहो हो सुभे ।
असीवे गरीबांदे तू अदारङ्गदे देखो सद्दयों
असो हालवे ॥

६०

दाखा भूलियांनोवे राह मुसाफिरानु घर भेज
सकदोमें डरोयां ।
थोड़े पानियांमें मछली तड़फेंदो राजा तेरे चाकरानु
लिखदी में चोरीयांवे ॥

६१

मानले पियारावे साड़डे दिलांदो गलाँ ।
चोरी चोरी आदा वारीवे छिपकर जाँदाहो मेरा
मोयाँ ढूंढ़दा फिरदा इश्क निराला ॥

६२

परो रहंदी याद घरी घरी ।
शोरी फकारांदा जीय मिला सुश्ताक मिलणनु इश्क
लगा झरी झरी ॥

६३

साँवली सूरत ताड़ी मन भाँवदी ।
जोतू चला वारीवे जानन देशाँवे मोयाँ नेह लगा
शरमावदी ॥

६४

होछैला हुकमादीं बन्दी ताड़ी ।
ताड़े हुकम विन पल नहीं कटदी शोरी सी सौगंदे
मैंतैड़ी खाँदी ॥

६५

जटियादीहु देन कमाल मियाँ ।
शोरी सिर पर पचरङ्गी चीरा पान खाए मुखउ लाल ॥
चशमो बिच रैंदी तैड़ी याद जसटी प्यारी लगदीवे
तैड़ो अदा ॥ जटी० ॥
भावे तू जानन जान शोरो मौंया साधु दिलाँदी
फिरिया ॥ मी० ॥

६६

प्रीत करणी तोसो असानवे निभाना छैला सुशकिलवे ।
हथाँ देदीनु वारीवे रूस रूस जाँदे बो नित नित
करदे मौनवे ॥

६७

भूलड़ोनु राह बतलामीवो ।
जग सियालेदीवे राह बतलायजा मेरा मौंया रांझेदा
दरद देखामीबो ॥

६८

मेंड़ी कमलीदे लवड़े झवड़े वाला सइयों ।
अतर गुलाब भरे मुंह महकैदे वोमौंया नथा
बिच मोती लालवे ॥

६९

मैंनु दरद ओमाये हुण कसम नबोदी खांदीयांवे ।
खेड़ेदे झेड़े नालवे तुसी लड़ादांवे तैंनु चश्म जबरे
मत आँदे मायें ॥

७०

नीमानीदा चूड़ा रङ्ग लागावे ।
जम्बूदा चूड़ा वारीवे राबीदा थाना विछुड़ा दोस्त
मिलानावे ॥

७१

तैड़े वेखनदा मैंनु चाहवे गुमानोदा सोना तैड़े देश
चलना जरूरवे ।
आपन आवे वारीवे नालिख भेंजे वोमियाँ कधीतो
दरस वेखावनावे ॥

७२

साँई साँई जाँनदा मेरा मौयां ।
भेद दिलांदी वारीवे मौलाई जाने वोमौंया तूकी दर्द
पहचान्दा मेरा मियाँ ॥

७३

वेखनदी दिवानीयांवे मैंतो तैड़े ।
जावोनी कोई मुड़ले आवो होर जटी सुख पादोयावे ॥

७४

डावर नैनी तू माड़े डेरे आवोनी ।
रैन देहा मैंनु ध्याने तुसाड़ा वो नैनोदा मुल्क
बसावोनी ॥

७५

मैंवारी सोंना तैड़े मिलनादे चाव ।
कदीतो मौलावे दरस देखावे मेरा सोणा मेहर करी
घर आव ॥

७६

चीरे वालाहो छैला यार मैंनु भादावे माही वाला ।
सोनेदी सुराही वारी मोनेदा प्याला वे आप पीवे
मैंनु पिलावे शोरी मतवाला ॥ हो छैला० ॥

झिंझोटी—धीमा तिताला

काकरेजी चीरे वाला मौंया ।
शाल दुशाला वारीवे मोतीयांदी मालावे कांनी
सोहै बूंदे वाला ॥

२

चख विँगानी चाकरी वेहा जिर होकर
रहेना मौयांवे ।

वेखनदे मुश्ताक शोरो मियाँ कोकरणा तुसो
नोकरोवे ॥

३

मैड़ी तेड़ी नही बनदीवे बनदोवे ।
वारी सोना ते मैड़ा कोतवालवे मैड़ा तेड़ा न्याव
करदोवे करदोवे ॥

४

इश्क लगावे ढोलन यारदावे मियांवे मेंनु तारणा ।
हांहां वे हांहां हंहूंहूं इश्क० ॥

भिंभौटी—तिताला

राझां मानु अखी वेखला जादू तोदे कौल सोना
इरादा क्योंवे ।
राझन मैड़ा वारीवे मैं राझनदी वो मोया हुन क्यों
तुसी चोरी छोड़ जादा मोयांवे ॥

२

आमिलवे मानु यार मैड़ावे शुजाहीजा सांई ।
आठ प्रहर वारीवे तेड़ी याद बिच रहदा अशिक
रङ्ग मुरादे भरपाई ॥

३

सुनवे मोहन यार मेरो तेरो दोस्तो लग गइयां रावरे ।
आपन आवे वारोवो नालिख भेजो
वन्दीदा कौन हवालरे ॥

४

मैड़ी बातड़िया सुन जइयो हो भला जाने
वाले मियां ।
तूतो छैला वारी वे तोर हजर दुर दुरके मेरा मोया
मेरी एक नमानोवे भला जानें० ॥

५

दिबाने चेटक लाया वोचेटक लाया को फल पायावो ।
अदारङ्गदी वारीरे मिअत पूजोयांरे विछुड़ा साजन
साईंने मिलायावो ॥

६

बोल सुनाय जावे संइयो सानु भांदे भांदे ।
शहर पूनेदे बिचवे आजम वे खदेवो मोयाको शोरो
शरमादे जांदे ॥

७

दिल रखना राजोवे फकीरांदा प्यारा नोवो ।
आपन आवे वारी नालिख भेजे हो मोयां शोरो
शरीरांदा नजारांदा चाकर प्यारा नोवो ॥

८

जाने वाले मेरो बाताड़िया सुन जाइयो आइयोहो ।
मैंभो तो चाकर रहदे शोरी मियाँ फजल करो तुसो
आइयो जाइयो ॥

९

छड़दीता झिझिकणा राँझेदे कारण वोमोयां ।
आपन आवे वारी ना लिख भेजे कमलेदा
कौन ठिकाना ॥

१०

सानुको जाने मेनु भलावो कमला नदाना ।
मैंभो या नोरा वारो नेहको जाने पूछन लोतो कोई
रखन सयाना ॥

११

माहि ड़ावे मैड़ी जान ।
जमुनाके नीरे तीरे गऊ चरावे वंशी
बजावे गावे तान ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

आन पड़ो ताड़े इश्कोदे फन्द बिच मारोया
जालम मारोयारे ।
कोकरा साड़ा बस नहीं चलदा सभो गलसु
मैहारोयांवे ॥

भिंभौटी—तिताला

सावली सूरत ताड़ी मन भावदो ।
जोतू चला वारीवे जानन देशो मोयां
नेह लगा शरमांवदो ॥

२

होछैला हुकमादी बंदो ।
ताड़े हुकम बिन पल नहीं कटदो
शारो सौ सौगंद तेरी खांदो ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

निमानीदी मानवे रांझेदानी घर
आवनावे घर आवना ॥
तखत हजारादे वो हाकिम हुइयांवे सोणा शोरो
कदी तू बंदोनु दरस वेखावणा बीबांघर आवना ॥

२

रांझे राझे मैनू सब कोई आखो हीरण आखो कोईवे ॥
राझण मैंड़ा वारीवे मैंरा झनदी रांझे शिरदा सांईवे ॥

भिंभौटी—तिताला

वेखनदी दीवानी योवे जटी पञ्जाबी मैंतो तेंड़े ।
जावोनी कोई मुड़ आवो हीर जटो सुख पांदीया
यावे जटी पञ्जाबी मैंतो तेंड़े ॥

२

काग़िदा कित्यो सों आयावे ।
खबर रांझेदी वारी मिलनेदी लइयां इत्थे सों आयावे ॥

३

नजा सांनु नजावे महेरम यार हुनक
मरें दीयां सुखादा सुखांदा सानु मैंनुतो ॥
साड़ड़ी सलामवे क्योंकरदा नीची नजरा नैनावाले ।
क्योंहोंदा दिल बिच खफा मैंतो
तेंड़ी बोलीदे गुलाम वेतो ॥

४

करदी बेयाद करदी ।
शोरी उठदा दिल बिच धुंआ विरहांदी मैंतो मरदी ॥
दो नैनादी रमजा वालियां नैना साड़े फन्द नैनीवे ॥
नैना तुसाड़े वारी वरदीदी नोकावे
जित फन्दे तित फन्दे बन अनो छांवे
तेंड़ा चाह महल फिरदेनी हुण देखण आदे ॥
किशोरी तुसी मिलदा क्योनहीं की हुइयां
साड़ी गुजर गइयां वे ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

गुन्हेगार भलावे सोना तेंड़ावो ।
अरज वन्दीदी सुनदा क्यो नहीं दिलवर यार
दिलादा तू मैंड़ावो ॥

२

दानीतून मन मतन दिरना आहे
तनदिरना तन दिरनां तननादर तुंदर ॥
दरि दरि दरि दरि तदारत दरदानोतन ।
नदीदे जुलफ आशूकाँ कुदम मिसकीण तुराँ बांहे रतन
कि चिरा आशिक परेचाँ शोरी मैदानो तनु ॥

३

दीमतननतनदिरनातदरदानीदो० ।
आहे ना तनदिरनातनदिरनातदरदा० ॥
तेरे बजारमे यार क्यों करन बिगरे सौदा एक नहीं
उस फलन आजरताहै केखरीदार कई तारदानीत० ॥

४

तूतो साड़े नाल करदा सोणा रमजा गमजा ।
कितवल जाँदा वारीवे कितवल कहुंका राँझेनु बोल
सुनादे हमजा ॥

५

तूं क्या जानदानी वेसोणावे साड़ड़े दिलादे महरम ।
वोशोरी सानु मुख विख लाजा नहींतो रहदा
साड़ा भरम ॥

६

वन्द पहचांनेहो वाला वेयानांवे ।
राजा तोड़े हाथीयां पाइयां पार वताड़े जोन लगा
भूलो वोरानवे आनावे ॥

७

सजनादे नाल वोजिन्द लगीवे महोब्बत श्यामसों ।
नैन मिलाये महरदे मोहन वलिहारि यादी जिन्द
ठगीवो ॥

८

नैना नजारादे न्याज परीदावे ।
किस बहाने आजा म्हारे डेरे सिरसे बांधे
चारी जरीदा ॥

९

सइयोनी मैंकीं बीताड़े इश्कदी झालावे ।
नापग उठदा वारी वेना जिन्द कुट दोहत विच
चुभदीयां भालावे ॥

१०

दिल जानो मेंड़ा ढोलना ।
जिन्द मेंड़ो तें ड़ेघोलोनो कितो पोय पायो
आनमोलना ॥

११

हरि बिन को जानें प्रगट कीज्यो नहीं प्रेम ।
मनहो मनमें मूंद राखिये जप तप ध्यान और नेम ॥

झिंझौटी—तिलाला

परियाँदे चाकर चाह करंदे तेनु इश्कदी कारण
आखरके ।
सानु लगा दिल लगा शोरी मीयाँ इश्क लगा मानु
आशिकदे ॥

२

धिगाने वालीयाँवो करदीयाँ नैनावालियाँ वोकदीयाँ
नैना जोरा जोरो कमला जान के मानु मीयाँ ॥
मेरड़ कोली तूँ करनो मजांकाँ लगदीयाँ शोरीदा
टप्पा गानी मियाँ० ॥

३

दावन लगी गुजरातदा एरी गोरीए ।
दावन लगे वारीवे नैन तुसाड़ेवो मीयाँ मैंना चलों
तेरे साथदा ॥ गो० ॥

४

अपना लटकेदड़ा सादर भला ।
सथ कुड़ी मिल पाँनीनु चलोदो शिरदे गागर अला ॥

५

जमुना जल भरन चलो पनिहारो जोबन मदमातो
सूरत न्यारी न्यारो ।
भर भर घड़ा शिर ऊपर धरके बोल बोल ऐसो
मोहनोसी डारो अलप वयस वारी मार हँसे
दैदे तारो ॥

६

यशोदा तेरो कान्हने मोकों कैसो गारो दीनो
कालिन्दीके तीररे ।
बाट चलत बरजोरी मोरी बहियां मरोरी
कैसे धरूं जिय धीररे ॥

७

मिलकर जाणावे मीयाँ मेरावो यार सिपाई सानु ।
आपन आवे वारीवे ना लिख भेजें मीयां साँवरो सूरत
वेख लाजा सानु ॥
ढोलन मत जावो साड़ी गलां जो तरसांदा सुनवे
मियाँ खेड़े नूवे सानु ॥

८

फन्दा क्यों कर छूटे मेरो जान मेरावो मैंवारी सांयवां ।
सिर पर गागर वारोवे पग ठुमक ठुमक रस ले
गयो ॥ सा० ॥

९

लगीयां जबावन दैदीयां वो छैला जोबन अखीयांवे ।
तिखीयांदो तीराँवो तबदी कोरां जोगराँदी घाव
करें दीयां याद लगी माड़ा प्यारावे ॥

१०

मैं क्योंकर मन समझाऊंगो ।
आवो सइयाँ गल लगजा रमहो वाला यार छिप
रहियां परगइयां ॥

११

तुझ देखनदा चाव मैवे सानुड़ा ।
इतनो अरज शोरी मानले सानुड़ा ॥

१२

याद लग रहँदी माड़ो रहदे कदम ।
वाँक वरस कहै कोई नहीं दीसदा कासे करूँ
फरीयाद कौनसो देदा माड़ो दाद ॥

१३

चोरां बांधनुदा बांवलामोवो मोयंवा ।
बगल सोहै जामदानोदा बूटा मुख सोहै तांड़े
पानादा वीरा ॥

१४

कित समझाय रही नाजा मेंड़ा माहीड़ा ।
शोरीदा झगड़ा निवेर कोई नहीं जाने मीयां
जाने नैना वालीयां ॥

१५

खड़ियांनो मैंकूकानो आमिल कालड़ो धारा ।
वाजपोयारे कामन मिलियां कौन लेवो मैड़ो सारो ॥

१६

तीखे नैन सँभालवो बाँके नैन संभाल आलम जालम
वसदानो ओओ औती ।
नैन तुसाड़ेवे बरछी तिरछीवे जित लगे तित पार ॥

१७

कजरान दिया तैंने कहर कीयावे ।
ये मोहन तैंने सब मोहा तन मन धन प्यारे तुमकों
दीयावे ॥

१८

वोमें बन्दोया अपने चाकदो साथ माहीदा दिल
राखवोमै० ।
राझन मैड़ा वारीवे मैनु मिले मौज मीयां तेनुवो
यही गल आखदो वो० ॥

१९

जिन्द दिवाने मैनु वो परी रमझे अदाए सिखलाईयां
नाज मरी ।
मनदी मुराद तेड़ी नित रव देवे और तुसी मौज
करो घरी घरी ॥

२०

वो गुमानी मीयांवो नेह लगा तेड़े नाल ।
अपनी मौजसे असी दामन लगी तेँड़े भी मैनू
चितसे न बिकाल ॥

२१

मीयां राँझे मेड़े नाल बोल अब कर मेहर नजर
दिलदो घुलडो खोल ।
अपनी मौजसे तू जप रहंदी दिनराती असो
घोल ॥ अब क० ॥

२२

मूरख समुझ देख मन माहीं ।
दृष्ट पदारथ जहां लग देखो तीनकाल सो नाहीं ॥
जगजीवन अनेकन भाँति अबतो न एक आहो ।
केहरि कूप निरख निज छाया तिहमें कूद परांई ॥
मोह प्रताप कहां लग वरणों आगम निगम कहांई ।
रामप्रसाद राम सुसरण कर जनम मरण मिट जाई ॥

२३

ऐसो गात अकारथ गारो ।
करो न प्रीत कमला लोचनसों जनम जुवा ज्योंहारो ॥
विलमत विष वासना निशदिन फूट गई सब चारो ।
अब लागे पछताय पाय दुख दीन दई को मारो ॥
नेको बदी विचार न कीनो परमार्थ न पारो ।
सन्तदास खारथ अपनेको बांध चलो शिर भारो ॥

२४

अब तुम देखन लगे मेरी करनी ।
धरणी व्याय रहो तब कोरत सुख मुख नीवत झरनी ॥
वरणी बेद पुराण कविन मिल फिर न गयो कहुं शरनी
अब तुम लगो कहन व्रजजीवन जैसो
तेरी तानी तैसो मेरी भरनी ॥

२५

आज मोहे मिलगयो श्याम-विहारो ।
श्यामा तेरी हसन बोलन मुसकान पर वारी ॥
मोर मुकुट कटि काछनी काछे चितवनको छवि न्यारी ।
राज बहादुर साँवली मूरत चितमें बस गई प्यारो ॥

२६

मोहे निपट कठिन दिन बीते माईरी मैं कैसी करूं ।
ओसन प्यास मिटै नहीं सजनी घरी पल छिन
युग सम भरूँ ॥
दया सखी घन श्याम लाल विन विरहा
अगन में गरुँ ॥

२७

ऊधो हमरे करमनहीं को दोष ।
ऐसो प्रीत ढरगई लालनको जैसे मोती अरु ओस ॥
ऐसो चन्द्र मुखीसो कुवरी नहीं कृष्णको दोष ॥
सूरदास यह भाग हमारे मिटत न जोय को
रोष ॥ ऊधो० ॥

२८

मेड़ा माहोड़ावो कहाँ चला मेनु मार ।
तेड़े दरस विन वेकल हों दो सुनदा नाहीं पुकार ॥

२९

नेक चलो नन्दरानो घरहाँलग ॥
देखो अपने सुतके कौतुक दूध मिलावत पानो ।
हमरे शिरको सुरङ्ग चुनरिया लेगो रसमें माँनो ॥
अनरस रीत कहा कहूं तुमसे दिखरावत है ज्ञानो ।
केतो समुझाऊं समझत नाहीं अपनो बातें ठानो ॥
सूरदास जमरको वरषा थोरे में इतरानो ॥

३०

मेड़ा दिल तैं लोतावो यार ।
जानकोदास महबूब सांवला दृष्ट कटाक्ष निहार ॥

३१

जिस साहबने पैदा किया उसदोया यादन भुलामोवो ।
जानकोदास सुफल तब नर तन हरदम
हरिगुण गामोवो ॥

३२

गूजरी पानीड़ा भरे हो मदमातो ।
रेशम डोरी वारी सोनेदा गडुवा रतन जड़ांवको
ई डुरो उमगसे रस भरो गागर शीश धर वो मद० ॥

३३

साँचो जाँनो सइयां को बानो ।
रामनामको प्रीत जगतमें लछमनदास सिंघ
के मन मानो ।

३४

देख आज आलो व्रजराज कुंवर आवै ।
केसर को तिलक भाल वारिज लोचन विशाल
मंजु गुंजमाल गले मुरली को बजावै ॥
कम्बुकण्ठ अति अनूप नटवर जलद रूप
भुज सुख पर मदन वदन मदन कुल लजावै ॥
वरणत सुर नर महेश दिनपति गौरी गणेश
हरिके चरणनको महिमा सूरदास गावै ॥

३५

श्याम मन मानो भई कुबजा पटरानो ।
तीन लोक नाहीं कोई कुबरीके समको ॥
उनकों वर आसन सिंघासन पाटंवर पहरायो
हमकों लिख भेजो बातो योग के रसमको ।
उनको सुख सेज्या औ पान दान सुख सो सब
हमकों वो भेजो पोटलो भसमको ॥
सूरदास हरि वाहि चरणनको कहै व्रज गोपो आई
खरचो खसमको ॥

३६

राधे कृष्ण गोविन्द गोपाल वनवारो ।
मदन मोहन मनहरन मनोहर माधो मधुसूदन
मुकुन्द मुरारी ॥
हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे हरे ॥

३७

मुलक विगाना करदोयां मेड़ो सइयों ।
देश पराया वारीरे कोई नहीं अपना
नजर लगो तेड़े नाल ॥

झिंझौटी—तिताला

छड़जानवे तेड़ा देश जोर धिगाना तेड़ा नहीं भांवदा ।
ऊँचे पर्व्वत राँझा वसदा हेटल बसे जग सारा ॥
राँझा मानु पतीयां न भेजें मेनु प्यारा कोल
जानवे जरूर ॥

२

पंछीनीय कौन होंदा कमला यार धिगाना
करदा कमला यार ।
धिगानो सानु छड़ सोंई आदा नैनाद कजरा
संभालनो ॥

३

मेरा मन मोहलियो अछो बनो ।
दांतोदी मिस्सी वारो अजब बनो मेरा मोयाँ
पांनोदा वरो रङ्ग लालनो ।
एकतो विरहिनो विरह सतावै दूजे जादू डालानो ।

४

दिया कैसे कटेगी कठिन रतियां प्रीतन
पाई मैंने एक रतियां ।
कासिद भेज मैं वाको बुलाऊं शोक रङ्ग गाऊंगी
मैं गुण गतियाँ ॥

५

लाला वाला परो तेरा जोबनवारे ।
हातांदी मेंदी होंठादी लाली नैनादा सुरमा
कालारी ॥

६

रैंन किथे गुजार आइयांवे बोवांरे ।
आलस बसव अङ्ग दीठे मैंनु नैना लाल सुधार
आइयांवे ॥

७

पनीयां कैसे भरों छोटी ननदोरे ।
भारी गागर शिर सम्भरत नाहीं अचरा कैसे के धरों ।

८

लागीलो म्हारो नेह बंसीवाले सांवरे सों ।
देखत छवि मोरी बहोयां मरोरी साँवरी सुरत
प्यारी मन बसो ॥ एह० ॥

९

माथे सोहै वेदनी झुलनीया रतनारी सइयां ।
इतना पहर गोरी चढ़ीले अटारी
हाथ लिए करवा गंगाजल पानी ।
सांवन भादो की निशि अन्धियारी पीछले पहर
गोरी चढ़ोरे अटारी ॥

१०

वारोरे मनेहिया पिया दखन सिधारे ।
कैसे करू मोरी आलीरी जोबन भए मतवारे ॥

११

परदेशी यारे मोकों छड़के न जा नैना
नीमानी तेरी चुनरी ।
भौंह कमान चढ़ी गोसें पर तक तक मारत बान
सनेयारे ॥

१२

निरधन के धन माधो मेरे ।
बारंबार निरख मुख पात तजत नहीं पल आधो ॥
क्षणक्षण परसत अङ्ग मिलावत प्रेम प्रीत गाँठ बांधो ।
निशिदिन चन्दचकोरकी छवि मिटत परसकी साधो ॥
कृष्णानन्द प्रेमरस माते छूट्यो जगत को बाधो ॥

१३

राम नाम जपता नाहीं किस भरवासो सोवैरे ।
झूंठी माया झूंठी काया तथा जनम क्यों खोवैरे ॥
कृष्णानन्द कहतहैं फिर फिर नैन खोल क्योंन जोवैरे ॥

१४

बालम रूंसोहै कैसे करूँ मोरी आलोरी ।
मन मोहन सों बिछुरत गोया तीर लगा जैसे कारीरी ॥

१५

मोतीयांदा मजराहो जो म्हारा सायबां ।
इस गजरे में लाल लगोहैं और मगायदे हीरा धनरा ॥

भिंझौटी—धीमा तिताला

मैं तोहे पूंछो ननदोइया मोराया मोरीरे ननदीके
पीयरवा ।
मैं जो गई थी गङ्गा न्हाने मोरीरे सांवल बंसी
बजाईवो ॥

सिन्धी तुलरी—तिताला

सइयां मोसे रूंसोरी कोई जाके मनाले ।
चुन चुन कलियां मैं सेज बनाऊं रहस रहस
गरे लावोंरी ॥

भिंझौटी—धीमा तिताला

बालम राजरे बांका मेरा मारूड़ा ।
तांड़े कारणवे मैं सब कुछ छड़ोयांवे रूंस रहे
कौन काज हाँजो महाराज ॥

२

सही न जात चितवन की चोटें ।
भई व्याकुल सब गोकुल नगरीरी सितम कियो
यशमत के ढोटें ॥
जिन नहीं देखी मोहनी मूरत सोहै निपट
करमनको खो ॥

हमहीं अकेली घायल नाहीं काजम केते
पड़े वाके द्वारे लोटैं ॥

२

अवे हांवे मैनु किसीदे नाल काम नहीं अवे हांवे
सोनावे ।
आमिली ठाड़े बेपरवाही सोना बातों तो नात बानीवे॥

४

आन बसावो नगरीया हमरो ।
बाट चलत मोहे दुवर भईलो छेकीहै डगरीया हमरी।
दुखको फुहार परत है देखो भींज न पावे
चुनरीया हमरो ॥
तुम छोड़ कायम केहकों पुकारूं कोउन
सुनत गुहरीया हमरी ।
यही अरज हैतुरावकी हजरत पार लगावो
नावरीया हमरी ॥

५

भलावामें कब लग जीवां प्रीत लागी जा तेरे नाल ।
किस निरमोहियाने बंसुरी बजाई
पड़ीहों विरहदे जाल ॥

६

जैश्री राधावल्लभ नमो नमो ।
कुञ्ज कुञ्ज द्रुम लता लता तर विहरत
दोउ सदा समो ॥
वृन्दावन यमुनाके कूल वरित वसन्त जहाँ तहाँ जमो।
कोउ कर सके हित आनन्द यह गुण गावत
तन मेरो रमो ॥

७

साँवरेहो महबूब नजर भर देखूंगा मैं खूब ।
शङ्खचक्र गदा पद्म विराजै कुण्डल मौतिन लूंब ॥
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक सेवत गावत नारद तूब ।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत मिटगई मनकी हूब॥

८

दाऊ कृष्ण यशोदा मैया हरषित गोद खिलावे ।
नाना भांति खिलौंना खेले गोविन्द लाड़ लड़ावे ॥
ब्रह्मा जाको पार न पावै शिव सनकादिक ध्यावै ।
वाकों यशुमति मेरो मेरो पलना माँहि झुलावै ॥
तीन लोक जाके मुख माँही इन्द्र करत सेवकाई ।
वाकों यशोमति दूध पिलावै मुख चुम्बत बलजाई ॥
कुम्भ करण रावण जिन मारे खरदूषण दुखदाई ।
वाकों यशोमति लूण उतारे नजर लगीहै कन्हाई ॥
निराकार-पूरण-भगवान भक्तवत्सल-सुखदाई ।
अहो भाग ब्रजराज महरके खेलत कुंवर कन्हाई ॥
बाललीला नित कब लग वरणूं ब्रजमण्डल सुखदाई ।
जैत सखी रङ्ग मोही मोहन वार वार बलजाई ॥

झिंझौटी—तिताला

तेरे बाँके नैनाने मुझे मारा वो बेदरदी
तुसी आन मिलावो ।
बांकी भौंहैं तिरछी चितवन घायल कर कर डारावो॥

२

खड़ी पुकारौं रब तुही रब तुही मोरे पिया
समझै न नादान ।
चुन चुन कलियाँ मैं सेजियां बिछाऊं सेजीया न
आवै सूरख नादान ॥

३

श्यामा मैनूं फुलांदा गजरा मगायदे ।
चम्पा चमेली नरगस मरुवा जाफर माना गुलाला
गुलाबाँदी फलीयाँ लगायदे ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

मधुबनहीतें आई पाती मधुबन० ।
सुन्दर-श्याम कान्ह लिख पठाई आय सुनो मोरी माई॥
अपने अपने गृहतें दौरी लै पाती उर लाई ।
नैना निरिख के नीर बहत हैं प्रेम विथा न बुझाई ॥
कहा करै सूनो या गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई ।
सूरदास प्रभु कौन चूकतें श्याम सुरत बिसराई ॥

२

सुख सोवै कुमारिका चोर नले तेरी मटोयारे ।
झूंठी माया झूंठो काया झूंठोहै सब बटोयारे ॥

जो आया सो सबही जायगा राजा रङ्क घट घटीयारे।
क्या ले आया बन्दा क्या ले जायगा मरके मटियारे॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो मटोयामें
मिलगई मटीयारे॥

भिंभौटी—तिताला

इनमें कौन राधिका रानी।
पूछतहैं रुक्मिणि सखियनसों प्रेम वचन मृदुवानी॥
नीलाम्बर जाके उर सोहै मुख पर लट लपटानी।
सोई वृषभानुसुता कहियतहै दे अञ्चल मुसकानी॥
रसके बस कौन मन-मोहन सुनके नारि मृदुलबानी।
इन अंखिया दरसनको प्यासी जैसे मीन बिन पानी॥
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावै सो महारानी।
सूरदास प्रभुसों जाय कहियो हरिके हाथ बिकानी॥

२

मेरे मन बसो लालनको आन।
तिरछी तकन त्रिभङ्ग चलन की ऐंड़ी बेंड़ी बान॥
मोर मुकट अलबेली फेंटा पीताम्बर फुहरान।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्रभुको मृदु-मीठो मुसक्यान॥

३

कौन गुना दधि लूटोरे कान्ह मोरो।
वृन्दावनको कुञ्ज गलिनमें धर बहियां झकझोरी॥
या ब्रजमें कोई हितू हमारो लोक कहै सब झूंठो।
लपट झपट मोरो बहोयां मरोरो शिरको गानर फूटी।
चन्द्रसखो भज बाल कृष्ण छवि हाहा करत छूटी॥

भिंभौटी सिन्धु जगला—तिताला

पोयारो श्याम वियोगी मधुकर।
बिछुरन भए मिलन कब ह्वै हैं नदी नाव
संयोगी॥ मधु०॥
नन्दनन्दन मधुवनही सिधारे अन्त बटाउ लोगो। म०।
देखत लोग हंसया सारे यह सुख सम्पतिके सोगो॥
मुंह पोरो कारो तन मधुकर कलोय कलोय रस भोगो।
सूरदास कब ब्रज फिरि अइहैं कहिहों प्रभु संग
जोगी॥ म०॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

सखीरी श्याम बिना ब्रज सूनो।
भरमत चित रहत उदास नित बार बार सिर धूनो।
यही अँदेश रहत नित जधो यही बात तुम गुनो॥
सोवत कैसे एक सेज पर कृष्ण कूबरी दोनो।
किधों लिये फिरत वे साथी कोधौं खाट खटोनो॥
कोधौं नायक होतहै कुबजा मोहन होत नगोनो।
सूरदास प्रभु कब ब्रज अइहैं मिल बिछुरन हरि कोनो॥

भिंभौटी सिन्धो—तिताला

जैजन जधो मोहन विसारे ताहि न बिसारूँ छिन
पाव धरी।
जो मोहन मजे भजों मैं वाकौं यही टेक मेरी
पार परी॥
वो मेरो मैं उनकी जधो भक्त हेतमें देह धरी।
काटों मैं अजनम जनमके फन्दा बायले राखों
वैकुण्ठ पुरी॥
ध्रुव प्रहलाद रैन दिन ध्यावें गुपत रहोसो प्रगट करी।
भारतमें भरदुलका आँड़ा राख लोया गज घण्ट तरी॥
सुमरण कोनो द्रोपदी राणी चीर बढ़ाए आप हरी।
दुर्योधन को दुष्ट सभामें दुःशासन विपत्ति करी॥
अम्बरीष घर गए दुर्वासा चक्र सुदर्शन भ्रमत फिरी।
सूर श्याम गजराज उबारि कृपा-सिन्धु गोपाल-हरी॥

भिंभौटी—जलद तिताला

आज जगत सों नाता छूटो हुलस हुलस जम लूटोरे।
खाट पकर वाको माता रोवे देहो चढ़े संग भाईरे॥
लट छिटकाए वाको तिरिया रोवे हँस अकेला जाईरे।
कच्चा कोट पक्का दरवाजा जिसोमें माल खजानारे॥
जिसको दौलत जाको सुपरत कर रह जाय
नाम परायारे॥

भिंभौटी जङ्गला—तिताला

बलमा उतारले गगरीया हमरी।
हार गई तन मनसों सगरी॥
एक वैरन मोरी सास ननदिया दूजे वैरन मोरो
सगरी नगरी।

चाहकी डोर लगाहै हिरदे में फिसरो भई
रसरोया हमरो ॥
हमरो भरो गागर समटे नहीं मांसों मोहन लैहा
खबरोया हमरो ।
छाँड़ चरण अब कहाँ जाए काजम चरण अटको
पगरिया हमरो ॥

२

जै नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमला कान्तं ।
नाम अनन्त कहाँ लगि वरणो शेषन पार लहन्तं ॥
मच्छ कच्छ शूकर नर हर प्रभु वामन रूप धरन्तं ।
परशुराम अहि रामचन्द्र होय लीला कोटि करन्तं ॥
ह्वै वलभद्र सब दैत संहारे कंसके केश गहन्तं ।
जगन्नाथ जगमग चिता बैठेहैं निवन्तं ॥
कलपोक्त होय कलंक ज्यों हरिये जग दर्श गुणवन्तं ।
दशमस्कन्ध भागवत गावै रूप शरण भगवन्तं ॥
परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम आगम निगम भनन्तं ।
सूरदास प्रभुको पारन पावत अलख अनादि अनन्तं ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

जापर दीनानाथ हरे हरि कोजो कृपानीधे ।
राजा कौन बड़ो रावणतें गरबहो गर्व्व हत्यहो ॥
रंक हुतो जो विप्रसुदामा आप समान कह्योहो ।
कौन खरूप अधिक सीतातें राम वियाग पह्योहो ॥
कौन कुरूप अधिक कुबरीसों हरिसुन्दर रूप कह्यो हो ।
जोगी कौन बड़ो शंकरतें मोहनी देख डह्याहो ॥
वीर कौन हनुमतसे योधा लङ्का खोज कह्याहो ।
तेल सिन्दूर चरवेरे नाथ हरि भागन आन बह्याहो ॥
अरजुन भीम युधिष्ठिर राजा नकुल सहदेव बह्योहो ।
दुःशासन द्रापदी चीर खेंच्यो ताकों वसन पह्याहो ॥
अम्बरीष घर गए दुरवासा आन सराप धह्योहो ।
चक्र सुदर्शन जारवे कारण जहाँ तहाँ भ्रमत
फिह्योहो ॥
गरब कियो रत नागर सागर मुनी आचमन कह्योहो ।
सूरदास प्रभु गरब छाँड़के हरिचरणन चित धह्योहो ॥

भिंभौटी—तिताला

विरहानि आन सताई मोहे जग बीच कछून सुहाईरो ।
खान पान सबहो हम त्यागे घर अङ्गनान सोहाईरो ॥

२

रस मरोया महराज मोहिको आन सुनाई बांसुरोरो ।
सुनत बांसुरी मई दिवानी निकसत नाहीं सांसुरो ॥
सिसकतहै जोय निकसत नाहीं लगो करेजे फांसुरो ।
हाहा कैल अनोखे कायम काहे करावत हाँसुरो ॥

ठुमरी—तिताला

वंशी कों बजायके जोय तरसावतरे दैया ।
मोर मुकट पीताम्बर साहै लिये लकुटिया हाथरे ॥
गउअनके पाछे मन मोहन आछे आवतरे दैया ।
चकईसो मन भयो हमारो डोरो उनके हाथरे दै० ।
घूमतहूं निशदिन याही विध जैसे आप घुमावतरे दै० ॥
भाई बन्धु सब लोग कुटुमवा झूंठा इनका साथरे ।
बुध बिहारी तुम बिन कोई कामन आवतरे दैया ॥

२

हरिसों प्रीत लगाले काहे भटकत फेरे मनुवा ।
यह संसार रैनका सपना कोई नहीं अपना
साथीरे मनुवा ॥
निशिदिन हरिको सुमरण करले चरण-कमल चित
अटकतरे ।
काम क्रोध मद लोभ मोहकों दूरहि तें सब पटकतरे ॥
राम नाम विश्वास भरोसो ताकों काल न गटकतरे ।
लोक कुटुम्ब भाई सुत बनिता मतलबहो
धन गटकतरे ॥
अन्त समय कोई काम न आवे धरा रहत सब
लटकतरे ।
हरि भज लीजे अबेर न कीजे शुध चित कर झटकतरे ॥
कृष्ण सनेही चित धर येही वारवार तोहि हटकतरे ॥

भिंभौटी—तिताला

तोसों नैन लगाय रोरो अपने नैना गवाँवतरे ।
तू जित चाहे उत विरम रहेहो हाफ़िज कैसे पावतरे ॥

२

नैनवा तोसेँ लागोरी बिन देखे नहीं रहत नैनवा० ।
घरी छिन पल एक मोर मएको हारे ठाड़ी तनक
साँवलिया देख नै० ॥
सास लड़े ससुरा गरियावे ननदो अधिक रिसाय ।
बिन देखे साँवलिया तेरे पल भर रह्यो नजाय ॥
जो तुम मिले तो सब मिले छूट जाय जञ्जाल ।
नहीं तो जियरा जातहै बुध विहारीलाल ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

श्रीगोवर्द्धन नाथ हमारे गिरिवर धाख्यो हाथ पररे ।
भक्तन के रक्षपाल महाप्रभु इन्द्रको गर्व्व हख्योरे ॥
श्रीनवनीत प्रिया अति सुन्दर यशोदाजीके
प्राणपिवारे ।
वाल विनोद करत अङ्गना में गोपीजन प्राणप्रियारे॥
श्रीमथुरानाथ मनोरथ पूरण श्रीविट्ठलनाथ
विराजत भारे ।
द्वारकानाथ दीनके वन्धु गोकुलनाथ गोप रखवारे ॥
गोकुलचन्द्र महारस पूरण सब गोपीजन
में रास रच्योरे ।
देखत चन्द लज्जित होय ठाढ़े सुर नर मुनि
तप भूलेरे ॥
मदनमोहन सुन्दर-शुभकारी पीतपटधारी
कुञ्ज-विहारीरे ।
माथे मुकुट मुरली कर राजत यमुना पुलिन विहारीरे॥
कल्याणराय परिपूरण कामहै वालकृष्ण आनन्द
सुख कारीरे ।
गोपाललाल रघुनाथ श्यामघन सूरदास हरिको
वलिहारीरे ॥
शिव सनकादिक नारद शारद ब्रह्मा शेष नित ध्यावेरे।
द्वादशस्कन्ध भागवत लीला व्यास विमल यश गावेरे॥

२

नैन मिलावत श्याम तेरी चितवननें मन मोहि लिया।
हँस मुसकान लखान छबीले उमग होये
दिल आतोहै ।
लीजो उरसे लगाय साजन यही बात मन भातीहै ॥
देख मरोरन भौंहैं कमान शर पलकोंने
क्या काम किया ।
जुलफैं छूटी मुखड़े ऊपर इश्कका जाल बिछाय दिया ॥
तेरे देखनके खातर ऐसा मैं सामान बनायाहै ।
अजब आन चित बसी तुमारी और नजर न आयाहै ॥
वृन्दावाला तेरे कानो में मुखड़ेमें तेरे पान सजा ।
गलेमें मोहनमाल विराजे प्रेम प्रीत का बना मजा ॥
उरमें प्राण जो सुरझत नाहीं अपना बस किया होया ।
जबसे देखों हुसन तेरेकों ख्याल खुशालने जो दिया ॥
प्रेम प्रीत का बना मजा बनाये तेसो उमँग खोयारी ।
है जीकी जान ले साँवल रङ्ग बलिहारी ॥

३

श्रीरघुनाथ दयाके सागर चरण पखो कमलाकान्तं ।
आगम निगम जेही मनत नेत कहि वरनू कहा
अनन्तं ॥
सुर नर मुनि हित जनम लीनो हरि अज अविनाशी
अचिन्तं ॥
करहुं मगाय हेम रथ सुन्दर तापर आप चढ़न्तं ।
खेंचैं तहाँ सखा लघु नागर हरि वहु विधि विहसन्तं ॥
वाल विनोद करत अङ्गनामें काग भुशुण्ड चुगन्तं ।
अवधपुरी दशरथ नृप मन्दिर लीला नित्य करन्तं ॥
धन्य कौशिल्या धन्य भानुकुल जहाँ प्रभु नित्य रमन्तं ।
राम प्रसाद वैश्य यश वरणत जैजै श्री भगवन्तं ॥

४

चन्द्र खेलौना लैहौं मैया मोरो ।
जद्यपि मचल लोटिहु क्षिति ऊपर तेरी गोद न ऐहौं ॥
धौरीको पय पानन करिहौं वेणी सिरन गुथैहौं ।
ह्वै हौं लाड़लो नन्द बबाको तेरो सुत न ह्वै हौं ॥
आगे आव बात सुन मेरी बलदाउन जनैहौं ।
अति लोनो शशि ह्वै सुन्दर नवल दुलहैया विवैहौं॥
री मैया मैं दुलहा ह्वै हौं अबही व्याहन जैहौं ।
सूरदास वैकुण्ठ पथमें मुदित सुमङ्गल गैहौं ॥

५

श्रीयमुना तीर देनारि तू नीके कर असनान जोई जोई
ध्यावै सोई सोई पावै पान फूल दूध धार चढ़ावै
करदे भवको पार।
महारानी तीनो लोकमें जानी, वेद पुराण
कथामें बखानी, विष्णुदास वैकुण्ठ निशानी वेग
करो उधार॥

६

हमसे नेह छोड़ फेर कहीं नेह लगावत दैदेया।
हमरो आँख बचाय अवर कहीं आँख लगावतरे दैया॥
हा हा करके अपनी सभामें भुलावतहै अलसावतहैं
हम बैठतही उठ जात अवर कहीं न गमावतरे दैया।
इस जगमें जैसे काठ पुतलीया जोहो यह निरधारसे
नाचतहैं दिन रैन उही जो नाच नचावतरे दैया॥
या संसार में सोई पियारा देखो हृदै विचारके हो
जाको देत हंसाय वोहीको फेर रोलावतरे दैया।
सहज सहज जग तजके कायम साहिबसों
मनवा लगावे वाहीके शरणनमें जात तुझे फिरको
भटकावतरे देया॥

७

कन्हैया मेरी गागर भर देहो।
अजी भला भरदे शिर पर धर देहो।
हमारे सङ्ग को दूर निकस गई सास ननद कोडरदे हो॥
हौं यमुना जल भरन जात रही बहियां पकर
मोहि वर देहो।
चन्द्रसखी हित वाल कृष्णकवि चरण-कमल
तेरे पर देहो॥

झिंझौटी—एकताला

भला जोगीया गहे लीनी मोरी बहीयाँ।
सुध बुध हमारी विसर गई सगरी देखतही बाको
परछइयाँ।
कहा हमही उन हाथ विकानी चेरी भई हमरी
सब गुइयाँ॥
रहत सहत काहूके घरमें जबसे बसों मोरे
होयके ठइयाँ।
है तेरे हाथ दरस कायमके लागूं तुरावमें तेरी पइयाँ॥

२

कहिन गए कछु मोसे सइयाँ।
आए अबेर सबेर सिधारे रह गई मनको मनमें गुइयाँ।
कैसे तुराब पियाके भूखे वेतो बसें मोरे हीयके ठइयाँ॥

३

आएन मोहन मन-भावन व्रज भयो रजको उभावन।
जबसे सिधारे द्वारका मोहन सदा रहत नैनन
नित सावन॥
छूटी आश मिलन काज बसे तबसे कहां भए
दरसन पावन।
प्रीत जोर के तोर द्वारका जधोजो आए
योग सिखावन॥
जोग हमारे वियोगके आगे कौन काज
कासों चित लावन।
तेरोहै ज्ञान अनूठो कायम योग वियोग दोऊको
भुलावन॥

झिंझौटी—तिताला

एसो या मनवा दुवर भइलो ठौर ठौर मोहे दे
भटकाय।
कबहूं तो जाय लटकनमें लटकै कबहूं तो
जुलफ़नमें उरझाय॥
ऐसे रूप सजनके देखे कायम सुध बुध जात हैराय॥

२

अनो सोलेनो अनो सोले मैड़ा झोना वालक सोले।
काम क्रोध मद लोभ मोहके कैसेहो झकझोले॥
अगर चन्दनके पालने झुलाऊँ रेशम पाटपटोले।
वालापन हस खेल गमाया तरुणीपन बस होले॥
विरध भयो जब हिरन लाग्यो यमके राख मनोले।
अबतो आतो जातो झोटा देतो थपक थपक
सुख झोले॥

काफी—तिताला

कैसे जोऊंरी माई मन हर लीनो श्याम सुजान ।
हौं यमुना जल मरन जात रही उतते आवत काङ्ह ।
चितवतही हंस दियो सखी बता लग्यो नैनको बान ॥
व्याकुल फिरी गिरी गागरले छूट गयो कुल कान ।
विसरत नाहीं सखी वह चितवन जाहि लगे
सोई जान ॥
जाय कहौं वही नन्दनन्दनसों दीजे दरसन दान ।
नाहीं तो चलन चहत या तनसों यदा सखीको प्रान ॥

झिंझौटी सिन्धी—तिताला

विषय वासना के बस मगन होइलोरे मन ।
सिखानिको बोले ओलो विषय भेद भूले पड़लो
परम निधि हारा एली वृथा बांचो धिग जीवन ॥

१

क्षिनमें होत विहानरी सखी सोवनदे ।
सगरी रैनमें तोरे संग जगी मातर इतनी सदयाँ
मानले ॥

झिंझौटी—तिताला

नाचीछे आन भरे मन मोहनो रासकोरे ।
वेद वदति ब्रह्ममइ लोई अन्तरे तनोइले कीनो
त्रिलोचनरी होमाझि चरण धरे मारे ॥

२

नलेता चित चोराय निगर नन्दरे ।
रस भीना रङ्ग रङ्गीलरा मीठी बोली सुनाय ॥
कान्ह ग्वालोया सोहना दिल विच रहा समाय ।
केवलराम वृन्दावनमें खड़े सूरतदे वलि जाय ॥

३

नाजी नाजी नाजी मोसें नाजी बोलो कानुड़ा ।
हाथ नलागावो साड़ा मैला होदा गात । वलमा ॥
जावोजी जावोजी तुम कुँवर कन्हाई जो गरलाई
मनभाई सारी रात ॥
जिनहोके ढिग बस यह सुख कीनो रहस रस
भरी बात । वलमा० ॥

विष्णुदास प्रभु समझो मनमें तूतो हैगा ड़ारो डारो
मैहूं पात पात ॥ वलमा ॥

४

हरिजोसों कहिये मोरी ।
ऊधोजी पाँय पड़े तुमारे चितदे अब कान ककोरो ।
यह जाय कहियो श्यामसुन्दरसों अवध गए कर थोरो ॥

५

अवतो मनुवा लागिलो तुमोसन पिउ वेगहो
गरे लगाय लीजिए ।
जो जो चाहिए सोसो कीज्यो पे ए गवन को
नाम न लीजीए ॥

६

तन खोय अबहो जाए भजन विनु नर बावरे
हरि शरणन लीनो ।
कहा कीनो जनम समूह विषय वस बीतो राम
भजनमें न चित दीनो ॥
सुत पितु मातु वन्धु धनकों धाय धाय नहीं कल लीनो ।
गउ दधि उलंघ उठावे हाथ गिरि तिनहूं को काल
ग्रास कीनो ।
भगवान दास नहीं कोई अपना अवतो हरिके
शरणमें चित दीनो ॥

७

आज महरके मयोहे जगातो ।
छीन लेहु लकुट कामरो सूरख ग्वालिनो महीको मातो ।
दधि लुटाय छीन लेहौं मन तेरो कर मींजत रहिहो
पछतातो ॥
जाकर कहिहौं कंसरावसे पकड़ मगाऊं तेरो
जनम सङ्घातो ।
असुर-संघारण जन-प्रति-पालन मात यशोदाको
पूतन नातो ॥
मारो कंस शंशय जिन जानो को समान
अहीरको जातो ।
तब डर वस प्रभु चरण गह्योहै तब सर्व्वज्ञ लगायो
छातो ॥

अज महेश सुर नर मुनि गन्धर्व्व जाकों रटत
करत दिन रातो ।
गावे गूदर सोकियो वन क्रीड़ा जो भावे मन चोर
सोहातो ॥

८

प्रभु व्रज हमको जानेन कोउ ।
गोपिन छांड़ भये कुवजा वस कोकिल काग
बराबर दोउ ।
वृथा भई सब कथा कहाँनो राजनीति जग रह्योन सोउ ॥
ऊंच नीच चेरो पटरानो जात न बाय सिन्धु वीच धोय ।
गावे गूदर आनन्द करो तुम हमको विरह दुख
होउ सोहोउ ॥

९

ऊधो वचन सुनावो अमीसे ।
कहे सनेह मेरो प्राणपतिके आनन्द होय विरह
गमीसे ॥
भोजन भवन वसन तन भूषण सब हमकोहै
तुमरो कमीसे ।
गावे गूदर एक अरजी मेरी दरस देखावो
जगत रमीसे ॥

१०

अबके राखले भगवान मैं अनाथ बैठो हम डारो
पारद साधे वान ।
तरे पारधो वान साधो ऊपर उड़तर सुचान ।
दोऊ ओर भयो दुख भारो कौन उचारे प्राण ॥
राम कहत प्रह्लाद उबारे साखी निगमजो पुराण ।
हरि सुमरथ विष डस्यो पारधो करते छूटो वान ॥
मनको दुवीधा छांड़ देहो तुम सुमरो श्रीभगवान ।
सूरदास सर लगो चुचानें जैजै कृपानिधान ॥

११

रसना क्यों भूली हरिनाम ।
एया देहो को गरवन करिये जों बादलको घाम ॥
षटरस भोजन स्वाद बतावे क्रोधो कपटो काम ।
गङ्गाधरके अन्तरयामो सोधे आत्माराम ॥

१२

वावरो भई मेरो जान ऊधो मैं बावरो भई ।
अरे ऊधो कोहै कान कहाँको बासो कहाँकोहै
पहिचान ।
काके कहे कौन सन्देसो लैआए कासों कहौं
हित जान ॥
अरे ऊधो अपनो रोझ अनूठो गावे ऊधो भंवर रहे
रस सान ।
अब यह वेल फरे कै सूके बाय कहा हित हान ॥
अरे ऊधो वेनजाय हरे मन मोरे राग रागिनो गान ।
जैसे वधिक विचारत नाहीं मारतहै सर तान ॥
अरे ऊधो पिया विन प्राण प्राण हरिपतसों विन
बाँधे वन्ध जान ।
जब श्रीकृष्ण पूतना मारो सूर सदा येहो ध्यान ॥

१३

नेह नगरको राह बतादो ।
जिनसों नेह लगाहै तिनसों सुनरो सखो सुझे
श्यामको मिलादो ।
ख्याल खुशाल उमग उर छाए इतनो खबर मोरो
पियाकों बतादो ॥

१४

कासों कहिये कहोन जात ।
प्रोत खुशाल अपार श्यामको गूढ़ मर्त कोबात ॥

१५

जैतुलसो गोविन्द पो प्यारो ।
गुण अनन्त को वरण सके कवि महिमा अगम तिहारो ॥
कृपासिन्धु सकल जग जानत पूजत नर अरु नारो ।
पावत ज्ञान ध्यान अरु सब सुख नौ निध सिद्ध अपारो ॥
भगत सुकतहो आन परापत ओपत वर सुख सारो ।
प्रेम खुशाल बढ़ावो घरो पल राधावर पर वलिहारो ॥

झिंझौटी—जलद तिताला

श्याम पनघटवा ठाड़ारो जईहं मैंइहां यमुनाजोके तोर ।
चञ्चल चपल छैल नन्दनन्दन भानर तो रङ्ग गाढ़ो ।
ख्याल खुशाल करत अलवेला अङ्ग अङ्ग योवन बाढ़ो ॥

२

नैन छबीले गुइयाँ रसके रसीलेरी।
कजरा दीए करत कमनेती भौंह धनक पल वान
कमीलेरी।
रसीया ख्याल खुशाल नेहके लखत लगत रसिकन
अरमीलेरी॥

भिंभौटी—तिताला

अरी विन लाइयो फुलवारियाँ।
राधा मोहन रूप मनोहर आनन क्रान्त अपारियां॥
साँझी ललित बनाई नागर गावत मङ्गल चारियाँ।
यह सुख शोभा निरख सखी जन ख्याल खुशाल
अपारियाँ॥

जंगला—तिताला

नए नेहकी नई चितवतियाँ।
चपल बैस जोवन की माती पलक तीर भौंहैं
चढ़ी कमनियाँ।
ख्याल खुशाल भरे नैनमें छलत छलन मोहनी
मुसकानियाँ॥

भिंभौटी—जलद तिताला

कुंवर कन्हाईरी दूले रसीया।
कर कगना केसरीया वागा मोर मुकट छवि वरणी
नजाई॥
रास विहार महा शोभा सुख बाढ़ रहो अति
देत दिखाईरी।
सङ्ग दुलही वृषभानुदुलरी गलवाहीयाँ दिये मृदु
मुसकाईरी॥
जूथ जुवतवी नागर अलवेली निरखत सुख लेत
लुभाईरी।
रसिक खुशाल जीवन फल दाता देख भेष मन
मदन लजाईरी॥

भिंभौटी—तिताला

भरे नेह मतवारे नैना।
निरखत ख्याल खुशाल लुभावत विन लपटे पिया
परतन चैना॥

२

पीया प्यारी लगी तेरी अखीयाँ जोवन केमदमें
मतवारी।
मोहनी ख्याल खुशाल विलोकनि नैनन नेहकी
उरझ अपारी॥

३

कुमर कैसा मागत दान दहीको।
उमगाई परत रुकत नहीं रोकाई मानी डर कहीको॥
काहूके सिखाए भुलाए काहू कीया अपना चाह
चहीको।
कैसे ख्याल खुशाल करतही बससे एक ठाहीको॥

भिंभौटी—जलद तिताला

बैठे राम राज मन भावत।
मङ्गल धुनि चहुँ ओर अवधमें सुर नर मुनि गुण
गावत॥
अस्तुति करत ब्रह्मा ऋषि नारद शङ्कर प्रेम बढ़ावत।
दुरत छत्र चँवर युगल वरसे छवि कहतन आवत॥
सकल सिद्ध दाता प्रभु महिमा वरणत निगम सुनावत।
सुन सुन श्रवण उदार सुयश यश उर आनन्द
प्रगटावत॥
भरत शत्रुघन लछमन भाई भेंट अनेक दिखावत।
रघुकुल कमल दिनेश विलोकत जन खुशाल फल
पावत॥

भिंभौटी—तिताला

निरखत नारी सकल मिथिलापुर व्याह समय
दम्पति छवि नैनन।
काम कोटि शोभा नहीं पावत विधु लाजत
गत लखेन वैनन।
मोहत हास विलास भरे गुण मन रुच करन
अरु वैनन॥
करत नेवछावर युगल परस्पर रसिक लेत भरभर
सुख चैनन।
ख्याल कुशाल दसों दिशि लखियत सुर नर मुनि
प्रसन्न चित चैनन॥

भिंभौटी ठुमरी—तिताला

झूम झूम घिर घिर घन नाचे सङ्ग लिए दामिनी
चपलासी लख लख मोरन शोर मचाए।
बोलत पी पी पिया पपिया हाखुसी उमग
तन चाँप बढ़ाए॥

भिंभौटी—जलद तिताला

बंशी वाला श्याम मेड़े आदानी साड़े नाल हँसदा
लुभांदानी।
गान पट ऊधमी नन्दमहरदा नैन सैन मिला दानी॥
करदानी वस साड़े ख्याल पड़ा रहदा पल पल मन
ललचाँदानी।
चाहत सकल खुशी अपनीको बातें कहदा सुना दानी॥

२

बदरा झुमर लाइयां आए घिर घिर केरी।
एक अन्धियारी कारी निश सावनकी मोरन
शोर मचाइया॥
पीपी कहत पपिहा धावत पवन चलत पुरवाइया।
ख्याल खुशाल श्याम मिलनेकों कोयल कूक सुनाइया॥

भिंभौटी ठुमरी—तिताला

बगीयानोवे तेरे नैन निजारे।
आमिल मेरे यार पियारे॥
मोठी यानी ख्याल खुशाल देखारे।
नन्दमहरिके कुँवर दुलारे॥

२

कहाँ बजाईरे कान्हा वृन्दावन मांझ बँसुरीया।
भनक परो श्रवणनमें सखोरी तू रस छविकन छकाई।
बाढ़ी चाह रुकत नहीं रोके देखन कुमर कन्हाई॥
नए नेहको उरझन सजनी कापर वरणो जाई।
ख्याल खुशाल करत ब्रज मोहन कुञ्ज कुञ्ज छवि छाई॥

भिंभौटी—तिताला

राधावर कुञ्ज विहारी दूले रुप मोहनी छाई वृन्दा
विपिन मझारो।
निरखत मोहि रही ब्रजवनिता अङ्ग अङ्ग सुकुमारो॥
कुञ्ज कुञ्ज में केल करत ख्याल खुशाल अपारो॥

२

तोनू तकदी आइयां सोणा मेड़े जानो।
हो रहीयां मुश्ताक निजारेदी नए नए नेह
उरझाइयाँ॥

३

नाल तुसाड़े नेह लगाहै जगमें कौन सखोरी जोए
फारो गोपिया।
यह दुख देखके कठिन सखोरो मुंह अपना पपीहा
ने मूंद लिया॥

४

श्यामकारे मन भाइया।
विलसे ख्याल खुशाल कुञ्जनमें यही चित
रचि चाहिया॥

५

वारी वैस नन्दलाल मिले तो घरी घरी पल पल
लिपटाऊं।
अरे अरे लाला उमग भरी रति छतीयन लखि
मदन गोपाल॥
लावे बुलायनी सइयों विरहिन वेहाल॥

६

अरे अरे लाल नए नेहको बतियां पिया कहियो जाय,
कहा कहत गिरिधरजू कुछ कहो सुनाय॥
अरे अरे लाला प्रीत बढ़ी हिय सजनी जौं चन्द चकोर,
विन देखे जिय व्याकुल नन्दकिशोर।
मदन चाँप जिय उमगी उत पिय मचलाय
कैसे कोजो सजनी दुख सहोन जाय॥

७

अरे अरे लाला पिय चतुराई।
देखी सखी नैन मिलाय कौन मानको रितुहै जो
कहों सुनाय॥
अरे अरे लाला वो चितवन नहीं विसरे मनही
समुझाय।
ले आवो पिया वेग बुलाय मिलें आय पिया
गिरधर हित भगत बढ़ाय ख्याल खुशाल बढ़ाय
ब्रज मधु दरसाय॥

८

पियको पियारो छवि देखोई कोज्ये सोहनो सूरत
मोहनी मूरत अधरसुधा रस हिल मिल लीजे ।
ख्याल खुशाल रात दिनको करीयम जगत जननको
यही सीख दीजे ॥

९

रङ्ग रङ्गीलो तेरो जोड़ो हो प्यारी लागे ।
तेसेही राम लखन दोउ भैया तेसेही दोऊ अरीहो ॥
चरण कमल पर मेहदी राजत कर सोहै कङ्कन
डोरी हो ।
पावनरे की छवि पर कानर वारों मैं काम करोरीहो ॥

१०

मदमों भरी इतरात गुजरीया ।
ऐंड़ी बेंड़ी फिरत कुञ्जनमें देखत नाहीं भरके
नजरीया ॥
हरिसें भेंट भई कुञ्जनमें मानो पूरण राज उजरीया ।
घरसों निकसी गोपाल दरसकों भूल गई हाट
बजरीया ॥

११

एमाजो कोमें पांय पर देती चूक पड़ो भई मोमें एती ।
डोलिया फंदाय पिया ले चले मोंको नाता छूटा
नैहर सेती ॥
जो जनतोरे बैठ विदेशवा चलतको वेर दावन
गहि लेती ।
कहा होत अबके पछताए अबसर गयो तबे
नहीं चेती ॥
अब पिय वित जिय तलफत जैसे जल छूटी मोन
आय परी रेती ।
जान कहतहै प्राण कोई दममें पियको विछुर
जीऊंमें केती ॥
विनती बहोत बहोत कर थकोमें पियके आवनके
नेती ।
तब मनरो मैं चलतको कायम अब जिय जातहै
मोरा सेती ॥

भिंझौटी सिन्धी—तिताला

वैस गई मोरी नैहर सेती ।
हेतके बीज येखेत बिथारे उपजो विथा जर जाय
यह खेती ।
करके प्रीत सब मीत विछुर गए नेहके मिले दिन
चारके नेती ॥
प्रीत करत सुध गई विछुरनको अबतो कहा होत
जो चेती ।
दिल मिलके परदेश चले गये जोबस होत जाने
कब देती ॥
अब कोई जगमें प्रीत करो जिन मानो बात
हमारी एती ।
आप तरों जग तारों कायम प्रीत लगाऊं
सुसाहेब सेती ॥

भिंझौटी—तिताला

मोसें नेह लगाया चाहत है फेर छुड़ावतरे दैया ।
हमारी आँख बचाय अवरसे आँख लगावतरे दैया ॥
हाहा करजो अपनो सभामें लाऊँ तो अलसावतहै
बैठे नहीं उठ जात और कहीं रैन समावतरे दैया ।
यह जगमें है जोई पियारा बाको देखा वही सुभाव
जाको देत हंसाय वाहीको फेर रोलावतरे दैया ॥
है जग जैसे काठ पुतलिया बूझो मनमें विचार के
नाँचतहै दिन रैन वहीजो नाच नचावतरे दैया ।
सहज सहज जग तजदे कायम साहेबसे मनुआ
लगा वाको शरणमें आयके फेरको बहकावतरे दैया ॥

२

अरी मैं पियासों प्रीत न करती ।
यह दुख मोपै काहे कों पड़ता प्रेमके पैड़े जो पांव
नधरती ॥
मोह जरायो विरहा अगनमें जो पखी दीपकमें
जरती ।
अब पछताये होत कहा कायम मनमोहनके
चरणन परती ॥

२

विछुरत नहोहैं बार जगतका मेलारे ।
आखर चलनाहै छिन माहीं एक दिन साँझ सबेरारे ॥
मतकर मोह तनक जोवन पर नाकर धन सँकेलारे ।
सबहो धरा रहत धरणी पर जब जिय जात अकेलारे ॥
अपनो अपनो गरज कारण कुटुम भयो है मेलारे ।
इनमें ना हरि विन कोई तेरा हस्तराम दुहेलारे ॥

४

बूझ नहीं मन तहांन जइये ।
आदर घटत अनादर होई कँचन बसत तअइये ॥
जानत नाहीं मरमको बातें गुन्हा पान नहीं काहिये ।
हरि विमुख जगमें नर सोई ताको सङ्ग न पइये ॥
खर कूकर कौवाको नाहीं ताके सङ्ग क्या लइये ।
कहै कबीर वलिहारो ताको हरिचरणन चित दइये ॥

५

सब जग धन्धाहै धन्धा पहचानत प्रभुका वन्दा ।
पुत्रादिक मित्रादिक अरुझो महामोहका फन्दा ॥
तन धन काम कारणे केते मूरख पच पच मरदा ।
मैं मेरा तें तेरा करता आप खजावे अन्धा पर निन्दा ॥
अपवाद ईरषा किसके काज करन्दा ।
छिन छिन काल तकावे तुझकों मारेगा मति मन्दा ॥
वेपरवाह बन्दगी करना रहेन सदा खछन्दा ।
हस्त राम हरिभज भव तरणा जानोमों जानन्दा ॥

६

लिखोसो विधि नाहीं टरे ।
कहाँ शशि सूर कहाँवो राहु सनमुख आन अरे ।
पण्डित व्यास वशिष्ठ आदिदे लिखि लिखि लगन धरे ॥
दशरथ मरन हरन सियाको वनमें विपति परे ।
भीषम करण द्रोण सीमा ढिंग तासों नाहीं डरे ॥
भरी सभामें द्रोपद सुताको पट दुःशासन पकरे ।
सुर नर मुनि असुर पन्नग सब भावी वसहो परे ॥
तीनलोक चवदा रतन मध कर्म्मगतहो अनुसरे ।
सूर श्याम चाहे सो करिहै वृथाक्यों भ्रमत फिरे ॥

७

सालिगराम सुनो विनती मोरो यह वरदान दया कर पाऊं ।
प्रात समय उठ मज्जन कर कर प्रेम सहित प्रभुकों अन्हवाऊं ॥
धूप दीप चन्दन तुलसीदल भाँति भाँतिके पुष्प चढ़ाऊं ।
आप जाय सिंघासन बैठे घंटा शङ्ख मृदङ्ग बजाऊं ॥
एक बून्द चरणामृत पाऊं पित्रनकों वैकुण्ठ पठाऊं ।
जोकुछ मिलत सहजमें अन्न दिन भोग लगाय फिर जूंठन पाऊं ॥
जँह लग पाप कियो दुनीयांमें यरिक्रमाके माथे बहाऊं ।
छूट जात डर भवसागरको सब देखत वैकुण्ठ सिधाऊं ॥
अंवरदास कहै कर जोरे प्रभु दासनको दास कहाऊं ॥

८

राम कृष्ण वासुदेव हरे हरे कहो मन ।
केशव यादव जय वंशोधर देवकीनन्दन कर मुरलीधर चक्रपाणि मन ।
मोहन मधुसूदन पारब्रह्म परमेश्वर ब्रजपति कंस-निकन्दन पीताम्बरधर ॥
माधव दीन-वन्धु करुणामय माया-पति मुकुन्द मनोहर ॥
हित परख रमारथ श्रीनन्दनन्दन दीनदयाल दयानिध चिन्तामणि मणि-मानस अन सकल धर ॥

९

देखो राम नामको माया ।
यह जगमें आयके कोऊ नहीं उबरा जेन नारि फसाया ।
विषया तनकों कौन चलावे सुर नर मुनि सबहो नचाया ॥
आवत जात फिर फिर आवत ऐसा फेर लगाया ।
कहै कबीर तेरो वलजाऊं ऐसो जाल बिछाया ॥

१०

तुम तज कौन नृपतिपे जाऊं ।
मदन-गोपाल मण्डली-मोहन सकल भुवन
जाको ठाऊं ।
तुम दाता समरथ तिहुं पुरके जाके दिए अघाऊं ॥
तुमही छोड़ और कित जाचूं पर हाथ कहा बिकाऊं ।
घरमानन्द दासको ठाकुर मन वाञ्छित फल पाऊं ॥

११

मैं तो महीदे कारण लुटीयाँ मैड़े माहीड़ावि ।
जावोनो कोई मुड़ले आवो मेड़ा मोयाँ इश्क लगा
जिन्द फन्दीया मेड़ावे ॥

१२

ब्रजको रजमें भई क्योंन बोर ।
परी रहत गोकुल कीडगरमें उड़ उड़ लागत
श्याम शरीर ॥
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक दुर्लभ श्रवण सुनत
वंशीवट तीर ।
चन्द्र सखी हित वासकृष्णछवि मिलगए मोहन
मिट गई पीर ॥

१३

मन लाग्यो कान्हा अनोखेसे ।
सांवली सूरत मोहि लियो मन मोहनवा नीकेसे ।
गुरु जन पूरे रसिक विहारी वेखनदे तन तीखेसे ॥

१४

वारी श्यामा इहि कुञ्ज मग आयजा ।
पीतम नैन चकोर चखतहैं वदन चन्द दरसायजा ॥
मुखतें नेक निवारी नीलपट छविसों
मुरि मुसिकायजा ।
नागर नवल किशोर लाल घर चितवन रस
बरसायजा ॥

१५

अखियाँ कृष्ण मिलनको प्यासो ।
आघतो जाय द्वारका छाये लोक करत मेरो हाँसो ।
आमकी डार कोयलिया बोले बोलत शब्द उदासो ॥
मेरेतो मनमें ऐसी आवतहै कर बतलेहौं काशी ।
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर चरण-कमलकी दासी ॥

१६

रघुवर कौने वन जाऊं मेरी गोदीरे बालकवा ।
रोवे हरण गोद लिए बालक एक ओर वधिका
शिकार ।
सर लिये एक ओर व्याधा एक ओर जाल फन्दाय ॥
अब नीके बन्ध भुवङ्गम व्याधा आवे जाल उड़ाय ।
विषधर डसो बधिकसों तबही मृग बहोत हरषाय ॥
उठो हिरनो हिरण और बालक यह गत लखीन जाय ।
धन धन धन प्रभु सूरके स्वामी राख लिये शरणाय ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

प्रीत कर कौनहूं सुखन लह्यो ।
प्रीत जगोकरी पतङ्ग दीपकसों अपनो तनजो दह्यो ॥
अलिसुत प्रीत करी जलसुतसों सम्पुट बास रह्यो ।
सारङ्ग प्रीत करी नादसों सनसुख वान सह्यो ॥
हमजगों प्रीत करी नन्दनन्दन सों चलत कछून कह्यो ।
सूरदास प्रभु तुमारे दरसकों यह जाय सोच रह्यो ॥

२

वोदधिदानो कानुड़ा मैड़ो जान ।
यमुनाके नीरे तीरे बंसरी बजावे गावे नीका तान ॥
घर अंगनान सोहावेन भावे वस कर लीने मेरे प्राण ।
विष्णु दास कों कलन परत विन देखे तेरी आन ॥

३

जोवनदा साड़े मांगदा मसूलनो कौन कोता वट
वालनो ।
जोवनदा कर किसने लगाया सुन सुध वुध गई
भूलनो ॥
गोकुल गांवका रहना छांड़ो कालिन्दीका कूलनो ।
विष्णु दास न पास वसनदा धरम नहीं निरमूलनो ॥

भिंभौटी—तिताला

किन दई इसनू हाकिमी जोवनदा कान्हा
मांगदा जगातनो ।

जोवन जगात सुनी नहीं कबहूं इह अचरजकी
बातनी ॥
त्याग करो यह व्रजको बसवो चैन नहीं दिन रातनी।
ठंडी राम सुख कैसे पइए इन लोचन लिय जातनी ॥

२

साँवलड़ा जोवनदा साड़े हासल माँग दानी।
आंदे जादे इस राहदे अन्दर किसनू न लीता
जगातनी ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

सतगुरु जारि जग जंजाल कृपा कर कर किए निहाल।
कण्ठी बांध कियो जिन सेवक नाम सुनायो श्रीगोपाल ॥
ओंकारको तिलक बतायो नाम जपनकों तुलसी माल।
पूजाकी सब रीत बताई ऐसे किरिया करो त्रिकाल ॥
तिमिर दूर कर ज्ञान दिखायो घटमें दीपक दीनो बाल।
महानभावके पद बतलाए समय समयके सुन्दर ख्याल ॥
सप्त सुरन और तीन ग्राम भलो राग रागिनी औ
सुरताल।
ऐसे ठंडी राम गुरु स्वामी विष्णुदासको करो
प्रतिपाल ॥

भिंभौटी—तिताला

श्याम तेरी वंशी मैं जबतें सुनी।
सुर नर मुनि थकित भएहैं श्रवण परी जब धुनी ॥
स्वर्ग लोकतें रम्भा आई नारद गन्धर्व गुणी।
सप्त सुरनसों तान मधुर धुनि राग सागर में
लीनी दूनी ॥

२

कान्हा तेने वंशी बजाय जादू डारारे।
जन्त्र मन्त्र टोना पढ़ पढ़के वस कियो
जियरा हमारारे ॥

३

नदीया किनारे किनारे गोरीया सुधारे बार।
इतते आए कृष्ण साँवरो उतते आई ग्वारि।
रङ्ग रसावते पूछन लागे कौन पुरुषकी नारि ॥

४

पिया बिन कैसे कटे दिन रतियां।
विरह अगिन मोहि आन दहतहै फटी जातहै
छतियां ॥

५

जोगी बिन आज मढ़ैया सूनी।
कित गए आसन धूनी तजके कहां अलख भनी ॥

६

शुमानी नन्ददे छैला साड़े नाल कदीतो बोलबो।
भूख गई निशा नींद न आवे छिनडे नीको
जिन्द घोलबो ॥
निठुराइयां तैनु किन बतलाइयां दिलदी घंडी खोलबो।
सुखदाई महबूब पियारे बिन दामा लीतो मोलबो ॥

७

सांवला यार सितम करेदे बांके नैना तेड़े जालम
जोरवे।
अकथ कहानी जानी तेड़ड़े हुंसनदी जोवनदी
अजब मरोरबे ॥
लोग दिवाना मैनु देदा बुराइयाँ इश्कांदा पर गया
शोरवे।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम तुम जादूगरहो
चित चोरवे ॥

८

तोरी चितवनदी कारे करैया।
निरमोहिया तू छलिया कन्हैया ॥
तिरछी चितवन लग गई कारी देखनको अब कोहै
सहैया।
कायम छिन पल कलन परतहै राख शरण तेरी
लेत बलैया ॥

९

बनवारीरी वंशीया लागे तोरी प्यारी।
वृन्दावनमें खड़ी राधा प्यारी अखियां लागी मतवारी
विरहिन लागे जिया विहारी ॥

१०

कलालोरो मद्रकों मधवा पिलावे कला० ।
हाथको कङ्गना दूंगो गलेको हरवा दूंगो अच्छी नोकी
मरदे गुलालो ॥

११

सदा समझाय रहियाँवे लाखों बार ।
महीदे कारणवे ढूंढ़न चलियांवे खड़ावे उड़ोकाँ
रावो पार ॥

१२

मन गइयां तेड़े नालमें भूलो मेड़ो जान ।
नैना तुसाड़े बाड़ी वरकोदो नोकों ज्यों भामोत्यों पाल ॥

१३

लाड़ो थारो भाग चम्पेदा माणावे ।
बागभो तेरा बारो बगोचाभो तेरा बोच महबूबाँदा
थानावे ॥

१४

तेड़ेवे कारण वे मेड़ा बागाँदा बासीवे ।
बागभो तेरा बारो बगोचाभो तेरा तू बागांदा साइयावे ॥

१५

भला जाने वाले मेड़ो सुरत विसराईवे ।
जिस तन लागे वारो सोई तन जाने मेड़ा सोणा
तू क्यों जाने पीर पराईवे ॥

१६

नैना ताड़े जोर विरहियाहो ।
कबको मैं ठाड़ो ठाड़ो अरज कराऊं इतनो अरज
मेरो मानलेहो ॥

१७

फंदा क्योंकर छुटदा मेरो जानवे ।
अनोवे मंवारो छैला सिर पर गागर भरो ठुमक
ठुमक पग रखना जानवे ॥

भिंझौटी—धीमा तितालो

अनो हाँहावे रङ्ग झुर मटड़ा ।
साथां कुड़ोयां मिल पनियांनु चलियां उघर गयो
तेरो घूंघटरा ॥

२

रवा माड़ो सुनवे गरीबांदो अला ।
विछुड़ेनु कोई आन मिलामो रब करे तेड़ा भला ॥

भिंझौटी—तितालो

बेरावलियां तू मेड़ो गलाँ माणवे ।
बाबुल खेड़े वारोवे जम जम बसदे वो मोयां खेड़ादे
खेत बबूलवे ॥

२

बलमा एसो बांसरोया तैंने काहेकों बजाई ।
वह गामको नाम न जानू जहाँ उपजे यह बांसरो ।
श्रवण सुनत सुध बुध सब विसरो लेत निशासे सांसरो ॥

३

कहै केवट प्रभुसों मत छुवो पाँवसों नाई ।
सुनोयत पाथर नारि करोहै मेरो यहो कमाई ॥
कठवत माहे चरण धराए गोद लिये बैठाई ।
डरत डरत पर पार उतारे रीझे श्रीरघुराई ॥
कर भूषण उतराई दोनो ताहि कर नहीं लाई ।
नाई सों नाई न लेत मुड़ाई क्यों मलाहसों मल्हाई ॥
तुम तारत भवसागर जनकों हम उतारत घर नाई ।
प्रेम रङ्ग प्रभु ककुअन दोनो हँस मलाह गरे लाई ॥

४

लगन मोरो लागो पियसों ।
जबरे लगो तब लगत न जानो मन वस गई जियसों ।
कृष्णानन्द भईमें बावरो रोम रोम हियसों ॥

५

जो सइयां चले परदेश गवन विष खाय रहिहौंरे ।
सास बुरो मोरो ननद चवैया उमग दिलको मैं ना
कहियोंरे ॥

६

कान्हा काँधे कामरिया और शिर पर मुकुट
कटि पीताम्बर हाथ लकुटिया छाजे ।
अधर धरे वंशी मनमोहन सप्त सुरनसों गाजे ॥

७

सुरत मोरी मोहनसों अटको ।

जबते ओट सरोज भएहो व्याकुल फिरौं भटको ।
वंशीवटके निकट हरि ठाड़े छोन लई मटको ॥
दुरजन लोक चबाव करतहैं सास ननद हटको ।
ब्रह्मदास कवि कहा बखाने बा नागर नटको ॥

८

बिरहिया आज मइकों विरह जनायोरे ।
विरहाको मातो बन बन डोलौं कतहूं खोज
नहीं पायोरे ॥

९

रजबाड़ेका जाना छोड़दे ।
सइयां इतनो अरज मोरो मानले ॥

१०

मन हर लीनो मेरो इन साँवलियाने मोपे डारके
प्रेम प्रीतको फेरो ।
बिन देखे मोहे कलन परतहै सुनरो सखो कैसो करिये
बाको तो सूरत कवि हित चितमें बसतहै नैनमें
फिरत रहत घरी पल छिन अब नहीं छूटे अपनो
मौजसे कोऊ कहो बहुतेरो ॥

११

अरे तू न जायरे जोबनवा ।
कैसे कर राखूं मैं अपने मोजसों मनमोहन पिया
नहीं घरबा ॥
कलन परत घरी पल छिन सखो मोहै मदन कदन
अति जदन करतहै मनवा ।
हित चित मोत नित बसे नहीं नेड़े कतोयां उमग
धक धक करै सजनी नींद नहीं आबे पिया बिन विरह
सतावे मइकों सूनो भवन लागे डरवा ॥

१२

साँवलियारे मोरो नरम कलैयां जिन तोरो ।
हौं जमुना जल भरन गई साँवलियारे ॥
अरे हारे मोरो भरोरे गगरोया जिन कुवो साँवलियारे ।
माधोदास गुण गाबहिं मैं तो चरण-कमल बलहारो
साँवलियारे ॥

१३

हाँरे मोरे माथेको गगरोया ढुरकाय डारोरे ।
दधि मेरो खायो मटकिया फोरो नरम कलाई
चटकाय डारोरे ॥

१४

सइयां मत जाइयो विदेशवा मोरा जोबनहै मतवारा ।
हाहा करतहौं पइयां परतहौं विनतो सुनले सइयाँ
हमार ॥ मत जा० ॥

१५

मुरलिया बाजो बनमें ।
आधो अधो रतियाँ टेर सुनावे कुञ्जलता घनमें ।
तीखो तान आन मनमथको वेध रहे तनमें ॥
निरतत अङ्ग त्रिभङ्ग साँवरो गोपिन के गनमें ।
कृष्णरङ्ग मखो सरबस वारे आनन्दहै मनमें ॥
हरे बांसको बांसुरी, निकसो परबत फोर ।
जोमें एसो जानतो, लेतो तोर मरोर ॥

१६

रसोया नागर कान्ह कोथा गइलोरे वँधु ।
आमार नागरो आइलो वँधु खाइलो नागर पान ।
बैठन देवो शीतलपाटो जोवन देवो दान ॥

झिंझौटी भूपाली—तिताला

तुम पार लगाव देहो कन्हैया मोरो नैयाहो ।
तुमहो ठाकुर तुमहो परमेश्वर तुमहो राम रमैयाहो ।
तुमहो जगत उधारण तारण विनतो करूं घरूं
पैयाँहो ॥
तुमहो तुम दोसत सब ओरे तुम विन कोन
रखैयाहो ।
कृष्ण सनेहो मैं तेरो बल जाऊं भवसागर पार
करैयाहो ॥

झिंझौटी—तिताला

नन्दनन्दन बुलावैरो कदम तरे चल सजनी ।
सुन्दर वदन मदन-मन-मोहन मृदु धुन वंशी बजावे ॥
तुम विन श्रीवृषभानुनन्दिनी उन मन और नभावे ।
राधा राधा नाम रटत सुख जानकीदास सुख पावे ॥

२

नैन विरहिया तोरे पियारे ।
अनियारो उजियारे कजरारे चञ्चल नैना अतिरतनारे ॥

३

नजानो कौने बजाई मुरलीमें एसी तान ।
जबही भनक परी विरहाकी बीरन भूल गई
गुरु ज्ञान ॥

४

रातके सइयाँ तुम कहाँ कहाँ जागे भोर भए तुम
आए मेरे आगे ।
कवन नवलतिया रस वस कीने कर लीनो
भाल महाबर नैन अनुरागे ॥

५

मइकों गारी दीनोरी सुन ननदीया वीर तिहारा ।
ना मैं बोली ना मैं चाली मदनवान मोहिको मारा ॥

६

रमैया मोरीरे नैया लगाय दीजे पार ।
भवसागर अपार बहतहै प्राची बहै बियार ।
औघट घाट नावहै झाँझरी केवटहै मतवार ॥

७

सुध नहीं लीनो हमारी सइयाँ मोरा कौन
देशवा गए ।
कौन जतन मोहै खबर सुनावो वल वल जाऊं
तिहारी सजनी कौन देशवा गए ॥

८

चुरीयाँ चुभ गईरे मोरी नरम कलैयारे ।
ना पहनो मोरी सास रिसावै सइयाँके करेजबामें
चुभ गईरे ॥

९

गईरे सागर पनीयाको ।
गागर भर हमजो चलीरे सागर, चिकनी माटी पग
रपट गयो घडुल फूट गयो सासु ननद कहै मातीरे ॥

१०

आगे ठाड़े मनमोहन सोहन यमुना पानी नजइहूं ।
मटकी झटकी भू में पटकी नैनन सैननदे अटकी
तन मन वस सब मइहूं ॥

११

उन विन जियरा निकसोई जात कोऊ सईयाँ
कों नहीं मिलात ।
चञ्चल बिन मोहे कल न परतहै कैसे कटिहों
दिन रात ॥

१२

पिया बिन वन फिरहूँ अकेली साथ नहीं कोई
सङ्ग सहेली ।
सिन्घ रीछ बटपार वन मेंहाफिज नहीं कोई पास
सजन मै० नवेली चलहूं अलवेली ॥

१३

अब मोहे तारणकी वारी सुन लीजे अरज हमारी
गिरिधारी ।
लख चौरासी भटकत भटकत आए शरण तुमारी ॥

१४

बस गयो बस गयो बस गयोरी मन मोहन मन मेरे ।
छवि देखत जीयरा निकस गयोरी ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा चितवन में जिय
धस गयोरी ।
काजिम रोम रोम तन मेरे नन्दको लाल विलस गयोरी ॥

१५

छवि देखत मन मेरो असनायोरी ।
लोक लाज सब जीसे निकस गई जबसे श्याम मन
वस गयोरी ॥
कोऊ कहत मोहि मई बावरी कोऊ देख मोहि
हँस गयोरी ।
नित प्रति देखहु कायम हम कहँ दरसन अपना
बकस गयोरी ॥

१६

झुरमरटदा मैंड़ी लटियाँदा माड़ें सेनावे ।
रात देहा मैंनु वे ध्यान तुसाड़ावे सोदल भोनी तैंड़ी
पटीयाँदा माड़ा साहबांवे ॥

१७

मन मेंड़ा चाहे तेनू सांई असी बंदीयाँवे ।
रोशन तेड़ी लेंदे बलाइयाँवे तेड़ड़ी आन मेनु
भांदीयाँ साइयांवे ॥

१८

राझन साड़ी गली आव हीर मो जीव जिवावे ।
कित वल जांदा वारीवे कितवल बसदावे कैसेके
मन समझावे ॥

१९

ताँड़ेवे कारणवे आयानो माड़ा बागांदा वासीवे ।
बाग भी तेरा बगीचा भी तेरा तू बांगादा साँईवे ॥

२०

बांके नैनाका मारा भला म्हाका राज ।
एकतो नैना वारीवे वेख नजर भर देखे आवे लाज ॥

२१

आवना म्हाके देश सांवला बनवारी ।
म्हारे थारे मिलनरो मनमें रहेछे आन मिलो गिरधारी ॥

२२

वंशी बालाहो आजा म्हाके देश ।
थारे कारण मैं ढूंढ फिरीहूं कर जोगणरो भेश ।
घर घर वन वन नगर नगरमें आय मिलो वाली वेश ॥

२३

अंमा वालगोविन्दा पर गुटो टयु चूड़ चूड़ ।
पीर गुटो टयु वालसुकुन्द पुन चूड़ चूड़ मामुर
पुड़ पुड़ ॥

२४

लाग गईलोरे हमारे नैना एक कङ्करवाकी चोट ।
तिरछी चितवन देखके वस किये प्राण हमारे ॥ ला०

२५

भर गए नदीय उमग गए नरबा अब कैसे घर जाऊं
मोरो ननदुल ।
उमगे जोबना मएहैं सागर अब कैसे राखूं एमोरो
गुइयाँ ॥

२६

अँखो अँखो लगाय लिए जायरे देखो देखो लुगैया
गवाररे ।
अनवट सोहै बिछुवा सोहै चलत कमर लचकायरे ॥

२७

बंशी बजतेही करेजे में लग गईरे बाजो बाजो
मोहन तेरो बाँसरीया ।
तान वानसोँ मारत लेत निकासे साँसरीयां ॥

२८

एस बागके मेले में चलकर यार देखो तमाशा
परियांका ।
ठंडी हवाहै छाई खड़ाहै मोती झील पे यार क्याहै
बहार ॥ दे० ॥

२९

विरहिया आज मोहिको विरह सतावैरे ।
वृन्दावनको कुंज गलीन में मृदुधुन वंशी बजावैरे ॥

३०

मोहन प्रीत लगाए हँस मधुर वेणु बजाए ।
जन्तर मन्तर जादू पढ़ पढ़ मधुर मधुर सुर गाए ॥

३१

गोरी सङ्गीया तेरो कोऊ नहीं तेरे साथ ।
मनमोहन सोँ प्रीत तू करले भुज सरले तू बाथ ॥

३२

पिय सङ्ग लागारी जिय सारा मेरा ।
कासे कहूं मैं आज पियाने औचकहो मोहि घेरा ॥

३३

मैं भूली नेहा लगोवो नेहा लाया ।
जिथे जोर नजारा लगदा तित्थे दिलनु अड़ाया ।
सङ्गले जाबो ढूंढ पहोँचावो बड़ा भार उठाया ॥
रव नाल नेहडा कीता असानु जोवनदा सुख पाया ।
भजन तेड़ा बाज बनाहो आशिक नाम धराया ॥

३४

साजन लेगये मइकों लेगये रतियाँ भुलाय ।
जान विना हम व्याकुल सजनी उन विन ककून सुहाय ॥

३५

ननदोरी सइयाँ काहेको रिसायो ।
बाट तकत रैन बीत गई न जानु जाय कहाँ ठहरायो ॥

३६

देयामैं कहा करूँ सइयाँ कौन गुण उतरूँगो पार ।
पहेलारो टिकोरा लागा मोरो गुइयाँ चैतको
आईरे बहार ॥

३७

मोरो पियाके आवनको कौन कहै अब कौन कहै ।
वेजो गए एसे फेर न आए मदन कदन अब मोहे दहै ॥

३८

माधो केशन सों डगरा बुहरतो माधो ।
जोमैं जानतो सइयां मोरे आइलो फुलवन सेजियाँ
बिछावतो माधो ॥

३९

नजरीया का मारना जोबै ।
रे बरछोका मारा वारी कोई दम जीवै नैनाका मारा
मरजावै बिचारा ।
औषधि मूल एक नहीं लागै कृष्णानन्द रूप मतवारा ॥

४०

सइयां मोरो बंगुरो मुरक गईरे ।
एक डरहै मोहे सास ननदको चोलोया मसक गईरे ॥

४१

सइयां नेक नीकै बोलो जियरा जइहै रिसाय ।
अन्त कन्यको कोउ न जानै देखत मन ललचाय ॥

४२

तोरा मोरा जियरा एकरे जानो ।
जानो मिले दिलदार गुमानो प्रीतको रीत न
छानोरे जानो ॥

४३

अलकैं तोरो घूँघरवाली अरे वनवारीहो ।
वृन्दावनमें खड़ी राधा प्यारी चाल चलै मतवाली
मदको लागै नीको प्यारी ॥

४४

पनीयाँ ना जइहौंरे मोरो जुलम कर गई जेठनिया ।
सिर पर घड़ा घड़े पर झारो पतलो कमर
लचकनिया ॥ मे० ॥

४५

पनघटमैं ना जइहौंरे मोसें मोहन करत बरजोरो ।
बाट घाट मग रोकत टोकत झक झारत बइयाँ मोरो ॥

४६

मैड़ा माहीड़ावे कूडे बोल न बोल ।
अवध बदो वारो अजहूं नहीं आए कोतानो साडे कौल ॥

४७

साड़ो गली आँमो वोसोणा ।
नैनादो तपत बुझामोवो सोणा ॥
आवरङ्ग असो मुश्नाक तेडरे देवे मोयाँ कोई टपेदो
नाम सुणामोवो सोंणा ॥

झिंझौटी—ताल जत

लेगयो जियरा लोभाय जालम लेगयो हमरा ।
है कोई यह दुखका बटेया याको कोउ जा समझाय ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

रसिया जोबन वाला मेरा प्यारावे ।
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कँगना जोवै राज दुलारा
मेरा प्यारावे ॥

झिंझौटी—तिताला

घूंघर वाला बाला मेरा बनरावे ।
मुसकना सिरवे सेहरा विराजे ब अछो वनो घर आया ॥

२

भीनडे वालां नालां सइयों दिल लगोयांवे ।
छलड़ा भलड़ा तिखड़ा बाँकड़ा सभां रतां जगोयांवे ॥

३

साँवल प्यारावे आमिल मेड़े नाल ।
तुझ जेहा मेनू हारन दिसदा ज्या भामा त्यों पाल ॥

४

ढोलन प्यारावे आमो माड़े देश ।
तेड़े खातर वे जागन हुइयाँ छुटे लाबड़े साड़े केश ॥

५

साड़ी को तकसोर मोयाँ रांभावे ।
ज्या तू छाड़ कर मैनू गया विच अवेड़े रव वरण
लोती फिर कर यों कहदो हारवे ॥

६

बंशी नोको बजाव मोहन प्यारावे ।
जन्त मन्त टोना जादू करके घर अङ्गना न सोहावे ॥

७

ना देहौं बदनामो कजरारे ।
ए कजरा सेरे नैहरसे आयो जर जर मरे मोरो
ननद जेठानोरे ॥

८

तैं मोरो मसकाय डारो अँगिया ।
जावो जलालदीन हमसे न बोलो तुम नाहीं मोरो
कुच तोर डारो अँगिया ॥

९

तोहे राम दुहैयारे दिवाई ।
कोट वार रजो नहीं मानो देख मोहन मोरो लाख
लोकन में लाज गमाई ॥

१०

भर भुज मसको दैयारे ।
जात हतो मैं अपनो मौजसे नाजानू इधरसे आए
अचानक मारग घेरो मेरो ढोट कन्हैयारे ॥

११

पानीड़ा भरेरे मदमातो गुजरिया ।
रेशम डोरो सोनेदा गगरा रतन जड़ाऊं को इंडुरोया
उमगसे रस भरे गागर शीश धरे सो सदमातो
गुजरिया ॥

१२

ए में तेरे विन वेकल भई सारो रैन ।
सगरो रैन मोहे तलफत बीतो सइयाँ नहीं
आयो सुख देन ।
कृष्णानन्द मोहे हृदय लगावहे बोल अमृत के वैन ॥

१३

नोका लागना अच्छा शोवे जियरा मोरा मानत
नाहीं अब तुम जाबारे ।
बाटके बटोइया पइयाँ तोरो लागूं इतना सन्देशवा
ले पहुँचाबोरे ॥

१४

वालमले चल मइकों डालोया फन्दाय ।
नैहर में मारा है कोई ऐसा सखियन जाय सुनाय ॥

१५

गोरो लट छाड़ देरो तेरा लटोयामें काला नाग ।
कालेके काटे हमजो बचारे अपने सइयाँके भाग ॥

१६

बनरा मेरा अच्छा नोका लागारे ।
चुन चुन कलियां मैं सेज बनाऊं रहस रहस
गरे लागारे ॥

१७

वलमा मोरे उचट गईलो मोरो नींद हो ।
जोमैं एसो जानतो प्रात न करतो बिन देखे नहीं
चैनहो ॥

१८

एरोए मैंतोरे विन वेकल भई सारो रात ।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो सइयां नहीं
आए मेरे प्रास ॥

१९

रावलाको कोई न मारो लग गई प्रेम कटारो ।
कोई बोले रामा रामा कोई बोले हरि हरि ये नदोया
तू काहे वैरिन भईरो ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

अरे बाँके यार कहाँ लेता जाइयारे ।
पाँव मोरा भारो चल न सकतइं ऊंचे अटरिया
चढ़ाए लिए जाइयारे ॥

भिंभौटी—तिताला

कलालोरो मइको मधवा पिलावे ।
हाथ को कंगना दूंगो गलेका हार दूंगा अच्छो नाको
भरदे गुलालो राम ॥

२

जागी सारी रात बनरा जीवेरे भलावे ।
बनाके खातिर वारीवे बाग लगायावे मीयाँ या बनरी
रङ्ग भीनावे ॥

३

तू की जाने वेदिलाँदी मेरीयांवे ।
जा तन लगे सोई तन जाने दिलनु और नहीं सेरीयांवे ॥

४

कटारी जिन मारो सइयां कारी लग जैहै ।
एकतो कटारी दूजे विरहने मारी तीसरी कटारी
मोरे कारी लग जैहै ॥

५

ढोलन सानु जटियांदे नेड़े नहीं जानारे ।
जँग सोयालेदी जालम जटीयाँ तनु राखे विलमायावे ।
इस वैसकी जालम जटीयां जँग सोयालेदी थानावे ॥

भिंभौटी भूपाली—तिताला

अब जल भरन न जाऊंरी ननदीया ।
जैसी बात हरि कीनी मोसौं तोसों कहत सकुचाऊंरी ॥
जब जब आवत याद बात वह समुझ समुझ
पछताऊंरी ।
जानकीदास कैसे बनहै यह अन्याव तेरे गाँवरी ॥

भिंभौटी—तिताला

सइयाँ की सेजिया मैं कैसे कैसे जाऊं लोक दहनवा
जागेरी गुइयां ।
क्षणानन्द पहिर बैठी मैं रङ्ग रङ्ग के बागेरी गुइयां ॥

२

मोरा गवन लिए जाय बदरीमें सुनियेरी ।
मोरी वगर परोसन हितको जाय कहो गोकुल नगरी ॥

३

भौनड़े बालड़ा बाला मेरा बनरावे ।
मुंसकने सिरेर सेहरा विराजे अच्छी बनो घर
लाया मेरा बनरावे ॥

४

बनी बना सँग अज बबनोरे ।
कुसम सेहरा शीश दोउनके चांद सूरज मिलगई मगनी ॥

५

सइयां निरमोहिया मैं कौन मग जाऊं ।
नैहरकी मैं राह न जानत भूल गईहौं वा गाऊं ।
कहाँ नाते लाए तुम मोकों जानतहौं नहीं नाऊं ॥
ऊंच नीच पथहै सब जगको परत नहींहै पाऊं ।
जगतनाथ को लाए जहांसे पहुंचावो वहीं ठाऊं ॥

६

लागा झकोरा प्रेमका गोरी सोय गईरे ।
सासुजीकी बोलन बोलोरी कोयलिया डर लागेछे
मैं मोह गईरे ॥

७

जो नहीं लगदावे रावला मेराजो ।
खेड़ेनुःछड़वेके कितवल चलीयांवे मीयाँ जित वल
वस दानो राँझणाजो ॥

८

नाहीं करत मोरी बहियां मरोरी यह तोरी
वर जोरीरे ।
अँगुरी पकरत पहुंचा पकरा वोही कहावत तोरीरे ॥
गोरी ठठोली मोसन छोरी कोऊ जानी छोरीरे ।
हाफिज तुरक मिल अङ्गुरी मरोरी गाननको कहा
पोरीरे ॥

९

वाकों कौन नगरमें ढूंढूं वाकों कौन डगरमें पूंछूं
वाकों कौन वगरमें पाऊं वाकों कोऊ बताउरे ।
नगर डगर वगरमें नाहीं हाफिज उत विरम रहो
सोई कोऊ ढूंढन पाए वोतो आपो चाहै आएरे ॥

१०

वैरन बँसीया बाजीरे नींद उचट गई सइयां हमरी ।
हरे बांसकी बाँसरीरे कोई मोहनके सुख लागीरे ।
क्षणानन्द निशि वासर टेरत अबतो तू बड़ भागीरे ॥

१०

बोले मोर पपीहा प्यारे चुड़ीयां कड़को मुड़कीरे।
कृष्णानन्द रहत रस माते श्याम घटाहै जुड़कीरे॥

११

अपनेरो मन्दिररसें निकसी सइयाँको मैं चोरीरे।
सासको न मानू ननदको न मानू मानू जेठानीया
तोरीरे।
कृष्णानन्द एक नहीं मानू श्यामसुन्दर मन बोरीरे॥

१२

वारी वारीरे सांवलीया तेरी तानको गानको तेरी
मान को तेरी ठुमक चलन तिरछानको।
छुम छननन पग नूपुर बाजे तुम तननन मुरली धुन
गाजे सननन सन पवन चलतहै पूर्वानको कुर्बानको
वलिहारी गो तेरे वारी मेरे प्यारेको तेरे आनको॥

१३

खड़ीवे उड़ीकां तेरी आन भला भला माही बाला।
जङ्गल जंगल वे ढूंढ़ती फिरी मेरा मियां कलन
पड़ै जो मेरी जान॥

१४

तोरी चितवन दुख दीनो मोरे सइयाँ।
विनती करतहूं तोरी पइयां परत हूं तापर मानत
नहीं मोरे सइयाँ॥

१५

बस गई सइयाँ सेतोरे मा।
हैतको वीज ज्यों खेत विथारो उपजे विथा जरजाय
यह खेती।
हिल मिलके परदेश चले गए नाहक मिले दिन
चारकी नेती॥
अब कोऊ जगमें प्रीत करों मत मानो बात
हमारी एती।
आप तरों जग तारों कायम नेह लगाऊं
सुसाहब सेती॥

१६

कौन लियो रतियां मोरा जियरा।
सुपने में वालम आए सखोरी वहु भांतन सुख दीन,
किन दई मारेनि आन जगाई पीय सों लीनो मोहे छीन,
विन देखे तलफत मोरा हियरा॥
नाम न जानो ठाम न जानो एसे रहे अनचीन,
नाजानू कैसो थो सूरत चित मोरो हर लीन,
है सांवरेधो मोरा पिय पियरा।
ऐसे पियाको को दिखलावे अलख लखो नहीं जाय,
जो बाके नगर की राह बतावे कायम लागे पांय,
दूर देशहै वाको नियरा॥

१७

मोरा गवनवा करदे आगे होनी होय सो होय
मेरी जान।
आँम पके अँमली और नीबू और महुवा टपकत
मदरान॥

१८

झमका तेरा नैनादा वाह वाहरे।
कित वल आँदा वारीवे कितवल जादां मेरा मीयां
सोणा आपो आपो खुल खुल जायरे॥

१९

वंशी बजाय लिये जाय हो रिझाय बुझाय
सांवलिया सलोना।
मोर मुकट कुण्डल राजे चितवनमें किया टोना टोना
जान टोना॥

२०

तेड़ी झँझटोनि जुलम कियावे अहो मुरली मैं गाय तान।
सप्त सुरन इकईस मुरछना मोह लिया मेरा प्राण॥

२१

वृन्दावन वेखन कों चलो मेड़ी जान।
जहाँ कुञ्ज गलिन वटवंशी कदमकी छइयां शीतला
छइयां मधुर मधु बाजे वंशी तान॥

२२

वंशी वाले मोहन मेरा प्राणरी।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल उर वैजन्ती मालरी॥

२३

मोरे प्यारे पिया मोसों न बोलारे ।
धाय धाय मोरे गरवां लगतहो कहा कीनमैं तोरारे ॥

२४

जियरा मार डारोरे तेरो जालको मछरीया ।
नदीया किनारे बगुला बैठा मछरी चुँग चुँग खाय ।
सींगो वे जब काँटा मारा तलफ तलफ जिय जाय ॥

२५

लगत बुरा यारवे दिल तरसावणा ।
माड़े नाल दोस्ती कीती मुहत निभाय देदीहो
दिलाँदा तपत बुझावणा ॥

२६

सांवलड़ा मेड़े आँदा आँदा मेड़ी जान ।
गाँवदा बजाबदाँ मेड़े डेरे आँवदा रहस रहस
गर लावदा चाँवदा मेड़ी जाम ॥

२७

छाँड़दे गुमानोरा ढोला म्हारे डेरे कामछे ।
म्हारे अङ्गन वारोवे चम्पेदा विरला वे चन्द्रसखो
म्हारो नामछे ।
जो थारे मन वारोवे मिलनेदो आश मेरा सोणा
यमुना किनारे म्हारो गामछे ॥

२८

माँड़ी को तकसीर वेजालम यार ।
ताड़ी खातिर वारोवे बाग लगायावे मोयां बिच बिच
बोया गुलनार ॥

२९

रवा मेड़ी सुनवे नोमानोदा अला ।
दूर गया वारोवे खबर न लीतो मियाँ रवा मिलामो
तो भला भला ॥

३०

तू मेड़ी गला माणवे रावल यार ।
रावल खेड़े वारोवे झम झम बसदा वो मोयां सुखसे
बसें तेड़े नाल ॥

३१

मदमातो जोवन वालियाँ ।
अपने बोबां सङ्ग रतियांनो मतियां बाबुल देदा
गालियाँ ॥

३२

लाड़ों थारे भाग चँपेदा मालावे ।
बाग बगोचावे धन फुलवारोवे बोच महबूबांदा थाना ।
तेड़े आँगनवे चँपेदा विरला केसरोया रङ्ग माणा ॥

३३

रस भोनोया जोवन वालियाँरे ।
सजनोदे कारण रतियाँदो बतियाँ राझण
देगए गालियाँरे ॥

३४

ये कजरा मेरो बैरो भयोरो ।
एकजरा मो नेहरसे आयो जर जर मरे मोरो ननद
जेठानोया कजरा देत मोहे देर भयोरो तेहो छिन
पिय परदेश गयोरो ॥

३५

चलोरे जात मदमातो गोरो ।
आगे जातहै कान्हर कारे पोछे जातहै राधा गोरो ॥

३६

सिपाई बांके जटीयांदा नेहड़ा मत लाइयोरे ।
मेरा कहा तू मानत नाहीं फेर पाछै पछताइयोरे ॥

३७

तू को जानेवे दिलांदो मेरीयांवे ।
ऐंड़ो ऐंड़ी बातें वारो वेकाई नई जानदावे मोयां
इश्क रङ्गनू नाल यगोयांवे ॥

३८

कुञ्ज गलीनसें खड़ो राधा प्यारो ।
शिर पर मटको खड़ोरे पुकारे दहो लो दहोलो व्रज
वासी के लालारे ॥

३९

कारो कामरी बाला मेरो मन लिये जायरे ।
साँवलो सूरत वारोवे मन पर बसदोवे कृष्ण देखन
नू जिय चायरे ॥

४०

तोरी चितवन दोधौं कारे करैया ।
घूंघर वालो अलक भौंह टेढ़ो वलिहारो जाऊं तेरे
मनके हरैया ॥

४१

कन्हैया हो नैणा ँाड़े जोर सांवलडा नोवोनि ।
सूना पाँवदा साड़े घर आँवदा खाँवदा माखन चोर ॥
वेख नजर भर घायल कोता हुण लोता चित चोर ।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत बांके दृगणदो कोर ॥

४२

सिपैया हो नैना तेरे जोर ।
कबको मैं ठाड़ो ठाड़ो अरज करेगां इतनो अरज
मेरो तेरो ओर ॥

४३

बिलैया हो नैणा तेरे जोर ।
सूना पावै घर नहीं आवै खावै सूसा तोर ॥

४४

जागी सारी रात बनरा जोवैजो भलावो ।
बनाके खातिरवे बाग लगाया वोसोयां इस बनरो
रङ्ग भीनावो ॥

४५

मोरे पियाकौं किन विलमायो ।
मगरी रयन मोहे तलफत बीतो भोर भइल भल आयो ॥

४६

बोबां माड़ी जान गुमानी लट खोलना ।
लटजों खोले वारोवे बालोंदा खेड़ा किस तरह
हँस बोलना ॥

४७

काशी शहर निमाना चल बसणावे ।
मणिकर्णिका पञ्चगङ्गा माधो रामघाटदा झाणा ॥
ज्ञान-खान अघ-हानि मुक्ति तहां सेवत राजा राणा ।
योगी जती और विप्र सन्यासी बांचत वेद पुराणा ॥
घर घर कामधेनु चिन्तामणि दूध भातदा खाना ।
दास ऊधो आनन्द वन मूले रामचरण चित लाना ॥

४८

जगन्नाथ मन मोह लियोरे ।
घर अँगना मोहे ककुअन भावे लोक लाज सब
छोड़ दियोरे ।
नील चक्र पर ध्वजा विराजे परसतही आनन्द भयोरे ॥
साँवरो सूरत पर रज लपटानो लाल दुशाला
ओढ़ लियोरे ।
श्रीवलभद्र सहोदरा सङ्ग लिये कृष्णदास वलिहार
कियोरे ॥

४९

शरण रघुवोरदो मैं गइयाँहो ।
जोई धावत सोई यावत तुमकों मन वच क्रम फुल
पइयाँ ॥
रैन दिना मैंनु कलन परैदोयाँ पीर हरो परूं पइयाँ ।
राम सखे छवि निरख मगन भए वार वार बल जैयाँ ॥

५०

अब तुम कब सुमरोगे राम ।
वालापनमें खेल गमायो ज्वान भए बहु काम ॥
वृद्ध भए तन कम्पन लागे बीत गए अवसान ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जै बोलो सीताराम ॥

५१

भिक्षा फकीरांदो ल्यावनावो ।
हाजर होयतो भेज दिवानो नातर फेर पकावणा ॥
रूखा सूखा मैं नहीं खाँवदा ताजा माल खिलावणा ।
शाह हुसैन फकीर रवाणा बोले वचन सुहावना ॥

५२

कहैया मोह लई मोहि रस भरो तान सुनाय ।
वृन्दावनको कुञ्ज गलिनमें मधुरोसो वैन बजाय ॥
मुकटको लटक और भृकुटी मटकसों नैनन
सैन चलाय ।
राग रङ्ग रस वस कर लीनो सुन्दर छविहो दिखाय ॥

५३

श्याम नैनादी चोटवे लागो मेरेवो ।
जबते कृपा करी नन्दनन्दन मिट गई कर्मदो खोटवो ॥

लख चौरासी भटकत भटकत श्यामशरण आई ओटवो।
आनन्दघन घनश्याम मोहै मिल गए मनमें न रहो
कहुं टोट हो॥

५४

श्याम नैनादी चोटवों लागो माड़ेवे।
जबते कृपा करी रघुनन्दन मिटगई दिलकी खोट।
आनन्दघन पियके मिलवेकों क्या घूंघटकी ओट॥

५५

बिना रघुवरहो मेरो हरे कौन पीर।
सोच मिटावन सुख उपजावन राम लछन दोऊ वीर॥
अमृत-सिन्ध आनन्द अवध-पति विहरत सरयू तीर।
गाय बजाय रिझावत ऊधो निर्मल होत शरीर॥

५६

मिलनावो प्यारावे महबूब।
वलिहारी मनमोहन प्यारे जो कीता सो खब॥

५७

लाजे गरवां लगाय प्यारारे।
निरख रही सुन्दर मुख तेरे बांके नैना दरस देखायारे॥

५८

शीश मुकट मुरली कर राधे जब सोहै।
निरतत यमुनाके तीर सखीयनके गोहै।
बांसुरी बजावत मुसकावत सब मोहैं॥
वरणन मैं कौन करौं जगत छैल कोहै।
रामदास चरणन छवि बार बार जोहै॥

५९

पनिया भरत छैला लावो मोकों घर तिया।
सखियनके सङ्ग कबहूँ न बोले पाय अकेली लावे
मेरो छतियाँ।
और कहत कही नहीं आवे रामदास मुरलीवालेकी
बतियाँ॥

६०

है पूरण अवतार सजनी।
धन धन गोपी ग्वाल वृन्दावन हरि सङ्ग करत विहार
सजनी।
धर्म्म हेत अवतार लियोहै प्रभु हरण प्रथीको भार॥
देखतहै नर नारी झरोखन सों छवि वारम्बार।
भगवान दास धन नन्द यशोदा जाके खेलतहैं हरि द्वार॥

६१

रसीया मत बोराई कौन गुण उतरूंगो पार।
रैन अंधेरी बिजुरी:चमकै लजत जियरा हमार॥
मकरीके कहा तारहै साहब दोनो तार।
जोवो चाहे तारवे तो तारत लगे न बार॥

६२

श्याम मोरे नैननमें अब बसोही रहत दिन रात।
भेद प्रेमका का कहै वजहन कहवेको नहीं बात।
मदन मोहन पिया हिरदे बसतहैं कबहूं नहीं
विसरात॥

६३

मैं अपने प्रीतमसें लेहों चुनरीया रङ्गाय रङ्गाय।
लाख जतनतें विनती करके जोवनाकी उमग दिखाय
दिखाय दिखाय।
लग गये यह नैना वजहन अब नहीं जियरा
लजाय लजाय लजाय॥

६४

घूंघट कौन करै मैतो ना करूं मधु मतवार।
आठ पहर सङ्ग छाड़त नाहीं ऐसो ढीट खिलार।
आप पीवे वजहन मोकों पिलावे देखत हंसे मार॥

६५

बात वोही जो गुरूने कही।
घट घट आपो आप बिराजे नैना खोलके देखा सही।
भटकततो तबहोलौं वजहन जबलों दुवधा
जिय में रही॥

६६

बना बन आयारी माई नवल बनीको।
हाथ कँगणा सिर सेहरा बिराजे मुखड़ा अधिक
सुहायारी माई।
धन धन भाग बनीको वजहन एसो सुघर वर
पायोरी माई॥

६७

चोरवा जोवन मेरो ताकैरो गुइयाँ।
दिन दिए चोरवो सेंध देतहै अब रब लाज मेरी
राखेरी गुइयां॥

६८

एसी रङ्गो रङ्गरेजवा चुनरिया।
उपजो ज्ञान पहिरतही हिरदे सूझ परी अब
प्रेम डगरिया।
भटकत हतो सो छूट गई वजहन पिय पायेमें
अपनो नगरिया॥

६९

वालम तोरे नैनाहैं जोर।
शीलके काजर कबहूंजो लागे सब जगमें मचे शोर।
वजहन कहत यह बातहै ऐसो जैसे देत कोऊ
बोरमें बोर॥

७०

इन नैनन ना कोउ समुझावत।
ठौर कुठौर देखत कछु नहीं नाहक मेरो
जियवा फसावत।
ऐसो उपाय सुनो नहीं वजहन ज्यों जल भीतर
आग लगावत॥

७१

कान्हा ऐसी बांसुरीया तेने काहेकों बजाई आज।
जबते भनक परी श्रवणनमें भूल गए सब काज॥
व्याकुल होके निकसी मन्दिरसों तनक न आई लाज।
वहरे गाँवको नाम बतावो जहां केहैं वो बांस॥
विरह विथा कासे कहौं जाऊं मैं केहके पास।
अब वजहन कहा होत है जब लगी करेजे फाँस॥

७२

सुरलिया बाजो कौनी ओर।
एरी सखी कोऊ मोहे बतावो वह बैरन चित चोर।
भनक सुन्यो देख्यो नहीं वजहन याही ते व्याकुल
चित मोर॥

७३

पिया अपने जोवनके माते।
हमसें प्रीति लगाय औरन ढिग निश वासर रहे जाते।
आगेसे ऐसा जो जनते वजहन काहेकों जियरा फंसाते॥

७४

विरहका लागे जब वान।
कटु बोली सुनियो होय काहे न भूलजा वाके गुण ज्ञान।
वजहन यह सब लोग नगरके नाहक मोपर करतहैं
तान॥

७५

छाँड़ गुरूके चरण कहाँ जाऊं।
हरिके शरण निशि दिन उर ध्याऊं।
जाको कृपाते घटही अपनेमें वजहन देखूं
हरि मूरत ध्यान चित चाहूं॥

७६

लाज मेरी रखैंगे भगवान।
सुख सम्पति देहैं मोहै जगमें आखर मुक्तनदान॥

७७

थारे नैनाने जादू कियारे।
एकतो नैना आपते काफर तापर एसो दीनो काजर
तबहीतो अधिक जुलम कियारे।
वजहन इत वित साड़ा मन मोह लियारे॥

७८

लाग गईरे मोकों काहूकी नजरीया।
करके सिङ्गार सुनोरी सजनी नाहक चढ़ीथी
मैं ऐसे अटरीया।
नाजानो कैसी नजरहै वजहन विरहने मारी केंधों
प्रेम कटरीया॥

दोहा

वजहन राग तुम सब कहे ओठुमरी कही पचास।
एक नजरीया ऐसी कही सो लेत निकासे श्वांस॥

७९

मोहुकों मधवा पिवादे सइयाँ।
आप रहत हो सदा मतवारो वजहन तुमारो
परतहैं पइयाँ॥

८०

पनवट कैसे ले जाऊं गगरोया ।
जित देखूं तित ठाड़ेहैं वजहन मोहन प्यारा रोकै
आन डगरोया ॥

८१

हरि विन गाये गाना धूर ।
दोनो बराबर सुन व्रजजीवन जैसा सुघर वैसा कूर ॥

८२

क्या जानै म्हारो पीर वेदरदो कन्हैयावे ।
यमुनाके नीरे तीरे गऊअ चरावे सांवल सुघर शरीरवे ॥

भिंभौटी—जल्द तिताला

कहा करैं ननदी सइयाँ नहीं आयोरी ।
सगरी रैन मैं उन विन जागो मइसों कछुन बतायोरी ॥

२

मेरे सइयाँको कौन विलमायो ।
पीर हमारी उनहूं न जानी रहस वहस गर लायोरी ॥

भिंभौटी—तिताला

वारो सनेहिया मोरो उन सङ्ग लागोरो ।
रैन दिना वारोवे मोहै कछु नहीं भावै उनहीके रङ्ग
पागोरो ॥

भिंभौटी काफी—तिताला

लटकैंदड़ो साहरड़े चलोरे ।
साहरड़ेदा मुकलाऊं आए ले चले मैनू पुर पराइयां ।
वावुल मैनु दायज दीता एक अठे न कुली भाइयां ॥
तें मर जोइयां आइयां देह विदा मैनु सबे सिधाइयां ।
बावुल मैनु देर विछोहा केलड़ो मय चली रवा डोली
मैंधीता हरडेल थो ना कोई सङ्गे ना कोई साथी
शोहर अपनेदी मेहर मनाइयां ॥
कीकुरहो सो भलो जेहा कीता कम्म कमाइयां ।
धर मस्तक पैले रवा ले खाया शाह हुसैन सबै
भलीया चँगीयामैं इकली मिलाइयां ॥

भिंभौटी—तिताला

ऊधो व्रज मोहै विसरत नाहीं ।
वंशी वट यमुना जल अचवन और कदमकी छाँही ॥
लेसुर भीतर कनक दोहनी खरक दुहावन जाईं ।
ग्वाल बाल सब केल करत हैं हँस हँस दे गलबाँही ॥
जब हम मधपुरीको सिधारे आवतही सकुचाईं ।
सूरदास मोहि यही अचंभो अब व्रज वसत कै नाहीं ॥

२

एसोरो जनम जर जाय जग आयके ।
कोऊ पूजे देवी देवता देव जो मनायके ॥
जेहिरि जनम दियो तेही विसरायके ।
कोऊ चढ़ावै भैंसो भेड़ो सुरग मगायके ॥
निज काया पोखवेको पर जी सतायके ।
भलो चाहै अन धन दे विप्र बुलायके ॥
कोई गरे फाँसी डारै डगर चलायके ।
कोई खाए लड्डु पेड़ा पुरीया मगायके ॥
साधो खाय रूखा सूखा हरि गुण गायके ।
कहै कबीर हरि भजो सुनर तन पायके ॥

३

चौक अचानक घरते निकसी देख परी सूरत मोहनको ।
भूल गई सगरी सुध घरकी ॥

भिंभौटी जंगला—तिताला

इन वंशी वाले साँवरेने मेरा मन मोह लिया ।
सोहनो सूरत रस भरी मूरत तन मन वस कर लिया ॥

२

चली जा मोरी ननदो लागूं तोरे पइयां ।
आगे आगे ननदी चले पीछे ननदोइया जाके पीछे मैं
चली मोरे पाछे सइयां ॥

३

मारो मरूंरे मैं तो दर्द छिगुरोयाको ।
कृष्णानन्द कोई नहीं बुझदा वेदन व्यापो सजीवन
सुरियाको ॥

४

साँवलीया नहीं आयोरे किन विलमायो ।
यास पिया जो मोसों विछुरके जियरा सतायो ॥

५

मोरा जियरा दहला जायरे ।
रात विरात अँधेरे उजियाले यास पकड़ चमटायरे ॥

६

जोवनवा हमरा जायरे ।
कासे कहूं विपता विरह कोयास पिया नहीं आयारे ॥

७

जियरा ललचाय तोरे मतवारे नैना ।
कृष्णानन्द को आन मिलो अब बोल अमृतके बैना ॥

८

कैसे भरूं मोरे रामरे मैं गगरो ।
पनघट ढोट लंगरवाको नगरो ॥
घूंघटको आटहीं ठाड़ो सोतन बहियाँ पसार
मोसें झगरो ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरो बीच उमग एक
कान्हबाकी मोसों डगरो ॥

९

नैनादे निजारे नाज मेरा मन मोहारे ।
शुभ रङ्ग पिया तुम चिर जुग जीवो अचल रहो
वारे थारेरे ॥

१०

मारे सइयांरे तोरो बोलोयाँका मारा ।
कहा करूं कछू वस नहीं मेरो निशदिन जरूं बोलो
ठोलोयाँका जारा ॥

११

जिय घबराय सखो सइयां नहीं आए मोरा ।
कहा करूं कछ वस नहीं मेरो कोन सखो विलमाए
पिय मोरा ॥

१२

मेरा मन लागे हाँरे ।
कोई विरहिया वेर पुकारे विरही वेर पुकारे ॥

१३

मैं वनज करेदोयाँ थारो बनरावे ।
हाथ कँगन सिर सेहरा मुंधो बनरा थारो मालिन
हुइयांवे अजो कोई उतरां सासू थारे बागबे ॥

१४

दरद बतादे ननदो वाला जियरा मोरारो ।
सास मोरी वैरण ननद हठोलो सइयां पइयां लगेरो ॥

१५

राधा प्यारी मन मोह लियो मेरो नैनवा तोसें लागेरो ।
चन्द्रवदनो मृगनैनि श्यामा तन मन रसमें पागेरो ॥

१६

सइयोंनो मैं ढूंढ़ डर जावां सजणादे कारणे ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारोवे बेला भो ढूंढ़ा मेरा मोंया ढूंढ़ा
शहर विगाना ॥

१७

इश्क कूंचेसे जालम लेजा मोहे बाग मेरे ।
सुरख चोरा मोहे रङ्गादे मोहे जुलफे नागनोरे ।
तेरे तो कूंचेमें जालिम देखो दोय न्याजनोरे ॥

१८

वेखलो यार परीयांनु सब कोई चाहदानो ।
हीरा मोती लाल जवाहर वासल दिल विच
भांदियानो ॥

१९

ए लङ्गरवा मरन न देरे कुएं पररे पानोड़ा ।
चूनर झटक मोरा अचरा पकर लीनो सास सुने तो
क्या बोलेगो मध पोवे शोक रङ्ग जानोड़ा ॥

२०

मन मोह लियारे सजना विसार नैणा नाल ।
दिलदो विथा मैं कासे कहूं शोक रङ्ग मानदा भो नहीं
वो मैतो हाल ॥

२१

कों मारदा यार बोलोयां ।
अस्सी हजार बन्दोयां तेरोयां क्यों बोलदा यार ॥ बो० ॥
ऊंचो अटरियाँ चन्दन किवरोयाँ हाँरे जिसमें बसे
छल वलिया यार । बो० ।
ऊंचे चौवारा पलङ्ग बिछाया तामें पवन चलत
पूरवैया यार ॥ बो० ॥

२२

मुरलिया वाले आन मिले तौ भला ।
तेड़े कारण मेंड़ा जिय तरसतहै आन मिलो
यहीहै सला ॥

२३

गले मूंगेको हार गोरे वदन पर गोदना ।
तेरी ढीमनीया कारीरे गोरी कपड़े पहरेहैं लाल ॥

२४

हाँरे कान्हा तोरे रङ्ग भीनी मोरी चुनरी अरे हांरे ।
सेज सुती वारी नींद न आवै रहिहूं हौं नैना मून्दरी ।
सोतीथी मैं नींदकी माती अब न सोऊं तेरी सेजरी ॥

२५

पर देशिया वालम मेरारे झुक गरवा मोरे लागरे ।
बारा बरस पर पिय मोरे आये नींदके माते जागरे ।
कृष्णानन्द अरज इतनी मोरी आज खुल्यो है भागरे ॥

२६

मोती माला मेरो कान्हा छोड़त न करसे ।
अच्छी मीठी बात कहिके लायो मोहि घरसे ॥
एसो विश्वासघाती मारे नैना सरसे ।
वृन्दारवनकी कुञ्ज गलिन में जन शिव दीन विकाने
राधा वरसे ॥

पीलू—तिताला

बांकोरे बेदरदी सइयां मेरो कहो माने ना ।
हमसों अवध बदी अनत रात बसे दिलकी विथा
मेरो सखी वोतो जाने ना ॥

२

सइयां मोसें इश्क लगा नन्दलालरे ।
चञ्चल चपल सुघर मनमोहन चञ्चल नैना विशालरे ॥

३

को पतियां ले जायरे विदेशवा लगन लगी मोरो ।
एक पार गंगा वारी एक पार यमुना बीच बालम
तेरा गांवरे ॥

४

बोलियां न बोले आधी रात पपीहा प्यारे ।
प्रीतम पियाको कोई समुझावो डोलिया ले आवो
पइयां परहूं चलहूं साथरे ॥

५

मेरा बाला जोवन योंही जायरी हौंतो पिया कछू
देखा न माला ।
उसरे पियाकी मैं कासे कहूं सजनी कानो सोहे
बुंदेवारा ।
चञ्चल सइयां तोरा इश्क निराला ना जामे
वैसा जादू डारा ॥

६

मेरा सोच नहीं जियरा जायरी गुइयां ।
ऐसे बेदरदी वालमसे कछुन बसायरो ।
उमग दिल की कासे कहूं सजनी समुझ समुझ
पछितायरी ॥

७

एरी मेरा बांका सनेही यार ।
आँख लगाय दिल घायल कीता जादा चोरी यार ।
तीखड़ा बांकड़ा मलड़ा छलड़ा मिठड़ा दिठड़ा
सांवलड़ा मेड़ा यार ॥

८

सइयांको वेग बोलाय मोरी ननदी नींद न आवै सारी
रतियाँ मदकी ।
ना जानू कहां उरझे रङ्गीले धरक गइली मोरी
छतियां ननदी ॥

राग वरवा—तिताला

मेरे कान्हाने देखो मुरली बजाय मन वस
कीनो मोरा ।
मुरलीकी धुन मैं जबते सुनीरी सुध बुध गई विसराय ।
तन मन वारूंरे अपनो जाको जो कोई कान्हको
मुरली आन सुनाय ॥
लाज शरम सब छाड़ सखीरी तिय कुल शरम गमाय ।
कान्ह कान्ह रटना लागीहै कान्ह बिन कछू न सुहाय ॥

झिंझौटी पीलू—तिताला

ननदोई लालारे सइयाँके दरद दिवानो भई।
सगरी रैन मोहि तलफत बीती नाहक मेरी
जवानी गई ॥
कृष्णानन्द अब आन मिलो मोहि मैं तेरी
वलिहारी गई ॥

२

मोरा जिय तरसतहै कान्हरो मिजाजो।
सब सङ्ग प्रीत करो मेरी सखियां परवस भई
मैं तेरे ललाजो ॥

३

छदड़े जाँदीया हुण तेरीवे रांझणा यार।
चलो सइयों असो वेखन जइये राझाँ जोगी होंदा।
कानन कुण्डल गल बिच शेली हीर हीर कहे रोंदा ॥
वेराझ० ॥
चलो सइयों असो वेखन जइए राँझेदा चौबारा।
हीर निमानी टेढ़ेदी राझाँ ढोंदा मारा ॥
सबर परो इन कहारां पे ज्यो खड़ी न कीतो डोलो।
ओरोंदे नाल में हिल मिल चलियां राँझेदे नाल
नहीं बोलो ॥
चलो सइयों असो वेखन जइये राझा सूली चढ़दा।
सूली चढ़दा खिल खिल हँसदा मौतां नाल न डरदा ॥
वेलो वेलो सब कोई आंखे मैंभो आखाँ वेलो।
निकस भँवर जब बाहर बैठा सूनो पड़ीहै हवेलो ॥
चलो सइयों असो वेखन जइये राँझेदिया पोलो।
ना कोई सङ्गी ना कोई साथी ना कोई मीठो बोलो ॥

४

आनन्द भयोरी आनन्द भयोरो मनमोहन मेरे
घर आइलो।
आवो गावो नाचो सब सखी सहेलो सदारङ्ग
पिया पाइलो ॥

५

माड़ा मन मोह लियारे इस साँवलियादो अखियाँ।
कलन पड़ेंदी बिन देखे सानु ध्यान रहंदा दिन
रतियां सखियां ॥

६

देखो सोणा शङ्ख धारे दाङ्काणा।
हाथमें चौमुख काँधे धोती करन चले गङ्गा असनान
काशीमें झाणा ॥

७

बोलियां न बोले आधी रात एहो।
अपने सइयाँको मैं बल बल गइयां डोलिया फन्दाब
लियो साथ एहो ॥

८

मोरे गरवां फुलवनको हरवा।
रात चोर चोरी आन कर डार गयो प्यारसे सुन्दर
मोत पियरवा ॥
होंतो ऐसी नींदकी माती करबटोयां न लई
सारी रतवा।
नेक जागती जो अपनी मौजसे न छोड़ती मैं उनको
अचरवा ॥

९

कौन जानेरी सखी मनकी बात विरानो।
भली बुरी बीततहै जापे वोही बहे पहिचानो ॥
सार विरहकी सोई जाने जाके लगो तन माने।
मौज इस राहमें बहोत गएहैं मल मल हाथ सयाने ॥

१०

हाँरे सांवलिया गिरिधारी गणिका दीनोरे तार।
आठ जाम नित नाम पुकारे सांची प्रीत गोपाल भावे
भवसागर उतरे पार ॥

११

भला वोई साँवले वंशी वाले मेरे प्रीतम प्यारे मोहे
दरसन दीनो जग उजियारे।
जा दिनते मथुराकों सिधारे रैन बीती गिनते
मोहि तारे ॥

१२

एरी मोरा बांको सिरोही बाला यार।
रण चमके तरवारिया सारी फौजारा सिरदार ॥
आजा तू आजा जदे चोरेदी झलक दिखाजा यार।

बांकोइ घोड़ा तोड़ो बांकोइ जाड़ा बांकोइ कमर कटार ॥

१३

बमना सांचो कहियोरे मोरे पिया मिलन की आस।
जौ मोरे पिया बेग आबें मोतियन थार भरेहों तू तेरे साच ॥

१४

छोटो ननदो कुबा पानो न जाय नैना लगाय कोई लै जायगा।
सोनेका गडुवा गङ्गा जल पानो कोई पी लेगा ननदीया नजाय।
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाऊं आबोरे जानो सेज हमार ॥

१५

मद छकियांदे राज मोहे ना पिलावो दारुड़ा।
मैतो थाशों अरज करांछों अमलारो बांका मारुड़ा ॥

१६

पहरो लहरको चूनरो ककरेजिया जानो डारो उतार।
जालीको कुरतो अतलसको अङ्गिया सोहै गोरो तेरा जोबनारी जैसे बाग के अनार ॥

१७

दरकाय गई छतियां दिन रतियाँ।
सास ननद मोरो वैर बिसाहै सौतन आन परी बतियाँ ॥

१८

मदके छके मतवारे नैना बालम छैल छलवलो चाल।
चांदश्रा मुखडा नैन रसीले घूंघर वाले बाल ॥

१९

सारे जगतको फांस लियोहै जुलफांके डाले जालरे।
दांतामें बाके मिस्सी रचीहै होठहैं पानो लालरे।
कहत मदतअली दरस दे अपने करदे मोहे निहालरे ॥

२०

दाहो लागै मेरे करेजवा।
मोरे मैं कैसे आयो सन्देशवा हमकों चुनरी पियकों खेसवा ॥

२१

बांसुरिया बैरन मोरोरे सांवलिया तेरे नैनवा।
जबते भनक परी श्रवणन में रहत नहीं मन चैनवा।
कहै गुदर दोऊ रङ्ग बराबर आन बजावे रैनवा ॥

२२

अरे मोरे मोहनवा लागोरे ये मुरली वाला सांवला।
सगरी रयन मोहे तलफत बीती भोर भए आए मोहनवा ॥

२३

तेरा जोवनवा हाकिम मांगे सुनरो अराए गुलबदनो।
आधा मागे काजो मुल्ला आधा कुतवाल सारा मागे गामके हाकिम सुनो अनाखो वाल ॥

२४

अखियाँ न्यारो लगो बन बालो पपोहरा सेत।
हरे हरे बनके मारलारे तारो बलैयां लेत ॥
अपने पहर बालम ना तोरो बलैयाँ देत ॥

झिंझोटी—जलद तिताला

कैसे मरूं मोरे रामरे में गगरो पनघट बीच नगरवाको झगरो।
ओट घूंघटको उठाय लई उमगसे सौतन बहियाँ पसार मासें झगरो ॥

पीलू—तिताला

कजरा ढुरि ढुरि जाय सिपाइड़ा आँख लगा मन मोह लिया मोरा।
सांवरे वदन गोरो अपने उमगसे केसेके समझाय ॥सि०॥

२

लेगयो जियरा लुभाय जालम लेगयो हमरा।
है कोऊ हमरे दुखका बटैया वार उसका जिय समझाय ॥

३

बांकारे बेदरदी सइयां रात मन लेगयो।
नामैं नानो यास पियाको दाग मोहे दे गयो ॥

४

सइयाँ मोरा अनमोला मोतोला।
विरहाको पीर कबहूं न छुटाइरे लेऊं तेरी बला ॥

५

भला भला वेराजो रहना मेरो जानवे ।
आड़ियां मेंतो मोहो मेरो जानवे ।
तुझ बिन मेंड़ा और न कोई तुहो असाड़ा प्राणवे ॥

६

थारेतो नैनाने विलमाया मेरो जानवे ।
बांकोइ जोड़ा तेरो बांकोइ घोड़ा बांकोइ
कमर कटारवे ॥

७

नैनादी तेरी कहों बान परोवे ।
बान परो निशदिन आँख रहोवे ॥
दूर दूर जाँदा वारो नेड़े नहीं आंदा तेड़े चरणन
चित धरोवे ॥

८

जावांदे सांवलडा सोणा म्हारे डेरे कामछे ।
मेड़े आगण वारोवे चम्पेदा विरवा मेरा प्यारोयाँ
सांवलो सखो म्हारो नामछे ॥
जो तेड़े मनमें वारोवे मिलनेदो आज मेड़े सोणा
यमुनादे तीर म्हारो गामछे ।
देव कृष्ण प्रभु रस वस कर लई ज्ञान ध्यान तेरो
अष्टजामछे ॥

रेखता—तिताला

देखो देखो जी म्हारो अखियाँने क्या काम किया ।
पहले तो आप लड़ो फिर मुझे बदनाम किया ॥
जादू किया टोना किया दिया मुझे पानके बीच ।
शितम नैनाने किया सुधि न रही शरीरके बीच ॥
माली तू रोक रुपैया ले बागाँ में जाने देरे ।
मेरा जानी पड़ा घायल पट्टो लगानै देरे ॥

झिंझौटी—तिताला

जोवन जोर भए मोरी को पतियाँ ले जाय ।
सइयो हमारे परदेश गवन कियो जियरा
निकसो जाय ॥

२

मोरे करेजवा लग जारे लगजा मोरे बालम ।
जो पिया हमसे रूँस रहैंरे प्रेम गाँठ मोरी खुलजायरे
खुलजाय मोरे बालम ॥

३

आजरे बधावा बने लाड़ले घर गावो माई ।
वालके घर व्याह रच्यो बूट नामदो तेल चढावो आछे
बनेको गाइये बजाइये रिझाइये माई ॥

पीलू—तिताला

जादू जादू कहदा मैं नहीं जानदी ।
प्रेम नगरदो हाट लगोहै शोरो दिल पहिचानदी ॥

२

मोसें नेह लगाय गयोरे बालम ।
यास पिया तुम एक घरोको काहे सताय गयोरे
बालम ॥

३

कारे बदरा डरावे मइको निंदोया न आवे ।
एकतो अँधेरो दूजे विरह सतावे तोजे पापीरे पपीहा
पीउ पीउ बोल सुनावे ॥

४

एरी एरो गुइयाँ नैणा लागे ।
जब जब छूटे तब तब दुखदाई मन पागे ॥

५

म्हारो लावो लोक नोतोरे चूरम चूरो वोआणारजो ।
शोणादा केशिना आवे रूपेदा कोशोण आणारजो ॥

झिंझौटी—होरी ताल

छक पीवश्यां हो राजाजी समुद्रको झलोलै ।
भूली पनिहारी काँई पानोनू चलियाँ होजो थारे
पानोरो गदलो गदलो राजाजी० ॥

२

ये माझारा लो सायबां नीवे राव राजारो छोकरी पर
मैवे रंग डारा ।
मड़ोरा डोरा देशमें लगावे लाल पटांदियाँ वेडोरा ॥

झिंझौटी पीलू—तिताला

सइयाँ मांड़े बांसरीदो तान लागोरे ।
सुणतो ठाड़ो साड़े घर अन्दर कान भनक सुन भागोरे ॥

२

जावोरी जावो बसनिया प्यारी नैनासें मारे
नजारा जान।
भागल पुरकी सकरो गलियां जामे बसे
कलबरीया जान।
भर भर मधवा मदकों पिलावे आप न पीवे थोरा
पनिया जान॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

सोणावे मानले साडड़ी गला दिल रहंदा बेकरारवे।
इश्कदी रमझ समझ ले आशी तरवा करे ताँड़ा मला
मियांवे॥

२

परी तेंड़ा मेनु निजारा भांवदा असी तेंड़े नाल
दिल चांवदा।
नजर आधीन मत विसार दिलसे इश्क लगा कर
चोरी चोरी आंवदा॥

३

छड़ खेड्योदे चाकरीवो मैंतो करदियाँ नाहियाँवे।
शोरीदा मेनु दम गनीगत मिलनो सानु करणा
राँझेदो नोकरीवे॥

४

दिल भर जानी प्यारावो मेड़ा साथीडा सोणा पुनडा
वाहीड़ा छलडा भलड़ा तिखड़ा बांकड़ा नैना वाला
मतवाला सांवला वो छैला।
मस्त मद होशी सर सार सिसिदा जनुदा मजनु जालम
इश्क दरद बेपरवाह रङ्ग भोनि सितम गर
माशूक मेहा वाला वो छैला॥

५

नैना लगी ताड़े नाल जादूगर मियाँवे।
बरछीदा मारा वारीवे कोई दम जीवे नैनादा मारा
मरजायबे॥

६

जानदा जानदा मौला मेरा दिलदी पिउनें किन
राखो विलमाय।
कोई नहीं जानें जिन रङ्ग सब कुछ पहिचानो इश्कदी
बात निवाह॥

७

सोणा मही वालियां में ताँड़े छंदड़े जावां।
वही जानें सदारङ्ग पहिचानें जिन रङ्ग सब कुछ
पहिचानें इश्कदो बात निभावां॥

भिंभौटी—तिताला

भूल क्यों गयावे मेड़ो यादवे सोणा।
याद तेंड़ी वारी दिल बिच बसदी किससे करूं फिरियाद॥

२

तेनु हुसनदी कसम मेड़ा माहिड़ा हुसणोंदा
झमका वेखलाजा।
दिलदे अन्दर चाह लगी मेरा मियां इश्कदा शोरणो
चमकाजा॥

३

रैण किथे गुजारीवे सुनतो गलाँ मेंड़ो यार सिपाईं।
जो लगाना किसीसे भला नाहीं इस जग बिच शोरी
मियाँ ना कर किसीको बुराईं॥

४

जारे जारे जा पिया मोसोंना बोलोरे।
जावोरे रसीया नींदके माते उरझ रहे कहुं और
घुंडी ना खोलोरे॥

५

तुरकवाने गारी दई दईरे।
नामें बोली सायबा ना में चाली मोसों करत
बरजोरीरे॥

६

जियरा न भावेरी एरीए मेरो अछो गुइयाँ।
योगन होइयुं पियाके कारण लागा प्रोतका चसका॥

७

देशीड़ा विगाणा अब नहीं रहणावे।
सौतन का मोहे डरहै सइयाँ मली बुरी सब सहणावे॥

८

सुख बसोयो तेड़ा खेड़ा सांवल प्यारावे ।
सोहनी सूरत वारीवे माधुरी सूरत वो असी वेखलामो
ताँड़ा डेरा ॥ सा० ॥

झिंझौटी—धीमा तिताला

रात रहजा जानें वाले टुकबो दरस दिखायजा ।
मैतो तेंड़ो हाजर बन्दो तू मेड़ा साहबा मेहरदी
नजर कर आयजा ॥

२

गबरू यार नाजो बन्दीदा दिल रखणा सोंणावे
रात रहजा ।
थोरी कितवल रहंदा तेंड़े कारण मेड़ी जिन्दड़ीदो
तपत बुझाजा ॥

३

नथड़ी झोखाँ खाँदो भला यारवे ।
नजर न आंदा थोरो कितवल रहंदा साड़े कारण
माड़ो जिन्दड़ा तपाँदी ॥ भ० ॥

४

खड़ियानी मैं कूकाँ नोवे कुड़ुकावे आमिल
कालड़ी धारा ।
बाज पियारेका मन मिलिया कौन मिले मेड़ो सारा ॥

५

सजनावे में नहीं जानदो ।
बसदो में राज पुरेनू तू साहब मेरा मानदो

६

मानु भांदीवे सोहनी सूरत तेंड़ोवे ।
रैन देहा मैनुवे ध्यान तुसाड़ा मेड़ा मियां कभीतो
दरस दिखा दोवे ॥

७

रस भीनीयाँ जोवन वालियाँ ।
सांईदे रङ्ग रतियाँनी मतियाँ बिच मुखड़ा
बोड़ा लालियां ॥
हीरदे कारण रांझे दिवाणा रांझण देंदे गालियाँ ।
सजनादे कारण भई दिवानी रांझण देंदा गालियां ॥

८

तेनु कहंदीयावे जानो रेदीयां याद तांड़ी ।
कहि गला तेंनु आखाँ जिन्द रङ्ग मानले भला तू माड़ो ॥

९

रावलिया तूँ साड़ो गलाँ मानवे ।
रांझण खेड़े वारोवे जम जम बसदे वेखेड्योंदे खेत
बंबूलवे ॥

१०

बनी मेरा मन मोह लिया चूड़ा अजब बहारां दानी ।
इश्कदी गला वारोवे मानदा भो नाहीं में कोकरां
समझावोनी ॥

११

योगी बिना आज मढ़ैया सूनो ।
औरोंदे नाल वारी हंसदा बोलदा मैड़े नेड़े सइयों
अनामनी ॥

१२

गोरी तेरे कानों बिच बुन्दावालावे ।
दांतादो मिस्सी तेंड़े अजब सोहावदी गर सोहे
मोतियांदो मालावे ॥

१३

हीरनु कोई आनके मिलीमो चौंकावे ।
या रब्बा रांझेदा वेलोवे होरदा मुलक पञ्जाब
आखाँवे ॥

झिंझौटी—तिताला

रेरेग सारे मगरे सारेसा ।
सारे मरे गरे सानि धनि धप मगरेसा ॥
मगपपधनिसानिधपमगरेमधपमगरेसा ।
ममपपधनिधपमपसासासानिधपपनिधपमगसा ॥

२

मन राजो रहना मन मतीए ।
रैन देहा सुखसों गुजर गइयां बिन दोठे सानु कलन
पतीए ॥

३

रासमण्डल मध सखो नितंत बनवारी ।

करसे कर जोरे श्याम गोपीगण ठौर ठौर बीच
मोहन राजत छवि कोटि कामवारी ॥

झिंझौटी—एकताला

पञ्चवटी परम कुटी पातनसों छांई ।
जहाँ निवास जाय कियो जानकी रघुराई ।
कञ्चनको मृग निहार, बोलो मिथिलाकुमार,
याको मृगछाला प्रभु मेरे मन भाई ॥
सुनत वचन धनुष धार, लक्ष्मन उठि खबरदार,
या बनमें डोलत बहु निशिचर समुदाई ।
घेरो मृग दूर जाय, कोनो अनुज न उपाय,
हाहा करुणानिधान सीया को सुनाई ॥
लक्ष्मन उठि जाहु वीर, सङ्कटमें परोहै भीर,
बरबस पठए अन्त नाहीं न भलाई ।
लङ्कापति दियो जाय जानकी दिखाई ॥
सूनो भवन राम देख दारुण दुख पाई ।
प्रगट दुरत डरत जात, मुकट छवि लखि सकात,
फिरि फिरि प्रभु निरखि जात जीवन सुखदाई ॥
निशिचर मारीच नीच, निर्त्तत धनुष नस बीच,
मारे सन्ध्या निवान प्राण खग पठाई ।
तुलसी प्रभु दीनबन्धु, करुणा-आनन्द-सिन्धु,
भारत भ्रम-तारत निगमागम यश गाई ॥

२

सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई हो ।
रसना रस नाम लेत, सन्तनकों दरस देत,
विहंसत मुख-चन्द मन्द सुन्दर-सुखदाई ॥
दसन दमक दुति रसाल, अयन बैन दृग विशाल,
भृकुटी मनो धनुष कोर नाशिका सोहाई ।
केशरको तिलक भाल, मानो रवि प्रात काल,
श्रवणकुण्डल झलमलात रतिपति छवि छाई ॥
मोतिन की गले माल, तारा गण गण निहार,
मानो गिरि शिखर तीर सुरसरि चलि आई ।
साँवरो त्रिभङ्ग अङ्ग, काछे कछ कटिनि खंग,
मानो माया को छवि आपी बन आई ॥
सुर नर मुनि सकल देव, शिव विरञ्च करत सेव,
कीरत ब्रह्मण्ड खण्ड तीन लोक गाई ।
सखा सहित सरय तीर, बैठे रघुवंश वीर,
हरषि निरखि तुलसीदास चरणन रज पाई ॥

३

कलयुगके तारवेकों गङ्गाजी आई ।
जटा जूट शीश धरे शङ्करो कहाई ॥

४

जबतें मोहि जगन्नाथ दृष्टि परे माई ।
अरुण खम्भ गरुड़ खम्भ सिन्घ पौर झांई ।
मन्दिरको शोभा कछु बरणोह्न न जाई ॥
मङ्गलाको दरस देख आनन्द हाजाई ।
जैजै श्री जगन्नाथ सहोदरा बल भाई ॥
थाल भोग लगनेको बिरियाँ जब आई ।
उखड़ा श्री दूध भोग प्रभुजीने खाई ॥
महाप्रसाद भोग खात आरती सजाई ।
अपने प्रभु नाशिका पर मोतिन लटकाई ॥
बीचमें सुभद्रा सोहै दाहिने बल सोहाई ।
बांए हाथ लक्ष्मी छवि वरणोह्न न जाई ॥
मारकण्डेय वटेकृष्ण रोहिणी सुख दाई ।
इन्द्रदमन स्नान करत पाप सब नसाई ॥
महोदधि चक्रतीरथ गङ्गा गति पाई ।
मीराके प्रभु जगन्नाथ चरणन बलजाई ॥

५

कृष्ण जनम यमुना तीरे भक्तन सुखदाई ।
भादों मास कृष्ण पच्च अष्टमी रोहिणी नच्चत्र शुभ घरी
शुभ पल महरत बुधवासर सुहाई ॥
मथुरामें जनम लियो, वसुदेव ही दरस दिवो,
शङ्ख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज दिखाई ।
नन्दके आनन्द भयो, यशोदाने गोद लियो,
ग्वाल बाल नाचत सब गावतहैं बधाई ॥
नितंत सङ्गीत गीतन नई नई, तान लेत ठाड़े ततथेई थेई,
ताधिलाङ्ग मृदु मृदङ्ग बजाई ।

सप्तस्वरन तीन ग्राम बाईस सुरत मुर्च्छान उनचास
कोटि ताम कृष्णानन्द गाई ॥

भिंभौटी—धीमा तिताला

परियाँ तेरो जुलफांमें केते आलम जालम बसदावे ।
पतलो कमर लंबे बाल नैनादा कजरा भोंवें टेढ़ो
बान भर कसदावे ॥

भिंभौटी—तिताला

तेंड़े कारणवे बागोंदा बासोवे ।
बागभी तेरा बगोचा भी तेरा बोच महबूबांदा बङ्गलावे ॥

२

सदा समझाइयोवे लाखाँ बार ।
महोदे कारणवे ढूंड़न निकसो खड़ो उड़ोकां
रावो पार ॥

३

पियको बतियाँरे जिय में लग गइयांरे ।
जो पिया हमसे रूंस रहेंगे लेतो मैं कतियां लगाय
पियको घतियाँरे ॥

४

भूलनो खोय गई बालम मोकों लावो मगाय ।
लाख टकेको भूलनो गढ़ाबो देख सब ललचाय ॥

५

बोल सुनाय जावे सानु भाँदे मांदे ।
शहर पूना बिच आलम बसदा क्यां शोरो
शरमांदे जांदे ॥

६

जँगशोयाले नू ले चलना दम हंसके ।
ओ शोरी होंदो दिल मायल हंसके ॥

७

माहोड़ा बालम याचा में तेरो सों सइयों साड़े जाने
नहीं नेह लगणदो सारवे ।
बेपरवाह ना करणा बनबोदे गरीब थों प्यारवे ॥

८

प्यारा राझांवे मेड़ोकी तकसोर ।
जो तू छाड़ कर मेनु गया बिच अबेडे खबर न लोती
फिर कर यों कहदी होर ॥

९

आज रहो घर मेरे हो सइयाँ ।
घरको महरोया मनहूं न भावे चोरो का गुड़ मीठा हो ॥

१०

छैल मोरे डेरे आज अइयोंरे ।
सोहनी सूरत माधुरी मूरत सुन्दर दरस दिखेयोंरे ॥

११

छैल मोरो नाजुक बहियाँरे ।
नई झूलनो झंगावा सूरत को मोतो लगेयोंरे ॥

१२

बँगुरी मुरक गईरे सइयाँ मोरो ।
अङ्गुरी पकरत मोरा पहुंचा पकरे बहियाँ पकर
रस लीनोरी ॥

भिंभौटी—खेमटा ताल

बंशी बाजी सो मेरे मन बस गईरे लेजा बिरजके बासी ।
सुन्दर-श्याम मनोहर-मूरत मोहन-मधुर मुख हांसी ॥

भिंभौटी—तिताला

गोपी गोपाललाल रास मण्डल माहीं ।
तत थेई थेई सुधङ्ग नितंत गलबाहीं ॥
द्रुम द्रुम द्रुम मृदङ्ग झननमनन नूपुर रङ्ग झगड़ता
झगड़ता धिलाङ्ग उघटत रस माहीं ।
श्रीराधा मुख शरद चन्द, पोंछत श्रम-जल-बून्द
श्रीगिरिधर लटकि लटकि करत मुकुट छांहीं ॥
बीच लाल बीच वाल, प्रति प्रति प्रति दुति रसाल,
ठुमकत गति अति उताल रीझ प्राण वारी ।
देखत थकित यमुना नीर, खग मृग द्रुम तट गंभीर,
वलि वलिजाय सूरदास रास सुख निहारी ॥

भिंभौटी—एकताला

तेरो हंसन बोलन श्याम मेरे मन बसिया ।
यमनाके नीरे कान, वंशीमें बजावे तान,
मुरली मधुर अधर धरे सुन्दर छवि लसिया ।
केसर को तिलक भाल, वैजंती गरे माल,
चमकत कुण्डल कपोल काछनो कटि कसिया ॥

मोर मुकट पीत वसन कुञ्ज कुञ्ज रास करै सुर नर
मुनि ध्यान धरैं ऐसे हरि रसिया ।
कहै युगराज दास सुन लीजो महाराज आज नैननमें
निरखि निरखि हिय जियमें धसिया ॥

२

झुमक चलत राम जबहिं बाजत पैंजनियाँ ।
किलकत उठ चलत धाय, परत भूमि लट पटाय,
धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियाँ ।
अञ्चल रज अङ्ग झार, विविधि भातिसों दुलार,
तन मन धन वारि डारौं कहत मृदु बचनियाँ ॥
मोदक मेवा रसाल, मन मानै लेहु लाल,
और देहुं रुचिर पानी कञ्चन झुन झुनियाँ ।
उपमा शशि कम्बु, कण्ठ ग्रीवा त्रय रेख रुचिर
कुटिल चिकुर मधुर वचन मन्दसो हसनियाँ ॥
शोभा अद्भुत अपार, को कवि अस वरन हार,
कहि न सकहि शेष जाके सहस दै रसनियाँ ।
कृष्णरङ्ग रघुवर छवि पट तरको दीजै काहि रघुवरको
छवि समान रघुवर छवि बनियाँ ॥

३

वृन्दावन बीच विदित विहरत बनमाली ।
सङ्ग सुभग सोहै वृषभानुजा रसाली ॥
अंब नीम जामनो जम्भीरो, सरस सीताफल पीयरी,
वट पाकरी अशोक ताल झाली ।
करवारो कर हरि कदम्ब बकुल कञ्ज कौंस कटहर
बहेरो बेर बड़हरै बहाली ॥
आँवरे अकूत अघट आमली आचार जहाँ उनये
अनार बेली मोरसिरी हाली ।
नीबू नारङ्गियां बिजोरे औ छोहारे भलोदाख देवदार
भोजपत्र हाली ॥
सहजनो अगस्तीया अनेक भांति देखिये
सो कालसे पलास कहूं ठौर नाहीं खाली ॥
हरसिङ्गार मालती सुगन्ध रायपा और जहाँ चन्दनकी
लपट झपट तुलसीको डाली ।
नारियल पुङ्गीफल केंकरी खजूर धव गूगली गुलाव
जामन झूमरो बकाली ॥
कौन भांति कहि सकै अठारो भार वनस्पति
कालिन्दीके कूल पवन बहै त्रिविधि चाली ।
गेंदा गुलदावरी गुलाव गुलाबांस जहाँ गुलतुर्रा
गुलमेहदी गड़हरा गुवाली ॥
केतकी चमेल रायबेल रायसोन जुही केवड़ो सदा
वसन्त दुपहरी तमाली ।
मोगरा पाण्डूर करण सदा गुलाव सुष्ट गन्ध अनेक
पुष्प लता शोभित सुगन्ध लपट चाली ॥
कोकला कपोत मोर, क्रीड़त हंस औ चकोर,
शोर कुञ्ज पुञ्ज भ्रमतहैं पपीहा इंगाली ।
बोलही सुहाए बोल, झिनन झिनन करत शोर,
सभी जात जीव जन्तु सुखीहैं सुधाली ॥
चिन्तामणि भूमि और महिमाको नहीं पार
कृष्ण राधिका विहार भक्ति जहाँ माली ।
जाको यश वेद गावै, सुर नर मुनि सकल ध्यावै,
बड़े बड़े नर भक्तराज बहुतहैं बङ्गाली ॥
लालकृष्ण जाकी रज चाहतहैं ब्रह्मा शिव सन्तनके
चरण शरण काली मा कराली ।
सोई बड़ भागी यह लोचत श्रीवृन्दावन राग सागर
गान करत तीनसौ साठ ताली ॥

४

रुक्मणि मोहे व्रज विसरत नाहीं ।
वह क्रीड़ा वह केलि यमुना तट शीतल कदमकी छाँहां ॥
गोप-वधूके भुजा कण्ठधर विहरत कुञ्जन माहीं ।
और विनोद कहां लगि वरणौं मो मुख वरणो न जाहीं ॥
सुरभी सुत औ नन्द यशोदा चितते न विसराहीं ।
सुत हित जान हमै प्रति पाल्यो विकुरे विपत मराहीं ॥
यद्यपि सुख-निधान द्वारावती व्रजको समहै नाहीं ।
सूरदास मोहन सुन्दर-घन समझ समझ पछिताहीं ॥

५

रुक्मणि व्रज मोहि विसरत नाहीं ।

हंस-सुता कूलनीकी शोभा अरु कुञ्जनकी छाँहीं ॥
वेसुरमो गोवत्स दोहनी खरिक दुहावन जाँही ।
ग्वाल बाल मिल करत कुलाहल निर्त्तत गहि
गलबांही ॥
लीला बहुत भाँत हम कीनी यशुमति नन्द निवाही ।
जब जब सुरति होत वा सुखकी मन उमगत तन मांहीं ॥
यह द्वारिका कञ्चनकी रचीहै मणि मुक्ताहल ताँहीं ।
सूरदास प्रभु सुमिर सुमिर सुख फिर फिर
पछितांहीं ॥

इति श्रीरागसागरोद्भव रागकल्पद्रुमे भिंभौटी समाप्तः ।

अथ जंगला राग लिख्यते

राग जंगला—ताल तिताला

अनि मैड़ी सइयाँ आइयो कुञ्ज गलिनमें साँवल
मुरली बजाँवदा ।
मुरली बजावदा तान सुनावदा साड़ा दिल ललचावदा ॥
रास रच्यो वृन्दावन मोहन मधुर मधुर स्वर गावदा ।
रसिक छैल कृष्णानन्द प्यारे निरख विरख सुख पावदा ॥

२

मोहि वंशीबालादे नाल अनीवो मैं वृन्दावन जावां ।
सोहनी सूरत रस भरी अखियाँ वेखतही सुख पावां ॥
वंशीदी धुन सुन भईहूं असी बावरो घर अङ्गना
न सुहावां ।
कृष्णानन्द मैं रङ्ग गइयाँ सइयां बार बार बल जावां ॥

३

वेखो वेखो मैड़ी जानवे सोणा साँवल चतुर सुजान ।
तैड़ी चितवन मोह लीता मन एती अरज मैड़ी मान ॥
यह अङ्गना कछु नेक न भावै विन देखे चैन न प्राण ।
कृष्णानन्द आनन्द होय तब दरसदे श्याम सुजात ॥

४

तू कब लग होगो स्यानोरी नादान गजरे वालो ।
जगजीवन सुख जानो, यह मेरी कही तुम मानो,
तू क्या एसो रहैगो बालो भोलोरो । नां० ॥
एक सगुन यह कीजे, जरा लाग गले लग लीजे,
जामें दिन दिन होवे बहालोरी ।
नयो जोवन नयो रूप रंगहै नए लाल मन मानोरी ॥

५

वृन्दावनदे कान्ह मेरी श्यामसुन्दर अनमोलनी ।
सुघर चतुर मन-मोहन मन मोहा उसदे सदके
कीती जिन्द घोलनी ॥

६

मोहन मैं तैड़े वारी जाँवां वंशी बजायजा ।
सप्त तीन इकईस बाईसो नोकी नोकी तान सुनायजा ॥
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन सानु मुख वेखलायजा ।
कृष्णानन्द आनन्दके रङ्गमें मधुर मधुर सुर गायजा ॥

७

नेहा लागा तैड़े नाल सुनो मदन-गोपाल ।
काछनी कटि औ पट पीताम्बर करन मुरली
श्रवण कुण्डल घुंघरारो अलकैं झलकैं नेत्र कमल
भाल विशाल ॥

८

ऐसे भएही छैल छिकनियां ।
नन्द बाबा तेरो व्रजरैया माहै तेरी वो यशोदा रनियाँ ।
गुञ्जकोमाल बीच मोतिन मणिया मोर पङ्ख शिर कट
तेरे तनियां ॥

९

रघुवर जानकी रस मांते ।
वन प्रमोदमें विहरत दोउ हँस हँस करत रसीली बातें ॥
कहुं कहुं ठाढ़े होत नवल पिय झुक झुक गहत
दुमनको पातें ।
लै सुमनन सियकों सिंगारत बिच बिच श्याम
खेत पितराते ॥
श्रुति कीरति विमलादि नागरी सिखवत कोवा
कलाकी घातें ।
जयराम हित मृदु मुसक्याते महि लीन्हो
मिथुलाके नाते ॥

१०

श्याम रङ्ग भीनी श्रीराधे ।

लखि लालन आनन्द अतिबाढ़ो फूल अङ्ग भर लीनी ॥
श्रीराधे ॥
याहीके सुखमें सुख पावत परम सुरसिक प्रवीनी ।
श्रीहरिदासो ललित केल हित हँस सबन बधाई दीनी॥
श्रीराधे ॥

११

जिनको लगन रामसे नाहीं ।
सो नर खर शूकर कूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥
कहा भए बड़ कुलके जनमें ज्ञान हीन बुध नाहीं ।
जैसे फूल उजार में फूले वृथा लागि झरजाहीं ॥
सुन्दर रूप उजागर आगर गुणीय गुण गरवांही ।
विनु हरि भजन इंदारुनके फल छुवत हाथ करुवांहीं ॥
सुन्दर अति करतूति रुचि आछी सुन्दर बहुत सलोनें ।
तुलसीदास अनुराग ज्ञान विन व्यंजन सभी अलोनें ॥

१२

तेरे नैनाने जुलम कियारे ।
भौंहैं कमान कटाच्छन वेधा आहे गरीबांदा हियारे ॥
रहदे मस्त महा मतवारे खञ्जन मधजो पियारे ।
आनन्द-घन व्रज मोहन जानो मन मोह असाड़ा
लियारे ॥

१३

गोरी तेड़ा हुसन पञ्जावदा वे सुरमा पांवन सिखिनोबे ।
थोड़ाभी सुरमा वारी हुसन चंगेड़ा मिस्सोदे कारण
रूंसोवे ॥

१४

सांवला मैनु दरस दिखाजावे साड़े घर आयजा ।
विन वेखे सानु कल नहीं पड़दी साड़े दिलदी तपत
बुझायजा ॥
रैन देहा मैनु चैन नहीं एक पल निमानीनु वंशी
सुनायजा ।
कृष्णानन्द सदके तेड़े गड्यां टुक सुखड़ा वेखलायजा ॥

१५

सांवलड़ा मैनू भांदानी भांदावे साड़ो वल
आदानी जाँदा ।
वंशी बजावदा वारी तान सुनावदा माड़ा जोव
ललचांवदा ॥
वेख लुभानो तेड़ो मोहनी मूरत मैं तेड़े कुरवानदां ।
कृष्णानन्ददो आस पुजावदां सुरलो मधुर सुनावदा ॥

१६

सांवलड़ा नीवे मैनु नेक निहार ।
जानको दास दिवानेनु रखले घायल करदें पुकार ॥

१७

सोणा मेड़ी आंखेंनो फरकेंवो श्याम सलोना घर आवे
प्रीतम प्यारावे ।
राजबहादुर मोहन प्यारा समुझ नयन जल ढरके ॥
सुनोरी श्याम ॥

१८

सुनोनी सइयों नीका मगुण मयाहै मानु दरस वेखावे ।
सोहनी सूरत रङ्ग भरी अंखियां मुरली मधुर बजावे ।
कृष्णानन्ददो आस पुजावो ताड़ेहो यश नित गावे ॥

१९

नाजो केहडानी कूड़ कमाया नेहडा लगायानो ।
नेह लगायाको फल पाया नाहक भरम गमाया ॥
तेड़ी सूरत देख सब जग मोहे कृष्णानन्दनू रङ्ग
दिखलाया ॥

२०

वेदरदा मैं पोलोनो हुइयांवे पोलोनो हुइयांवे ।
पोलोनो हुइयां कालोनो हुइयां ज्यों सांवन फूलो तुरैयां ॥
चंद चढ़ा कुलवे आलम वेखे वे सोणा मैं वेख
तुझ तुइयां ।
विन वेखो सानु कल नहीं पड़दी कृष्णानन्द भैं रङ्ग
गइयां ॥

२१

मोही चोरे वालड़ेदे नालनो मैं खेड़े जावां ।
अङ्गरीयादे बिच पुर पुर कलड़े अनीवो मैं
झूमर पावां ।
मायल कर सानु घायल कीना कृष्णानन्द तेड़े घोल
घुमावां ॥

२२

तैड़े गलां वइयांवे मेड़ोयां लजावे ।
लाख गुन्हा बहोतेरा मो कोतावे खेड़ा झेड़ावे
मैनु तजा ।
क्रणानन्दनु का गला आंखदा सूरत दिखाय तैड़ी धजा ॥

२३

यार मैरिये कैसा जादू डालावे ।
जन्त्र मन्त्र टौना पढ़ पढ़ क्रणानन्द बस कर डालावे ॥

२४

गोरी तैड़ा इसन पञ्जावदा वे सुरमा पावन सोखीनो ।
थोड़ाभी सुरमा वारी इसन चंगेड़ा दातांदो
मिस्सी तैड़े नोकी ।
क्रणानन्ददे दिल बिच बसदी और सौतन
दीठी फीकी ॥

२५

इस जिन्दगीदा को मरोसावे ।
इस जोवनदा मान न करिये सोणा पाणोदे बोच बतासा ।
क्रणानन्द क्रणमन रङ्ग लियो जग झूंठा तमासावे ॥

२६

लोकां मानु तानें न देदेवो ।
राँझण मेड़ा बारो में राझनदो खेड़े साड़ी खुचर
करें देवो ॥
ताबेभो दे दे वारो मानोभो देदे सांवल नाल दिल
मानेहो ।
क्रणानन्द रङ्गीलो मूरत तन मन धन परचानेहो ॥

२७

मैड़ी सइयों कोई नहीं जानदा वे सांवलेदे मिलनदा
मामला ।
जो कोई हाकिमवे उसनु सुनावे वे मेरा मियां इश्क
पया साड़ा कामला ।
कधोतो मौला मेरावे काजीभो होसो मेरा मियां
पकड़ करेसां फिरयादला ॥
बाबुल झड़के वोरण भांदादे सास ननददे हामला ।
क्रणानन्दमें दिल बस गइयां विन वेखे नहीं कामला ॥

२८

सोणा मेड़े नेड़ेनो आजावो मुख वेखला जावो ।
नेड़ो नहीं आंदा जिय ललचांदा दिल भर अखियाँ
घुमाय जावो ।
श्रीक्रणानन्ददे दिल बिच बसदे मनदो आस
पुजाय जावो ॥

२९

कहा चेटक दे गयावे यार मैनु ।
जंत्र मंत्र जादू टौना पढ़ पढ़ जोवड़ा बसकर
ले गयावे घर मैनु ॥

३०

वगदोभी रावो बोच पादोयाँलसां मरणा कबूलवे ।
यारन दिसां आंखो मेड़े ढोलननु वे किन विलमायावे ॥

३१

सोणा मेड़े वेड़ेनो आजावो सुरलो मधुर बजायजा ।
तैड़ी सुरलो मेड़े मव बस गइयां नोको तान सुनायजा ॥
क्रणानन्दनु दरस वेखायजा दिलदो आस पुजायजा ॥

३२

मेड़ा परदेशी दूर न जावो ।
नेह लगाकरवे छड़ कित जांदा रब तेनू मुड़ ल्यावो ॥
विछुड़ेनु कोई रबही मिलावे क्रणानन्द वेग आवो ॥

३३

सांवलड़ा मेड़ा मोह लिया मनड़ावे ।
क्रलडानो भलड़ानो तिखड़ानो बांकड़ा क्रणानन्दनो
कड़ा कन्हड़ावे ॥

जंगला—तिताला कपका

सुगना राम नगरके बासी ।
रामनगरमें जनम लियोहै मरतरनकों कासी ।
क्रणानन्द प्रेम रस माते छूट गई चौरासी ॥

जंगला—तिताला

अँखियां न लागेरे बनवारो ।
जबते ते देखो मोहनो मूरत विसरी सुरत हमारो ।
क्रणानन्द भई अब चेरी हौं तेरी वलिहारो ॥

२

वह देखो बांसरी बजतहै बनमें।
सुन धुन श्रवणन कल न परतहै लाग रही तन मनमें।
कृष्णानन्द निरख सुधि भूली अधरनकी फरकनमें॥

२

यहां कोई बांसरी हो बजोथी।
नएरी बांसकी नईरी बाँसरिया साँवले अधर सजोथी॥
कृष्णानन्दजी से सुनी गोपी कुल मरयाद तजोथी॥

४

श्याम मोरा कौन दिवस व्रज अइहै।
गहि अभिलाष रहतहै नित प्रति घर घर मङ्गल गइहै।
कृष्णानन्द अङ्ग अङ्गन पर वारो नेवछावरि जइहै॥

५

मैंतेरि पर वारी साँवरि मैं।
लैके चीर कदम पर बैठे हम जल माँझ उघारी।
कृष्णानन्द देहु अब अँवर विनती सुनहु मुरारी॥

६

बधाई बाजत आज सुहाई।
प्रगट भए नन्दके नन्दन सखी मिल मङ्गल गाई।
कृष्णानन्द मगन व्रज वीथिन आनन्द उर न समाई॥

७

ललना झूलत सुन्दर पलना।
अगर चन्दनको पलना गढ़ायोहै झुलावत व्रजकी ललना।
कृष्णानन्द निरखि सुधि भूली याही रङ्ग में रङ्गना॥

जङ्गला—तिताला कृपका

विदेशी मोरे आज आवेंगे।
सुनियोरी मोरी लहुरी ननदोया करकत है मोरी
अङ्गोया तिन्हें दुलसावेंगे।
कृष्णानन्द पिया मोहि मिलके हरषि सेज सुख पावेंगे॥

२

हमसे कौन बहाने बोलो।
बारा बरस पीछे सइयां मोरा आइलो हँस हँस
घूंघट खोलो।
कृष्णानन्द यहै विनती मोरी रस समुद्र मोहि घोलो॥

३

गोरी तेरा लाद चला बनजरवा।
इस नगरीके दस दरवाजा निकसा जात मन हरवा।
कृष्णानन्द नेह तू करले त्यागें सब घर बरवा॥

४

मइको ले न गए ओ भर नजरवा।
धुर ढाकेकी सारी मगाई पटने शहरको हरवा।
कृष्णानन्द मैं बैठी विसरत कैसो नेह नगरवा॥

५

गोरी तेरे नैनो में जादू समाना।
बारा बरसके वारि जोवनवा तेरा बरस रङ्ग साना॥
तिरछी चितवन करत बावरी तिल तिल
करत न काना।
कृष्णानन्द अरज मोरी सुनिके करहुं जान पहिचाना॥

६

नींद मरे गोरीके नैना एजी अलसाने एजी सरसाने
नैना नींद।
प्रेमरङ्ग मद झुकि झुकि आवत उचरत ना मुख वैना।
कृष्णानन्द निरखि छवि नीकी पावत मन सुख चैना॥

७

फुलवन सेज बिछाई मोरा सइयाँ।
हँस हँस लाग गरे मोरे सइयाँ।
कृष्णानन्द हिये मोहि लावहु हाहा करत परूं पइयाँ॥

८

कैसा बनारे विरहका कँगना।
अए बमना मोरे पोथी बांचो कब आवें सइयां
मोरे अङ्गना।
कृष्णानन्द व्याह प्रीतम सङ्ग एक पल छाँड़ो में सङ्ग ना॥

९

गोरी तेरा जोवना सदा नहीं रहिहै।
यह जोवना तरवर की छइयाँ ढरत ढरत ढर जैहै॥
जोवना पर मत मान करे तू माटी के मोल बिकैहै।
कृष्णानन्द राख जिय मेरो फिर पाछे पछितैहै॥

१०

कहा जाने भूलनीका मोलरे मुरझ ।
यह भूलनी मोरे मदकैसे आई हीरा लगे अनमोलरे
मुरझ ॥

११

बालम तोरी लाली उतर गई किन रसीया रस लीनीरे ।
बालम तुम बनके मोरवा बोलत मन हर लीनीरे ॥
बालम तुम चिन्ता न मानौं हंसना मोरा सुभाव ।
बालम तुम बनके बहेलिया कहा जानो भूलनीको दाव ॥
बालम तुम कुंइया न झाकौ गिरि परिहौं लगिहै चोट ।
बालम तुमकों लैया लै जैहै छिप रहो देहलीकी ओट ॥
जोवन दोबो गांढ़ो में कस गए छूटेतो लूटै बजार ।
जोवन दोनो नैहरके पाले जूझन चले ससुरार ॥
सेजरोया पर कुश्तो भई जैसे लंका लड़े हनुमान ।
जैसे महा भारत कुरु क्षेत्रमें लड़ेहैं दूरयोधन
अभिमान ॥

१२

रासमें नाचत थेई थेई ततायेई ।
श्यामाश्याम मिल सङ्गीत उघटत ताधीलाङ्ग
ताधीलाङ्ग तता थेई थेई ।
तक् थुंगा तगड़ थुंगा थाधाता धिलाङ्ग तक थोता
धिलाङ्ग तकथेई थेई ताधिट किट धिकिट तक
गिदि गनधा थेई ॥

१३

मेरा बांका सिरोही वालाजी मोरा ।
बाँकाई घोड़ा तेरा बांकाई जोड़ा बाँकाई कमर
कटारा जी मोरा ।
क्षणानन्द बांको चाल चलतहै बाँकोई ओढ़े
दुशाला मोरा ॥

१४

देरो देरो यशोदा दक्षिणा तेरे पुत्र भयोहै सुलक्षणा ।
कृष्णपक्ष भादौं निशि आठें शुभ रोहिणी बुध सुलगना ॥
क्षणानन्द असी सत ठाढ़ी वलिहारो तेरि बछना ॥

१५

मेरा प्यारा सांवलियारे तेड़ी सूरतदी वलिहारी ।
गिरिधारी बनवारी प्यारा सांवलियारे तेड़ी सूरतदी
बलिहारी ॥
विन देखे कल परत न एक पल खड़ी कूकां जन
गिरिधारी बनवारी । प्या० ॥
वंशी बजावदा तान सुनावदा मनमोहन मुरारि ।
क्षणानन्द धुन छाय रहोहै सुरली शब्द सुखकारी
बनवारी ॥ प्या० ॥

१६

अनो ऐसा सांवल साड़ा दिल लगावे ।
होरन भांदा इस जग बिच कोई तन मन धन वही
नाल वगावे ॥

१७

मेरा परदेशी रावला कैड़ो जानवे ।
पार करीवे दूतांदा बेडा वेग मिली मुझे आनवे ॥

१८

प्यारा मोसों भली निभाई प्रीतहो प्यारे मिल विछुड़े
नहीं चैनवे ।
आपन आवे वारीवे ना लिख भेजें मेड़ा सोणा कौन
गांवकी रीत प्यारा० ॥

१९

मैं ढूंढ़ फिरेदी कोईतो बतादे जित्थे मेरा रांझन
बसदावे ।
चेरीमैं वसदी मियां राझण मिलादे साड़े जिय
कसकेदावे ॥

२०

मै तर गइयां रांझा सानुकी आँखदा ।
पांच रुपैया पानोदां बीड़ा मुजरा सारी रातदा ॥
सबोदे चावल महिशीका दूध यह खाना
माड़े यारदा ।
सवा मोहरदी नथ घड़ादे बेसर नाल लटकेंदा ॥

२१

वंशी वालेसों लागा म्हारा नेहड़ा ।

मोर मुकट पीताम्बर सोहै और सोहै शिर सेहरा ॥
साँवली सूरत माधुरी मूरत कुञ्जनमें बसै गैहरा ।
लक्ष्मणदासको यही विनती लिख लीज्यो मेरा चेहरा ॥

२२

तैड़ी मैड़ी रब न तोड़े दोस्तो किन किसीकी
किसमत न मोड़े ।
सदके जाइये रबड़ादे कौलदी जिनसे ढूंढ़ना रब
फेर जोड़े ॥

२३

तैड़ी मैड़ी दोस्तो साँवलड़ा लोक अयानो नहीं जाने।
गुप्त मतदो बातरी सजनो और दिवाने ॥
कहा पहिचानै तुहो तन मन धन सम्पति तुहो
तोहीते मन मानै।
कृष्णानन्द मैं रङ्ग रहे हैं और रङ्ग नहीं ठानै ॥

२४

भूलदीभी नाहीं मैड़ा सोणा तैंडरी मैनु याद ।
कल न पड़ैदी एक पल विन देखे मानदावे माड़ी
फिरियाद ॥

२५

कसम कौनोरे साँवलियाने ।
गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुरियां बहियाँ पकर
रस लीनोरे ।
कृष्णानन्द हियो परिपूरण प्रेम सहित करि दीनोरे॥

२६

साँवलिया से नैना लागोरे।
वादिन देंहौं बताय जौन दिन प्रेम प्रीतमें पागोरे ॥
जबसे निरखी सोहनो सूरत तन मनमें रस जामोरे ।
कृष्णानन्द रहत नहिं रोके चरण कमल अनुरागोरे॥

२७

जोवनवा तोरे कारण ।
जोमैं जनती सइयाँ रूसैहैं करती मैं सेज सँवारण ॥
जोमें जनती सइयाँ मोरे ऐहैं कततो नाना सूत ।
अपने सइयाँको पगिया बनौतो जैसे गुलबवाको फूल ॥
जोमें जनती सइयां मेरे ऐहैं रखतोमैं सब्ज कमान ।
अगल बगल दोय तरकस रखतो जोवनाको करतो
निशान ॥
जोवन जोवन आबै पियासों जोवन मधुर सुर बोल ।
जो वे न आवें सेज ऊपर मोरी विरथा जोवन अनमोल॥

२८

सुन भारत भैया हौं कपिसौं उरिण हम नाहीं ।
शत योजन मरयाद समुद्रको कूद गए छिन माहीं ।
लंक प्रज्वाल सिया सुध लायो गरभ नाहीं मन मांहीं ॥
पैठ पताल तोरी रसातल राख लिए गहि बांहीं ।
जो न होते हनुमतसे योधा को लावत जग माहीं ॥
सकतो बान लगी लक्ष्मनके बैठे मन पछिताहीं ।
जायदोना गिर सजीवन लायो लक्ष्मन सुखजो पाई॥
वचन भङ्ग कबहूं नहीं कीनो जहाँ पठयो तहाँ जाई।
तुलसो दास हनुमतको महिमा श्रीपति श्रीमुख गाई॥

२९

गोपाल पियारे तैंने भला जो किया ।
खड़ावे पियासो तैंड़ो आँखड़ोयानु जोव जिवावन
दरस दिया ॥
उमर दराज गरीबांदो वस्तो कितवे महरम
सबाब लिया ।
आनन्दवन ब्रज जीवन जानो कुरवानो मुख देख जिया ॥

३०

वृन्दावन चलो सजनी मनमोहन बुलावैरो ।
सप्त सुरन और तीन ग्रामसें मृदुधुन वंशी बजावै ॥
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन देखतही सुख पावै ।
नाम रटतहै राधे राधे सूर श्याम मन भावै ॥

३१

रसीया तोरी बातन मोरा जियरा जात जरो ।
बाट चलत मोहे रोकत टोकत जित देखो तित खरो ॥
रसिया० ॥
आवत जात तू मोहि सतावत निशदिन रहत अड़ो ।
रसिया० ॥
कितनो कहतहूं मानत नाहीं काहेको बैर परो ॥

सङ्गको सखी मोरी लोग नगरके सब मिल नाम धरो।
कृष्णानन्द कहतमैं फिर फिर यह अब चितर्तेन टरो॥

३२

रामाहो हिरदै विसरामाहो।
रतन सिन्घासन रघुवर बैठे बांये अङ्ग जानको भामाहो॥
भरत शत्रुघन चम्वर ढुरावैं सनमुख करजोरे
हनुमानाहो।
तुलसो दास प्रभु शरणो आए मन-मन्दिर में करो
विसरामाहो॥

३३

मोहन मोह लियो मनड़ारो।
शोभा सिन्ध सोहनो सूरत जित देखों तित ओहोरो॥
आँखड़ल्याँ थारो सैन पियारो जानको दास उर वास
कियोरो॥

३४

चलो सखो राम देखनको नृप दशरथ के आँगण।
सङ्ग सखा मिल चारों भाई खेलत आंख मिचावन॥
शत्रुघन खटवा होय बैठे कमल-नयन गए
आँख मुदावन।
छोटे लछमन छिपत छोरलो छिपे सखा पकरावन॥
कहत सखा प्रभु पास न आवो अँधियारो उजियारो
करावन।
प्रेम रङ्ग प्रभुकों सब पकरत तन दुतिदमक दिखावन॥

३५

मेरा राम रमैया निश दिन मनकों रमावत।
धर्मादिक फल सुफतमें पावत प्रोत सनेह बढ़ावत॥
जाग्रत स्वप्न सुसुप्ति तुरोयमें जागत मोहे सुआवत।
ऐसे नाथ अनाथने पाए रोझ रोझ गुण गावत॥
विमुखको विमुख कराय दुरावत सन्तको सङ्ग लगावत।
प्रेमरङ्ग प्रभुसों रङ्ग लागत बिन मागे पद पावत॥

३६

गिरिजा-पति पतितनकों तारो।
मेरो ओर निहारो शङ्कर शरणागत को उधारो॥
बस काशो में शिव शम्भु भव बंधनतें टारो।
प्रेमरङ्ग प्रभु भोले भूपति कोटि जनम अब जारो॥

३७

रघुवर तेड़े नाल तन मन वारदोयां घर आयजावो।
सन्तनके धन राम कहेंदे लोभदो जाल छुटायजा॥
पौर न जाना पया बिच सागर ज्ञान जहाँ जचायजा।
प्रेम रङ्ग प्रभु करण धारयत भवदे पार पोंहचायजा॥

३८

साँवलड़ा मन भाया सइयों साड़ड़े नाल।
जींदड़ी साड़ो घोलो घतो छंदड़े गइयां इश्कदा
पइयां जञ्जाल॥

३९

दिल बिच तेड़रानू रस मादा।
राती देहा सानू वान पइयेहो जोरा जोर धिगाँना।
हुण गोविन्द बिनु होर न दिसदा रबदे नाल लुभाणा॥

४०

नारीहू न जानै बैदा निपट अनारीरे।
लाल पलङ्ग पर जरद बिछौना प्रेमको कटारो मेरे
हिया बिच मारीरे।
द्वारकामें एक वैद बसतहै तासों मोरी यारो तुम घर
जाओ बैदा मोहे रोग मारीरे॥
मीरानै गिरिधर मिलावो यहो अरज हमारीरे।
बूंटी तो झूंठो भई औषधि विहारीरे॥

४१

कान्हड़ो मिजाजी सइयों माने नहीं मेरो गलां।
रत देहा चन्द चकोर जेहा कल नहीं पांदो घड़ी
एक पला॥

४२

वंशो गोपाल को आज बाजै।
अद्भुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरनसों गाजै॥
लाज धीर कुल कान मान डर श्रवण सुनत सब भाजै।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम छवि देखत
मनमथ लाजै॥

४३

दिलांदे सहरम सांवलेयार दरस दिखाय जावो ।
बांसुरी अधर धर बजावत नाचत गावत यमुना निकट
सांवली सूरत माधुरी मूरत हिरदे मैं समाय जावो ॥
जंघन कछन कटि पीताम्बर कानन कुण्डल शीशमुकट
घुँघरवाली अलक झलक नैनन में समाय जावो ।
जानकीदासनु तैड्डी आस निशदिन पल खांस खांस
सपने टुक दरस पामी सकल दुख नसाय जावो ॥

४४

मान न करिये वंशी वाला याद करेंदा ।
मुख नहीं बोलै पलक न खोलै नैनन छिन छिन
नीर झरेंदा ॥
तेरी रङ्गदारी अङ्ग पर जरद दुपट्टा प्यारा लै धरेंदा ।
ब्रजनिधनु आली तुझ बिन निशदिन घड़ी पल छिन
नहीं चैन परेंदा ॥

४५

रे जग झूंठा समझ मन माहियाँवे ।
नाल जनादे वारो नेह लगाया नाल चलै कोउ
नाहियांवे ॥
यार जिनानु प्यार तू करदा सो जाले तेरे तांइयाँवे ।
जानकी दास प्रीत ऐसी जगकी जैसी ठगको
मिठाइयांवे ॥

४६

थारेवे नैनादे नाल मैतो ठगीयांवे ।
इश्क लगा वारीवे छिपदामी नाहीं जाहर कीना
इन अँखियांवे ॥

४७

भला मैड़ा सोणा नैनादे नाल निभायदे ।
तिरछी भौंहैं नैन तकैंदे बरछीदी नोकी एढ़ी टेढ़ी
निगाहां लगायदे ॥

४८

फन्दड़े जादानी दूरवे दिलांदे नैड़े बसदा हजूर
सोणावे ।
छिक पुनड़ेनु आनके मिला मिसूसीदी सूरत झरवे ॥

४९

चला जाँदड़ावे जोवन आपनावे ।
जोवन जांदा वारीवे फेर नहीं आंवदा नाहक उमर
गमावदांवे ।
इस जोवनदावे मान न करनावो मियाँ हंस हँस
बाँह झड़कदांवे ॥

५०

दिलांदे नेड़े बसदा मेड़ा सोणा अँखियादे
कौलानी दूरवे ।
गोझदी बाड़ी बिच सब कुछ जमदा मेरा मियाँ
खेड़ेनी खेत बँबूरवे ॥

५१

पाँनीया जावे अलबेली पनिहारनी जान ।
तैड़े घड़ेदा वो ठंडा पानी साड़े दिलांदी टुक
प्यास बुझाजा जान ॥

५२

गोरी तैड़ी आँखड़ी अखियाँ रतनारियाँ ।
साड़े दिल भूलेंदी जालो याँवे ॥

५३

वोमैं पुंछदी आइयाँ इत्थे ।
जङ्गल ढूंढ़ा बारी वेलाभी ढूंढ़ा रुदारङ्ग दा डेरा कित्थे ॥

५४

साँई रबा मैड़ा न्याव करी ।
गहरी वो नदिया नाव पुरानी मेहर नजर मैनु पार करी ॥

५५

प्यारा तैड़े मिलनेदी मैनु चाव आमिल सोणावे ।
नेहड़ा लगाय गया तुसी मैड़े नाल मेहर करी
घर आववे ॥

५६

राह तकैदेनीवे मुद्दतें गुजर गइयाँ कीतानी
कौल करार ।
रैन देहा मानु ध्यान तुसाड़ा मेरा मियाँ साड़ा
दिल बेकरार ॥

५७

छैला मुद्दताँ गुजर गइयाँवो ।
गुजर गइयाँ गइयां यनी यनी यनी यनीवो ।
तेंड़े मिलननूवे सगुण मनादी मेरा मियाँ हाल
बेहाल हुइयाँ नीवो ॥

५८

मेरा हाकमा मैंतो भूलीरे मेरे हाकमा भूलीरे भूली
तेरी चालमें ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे बेलाभी ढूंढ़दा मैंभी लो चड़ीए
राजी रखणा ।
मेरा मियाँ खेड़ेनी खेड़ेवो में रोली वो मेरे हाकमां ॥

५९

भला तू मेरा थाँनेदार ।
आयानी सावन वे मन परचावन वो मियाँ बाजुबन्द
बूटेदार ॥

६०

पनियानू कितवल जावाँ दिवरानिया कुंवा पर
आसन जोगी दानियां ॥
चार मिलेवो मैनु साहब न जादे एक मिला
दाढ़ी जार जिठानियां ।
एकतो जोगी मैनु कामन मिलोया मैं शरमांदी
वेमर मर जादी वो दिरानियाँ ॥

६१

थारदी मैनु तलब दीदारदी ।
रोशन शाह तैनु देदे दवाइयाँ वे मियाँ गला कीतीयाँ
मैनु प्यारदी ॥

६२

भला मेरा वुन्दि चीरे वाला दोस्त मिलामो वो ।
चीरे वालानी मान करेदा जादुड़ानू मुड़के ले आमीवो ॥

६३

गोरी तेरा बालक युग युग जीवेवो ।
गोरीदे आँगणवे सगुण सोहावण हँसत खेलत
दूध पीवेवो ॥

६४

अणी मा भवन चली आनन्दीके दरसन पावना ।
परस चली परसाय चली बे अनी मेड़ा मोदी
बालक याना ॥

६५

साड़ी रंगाय देरे बलमा मोकों ।
माड़ी रङ्गायदे पचरङ्ग चुनरी और रङ्गायदे गुलनारी
किनारीरे ॥

६६

मेरा एही झगड़ा बो मोतीड़ा मगायदे ।
सोणीकी मोहे नथनी गढ़ायदे दो मोती एक लाल
चुन्नी लगायदे ॥

६७

रसही में बोलै मोरे पिया रसियारे ।
अपने पियाको में ढूंढन निकसी याही नगरको बसिया ॥

६८

मैं देखी पियको चतुराईवे ।
औरन से पिया हँसत बोलत हैं हमसे करत निठुराई ॥
हमसों अवध बद अनत विलम रहे मोरा जियरा
तरसाई ।
चन्द्रसखी हित वाल कृष्ण छवि रहत चरणम
चित लाई ॥

६९

काहे श्याम मेरी सुरत विसराई ।
जबतें विछुरे प्राण पियारे अब लग खबर न पाई ॥
बेदरदा कुछ दरद न आया वे क्या जानै पीर पराई ।
जधादास आश चरणनको आन मिली यदुराई ॥

७०

गोविन्दा तोसों नैन लगे बिन देखे रहिलो न जाय ।
लियो चुराय चितै चित मेरो घर अगना न सोहाय ॥
जानकीदास कों दरसन दीजे टुक मृदु सुर मुसक्याय ॥

७१

हो सुघर बना मेरावे लाल बना ।
बनाके सिर वारी शेहरा विराजे हीरा लगे मोती पन्ना ॥

७२

लख लीज्योरी गोविन्द आँवदा ।
गोविन्द आंवदा मेड़े मन भाँवदा मधुरो वेणु बजाँवदा ॥

७३

वो बजाई मोहन मुरलीको टेर ।
सुन धुन चौंक परी कानन में व्रजवनिता लई घेर ॥

७४

इन नैनोंने लाज गवाँई ।
राजबहादुर मोहन प्यारे मधुरी वेणु बजाई ॥

७५

राज मारे नथुनोदा मोती लाल ।
साँवल साज समाज पहरे वलिहारियाँ तेरे काज ॥

७६

सानुको पायावे किसोदे नाल ।
वेदरदाँदा हाकम म्हारा मियां बुझदा क्यों नहीं हाल ॥

७७

बकस गुणा मेरे बेलिया यार ।
माशूकदा रङ्ग फूल गुलाबी आशिकदा रङ्ग तेलिया ।

७८

तैं मन लोतारे वंशी बजायके ।
वंशी तेड़ो मोहनीरे पड़ोहै काना बिच आयके ॥
मगरुरी न करवे महरदे जोवनदा मद पायके ।
वलिहारियां क्यों नेह लगाया लगाया तो और
निभायके ॥

७९

मेरा बालपनेदा यार कन्हैया ।
खेलत गेंद गिरी यमुनामें सङ्गही कूद पड़ैया ॥
पैठ पताल कालो नाग नाथ्यो फण फण निरत
करैया रे कन्हैया ।
इन्द्र कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें देत बहैया ॥
गिरिगोवर्द्धन नख पर धार्यो व्रजको करत सहैया ।
प्रात समय यमुनाजो न्हाते लेकर चोर कदम चढ़ैया ॥
वरुण लोकतें पिता ले आए यशुमत लेत बलैया ।
पुरुषोत्तम प्रभुको कवि निरखत बार बार वल गैया ॥

८०

नजर भर वेखण देरे महबूब ।
राम लछमन भरत शत्रुघन अवध नगरके भूप ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहे सोहै कलङ्गी खूब ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजै जगतारणके रूप ॥
तीन लोकके नायक कहिये अदभुत आनन्द स्वरूप ।
जधोदास आश चरणनको शोभा अतिही अनूप ॥

८१

साँवरेने कीतावे जादुड़ा साँवले ।
वंशी बजायके मेरा मन लीता दासदे दिल बिच
मोहन जीता ॥

८२

सइयोंनी मेड़ा रांझा केतिक दूर मेड़ा दिलदानो
महरम साँई रबा पुंछ पुंछ हारी रात सारी ।
जो मियां रांझा वारो वे सुझनु चाहै नेह निभायवो
दिल भारी ॥

८३

निजारा जटीयांदा यारवे ।
शीश शोरी मान समुझ सांई फुन फुन मारा
लटीयांदा यारवे ॥

८४

जोमैं जानदीवे साड़े नाल नेहरा मैं नहियां करदी ।
जोमैं जानदी ऐसाभो होंदा मेरा मियां इश्कदे
फन्दे में नहियां पड़दी ॥

८५

जिन्द घोलोदा निजारे नालवे सोणा ।
दोस्तीदे नाल सुख पाया महम्मदसा ऐसो तेरो बातें
भोलो भोलोवे ॥

८६

छदड़े जाँदीया हुण तेरेवो मेरी जान ।
मिन्नत करदी में सगुण मनादिंवे कब घर आवे
बालम मेड़े डेरेवो जा० ॥

सिन्धी जंगला—तिताला

जटो मुख वेखलाजा सानु वे कभीतो आनके ।
होर राँझेदो शोरो रही महोब्बत पायके ॥

२

खेड़ोंदो चाकरी मैंकरदियाँ हो नाहियाँ ।
शोरोदा मैंनु दम गनीमत मिलना चेराखान
गवाइयाँ ॥

३

भूलिए चाहना चाहनी कहँ देवे तू को जाने चाहनेदी
सारवो ।
साड़ा दिल लगे तो तू जान किसोदे रमझाँनु असाँतो
करदा बहाना ॥

जंगला—तिताला

सुड आमी वो साड़े कौलवे छैला ।
शोरो मैंतैनु चाँहदो सङ्गभो नारही महलाँ महलाँ ॥

जंगला सिन्धी—तिताला

छैला मान न करिये रबडादे नाल डरिये ।
उठ शोरी मिल प्याला पीले समझ समझ
पग धरिये ॥

२

जटोदे नैना सँभाल ।
घायल मायल दिलथे होंदा जुलफौं वारी जटो हटी ॥

३

लगदा बाग बहारवो वेखड़ा आँदे हजार ।
मुख गुलाब नरगसे चश्मा सम्भल जानो सँभाल ॥

४

अटक रहे दिल प्यारेदे नाल सेनु मिलना जरूरबे ।
ले चल जधो वारी श्यामसुन्दर जहाँ मथुरा केतिक
दूरवे ॥

जबके गए मए बाहोके कुबजाके रङ्ग जूरवे ।
कृष्णानन्द वारी तुमरे दरसकों रह गया कूर अक्रूरबे ॥

जंगला—तिताला

बना पर वारीरे आज वारी वारो वारडारो दिन
दुलहे नन्द लाल ।
कुसुम सेहरा शीश दोउनके झुमके मोतो लाल ॥
रङ्ग मोना केसरिया बागा चलत मतगज चाल ।
छवि निरखत वलिहार दोउनको नैना होत निहाल ॥

२

वंशीके बजैया वंशी फेर बजावरे ।
वही तान वही ध्यान वही सुर वही गान सुनावरे ॥
नटनागर नाचत ता थैया मेरे आँगन आवरे ।
वलिहारी सूरत पर वारी मोहन कण्ठ मिलावरे ॥

३

रसिया नाचत है वन माँही ।
वृन्दाविपिन पुलिन यमुनातट रास कदम्बकी छाँई ।
सुन्दर-श्याम वजाई मुरलिया राधा सों गलवाहीं ।
नागरिया नैनन में बसतहै चरण कमल वल जाई ॥

४

तू गयाबे नेह लगाय ।
व्रजमोहन सों लगो लगनियाँ वंशीदो तान बजाय ॥
इश्क साड़े जाल पाया तैं सूरत खूब दिखाय ।
चितै चित चोरी बहारो वलिहारो मुसकाय ॥

५

साँवली सूरत साड़े मनमें बसोवो ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै मुरली मुख पर लसो ॥
देख लुभानी सइयाँ मोहनी मूरत उसदे फन्दड़े फसी ।
पुरुषोत्तम दे नाल विमोही बाँकी चितवन हँसी ॥

६

अरे मन हरि बिन कोई नहीं तेरा ।
चार दिननको प्रीत जगतसें आखर जङ्गल डेरा ॥
जगमें कोऊ कछू सङ्ग न चाले जिसे कहै तू मेरा मेरा ।
जानको दास प्रीत तज जगको हो रघुवरका चेरा ॥

७

सुख आनन्द भए आनन्दोके दरसन पाए ।
दरसन पाए अतिमन भाए सब दुख रोग जलाए ॥
जाग्रति जोत जगत में जाहर बड़ भागन लख पाए ।
जानकीदास जप तप सिद्धि बिन सहजहो सन्त कहाए ॥

८

कठिन लगन की प्रीतरे लागै सोई जानै ।
घायल मायल फिरदी दिवानी रांझण बिना कोई
मानै नहीं माने क्या करे बैद सयानेरे लगी सोई० ॥

जंगला—एकताला

लङ्गर लरकवा नैन सैन दे वेणु बजाय बस कीनोरे ।
मुकटकी लटक चटक भ्रुकुटिनकी कर धर
मुरली लीनोरे ॥
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें गउअनकी ठठ कीनोरे ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत श्याम-सुन्दर
रङ्ग भीनोरे ॥

२

सुन्दर चतुर सुघर बालमुवा तेरि वेखनदा चाहवे ।
मेरा जिय चाहै तेरि मिलननू महर करो घर आवरे ॥
श्याम-सुन्दरवा नन्दके दुलरवा मेरा मन ललचावबे ।
पुरुषोत्तम प्रभु लङ्गर लरकवा मधुर मधुर सुर गावबे ॥

जंगला—तिताला

झूंठेही दोष लगावत माई मेरे ।
हौं वाको घर कबहुं न देख्यो दैन उराहन आवत ॥
जहां मैं फिरत गैल ग्वालन सङ्ग तहँतें पकरि मगावत ।
सब ग्वालिन मिल घेर लियोहै बरबस मोहि नचावत ॥
तोसों झूंठ साँचके कारण मुख दधि लेप लगावत ।
कर गहि पकरत चोरको नाईं तोकों आन दिखावत ॥
श्यामकों भेद मरम नहीं जानत बातही बहुत
बनावत ।
सूरदास यह चाल अट पटी बहुत यसुदहि भावत ॥

२

नींबो लपक गहो यदुराई ।
जब कर कमल धरो श्रीफल पर परीहै धरनि पर आई ॥
ततक्षिन रुदन करत यदु-नन्दन मनसों बात बनाई ।
एसी ढीट देत नहीं ग्वालिन राख्यो गेंद चुराई ॥
तब अस विहँसिके कह्यो ग्वालिनी मोपे नाहिं कछाई ।
जहाँ जहाँ खेल कियो कुञ्जनमें तहाँ चल देहुं बताई ॥
बाल विनोद परम सुत केरे महरि चली मुसकाई ।
सूरदास यह रसिक शिरोमणि को जाने यह भाई ॥

३

युगल छवि टगन माँझ अटको ।
दै गलबाँहीं कदम तरे ठाड़े वा वंशीवटको ॥
ऐसो ध्यान बसत हिरदेमें अब क्यों डोले भटको ।
मनको मनही क्षणरङ्ग जाने को जाने घटको ॥

४

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
तुमसें कहा छिपो करुणामय सबके अन्तरयामी ॥
जे तन दियो ताहि बिसरावत एसो नून हरामी ।
मर भर द्रोह विषेकों धावत जैसे सूकर ग्रामी ॥
सुन सतसङ्ग होत जिय आलस विषयन सङ्ग विसरामी ।
श्रीहरि चरण छोड़ विमुखनको निशदिन करत
गुलामी ॥
पापी पतित अधम अपराधी सब पतितनमें नामी ।
सूरदास प्रभु अधर उधारण सुनियो श्रीपति स्वामी ॥

५

माधो अस तुमारि यह माया ।
करि उपाय पचि मरिय तरिय नहीं जब लगि करहु
न दाया ॥
सुनिय गुणिय समुझिय समुझाइये दशा हृदय
नहीं आवै ।
जेहि अनुभव विनु मोह जनित दारुण भव विपति
सतावै ॥
ब्रह्म पीयूष मधुर शीतल जोपै मनमों रस पावै ।
तौकत मृग जल रूप विषैको रण निशि वासर धावै ॥
जेहिके भवन विमल चिन्तामणि सो कत काँच बटोरै ।
सपने परबस परै जागि देखत कहि जाइ निहोरै ॥
ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूंठ कछु नाहीं ।
तुलसीदास हरि कृपा मिटै भ्रम यह भरोस
मन माहीं ॥

६

ऊधो कहा करव ले पाती।
जब लग नाहिं गोपाले देखों बिरह जरावत छाती॥
निमिष एक बिसरत नहीं हमको उदय चन्द्रकी राती।
सूरश्यामसों यों जाय कहियो बतियाँ ठकुर सुहाती॥

७

उनकों ब्रज बसबो नहीं भावै।
वहां वे भूप भए त्रिभुवनके यहांको लाल कहावै॥
वहां वे बैठें सिंहासन आसन यहां क्यों बच्छ चरावै।
वहां वे पहिरे पाट पटम्बर यहाँ क्यों कमरी शुचि पावै॥
नन्द यशोदा बिन बिसराये हमरी कौन चलावै।
सूरदास प्रभु बड़े निरदई पतियाँ लिख न पठावै॥

८

मन्दिर देख डरै रे सुदामा।
यहां रही मोरी राम मढ़ैया सो कोउ नृप उतरे॥
यहां उहाँ कर फिरो सुदामा मनमें सोच करे।
ठाड़ी झरोखे परम सुन्दरी ताके द्वारे अड़े॥
पहली पौर गज हस्ती राजत दुसरी तुरङ्ग खड़े।
तिसरी पौर विश्वकर्म्मा राजत रतन जड़ाउ जड़े॥
चारि पदार्थ भए भवनमें दीनानाथ ढरे।
सूरदास बलि जाँऊं चरणकी यदुवर शरण परे॥

९

अपनेको आपुहीतें बिसर्यो।
जैसे स्वान काँचके मन्दिर भ्रम भ्रम भूंस मर्योरे॥
ज्यों मृगा तजी नाभि आपनी बन बन भ्रमत फिर्यो।
तैसे नरके निकट नारायण कबहुं न सूझ पर्यो॥
जैसे फटकशिलाके देखत गज दन्तसों जाय भिर्यो।
ज्यों केहरि प्रतबिम्ब निरख कबि कूप में कूद पर्यो॥
जस मरकट मुट्ठी नहीं छाड़त द्वारे द्वारे फिर्यो।
सूरदास नलनीको:सुआना कहो कौने पकर्यो॥

जंगला—एकताला

कैते दिन हरि सुमरण बिन खोए।
परनिन्दा रसनाके रसमें अपने परतर बोए॥
विविध बनाव कियो या तनको मल मल वस्तर धोए।
तिलक बनाय चले स्वामीद्वै विषइनके सुख जोए॥
काल अचानक झपटत शिर पर ब्रह्मादिक सब रोए।
सूर अधमको कौन चलावै उदर भरे पर सोए॥

२

कहत नर आगे जपवों राम।
बीचै भई औरको औरै परो कालसों काम।
बालाग्रन खेलत सब बीत्यो जोवन जोरत दाम॥
जरा-जोवन जब तन आय घेरो गृह सुत धन धाम।
सूरदास कैसे छूटेगी बिना लिए हरिनाम॥

३

तुम बिन नाथ सुनै को मेरो।
काम क्रोध रस लोभ मोह वश निशदिन रहतहै घेरो।
दूसर दीन-बन्धु कोउ नाहीं तासों अरज करत यह चेरो॥
नन्दलाल बिहाल बहुतहौं पाहि पाहि शरणागत तेरो।
सोणादासी आस चरणनको कृपाकटाच्छ प्रभु तन चित फेरो॥

४

कोऊ क्या जानै अस रामगति रामगति परमेश्वरगति।
नारायण नर करत जगत जड़ चूको रूप धर पारवती॥
कहै माता कर जोर राम तहां कहाँ छोड़ो शिवनाथ जती।
दक्षसुता तहां भ्रमित लाजित भई गई महिमा सब लाज रती॥
गौरी बौरी ह्वै बन ढूंढ़ै जहाँ देखो तहाँ प्राणपति।
बरज्यो ईश तब एक न मान्यो कौन बौरायो ज्ञानमती॥
कही माता दक्षिने बैठायो या तन भेंट न होत सती।
यज्ञ विध्वंस कियो जाय पिताको गाधे गुदर जिय जान हती॥

जंगला—तिताला

अरे मन असो क्यों न करो रामसाथ चितमें धरो।
रहत विकल विष आलस पिये पुन पुन बाही भरो॥

मन पछतैहै अवसर बीत जइहै जब शिर आन परो ।
गावै गुदर तज शोक सकल भय करले हरो हरो ॥

२

अरे मन मानत नाहीं कहो भवजल जात बहो ।
बार बार चौरासी भटकत नाना भोग सहो ।
आवे न त्रास बास यम-याचन पुनि पुनि अनल दहो ॥
आवागवन निवारत नाहीं गुरु पद चरण नहो ।
गावै गुदर मन चेत अजहूँ करजो कुछ रहो सो रहो ॥

३

मरम तेरो का जानो हो ।
थाके आदि अन्त सब पढ़ पढ़ कला नहीं पहचानोहो ।
नाम अनन्त सबही ठहरायो कहत वेद मुख बाणीहो ॥
पायो न थाह अथाह रह्यो सब नारद शेष भवानी हो ।
अमित कला करि जगत दिखायो माया तेरी
दिवानी हो ॥
जहाँ पुण्य तहाँ पाप विराजै विष अमृत
सम मानोहो ।
जहाँ गुण एक औगुण बहुतेरो जहाँ लाभ
नहाँ हानी हो ॥
व्यापक सब घट न्यारो निश दिन छवि तेरो
अरुझानी हो ।
गावै गुदर सब बीचहो रहैगो कहाँ तक सारङ्गपाणी हो ॥

४

चोरे वाला साँवलड़ा मैड़ा प्यारावे वंशी बजाय
रिझाय लई ।
बंसरी अधर धर बजाबदा मनमोहन मैड़े मन
भावदावे ॥

५

जबते बजाई हरि बांसुरी हो दैया ।
एक एक मुखते वाक न आवै एक एक भरो टग
आँसुरी हो ।
घरी घरी पल छिन कल न परत जिय लग गई प्रेमकी
फांसुरीहो ॥
जानत मोहन तेरो मैं चेरो काहेकों बजावो ब्रज
हांसुरो हो ।
गावै गुदर कल बिन देखे नहीं हरि लीनो तन मन
सांसुरीहो ॥

६

किन्ने बजाई वंशी मदन मरोर ।
जब धुन सुनी आई मुरली को थिर न रहत जिव मोर ॥
गहते निकसी लोक लाज तज फिरतहैरी ढूंढ़त
सब ओर ।
गावै गुदर यह कला विहारी भली ठगी दिल मोर ॥

७

आज सलोनो रूप बनेको ।
छवि निरखत रवि शशि भए लजित वारूं मं कोटिन
भूप बनेको ॥
गणतारा नग जड़ित मौल शिर चमकत मौज अनूप
बनेको ।
गावै गुदर दशरथ सुत नन्दन व्यापक सकल स्वरूप
बनेको ॥

८

कियो किरतार्थ कुबजा श्याम ।
गोपिन छाँड़ि दियो गोकुलमें ताकों दियो
द्वारका धाम ॥
गरल पान कर गयो शम्भु नीलकण्ठ भयो सिरनाम ॥
दास विभीषणको कर गहि कर लंका राज दियो
तेहो राम ।
दास कसाई सदन बखानो जामें बसो सालिगराम ॥
राज नेत कविजन यों सराहत करता अकरता है
हरि श्याम ।
गावै गुदर मन वच क्रम सुमरो रसना कहै
ले आठों याम ॥

९

बस राम कियो देखो देखो शिवरो ।
जो पद सेवत बोल्यो कल्पयुग सो पद मारग
सहज लियो ॥

ताफल खायो झूंठो प्रेम वश आप समीपते धाम दियो।
गावै गूदर धन भाग भीलनी नाम अमी रस घोल पियो॥

१०

छवि निरखत राम लखन जोरी।
मिथला जनकपुर आनन्द भयोहै जबते राम धनुष तोरो॥
राजा जनक उर अपने बिनवत धन विधि राखि परन मोरी।
गावै गूदर भयो सीय स्वयम्वर कहत जनक अस कर जोरी॥

११

सखी बन केश सवाँरत हो।
जगपति आप बलकर गहे कर ले शशि पर वारतहो॥
जो नख गह्यो गोवर्द्धन गिरिवर ता नखसे निरवारतहो।
ताछवि सुर मुनि सपने जोहत सो सुर-पुर-पति मान निवारतहो॥

१२

मुरलिया कौनें ख्याल परी।
काज करत सुन द्वार थकी इत उत पगन धरी॥
नवल वधु ब्रजयुवती जन सबमें प्रीतही प्रगट करी।
नागरी हरिकी वंशी धुन सुन प्रेमजाल सकरी॥

१३

कहाँ प्रभु विलम रहे सारी राती।
लटपटि पाग जुलफ घंघरारो सोहै उनींदे रस भरे राती।
डग मगात पग धरत चलत मग साठ परी सब कोमल गाती॥
रहत अवर कहुं कहत अवर कछु हमसे झूंठ हजारों बाती॥
कहत हंस ब्रज होत हमारो छवि तिहारो कुछ कही नहीं जाती।
गावै गुदर मैं कहि कहि थाको यह सब करतव तुमै सोहाती॥

१४

दिवस भयो राज गरवाँ छाड़ो।
जागोहै मेरो सास ननदोया आवे नैना बिच लाज॥
कहु कहु प्यारे रातको बतियाँ क्या क्या सुखके साज।
गावै गुदर पुनि गरवाँ लगावै तुम मेरे शिरताज॥

१५

सोवत सङ्ग जागे मोहन प्यारे।
नई नवेली रस भरी अँखियाँ खञ्जन उर बिच लागे॥
चोरी कियो पहचानतहूं मैं झूंठ कहो कोई आगे।
गावै गूदर प्रभु वहाँ रहो तुम नई नेह जहाँ लागे॥

१६

कलेजे म्हारे बांसुरीकी धुन लागी।
हौं अपने गृह काज करत रही श्रवण सुनत उठ भागी॥
खान पानकी सुधि न सखीरी कलन पड़े निशि जागी।
रैन दिना गिरिधरन लालके मीरा रहे रङ्ग पागी॥

१७

कन्हैया तोसें बार बार कहियां वो वंशीको टेर सुनावो।
बांके विहारी तेरी चितवन प्यारी नैनासे नैना मिलाय जावो॥
ख्याल खुशाल प्रेमके भरे रहो हिय उमग उमगाय जावो॥

१८

राधा मेरी प्यारियाँवो कोई सद्दयों कोई लाके मिलावो।
मोहनी मूरत सोहनी मूरत कबहूं नहोवे न्यारियाँवों।
चञ्चल चपल अनीखे नैना ख्याल खुशाल अपारियाँवो॥

१९

चलो सखी देख आमिवो मोहन नन्दका दुलारावो।
ठाढ़े कदम तरे वंशी बजावै छैला प्राण हमारावो॥
ललित त्रिभङ्गी कान्हा छवीला रसका रसीला मेरा प्यारावो।
नैनन सैन मैन गुण भर रहे ख्याल खुशाल अपारावो॥

२०

लागी नैना श्याम तिहारेवो नैना बसे आय हमारेवो।
मेरे मोहनी मोहन नागर चञ्चल चपल सुकवारे॥
नेह लगोहै उमग उठोहै सुनियो नन्ददुलारे।
पल पल ख्याल खुशाल सिखावत प्रेम प्रीत उरझारे॥

२१

शरण तक आयोमैं श्रीराणी ह्वे आदि भवानी।
तीन लोकमें जोत विराजै धर्म्मधुजा अगवानी॥
घट घट पूर रही महामाया महिमा वेद बखानी।
जन खुशाल पर किरपा कीजै दीजै भक्ति प्रमानी॥

२२

कैसा चेटक लाया वो प्यारेवो वंशीको टेर सुनाके।
सुनवे मोहन प्राण पियारे नैनासे नैन मिलाके॥
माधुरी मूरत चितवन बांकी रति रस छकन छकाके।
रसिक खुशाल छैल अलबेले बातें कहत लुभाके॥

२३

प्यारे बिन देखे नहीं चैनरे मोहन मोसें मली
निभाई प्रीतहो।
आपतो जाय द्वारका छाए ऐसो करी विपरीत॥
लिख लिख पतियाँ बतियां घतियां आन दहतहै चीत।
पुरुषोत्तम प्रभु वेग दरसदो आन मिलो मोहे मीत॥

२४

अणी मेरा लाल बना घर आयानी।
रङ्ग रङ्गीला बारी छैल छबीला सांवल मेड़े
मन भायानो॥
श्रीब्रजराज दुलारे प्यारे बड़ भागिन सानु पायानी।
हीरा रतन शिर सेहरा सोहै पुरुषोत्तम मन भायानी॥

२५

आज सइयों साँवल साड़े घर आयानी।
हाँथ लकुटियां काँधे कामरिया पीताम्बर सोहायानी॥

२६

रेमन काहे सिखावतरे।
चारों वेद भेद सब तीरथ उर बिच एक न आवतरे।
मूरख ज्ञान सदा दृढ़ नाहीं थकि रहे ब्रह्मा
लिखावतरे॥
जस अन्धरेको अन्ध मिलेहैं वैसो पंथ बतावतरे।
गावे गुदर ज्ञान सजीवन अवगत अलख लखावतरे॥

२७

अरे मन तजदे कुमत विकार।
या नगरी बिच पाँच सुसाफिर बसत पचीसहो धार।
तीन जगातीया जगको खायो मत भङ्गीत भगवान॥
कठिन नयन सर लाग्यो भाई माया बनीहै कमान।
याधन हो काहू नहीं तोर झुकी झुकी रहे गहेहै कान॥
अपना किया हम पायो भाई जो कुछ कियो नादान।
तैसी जग बिच फैल रहीहै करणी करम विवान॥
या नैननसे देखी भाई सुनि सुनि अपने कान।
गावे गुदर सत-गुरु वलिहारी गावो गोविन्द गुण तान॥

२८

हमारो वंशी प्यारो तुमदो वृषभानु-दुलारो।
हमक्या जाने प्यारे तुम देखो जहाँ विसारो॥
कहाँ दुराई साँचो बतावो सुरलो प्राण पियारो।
वह सुरलो वहु सुन्दर मोरी प्रिया सोंह तिहारो॥
हम नहीं ललन विलोकी सुरली कहां भूले केहि ठारी।
पूछतहो क्यों छैल छबीले कोजाने कहां डारी॥
वो वंशी मोहे नेक न विसरै दीज्यो वेग बतारी।
अब न छिपावो साँचो बतावो विनती करूं तिहारी॥
नहीं जाने तुम कहां धरोहै बाँसुरी श्रीगिरधारी।
बार बार क्या पूँछतहोजी मनमोहन बनवारी॥
या वंशीने त्रिभुवन मोहे कहाँ लग कहूं विचारो।
तुमतो गुण नहीं जानो याके सुर नर मुनि हित कारी॥
हम नहीं श्याम छिपावें सुरली तुमसे कुञ्जविहारी।
साँचो कहैं मुरलिया हमने नहीं देखी नैन तिहारो॥
यह सुरली मेरो ललित मोहनी सो तुम
राखो लुकारी।
बन बन माह बजावों याको तुमरेहो गुण गारी॥
सो सब साँचो कहो कुंवरजी हम क्या जाने नारी।

यह गुण या मुरलीके माहीं सुन मोही व्रजनारी ॥
हंस मुसकाय दई तब मुरली प्यारी पिवा बतारी।
उह खुशाल लाल मुरली लीने नए नेह उरभारी ॥

२९

सांकर खोल लङ्गरवा पीतम मिलेके नाह।
आपतो पार उतर गए हमको छाड़ै मझ धार ॥
अन समझन के बहोत मत समझनको मत एक।
रजब निशाना एक है तोरन्दाज अनेक ॥
मूरखके मन बांबोहै, निकसत वचन भुवङ्ग।
जाको औषधि मौनहै, काल न करत प्रसङ्ग ॥

३०

देखोरी छबि राम बदनको।
कोटि कोटि दामन दरपन दुति निन्दित
क्रान्त कपोल रदनको ॥
नासा मृदु सुमक्यान साधुरो मन्द करो अति घुमड़
मदनको।
फब रह्यो क्रीट मुकट झालर सिर मनहुं फांस दृग
मीन फन्दनको ॥
चोरत चित भ्रुकुटी द्रग शोभा कुण्डल-कपोल
खीर-चन्दनको।
राम सखे छवि कहो न परत जब सुध न रहे तब
वसन सदनको ॥

३१

अरी ओमि दरद दिवानो दरद न जाने कोय।
घायल की गत घायल जानैं जापै बीती होय ॥
सूली ऊपर सेज हमारो किस विध रहिये सोय।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर वैद सांवरा होय ॥

३२

भईरे मैं राम दिवानीरे कृष्ण दिवानीरे।
आगे लश्कर पाछे डेरा, जित देखूं तित साहेब मेरा ॥
कोरा घड़ा गङ्गा जल पानी।
जोरे पीवे सो होय निर्वानी ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल रज लपटानी ॥

३३

भईरे मैं राम दिवानोरे।
जो कोईहो राम दिवानो पावे सोई पद निर्वानी ॥
लोक लाज शोभा कुल तजके तन मनको सुध विसरानी।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर आमिल मोहि सारङ्ग पानी ॥
अथ पुरुषोत्तमजी कृत भजन।

३४

लगनादा पंथ निराला।
जिनके लगे श्यामसों नैना सदा रहै मतवाला ॥
जिसके भाग खुले इस कलिमें तिसनू यही खियाला।
पुरुषोत्तम प्रभु प्रेम दिवाना मस्त रहै मतवाला ॥

३५

सांवल तेंड़े नैन सलोने।
खञ्जन मीन मृग विवस किएहैं अनियारे बंकलोने ॥
जो देखत है सोई मोहत है कहा भयोहै टोने।
पुरुषोत्तम प्रभु निरखि मगन भई लाग रही चरणोनें ॥

३६

हो रसवादी प्यारे कान्ह।
सांवरी सूरत माधुरी मूरतहो तेरे कुर्वान ॥
बाट घाट मोहे रोकत टोकत सुन्दर चतुर सुजान।
पुरुषोत्तम प्रभु निरखि मगन भई देवो करो
सुख दान ॥

३७

साँवल प्यारावे मेंड़ो जान।
जब तुसी वेखां तब असो जीवाँ नातर फिराँ दिवाना ॥
देख लुभानो तेंड़ो सोहनो सूरत मेंड़े जीवन प्राण।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन प्यारे देवो करो सुखदान ॥

३८

छैलवा रोक रह्योछे म्हारो डगरा।
मैं दधि बेचन जात मधुपुरी पकर खैंचा मेरो अंचरा ॥
कहा कहौं कछु कहत न आवे राज करी यह बगरा।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन नागर मोह रह्यो ब्रज सगरा ॥

३९

प्यारी लागे हो व्रजको डगर।
श्याम-सुन्दर पिया खेलन निकसे नित नित याही वगर ॥

लुक लुक खेलैं आँख मिचावन चलो चरण पहारो पगर।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत मोह लियो व्रज सगर॥

४०

चलोजो सब गोवर्द्धनको डगर।
श्याम अचानक मिलही आयके गोपालपुराको वगर॥
साँझ समय गउअन कों घेरत श्याम ढाकको ठिगर।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत रहो चरण तर सगर॥

४१

लालन बस गए नैनन मेरे।
जैसे चन्द चकोर चाहतहै हौं चाहत मुख तेरे॥
वैरी लोग चवाव करतहैं कहा जानैवे अनेरे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत भए बिन मोलके चेरे॥

जङ्गला—एकताला

देखनदे ऐसे छैल गुमानो।
श्याम सलोना रूप रिझोना मन्द मन्द सुर सुर
मुसक्यानो॥
मुरली बजाय रिझाय लियो मन मोह लईहै सब
व्रजजानो।
पुरुषोत्तम वलिहार लियोहै हौं तो यह
चरणन लपटानो॥

२

दरशनदे मोहे श्याम केश वारे।
घूंघर वारो झलकैं मुख ऊपर हँस चितवो
वलि जाऊं ललारे॥
छबोलो लटक अधर धरो मुरलो मोहि लियोहै
प्राण हमारे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छबि निरखत भुज भर मिले
मोहे नन्ददुलारे॥

३

कौन भरन मोरी जाय वो गगरिया।
लङ्गर ढोट अहीरके छोहरा जिन मोरो रोकोहै
आनके डगरिया॥
वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें पकर अँचरा मोरो लेत
बलैया।
पुरुषोत्तम प्रभु मुकुट धरे ठाड़े हौं वलगई ऐसे छैल
छिकनिया॥

जङ्गला—तिताला

भलावे मेरे साँवलेने सुध विसराई।
जबतें विछुरे मोहन प्यारे हाहा खबर न पाई॥
विरह विकट वाको रहत जो कहा जाने पोर पराई।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत वेग मिलो यदुराई॥

२

इतना मान न करना जानो।
यह जोवनदा कारे भरोसा सबसों हिलमिल
रहना॥ जानो॰॥
जगत चवाव भखो दुरमतसों जोई कहै सोई सहना।
पुरुषोत्तम मेरो यही आशहै चरण-कमल निज
गहना॥ जानो॰॥

३

कछू कहो मेरो महोब्बत लगी।
वेणु बजायके मन हर लीनो विरहदे नाल पगो॥
सुन्दर-श्याम सलोनी सखियां नेह लगा जिन्द ठगो।
पुरुषोत्तम प्रभु मोहन प्यारे दशा दिश दुख भागो॥

४

पाक सूरत तेड़ो बनो साँवरे लगे नैनादे बानवे।
भौंह कमान चढ़ोय रहतहै मारत तिरछो तानवे॥
लगी कलेजे चुभी हमारे घायल कीतो कानवे।
पुरुषोत्तम महबूब साँवलो मानोदे जोवत प्राणवे॥

५

साँवरेने टोना कीता।
अब कैसे रहवो घर भावे नैनादे नाल मन लीता॥
शिर सोहै लट पटा फेंटा पीत पिछोरो दीता।
पुरुषोत्तम प्रभु वेणु बजावे यह व्रज-जन सब मीता॥

६

मेरे मन लाग रह्यो गोपाल।
छिन विन देखे कल न परतहै चञ्चल नैन विशाल॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै उर गजमुक्ता माल।
बसो रहो मेरे पुरुषोत्तम तुमहो परम कृपाल॥

७

अमारे घैर श्यामाटे नथो आवोछो।
एनी पेरै आल्या शूंकरोछो मनड़ म्हारूं ललचावोछो ॥
छाना माना जावो आवो गोठड़लो मनावोछो।
पुरुषोत्तम प्रभु वृन्दावननो वाटे मुरलो मधुर
वजाबोछो ॥

८

तैंड़े दरसदो हो दिवानियाँवे।
टुक मुखडा वेखलावो मुझको सुध वुध सब
हिरानियाँवे ॥
तुझ बिन जीवन कैसे वनिहै समझ देखो मन
मानियाँवे।
रङ्ग रस करी हाँ पुरुषोत्तम प्यारे साड़े दिलदे
जानियाँवे ॥

९

प्यारे तैंड़े दरस बिन बेहाल।
वेग आय महबूब साँवरे टुक मुखड़ा दिखावो रसाल ॥
नोकी मुरली सुनावो जानो विरह पाया मैनु जाल।
पुरुषोत्तम मन-मोहन मैंड़े राखो चरणादे नाल ॥

१०

प्यारे मैंड़े कृपा करो निहाल।
दरस देख हौं मोहो साँवरे साँकरो खोर
मिले नन्दलाल ॥
भेंटी अङ्ग सकल मन मोहन कोमल पुलकत
अङ्ग रसाल।
पुरुषोत्तम प्रभु यह सुख विलसत पहराई वनमाल ॥

११

जियको बात रङ्गीलोइ जानै।
जाके जिय बसो यह मूरति सोई ताकों पहिचानै ॥
काइको न मानै न जानै काइको वहो विध कहो
सयानै।
पुरुषोत्तम प्रभु रूप सांवरे जनम जनम पहिचानै ॥

१२

मनतो मोहन वस घर गयोरे।
कछुन सोहाय नेक बिन देखे टोना सो कछु कर गयोरे ॥
मृदु मुसकाय वजाय वैणु धुन नैनसो नैनन लड़ गयोरे।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत प्रेम-सुधा हिय
भर गयोरे ॥

काफी—तिताला

डार गयोरी गले मोहन फाँसी।
विरहको मारो वन वन डोलौं करवट जाय मैं
लेहौं काशी ॥
अम्वको डार कोयलिया बोलै मेरो मरण साँवरेको
हांसी।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर तुम मोरे ठाकुर मैं तेरो
दासो ॥

२

मान मनायो राधा प्यारो।
दोउ कर जोर करतहैं विनतो आगे लिए सखो
ललितारो ॥
मान सरोवर मान कर बैठो कुञ्जन कुञ्ज लतारो।
पुरुषोत्तम प्रभु सखो भेष धर चले मोहन पिय
गिरवरधारो ॥

जंगला—तिताला

रास रच्यो वृन्दावन बनवारो।
वंशीवट कुञ्जन यमुनातट मनमोहन पिय रसिक
विहारो ॥
निरत करत मन हरत सखिनको उपजत रङ्ग तरङ्ग
अति भारो।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत व्रजजन बार बार
वलिहारो ॥

२

वंशीवारेने चेटक लायावो।
मोहनो तान वजाय रागमें ताल स्वरन मन भायावो ॥
देखके रूप ठगो मन-मोहन नैनादा सैन चलायावो।
पुरुषोत्तम प्रभु सांवरे गवरु मन मोहन मन भायावो ॥

३

चल्यो जारे कान्हा अब तुम काहे लगावत दान।
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन मानत नहीं नन्द आन ॥

सुन्दर-श्याम मनोहर-मूरत उलटी चाल रहे ठान।
पुरुषोत्तम मग रोक रह्योहै नन्दमहरिको कान्ह॥

जंगला—एकताला

कौन कहै तोहे केल किकनीया।
नन्द बाबा तेरो व्रजको रैया मातहै तेरी यशोदा रनियाँ॥
गुञ्जकोमाल बिच पाँचकी मणिया मोर पखा
शिरकट तेरे तनियाँ।
व्रजजीवन प्रभु मोहन प्यारे जगतको धनी हमारो
बनियाँ॥

२

मोहन सुसक्यान लगै सोई जाने।
ठाढ़ी हतीमैं अपनी पौरमें औचक निकस्यो आनवा
हैरानवा हँसन माधुरी लागी मनमथ-वान
सखो कोई घाव न जाने॥
घायल भई मृगी ज्यों डोलूं परी भूमि पर आन,
यन्त्र मन्त्र औषधि ल्यावो भूलो सबही अपान.
करो कोई यतन सयाने।
छूट रही अलकैं घूंघरवारी कुण्डल झलकत कान,
जानतहै वे पीर हमारी युगल सखीके प्राण,
कहो कोऊ भेद न जाने॥

३

वंशी धुन बाज रहीहै तट यमुनाके तीर।
चलो सखी मिल देखन जइये बजाईहै बलवीर॥
श्रवण सुनत गृह गृह तें निकसी पहर विविध रङ्ग चीर।
जाय मिली पुरुषोत्तम प्रभुसों करत सकल सुख धीर॥

४

कहियो मेरे दिल जानीसों।
विरहदी अगन बुझत नाहीं बिन नैनादे पानीसों॥
जोगको कथा कहा कहौं ऊधो अब लग दरस
दिवानीसों।
पुरुषोत्तम प्रभुसों मन मान्यो सुरत खूब दिवानीसों॥

५

मधुबनिया श्याम हमारा।
आय अचानक नित प्रति निकसत गउअनको रखवारा॥
वर घरतें सब कोउ चले आवत मग रोकत कान्हा प्यारा।
पुरुषोत्तम मनमोहन जानी व्रजजन-प्राण-अधारा॥

६

बल बल जाँदीयाँवे तेड़ी मुखड़ेदी।
गवरू सोणा नन्दमहरदे वंशीदी तान सुना दियाँवे
तेड़ी॥
मायल कर सानु घायल कीता नैनाजी चोट चला दियाँ।
राग सागर रस रतियाँनी मतियाँ साड़ा जीय
ललचाँदियाँ॥

जंगला—तिताला

रोहणी नन्दन जय जय जय।
हल मूषल नित धरेही रहत हैं असुर-दुष्ट-निकन्दन॥
लटपटी पाग विघूर्णित लोचन देखे दरस मिटै
दुख-फन्दन।
कुण्डल झलक कपोलन ऊपर पुरुषोत्तम कियो
पदवन्दन॥

२

बलदेव विहारी जय जय जय।
घूमत अरुण रस भरे लोचन लटपटे पेंचनकी छवि
भारी॥
कुण्डल एक मनोहर राजत अलकन झलक सोहत
घुंघरारी।
हल मूषल नित धरेही रहतहैं दुष्ट-संहारन
भक्तन तारी॥
सुर नर मुनि जाको यश गावन शारद ब्रह्मा वेद उचारी।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत आनन्द भक्तन-
सुखकारी॥

३

नैनन भर निरखो श्रीबलराम।
रोहन विरह निकन्दन भक्तजन पूरण काम॥
हल मूसल नित धरेही रहतहैं पूरवे सबही काम।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत अङ्ग अङ्ग अभिराम॥

४

भजलेरे मन रोहिणी-नन्दन।

हल मूषल नित धरेही रहतहैं दुष्ट-दलन
असुर-निकन्दन ॥
शिव ब्रह्मादि अरु रुद्रादि ध्यावत सनक सनन्दन ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत चरण-कमल-
रज-बन्दन ॥

५

व्रजमें श्रीदाऊजी आप विराजैं ।
जिनको श्रीमुख निरख मनोहर कोटिकही अघ भाजैं ॥
अङ्ग अङ्ग प्रति अमित माधुरी दरसही मनमथ लाजै।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत भक्तनके सुख काजै॥

६

जय जय जय बलराम पियारे ।
लटपटी पाग केसरिया वागो अरुण नैन घूंमत
मतवारे ॥
भक्तनकी रक्षाके कारण हल मूषल नित आप कर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन धन कीनो
वलिहारे ॥

७

सुन्दर-श्याम बलराम सुखदाई ।
हल मूषल आयुध कर सोहै कृष्ण ललाके हैं बड़े भाई॥
रसमाते उनमत्त फिरतहैं भृङ्गा घूम घुमाई ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत बार बार वलिजाई॥

८

अरे मन क्यों न भया अपनारे देख जगत सपनारे ।
सुन्दर रूप देख लोभानाहो तुम हुआ जग सपनारे।
जप तप योग यज्ञ व्रत संयम कर थाके कथनारे ॥
बिना भक्ति भगवान है दुर्लभ वृथा जगमें क्यों खपनारे।
कृष्णदास दासनके ऊधो हरि हरि हरि जपनारे ॥

९

ओसोणा कच्चो मट्टीदा डेरारे ।
नेम धरम तू करले बन्दे शिर पर जमदा फेरारे ॥
तात मात भाई सुत बन्धु इनमें कोई नहीं तेरारे ।
ऊधोदास आश नटवरको चरण-कमल चित चेरारे॥

१०

देखो कुड़ी दुनियांदा अजब तमाशा ।
कौड़ी कौड़ी कर पैसा भो कीना जोड़ा लाख पचासा॥
जोड़ जोड़ एक ढेरही कीन्हा सङ्ग न चला रति मासा।
बालूकी भीत पवनदा थंभा याको कब लग आशा ॥
नर देहीका गुमान न करिए पानीदे बीच बतासा ।
जटा बढ़ाय कर भए सन्यासी मगन फिरैं जैसे भैंसा॥
चमरी ऊपर भस्म लगावै मनमें पैसाइ पैसा ।
जैसी करणी वैसी भरणी ऊधो हरि जैसा को तैसा ॥

११

मेरी महाराणी राधा राधा राणी ए श्रीराधाराणी ।
जाके वलसे मैं सबसों तोरी लोक लाज कुलकानी ॥
प्राण-जीवन धन लाल विहारन वार पिऊँ नित पानी।
भगवत मुदितनकों मन मोहन टहल पाई मन मानी॥

१२

वंशी गोपालकी आज बाजै ।
अद्भुत तान तरङ्ग मधुर धुन सप्तसुरनसों साजै ॥
लाज काज मान डर श्रवणन सुनत सब अघ भाजै ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामसों मिल सब
ऊपर राजै ॥

१३

लगनकी चोंप चटपटी जानत जगमें कोय ।
परजो गयो मन प्रेम जालमें क्योंकर निकस न होय ॥
परवस परे दुरे नहीं सजनी कहा समुझाऊं तोय ।
हस्तराम हरि हाथ बिकाने इह दृग कपटी दोय ॥

१४

बनवारी देंदा गालियांहों ।
नन्द-दुलारे महरदे छैला हम ग्वालिन तुम ग्वालिया ॥
तुम तो अकेले रही व्रज महियाँ हौं दश बीस नवेलियाँ।
नाच नचावों छोनलें सुरली श्यामदास दे तालियाँ ॥

१५

बालपनेदा मेड़ा यार कन्हैया ।
खेलत गेंद गिरी यमुनामें सङ्गही कूद परैया ।

पैठ पताल कालो नाग नाथ्यो फन फन निरत करैया ॥
इन्द्र कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें देत बहैया ।
गिरि गोवर्द्धन नख पर धार्यो व्रजको करत सहैया ॥
प्रात समय कालिन्दी न्हाने सङ्ग सखा बल भैया ।
वरुण लोकतें पिता ले आए यशुमत लेत बलैया ॥
ग्वाल बाल सब सखा मण्डली मुरली नाद गवैया ।
पुरुषोत्तम प्रभुको छवि निरखत चरण-कमल बल गैया॥

१६

मो मन लीना वो वंशी बजायके ।
वंशी तेंड़ी मोहनी पड़ी कानो बिच आय ॥
मगरूरी न करवे महबूबां जोवनदा मद पाय ।
वलिहारी क्यों नेह लगाया लाया तो और निभाव ॥

१७

सम कौन करै अवध विहाहाहाहाहारीको ।
भूतल भार उतार महीको सन्त जननके हितकारी ॥
सागर सत नामतें बांध्यो गौतम नारि शिला तारी ।
रावणके दश मस्तक छेदे वीस भुजा न्यारी डारी ॥
शिव विरञ्च सनकादिक सेवत इन्द्रादिक आज्ञा कारी ।
दास जधो लखि रङ्ग भरो मूरत कमल-नयन
सारङ्ग धारी ॥

१८

क्यों श्याम मेरो सुरत विसराई ।
जबतें विछुरे प्राण पियारे अब लग खबर न पाई ॥
वेदरदानू दरद न आवे क्या जाने पीर पराई ।
जधोदास आश चरणनको आय मिलो यदुराई ॥

१९

खेलत कन्हैया यशुमत अगनामें ।
ठुमक ठुमक पग धरत चलत डग लटकत
चाल चलैया ।
पीताम्बरको डारे अँगुलिया ता छवि कही न जैया ॥
वसुदेव देवकी कारण जनम बन्ध छुड़ैया ।
उग्रसेनको राज दियो है ता छिन कंस हनैया ॥
नथुनी जाब कीनों बसुनीको गिरवर नखके धरैया ।
डूबत ग्वाल उबार लियो है ता सुख इन्द्र लजैया ॥
जो सुख आदि वैकुण्ठ में नाहीं सो सुख व्रजमें छवैया ।
गावे सूदर जाको ध्यान न बह्मा ग्वालिन गोद खिलैया॥

२०

मोहीरो नन्दनन्दन मोहीरो ।
शोभा सिन्धु सोहनो सूरत जित देखों तित ओहीरो ॥
कँचन लकुट दियेरो भुज तल शीश पीताम्बर खोईरो ।
जानकी दास मिलौंगी प्रभुसों कछु होय कह देउं
तोहीरो ॥

२१

रासमें मोहनी मोहना श्याम सखी बन आई ।
गोरी कान बने नटवर वपु वंशी सरस बजाई ॥
भानु सुता जब कान्ह बने नन्दनन्दन राधाउ
बन आई ।
राधा कान्ह कान्ह राधाको जानकीदास वलजाई ॥

२२

ऐसे समय पिया रसिक रास संग रूंसवो नहीं
चाहियेरो प्यारी ।
चन्द्र-प्रकाश राम मण्डल में तुम बिन सकल विकल
बनवारी ॥
तुमरे साथ इतरात जातहैं माने अरज व्रषभानु-
दुलारी ।
तब उठ मिली प्रिया प्रीतमसों जानकीदास वलिहार
वलिहारी ॥

२३

बनड़ा जोगी भला बन आयावो ।
माथे चन्द जटा गङ्ग विराजे शीश शेषको छायावो ॥
सुर नर मुनि गुणि गन्धर्व्व गावे वेद न भेद न पायावो ।
जानकीदास याको ध्यान धरतहो मनवाञ्छित फल
पायावो ॥

२४

कलि-मलहरणी गङ्गा महाराणीजू ।
विष्णुचरण जल ब्रह्म कमण्डली शङ्कर शिर
भागीरथी आनीजू ॥

स्नान, पान, परसत जल, दरसत, पतित पुनीत होत
गति ज्ञानीजू ।
जानकीदास सप्त श्रुति गावैं कहैं स्तुति जाकी अमित
कहाँनीजू ॥

२५

जिनके प्रिय न राम वैदेही ।
तजिये ताहि कोट वैरो सम जदपि परम सनेही ॥
पिता तजे प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी ।
गुरु बल, ब्रजवनिता पति, त्यागि भए जग मङ्गलकारी ॥
नातो नेह जाहीसों कीजि सुहृद सज्जन जहाँलौं ।
अञ्जन कहा आँख जो फोरै बहोत कहूं कहाँलौं ॥
तुलसीदास सब भाँति पूजिये प्राणनहूंतें प्यारो ।
जासों होय सनेह रामसों सोई मतो हमारो ॥

२६

तेने कहीं देखारे मेरा वंशी वाला एरो सखी ।
बन बन ढूंढ़ फिरत मेरी सजनी मेरे पैरन पर गए
छालारी ॥ कहीं ॥
तन मनको सुधि भूली भवनमें वैरन वंशी जादू डाला ।
जबसों मनक परो मेरे श्रवणन मोही सब व्रज वाला ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा ना जाम कैखा चेटक
डाला ।
चन्द्रसखी भज वाल कृष्ण छवि कब मिलिहैं नन्दलाला ॥

२७

गाइये गणपति जगवन्दन ।
शङ्कर सुवन भवानीके नन्दन ॥
सिद्धि-सदन गज-वदन विनायक ।
कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक प्रिय मुद मङ्गलदाता ।
विद्या-वारिधि बुद्धिविधाता ॥
माँगत तुलसीदास कर जोरे ।
बसहु राम सीय मानस मोरे ॥

२८

मन पछतैहै अवसर बीते ।
दुर्लभ देह पाय हरिपद भज कर्म वचन अरु हियतें ॥
सहस-बाहु दश-वदन आदि नृप बचे न काल बलीतें ।
हम हम कर धन धाम सँवारे अन्त चले उठ रीतें ॥
सुत वनितादि जान स्वारथ रत न कर नेह सबहीतें ।
अन्तहु तोहि तजेंगे पाँवर तू न तजे अब होतें ॥
अब नाथहीं अनुराग जाग जड़ त्याग दुराग जियतें ।
बूझै न काम-अग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहु घीतें ॥

२९

सुमिर सनेहसों तू राम नाम रायकों ।
शँव अरु निशँवरोको सखा असहाय कों ॥
मागहै अभामहको गुण गुण-होनकों ।
गाहक गरीबको दयाल दानी दीनको ॥
कुल अकुलीनकों सुन्यो है वेद साखीहै ।
पाङ्गुरे को हाथ पाँय आँधरे को आँखीहै ॥
माय बाप भूखेको आधार निराधार को ।
सेतु भवसागर को हेतु सुखसारकों ॥
पतित पावन राम नामसो न दूसरो ।
सुमिर सुभूमि भयो तुलसीसो जसरो ॥

३०

जागो जागो जीव जड़ जोह जग जामिनी ।
देह गेह नेह जानो जैसे घन दामिनी ॥
सोवत सपनेहो सहै संसृत सन्तापरे ।
बूड़ो मृग बारी खायो जेवरी को साँपरे ॥
कहै वेद बुध तूं तो बूझ मन माहींरे ।
दोष दुख सपनेके जागेही पै जाहोरे ॥
तुलसी जागे ते जाही ताप तिहूं तापरे ।
राम नाम सूचो रुचि सहज सुभाघरे ॥

३१

सुन मन मूढ़ सिखावन मेरो ।
हरिपद विमुख कहुँ न लयो सुख शठ यह समुझ
सबेरो ॥
विकुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो ।
भ्रमित भ्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ
रिपु राहु बड़ेरो ॥

यद्यपि अति पुनीत सुर-सरित तिहुँपुर सुयश
घनेरो ।
तजें चरण अजहूं न मिटत नित बहिबो ताहू केरो ॥
छूटै न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति सन्देह निवेरो ।
तुलसीदास सब आश छाड़ि करि होहु रामको चेरो ॥

३२

जानकी-जीवनको बल जैहौं ।
चित कहै रामसिया-पद परिहरि अवन कहीं चलि
जइहौं ॥
उपजी उर प्रतीत सपनेहूं सुख पद बिमुख न पइहौं ।
मन समेत या तनके बासी नईहै सिखावन दैहौं ॥
श्रवणन और कथा नहीं सुनिहौं रसना और न गैहौं ।
रोकिहैं नैन विलोकत औरहि श्रीश ईशही नैहौं ॥
नातो नेह नाथसों करी सब नाते नेह बहैहौं ।
है छर मार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं ॥

३३

माधो मोह फाँस क्यों छूटै ।
बाहर कोटि उपाय करिये अभ्यन्तर ग्रन्थि न टूटै ॥
घृत पूरण कराह अन्तरगत शशि प्रतिविम्ब दिखावै ।
ईंधन अनल लगाई कल्पशत औंटत नाश न पावै ॥
तरु कोटर महँ बस विहङ्ग तरु काटे मरै न जैसे ।
साधन करिये विचारहीन मन शुद्ध होइ नहीं तैसे ॥
अन्तर मलिन विषय मन अति तनु पावन करिय
हमारे ।
मर इहं उरग अनेक यत्न वलमीक विविध विधि
मारे ॥
तुलसीदास हरि गुरु करुणा बिन विमल विवेक
न होई ।
बिन विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई ॥

३४

मैं हरि पतित पावन सुनै ।
हम पतित तुम पतितपावन दोऊ बाणिक बनै ॥
व्याध गणिका गज अजामेल साखी निगमन भनै ।
और अधम अनेक तारे जात कापै गनै ॥
जानी नाम अजान लीने नरक यमपुर मनै ।
दास तुलसी शरण आयो राखिये आपने ॥

३५

जोपै राम नाम रति होती ।
तौ कत त्रिविध-शूल निशिवासर महतें विपति
नसौती ॥
जो सन्तोष सुधा निशि वासर सपनेहूँ कबहुं क पावै ।
तौ कत विषय विलोकि झूंठि जल मन कुरङ्ग ज्यों धावै ॥
जो श्रीपति महिमा विचारि उर भजतें भाव बढ़ाए ।
तौ कत द्वार द्वार कूकर ज्यों फिरतें पेट खलाए ॥
जे लोलुप भए दास आशके ते सबहीके चेरे ।
प्रभु विश्वास आश जीती जिनतें सेवक हरि केरे ॥
नहीं एको आचरण भजनको विनय करतहौं ताते ।
कीजे कृपा दास तुलसी पर नाथ नामके नाते ॥

३६

जोपै रहनी रामसों नाहीं ।
तौ नर खर कूकर सूकर से जाय जियत जग माहीं ॥
काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहीके ।
मनुज देह सुर साधु सराहत सोतो नेह सिय-पीके ॥
सूर सुजान सुपूत सुलक्षण गणियत गुण गरुआई ।
बिन हरि भजन इंदारुनके फल तजै न कहुँ करुआई ॥
कीरति कुल करतूति भूति भलि शील रूप सलोनें ।
तुलसी प्रभु अनुराग रहित जैसे सालन साग अलोनें ॥

३७

अब कोऊ वैसी कहो दिल लागा ।
नन्द-नन्दन व्रजराज कुमरसों ज्यों कँचन मिल्योहै
सुहागा ॥
अबतो विछुरो न जाय मोरी सजनी ज्यों ब्राह्मण
गल धागा ।
पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत चरण-कमल
चित पागा ॥

जंगला—एकताला

दुख लागै अरु हाँसी साधो अजब जमाना आयाहै।
उलटा चलन चला दुनियाँमें जासों जी घबड़ाया है।
मुट्ठी चून साध के जाँचै कहै नाज नहीं आयाहै॥
करज काढ़के बहोत मान दे वेश्या हाथ बिकायाहै।
कथा होय जहां ऊंचे श्रोता वक्ता मूड़ पचायाहै॥
चरणामृतकी घूंट न पीवे मधु चाखन कवि आयाहै।
भाग वली कोउ भागव चाहै गंजा बहोत उड़ायाहै॥
भरो भागका राम-नाम-रस जासों प्रेम लगायाहै।
मात पिताकी शंक न मानै ससुरा बड़ा ठहरायाहै॥
दुनियां दौलत माल खजाना नाहक भरम डोलायाहै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु भेद बतायाहै॥

जंगला—तिताला

हरि हरि बोलना दिलादी घुंडी खोलना।
हरि हरि कहत सकल अघ भाजै सुफल भए ते नर-
चोलना॥

दोहा

संस्कृतके अर्थ को तुलसी पाक संयोग।
भाषा पनवारे बिना हरिहि न लागै भोग॥
जिन हरि मन विध बड़ कियो नाहिन गुमान
को लेश।
भार धरे सब जगतको तोऊ कहावत शेष॥
मन मूंसा पँगुल भयो पियारा भयो हरि नाम।
रजब रत्ती नहीं चल सकै रह्यो ठामको ठाम॥

२

मोरी नैया किनारे ले आवोरे पिया मिलनेको जाऊंरे।
गङ्गा यमुना और घाघरा इनका यही सुभाव।
चाँद सुरज की जोत चमकै नजर न आवै पार॥

३

मैतो रहदियाँ ताड़े कारणवे।
औरांदे नाल सानु हँसदा बोलदा मैं नाल घुंडी नाहीं
खोलदा दुख सहदियाँवे॥

४

नैनादे नाल मैंनो ठगीवे ठगी मेरी जानवे।
इश्क छिपाया वारोवे छिपदा भी नाहिंवे सोना
इश्कदी बान पड़ी मैड़ी जानवे॥

५

वंशी में लिए जायरे जिय नैन लगाए साँवलिया।
सुनत बांसुरी भई दिवानी सूझत नाहीं डगरिया॥
घरी पल छिन मोहे कछू न सुहावे रस बस करि मए
बावरिया।
नैना से मारे जाएरे साँवलिया पिया बावरिया॥

६

साँनु निशदा निजारा नैनादा प्यारा लगैवो।
मुखड़ा वेखलाजा सूरत मैड़े जानी तेरा अजब भरैहै
खुमार।
टुक दरस वेखावना साँनु सरस रङ्ग वलिहार॥

७

नैना रतनारे कारे अनियारीको रङ्ग देनी वारे ए माले
काम भूपदे।
खञ्जन कमल मीन घोली घोली घते प्रेमदे परमाते
भौंरा छके रूपदे॥
छिलणेनी मिलणेनी हजो वेली खिलणेनी विरहदी
तपत बुझावणेनी।
धूपदी दोणेनी एटोंने लोंने लोंनेनी सलोनेंनी नन्ददे
ढिठोने देनी सरस रङ्ग रङ्ग होणे अनूपदे॥

८

दरद बतायदे ननदी वाला जियरा मोरारी।
एक वैरन मोरी सास ननदिया दूजे नगरके लोगवारी॥

९

दिलदा दिलथों कहनावे साधो चुप रहना पया मैनु
नितदा सहाणा।
दुश्मन जा अपनो ढूंढ़ निकाला हम नेह नजरते
दिल सल मोलहो लीता बन थन दिल आँखिनु
नितदा बहाना सहाणा॥

पीलू जंगला—तिताला

छड़दे जाँदियाँ हुण तैड़ेवो मैड़ो जान।
राह तकेदीनु मिलजा सोनावे कदीतो पामो घरफेरे
वो मैड़ो जान॥

पीलू—तिताला

छड़दे गइयांवे में तुझ पर वे मेरे यार।
पंडित पूछेंदो सगुन मनादो कभो तो आजा
साड़े डेरे मेंड़े वो यार॥

२

नन्दके नन्दन व्रजराज कुंवरने देखोरी मेरो मन
हर लीनो।
तिरछो चितवन विसरत नाहीं साँवरो सूरत जादूसो
कछु कीनो॥

३

रैन बिदा होने लागोरे मोता मोरे।
मन हरवाके छोहरा उठत भुनसरवा गरे लागो।
सगरो रैन माहे तलफत बीतो छोड़ वहियाँ तोसों
यागो॥

४

तेंने मेरो प्रीत तज डारोरे सुरजनवा।
बड़ो बड़ो अँखियन तिरछो चितवन हँस कस बस
कर डारोरे।
कृष्णानन्दन कृपा कर मिलना हौं तेरो वलिहारोरे॥

५

सांवलो सूरत मन बस गईरे ना जानू कछु
जादूसा कीनोरे।
जन्त्र मन्त्र टोना पढ़ पढ़के वंशी बजाय जिय
हर लीनोरे॥

६

रैन कारियांवे डरावनो लागे।
घर मेरा दूर गगर सिर भारी हिल मिल पनियां जात
सखीरी ठाड़ो कन्हैया पनघट आगे॥

७

मोरा जिय तरसाए जधो ख्यावो बलवीर।
बीते बारह मासरी सजनो मथुरा यमुना तीर॥

८

सांवलड़ावे गुजर गई गुजरान।
रात देहा मैनू ध्यान तुसाड़ा भला बुरा पहिचान॥
कृष्णानन्द प्रेम मद छाके करत अमीरस पान॥

९

मेरी जान मौजको दुलरो।
दुलरो गुंथावन में जो गईरे घटुवे मारो सैन॥

१०

जियोरी जियो बसनिया प्यारो दूरसे मारो
निजारा जान।
निजारा मारे सैन चलावे कृतियनसों लगावे ज्वान॥

११

गरजत बादर चौंक परो।
पीर करीम में वलिहारो जइये जिन मोहे दई
मुराद भरो॥

१२

भागल पुरको ऊंचो डकनियाँ नीचे बसे कलवरिया जान।
अच्छे अच्छे मधवा हमको पिलावे बाला जोवनवाको
अच्छो रिझवैया जान॥

१३

आज बनोका गवन होना।
चार जने मिल चले विवाहन घर ढूंढ़े बनरा मिलाना॥

१४

जालम यार मँाड़ो को तकसोरवे।
ताना भी देंदा वारोवे माना भी देंदा मेरा मियां
मिलणा हनो तुमो जीवांवे॥

१५

सांवरे में नहीं जाँदीवे लोका मानु।
साहरे घर अलवत जाना सेज चढ़े जाना शरमादोवे।
नदिया गहरी नाव पुरानी सांवरे यार घहुंचामोवे॥

जंगला—पीलू तिताला

तोरे नैनवाको वान भूलत नहींरे।
बड़ी बड़ो अँखियन कजरा दीनो मोहे तेरी बांको
चितवनियां विसरत नाहींरे॥

पीलू—तिताला

जियरा मोरा घबरायरो आली मानत नहीं ।
का मैं करूं कछू बनत नहीं है यासों पियाहै रिसायरी ॥
आली मा० ॥

जंगला—पीलू तिताला

एकसों मन लग गयो गुइयाँ ।
रातको मइकों आके अचानक यास नाम कोउ ठग
गयो गुइयां ॥

२

कोऊ बैरन लीनो लुभाय बालम रूँस गयो ।
यास पियाको किन विलमायो भोर भई नहीं आयो ॥

पीलू—तिताला

मन मायाहै बांको मेरा यारो ।
यास पिया घर जाऊंगो ननदी मैंका बुलायदे कहारो ॥

२

गरवाँ लगायले सइयां जाऊं तोरे वारो ।
बरछी न मार मोइको नजरको कारो काहेकों
यास पिया देतहै गारी ॥

३

कहाँ रहे तुम रात बालम ।
सगरी रैन यास तलफत बीतो कहैको नहीं कछु बात
बात बात बालम ॥

४

मैं काहे न छोड़ हट जा कोऊ देखे न बालम ।
यास चुमट मोरा जियका लैहै देखे मइकों न सता ॥
को० ॥

५

मैं कहा करूं गुइयां जियरा रहा नहीं जाय ।
यासकी विछुरे कल नहो एक पल विरहा मइकुं सताय ॥

६

शरमाय जाय बालम मोरी अखियां ।
यास पिया तोरी चाहत कारण तान देतहै सब सखियाँ ॥

७

जोवना दिखाव दीनो घूंघट खोल लुभाय लीनो ।
अखियां मिलायके और शरमायके यास पियाको
लोभाय लीनो ॥

८

मइयां हो रूंस गयो मोसों न बोलो न बोलो न बोलोरे ।
यास पियाने रातको मोरा जिया व्याकुल आके कियो
मइकोंरे ॥

९

पिया मइसों न बोले जिय तरसायारे ।
चांदसा मुखड़ा देखायके क्यों छिपायारे ॥
हाथ न मइकुं तुम लगावो देखो खबरा पायारे ।
देख लिया मैंने तेरा कौल औए करार यास जुदाई
तेरीने मुझे मार डालारे ॥

१०

कासे नेह लगायोरी यास पिया नहीं आए ननदो ।
जागत जागत भई व्याकुल किन वैरण विलमायोरी ॥

११

आरे आजानी प्यारे जानी छिटक रही चांदनो ।
नदिया किनारे लागो फुलवारो यास मिल बैठे
वारो ॥ जा०

१२

आज बधायो सोहायोरो प्रगट भए व्रजराज व्रजमें ।
सब सखियन मिल मङ्गल गावो नन्दलाल वर पायोरो ॥

१३

कासे कहूं दुख अपना दईरो प्रीत वारो किधों
रीत नईरो ।
इन निरमोहियासे काम पड़ोहै आंख लगा
मैंतो जियसें गईरो ।
क्षणानन्द रहत मनकी मन कहत बनत नहिं जात
सहोरो ॥

१४

नाजो खड़ियांवे उचट गई नींदड़ी सारी नींदड़ीवे
नींदड़ी ।
ऊंचा नीचा पोपलवे पिंगानी पया मेरो जानवे झोखे
देदो सानु होरनीवे सानु होरनो ॥

१५

नथनीदा मोती झलकै ।
गोरिया रातको जागी लागी नाहीं पलकैं ॥
नैना लगे तेरे मनभावनसों भौंहैं कमान वान
कपोलन अलकैं ॥

१६

मजेही मजेमें मेरो सब रस लीनोरे लाल कौनो बावरे ।
रस बस कर मोसें नैन लगाए जादू टौना कछु
कोनोरे बावरे ॥

जंगला—तिताला

सांवरा मन भांवदा वेखो सइयोंनो शैली वाला
अखियां लड़ांदा जांदावे ।
सांवरेदे मुख देनीवे लेवां बलांइयोंवो मियां तू मेरे
घर आंदा शैली वाला ॥

२

मन मोहलियारे रब्बारे मैं कूकैंदी आगन कीथे ।
सजनादी सार नैना नाल दिलदी विथा मैं कासे कहूं
शोक रङ्ग मानदाभी नाहीं हाले आशिक दिल
बस नईथे ॥

३

दरद बतादे ननदी जाय जियरा मोरा ।
सास मोरी वैरन ननद हठीली सइयां पइयां लागूं
मैं तोरे ॥

४

बेड़ा बालावे कदीतो सांवल वेकदर मानु
मत छेड़वे ।
तरकै रहंदी वारी होभीतो आइयांवे मियां सो कभी
तो चाक रंझेटा शोरीवे ।
एतो बात बनायके पीके पास गई जब छवि देखी
पियकी सगरी भूल गईवे ॥

जंगला धनाश्री—तिताला

रे मन भूलो भूलो कहुं डोलत आदि अन्त हरि वही ।
इतबिध चितवत ठौर ठौर नित मैंने तोसें लाख कही ॥

जंगला—ताल पस्तो

गर हमने दिल सनमको दिया फिर किसीको क्या ।
इसलाम छोड़ कफर लिया फिर किसीको क्या ।
आप कियाथा अपने गरेवांको हमने चीक आपी
सिया सिया न सिया फिरकि० ॥
क्या जानें किसके गमेहै आंखें तुमारी लाल गर
हमने तो नशा पिया फि० ।
अपनी तो जिन्दगी भला मिसले हुबावहै जो
खिजर लाख बरस जिया फिर किसीको क्या ॥

पी —धीमा तिताला

वेनिजारा नैना साड़ी जान तेड़े नाल लगदानी
भूलदांनीवे ।
नजर गुजर थो खलकदी बचके सोणा सजन सांई
चल फिरके उठ चलोवे ॥

पीलू—तिताला

हांवे ढोला मानले हांवे ढोला मानले मैंतो तानु
आंख नहीं समझांवे ।
भिच्चा देंदा वारी लेंदा भी नाहीं मेरा मियां
सूरतदा मतवाला हांवे ढो० ॥

२

तारणावे मियां मैनु तारणा सोणा तेड़ी लटक
चालदी मैं वारीवे बीवां मैं० ।
सोहनी सूरत वेमन पर बस दीवे मियां तू मैनु न
विसारना वे बीवां मैं० ॥

३

उठ दिया झंकों पल पल सानु पल पल सानु ।
दरद बतादेनीवे सुनवे बोवां मेरा मियांको करां
जिन्द वेकल रहदियां झंकां पल पल सानु पल सानु ॥

४

सोणा मैनु तारणा वे तेरी लटक चाल पर वारी ।
सुन पावे कोई माल मुकद्दम सुन पावे पटवारी ॥
साहन सुला हाकिम ढंढ़ा शिर पर गठरी भारी ॥

५

तेरो लबियां छावावे हवेवे तू वहो चीरे वाले तू
बो हवे ।
जो तू भूखा इश्कदावे तू दाहापड़ो क्यों नवो हवे ॥

६

बाड़ीदा ठंढड़ा लगदा पानी ।
सात कुवा नव बावरारे सोलासे पनिहार ।
जिसमें गोरो कौनसोरे बालापन को यार ॥

७

कुंवे परेरे पानोड़ा लङ्गरवा भरन न देरे ।
चूनर झटक मोरा अंचरा पकर लोनो सास सुनै तो
कहा बोलेगो सुन पावे शोक रङ्ग जानोरे ॥

८

को पतियां ले जायरे विदेशवा लगन लगो मोरो ।
एक पार गङ्गा एक पार यसुना बोच बालम का गाम ॥

जंगला—तिताला

हेरी मोहे छल गयो नन्दको विहारो पनघटवा
जान न दे ।
मारग रोकत ऐड़ो डोले नैन सैन रसले ॥
ए ब्रज मोहन छैल छवीलो पनियां भरन न दे ।
सरस रङ्ग रङ्गीलो रसीलो चितवन वस करले ॥

२

रब्बा मैड़े प्यारेनु मिलामो फन्दड़े जांदानी दूरवे ।
जो कोई प्यारा मैड़ावे आनके मिलामो नातर
मरना कबूलवे ॥

३

मोतोड़ा मगादे मोरा यहो झगड़ावे ।
इस मोतियनकी लड़ मोरो लटके मारंगी नैना
घुमाये यहो झगड़ावे ॥

४

सांवलावे तुसो सुख वेख लाजावे मैड़ी मनदो आश
पुजाजावे ।
तुझ बिना मैनु कल नहीं पड़दी कदी तो दरस वेखाजा ॥

५

मैड़ा दुख दूर करिवो रब्ब सांई असो तैड़ो लेवा बलाईं ।
सदारङ्ग तैड़े जांदे वारो तुझ बिन और न कोई
मेड़ा सांई ॥

६

मुलक मुलतानदा सद्दयो मैड़ा ।
वेखानो अनो वसजा तू सानु सोणा या भला लगदा
मुलतानदा मैड़ो सद्दयोनो ॥

पीलू—एकताला

मार गयो चितवनकी बानहो नेना मेरे ।
एक एक बार मरे सब हम ताहर चितवनमें तजि
परानहो ॥
आ रव बचाय दुरजनको हमकों मारन ढूंढ़ ढूंढ़
पहचानहो ।
बार करों सकुचौं जोतनकों कायम सब जियसों
कुरवानहो ॥

जंगला—धीमा तिताला

मूरत माधुरो मेरे मन बसोरे ।
देखतहो सुख मयो मेरे प्राण चितवा मृदु सुख हंसोरे ॥
छैल छवीले मोहना प्यारे श्रवणन कुण्डण लसोरे ।
कृष्णानन्द आनन्दसों निरखत श्रीवृन्दावन बसोरे ॥

जंगला—तिताला

नैनाने जुलम कियावो श्याम तेरे ।
भौंवें कमान बान कटाचन वेधा गरीबांदा हियावे ॥
यहो रहँदे महामतवारे खञ्जन मध जो पिया ।
आनन्दघन ब्रजमोहन जानो मन मीन पकड़ लिया ॥

२

मोती माला मेरो काङ्हा छोड़त न गरसे ।
मीठो मीठी बातें कहैके लाए मोहे घरसे ॥
ऐसो विश्वासीघाती मारो नैना सरसे ।
वृन्दारेवनकी कुञ्ज गलीनमें जन शिवदीन बिकाने
राधावरसे ॥

मूलतानी तथा जंगला—तिताला

२

धिग जोवन ना प्रभु जाना हो ।
ऐसेहो ऐसे दिन खोए तुम कैसे हो चतुर सुजानाहो ।
करले हेत लाल मोहनसों मधुर मधुर सुर गामाहो ॥
जोवन जब सुफल होयगो हरिके हाथ बिकानाहो ।
सूरदास भगवान भजन बिन फिर पाछे पछतानाहो ॥

मिश्र भैरवी—लाल तिताला

तेरे होठोंदो बोड़ी लालियाँ कानों सोहैं तेड़े वालियाँ ।
सोणावे० ।
साड़ा दिल लेजाँदो जुलफैं वालियाँ सोणीवे ताँड़ेहो ॥
जेहर तेहर अनवट बिकुवा माथे सोहै बेंदो लालियाँ ।
सोणावे० ।
मायल घायल दिलनु कोता तेड़ी सोहनी सूरत
मतवालियाँ ॥
सोणावे० ।

जंगला—एकताला

सांवलिया मेड़े प्राणहो सांवलिया असो जानरे ।
माथे मुकुट मुरली कर राजै सुन्दर वदन टेढ़ी भौंह
कमानरे ।
दीरघ नैन तिरछी काटाचै मानो लगत मैनके बानरे ॥
केशर तिलक गल माल विराजै कुण्डल झलकैं कानरे ।
मृदु मुसक्यान अलवेलो पगिया गावतहै नोकी
तानरे ॥
एक बार हँस बोल पियारे राखो हमारो मानरे ।
कृष्णरङ्ग सखी दोउ कर जोरे माँगतहैं दरसन दानरे ॥

जंगला—तिताला

विहारीलाला ठाड़ेहैं यमुनाके तीर ।
भूषण मणिगण अङ्ग विराजैं सुन्दर-श्याम-शरीर ॥
मधुर मधुर धुन मुरली बाजै सुनि मन धरत न धीर ।
कृष्णरङ्ग सखी हौं लखि आई तूं चल हो मोरी बीर ॥

जंगला—एकताला

अधर धरी मोहन बांसुरिया ।
सोवत चौंक परी मैं सेज पर तानन वेध गई पांसुरिया ॥
जो जैसे सो तैसेई धाई डार दियो गरे प्रेम फाँसुरिया ।
कृष्णरङ्ग प्रभुके मिलवेको कुलको लाज करो नासुरिया ॥

२

मन अटको छबि नागरनटको ।
केशर खौर मुकुट माथे पर उर बनमाल विराजत
टटको ।
मृदु मुसक्यान भौंहको मरोरन नाक बुलाक हिलन
हिय खटको ॥
वंशी अधर मधुर धुन बाजत, झुमक लेत गति
अम्बर झटको ।
कृष्णरङ्ग प्रभु सङ्ग फिरौं बन अब न रहौं काहूको
हटको ॥

जंगला—तिताला

जावादे गुमानोड़ा कृष्णा म्हारे डेरे कामछे ।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी यमुना किनारे म्हारो
गामछे ॥
म्हारे आंगन तुलसीको बिरवा सांवरी सखी म्हारो
मामछे ।
जानी नहीं तो पूंछ लीज्यो कुञ्ज द्रुमन म्हारो धामछे ॥
चन्द्र सखी मज बाल कृष्ण कवि श्रीराधा म्हारो नामछे ।
कुञ्ज भवनमें ढूंढत डोलौं रट म्हाने बतावो कहाँ
श्यामछे ॥

२

जिन्द अटकी प्यारेदे नाल सानु मिलना जरूरवे ।
ले चल ऊधो श्याम सुन्दर जहाँ मथुरा केतिक दूरवे ॥

मूलतानी—तिताला

थारा ढोलिया चाकर रहस्यां पन्ना मारूजोमें ।
म्हारे तो थारो चाव घनोछे थारी दासो मैं होस्यां ॥

२

बलमा मैं न्यारो होंगोरे बङ्गला छवायदे बांहो रावटीरे ।
सास लरे घर ननद हठीलो दिवरा दे मोहि गारीरे ॥

जंगला—धीमा तिताला

मेरा जालम परी परी दिल जांदा ।
मुख बीड़ावे बाजुबन्द और चूड़ा औ जो चाहे तेरे
मिलनेनु शोरी कल नहीं एक घरी घरी पलदा ॥

पीलू—तिताला

सुनरे बटोइया बात बोरा कद आवेंगे ।
बरसन लागे मेघवा सावनके निशि अँधियारो कारो
रात ॥ कद० ॥

२

सखो पिया बिन कठिन बीतत सारी रात ।
कासे कहूं और कौन सुनै है मोरे जियको बात ।
वैरी विरहा पीछे पड़ोहै ना कोऊ सङ्ग न साथ ॥

३

सइयाँ रङ्गरेजवाने मइकुँ गारो दीनोरे ।
सुहेको रङ्गाई बारो सब कुछ मागे जो मागे सोई
दीनोरे सइयाँ ॥

४

तासुको अङ्गिया मोरोरे देवरा लोभानो ।
तासुको अङ्गोया जरद किनारो रेशम लागो डोरोरे ॥

पीलू—एकताला

बांके नैना कहां लेके जाऊंरे ।
जाके कहो मोरे वारे सइयाँसों हमरा गवन लेइ
जायरे ॥

२

थारो वलिहारो वे लाड़लोका बनवारो ।
शिर सोहै गुजरातीवे चोरा कलङ्गो रतन जरकसो
भारो ॥

३

वारीवे लायोरो दण्डोदार पँखा मेरावो ।
इस पँखेदो मैं लेवाँ बलाइयां वे मियाँ देदा ठंडो
हवा वारो ॥

पीलू—धीमा तिताला

नैना तेरे मतवारियां वारो तेड़े जोवनदावे ।
होठोंदो मिस्सियाँ पाँवो धड़ियां डोरे तेड़े डोरे तेड़े
कारे वारो तांड़े जोवनदावे वारो तेड़े मतवारे ॥

२

गारो न दूंगो सुनेंगे लोगवारे ।
बोलो ठोलो होरहो ठठोलो घर बड़ियां झकझोलो ॥

पीलू—तिताला

कंगना चुभो चुभो जाय गोरे हाँथन ।
छला माजूं मुदरो माजूं और माजूं गलेका हार ॥
हलक माजूं जोवना माजूं चन्द सूरज तोरो जार ॥

२

मसक मसक मेरो सब रसलोनोरे राम कोनो बावरे।
सगरो रयन मोहे तलफत बीतो भार भए गरे लाग
लोनोरे राम कोनो बावरे ॥

३

लाल डोरा कुसुम रङ्ग बोरारो ए डोरारे ।
सांझ भई पिया अजहूं न आए सावन भादोंको
भोरारे ॥

४

सइयां मइकुं बुलावे नदिया उतरूंगो पाररे ।
गहरोवे नदोया नाव पुरानोवे कैसेके उतरूंगो पाररे ॥

इति श्री जंगला पीलू रागिणी ।

श्रीकृष्णाय नमः ।

रागसागरसंग्रह-कृत ।

रागिणी सिन्धु—तिताला टप्पा

वोपरो जादोंदे परे बन बन आंदेहो मियाँ परला
मार सकदे परमाना ओ समरू तेरे रूबरू ।
परियां देवो परे परो उड़ न सकदोयां शोरोदेनो
टप्पेनु तेरेरो आवरू ॥

२

नाजुक मुखड़ा नाजुक नजर निजारे नैनवे परोदा ।
तेरे मुश्ताक होभो शोरो मियां शिर तुर्रा जरोदा ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

करदा तेड़े नाल दिल भर यार दिलवरियां खेला
जोर जोर ।
हम दम कोई किसोदा वारो कोई किसोदो ओर ॥

२

वेपरवाहोदी तैंदड़ो रहँदो याद मियांवे ।
शोरो आपेनू क्यों करदा बरवाद मियांवे ॥

१

नजारा जटियांदा यारवे ।
सीख माड़ी मानले समझ सांई पुन पुन सकदा
मार लटियांदा यारवे ॥

भैरवी सिन्धु—तिताला

भाँदावे साड़े दिलनु महरम यारदे निजारेंदा गमजा ।
वेखवे शोरो हुनवो तो गुमज गुजे नैनादियां समझा ॥

सिन्धु—तिताला

मुड़ आमि माड़ड़े कौलवे छैलवो ।
शोरो मैं तैनू चांदियां तुसो कभो न रहो मेला मेलावे ॥

२

तैड़ोवे गुमानोड़ा मलो लगदो दिलनु दिलवर रमझां ।
मुंह महताव सितारे चश्मा शोरो तेरो शोख
निगाहदे सदके हमजा ॥

३

वेखमें भूल गइयाँ नैनोदे निजार दियांरे रमझां ।
शोरो तैनु वेख रहियाँ आँदो जाँदो गुंजा गमझाँ ॥

४

वेदरदो यारवे नेड़े क्यों नहीं आँदा जाँदा सुन मला ।
यार यारांदा को करिए गला शोरो अजब तेरेंदा
रशम चला ॥

५

आशीसादे मत भूल पुन यारदा मिलनाहो मियां ।
शोरो मेरो तेरो मिलन गनीमत लाय पुनि यारदा
मिलना ॥

६

अल्ला मिलादे मैंड़े साँवरेनु ।
बिन दीठे मैनु चैन न आँदावे आँख लगी नहीं छूटदी ॥

७

दिल रखना राजी जानो यार फकीरांदा ।
होंदा सौदा किस नींद प्यारा शोरो दिल बिच बात
सांच सबदे शरीरांदा ॥

८

चल फिर करदे दीद निजारा प्यारियाँ सोणी सजदा ।
शोरो इस बीच आंदे जांदे करदे टप्पेदा रजदा ॥

९

आजटी सानु मानले मरजा देखा गम तेरा मैं तेरी सों ।
लोकांदो बदनामो थों डरमत शोरीनु अपना गम
खाँदो मैं तेरीसों ॥

१०

आ पियारा मिलजा किस वेलेदो मैं खड़ियाँ ।
तकदो राह बूएनु शोरो नहीं मिलदा चोरे वाला ॥

११

करदोवे याद करदो आड़ा वे मैं तक रहियाँ बूएनु
दरद वालियाँ ।
शोरो आपे नु क्यों करदा बरबाद सियां ॥

१२

क्यों रूंठड़ा जांदा वे हाँवे राजो रहना मिलजा मैनु
तकसोर साड़ो माफ़ कर राजी रहनावे ।
आवन उरैनु जावन परैनु शोरो इस गलो आँदा जांदा
सबेरा चाहनावे ॥

१३

आवोजो मिरजा जान माड़े डेरे आजा बांकेसे ज्वान ।
शोरीदे सरदार यार परियां करे दियाँ मिजमानो
कोई टप्पे दो सुन लोज्यो तान ॥

१४

दिल लगा रहँदा यार तुझ बिन कमला इश्क बिच
अपना हेर फेर ।
सदके कीतो जिन्द असाड़ड़ो उथै हम दम जिथै तुम
आवो दिलवर चल फिर ॥

१५

भादोंनो जरीवे योवनड़ा सोई मैं तो तैड़े वेखन कारण
हुण कमला ।
नेह लगाकर तू कित जांदा सदारङ्गो ने मिल गए
पीतम प्यारे हुण कमला ॥

१६

हरदम् आंदा जांदा दम् जब तूं कहांदा आदम् ।
छदड़ो तादम में आन कर अदमनु चञ्चल नहियाँ
भूलना अबर वनु ॥

१७

सीधे पैंड़े थीं नाहीं विसरबे हरदम रब्बा ध्यान कररे।
हस्ती मस्तीमें भूलन चञ्चल हंस रकावी रख दिल पर
डररे॥

१८

तेरे विरहदे मारे हरदम भरदे आहदे नारे।
दुश्मन महबूबांदा बेख ताव न आंदी चञ्चल नैन
जिनादे कारे॥

१९

सुनवे दे दरदा महबूबां यार मतदो दुख मैंड़े दिलनु।
नाहक जिन्दड़ीको सतावो चञ्चल आशिकनु
पल कल देनु॥

२०

निजारा जरा आ वेखलाजा जान किसे वेलेदी राह
तकैदियांवे।
दिल रहँदा सुशुताक वेखनदा तैंड़े नाजुक मुखड़ेदे
चञ्चल छदड़े जाँदावे॥

२१

तुझ विन रैन नहीं कटदी पल पल आँखि उचटदी।
नजर मिला चञ्चल चट चेटकदी॥

२२

वेखणनु जिन्द भटकदी केही करा थीं माहीड़ा।
जाय कहो चञ्चल दे नाल कोई याद तुसाड़ी
आन आन खटकदी॥

२३

आदमदे बीच दम जान मियां दम दमके दम महमान।
क्या दमका मरोसाहै वकीले सौदा दम कुछहै हरेक
दममें कुछहै चञ्चल कीसी जिन्दगी परमान॥

२४

कीवीं विरते पे गुमान योंहीं जांदी एक पल बीच जान।
गुजर गई गुजरान तैंड़ी चञ्चल क्या खेड़ा क्या मैदान।
क्यों शोरी तूतो मिलदा नाहीं आहे मुखड़ा बाग-
बहार माहीड़ा॥

२५

माहीड़ा बालम यानावे सइयां साड़ी जानो नहीं
नेह लगणदी सार।
क्यों शोरी तू मिलदा नाहीं आये मुखड़ा बाग बहार।
वेपरवाहो ना करना नबोदे गरीबां तोंरे तो आगे
को होणारे यार॥

२६

वे लाल लड़के लटियाँ थंकी समझ लाग लगाई।
समझ समझ शोरी छुटदा नाहीं विरह दाद लाई॥

२७

जानीदा मिलनावे प्यारेदा मिलनावे मियाँ मैनु
दम गनीमतहो जांदा।
आँजादे दुख भूल जाँदे शोरी नेह लगा सब कारांदा॥

२८

गुजारा दमदा दमदे नाल किसी तरे हो जांदावे
गुजारा।
अमरदाकी मरदा शोरी तूभी तो क्यों करदा सोच
विचारा॥

२९

मिरजा छैला वे मियां तैंतो लोती मैंड़ी जो खबरां।
सलाहो या रब तैनु आमिली तैंतो लोती मैंड़ी जोरवी
जबरां॥

३०

चाकदा राजी रहना रखना राजी काम मेरा
मैं तो चाकर।
शोरी हो शम दम मेरा मैं कीकरां तेरो दौलत कुछ
पाकर॥

३१

चलाई हो नैना वाले मियां साँग।
शोरी मैं तोड़ूंगी विरहदी थाँग॥

३२

क्यों रूंठा यारवो मियाँ तकसीर साड़ी माफ करी
राजी रखना मैनु।

खुशरङ्ग शोरी यार साड़डा हाँरे नाहकदी गलां शिर पर न धरी ॥

११

ओजटीदे जादू नैना सहर चलांदे तीर नजरदे गुजरदे पारावार मियांवे।
तादे तुफान कमान भवांदी अटक मटक शोरो दिलले जांदा सरकार ॥

१४

यागुमानो यारवे नाजाना कर मोही मैं ततीदा कौन संभालन वाला।
आशोरो टप्पा गा दिल बहलाजा यार ॥

१५

सोणावे गल लगजा ढोलन यार गुमानी।
तुझ पर सदारङ्ग ने एती अरमल कीती दुतवल वेख तेंड़े दरस बिना नैनादी मिझमानी ॥

सिन्धु धीमा—तिताला

सुकर गुजारियाँवे मैं तो रब ड़ाढेदी।
या रवा आन मिले महबूब साड़ड़ा कर्म्म कीती लाख हजारियाँवे मै तोरब० ॥

२

बेड़ा मेड़ा पार करीवे माड़ा साँइयांवे।
गहरीवे नदी वारी थालवे पुराणा सोणा आन पड़ो मझधारियाँवे ॥

३

तेड़ी आन भाँदीवे मैं तेड़ी माही वाले यार मेनु।
जङ्ग सियालेदी हीर सियालो हम दम दिलवर दिल वरदानियां मेनु ॥

४

कौन खड़ा दरवाजड़े वेखों सइयों हालनो।
एसी आई ताड़े वेखन कारण अदारङ्गदी गला मानले ॥

५

अटकी ढोलनदे नाल आँखि साड़ी खटकदीवे।
यारां दुखदे नैनादे निजारे सजन नाल साड़ी खटकदीवे ॥

सुख रांझेदा शोरो भूलदा मो नाहीं आईयाँ मैं तखत हजारथों हीर भटकदीवे ॥

६

मैं तैनु आँखदीवे सांई मेड़ा वालीवे।
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती तेज निजारा में ताकदी सांई मेड़ा ॥ वा०

सिन्धु—तिताला

धारां वाला तारणाजी पीर मेरा।
देवी मुराद मेड़ी वे मुश्किल करो असान आसरा रव तेरा ॥

२

मिलजा छैलावे नदानियां तैनु लीती साड़ी जोरानी खबरां।
भला हंदयां रव तैनु आखां दिल मिला आशरो आयोनी ॥

३

भला वेदरदी यारवे।
यारदा को करिए गला शोरो अजव तरहदा रसम चलावे।

४

वेसोणा तैनु लेवां बलाइयां।
जीवे मेरा मियां हांवे दोस्तवो दुशमन पे माल शोरी फकीरांदा साया ॥

५

आपियारे मिलजा रहंदिया मुश्ताक चावण तेरे वेमियाँ।
शोरी मियां रहंदे हर दम बेबांक तेड़े मिलनदा प्यारा ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

जादू जादू कहंदे मैं नहीं जानदी।
अपने नैनादे जादू जानदी शोरी मुश्ताक मन मानदी ॥

२

मैंतो तेड़ी बन्दीहो रहियाँवे भावे तू जान न जान गुमानीड़ा।
नेहा लगाकर जिन्द तरसेदियां इतनी अरज मेरी मानले गुमानीड़ा।

गले लग नैनू जी तरसांदियां इतनी अरज मेरी
मानले गुमानीड़ा ॥

सिन्धु—तिताला

जानी यारदे आगे धिगाना जोर नहीं चलदानावे ।
सुन शोरी उर मान चाखदे मिल रहँदे एक दिन
आपो आन मिल जानावे ॥

२

मैं वारो होदियां मन परचे दियांवे नैनो भला जटी
जोर जोर ।
लेचल उथै जिथे महबूबांदा थाना आदियां शोणा
टप्पेदे शोरीदे शोर ॥

३

जटी मूं वेखलाजा सानु कदी आनकेरे ।
हीर रांझेदी शोरी रही महोब्बत पाकरे ॥

४

यानिजारा जटियांदा जोर निजारा ।
बिन बेखे कल न पड़दी दमदा गुजारा ॥

५

भांदावे महबूब पियारावे आशिक रहंदा तेड़ा
मुश्ताक पाक ।
दिल लगा रहँदा यार नदाना मियां दिल बिच
रहदा शोरी महबूंबादा झमका ॥

६

विरहड़या यार माड़ा वेशोनो सजदे मिरजा जानवे ।
लखपरियां मुश्ताक रहँदो मिलननु शोरीदे नाल उस
दाढ़ादा प्यारवे ॥

७

कीकरां हुन नजर नहीं आंदा गुमानीड़ा दिलवर
ढूंढियावे जङ्गल बहार ।
वेलेनु हीर गईथी शोरो रांझेने दीठो उसदी बहार ॥

८

थारी वे नैनादे नाल मैंतो ठगियांवे ।
इश्क लगा वारी छुटदा भी नाहीं वेमियां जाहर
कीता इन अखियाँ ॥

९

नैन मियाँसों ना अटके ।
दीद निजारेदा मेला ठेला शोरी भूल गइयां सब खटके ॥

१०

रमझ नजारेदी गमजां नजरा वाले तेज तेज ।
वेखन जार थों दिल भूला भूला जांदा शोरो मैंतो
करदियां परहेज ॥

११

नैना जोड़ीदा चोरोदावे गुमानीड़ा ।
धरम नाहीं भावे मान पर्व्वत दिसदावे गुमानीड़ा
मैंतो सुख न मोड़ीदीचोरो दावे ॥

१२

राज वालम राज रहना माड़े डेरेवे ।
कबकी फिरेंदी बारी बाटड़ो तकेदीं हांवे शोकरङ्गतें
क्या कीती ॥

१३

गलाँ आनके सुनावोरे प्यारिदे मिलनदी ।
रति दरद देहा दरसादियाँ दुखदा हम पामोवे ॥

१४

अनी वेखो सइयों सांवला खड़ाहै बाटमें ।
सोहनी सूरत रसभरी अँखिया सब सखियाँदे बाटमें ॥

१५

प्यारी लागोवो तिहारो अँखियाँवो ।
अनियारो कारो कजरारो व्रजमोहन हम लाखियाँवो ॥
कमल कुरङ्ग मीन खञ्जनसे केली पलोटत पाखियाँवो ।
हरिदयाल सुर चख प्रतिपालन दाननके प्रण राखियाँ ॥

१६

मेरे मन गड़ो लालन को आन ।
तीखी तकन त्रिभङ्ग चलनको ऐंड़ो बेंड़ो बान ॥
मोर मुकट अलबेलो फेटो पीताम्बर फहरान ।
हरिदयाल पुरुषोत्तम प्रभुको सुर मीठो मुसक्यान ॥

१७

मन मोही मोही वेचोरे वालडेने ।

सुरङ्ग पैचा वारी अजब बन्धा मेरा सोणा चीरेदी
अजब वहार तुरेंदी अजब वहार ॥

१८

मैंडी जान सानु आमिलबे ।
जोतू तखत हजारेंदा सायबावे मियां रखसे
गरीवांदा मान सानु ॥

१९

वेमियाँ तैंड़ी वेली जिन्दरदा साँई साँई ।
जिथे तू कदम धरी उथे ततो कबकीमें ठाढ़ी ठाढ़ी
तैंड़े दरसन मेरा मियाँ खेदी बलाई ॥

२०

मैं तो तैनु चाहदी फिरियाद आड़ीयांवे ।
हो निजारा मेरो जान तैंड़ा भला लगदा न भूलदावे ॥
नजर गुजरनु तलाकदे मेरे साईयां उठकर मिलवे ॥

२१

पतरह लोका सोहै नरम झीनवा ।
तन सुकुमार मेरे मनही लुभावे अरे अरे दरस
लालचो भए नैनवा ॥
बोलदा क्यों नहीं वेढोला जागदा क्यों नहीं वेढोला ।
तोरा शवद सुनके बेकरार ना आई तैंड़े सूरतदी
मैं भईऊं दिवानी मैंड़ा मनड़ा तैंड़े नाल लोभानी
वेढोला ॥

२२

दिलदी घंडो नहीं खोलदा बे ढोला ।
तन बन्दूक मन जामगो चक मक पो के नैन ।
ये जोरावर माने नहीं लगे पलीता दैन वे ढोला० ॥

२३

भला जाने वाले मैं तो तैंड़ी लेजंगी बलाई सानु दरस
वेखाजा ।
कबकी मैं ठाढ़ी वारी तकदी तेरे जमालनु मेरा मियां
नैनीनू लगरही गरड़ी लगाजा ॥

२४

थाँसो लाग्योजी म्हारो मनड़ो बालमराज ।
कांई गुन्हारे म्हासों बोलो क्यों न राजिन्दर रूंस रहे
कौन काज ॥

२५

मन मोहे लियारि रबबे में कूंकदी डोलूं आंगण हथे
सजना विसार नैना नाल ।
दिलदी विथा में कासे कहूं शोकरङ्ग मानदा नाहीं
वेतो जानदा बिहाल आशिकदा जिथे स० ॥

२६

तू मेड़े नेड़े आजा साँवल प्यारा साड़े आंगन फेरा पामी ।
तुझ बिना मैंनु होर न भाँदा साँवलो सूरत वेखामी
मेड़ा मोहन प्यारा सानु दरस दिखामो तू मेड़े नेड़े० ॥

२७

एरीमैं कैसे करूंरी अरी मेरा मनड़ा साँवलड़ा
लिए जाय ।
सोहनी सूरत माधुरी मूरत साड़े दिलमें रहे समाय ॥

२८

बाँकड़ाजी म्हारो राज छलड़ा भलड़ा तीखड़ा
नोकड़ा माड़ा गबरू यार ।
छदके गइयां असी घोलड़घती साँवलेदे रङ्गराती
दे रङ्गारतीनी मति साड़े नाल करदानी प्यार ॥

२९

मेरा गुमानीड़ा कभीतो मुख वेखलामो दरस देखलामो ।
एकबार मिले तो मैं लाख लाख वारी सोतोनु गरेही
लगामो दरसांदे नाल पामी ॥

३०

याद करदी रहंदीवे आड़ानी में तक रहियां भूरे वाले
समझनु डरदीवे ।
शोरी उठदा दिल विच विरहदा धूंवा मैं तो मरदीवे ॥

३१

फकीराँ आज रम रहणावे फकीरावे मेरा तो थाना
महबूबांदा मियां ।
दीद निजारेंदा मेला ठेला शोरी तुं भीतो
मायल खुवांदा ॥

३२

घोल घुमादियाँ जांदिया मियाँ हुण मैंतो तांरे वीत
झरोखे गुमानी जाँदियां ।

गल न सुनै चुगलदी मानै ना मैं तवे महबूब वेख
साइयाँवे गुमानी ॥

२३

मिलकर जानावे जाना दिलोंदी बेपरवाह गरीबां
हाँ सोणा ।
एक पियासा साड़े ख्याल शोरी दिल खोणा ॥

२४

जपदियाँ तेरा नाम साइयांवे ।
ताँनेभी देदां वारीवे मानदाभी देदां वे मियाँ पुनु पुनु
करके कूंकदी आइयांवे ॥

२५

नैन लगा अब कैसे छूटे छूटत बड़ा दुख देतरी दैया
गुईयां ।
जब लागै तब लगत न जानै अब लागै दुख दैन सनैया ॥

२६

नजारा सांवरेदा जटियांदा यारवे ।
सोख साड़ी मानले समझ साइयां शोरी फेर सदके
जादियां ॥

२७

विलोचनियांवे काजी रखणा तूरवे ।
मैंड़ी तैड़ी दोस्ती अल्ला जाने नबीय रसूलबे ॥

२८

मैंकी जानी ताँड़ी गलाँ कीकर पूंछा यार माड़ड़े ।
तुझ जेहा मानु और नहीं दिसदा ढूंढ फिरी सब
आई थलां भलांबे ॥
मेड़ा यार नहीं मानदा प्यारा मेड़ड़ी गला मैं कीकरां ।
आपन आबे वारी ना लिख भेजे वेमियां ढूंढ फिरी
सब नलां तलांवे ॥

२९

ठाली लँबिया छावो वोहवे मेरी जान ।
वोहवे वोहो चीरे वाले वोहबे तू वोहबे ॥
ना मैं व्याही ना मैं सङ्गी ना मैं अँखी दीठा सोबे
ठाड़ी लंबी० ॥

३०

जटी तेड़ा वेखणा दुशमन होया ।
जिन्दा आँख लगी माड़ी जबते महोब्बत तू खुलदा
नहीं मैनु इश्कदा पेखसा ॥

३१

जोथै माड़ा रांझन बसदावे मैं ढूंढ़दी फिरेदी कोई
बता देवे ।
चेरी मैं उसदी मियां रांझण मिले तो मैं वारियांवे ॥

३२

छड़दे साड़ड़ी बांह मैं तो अपने घर जावां मिरजा मैं
तो डर गइयां हुन ।
वन्दिरवा बिच मत कर झेड़ा वेखन लोग लगा हुन
वन्दिया हुनतो जामी हुन साड़ी घर आमी क्यों ॥

३३

मैं तो चाकर चाहदा रहणा राजी कामन मेरा ।
शोरी होश दम मेरा मैं क्यों कर छाँड़ु कुछ तेरी
दौलत पाकर मैं तो चा० ॥

३४

आसरावे मैनु दमदावे महरम यारदा जीवै तू
जम जम ।
शोरी जम बिच तुही तुसाड़ा रती भूला ॥ म०

३५

जानी कीकरदा मेंड़ा गबरू ।
वेखणनु मुश्ताक तेड़े शोरी रखले सोनी साड़ी अबरू ॥

३६

याद करदी वे याद करदियां डावो मैं तक रहियां
गुणा गुण बेदरदा वाला ।
शोरी उठदा दिल बिच विरहदा दमामा मैंतो मरदी
फरियाद करदी ॥

३७

मानु न छेड़ मियां तेंड़ी वान पई मेंड़े दिलवर मेंड़े ।
तेड़े इश्क दे कारण बदनामी मैं लीती पाक नजर
तैनु किन सिखलाइयांवे आपना आप निवैरवे ॥

४८

लगदा बाग बहार तेड़ा मुखड़ा मेंड़ो जानवे ।
मुख गुलाबो नरगिस नैना साँवला यारवे

४९

डार भंवरादी शोणा आई बहार सजनदे मुख वेखननु।
गुल फूले रङ्ग विरङ्ग दे फुलेवे अजब ढङ्गदे फूले दीठो
सोनी वसंत बहार ॥

५०

वे मियाँ मन रखणा राजो जानो बेफकोरांदा ।
भांदा खूब सोंदा सुख नींद प्यारा दिल बिच बादशा
शोरो शब्द शरोरांदा ॥

५१

फकीरी करणावे राजो रहणा हरदम बदम सोणा ।
भलो बुरो सब सहदे शिर यर इश्क रङ्ग वरदे नाल
रङ्ग रङ्गनावे ॥
दिशनो यारवे मियां मैंनु शहर पूनेदा भलोयाँ वे मियां ।
भलावे मैंछड़दोता गम तेरा दुता देखेड़े बस होरही
रबादी महरबानियां वे ताड़ा ॥

५२

आन मिलामो मेड़े सोनेनु वेयार ।
जिस दिन मोला मेंड़ावे काजो भो होसी मेंड़ा मियां
पकर करां फिरयाद वे मेड़े यार ॥

५३

मैं तो मरदो वेयाद करदो सोणा मैं तो बेदरदांदे नाल
डरदो ।
शोरो उठदा दिल बिच लहराँ इश्कदो खेड़ा भरदो ॥

५४

कमला वाले वे मेरावे किन विलमाया हाँहां हांवे
लोका ।
जा पूछोंदो मैं अपने रांझेनु जो आनके मिलामो ॥

५५

मैंनु तेड़ो आन भांदोबे मैं तेरो माझी वाले यार ।
जंग शियालेदो होरसियानो हमदम दिलवर
दिलवर-दानो यार मैंनु तं ॥

५६

पीत लगाकर को सुख पाया हाँबे लोकों ।
यार मेरा सो नहीं आया किन दूतां मिलमाया हां
बे याना मैं तो भूलो भूली सोणावे पो० ॥

५७

नए रङ्ग जोरदावे मांड़ा तूं ।
दिल ठग लोता तेज निजारे न दीठोयाँ तूं शोरी यार
मैनु बसे कोना मेंड़ा तूं ।

५८

मैनु प्यारो तुंहो लगदाँबे वंशोवाले मेरा यार ।
नन्दमहरदे तुहो हरदम तुहो दिलवर सांवलावे ॥

५९

साड़े नैण मियां सोणा अटके ।
दीद निजारेदा मेला ठेला शोरो भूल गइयाँ सब
खटके ॥

६०

ना सतामो तू ना सतामोबे ।
बेदरदा बाले दिलनु बेदरदां मियां चङ्गड़े दिलनुको
दुख लाया बेमियां तू भो तो ना सुख पामो
सतामोबे ॥

६१

मैनु तेड़ो याद आँदो बेगबरू सोणा महरदे ।
तुझ विना मैनु कल नहीं एक पल क्षणानन्द तुंही
भाँदोबे ॥

६२

पीत लगाकर शोणा बे मियां ।
हांबे लोकाबे यार मेरा शो नहीं आया हांवो लोकां ॥

६३

याना मैंतो भूली भूली सोणाबे ॥
बिन दीठे चैन न पाँदी सुन मोहनावे ॥

६४

न बतामो तू ना बतामो अपना भेद सुन वंशीवाले ।
किथे गुजारो रैन पियारी भोर भए गर लामो ॥

६५

तेज तेज नजरांवाला करदा रमझ नजारेदो गमझाँ।
वेख नजारेथों दिल भूला भला जांदा शोरी में तो
करदियां परहेज ॥

६६

हांवे नैना जोरोदा जोरोदावे गुमानोड़ा हांवे।
होर नहीं भावे मन पर बसदावे गुमानोड़ा तुसी
मुखनी मोरदावे ॥

६७

नैना वाले यार मियां तें तों मेड़ो खबर न लोती।
कभी तो आन मिलो सोणा दिल भर मैनु दाढा प्यारावे ॥

६८

बेदरदा वे पर वाहनो हांहाँ सची आंखो साड़ड़ो बेवन्द।
गिरुंगोरे नदो वारी वेथेलड़ा पुराणावे मियां केहा
गस्त मिलानो हांहाँ ॥

६९

अल्लादो महरबानिया मेड़े शोणिनु वे यार।
जिस दिन मौला मेड़ा काजो भी होसी वे मेरा मियां
मदत पीर जहाँनिया मे० ॥

७०

में मोही मोही मोही तेरो चालवे दुपट्टे वाले।
दामन लगो वारो शरम तुसानु ज्यों भामी त्यों
पालवे दुपट्टे ॥
जात न लगो वारीवे सोई तन जाने और क्या जाने
टालवे ॥

७१

चाकर माही वालोयांदे चाकर रहणावे।
सोहनो सूरत वे रसभरो अँखियां वेचाल चले
मतवालियां ॥

७२

जादू जादू करदा में नहीं जानदी।
सांवलो सूरत रसभरो अँखियां चाल चले मतवालिया।
मुखड़ा तेड़ा अजब बहारांदा अचपल इश्क महोब्बत
मानदी ॥

७३

धनवारी म्हारो राज बालोरे।
मैंतो थारो दासो वारो थैं म्हाड़ा सायबा नेह लगा
प्रतिपालोरे ॥

७४

सजदे शोनो चल फिर करदा दीद निजारा परियांदा
मियां।
शोरो तो इस बोच आंदा जांदा करदा टप्पेदा नारा ॥

७५

मानु न विसार यार वेमुझ वेनो मानदो कोगुन्हावे।
मैनु छोड़ लागो लड़ तेरा आन असो तू देदा सानु
पीरोदा पना ॥

७६

अँखियां साड़ो खटको अटका ढोलन यार दुख दैन
नाल सजन नाल साड़ो खटको।
मुख राँझनदा शोरी भूलदा नाहीं डूबदा नाहीं
आइयां मैं तखत हजारेदा होर भटको ॥

सिन्धु काफी—तिताला

अलवेलेड़ावे केसर भिन्नानो में जादियाँ श्याम
मनावननू।
गड़दे सोणारा सोणेदा कँगणा मान करेतो शावनान ॥

सिन्धु—तिताला

ला मेरे बनरे रङ्ग घना मोतियांदो माला लाइयो।
कँगना लाइयो वारी बाजुबन्द लाईयो नथुनो लाइयो
अनमोलनी ॥

२

चोरे वाला माँड़ा गबरू दस्त कटोरा दहोडार।
याड़ा वे ये मनावन चलियां आधो रातो रावोदे किनारे ॥

३

साड़े नाल करदी तूतो रमझां गमजां।
कई कोतो साड़े नाल समझां तूतो साड़ा करदो
शोनो रमझां गमजां ॥

४

नैना सांवलियांदे जोर जोर लगदे लरजे गरजे
गम खांदे।

शोरी फकीरांदी वे यह गुजरांदी वेमियां आशरम
मत तुम रम रहोरे ॥

५

ढोलन मिलजा मैनु आई मैं तेड़ी लेवां बलाई ।
कबकी मैं बाटड़ी तवेंदी मेंड़ी लाज शरम रखले
जग माँई ॥

६

यारवे की गुन्हा कीता तेड़ा सांवला न भुलामी ।
हमसे अवध बद अनत विलम रहंदा किसनु गर लामी ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

नजारा झँगदा कर देवे परियाँ जेहियाँ लटियाँ
नाल नेहा जड़दे ।
चन्द्र जेही अक्खी भलियाँ दिल बिच बसेदियां
इश्कदे लहरे बिच तरदे ॥

सिन्धु—तिताला

काली बोलो काली बोलो काली बोलो काली ।
तुही सुख आनन्द तुंही सुख सम्पति भक्त जननू
प्रति-पाली बोलो काली काली ॥

सिन्धु काफी—तिताला

हो फकीराँ विरम रहना वेहां फकीराँ वे मेरेतो थाना
महबूबांदा ।
दीद निजारेदा मेला ठेला शोरी तुंभी तो मायल
खुवाँदा ॥

सिन्धु—तिताला

विरहोदे नैना मियांवे नहीं छूटदे ।
बिन दीठे मैनु चैन नहीं आँदा शोरीजे वेखोंते मुठड़े ॥

२

मैं तैनु आँखदी शोणा मेड़ा बालीवे ।
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती शोरी तेज निजारा
ताकदी शोणा मेड़ा वाली ॥

३

आसरा मैनु दमदा महरम यार जीवे जम जम यार ।
शोरी जग बिच यार असाड़रा रती भूलाया घगमदा ॥

४

ओनिजारा नैनादा साँई गरे लगजा पियारा मेड़ड़ीदा
जानिया ।
अखीनु दिल भर तुसाड़ड़ा उनाकी नहीं होना गुजारा ॥

५

सोने मैनु हाँहां बिन दीठे नहीं परदी कलवे ।
रसीयानु कोई आन मिलावे गोई मुश्कलवो अगर
न गोई मुश्किल ॥

६

बना बराहन आया सलोना ।
सारी रैनका आज राता माता जागा सारी रैन ॥

७

चक्खाँ यारांदा तैनु आन पया बिन मिले न रहँदी
मेड़ी जान ।
सची कहना सुखी रहना शोरी दिल भला अपने
बस कीना जा० ॥

८

भलावे तू जाँनन जान गुमानीड़ा मैं तो तेड़ी वन्दिया
ही रहियां ।
गर लगण नू जो तरसदे शोरी इती अरज मोरी
मानले गुमानीड़ा ॥

९

भला बेदरदी यारवे करदा क्यों दिलभर असाड़रे नाल ।
यारदाको करिए गलाँ शोरी अजब तरेदा रशम चला ॥

१०

संवलके पैर धरीवे लैली सहरा मजनूदा ।
लैली दिलदा मायल होणा शोरी मियां सुन मजनु
नाम जिन होंदा ॥

११

आजा व्हाली राज राजी रहणा माड़डे डेरेवो ।
मैंतो तैनु दवाइयाँ देदी वारी जादो सौ सौ फेरीवे ॥

१२

मेड़ा दुख दरद वे दूर करीवे मेड़े साँई ।
असी तेरी वो लेवां बलाई अदारङ्ग सबनु झाड़ वेखा
कोई नहीं तुसाड़ड़ी दाई ॥

१३

निजारा जटियांदा यारवे सजन समझी समझा
दिलवर दिलनु ।
तूं तो साड़े नाल करदावे रमझां केही कीती साड़े
नाल न समझा दि० ॥

१४

अनी सइयों मान करेदा लटकेदड़ा झम झम
झमके वाला ।
ऐड़ी बेंड़ी जुलफों वाला चीरा जरद सुनेहरी गज
मोतियांदी माला ॥

१५

मान न करिये रबडाढ़े कौलों डरिये छैला ।
दिवानी झोखां तेड़ी वे राँझा क्यों सोनेदा छला
क्या रूपेदा छली वेछैला ॥

१६

लेचल नाल वोमियाँ राँझा मेनु हाँवे मियाँ दुख गए
सुख सांझावे ।
माड़ड़ी खबर विलोचनावे माड़डे बेखबर मियांवे ॥

१७

उठ चढ़ी वारी वेश्यां वेसोदागर ।
इंदर जेहो होरे पुन जेहियो ला मांड़ड़ी खबर ॥

१८

मौजा वाले मियाँ मेनु लहराँ तेरी भाँदी याद
जब जाँदा दिल भूला भूला ।
मैं तो तेनु आखर होरती ठम मियाँ मिरजा सुगलां ।
दाम महेरमनो सुनोदे बुरी ए बला इश्कदावे आखर
गुल खिला मियाँ पर खोला ॥

सिन्धु टप्पा—तिताला

ओकारेनो सइयों घूंघरवारे बाल सजनदे बिसीयर
कालेनो सइयों ।
आशिकदा दिल जड़कर करेंदे घाले मालेनो सइयों ॥
घुड़रदो कोई नहीं गुददो उमगसे कारे मतवारे
अति भारेनो सइयों ॥

सिन्धु—तिताला

अहो सनम महरम यार मैंको जानु तेरो गलाँ ।
दूर गएनु साँई मिलावे आन मिलो तो मैं चलों भला ॥

२

आँगन फेरा पाजावे सांवल यार ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारी वेला भी ढूंढ़ा तूं कित विलम
रह्योला यार ॥

३

यार सानु आमिलोवे मेंतो तांड़ड़ो लेवाँ बलाइयां ।
दूर ययानो वारो बेखबर न लोतो वेमियां बिन
दीठोयाँ दुख बादियाँ ॥

४

बसदो रहँदो दिलवर नाल लाई महमत हित चित
सों मियां ।
दिलदो गला मैं किसनु करां तेरो बेबफाईका ।
जहाँ मैं नाम न ले तेरो आशिनाईका ॥

५

अरज मिजाजोड़ा मानले मेरो चोरा बांधनुदा
वन्ध लामीवे बीवांवे ।
गले सोहै जामदानीदा बूटा मुख सोहे ताँड़े
पानोदा बीराबे ॥

६

आइयांवे सोनेदो में ढूंढ़दी ढूंढ़दी ।
कांई करे तोझमें दिलभर दिलनु आँख लगी मेनु
छिपदो छिपदो ॥

७

लगियां जबाव न देदियांवे ।
तीखोयांदी तबलाँदी को राँझि जिगरांदो घाव
करां दिवांवे ॥
नैना मत मारबे मैं आपो मरजादियांवे ।
नैना तुसाड़े बेबरछोदो नोके गुजर जांदो आर पारवे ॥

८

माहोदे नाल चलेस्यां पुनदे नाल चलेस्यां ।

शोरी फकीरांदी वे यह गुजरांदी वेमियां आशरम
मत तुम रम रहोरे ॥

५

ढोलन मिलजा मैनु आई मैं तेड़ी लेवां बलाई ।
कबकी मैं बाटड़ी तकेंदी मेंड़ी लाज शरम रखले
जग मांई ॥

६

यारवे की गुन्हा कीता तेड़ा सांवला न भुलामी ।
इमसे अवध बद अनत विलम रहंदा किमनु गर लामी ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

नजारा झँगदा कर देवे परियाँ जेहियाँ जटियाँ
नाल नेहा जड़दे ।
चन्द्र जेही अछी भलियाँ दिल बिच बसेंदियां
इश्कदे लहरे बिच तरदे ॥

सिन्धु—तिताला

काली बोलो काली बोलो काली बोलो काली ।
तुही सुख आनन्द तुंही सुख सम्पति भक्त जननू
प्रति-पाली बोलो काली काली ॥

सिन्धु काफी—तिताला

हो फकीराँ बिरम रहना वेहाँ फकीराँ वे मेरेतो थाना
महबूबांदा ।
दीद निजारेदा मेला ठेला शोरी तुंभी तो मायल
खुवाँदा ॥

सिन्धु—तिताला

विरहोदे नैना मियांबे नहीं छूटदे ।
बिन दीठे मैनु चैन नहीं आंदा शोरीजे वेखोंते सुठड़े ॥

२

मैं तैनु आँखदी शोणा मैड़ा बालीवे ।
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती शोरी तेज निजारा
ताकदी शोणा मैड़ा वाली ॥

३

आसरा मैनु दमदा महरम यार जीवे जम जम यार ।
शोरी जग बिच यार असाड़रा रती भूलाया न गमदा ॥

४

शोनिजारा नैनादा साँई गरे लगजा पियारा मेड़ड़ीदा
जानिया ।
अखीनु दिल भर तुसाड़ड़ा उनाकी नहीं होना गुजारा ॥

५

सोने मैनु हाँहां बिन दीठे नहीं परदी कलवे ।
रसीयानु कोई आन मिलावे गोई मुश्कलवो अगर
न गोई मुश्किल ॥

६

बना बग्राहन आया सलोना ।
सारी रैनका आज राता माता जागा सारी रैन ॥

७

चक्खाँ यारांदा तैनु आन पया बिन मिले न रहँदी
मेड़ी जान ।
सची कहना सुखी रहना शोरी दिल भला अपने
बस कीना जा० ॥

८

भलावे तू जाँनन जान गुमानीड़ा मैं तो तेड़ी वन्दिया
हो रहियाँ ।
गर लगण नू जो तरसदे शोरी इतो अरज मोरी
मानले गुमानीड़ा ॥

९

भला वेदरदी यारवे करदा क्यों दिलभर असाड़रे नाल ।
यारदाको करिए गलां शोरी अजब तरेदा रशम चला ॥

१०

संवलके पैर धरीवे लैली सहरा मजनूदा ।
लैली दिलदा मायल होणा शोरी मियां सुन मजनु
नाम जिन होंदा ॥

११

आजा व्हाली राज राजी रहणा माड़डे डेरेवो ।
मैं तो तैनु दवाइयां देदी वारी जादी सो सो फेरीवे ॥

१२

मेड़ा दुख दरद वे दूर करीवे मेड़े सांई ।
असी तेरी वो लेवां बलाई अदारङ्ग सबनु झाड़ वेखा
कोई नहीं तुसाड़ड़ी दाई ॥

१३

निजारा जटियांदा यारवे सजन समझी समझा
दिलवर दिलनु ।
तूं तो साड़े नाल करदावे रमझां केही कीती साड़े
नाल न समझा दि० ॥

१४

अनी सइयों मान करेदा लटकेदड़ा झम झम
झमके वाला ।
ऐड़ी बेंड़ी जुलफों वाला चीरा जरद सुनेहरी गज
मोतियांदी माला ॥

१५

मान न करिये रबडाढ़े कौलों डरिये कैला ।
दिवानी झोखां तेड़ी वे राँझा क्यों सोनेदा छला
क्या रूपेदा छली वेछैला ॥

१६

लेचल नाल वोमियां राँझा मेनु हाँवे मियाँ दुख गए
सुख सांझावे ।
माड़ड़ी खबर विलोचनावे माड़डे बेखबर मियांवे ॥

१७

उठ चढ़ी वारी वेश्यां वेसोदागर ।
इंदर जेहो होरे पुन जेहियो ला मांड़ड़ी खबर ॥

१८

मौजा वाले मियाँ मेनु लहरां तेरी भांदी याद
जब जांदा दिल भूला भूला ।
मैं तो तेनु आखर हीरतो ठम मियाँ मिरजा सुगलां ।
दाम महेरमनो सुनोदे बुरो ए बला इश्कदावे आखर
गुल खिला मियाँ पर खोला ॥

सिन्धु टप्पा—तिताला

ओकारेनो सइयों घूंघरवारे बाल सजनदे बिसोयर
कालेनो सइयों ।
आशिकदा दिल लड़कर करेंदे घाले मालेनो सइयों ॥
घुड़रदो कोई नहीं गुददो उमगसे कारे मतवारे
अति मारेनो सइयों ॥

सिन्धु—तिताला

अहो सनम महरम यार मैंको जानु तेरी यलाँ ।
दूर गएनु साँई मिलावे आन मिली तो मैं चलों भला ॥

२

आँगन फेरा पाजावे सांवल यार ।
जङ्गल ढूंढ़ा बारी वेला भी ढूंढ़ा तूं कित विलम
रहोला यार ॥

३

यार सानु आमिलीवे मैंतो तांड़ड़ो लेवाँ बलाइयाँ ।
दूर गयानो वारी बेखबर न लोतो वेमियां बिन
दीठोयाँ दुख बादियाँ ॥

४

बसदी रहँदी दिलवर नाल लाई महमत हित चित
सों मियां ।
दिलदो गला मैं किसनु करां तेरी वेबफाईका ।
जहाँ मैं नाम न ले तेरी आशिनाईका ॥

५

अरज मिजाजोड़ा मानले मेरी चोरा बांधनुदा
बन्ध लामीवे बीवांवे ।
मले सोहै जामदानीदा बूटा मुख सोहे ताँड़े
पानोदा बीराबे ॥

६

आइयांवे सोनेदी में ढूंढ़दी ढूंढ़दी ।
कांई करे तोझमें दिलभर दिलनुँ आँख लगी मेनु
छिपदी छिपदी ॥

७

लगियाँ जबाव न देदियांवे ।
तीखोयांदी तबलाँदी को रांझि जिगरांदो घाव
करां दियांवे ॥
नैना मत मारवे मैं आपो मरजादियांवे ।
नैना तुसाड़े वेबरछीदो नोके गुजर जांदी आर पारवे ॥

८

माहीदे नाल चलेस्यां पुनदे नाल चलेस्यां ।

मोरी भोली वारी वेखेञो वाली भलड़ो भलड़ो सांई
माहीदे दस्त रङ्गेस्यां वेपुनदे दस्त रङ्गेस्यां ॥
तेड़े जिन्द आही माँड़े कोकराँवे वेलियां ॥

९
रहँदी याद मियांवे वेपरवाहोदी तेंदडोवे ।
शोरी आपनु करदा वेख मियां बरबाद मियांवे ॥

१०
सुन आई बहार सजनदे मुख वेखननु माहोड़ा
बेडार भँवरादी ।
फूल फूले रङ्ग वेरङ्गदे फूले बेढङ्ग देदीठो सोनो
बसंत सब राँदी ॥

सिन्धु—एकताला

नाकर फेरामें बन्दीदा कौन सभालन वाला
यार गुमानी यारवे नाजा ।
यार शोरो कोई टप्पा गाय कर दिल बहलायजा ॥

२
झमका नाज निजारेदा भांदा नैन मिलाकर क्यों
शरमांदा ।
ख्याल खुशाल भरे दिल जानी क्यों नहीं नाल हमारे
आंदा ॥

३
नन्दमहर घर आज बधाई ।
प्रगटे गोकुलचन्द मनोहर शोभा कान्त सकल-
जग छाई ॥
नाचत गोपो-ग्वाल सकल मिल गावत मङ्गल मोद
बढ़ाई ।
पाए फल जीवनके सब ब्रजजन ख्याल खुशाल प्रभु
लछन लखाई ॥

४
किन मुख अबीर गुलाल लगाए ।
रङ्ग डारे केशर रङ्ग प्यारे मनसिज उमग उमग
उर लाए ॥
बातें सकल प्रेमकी कह कह कहोजी काहँ रैन जगाए ।
ख्याल खुशाल सभी सिखलाए चञ्चल चपल छैल
मन भाए ॥

५
होरी खेले ब्रज मोरोयांवो ।
सङ्ग लिए नन्दराय लाड़लो प्रेमरङ्गमें बोरियांवो ।
कोई गावत कोई रीझ रिझावत कोई चतुर कोई
भोरियांवो ॥
कुम कुम तक तक तान चलावत हँसत परस्पर चित
चोरियाँवो ।
करत खुशाल श्याम सुन्दरमैं पावो प्रेमको डोरियाँवो ॥

६
पतित पावन सालिगराम ।
ठाकुर नाम कहावत त्रिभुवन सुन्दर-मूरत-श्याम ॥
धोइ पीवत चरणामृत जे नर नरक न गति अभिराम ।
लछनदास कल्पतरु कलिमें देत अभय-पद-धाम ॥

७
रामकृष्ण वासुदेव दामोदर दीनबन्धु दयासिन्धु
करुणानिधि मोहन बनवारो ।
मधुसूदन मुरलोधर माधव जगजीवन प्रभु कमल-
नैन राधापति गोविन्द गिरिधारो ॥
अच्युत गोपाल कान्ह चिन्तामणि चक्रपाणि विट्ठल
भगवन्त विष्णु केशव कंसारो ।
नारायण पद्मनाभ हृषिकेश परमेश्वर गरुड़ध्वज हरि-
मुकुन्द मुखरारो ॥
गोपीवल्लभ मुरारि त्रिकम भगवान भक्त-वत्सल
कल्याण कुँवर श्याम ब्रजविहारो ।
गोकुलेश चैनराय पुरुषोत्तम यज्ञ पुरुष नित्यानन्द
जगत-गुरु जनार्दन दनुजारि ॥
राघव रघुवीर रङ्गनाथ प्राणनाथ स्वामी श्रीपति
रघुनाथ योग ध्यान रावणारि ।
जानकीश कौशलेन्द्र मनरञ्जन यादवेन्द्र नटनागर
नन्दलाल यदुपति असुरारि ॥
विश्वम्भर धरणीधर परमानन्दजी उपेन्द्र ब्रजपति
रघुनन्दन रणछोर दैत्यारि ।
रघुवर जगदीश पुण्डरीक अच्च कमलापति बनमालि
जगतपति किशोर दानवारि ॥

निर्गुण चैतन्य ब्रह्म अव्यक्त अज निरञ्जन विभुव्यापक
ब्रह्मण्य ज्योति अविगति अविकारी।
पारब्रह्म नित्यानन्द निर्व्विकार विश्वरूप ईश्वर
अविनाशी वैकुण्ठ विश्वकारी॥
मच्छ कच्छ शूकर नरसिंह वामन परशुराम धनुर्धर
बलिराम विबुध यज्ञ निंदोडारी।
कल्की मनु व्यास हंस यज्ञ ऋषभ हय ग्रीव बद्रीपति
कपिलदत्त सनकादिक चारी॥
प्रथु अनन्त धन्वन्तरि दुष्टदलन जानराय गुप्त प्रगट
चतुर्विंश लीलाधतारी।
नामावली सुखविलास लछन दासानुदास अज्ञ-
अल्प-बुद्धि चरण शरण परि पुकारी॥

८

बड़ी बड़ी अंखीयन वारी मोहि लग्यो अति प्यारो।
दीरघ कोरे हेरत मोरे ता बिच अञ्जन कारो॥
बिसके कंजल जात जात दुरी डोरे अरुण रङ्गजारो।
लछमणदास कठिन वाकी चितवनी मानो ढरकत
पारो॥

९

द्रगण लागी आज मेरे सांवरी सलोनी सुन्दर मूरत
बांकी चितवन प्यारी।
चमक चलनि चञ्चल चपल मोर मुसकन पिय
प्यारेकी न्यारी॥
थिर न रहत तन मन धन घरी पल छिन आलीहो
बस कीनो लाल विहारी।
लछमणदास तलफ तलफ नहीं विसरत कठिन
पीर कारी॥

१०

हरिजनके चरणकी जो करे बन्दगी।
जगत-ज्वाल प्रबल-जाल तपत उर कराल काल,कोह,
मोह, भ्रम, विषाद, कटे गंदगी॥
मत्सर, जञ्जाल, आल बाल, सघन घेर रहे काटत
नहीं बार काम छलित छन्दगी।
सजन अनुकूल मूल अङ्कुश भए हरि प्रसूल राज त्याग
जावे घट फैल फन्दगी॥
भक्तनको खास दास करत रहत सुखविलास जमको
नहीं त्रास बास घटे मन्दगी।
लछमणदास तोहिसे ख्यावे विश्वास आश भक्त मुक्त
पावे आवे अमन्दगी॥

११

बेसर कौनको अति नोको।
होड़ परी ललना औ लाले चोंप बढ़ी अति जोको॥
दाँव बदो ललिताके आगे कौन ललित कौन फोको।
चतुर विहारी बिलगि जिन मानो धारनी
अधिक ललाको॥

१२

वे कहा जाने पीर पराई।
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन हरि हलधरके माई॥
मुख मुरली शिर मौर-पखौवा बन बन धेनु चराई।
जे जमुना जल रङ्ग रङ्गहै अजहुं गईं तकराई॥
वे भूलेहैं देखि कूबरी हम सब गईं भुलाई।
सूरज चातक बूंद मईहै हेरत रहे हेराई॥

सिन्धु काफी—तिताला

भूनदे फकीरांदे दानेनो तुसी।
दाने असाड़े भूनन देंदो असीयां फकीर निमानेनो॥
दानानो लेंदो तू फकांणी लेंदो लड़दिए जोर
धिगानेनो।
साह हुशैन फकीर रवांदा जङ्गल तंबु तनेनो॥

२

तनदिरना दोमतनुम् तनम् या तरानो तुमने खूब
बनाया नादरना दर और अक्षर सुन्दर धरमधुर
बनाया पर सुन आके कहियो सनम्।
मौज नेहचे रख मनमें दरजमे हिजर मकुन्ना
लो फरियाद केदो सजदा आम फालके फरियादरसे
में आयद जब आवे तेतू यहां गाना हो होके बेगम्॥

सिन्धु अर्थ सहित—तिताला

तन अन्दर तन मन्दिरमें रख ज्ञान ध्यान घर आहे
आहे जानी तन दर तन धररे देना नादर दर नारे
नारे जा जिन जिन तन तेतु नारे नाना तोर तोर
रर हर हर हर हर।
नारे नारे नारे नारे तारे तारे तारे तूरें झूंठे नर
धधा धारे॥
तनदर तनदररे देनारे झूंठे धंधे धारे धारे मिथ्या
जग-जंजारे तज डारे मतवारे नर नारायण नित नित
रर रर नरहर गिरिवर ध्यान अन्दरमें ज्ञान धर धर॥

२

वंशी बारेनि टेरो यमुना तीरवे।
सप्तसुरन बिध तीन तान लेत गंभीरवे॥
सुन धुन विकल भई व्रजवनिता सुध न रही है शरीरवे।
रूप रङ्ग प्रभु रस वस कर लीनी मुरली बजाई सखी
बलवीरवे॥

३

कैसें बनैगो यह व्रजकों बसवो।
सुन्दर-श्याम नाम नन्दनन्दन रोकत मग नहीं देत
निकसवो॥
भुज भर भरत ना डरत काहूसों मेरो मरन
लोगनकों हँसवो।
जानकीदास हार यातें मानो सीखे श्याम उर द्रग
मन धंसवो॥

सिन्धु—एकताला

कैसेके बनैगो भरवो पनियाको।
भरन न देत लेत गहे गागर रहोन कौन कांधे
कनियाँ को॥
बाट घाट मग रोकत डोरे ऐसो ढीट नन्द रनियाँको।
युगल सखी प्रभु माधुरी मूरत में व आवत अनियाँको॥

२

रघुनाथदे चरणदा नेह लगा साड़ावे।
तेनु करुणानिध कहेंदे नाम जपदा तेंडावे॥
आठ पहर तेंड़े याद बिच रहेंदे प्रेम रङ्गदी लाज रखोवे
मानु भरोसा एक शरणदावे॥

३

नहीं करणावे दुनियाँदी आशा।
दुनियाँदी आशा ओसका पानी पिया चाहे सो जाए
पियासा॥
जानकीदास आश कर उसकी जिसकी माया जगत-
प्रकाशा॥

४

गुण औगुण मेरो तुम न निहारो।
दीनदयाल लालदशरथके पतितपावनहै विरद निहारो॥
गीध व्याध गज गणिका तारी गौतम-नारी अजामिल
तारो।
आए शरण चरण यह यश सुन जानकीदास अधीन
तुमारो॥

५

चोट बुरीवे नैनादी यारवे।
जिस तन लगी सोई तन जाने छरदम आय पुकारवे॥
बिन देखे सानु कल नहीं पड़दी पल पल जीवदा
बेकरारवे।
जानकीदास निमानेनु रखले दे सांवल अपनो
दीदारवे॥

६

आज बधाईयाँ माई अवध नगरमें।
राणी कौशल्या सुत जायो मङ्गलचार होत घर घरमें॥
अतिआनन्द भई पुरवनिता कञ्चन-थार रोचन
लिए करमें।
जानकीदासको आश भई पूरी गावत आवत डगर
डगरमें॥

७

द्रगनमें लाग गयो मोरे सांवरे।
सलूनो सुन्दर मूरत बांको चितवनि तिरछो नैन वारे॥
लछनदास तलफ तलफ नहीं बिछुरत घड़ी पल
छिन प्यारे॥

८

लाग्यो मन विपिन-विलासी सों ।
मृदु मुसक्यात जात कुञ्जनमें डारि नेह डोर गल
फाँसीसों ॥
सुन्दर-श्याम मोहनो मूरत कहियतहै गोकुल-
बासीसों ।
जानकीदास रसिक व्रजमोहन कीनो बिना मोलको
दासीसों ॥

९

नमोस्तुते वृषभानु दुलारी ।
महिमा अगम निगम क्या बरनै अखिल लोक एक
ब्रह्म मुरारि ॥
अतिउदार त्रिभुवनके दाता मोहनी मूरत रसिक-
अपारी ।
ख्याल खुशाल सकल बन आए नाम नेत श्रीराधा-
प्यारी ॥

१०

जै श्रीराधा प्राण पियारी ।
राजा महाराज त्रिभुवनकेहो वृन्दावन कुञ्ज-विहारी ॥
सेवक पर नित प्रसन्न रहतहो देत सिद्ध नौनिद्ध
अपारी ।
ख्याल खुशाल निधान ज्ञानके ध्यानी ध्यान भगत
उपकारी ॥

११

अनोखे छैला इश्क लगा तेड़े नाल ।
नैनन भरी मोहनी मोहन दिठीयाँनी ख्याल खुशाल ॥

१२

हठ नहीं कीजे मान लीजेनी हठीली प्यारी ॥
वचन अधीन मदनमोहन पिया यह श्रवण सुन
लीजे पिया प्यारी ॥

१३

अति सुकुमारी मिल मोहन सुख दीजे ।
मिलो खुशाल श्याम तन भावन अधर-सुधारस लीजे ॥

१४

मोररी चहूँ ओर बोलन लागी ।
काली घटा दामिनी दमकावत तैसीय पवन झकोरे ॥
पिया कहत पपीहा कोयल कूकत है बरजोर ।
उलहे गुण चित प्रेम प्रीतके निरखन नन्दकिशोर ॥

१५

नेह कामणु लग रहा चसका कब होहै मेरा यार
बसका ।
ख्याल खुशाल भरे नैननमें देखनकों सोणा सोलह
बरसका ॥

१६

नेह कियातो तू जानोनो बाले ।
नैन मिलाकर मोनें लगाले ॥
ख्याल खुशाल दिखावनो माने वंशी बजाकर जीव
जिवाले ॥

१७

देख नजर मरवो मेरे प्यारे ।
घायलहै तेरे नैनाके मारे ॥
लाग रहो गले हमारे दिलवर ख्याल खुशालोंसे
होना जुदारे ॥

१८

जपदियाँ तेरा नाम साईयाँवे ।
तानें भी देंदा वारीवे झड़केभी देंदा वेमियाँ पुन पुन
करदे मुखदी आइयाँवे ॥

१९

नजारा जटियाँदा यारवे ।
सीख ताँड़ो भानले समझ साइयाँ शोरी फिर सकदे
मेरे यारवे ।

२०

मियाँ तैनु किन सिखलाइयाँ विरहदी चोरा चोरी ।
गलांवे मियाँ चोरो चोरी आँदा छिप छिप जाँदा
मानदा नाहीं गलाँ शोरी ॥

२१

छैला जोर जोर करदा माँड़े नाल दिलवरियाँ दिलवर
साड़रे नालवे ।
हम दमकर दिलवर कोई किसोदा किस दोवे ॥

२२

झम झम झमके वालानो मान करेदा लटकेंदड़ा ।
ऐंड़ी बेंड़ी जुलफ़ैं घूंघरवाला चीरा जरीदा
सोनहरी गल मोतियाँदी माला लटकेंदड़ा ॥

२३

इश्क लगाकर मारणा आशिकनु कोजनु अपना
जानके ।
तीखी अदा तानुवे किन सिखलाइयाँ शोरीन योंही
जीवे कर डारनी ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

यार अल्लावेमें तेरियाँ तेरी माड़े सायवांवे ।
पार पुनदेवे डेरेनु आयावे मियां सकरवा ठानीमें
तेरी तेरीवां० ॥

२

प्यारेनु जी चाँदावे हांजी दिलदा महरमनुंही अल्ला ।
एसा गम खाना शोरी तुहीं वेहरदम करिए
नई नई चाह ॥

३

मांरे राझणनु इश्कदी बान पई बिच झेले कोई
ल्यावोनी ।
हीर निमानीदा सांवला सजन मैनु आन मिलावोनी ॥

४

रङ्गीली सेजां मचल रहोजो म्हारो राज ।
तू म्हारे डेरे आइलो साहबां जोवन भरीलो
साहंबा राज ॥

५

आइयो बलमराज माड़े डेरेवे ।
मैतो तनु देदी दुहाइयां वारी जांदे सौसौ फेरे रहना
माँड़े डेरेवे ॥

६

गगरो मोरी काङ्ग फोर डारोरे ।
रसिया छैल छवीलो नन्दकोहै यह बड़ झगरारीरे ॥

सिन्धु—तिताला

विजली चमकी देखरी यह पीरकी ।
छाई घटा नैननमें नामदार बरस रही थम थमके ॥

२

नाहक जी तरसाया अनी मेरावो ।
आपन आवे वारो वे ना लिख भेजें मियाँ सांवलो
सूरत देखलाजा अनी मेरावो ॥

३

बदनामी कजरा ना देहोंरे ।
ए कजरा मेरे मदकैसे आया जल जल मरे गुइयाँ
ननद जेठानीरे ॥

४

तेंड़ी याद लगीरे मेंड़ा प्यारा रैनका ।
मैं क्यों कर मन समझाऊं आवे सइयाँ गले लगजा ॥

५

मेरा रावलावो मैं तो माहींदी कारण लुटियां ।
जावोनी कोई मुड़ ले आवो हीर निमानीदा छुटियाँ ॥

६

हीरेनु कोई आनके मिलामो लोकाँ ।
यारवा कोईवो आनके मिलावे मेरा मियाँ हीर
राँझिदा गुमानी रङ्गभीना लोकाँ ॥

७

बना तेरा सेहरा गुँध गुँध ल्याई सेहरा गुँध ल्याईरे ।
हाथन मेंहदी पायन मेंहदी मेंहदी रङ्ग लायोरे ॥

८

खटका रहंदा दिलनु यार जब लग नहीं मिलदा
मेरा प्यारा ।
इश्क महोब्बत नाल उमगजा जुलफौं नाल अटका
रहदा मेरा प्यारा ॥

९

दारुड़ोवो पीव न अपनाहो मारुड़ा नाई झकलाई
हुणछे ।
सङ्ग मधको भरा चङ्गड़ा सौतन राते माते कहियो
करछे आज लालन घरवे रुड़ाछे ॥

१०

नजारांदा ढोल फन्द नैनादी ।
एक चंदा दूजे गरजी नैना आन पड़ी बस तेरी ॥

११

याद लग रहंदो माँड़ी रवदी कदम ।
बांक बरस कहे कोई नहीं दीना कासों करूं
फ़िरियाद कौन सेदेंदा माड़ी दाद ॥

१२

सांईदी आशा वोसुन रहना नरकी शरण सुन क्या
मन गहना ।
बांक बरस कहे मुझे राम वे दुनियांदा रोगसे कछु
नहीं सहना ॥

१३

साँइयां तू माड़रे बेलीवो ।
आरत जोबन राते माते महबूबां पीराँदे सदारङ्ग
औरफिराँदियां नवेलियांवे ॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

लोटत आङ्गनमें लला मचले नन्दजीके पारब्रह्म
रज अङ्ग भरे ।
इन्दु, विन्दु, छवि देख महाप्रभु मांगत महरिसों
अरुण अरे ॥
ग्वाल बाल सब आनि खिलौना आपन आपन
आन धरे ।
लेत नहीं मांगत शशि तारे सुनत रोष जिय डरन डरे॥
चूम चाट उर लेत यशोदा थिर न रहत प्रभु गोद परे ।
लोटियन करत लटुरियां लटकत लपट झपट
हरि होत खरे ॥
रोय रोय हंस देत छिनक छिन लोग गोकुलके
मुदित भरे ।
सूरदास बलिजात यशोमति आय जोगिया शिर
चन्दधरे ॥

२

बारी बारी जावाँ असी प्यारेनु मनावाँ ।
हाँहाँ हाँ हाँ वा ।
बेसर जेहर पायल बिछुवा अतर गुलाब बहावां ॥

३

दुखके फन्द परोगे मत करो काहू सङ्ग प्रीत ।
कमलके भीतर भँवर मुदानो चार जाम गई बीत ॥
जीव दियोपै पातन काव्यो बुरी प्रीतको रीत ।
सोणादासो विलासी सांवरो कब मिलहो मोहन मीत ॥

४

अलबेलड़ावे केसर भीनानी मैं जादियां
शाम मनावणनु ।
गड़दे सोनोड़ा सोनेदा गजरा मोल करे नोशावना ॥

५

नैन माहींदे तारने वो भला सानु मारणे ।
की करो कीथे जावों जातो मेरी सइयों किस विध
कहर गुजारने ॥

६

झिड़ातो नेड़ावे कमलोदे नाल ।
राह चलेंदे तेंनु देंदे दवाइयाँ सुखानो वसे तेंड़ा खेंड़ा
मेंड़ा वो तू बूझवे बेहाल ॥

७

लाज सनेह पड़ो झगड़ोरो ।
लाज कहै यह नेह कहाहै नेह कहे यह
लाज जरोरो ॥
झगरत झगरत सब निश बीती निपट्यो नहीं आयो
फजरोरो ।
चन्द्रसखी यह लाज बाटहै आखर नेह बड़ो गरोरो ॥

८

वंशी बजाय द्रग सैन चलाय नन्दलाला जान ठगीवे ।
बिन बेधे सानु कल नहीं पड़दी जानकीदास हरि
प्रेम पगीवे ॥

९

पयावे साड़े दिलांदा एहो सुभाव ।
और रूप जग बिच नहीं भाँवदा रामरूप वेखणदा
चाव ॥
लागी लगन छूटे नहीं सजनी करो कोई कोटि उपाव।
जानकीदास घनश्याम मिलनदी यह तन रहोके जाय॥

१०

मन लागोजी श्यामा-श्याम विलासीसों ।
भोर भए निशि बीत गई सब रविकरकिरण प्रकाशी॥

पँछी जागि बोलन लागि दरसन भए अविनाशीसों ।
युगल छबीले छबि पर बल गई चन्द सखीसी दासीसों ॥

११

घूंघटको पट खोलदे तोकों राम मिलैगो ।
सब घट रमता राम रमैया कटुक बचन मत बोलरे ॥
धन जोवनको गर्व न कीजे झूंठा पचरङ्ग चोलरे ।
सूना मन्दिरमें दीपक बालले आशाकों मत डोलरे ॥
जोग जुगत सुरङ्ग महल पिया पायो अनमोलरे ।
कहै कबीर आनन्द भएहैं बाजत अनहद ढोलरे ॥

१२

तोरे मुख पर नागण उरझ रही सुरझायजा वे
महरम यार ।
उरझत सुरझत गोकुल नगरी इन नैननमें लाजरे म० ॥

१३

मनमोहना मेरो मन हर लीनोरे मन हरलीनों मेरो
चित हर लीनो ।
आपतो जाय कदम चढ़ बैठे वसन हरे सब
तेरे भइहों आधीनो ॥

सिन्धु काफी रेखता—तिताला

मनमोहनका मुख देखतही मेरे नयनमें छबि छायरही ।
तन क्षीण भयो मत हीन भई मन हेरत आप हिराय
रही ॥
अब सोच किये कहा होत सखी जब प्रेम फन्दे
बिच आय रही ।
मुखसे अंचरा जब दूर कियो जब जोतमें जोत
समाय रही ॥

सिन्धु काफी—तिताला

कृष्ण कथा रसरे मधुर बहु ।
सेवी लाचो सेवीतो सजन परी कहींही न सरे ॥
जा यार सयाने संसारत्वनी पाई चीहा निसरे ।
अमृत फलसे फलित भइली दैहिक ताप सरे ॥

२

दीजे दान गोरी करत श्याम झगरारी ।
या मारग नित आवो जावो बेचनकों दहियारी ॥
दान हमारो देतन ग्वालिन जात चलोकर चोरो ।
कैसो दान होतहै दधिको काननइ न सुनोरो ॥
दान दिये बिनजान न पैहो नन्दराइको शोरी ।
काहेकों रार बढ़ावत ग्वालिन जोवनको मदजोरी ॥
तुमतो छोटा नन्दरायको हम वृषभानुकिशोरी ।
सूधी गैल चलोजा लाल मतकर बतिया भोरी ॥
या व्रजमें बसत रहत बावरी एसे जान कहोरी ।
देउ चुकाय अभी सब दिनको चाहत बास बसोरी ॥
छोटे गात बात बड़ी बोला बहोत करो जिन थोरी ।
जोकहुं कंसराय सुन पावै जान परे बरजोरी ॥
ग्वालिन गारि सभारिन बोलै डारूं मटकी फोरी ।
बरुण कुबेर इन्द्र जाय डरपे कंस बापरो कारो ॥
यह सुनि सकुच ग्वालिनी सनमुख ले माखन कर-जोरी ।
सुन्दर-श्याम विहंस कर लीनो बाँध प्रेमकी डोरी ॥
यह जो चरित सुने और सुमरै ताको भाग बड़ोरी ।
कृष्णरङ्ग दधिलीला गावै ले सुख सिन्धु हलोरी ॥

३

लगी श्याम-तन धूर सुहावन ।
मानहुं बह्यो जमुन-जल ऊपर सुभग सलिल
सुरसरो जगपावन ।
मचलि परे नृपके गोदीते झपट जसुमत हँसि
लगीहै उठावन ॥
मानत नाहीं तबहुं कनियाँतें धरणी लोट पग
ढुमको बजावन ।
उड़गन चन्द्र मागत बरीआइ देहो जननी मोहि
आन खिलावन ॥
मणि खँभन प्रतिविम्ब लखावत तबहीं बन्धुचारो
उठ धावन ।
हरिप्रसाद उर बसहु राम-पद अरुण-कमल अघ आघ
नसावन ॥

४

को जाने मिलना कब होहो ।
यातें हिलमिल हरि भज लीजे कीजे गरभ गुमान
न कोई ॥

नरतन पाइ विचारहुरे मन कृष्णानन्द सिखावत जोई ॥

५

आलीरो अति राजत अलकैं ।
मैं सुक मृदुल मनारथ सुखपर गोपद-रज छबीली छवि छलकैं ॥
लटकन लटक रहे अधरन पर ताकी हिलन हिए बिच हलकैं ।
जुगल सखी ऐसे प्रभुहो मिलनकों निशदिन रहत हिए बिच ललकैं ॥
अतिशय क्रान्त कनक कुण्डलकी लगी लगी लोल कपोलन रलकैं ।
देखत बनत वरण नहीं आवत तन मन हरत परत नहीं पलकैं ॥

६

जावाँदेरा इस साँवरेसों कौन बोले ।
हमरी ओरसे औरको हमसे झूंठी बात लगावत डोले ।
प्रीतकी रीत कछुअ न जानो छाक बराबर माँखन तोले ॥
और सखियनसों हँस हँस बोले कपटी कपटकी गाँठ न खोले ।
सूरश्याम राधे सुख मोरे मत भूले कहुं गुजर भोले ॥

७

गोपाल पियारे तैंने भलावे कियारे ।
खड़ोवो पियासो तेड़ो अखड़ोयाँ न जीव जिवावन दरस दियारे ॥
उमरदराज, गरीबांदी दोस्ती है दिल महरम सबाब लियारे ।
आनन्दघन व्रजजीवन जानी कुरवानी सुख वेख जियारे ॥

८

सुन एरी सखी आज विलम रहे कहुं कान्हा ।
हमकों कहत तुम पलँग बिछावो उनको बात हम माना ॥
आवन दे पिया अपनी बार कहुं नित उठ ठग ठग जाना ।
सोलह सिङ्गार बत्तीसो आभरण अङ्ग सजे मन ताना ॥
हँसत खेलत व्रजकी सखियनसों अरी बतो करिहै बहाना ।
सुन्दर-श्याम कमल-दल-लोचन नन्दमहरजूको छोना ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहत कुण्डल झलकत काना ।
साँवरे मुखपर तिलक विराजे जासों लग्यो मेरो ज्ञाना ॥
वंशी बजावत गावत नीके मोहे हमारे प्राणा ।
सूरदास स्वामी तेरे दरसकों चरण-कमल लगो ध्याना ॥

९

मेरा मेरावे गोरीदा जाँनीवे ।
पलकांदे नाल बहारो गलियाँ सेज राभणदी ।
मैं बिछाऊं कलियां ।
नेह लगाकर ढूढ़ी मैं गलियां वे आवेगा साजन
माँड़े रङ्ग रलियां वेखो सइयोंनो गोरीदा जा० ॥

१०

ठगो ठगो मन मेरो जियरा ।
रात देहा मानुवे ध्यान तुसाड़ावे टुक सुखड़ा
वेख लायजा हियरा ॥

११

बोल सुनाय जावे सइयों सानु भांदे भांदे ।
सहर पुन बीच वेलाभी भांदे सुन शोरो शरमादे जांदे ॥

१२

माड़ी जिन्दनोनु कल नाहीं पैंदो तेंड़रे देखणदे
मैनु तांड़े महाल भया असानु ।
का दर जाने सचाए अता महम्मद इश्कदा झेड़ा
अगाहे वेदरदांदे दिलनु ॥

१३

होजटीदे जादु नैनां ।
सैन चलांदे तीर नजरदे गुजरदे पारावार सोणा ॥

तोदा तो फाँन कमान भौंनी अटके अटक खटक
दिल ले जांदा शोरी सरकार सोना ॥

सिन्धु—तिताला

मोही मोही मोही तेरी चालवे दुपट्टे वारे ।
दावन लगो वारोवे शरम तुसानु सानु ज्यों
भामी त्यों पालरे ॥

सिन्धु, धीमा—तिताला ।

ओ छैला मानु न छेड़वे केही वान पइ सुन दिलवर
मेरे ।
इश्कदे कारण बदनामी लौती पाक नजरते
सिखलाइयाँ अपनी अपनी वेर हो० ॥

सिन्धु—तिताला

मैं तेड़ियांवे नैना वाले यार ।
मांड़ो गइयाँ जिन्द तेरी लख फेरोयाँवे यार ॥

२

गुमानो चीरे वाले यार मैं तेरियाँवे लाग गइयां
सेंद विरहदी ।
चीरेवालेनु आनके मिलामो शोरी बार बार जिन्द
लख फेरियाँ ॥

३

याजटो मुश्ताकमें तेरी कदी तू साँवल करी फेरा ।
कदी तू आन मिलो रव साइया कदी तू कर साड़े
आँगन फेरा ॥

४

जप दियाँ तेरा नाम जांनोवे ।
रैन देहा मेनु ध्यान तुसाड़ा वे सियाँ पुन पुन कहक
दोयां आइयां ॥

५

सांग चलाँदियांवे नैनावाले मियां ।
शोरी मानु लग गइयाँ सांग विरहदी ॥
भूल जावे साड़ा दुख वेतुसी करम करो रब साँइया।
करम करो तुसी फल करोवो शोरीनू आनके
मिलायजा ॥

६

मैं तो जानदी भी नहियां तेंड़े खेड़ा किस गुण लाया
साथी अपना नेड़ा ।
तूं अपने मैं अपने खेड़ेदा मनरङ्ग किसनु भले
लगदा विरहदा उलझेड़ा ॥

७

तुसी आजा साड़ी जांन मियाँवे ।
बांके नैनादी रमझा माहीड़ावे ॥
की होया साँड़े नाल मियांवे
आँखी लगी तेड़े नालवे बाँके नैनांदी०॥

८

करदीवे याद करदी आड़ावे मैं तक रहियाँ
बूहेनु दरद वाले यार ।
शोरी उठदा दिल बिच धुंआं विरहदा मैं तो मरदी०॥

९

रखिए लाज रुद्रानीजो मेरी ।
आदि जनमकी तारण तुंही याते तू सर्व्वानी भवानो ॥

१०

मुलक मौला दानी वेराभरण जानी यारवे भलीवे
मिया ।
नौ बहार साँई जीवानो तुं माँड़वे सुख बसे
सुलतान भलावे ॥

११

माहीदे नाल चलेस्यां तु मांही जिन्द मोहीवे
माँड़ी कदराँवे मैं भूलीवे ।
मौली मैंड़ी थान ते तलवट नानो वेपुन दस्त रङ्गेस्यां
मैं वारीवे ॥

१२

बिलोचो माड़ी जानवे कुहांड़ा मेंड़ी जानवे
मै मोहीवे माड़े यार ।
आमिली तो जोवां मांड़ड़ा यार नाहीं नाहीं तो
फिरां दिवानो मैड़े प्राणवे ।

१३

इश्क लगा कर वेपरवाह होदे नाहियांवे ।

दिल भीतर बना आँदा शोरो बिखियाँ रखियाँ
पाक महोब्बतवे ॥

१४

भूलदेवो विरोहोदे नैन मियाँवे नाहियाँ ।
चन्द जहां सुखड़ा बाग बहार वेमियाँ शोरो
उसदे उकदे नाहियाँ खुल देवे मियाँ ॥

१५

नैनन जोरदीवे मांड़ा दिल ठग लोतावे ।
तेज नजारेनु दिठीया तू शोरो यार मैनु बस कीतावे ॥

१६

भला बेदरदो यार करदा क्यों दिलवर साड़े
नाल जग्रों भामो त्यों पाल ।
बिन दीठे सानु कल न पड़ेदी मोहन मदनगोपाल ॥

१७

माहोवालावे कदोतु सांवल वेख जरा मैनु मत
छेड़ मियाँरे ।
तरतर विनुवे मैं भी तु आइयाँ मियाँ सोणा
कर चाक रंझेटा शोरी मियाँवे ।

१८

नजारा झंगदा करदावे परियाँ जहरिया जटिया
नाल नैन लड़दे ।
चन्द्र जेहो अक्को भलियाँ दिल बिच बसेदियाँ
इश्कांदे लहरां बिच तरसेंदे ॥

१९

रंझेटा सानु आमिलो सोणा जिन्द जानो ।
तैड़े कारण वारो सब कुछ छडियां बिन वेखे इश्क
बहानो ॥

२०

सुध लाग रही तेरे आवनको ।
छाय रहे तुम जाय विदेशवा आय गई ऋतु
सावनको ॥

२१

तरगइयाँ राभांवेतभी दिलदा साभांवे यार ।
वेखण गए मुड़ आप वेखणोना कोई सङ्ग सनेहा
वेयार ॥

आशिकानु माशूक मिलीया फिर घर आवन
केहावे यार ॥

२२

लाग लगामी वे लड़के में जटोकी समझाई ।
तिरछी भौंह नैनन तक मारी इश्कदी सांग चलाई ॥

सिन्धु—धीमा तिताला

ढोलन मद साजिए माड़ी घोलोवे उमर
केशर भीनी माड़ी चोली ।
सइचूरी वदस्ते आनगारे नाजनो दोदम ।
वसाखे सन्दलो पेचो इमारे अमरो दोदं ॥

२

ताड़ी याद रहंदी हांवे रहंदावे भला गुमानो ।
तेरी सोहवे जालम यारके इश्कदाहो मैनुहो सें दावे
भला गुमानी ताँड़ो ॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

ललित लतन तरे बिच सुसुकावै ।
निरखत वृन्दावनको शोभा नवल-द्रुमन फल फूल
लखावै ॥
बोलत पंछी रङ्ग रङ्गके कुञ्ज-निकुञ्ज विशाल दिखावै ।
बन-कुसुमित अवनी सुख राजत दुति ऋतुराज लख
सकुचावै ॥
गावत सङ्ग सखी मधुरे सुर वीण मृदङ्ग कानून बजावै ।
यह सुख यह सुख केल विलोकत दम्पति निशदिन
ख्याल खुशाल सोहावै ॥

सिन्धु—तिताला

श्रीराधे मुख इन्दु उजारो ।
छाय रहो छवि वृन्दावनमें कुञ्ज-निकुञ्ज ललित
प्रगटारो ॥
कोवरने कवि निजसुख महिमा पावत न भेद वेद
विचारो ।
त्रिभुवन नायकके जीवन-धन मोहनो सकल विश्व-
उजियारो ॥

बस होरहे चराचर जाके मो वृषभानु-कुमार-दुलारो।
ख्याल खुशाल सकल सुखदाता मूरत मोहनी नैन
निहारो॥

२

बिपिन-विहार करत पो वो प्यारो।
कुञ्ज कुञ्ज छवि पुञ्ज विलोकित फूल रहो जित तित
फुलवारो॥
नवल वेश नई नेह उलझ रहे ऋतु रसविलस
विलास अपारो।
मृदु मुसकात कदम तले ठाड़े रूप-रास
गलबहियां डारो॥
अति उनमत्त नयन-रस वरसत अङ्ग अङ्ग राजत
सुकुमारो।
ख्याल खुशाल विलोकित चहुं दिशि मोहनी
मूरत मदन-मुरारि॥

सिन्धु धीमा—तिताला

सुनो श्रीवृन्दावन बासी।
यह विनती सेवक अपनेको प्रभु सर्व्वज्ञ सकल-
गुणराशी॥
दरस लालसा ललित देखनको अन्तरयामी
प्राण-हुलासी।
अति-उदार तिहुं लोक-उजागर त्रिभुवन-नायक
विपिन विलासी॥
सब वरणे गुण सकल तुम्हारो शेष, शारदा, जिनको
राशी।
वेगही होहु प्रसन्न मनोहर रसिक खुशाल हिरदेके
निवासी॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

मुरली मोहन अधर धरे वृन्दावन चन्दरास करे।
बोले सब हरे हरे गावत सखी रङ्ग भरे॥
मधुर मृदङ्ग मुरली तान सप्त सुरन सुरन स्वर बन्धान।
बाईस सुरत मूरछना युत ताल काल युगत प्रमाण॥

सिन्धु—तिताला

रजनी विरहनि वियोगी राधाकर लीमे ए सारङ्गी
बजावत।
हरिस्मृति हीन तास रिपु पति बिन ता अरि बंधुही
तू नहीं आवत।
हाहा लिखि मदन काग लिखो कोयल लखि
पन्नग मरुतही भरमावत॥

२

जधो हरिसों कहियो सन्देश।
नन्दराय दृग सजल रहतहैं यशुमत अधिक कलेश॥
गोपी ग्वाल सबहैं व्याकुल तज्यो चाहत यह देश।
सब सुध आवत कुञ्ज भवनकी मोर-पंखको भेश॥
सुरपत कोप कियो व्रज ऊपर नखपर धर्यो नगेश।
सोतो गुण समझ समझ नहीं विसरत हरिप्रसाद
परमेश॥

२

पैजनियां पग पाँय मनोहर।
चलत श्यामघन बाजत राजत निरख विनोद मगन
मोहे सुर॥
अरु मन मुदित यशोदा रनिया पाछे फिरें गहे
अङ्गुली कर।
मानो धेनु बन छाँड़ि बच्छ हित प्रेम पुलकी पय
श्रवत पयोधर॥
कुण्डल लोल कपोल विराजन लटकत ललित लटैयां
भुवपर।
सूरदास अवलोकनको सुख किलकात हँसत
गोपाल याके घर॥

सिन्धु काफ़ी—तिताला

भजहु बहुत सुख होय रामकृष्ण नामकों।
राम लियो औतार अयोध्यापुरी सुहाई।
मथुरा कृष्णको जनम गोकुल रहस बनाई॥
राम धुक्कक दिनके बीतेहति ताड़का जाय।
कृष्ण पूतनाको वध कीनो अनसुखही लगाय॥

राम जनकपुर जाय सहजही शिवधनु तोख्यो ।
कृष्ण पैठ पाताल नागधरके मन मोख्यो ॥
राम जीत परशुरामकों सीय व्याही बजाय ।
कृष्ण रुक्मिणि व्याह ले आये शिशुपाल लजाय ॥
राम देवतन काज पिताके वचन सिधाख्यो ।
कृष्णतो अक, बक, तृणावर्त्त आदि कंस घास्यो ॥
रामचरणके रेणुतें तरी अहिल्यानारी ।
कृष्ण आप कुवरीसों रोझे भई सखियनमें प्यारी ॥
राम निषादही तार प्रेम अतिसे सुख दीनो ।
कृष्ण अहीरन बाल झूंठन सब लीनो ॥
राम बसे पञ्चवटीमें लक्ष्मन सीय समेत ।
कृष्ण जगतको भार उताख्यो भेंटे कुल कुरक्षेत ॥
मारे रामजी खरदूषणकों त्रिशिरासुर बहोत खाय ।
हतो कृष्णजी जरासिन्धे वैरी सत्रा खेत चढ़ाय ॥
राम किये वहु सखा भाल बन्दर समुदाय ।
कृष्णतो वृन्दावन गोप गोपिन रिझाय ॥
राम-कृपा हनुमान घर बुधि बल कहो न जाई ।
कृष्ण अरजुन रथ पर बैठो भारत दियो जिताई ॥
सागर बांध्या राजजाममें कटक उताख्यो ।
कृष्ण गोवर्द्धन आदि इन्द्रसे वृजही उबाख्यो ॥
राम रावणही मारके लङ्का विभीषण पाय ।
कृष्ण कंस निकंसकर उग्रसेन बैठाय ॥
राम अनुज सीय सहित यूथ निजपुर पग धाख्यो ।
कृष्ण मथुरासे चले द्वारका जाय सवाख्यो ॥
राम कृष्ण औतारकों विरला पावै भेद ।
मीषकों बल एक ब्रह्महै नाम उपासन देव ॥

सिन्धु—तिताला

एजानीड़ा तोरे बसमें मैं आईरे ।
हो हो हो ।
आपतो जाय कदम पर बैठे अबतो तेरो सबही
बन आईरे ॥

२

कौन बातको कोजे परेखो ।
ना हरि जात न पाँत हमारे कहाँ माने दुख लोजे ॥
वसुदेवजी देवकुलके दीपक वन्दो जिन विलमाए ।
नन्दनन्दन गोपीजनवल्लभ गा हरि कान्ह कहाए ॥
नाहिन जोरे चन्द्रिका माथे अरु नाहीं बनमाला ।
अब सुनियत भूपने भूपत सुन्दर श्याम-तमाला ॥
अब नाहिन घर बनको नातो बसत एकही अङ्ग ।
सूरदास मिटगई सगाई वा मुरलीके सङ्ग ॥

३

तेरे नामको अधारा तेरे० ।
भक्तनको पक्ष कीनी आन खंभ फारा ।
हिरणाकुशकों मार प्रहलादको उबारा ॥
मेरो मेरो करत फिरे रैन दिन बिसारा ।
राम नामसो टेक और धन्धका पसारा ॥
गैंद कारण कूद परे कालो नाग नाथा ।
हस्तीके दन्त तोड़ कंसको पछाड़ा ॥
द्रोपदीको लाज करी अखे चार बाढ़ा ।
भीलनीके बेर छुए कीनो निस्तारा ॥
दुष्टियोंको मारके सन्तोंको उबारा ।
लङ्का गढ़ घेरे राज छिनकमें बिगारा ॥
सूरदास सुरत लागो रामजी रखवारा ।
मोर-मुकट शीश धरे नन्दकादुलारा ॥

४

भज मन त्रिभुवन-नाथ मुरारि ।
भूलो फिरत असार जगतमें हरि सनेह सुख-
ललित विसारी ॥
जाके चरण-शरणको महिमा गावत चवदेभवन
मझारी ।
तेही चरण-शरण क्यों न आवै त्याग कुमत मन
सुमत विचारी ॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक नारद शारद
पावै न पारो ।
ऐसे प्रभुको विसार कहाहै हो खुशाल प्रिय
कुञ्ज-विहारी ॥

५

एकहो ब्रह्म सकल जग छायो ।
देखत सब कोई चीन्हत नाहीं वेद विधाता
पार न पायो ॥
जाको लीला अपरंपारी सोई-बृजराज कुमार कहायो ।
रूप मोहनो नाम कन्हाई सुयश सकल लोकनमें
गायो ॥
दीन-दयाल महासुखदाता भक्त हेत आकर प्रगटायो ।
निशदिन ख्याल खुशाल करतहैं जाको ज्ञान
ध्यान लगायो ॥

६

कौन ले गयोरी मेरी दधिको मथनियाँ ।
ढूंढ़न चली गोपी ग्वाल सङ्ग केते जनियाँ ।
जाय लख्यो नन्द-गृह यशोदाजीकी कनियां ॥
कोमल वदन चरण कमल बाजें पैजनियां ।
कटि-किङ्किणी लसे नाक नाकमें नथनियां ॥
सर्व्व जीत जात लख्यो पीत वसन तनियाँ ।
रूप देख भूल गयो माँगोवे मथनियाँ ॥

७

अँखियाँ बार बार तरसे बिन देखे बालम बाँका ।
हाहारी मोकों या विरहा पीड़ित आय आतँका ॥
दिन नहीं चैन सखी एकी पल उठत इश्क और दाहे
दमंका ।
हस्तराम हरि परस बिन मिटत न चोंप चमँका ॥

८

तेरेने ताहो स्वरूप निगम नेत गावै ।
भक्तन वस श्याम-सुन्दर देह धार आवै ॥
योगी, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी, सुपने नहीं पावै ।
नन्दघरनी पकरके बाँधके नचावै ॥
गोपीजन प्रेम आतुर सङ्ग लिए डोले ।
सुरलीमें नाद सुनि गृह तज बन डोले ॥
सुश्रुति शास्त्र पुराण करतहैं विचारी ।
परमानन्द प्रेम कथा सबनसों न्यारी ॥

९

बस जो न करो ऐसेको नन्दके ।
मानहु श्याम-भुवङ्ग डसी शशिवदन बिलोकी
हँसी मंदके ॥
गोकुलको सुध नेक नहीं दरसे दृग गोकुलके चन्दके ।
वीर न धीर परे तनकों तनकों न संभार पड़े छन्दके ॥
यन्त्र मन्त्र कछु न लगे कुछ नहीं होत दिए बन्धके ।
युगल सखी न करो च करी न परी न परी अकरें
फन्दके ॥

१०

प्रीतकीरी यह रीत निराली है ।
कोजाने वृजनवलसुन्दरीको नन्दलाल विहारीहै ॥
कोजाने सरसतिय चढ़ीजे पतिके काज लाज तज-
डारी है ।
प्रेम मगन जब भई पियासों जरी बरी भस्म भई
पिय प्यारी है ॥
गूँगाकी गति गूँगे जाने क्या जाने कोउ वेद
अनारीहै ।
युगल जानत बालकको वेदन कहा जाने कोउ
बांझ बिचारीहै ॥

सिन्धु काफी—तिताला

भजले राम सवेरा हो मन ।
जनमत बढ़त घटत तन छिन छिन निशदिन होत
अवेरा हो मन० ॥
अजहुँ न चेतत अन्ध भयो मूढ़ आगम होत अँधेरा ।
धन परिवारकाम न ऐहै होइहै कूंच जब डेराहो० ॥
तब कहा करिहो प्रीतम प्यारे जब जम देहिहै तरेरा ।
गावै गूदर जब आन बजो शिर बस न चलो कुछ तेरा ॥

२

जाके राम न लागे अन्तरहो ।
वेद पुराण शास्त्र पढ़ पढ़ योग युगत सब जन्तर हो ।
जबतें कह्यो समझाय सतगुरु भूल गयो सब
मंतरहो ॥

पाँच पचीस तीनकों मारि तब घर बैठो सतन्तरहो।
गावे गूदर गोविन्द गुरु वलिहारो साध सङ्गत कर
निरन्तरहो ॥

३

मन मस्त भया तब क्यों बोले।
घटता था जब चढ़ा है तराज़ पूरा भया तब क्यों तोले॥
हंसा पायो मानसरोवर मोती तज काङ्करको क्यों ले।
तेरा साँई है तू माहो बाहर नैनाको खोले॥
इधर उधर काहे भटकत मनुवा कृष्ण भजन अनमोले।
सूर सागर नित भरोई रहतहै ताल तलैयामेंरे
क्यों डोले॥

४

कुञ्जनमध निरतत वृषभानकी दुलारी।
व्रजवनितन कियो साज, सङ्ग लिए कृष्णराज,
झिलमिल सब नाचत गावत पुहमी पग धारी।
भूषण बहुभाँत कियो, शीश मुकट तिलक दियो,
उपमा कवि कौन कहे रवि शशि कोन न्यारो॥
बाँसुरीकी सुनत बोल, चवदे भवन गयो डोल,
अज, महेश, शेष, शारद, गयो ध्यान हारो।
गोकलके धनहैं भाग, जनम कृष्ण लियो लाग,
गावत गूदर वेद चार कहत वारो वारो॥

५

भजले सीताराम अब तेरो दाव बन्यो है।
लख चौरासी भ्रम भ्रम आयो कबहुं न पायो विश्राम।
मात, पिता, दारा, सुत, बंधु, कोइ न आवे तेरे काम।
चरणदास चरणनको चेरो राघोजी सारेगो तेरे काम॥

६

रामचन्द्र-पद भजवे लायक भजवे लायक सब सुख
दायक।
अभय करण भव-तरण पोत ढिग युग युग साखी।
वेदके बायक॥
चिन्तत चरण सकल फल करत व्यापक सबहो
पाप नशायक।
सन्तनको रक्षाके कारण निशदिन लिए रहत
कर शायक॥
गौतमघरनि, गज, ग्राह, तारण शरण विभीषण
कपि जो सहायक।
सेवा अल्प मेरु सम मानत करुणासिन्धु अयोध्या-
नायक॥
शिव सनकादिक वेणुधरशारद शेष विमल यश
गायक।
जानकीरमण भक्तवत्सल हरि अग्रदास उर आनन्द-
दायक॥

७

कहां लग हरिको मैं करूं बड़ाई।
सोते सेज लात रिषि मारो उठे सँभार चरण लपटाई॥
कुलिश कठोर हिरदो अति मेरो कोमल चरणकमल
रिषिराई।
सेना सहित करत प्रभु अस्तुति प्रेम मगन नैनन
झरलाई॥
नैनासों प्रभु रहो निरखि मुख गदगद-कण्ठ वचन
नहीं आई।
युगलदास सुख कहत पुकारि भजहु गोपालप्रिया
सुखदाई॥

८

कैसेके बिलोऊं गहे रहोरी मथनियाँ।
छोटे छोटे चरण छोटो भुज ननियां॥
वदनपे छींटे पड़ी शोभा अधिक बनियां।
हाथन हरिके कड़वा सोहै पायन घेजनियां॥
रूपके सुघर सुन्दर नाकमें नथुनियां॥
घूंघरू बन धावे हेलो ठुमक धरनियां।
देखोरी अनोखो सखो वृजमें चिकनियां॥
सूरदास बलगई नन्दजूको रनियां।
वार फेर यशुमति पोवेहैरो पनियां॥

सिन्धु काफ़ी ठुमरी—तिताला

मानहो जान कने दोनारे बालमुवा।

परदेशीकी प्रीत फूंसका तापनारे दिया करेजवा
काट तोजभो न आपना ॥
नदिया किनारे जुन्हरिया क्यों बोईरे, भुट्टा लेगया
चोर ठठेरवा यों खड़ा जान० ।
चाल जल बर जाय ताल नहीं टूटिहैरे
व्याहो खसम मरजाय यार नहीं छुटिहै ॥ जा० ॥

सिन्धु—तिताला

वंशी तान मानसों बजे वृन्दावन मध रास करे ।
श्रवण सुनत सुर नर मुनि ध्यान टारे थकित धुनि
तीन लोक मोह लिए सुख-विलास आनन्द भरे ॥
सप्तसुर तीनग्राम इकईस मूर्च्छना उरप तिरप
लाग डाट धरे ।
कृष्णानन्द आनन्दमें सुन धुन ब्रह्मादिक मन हरे ॥

२

भवसागरके भटक फेरनमें प्रभुजी तुमकों भूल रहो ।
काम, क्रोध, मद, लोभ,मोहके झकझोरनमें
झूल रहो ॥
वृथा कथा बकवाद विरहको इनसों मिलत फूल रहो ।
तिहारे चरण शरण बिन व्रजनिध योंही इत उत
डोल रहो ॥

३

लेलोरी भरि लोचन लाहु ।
सखी सयानी एक मिथिलापुरकी घर घर सीख
देत सब काहु ॥
ना फिर राम जनकपुर ऐहैं ना हम नगर अयोध्या
जाहु ।
इहये दरस दुर्लभ दम्पतिको समझ फिर मन
पछताहु ॥
नाहिन करी दार इहि औसर नारि पुरुष सबही न
निवाहु ।
मनहु कामना करि परिपूरण फिरि न होइ उर
अन्तर दाहु ॥
ब्रह्मा ईश सकल सुख राजत रामसिया कर
विदित बिवाहु ।
हरषे गगन सुमन सुर वरषे सकल भुवन भर रहा
उछाहु ॥
सुखसागर रघुवंश उजागर तिनहुं देख चकृत चाहु ।
तुलसीदास बड़ भाग वाहीको चितवत जात
जानकी-नाहु ॥

४

सदा त्राहिमां त्राहिमां शरण रामं ।
निर्विकार, निजानन्द, निरवधी विमोहन, निश्चलानं
तनित अघध धामं ॥
अखिल, अखिलेश, अव्यक्त, व्यापक, बोरज, सर्व्वगति
सर्व्वरति, सर्व्वपालं ।
दीनपति, दयापाल, कदवननिशिचराकाल, काल-
कालक कहियत करालं ॥
गुणी गुणवन्त, गुणपालं, गुणदायक, गुरुन-गुरु,
सर्व्वज्ञ ईश, ईशं ।
सच्चिदानन्द, सदरूप, संशय हरण, कोशलानन्द,
आनन्द भेशं ॥
देव देवादि जग-उदित पावन विरद रङ्कते राव
कीनो जेही अधीनो ।
राम कीना प्रणत अवधपति नाथकों आपनो
जान मोहो शरण लीनो ॥

५

अलफ एक बहुरङ्गी साँई हरघटमें बाको परछाँई ।
जहाँ देखो तहां रूपहै न्यारा, ऐसाहै बहुरङ्गी प्यारा ॥

दोहा

बजहन कहै तो कहा कहै कहिवेको नहीं बात ।
समुद्र समायो बून्दमें यह अचरज बड़ो दिखात ॥१॥
बे बिन गुरु भेद काहु न पाया, धरतीसे आकाशलों
धापा ।
पहले प्रीत गुरुतें करे, प्रेम डगरमें पग तब धरे ॥

दोहा

बिन गुण गुरु बजहनजो कोई लेतहै बसन रङ्गाय ।
यह निजके तुम जानियो वह दोऊ ओरतें जाय ॥२॥
ते सब योग तेरा बन ऐहै जब बैरी बन दुविधा जइहै ।

वही तो मनमें कपटकी ठाटी, जहीं सब खेल
किया है माटी ॥

दोहा

जो मनकी महिमय छूटे, ओ तेतिका बन्धे तार।
वजहन साहब अबही मिलत, नेक न लागी बार ॥३॥
से सावत होय ध्यान ज्यों लागे,
आपुही आप भरम सब भागे,
अजपा जाप तू जपरे भाई, छूट जाय दर्पणकी काई ॥

दोहा

वजहन कहत सो जाप कर, बैठ रहो ध्यान लगाय।
सुरत निरत वह राखिये, हथा श्वांस नहिं जाय ॥४॥
जीम जुगनमें और बतैहां,
जब तोहै एकलाहै कहीं पैहों।
अबही तो वा सङ्गो नहीं छूटे,
दिन दुपहेर जिन पेड़े लूटे ॥

दोहा

कहने कों तो पांचहैं, औहैं वे पूरे तीस।
उनहींको कारण ना मिले, अबहीलों जगदीश ॥५॥
है हद भरया भूलहै तेरो, एक बात न माने मेरो,
अबलों तो ऐसा होय जाता।
जैसे कोऊ भला मदमाता ॥

दोहा

कहां गईथी बुध तेरी, ओ कहां गया घा चेत।
ऐसी काया पायके, जो हरिसे किया न हेत ॥६॥
खे खविन्द क्या कहिहै न्यारे,
मूंद देख तो दशों दवारे,
सुन परिहै अनहदका बाजा,
परजाते होय जइहै राजा ॥

दोहा

सबे साज तनमें बजे, ओ ऐसे मचेहैं राग।
वजहन जाकों सुन परे, बड़ेहैं बाके भाग ॥७॥
दाल दया मनमें जो राखे, प्रेमका रस कैसे ना चाखे,
बिन मद पिए होय मतवाला,
निशिवासर वो करे नजारा ॥

दोहा

झूंठे जगतमें आयके, करिए ना तू अभिमान।
दया धर्म्म ना छांड़िए, जबलों घटमें प्राण ॥८॥
जाल जोंक जबलों नहीं आवे,
तितनो चाहे कोउ मन भटकावे ॥
हिरदे लगे न प्रेमकी गांसी, कैसे मिलें कहो अविनाशी ॥
तेरे राजमें ऐसा खोला, जैसा कुछ मन सुरसों बोला,
सोसब सुने रहे तू कोरा, जान परत मथरे कोई चोरा ॥

दोहा

लाजकों काजर नैनन तू, क्यों नहिं डारे धोय।
वजहन कहत कैसे भला, दरसन पीको होय ॥९॥
जे जर देख जो भूला रहिये, सगरी वैस अकारथ जइहै।
प्रेम भट्टीका मद पीव चोखा,
मिट जईहै सब मनका धोखा ॥

दोहा

वहांसे कहा कहि आया हथा, इहां किया क्या आय,
झूंठी माया देखके, एसा गया भुलाय ॥१०॥
सीन महजका सीखले लटका,
काहेकों फिरत है इतउत भटका,
सोच न करहु अबहींहै सबेरा,
त्रिकुटी कोटमें करदे डेरा ॥

दोहा

लाख जतन का जतनहै, वजहन दिया बताय।
जो सांई कृपा करे तो, सभी बात बन जाय ॥११॥
शीन शोर तनमें है जइका, अबहीलों न चीने बहीका,
दिन भर लिखा करत है पाटी,
सांझ भएतें दे सोवत टाटी ॥

दोहा

साहसे कुछ घरचे नहीं, चोरनसे व्यवहार।
वजहन कैसे देख तो, भूल रहा संसार ॥१२॥
खाद मबूरी साथकों चहिए,
कठिन परे काहूते न कहिए,
जासों समझे अपने मन माहीं,
होना वही जो चाहे सांई ॥

दोहा

आसन मारके बैठ रहो, मनमें रख तू धीर ।
साहके परताप तें, करदे हैं सब धीर ॥१३॥
ज़ाद जरुरत इतना कीजे,निशदिन नाम हरिका लीजे,
मैंतो मनमें यहो विचारा, तब हुइहै तेरा निस्तारा ॥

दोहा

वजहन जगतमें आयके, जामें होय कुछ ज्ञान ।
हरिको नाम सुमरण करे, अलीसों राखे ध्यान॥१४॥
तोय तालिब तुइ कहांहै पूरा,प्रेमनगरका नाघे ना धूरा,
वहोके आगे औरहै चलना,
सहज नहीं साहबका मिलना ॥

दोहा

पोरं नमरकों पहुंचके, नवो नगर कों जाय ।
नो वे वजहन घटहीके अन्दर,हरका गाम देखाय॥१५
जीय जाहिर वतान है वहो, वहो वहो सबही वही,
जेइ अपने मनमें यह बूझा,हर हरमें हर वाकों सूझा

दोहा

प्रेमको नदी गहरी बड़ी, भजो कोउ उतरो पार ।
आशिक औ माशूकमें, तब रहो कौन विचार ॥१६॥
एन इश्कका पेड़ा न्यारा, वहाँ दूजेका नहीं गुजारा,
शीश काटके हाथ जो धरे, तब दरशन वो पीके करे॥

दोहा

गली साँकरी बहोतहै, औ बैरीहै सब गाँम ।
ठोकर कुमत बचायके, सँभलके धरिये पाँव ॥१७॥
गैन गरुरने खेल बिगारा, देख पराण पीतम प्यारा,
औरइ बात न रहत है राजो,कैसा हारा जाता है बाजी॥

दोहा

बाजीमें कहो कहा रहा, अगले रखाहै दांव ।
बरजोरी जीता चाहतहै, साहबका जप नाम ॥१८॥
काफमान तलका ऐहै, कामुखले घर पियके जइहै,
वादिनका कुछ सोचन कीने,
हरिका नाम कबहूं न लीने ॥

दोहा

आगे कहे तो ना सुने, अबहूं कहतहों चेत ।
एकदिन फिर पछतायगो, चिड़ियां चुग गई खेत ॥१९

काफ़ कौल तेराहै झूंठा,ओज्यो ढङ्ग देखो तौन अनठा,
सुना किया साधनकी वाणी,
तेपर अबहो लुभवा न ज्ञानी ॥

दोहा

जो मतका हीना भया, वहको कोन कहे है बात ।
पहलेता सोचत नहों पाछेकों पछतात ॥२०॥
गाफ़ करम उन बड़ाहै कीना,
मानुष जनम ऐसाहै दीना,
आप छिपे और तोहै उघारा,
यहतो मनमें सोच गँवारा ॥

दोहा

वेइका बदला एकहै, सो मैं देऊं बताय ।
हरि हेरत तोय चाहिये, पहले आप हेराय ॥२१॥
लाभ लोभको छोड़दे बातें,
मैं जो कही यह सीखले घातें,
असल ठगोहै पियसे जोउ तोरा,
चन्द्रको जैसे चाहे चकोरा ॥

दोहा

जोतू प्रेमके रङ्गमें, तन मन लेह रङ्गाय ।
पहलेहो बोरमें देखिये, लोभ किधर धौं जाय ॥२२॥
मोम महोव्वत चहिये मनमें,घरमें रहे रहे चाह बनमें,
गले परी जब प्रेमको फांसी,
कहांको अयोध्या कहांको काशी ॥

दोहा

जाके हिरदे लगतहै, वजहन प्रेमको बाण ।
छूट जातहै सब टंटम्, औ भूल जात है ज्ञान ॥२३॥
नून नहीं ज्यो जाकों जगमें,आपहो आप रमाहै सबमें,
हित चितसों सुनले यह बैना,
खुल जैहैं तोरे ध्यानके नैना ॥

दोहा

वजहन कहत सो बूझले, यहो राख तुइ बूझ ।
एकदिन याही बूझते, होय जइहे फिर सूझ ॥२४॥
वावही एक यारहै तेरा, तेहको गली किए न फेरा,
दुरजनथे सो मीत बनाए, समझा ना मेरे समझाए ॥

दोहा

मैं जाना था चतुरहै, हैतू बड़ा नदान ।
कितनोउ समझावत रह्यो, एकउ कियो नकाम ॥२५
हे हादो ऐसा तू पाये, वाइते अपना चित न लगाए,
करिए हियसों वाहे अधिकारी,
देखिए क्या गति होय तिहारो ॥

दोहा

इहाँके हारे हारहै, और इहाँके जीते जीत ।
बजहन कहत सो मानले, साहबसें कर पीत ॥२६॥
ए यारो हरसे जो करना,यह अक्षर हिरदे बिच धरना,
बनत बनत बन जैहै एसा,कोई दिनन मन सूरथ जैसा,
बजहन अक्षर ऐसे कहेहैं, साधनके हथियार ।
विरहाके मैंदानमें, पतिके राखनहार ॥२७॥

इति श्रीवजहन साहब कृत अलफ़ बे सम्पूर्णम् ।

सिन्धु मूलतानी—तिताला

रात कहो पिया कहाँ तुम जागे ।
काहेकों हमसे छिपावत हो अब अन्ते नैन कहींहैं
लागे ।
एसी निठुराई न चहिये बजहन और नहीं कुछ
कहतहों आगे ॥

भीमपलासी—तिताला

लागलो औशिर माए मोहे कब घर आवें पियरवा
मई देश ।
बन बनवा डोरे डोरे करहूं जोगनिवाका भेश ॥

सिन्धु मूलतानी—तिताला

पोयके मिल भईरे लोगवा ए पतिंगवा अजहूं न
आये सन्देशवा ।
घरी पल छिन मोहे कल न पड़तहै बेग दरस
दीजो मोहे उन बिन रहे अन्देशवा ॥

२

में कैसे जानूरे काहूके मनकी ।
अपनी अपनी और निभालो वा क्याही जाने
काहूके मनकी ॥

२

किन ठगीयाने मोहे ठगोरे डारो ठगोरो ।
जानत नाहीं पहचानत नाहीं जोवना उमगसें
बोले मुरली धुन कोनी बोरो ॥

४

दोउ अटके नैन हमारे मनमोहन मुरली वालेसे ।
लोक कहे तुम लाज करो क्यों न लगगई तब लाज
कहाँरे ॥
सदारङ्ग पिय सब गुण पूरे अनेक जतन करि हारे ॥

मूलतानी—एकताला

आनके मिलामोवे दोस्ते दिलेयार
सजन मैं तो तेरी हाजर बन्दी तूतो मेंड़ा साईं वेदो० ॥

२

मतवारो दारुड़ा पिवावे बराजोरीरे ।
नहीं नहीं करेके में जासों रहस रहस गरे लावेरे ॥

३

अँखियाँ तू काहको न भईरी ।
यह प्रसिद्ध संसार कहानो कहत पुकार कहोरो ॥
कहिये कहा अँखोलो बरजो तोहू गई नायरीदास
लाल गिरिधर कर मोमन बांध दईरी ॥

मूलतानी काफ़ी—तिताला

मोरी गत रामजी चाहेरे ।
तुम बिन मोकों कलनपरत है घर अँगना न
सोहावेरे ॥
कहा करों कछु वस नहीं मेरो रैन दिना नहीं भावेरे ।
रूप रसिकसों यों जाय कहियो बेग दरस देखावेरे ॥

२

जप जपरे मन कालो अभय सर्व्वानो सर्व्वानो वानो ।
त्रिपुर-सुन्दरी श्यामा,विमला विमल जगजननो भवानो॥
प्रेमानन्दे भज तुमि भुल नारे मन जपरे जपरे ।
तारा नाम शुभ नाम विष्णु पद भुलना
भुलनारे नारे नारे ॥

३

तेरा यार तेरे नैननमें आशिक क्यारे ढूंढ़े बन बनमें ।
ज्यों कस्तूरी मृगमें बसतहै आशिक तेरे तनमें ॥

मायामें तू भूल्यो फिरतहै मत चूके साधनमें।
कृपानिधान तेरो गुण जावे ज्यों सुखड़ा दरपनमें॥

४

प्रभु-विमुखनकों सुख कबहुँ न देखावो राम।
जाके सङ्गते दुरमत पाप उपजे सपनेहु न दरस
दिखलावे राम॥

सूलतानी—धीमा तिताला

सदा फकीराँदी मानले तेरो मन माने सो कर हाँवे
दिवाने।
हर बिन कोउ जग काम न आवे यह जिय तन मन
ठानले॥

सूलतानी—तिताला

जीन्द ठगीवे मियाँ यार नदाना माल ठगी।
कीकराँ बारी को समझावो यारदे नाल मैंतो पगी॥

२

अब मोरे जियकी भटक गई।
चमकी जोत निर्गुणकी हियमें मनकी अंधेरी
सटक गई॥
सहज दृष्ट हमरी लागी और सबही शिर पटक गई।
ऐसी दया जो रहे कायमपर फिर सब जियकी
खटक गई॥

३

हरिकों न भजे नरतनकों पाय।
जिन युगन युगन कीनीहै सहाय॥
जिन ग्राहते गज लीनो छुड़ाय।
दियो वसन द्रौपदीको बढ़ाय॥
दारिद्र सुदामाको दियो बहाई।
जेही बल विष पीगई मीराबाई॥
जिन गिरत गिरत प्रह्लाद राख।
हिरनाकुश माख्यो वेद साख॥
जिन दुरयोधनकी त्यागी दाख।
झूंठे शिवरी फल हितसों चाख॥
जिन गीधे गति दीनी अपार।
गौतम-तिय तारी चरण धार॥
जिन दण्डकवनको हरो भार।
सब मार असुर किए सुर सुखार॥
जिन विधको मति दीनी भुलाय।
थाके बृजके बच्छ दिए चुराय॥
जिन कालो दहसों नागनाथ।
किए निरत फनपे धर हाथ माथ॥
पूतना प्राण पीय पयके साथ।
कृष्णानन्द गए शरणनाथ॥

४

धृगजीवन जग्यो ना हरि जानोरे।
एसेही इतउत दिन खोए तू कैसेहो चतुर सयानोरे॥
करले हेत मीत मोहनसों का पीछे पछतानोरे।
जीवन धन सबही बन जैहे हरिके हाथ बिकानोरे॥

५

मोहन जानदे मोहे जलजानी।
रोकत टोकत बाटघाट मोहे कैसे भरूं मैं पानी॥
अचरा पकरत झकझोरहो नन्दको करत हों कानी।
सूरदास यह बृज कैसे वसों करतहों आनकी आनी॥

६

मेरे मन रामजी गोविन्द गावेरे।
सोवत जागत बिहरत निशदिन हरि बिन कुछन
सोहावेरे॥
कहा करेगो लोभ काम क्रोध ज्ञान ध्यानकोंजगावेरे।
कृष्ण रसिकके चरण कमल पर बार बार वलि जावेरे॥

७

मैं करोंगी अनन्द बधाए हो पिया घर आए।
सङ्ग लगावे सखी व सहेली हुवे सकल मन भाए॥
नितप्रति ख्याल खुशाल करोंगी श्यामसुन्दर
वर पाए हो।
आए उमड़ घुमड़ वरसनको हो बदरा धूम मचाएहो॥
बोलत मोर पपीहा पी पी कोयल शब्द सुनाए हो।
हरियाली द्रुमद्रुम वृन्दावन ख्याल खुशाल लोभाएहो॥

८

मेरे गिरधारीजीसों काहे लरी।
चलरी मैया मैं तोहे बताऊं जो मोसें झगरी।

मेरोरो गिरधर असुअन रोवे तू मुसकात खरो ॥
तू तरुणो गिरिधर मेरो वारो कैसेके भुज पकरो ।
सुन्दर-वदन नील-पट ओढ़े चञ्चल चपल अरो ॥
मेरोरो गिरिधर बन बन डोले हाथ लिए लकरो ॥
सूरदास या मारग व्रजमें कहो कैसे निबरो ॥

इति सिन्धु-काफी सम्पूर्णम् ।

—※—

श्रीकृष्णाय नमः ।

मूलतानी ठुमरी—तिताला

आज मोहन पाऊं सजनी जागूं सगरो रातहो।
बमनाके लावत सगुना मनावत कब घर आवे सांवल
लोने लोने गातहो ॥
पलङ्ग बिछाय आई, दियरा जगाय आई,
एक टक ठाड़ी चितवत बतियाँ जातहो ।
प्रेमरङ्ग प्रभु सङ्ग रंगसां रगोंगी तन मन धन सब वारों
छिन पल युगसों मोहे न सोहातहो ॥

२

रामसुन्दर श्याम मोरे अंखियन आगे डोलहुहो ।
धावत चलत ठाड़े बैठत सूतत सुपने रसिक
हसनिया मुहवाँ मीठो बोलो बोलहुहो ॥
कवन भजन जोगनसों पाऊं पाऊं कवन करम मोरे
माया टटिया खोलहुहो ।
बसत करेजवां हरे मोरे भैलो औ प्रेम रङ्ग
लागल जियरा जप तप तोर नाम अमोलहुहो ॥

३

मोरी मलो नहीं आवतरे।
घर घर फिरत रहत मनमोहन हमरा जिय
तरसावतरे ॥
अवर सखिनसों रसकी बतियाँ हमसों नजर
छिपावतरे ।
जिन काजे मोहन बस कीनों उन्हीं मिले सुख
पावतरे ॥

४

प्रीत लगाय मोहि मारारे ।
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया कौन मन्त्र पढ़
डारारे ॥
जो कोई मानुष मिलके बिछुरे कैसे जीवे बिचारारे ।
जिन काजे मोहन बस कीना प्रेमकी जोत अखाड़ारे ॥

५

मैंतो अपने सइयाँ सङ्ग मातीरे ।
भर भर प्याला देत अमीरस लटक चलत बहु भाँतीरे ।
जो कोई वाकी चरचा करि है सउब ना दिन रातीरे
गावे गूदर गुरु जिन मोहे लिख दीनो जो मोरे
जनम संघातीरे ॥

६

गहे कोई बाँह निबाहनरे ।
चारों जुगमें साथ सोई हैं चेक बड़ोंको चाहतरे ॥
कञ्चन काँच और झूंठ सांच जग निरमल अनलके
डाहतरे ।
गावे गूदर है पुरुष सोई जग सो हमहूंके चित
चाहतरे ॥

७

कारोसो कामरी लैके कहाँ चल्योरे जोगिया ।
कानन कुण्डल गले मृगछाला कवन नगरको
है तू भोगिया ॥
एसे नैना लगाय मुझे मारारे मोन मिरग बसकर
डारारे ।
घायलकी गत घायल जाने क्या जाने बैद बिचारारे ॥

८

निबुला मैं तोर लाई मैं तोर लाई मलियाके बाग ।
छोटे छोटे निबुला नरम कलियां देखले नाहीं मोहे
चोरिया लगाई ॥

९

गोरोया दिननको थोरो तें मेरो मन मोहेरो ।
गोरी गोरो बहियां हरो हरो चुरियाँ दाँतन मोसी
हाथन मेहंदी माथे टिकुलिया सोहेरो ॥

१०

सांवलाजीहो म्हे जान्यो थारो जान।
रतमानो परभातड़ो आया झूठो करोछो बखान॥
प्रगट पुकार करोछे कजरा पोक लोक अधरान।
इनमें झूंठ नहीं तिलजो कांई रङ्गीला प्रीतमरो आन॥

११

कवन बचन विलमावतरे ऊधो।
जे पद सेवत बीत कल्प युग सो कुबजा उर लावतरे॥
जो सुख ब्रह्मलोकमें नाहीं सो कुबरी सुख पावतरे।
सगरे ब्रजकों राज दियो है हमें लिख योग पठावतरे॥
जबते हरिसुख मोर तोर लियो है तबते भवन नहीं
भावतरे।
गावे गूदर मैं कहि कहि थाको सो बस कबहुं न
आवतरे॥

मूलतानी—तिताला

तेरी गति अपरंपार।
अतिप्रचण्ड जिन रच्यो ब्रह्मण्ड आदज्योति निरञ्जन
निराकार॥
जाको कोउ न पायो पाररे।
निगम गावे पार न पावे ब्रह्मा मुख उचरे॥
ध्यान धरे वाकों पञ्चानन श्रीपति यश अति अभय
भक्त दातार॥

२

मन रामकृष्ण रामकृष्ण ध्यावरे सोई।
महाजप करते वे हरि प्रसन्न होवेंगे।
मन वच क्रमसों याद करोरे ज्ञान करो भवपार परोरे।
प्यारेरे करुणा-सागर तिन पालो सब संसाररे
एसे मधुसूदन मुरारिरे॥

मूलतानी ठुमरी—तिताला

मोरी गली पांय फेर जाहो।
इथिया चढ़ कर आए मोरे बालम लोक जाने
उमरावहो॥

२

नई लगन हम जानीरे।
जो तुम रसिया बोलो बोलो तुमहूं ते नारि
सयानीहो॥

३

मैं गवने नहीं जैहौं राम।
जो गवनेको बात चले है तापर टोना चलैहौं राम॥

मूलतानी—तिताला

बंसी बजाय जादू डारारे।
मुरलीको धुन सुन भइहूं बावरी बस कियो प्राण
हमाररे॥

२

कारीरे बदरिया राम कैसो उमड़ आई।
सांवनको ऋतु आई पिया मिलन धाई अरे बड़े
पुरवैया मनभावन बिना सूना मन्दिरवाहो रास॥कैसो॰

मूलतानी ठुमरी—तिताला

उमगो उमगो आवे गोरिया जियरा हमारहो।
कहा करूं कछु बस नहीं मेरो तन कारो मन पियरा
हमारहो॥
ज्ञानानन्द रुकत नहीं रोके मोहलियो हंस
हियरा हमारहो॥

२

परदेसिया मित्र हमारहो तोरे गरवा लागूंगो।
आधो आधो रतियां पिछले पहरवां सोय सोय मैं
जागूंगो॥ तोरे॰

३

कोई जाय कहो मेरे पीसोंरे कोई।
तुम बिन मोकों कल न परत है आ मिलो अपने
जीसोंरे कोई॥

४

हरिजीसों मिलना कैसे होय।
पांच पहर धंधेमें बीते तीन पहर गए सोय॥
बालपनो खेल गमायो तरुणपनो नारी सङ्ग सोय।
बृद्ध भए चिन्ता बहु बाढ़ी गए जनम सब खोय॥

६

भजन बिन काहेको देह धरो ।
काम क्रोध मद मोह लोभमें वृथा उमर गुजरो ॥
ना हरि भक्तन गुरुको सेवा साधु सङ्गत न करो ।
नौ मास गरभमें राखे मैया भार सरो ॥
निशिदिन सोवत जागत विहरत कहेलो हरो हरो ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको गुरु बिन सूझ न परो ॥

७

अब मोहो पिया मिले ब्रह्म ज्ञानी ।
घट घट व्यापक सबसों न्यारा एसे अन्तरजामी ।
कुमति जराय करों मैं काजर चढ़त प्रेम-रस बानो ॥
एसो रूप करो क्यों न विरहिन तो पियके मन मानो ।
सहज सिङ्गार चित्त करो चोवर सुरत निरत
करि बानो ॥
शील सन्तोष पूरहो दोउ कङ्कन दृढ़ रहो प्रेम दिवानी ।
एसो साहेब कहूं न देखा कबीर हरिके चरण
लपटानो ॥

देश बिहारो—तिताला

रघवा होय गइल बघवारे भकुवा रामनाम चित
धरिला ।
जाहे जपत प्रह्लादवा नारदवा घरासर पुण्डरीकवारे ॥
व्यास अम्बरीषवा शुक शौणकवा मोक्ष आदि अनेकवा ।
रुकमाङ्गद अर्जुनवाके रथ हकवा वशिष्ठ औ
विभीषण लङ्का दहलवारे ॥
ध्यान धरल शेषवा ए गणेशवा शारद ब्रह्मा ईशवा ।
कृष्ण रसिकवाके कारणवो राम भइलवा परल
रहो कतहुं शरण रहोलवारे ॥

तैलङ्गी बोली

२

मै सुन सुतो मङ्ग पोइ नाड़ ।
मेसु मोहन वंशी चेपो पोई नाड़ ॥
पोकुल सोपारी आकुल पान । सुकु नाक औ चुवुल कान ॥
रसुछातो कड़पु पेट नटु । मक मरहै ताके हेटु ॥

३

नोउमा वाड़ु नोउमें वाड़ु नौ मातो करार
चोस्कु नारा लेड़ु ।
आड़ु वाड़ु आलस्य मेंदो पान सोपारो ओकुल
पोकुल ॥

तिलंग—तिताला

सांवरेदो सुरत मानु मांदोवे मेड़ो सइयांवे ।
बिन दोठीया सानु कल नहीं पड़दो चित चढ़
जांदो झूमर पांदोरे ।

२

आवना माड़ेरे नाल गबरुवे ।
तैड़ो सुरतदो मैं दिवानो मई ज्यों मामो त्यों पालवे
गबरु या० ॥

३

रांझ रांझा कूकदो आइयां इत्थे होर निमानो
कहदो यार कित्थे ।
सदारङ्ग दे नाल गुजर गइयां बसदा राझण जित्थे वे ॥

४

सांवला प्यारावे श्यामा प्यारोरे ।
युगलछवि साड़े मन बस गइयां वृन्दावन छवि
निहारवे ॥

५

बदनामो देड़ा जग सारावे सांवरे गबरूवे ।
कुड़े लोक बुराइयां देदे साड़ो राख अबरूवे ॥

भिंभोटी—बिहारो

मेरे डेरे आवो हे रसिया ।
बिन देखे माहे कल न परतहै तुहो मन बसिया ॥
तेरो सुरतदो मैं भईहौं दिवानो मेरे मन बसोया ।
कृष्णानन्द रङ्गीलो मूरत तन मनमें धंसिया ॥

२

तुम्हार मन मैला न होय डारो गले बिच बहियां ।
लोक लाज कुल नेक न सकुचत मैं बरजत तुम
मानत नहियां ।
मैं तन रोम रोम बलिहारो श्याम निरखि तेरो
परछहियां ॥

नैन बसत निशिवासर छैला कसकत रहत हियके
मझियाँ।
मन मोह्यो मनमोहन प्यारे कृष्णानन्द चरण नहि
रहियां॥

कालिङ्गड़ा

नजरिया लागी मोरी गुइयां।
वंशीवट अरु तट यमुनाके श्यामसुन्दर रस पागी।
निशिवासर मोहि कल न परतहै लोक कुटुम्ब
भय भागी॥
वह चितवन मुसकान अधरन लखि अब भयो
मन वैरागी।
मोह्यो मन मनमोहन प्यारे कृष्णानन्द अनुरागी॥

२

बाँसरीया बाजीरी मोरी गुइयां।
आधी आधी रात पहरके तड़के श्रवण सुनत उठ
भाजोरी॥
श्रवण सुनत कल परत न छिन मोहे तन मन
विरहा दाजोरी।
कृष्ण रसिक रस बस करडारी सप्त स्वरनसों साजोरी॥
मोरी०॥

गारा—ठुमरी

रङ्ग भींना बनरा जागारे।
खोल घूंघट मुख देख बनीका घूंघट में मन लागारे॥

२

क्यों रहेंदी हीर माड़े सायबों वे।
इस कारण वे पातल वेली वे राझणदे मन धीर॥

३

हुमना के जानो मेरावे।
मैंने बुलाया बारी चन्दरे चांदणे वे आया मसालोंदे
नाल जानो०॥

४

नैनादा झमका तैंतो लेंदा मेरी जानवो।
इस कारण मैं ढूंढन निकसी इश्क रैंदामैं लेंदा
मेरी जा०॥

५

साड़ी बल बेखवे मैं तेड़े छंदड़े जांदीया।
सदके कीती सदके जादी खोल घुमाई जिन्द मेरीयाँ॥

६

मुरलीया बालेसों मन लागो।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे गले बैजन्ती माला सों०॥

७

इस नगरकी नई रीत मुख देखेकी प्रीत।
अन्तकाल कोइ काहको नाहीं जगमें याही अनीत॥

८

चूड़ा लटकैंदड़ा नोकुड़ीए लाला घूंघरवाला
ताड़ा यार।
इन अङ्गुलियांदेनो पुर पुर छलड़े मैं दोदा रङ्ग कुड़ां॥

९

चोलीदा बन्ध सीनावे सवाजी माँड़ावे।
चोली तेड़ी अजब कसीदीवे केसरदा रङ्ग भीनावे॥

१०

लङ्गर बटपार हमसों न बोलो।
बांहियाँ मरोरी झक झोरी मोकों हंस हंस घूंघट खोलो॥

११

आज रङ्ग भींना बनरा मेरे घर आया।
केसरीया बागा अङ्ग सोहै भागनतें पाया॥

१२

अच्छा बना लाड़लेहो सुघर बना।
नाम न जानू ठाम न जानू बरबस घूंघट खोलो॥

१३

हमसों करत नित रार प्यारे।
औरनसे रङ्ग रसकी बतियां मोसें करत तकरार
नन्ददुलारे॥
कृष्णानन्द मन मानै सो करले मनमोहन बलिहार
जियारे॥

१४

मखीए:क्यों नहीं हुण सुण सुचदी।
दिलांदे मुश्ताक पुनु बिलोचदी॥

राग सम्कगारा लूम—एकताला

एसोए सोनी केहोया सुचदो दिलदो सुश्ताक
पुनदे उसदो ॥
फन्दीयावो मुसाफिर कित तेड़ा रव वर सुनो बुखारेदे
कूंचदो ।

इमन—तिताला

मन लालनको लहकन लागो देखो सखो गोरीको
सिङ्गरवा ।
अब रङ्गसों लाई मङ्गोब्बत चञ्चल अचपल मन पागो ॥

गारा—तिताला

लेहु सीतन तुम अपनो पियरवा नाहक मोरी बांह
गहोरो ।
सेवा करत मोरा जनम गइलवा तुम जीते हम
हारो पियरवा ॥

२

मैं पिया धायानो चाँदनो रात ।
चांदनो रात छिटक रहे तारे निरमोछिया हम साथ ॥

३

आज सलोनी रातमें पिया धायानो ।
सात सखो मिल मङ्गल गायानो हंस हंस गरवा
लगायानो ॥

४

देखत अङ्गीया मोरीरे देवरा लोभाया ।
तासको अङ्गीया बनातको नारो रेशम लागो डोरीरे ॥

५

मोहन घर आयानो आज हमारे ।
सब सखियन मिल मङ्गल गाया मोतियन चौक
पुरायानो आज० ॥

६

आज सनेही मोकों नोको न लागेरे बारे
सनेया मोकों० ।
को समझाउं समझत नाहों ढूंढ़ फिरो चहुं बागे ॥

७

आयानो मेड़ा जीवन जोगावे ।
मैंने बुलाया बारो चाँदके चाँदने आया मशालोंदे नाल ॥

८

आंगन मेंड़े आयानो सो मेंड़ो सइयों ।
चन्दन चौको बारोवे आन धरो मेंड़ा मिंया हरां
मङ्गल गायानो मेंड़ो० ॥

९

चोलीदा बँध मोनावे सबाजो माड़ेवे ।
चोली तेड़ोवे अजब कसोदावे केसरदा रङ्ग भीना ॥

१०

अच्छा बनावे मेंड़ा रङ्गीला बनावे ।
शिर सोहै बारीवे जरकसी चोरा होरा लगे मोती
पना ॥

११

नोचल गोशेनू भूमर पावां ।
राझण जोगो वारो मैं जोगियानो अङ्ग भभूत रमावां ॥
रांझा मेड़ा बारीवे में रांझेदो सोणा रांझेदे सदके
मैं जावां ॥

१२

बेखो सइयों काशिद आयानो ।
मैंतो अजब तरे गल पूछों दिलबरदो ॥
याद करेंदो रहंदो अपनो उमरसों हाल नहीं
साड़ा कभी तो दरस देखों ॥

१३

कन्हेया मोरी गागर ढोरोहो ।
हौं जमुना जल भरन जात रहो बहियां मरोर
झकझोरीहो ॥
कृष्णानन्द कैल मदमातो बरबस करत ठठोरीहो ॥

१४

माननी मनायो न माने मनमोहन मनमानो ।
घूंघट पट खोलत नाहीं बोले अनगन ठनगन ठानो ॥

१५

अनो रङ्ग झुरमठदा अणा हांवे ।
सात सखो मिल पनीयांनु चलोयाँ उघर गयो तेरा
घूंघटड़ा ।

१६

माड़ा जोबन जोगा हांवे आया भाइयांदे नाल
बेहारबा ।
मैंने बुलाया बना चन्दादे चांदनो आया चिरागोंदे
नाल ॥

१७

नैनादा झमका तूतों लेंदो मेरो जानवे ।
इश्कदे कारणवे ढूंढ़न निकसो महरम यार मिलेदीं ॥

गारा—धीमा तिताला

मौला करे तुसो जोबां माड़ो जानवे ।
सुखड़ा तेड़ा बांग बहारों बार बार पानो पीवां
तुसो जावां माड़ोजां० ॥

२

तबीब दिलांदा साजावे यार तरगइयां हांवे ।
वेखणदे सुण यार रखामोना कोउ सङ्ग सनेहावे ॥
आशिकानु माशूक मिलोया फेर घर आंवणा केहा ॥

३

चूड़ा लटकैंदड़ा नीकुड़ीए लेंदा तेंड़ा घुम घुमाला
घाघरानो ।
अङ्गरीयादे पुर पुर छलड़े मैं दोदा रङ्ग गूंड़ा ॥

गारा—तिताला

झूमर पावानो चल गोशेनू ।
रांझाण जोगी वारो मैं जोगियानो अङ्ग भभूत
रमावानो चलगो० ॥

गारा—धीमा तिताला

चाक कोथाइ दानो याड़ा माड़ो सुतड़ीनु सभालन
देंदा भलावे ।
सेज सुतोनो मैं ओघर गइयां यारवेके शरम रखे रव
साँइया ॥

२

पार खड़ावे पुकारे सोमैं कैसे आऊं डव्वर भरोला ।
बीर मलाहके हमारी नेबरीया रसोया पार लगावे ॥

अर्द्धया—धीमा तिताला

भली निभाई यारवे रव करे तेंड़ा भला भलावे ।
जिस दिन मौला मेड़ा काजो भो हासो मियां पकर
खड़ो तेरा पल्ला ॥

अर्द्धया—तिताला

सितम करेंदीया नैना वालियां हांहांवे ।
चङ्गड़े दिलनु घायल कीता जोरा धिगणां दुख
सहंदोया हांहांवे ॥

अर्द्धया—धीमा तिताला

भूलीया मैनु सभालवे क्यों झड़केदा मैंनु ।
तुझ देहा मैंनु कोई नहीं दिसदा मेरा मियां
लाइयांदे इश्कदो भालवे ॥

२

तांड़ो बला जाने जो गुजरो साड़े दिल बिच माहिड़ा।
मेड़ी लड़ छाड़ तुसी औरनु मिलदा रहंदा रांझा
सानु आँखदा सहो सयाणाजा ॥

३

सोना लाईवे सोना गबरू ते लाल कहंदे हुण लाई
सुनदावे ।
मैं कोकरां कितबल जावांवे मियां हांहांवे ॥
आठ पहर तैनु कहंदे रहंदे रुठड़े जालम नहीं
मिलांदा गल मानले सों ॥

४

रहो रहोवे दिलवर रहो रांझणो बात सुहो सहावे ।
घोल घती कुर्बान कीती अपने उमगदी सहोवे ॥

अर्द्धया कसूर—तिताला

सानुभो पया उलझेड़ावे तेरे नैनादे नाल मेंड़ी
माहोड़ा ।
तुझ बिन जिन्द बेकल होंदो रहंदो सङ्ग तुसाड़ड़े
खेड़ावे ॥

अर्द्धया—तिताला

हालनो में किसनु आँखे कदर न जानदा बेकदर मोयां।
जो तू मेंड़ो वारो कदर न जानो मेड़ा मियाँ नेह
लगाके मैं भुलोयां ।
राझण मेड़ा वारोवे मैंभो राझणदो मियाँ
इश्कदो पई जँजालवे ॥

अलैया—जलूद तिताला

जम जम जोबांवे माड़े माहोड़ा तानु अलादो अमानवे ।
जोतू माड़ी बारोवे कदर न जानदावे मियां नेह
लगाके मैं भुलोयां मियांवे ॥

अलैया—धीमा तिताला

मैं नहीं जानदोवे यार मैं नहीं जानदीवो ।
रझेटा साड़ड़े आंदाको शरमांदा ॥
कुल असाड़े वारोवे दूतांदा बेड़ावे मियां
लख बदोयाको भरमांदा ॥

२

अंखोयार तूतो मिलजा साड़े रङ्ग नाल मली नहों
साड़े नाल ।
सहरानु छड़के उठचल हमदम ज्यों मामो त्यों पाल ॥

३

चाकनु कोई आन मिलामो सइयांनो ।
सुन मैड़ा काजो वे दिल मैंड़ा राजो मियां लाई
महोब्बत पाक ॥

अलैया—कसूर धीमा तिताला

जादू जादू कहंदे मैं नहों जानदे भला अपने
नैनादा जादू जानदो ।
जैसोयानो वारोवे शहर करदे अचपल नाल उणा
सङ्ग मुठा लेजांदे भला ॥

अलैया—धीमा तिताला

तैंतो मैड़ो जिन्द मोहोरे मोहो चोरे वालियां ।
वक्सनदो एक गल्ल सुन जामो वे मियां लाख
बदनामो शिर सहोवे सहो चोरे वाले ॥

२

रात कित्थे गुजारोयांवे सोनाधो गड़दे लड़के
चस्मादे कोलवे ।
कोठे ऊपरवे पालन पइयां वेखे राझणदा शिवा ॥
बिछड़ो यार मिलदे नाहीं नोवे गाइड़ोया सुन जावो
भलावे रात कित्थे ॥

३

असुआ बोरदे वे कड़ेइ वाले ।
इश्कदो रैनो वारोवे मूलन मिलदो मियां रङ्ग
घणे घण बोरवे ॥

४

बूझदा नाहींरे हाल राँझण बेपरवाहियां करदा ।
मछरीया वांगु पाइ तरफेंदो रव्वा ईश्कदा लगा
सानु जालवे ॥

५

मैंतो चाल पहचानो हांवे नेनादे चङ्गड़े दारुड़ोदा
हो यार सानु ।
तननन ताक तन शबर दिलनुवे जोकरां जोरो
तूंतां हां हांहांहां ॥
भलावे महबूब पियारा भलावे आशक रहँदा ताड़ा
मुश्ताक पाकवे ।
दिल लगा रहंदा यारा नदाना मियां दिल बिच
रहंदा शोरो महबूबांदा झमका ॥

६

सेदोयांवे मियां तेड़े इश्कादी नोकां झोकां
झोके यारवे मियां ।
हाल दिलादां मेड़ा रवहो जानदा किसनु वेखा
कितवल कूकां यारवे ॥

७

सोना मैड़ो जानवे मैं तेड़े बारो जावां ।
जोतू चला वारोवे मंनु भो ले चला यार जिन्द रहोवे ॥

८

एशवा अजल्ल न पाया मैड़ो जानवे ।
जानावु बरतो फुण दिगरन दार पेश जान जान्बु वर ॥

९

मारा मियां मूरज दिगरतोदानो दोस्त ।
तुसाड़े गरे आ लगोवे दिलबर इश्कदा लाग लगोवे ॥

१०

मियां साजन आइला भला मेरो जानवे ।
जिन्दड़ो मैड़ो बस नाहीं साजन वे वेरण भई सारो रात ॥

११

चाकनु कोई याणा मिलामी वेआन मिले तोमैं
जीवांवे ।
रखा जीवे दैनुकी झड़केवा मीयां लाइ महोबत
पाकनु ॥

राग सरपड़दा—धीमा तिताला

दो नैना मांड़े लगीवे तुसाड़े नाल सुनवे माड़े
माहिड़ा ।
चश्म मनवा चश्मती चश्मानेती जाए दिगर मन
तमासा एती बिनमती तमासा अए दिगर ॥

अलैया—धीमा तिताला

रवदीती तानु बड़ाइयां वे साइयां माड़ेवे ।
तू हाकिम महबूब नगरदा मियां लोग तेनु देदी
दुहाइयां वे सइयां मेड़ेरे ॥

२

मियां मैंतो चाल बहचानी दिलबर तेज निजारेथो
जानी ।
दमझु सुनै न पाए न दहनसे तेरे दुशनाम तमाम
जुवेसे लवहीमैं अपना तो हुआ काम तमाम ॥

पाठान्तर

सुनने पावन तेरे दहन से दुशनाम तमाम ।
शुम शीलवमेंहूं मेरा तो हुआ काम तमाम ॥

अलैया—तिताला

वन्दि पटवारो सोना खेड़ेदा मुकाना ।
इश्कदो खेती वारी हासल मरना रांझेदे कारण
चलीवे वन्दो ॥

२

पान चड़ेरानी लायावे गुमानी मेरा मियां ।
मिलीया महरम यारसो सब दुख भुलियांवो
कीता करम रवाणो ॥

अल्ला मिलावे मेड़े राझेनु सबेरे ।
आमद खबरनी या मद जो बकस चेपे बर दरियाव ॥

अलैया—धीमा तिताला

राइ राइवे दिलवर राहि वेघोल घोल घती कुर्वान
कीता साड़ेड़े मन लाइवे ।
मान करेंदी हीर सियालो साड़े इश्क निभाना
प्यारीया साड़े ड़ेनाल तुसो राजो अपने मन साँइवे ॥

२

लावोनी कोई यार मेड़े नु कोई उनसन जाय
समझावोनो ।
जङ्गल जङ्गलवा ढूढ़दी राँझेनु भुलीनु राह बतापनी ॥

अलैया कुसुर—धीमा तिताला

तैतो जोर कोई जोजान मला मोजां वाले लहरदा
बनावे ।
भलावे फकीर सोणा मियां तांड़े टप्पेदो अशीवो
सुणदे शोर ॥

२

मत जारे ढोलन मतजा मानले साड़ड़ो गलां ।
असी तरसादे तुसो वेखननु मत० ॥
बिन देखे हुण कल नहीं पांदी सुनवे महरम मलां ॥

३

दिलदावे महरम यार तू मेंड़ी कदर न जानदा ।
दिलदा दरद वारीवे किसनु सुनावां चुप रहँदे
लाचार माणदा ॥

४

आ पियारे मिलजा सानु रहदींया मुश्ताक चावन
तेरेरे ।
शोरी तो मियां रहँदे हरदम वे वाक तेड़े मिलनेदा
प्यारेरे ॥

सरपड़दा

लाग रहूं तोरे गरवाँ मोरा जिय चाहे प्यारे मोरे ।
करिली सिङ्गरवा सेज सवारूं और फुलनको हरवा ॥

सिन्धु कसुर—धीमा तिताला

आ पियारा मिल जावे किस बेलेदी मैं खड़ीयांरे ।
इश्कदी गलां तुसो लगदो भलावे नाहीं तो साड़े
नाल गुजारा ॥

सरपड़दा—तिताला

पूरव बङ्गाला जादू गररे अरे अरे लागो ।

कन्हैया हमहिं छांड़ मत जइयो अरे ॥
पूरब देशकी बाँकीरे बङ्गालिन राखेंगो नैना
लगायरे लोगो ॥

अलैया—धीमा तिताला

मौला करे ताड़ा भला भला भली निमाई यारवे ।
जिस दिन मौला मेड़ा काजीभी होशी मेरा मियां
पकड़ खड़ी तेड़ा पल्ला ॥

अलैया—तिताला

महदीनु रजन थल भरपूर रहीलोभा ।
हरे गांव हरे ठांव ठाढ़ी नाम लेत अनुआइरे
सोप्यारे महबूब इलाही कीनो अपना जहूर ॥

२

गलियां बिच आंदा जांदा रहना माड़े दिलवर
इश्कादा फन्दा बुरा होंदा तुसी जानदे ।
याणे नाल स्याणे तुसी नेहा क्यों लगानावे ॥
प्रेमरङ्ग होंदे निभाना माड़े दिलवर० ॥

तिलङ्ग—तिताला

बाबरेदी सारन जानीवे कमला यार भलावे मियाँ ॥
जङ्गल ढूंढ़ा वारीवे वेलाभा ढूंढ़ा मेरा मियां
ढूंढ़ा मुलक मुलतानवे ॥

२

नित उठ जानदाबों भोरनो हैला ।
रैन देहा तेड़ी याद बिच रहंदावे मियाँ असरता
नाल जिन्द जोरनो ॥

३

सांवरेदा मिलना जरूरवे मेड़ी सइयांवे ।
बेलां बेला टोभां जङ्गल ढूंढ फिरो मेड़ा माहीड़ा
आमिल तेड़े हजूरवे मेड़ा सांईवे ॥

४

यारदा निजारा सानु मेरा सोना प्यारा लगना
कीकरां जिन्द मेरी खसदोयां ।
दे दीदार जमदाल करम तेरे मिलनदा चाह दम
दमदा सदारङ्ग मेरो गल मानदा भी नाहोयां ॥

५

कमलेंदो सार मैं नहीं जानदी मेंरी जानतो में नहो
जानदो भला ।
लैलोदी खातर वे मजनू भी भला शोरी मियाँ कूक
फिरे देंदें सांवरेनु मलावे सोना ॥

६

किन मारियांवे जाल सटीयांवे ।
इश्क छिपाया वारोवे छिपदाभी नाहीं जाहर
कोता इन अंखियारे ॥

अलैया—तिताला

तुम कौन हो भला कहांके हां आए कहांते कहां
जाओगे ।
यहतो टुक बतलावो हमें किसने भेजा क्या है काम
जो नया नगर आ झांकेहो ॥
इहाँ आते हो तुरत जो रोते हो कुछ लाए हो सो
खोय गया किस सोचमें हो क्या भूल गए हमने
जो पूंछा है तुमसों इस्का दो जल्द जवाब हमें आँखे
खोलो क्यों ढाँके हो तु० ॥
हिन्द हो के मुसलमान हो दुनियादार के फकीर
निदान देखो इधर किधर है ध्यान मुहसे तो कछु
बोलो भाई बेपारी हो या हो सिपाई सोधे हो के
बांके हो ॥
वतन तुमारा है किस ठांव बड़ा शहर है याके गाँव,
इन दशों दिशामें यह तो कहो पूरव पच्छिम उत्तर
दक्षिण ईशान अगन नैरत वायव धरतीके हो के
आसमां के हो तु० ।
क्या नाम तुम्हारा था बांपे जात में कौन कहलाते थे
अब इहाँ कहा कहिये क्या हो तुम कुछ हमको तो
मालूम नहीं तुम आपो अपने साहब हो के दास
किसीके हाँके हो ॥
इस नगरी में जो आए हो मौज से यहांका सुख देखो
पर डरते रहियो याद रखो मैं तुमकों समझा दीना है
कुछ एसो करनी मत कीजो जो यहांके रहो न
वहांके रहो ॥

२

कुछ बन नहीं आवे छोहरा मलाह राम कैसे पार उतरिए।
नदिया गहरी नाव झांझरी वाहा करिये नवादवाद
बांनत चपुनव लोना कोउ जाको खेवनहारो पवन
चलत पुरवैया उछलत मैड़ा पनिया अथाह मझधार
जोर करे।
नाके मगर कच्छ मच्छ पैरत फिरें देख देख जिनसों
डरिए राम ॥
अनघट घाट पाट अति चोड़ो पायन मिलत रेतो
नहीं दोसत लहर पैलहर चढ़नको उठत आवै
बहार किनारे छलको छलको जावै कित जइये
कासों कहिये धीरज मनको कौन विध धरिये राम।
बहुत देरसे आय किनारे, बैठ रहो हों तुम्हरे सहारे,
अपनी दयाको नाव पर मोकों बेग बैठाकर ए
सोतावर पहले खेवै अपनी मोजसों पार लगा
किरपा करिए ॥

३

यह औसर दमका मेला है जो तू जग आया तो हिल
मिल जुल खा पीले बैठ उठ बोल बतलाव फिर
आता यहांका दुहेला है।
तै नातेतें अपने तई घेरा, नाहक कुनवेकों कहे मेरा,
इसकों तो मनमें सोच समझ माय बाप भाई कोइ
नहीं तेरा, तू आपो अपना अकेलारे ॥
अव्वलसे लेदे आखर तकता इह धोकेसें बहत जाते पै
कामको बातें नहीं पाते, यह हस्तो दरशन मेलाहै।
दरशन मेलेसें सूरत है सूरत में क्या क्या सूरत है॥य०॥

४

प्यारे वहां जाके वाहा बोलोगे करी कमाई यहां
गमाई खाली हाथ जाके जब पूंछेगा तुमसे साईं तब
गांठ गिरह क्या खोलोगे ॥
किस कौल करारसें आयाथा बंधी मूठोमें क्या लाया
था प्यारे आदम नाम धराया था इसका तुझ को
निरवा करना जो यहां दोगे वहां ले लोगे।
इस नगरीको क्या परलोत चलना वहांका विसवा
बोस, जिसको तुम समझे हो मोत, यहां तो है डरने
की रीत, और खेल क्या खेलोगे ॥

५

यह जग दरशनका मेलाहै जो तूं आया है यहाँ तो
कुछ देख भाल चल फिर मिल जुल हंस बोल बता
ले खा पी इस कारण सबको एकठोर सकेला है।
इस मन्दिर बिचमें रखता क्या रङ्ग विरङ्ग मूरत है
हिरदे से तनक परख तूँ इन मूरतोंमें क्या क्या
सूरत है यह अवसरद० ॥
धन उस कारोगरको जिसने इन अपने हाथ बनाया है
गुण ज्ञान जोवन कवि रङ्ग रूपमें हरएक आप
नबेला है।
जबलों सब यहांका है तबलों शहर हैं बाग बहार है
मन आनन्दे और चैन करत हैं लहरे मारे हैं यह
सुखका समया और सगरे यह देखन हारे आजो हैं
कल आप आप कों चल जायगा एकही कावे
अकेला है ॥
ए जो देखे है तूं आपसमें यहां एकसे एकका है नाता
कोई बाप बना कोई बेटा है कोई चचा मतोजा
कहलाता है।
कोई मियां अपनेको जाने है, कोई दास आपकों
माने है कोई, पीर मुरीद कहाता है कोई गुरु कोई
चेला है।
जिस दम यह अपना रस्ता गह जावे गए दोस्त
निशबत ना है सब यहांके यहांही रह जावेंगे यह
बूंदें जिन दरियोंकी हैं जब मौजसे वह मिल जावेंगे
फिर तो कुछ ठंडा है न उसस है बखेड़ा
झगड़ा है न झमेला है ॥

६

एक दमका नाता आता है फिर जाता है।
पछताता है कछु हाथ नहीं मन पाता है ॥

मृगतृष्णा संसार बना है काम क्रोध मद मोह ठना है
नाहक पच पच मरता है।
नहीं डरता है मैं मैं निशिदिन करता है नहीं रस्ता है
नहीं नाता है॥

७

हरि द्वारकानाथ गोविन्द गोपीरमण नन्दनन्दन
द्रुपदजा पुकारी।
काक कौरवन मानसपति हँसकों मलिन करमैं
मलिनता विचारी॥
वृद्ध अनिरुद्ध सब बद्ध मुख देखियत दुष्ट शासन वचन
कहे सिकारी॥
चीर छोनत छक्यो प्रेमरङ्ग अनगिनत विष्णु मए
बसन मय किनारी॥

८

जावादे कन्हैया म्हाको सास लड़ाकीछे।
ननदल छोटो दगड्यारो पोटो सासु समोड्यारो
लड़वामें झगड़ा कीछे॥
पानोड़ाने जाता म्हाके पाग गिनेछे झूठो साँची
बोले थाँके साथ खड़ाकीछे।
प्रेमरङ्ग प्रभु तन मन धन वारो छानो प्रीत राखो
म्हाको लाज बड़ाकीछे॥

९

पैर परत प्यारो झांझर झमके प्यारो कान्हदा बुन्दा-
वाला वेसर चमके।
प्रेमरङ्ग चूनर चटकीलो जोबन मद मुख दामिन
दमके॥

१०

नैणा नाल नैणा साड़े मिलदे न सकदेवोड़ेरदेन
आंदे जांदे दिल बिच सकदेवो।
लगणे न जाणे न पँचाणे दरदो न प्रेमरङ्ग लम लग
छुट छुट सकदेवो॥

११

नरदेहीको याहो काम मुख सीताराम सदा निकरे।
राम राम सुमरण बिन खाँसा लोहकार सोध
मन करे॥

त्रिविध तापके सनमुख मतहो क्या जाने जम
कब पकरे।
आज अभी इस छिन कहो सोयपति छिन बोतो
फिर नाहीं फिरे॥
कोलन कों नहीं पार गढ़नको मत तोसों सन्ताप धरे।
प्रेमरङ्ग रङ्ग भींजत श्यामघन मत ख्यालोके ख्याल परे॥

१२

ज्यों रघुनाथ पियारे लागे।
तौ मूरख तन धनके कारण क्यों पच मरत अभागे॥
जिन जिन धर्म्म धर्म्मसो चाहत डर मायासों भागे।
जो भए हैं होइ हैं सजन सब मोह नींद तज जागे।
कहा तोहण सो रूख होयगो तोउ काल मुख अभागे
प्रेमरङ्ग प्रभु शरणागतको वध्य भ्रात नहीं त्यागे॥

१३

मैं मन राखूं रामजो राम रहे मेरे मनमें।
तनिक तेज तनको निरखावे तोन मरु तन मन धनमें॥
जो अब पाऊं पांव न छोड़ूं छोड़ कुमति
रङ्ग सन्तनमें।
प्रेमरङ्ग एक रङ्ग रङ्गऊं कहुँ रहे कबहुं घरमें वनमें॥

१४

रघुवरदे नाल लगे रूप सलोने नैन पगे नेह।
दिल बिच रहंदा वारोवे न आंदवे प्रेमरङ्ग दो
जिन्द ठगे नेह॥

१५

बेदिलदो कहिए सनकोइ जाय सुनावो।
जोथे राझण बसदा मेरा मियां उसनुवे दिलदो॥
दृश्कदा कमला वारोवे दरद दिलां बिचावे।
प्रेमरङ्ग नु टुक दरस देवाइवो तबोबां विरहवसनु॥

१६

साड़े नाल नैना होदवे परवाह।
तलभ दोदारदो मूलन लम देवो प्रेमरङ्गदे दिल चाह॥

१७

दिलदो मुराद मर पाई यार सुनवे सइयांनो साड़ा
हाल सैन बताई यार।

मुखमें बोरो नैना विशाल,
जित चितवे तित करे निहाल,
जहां पड़े भक्तनपे भोर ॥
हरषत आवे सिय रघुबीर ।
छोटोसो धनुय्यां छोटी छोटो तोर ॥
खेलन निकसे सरजूके तीर ।
प्रागदास चल सरजू तीर ।
बीचसें मिल गए सिया-रघुबीर ॥

४

देखो सखीरो नन्दजीरा लाल, मोर मुकट गरे
गुंज हार ।
जमुनाके नीरे तीरे धेन चरावे,बंशो बजावे दै-दै तार॥
ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिए, आवत है सखी
नन्दके द्वार ॥
कृष्णानन्द वह सन्ध्या समै में, गावत है नीको तान
पसार ॥

राग तिलङ्ग

एसो छल-बल कीनो मोरो माईरी, बँसरी बजाई
मेरो सुधर बिसरो ।
दई-दई कर आई मोरी माईरी ॥
हौं दधि बेचन जात वृन्दावन अँगुरो पकर मेरो
सब रस लीनो मो० ॥
ठाड़ो कदम तर बंसरी बजाबे, बंशो बजाय मेरो
मन हर लीनो मो० ॥

६

वे राधा गोरी मोरा सांवरो कन्हैया ।
कान्हाके शिरपर मुकुट बिराजे, राधाके शिर मोरी ॥

७

पान चंगेड़ो ला दे होजो मानो म्हानोहो ।
दिलदा महरम मिलिया सब दुख भूलो याको
तानो रम रब्बाना जीवानो माना हो ॥

८

राँझेदा कसमाना वे जिहाना मेडाहो ।
मेरी उमग वारो राँझेदो आइयां, खेड़ा कूंड़
बहाना मेडाहो ॥

५

खेड़ा मगदानो जोरनो कमला यार भला मियांबे ।
जङ्गल ढूंढा वारीवे वेला भो ढूंढा, मियां ढूंढा
शहर तंबोलनी कम० ॥

६

मेडो सुध लाइयां बे रसिया यार ।
रसिया प्रीतम साडे दिल बसदा, मियां मेंडे दिल
बिच बसिया यार ॥

७

मिल मिल जाना हो मेथो महरम यार ।
ववरु अधीन बिन कल न परेदो बे, सुनरे रब्बा
साडा दिल खिल जा ॥

८

हुसन निज़ारा कीता वे भला मेंडे हाकमां ।
इश्कका वोज बोके यह फल पाया, हाफिज़ मनभांदा
किन कीतावे ॥

तिलङ्ग—तिताला

नींदरो मेडो झोके खाँदिया कमला यार नदाना
मलावे मियाँ ।
साहब सिन्ध राजा वारोवे जुग जुग जीवे मेरा मियाँ
सेज चढ़ी सरमादियां ॥

तिलङ्ग

राँझा दिल विच समाना वे मेडा जहाना ।
जंचानो खेड़ा वारोवे ढामक बाजे मेरे मियां
राँझेदा सदयाना वे जहाना ॥

राग गौरी

एरी आली आछेनु पग धरत चलहु तोउ धरे
तोहि नाम ।
अब हो मैं नेहरते आई, यह अब जान्यो ठाम ॥
यह गोकुल गामको पेड़ोइ न्यारो, निपट चवाई गाम ॥
मारग मिले नन्दको ढोटा मोहन बाको नाम
कपट पीत वलिहार श्याम है, मोह लेत व्रज वाम ॥

गौरी—तिताला

ओ मोहन मेरो अचरा छांड़ दे, हंस मत बोले
निरख नगर नरनारो ।
कहा मोहे तुम वैसो जानो, नाहिं न तुमपर वारो ॥
सुन्दर वदन देखावो ताहीको, जो तुमपर तनमन
मई वारी ।
प्रेमरङ्ग हमसों नहिं तुमसों सुनन चाहत दश गारी ॥

गौरी

रमो राम म्हारे मनमें तनमें ।
जम लोभो नों मन होय धनमें ॥
सुकृतो होय जा जनमा तरनू, तो सङ्गत इ जो
सन्तनमें ।
कान संभालो गुण रघुवरनो आंख रूप जो ए
स्थांपनमें ॥
नाक चरण तुलसो रस सूंघे, मने नाम कोर्त्तनमें ।
हात करेते करम कृपालनु पाग बडे परमार थपनमें ॥
प्रेमरङ्ग प्रभु रोम रोम रम, रहो सरखु सुख घरमें
वनमें ॥

२

एरो अटके प्राण हमारे, इन मोहन मुरलीवारेसों ।
दिन नहीं चैन रैन नहीं निदिया, मले मन्त्र पढ़ डारे ॥

३

हो राधा प्यारो सैं थारो गुण गास्यां ।
पान खवास्यां फूल विछास्यां, मुखपर चँवर उड़ास्यां ॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम सुन, छवि पर
बल बल जास्यां ॥

४

गाय ले रे मन गोविन्द गुना ।
गोविन्द गुनारे गोपाल गुना ।
एसो समय बहुरि नहो' पैहो, फिर पछतैहो
मेरे मना ।
जिन तोकों तन मन धन दीनो, नैन नासिका और
रसना ।
जाहि रचत दश मास लगे हैं, ताहि न सुमरत
एक छिना ॥
अधम तरे अधिकार भजनते, जेइ आए हरि चरना ।
ना पतियावे तो साख बताऊं, अजामील गणिका
सदना ॥
धन-जोबन अञ्जुलिको जल जस, घटत जात पल-पल
हि छिना ।
यह जिय जान मजो रघुनन्दन, नाम देव आए हरि
शरना ॥

श्रीराग

श्रीरघुवीर कृपाला ।
दशरथ लाल दयाके सागर, मेटन भव जञ्जाला ॥
कौशल्या सुत त्रिभुवन नायक, करत भगत प्रतिपाला ।
भरत शत्रुहनके सुखदायक, धावत लक्ष्मन बाला ॥
नाम राम तिहु लोक उजागर, मोहनो रूप रसाला ॥
सदा रसिक गुणगाहक लायक, दाता ख्याल खुशाला ॥

२

प्रगटे गोकुलचन्द कन्हाई, चारहु दिस सोभा सरसाई ।
नन्द-महर घर नौ निध राजत, अष्टसिद्ध तहां
देत देखाई ॥
बन-बन सब वनिता व्रज आवत, हाथन कञ्चन थाल
बनाई ॥
निरखत सुखसुख यशोधानन्दन, गावत मङ्गल देत बधाई ॥
चिरजोयो जुग जुग यह ढोटा, रसिक खुशाल
जीवन फल पाई ॥

३

वसो मेरे नैनन राधे कान ।
तिमिर हरन भव मेटत जनके, प्यारो पिया समान ॥
करुणासिन्धु सकल सुख आगर, गुण तिहु लोक
निधान ॥
मोहनो मूरत सोहनो सूरत, नेह सदैव निभान ॥
चौदह भुवन एक सोई व्यापक, पूरण ब्रह्म सुजान ॥
ख्याल खुशाल करत निश-वासर, भगत हेत भगवान ।

४

निरमोहियारे सुरत बिसार डारो मेरो कित
बिलमाये श्याम ।
लाज न आई वचन कहेको, कठिन कठोर भए मनके
अब भूलि गये निज धाम ॥
चित नहिं धरत कबहु हृत माहीं, निठुर निडर लागे
मोहनजू पौढ़ि पढ़ायो वाम ।
लच्छनदास रावरी कीरति प्रगट भइ जग कल अपने
भलो धरायो नाम ॥

५

आवत वनते धेन चराई ।
सन्ध्या समय सखा सङ्ग लीने, राम कृष्ण दोउ भाई ॥
रँग रंग वसन अभूखन पहरे, उर वनमाल सुहाई ॥
बैन वजावत मृदु सुसकावत, छव अपार ही छाई ॥
निरखत व्रजकी बाला जित-तित, हृदय विनोद बढ़ाई ।
जीवनके फल पाय असीसत, जीवो कुंवर कन्हाई ॥
यह अपार सुख शोभा शोभित, उपमा वरनि न जाई ।
मात यशोदा करत आरती, रसिक खुशाल लुभाई ॥

६

कबहु करन गयो माखन चोरी, दे-दे दगा बुलाय
भवनमें भुज भर भेंटत उरज कठोरी ।
जानत कहा कटाछ तिहारी, कमल नयन मेरो रतन
किशोरी ॥
आवत देख्यो उराहनके मिस, ठाढ़ो चितवत
चन्द चकोरी ।
सूर सनेह श्याम मन अटक्यो, अन्तर घोत जात
नहिं तोरी ॥

७

वेन माई वाजे वंशीवट ।
सदा वसन्त रहत वृन्दावन, पुलिन पवित्र शुभग
यमुना तट ॥

कलिङ्गा—गौरी

नर जाने अमर मोरी काया हो ।
एक कुआं पे पाँच पनिहारो, पाँचो सोचे अपनो वारो ॥
औघट घाट कुअनवा टेढ़ा, कुम्हलाय गई पाँचो क्यारो ।
सहस पाँखरो एक शरोर, तन मन भजले दास कबीर
अपने गुरुके बलिहारो ॥

गौरी

अब तो माने न हठीलो मेरी बतियाँ ।
चार दिवसको चटक चाँदनो, फिर आवेंगो अंधेरो
रतियाँ ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनो, सौत लगाय रही है
घतियाँ ।
रामलला सिख मान हितापन, हरि हिय लाय
जुड़ावे छतियाँ ॥

८

आए हरि नामके बेपारो ।
काहूने लादे खांड़ खोपरा, काहूने लादी खारो ॥
सन्तने वन जा नाम हरीका, पूरो खेप हमारो ॥
तुम तो हमारे कुम्भ कलस हा, मैं खासो पनिहारो ॥
नाम तुमारा शिरपर राखत, नेक न शिरतें टारो ॥
तनकर महल सुरत का पैड़ा, ज्ञानको गौन उतारो ।
सूरदास प्रभु माल खजाना, लादे सन्त सुधारो ॥

कलिङ्ग

हमारो गुरु भूले कुं राह बतावे, सतगुरु तोन छन्द
ले गावे ।
छपरमें कमरी वो जंगलको लकरी, गँडुरी याकेरी
व मकरी बो बकरी लकरी मकरी ॥
जुलाहा केरा ताना तंबोली केरा पाना,
नानबाई केरा वोनाना पाना ताना ॥
बनिया केरा आछा हिङ्गा भैंसी केरा सिङ्गा,
महादेव का एता लिङ्गा, हिङ्गा सिङ्गा लिङ्गा ॥
कहत कबीर सुनो माई साधो या सन्तनका मेला ।
याहो बातका महरम जाने, वही गुरु हम चेला ॥

गौरी—जङ्गला

जोबन मदमातो एड़ो डोले ।
नयन सैनके अनेक भावते रसवस मन हँस बोले ॥

गौरी

मैं तो सइयांसो सरमात हों मैं तो नहिं जइहों सासरे।
औगुण भरो गुण एको नाहो, कैसे करहों पियासों
मैं बात हों मैं तो० ॥

२

एडी मेडे लाड़ले दो घोड़ियां हाँवे।
घोड़ियां धुर सुलतानसे आइयाँ, जोवे भाइयाँदो
जोरियाँ ॥

३

घुमा घुमा चरखले वालियांवे।
चरखा तेडा रङ्ग विरङ्गा, जोवे कातनवालियांवे ॥

४

अरे अरे हो बलमा मोपै जादू डारारे।
जादू डारा भला कियारे अरे, मन हर लिया
हमारारे।

४

कोयल बोले शबदको बगियांमे।
इस बगियामें लाल लगेहैं देखु बलम तोरो पगियामें॥

५

बांके नैनादो मारो मर जाऊंगो।
हमरे सइयांके नैन रसीले, अँखियोंमें कजरा
घुलाऊंगो ॥

६

ननदल थारोरे बोरो यासे बोरो म्हारो हजारी ढोलो
सासुसे लाला ज्यों जीमाणे थिरमें गरमी लागे ॥
म्हारे मारु आंगन बाहु चपलारो बूटो सारो लङ्का
लूटो ॥

७

चला जारे बजार हमें जानोरे।
ठराडी ठराडी टोलिया गङ्गा जल पानो, पीवनहार
गुमानोरे ॥

८

सइयां बनवारी कदमको छइयां सइया मोहे
आन मिले।

एक बन ढूंढ मैं तो वनवन डोलूंरे मेरे गिरधारो
मेरेरे मुरारो ॥

९

तू तो माने न हठीलो मोरो बतियांवे।
चार दिवसको चटक चांदनो, फिर आवेंगो अँधेरी
रतियांवे ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनो सोत लगाय रहो
घतियांवे।
राम लला सिख मान हितापन, हरिहिय लागि
जुड़ावे छतियांवे ॥

१०

सोना असो नाल तुसो नहीं बोलवे क्यों किता
मिलनेदा कोलवे।
मनडा लगाय सांवल वस कीता सुन गबरू अनमोलवे॥

कलिङ्गरादि

निकसि आई बलमा मैं तेरे देशवा।
तेरे देशवाके सब लोगवा दुखवा सुखवा भोग।
यहां मैं अइल्युं कूडकमैल्युं अपने खसमके भोग ॥

देश

घरमें गइल्युं सोगसें मइल्युं तुम बिन कैसे रइहौं।
पाप पुण्य दोउ सङ्ग कर दऊ तोरे चरणमें अइहौं ॥
पांच पचीस नार एक राजा, झूठा जगत पसारा।
गावे गूदर मन लागत नहिं सतगुरु किए मोहे पारा ॥

देशलूम

मोह लियो मेरो जिय कामनो तैंने।
महम्मद सा पिया मोरे डोरे आईलों ओही हमारे
पिए ॥

देश

म्हानें डर लागेछे राम मैं तो आवन करेस्यां मोरो
सइयो रैन अँधेरो।
निश अँधियारो कारो बीजरो चमंके, सनन पवन
चले बेकल भई सजनो ॥
इतनो अरज म्हारो सुनोरो रसिया अब बिरहा
दुख देस्यां ॥

१

जोबन झालो रह्यो नहीं जाय ।
दिन-दिन दूनो दुःख भरोरी, सायबा कासे कहूं
मैं जाय ॥
एसे समै ये गुमानो डा मोसो धोरज धरो ना जाय ॥

२

जोबन मातीछे जो सासुहामें मुसकावे ।
उमगो जोबन मेरी बल देशां सास मोरो मान
जगावे-सतावे ॥

३

अछो रे वह कार्इं थारो लासारो हो राजमूणे ।
अधर न लाग गरे रस छातो, आप मरण
जगहा सरो होराज ॥

५

मेलोवारे तेरो बांसरोने मोह लियारे ।
बंशी बजायके मन हर लोनो जादू टोना कियारे ॥

६

पियाके नैनासे मोहीरे ।
बाँको तेरो कमर कटारो, ठुमक चाल पर वारो ॥
झकरङ्ग पिया याद लगो है, आँख लगा जन सोईरे ॥

७

रावल जोगीरा मैं तो मोहीवे ।
कानन कुंडल गल सेलो विराजे, सुध बुध सब
मेरो खोई ॥

८

साजन लटकत आवे तोरो नाकबेसरियाके साजना ।
साजन हो लटकत आवे पनघट देख ले कोने
सिपैयाके साजना ॥

९

नहीं नहीं आली अब एतो दृठ नीको ।
मोरे कहेते चतरो सयानो मान मनायो नागर पीको ॥
अब तो मान तजो लखि राधे, रविको किरन
पान रस फीको ।
प्यासे प्राण जायँगे जल बिन, फिर कह कीजे
सिन्धु अमीको ॥
सूर गरभ लखि जोबन भामिनि, जानति हो अपने
शिर टीको ।
जाके उदे त्रइलोक प्रकाशित ससिहिं कहाडर
कुमुदकलीको ॥

बिहारी

महतारो मैं न रहूं बिन राम ।
वनको गवन राम लछमन सिय चले कहा करि
हों तेरे ठाम ॥
महापापी कपटी कुटील कुचाली, वसत जहां
जर जावे वह गाम ॥
होत प्रात वनको हम जइ हैं, इहां मेरा कौन काम ।
नहर अयोध्या सूनो लगत है, दशरथ गए सुरधाम ॥
सुर नर मुनि मोहे दोष देत हैं का करि हो रजधाम ।
चरण शरण रघुनन्दन विन मोहे,छिन न परहि विश्राम ॥
सूर श्याम चित्रकोट बसत हैं, मोहे नहीं आराम ॥

१

मानें नहीं सइयां गुइयां, नैनवा लागे हो ।
नयेरे जोबनवाको नईरे उमगिया राम, वो तो
छुवे मोरो बहोयां गुइयां नैनवा लागे ॥

२

रसिया प्यारा लागेरी मतवाला छैला आवे ।
नैनन भरो मोहनो मोहन, मुरलो मधुर बजावे ॥
झूमत आवे मन ललचावे, ख्याल खुशाल मचावे ॥

देश

पिया बिन सूनो म्हारो देश ।
सोना लेने पो गये वारो, सूना कर गये देश ॥
सोना मिला न पो मिले, रूपा होय गये केश ॥

बिहारी

सइयांको खबरिया कोऊ ल्याओरे पतिकवा ।
जबतें गये अजहूं ना आये, कैसे धरूं जिय
धीर मतिकवा ॥

बिहारी—लाल जत्

वह सूरतको वलिहार सखोरो ।
और नहीं देखे कोउ जगमें, वैसो हो अनुहारो ॥
सर्व सहे मेरे प्राण जोवन धन, वाहोसो हो भवपार ।
गिरिधर पियको वा छव ऊपर क्षणानन्द गये वार ॥

कलिङ्ग

मैं तो ठाढ़ो रो अंगनवा हो सइयांको आवन सुनवा ।
कागा बोलेरे सखो सगुन भइलवा, दरक-दरक म्हारे
उठल जोबनवा ॥
बिन देखे मोहे कल न घरन है, क्षण रसिक छल
मनको हरवा ॥

२

सुनोरो सखोरी तोरे सइयां हैं अवैयाहो ।
जैसो करनो वैसो भरनो अयना है जग मयाहो ॥
खेलत रहो सखिनसें सजनो, आई लगब तन
कोऊ न रखैयाहो ॥

गौरी—कलिङ्ग

अब मैं जोगन भई मोहे लग्यो विरह-वैराग ।
चारो वेद भेदसे पूछे तोरथ, कोटि गई ॥
भेष अभेष कियो नानाविध, सब कोई मन्त्र दई ।
सहस अष्टनाथो नो नाथ सिद्ध सब हरि एक पन्थ लई ॥
गावे गूदर है नाम मूलको जो गुरु ज्ञान दई ॥

२

सइयां मोहे बावरो कर डारो, अरे सइयां भला मेरो
जान ।
भला हुआ दिन थोड़े हो बीते, तेरो उमर गुलरो
सारोरे ॥

३

तुम आवो हमारे डेरे सइयां, काहे रूस रहेरे ।
बारा बरस चकवोसो बीतो, सोतनके बोल सहेरे ॥

४

हो सइयां तोर बलैया लूं, चूनरिया ले दे मोलरे ।
तें तो मोरा लहंगा फारा मैं फारों तेरो तनियारे ॥
सुनियो म्हारो रोंझ परोसन, चचा-भतीजन मारारे ॥

५

सुन मोरो गहकनोरो कोई चुरियां ले ।
गली-गली मनहरवा कूकें, अब लोरे चाहे तब लोरे ॥

गौरी—कलिङ्ग

बेंदिया न देहों मोरे जियके जञ्जालरे ।
बेंदिया देके मैं निकसो बजार, बेंदियाको हासल
मागे शहर कोतवालरे ॥

देश—तिताला

वारो वारोरे सांवलडा वंशीवालडावे ।
मोहनी तान सुनाय रागमें, केहा जादू तेंने डालडावे ॥

कलिङ्ग

सांवली सूरतदो बल-बल जाऊंगो ।
वंशी सुनाय रिझाय लियो मन, चरणकमल
चित लाऊंगो ॥

२

मेरो लुङ्गे लटकनिया भोजेरे, भोजे-भोजे सपइयाका
जामा झिलमिला होयरे ।
मोरे गाढ़े गढ़ गये कंगना, मोरे सइयां बसे
धुर पटना ॥

३

राम-रस ऐसा है रे भाई, जाको नाम लिये अब जाय
जाके पियत अमर होय जाय ।
संवत हो बौरा भए चाखत हो मरजाय ।
आगे आगे दव जरे, पोछे हरियर होय ।
वलिहारो वा वृक्षको, जड़ काटे फल होय ॥
घर राखे घर ऊबरे, घर राखे घर जाय ।
एक अचम्भो एसो देखो, मरो कालकूं खाय ॥
एसो मिठो मोलाकोरे, तन-मन अरपे कोय ।
जो नर पीवे सुधारस जाके, घर पर सोस न होय ॥
सो रस पीवे नाम दे पिया गुरु अरु दास ।
पीवत कबिरा छक रह्यो, अजहुं पिवनको आस ॥

४

बंगला अजब बना छह बेस जामें नारायण बोले ।
इस बंगलेमें दस दरवाजा बीच पवनदा थम्भा ॥

आवत-जावत कोई नहीं देखा, याहो बड़ा अचंभा ।
पाँच तत्त्वको भीत चुनाई, तीन गुणांको गारा ॥
भरम-भरमको छान छवाई, चिनै न चेतन हारा ।
पांच पचीस पातुरा नाचे, मनुवा ताल बजावे ॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, बूझे सो फल पावे ॥

काफी

माई मेरो दोनो कुल उजियार गुरगुण लेहु विचार ।
सात खसम हम नेहर करले, सोले करल ससुरार ॥
पांच पुत्रमें एककुं छेलूं, और खइलूं दोय-चार ॥
रांड परोसन कलेजां कैलूं, सांझ बड़ मछतार ॥
काली मूड़को एक न छोड़ा खाय गइल संसार ॥
कहे कबीर सुनो माई साधो, या पदको करो विचार ॥

६

हम न मरिब मरिबे संसार हमको मिला
जीयावनहार ॥
हर मरि है तो हमहूं मरिबे, हर न मरे तो हम
काहे मरिबे विचार ॥
हर हममें हम हरमें निश-दिन, अलख निरञ्जन
हो निराकार ॥
हर हो हम हम हो हर दोसत सब जग व्याप रहा
करतार ॥
कहे कबीर मर गया सोई, जाके घटमें हरि न संभार ॥

आशावरी

बसे वनमाली आली किसविध पाइए ?
ऐसी जिये आवै जैसे, जोगी होके जाइए ॥
ओढ़े अङ्ग मृगछाला, विरहन भईबाला ;
नख-शिख अङ्ग-अङ्ग भभूत रमाइए ॥
गरेमें डारूंगी सेली, होंगी अकेली हैली ;
ढूंढ़त निकुञ्ज कुञ्ज काहू न बताइए ॥
ऐसो कोन वेग मिलावे श्रीगोविन्द प्रभुसों भेट भुज
भर मर अङ्गसो मिलाइए ॥

२

ढोला मेडा यार वो ढोला मण्डा माहोडा आद्या वो
मैं रहियां किनारे तोर ।
आप हो पार उतर गया साजन, ऐसी तकदीर
रह गई छोर ॥

३

वारी उस खेड़ेदी बलिहारियां जिथे मेडा रांझण
बसदा वे ।
रांझण मेडा मैं रांझणदी, रांझण मेडे मन बसदा वे ॥
जोतूं प्यासा इश्कदा झङ्गसियाले जाय ।
झङ्गसिया लेदी जाटनीते राखिगो तेनु विरमाय ॥

४

होले-होले छेड़बो बिवा गाड़ीवान यार ।
नेह लगायकर दूर कित जांदा, झङ्गसियाले तुसी
खेड़ादे झेडबो ॥

बरवा—कहरवा

अजब घरदार लहंगा छापेदार घूंघरू ।
नाले-नाले मैं चली वे बूटे खड़े हजार मैंवूहेदी
वारीजा, वां रांझणदे शिरतज ॥

६

नदियादे पार धिगाना ऐसी कुकेदियांवो ।
तेनु अखा रावी पार खड़ी मैं हर करी घर आवनावो ॥

७

कमर संग लागीरी मोरो गुइयां ।
अँगनेमें बैठो सास ननदिया देखत मोहे अभागिरो ॥

आशावरी—जङ्गला

ताना देद जादियां वो सोणा तेरो बांदियां ।
अरज बंदीदी वारी कहे नहीं सकदी, बिन दामोदी
तेरी चेरियां ॥

२

मोसों चलहु न जाय राम ससुरवा ।
नैहरमें हम खेल गमायो, गुण-औगुण ले चली
सइयांके एसरवा ॥

३

झाँझरी मोरी नैया पार करो ।
गहरी नदिया नाव पुरानी, अपनो जान उद्धार करो ॥

४

एरी अलबेली नार ! मेरे कहा मानरी ।
राज बहादुर सब मिल खेले आइलो बसन्त
बोलोरी कोयलो अँटवा मोरी ॥

आशावरी

कोई पुन मेरनु ले गया ले गया जालम जोरवे ।
अन्दर बेखों वारीवे बाहर बेखों, मेरा मियां
सुनो पाई तेड़ो सेझवे ॥

२

वारी मेरा कमलांगांजा ल्याया नसा जोरवे ।
भांग अफीमदा अमन माने, एक चिलम घनघोरवे ॥

३

साड़े पैरां नालवे बन्दीदे अनवट नालवे ।
झांझर हल्लो नालवे बन्दीदे पाजेब नालवे ॥
ऊँचो अटारीवे कतरा बैठो वो सोणीवा पुरोंदो
छल्ल नालवे ॥

आशावरी—तिताला

मिल कर जानावे लोभो पुत्रापे ससोदे गर लाग ।
ससोदे पा बिच पावाटेवो पुनदे हस्तर बा, वाजिनोदो
जो बोकुरोवे तिनोदा कोन हवाल ॥

२

तू घर आमो बेनो मानोदा मानवे ।
राहतकदोनू आ मिल सोन्या जन्मदो असो चेरी
कहामो ॥
ऊंचानो कोटला हो रदानो सइयों वसदे लम्वे
ज्वान रावोदे पारासो हामणें तिथे साड़ामनमा ॥

३

कँगड़ेदो राह बतलावणा वे संता मैनू देवानु पूजन
जाणावे गाँवदो वजावदोवारो मन्दर आँवदो मनदो
मुरादे पुजांवणावे ॥

४

मेरा कमला जिन्दा भो रहणावे ।
रेंणदेहा मानु ध्यान तुसाड़ा किसो बहाणे तू
मिलदामो रहणावे ॥

५

सोण्या तैनू इश्क पइलाइयां बेड़ियां बेलियां
सों इश्क रंझेटा सानू मायल कीता महे रहतहों
सोइ जाणे ॥

६

पियवा कबों आवरे मोरे घरूं ।
तोर बिना मई ककुअ न भावे राख लेहु अवरूँ ॥

७

मली याँ बेदरददी वाणो कोतो नाल सजन गर लाग
सवेरे जो बीतो सो बीतो ॥

८

मड़ो जिंदड़ो कबलग याद करे ।
आटा सेर तोन गज वस्तर दुनिया नाहक भ्रमत फिरे ॥
साड़े तीन हात घर तमकूं चहिये नाहक महल चुने
नानकदासहै आप मुसाफिर जङ्गल बास करे ॥

आशा—टप्पा

मैंनू भांदा गबरू जानवे हां जान सलामत जगदी
सोभा चाकवे ।
शोरीते सुन राजो रहणा मेरा मियां मैंनू तोहो तेड़ो
पैरोंदो खाक पाकवे ॥

आशावरी

मिल कर जाणावे जाला दिलबर बे परवा गरोवाँथू ।
क्यों शोणा शोरीते सुण राजो रहणा कीपया
साड़े ख्याल जोन्द खोणा ॥

२

मैंतेरा सोंआवणिया चल शायबा बेसर मांदियां ।
अम्माना मारे बारी बाबुल झड़के वो मियां ताना
दे-दे सगावोर ॥

३

रामावे गोकुल जा बसिये ।
गोकुलमें गङ्गा गोकुलमें जमुना, सब तीरथ गोकुलमें
सचिये ॥

४

सोणानी में कित वलकूकाँ रांझण बेपर वाह ।
कुल तोह साड़े दुतांदा बेड़ावे मैं किस बल आखो जा ॥

५

अवेहसणा आगे पैर ना धरो लूट दियांवे ।
हो रसिया लेदो जटियाते मैं मुख सदियां ॥

६

कोई चुड़ियां लो कोई चुड़ियां सुन मोरी
गाहकनोरी ।
गली-गली मनहार पुकारे, शिरपर धरे मोटरिया ॥

७

रावीछड़ीवे रावीछड़ीवे छैला वो मैं दूतोंदे कोल डरदी ।
जित बेखां तित ढोला जांदड़ जांदा नथिदा बड़सी
दोनो कोंवारो ओझड़खांदा तित तड़फिदी तेंड़ो
जान कमीनो मेंड़ो जात भलो ॥

८

जोगी बार बार क्यों आवे सानू सच बतला तेरा
मतलब क्यारे ।
दैं दीवे भिक्षालेदा बिनही सुरतदा भरमावे ॥
आधीरात पहरके तरके, घर घर अलख जगावे ।
आनिकानो मुद्रा गले बिच सेलो सींगी नाद बजावे ॥
मछीवाले तूं रत्ताणी मत्ता साडा जिय ललचावे ॥

९

एरी ए मैं कैसे मरण जाऊं पनियाँ मय रोकत
कुँवर कन्हैया ।
बाट-घाट मग रोकत टोकत मानें न नन्द-दुहैया ॥
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन, मेरे मनको हरैया ।
पुरुषोत्तम प्रभुको छब निरखत,चञ्चल छैल कन्हैया ॥

१०

कान्ह करे तेरा जोरनो मोहनदो मइया एरी सुन
मात जशोदा कान्ह ।
सब सखियांदे नाल जशोदा जांदो जमुना पानी
चुन चुन कङ्कर कान्हा मारे गागर करे निशानो ॥
नन्द गरीब गरीब जशोदा अरी, कान्ह पिता कोई हो
रानी ।
रहो रहो ग्वालिनि गाल न दीजे निपट गँवार न कीजे ॥
अनदोसेनू दोष लगावे ठाकुरका भी कीजे ।
मेरो ही ढोटा निपट ही छोटा तुमतो नवल
किशोरनी ॥
यह कान्हा वृन्दावन माहीं अधम अधिक मचायो ।
उलटो रोष करो तुम हम पर पूत अनोखो जायो ॥
दधि मोरी खाय इन लाज मोरो लीनो भाजन
डारे फोरि ॥
एक दिन काना सङ्ग ले ग्वालन अगनें साडे आए ।
सूने घरमें धूमचाई दही लूट कर खाए ।
मेरी दृष्टि न आवे कबहूं याके चेटक जोरनो ।
जित देखूं तित रोता भाजत कहा होतरी माई ॥
एक दिन कोने लाग रही तब आए कुँवर कन्हाई ।
पकरी मैं बांह मोहन मन पकखो एक दिलादां
चोरनी ॥
बाहर देखूं बाहर मोहन अन्दर मोहन देखूं ।
सांवलडी सलोनी मूरत तहाँ देखूं मन पेखूं ॥
एसी लगन लगीरे जशोदा जैसे चन्द-चकोरनो ।
इनको बात न मानो मैया यह तो बड़ो सयानो ॥
बाहर हमसों ऐंड़ो डोलै, यह तो परो अयानो ।
केवलराम वृन्दावन जीवन माय हंसो मुख मोरनो ॥

११

बालाजी बाबा शरण तुम्हारो आयोरे ।
जनम मरण सुख दुख क्षुधा पिपासा घट उर्मिने
सतातोरे सोसा जलवासो ॥
जाग्रत, सपन, सुसुप्ति रातदिन तापत्रयने जराया ।
चौविस तत्त्वसो तन फरकत है, पचीसवां ढिग आयो ॥
त्वंपद लक्ष चौरासी भटकायो तत्पद राम लोभायो ।
प्रेमरङ्ग प्रभु शरणागत है, भक्त वछल सुन धायो ॥
श्रीव्यङ्कटमरणा श० नीलाम्बर वसना० रामानुज देवा
सङ्कर्षण स्वामी श्रीराधेकृष्णा ।

राग आशावरी—तिताला

बन्दगी करिए बाला यार गला सुन-सुन जिन्दगो
रहंदे ।
रब्बडा ढेढा ध्यान रखिए जिय धरिए शिर मन्दगी ॥

३

जटियां जोर ठगाइयांनो तेरो तेज निजारा
वनजारियांदे ।
हाटबजारां तैनू ढूंढदो फिरेदी रिन्दमे में होदे
कारण लूटियां ॥

४

असा नुकमो केहरे सोनिया हरिदेनाल नेह लगा ।
विश्वम्भर हरिनाम कहेंदे, अपनेनूको होर क्यों मगा ॥

देश—खिमटा

रात बालम हमसे लड़े हो ।
वे मनमोहन हठ कीनो सखी मैं अपने मनमान भरे हो ॥
जबतें मोहे सुहात कछू नहीं, विरह अगिन तन
जात जरे हो ।
रामदास पिय वेग मिलावो, अबतो धीर नहीं जात
धरे हो ॥

२

श्यामसे मोरे नेना लगे हो ।
सुधि आवत कसकत चितवनकी, वेधत बरछी
वैना लगे हो ॥
भावत नाहिं बसन भूषण कछु कहां सेज सुख चैना
लगे हो ।
रामदास पीतमके बिछुरे, बिछुड़त सब सुख सैना
गये हो ॥

३

पीतमके कोऊ फन्दे पड़े ना ।
जो कोई प्रीतके फन्दे परत है, कोटि जतन कोन्हें
उबरेना ॥
विरह अगिन बाढ़त निशवासर, दहत अनङ्ग सरीर
जरे ना ।
खान पान सुध भूल जात है, मनुवा एक पल धीर
धरे ना ॥
कृष्णानन्द रटत निशिवासर, नेह लगे कछु काज
सरे ना ॥

४

मोरे निदियासे नेना झुके तोरे पइयां परूं जरा
सोवन दे ।
सास मोरी सोवे ननद मोरी जागे, बाले सइयाँ तोरे
पइयाँ परूं मोरे ॥

५

मइकूं न जगावो सइयाँ, निदिया लागो रे ।
सगरी रयन मोहे तलफत बीतो, भोर भए रंग
पागी रे ॥
जागत-जागत सब निश बितो, भोर भए तोसों
अनुरागी रे ।
कृष्णानन्द प्रभू रसवस कर, लीनो प्रेम प्रीतमें दागो रे ॥

देश—एकताला

बेंदिया खोइ गई मैं तो साईं पिया तोरे साथ ।
यह बेंदिया मोरे मैकेसे आई, सौत लगाय रही घात ॥
कृष्णानन्द लेहौं तुम होसों, मानो मोरी बात ॥

२

बिछुवा देडालो महाराज, मैं तो भूली बालम
तोरी सेज ।
निरखत है मोरो नाज अदापर, चोन्ह लई तेरो घात ॥

देश

बाँसुरोया वाले साँवरे, मेरो गैल मत आव ।
गारी मैं दूँगी नन्दके छैला, तेरे हो नाम ले चाव ॥

२

अँखियां काहेकों लगाए, बिन देखे रहो ना जाय ।
सास ननद मोरो जनमको वैरन, नित ही रहत
खुनसाय ॥
सगरी रयन मोहे तलफत बीतो, भोर भए गर लाय ।
कृष्णरसिक तेरो यह सूरत, मो मन रहो समाय ॥

देश—ठुमरी

गोरिया पनघटवा तेरो घूंघटमें मन मोहे ।
कारे केस रतनारे नैना, गोरे गात अत सोहे ॥
चन्दवदन मुसक्यान माधुरो, तिरछी नजरन जोहे ॥

निहुरि चमक सिर धरत गगरिया, अदभुत ख्याल रचो है।
कृष्णादन्द विलोकत सोभा, देह-गेह बिसरो है॥

२

गगरिया छलकाई राम सइयाँ मोरीरे।
मैं जो गई थी पनियाँ भरनको, छुवत लाज न आई राम॥
कृष्णरसिक रसबस कर डारी, बरबस कण्ठ लगाई राम॥

देश

ननदुल सइयां बहुत दुख दीनो।
सनसुख हमसों प्यार औरनसो, ना जानें कछु कीनो॥
हाहा करत दया नहि आवत, मन मेरो हरलीनो।
चितवन भौंह मटक सुखमोरन, कोरन सरवस छीनो॥
कृष्णानन्द मानत नहि मनुवा, प्रेम प्रीत रस मीनो॥

देश—दुमरी

उरझे बालम हमार नैना मे उरझे री कहीं।
उरझेते सुरझे नही परली रेशमवाकी गाँठ॥

२

हरवा मैं ना पहिरूं मोरे सइयांके चुमि चुमि जाय।
लाख टकेको हरवा मगायो, देखत सवत लजाय॥
कृष्णरसिक सुख निशवासर मैं, करिहों ढोल बजाय॥

३

बाबुल मोरी विदा करो काहेकूँ बलमा रिसान।
भीतर मोजी डोलिया सँवारो, बाहर चार कहार॥

सहाना—तिताला

बिजुली सी गोरिया चमक चली री रङ्गमहलमें ठाँड़ी रंगरलीरी।
साँवन मादोकी रैन अंधेरिया, चमकत बाजूबंद दुति दशननिया॥
चन्द्रवदनि मृगनैनी सुन्दर, कटि केहर स्तन नरियर जतिया॥

२

सौतनको बात मोहे नाहुन भावे गुइयाँ अपने सइयां यह विलमावे।
जादू-टोना जन्तर-मन्तर, पढ़-पढ़ कर ले आवे॥

३

नित दौर नित दौर आवे मोरे मोरे मन्दिर तानन गावे रिझावे सुन्दर वर।
दर-दर फिरत रहत अन्दर वर, तन नारे तन नारे तान सुनावे बर॥

सहाना—धीमा तिताला

सुन्दर दुलहा सुन्दर दुलहन सुन्दर सखा सुन्दर सहेली सब।
सुन्दर सुरंग केसरिया बाना, सुन्दर नग-भूषण जग मग अब॥

सहाना—तिताला

ननदीकी बोली-टोली मोहेन सुहाय गुइयां नींदसे जगाय गारी दे-दे बरबस।
बड़े गुण मान बरज नहीं लड़िहों, जावोगे बाबुल कैसो परोगे नाही परवस॥

२

काली बोलो काली बोलो काली बोलो कालो काली।
शिवानो मृड़ानो भवानी महाराणी बोलो काली काली॥
याहि आदि याही अन्त शक्ति है, तीनलोक प्रतिपाली बोलो काली काली।
याहि जिय जान याही सुखसम्पत,भक्त मुक्त प्रतिपाली बोलो काली काली॥

३

राजनके राजा महाराजा विक्रम साह।
देश-देशके गुणीजन आए, देत मुबारक अचल राजराज॥

४

राजनके शिरताज राजा श्रीरामचन्द्र।
जगत उधारण जन प्रतिपालन, तुही आदि अन्त सब ही कहे बन्द॥

२

सेजिया न सोवे नदान मोरे सइयां खड़ी पुकारूं
रव तुही रवतुहीवे।
चुन चुन कलियां मैं सेजियां बिछाऊं, सेजिया न
सोवे नदान मोरे सइयां॥

३

अब नहीं रहि हौं नदान जोबनवा।
सासुजीसे कहियो ननदजीसे कहियो, सइयांसे
कहियो सुपनवा।
निस अरु दिवस छिनक नहि भावत, अब लै जाहु
भवनवा॥
अंग अंग सिथल रोम हुलसाने, लागो मदन पवनवा।
कृष्णानन्द विलोकत ठाढो एकटक केलि भवनवा॥

सोहनी—जत्

किनी वस मोहे सखोरो वनवारो सोहनी तान सुनाय।
मधुर-मधुर स्वर अधरन धर हरि वंशी नीको स्वरन
सजाय॥

सोहनी—तिताला

सइयां मैनू चिठियाहु नाह पठावै।
रैन अंधेरो डरावनी लागे विरहा आन सतावै॥

सोहनी—तिताला

सोहे ले डाली मलिया शीको वारी चुन लावै नीको
कलियां।
बेला चमेली दोना मरुवा मन रंगरलियां॥

सोहनी—ताल सवारी

मेरा मन जित लगियां तित लगियां।
माधुरी मूरत देख लुभानी श्याम रङ्गरस पागियाँ॥
कोउ वरजो कोउ कछू कहोरो डगर चलत मैं
मगियाँ।
जाय मिलोंगो व्रजमोहनसो सरस रङ्ग-रस रंगियाँ॥

२

मोहन प्यारे दी जरूरनी मैनू सोनेदी जरूरनी मैनु।
अत्तन कारण पत्तन वेलियांवे साँवलके तू दूरनी मैनु॥

३

मैंडे सोणेनु मिलावो सार्इं सच्चा पीर मेरा मियांवे।
मश्शा साईं वारिवे जग विच रोश्शा न मियां मनरंग
तू आस पूजा मोवे॥
हांवे मानु राहे विच छेड़दा आँख लड़ादा
रसमांदा नाहींवे।
सांवलड़ा मैनु कुछ-कुछ आँखदावे इस गलोमें तो
भांदा नाहींवे॥

सोहनी—धीमा तिताला

फरियाद मानु दिल करदावे मानदावो नाहीं
बोलदावो नाहीं तुसी साँवलयार।
रसे वस गइयां मैं तो तेडरे नाल सोणा मिल जा
मैनु महरम यार॥

सोहनी—तिताला

मौला जाने बेहाल मेरारे।
दिलदी दरदवारी मौलाहि जाने बिनदीया बेकरार॥

२

सुघर बनोके संग जागा बनरावे।
नीके रङ्ग लगा पागावे॥
सुन्दर दुलहन सुन्दर दुलहो, हितचितसो अनुरागा
बनरावे॥

३

बने तेरो बनरो नीको बनो जोवे म्हारा बना अरे
हांवे बना।
घोड़ेनो चढ़िया लाल बनरावे, मोतियन सोहे
यरे माल बनरावे।

सोहनी टप्पा—धीमा तिताला

भजनादि

फरियाद अल्ला दिल करदांवे मानदावो नाही
तूसी ढोलन यार।
लुट गइयां मैं तो तेंदडेरे पिछेनु आ मिल जा तोसी
नाल पियारा दिल करदावे॥
सोणी सुरत यारदी आँखो भरियांवे खुमारदो।

जावोनी कोईवे मुड़ ले आवो, रमझावे सानु तो
तलब दीदारदी ॥

सोहनी—जत्

सोणा जिन्द जानोवे मैं तेनु पुकारदो सजन सोणा
ताँड़ो बेपरवाही मियांवे ।
सोणीदा तन नाज कशोरी लगदे विरहदे ठाठे वाणवे
सोणा ॥

सोहनी—तिताला

सइयोनी मैं वारीवे बाला सनेही यार को कर
रखनीनी जञ्जाल ।
रांझण छाँड़ चला बिचा बेलेनी बूटा-बूटानी जञ्जाल ॥

२

कितक्सीर कीतीवे ढोलणदावे ।
दिल दीगलां क्यों नहीं आँखदावे मैंडे मियां मैंड़ो ॥
घोल घुमाई जिन्द सदके कीती नेह लगा जिन्द
जोतीवे माडेवे मियां ।

३

बेखा मानुकी आँखदा कमलावे रूठड़ा जाँदा
मैंडा सा थोड़ा ।
सेज सुख पइयाँ उघर गइयाँ यारवे ॥

४

रंग लागा बनरारे अब रंग लागा ।
चञ्चल बनरी अचपल बनरा ज्यों सोने मिल्यो
सोहागा बनरारे ॥

५

एरो छैल मेहरदा छोहरारे मेरी ओर नैन घुमाँवदा ।
माथे चीरा कलंगी सोहे, नैनन सैन चलांवदा ॥

६

कौन जानै दिलांदी सार अनीवे अनूठी ।
रांझण मांड़े डेरेनी आंवदा जिन्द असां सुख लूटवे
अनूठी ॥

७

कदर न जाणी तैं तो मांड़ीवे रांझा ।
लख वदनामी तेड़ीवे शिरपर झिलीयावे मियां तु
लख फेरीवे राझा ।

८

इश्क फन्दे बिच फन्दीबे मियां ।
नेह लगा करबे तू कित जादा मैंड़ा सोणा ज्यों
गुजरी सो सेहदी सेदींवे सोणा ॥

९

उठरो जोबन मदमाती रामनाम भज ले दिनराती ।
सोख मान ले आज जा दिलको हरि बिन कोज
तोरा सङ्ग न साथी ॥

१०

सांवल मैं बलमूल न बेखो हुण क्या करिए उपाय ।
बिन दिठियां मानूं एक पल ना कल सदा रङ्ग
तड़कदिया जीय जाय ॥

११

कान्ह वंशी बजाई आज सोहनी ।
सप्त तीन इकहिस रंगीले मदन मन्त्र पढ़ मोहनी ॥
व्रज युवती बहु और श्यामके, हरष-हरष
सुख जोहनी ॥
जानकीदास हरिचन्द्र चकोर त्रिय इकटक पलकन
छोहनी ॥

१२

झाड़खंडी जङ्गलके वासी हो ।
सुर नर मुनि सब तुमको ध्यावें, पावै सब सुखराशि ॥
वृषभवाहन सीस गङ्गविराजे, और झुक रही जटासी ।
जानकीदास पै किरपा कीजो, उमारमण अविनाशी ॥

१३

तूं कित जांदा मैंन ले चल नालबे ।
राम न लगियांदी बेशरम तू सानबे कृष्णा ज्यो
भामी त्यों पालबे ॥

१४

नैनादी झोके प्यारियाँ वो श्याम सुन्दर नन्ददुलारिको ।
बिन देखे सानू कल नहीं पड़दी, जानकीदास
सुख कारियांबे ॥

१५

सयाँने मुंड़ी आवै दूर न जाना ।
विनती करेदी तेड़े पइयां पड़दी, जिन्दुड़ी साड़ी
जीवाव मुज आजावे ॥

१६

बंशी अब न बजावो बनवारी ।
श्रवण सुनत सुध रहत न तनकी सुध-बुध दई
बिसारी ॥

१७

राँझण मेड़ा मेड़ानीयारबे आद्या वो मैं कित बलकुं
काँ जाय ।
जङ्गल ढूंढ़ा वारी बेलावो ढूंढ़ा हो रसिया
लीद यारबे ॥

१८

रैण कहां जागी प्यारे बलमाहो ।
रैणके जाये मातें नैन सोहावेदे कौन तिया अनुरागे ॥

१९

बिसरमत जावे नदानीयांदो यारियांबे ।
घड़ी बिच तोला वारी घड़ी बिच मासा, घड़ो बिच
पञ्च हजारो ॥

२०

माणिगर स्याने बोला बेडा वरनेणीरो ।
मैं कांई जाणा थारो मनडो लग्योछे माणी डार
पोळ्या म्हाने स्याने जगावो ॥

२१

घोलो कोतोनो राँझण आयावो ।
गलियाँ साड़ड़ी अन्तर बिछावां बिछुड़ा साजन
पायानीवो ॥

२२

दिल लियाँ जायरे यह सांवलियाबे ।
सुख मुरली वारी तान सुनावदां, साड़ा जिया
तरसायरे यह० ॥

२३

मन लियां जायरे अरे कोउ ठगियारे ।
सांवली सूरत साड़ा दिल चोर लोता जादू कीता
इश्क बगीयारे ॥

२४

हो मारूडा माने न घोला मृगानेणीदा ।
सोनेदी सुराही वारी मोनेदा प्यालाबे कोन पिलावे
चङ्गा दारुड़ा ॥

२५

फिरियाद अला-रब करदाबे माण दाबो नाहीं मेड़ा
ढोलन यार ॥
दिलांदी दरद वारी मोला हो जाने, कोई नहीं
देसाड़ी दादबे ॥

२६

अलड़े घावन छेड़ मेड़ा रांझणाबे ।
तुज बिन मैं तो कल नहीं पांदी मेड़ा रांझणा मानले
साडी गल सजणावे ॥

२७

अब मेड़ी आँखो बोच बसदा साजन सुरजन सइयां ।
आवो सजन गरलाग सवेरे, बार-बार बलगइयां ॥

२८

कानुरा रसिक घर वारो जो ।
वंशी बजावे मन ललचावे, आवत खोरो हमारो जो ॥

२९

जाणोदी सोहनो सुरत यारदो मन परबसदो ।
पल नहीं भूलदो याद करदो तेनू, नित उठ पूछदो
तू झब मिल मे राह तकदो ॥

३०

काला चोरे वालाबे महावालाबे महोवाला तू साडड़ी
जान कमलाबे ॥
तेंड़ी याद साड़ड़ी भूलदीवो नाहीं कांना सोहेदे
बालाबे ॥

सोहनी—सवार

अरी अरे मलिया तोरो वारो बिनलावो नोको कलियां ।
जान-सुजान घो माने रंग रलियाँ ॥

२

नड़रूं नड़रू नड़रूं बलमा कासे कहूं कोउ नाल
जाए मा ।
एक डर है मोहे सास ननदीयादे रनिया जेठनियाको
धाय लगो तेरे पाय ॥

सोहनी—तिताला

चन्द जाहा मुखड़ा यारदा मैनू भावे ।
और गलों तेंड़ो कछु न सोहावे मिलन हो तो आवे ॥

२

आंणाबे मैं कहंदी तैंनू यही गलांबे तुमाणा लेरवामी
जिन्द रखोबे ।
भट खेड़ांदे ढूंढ़री फिरेदी तैनुबे मोयां आणावे
मै कुककुक जिंद थकी ॥

सोहनी—धीमा तिताला

गिरिधर तेड़ी सुरत मनपर बसदी मिलहो मोहे
आय ।
जबते गय भय नहीं के राग रंग नू देहो देखाय ॥

सोहनी—तिताला

सुजवे गुमानी दामोयां ढ़ोलन यार सुमांणी ।
घायल कर कर खबर नालो तोहांवे मियाँ
सदा रङ्गवारी जिन्द कुरवानी ॥

२

माहोदी जरुवे मैनु कित वजांदा मैंड़ासांई ।
जिस कारणमे पत्तल मलोयांवे वोही रांझण
दूरदी वीचे मैनु ॥

३

सोलागा मोरा नैन तुमी सोहो ।
सांवली सुरतवे रसभरी अँखियावे बिन देखे नहीं चैन ॥

४

वे मियां असो वन्दे तेडे साडे हाल परमे हरदोन
जर रखणावे ।
तुसो करदार मझसाड़ेनाल मियां तेड़ी लेबां
बलाइयां तेड़ी रमझदा मुस्कल लखणांवे ॥

सोहनी—धीमा तिताला

तुसो मेड़े घर आनी ढोलन प्यारा ।
तेड़ी सुरतडे मुस्ताक रहंदे नित उठ रैन दिना ।
वेमियां जब आमो साडे कोल माड़े दिलनु चेनहो
आंदा तेड़े बिरना ॥

सोहनी—तिताला

सुरत बिसार डारो नन्दके दुलारे ।
हमरी बार मान होय बैठो राधारमण दमन दुखभारे ॥
पुञ्ज पुञ्ज और गुञ्जहार हिय कुञ्ज कुञ्जवनविहरन
हारे ।
छिनछिन खबर लेत संतनकी सदा सर्व्वदा सांझ
सकारे ॥
अपत अजामिल गीध गणिकादिक ते पतित पातकी
तारे ।
हमरी बार विचार करत हो कबहु न काहुके दोष
निहारे ॥
पतितपावन विरद तिहारो अबके मोहे निस्तारो ।
जुगल पतितके आनबनो है नाथ निदान निवारो ॥
आपसे पीयारे आपसे नहीतो जानदे कौन कीसे ।
इसफसने सेतो गयजाना तुने मन बसे सपने
दीसेनी मन जानदा कौन कीसे ॥

२

साडा दिल चाहोदा वे यार जोतु बोरनो भाई ।
महरदी नजरामे बारिनि तराखी तो जीवन हो
सोयोही रहोंदा नित सोच विचार ॥

३

मै तेरीवे मोही वाला यार मै तेरीवे ।
आप छाड जांदावे नाल महोदे हणहोंवो दो तेरीवे ॥

४

साइ तेरा भला करे वेगी आवनारे ।
इतनी अरज मेरी मानले गरीवाँदो नालबादोदा पाइ ॥

५

औगुण तेडा भावे गुमानी डावे ।
औगुण तेडा बारीवेगुण करलीता वन्दीयानु कीत
रसावे ॥

६

तैंड़े नैन लगेहो रानाल सज्जन मैं तो फंदिया तेरी
मैनु नादमदे ।
साँवलड़ा मैंनुकी समझाँदा, असो वे तुसाड़े सोणा
किस झमदे ॥

७

आइयो वो रावल मियां कदी असां बल फेरा।
तपदी सोकदी फन्द उड़ीके तू सुण राझां साँई
कदी पाई ॥

८

देणीडा बेगाणा हां-हां वे यार।
आँखें लड़दी रवकीसीदे नाल ॥
विनति करेदी बारी पैरां पड़ेंदी कबो समझ
नादांणा बेयार ॥

९

सदडे गइयाँ मैं तेरे सोणावे मारे माहीडा यार।
जिन गलाँ तो मैं तेंडे बारो वे यार ॥

१०

सोणा लटक दिवाणा बाला नजर मिलांदावे।
खटके वारी मियां दाणा नदाणा दुर न सकदेवो
अटके माहीडा ॥

११

बिकुवा मैंनू की करणा यार।
सानूकी पईवे इस्कदोमलां समझ ददाकी करणा मान ॥

१२

मला मोही यार मैं तो मोहीवे आँखों सानूको
मारदा।
भालां माडा दावणा चंगडा काजीवो होशी शो
तू तो ठग बजारदा ॥

१३

सइयाँनी मैंनू झाला झालण झालियांवे।
कड़न छेला पुनससीदा हाल, जिस दिन मेरा वारोवे
काजी होसीवे मियां जावो सुनावो ससीदे हालनो ॥

१४

वे अल्ला वे मेरी अम्मा वे अल्ला वे अक्कावे अम्मावे
मेरो वे।
पान सोपारो तेंडो जारत लै आइयाँ भूलो मां
चण्डमुण्ड असुर दलावे ॥

सोहनी—एकताला

गल सुणजा मेंडी तुज विन चैन न आंदा वे यार गुमानी
दिलदी दरदा थीं बेकल रहेंदी असो कूकदियां
फिरदियां दिवाणी ॥

२

अणी रांझण कजाक लूटलीतो जिन्द माँडी।
जो तू सांडी जिन्द फेर देवो असो बंदियां हुइयां
हुण तेंड़ी।

३

एरी माइ अंयना बुहारूं पलकनसों मीत पियरवा
साजनवा आइलो मेरे घर।
तिहारे मिलन कही मन हुलसीला सुघर सुन्दर चतुर
बालमुवा पाइलो ॥
सदारंगीले पूजीले सबही इछरीयां बड़ भागन
पाइलो ॥

सोहनी—तिताला

वेमही वाले मैंनू न बिसारणावे।
कित बल जाँदा प्यारेदी अमान तैनूवे ॥
तेंडी सुरत मेंडे मन पर बसदी बेहोरनो माणी
जिन्द बार बार जाँदी ॥

सोहनी

वो मेंडा साँई तेंडे हाजर बंदी बिन दामादी
सांबल तेंडीयां वो०।
जीवे जीवावण बलिहारि यांदा अणीवे तु नाहक
मेंडी जिन्द फन्दी।

२

बो चोरेवाला भला भला मेरी जांन।
छिप-छिप जाँदाबारी खबर न लीतो अदोत तेंडे
कांनां सोहे बुंदेवाला ॥

३

साईं जाणेवे हाल मेंडावे।
हुरों वीछड़ी वारीवे मेहोया वीछड़ोयांवे गोरी
तुकित विगोरियांवे ॥

४

जङ्गसियालेनुवे ध्यान असाडा वेमोया रांझण
आमिल भलीयाँ ।
जतन लगे वारोवे सोइ तन जाणोवे रांझण ध्यान
रहंदा तैडाँवे ॥

५

कर कङ्गणा महंदी लावरे ।
अङ्ग उबटना मैदी तेल चढ़ावो सौक रङ्ग पियाके
लगावरे ॥

६

मैडा ढोलना दिलजानो ।
तैडो सुरत मैडे मनपर वसगइयाँ बांको सुरत मिठ
बोलना ॥
ठगाठगाइ कर के मन बस करलोता मैडे चसमोदे
बिच अन मोलना ॥

७

सुनतो जानो यारवे अँखियां न फेरीवे ।
हमदम इश्कदोना कहोना सुनो बन्दियां मैं तेरीवे ॥

८

बिन देखे कैसे रहिये अब मोपै रहिलो न जाय ।
जो रहें उनको हियो सराहिये सदारङ्ग मइकूं रैन चैन
ना दिन विहाय ॥

९

आज माई सान पिबरवा मोसे करत रङ्गरसकी बतियाँ ।
सदारङ्गीले पिउ हँसत बोलत हैं मइसन करत है
नेहकी घतियाँ ॥

१०

बड़ो रैन गइलो अजहु नहीं आये पो अब कहा करूं
कित जाऊं एरी दई ।
आपन जायके अनत बिरम रहे नींद गमाई औरनको ॥
हम जानी न थी एरी सखी जो होवत है प्रीत
अतही बुरी ॥
औज कछ का तुम जानत हो होंवत हैंगी रङ्ग लवाबरी ॥

११

वारीवे दिवाणा कहैदे लोकांवे मस्ताना कहैदे ।
मैं तो तैनू कहँदो सोवे मानदां नाहो याही मलाँ
सयांणा कहैदे ॥

१२

दिल करे फरीयाद वेमांन दावो नाहो तेती ढोलन यार ।
लुट गइयां वारी तैडडे पाछे मेरा मियाँ आ मिलो
साडे नाल प्यार ॥

१३

खबर न लीतो मेरे यारवे मेरियां ।
आप न आवे वारी ना लिख भेजवे पैडा मैं तकदी
तेरियां ॥

१४

गुमानी घर आजा रहणा रसिया ।
हँस हंस करजाणा पोवो पिबावो मइकों छकावो
आज मेरे घर काजा ॥

१५

यारवा मैडीको आंखदा कमलावे ।
साथोड़ा जाँदा मैड़ावे साथोडा यारवा ॥

१६

अणी अणी रांझण कजाक लूटलोतो जिन्द मेडो ।
जोतू मैडी जिन्द फिरदेवी असी बन्दियां होइयाँ तैडी ॥

१७

मैंनू आ मिलो गरबांहीवे रांझा ।
तैडे कारणवे ओलंभे रहंदे असी तू सांडरे सुखदा साँजा ॥

१८

तै एत्ता मानको यारो नार हौं तोहै कबको
मनावत तें एक न मानो ।
हितसों तोहै समझावतहों सो तूं अपने मनमें जानो ॥

१९

सुपने जागी रैन मैं तो उसके सबही साथोरे प्यारा
मेरा बेखोरो एहाँ ।
बारोंरो इस दुतियनकों जिनराखो न्यारा ॥

सोहनी—धीमा तिताला

सखी पल ओट भए जो भइ मन हो मैं कहा कहों
कल न परे।
इन्द्री बिकल उदास बालम बिन यह दुख कौन सहे ॥

सोहनी—तिताला

आज मइ कहो नवल वारीमें परमल वास।
चहुं ओर करक रहो प्यारे भँवरूं डोरत पास ॥

२

म्हारे डेरे आइयोजो ढोला सायवां राज।
सेज सुती निंदरिया न आवे उभो उभो वाटरो
जोवे बेगो आवो मोरे नाहा पूजलो मनको आस ॥

३

एतो मान न कोजेरो नार वोतो कबको मनावत
एक न मानें।
होंतो तेरे हितु लागो वो तू न माने समझ बावरे सांचे
मनको आलो छंतो तेरे नैन पराने ॥

४

राखिते ना पारि आमि प्रभु दियाछे येमन।
अदरशने आँखि दुखो, हेरिले ये मन सुखो,
नयने रोदन क'रि ना हइल मिलन ॥
कि हइल आमार व'ल, व'लि कि करिया लैल,
किशोरो हेरिले हेरि, से चित ना हेरे मरि,
लेगेछे तारे केमन ॥

५

राझण मैंडो खबर न लींतो अब मैं किसनू जाय
सुणावांवे।
जो बीतो सो दिल बिच बीतो नररङ्ग ठंढो सांसांले
रहजावां ॥

६

क्यों सोणा मैं वन्दियां तेरियां महर नजरदो चेरियांवे।
गुण औगुण सब माफ करोवे तुज विना नहो सेरियां ॥
एक गुण औगण जानदे नाहोवे तु सुण जागलां
मेरियांवे ॥

७

मरुडो बोलावे मृगनेनो वो मारुडो।
मैंतो थारी दासो वारो तुमहारो साय वो कौन
पोलावे सङ्ग दारुडा मारुडो ॥

८

को तक्सीर कीतो वो ढोलन मैंडो दिल दोगलां
आप क्यों नहो आखदावे मियां।
घोल घुमाई छदके कितो नेह लगा जिन्दलीतो मैंडो ॥

९

ढोलण साड़ो नजर नहो आंदा केवल कुकांजाकरे
फरियाद।
दिलदो गलां वारी कीसन सुनावां रतियाँ आन
भूलदो आदवे ॥

१०

बरसें नूर जहूर मोराजो तेरे रोझरडे पर।
जोइ जोइ धावे शोंइ शोंइ फल पावे पाप कटे दुख दूर ॥

११

मैंडा राँझण मिलादे पोराँ तेरे जारत अइयाँ मुरादे
मङ्गदो सदके सदके गइयाँ हीरां।
तैंडे घोलियाँ घोलियाँ घतियां घतियां छड़दे छड़दे
जादियांरे दडियां नैंदडियां याद साँझ ओ सवेरा ॥

१२

नैणांदो नोके प्यारियाँ राँझण मिले तो मैं वारियां।
नैणां तू साडो वारो बरछोदो णोंकों प्यारो लगे जैसे
कारियाँ ॥

१३

माने न पो लावे सङ्ग दारुडाहो मारुडा।
सोनेदो सुराई वारो सोनेदा प्याला आप पोवे म्हांने प्यावे॥
उभो उभो मृगनेनो अरज करे शो अरज मानो म्हारो
भवारुडा ॥

१४

जांणोदो शोहणो सुरत यारदो मनपर बसदो पल
नहीं भूलदो।

याद करदो तेंनू नित उठ पूछदो तूँ जब मिल
मैं राह तकदी ॥

१५

साँई जाणींवे सादी दिलोदा दरद वारीवे ।
कोई नहि जाने बिन दीठियांवे करारीवे ॥

१६

कामन मैंनू लायावे मैंड़े यारदा जमाल ।
इश्कदी वेडी सानू अखवे सदारङ्ग किता तिसनु
सम्भान ॥

१७

जब तैंडं चाकर हुइयां कुरवांण घोल घुमेदियाँ
घतियांणो ।
तैंडी सुरत मैंड़े मनपर वसदी की करां मैंडे सांइयानी ।
मदत तैंडी रवबेदाव्या महरकरी मिजमानी ॥

१८

औगुण तैंडा भावे गुमांनीडावे ।
औगुण तैंडा वारी गुण करलीता बन्दिनू की तरसावे ॥

सोहनी—तिताला

लागो म्हारो नेह साँवलेसों ।
साँवरी सूरत वारी मोहनी सूरत बिन देखे नही चैन ॥

२

महिमोरावे मौला जानेवो ।
दिलांदी दरद वारी कोई नही जाने बिन दिठिया
देदिवाने ॥

३

ढोलण मैंडा मैंडामो यारवे ।
आज्यावोमैं कितवलकु कां जाँय करा फिरियादवे ॥
कदी तु मौला मैंडा काजीवो होसी पकरकरां
फिरियादवे ॥

४

असी जिन्द वारियाँ अणी वारियांवे ।
पलकांदी नोकों वेयार लड़ लड़ जांदियां सोहनी
सूरत लगदी प्यारियां ॥

५

सइयो वेखो जोबन मैंडा जाँदाणी ।
जोबन जाँदावो नूर नहीं आंवदा नाहक
उमर गमावदाणी ॥

६

अलडे घावन छेड़वे बोबा मैंडे वो ।
नैणांतं साड़े बरछोदी नोंके वेसोणाकी करदे
उलभेडवे ॥

७

झालण झालणा पयावे मैंडा यारवे ।
एक तत्ती दूजं मैंनू सहँदी उमग खेड़ाँदी करी पुकारवे ॥

८

बाग बहाराँवे दिलवर मैंडा ।
हँसत फुलझड़ेदे नाल उमग दिलवर कीता गुलजार ॥

९

लाडले बमेबनी सो रङ्ग लामा ।
अतही जोबन मदमाती बनरी हित चितसों
दिलपागा ॥

१०

इश्कफन्दे बिच फन्दीवे मियां ।
हाल दिलांदा वारीवे मौलाही जाने तुं की जाने
हालवँदिया ॥

११

नैणादी नोंके प्यारियां ।
जो सहँदा वारीवे नाल उमगदे मिया उनदे कलेजे
सारियां ॥

१२

तेरी मुरली नेक बजाऊँ श्याम ।
जोई जोई तान होत मुरलीमें, सोइ सोइ गाय सुनाऊं ॥
तेरे सीस गथँरच वेनी, अपने मुकुट बंधाऊं ।
तेरे भूषण मैं पहरूँ हरि, मेरे तुमे पहराऊं ॥
तुम माननी होके मानकर बैठो मैं पर पाय मनाऊं ।
सूरदास प्रभु होहु राधिका, मैं नन्दलाल कहाऊँ ॥

१२

जायके यशोदासे कहोंगी ।
सूधे रहो न गहो कर, सों कर बहुत सही अब मैं न सहोंगी ॥
सोहें हमारी जो सारी कुवोगे, तारी दिए बिन मैं न रहोंगी ॥
हौंरे हमारे को हाथ न लावो, लाल ! मैंहूँ बनमाल गहोंगी ।
मोंसों टेक करो जिन मोहन एककी लाख बनाय कहोंगी ।
युगल सखी करों प्राण निछावर, अङ्ग अमिय रस लाय रहोंगी ॥

१३

तज अभिमान मान जो चाहे, प्रभुमय जगत न निरखत काहे ।
सत्गुरु सङ्गत कर गरुता तज, सहज मुक्त फल मिलत है ताहे ॥
जहां अहङ्कार तहाँ प्रभु नाहीं, सुखदुख अपनो करम निभाहे ।
प्रेमरङ्ग संतन पद रज हो, कोटजनम अघ तृन दव दाहे ॥

१४

प्रभु तुम केते पतितकूँ तारे गिनत मैं हारे तारे ।
क्या ब्राह्मण क्षत्री, वणिया अन्त्यज क्या बूढ़े क्या बारे ॥
क्या पशु पँछी जलचर वनचर, निशिचर क्या दानव क्या कारे ।
यमकी फाँस प्रेमरङ्ग छूटत, कहतहि शरण हैं आये तुमारे ॥

१५

घटमें बैठत महरम पाया मनसों देखत मनमें समाया ।
मगकों देखत भरम भुलाया जगन्नाथ सबकों बिसराया ॥
नामरूपसों स्वरूप छिपाया स्थूल सूक्ष्म कारण महामाया ।
तन मन धन सब सियपति अरपे, प्रेम रङ्ग प्रभु भक्त कहाया ॥

१६

मेरा कहा मानोजी मोहन मोहना ।
नन्दरायके लाल लाड़ले, छैल छबीले सोहना ॥
किए प्राण बस नैन मिलाके, अब आवो मेरे गोहना ।
ख्याल खुशाल करण चित चाहत, कुञ्ज कुञ्ज छब जोहना ॥

१७

सखी मन मोहनाने मुरली बजाई ।
बंशीवट-तट ठाढ़ारो आली, वरजो न कुंवर कन्हाई ॥
चलोरी सखी मिल देखिए शोभा, उमंग उमंगाई ।
ख्याल खुशाल करत कुञ्जनमें, वृन्दाबन छव छाई ॥

१८

दिवाणे क्यों भूला मगरूर ।
नरतन पाय सुमर साहेबका, या हितु जो मञ्जूर ॥
डार पत्र फल फूल उसीका, हेगा जलमें जड़र ।
गगन चन्द्र सूरज क्या तारे, सबमें पूरन-पूर ॥
आपन आपकों विसर गया है, एसा है बेशड़र ॥
सोवत जागत उठते बैठत, हरदम रहंदे हजूर ।
सबकों जगमें बड़ाकर माने, आपकों जाने धूर ॥
जब वो करम करे आपसे, तब ही होवे मसूर ।
कपटकी टाटी डार बहावे तब दरसे वो नूर ॥
रूप रङ्ग रस हेत सीस दें, जो बिरले कोइ सूर ॥

१९

दिवाणे क्या खोजे घर दूर ।
इबराहीम अधम दिया छाड़ बलखको शोलासे लख छर ॥
गोरख गोपीचन्द भरतरी शिरमें डारो धूर ॥
शेख फरींद कूंवेमें लटके हो गए चकनाचूर ॥
अनलहक हक कर पहुंचे शूली चढ़ मन शूर ॥
छांड़ कपट पकर गरीबी ताते पावे मञ्जूर ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सौदा पूरण पूर ॥

सोहनी—चौताला

एरो इन बांसुरिया माई मेरो सरवस चोरायो हरि
तो चुरायो हतो अकेलो चोर ।
असन बसन अरु नयन श्रवण सुख लोक लाज कुल
धरम धीर ॥
अधर सुधा सर्व्वस जु हमारो ताहे निधरक पीवत
रह गंभीर ।
नन्ददास प्रभुको हियो कहा कहूं यह प्रेम बीर ॥

२

सोवती कैसे ना मोहे नाहन सुतावे गुइयां !
बोली ठोली मारे नैना नचावे लड़े बरबस ॥
अङ्गुरी नचाय नचाय गारी दे सइयांकों रसबस करे
मोहे कसकस ।

भालकोष—तिताला

गिरिको गुहा मध बजत बधाए सब सुर पवन
प्रतापसों धाए ।
अञ्जनी अत हरषत सुर निरखत विधि कर
परस उठाए ॥
अपने अपने शस्त्र अवध कहे अज चिरजीव बताए ।
सुरमुनि काज करन कपि प्रगटे रामके दास कहाये ॥
सुर मुनिवर वर दीन अभयकर सूरज शास्त्र पढ़ाए ।
प्रेमरङ्ग रघुनाथ मिलनकों ऋक्षराज घर आए ॥

सोहनी—तिताला

बजत बधाई अञ्जनीके आज ।
प्रगट भए हनुमान महाबलि सुरमुनिके सारे काज ॥
अञ्जनी आनन्द हरषत निरखत देव दुन्दुभी बाज ॥
पवन-पुत्रको जनम सुनि हरषित श्रीरघुराज ॥

राग बिहारी—ताल ठुमरी

छोटी ननदीरे पनियां कैसे के भरूँ ।
भरीरी गगर शिर समलत नाहीं मथवा कैसे के धरूं ।
नाजुक कमर चलत लचकत मग कृष्ण रसिक कररूं ॥

बिहारी—ठुमरी

मोरी ननदीरी घर अङ्गना न सुहाय ।
जबसे गए पिया सुधहु न लीनी रहे रहे जिय
छोटी घबराय ॥
छिन छिन शूल होत हियरे बिच क्यों सइयां दोन्हो
बिसराय ।
कर मीजत निशिदिन पछितातो लोकलाज जरजाय ॥

२

लगोला म्हारो नेहरे साँवरे कन्हैया सों ।
पल झपकत मोरी बहियां मरोरो सूरत-मूरत
प्यारे मन हरलीनो ॥

३

न जगावो मोहे रातको पिया जागो ।
कहाँ गँवाए पिया रैन निठुरता भोर भए अनुरागो ॥
हम जानी यह कपट तिहारो पोकलोक ठग लागो ।
(न जगावो मोहे)
रामदास पिया वेग मिलावो निपट लाज हम त्यागो ॥
(न जगावो मोहे)

४

मैं तोरे बिन व्याकुल भइ सारी रात ।
सगरी रयन मोहे तलफत बीती पिय नहीं आए
मेरे पास ।
कृष्ण रसिक अब एक न मानों तुम क्यो सौंहैं खात ॥

५

कागा बोले नारे जिया लहरियाले ।
तलफत है दिन-रैन पिया बिन जावो खबरिया देरे ॥

६

उमंगसे दे डारो मोरो झुलनो ।
यह झुलनो मोरे मइकेसे आई नोके-झोकेको झुलनो ॥

७

नदिया किनारे बिके राम गुजरो ।
लहँगा भो लाए सारो भो लाए
अंगिया न लाए सारी बात बिगरी ॥

८

हिँड़ोलना मैं ना झूलूं मेरी जान ।
जिय धड़कत यही बात सखोरो देवराको मन बेमान ॥

सासके आँगन केवरारे कहीं ननदोके आँगन डान।
जामें उरझो आचरारे सइयांसे कहियो छुड़ान॥
कासों कहों यह भेद सखीरो विसर गई कुलकान।
कृष्णरसिक रसबस कर लीनो वह मधुरी मुसक्यान॥

९

गगरिया मैं घर धर आऊं ठाढ़े रहो बाँके यार।
गगरी में धरि आऊं चुनरी पहिर आऊं
करि आऊं सोरहौ सिङ्गार॥

कलिङ्गरा—ठुमरी

लागी गइलो हमरा जियरा।
पनवा ऐसी पातलीरे गज मतकोसो चाल।
कृष्णरसिक तिरछो चितवन सों फेंकत है वह जाल॥
नहि मानत मेरो एक पल हियरा॥

विहारी

ना बसो बईमानको नगरिया।
आध न आवै वारो ना लिख भेजे जोवतहूं पिया
तोरी डगरिया॥
कृष्णरसिक कासों यह कहिये कोउ न लागत
मोरी गोहरिया॥

२

जोबनवा तू ना जइयोरे तेरे रहेसे मेरा मान।
जो तू चला वारी वे जान न देशां मौला राखे
तेरी आन॥
कृष्णरसिक यह बात मान ले अब समुझै नादान॥

विहारी—तिताला

रातदो उनोदो बूंदे पानो पीने आइयां।
सेग सङ्गता बेग बंगता बेधड़दे दूबाइयां॥

जंगला—तिताला

मोरी भोली परोसिन वृन्दावन गैल देखाय देरे।
वृन्दाबनमें कान्ह वसत है मुरलीको टेर सुनाय देरे॥
कृष्णरसिक सों लगन लगो है मेरो मन
समुझाय देरे॥

विहारी—खिमटा

सूरज मुख पानो न जैहौं मोरी बेंदियाका रंग जरिजाय।
यह बेंदिया मोरे मइकेसे आई देखत सवत रिसाय।
कृष्णरसिक मन भाई झुलनिया कासे कहों समुझाय॥

विहारी—तिताला

मेरो श्याम कन्हैया विरमायो मैं कुवरो।
कारी तुम्बो सुणी हाथ परो जब मधुर मधुर बाजो
तुम रवरी॥
चेरीको चेरो पटरानो भई है कृष्ण कन्हैया वर पायो
कुवरी॥

२

नन्दनन्दनकों जगवन्दनको कुछ कुवरो चन्दन
घस ल्यावै।
चेरोको चेरो भयो नंदलाला हमें तजके कुछ टेढ़े
मनभावै॥
हाय उधो अब कह करि रहिए विष खइए याही
जिय आवे।
गोपिनको मोहरें न चलें या कुवरो चामके दाम
चलावै॥

३

को हम को तुमसे तपसी बिन जोग सिखावन
आए हो जधो।
पै यह पूछत हों तुमसों सुध पाछलि आवत
है केहूंधो॥
एक भलो भई भूख मए और भूल गए दधि
माखन दूधो।
कुवरीसो अत सूधो बहको मिलो वरदेवजो
श्याम सो सूधो॥

४

कछु कान्हरको सुन काम कथा वहुभावन तो
महराय गिरो।
छिन एक न चैक कहूँ कल लेत रहो सुखको
सुख माह बिरो॥

हरके फरके फिर हो फिर जात भई टटकी
पिंजराकी चिरी।
झुक झूम झुकी उझकी झिझकी झझरी न झरोखन
झाँक फिरी॥

५

ऊधो कैसो ले आये पातीरे।
मोहे योग कथा न सोहातीरे॥
जब सुध आवे बारे श्यामकी विरह जरावत छातीरे॥

६

चल बसिए वह गाँम जहाँ न बाजे बांसरी।
वन-वन डारूं कटाय बाँस सब जो कानन सुन पाऊं॥
काहेकुँ विरह विथा तन उपजे काहेकुँ नीर बहाऊं॥
रूपरङ्ग बैरन है बंसरी कैसेके दाग मिटाऊं॥

७

सइयाँ मोरे बारीके भंवरा कलिन कलिन रस लेरे।
छाड़त नाहीं सुभाव आपनो कोट जतन कहे हारी॥
कर जोरे पाय परी बहु मातम और करी मनुहारी॥
रूपरङ्ग यह करमकी रेखा अरे टारी टरत नहीं
टारी॥

८

नींद नहीं आवैरे सजनी बिन पीतम मोरे नैन।
नेक पलक नहीं लागल मोरी जागिल सारी रैन॥
एक तो विरहा आन दह्यो मोहिं दूजे सतावत मैन।
रूपरंग जिनके पी घर हैं सोवत है सुख चैन॥

९

देखो देखोरी कन्हैया इत आवैरी।
सोवत देखी पाय गोरस मुख माहिं लगावैरी॥
इत उत फिरे डरे नहीं नागर पुनि पुनि मोहे
जगावैरी।
क्रोधित देख मोहि अत चञ्चल बंसी मधुर बजावैरी॥

१०

मतवारे नैनां तुम होरी कहाँ लगाए।
अञ्चल ओट उमंग भरे नैना घूंघट ओट छिपाए॥

विहाग—धुन

जोबना तें गोरी अंगिया छिपाए।
मदमाती वह चाल चलत है देखत मन ललचाए॥

विहारी

तिरछी नगरिया मोरे बालमकी विदेशिया।
बारा बरस पर सइयां मोरे आइला न जानू काहे
बाट बसैया॥

दीपचन्द

रतनारे नैना तुम काहे लगाए।
चञ्चल और छबीले नैना घूंघट ओट छिपाए॥

बरवा

मैं वीरान भई हो सइयाँ तोरे सेजवां।
मास-मछरिया मोहे न भावे औ गोहुंवाकी रोटी॥
पिया ऐसो चाहे जाको कमर छोटो॥

विहारी

नींदरी न आवे सारी रात मोरे बालम।
मोरे पिछवर वा पीपरको बिरवा
पिपरा कौसी तर छइयाँ॥

२

झुक चलोरी दोऊ जबना उमंगो जाय।
छाड़के चलत तरवार मोरी सजनी अंगियामें कैसे
समाय॥

३

सइयां राजो मैं रहिहों तेरी मरजीमें।
हमसे तो तुम काहे रिसासे बात कहो अलगरजीमें॥

४

ऊधो बावरी भई मेरी जान।
कहांके कान्ह कहांके बासो कासों है पहचान॥
काके कहेको संदेसो लाए कासों कहो हित जान।
ऊधो अपनो रोझ आन ढिग बैठो भौंरा है रस छान॥
अब यह वेल फलै या सूखे वाहे कहे हित जान।
बीन बजाय हर्यो मन मेरो राग रागिनी तान॥
जैसे वधिक विचारत नाहीं मारत है शिर तान।
पिय बिन प्राण प्राणपति हरि सों बिन बांधे बंध जान॥
जब श्रीकृष्ण पूतना मारी सूरदास प्रभु खींचे प्राण॥

५

सखीरी हम चरणनको दासी ॥
जौलों चरण न देखें उनके तौलों जियकों रहत उदासी ॥
भटक भटक जिन जाओ कोउ तीरथ सुनत रहोरे जोगी सन्यासी ।
कहां होत तीरथ कों तुमरे गरे परी मायाकी फांसी ॥
मुख फेरी करवट लो जगसे का ले करो हो कर बत कासी ।
उनको दयासे देखे का जम ठौर ठौर मूरत अविनाशी ॥

६

विनती मान ले पिय मोरी सीस धरतहूं तोरे चरननपर ।
घूंघट खोल दरस दे मोकूं बलजाऊं तेरे घूंघट खोलन पर ॥
हितसे मिलत रहो मोरन मुख दोउ जग वारहुं हितके मिलन पर ।
कब रहें पाप पाछेके बोलो तोरे आगे सीस धरम पर ॥
बकस दे औगुण का जमकों डर क्षमा न छांड़ो रहों चरनपर ॥

७

अरे मन सुख चाहो तो शिव पार्वती कों ध्यावो ।
सेत मूरती काकुट छानो जलसों सानिके मूरत बनावो
आवाहन हरको करि हरपर अक्षत धोय चढ़ावो ।
आक धतूरा बेलको पातो कनककेर ले सुमन सुंघावो ॥
धूप-दीप नैवेद्य देइके पुन निज सीस नवावो ।
आस-पास फिर तारी देके गलवल माल बजावो ॥
शिव सबके मनकी जानत है भक्तिभावको भावो ।
शिव प्रसन्न करबेको ढाकन बहुतहि सहज उपावो ॥

विहाग—ठुमरी

सखीरी वह सूरत मनमाहो ।
जब सों निरखो मोहनी मूरत और मोहे भावत नाहो॥
वह चितवन वह हंसन मनोहर वह क्रान्ती वह चाहो॥
क्षणानन्द आनन्द में डोलत बार बार वलजाहो ॥

विहारी

नैना मेरे निपट विकट छवि अटके ।
वारिजवदन कमलदललोचन यमुना निकटके तटके ॥
सोवत जागत विहरत निशदिन ध्यानमें बंशीवटके ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तोरे दरसकूं नागर नटके ॥

२

जो कोई कानहि आज मिलावै ॥
तनमनसों जाऊं वलिहारी श्यामसुन्दर परसावै ॥
विन मोहन सोहन सुन सजनी घर अंगना न सोहावै ।
रूपराम अब आय मिले हैं मन इच्छा फल पावै ॥

विहारी—ठुमरी

औसर बार बार नहीं आवै ।
जो जानो सो करो भलाई कित कोउ दुख नहीं पावै ॥
तन मन धन जोवन सब झूठो कोऊ काम न आवै ।
तन छूटे धन कौन कामकों काहेको क्षपण कहावै ॥
जाको मन हरिसों रंग राच्यो ताकों झूठ न भावै ।
सूरदास प्रभु तोरे दरसकूं विमल विमल यश गावै ॥

विहारी

हम तो एक ही कर जानो ।
दोय कहे ताकों दुवधा है जिन हरिनाम न जानो ॥
एक हि पवन एक हि पानी एक ही जोत संसार समानो ।
एक मटीके घड़े घड़ोले एक हि उपावनहार मैं मानो ॥
माया देख कर जगत भुलानो काहेरे नर तू गरवानो।
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरिके हाथ काहे न बिकानो ॥

विहारी—तिताला

अरे हाँरे सांवरे सो कहियो विरह विथा भई मोरारे।
डार दियो विरहाके सागर भंवर मदन चाहे बोरीरे॥

योग किए विरहा नहीं छूटे करो तोरय बहुतेरोरे ।
अब ऊधो सूधो होय बोलो विनती करूं कर जोरोरे ॥
गावै गूदर कुबजाके कारण अजहूं न किए व्रज फेरोरे ॥

विहाग

सूरत मेरो मोहन सों अटकोरे ।
जबसे ओट सरोज भए हो व्याकुल फिरों भटकोरे ॥
वंशीवटके निकट हरि ठाढो कोन लई मटकोरे ।
दुरजन लोग चबाव करत हैं सास-ननद हटकोरे ॥
ब्रह्मदास कवि कहा बखानै वा नागर नटकोरे ।

२

अब नंद गइयां लेहां सम्भार ।
हम तो तेरे आन प्रगटे चराई है दिन चार ॥
दूध दही सब चोर चोर खायो तुम जो कियो प्रतपार
हिरदेसे ए गुण तुमारो अब डारो है न विसार ॥
ग्वाल-बाल सब पठाय दीने लीने मर अँकवार ।
मात यशोदा हारे ठाढ़ी दोनो आंसूडार ॥
को पिता को पुत्र काको देखो हिरदे विचार ॥
सूरके प्रभु चले व्रज तज कपटका कागद फार ॥

विहारी

मेरा राम मेरे घट होमें बसता है ।
जोगी होके मठो बिच बैठा लम्बी माला जपता है ॥
सांच बहीं उसके अन्दर यों क्या साहेब मिलता है ।
जोगी होके जटा बढ़ाई नंगे पैरों फिरता है ॥
हाथ बांध उपरकों करता यों क्या साहेब मिलता है ।
मुल्ला होके बांग जो देता यों क्या साहब बहरा है ॥
चीटोके पग नूपुर बाजै उसको साहेब सुनता है ।
सबके अन्दर सबसों न्यारो परखनकों क्या पैसा है ॥
कहे कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसाका तैसा है ॥

२

मैं पियकूं ढूंढन जाऊं जोगिनियाके भेख किए ।
सगरो रैन मोहे तलफत बीती भोर भए पिय लायो
हिये ॥

विहारी—ठुमरी

मेरे मन वोही सुरत बसो ।
जबसे निरखे गिरिधर प्यारे वह चितवन वह हंसो ॥
गुणनिधान परवीन सुन्दर छव दिलपर मेरे लसो ।
कृष्णानन्द आनंद हिरदेमें उर विच चिह्न धसो ॥

विहाग

यह जोबना मैं कैसे राखूं कैसे राखूं कैसे राखूं ।
ज्यों पवनके लागे झकोरारो मैं कैसे राखूं ॥
उमगे नीर भए तन सागर विरहा रहत तन घेरा ॥

विहारी—तिताला

मैं तुझ पर वारी मेरा लाल बाना ।
सिर सोहे गुजराती चीरा हाथों तेरे सब जपना ॥

२

वियोगी देवरा कोन नगरिया लोभानारे ।
खोजल मैं हाटल खोजल मैं बाटल खोजल मैं
सारा जमानारे ॥

३

हीरामन तोता कौन बगिया लोभायारे ।
आमके धोके नरियर खाया चोंच टूट पकुतायारे हो० ॥

४

कैसो है सागर ताल गगरिया ना डूबे बालम ।
गगरो झुकके भरनें लागी बिकुरन लागे पाँव ॥
भरत-भरत मोरी कमर पिरानो कैसे धरूं आगे पाँव ॥

५

झमका तेरे नैणांदा वाह वाहरे ।
गोरे मुखपर बेसर सोहे कानों सोहे बूंदेवाला
चमका ॥

६

रामारे भइलो वदना मह मोरे सइयां सो परचे नाहीं
चूनर धूमर भई ।
आसाराम वे निरगुण गावत का अइलो का भइलो ॥

७

विन पिया मोहे नहीं चैन कैसो करूं मैं सजनो ।
हमसों अवध बद अनत बिरम रहे कैसे कटेगो
कठिन रैन ॥

८

जाओ जाओ जधो हम जानै हो ।
गुनन भरे मोहे जान परे हो कपटी परम सयाने हो ॥
जोगकी बातैं कहा सुनावो बांचत नैन पिराने हो ।
यह उपदेश देहु जाय कुबजा जाके रूप लुभाने हो ॥
जैसे वे तैसे तुम सेवक देखत निपट सयाने हो ।
सूरदास गोपी सब खोटी तुम-वे एकै रङ्ग रंगाने हो ॥

९

साजनवा हमरा मोतरे बालमुवा मोरा ।
गढ़पर बाजे बाजनारे नगर सोहावन लोग ।
काहकी बरजो ना रहि हौं मोरी ननदल बोले
बोलरे ॥

बरवा

मन लागा देवरसों क्या जालम भोजाईरे ।
धीरेसे टटिया खोल मोरे देवरा खटका सुने तेरा
भाईरे ॥

विहारी

लिखि भेजो तेरी सूरत नगीनेमें ।
बेसर जड़ाई मोतिडा मगायो लालड़ी मढो नगीनेमें ॥

२

ए नर ! बं-बं-बं शिव रटरे ।
दूर होत तनताप तुरत हो आनन्द रहै निध घटरे ॥
हर हर करत सकल भय भाजत, यमको त्रास सब
मिटरे ।
जानकीनाथ सेवक शङ्करकों कबहूँ ना होवै घटरे ॥

३

बोलो राम पिञ्जरके सुआ ।
मूढ़ ज्ञान चेत कर देखो धन्धा करत सकल जग मुआ ॥
काल मंजारो ले जायेगो हार चले जैसे ज्वारीको
जुआ ॥
गढ़ सुत हार कटहरा साजो अबहुँ चैन न नीच
मन हुआ ।
चाँप सखो जो रही आधारन घटत नहीं करम
जड़कुआ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो सन्तनके मुख
अमृतरस चुआ ॥

८

सुनहु भरत घर जाओ करम ऐसो लिखो ।
हिरदे सोच जिन करो सदा आनंदमें रहियो ॥
पालागन परनाम तीनों मातनसों कहियो ।
जाय अयोध्या राज करो तुम बिलख बदन जन हो ॥

विहारी—तिताला

फेरो पीठ चले हम वनकों तजो हमारो नेह ।
तबे भरत उठ कहा सङ्ग हम तुमरे चलबे बाट
बाट चलत दुख होय ॥
सेवा हम तुमरी करबे बालापनमें खेल रहे हैं
बिछुरत अत दुख होय ।
बिछुरो विथा सोई पै जानै जाका बिछुरन होय ॥

२

जबे भरत घर जाय मातासों कहा रिसाई ।
बिछुरे सीताराम लच्छमनसे दोउ भाई ॥
बैठो केकयी राज करो दशरथ त्यागे प्राण ।
ऊंचे-नीचे महल देखके कौन हमारो काम ॥
नगर छोड़ सवा हाथ भुंइ खोदो रामचरन
चित लाई ॥
पैकरमाकर पूज पायरो मरत कीन्ह परणाम ॥
धोंधोदास विरह वियोगो जै बोले सीताराम ॥

३

सब जग रूसा रूसन दीजै काईं रामजो न रूसो
चहियेरे बाबा ।
अगन जरत प्रह्लाद उबारे मीरां विष अमृत कर
पाईरे बाबा ॥

विहाग

हरि बिन को राखे पत मेरो ।
अन्ध अन्धा को दुष्ट दुशासन आन सभामें घेरो ॥
भीष्म द्रोण करनसे योधा तिनहुन पाछो फेरो ।
ओ मति भ्रष्ट भई सबहिनकी पकर लई जो चेरो ॥

ओ विश्वास रहो जिय मेरे हरि हिरदेमें टेरी ।
हो यदुनाथ द्वारकावासी बूड़त राखो यहि बेरी ॥
तजि खगराज आतुर उठ धाए तपन हरन जन केरी ।
सूरदास प्रभ वसन बढ़ाए होय गए परवत ढेरी ॥

२

रे उधो प्रभुसे कहिओ समझाय ।
को दुख देखे व्रजबधुअनको सबै रहैं बिलखाय ॥
गोपीन छाड़ो व्रज गोकुलमें रहे द्वारका छाय ।
गावे गुदर प्रभु सङ्ग गयो हों आयो पहछाय ॥

३

राम मोकों दरशन दीजे रूप सलोने नैन ।
वरन सकत नहीं एक जोभसों चलत नहीं मेरी वैन ॥
वेद कहत जननीको जठरमें नेक नहीं सुख चैन ।
प्रेमरङ्ग निशदिन रटना मिलन चाहत मन नैन ॥

विहारी

जा जारे उधो हम जानेहो जानेहो पहचानेहो ।
जैसे हरि तैसे तुम सेवक निपट चतुर सयानेहो ॥
हमसे जोग भोग कुब्जासे वाहीके रूप लुभानेहो ।
सूरदास मतलबी मधुकर मधुवन माह भूलानेहो ॥

२

जाग जाग रे मुसाफिर जाग रे ।
बीती रैण और भोर भइलवा बोली चिरैयां कागरे ॥
गाफल घड़ा सोवे क्या कर गया कूच कापला आगरे ।
तातें सोच समझ जिय अपने इहां नहीं कोइ सागरे ॥
इस नगरीका अजब लेखा है चोर बसत औ ठागरे ।
वसुधा सगरी मांग लेत हैं छीन पिछोरी पागरे ॥
जमा संभार बचाय अपने को देइन दम धागरे ।
रूपरङ्ग हुशियार सदा रहो साईं पंथ अब लागरे ॥

बेहाग—उ,मरी

राम गुण गांऊं रे रतियां मैं राम गुण० ।
जेहि गाघल तेरि पार पहुंचावल नाम ना बकी मे
पाऊंरे दिनरतियां ॥
वान परल प्रेमरङ्ग पाय पकरूं उद्दिम करि मन
लाऊंरे लाऊं छतियां मैं० ॥

विहाग—तिताला

हरि विन कोउ नहि जगमें मीता ।
यह संसार रैनका सपना जों बारूको भीता ॥
यह स्वासा जो लुहारका धमना हरि विन जगमें
जीता ॥
रागरङ्ग प्रभु सुमरण करले अवसर जात है बीता ॥

२

बोलो राम पिञ्जरके सुवा ।
सोच विचार देखो घटहीमें धन्धा करत
सकल जग मुवा ॥
काल मञ्जारो ले जायगो हार चले जैसे
ज्वारीका जुवा ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो सन्तनके मुख
अमृतरस चुवा ॥

विहारी

मेरी श्यामसुन्दर सों लागो अँखियां वो ।
हौं यमुना जल भरन जात रहो सङ्ग नहीं कोउ
सखियां वो ॥
औचक आन मिले पनघटमें भूल गईं सगरी
बतियां वो ।
रामलला विन कल न परत है कैसे कटेंगो कठिन
रतियाँ वो ॥

२

मेरो श्याम सनैया नहीं आयो सजनो ।
बड़ी बार भइ जागत गइलों भोर भई सब गई रजनी॥

३

बेंदी मोरी छूटी नैहरवा ।
जा कहियो नैहरके लोगसे बेंदो गिरी औसरवा ॥

विहारी—तिताला

बहुत रही बाबुल घर दूलहन चल तोहै पियानें
बुलाई ।
माया मोह छाड़ पीयरको बहुर मिलन नहीं पाई ॥
ध्यान धरो ससुरार को सजनी अन्त तहां तू जाई ।

चार कहार तेरो डोलिया ले आए सङ्ग बाम्हन
और नाई ॥
न्हाय धोयके वस्तर पहरे सज सिङ्गार बनाई ।
विदा करनको चले कुटुम्ब सब सङ्ग ले लोग लुगाई ॥

विहारी

हमारो निरधन को धन राम ।
हात न खरचत चोर न लूटत गाढ़े आवत काम ॥
दिन दिन होत सवाए डौढ़े घटत नहीं कहूं दाम ॥
तुलसीदास प्रभु चित में आवत पारस को नहीं काम॥

२

सुध आए सुध जात हरीको ।
हातमें छूटो यह मन मेरो जो अन्धीमें पात हरीको ॥
गाँठ गाँठमें गाँठ परी है छूटत नहीं छुटात हरीको ।
लतीफ पिया तुम समझ बिचारो सुरज सुरज
पछतात हरीको ॥

३

तन दिरना दीम तन दिरना तारे दानी नादानी
तदानी तुम तना तम दिरना तन दिर तदरदानी दोस्त।
शाखे गुलकीसी तरे एकदहे नाजुक तेरा
क्या लचकता है उठाए हुए बहारे दामन ॥

४

निपट विरहिया लोग व्रजके ।
मिल बिछुरत बिछुरे फिर मिल मिल पावत चितकू
चैन ॥

५

तैं मोरो मसकाइ डारी अंगियारे ।
जावो लाल पिया हमसे न बोलो तुम हो तो
मसकाय डारो अंगियारे ॥

६

तेरो चितवनको मारो मैं मर जाऊंगो तेरे नैनाको
मारो मर जाऊंगो ।
कासम सा पिया गरवा लगाए मैं मारे शरमके
मर जाऊंगो ॥

देश—ठुमरी

बनजरवा लादे जाय राम देखहु न पायोरे ।
इस नगरीके दश दरवाजा निकस गइल कौन बाट
मोरे सइयां रूस जाय राम० ॥

२

मोरे पियाको नजरिया लाग गईरे ।
मासा भरोकी कामनोरे मोती मासे दोय ॥
कमर फूलके बोझसेरे लचक लचक लच होय ॥

३

मोकूं चलत अङ्गनवा राम नजर लगी ।
राह चलत मोरो बगरी सुरग गई
छूट परो मोरे करको कङ्गनवा ॥

४

सुन सइयां मोरे ले दे मोती सागर खातका ।
नथनी बीच लाल लगा दे और झूमक नथनी
जड़ाय दे ॥

५

नदिया गहरीरे सइयां ए मैं कैसेके उतरूं पार सइयाँ।
एक तो बादरवा दूजे गरजेरे तीजे अंधेरी सुनो
मेरे स० ॥

६

साजन सुरजन विना घरो ए घरो ना रहूं ।
साँचो पीत लगन को टोना सरस बुध गुरु से कहियो
अपने जियाको मरम सङ्गवा न छाड़ूं जनम जनम ॥

७

कजरवा देके तैं तो जियरा मार डारोरे ।
ए कजरामें कछु जादू कियो है वस कियो प्राण
हमारोरे ॥

८

लाड़ीला म्हारो खंभा हो ।
हमलारा राता माता म्हारे डेरे आइला
दिलवारी जोत सवाई आवे झूमा हो ला० ॥

९

अंसुअन भीजे म्हारे केस गोरिए ।
बारा बरस पीछे सइयां मेरो आइलो छिप रहे
देहलीके ओट ॥

१०

साँवरेने वंसी बजाई मेरा मन मोहारे ।
वंशी बजाई घरतें धाई मुरलीको सबद सुनाई मेरा० ॥

११

मन लागो सांवरिया सों जायरे उन विन कछु न
सुहायरे ।
जब लागो तब लगत न जानो अब भइल दुखदायरे ॥

१२

क्या तुम हीं नहीं आये हो विदेशो सब परदेशो
अपने घर आये ।
सावन आए पिया सन आए
कब लग जिय तरसाये हो विदेशी स० ॥

देश

कहां लगाऊं मैं तोर अरे मेरे नेहरके बिरवा ।
बेला लगाऊं चमेली लगाऊं बिचबिच लाऊं तोर० ॥

२

काईं बोलोजो मासों राज ।
बोलो जो-जो काईं सतडीनू
आनके जगाईं प्यावै दारुडा ॥

३

एहां झमकडा लागण देवो बांके तुरकांणिदे ।
सोनेदा चरखा रूपेदी मेखां इश्कदो पचरा लागणिदे ॥

देश—तिताला

घोड़ला धीमा करो महाराजा जी ।
धप पड़े धरती तपेरे इन धूपनमें छोमा करो महा० ॥

देश

मैं भूली सइयां डगर बताय दीजोरे ।
सइयांके मिलनकों मैं जो गईरे ओघट पर गयो पांव ॥
रुणझुण रुणझुण बिछुवा बाजे मोरे जियरा लजाय ।
तन घोड़ा मन पालकोरे काईं प्राण पियादो जाय ॥
बालम चले शिकारको रे विरह बाज लिए झातरी मैं० ॥

२

हम ही कमावे तुम खावोरे ननदोके वोरा यारबे ।
हँसहँस पूछो बात तुम चलो हमारे साथ
अरे भंवरा कतहूं न जावो अधीरात ॥

३

परदेशी मारू कहां लगाई एतो बाररे ।
नागर रस मोरे मनमें बसत है
किन सौतन बिख माई ए० ॥

४

गागरिया ढरकाई सइयां मोरीरे ।
हौं जमुना जल भरन जात हो
घर बहियां मचकाई स० ॥

५

निगोरे नेना लाग रहेरो बगियामें करत कलोल ।
इस बगियाकी रीत निराली हमरे सइयां अनमोल ॥
जब रे लगी तब लगत न जानो अब लागी दुख देन ॥

६

गुसाईं जो मैं जोगिन हो यार रहोंगी
तोरे बांके नैनाने मुझे मारारे ।
पान फूल और बेलको पातो गुसाईं जोकूं तिलक
चढ़ेयूं ॥
गुसाईं जीके लटमें गङ्गा बहत है
अटसट तीरथ नहींयूं ॥

७

गोकुलमें छिप रहोरे कन्हैया मोंसे रूस रहो ।
तेरे कारन योगन हुइयां घर घर ढूंढ़ फिरे मो० ॥

सोरठ—तिताला

प्यारो प्यारी राधाजीको करत खवासो ।
रीझ रिझावत कमल फिरावत देख रूपको रासो ॥
सूरजमुखी ढङ्ग लिए प्यारो ठाढ़ो राधा नाम उपासो ।
प्यारीके मन प्यारो हो रञ्जन किशोरो आलो सङ्ग
दासो ॥

सोरठ-देश—तिताला

थारी दासी होस्यांजी विहारो आज म्हारे यांहीं रहो ।

नैणांरो निरख सुहावनो सूरत
याही बानपोछे प्यारो ॥
बरषाने की रलियां गलियाँ पाँवस रेण उजियारो ।
कुञ्जमहलमें चहल पहल बिच
ब्रजनिध मान करस्याँ सारोजो ॥

देश-सोरठ—तिताला

विरद सम्भारो राज कान्हुड़ा नन्दके ।
आनन्द करो दुख हरो सांवरे
निज भक्तन प्रतिपाल करो ॥

२

बोलो क्यों नहीं राधा प्यारी यामें काईं मान घटेछे ।
हम बोलत तुम बोलत नाहीं
नन्दरो गुमानो थारे वास वसेछे ॥
बांके नैणां तिरछो चितवन
रावरो मूरत म्हारे द्रगण वसेछे ॥
तिहारो ही ज्ञान ध्यान तिहारो ही सुमरण
नागरीदास दिन रैन रटेछे ॥

३

रसिया म्हारा अमलारा राता माता आजोजो ।
थारो दासो मैं जनम जनमरो
थे म्हाने नित चहा जोजो ॥
थारो म्हारो लगन लगोछे रसिया
मत कहीं लोग हँसाजोजो ।
ब्रजनिध रसिया म्हारे मन वसिया
वंशीको टेर सुनाजोजो ॥

४

कोठे म्हारे राज सइयांने ऋत मानी ।
को काहसों तन वस कीन्हों को कहं हो गये ज्ञानी ॥
को कहं वृन्दावन कुञ्जनमें मुरली मधुर बजाई बानी ॥
रसिक रसीला श्याम सलोना को काहू नैणा लोभानो ॥

कलिङ्गरा—तिताला

नीको लागो वालगोविन्दा बालगोविन्दा जशोदानन्दा ।
कुटिल लटूरी मुखपर पूरी
जसुमत गोद लिए नन्दनन्दा ॥
घुटुरुन ठुमक चलत मन्द गत
माखन मांगे आनन्दकन्दा ।
कुम कुनन कुम कुनन बिछुवा
बाजत रसिक मांगत चन्दा ॥

सोरठ

हरिजन बोलता नहीं सुआ ।
अष्टदलके कमल भीतर बोलता एक सुआ ॥
तोड़ पिञ्जर उड़ो चाहत प्रेम पारस हुआ ॥
पांच चोर पचीस पावक बांध डारो कुआ ॥
दास नानक शरण आए देत सतगुरु दुआ ॥

देश

अरे मन समझ समझ पग धरिए ।
इस जगमें अपनो नहीं कोई परछाई सो डरिए ॥
दोलत दुनियाँ कुटम कबीला
सङ्ग न चले कहा करिए ।
राम नाम ना विसारोजो मुख
सुमिर सुमिर जासों तरिए ॥

२

ओलू थांरो आवे छे घणा दिन बीता हो विहारोजोओ।
थारो म्हारो प्रीतरो अन्त नहीं छे
म्हारा जिय तरसावे छे ॥
पगड़े पगड़े आवन कहे गए नैन नीर बरसावे छे ।
सुगणोरा सायबां अब तो आंव जोवन अमृत रस
बरसावे छे ॥

देश

ना छेड़ोजो राज म्हाणे ना छेड़ोजो ।
सास ननद मोरो निरखत मन रंग
हुणहो आवत मोहे लाज ॥

खमाच

भवसागरके भटभेरनमें प्रभुजो तुमकूं भूल रहा ।
काम क्रोध मद लोभ मोहके झक झोरनमें झूल रहा॥
छया कथा बकवाद विरहको
इनसों मिल मिल फूल रहा ।
तिहारे चरण शरण विन ब्रजनिध
यों ही इत उत डोल रहा ॥

जानें मोहे दीजिए चरण गहों नन्दलाल।
एजी जान देहों जगदीश जावों हों तुमरी वलिहारो॥
दधि बेचन हम आई प्रातते भई दुपहरी।
श्यामसुन्दर वलिहारो हों अब न करो लरकाई॥
हमरे सङ्गकी ग्वालनी सोइ बेच दही घर जाई॥

२

एजी अजहूंलों यह दान दान तोरे पिता न लीनो।
अजब हठीले कान्ह छोट बड़ जात न चीनो॥
गगरी डगरमें फोरिहूं जाव खड़ो दरवाजे।
सुन पै है कंसराज अति कठिन हैं करम तुमारे॥
जेहि दरशन कों फिरे सिद्ध सिर जटा रखाए।
सो दरशन नन्दलाल आज तुमरे अब पाए॥
सकल आनन्द भयो जिय मोरो और न कछू सुहाए।
श्यामसुन्दर झगरो सोइ गावत राघोदास बनाये॥

देश

चितवनसें चितचोरी भई सखी
को मेरी लागी लागी गुहार।
यहरे गाँवको नाम बिरहपुर यह विरहा अधिकार॥
धूरी ना गत जात रही मत घूंघट दीनों उघार।
चितवन का जैसे प्रेमको गासो लगी ओ हो गई पार॥
निपट भयो जियरा जब व्याकुल तब क्योंइतनो पुकार।
रहि है कसक उठत हिरदे बिच निशदिन सो सो बार॥
अबलो क्यों हूं भरम न जाना आए बेद हजार।
पियको औषध एक है सजनो कोनो मनमें विचार॥
जो वजहन पिय मधवा पियासे
औ देखूं मैं वाको बहार॥

झंझोटी

गोरोदा कङ्गणा यार वो मैं ईधे ढूंढ़ेदो आइयां।
नथडोदा मोतोडा नोका लागी कजरा थांणेदार॥

सोरठ

शुभग ठौर ढिग चूकके महावर पाई।
जैसे देखे चन्द उदित कामोदनो
नीरस पावके मोद उमंगाई।

दसन दमकत अधर पल्लव अरुणाई॥
रचित बोलत बैन सुनत पिया उर चैन
रसक रस द्रवत तत भरो रस पाई।
उनत माधुरी ग्रीवहार हारावली
लाल पन्ना मानक मोतो सुगाई॥
दुलरी तिलरी चम्पाकली सोहनी क्रान्त
तापे बनमाला सुगन्ध मधुर महकाई॥
भुजाभूषण भूषित बलय पहुँचि रचित करन महं
दोलती अङ्गरी मुदराई।
दिव्य द्युति वसन प्रभु लसन अङ्गरङ्ग पर
त्रिभुवन कहां एसो है सुन्दरताई॥
जुगचरण पङ्कज बरन तिमिर पतीयत पहरन
निशवासर ज्ञानो ध्यान लय लाई॥
जुथ जुवतोन मज्जु अवध सुकवार कुञ्ज
ख्याल खुशियाल पुञ्ज केल उरझाई।

देश

झुकाए नैणां डोले छैजो जोबन मातो।
नन्दलालके नेह भरो है प्रेम प्रोत रसरातो॥
अङ्ग अनङ्ग देख सकुचावत तापर मृदु मुसकातो।
निशदिन करत ख्याल खुशाल किशोरी
राधे कृष्णगुण गातो॥

देश—जङ्गला

एरी माया सासुर है बड़ी दूर जां दिन सइयाँ मोसे
पूछो सब जग का लेकर मिलबो हजूर।
चलत चलत थक गई नैहरमें हो गई चकनाचूर॥
पाँच पचीश दशों दिस सखियां
तिन मोहे कियो मगरूर।
जिन कहना गहना कियो पियको कर सिङ्गार भरपूर॥
गावे गूदर धन भाग सराहै मुखपर बरषत नूर॥

देश

अजब तमासा देख नटवा नटवा एक कला वहो तेरो।
सब घट नाच नचावनहारा लिखे नहीं जात अलेख॥

ठाकुर द्वारेमें बैठो विरहमन मक्क अन्दर शेख।
वेद पुरान कुरान पढ़पढ़ मजहम और बिवेख॥
गावे गूदर दोउनको झगरो साहेब जात अलेख॥

देश—ल्म

मारबणरो सरवर पांणो न जाय
सातो सहेलो मारबण झूम रहो।
साथांको है मारबण भरभर ल्याय
थे कित अकेलो मारबण घूम रहो॥
औघटरो मेरी आली भरहूं न जाय
पनघट उभा मारू ढोला है।
देखत री सखी म्हारो मन डोलो
भाय उभोछे मारुड़ो अनमोला है॥
अरी झूठोरी मारबण झूठ न बोलवे
परदेशी ढोला कब घर है।
ज्यों तुरी आली सचहो जान चढ़ा चढ़
चोवारो मारू देख रहे॥
काहे कूं री मारवण लिघा है पहंचान
काहे सें देखो चाल सुहावणी॥
सूरत सों मेरी मालिया है पहचाण
वोही है मारुड़ो मन भावणो।
आंखोंसे मेरी मा करी है पहचाण
पलकां से देखो मटकतो है॥
काहे पैरी मारवण गई सुरझाय
काहेकुं इत उत उझकतो है।
काहे पैरी मारवण धोवतो पाव
काहे पे मिशी दांत लगावत है॥
ढोलारो मेरोमा थायोछे वागों
अब म्हारो मनडो रिझावत है।
सोनेको गाड़ुवा मारवण रेशम डोर
लपक झपक मारबण जल भरे॥
ढोलारो खातर मारवण रभो है सुखमें
पानांरो बीरो अधर धरे।

नाइकारे बेटा चतुर सुजान
इनमें मेरा मारू ढोला कौन छे॥
बांकोइ घोड़ा जोड़ा कमर कटार
मारू ढोला उभा सुर छे।

देश—ठुमरी

जल भरत गगरिया मोह लई मोह लई अरे गोरिया।
गागरी उतारल कुंवना जपर
डार चली रावरे प्रेम फसुरिया॥

देश

तुम बोलोरे सुगनवा बोलोरे सुगना
राधाकृष्ण राधाकृष्ण बोलोरे सुगना।
केतो पढ़ावत पढ़त नहीं तुम
बड़ो बारते मैं ठाढ़ो अंगना॥

२

एरी बुलियानाके रामरोरी बोलियाना
अरे मोरे साले ले करेजवा राम।
उचवा चढ़के मैं निचवा निहारोरी
कोउ नाहीं मेरा घेलना उतारे राम॥
कृष्णरसिक मन भयो बावरो निशदिन
फिरत तोरी नेह नगरिया।

देश-सोरठ—ठुमरी

मोरे निंदिया सों नैना झुके
तोरे पइयां लागूं जरा सोवन दे।
सास मोरी दूती ननद मोरी वैरन
करि हैं सकारे चबावरे भोर होवन दे॥

देश—ठुमरी

राज मोरी डोलिया ले जावोरे
मैं तो चली हूं पियाके देश।
बाबूल मोरी डोलिया मंगावो चलो हूं पियाके देश॥
चार कहार मिल डोलिया ले आवो
मोरी डंडिया न मेली होय।
बहियां पकर पिया ले जे हैं तब सङ्ग और नहीं कोय॥

देश—तिताला

मोरे बूते हिलो ना जायरे जोबनवा उमंगो ।
काजर देहा तोकर कर वारी सुरमा दिया ना जाय ॥
जिन नैननमें पिया बसे हैं दूजा कौन समाय ॥

२

सन्देसड़ा म्हाड़ा लेता जाइयो राज ।
सब जग रूठा गोरो रूठ जाण दे
सइयां न रूसे जासों काज ॥

देश—ठुमरी

सेजड़ियाँ न जाऊं मोरा जिया तरसे जोसे ।
झाड़ आई झूड़ आई पलग बिछाय आई
अछी नोकी भाग आई वेगरा देखाय आई ॥

विहारी

खेवटिया पार लगावो नइया रही मझधार ।
हमरे गुना पर तुम ना जावो अपनो ओर निहार ॥

देश

मोहन तोरी पइयां परूं
मइसे तिरछी नजरिया न हेर ।
तोरे चितवन सब जग चितवत है
पिया राखे सखो सब मेर ॥
जित देखों तित कोई न हमारो तोरो चितवनका फेर
फिरत विहाल याही तन बनमां होयगा कहूं भटभेर ॥
रामसहाय दयाको चितवन
चहुं दिस होइगा उजेर ॥

२

सइयां कौन गुण रीझे सजनो ।
कहो कौन एसो सुन्दर कुबजा
जाके काम सब सोझे सजनो ॥
रामसहाय समझ अपने मन
कोऊ काहूको न खोजे ॥

३

सजनी सइयां कौन गुण कौनो ।
एक अनेक रूप धर बैठो तापर परदा दीनो ॥
रामसहाय सोच वही निशिदिन भय अजहूं ना होनो ॥

४

बोहा बोहा बालू रेतापर वारी बेलांझा होनो नाजो
जो धावणारे धावुनो टटोलो वालो राज ।
मेरा छोटा देवरा नादान धन वारीरे
लांझा होनी नाजो काचो कामनो ॥

५

झूमाझूमा माधो है वालो बोलो करे छटियालो
अनोखो कैसे समझाऊं ना समझे राज ।
आधो आधी रात वो तो नींद गमाई इन
सुपना क्रिया यों ही जाग रही म्हांको कोय न काज ॥

देश—तुम

मारूजो आज वसो न म्हांरा सहरांमें थांको म्हांको ।
प्रीत लगीछे मारुड़ा पगड़े चलेस्यां थांरे देश ॥

२

म्हांके थे छो थांके म्हें छों
कांईरा करो जियासें अन्देश ॥

देश

चलोने केसरिया मारूजो लूब बनो छे हरिया डूंगरां ।
खलबल खलबल नदीनोर करे छे
मोरला बोले छे ऊँगरां ॥

२

बाला जोबन यु हो जाय रे सुन सइयां मोरे ।
तू जो कहत पिया बालोरे बहुरिया हमरा कौन काज ॥
बेदरदोसों पोत न कीजे देखत आवे लाज ।

३

सइयां मैं विरहा की मारो मरूंरे ।
जो पिया हमसे रूस रहो है वाके पइयां परूंरे ॥

४

पइयां पइयां चलो पियाके मिलनकूं ए सजनो ।
या रित वरषामें फकर पिया परदेशवा विरम रहा
सतावन लागे मोरा जिया ॥

५

हमारे सइयां बोलिया न बोलो मोरे साथ
भुज भर लीनी मोहे गात ॥

रामरंग सइयां तोरे पइयां परत हूं
जिन छुवो म्हारो गात ॥

६

नींदको मातो मई सोय ये री ए मैं ना जानूं ॥
महमदसा पिया मोरे डेरे आइले
रखतो नैणवा लगाय ॥
मइकूं न जगावो सइयां निदिया लागोरे ।
बारे बरस पे सइयां मोरे आइले परहुं तोरे पइयां ॥

७

अब तू तो माने न हठीलो मोरी बतियां ।
चार दिवसको चटक चांदनो
फिर आवेगो अंधेरी रतियां ॥
छोड़ गुमान कान दे सजनो सोत लगाय रही घतियाँ ॥
रामलला सिख मान हितापन
हरि हिय लाय जुड़ावे छतियां ॥

देश—तिताला

जोवे जोवनरा बाला बनरा ।
कांईं करेशां थांसे थारे गुणगनरा ॥
राज सुहागणरे तेर सियाले सायबां थे मारो जोबनरा ॥

२

सइयां नदिया गहरोरे कैसे उतरूं पार ।
एक तो बादर बिजरो चमकत
तीजे रैन अंधेरी घनघेरीरे ॥

३

महाराज बिछुवा दे डालो
मैं तो भूलो पलँग थारी सेज ॥
रसके रसीले प्यारे अजहूं न आये
कबहूं न जाऊं थारी सेज ॥

देश

जियराके मार डारोरे अपरे कजरवा देके ।
बड़ी बड़ी अंखियन कजरा सोहै
चितवनमें निहार डारोरे ॥

२

सुनो सुनो ननदो कैसे कटे दिन
सांवना सांवना मन भावना ।
नाहीं नाहीं बूंदे मेहा बरस गयो
मोरला बोले सुहावना ॥
बीजली चमके बादर गरजे दूरके ढोल सुहावना ॥

३

जोबन बांको छे जो सालुड़ामें मसकावे ।
उमंगी जोबन वे रावल देशां
सास भलो मेरी आन जगावे ।

४

वृन्दावन बांसरी सो बजी ।
श्रवण सुनके मनक परी है नागन होके डसी ।

५

सवाजो म्हारा रसिया लागो हो आवे ।
वाट चलत मोरा अचरा जो गहे लोनों
बहियां पकर ललचावे ॥

६

मैं पइयां लागूं रो मोरे पियाको संदेशवा बताव ।
हमसे न हंस बोले सुनोरो सखीरो
एरी युग सम दिवस सिरात ॥

७

ओ मैं नहीं जइहूं रे सइयां बगियां तुमारे साथ ।
तुम तो हंस मोहे नीक न लागत डूबूं तुमारो माथ ॥
नेके चलोरी गोरिया नेके चलोरी
पिया पूछे एक बात ।
नेक चलत है नीकी लगत है हंसमुख पूछे एक बात ॥

बरवा—देश

अरी ए विदेश बालम धन अकेलो
लगतें सांवन घर आय हो ।
सासरो दुख कासे कहिए तुमरो तो पूत निरमोहिया
हम खरच माँगत तरफ बोला
जदरे बिदेसो घर आय हो ॥

हरि हरि गुवरी पियरी माटी महल लिपाय हो।
उस महल ऊपर राजा सोवै
रानीजी बिनिया डोलाय हो॥
उड़रे कागा मैं दूंगी बागा सोनेसे चोंच मढ़ाय हो।
तेरी पंख ऊपर कलम लिखि है
जदरे विदेशी घर आय हो।
आरे गङ्गा पारे जमुना बिच चन्दनका रूख हो॥
इस रूखके ऊपर कागा बोले कागाके वचन सुहाय हो।
आ मोरे वमना बैठ अङ्गना सांचे वचन सुनाय हो॥
थार भरके मोती दूंगी जदरे विदेशी घर आय हो।

सोरठ—झपताल

शोभा सदन प्यारी वरनि न जाई।
रूपकी राशि छवि अतुल राजत
वदन वरनन करे जो हो विधि बनाई।
इन्दुतें चार प्रगास आनन दीपत
रुचिकर मन धर धर सैन उपमा लखाई॥
तासु पर लीला बरजनहो कालिन्दी
लीला करत काली सकुटम्ब लाई।
लहलावत किरण सुरङ्ग रङ्ग चुनरी
नवल आभास जल ललित प्रगटाई॥
मानहुं नभमघ बादर अरुण प्रात हो
विगस दिनकर सुमग सकल सुखदाई।
रतनमणि जड़ित वैना सुन्दर माल वर मोंह
मनमथ धनुष रितु गुण चढ़ाई॥
चलत जीतत राज चारोदिस चक्रवती
राजा जोबन देत अपनी दुहाई।
नैन मधुकर जुगल निरख रस के तूजीकी छाए
उमंग भरे आनन्द मन बढ़ाई॥
जान रितु वसन्तकी कीर बैठे डारन
अली अवली तापै वेसर सुहाई।
रङ्ग विशाली लाली लजी अस्थल कहन
वहो कपोल लोल आरसी दुराई॥
श्रवण कुण्डल मोर निरख अलकन और नकृत
बोलत जानत पावस रितु आई॥
नथ मुक्ता ललड़ी रचत लटकन लटकाई।

सोरठ—एकताला

निपट निडर नटवर वर डगर डगर घेरे।
अतहि चतुर चितवत हरि गुरुजनहिं नाहीं सकत
अङ्ग निडरि निडरि अरि कर कर अङ्ग हेरे॥
अति अरज बरज काहूंको न मानत लरजत हिय मेरे।
हरिजू करत कारज सब गरज अपनी टेरे।
पीत वसन दामिन दुत हेरत जुगराज दास
फिर फिर मुसकाय तिरछी नीको चितवन चितेरे॥

२

कारी भारी अतही डरावत मई एसे हो अचानक
तुम गहे लीनी पिया कर धर देख धरकत है
मोरी छतियां कैसी बतियां।
तुम तो सरस रसिया अपने ही गरजके कहो कोउ॥
कैसेके निकसन पैए डरत फिरत हो पिया कैसे कर
निकसे मेरे मुखसो बतियां॥

३

अब तुम कैसे अचानक गहे लो पनियां भरन करको
कराई बोलन लागी बँगरी गई लो मुरक।
बाट घाट मग रोकत टोकत पैंड़े चलत नीको अटक
भटक॥
अपनी बार रसिया तुम तो जावो कैसेके सरक।
रस बतियाँ विनसे करत जाओ जाको लागी
नई चटक॥
धरक साह आजम छांड़ दे मदकूं घर जान दे लङ्गर
ढीठ तुरक॥

४

छैला सेलीका जरदी मैनू भांदो तैड़े नैणां जोगी
रावला भलावै।
बेषण कारण सुरत महबूबां अङ्ग भभूत मलावै॥

४

मोरे सइयां हो तुम बिन नींद न आवै।
नींद न आवै विरह सतावै तुम बिन कछु न सुहावै॥

देश

कांई बोलोजी म्हांसो राज अजो होजो पिया
सुतड़ो आनके जगाइ पीवन दारुड़ो।
मै तो थारी दासी सायबां जनम जनमरो
अरज करेछे छोटो सारुड़ो॥

२

बिनन गईलो बारी फुलवा न लागीला मोरे हतवा।
सदा रंगीले महम्मद सा सुन्दर बने
मोरी बहियां पकर लीनी मोज डारी॥

३

म्हांरी कलालन ए देखानो आलीजारा सरूप।
ताना सो तनिया छे वारो मेरते
कहीं ननोय सरोछे आज म्हारो॥
म्हांरी कलालनरो पावरो कहीं बनोछे
जेशरमेर देखने आजो॥

४

जिन्दड़ी लगी लगी तुज तांई
जिन्दड़ी लगी तुज तांई वो वो यार।
दिलांदा महरम साड़ा तुहीके जाने रब सांई वो यार॥

सोरठ

छिटक रही चांदनी रङ्गभीनी रात
पिया तेरे मिलनको आस।
सास ननदिया जागे मोरी
कैसे आऊं सइयां तोरे पास॥

२

मोहे सैन बुलावे बाँका मारुड़ा
मै कैसेकर आँउ तोरे ढिग आगे।
चाँदनी रात प्यारे मोरे ननद जेठानी देरनिया जागी॥
तोरी परछइ मइ लुकके अजीजदीनको समीप
कैसे आऊं जो तुं चली श्याम वसन पहर आगे॥

३

पिया कर जोर विनती करत हों तिहारी
सइयां इतनी अरज है हमारी।
सुन ले तुमने क्या जियमें विचारो॥
अपनें जियाको बात में कह न सकत हों एतो
निठुराई किनवदो आजज दिल हों कह तिहारी॥

४

बूंद आई हो म्हांरे सायबाँ जो बूंद आई हो।
इतसें आई बादरीरे उतसें आयो मेह
हों भींजू थारे कारने नित नित नयो सनेह॥

५

बालमजी म्हारो चुनरो भींजे राज
दुपटा रोप लो आडो दीजेजो।
चूनर म्हांरो रंग रंगीलो सायबाँ
छोटो लाडोजोरो जोबन छीजेजो॥

६

मोहे सैन बुलावे बाँका मारुड़ा
एरी आली कैसे कर आऊं।
तेरे कारण गुरुजन दूरजन लाज लजाऊं॥
नेक धीरा रहो सोवन दो मेन रंग
थारे पइयां परूं और बल बल जाऊं॥

७

नेवरिया झांझन बाजे म्हांरो आवन ना बने रे
छोटी लाडो ननदल जागे।
सास ननदिया देरनिया जेठनिया
आगे हो रहत नित लागे॥

८

म्हाँरे गरे लागणा रसिया बालमराज॥
अनरस जिन करो म्हांसे अदा रंग रसीले रस पागणा र०॥

९

कोयल बोले काँई तारां भीनी रात।
कूक कूक बाग बाग डार डार पात पात कांई तारां०॥

१०

द्रद्र तनन तदरे दानी दीम तदीम तदानो दोस्त।
दिरतुम दिरतुम नित नारे उदन तुँ तद दानी दोस्त॥
तुरक चश्म मस्त कातिलके पुरजे जादू है दोस्त॥
क्योंकर दिल जाँवर हो इनसे एको दारू है दोस्त॥

सोरठ—एकताला

मेड तणो मांडो छे मतवार ।
दशमो भाटीरो मद चोखो छे भर दे सुमत कलवार ॥
नेन पियाला पीवत अत रूप रस
काम क्रोध दियो जार ॥
बखतावर मौंराँ बड़ भागन घर बैठां हो पाये मुरार ॥

२

घूंघट रो जिन खोलो जी थांने म्हांरा सों छे ।
उभी उभी मृगानैणी अरज करे छे
धीरे धीरे मों सों बोलोजो थांनें म्हांरा सों छे ॥

सोरठ

थाँरे आज मिलन रो उमाहो है मन मांहीं
रंगली जामें करस्यां ।
नणगोझीरो घोस सुहावनों
रसिक कुंवरजीनें भुज भर लेस्यां ॥
नँदजीरा लाल कुंवर बड़भागो मे उननें बरस्यां ।
ब्रजनिध बालम जाणे छे आलम
सब हरष निरख हियड़ामें धरस्यां ॥

२

रांणाजी में सांवरे रंग राचो ।
बांध घूंघरू प्रेम करि हो हरि आगे मै नाचो ॥
राणि जो विषरो प्यालो मेजो हो नाहन जिय कांचो ॥
मीरां चरण लाग रहो निरभै हैगो सांचो ॥

३

मुरलिया राधे किन लई दे बताय ।
प्राणनसों तिहारो सो गावत हों गुण गाय ॥
बिन देखे मोहे कल न परत है पलभर रह्यो न जाय ॥
यह वंसीमें मेरो प्राण वसत है मोकूं आन देखाय ॥
शिव सनकादिक ध्यान धरत है सुर नर रहे लुभाय ।
सूरदास प्रभु वंसी दीनो आनंद उर न समाय ॥

४

सुन ननदल म्हाँरो थांरे वीरानें समझाय ।
ले म्हाँरो चीर कदम चढ़ बैठा
अब कहा करूँ मेरी माय ॥
आठ पहर म्हाँरे लारंइ लाग्यो मन्द मन्द मुसक्याय ॥
ब्रजनिध म्हाँरो चोर दे डारो ठाढ़ो यमुना जाय ॥

५

प्रीत करी सो मैं जानारि मोहन ।
दे विश्वास गयो तज मथुरा रति कुबजासों मानो रे० ॥
कपट भरो कारो तन तेरो कपट भरो सब बानो रे० ॥
आनंदघन हित चित रो बातां जानत राधा रानो रे० ॥

६

चुनरी में रंग प्यारी जी थांरो ।
प्रेम प्रीत सों पिय संग बैठी गावत तानतरंग ॥
नवल किशोरी गोरी भोरी तूं रसबोरी अंग ।
रसिक गोविंद अभिराम श्यामसों
हिल मिल उमंग उमंग ॥

७

घटानें छोड़ो लटा बूंदनको अब कहा रोऊं माई ।
बिजरी चमके कोयल कुहुक कुहुक डरावै ॥
रंगरस भरे अहमदसा कां देख रो मेरो ध्यान बटावै ॥

देश

वैरन कोयलिया कुहके घरी घरी कुहुके
मुझ विरहनकों अत हो सतावै माईरो ।
दादुर मोर पपीहा बोले अत ही सरसावै
उनतन मेरो सुध ले आईरो ॥

सोरठ

मद छको कांई आवै मारुड़ो मांणे ।
आपो पीवै मांणे प्यावै हरगुण दारुड़ा मारुड़ा ॥

२

पपिहरा पियाको बोली न बोल ।
सुन पावैगी विरहको मारो डारेगो पङ्ख मरोर ॥

३

सजन सुरजन बिना घरो बे घरी नां रहो
संगवा न छांडा हो जनम जनमकों ।
सांचो पीतकों नगरकों टोना रस रसबुध यों कहियो
उनतें जाय अपने जियाके मरमको ॥

४

पियो महाराज दारुडोरो प्यालो
आप पियो म्हांने प्यावो ।
निदान रंग दासो थारो थांसे म्हांकों काज
थें म्हांरे मन भावो ॥

५

अंधेरे बगर में उजारा सखोरो दीपकके सब भावे ।
चमकत दामिनी मेहा रे बरसे
बादर घोर डरावे वे प्रेमको आँच जरावे ॥

६

कर कँगणवा सो बलमा मारा उतार लोनों ।
अंगुरी पकरत पोचा पकरो
बहियाँ झटक अचरा छोनों ॥

७

आसा पूजन मन चिन्ताहरण प्रभु बिन कौन समझरे
मन दुख दारिद्र दूर करनमें ।
तारन तरनका सुमरन कीजे जिन सदनको परनसों
मनरँग सरन पाए जब हीं लागे चरनमें ॥

८

चुनरी में रंग प्यारो जो थारो चुनरो में रंग ।
पहरि पोत सो पिय संग बैठो गावत तांन तरंग ॥
नवल किशोरो गोरो भोरो तूं रसबोरो अंग ॥
रसिक गोबिन्द अभिराम श्यामसों
हिल मिल उमंग उमंग ॥

९

थे तो म्हांने प्यारा लागो राज ।
बलि बलि जावां थाके मुखडारो
घर पर भलांहो पधाखो म्हांरे आज ॥
प्यारोरे रस वस वसिया रसिया सज केसरिया साज ।
धन धनजो अभिराम श्याम थे तो
रसिक गोविन्द सिरताज ॥

सिंदूरा—तिताला

असाढ़ मास वरषा रितु आमम झिंगुरे झनक लगाई ।
गरज गरज घनघोर आए चहुं ओर तें
अब कोकला कुहुक सुनाई ॥

सिंदूरा

सुरत लागोलो गोरोरे पोउ तुमो
यार आवो गरवा लाग मिले ।
सदारंगोले महमद साह पियरवा नेक चल मो ढिग
मंदर बैठो जो सुख पावे हितू अनहितू देख जले ॥

२

वेगो फेर बेलोंवाले अरे वोरा ले हों रामनाम ।
हरी भूम कोनो गुसैयां सींचे चहुं ओर अष्टजामनाम ॥

३

थे तो आवो जो म्हारे डेरे सुरजन सइयां मोरे
लेहों मैं तुमरो बलैया ॥
रैन दिना ध्यान तिहारोई लागो हो रहत है
आय करो वेगो काज पूरे मनके सब मेरे ॥

४

गँवार के छोहरारे अरे भला कहा कोनों मइ तोरा ।
जाऊंगो मैं अपने ननदके छोरा नहीं कहीं जोरा ॥

५

अरे जिन आस लगारे मन मेरे पियसों
ए कपटी कपट भरे ।
बाजी लगा सो हो जीता महरबान
जाको और होवे पास अरे० ॥

६

अरे जिन हम बहुत कर देखे दोद पै जिनसों
मिताई थी वे सब कर देखो दोद ।
अला बिन कौन खबर ले मेरो वो जब साहब
अधरात कर देत अदा रंगसों दिन ईद ॥

७

अदा रंग सों और निभाई ए प्यारे निशदिनमें ।
एसो पो किन नहीं पायो
जो पायो सोते चल कर उन सों ॥

८

परमें माँड़ा धोनिया लोहा जा न सका जान ।
परमें माँड़ा सोधिया लोहा जा न सका जान ॥

डंगरिया चाड़ूंगरो चेम चेम नसा अतण पतण
नाथोया नाड़ा नितनयार नैण नैण करे देयार ॥

९

यार ढोलन घर आवरे आवरे साँई मे तो तैंड़ो
लेवाँ बलाई अरज करां तुजताँई ।
हाँ बे मैनू अपने करमदा नाल निहाल करो बेड़ा
एरब्बा एही माँगदे असां तू साड़े नाल
साड़े मनदी मुराद बर लाई ॥

१०

ओजो मे तो कांई जांणा छे राज
थाँरो नगरोरो बाट ।
अब भूला भूला फिरा छाँ या जगरे मांह अब थांरो ।
नाम जपां छां काम्हे मुख पाठ हो जी म्हारा
अपनी मौजसे पूरण करदे थाट ॥

११

हां बे मियां मैंड़े तैंडे नाल आंखी लागी बे मेंड़ा प्यारा
जानी लोकां मैनू देखदा तैनू दैदे नाहीं बे ।
तैंड़े बिन दीठे साडा मन अकुलांदा बे मियां कूक
वेषलामी मैनू अब ढोलन तैंड़े बिन दीठे साड़े
चश्मां चैन लेदे नाहीं ले ॥

१२

सद्योनी मैंडा रांझा केतिक दूर माड़े दिलदानी
महरम सांई रब्बा पूछ पूछ हारो रात सारो ॥
जो मियां रांझिनू आन मिलावै नेहदो बन्दी थारो ॥

१३

हरिको नाम लेरे गंवारा कहा मन सोचत वारं वारा ॥
जब दरसन देखा चहिये तब दर्पण माज रहिये ॥
जब दर्पन लागो काई तब दरस कहांते याई ॥
बाजीगरने डंक बजाया तब लोग तमासे आया ॥
बाजीगरने डंक सकेला तब रह गया आप अकेला ॥
जब पार उतरना चहिये तब केवट सों मिल रहिये ॥
जब उतर गए भवपारा तब कहा कामको संसारा ॥
जब सौदा कीना चहिये तब सौदागर सों मिल रहिये ॥
सौदागर सों सौदा कीना सौदागरके हम चीना ॥
कहे कबीर हम जाना जानके यह पहचाना ॥
पण्डित होय तो पतीजे मूरखको क्या कीजे ॥

सोरठ

सखी मोहे वाहो देशको जाना ।
जाको नाम न जानो ठिकाना ॥
जहां टूट जाय सब फन्दा ।
जहां दुनियां नहीं नहीं धन्धा ॥
जहां उगे नहीं शशि भाना स० ।
जहां पीर पैगम्बर देवा ।
जहां रिषि मुनि असुर न भेवा ।
जहां कुफर इसलाम समाना स० ॥
जहां जाना ना कोई भावे ।
जाको रीत न कोई गावे ॥
जहां जायकर फेर न आना स० ॥
जहां वेद पुराण न बमना ।
जहां कुरान किताब न मुलना ॥
जहां पूजा निमाज न ध्याना स० ॥
जहां अंधेरहि उजियारा ॥
जहां भूख न प्यास अहारा ।
जहां पूरन आद जमाना स० ॥
जहां अगिन पवन नहीं पानो ।
जहां मरत जोव नहीं जानो ॥
जहां लाय न पढ़ो परवामा स० ।
जहां नरक सरग भो नाहीं ।
जहां सोउं पिया गलबाहीं ॥
जहां पेरं सोहागके बाना स० ।
जहां नाद वेद ऊ नाया ॥
जहां सिपरो सारो माया ।
जहां पीव रचो म्हारो गाना स० ।
जहां लागो प्रेमको बाड़ो ॥
जहां फूल गुलाबन बाढ़ो ॥
जहां फलो है मरुवा दोना स० ।

जहां रंग रूप नहीं रेखा ॥
विन नैन साहब देखा ॥
जहां पायो जीव अस्थाना स० ॥
जहां जात न पांत विवेका ।
सब घट एक ही लेखा ॥
जहां कृष्णानंद सब भाना ।
ब्रह्म रूप तहां मन माना ॥

सोरठ—एकताला

बंसी वेर परी बे मुरलिया मेरे वेर परी।
आवत जात वजावत गावत कल न परत एक घरी ॥
एरी राग आग तन तावत निशदिन विरह जरी ॥
इन निरदईनें दरद न जानी मदन पुंजको गांठ धरी ॥

सोरठ

नैना नींद घुरी किशोरी जीके नैनां नींद घुरी।
आलस वस जोवन वस मधु वस देखत लतन दुरी ॥
पियकर सों सहज चिवुक तन बांकन भौंह मुरी ॥
बावरी सखी हित व्यास सुहन वल देखत आनंद भरी ॥

२

बैठे दोउ कुञ्जनको परछाईं चलो क्यों न देखिये ॥
एक भुजा गहे लेत द्रुमको दूजो भुजा गलबांही ।
छवि सों छवीलो लाल लिपट रह्यो
रो कनकवेलि उरझाई ॥
श्रीहरिदासके श्यामो श्यामा
कुंजविहारी पगे हैं रंगमांही ॥

३

सराइ ए नंद तिहारो हियोरे ।
मोहन से सुत छांड़ मधुपुरी गोकुल आन जियो ॥
कहा करूं मेरे लाल लाड़िले जो तुम विदा कियो ।
जीवन प्राण हमारे व्रजको वसुदेव छीन लियो ॥
कियो पुकार बहोत पचहारन वरजत गमन कियो ।
सूरदास मन मानक मोहन ले पर हात दियो ॥

४

मेरो नैन भयो बैरागी ।
बिन देखे मोहन पिय सजनी नेक पलक नहीं लागी ॥
जाके रटह प्रभु आप लुभाने धन धन बाको भागी।
ज्ञानदास प्रभु श्याम निरख छबि ताके हों पग लागी ॥

५

छोटी म्हारी ननदल बड़ी लवार ।
है गुणवती बारी गुण हु न जानी
एककी न बसे हजार ॥

६

सखीरी चातक मोहि जिवावत ।
पिउ पिउ रटत रहत निशबासर सोई शबद सुनावत ॥
अत सुकंठ अपनें पोतम को ता से जी मन लावत ॥
आप तो पियत रहत निश वासर
औ विरहनकुँ पियावत ।
जो न सहाय होत यह पंछी प्राण अधिक दुख पावत ॥
सूर सुफल जोवन ताही को काज पराए आवत ॥

७

बगवाँ बगवाँ कोयल बोले ज्यों ज्यों बोले
त्यों त्यों मोरा जिउ थर थराय ।
अरे अरे मलिया हों डरपोकनी अकेली
बलालों देखिये सदारंग कौन आन मिलाय ॥

देश—धीमा तिताला

हों जो म्हांने सङ्ग लिए जाय ।
ऊंची अटारी म्हांरे पिया को पलंग बिछा देशो
म्हांसों चढ़ोई न जाय ॥

सोरठ

नैना तो गुलाबी हो हो जो राज कोनेजो भरिया ।
लटपटी पाग कुसंभो बागो कहीं
सौतणरे रँगभरिया हो हो जो ॥

सोरठ—तिताला

माणो सिख माणो राजा महल पधारो बालो राज ।
उभी उभी लाड़ो थाँ सों अरज करेशाँ म्हांरो राज ॥
इतनो अरज म्हारी माण ले सायबाँ
लाड़ो हठ माने छे जी माणो ॥

सोरठ

हो जी म्हारी वेगी सुध लीजे हो जो महाराज ।

कबको मैं उभो उभो अपने मँदरवा
अरज करेशां बालो राज हो जो म्हांरो ॥
२
होड़ा वर नैनो थांरो जोबन बाला जोबन बाला छेजो ।
सोमेदो सुराइ वारो मोनेदा प्याला
आप पीवै सदा मतवाला ॥
सोरठ—तिताला
थे म्हारे घर आवोजो श्याम सलोना ।
अबके म्हारे गले लगोछे जो सायबां
राम करे सोइ होना ॥
सोरठ—धीमा तिताला
हो राजा हेलो देतो लाजो झालो दियो हु न जाय ।
गोरी गोरी बहियां चुरला विराजे सायबां
चुरलारो कौल म्हांरे चुभ चुभ जाय ॥
सोरठ—तिताला
सुवा चल बागन कों रस लोजे ।
जीवन कृष्ण राम अमृत फल
श्रवणन भर भर पोजे ॥
को तेरो पुत्र पिता तू काको व्रथा मोह क्यों कीजे ।
काल कराल करनको भच्छन विषे वासना छीजे ॥
सोवत जागत विहरत निशदिन राधाकृष्ण कहीजे ।
सूरदास सेवर कों तजके हरिचरणन चित दीजे ॥
सोरठ
नहिं अस जन्म वारंवार ॥
पुरबलों धों पुन्य प्रगट्यो पायो मनुष्य औतार ॥
घटे पल पल बढ़े छिन छिन जात न लागे बार ।
धरन पत्ता गिर परे ते फिर न लागे डार ॥
भवसागर जमलोक दरसे निकट अँधेरो डार ।
सूर हरिकों भजन कर कर उतर पैले पार ॥
२
प्रभु मैं पोछो लियो है तुमारो ॥
तुम तो दीनदयाल कहावत सकल आपदा टारो ॥
महाकुटिल कुबुध अपराधो औगुण भरि लियो भारो ।
सूर कूर को याहो विनतो ले चरननमें डारो ॥
३
प्रभु तुम मोसों पतित उबारो !
अब आयो हों शरण तुमारो जो जानो त्यों तारो ॥
तीनो पनमें भक्ति न कीनो काजर हूँते कारो ॥
हों पतित तुम पतित पावन अपनो ओर निहारो ।
गोध व्याध गज गणिका तारो गए ले ले नाम तुमारो ॥
सूर कूर को या हो विनतो ले भक्तनमें डारो ।
देश—सोरठ
लागे थांने रमक रंगोली महाराज
थांने मोह्यो नंदकुमार ॥
चंद्रवदनो मृगलोचनो श्यामा वरसानें की नार ॥
सोरठ
चूड़ा रंग लाग रह्यो छे म्हारे आलोजा हो राज ।
आप रंगीला थारो सेज रंगीलो रंगरंगीला साहबांजी
कांई और रंगीलो थारो रात ॥
२
सलूणो धणरा साहबां हों राज ।
घट घट जोवे थांने कामनी जो
कांई फौजोंरा सिरदार ॥
अटक उत कर आवसो कांई
मृगनैणो जी रो प्राण अधार ॥
३
घोड़ला कांईजो पलांणो म्हारो राज
म्हारो शिख मांणो हो राज ॥
एक लख देशां वारो दोय लख देशां
थांरा घोड़लारो बाग पकर खड़ेस्यां ॥
४
रूड़ो गोवलरा हो धजदार लोय थणोयाला ।
कैलासवासो आनंद निवासो मोह्यो शिव सरदार ॥
५
नदिया गहेरी भई पिया बोलई पार ।
हाँरे हाँरे वीर खेवटियारे वेगी ने आवो नेवरियारे ॥
६
सुरत लागलो मोरीरे पिउ तुमहो और आव
गरवा लाग मिले ॥

ए सदारङ्गीले महमद सा पियरवा नेक चल मंदर
मो ढिग बैठो सो सुख पावै
हित अनहित देख जले ॥

७

काहेकूं प्रीत लगाई रे देया ।
प्रीत लगाकर बहुत दुख दीनों
यामें कौन बड़ाई रे देया ॥

सोरठ—जङ्गला

भालो राज छेजो उमगो जोबणछे ।
पलँग विछावो म्हारो हैलो ने बुलावो
दारुडारो बातें कांई उणहो जगावो राज
अपणो उमगसे जैसे मै जागो वैसे उण हो जगावो ॥

सोरठ

राज बहादुरां कांई जाणे राज कैक पीरछे राज
कैफ पीवेछे बाज मतवारोछे राज ।
सीस लटपटो पाग सोहै अदा रंग
कर सोहै मदरो प्यालो छे राज ॥

२

सेही गल चंगो बे जेहड़ो बे मौला भावदो बे ।
चुचक दे खर घणियां निधियां हीर राझिनाल मंगो ॥

सोरठ-देश—तिताला

सांवलिया विलमायोरो मेरे घर नहीं आयो ।
अवर सखिन सों रसकी बतियां
हमसे नजर छिपायो मेरे घर० ॥

२

म्हारो सईं है झालो बालो लाजो ।
पायल म्हारो रुणझुण बाजे नदद्ल बैरन जागे ॥
सीस फेंटो अतही लपेटों और केसरियो बागो ॥
रसिक विहारीजीरो छब निरखत ही
लाज छाड़ चलो आगे म्हारो ॥

३

सुणी राखीछे मै तो म्हाण सरो बातें नाहन जाणूं
थांरो देश रा भांतण नाहन अरी ए ।
वाट घाट मईं रोकत टोकत गगरी डिग डिगवांदो
म्हांरी हौं जाणती तो लातो साथण ॥

सोरठ—तिताला

अरे मेरा भाता एरी ओ जो तू रह न सकत बावरे ।
छतियां खेलण गइयां जांम रङ्ग लागा
ढोलन मेरा लावै नेह नवेल

सोरठ

थे तो कांई जानो बांका मारू राज ।
विन देखे म्हांने कल न परे छे
थांसों लाग्यो म्हांरो काज ॥

२

थाँरे झमकड़े को राज माणे चावरे राज ।
सात सखी मिल झूमर खेलब गइयां
कोइ गावै कोइ भावरे ॥
अपने पिया सङ्ग खेलन गइयां खेलन कांयह दावरे॥

३

म्हांरा मधवा मारू हो जोयह रीत चलवेको नाहींजो ।
चार महीना थांने चलन न देस्यां
लम्बो लम्बो बाँह पुकारोजो ॥

४

म्हांराजां म्हांरे नेड़े हो राजा आंवणा करो
कमल पदम जोरो आंण ।
बारूरे दखणरो चाकरो विकट नरवदारो घाट ॥

५

बे केसरिया म्हांरो राज चूड़ो म्हांरो
रंग रंगा दे सायबाँ ।
रंग गोरो रंग सांवरो जो म्हांणे पंथो म्हांणे
रंग रंगा दे राज चूड़ो म्हां० ॥

६

म्हांणे प्यारा लागोजो राज आलो जांपना हो म्हांणे ।
रङ्ग भीना महाराज राजेसुर कुमर जो
काँई राज तुम प्रवीण प्रताप ॥

७

अपनें को तैनू एसो बहुत घणे पछतांगा ।
दारूमे दवदिल बदा मोंही पूछदी में वैदसे सयांणा ॥

८

म्हे को बे जाणां सांई धावे मैंको ।
जम्ब वांदी घाटो ठंडा पानी
आणा बे आणा बे आणा बे आणा ॥
भांवो खांदी मीठा मातुला
ढेरन खांदी थोड़ा बे जम्बु वांदी ॥

९

वारा म्हारा गाढ़ा मारुड़ा हो
दीजे मोहे लहरां लहरां ।
पार खड़ा मित्र रांझण
कूके दी सदियानी में सहरां सहरां ॥

१०

तुसी वल्ल चम्म भेदे चम्मयार भले डड़ी जब लड़ियां ।
गुल अनार चोला वारी मेगू पीठे बंधा तनियां ॥

११

अरे तुम आ जारे अरे हो गउअनवारे ।
श्याम सुन्दर कृष्ण मुरारी मुख सों बांसरी बजायोरे
अरे तेरो भीजेगो कमरिया अरे हो० ॥

१२

बाहजो रो वीर हो मांणे कांई जाणें कब मिलसो ।
मोर मुकट कर लकुट विराजे चितवत तें म्हाँके तीर ॥
कहो पण्डित कब मिलन होसो जिया धरत ना धीर ।
रसिक विहारी जो थांने प्यारोजोरो
आँण आँण मिलो बलवीर ॥

१३

नैणारो सवादी गोरो थांरे आंगण
जभो जभो सैंग करे छे ।
मारे दिलरो थांरे दिलरो कौन जाणे मनरङ्ग
म्हे कांई जाणां राजादो बे ॥

१४

बनाव ठेहो आवे हो आवे हो राजोन्द्र है ।
अतरसरो तरो वारो पीत बढ़ावे ॥
सुणे कहे कै थांणें चांडें एसो कपटी सङ्ग
सदा रङ्ग नैन सो सैन छिपावे ॥

१५

उमगो जोबण छे जो हो हो बालो राज छे जो ।
पलणा बंधावो म्हारो हैंलोनें बुलाबो म्हांराज दारुड़ा
रोवत कहे होउनें बीच खावो हो राज
अपनो उमगबें जैसे तुम जागो बैसे उनेबो जगावो ॥

१६

थाँरे तो नैनामें हों अलसांन घणी छे
पिया देख रहे चिबुक उठाय ।
बिथुरो अलक सिथल भइ पलकां मोंहे बांक तणीछे ॥
घुल रही नींद नैन अत लालो काजर रेख बणीछे ॥
रसिक विहारो प्यारो जो रो चितवन
मिल रहो अणी सों अणीछे ॥

१७

ज्यांण्या ज्यांण्या हों लोभो थाँरा छल छन्दपना ।
नैन निबाय देखाय छल बल
दासी सों थांरा मकर घना ॥
यों बातां थांनें कौन पतीजे सायबां
थे तो बोलो झूठ घना ।
रसिकविहारी थे नाम कहावो
सोभा पावो यों लछवा ॥

१८

नैनां सेती बोन्धो है विहार जोनें आली ।
घायल ज्यों विरंराबत राधे
घड़ी तोहे विना नहीं ठाली ॥
नैन सैन कुछ टोना कर कर चाल चलत मतवाली ॥
सब दुख मेट भेंट व्रजनिधको छाड़ कपट चिरताली ॥

१९

लाड़ीजीरो खोजनमें मुरड घनो छे
हो रुंड़ो ठाढ़े उरडमे ।
नैनमा गाड़ो आड़ो छब बाढ़ो राज महो कहुँ कुंड़ो ॥

झीणा पटरे घूंघटमा हों कर चमके कङ्कण चुड़ो ।
या सोभा किणरी व्रजनिधजी
बात बनावो कांई अत अल जुड़ो ॥

२०

क्यों जो मरजी रो गरजी गिरधारो
ते क्यों राख्या जो तोर ।
पहले तो हित कर अपनायो
चाहिजे अब निवाहण ओर ॥
बांका विहारी व्रजनिधने देखो ऊभा छे कर जोर ॥

२१

राधे गुन्हा किया सब माफ करो ।
कर जोरे ठाढ़ो हूं सनमुख
अवगुण मेरो चित न धरो ॥
निशदिन ध्यान रहत चरणनकों
मूरत माधुरी हियरे धरो ।
अब तो लाज स्वामिनी मेरी व्रजनिध मेरी ओर ढरो ॥

२२

म्हारो मन मोह्योजी वैन बजाय ।
सुनत कामको पीर उठत है निशदिन कछु न सुहाय ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तलफत जिय अकुलाय ॥
मेरो कह्यो तू मान सखीरी व्रजनिध बेग बुलाय ॥

सोरठ-देश—तिताला

एरी सखी बावरी क्योंरी भई ।
वा कपटी लपटी सों झपटी रपटी सङ्ग गई ॥
जानत नहीं साथन बातन घातन वाको घई ।

२

हांजी मैं तो कांई जाणा छे राज थारो नगरीरो बाट ।
भूला भूला फिरां छे या जगरे माह
थारो नाम जपाकां मुख पाठ ॥
हांजी म्हारा अपनी मौज सों पूरन कर दे थाट ॥

१

या दिन मङ्गल रो आयो आयोछे राज ।
आयोछे आयोछे म्हारा साथीड़ा है आज ॥

हांजी मैं तो घणाघण केल करेस्यां
म्हारो राज आयो म्हारा मणमा छे काज ॥

४

होराज थे तो म्हारा लारां लग्या आवो राज ।
चांदनियामें सैन चलावो हो राज ॥
इतनी अरज म्हारो अनबलिया अनखिला साजन
म्हारा जीव थांको चाहे हो राज ॥

सोरठ

छिन्दगारो धन मारुडाने मोह लियो नखरालो है ।
कांई जाणा मारुड़ो मोह लियो मृगानैणी जो है ॥
ना में थारे घर गई जो सायबां ना में लियोछे बुलाय ।
अमलनांरो रातो मातो म्हारे डेरे आइलो
आयोछे रूप लोभाय ॥
म्हारी है वैरण आधा आधो बांट लियो
छन्दगारो कामन ।
मारी कठड़द लरीरा हीरा पन्ना
ए सोतन आधो आधो बांट लियो ॥

सोरठ—तिताला

सजन घर आवोजी मीठा बोलो ।
थारे कारण सब जग छांड्यो सायबां
छांड्योछे तिलक तंबोलो ॥

सोरठ

सादो सहजादो जी म्हांरो बनो राज ।
इकटक अंखियां निरखत मग जित तित
सागर लाग्यो जहाज म्हारो बनो राज ॥

सोरठ—धीमा

माणीजा माणीजा जिन्द यार बे
तेड़े मुखड़ेदी माणू भांदो बहार ।
मौला तेंड़ा नितही रखसो लाज
तू तो जाणदा महबूबांदो सार ॥

२

दारुड़ोरो चाल हो सायबां लाड़ो जोने हो हो जी
सायबां प्यारीजो ने हों म्हारे मन्दरो ये हो ।

राजीन्द्र बकस उठ कलालण
घण बकसे खग बालो लाड़ोलो ॥
२
ठाढ़ो लो द्वारवा मद्दरे बोलावै
सैनन दे मद्दरे बोलावै ए हां मा ।
जौलों नहीं देखों तोलों चेन नहीं मोहे आवै
रातरो यां लुक आवै ॥

सोरठ—जंगला

सखुड़ा मेरे मुसकावै जोबन मातो छैजो सा० ।
उमग जोबन कहो राबल देशां
सासु ननद मोरो आन सतावै ॥
२
हाँजो म्हारे राजाजी सो कहियो
हो जो महलां सों डेरा नेडा करे।
भीजे म्हारो तंबूरो डोरो हाँजो
असमानो रङ्गरो बदरो झरे ॥

सोरठ

चढ़ आए बोले दई मोर हरे रूखको ओर ।
मैंने जानो रित पावस को हाफिज
आयो सावन घनघोर ॥
२
मांझलो रात पपीहानें जगाई हो ।
एक तो पपीहा पीउ पीउ बोले
विरहानें आन सताई हो ॥
कृष्णरसिक विन तलफत कामिन
मनसिज मद बीराई हो ॥
३
हैलो ठाड़ो यमुनातीर सुन्दर श्याम शरीर ।
मोर मुकट कर लकुट विराजे
चितवत तिरछो चितवन आली
मुरली बजावे बलवीर ॥
४
मद छकिया बालम छोजो म्हांरा मोती दे घालो ।
अलवट हेरो सलवट हेरो
मोतोरा चोरपना जो छोजो ॥

सोरठ—जंगला

हों तोरे सङ्ग कैसेकै जाय हों प्यारे मोरे
चरचा करेंगे यह चबाउ लोग नगरके ।
अब तुम जावो आपन मन्दर कछू न जोय धरो हो
चन्द्र छिपे आय अङ्क भर लेजंगो पायन परके ॥
२
पीतम नैणोरो कटारो हो राज ।
हतियन राज सम्भालो हो कलेजे म्हांणे ॥
महम्मद सा पिया हमारे डेरे आइलो
थे तो म्हारो लाज संवारो हो राज काड़ेजे ॥
बालम राज गाढ़ो रङ्ग माने छे ॥
दूलो पूत पठानरा राज मुड़े शबज कमानो सैला राज
तू सुणरे म्हारा वारोके मँघरा रेन घनरो रङ्ग मानेछे ॥

सोरठ—धीमा

सजन सुध ज्यों जाँनो त्यों लीजे ।
प्रेमको गत प्रेमहो जाने नित नित जोबन छीजे ॥

सोरठ

बिकाने मत जाजो होराज
थाने वरजेछे घररो नार हो राजोंदा राज ।
सोनेदो बतक जरावदा प्याला
मुने प्याजो हे बखत सिंघ राज ॥
२
मारूजी मैं नहीं आंबणाछे हो हो हो राज ।
थे मारे डेरे आइलो सायबां हो हो हो हो हो हो राज ॥
अंची माड़ो लाल झरोका रङ्ग से रङ्ग बतला
थे मारे डेरे आइलो सायबांहो ॥
३
थारो जोबण बाला हो मृगानैनी थारो ।
सोसफूल जरावदा कङ्गना
गलां सोहै मोतीमाला हो० ॥

४

रसिया मारूजो मे ना बोलूं ना बोलूं केसरिया ।
पिछली पोत मोरे अगमन जानो
अंगिया बन्ध ना खोलूं ॥

५

तूं जात मद्द ओर कहियोरे पतंगवा बोरा पतंगवा ।
बहे रोय रोय दोउ नैण हमारे
लाग रहे दिन थोरा हांरे वीरा ॥

माणो सुख माणो राज महल पधारो म्हारो राज ।
ऊभो ऊभो लाड़ी थासों अरज करेशां महाराज ॥
इतनी अरज म्हारो माण ले सायबां
लगी हठ माणो जो राजा राणो राजा महल
पधारो मारो ॥

सोरठ—तिताला

मतवालो म्हारो अनवट ले गयो ।
ले गयो तो ले जान न देशां
कांई सालुड़ा में सनवट दे गयो ॥

सोरठ

मेरा कहा मानो सायबां माझलो रात ।
चांदनी रात छिटक रहै तारे
कोठे पलंग बिछावो सायबां ॥

२

कहीं मोरवा बोलन लागेरो या मधुवनको ओर ।
इतना सन्देशा मोरा पिया सन कहियो
तुम चंदा हम चकोर ॥

३

कोठे थे विलम्यां छोजो राजा म्हारे बून्दी वाला ।
बांकोड़ घोड़ा थांरो बांकोड़ जोंड़ा
बांकोड़ कमर कटारो छैजो० ॥

४

लाल चिरिया रङ्ग दे न मेरा अछा रङ्ग देनो ।
सालू मेरा लाल चिड़ोई दो मोती एक नाल ॥

५

गुमानोड़ा में कैसे आऊं राज ।
रुनझुन रुनझुन पायल मोरो बाजे
सास ननदरो लाज गुमानोड़ा० ॥

६

ननदल जागे म्हांरो है कैसे आऊं राज थारे महल ।
धीरज धरो मोपै बन नहीं आवे मन हो मनमें दहल ॥

७

गारलरो तिहार है सजनो चलोने यमुनाजोरा तोर
पूजन कारन ढरस्यां ।
गणगोरांरो दिवस सोहामनो रसिकविहारोजोने
भुज भर लेस्यां रङ्गोली कुङ्कांमे रङ्ग करस्यां ॥

८

सहेली आलीजारो छब म्हाने मावे छे
निरख नैन सुख पावे छे ।
रंग रमावे छे मुरलो बजावे छे
रहस रहस रङ्ग जमावे छे ॥
कूरम कुलमें भान उदे भयो जारे जग जश गावे छे ।
रंगमोना महाराज जगतसिंह
म्हांरे महलां आवे छे ॥
सवाई प्रताप कुलमें भाण ध्रुव ज्यों
अटल रह्यो आछो पोत निभावे छे ॥

९

आई सावन तीज सहेलो म्हांरो ।
रिमझम रिमझम मेहा वरषे सरस चमके वीज ॥
डूंगरिया हरियाला भया जो कांई
बोले पपीहा पीउ पीउ भोज ।
घोड़ला चढ़ कांई सहल करे छे प्रतापसिंह प्रभु रोझ ॥

१०

नैना तो मुलाबो हो लायण क्यों जो राज किण ठगिया ।
रातामाता अँखिया रतनारो चितवन में रस पगिया ॥

११

रसिकबिहारोजोने फेर परणास्यां ।
कुवरी किशोरी रसिक अलबेलो
रहस रहस गुण गास्यां ॥

व्रजनिध मङ्गल गास्यां बाजे बजास्यां
उमग उमग हुलसास्यां ।
व्रजनिध जोरी यह छब निरखके
हरष हरष हरषास्यां ॥

१२

लागोरी नैन अनोखो नेह ।
उलटी बात सुनोरी सजनी
नीर बहत अँखियन यह देह ।
खान पान हो सब विसरोरी
पलक न लगत सुहात न गेह ॥
व्रजनिध रूप माधुरी निरखन बार बार छब एह ।

१३

नैना तो सलोने हो जी थारे क्यों जी राज ।
मैं तो थारी दासी जनम जनम की थे म्हारा शिरताज ॥

१४

थाँरो राजाराणी लटका बनो ।
आछो लागे हो सायबां सालुडा
झटकाबण आछो लागे हो ॥
हों राज म्हांने कच्ची नींद जगाई ।
पोढ़न दे जित मन रंग रसिया काँई थारे मनमें आई ॥

१५

थकी हट माणी सायबां मांझली रात ।
घोड़ला तो दीजो सायबां निपट निदान बे
डेरा तो कीजो सायबां चबल पार
छोटी लाड़ी अरज करेशां जियो महाराज ॥

सोरठ—तिताला

मारू मारो गाढ़ो है हो राज मारू म्हांरो ।
आंगन मारे केवड़ोजी कोई फूलोजी
गुलाबो नाजुक पाँचो पकर डर होछे
सायबां अरज करे छे पिया प्यारी
घूंघटड़ो जोर खड़ेगेजी राता ॥
उमगो जोबन ए घनो खेबटियो बटपार ।
पाखर भीजे तंबू चुवे कांई बोलोरे असवार ॥

सोरठ

ए सुन सइयो कामण म्हे कियो हो राज ।
म्हारा साजादा बनरा काँईजो
म्हारी लारंड़ लागोहो आवे का० ॥
कामन करबन हम चली जो सायबाँ
देवराने पकरी बाँह जादू म्हे कियो हो राज का० ।
धुर भादोंकी रैन अंधेरी रिमझिम रिमझिम फरी
पयलड़ी ठुमक मैं फरी विछुवा झनके
म्हे फिरी हों जी म्हारा राजीं दवनारा कामण ॥

देश-सोरठ

आली कहीं वरज्यो है वरज्यो मद पिबो बादरो ।
गरजो है मा गरजो चपल सैनन दे
मारे डेरे आए शोकरङ्ग म्हारा जिया लरज्यो है मा० ॥

२

ए तो पिया प्राण मारे ए नैसा लगे
ए तो टोना दुरावन नैणा लगे ।
सायबां म्हारे दिलादीं सुरजन साँई चितमें पगे ॥

सोरठ

एरे जोयो बावरे थे म्हारो गलो आवरे ।
भादोंकी रैन डरावनी लागे
मुझ विरहनकों जिबाबरे ॥

२

हाँ जी थाने म्हारा सों छे घूंघटरा जिन खोलो ।
उभी उभी मृगानैणी अरज करेसाँ
धीरे धीरे मोसें बोलो ॥

३

तुम पर अली महाबली जो को सहाय रहे ।
बनरा बनरी मौज करो जी सायबाँ
ए पूरण होय मोरे मनके काज ॥

४

नैणां मोहीरे पियाके नैणां मोहीरे ।
बांकोइ तेरो कमर कटारो कांई
ठुमक चाल पर वारी पि० ॥

थांकरङ्ग पियाकी आंख लगी है
आंख लगायके मैं सोई।
तोरे नैणां मोहे नीके लागत है अब लागी सुख देन
अटक भटक सब मिट गई आनन्द है दिन रैन पि० ॥

५

लाया हो नेणो सांन विरहदो।
सोनेदे पौर गुजरदो नेहा
दिलदो डरियां सांन लमो रंहदो सांग ॥

६

याद नालबे दिलदार नाल सोणा हां तां सोणा पैना
सोना गल सोनेदा सोणा
आसकांनू तलबदो दिलदार नाल सोणा ॥

७

दरद न जाणदा वा मैड़ा सांइयां।
ग्वारो बी लाई वारो बे लाय न जानो
मेरा मियां पाक महोबत तेरियां ॥

८

नित दौरां तू दरद न जान हां यार यार यार।
असी आए तांड़े बेखन कारण
इतनो अरज मारो माम ॥

९

म्हारे महंला आइया हमलांरा राता माता म्हारे
आयो हो राज कुंवर।
घाग कसंभो थारे साथोड़ा बे सोहै
मदछको बातां आण सुणावो दरुरीयो छके ॥

१०

ए तो कामन बारनें उभो छै हो हो
राजाजी थांरे थांरे कारनें।
सावनियां केसरियाँ माणे लाल रङ्ग
अवल छको जो सौतनियाके हारनें ॥

११

मोतोड़ा चुम छै धोरा राज बोलो बोलो है राज कुमरजी।
इतनो विनती म्हांरी मान लोजे प्रताप सिंह
थें तो दिलांकी घुंडी म्हांसो खोलो ॥

१२

आवो झीनो सेझ हमारो आवो क्यों न राज।
कांई गुना मोसें रूठडा सायबां आवो क्यों न अरज
करे थांरे पइयां परत हूं सुभ रङ्ग डारे फुलवन हरवा ॥

१३

नींद नहीं आवे छै क्यों छैला मोहे नींद विहाने।
आबन कहे गए अजहूं नहीं आए
किन सौतन विरमाए ॥

१४

हियरा मोरा रूंधा हो आवेरे।
जिनके पिया परदेश गवन कीनो
उन विन कछु न सुहावेरे ॥
सुधबुध विसर गई तन मनको
विरहा विकल भई जाय सुनावेरे ॥
ब्रजनिध पतके किसन सांवरे
सजनो मोहन आन मिलावेरे ॥

१५

मेरा मन मोह्यो बे रावल जोगिया।
कान कुण्डल गल सेली सोहै सुध बुध मोरी सब खोयोबे० ॥

१६

झुलनिया तेरी जोर बनो नैहराके सुघर सोनार।
आट खाटको नैयर बनो है मौला हो लगावे धार ॥

१७

हां बे छैला मार गया विरह कटारीरे।
लोभी नेक कहा नहीं माने वरजत वरजत हारोरे ॥

१८

भला इन साँवरेने मेरो मन हर लीनो।
बांसरी बजाए मोहे टेर सुनाए
चातुर सुघर सुन्दर रसभीनो ॥
तिरछी चितवन मन पर बस रही
ना जानूं कछु टोना कीनो।
नजर अधीन अत रस भरी मूरत
तन मन धन बलिहारी कीनो ॥

१९

असो भला तारदा वो यार
तेड़ी रूड़ी रूड़ी नजरां प्यारदी ।
अजोजदीन गमझां तेरी तोखी
अखियां अकल खोंदी दुश्यियारदी ॥

२०

बिकुर दुख दीनो लाल प्राणआधार
आकर दरस दे मोंहि ।
आवन कह गए अजहूं न आए
जित ठौर कुतके ठौरकी भई योंहि ॥

२१

रसिया काईं न करो सायवांजी म्हारो काईं गुना
मोपे रूशो हो जी केसरिया राज ।
मैं तो थारो दासी सायबां जनम जनमरो
मैं तो थारोदासो थे म्हारे मन बसिया ॥

२२

मारू म्हारे बालो है राज ।
बागों बागों केबड़ाजी काईं सायबां ऊपर फूल गुलाबो
नाजक पोंचा पकर लियोजी काईं अरज करे पिया
प्यारी घूंघटडो जोर करे थे म्हारा सिरताज ॥

२३

हो महाराजा जीसे कहियोजी
जे म्हारा तंबू वारो लाल विनात ।
हो रेशमदी डोरी रङ्ग चुबे छे महाराज ॥

२४

चुनोटा टेढ़ो छे जीके गाढ़ा मारू छे जी ।
अलगर अलगर यों बहे जो खाँड़े कीसो धार ।
देख बिसानी गोदनो काईं औघट पस्यो गंवार ॥

सोरठ—चौताला

थोड़ा दीजो राज राज म्हांणे
पीवे न पिवाबे म्हाणे दारुड़ी ।
ना मैं थारे घर गई है ना मे लियो छे बुलाय ।
मदको मातो म्हारे आवसीजी सायबां
आंवण झोखा खाय ॥

सोरठ

रङ्ग बरसे छे सायवां रङ्ग छे हो रङ्ग छे
थारो मुकड़ो ने रङ्ग छे थारो बातड़ियांने रङ्ग छे ॥
आप बनों मतवालो सायबां मूने कहे कोन ढङ्ग छे ॥
जे तू म्हांसे चतुराई लाई मे बो करों उमंग छे ।

सोरठ—धीमा

अलबेलो म्हांरो राज थाँपे रङ्ग छे मैं तो मोहो ।
माथे तिलक भाग थारे सोहे बांके नैन सरोहो ॥
अरे दिलमें बस गयो रङ्गरस धूम परो है नगरमे ॥
आवनकी जलदी कीजिये नहीं तो
सौतन करेंगी हँस हँस हँस ॥

सोरठ

स्यामो सांवलियो जोवे हो राज
अब न करेस्यां सायबां ।
आवन करेस्यां सायबां आवणा हो राज सांवलिया
म्हारो राज करेस्यां सायबां थे म्हारे सिरताज ॥

२

मानो म्हारी बात सायबां काईं कहेस्यां ।
थे तो म्हारी पीत पहचानो
मैं पावण लागी ए महाराज काईं कहेस्यां ॥
ऊभी रागीजो थानों बरज रही
मारूजी थे म्हारो सिरताज ॥

३

ननदल जोरा वीरा काह कैसे समझावो
देस्यां थाने ओलंबो ।
पगड़े कोठे विलंम्या अलघा रह्या हालोजी हालोजी
काईं हेला देस्यां राज जाणों थाको घोलंबो ॥

४

हो जो रसिया राज म्हांरा म्हाने आंगन सेन बुलावे ।
कैसे आऊं ढिग उनरे म्हारो ननदल जागे ॥
रुनक झुनक म्हारा बिछुवा बाजे हातरो चुरो खड़के
महलां जाकर सेज बिछाऊं महरबांन म्हारा वसिया ॥

५

हेली रसिया राज म्हानें ऊभो आगण सेन बुलावे ।

मैं कैसे आऊं मेरी सास ननदिया और जेठनिया जागे ॥
रुनक झुनक मोरो पायल बाजे हातदो चूड़ी खनके
महलां चढ़ मैं सेज संवारो मेहरबान मन बसिया ॥

६

पानीडा जावे के बलमारे आंगन बावरो खोदाव ।
पानोड़ा जाऊं बलमांरे आंगण बावरो खोंदाव ।
पानोड़ा जाऊं तो म्हारो चूनर भीजे
छोटो लाड़ो जोने वेग बोलाव ॥

सोरठ—चौताला

म्हासो म्हारा बालम रिमया राज ।
गातां महल लगे आरो से दरश्यां नैणया राज ॥

२

लोयण रा हो लोभी राज साहिबां
थे तो झूठो झूठो सोह करे के राज ।
बातडली न मानस्यां झुकन लजाणके ॥

३

म्हारो राज आज मारूजो म्हारे पावना ड़ेहलो रङ्गरास
चतुरकारो इलमार रोझ सों
मौज महलां महलां दरसे ।

सोरठ

सांवराजो हो राज चूड़ें रङ्ग लाग रह्यो के
लाग रह्यो के व्रजराज चूड़े ।
रङ्ग चूड़ो रङ्ग चूनड़ोजो कांई रंगीलो साज रङ्ग
वृन्दावन कुञ्जलताजो कांई सहस गो प्यारा सिरताज
चूड़ो रङ्ग लाग रह्यो ॥
रङ्ग के थारो बांसरलोजो कांई रङ्ग के सबहो समाज ।
मोरा गिरिधर रङ्ग रङ्गो के बांह गहेको लाज ॥
प्यारो थारो नैननडो मन
रञ्जन खञ्जन मीन मृग मोह्या के ।
मनमथ गञ्जन भञ्जन दुखड़ो
मुखडो मन मोहन सोह्या जोया के ॥

सोरठ—चौताला

प्यारी तेरे नैना मोहन मन रञ्जन खञ्जन गञ्जन
बिना हो अञ्जन सोभा सरस देत ।
रूप उजारे अनियारे ठरारे गुनवारे मारे जोबन
मतवारे घूमघुमारे अरुण असित सेत ॥
जबते निहारे मैं वारेरो मदन वान
मीन तुरत मृगज जलज समेत ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम प्यारे रसवस भए
तिहारे न्याय आपनपो हारे
वेद वानी वदत जाय नेत नेत ॥

सोरठ

राधा प्यारी नाचत पियाके सङ्ग ।
उरपति रपगति भेद बतावत गावत तान तरङ्ग ॥
ललितादिक सखी ललित बजावत
वीन मृदङ्ग मुहचङ्ग ॥
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन
बरसत नव नव रङ्ग ॥

२

सब गुण भरो हो गौरी रूप राधा ।
हावभाव कटाक्षन हँस हँस पिय मन करत समाधा ॥
अङ्ग अङ्ग गति ललित सुभायन पाय चलत अगाधा ।
जव वलिहार होत मन मेरो गई विरहको वाधा ॥

सोरठ—चौताला

निरगुण निरञ्जन निराकार
करतार गोचर सो देखियत ।
सबही गुणन में समाय रह्यो वाही बात
काठमें ज्यु तास घास फूलनमें विसेखियत ॥
क्षीरमें जो घृत वीजमें तरवर सोई जगत जगदीश
जग पेखियत ।
वाहीकी जगत जोत नैननके तारनमें
तारनमें ससिमें सूरजमें देखियत ॥

सोरठ

ए पिया मैं वारो जाऊं ए वारो जाऊं ।
इतनी अरज मारी मानलो महाराज
म्हांकी जिन्दड़ो करेस्यां वलहारी ॥

२

लाड़ो जोरे सोंधे भीने बाल ।
अकत कथा एक देख सखोरी
फन्द गयो मन रिझवार ॥

३

आली कही वरजो है वरजो मद पिवो बादरा
काँइ गरजो ए मा गरजो ।
चपल चञ्चल म्हांरे डेरे आइलो
शोकरङ्ग म्हांरा जियरा लरजो ॥

४

लाड़ो थारा जीवि हो बनरा राजाजी
थाणे चाहे हो राज ।
एक लच्च देशां थानें महल पधारो सायबां दूजे लगच्छ
देशांनी खोली हो घूंघटरा ए म्हाराजा
लाड़ी खोलो हो घूंघटड़ा ॥

५

जोबन झेल रहो नहीं जाय ।
सइयाँ बिन न हाय म्हांरे महलां आवो
हमलारां राता माता म्हांरे आयो है राज कुँवरजो ।
पाग कुसुंभी थारे साथिडानें सोहै
मदछकी बातां आण सुनावो दारुरीयो छको ॥

६

ए तो कामनवारणे जभी छे हो हो राजा
थारे थारे कारने ।
साँवनिया केसरिया म्हांने लाल रंगा दे
अवल छकोजी सौतनिके वारणे ॥

७

मोतिड़ा चुमे छे धीरा राज बोलो है राजकुंवर मो० ।
इतनो विनती म्हांरो मान ले प्रतापसिंह
थारो तो दिलादो घुंडी म्हांसे खोलो ॥
आवो जानी सेज हमारी आवो क्यों न राज ॥

८

काँई गुनासे मोसे रूठा सायबां ।
अरज करे थारे पइयाँ परतइं
सुभरङ्ग डारो फुलवन हरवा ॥

९

लारां लागोई आवे छे ननदल थारो वीरो
म्हांसों पिछली प्रीत जतावे छे ।
एसो कपटी ढीठ ननदल थारो वीरो
सब मौला लाज लजावे छे ॥

१०

लैली मजनूं वे इश्कदे रंग रंगे ।
लैली मजनूं मजनूं लैलो वे एकही रङ्ग पगे ॥
लैली मजनूं एकही इश्क में चकनाचूर
इश्क सागरमें पड़ा सिर में डारके धूर ।
सुलतान सहर छोड़ यों एकदम आया लैली पास
जात पठान मजनूं चला कोस दोय सो पचास ॥
पाय सङ्ग बोसोदन ॥

११

मेरी वाणीमें बनवारी बसो
एक मुख करि गुणिन गसो ।
असद अलाप अलापो न होई
सोसलताई तज नीके कसो ॥
मुरली मुरसो समोइ लीजिये
जो गावे राधिका सुर रमजसो ॥
आनन्द घन हित सरसो बरसो
सोई कहत हो कहां धो हसो ॥

१२

मोहन मित्र मिलाय ।
साँवलिया पत लियो सुन्दर उन विन रहो न जाय ।
पिय रसियो अत बसियो राखो कण्ठ लगाय ॥
नागरी दास छैल रस बागो जागो तो रैन विहाय ॥

१३

तुम बोलोजी बोलो तुम बोलो
कपट न राखो जियरा खोलो ।
नैन तराजू नाल हियरा
शोक रङ्ग तुम सोच सोच तोलो ॥

१४

आयो ह थांना मारू पावणा लङ्करवा लशकर लायो है।
दिलिया नगरवारो सुन बे शोकरङ्ग
थारे दो नैनाने वाने मारो है॥

१५

मै थांसे न बोलूं राज थे तो म्हांरो
अंगुरी पकरत ऐंचत बांहीं।
थे गूजरवाको छोहरा शोकरङ्ग मैं व्रजको बामणी
थांसे हंसकर घूंघट न खोलूं॥

१६

हिंडोलना मैं काईं झूलां राज।
अगर चन्दनके खम्भ घड़ाती मलयागिरका पटाव।
रेशम डोर पवन पुरवैया और घटा सावनकी आज॥

१७

कवन घरी लागो नेह तुम सो जानो।
वो घरी कौन सी थो नेह हमैं जानो थो हाफिज
लगन लगी ध्यान न आवै पोतमें होती जान जानो॥

सोरठ—तिताला

बातड़ी थांको राज रे मै काईं गुण मानां।
अमल छके आए घरसों रे पीत करी तो
कसम साहबकी रङ्गभीने छैला नोमानां॥

२

मारे डेरे हो सायबांजो छको दारुड़ो।
सोतनके ढिग कैसेके जाऊं
रसिया मेहा दिल मतवालड़ो॥

३

क्या सोवे उठ जाग रे भोला परदेशी क्या सोवे॥
एसो करो पाछे हंसो न होवे
अन्त न लागे तोहे दाग रे भोला०।

४

बाटड़ी जोई सावन आया पी नहीं आए बाहरसे।
फूले फुलवा वन घन लता द्रुम
छावनी छाई विरहा झरसे॥

५

हां बे वो बांखेड़ांदो पवन सोहावणो।
ऊंचानी डूंगर मोरला बोले
ननियांदो रमल मोहो भावनो॥

६

हाँ बे लारों लागो हो आवे हो राजोन्द्र थाँरा वीरा
म्हांसे पिछली पोत जतावै।
आवन करेस्यां म्हांरे एसो कपटी
सदारङ्ग नैनासे सैन जतावै॥

७

ढीलो नथ ढलके मारुड़ो मलके गोरी जोरे हो मुखपर
झीना पट घुंघटडारे मांहो
नथनोरो झलको हो:जो झलके॥
पगे लागस्याँ झांझण झणके मोतियनरी लरां लरके।
नरवर कोट गढ़ अङ्गसमाहो
अलकांरो पलकां हलकै॥

८

काँई छे विरसासी सेली वाले थारी बांसरी
मनभर आशा मारे बहको जात है साँसरो।
दारुड़ो छकाँई माणे ढोठ लङ्गर बाँहो पकर
म्हांरो छीन लियो छें हाँसरी॥
बाँहन गहै लो म्हारो गाढ़ो गाढ़ो
सोकरंग थारे नेहाँसरी॥

९

छैल छबीलो छैल चिकनिया गोरी रूप लुभायो छे जी।
तुम चटकन मटकन पर रिझवत
बाँह पकर अपनायो छेजी॥

१०

चतुर बनोने बनरा रिझायो है
घणो हो रिझायो हो सोनेरे बाजूबन्दवालो।
झाँझन ऊपर हो जी पैजणो म्हारे सालुड़ा ऊपर चीर॥
नथुड़ी ऊपर मोती सांयबा
म्हांरो सगो ननदोजोरा वीर॥

११

तैने मोह्यो बे रावल जोगिड़ा ।
रूड़ो रूड़ो वीन बजावे उमंगसे
सुधबुध मेरी खोई बे रावल जो० ॥

१२

मेरा मन हर लीनो तुम जादूगर चित चोर ।
हम जो कहत तुम मानत नाहीं जैसे चन्द चकोर ॥

१३

बाज रह्यो छे थाल महलमें ।
उमगी पीत करत है रङ्गरस रो सहलमें ॥

१४

होजी म्हाने छोटी लाड़ी काहेकूं बतलावे
राज राज सैनरा हो ।
हों समझायो समझत नाहीं
एसोरी ढीट सवाई राजा बैनरा हो ॥

१५

साँवलड़े पिया क्यों करदा बेचैन ।
ताँड़ो जुदाई नाल सुन बे आसक दिल
झोके लेदो दिन रैन ॥

१६

बालो कहीं वरज्यो है वरजो
म्हांरो सुन्दर सांवरा गरजो ।
बैन बजाय वस कर लीनो सुन्दर मूरत हरजो ॥

१७

हां बे मियाँ मांड़ो गला सुनदा नाहीं
हुणको कीतो तकसीर तेंड़ो ।
राव राज बहादुर कर कर अदारङ्ग
नाल तो रहे हुरमत मेंड़ो ॥

१८

अब तो म्हांरे कौन जगावे छे जो राज
बालो अजो नोदड़ियां मतवालो सायबां ।
जभ छे झरोखे रानो बाट तकेदो
कब घर आवे शुभरङ्ग रे सा० ॥

१९

थाँपर वारो म्हांरो राज बालो है ।
ना मैं थारे साथ गइलो ना मैं लियो छे बुलाय ॥
अमलांरो राता मातो म्हारे डेरे आइलो
इस्क पङ्गुरेसें झालो है थाय ॥

सोरठ—जंगला

कुत्तेने म्हांरो देड़ सेर आटो खायो रे ।
मैं जो खड़ी थी बाहर आंगणसें
कुतका ले कर पाछे दौरो दुम पकरके धायो रे ॥

सोरठ

क्यों बताना थां गम हरम यार बिरहदो ।
दिलदो सांग विरहदो चुप कीतो शोरो
इसविध जांदो जान गर रहदो ॥

२

जानी निमाणा बे मेड़ा लोकांदो बंदिया
सहदे एक नेहादे कारण ।
आज जमया कीजे सुध लीजे म्हांरो इस विध
जांदो जान तेरो दोस्तो जियदो तारण ॥

३

म्हारा राज लाडला हो राज थाने खम्मा ।
ऊंचो अटारो चन्दन केवारो दिवलारो जोत सवाई ।
आया छो थे म्हांरे डेरे रसिया
झमाझमा हो राज खम्मा ॥

४

मान ले म्हारो अरज गुमानिड़ा थारां वेखणरा गरज ।
आज जमया कीजे सुध लीजे म्हांरो
आपणा वेखण अरज ॥

५

मारू जोने कहजो हां जो म्हारा राज मारूजोने
कहजो समझाय आसमानो डोरो
रङ्ग चुवे जो लाल डेरांको ।
ऊंचा थारा तो तम्बू जरद बनात
हो हो आसमानो डोरो रङ्ग ॥

६

लाल पागयांसो लागो नेह ।
एसो सुन्दर वर मोह मिलावे राखोंगो नैनमें एह ॥

७

कांई कांई कैसे हो राज अब मैं थांने ।
झूठो सोग न म्हासों खावो उन ही रे जावो आज ॥
नथरो झलकां मारुड़ो मलकां हंस हंस हा हा खाय ।
आगाने पधारो मधवा मारुल
राखस्यां हियरे लगाय अब मे० ॥

८

खिल रहे सोधे मोने बार बार देखा छे निहार ।
देख सखी अलकनको लटकन
मनड़ो भयोछे रिझवार ॥

९

हो जाय कहजो जी आलीजा थांने
सुखसो विहानो रातड़ो ।
बालम आवो म्हांको छाय पाय
हरषे पिय सुन मतवालो बातड़ो ।

सोरठ—तिताला

सायबां म्हांरो नोदड़लो रा बालम जाग हो जाग मा ।
सोनेदो सुराई वारो सोनेदा प्याला
प्याजा अधिक छकाजो जो ॥

२

हांजी महाराणो जोरा महलां रङ्ग बरसै ।
देखो जवाई बेटोरो हित बित बारो चित सरसै ॥
अनुरागी या बातई नाहीं घरराड़ रसायत परसै ॥

टप्पा-सोरठ—तिताला

मारुड़ाने समझावो है ननदल ओलभो मैं
देशां जीके देशां म्हांरे मारुड़ाने हो जो समझावो० ॥
दारुडारो बतक भरा दे सायबां
अचकको छब गयो हैं ॥

सोरठ

हो जो अमलांरा माता आवज्यो जो म्हांरो बालम राज
बांकोड़ जोड़ा थांरो बांकोड़ घोड़ा
बांकोड़ कमर कटारो है ॥

२

पतियां ले जाइयो पियके देश पतंगवा ।
गले बीच सेलो कान बिच मुद्रा
कर रहो जोगणवारो भेश ॥

३

म्हांरो सुन प्यारोजो कौन कौन अंगना सराजं ।
हों भोंहे मृगनैन खञ्जन लख नासा फिर दुराजं ॥
दशन चमक चोपे चमकन वचन सुनत सुख पाजं ।
कह न सकत कछु वदन चन्दकों मनमें सुवस बसाजं ॥

४

म्हांरो चतुर सुघर सुन्दर सुरजनुवा
पोतको रीत न जानो ए अनमानो ए हो ।
पियाको पोत मोरे जियामे वसत है विन देखे नहीं
चैन सरस मत अरज करे महारानो आनो ए ॥

५

हो जी लटकेदड़ो मोतो रूड़ो है ।
रूड़ी सेज रूड़ी महारानी
अपनो उमंगसे रूड़ा सालुड़ानो रङ्ग चूड़ो है ।

६

हां जी थांने और ठौर अब बाधो औगुण घालो
नांह सुने छे जीने पूरां ।
पाछली पोतको रीत कहां गई एतना दोष करेशां ॥
पास बैठ कर दोष लगावे सायबां
हो जी मैं तो लाज मरेशां ॥

७

राज थे घणो मिजानन है तेरा मारुड़ा ऊभा बाट ।
रङ्गड़ो बात तें कही नगणो छे
अपने धणीवासों रार न कीजे ।
ए गोरी चमंगो पोतरो प्यालो मधवा घणो छे ॥

८

थें तो म्हांने प्यारा लागो राज ।
बलि बलि जावां थारे सुखडारो छब पर
भलां हो पधस्या म्हांरे आज ॥
प्यारो रे रसबस बसिया रसिया सज केसरिया साज ।

धन धन जीवन अभिराम श्याम थें तो
रसिक गोबिन्द सिरताज ॥

सोरठ—तिताला

हांजी थारे महलांमें मन्दिलरा बाजे राज
नीके महरत महांरानी घर काज ।
सब सखियन मिल देशां असीस थांने गाढ़ो
शोकरङ्ग मारूजी हीरे मोतियनकी
सोस बिराजत ताज राज ॥

सोरठ

घोड़ला चढ़ियाला म्हांरो सुन्दर सरस नाल ।
कमर कटारो थारो बांकड़ोजी सदारङ्ग
गुमानीड़ा काईं रूड़ो रूड़ो सैल करेस्यां चाल ॥

२

म्हांरे गरे लागणा रसिया बालम ।
अनरस जिन करो म्हांसो सदारङ्ग
अदारङ्ग रसीले रस पाग ॥

३

एरी लालसे किस गुन मिलन बने गो एरी ला० ।
जो तुम समझे अपने जियमें तुम राजा हम चेरी ॥
ननदोरा बीरा नैन लगे सो लगे ।
इतनो अरज म्हांरी मान ले रङ्गरस
जितहु जगे सो पगे ॥

४

केसरिया मारू बाँह गहेको लाज हो ।
हो तो थाँरे दावन लागो छे थे म्हांरा सिरताज ॥

५

सोतणकी सब सहँदे रहँदे हो तैंड़े कारनवा ।
हमरो मुख ले अपनो नहीं कहँदे हो महर करो
अब सरस इश्क सो नैन रहँदे तैंड़े ऐंड़े बैंड़े ॥

६

थांरो गुण मानो छे म्हांरो राज ।
कृपा करो जी म्हांरे महलां आए बांह गहेको लाज ॥

७

उड़ कागा म्हांने गह ला दीजो राज ।
जो आँवना म्हांरे कथन बे लागे ॥
आसक दिल मिले चौक पुराऊं गाढ़ो आंगण छे ।
शोकरङ्ग लिपाऊं काँई कांई कृपाऊं ॥

८

लेहरां लागोई आवे ननदल पिछलो पोत जतावे ।
नन्दरो ढोट वरज्यो नहो माने कूडा बोल सुनावे ॥

९

घणो यबार म्हांने भई हो राज ढांरो मग जोहै ।
कोटिं विलंभो म्हांरे मंदर है महरबान
मैं ऊभो अपने द्वार थारो मग जोहै ॥

१०

जागो क्यों न राज हो जो बाजे ठननननननन
बेबर झनकार बाजे बाजे बांको राज ।
होजी सायबांन दारुड़ो पीबो यों राज ॥
नथनी फटके हो केथा ढ़ीला मोती हो जी
टीलो ढीलो बांको राज सा० ॥

११

लाड़ो थांरा जीवे हो बनरा बादसाहे सरा ।
एक लख देशां बारो महल पधारो
दूजो लख देशां खोलो घुंघटरा ॥

१२

साँवल सङ्ग मिला बे सोइ गलभाँदो ।
बे मैड़ा में उनकी सजनो ज्यों सोणा सोहागा चाँदो ।

१३

थे तों आवन करेस्यां राज मइकूँ डर लागे छे
सुनो मारो सजनो रैन अंधेरो ।
निश अँधियारो वारो बिजरो चमके सुन भवन
बेकल भई चेरो इतनो अरज सुन लीजो सब रस हो
बिरहा दुख देस्यां ॥

१४

लाड़ो जीरा प्यारा हो पी घर आवो तो मैं लेवां बलाई ।
कितरो बार मोही गैलो जोवत भयो
वेग आवन करेस्यां साईं ।

१५

हो मारूजी मैं नहीं आवणां हो हो हो राज।
ऊंचां माडी दिवरां बारां रङ्ग हो रङ्ग बतलास्यां थें।
म्हांरे डेरे आइलो सायबां हो हो हो हो हो हो राज॥

१६

गोरो री थांरे रे कंचन से कुच अंगियामें थांरे।
सियरे हात न लावो महरबान लागो लगे छे करारे॥

१७

डावर नैणी जोरो जोबन बालो हो।
मैं तो थारो दासी सायबाँ
जनम जनमरो नेहा लगा तुमो पालो हो॥
हो जो हो जा झीणां मारू जो मैं तो थांरे छाइयां।
ना मैं थांरे चाल चली छे ना सैं कियो छे करार॥
रमक झमक मारे डेरे आइला
म्हांरे हारे ठाड़े बलिहार॥

१८

नींदकी मातो गई सोय अरी ए मैं ना जानूं कांई।
महमद सा पिया मोरे डेरे आइलो
राखतो मं नेणवा दोय अरी०॥

१९

सखी मोहे ताना दे दे लोक अरी ए मैं कित जाऊं॥
बावर जियरा मानत नाहीं केतिक बार समझाऊं॥

२०

हम परदेशी लोग भंवरा
पियाका मिलन कब होवेगा।
अबके बिछुरे कबधों मिलोगे
नदिया नाव संजोग मंवरा०॥

२१

जोबन भूम रहियां भूम रहियां दिन चार।
यह जोबन तरवरको छइयां देखो शोच विचार॥

२२

रैनको उनोदो मातो काहेकूं जगाईरे।
सगरी रयन मोहि तलफत बीतो भोर भए गर लाईरे॥

१६६

२३

कंगणिया घड़ाय दो ओजी आछा म्हांरा मारू ढोला।
सोनेको मोहे कंगनो घड़ाय दो
हीरा मोती लाल लगाय दो॥

२४

बोलिया न बोलो आधीरात मोरे सइयां
जोगियाके सङ्ग निकस जाऊंगी।
तोरी बोली मोहे नीको न लागे
तन मन धन सरसाऊंगी।

२५

अमेतो आया आया म्हांरो ए साथण
मैं जाणां मेवाड़को।
रूपनगर सों चली मारवण फतेगढ़ नागोर जोधपूर
मेरता मरहट असल बसे मारवाड़को मेवाड़को॥

२६

कहां कहां जाऊं तोरे साथ कन्हैया
बंसीकेरे बजैया कन्हैया।
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें गहे लीनां मेरा हाथ क०॥
दध मेरो खायो मटकिया फोरी
लीनो भुज भर साथ क०॥
दध माखनके चोरैया क०।
लपट झपट मोरी गागर पटकी
सांवरे सलोने लोने गात क०॥
कबहूं न दान लियो मनमोहन
सदा गोकुल आत जात क०।
मोरांके प्रभु गिरिधर नागर जनम जनमके नाथ क०॥

२७

रंगीलो सखो वंशी वनमें बजो।
धीर समीर तीर जमुनाके सुन्दर श्याम सजो॥
श्रवण सुनत सब व्रजकी वनिता आतुर तुरत भजी।
जानकीदास श्याम मिलवेको कुलको लाज तजी॥

२८

मेरे डेरे मोता मोहन आवरे।
दरद दिवाणी रूप लोभानी सुन्दर रूप देखावरे॥

पलकनके पग पांवड़े कर हों घर पुतरी पर पावरे ॥
गोविन्द शरण व्रजमोहन प्यारे आनन्द रङ्ग बरसावरे॥

२८

थें म्हांरे गर लागो जी श्याम सलोना।
कृपा करो म्हांरे महल पधार्या मोहन मनहि लगोना।
सुन्दर यदन सोभा सुख सागर
मुरली मन्त्र मदनको टोना।
भई दासी बजनिध थांरो अब कछु और न होना॥

२९

म्हांरा रसिया बालम जी थाने चाहै हो राज।
दासी थारो में जनम जनम री थें माकां सिरताज॥

३१

म्हांरा रसिया बालम जी मोती दे घालो।
अलबट हेल्या सब सलबट हेल्या
मोतिडारा चोर पत्रा जी हो॥
और हठे थांरे म्हांरे कन्हे नाहीं
थांने कृकन्दपना घना जी हो।
जभी राधा प्यारी अरज करे छे
मानो व्रजनिध बना जी हो॥

३२

हेली चलो देखोरी चितरो चोर।
रेन अँधेरी कारी बिजरो चमकत
मोर करत अत सोर॥
व्रजनोपन सब सुख मदमातो कित रजनी कित भोर।
वृन्दावनको कुञ्जगलिनमें मदन जगो चहुँ ओर॥
नन्दमहर को ढोट साँवरो हम सों भयो कठोर।
मन व्याकुल बिन दरस श्यामके चञ्चल चितमन जोर॥
तानसेनकों दरशन दीजे श्रीबल नन्दकिशोर॥

३३

राज म्हांने मा छेड़ो जो खड़के म्हारो
हाथाँरो चूड़ो पायल म्हांरो बाजे।
इतनो विनती मोरो तुम सों महरबान
सास ननद मोरो जागे॥
रेण चांदणी कांई हठ कर हियरे हाथ न डारो॥

३४

भवन न भावे ए री मोहे पिया विन।
एसो जान सुजान पिया घरो घरो पल पल छिन छिन॥
इत घन गरजे बिजरो चमके जिय डरपावे॥

३५

बनाजी थांरो अंखियां कामन मारो हो बनाजो।
मोही छे जी थांरो लटक चाल पर वरसानेकी नारी॥
जन्तर मन्तर जादू टोना कर कर बहुत हि हारो।
मिरांने बस कियो गिरधारो सांवरो सूरत प्यारो॥

३६

हूँ आतुर आयो सखी बधियां बागे दोर।
अलबेलिया रिझवार रो अजब कृकणरो तोर॥
छिपि छानि आयो जरा मिल कर री अलगार।
अब रसिया जुबराजजू कर राखूं उरहार॥

३७

ए सखी सावन बीते जात मोरे पियाने न पूछी बात।
बरषत मे चपला चमकत है जियरा डरत अधरात॥
सांवर रङ्ग पिया परदेश छाए उन विन कछु न सुहात॥

३८

ननदीरा बीरा काँई काँई कहे समझावां।
पोढ़न दो जी म्हांने अब रङ्गरसिया
कांई थांरे मनमें आई॥

३९

उनोदो छांजो काँजो कांई जगाई जगाई हो राज।
आलस आवे जिय अकुलावे नाहक नींद गंवाई हो॥

४०

हो मारुड़ाने थाँरो चाह घणो छे
उठ चल वेग पधारो मारो मारवण मारू।
मैं तो थांरो दासो जनम जनमरो
आज जमारो धणी छे॥

४१

जाओ जो जाओ उनोदीरे सायबां।
राजकुँवरजो थांरे पग परशां और देशां राम दुहाई॥

४२

म्हांरो मारुड़ो किण विध घें वस कीनो ।
एक तो पियालो दूसरो पियालो
तीसरो पियालो मर दीनो ॥

४३

छकिया राजींद आयो है मारवण ।
देख सखी आवनरो सोभा
कांई करां नेछावर हे मारवण ॥

४४

नैणां रा सवादी थांरे आंगण जभो सैन करे छे ।
थांरा मनरो बात बोन रङ्ग उनरा
मनरो वात मैं न थामे हो राजोजो ॥

४५

अमलांरा माता म्हांरे डेरे आवो जो राज ।
डगमगता महल पधारो खंमा खंमा करलेशां ॥

४६

आजो पगड़े पावणां ।
थे कंथा अलगा क्यों आगा आवणां ॥

४७

पापीरे पपिहरारे पियाको बोलो न बोल ।
सुन पावेगो कोइ विरहनो डारेगो चोंच मरोर ॥
डारो चोंच पपोहरारे डारे ऊपर कालो लोन ।
पिउ मेरे मैं पीउकोरो तू पिय कहै सो कोन ।
थारो शब्द सहामणोरे जे पिया मिले आज
चोंच मड़ाऊं सोवनो तू मेरो सिरताज ॥

४८

रसिया राज बांको है हो आंगन सैन बोलावै ।
कैसे आंउ ढिग उनरे सजनो म्हांरो ननदल जागे आवै ॥

४९

मैं कैसे आऊं थारे ढिग राज वो
कांई रुणझुण बिछुवा बाजे ।
पायल मोरी रुणझुण बाजे सास ननदको लाज वे ॥

५०

हो रङ्ग सायबां रङ्ग छे थांरो बातड़ियांमें रङ्ग छे ।
आय बनो मतवालो सायबां कौन कहै यह ढङ्ग छे ॥

५१

हो तोरे सङ्ग कैसे के जइहें प्यारे मोरे
चरचा करेंगे यह चबाउ लोग नगरके ॥
अब तुम जावो आपन मन्दिर कछु जिय न धरो येहो ।
चन्द्र छिपे आय अङ्क भर लेऊंगो पायन परके ॥

५२

रूड़ो गोरलरा धजदार लोयन अणियाला ।
कैलासवासो आनन्दनिवासो मोह्यो शिव सरदार ॥
जिनने शेष सब जग रटत है
महिमा कहियत बारंवार ।
कर पूजन प्यारी राधे पायो व्रजनिध सां भरतार ॥

५३

लोयण लजोणा लागाजो राज आज यामें
ओरों रीझ झक राज लोयण लजोणा ।
निशमारो प्यारो किन मोह्या
सांचो कहो क्यों न करो जो तुजक ॥
काजल लेख पोक अत राजे
आठ पहर म्हांरो उनारो अजक ।
ठगनो ठग लियो है व्रजनिधकों
अधर मधुर रो करो रो गजक ॥

५४

आया छो जो मिजमान मोहन उदमाद्याजो म्हांरे ।
केसरिया मौठा करोरी कसूमा
फूलपान ल्यावो अतरदान ॥
राधाने महलां पहुंचावो जहां
मोहन सुन्दर श्याम सुजान ।
पूजन करवां टोरी बंधाई गौरलरो सनमान ॥
जनम जनम व्रजनिध वर दीजे ए मागूं वरदान ॥

५५

आछो बहंकाइ थांरो वांसरो हो राज ।
अधरन लाग गले रस छाको
आप मरण जग हांस रो हो राज ।

५६

आई सावन तीज सहेली म्हांरी।
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे सरस चमके वीज।
डुगरियां हरियाला डुबाजी काईं
बोलरे पपीहा पिउ पीउ उचारी॥
घोड़लारा असवारणे न जताकणरो वाड म्हांरे तो
महल पधारशोजो प्रतापसिंह महाराज॥

५७

रसिक विहारो जीने फेर परणास्यां।
कुंवरी किशोरीजी रसिक अलबेला मोहन सोहन है
वरजोरी हरख निरख हरखास्यां॥

५८

थांसो म्हांने तोज रमणरो चाव।
थें अलबेला रसिया मोहन सावन मास सुहाव॥

५९

प्यारा मीठे बोलना ढोलना
थें मानें प्यारा लागो अनमोलना।
म्हांने बोलाया थें नहीं आया
कांईं करो छे यह घोलना॥

६०

चांदणियरा खंभा विलंब्या।
उभख झरोखे झांकियाजो कांईं
होजो छोटी लाड़ी जोरा सूरज जग्या॥

६१

दारुड़ीरा चालो है सायबां
लाड़ीजोरे म्हांरो है मन्दरो ये राज।
राजीन्द्र बकस उठ कलालण धन बकसे खङ्गवाड़ो॥

६२

हो म्हांरा राजाजी म्हांने थांरो
छब प्यारो लागे छे हो राज।
रूड़ी रूड़ी छब थांरो म्हांने ओजो
सुडारो जोत जगेछे साज॥

६३

या दिन मङ्गलको आयो छे आयो छे
आयो म्हांरा साथिडा हो आज।
हांजी म्हें तो घणाघण केल करेस्यां म्हांरा राज
याही म्हांरा मन मणने भायो छे काज या०॥

६४

म्हांरे आजोजी रसिया म्हांरे अमरांरा राता
माता आजोजी मैं तो थाँको छब पर बल बल जाज्यो।
वंशी में तान सुनाजो म्हांको थाँको प्रीत जगत
सब जाने छे अब जित लोग हंसाज्यो॥
रसिक गोबिन्द अभिराम श्याम घन
तन रो तपत बुझाज्यो॥

६५

जावाद्यो विहारी जीसों कीब वहांसे बोले।
वो तो रे अन्तर कपटी कारो गुच्छ गाँठ नहीं खोले॥
मद मतवारो कुञ्जन मांहो घर घर भटकत डोले॥
व्रजनिध थांरो दासी वेस्यां छतियांरो छेद न छोले॥

६६

नैणां सुख भेज्यो है विहारो जीने आलो।
कोयल जो कुल लावत राधे वदत न घरो दोय ठालो॥
शीतल अङ्ग सुरत तेरो चंदा लाग रह्यो थांरो घालो।
सब दुख मेट भेंट व्रजनिधजो छाँड़ कपट सिरतालो॥

६७

सुन ननदल म्हांरो थांरा वीरानें समझाय।
ले म्हांरो चीर कदम पर बैठ्यो
अब कहा करूं मेरी माय॥
आट पहर म्हांरे लारंड़ लाग्यो मन्द मन्द मुसक्याय॥
व्रजनिध म्हारो चीर दे डारो ठाड़ो जमुना माय॥

६८

हांजी सारी रैन आँखडल्यां बीच बीती।
आवन कहे गए अजहूं न आए
कौन भरमाया थांनेदू तो॥

जिनरा घरां पधाख्यां उमंगसों
सो तो निचिंतो होय सोतो।
बखतावर साँचा ब्रजनिधजो जाग्या थें किंतर पछोतो॥

६८

मोरा मैलांड़े रङ्ग छायो।
कोट भाण बाँके महलाँ दोसे आनंद अत हो उमायो॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक वेद पुराणमें गायो।
बखतावर मीरां बड़ भागी घर बैठे वर पायो॥

७०

मन रे तें भज ले सारङ्ग पाण।
हो गए बड़े राव और राणा रह गए नाम निसाण॥
यों तन फूटो पींजरोरे चञ्चल पञ्छो प्राण।
उड़ गयो कोई अचरज नाहीं रहे सोइ अचरज जाण॥
खास जात और आत है देखो याको कौन ठिकाण॥
एक दिवस यों चल्यो जायगो रोक न सके कोइ आण।
जब लग सांस शरीरमें रे तबलग कर ले कल्याण॥
माणक ताको सुमरण कर ले आपत श्रीभगवाण॥

७१

बैरन बंशी फेर बाजी म्हे काँई जानीं राज।
मैं सोवत ही अपनें मन्दर श्रवणन आन धरी
तजे घरके काज अब मैं का०॥

७२

लगन लगी है श्याम पियारे।
अब कैसे यह दुरावत हो जो ब्रजमोहन उजियारे॥
हौं दृत कहत तिहारे ई गुण निशदिन सांझ सवारे।
आनन्द घन इह मुरली तिहारो ए सब भेद उचारे॥

७३

म्हांने झालो दियो राज।
श्याम सुन्दर रतनारे नैणां मोह लई ब्रजराज॥
मनमोहन मन मोह लियो छे
तज दइ है सब लोक लाज।
रसिकविहारी बनवारी गिरधारी थें म्हांको सिरताज॥

७४

नित हो चितारां चितये विहारी थांने।
थांके नैण सो म्हें रस छाक्या
रोझरोझ कर म्हांरे मन माने॥
आन कान सों म्हांने लजाने
आन पख्या मैं तो राजरे पाने।
ब्रजनिध थांने जगत पछाने
क्यों कर रहस्यां मैं तो सबके छाने॥

देश-सोरठ

मुरली श्याम कहां धो पाई।
करत नहीं अधरनतें न्यारो कहा ठगोरी लाई॥
एसो दोठ मिलत ही हो गइ उनहोके मन भाई।
हम देखत वह पीवत सुधारस देखोरो अधकाई॥
कहा भयो मुंह लागो हरिके बचनन लियो रिझाई।
सूर श्यामकूं विवस करावत देखो री अधिकाई॥

२

जनकपुर आए रघुपत राज।
विश्वामित्र को यज्ञ सुधाख्यो सब विध सारे काज॥
कुण्डल किरीट पीताम्बर बागो नीके रह्यो विराज।
तोख्यो धनुष तिनका ज्यों रघुपति
दिन दूलह महाराज॥
दीनो जनक कनक मुक्ताहल पाटम्बर गजबाज।
दीजे दान भक्त नीछावर राम गरीब निवाज॥

१

राधे दे वृन्दावन वास।
महामधुर रसकेलि माधुरी फुरे याही अनियास॥
हरी खरो सुख मरो निकुञ्जन नव नव सुखद विलास
जमुनातीर ललित बंशी धुन अदभुत अमी निवास॥
कृपा रमडी उमड़ी आनन्द घन वेगि पूरीए आस॥

सोरठ

देवकी देखी दुःखभरी।
कालिन्द्रीके सुघट घाट पर बैठी सीसघर कलस न गई
जशोदा रानी ले गगरी डगरी॥

की घर सास ननद दुख दारुन के पोसों झगरो ।
ना घर सास ननद दुख दारुन ना पिय सों झगरो ॥
सात सुघन मेरे कंस पछाड़े आठ वो गरब भरो ।
तुमरे सुतकों पोषपाल हों हम चाड़े सो करो ।
सूर श्याम हरि जन्म लियो है कंसहिं विपत परो ॥

२

कहांके पथिक कहां कोनोरे गवन ।
कौन गांवके ठांवके बासो
केह कारन तुम तजो है भवन ॥
उत्तर दिसा एक नगर अयोध्या
नृप दसरथ वसे दिसा है तवन ।
पिताके वचन सुनि वनकों सिधारे
इस कारण हम तजो है सवन ॥
सीताके वचन सुनि सखी कहे पुनि पुनि
दोउ पथिक प्रिय तेरो है कवन ।
सिय मुसकाइ कहे मधुर वचन इमि
गोरे हैं देवर स्वामी सांवरे तवन ॥
कर जोरि सखी कहे जानकीसे बतियां
कबहूँ के यह मग करोगी अवन ।
तुलसी प्रभु विन भवन न भावै
मेरो मन हर लीनो जानकीरवन ॥

३

साधो मैं वैरागन हरकी ।
भूषण वस्तर सबही हम त्यागी खान पान विसरानो
ए व्रजवासी कहत बावरी मैं दासी गिरधरकी ॥
जधो जो तुम जावो द्वारका विपत कहो गोपियनकी ।
जैसे जल विन मीन ज्यों तड़पे
सो गत भई सखियनकी ॥
पात पात वृन्दावन ढूंढ़यो ढूंढ़ फिरी व्रज घरकी ।
आप तो जाय द्वारका छाए पीर मोटी विरहनकी ॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर मैं दासी गिरधरकी ।

४

प्रभु मेरे ज्यों राखो त्यों रहिए ।
तुम बिन नाथ अनाथकों को है
कासों विथा यह कहिए ॥
निरबलके बल और न कोई सुन सुन सबकी सहिए ।
दीनदयाल अखिल प्रतिपालक याही चाव ललचइए ॥
प्रेम लक्षन भक्तनपै कृपा कर नेक माधुरो कहिए ॥
केवलराम वृन्दावन जीवन सतसङ्गन सुख लहिए ॥

५

सब तज भज हो नन्द कुमार ।
और मजे तेरो काज न सर है मिटे न जम जञ्जार ॥
जहिं जहिं जनम लियो बहुविधि सों
जुरे अघनके भार ।
ते काटनकूं समरथ हरि कों तीछन नाम कुठार ॥
वेद पुराण भागवत गीता सब कों यह व्रत सार ।
भवसमुद्र पद नौका तुम विन कौन उतारे पार ॥
इह जिय जान ताहि छिन भज ले बीते जात असार ।
सूरदास इह समय पायबो दुर्लभ सब संसार ॥

६

मैं वारो जाऊंरे सांवरिया तेरे वारना हो ।
माता पिताकी बन्ध छुटाई नन्दरायको धेन चराई ।
जशोदा भरम भुलानो झूलो पालना हो ॥
प्रगट भए हैं व्रजमें जबते सबकों दुःख गयो है तबते
कूद परे कालीदह विषधर नाथना हो ।
अघा बघा बहु असुर संघारे कंसरायके केस उपारे
जमला अरजुन और पूतना तारना हो ॥
इन्द्र जो कोप कियो व्रज ऊपर कोइ न रक्षकहार प्रतक्षक
कृपा करी नख ऊपर गिरिवर धारनाहो ॥

७

देखो है बिहारोजी म्हांसे नेह निभायो ।
बहुत दिनारो प्रीत हमारो तोरत दरद न आयो ॥
तन मन धन सब होमें अरप्यो बहुतक भांत रिझायो ।
व्रजनिधजो सरवस मैं दीनो वां म्हांसे कपट जनायो ॥

८

साँवरिया जो राज अब तो भूले नाहीं बने ।
विपत बिदारन गिरधर तुम हो सुखमें मिलत घने ॥

मैं तो मूढ़ कछू नहीं जानूं तुम विन कौन गिने ।
अबको वेर कृपा करो स्वामी व्रजनिध सरस तने ॥

९

जो रसिया आज अमलांरा राता माता म्हारि आज्यो ।
मैं तो थांकी कब घर बल बल जावां बंशीमें तान सुनाज्यो ॥
म्हांको थांको प्रीत जगत सब जाने छे
अब जिन लोग हंसाज्यो ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन
तनरो तपन बुझाज्यो ॥

१०

ऊधो रे मनकी मनमें रही ।
आपतो जाय द्वारका विरम रहे हम सों कछु न कही ॥
उत मथुरा इत गोकुल नगरी जमुना बीच बही ॥
एक समै हरि आए हते जो हौं थी मथत दही ॥
वे तो डार डारके भंवरा नई नई बास लही ।
सूर श्याम सो यों जाय कहियो वेग मिलो अबही ॥

११

ऊधो हरिसे कहियो जाय तुम तनक हमारी बात ।
सोतन हो गई नींद हमारी सुनियो अचरज बास ॥
नैन किवारी खोल साँवरी गई तिहारे सात ॥

१२

अँखियां बहुत दुखारी ऊधो और सकल अङ्गनते मेरी ।
अधिक सिरात मिरात न कबहूं कोटि जतन कर हारी ॥
एकटक मग लखि निमिष न लागे विथा भई भारी ।
भर गई विरह वयार माधोको एकटक रहत उघारी ॥
अलि लाए गुरुज्ञान सलाका काढ़े के ए तिहारी ।
सूर सुअञ्जन आंज रूपरस आरति हरो हमारी ॥

१३

विनती सुनो एक मोरीरे ऊधो ।
विन देखे मोहे कल न परत है खास जात है रूंधो ॥
वेग ले आवो श्याम सुन्दर कों मिले तो दरस कहूंधो ।
कृष्णानन्द प्रभु आन मिलावो बोलत काहे न सूधो ॥

१४

पियारी तेरे कजरारे नैन रङ्गीले ।
निरखत लगत मदन रितु राते चञ्चल चपल कबोले ॥
मोहन मेरे ललित सुखवारे भृङ्ग वरण नकसोले ।
ख्याल खुशाल विलोकन निशदिन
जोवन उमंग उबोले ॥

१५

सहज ही आए घर जदुराई ।
बारी वेस अङ्ग अङ्ग सोभा रूप मोहनी छाई ॥
ललित नैन रसभरी विलोकन चितवन चित उरझाई ।
विवस होय रही लटू भटूरी सुरझे ना सुरझाई ॥
मृदु मुसकानि प्राण कीने वस जोबन नव मन भाई ।
निरख रही जबही लिपटानी ख्याल खुशाल रंगाई ॥

१६

मृदु मुसकात किशोर किशोरी ।
कुसुमकुञ्ज मध अत रसमोनि प्रेम प्रवीण लखोरी ॥
अंसन पर भुज दिए विलोकत
उरझावत मन कर वरजोरी ।
ललित खुशाल ख्याल व्रजमोहन
विवस सैन चितचोरी ॥

१७

दरस दीजे जो पियारे मोरे श्यामजो ।
जैसे व्रजबालन को दीने सरद रासमें वसकर लीने
तैसो देखावो कुंव धामजो ॥
जेही भेष गिरिराज उठायो ग्वाल ग्वालनी सकल बचायो
किए रूप बाहर से सब अभिरामजो ॥
सोसरूप जो माखन खायो नवल ग्वालनी छीन छिनायो
सगरे सखा सिखायो पूरण कामजो ॥
शिव ब्रह्मा सब जाकूं धावत सारद नारद गुणको गावत
वोही खुशाल मिलावो सुख विसरामजो ॥

१८

मान भरो प्यारी मान ले रो मान ले ।
ललित कुञ्ज मध लावत लावत हित पहंचान ले ॥
विन दरसन मन धीर धरत ना
याही बात जिय जान ले ।
करिए ख्याल खुशाल श्याम मिल प्रेम प्रीत पहंचान ले ॥

१९

अनोखे पिया उमड़ घुमड़ घन आए।
हिये लगाय लेहौं व्रजमोहन मदन उमंग उमंगाए॥
दामिनी दमकत पवन मोयरो मोरन शोर मचाये॥
ख्याल खुशाल बज्यो रोकत है कोयल कूक सुनाए॥

२०

प्यारो छब छाई सइयां नन्दकिशोर।
नैन उनीदे बिलास रासरस सरस नेह रङ्ग बोर॥
रित रसभरे नैन लख सकुचत मैन फिरत अहुँ ओर।
मृदु मुसकान मोहनी चितवन चित लेत चित चोर॥
राजत भूषण वसन अङ्ग अङ्ग सोभा स्यामल गोर।
ख्याल खुशाल करत निशवासर कुञ्ज निकुञ्जन ठोर॥

२१

छुटत न नैन छुटाए लगीरो
श्यामसुन्दर सुकबार नन्दवारे सौं।
चितवन रूप मोहनी मोहन प्रेम प्रीत उरझाए॥
करिए ख्याल खुशाल कुञ्जनमें ज्यों ज्यों रुच मन भाए॥

२२

वंशीवट बजी हो वंशी श्याम राधे राधे राधे नाम।
छाय रही छब नन्दनन्दनकी नव निकुञ्ज अभिराम॥
ललित त्रिभङ्गी ठाढो लतन तरे रूपरास सुखधाम।
झिलमिल श्रीवृषभाननन्दनी करिए पूरण काम॥

२३

सखी छब छाई हो नन्दकिशोर।
नवल वेस मनमोहनी चितवन नैनन में रंग जोर॥
मोह लियो मन माधुरी बोलन ठाड़ोरो साँकरी खोर।
ख्याल खुशाल भरे मुसकावत नए नेह रङ्ग बोर॥

२४

मांने प्यारो लागे छे जी राजरो मरोर।
सोस मुकट रतनांसो जरियो कुण्डल सुरज करोर॥
सांवरी सूरत अत हो सुन्दर नैनन चितके चोर।
व्रजजन मोहन तिहारे वदन पर वारो तन मन मोर॥

२५

कुञ्ज पधारोजो रङ्गभरी रैन।
रङ्गभरो दुलहन रङ्गभरे पिय श्यामसुन्दर सुख दैन॥
रंगभरो जोरी यह चिरञ्जो रंग भस्यो उलहत मैन॥
रसिक विहारो प्यारो दोउ मिलि करो रङ्ग सुख चैन॥

२६

आधी रात चाँदनी छाय रही।
अति सुकुमारी लड़ेती प्यारी प्रीतम उर लपटाय रही॥
मनसो मन नैनन सों नैना तन सो तन उरझाय रही।
नागरिया नागर दोउ राजत लागत मृदु मुसकाय रही॥

२७

पिया विन नागन कारी रात।
कहूं जामन होत जुन्हैया दस उलटो ही जात॥
जन्त्र न फुरत मन्त्र नहीं लागत पीत सिरानो जात।
सूर श्याम विन विकल विरहनी मुरमुर लहरां खात॥

२८

वृन्दावनवासी कब मिलहो हरि
हम कब हों हैं व्रजवासी।
ठाकुर म्हांरे नन्दकिशोर हैं ठाकुरानी राधासी॥
सुनियोरी मोरी सखी सयानी हरि वंशी कर दासी।
वंशीवटकी सीतल छइयां सुभग बहै जमुनासी॥
शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं
कर मौजत कामलासी।
इतनी आस सूरकी पूजो वृन्दाविपिन विलासी॥

२९

हों नाहक बदनाम भई।
देखन दोष लगावत उपजो व्रजमें रीत नई॥
श्रवण सुनै न लखे कबहूं सखी मिलत कबहुं नहीं।
दीनबन्धु उर लागत मोहन तब कहतो न गई॥

३०

निरतत नट नागर जमुना तट चटक मटक और
रपट झपट सङ्गीत गत ले ता थेई ता तता थेई ता।

दिग् दिग् थों थों जग जगताँ जगतां झिनक झिनक
झिन नननन रासविलास सुन्दर गत लेई ॥
ता थुंगा ता ता ता थुंगा धिरक धिरक
क्रकी थिरर थिरर गड़ गड़ धां धां तान लेई ।
ता ता धो धी थु थुन्ना किट था दिटि था धा कड़
तक तक धम कट तक गिदि गन धा धा धा धेई ॥
धा ताड़ धा धा धो धा धा धा बजत मृदङ्ग रासमण्डल मध
राग सागर सुरलोसें गावत उपज लेत नई नई ॥

३१

लङ्कामे फिर गई राम दुहाई ।
कहत मन्दोदर सुन पिय रावन तें क्यों कुबुध कमाई ॥
एसी कुमत करी पिय तुम जो सीता हरी है पराई ।
तू क्या जाने मेरो पराक्रम उनको करे बड़ाई ॥
भुवमन्दिरमें पकड़ मंगाऊं वे तपसी दोनो भाई ।
बीस भुजा दस सीस हमारे कुम्भकरन सा भाई ॥
जामवन्तसे जोधा जिनके अङ्गदसे बलदाई ।
हनूमानसे पायक जिनके छिनमें लङ्क जराई ॥
सरब सोनेकी रची है लङ्का सो जोजन जल खाई ।
तुलसिदास प्रभुको गतलीला अवगत लखी न जाई ॥

३२

एसे रणेमें रामजी जीते ।
गहे कर धनुष कोप चढ़ धाए मार रावण लिए सीते ॥
दोहु दिश जुद्ध भए हैं भारी हनूमानजी लङ्का जारी ।
गदा खड्ग बरछी फरसी सो ढ़ाय दई लंक मोते ॥
गरजत मेघा कुम्भकरणसें भारते भारी बीते ॥
एक लख पुत्र सवा लख नाती जूझ मरे हैं अरीते ।
लङ्काराज भभीषण दीनो राम सीया ले आए
सुर नर मुनि मन आनन्द मयो है मङ्गल भये मन चीते ॥
भरत मिले शत्रुघन प्रफुलित मन
राम लक्ष्मन दरसन प्रीते ॥
जैजैकार मयो अवधमें रागरङ्ग मन इंछा होते ॥

३३

लगन लगी है श्याम पियारे ।

अब कैसे यह दुराव रहत है व्रजमोहन उजियारे ॥
होइ सेवक तिहारे गुण तें मडराते चोष मतवारे ।
आनन्दघन इह मुरली तिहारी ए सब भेद उचारे ॥

३४

या जग भरम भुलाना रे साधो ।
रामनामका सुमरन छोड़ी माया हाथ बिकाना रे० ॥
धन जोबन मायाके मदमें निशदिन रहत दिवाना रे० ।
मात पिता भाई सुत वनिता उनके रस लपटाना रे० ॥
कहे नानक कोटनमें काइ गुरु मुख ह्वै पहंचाना रे० ॥

३५

राधावर मान लीजो राज
गरीबांरो याहो विनती हो राज ।
अरज करा छाँ चरण लगा छाँ दरस दान मोहिं दीजो ॥
मैं तो घाँरो दासो जनम जनमरो कृपा राबरो कीजो ।
अली किशोरी प्यारीजीरो जोबन रूप रस पीजो ॥

३६

राधा म्हांरो चंपावरनो राज ।
जोन्हे कुञ्जविहारी से वर रोसकोंरा सिरताज ॥
अचल सिंघासन छत्र चँवर ढुरे
अलिजन सकल समाज ।
अली किशोरी कंशी निरखत सोजा सकल सुकाज ॥

३७

आछी तो बजाई घांने बाँयरी हो राज ।
अधरन लागी रस वरसे छे
और को मरन याको हाँसरी हो राज ॥

३८

म्हें नहीं जाणां कपटी है ये रो सोतनरे सन गाँसरो ।
व्रजनिध भेद भेद अण छेद्यो परो रोम रोममें फाँसरो

३९

है रो मा नन्दको गुमानी म्हांरे मनड़े वस्यो ।
गहे द्रुमडार कदमको ठाड़ो
मृदु मुसक्याय म्हांरो ओर हंस्यो ॥

पीताम्बर कट काछिनी काछे
रतन जटित माथे मुकट कस्यो ।
मोरांके प्रभु गिरधर नागर
निरख वदन म्हांरो मनडो फंस्यो ॥

४०

आवत री डफ बाजत गावत
मोहन सङ्ग चाचर व्रज खोरी ।
गोपी मिल सज मारग रोकें रंग अबीर घट झोरी ॥
गारी केवल राम श्यामको छल करि धरिय निहोरी ॥
लच्छनदास लाय सुख लीजे हंस लीजे पट छोरी ॥

४१

म्हांने झालो दियो राज ।
श्यामसुन्दर रतनाले नैना में काँई कोनो राज ॥

४२

व्रजचन्दजू पियारे जीवन जरी हमारो ।
गल मोतियनदी माला सोहै तिरछो चितवन न्यारो ॥
सिर बादनू चोरा कलगी सोहत है लटकारी ।
कुण्डलको सोभा निरखत झाँको दई विहारो ॥
सब निरखत ही मोह लई सुध बुध गई विसारो ।
अलीरतन छब देखत ही बार बार बलिहारो ॥

४३

सो सो बार तोहे समझायो ।
गोरस तो घर ही बहुतेरो काहेक छुवत परायो ॥
तनक दहीके कारण कान्हा माखन चोर कहायो ॥
एक समै एक राक्षस आयो करत है आपन चायो ।
गोपी ग्वाल गउनके पाछे विधना तोहे बचायो ॥
जन्म लियो वसुदेव देव घर मथुरातें व्रज आयो ॥
भाग बड़े हैं नन्द बबाके तिनको पुत्र कहायो ॥
बूड़तें व्रज राख लियो है गोबर्द्धन कर लायो ॥
जै जै करत देव सब ठाड़े सुक्रत आड़े आयो ॥
वरजो री वरजे नहीं मानत करत है आपन चायो ॥
सूरदास भक्तनके पाछे विष्णुरूप धर आयो ॥

४४

राखो पति गिरिवर गिरधारो ।
अब तो नाथ रह्यो कछु नाहीं
उघस्यो माथ अनाथ पुकारो ॥
रथविहीन पांडवसुत डोले
भीम गदा कर सों महि डारो ॥
थाको पैज प्रबल पारथको
हाथ धरनि घर हिम्मत हारो ॥
बैठे सूर सुभाय सुमट सब भीष्म करण द्रोण व्रतधारो ॥
कहे न सकत कोई बात परसप
इन पतितन मेरो अपत बिचारो ॥
लाज गमाय दास दासनको
फिर का करिहो आन मुरारो ॥
सूरदास लज्जा दासीको फिर पकतैहो देख उघारो ॥

४५

हों तो थाकी ढाढ़न छूं जो राज ।
कुँवर जनम सुन हरख हुआ ए सुन व्रजपत महाराज ॥
मनवाञ्छित फल लेश्यां जो अब
मैं तो यो दिन पायो छे आज ॥
प्रगट हुवा अभिराम श्यामघन
रसिक गोबिन्द सिरताज ।

४६

नन्दजोके घरके ढाढ़ो आयो ।
जनम सुनत नन्दलाल श्यामको आन सोहलो गायो ॥
श्रीव्रजपत महाराज रीझ कर दीनो दान सवायो ।
रसिक गोविन्दको बाँह पकरके निज व्रजवास वसायो ॥

४७

चिरजीवी बेटो भानको ।
सुन्दर साधा रूप आगधा मोहन जीवन प्रानको ॥
लटकि लटकि घग धरत अवनि पर
गजगति मदन गुमानको ।
रासविहारनि नैन निहारनि
अलि जोय कृष्ण सुखदानको ।

४८

दुलहनो प्यारो श्रीराधे दूलह नन्दकुमार ।
सारो सुरङ्ग पोत पटवारो राजत अदभुत रूप अपार ॥
गोरो श्याम मनोहर जोरी सुन्दर अति सुकुमार ।
लच्छनदास जुगल छब ऊपर नोछावर रति मार ॥

४९

जालिम नैहरा बड़ो जगमें माइरो वरवस मन हीं हरे ।
निरखत ही बस कोनो साँवरो तबतें कल न परे ॥
छिन छिन छीन होत अङ्ग मेरे मनतें नाहीं टरे ।
लच्छनदास दमा नैननको अहनिशि नीर झरे ॥

५०

पपिहरा बोलइरे रटत रैन दिन खातो सलिल सनेह ।
मोत कठिन घनश्याम प्रात वाके
बूँदन माहिं क्यों नाहिं वर बसत मेह ॥
रसनाथ कित नथकत कण्ठस्वर थकत न दुबरो देह ।
लच्छनदास धन्य प्रण वाकों
लगन न पावत रहत संभारे लगन प्रेमके ठेह ।

५१

मन्द मन्द हँसत लाडली नवल श्याम
रजनो जुगल जाम ठाढे हैं कदम तरे ।
कमल नैन मधुर बैन बोलत परस्पर रसभरो बतियाँ
सुखमें मगन दोउ उर लगाय बाँह गरे ॥
रीझि भीजि हाव भाव दुइंवोर चित चाव
लाज तोरि मधुर मधुर गावत अति प्रेम भरे ॥
लछनदास रसविलास अधिक सनेह बाढ्यो
चीर गहे लालजू प्रियाजू पीतपट धरे ॥

५२

पलक न लागीरी मेरो सुन आली
उन विन देखे घरी पल छिन अब रैन दिनेरी ।
कल न परत सोवत जागत मोहिं कोटि करो
विसरे नहीं मनतें लाज रहे घरने गुरुजनको घेरो ॥
निपट विसाख्यो निरदई मोहन कबहुं न सुरति करत
इत माहीं भूलि न आवत फेरो ।
लच्छनदास इतो गुण मान्यो वेगि देखाबो प्यारो
विन ही दाम लियो सो को मानो चेरो ॥

५३

मन रे सुनि पुराण क्या गीता ।
मोह नगरको गैल न छाँड्यो काम अमल मद पीता ॥
सुत वित नार बन्धुके कारण पचि पचि जनम वितीता ॥
पढ़ि पढ़ि ग्रन्थ कहाए पंडित लोभ अधिक मन जीता ॥
तिरथन गए दिवस निशि श्रम करि
सह्यो धूप अरु सीता ॥
अहङ्कार मच्छरको तनपर लोंदों फिर रस लोता ॥
मिथ्या दम्भ कपट नहिं त्यागो पाठ करत नित गीता ।
लछनदास सब थाले खोयो हरिको कियो न मीता ॥

देश—सोरठ

म्हांरे हिरदे लिख्यो जो हरिनाम अब नाहीं विसरूं
मैं तो हिरदे लिख्यो जो गोपाल ।
हाथी घोड़ा बहो घणा माया केर न पार
राज तजूं चितोड़को गामड़ी है असो हजार अब० ॥
साध हमारो आतमामें साधनको देह ।
रोम रोममें रम रह्या जों बादरमें मेह अब० ॥
रातो मातो हरिनामको बांध भक्तको मोर ।
राम अमल साखी फिरे धन मोरा राठोर ॥
एक आड़ो गुरु गोविन्द खड़ा एक आड़ो सब संसार ।
कैसे तोड़ रामसों मारो मो मोरो भरतार ॥
संसारो निद्रा करे रूठो सब परवार ।
कुल सारोद लजाइयो मोरां बाई बहे अकरार ॥
भक्तहीन पापो घणा राणांके दरबार ।
केतो विषरा प्याला पायदो के डालो कण्ठहार ॥
राणेंजो विषरा प्याला मोकल्या दीजो मोरांरे हाथ ।
मैं तो चरणामृत कर पी गई अब थें जाणों म्हांरा नाथ ॥
मीरां विषका प्याला पी गई सोतो खूंटो तान ।
म्हांरो दरद दिवाणा सांवरो
म्हांने दोड़ जगावे लो आन ॥

गरुड़ चढ़ हरि अब आए मीरांके पास ।
आनन्द तूर बजायके पूरो मनको आस ॥
राणां मो पर कोपियो म्हांरो तक तक सेज ।
लाज लागे छे म्हांको दीजो पीहर भेज ॥
मीरां महलमें जतरी राणे पकड्यो हात ।
हतले वारो नातरो परत न मानूं बात ॥
मीरां रथ बहल सिङ्गार के ऊंटां कसिया थात ।
डावो मेलयो मेरतो पहले पोखर जात ॥
राणा साथ जो मोकलयो जाज्यो मीरांरी ओर ।
कुलकी तारण अस्तरो सुरड़ चली राठोर ॥
राणा मो पर कोपिय रती न राख्यो मोद ।
ले जाती बैकुण्ठमें समझी नाहिं सिसोद ॥
मीरां मुक्त दुहेलड़ी रामकी जैसी खांड़ेकी धार ।
कोइ सन्तजन बिरला उतरे भवके पार ॥
मीरांने प्रभु गिरिधर मिल्यो नागर नन्दकिशोर ।
तन मन धन सब अरपिया चरण कमलकी ओर ॥

सोरठ

हमारो सुध ज्यों जानों त्यों लीजो ।
तुम विन मोरे और न कोई कृपा रावरो कीजो ॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा यह तन पल पल छीजो ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर
मिल बिछरन नहीं कीजो ॥

२

हे मा बड़ी बड़ी अंखियन वारो
सांवरो मोतन हेरत हंसिके ।
भौंहे कमान बान वाके लोचन मारत हियरे कसिके ॥
जतन करो जन्तर लिखो बांधो ओषध लाऊं घसिके ।
ज्यों तोको कछु और विथा हो नाहिं न मेरो वसिके ॥
कौन जतन करों मोरी आलो चन्दन लाऊं घसिके ।
जन्तर मन्तर जादू टोना माधुरी मूरत वसिके ॥
सांवरो सूरत आन मिलावो ठाढ़ी रहूं मैं हंसिके ।
रेजा रेजा भयो करेजा अन्दर देखो धंसिके ॥
मीरां तो गिरिधर विन देखे कैसे रहे घर वसिके ॥

३

जावा दे गुमानी कृष्ण म्हांरे घर काम छे ।
थें हों लङ्गर नन्दमहरके व्रज वरसाने म्हांरो गाम छे ॥
जानो नहीं तो पूंछ लीजो श्रीराधा म्हांरो नाम छे ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर नाम थांको बदनाम छे ॥

४

घर आवो जी सजन मिठबोले ।
तेरे तो कारण सब हीं तजो है काजर तिलक तमोले ॥
जब सुध आवत विरह सतावत
छिन मासा छिन तोले ।
मीरां तो गिरिधर विन देखे कर धर रही कपोले ॥

५

राणां जी सांवरे रङ्ग राची ।
कोइ निरखत कोइ हरषत है जो
कोइ कोइ करत है हांसी कोइ सांची ।
ताल मृदङ्ग बजे मन्दिरमें हों हरि आगे नांचो ॥
मीरां दासी गिरिधर जूको जनम जनमको जांची ॥

६

आवो जी गिरिधारी जी थांसु म्हें बोले ।
थें तो म्हांरा जनम जनमरा सङ्गी
थांरे लारां लारां सङ्गमें डोले ॥
आद अन्त तन मन धन मेरे आनन्द करां कलोले ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर आन मिलो अनमोले ॥

७

मोरे प्यारे गिरिवरधारीजी दासी क्यों विसार डारी ।
द्रोपदीकी लाज राखी सब दुखसों निवारी ॥
प्रहलाद पेज पारी नृसिंह देहधारी ।
भीलनीके जूठे बेर खाए कछु जात न विचारी ॥
कुबजा सों नेह लाया औ गौतमकी नारि तारी ।
प्यासी फिरों दरस विन तलफों मोहे काहे विसारी ॥
मीरांको दरसन दीजे गिरिधर अपनो ओर निहारी ॥

८

मनमोहन मारू मन डोलो धुंरे।
श्यामा टे क्या न थी अलगा थइया
कालो मरखोटो नाटा मनको धुंरे॥
हवे हूं तो एटलुं घर थिए हथी नथो नीकलंजी
बड़ो म्हांरू केणो पेरे बिधुं।
नर सैयानो स्वामी साँवलियो
म्हांरे जोबडारू कामसारू सिधुं॥

९

मुरलिया बाजो जमुना तीर।
उमंग चली सांवन सलिता जों व्रज जुवतिनकी भीर॥
आहे दई निरदई मोहे रोके कैसे धरो जिय धीर।
नागरीदास प्राणपति आगे पहुँचोंगो छोड़ शरीर॥

१०

हरि छवि निरखु नैन जड़ मेरे।
तरुन तमाल श्याम सिरसोरुह
अङ्ग अङ्ग पर दुति उरझेरे।
मणिमय मुकट बिराजत माथे
उदित कोटि रवि मनहुं सवेरे॥
अलकें कुटक रहीं पग ऊपर
कच घूंघरवारे सघन घनेरे॥
भ्रकुटी कुटिल श्रवण कुण्डल चल
आनन्द इन्दु कहत सकुचेरे॥
भाल विशाल तिलक मृगमद को
कोर लजान नाशिका हेरे।
जप तप योग यज्ञ तीरथ व्रत
राम ध्यान विन लगत अंधेरे॥
लच्छनदास सन्त उर मूरत
बसत न भूलत सांझ सवेरे॥

११

सब गुण भरी हो गोरो रूप राधा।
हाव भाव कटाछन हंसि हंसि
पिय मन करत समाधा॥
अङ्ग अङ्ग गति ललित सुभायन पाई चलत अगाधा।
जब बलिहार होत मन मेरो गई विरहको बाधा॥

भूपाली—झंझौटी

दिल मेरा दरिया हुआ कैसो लहर लहराती है।
जा नहीं सकती है बाहर दिल हो में फिर जाती है॥
लाखों मगर लाखों मच्छ लाखों सरप लाखों कच्छ हैं
लाखों करोड़ों जानवर दुनिया हमें दिखलाती है।
मनसूबे केते जहाज इसमें हैं सौदागरोके जिनमें
जिन्स सबसों सब तरफकूँ आती जाती है॥
इसको चाहे थाह जो सो मरजिहोसे पावेगा।
जिसमें कवि खालिक भी लाल मणि पाती है॥
देख चारों पास यों कहा जानकीदास
जिधर तिधर हरि रङ्ग रङ्ग नजर आती है॥

कलिङ्ग

महबूब खूब गबरू दिलदार यार महरम
तेरो हुसन हवाका जाहर जहूर है॥
बंशीमें तान सुनके दिल हो गया दिवाना
मैं किसको जा सुनावों मेरा कसूर है॥
अबरू कमान कसके चश्मों के तीर तक तक
जखमी किया जिगर कूँ चकचूर चूर है।
गोविन्द रसिक सजन सुन तुजसे लगन लगी है
जो जाय या रहे वले मिलना जरूर है॥

२

इस सांवले सजन सों मिलना जरूर है।
जिसको हुसनहवाका ज़ाहर जहूर है॥
नीलेसे तन वदनमें गुणका गरूर है।
आंखोंमें आशनाई का दरियाव पूर है॥
शीरीं जुबान जिसको गोया अङ्गूर है।
खुश होके हंस मुसकानमें न्यामतसा नूर है॥
महरम है महरम दिल है साहब शहूर है।
जिसके निवाजने का मसला मशहूर है॥
इस हो सबबसे मुझको रहना हुजूर है।
जो कहे सो करना डरना कसूर है।

कहना हाल आपना भी नज़दीक दूर है ॥
रसरास उसके इश्कमें दिल चूरचूर है ॥

सरपड़दा

कीजे नजर महरकी मैं तो तुम्हारा हो चुका ।
अपने दिलो जान से मैं तो तुम्हारा हो चुका ॥
मुझमें तो कुछ ढङ्ग न रङ्ग जो पियासे मैं करूं
एक कृष्ण नामही सों काम मेरा हो चुका ।
मेरो तुम्हारो लगन है औरको मालूम क्या
जगमें तो यह शोर है ए तो तुम्हारा हो चुका ॥
टुक तो कदम दीजिए दिलकी मुराद लेनेको
जो किया किसमत लिखा सो तो मेरा हो चुका ।
कसम पिया प्यारीकी कीजे नारायनकूँ दास
ए तो गुलामान गुलाम अब तो तुम्हारा हो चुका ॥

कलिङ्ग

गोविन्द रसिक जानी सुन नन्दके गुमानी
लागी लगन पिछानी मुझको सलाह क्या है ।
पग फूंक फूंक धरना हरदम सबीसों डरना
नित इस गलीका फिरना मुझको स० ॥
मुश्किल है इश्कबाजी दिल है तुम्हीं सो राजी
तुम तो हो खुश मिजाजी मुझको स० ।
जाहर जहान यारो इतने पे बेकरारो
कुरबान बे बिहारो मुझको स० ॥
फरजन्द नन्दका है उसको अजब अदा है
बेदर्द है बेपरवा है जाने सबाब क्या है ॥
रहना सदा मगनमें मुश्ताक बे हुसन पे
जोबनको मस्ती तनमें जिसकों शराब क्या है ।
उसकी हंसीमें माई मरना है औरका हो
अब लागी आशनाई मुझको स० ॥
गोविन्द रसिक प्यारा महबूब है हमारा
महताब आफ़ताब कमल और गुलाब क्या है ॥

२

महबूब खूब इश्ककों पहंचानता नहीं ।
नसीहत भी किया उसके तईं मानता नहीं ॥
गुजरी जो दिलपे आन कोई जानता नहीं ।
हंसि गुफ्तगू मुझसे सामने ठानता नहीं ॥
गोविन्द रसिक जांको कोई जानता नहीं ।
कोई मेरा हवाल उसे बखानता नहीं ॥

सोरठ-धानी—पश्तो

जोते जो दामे मुहब्बतमें गिरफतार हुआ
जो तेरा यार हुआ ॥
तेरी उलफतके लिए अपना बिगाना गए भूल
ना हुआ खाक वसूल अब तो सूरत भी तेरी
देखना दुश्वार हुआ जो० ।
बस परी उसके तईं इश्का आजार हुआ जो० ॥
आज जाते थे जो दीवाने तेरी महफिलके
जकड़े जञ्जीरोंमें बस
जङ्गल औ बियाबांसे मरोकार हुआ जो० ।
सच है ऐसों के एसे ही सितमगार हैं हम
कर तू अब कतल हमें दिल लगाकर
मैं परो तुझसे गुनहगार हुआ जो० ॥
रातों को हम से तू छिप छिपके क्यों जातो है परी
है खबर जरी जरी सच बता दे के तेरा
किससे नया प्यार हुआ जो० ॥
जबसे देखो है तेरे हुस्नको ऐसी झलक
न लगी तबसे पलक दिले आशक हो नहीं
तुझसे गिरफ़तार हुआ जो० ॥

सोरठ

मैंने अबतक तो तेरा इश्क निबाहा
अहा खाके सौ तरहके गम ।
वले अफसोस मुझे तूने न चाहा
अहा बानिए जुलमो सितम ॥
तुझ विन शबको ए कह के मेरा दिल
बोला जलद आ बाखुदा ।
काहेको इसतरहसे पहलूमें कराहा है
याद तो कर तुझको सनम ॥
सरफ तुझ मर वफोल हो जब धुकायां सनम ।

हम जामोद बिसा लंफ़ाहा सुन आहा वफ़ा हा
आहा तरज तर वजकत मवकत मस्तो चकसो देम
तुरा दरबरे खेस समबिल्लाहके मनदो दम असु
सनन चन्द अदा हां आहा कुश्तए नासतो अम ॥
ज्यँज्यं दोज्यां ज्यज दई जोड़ तु दोजं जोड़ खुदो अ
चे वो जुवा खिले दिल आवे माशूक
बसा दस्ता हा हा हा आहा ॥
जोड़ दो इश्क बसम मानू घायल कीतो तकसीर
तेनको माँड़ो जो ओ जाँन भलो सदड़े जाँदा ना तो
तिरछो तो निगाहां आहा नहीं कछु तीरनोकम ।
काहे रुस खायके तुम रूस रहे हो पीतम आवो
किरपा करो जो जात है जान
करत विनती हूं हा हा आहा ॥
पाप हो जोड़ धरम ॥
हैफ़ सद हैफ़ अफ़सोस सद अफ़सोस आया पेगाम ।
अजल छुट गया ज़ख़्म जिगरसे मेरे
हा हा हा अब निकल जाएगा दम ॥
अजमें अजीज तेरे सब सार मुसलसल मौजूं
शिकन नहीं इसमें जरा यह गजल जिसने सुनी
उसने सराहा आहा तेरे हो सिरकी कसम ॥

सोहनी

मुझको चाहे जकन देखाता है
मेरा यूसफ़ कुएं झंकाता है ।
कुछ जो सीधो भी बात कहता हूँ
तिरछियां फिर मुझे सुनाता है ॥
समा महफिल वो मुझको समझा है
शायद इस बातसे जलाता है ।
जुल्फ़ को छेड़ता है जब शाना
दिल मेरा पेचताब खाता है ॥
गरमियां गैर से न कर जालिम
जल रहा हूँ अबस क्यों जलाता है ।
खाक से भी मेरी गुबार रहा
कब्रको ठोकरें लगाता है ॥
तुझको अपनी हंसी खुशीकी कसम
किस लिए तू हमें रोलाता है ।
फ़िकरेमें उसकी चपलाहट
और मजमून कुलबुलाता है ॥
लेकिन आगे न फिकर कर गोया
रेखता सुखनसिर हो भाता है ॥

२

बावफ़ा था मर गया इक बेवफ़ाके वास्ते ।
आशना था जां गंवाई आशनाके वास्ते ॥
बागबाँ दोबारे गुलशन तक तो आने दे हमें
कैंचियें लगवा न ओ ज़ालिम खुदाके वास्ते ॥
बेतलब गर मौत भी आए शरीके मर्ग हूं
मिन्नतें ऐसी न लूं हरगिज दवाके वास्ते ॥
ए हुमा पेशे फकीरी सलतन क्या माल है
बादशाह आते हैं पैरोंसे गदाके वास्ते ।
बाद मरनेके भी छेड़े हमको तिफ़लाने हसीं
ले हमारी खाक गिलको आशियांके वास्ते ॥
मू दिखावा दिक महीने केतुए खुरशेदरू
माहे नौ है शिर झुकाए इलतजाके वास्ते ।
छोड़ दुनिया कर कनात बैठ कुञ्जे फख़्रसें
खाक मत शिरपर उड़ा जल्ले हुमाके वास्ते ॥
जान कर गुलशन मुझे सेयाद ले जाता नहीं
तू ही ए खुद रफतमो ले चल गदाके वास्ते ॥
हो गया नाबूद जब उकदाय तब साबत हुआ
उस करमकी दौद ए अहले फनाके वास्ते ।
खाक हो जो फिर सियाबखतानका सारा बदन
हाथ उठाते शरम आती है दुआके वास्ते ॥
हमातन चश्म नरगिस यार तेरी दीदको
गुल हमातन गोश है तेरी सदाके वास्ते ॥
रहम कर ए जोफ बस इतना न तू मुझको भुला
हड्डियां दो चार रहने दे हुमाके वास्ते ॥
दिल न अपना है तन अपना न जी अपना है आह
सबसे बेगाने हुए एक आशना के वास्ते॥

करियो गोयाकी सिफ़ाति या नबी बहरे खुदा
ए खुदा तू बख़्श देना मुस्तफ़ाके वास्ते ॥

सोरठ-धानी—पश्तो

पिया सांवरे महबूब को दिल बीचमें पाया।
नख सिखसे रूप मोहनो मन देख लोभाया ॥
मुखचन्द उजारो रहो छब छाय हर तरफ़
हीरोंका मुकुट पन्नामें लालोंमें जड़ाया।
अङ्ग अङ्गमें गहने पहने हुए कानोंमें कुण्डल
जोटा वसंतो साजे हुए सोने लगाया ॥
वनमाला गलेमें परी खुशबूसे तर बतर
कर में है कंगना बंधायो दूलहा बनाया ॥
वर वृन्दावनको कुञ्जमें करता खुशाल ख्याल
जो एकी तीनलोकमें नन्दलाल कहाया ॥

सोरठ—सरपड़दा

फरजन्द नन्दजीका दिल बीच भांवदा।
वर पाय खूब नूपुर सुन्दर सोहांवदा।
टीका संदलका खींचके माथेमें अदासो
आता है लटक चाल मटक मेरे आंवदा।
नीमा जरीका गल बिच कट काछनी कसे
पीले दुपट्टे वाला बोड़ा चबांवदा।
करता है निरत नादर घुंघरू को झनकसो
ता ता थेई थेई ता ता गत है लांवदा ॥
नैनोंकी आन तानके अबरू कमानसे
पल कोंका तीर खींच कलेजे चुभांवदा।
घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने
शुकदेव चरण दासके दिलमें समांवदा ॥

सोरठ—कलिङ्ग

दुनिया मेरी सो आके खरीदार ले चले।
एक दिलके आइनेमें फकत यार ले चले ॥
जाता नहीं मैं आपसे ले जाते हो मुझे।
जुलफोंमें बांध बांध सितमगार ले चले ॥
कहती थी एती बातें महलोंमें इश्कके
जावेंगे हम उधरको जिधर यार ले चले ॥
आगे खुदाए जाने क्या होवेगा सितम
फुसलाके मेरे दिलको तरहदार ले चले।
तहकीक है यह रोजे गुलाल है गुलाबी
मरनेके तल्ख़ शोरीं सरकार ले चले ॥

सोरठ—झंझौटी

किसके घर रात रहे आए हो घबराए हुए।
जुलफ बिखरी हुई मुखड़ेपे बल खाए हुए ॥
आज कुछ खैर नहीं आए हो मचलाए हुए।

देव०

सुरङ्गी सीस पर पगियां जवाहर जोत जगमगियां
कलंगी परम मन ठगियां किया क्या हाल तें मेरा।
तुझे मैं रैन दिन गया मुझे तू ताब सताया
बिछोहा कहर फुरमाया किया० ॥
भुला मुझे वाट चोहटका पड़ा मुसकानका डाका
लुटा यह दिल शहर बांका किया०।
पड़ी कुलकानको गरदो चढ़ो है इश्कको जरदी
हुवा है रङ्ग जों हरदी किया० ॥

सिन्ध

दाम उलफत मैं तेरे जोके गिरफतार हुवा
सबसे आजाद हुवा।
खञ्जरे नाज़से जिसका जिगर अफगार हुवा
वोही दिल शाद हुवा ॥
इश्कमें चैन कहीं होता है दिलको साहेब।
तुम्हीं इनसाफ करो जिन्दमानी सों गया
जिसको यह आजार हुआ जानसें बरबाद हुवा ॥
जिसके माथेमें मलो खाक रहे पोर मजा
बा दिले सिदको सफा फिर कोई दिनमें
वो हिम्मालके आसार हुवा ॥
साहबे इरशाद हुवा खूबरूयों में बेवफा।
किसने सुनो या देखो नकसूको ज्यों गुमां जो हुवा।
इनमें सोदाई सितमगार हुवा घर तू उस्ताद हुवा ॥
क्योंकर अब रात दिन आरामसे अपने न कटे
किमदतादेसे बुधविहारोका कदम
हमको सजावार हुवा यह खुदादाद हुवा ॥

२

दमबदम तेरी नई शान है मेरे कन्हैया।
चश्म बद्दूर अजब आन है मेरे कन्हैया॥
हाथमें वंशी औ वनमाल गरे शिरपै मुकुट
क्या हो दिल लेनेका सामान है मेरे०।
ना तु है माह न खुरशेद न छरे हिरम
जिन फरिश्ता न तू इनसान है मेरे०॥
इस तेरे हुस्ने नजाकत का क्या करूं मैं बयान
बदखशां तरे से हैरान है मेरे०।
बुधविहारी जो तेरी वंशी नहीं है ए कोई
फ़ितनओ आफ़तो तूफ़ान है मेरे कन्हैया॥

खमाच

जो एक निगाह महरको वो महलका करे।
दुशमन अगर तमाम जहां हो तो क्या करे॥
राहत हो या के रञ्ज हो शादी हो या के गम
ख्वाहिश वही है अपनो जो कुछ सांवरा करे।
नकशे कदम तेरेमें है तासीरे जामेजम
असरार दो जहांसे बहम आशना करे॥
तीरे निगाह तेरा लगा जिसके दिलमें है
क्यों कर न उसको आंखसे आंसू बहा करे।
है इलतमास बुद्धिविहारी से यह सदा
जबतक यह जो रहे तेरो बंशी बजा करे॥

धानी

दिल पर सौ जखम बदन पर कोई आसार नहीं
कहो कहो इसमें क्या।
हमने इस काटको देखी कोई तलवार नहीं
निगाहे यार सिवा॥
तेरे दीवानेने खञ्जरसे मारा क्यों कर
तू ही बतला दे हमें।
बुतकदेमें कोई बुत तुझसा तरहदार नहीं
ए सनम नामे खुदा॥
बदजबानीका तुम्हारी नहीं करनेके गिला
है यही अपनो वजा॥
गो जबां रखते हैं पर आदते तकरार नहीं
जो कहो तुम सो बजा।
इश्कके खूबांने है उस रङ्गको देखलाइ बहार
जिसको ना दीदो शुनीद॥
दाग दिल छोड़ हमें भाता कोई गुलजार नहीं
गो सरापा हो फिजा।
कर चुके तजरुबए इश्क ए जालिम आजा
इश्क हासल है यही
होगा चङ्गा मरीजे इश्क वो बीमार नहीं
कीजिए लाख दवा॥
ना हमें तख्तकी ख्वाहिश है न मसनदकी हवस
ए खुदाबन्दे करीम
दिल मसोहाए बज्म खाकि दरबार नहीं
हमको बिठला न उठा॥

कलिङ्ग

दिल औ निगाहको करके परेशान ले गई।
चितवन मरोर तबकी झलक जान ले गई॥
दिनको तो चैन ले गई मुखड़ेको याद और
रातोंको नींद जुल्फ परेशान ले गई।
तेरी निगाहबानी करे कोई लाखमें
जिस दिलमें लाग थी उसे पहचान ले गई॥
जाता है कोई दोड औ दानिशता तालबे
मेरी निगह मुझे उधर अनजान ले गई।
चम्पाकली की देख नए पाव हाथ फूल
बाले की झोंक सब मेरे औसान ले गई॥

रागिनी—जंगला

जानो मुझे बस किया बांको अदा देख देख।
तिरछी भौंहें खींच कमां तीर रवां कश किया॥
दुनियामें अजूब खूब एक तू ही है महबूब
सेहर किया मेहर किया जेहर किया हश किया॥
सदके जाऊं तेरे यार एकबार कर पियार
हो कर दिलदार सजन गशके तांई गश किया।
इश्कके नशेमें मस्त है जानकीदास
और नहीं प्यास खास दिल मेरा बेकस किया॥

झंझौटी

देखा था मैंने सनम एक चला आता था।
उसको थो सांवली सूरत औ मुसकराता था॥
मैंने उससे कहा तू एक बात मेरो सुन
सैन दे मुझको बुलाता बो चला जाता था॥
क्या कहूँ दूरसे थे देखते गुरुजन ठाढ़े
लाजके मारे मुझे खौफ औ डर आता था॥
देखे से दूरसे गुरुजन से शरम आता था॥
सखी तू मुझको मिलावे जो कहूं प्राणप्यारा
रहे तब जान मिले सैन जो बताता था॥
सखी थो चतुर सुजान उनको तो है ले आई
मिले जो पीउ पियारे मदन लोभाता था॥
जानकीदास दोनो मिलके जो आनन्द हुआ
मोहे सूरत से न कुछ ज्ञान किया जाता था॥

बिहारी

याद कर साहेब को गाफिल नाहीं तो पछतायगा।
करता है मगरूरी मूरख जमको जूती खायगा॥
हो गए सुलतान राजे तू भी यों हीं जायगा।
लाख चौरासी में ज़ालम हरि बिना भटकायगा॥
कहता जानकीदास ऐसे नाम हो रह जायगा।

सोरठ

मैं दीवाना नामका मोहो कोइ न छेड़ोरे।
वन वन सब मैं ढूंढ़के हस्तीको मारोरे॥
हस्ती बिचारा क्या करे मैं तो शेरको मारोरे।
हाथ मेरे शमशेर मेरे खूब तरेकारे॥
भग जा मेरे आगेसे नहीं मार बैठूंगारे॥

जंगला

पाँड़े मोहे राम नाम लिखावो कुछ और नाहीं सिखावो
सिखते हो सेहल सममें जो तुममें है सो हममें
जननी जना पिलाया देह दैवने तो जिलाया
जिन्दगीका कौन ठिकाना पिञ्जरेमें पवन समाना॥
जिन पांच तत्त्व नचाया एक एक सों बचाया
मिल जुल जगत बनाया सब नाम रूप जनाया॥
पढ़ना पढ़ा तभी हरिनाम लेहों अभी दिन चार
राज निहारो विन राम है अंधियारो॥
एकचक्र राज पिताकों प्रतिविम्ब नाहीं ताकों
प्रेमरङ्ग कों बिगाड़ो जो रोम रोममें ठाढ़ो॥

कलिङ्ग

मेरा महबूब खूब सोहना मोहना सांवला बेली है।
चीरो शिर जरकसो सोहै गरे मखतूलको सेलो है॥
किनारोदार दुपटा जाफ़रानो जिसपै क्या बूटा
भया दिल देखिके मुश्ताक़ कबोला छोर है छूटा।
सनम बंशी बजांवदा गांवदा तान सुनांवदानी॥
साड़ी गलो आंवदा भाँवदा चश्म चोट चलांवदानो।
जिगरमें घाव किया अबरू लिए खञ्जर कटारो
बही दारू दरद सबो वो लगो है उससे यारो॥
प्यारा गोविन्द रसिक सजन हैगा दिलदा जानी
कीतो साड़ो ज़िन्दगो क़ुरबान भई मैं प्रेम दिवानो॥

२

लगो हैं इश्क़दी चोटें दे दे पलककी ओटें।
भीजो रस प्रेमदो पोटें देख सखी नन्दके ढोटें॥
भई हूं रूप दीवानो मरन गई जमुना तट पानो।
मिले हैं कृष्ण गुमानो सूरत उर माहिं लिखानो॥
भए हैं मनकेरे भाए कृपा कर कृष्णजो आए।
नानाविध भोग लगाए चरणमें सीस समाए॥
जशोदा जूके हैं प्यारे कृके रसप्रेम मतवारे।
बने हैं रैन रतनारे सेवादास पतितकूं तारे॥

सरपड़दा

हरिनामको सुमर ले क्या बक़त पाया है।
फिर हाथ नहीं आवेगा सतगुरु बताया है॥
इस मायाके नशे में बेहोश हो रहा है।
ए काया भी चलेगी किस नींद सो रहा है॥
माता पिता बिरादर फ़रज़न्द में उरझाना।
इस काम क्रोध मोहमें हर गए हैं पिराना॥
रावण सरीखे हो गए जिनके तपे निशान।
एक पलमें छीन लीने तब तेरा क्या गुमान॥

कहता है मगन रूप टुक समझो यार मन।
हरि राम नाम साँचा सब झूठा है जतन॥

२

आवेंगे महाराज आज भाग हमारे
वारूं तन मन धन सभी ओ प्राण पियारे।
नैननको करनसों पन्थ बुहारे
पधारे घन श्याम सुन्दर नन्ददुलारे॥
वृन्दावनचन्द्र देख नैनके तारे
हिरदे लगे हैं मेरे प्राण पियारे।
माणक ऐसे मिले आनन्द भारे
सुध बुध सब भूल गई काज सँवारे॥

जंगला

मुखड़ा ज्यों टुक देखावो जियरानें कों लुभावो
तेरे लोचन सलोने मेरा जो मन हरा है।
सुनिए जो रामविहारी चितवन तेरी कटारी
लागी कठिन हमारे घायल ज्यों तन परा है॥
नासा लसत मोती निदरेत चन्द्र जोती
अंखियोंको तप्र बुझावो नव रूप सों भरा है।
चीरा सुरङ्ग सोहै अत चित्त वूँ विमोहै
झलके कुटिल छबीलो जादूसा कुछ करा है॥
श्रीनन्दजूके बारे राम सखोकें प्राण प्यारे
सांवल सरूप तेरा हियरेमें आन धरा है॥

पीलू

मैं कहा था इस जहाँमें मत किसीका हो रहो।
क्या कोई आपना करेगा आपो आपना हो रहो॥
कृष्ण नाम मनमें जो है ना और किसीसे काम है
जो होना था सो हो गया चरणोंमें उसके हो रहो।
जो तुझे जाने है उसकों जान उसका हो रहो
जो तुझे जाने नहीं है उससे न्यारा हो रहो॥
जो तुझे सरे रा करे हमराह उसके हो रहो।
जो तुझे ग़मगीं करे ग़मख्वार उसके हो रहो॥
काम है जो करनेका उस कामका हो हो रहो।
कारबदकारी का बद है तू बेकार हो हो रहो॥
यह नसीहत सुनते हो सुनके ज्यों बहरा हो रहो।
प्रेमरङ्ग देखा जो चाहे देखता हो हो रहो॥

कलिङ्ग

देख दस्तारे बसन्तो साकिए सरशारको।
खुल गई हैं आज अंखियां नरगिसे बीमारको॥
रात रहे जावेगो कासिद वक्त रहने का नहीं
दिल तड़फता है शिताबो ला खबर दिलदारको।
आशकोंके रङ्गमें और किसीका काम नहीं
क्या तरह गुज़रो मगर मन्सूरसें सरदार को॥
जो तुझे मेहदीका शौक है दिल हमारा हाथ ले
हर किसोसें पूंछ ले रङ्गीके रंग रंगदारको।
ईबलोसे बेवफाको मेहरबानो पै न भूल
दिलका दुश्मन है वहो जो बात करता प्यारको॥

सोरठ

श्रीरघुनाथजी मेरे कां वरन सके गुण तेरे।
प्रभु प्रथम मीन वपु धाख्यो संखासुर गरव प्रहाख्यो॥
ब्रह्माको वेद जो दीने तुम काज सुरनके कीने।
प्रभु कच्छप रूप बनायो मंदराचल पीठ धरायो॥
शूकर नरहरि वपु धारो प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारो।
तुम हो बल बामन स्वामो तुम परशुराम वरनामो॥
तुम हो रघुवंश उजागर तुम कृष्णनन्दके नागर।
बुध निकलंक रूप तिहारो हर भक्तनको रखवारो
अवगत गत नाथ तिहारो जाए दास कान्हर बलिहारो॥

२

असोना बसोना बहम देखते हैं
वो इस अईना दिलमें जम देखते हैं।
ग़मे हिज्रमें उसके जो अपने हरदम
खाना पराया अदम देखते हैं॥
जो जो चाहता है के जा उससे मिलिये
तो ताकत नहीं इतनो हम देखते हैं॥
न मिलनेका उसके बयां क्या करें हम
शबो रोज़ रञ्जो अलम देखते हैं।

अगर आवे अब नाज़नीं वो शिताबी
तो हम अपने दममें यह दम देखते हैं ॥
अदमसे जुदा होके हस्तीमें आके
न देखे कोई के जो हम देखते हैं ।
तसव्वरमें उसके बहर लब हमेशा
जमाल अपने दिलवर का हम देखते हैं ॥

२

सलोने बांसरी बजाई लगी धुन श्रवणमें आई ।
परी हूं धरन सुरझाई श्याम विन क्यों जिऊं माई ॥
व्याप गई मैनकी वेदन दिवानी हो गई ता छिन ।
कछू सुध ना रही तन मन श्याम रट नाम ले लेकिन ॥
बुलावो वैद गुनीजनकूं जिलावि मन्त्र पढ़ उनकूं
कहत सब परत नहीं जानी बिकल तन जात
सुरझानी ।
चले सब गुनी गुन हारी डशी मानो श्याम अहि कारी
उसासें लेत है प्यारी न देखे नैन गिरिधारी ॥
समझ सखी चतुर तू मनमें यही दुख विरहको तनमें
वैद सखी श्याम मन माने पीर वह मर्मको जाने ॥
कोउ सखी चतुर गई तहंते ले आई श्याम है जहंते
रसिक जब चतुर उठ दौरे हंसे कछु तनक मुख मोरे
दियो जल मन्त्र पढ़ पढ़के गयो दुख काम कढ़कढ़के
तनक मूर्च्छा जो जागी लखे हरि फेर पल लागी
सकुच पट ओट मुसक्यानी लगी जिय रहत
नहीं छानी ॥
कहत सब धन कुंवर नन्दनन्द निरख वलिहार
गोकुलचन्द ॥

जंगला

जगमें आए तो क्या हुवा जो कृष्णनाम न जाना ।
ज्यों सूकर कूकर मरकत सम हरिको नाहिं न ज्ञाना ॥
आठ पहर धन्धामें बीतत काम क्रोध लोभ साना ।
एक घरी हरि नाहि न सुमरो जो सोहत सुखप्राणा ॥
अन्त समैं कोउ काम न आवै आखर फेर पछताना
सूर कूर मान ले मेरो हरि चरणन कर ध्याना ॥

२

रात समैं कहने लगी री रोके परवानेसे
तू भी जले है वलेकिन मैं भी तो अए जाने मन ॥
देख तो तुझको जला देता हूं सारा वदन ।
आते हो बस जान फिदा करता हूं तुझ पै सनम
फिर मैं फिरता नहीं ज़िन्दा तेरे अस्तानेसे ॥

झंझोटी

किस कदर मुझको नातवानी है ।
वारे सरसे भी सरगरानी है ॥
सारे कुरांमें उस परीरूको आजकल जो लंतरानी है ॥
कूचए इश्कको गदाईमें
किसकी मिरजाई किसकी खानी है ।
महीनों घरमें मैंने रखा उसको
यह बिताई है दया समानी है ॥
तेरा आरज़ छिपा तो बसमें मुआ
आरज़ी मेरी ज़िन्दगानी है ।
गैरकी दुश्मनीका क्या शिकवा
या रज़ाए अदूए जानी है ॥
पैर रख कर ज़मीं पे कब वह चले
पैहन पोशाक आसमानी है ।
तलवे काटों से हो गए गिर बाल
खाकसी खाक हमने छानी है ॥
चाहिये ज़ख्म दिल हरे हो जायं
उसको पोशाक आज धानी है ।
दिल भी उससे उठा नहीं सकते
नातवानी से नातवानी है ।
इश्कमें उसके हमको ए गोया
रात दिन शग़ले शेरख्वानी है ॥

गारा

उसको मुझसे रुठा दिया किसने
मेरे दिलको रुला दिया किसने ।
एक क़लम हरफ़ दोस्ती भूला
हाय उसको पढ़ा दिया किसने ॥

आईने में देखाके तेरो शक्ल
हमको हैरां बना दिया किसमें।
ए फ़लक हमतो बैठे हंसते थे
उठते उठते रुला दिया किसने॥
मांगते हो गुनहगार हुए
उससे बोसा लिया दिया किसने।
नहीं मालूम शौक़ क़त्लमें कुछ
सर हमारा उड़ा दिया किसने॥
हवाए नफ़्समें कबाबको बू है
मेरे दिलको जला दिया किसने॥
कल तलक दोस्त था वो गोया के
आज दुश्मन बना दिया किसने॥

सोरठ

रात फ़िजरां में तेरी याद थी ओ रोना था।
हो गया ग़मसे तेरे मुझपे जो कुछ होना था॥
अश्कबारी से न थी आँखको फ़ुरसत एक पल
सोते जारी थे कहाँ खाट किधर सोना था॥
मेरे दिलवरसे वहीं जाके हुवे चश्म दो चार।
जो के किसमतमें बदा दिल के तईं होना था॥
उड़ गया होश मेरा जिसके असरसे झटपट
उसको चितवन थी न जादू था न कुछ टोना था॥
आस्तीं आँखपर रख दी मेरे नासहने अबस
अश्कसे अपने मुझे दाग़ जिगर धोना था॥
खाक ज़र जिनको बराबर है न पूछो उनको
जिसको वह मैल उठा देते उसे सोना था।
दरद ग़म हो तो है फल फूल इस मुहब्बत का
तुराब इश्क, तुझे दिलमें नहीं बोना था॥

विहारी

यां तलक दिलमें जुदाईको रवानी रह गई।
वस्लमें छूटा न दाग़ उसको निशानी रह गई॥
दूरसे वह मुंह दिखाकर ले गया मेरो क़रार।
सामने आवे तो जिन्दा जांफ़िशानी रह गई॥

दोस्तो क्या कहिए उसका माजरा फिर इन दिनों
मेहरबानी घट गई नामेहरवानी रह गई॥
खत निकल आया गई उड़ सादारूईको बहार
हमसे अबतक उसको वो ही बदगुमानी रह गई॥
वो तजल्ली है कहां मुश्ताक़ हो जिसका कोई
नाहक़ अब यारोंसे उसको लंतरानी रह गई॥
मिट गई लैला मुवा मजनूं हुवा किस्सा तमाम
आशक़ी माशूक़को जगमें कहानी रहगई॥
सुनजरे सायत करो ग़ाफ़िल न हो हवसे तुराब
आये दिन चलनेके थोड़ी जिन्दगानी रह गई॥

सोरठ

हमन हैं इश्क दीवाने हमन को होशदारी क्या।
रहे आज़ाद या जगमें हमें दुनियासे यारी क्या॥
खलक सब नाम अपनेको बहुत कुछ सिर पटकता है
हमन गुरुज्ञान आलम है हमन को नामदारी क्या॥
जो बिछुड़े हैं पियारे सों भटकते दर बदर फिरते
हमरा यार है हमतन हमनको इत्तज़ारी क्या।
न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछुड़े पियारेसे
जहां यह प्रीत लागी है तहां फिर बेक़रारी क्या॥
सांई कबीर हो फ़ारिग़ दरूं दर दस्त दुनिया पर
कि चलना राह नाज़ुक है हमन सिर बोझ भारी क्या॥

सोरठ—कलिङ्ग

जबतें लगी है सजनी मावे नहीं दिन रजनी।
छिन छिन अतन तन तजनी कैसी करूं पायल बजनी॥
जबतक न देखूं श्यामको
नींद नहिं आवे अंखियनको।
जबतक न लगाऊं छतियन सों
तबतक नहीं चैन जियको।
भ्रकुटी सरस बनी है नयना सिर बीच तनी है॥
सर फेंकत काम धनी है बिरहिन जिय मांझ अनी है॥
कुण्डल कपोल बिच झलके
मानो शोभा आनन्द छलके॥

वे तो घूंघरवालो अलकें बिन देखे परें न पलकें ॥
नासा बिच बुलाक सोहै मेरो मन मोह लियो है ॥
व्रजयुवतिन को मन मोहे
ऐसो सुन्दर जग बिच को है ॥
वाके अधर बिम्ब विशाला गल बीच वैजन्ती माला ॥
सब सङ्ग सखा लिए बाला वाको नाम है नन्दलाला ॥
शिरपर मुकुट विराजे मायो भानु उदित भए छाजे ॥
जमुनाके कुंजकरोलें कुञ्जन कुञ्जन बिच डोले
कहे बांक बरस राधा प्यारी जलिता सखा सङ्ग बोले ॥

सोरठ

लगा है इश्क़ तुम मेरो निबाहोगे तो क्या होगा ।
मुझे है चाव मिलनेको मिलावोगे तो क्या होगा ॥
सुनूंगो तान बंशीमें सुनावोगे तो क्या होगा
हुसन चश्मोंके प्याले भर पिलावोगे तो क्या होगा ।
चमन बिच आनकर मुखड़ा देखावोगे तो क्या होगा ॥
मरम करता है कुल आलम हंसावोगे तो क्या होगा ।
सजन तुम बिन तड़पता जो जिआवोगे तो क्या होगा ॥
मेरे इस दिल दीवानेको सतावोगे तो क्या होगा ॥
अजब दीदार रोशन है छिपावोगे तो क्या होगा ।
चोराकर दिल पराएको दिलावोगे तो क्या होगा ॥
जिगरके दर्दको दारू बतावोगे तो क्या होगा ।
रसिक गोविन्द सीने से लगावोगे तो क्या होगा ॥

२

भए तुम नन्दके दानो नई व्रज रीत यह ठानो
चलत हो चाल लङ्गरानो तिहारो छैलता जानो ।
जमुन तट हों चलो पानी मिले मग बीच मोहे आनी
कहत क्यों बात सतरानी
चले क्यों न जावो अभिमानी ।
कहां तुम फिरत इतरानो कहो मेरी नेक नहीं मानो
जोबन गुण रूप गर्व्वानो करें अब तोहे नकसानो ॥
वचन सुनि ग्वालि मुसकानी कहो रसरीतको ठानी ।
रसिक गोविन्द दिल जानी
लगो तोसों प्रीत मनमानी ॥

सरपड़दा

ए तरहदार भला तुमने अजब काम किया
भर नज़र देखने पाए नहीं बदनाम किया ॥
अब खुशी साथ हमें आके देखावो तो जमाल
जुल्फ़ तेरीने मेरे दिलको कैदे दाम किया ॥
तुझको कुछ शर्म नहीं आती है अफ़सोस सनम
तेरी ख़ातिर न कभी मैंने तो आराम किया ॥

जंगला

ले चलो मुझको उस आईनए रुखसारके पास ।
खाक उस ज़ीस्त पै जो यार न हो यारके पास ॥
दिले दीवाने के इस होश का दीवाना हूं
फटकता है नहीं हरगिज़ किसी हुशियारके पास ॥
निरगिसे चश्म का मत कर दिले बीमार ख़याल
याने बीमार नहीं रखते हैं बीमारके पास ।
सर मेरा तनसे जुदा खूब किया सर सदके
रखना क़ातिल मुझे पर अपनो ही दीवारके पास ॥
मस्त चश्मों से कर आखर को हुए हमबिस्तर
है सज़ा इसको यही बैठे जो मैख़्वारके पास ॥

भैरवी

हज़ारों ही खूबांको हम देखते हैं
परी गुलबदन तुमसे कम देखते हैं ।
तू जैसा था वैसा ही है मेरे प्यारे
वो नादां हैं जो वेशो कम देखते हैं ॥
तुम्हें आईनेसे हमें रफ़्त तुमसे
वह तुम देखते हो यह हम देखते हैं ॥
उतर जाए है दिलसे मेहराबे काबा
तेरे अबरुओं का जो ख़म देखते हैं ।
तुम्हारा है हमको खयाल ख़्वाबमें भी
तुम्हींको खुदाकी क़सम देखते हैं ॥

भैरवी—जंगला

जो तू सनम हमसे बेज़ार होया
जगमें जीना तेरा दुशवार होगा ।

चलना होवे तो चल मेरे प्यारे
कबलग बतियां बनावता रहेगा।
जिधर भर नज़र करके देखेगा ज़ालिम
उधर मोती लड़ियोंका बाज़ार होगा॥
मैं जाता हूं दिलको तेरे पास छोड़े
मेरी याद हरदम दिलाता रहेगा।
बुतोंको परस्तो तू मत कर ए ज़ालिम
खुदाको क़सम तू गुनहगार होगा॥

जंगला

अरे मन हरिको शरण परेगा
जगमें तेरा काम पलमें सरेगा।
नज़र भरके देखेगा रघुवरको
पलकमें सभो पाप तनका जरेगा॥
मणिका गीध अजामिल हस्तो
उन्हें रघुवर अपना करेगा।
गोविन्द सुमरे सदा सुख होगा
प्रेमरङ्ग प्रभुसो जो रंग रंमिगा॥

जोगिया

राम तुम्हीं सों जो हमने देखा
हर एक आलम जुदा हुवा है।
कोई जला कोई गया बहाया
कोई ज़मींमें सुदा हुवा है॥
क्या पण्डित क्या मुल्ला बाँचे ओही
ब्रह्म वही जो खुदा हुवा है।
सबमें तो तुम हो सबको जिन्दगी
प्रेमरङ्ग दिल फ़िदा हुवा है।

सोरठ

वो सांवरा सलोना मेरा नज़र पड़ा है।
क्या खूब रङ्गमहलमें बांको अदा खड़ा है॥
सिरपर गुलाबी फेंटा कलंगी की झलक तैसी
कानोंके बीच कुण्डल करमें कनक कड़ा है।
मुरली लकुट विराजे कटि काछनी छवि छाजे
ब्रह्मरङ्ग प्रभुकी शोभा लखि चरणों बिच अड़ा है॥

कलिङ्ग

दिल ले गया है मेरा दिलदार हंसते हंसते।
क्या काम कर गया है गमख्वार हंसते हंसते॥
हमने कहाथा ए दिल उस बेवफ़ासे मत मिल
एक रोज़ करेगा तुझको बेज़ार हंसते हंसते॥
यारो ज़रा चलो तो लावो मनाके उसको
वो हो गया है हमसे बेज़ार हंसते हंसते।
मजलिस में आशकोंको अबरू तेरीको देखा
आपसमें चल रहो है तलवार हंसते हंसते॥

आसावरी

चमनमें जाकर जो हमने देखा
हरेक बुलबुल चहक रहा था।
क़दम क़दम पर तमाम गुलशन
गुलोंकी बूसे महक रहा था॥
अरे तू बुलबुल कल कहां था
अजब तरहका समां जो देखा
इधरका गुलशन खुशीसे हँसता
उधरका सबज़ा लहक रहा था।

देवगान्धार

इश्कको चोट है भारी कहा तित जाने संसारी।
लगी दिल लगन सोइ जाने कठिन यह नेहको बारी॥
कसक उर पीर थिर नाहीं कलप सम पलक जुग जाहीं
मीनतन प्राण जल वारी नेक जो तोहे करों न्यारी।
सती प्रिया पतिके सङ्ग जरई सूर सहे घाव रण लरई॥
चात्रक चकोर व्रत है सांचा लगो मन आस ले बाचा।
विरह जर जोर सुखकारी मिटे हिय दाग़ उजियारी॥
दासकों आस बलिहारी नेक दे दरस धनुधारी॥

परज

तड़फनेमें क्या मज़ा है क़त्ल हो प्यारेके हाथ
उसकी लज्ज़त को किसी बिस्मिलसे पूछा चाहिए।
जिसने उसका ज़ख्म खाया है उसे मालूम है
तेग़ अबरू की सिफ़त घायलसे पूछा चाहिए॥
यार मेरा जो नहीं मिलता है के बीमार है
बात कहनेको नहीं घायलसे पूछा चाहिए॥

यारके मिलनेको मुझको कोइ तरह आती नहीं।
किस तरह जाता है दिल बेदिलसे पूछा चाहिए॥

कलिङ्ग

हमनसे मत मिलो लोगो हमन खफ़ती दिवाने हैं।
खुशीको राह छोड़ी है कठिनमें जिय समाने हैं॥
छोड़ी खिलकत वज़ीरोकी मिलो लज्जत फ़कीरोकी
चढ़े किश्ती सबूरीको बिरह दे हाथ गहाने हैं॥
हमन दिन रैन रोते हैं क्या गमसे जान खोते हैं
शूलीकी सेज सोते हैं इश्कके या मकाने हैं।
हमन एक जान है जानी पिया हरनामका पानी
आखर को हो गए बानी वलीनामा समाने हैं॥

२

जबतें देखो है मलोनो तबतें नहीं भावे मोनो।
कहो मत बीराए कोनो तन होय रहा मन मोनो॥
दुति साम सलोनो दमको
मानो दामिन सों तन चमको।
मलयागिर उर गमको छब छाय रही जग झमको॥
जबतें देखो भरि नैना तबतें नहीं आवत चैना॥
मोहि सूझत नहीं दिन रैना रट लाग रही हरि बैना।
कबहूं दिग आय देखावत है
कबहूं कहूं जाय छिपावत है॥
कबहूं तन आप नचावत है
कबहूं कहूं दरशन पावत है।
कबहूं चोरो है दूध दही कबहूं सखियनकी बांह गही॥
कबहूं उरहन सब जात कही
कबहूं हरि सांचो झूठ नहीं।
कबहूं कालिन्दी कूद परो
कबहूं वसुनाग कों सीस धरो॥
कबहूं ग्वालनसन इन्द्र हरो
कबहूं जमला सो भाग डरो।
कबहूं साधुन उर आन बसो
कबहूं कर धनुष हि वाण कसो॥
कबहूं गोपिन घर करत हंसो
कबहूं कलङ्की सिर मुकुट लसो।
कबहूं सागरको जाय मथो
कबहूं पारथको साज रथो॥
कबहूं द्रोपतसुता लाज रखो
कबहूं गजको जल टेर लखो॥

विहारी

है अजब लज्जत शिकार अफ़गन तेरे तीरोंके बीच।
जिसकी चरचा हो रही है सारे नकचीरोंके बीच॥
है खुमारी आंखोंमें बिखरे हुए बालोंके बीच
जिस तरह दो मस्त जकड़े होवें जञ्जीरोंके बीच।
खूनके कतरेका आलम तू मेरे अश्कोंमें देख
लालके टुकड़े चमकते हैं पड़े हीरोंके बीच॥
आके दिल होता है टुकड़े उसका मेरी आहमें
आ गया काफ़र के अब आहोंकी तासीरोंके बीच।
गर मुरक्कमें तेरे हो उस मसीहाकी शबीह।
जान पड़ जावे मुसव्वर सारो तसवीरोंके बीच॥
शामसे मैं बैठता हूं रोज़ फ़िक्रे वस्लमें
शब गुज़रके सुबह हो जाती है तदबीरोंके बीच।
जा नहीं सकता है कोई तेग़ अबरूके करीब
दिलको टुक देखो जिगर जलता है शमशीरोंके बीच॥
गुफ़्तगूए यारको क्या बात है क्या बात है
सारी महफ़िलको लगा लेती है तकरीरोंके बीच।
हो सफ़र तुमको मुबारक सैर गुलदस्ते चमन
लाल ओ गुलका न लावो जिक्र दिलगीरोंके बीच॥
उस तरहको अब तो सूरत कोई बख़्शिसकी नहीं
शायद हो जावे कोई तक़सीर तक़सीरोंके बीच॥

देश

कासिदो कुछ भी खबर यारके है आनेकी।
जान जाती है चली हिज़्रमें दीवानेकी॥
आप आवें न कभी खत न किताबत भेजें
सैकड़ों तरह दिखाईं मुझे तरसानेको।

जिरियां मेरी पै उसे रहम नहीं आनेका
जबतलक चश्म मेरी खूं नहीं बरसानेको।
ए शमा बहरे खुदा कुछ मुझे तदबीर बता
या मुझे जल्द मिलाने या उसे आनेको॥

ईमन—मांझ

गम रहा जबतक के दममें दम रहा।
दिलके जानेका निहायत गम रहा॥
मेरे रोने को हकीकत जिसमें थी
एक मुद्दत तक वो कागज. नम रहा॥
रोते देखा मुझको तो वह हंस दिया
बर्क चश्मे अब्रे बारां थम रहा।
दिल न पहुंचा गोशए दामां तलक
कतरए खूं था जमीं पै जम रहा॥
कहते हैं लैली के खीमे को शिया
उसमें मजनूं का सदा मातम रहा।
शब गुजर गई शाम होने आई मीर
तू न चौंका अब बहुत दिन कम रहा॥

अहंग

लाल रुखां समन बरां सर्व रवां कोस्तो।
सद्र दिलां सितमगरां आफत जदां कोस्तो॥
अज चमन कि रिश्तए नरगिसे दस्तबस्तए कद्र
शिकर शिकस्तए गुञ्जेदाहां कोस्तो।
अबरुए तो चु माहे तो बुर्दजे माहे नो गिरी
आफ्ते जानमन मशो फितनए जां कोस्तो॥
सर्वकदे तो दीद आम आहे अफलक शोदम
नरगिसे दीद दीदम ताबतवां कोस्तो।
खाकानो गुलामे तो मस्त शोद जिज्ञामे तो जाबिद
हद बनाम तो रूहे रवां न कोस्तो॥

२

मुतरिबे खुश नवा बिगुता जवता जनो बनो
बाद ए दिल कुशा बिगो।
बा सनमे चु लाबुते खुश ब नसीब खिलवते बाश
शिताब कामजू ताज बताज नोबनो।

बरजे है या तके खरो वरन मदाम
मयखोरी बाद बिखुर बना मोता॥
साकिए सीन साकेमन मस्त मयम
बियार पेशजू रदकि पुर कुनम सबूता॥
शाहेद दिल रुबाये मन मे कुनद
अज़ बरायन मन कशो निगारो रंगूबूता।
बादसबा चु बुगज़रो बरसरे कूय आपरी
फोसए हा शश बिगुता जबता जनोबनो॥

कलिङ्ग

सलोनो सांवरो प्यारो सजल सर जलद द्रग कारो।
मुकट शिर चन्द्रका छाजे तिलक बर भालमें भ्राजे॥
विकट भृकुटी अलक छूटी मनो मनसिजने है लूटी।
डोलनि छवि श्रवन कुण्डलकी लजत दुति भानु मण्डलकी॥
अधर मुरली सुभग नासा कपलोन चिबुक छवि वासा।
विराजित ग्रीव वनमाला कमल कर कन्ध दुति आला॥
मुक्त मनिमाल उर सोहै उदर त्रारेख मन मोहै।
रोमावलि असित है नीको जमुनको धारको लीको॥
ललित नाभी लगे प्यारो अगम जल अलि नयन वारी।
पिताम्बर कटि कसे आवे लखि अनङ्ग नित सकुचावे॥
जटित मणिकाछनो काछे गुहे घुंघरू ललित आछे।
जुगल जङ्घा हरत मन कों मनो मनिखम्भ निंदन कों॥
उरू पदकञ्ज अरुनाई झनक नुपूरन सुखदाई।
विशद नख अवलिका माए नखत गन देखि सकुचाए॥
त्रिभङ्गी ध्यान जो धारे अवसि भव जलधि सों पारे।
प्रगटि व्रजमें विहारन को लछनदासन उधारन कों॥

भैरवी

गुलशनमें देखता हूं सब गुलरवांमें तू है।
तुझ गुलबदनको प्यारे सारे चमनमें रू है॥
जिस गुल को तूने चाहा किया खूबियोंसे मामूर।
हर फूल औ कली में गुलगूं सभोंमें तू है॥
इस तख्तए चमनमें हैं गुल तरह तरहके
सब है जहूर तेरा सब रङ्गियोंमें तू है।

है नाजनीं तू ऐसा सानो तेरी न कोई
मुश्ताक तुझ दरसका इश्के, चमनमें तू है।
जलवा तेरे खुशरङ्गका हर गुलमें है झलकता
हर शाख बर्ग कहता दस्ता गुलोंमें तू है॥

कलिङ्ग

सांवरे महबूवका दिल कों सेरे ध्यान है
हां मनको सेरे ध्यान है।
देख मुकटको लटक पीत वसनको चटक
मनको मिटो सब भटक आनके कुरबान है॥
देख नैनोंकी कोर भौंहको प्यारो मरोर
मनको हरन चितको चोर माधुरो मुसकान है।
बरछी सी तिरछी निगाह करतो है सोमें राह
क्यों कर बचे कोइ आह किसको ए अब ज्ञान है॥
सुख ऊपर मुरलो धरे दुखको हरे सुख करे
गुञ्ज को माला गरे कुञ्जके जुञ्ज हान है।
कालिन्दीके तीर राम हर तरे करते विलास
वलवल जानकीदास सदके, कोती जान है॥

भैरवी

रहता हूं सदा तालबे दीदार उसीका।
बीमार हूं मैं निरगिसे बीमार उसीका॥
वंशीको तेरी तान है या तीरे सीना है
सूराख, मेरे दिलमें हुवा पार उसीका।
है गोपियोंका हाल परेशां जो बेतरह
दिखलाए कहीं तुरए तर तार उसीका॥
तन उसका है जां उसको है और दोनो दिल उसीका
मैं हूं ए खरीदार है बाज़ार उसीका।
है बुद्धिविहारी जो मेरा सांवरा साहब
करता हूं गुलामोमें मैं इकरार उसीका॥

खम्माच

सुध मेरी लीजिए आह नन्दनन्दन वनवारी।
विरहका घाव मेरे दिलमें लगा है कारी॥
हरिहो हरिहो हरिहो हरिहो।
याद आती है मुझे जब कि मुकुटको वो लटक
जान सीने से निकल जाती है सौ-सौ बारी॥
मिस्ल सौदाईके फिरता हूं परेशां अहवाल
जबसें देखी हैं तेरी गेसुए घुंघरवारी।
कौनसी बात पे रीझेंगे वे साहब हमपर
न हमें इल्म न कर्तब न कुछ जरोजारी॥
बुधविहारी जो तेरे शौकमें बेताब है दिल
कब देखावोगे मुझे सांवरी सूरत प्यारी॥

२

आहुए चश्म तेरा मोतियांदा हार न टूटे।
यह अश्के मुसलसल रहे पर तार न टूटे॥
हम पैर बिरहना चले सहराको निकल कर
हर चोब पुकारे के मेरा खार न न टूटे।
सैयादसे बुलबुलने कहा रोके कफसमें
मैं मर गई बलायसे गुलज़ार न टूटे॥
रातको मजलिसमें सुराहीको न लगो हिचक
प्याले से लगो कहने के खुमार न टूटे॥
मेखानेमें जा शोखीसे साकीने पिया मय
सीसए एकदिन खबरदार न टूटे।
मत भूलियो इन बातों को जाने दो चुप रहो
यह रिश्तये नाजुक है मगर तार न टूटे॥

सोरठ

रङ्गीली कान्हको बंशी पड़ो धुन कानमें प्यारो।
दर्द विरहा भरी जालम कहरसी जान पर मारो॥
धरो बेहाल सुनसुन कर जमीं पर प्रेम मतवारो।
कहे मुखसें कछू निकसे कछू मैं वारी गिरधारो॥
सभो सखियां कहे एसे तुजे को पोर है क्यारो।
कहे तू क्यों नहीं हमसे तेरे आंखोंसे जल जारो॥
कहूं मैं पोर क्या तनको तुमन पे ना टरे टारो।
लगन जो को लगे जिससे सोई मेटे विथा सारो॥
लिया चाहो धर्म्म तुम ज्यो मिलावो आन वनवारी।
तुमारे पाय पर परके जानकीदास वलिहारो॥

सोरठ—षट्

बिपिनविहारीको प्यारो बंसी
हमारो बैरन बजी है वनमें।
मदनमोहन बसकरन मन्त्र पढ़
हरत चित्त मन सुनत श्रवनमें॥
याकुल व्याकुल सुन सकल मधुर धुन
पड़त न कल पल फिरत भवनमें।
न जानं अब क्या करेगो ज़ालम
अगन लगा कर विरहको तनमें॥
है कोई ऐसा जो जा सुनावे
तरस जो आवे पियाके मनके।
ऐसा न कोजे जो दान दीजे जो
लाय लीजे लगा वदनमें॥
सुनत सहेली चली अकेली
तड़फ तड़फ जैसे बिजुली घनमें।
सो पूछो जाकर कहा जुदाकर
निकट बुलाकर सरस वचनमें॥
सुनत बिहारी बिथा करारी
सुरत विसारी जो तन अपनमें।
सखो पकड़ भुज ले आई हरिको
जहां है प्यारी खड़ी धरनमें॥
पकड़ जुगल भुज प्रिया प्रीतमको
आनन्द उपजो मदन सदनमें।
जानकीदास छवि दिरख दोउन को
हरखि हरखि सुख लेत द्रगनमें॥

सिन्धु—भैरवी

दुनियाके जो मजे हैं हरगिज यह कम न होंगे।
चरचे यही रहेंगे अफ़सोस हम न होंगे॥
आग़ाज़ इश्क़ होमें शिकवा बुतोंका ए दिल
टुक सब्र कर अभी तो क्या क्या सितम न होंगे॥
बुलबुल का दाग़ दिल से हरगिज जुदा न होगा
कल हाथ दोनो जबतक मेरे क़लम न होंगे।
दिल लेके सबका साहब मजलिससे उठ चले हो
कोइ दमके आशकों के सीनेमें दम न होंगे॥
ज़ुलफ़ोंको तेरी निस्बत सम्बुलसे कम नहीं है
जब चाहो देख लीजो यह पेच खम न होंगे।
सुनता हूं बाद मेरे दिले दख़्ल ग़ैर का है
तुमसे अलाहदा हम कभी एक दम न होंगे॥
पावे देखाके कर दो मुझको ज़मींके अन्दर
सुनते हो गरचि हम पर रञ्जो अलम न होंगे।
लगतो न पलक मेरी निशदिन सबार है
आंखोंमे मेरे जबतक मोरे क़दम न होंगे॥
यारो गिरफ़्तगोको क्यों रोई बतरकी क्या
क़ुरबान हुवे गुलपर गुलको अदम न होंगे॥

लंभोटी

रहता हूं सदा तालबे दीदार तुम्हारा।
मुद्दतसे मेरा दिल है गिरफ़्तार तुम्हारा॥
उम्मेद यही शामो सहर रखता हूं दिलमें
रब्ब ही देखलावेगा दीदार तुम्हारा।
महताब मो खिजलतसे चरख पे है घट गया
क्या ख़ूब है मुखड़ा यह तरहदार तुम्हारा॥
दिल देने को तयार हैं कितने हो ख़रीदार
क्या गर्म है यह हुस्नका बाज़ार तुम्हारा।
यारोंको तो मुखड़ा ज़रा देखलावो नाज़नीं
देखा करें यह हुस्न सुबह शाम तुम्हारा॥
यह बात ख़ताकी है तो हम जावें ख़ुतनकों
है नाज़ नहीं जुल्फ़का हर काम तुम्हारा॥

बिहारी

कैसा सितम यारो किया बाद सबाने।
गुनचोंको है खिला दिया बाद सबाने॥
सिर सङ्गसे टकराया इस ग़मसे हिनाने
किस तर्फ़ है भुला दिया बाद सबाने।

२

जमशेद कहां जम कहां ओ कहां दारा
दुनिया है मकारा॥

बस भूल गये तुम मो उस हक्का सहारा ।
उस तर्फ से भूल गए सबको हमदम
रब्बा विना न कोई अपना दुनिया हुवा सपना
कहता है मदन हैदरी हैदरके करमसे
ए तेरा कार जहां जाए जब करम करे करतारा ॥
दुनियामें तेरा कोइ नहीं मन कहत हो पुकारा ।
हरनाम उचारा भवके जो पार पोसें
हर का है सहारा ॥

२

तुम बिना दिल नहीं लगता है मेरो जान
ए मेरे दिलजां ।
मानिन्द शेर फिरता हूं हर शहर बियावां
नहीं डरता हूं मैं आपसे लग जायगी कहां ॥

४

जातें हो पास गैरोंके सुनता हूं मैं हरदम ।
वहां होता है मुझे गम
ऐसा जो कोई करता प्यारे जौर ओ सितम ॥

रेखता

आज मोहन मोह लई बांसरी बजायके ।
हरि हरि सब करत जात गागर शिर धरत जात
नीर नार भरन गई सुध न रहीं सरीरकी ।
वन वन सब ढूंढ़के कटाय डारू बांसरी
ना उपजे बांस नाह बाजे बांसरी ॥
मोर मुकट सिरपे धरे हाथ लई बांसरी
पेमसीकी राखे निकास लई सांसरी ।
विरहिनीकों बसमें करो कामकों जगायके ॥
ग्वालनी सब मोह लई राधिका रिझायके ।
सूर प्रभु मगन मए इतना गुण गायके ॥

रेखता—कलिङ्ग

मोर मुकुट अली अलक तिलक
कुण्डल की लटक फिर तैसेही ।
मेरो मन मोह्यो नन्दलला चोरेकी चटक फिर तैसेही ॥
भाल विशाल विशाल दृगन दुति
पलकनकी गत तैसेही ।
तिरछी चितवन चित चोर लियो
भौंहोंकी मटक फिर तैसेही ॥
लोल कपोल मोल लीनो मन
शुक नासा छवि कौन गिने ।
हांसी फांसी सम विन्दु लसें
दांतो की चमक फिर तैसेही ॥
अधर चमक रसना ठोढ़ी वर
गर कौस्तुभ मणि कण्ठ लसे
भुजदण्ड सुदण्ड करी वे मानो पटपीत-दमक फिर तैसेही ।
कमला भृगुको पदचिह्न लसे
वक्षस्थल उर रेख महा नाभो सर ओ वनमाल बन्यो
मणिमाल झपट फिर तैसेही ॥
कट केहरी जङ्घ कछे कछनो
ओ चाल गयँदन की निदरी जानु प्रभानु चरण पङ्कज
मन मधुर अटक फिर तैसेही ।
वेनु बजावत आवत गावत सुख उपजावत मैंन ठगे
सांवल सोअङ्ग त्रिभङ्ग भेष नटवरकी भटक फिर तैसेही ॥
अङ्ग रङ्ग तन मन पगे जिय नोछावर कीजे
सङ्गे दास मुकुन्द अनुपम शोभा
उपमाकी भटक फिर तैसेही ॥

राग अहङ्ग—गज़ल अंगरेज़ी

संगष्टर सुइट विगिन दि ले ।
एवर निउ एण्ड एवर गे ॥
ब्रिङ्ग दी जय इन्सपायरिङ्ग वाइन ।
एवर फ्रेश एण्ड एवर फ्राइन ॥
विइटस् ए हारट एण्ड रिगेल अस ।
जेण्टली लेट दी मोमेण्टस् पास ॥
कीस ई ष्टीलिङ्ग ब्वेन यू मे ।
एवर फ्रेश एण्ड एवर गे ॥
जेण्टल ब्वाय ब्रज सिलवर फीट ।
नो मोर सुब टु केडेन्स् स्वीट ॥
फिल अस कुइक दी जिन रोश वाइन ।
एवर फ्रेश एण्ड एवर फ्राइन ॥

छाड़ ज्वाय लाइफ़ डेडो ओसओ अरस ।
ज्वाइथ ओट वाइन ससो डीउसियो अरस ॥
दीज़ विल मेक टाइम पास
एवर फ्रेश एण्ड एवर गे ॥
टु मि दी खीट एनचेण्टिङ्ग मेट चारमस ।
डीवोट्स देट नेवर फ़ेड ॥
चारम टेरेश पाथर हरपोटससाग ।
एवर फ्रेश एण्ड एवर पाग ॥
जिफाइरम ह्वाइल यू जेण्टली मूव
बाइ दो मेशीन आफ़, माइ लव ।
सफ़्टली हार्फिज सम इसष्टेस रिपीट
एवर फ्रेश एण्ड एवर खीट ॥
ओ माइ डियर, गड नो मेन कैन सो डियर
इज नो सोर वट वान गड टु आई ऐम प्रे ।
ओ लर्ड हियर माई दीज़ पूअर वर्ड्स नो मेन कैन सो
ध्रध्र ध्राँध्राँध्राँध्राँध्राँध्राँध्राँ तरोलल्लल्ननंनंना नंन
नंनाननननना ॥

झंझौटी

दीवाना किया बज़्ममें शब आके किसीने ।
बेहोश किया चहरे को देखलाके किसीने ॥
कुछ दस्त दराज़ी का इरादा किया मैंने ।
झटका वहां हा हाथ फिर शरमाके किसीने ॥
रखियो मेरी तुरबत पे गुले दस्तए निरगस ।
मारा मुझे दीदारसे तरसाके किसीने ॥

२

किसके घर रात राहे आए हो शरमाए हुए ।
सोने को चाक किए दिलमें हो घबराए हुए ॥
जिसका दिल लेना है मञ्जूर किफायतसे कहो ।
पैर फैलाके जो तुम बैठे हो मचलाए हुए ॥
आपसे मैं नहीं आनेका तेरे दरकी तरफ़ ।
दिल ले आता व लिये जाता है दीड़ाए हुए ॥

झंझौटी—एकताला

काहेकूं बांधत तीर कमनिया ।
भौंहें बनी कमान तुमारो
पलक बन्द उर कसो कमनिया ॥
सन्त हृदय मृग वन वन ढूंढत
चुनि चुनि मारत शबद रसनिया ।
राम सखे तू घायल कीता पुहुंचाए हैं सुरगनिसनिया ॥

झंझौटी—रेखता

समझ मन जानेकी मैं बदनामीमें क्या है ।
गोश कुतब अम्बिया सब ऐसे कहता है ॥
भूखे प्यासेको देना सङ्ग यही चलता है ।
प्यारेको राखो याद मौलाकी रजा है ॥
छके हैं जे दरससे उनको शराब क्या है ।
सुखसों सङ्गती हरिक दुखमें प्यारा आता है ॥
जिन्दगानी जोना उसका जो नेह निभाता है ।
दिल मिलाता दिल सेती जिनसे छाना रखना क्या है ॥
जो न चाहें अपने तांई जिनको चाहना क्या है ।
वल्लम सो लगा नेहा वाही दिलमें भाता है ॥

झंझौटी—तिताला

दिल कहीं मेरा गिरफ़्तार हुवा चहता है ।
फिर मुझे इश्कका आज़ार हुवा चहता है ॥
वो तो परदेसे निकलता नाहीं हरगिज़ बाहर
जिसका तू तालबे दीदार हुवा चहता है ।
पान खा खाके लबे बाम फिर वो आने लगा
खूं हमारा पसे दीवार हुवा चहता है ॥
देख लेने दो ज़रा और भी मुझको यारो
बन्द अब रोज़ने दीवार हुवा चहता है ।
गुलपे गुल खाए जो फ़ुरक़त से तेरो सोने पर
सोना अब तब कोई गुलज़ार हुवा चहता है ॥
बात करता है रुकावटसे खुदा खैर करे
मुझ पे यारो सितमे यार हुवा चहता है ।
ऐसा भड़काया रकीबोंने उसे वाय नसीब
दुश्मने जां मेरा दिलदार हुवा चहता है ॥
कहिये उस परदेनशींसे तेरी खातरके लिए
आज रुसवा सरे बाज़ार हुवा चहता है ॥

विहारी

हाथ फिर बहशतने फैलाए गरेबांकी तरफ़ ।
फिर मुझे जाना पड़ा कोहो बियाबांकी-तरफ़ ॥
फिर बहार आई गुले रुख़सार याद आने लगे
उड़चला दिल मिस्ल बुलबुल फिर गुलिस्तांकी तरफ़ ।
आस्तीं फिर आंसुओंसे आह तर होने लगी
फिर उमड आने लगे यह अश्क दामांकी तरफ़ ॥
फिर यह दिल मायल हुवा उस काकुले ख़मदारका
फिर चला दौड़ा हुवा दीवाना जिन्दांकी तरफ़ ।
राग रङ्गमें रङ्ग हुवे मस्ताना हो मस्तानेके
इश्क़ ख़ूबांकी बहार देखो परस्तांकी तरफ़ ॥

झंझौटी—पक्की

कहते हैं जौन ब्रह्मको के आद अमर है ।
उसके नहीं फ़रज़न्द न मादर न पदर है ॥
दिन रातको है रोशनी वह शम्स कमर है ।
हर जापै हर समयपै जिसका यह असर है ॥
तहकीक. किया ख़ूब वह हर घटमें रम रहै ।
व्यापक है ब्रह्म कृष्णानन्द व्रजमें रम रहै ॥

ग.ज.ल—विहारी

आराम कहां दिल तो बड़ा गैरोंके पाले ।
मुफलिस को खुदा इश्कके फन्देमें न डाले ॥
डाले तो जनाजे, पे खड़ा इश्क पुकारे ।
अब तुम तो चले मुझको किया किसके हवाले ॥
अरे हारे जा जा बात नसीहत को ज़रा मान ।
अब टुक तो ज़रा देख ले यह चलते हैं नाले ॥
जो दर्द सताता है सताके तू हंसा ले ।
क्या तू न पड़ेगा किसी बेदर्दके पाले ॥

२

मालक कुल आलमके हो तुम सांचे श्रीभगवान ।
थावर जङ्गम पावक पानी धरती वो आसमान ॥
सबमें जलवा तेरा तेरी कुदरतके कुर्बान ।
सुदामाके दरिद्र काटे पांड़ेकी पहंचान ॥
अहे दो मूठी चावलका चाखी बख़्शे दो जहान ।
महाभारतमें रथ हांका अरजनकी पहंचान ॥
उनने देखा अपने कुलको पटका तोर कमान ।
कौन है मरता कौन है जोता यह तेरा अज्ञान ॥
तैं तो चेतन अजर अमर है जो गीतामें ज्ञान ।
लख चौरासी ढूंढ़ है आया कर हरिको ध्यान ॥
हरविलास आसा चरणनकी कुदरतके कुरबान ॥

कलिङ्ग

क़त्ले उश्शाक़ किया करते हैं ।
बुत कहीं खौफ़े खुदा करते हैं ॥
सिर मेरा तनसे जुदा करते हैं ।
दैरको आपो दुआ करते हैं ॥
मर गये पर हदफ़े तीर यार
जा बजा तोदा बना करते हैं ।
नातवानी ने दिए पर मुझकों
जो परीको हुमा करते हैं ॥
ख़ून रोती है चमनमें बुलबुल
हम जो फुलोंसे हंसा करते हैं ।
रोज, दो चारका करता है ख़ून
दस्तो पा सुर्ख़ रहा करते हैं ॥
राज, महशरसे डरे क्या आशक,
ऐसे हंगामे हुवा करते हैं ।
दहने ज़ख़्मसे उस क़ातिलको
तेगको चुन लिया करते हैं ।
हम बने चांदके हाले गोया
गिर्द उस महके रहा करते हैं ॥

विहारी

सन्दली रङ्गपै मैं मर ही गया ।
दर्द सर किसका यां सर ही गया ॥
क्या लिखूं खत के तेरे ख़त निकला ।
कहियो कासिद कि वो दफ़्तर ही गया ॥
ए मसीहा न खबर ली तूने ।
वो जो बीमार था सो मर ही गया ॥

पैर तो मैंने अदब से न धरे ।
राहमें तेरी मेरा सर हो गया ॥
वो मुआ कौन करेगा यहां शोर ।
आपके कूचेका वो शर हो गया ॥
ए मसीहा मैं करूं क्या जोके ।
पाससे मेरे दिलवर हो गया ॥
जान भी मेरी गई हमराह ।
नामे क्या लेके कबूतर हो गया ॥
अपने कातिलका लड़कपन देखो ।
देख कर खूंको मेरे डर हो गया ॥
कत्ले उश्शाकसे अब न कर तहे तेग़ ।
अबरू बाजू के अन्दर हो गया ॥
और गैरोंसे वो क्या कहता है ।
एक सिर थामे मेरा फ़िकर हो गया ॥

२

गरक शोशे मन असरे दास्ते यार बकूय गुजरे दास्ते ।
आंके जहां रवागी जिन्द करद कास बुमन
हमनजरे दास्ते ॥
रफ़ते ओ परवाने ओ मे शुदे शमा गर बाल परे दास्ते ॥

जिहारी—खम्माच

रात उस कूचेमें क्यों कर मेरा जाना बनता ।
देख लेता जो कोई खाक बहाना बनता ॥
मेरी ओ तेरी मुलाकात जो होती जानो ।
दुश्मने जान मेरा मारा ज़माना बनता ॥
डर है और खतरा मुझे खौफ़ है जासूसोंका ।
बने कब उससे तुझे ले के रवाना बनता ॥
हम फ़क़ीरोंमें भला कौन सा होता अपना ।
दिल लगाना न कहो कैसे लगाना बनता ॥
सोहबते यार अगर होती मुझे वाय नसीब ।
फिर न ताज़ीस्त मेरा दिल यह दिवाना बनता ॥
मुतरबे बज़्ममें उस महके किसी तौरसे आप ।
यह गज़ल उस बुते रानाको सुनाना बनता ॥

सोरठ

कहो मन राम औ सीता । जनम यह जात है बीता ॥
जैसे घुन काटको खोवे । तेसे यह क्षीन तन होवे ॥
इनको निपुन पति सङ्गी । न ध्यायो नाम तिरभङ्गी ॥
कठिन है जाव जमघाटो । लुटे जहां सिद्ध सन्यासो ॥
जमा सब जात हो हारे । परे गरे तोंक अति मारे ॥
लिखा जब हिसाब लेवेगा । वहां का जवाब देवेगा ॥
रहो है भूल मायामें । न चीनो चोर कायामें ॥
मखन एक कोर जब पावे । सदा गुण रामके गावे ॥
क्षणानन्द गावत यह ताना ।
सुन्दर वदन मदन मन मोहन सों जो लागा ध्याना ॥

भूपाली

प्यारी दधि बेचनके मिश आवे ।
गरब गहीलो आहे ग्वालनीरे तोरो गत कोउ न पावे ॥
उझकत झांकत बोलत सुनावे ।
पतकी लज्जा राखे अचरा छुड़ावे ॥
मन चितवत आनंद मन भावे ।
कबहुं दोरत कबहुं परावे काहूंके दधिको मटको गिरावे ॥
श्री झलकत सब गोपियनमें कर धर वोन बजावे ।
सूरदास स्वामी तुमर दरसकूं रोझ रोझ गुण गावे ॥

एकताला

अरे महरवारे मोरो डोलिया ले आवो ।
जाहु ले चलो मोरे पियसों मिलावो ॥
आइला दिन गवननके अब मोपै रहिलो न जाय ।
याहु मोरो पीर पावो ॥

लावनी—भूपाली

भजन कर सजन कृष्ण केरा ।
मिट जावेगा तेरा लख चौरासी का फेरा ॥
अरे मन तू मत कर अभिमाना ।
अमर नहीं कोई इस जगतमें कर ले हरि ध्याना ॥
सचर अचर सब जीव पड़ा है काल जाल माहीं ।
हरि भज लीजे बिलम न कीजे कर चित एक ठाहीं ॥
परे जब काल आय नेरा ।

रहे धन दौलत माल धरा सब लाखनका डेरा ।
छोड़ चलैगा छिनेरा आखर कोई नहीं तेरा ॥
राम रुपैया रोक अमोलख खरचे नहीं खुटेरे ।
हस्तिराम हरिनाम हुण्डियां लिखि दई गुरु तूं ठेरे ॥

लावनी

अजहूं समझ मन मेरा मूरख एदिन फेर न आवैगा ।
हरि विन विरथा जनम जात है फिर पाछे पछतावैगा ॥
बालपना सब खेल गमाया लरकनके सङ्ग जाता था ।
तरुणापन तरुनीसे खोया विषे वासमें रहता था ॥
विरधपना बेकाम न खोना राम नामसे ले लेना ।
माव भक्त कर जुगत समेती खूब तरे गोविन्द गाना ॥
आगे जरा अवस्था आवे जामें बहुत दुख पावैगा ।
हाड़ मासमें सूल पड़ेगी जब क्या गोविन्द गावैगा ॥
कृष्णनाम सों मुक्ति होवे रामनाम सों तरना है ।
हस्तिराम हरि सुमरण कर ले
तासों भवपार परना है ॥

२

सुफल जन्म तेरारे मिटे चौरासी का फेरा ।
कर दरशन गिरिधरन राजको सुफल जनम तेरा ॥
पूरब देशमें पुरी जो मथुरा गोकुल का मेरा ।
सीतल जल ठकुरानी घाट का जहां वैष्णवका डेरा ॥
सुन्दर मन्दिर सात सरूपके देवल ऊंचेरा ।
ध्वजा फहरके नौबत बाजे घड़ी घड़ी सवेरा ॥
नर नारी हिल मिलके आवें गुण गावैं हरि केरा ।
दरसन पावे आनन्द आवे तरे भवसागर बेरा ॥
हरि हरि करतां हरे सकल दुख सुख होय अधकेरा ।
कृपा करो हरिदासके ऊपर राखो चरणन नेरा ॥

३

गगरिया उतारेरे वनवारी । तेरी सूरत पर वारी ॥
ले गागर सागरकों निकसी कङ्कर मारी गिरधारी ।
गगरी फूट गई चुनरी मोज गई
सास ननद घर दे गारी ॥
उड़रे कागा जावो दक्षनकों खबरां ले आवो प्रीतमकी ।
प्रीतम मेरा फूल गुलाबी मैं कलियां सुख दरसनकी ॥

४

रखनेवाला सोई है बैल वाला ।
आसन बनारसीमें डाला पहरे गल विभूत मृगछाला
वर देवेकूं बड़ो दयाला ॥
तुम तुम तुम तुम डमरूवाला
सोहै त्रिशूल और मृगछाला ।
बाघम्बर अम्बर सोहै शिव जटाजूट मन मोहै ॥
रागरङ्ग करत है गाने कृष्णानन्द गावत है ताने ॥

५

काननें बजाई वांसरी मुझि विलमाईरे ।
सखी जब जमुनाका नीर भरन कूं जाईरे ॥
एक दिन जल भरनेकुं चली सोस धर मटकी ।
मोहे मिले नन्दके लाल बांह मेरी झटकी ॥
मेरे तोरा हार सिङ्गार चोली सब तरकी ।
मैं तो गिरि रपटके पाव फूट गई मटकी ॥
मैं गिरि धरम पे जाय सखी सब सटकी ।
मैं तो हो गई हाल विहाल देख छव नटकी ॥
मैं गई सुधबुध विसराय सरम नहीं रईरे ।
मोहे मिला नगर का लोग भरम सब गईरे ॥
मेरी सास सुने और ननद सोर सुन करई ।
सुन पावे गुरुजन लोक तासों मैं डरई ॥
जब देख बहूका हाल सास तब बोली ।
बहू कहाँ फटा तेरा चीर अङ्गकी चोली ॥
बहू कौन मिला बलवान भरी मेरी ओली ।
बहू बड़ी भई है खैर कंथ घर पोली ॥
मेरा पुत्र बड़ा जलजाल सांचा कहु मेरे ।
एरी कुलकूं लगाई दाग लाज नहीं तेरे ॥
जब कहत बहू सुन सास अरज एक मेरी ।
या गोकुल ब्रज को नार बड़ी छल हेरी ॥
कहने लागी सब सवत देन लागी गारी ।
मेसों झटझोटा हुवा चोर तहां फारी ॥
नबल जबरका सङ्ग मुझे दे मारीरे ।
बहू कहे चतुराई सों बात समारीरे ॥

यह छलबल सों कर बात सास समझाईरे ॥
सास किया बड़ प्यार अङ्ग भर लाईरे ।
बङ्क औगुन लिये छिपाय चतुरताईरे ॥
कहे केसव दास बनाय सगुण ब्रह्मताईरे ।
कृष्ण पूरन अवतार पार नहीं पाईरे ॥

कहरवा

न बजावो मोहन मुरली जादू भरो तोरी तान ॥
जैसी तोरी बंसीकी बाजन तैसोई तेरो गान ।
कुलको कलङ्क लगावत धावत सुन कान ॥
छांड़ आई पीवत बालक छोड़ महीको मथान ।
प्रेमरङ्ग प्रभु सङ्ग निशदिन खेलन परो बान ॥

ठुमरी

सिकियाके चोरी चोरी बंगला छवाव
तू खिरकी रखतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरियाके करी सुरतिया
सइयां मोरा भुललीरे गोरी ॥
बंसवा कटाय कैसे बंगला छवावती
खिरकी रखतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरीयाके करी सुरतिया
सइयां मोरा भुललीरे गोरी ॥
सोवनाके थरवामें जेवना परोसती
घियना डारतीरे गोरी ।
गोरियारे गोरिया जेवईको बेरिया
सइयां भुललीरे गोरी ॥
चुन चुन कलियां मैं सेजियां बनावती
फुलवा डारतीरे गोरी ।
गोरिया सुतईको बेरिया सइयां
मोसों रुटलीरे गोरी ॥

लावनी

नन्दनन्दा मोहै प्यारे कृष्ण गोविन्दा ।
वृन्दावन रास रचन्दा सुर नर मुनि सब वृन्दा
करे रासविलास आनन्दा ॥
घर घर हरि माखन खावे व्रज गोपानके घर जावे
दौरी जो आप बो धावे ।
कुम कुनन ठुमकत आवे तत थेई थेई नाच नचावे
घुटुरन जलदो हरि धावे कृष्णानन्द लावनी गावे ॥

विहारी—खम्माच

आंख उस अबरू तमासे जो लड़ाना बनता ।
दिल मेरा नावके मिजगांका निशाना बनता ॥
सामने कातिले शफ् फ़ाक् के जाना बनता ।
सिर तहे तेग् अजल काश झुकाना बनता ॥
अपना बेगाने का करता न कभो मैं शिकवा
यार बेगाना अगर वो न बगाना बनता ।
याद होतो मुझे गर किस्सए शीरींफ़रहाद
हाल दिल उसको शबे वसल सुनाना बनता ॥
सखो अनजाममें होता न अजलसे साकी
वार एक और जो कातिलका लगाना बनता ।
गोश अलताफ़से सुनता वो अगर हाल मेरा
हरके शिकवाको न तक्रीर सुनाना बनता ॥
दस्तपा सुरख् मेरे खूनमें करना कातिल
शौक् यह रङ्ग हिना का तो बहाना बनता ।
रश्क शानासे न होता मुझे दर्दे शाना
मेरा शाना जो तेरे जुल्फ़का शाना बनता ॥
दोस्ती वारको उससे ज्योंहो होतो मजनूं
दिलको फिर सारे जहाँ सेतो छुड़ाना बनता ॥

लावनी—भूपाली

आज हम देखे गिरिधारी ।
सुन्दर वदन मदनकी शोभा चितवन अनियारी ॥
बजावे वंशी मदुवनमें ।
मावत तान तरङ्ग रङ्ग अति बैठे ग्वालनमें ॥
सोहनो मूरत है प्यारो ।
निशदिन दिलमें वसो रहत है टरत नहीं टारो ॥
प्रेम दी लगन लगो जगमें ।
आन मिले दिलदार यार दीदार करो जगमें ॥
सांवरी सूरत है प्यारो ।
वंशीवट कट निकट जमुनतट निरतत वनवारी ॥

लावनो कहते नटवरको ।
कृष्णानन्द आनन्द मगन भए श्रीराधावरके ॥

लावनी—विहारी

गिरिधर मुरलो बाजे कृष्ण तेरो
आवाज़ सुन कर मैं दौरो ।
बीजल ज्यों असमान चलो बादल ज्यों गाजे गहरो ॥
नागड़ दम नागड़ दम कदम कदम तरे
बाजे बांसरो मोहनको ।
रिमझम रिमझम मुरलो बाजे
तट जमुना पे लाग झरो ॥
हातमें लठिया कांधे कमलिया कृष्ण चले वृन्दावनमें ।
सभी गवाले धेन चरावें हिलमिल बैठे कुञ्जनमें ॥
तट जमुनाके तीर कृष्णजी गए जल जमुन न्हानेको ।
रिमझम रिमझम मुरलो बाजे
लगे लाल गुण गाने को ॥
हो नन्दजीके व्रजबासी कन्हैया
हमसे कर गए बहाना ।
दूध दही सब छीन जो खीन्हो भए हरी मस्ताना ॥
कृष्णानन्द रहत निशवासर हरिके चित ध्याना ।
तन मन धन सब अरपण कीन्हे हरिचरन मन माना ॥

२

सुफल जन्म तेरा रे मिटे लख चौरासीका फेरा ।
कर दरशन गिरिधरनराजका होय पार बेरा ॥
व्रजमण्डलमें पुरी ज्यों मथुरा गोकुल के नेरा ।
शीतल जल ठकुरानो घाट का तहाँ बैष्णवनका डेरा ॥
सुन्दर मन्दिर सात सरूपके देवल ऊंचेरा ।
श्रीनवनीत प्रिया तहाँ राजत जशोदा नन्दकेरा ॥
मथुरानाथ मनोहर मूरत विठलनाथ मेरा ।
दीनदयाल द्वारकानाथ है गोकुल चन्द्र नेरा ॥
गोकुलनाथ अनाथके नाथ है कृपादृष्टि हेरा ।
मदन मोहन सोहन सूरत है बालकृष्ण घेरा ॥
कल्यानराय व्रभङ्गी नटवर मुकुन्दराय हेरा ।
श्रीगिरिधर गोस्वामी सेवा करे गोपाललाल केरा ॥
श्रीवल्लभ श्रीविठलनाथ प्रभु विष्णु स्वामी मेरा ।
नरनारी मिलजुल सब आवें दरस पावें हरि केरा ॥
प्रसाद पावें कीर्त्तन गावें पुष्ट मारग केरा ।
रामसागर आनन्दमें निशदिन तरे भवसागर बेरा ॥

लावनी—देश

गगरी भरोरे दही दूधनको ।
मैं बेचनकुं चली नजरां पड़ोरे तेरे कन्हैयाको ॥
मुस्कल हुई जानेको चोरालो लगावता गेंदेको ।
छोड़ देत काहनो कड़ा लिया रे तन वदनेका ॥
अजब खियाल कन्हैयाका जशोदा देख ले
तेरे फ़रज़न्दको ।
दूसरो ग्वालनो इमकर बोलो
देखे जशोदा मेरो वृन्दावनमें भई अकेली ॥
के मेरे शिरपर को गगरी तेरे कन्हैयाने ढोरी ।
सारी भिजोई ज़रतारनको सास मारत वह दोरी ॥
तातें लाग्यारे कान्ह हंसनेको ।
तीसरो ग्वालनो इमकर बोलो मैं देखे जसुधा मेरो ॥
ताँ ठाड़े वनमालो सुजकूंकेतारे सुन अलवेलो ।
देखुं चम्पाकली हार लियारी गजमोतिनको ॥
अजब ठिकानारे गोकुल नगरी ताँ ठाड़े वनमालो
बंशी बजावत सारङ्गधारी ।
रिमझिम रिमझिम मुरलो झननन तानन सो तननन
ताथेइ ताथेइ ताता नाचतरे रासमें रङ्गिनको ॥

२

शिव शङ्कर जूको लीला परमसुलीला ।
चढ़ा बैल व बाघ तबेला दुर्गा अपने पास कबीला ॥
गणेश बालक अजब छबीला रङ्ग रङ्गीला ।
बूटेदार बाघम्बर पोला तापर गज चर्म्माम्बर गोला ॥
गर सो गरो बन्यो है नीला मरकत मणि
जों है नीला ।
भोलानाथ चित्तते ढीला सीस गङ्गा जटा सलिला
तापर अमृत राय वसीला ॥
रसिक रसीला शिव बमभोला खेल छबीला
रङ्ग रङ्गीला ॥

२

मेरी लाडलीके मन्दिर आगे नाचेरी गणेश ।
पग दोनों चौरासी बाजे हाथ कमलका फूल ॥
लम्बी सुण्डको लटक बतावे एकदन्तको झल ।
तिसरे हाथमें वेद लिये है चौथेमें तिरशूल ॥
सब पञ्चनकों राम राम मेरे गुरुकों है आदेश ।
थुङ्ग थुङ्ग तकथुङ्गा धोलाङ्ग थेई थेई ताता थेइ थेइ तत् ॥

लावनी—जंगला

मेरी मदन मोहन सों प्रीत लगीं दोउ अंखियां ।
मोहे विन देखे नहीं चैन रैन दिन सखियां ॥
मैं बंशीवट पनघट मरने गई पानो ।
मेरो नजर पड़ गया आह श्याम दिलजानी ॥
जब आह आह कर नार भई बेहाले ।
तब पड़ो धरन पर जाय डसो जों काले ॥
सब देख प्यारो का हाल सखी भई जरदी ।
कहे ढूंढ़ ले आवे जल्द श्याम बेदरदी ॥
चल नन्दनन्दन से जायके कहा सहेलो ।
चलो तुम विन रही है सूख मदनको वेलो ॥
जब सुनति आए नहीं कहा होस विसराने ।
जब चले दौर जो जा कोइ आग बुझाने ॥
तब प्यारो प्यारो कहे उठा श्याम गल लाए ।
जब सखी मगन भई जानकीदास मुख गाए ॥

३

ए री ग्वालनो कहतो जशोदासे ।
संभाल अपना गोकुल कन्हेया जुलम पड़ा हमसे ॥
एक दिन जल मरने जातो ।
सात सहेल्यां हिल मिल ग्वालन नखरे सों चलतो ॥
कृष्णने मोहो मेरी जान ।
महलोंके ऊपर महल मेरा आधोरात का जो पहरा ॥
किधर सों आया कृष्ण तेरा ।
हो गया किस्त और मिस्त लिया शिर आन मेरा ॥
मेरा मन हरा हरो मेरी जान ।
उलझे नैना आवेना करे ओ सैना से सैना ॥
कृष्णानन्द गावत यह ताना ।
सुन्दर बदन मदनमोहनसों जो लागा ध्याना ॥

लावनी—जंगला

हम तेरे वे खातर बड़ी दूरसें आते ।
तुम हमें देखके क्या मुखड़ा छिपाते ॥
हमसों जो लगाई लगन काहेकूं तोड़ा ।
मेरो कोन गुन्हा तकसोर बोलना छोड़ा ॥
हम तेरे इश्कमें जोबन जोय जलाया ।
चला हिरदेसो बेदरद दरद नहीं आया ॥
यह साह बली उस्ताद गावता ख्याले ।
पर इश्कका फन्दा बड़ा बुरा जञ्जाले ॥

२

सुन सहेलियो मेरा लाल मनावो ।
थल पसारके मेरा दरद सुनावो ॥
तुम जावोगे हमे सङ्ग ले जाना ।
मैं अकेलो मेरा धरकता सोना ॥
बिया मत जारे परदेशां का जाना ।
कोई साल दुसाला ओढ़ लपटके सोणा ॥
इस पहरेमें क्या परदेशीको पोते ।
उठ चला महोबत छोड़ जगतको रीते ॥
इस पहरे में क्या रंड़ोको असनाई ।
कोई कठिन प्रीतको रीत चातुरा भाई ॥

३

परदेशीसे महोबत करके दिलमें पछताना ।
छोंड़ चला बेदरद बिछुरेते लाज नहीं आना ॥
धर घोड़े पर जीन सिपइया राज सुनजारे ।
निकाल कमरसों कटार मेरे तनक मार जारे ॥
भली करो मोलेने जोड़ी बिछुड़ाई ।
याद करो उस रोज बिछुड़ेते लाज नहीं आई ॥
छोटा सा एक यार हमरा ढूंढ़ा जग सारा ।
देश कवन सो जाय कि घरको भेजो हरकारा ॥

४

ले गागर सागर सों निकसो कङ्कर मारे गिरधारो ।

गगरो फूट गई चुनरी भीज गई
सासु ननद घर दे गारी ॥
जल भरनको जाय मेरा लाल पनघटवा ।
उड़ो काग तुम जाव दखन को
खबर लावो मोर पीतमकी उमगे जोबना कहा न माने
नदिया बाड़ो सावनकी ॥
इश्क करोगे मुसकल होगा रंडी अपने मतलबको ।
इन बातनमें नफा नहीं है सङ्गत कर ले साधोंको ॥

अहीरी—प्रदीप

माया बेधर हो मन ए दईं निकसब कैसे क होई ।
जगमें आय कछु भक्त न कीनो
निशदिन खाय खाय सोई ।
तन मन जिउ पिउ कछु नहीं जाना
वेस अकारथ खोई ॥
का आया कायाके हो गए याही को मल मल धोई ।
चलतको बार याहु सङ्ग न लागी और लागे कब कोई ॥
का जम बेत सों हैतको विरवा खेतमें जोको बोई ।
शिव ले नामकों सांझ सवेरो फल पावे गो सोई ॥

२

माया क्या हमकों भटकावे ठोर ठोर है वोही ।
मो उरझाइके आप उरझा है अब निरवारे सोही ॥
कों उरझा और कामें उरझा एही है एही ओई ।
जोहि जोहि काज का रूप धरा उन सो एको ने होई ॥
कुन्त लियो पहले विन जोते कैसे जोतां बोई ।
सत गुरु मिल सब घायो काजम तनक कुमतिया खोई ॥
पियाको मिलि आनन्द सङ्ग जागो खाई सोई ॥

३

खट कबतक हम भरिए दुखके दिन अबतक पिय
नहीं अइलो मा ।
बीते असाढ़ तबके विन पीके रो रो सावन गइलो मा ॥
भादो आसन पियको आस न
कौन कौन दुख सहिलो मा ।
बारा मास दुःख में गुजरे कौन कौन गम खइलो मा
दुखके दिन कौने दिन जइ हैं
कब सुखको निश पइलो मा ॥
पियके मीत काजमसे पूछतो कहा धीरजको गइलो मा ॥

खट

चित मोरा पिय ओर के भरे अब को गगरी ।
लागी लगन पिय ओर को जबते
लोक लाज तबही बिसरी ॥
कूछी गगर धर जात डरे जिउ
कैसो पीत लगत करो डगरी ॥

श्रीरामदूताय नमः

लावनी—कलांगड़ा

हनूमान वीर बंका जिनका मुलकोंमें डंका ।
हुकम पाय कूदि गए लङ्का उठि जब रावणके शङ्का ॥
बड़े बड़े जोधा आए हैं खामो ।
अखेकुमार माखो एक नामी ॥
बागे सब दियो उजारो ।
लङ्का सोनेको जारो ॥
सिया सुध छिन में ले आए ।
वीरवानो जब रिझाए ॥
मरजादा रखी समुन्दरको ।
शिला सब तर गई पत्थरकी ॥
सकत एक लागी लक्ष्मनकूं ।
हुकम जब दिया पवनसुतकूं ॥
सजीवन लाय देहु हमकूं ।
कि मुसकिल नहीं है यह तुमकूं ॥
दोना गिर ल्याया एक छिनमें ।
के लक्ष्मन जगाय दिया पलमें ॥
कारज रघुवरके सारे ।
सदा तुम भक्तनके प्यारे ॥
अञ्जनी पूत धन्य तुमकूं ।
दुष्टनकों संहार करो तुम मेहर करो हमकूं ॥
सहायक सदा रहो मेरो ।
के दुसमन आवे नहीं नेरो ॥

श्रीवल्लभ चन्दको मायासा।
के रघुवर मिलनेकी आसा॥

लावनी—रेखता

गोरी एक बनी है हद वेश।
शिरपर लम्बे लटके केश॥
आदासे चली है सुख मोर।
अचरा दिया उरसे छोर॥
श्रीमुख कोटि चन्द सा झलके।
मदभरी नैनांदो पलके॥
नैनांमें श्याम फबरा कजरा।
हाथोमें बेलांदा गजरा॥
मांग शिर मोतिनको सोहै।
गोरीको बांको है भांहै॥
कानोमें करणफूल ढलके।
शिर बिच शीश फूल झलकै॥
आड़ शिर सोहै केसरकां।
मोह्यो मन मोतो बेसरको॥
शिर पर टीको यों लहके।
अङ्ग सब केतको जों महके॥
गोरीके बेंदी फब रही भाल।
आशिक पर डाख्यो प्रेमदा जाल॥
भाल बिच हीरेकी टीको।
दशननकी चमक है नीको॥
दांतोमें चुनोदो मेखें।
मिसोदो अजब बनो रेखें॥
नासिका सुवासा राजै।
अधर लख किन्दरो लाजै॥
नाक बिच सुन्दर है बारो।
ओढे कुसुम्भी सारो॥
ठोढ़ी मद चुम्बको शोभा।
कपोल गाढ़ कामको लोभा॥
गुलूबंद गलेमें सोहै।
बाजूबंद देखि मन मोहै॥

गोरीको अजब बनी अंखियां।
मुखमें चबाय रही बिडियां॥
प्यारीको खूब बनी कुतियां।
करमें हरी हरी चुरियां॥
प्यारी कुच श्रीफल कर मद्दयां।
चकवा दोउ श्रीफलकी सबियां॥
हाथों हथफूल है भारो।
पोहोंचो बङ्गड़ीको छब न्यारो॥
पावनमें मैंदी है प्यारी।
अङ्गुल्योंमें छल्लोंको त्यारी॥
उदर परी तो न है रेखा।
नाभी गम्भीर छवि देखा॥
प्यारी कटि केहरसो दरसे।
लहँगा रङ्ग सुहावना सरसे॥
नारा रङ्ग हरा बना भारी।
गयन्द गति चलति मतवारी॥
जङ्घा छबि कदली को नाई।
अङ्ग बीच मदनको झांई॥
कटिपर किङ्किनी राजै।
मधुर सुर मन्द कल बाजै॥
चरण बिच जेहर कर रही सोर।
अनवट बिछुवनको घनघोर॥
पायल पग पायन यों झमके।
नखों छबि चन्दकला चमके॥
एड़ी रङ्ग नारङ्गी नाई।
पगों तले कमलकी झांई॥
गोरीके अजब बनी सब गात।
सुन्दर हँसि हँसि करती बात॥
गोरीने दर्पण लीना हात।
चहुंदिश सुर सुरके मुसिकात॥
गोरीने सज सोहल सिङ्गार।
गले बिच मन मोतिनके हार॥
नवेली सङ्ग लिए सखियां।

दर्स्तों बीच फूलोंदी छड़ियां ॥
हुकुम श्रीबल्लभ का पाया ।
छन्द यह यारोंने गाया ॥
वल्लभ छन्द किया खासा ।
जुगल चरननको है आसा ॥

देवगान्धार—रेखता

देखें कहीं नन्दके लाला । बतावो वंशीबाला ॥
मेरा जी उलझ गया आलो । टोना मोहे डारे बनमालो ॥
तजो मैं खान पानीरो । नहीं मेरो पीर जानीरो ॥
लगी दोय कानसें दूती । तजो मोहे सेजमें सूती ॥
विरहका बाण मारा है । कलेजा छेद डारा है ॥
सलोना सांवरा प्यारा । दृगन सों होय ना न्यारा ॥
ढूंढ़ा बन बाग बी सारा । मिला नहीं प्राणका प्यारा ॥
आली कोई हरि मिलावोरी । मेरा कोई जीव बचावोरी ॥
देखे विन जीय तरफत है । नैनों बिच नीर वरषत है ॥
जहां होय कान्ह कारोरी । मुझे ले जाय डारोरी ॥
मेरो मन नाहीं मानेरो । लगी रट श्याम कान्हेरी ॥
अरज हरिदास प्यारे सों । मिलावो कान्ह कारे सों ॥
कृष्णानन्द आनन्दमें डोले । वृन्दावन करता कलोले ॥

कलिङ्ग

सांवरे गोविन्दने मन तो मेरा हर लिया ।
फिर गई तिरछी निगाह सोनेमें जादू किया ॥
मोर मुकुट की झलक बंशीको प्यारो ललक
कानमे कुण्डल चमक झांको अजब गश किया ।
भौंह ताबांकी कमान चलते हैं चितवनके वान
रखता हूं मैं जाय प्राण सीनामें रस्ता किया ॥
गिरिधर का यह काम जपता हूं एक तेरा नाम
रखता हूं मैं आठो जाम हरिके चरण दिया ॥

जंगला

रूड़ो पैठ वालो न थो नाथ तू नेहु न सुरे ।
श्यामाटे न थो आव्या घेर आव्यां क्यां भरम्युरे ॥
माहे मन नोन पुरो आसबाल हा क्यां विलम्युरे ।
कृष्णानन्दनू पामस्ये एणी पैर माहे जोय भरम्युरे ॥

बरवा

बालहा आमि जाने तुमि रङ्ग रङ्ग सुरङ्ग छो रेलो ।
तुम निकले हो रङ्ग पतङ्ग हूं वा निरमोही
न थइए दोनानाथजो रेलो ॥
बाला आमि जाने तुमि दरियाव छो रेलो ।
तुम निकले डंगरियां रानो हे ए वा निरमोही
न थइए दोनानाथजो रेलो ॥
एणी पेरे कृष्णानन्द विनती करे रेलो ।
श्यामा टे न थो आव्या माहे घेर है ए वानी रेलो ॥

२

धन वृन्दावन रूड़, धामके धन जमुना नदीरे लोल ।
धन धन मोकलो यूं सारूगासके
आठो भादरवा बदी रे लोल ॥
त्याहा प्रगट्या नन्द नन्दन आनन्द मन अति
घणीरे लोल ।
कृष्णानन्द जाय वलिहार उदयो व्रजचन्द तनीरे लोल ॥

कलिङ्ग

श्यामा थें न थो आव्यारे आव्या ।
वालहा तें तो जनम जनम ना माव्या ॥
रूड़ो पैठे लागो वालहा नीका ।
वालहा थें तो नन्दमहर ना कीका ॥
चन्दन घसहुरे नीका ।
माहे और लागे सब जग फीका ॥
म्हाहे घेर आवोरे रसिया ।
कृष्णानन्दने मन तुम वसिया ॥

२

धन धन रूड़ो व्रजदेशरे ।
वालहे माहे कीनो परवेसरे ॥
तेने जपे ब्रह्मा शेष महेश चलो श्रीजीनो दरशन
करिएरे ।
धन धन वृन्दावन धामरे धनधन गोकुलयूं गामरे
धन धन श्रीमथुरा धाम चलो श्रीनाथजीने जोइएरे ॥
वालहो नटवर वेश साजेरे रसरास करे है समांजेरे

सब गोपिनमें आप विराजे चलो० ।
माहे मनमें थयूं आनन्दरे निरखि रूप वृन्दावन चन्दरे
वारी जावे श्रीकृष्णानन्द चलो० ॥

धनाश्री

तारे चरण कमलने हूं नमूं महारानोरे ।
वृन्दावन दे मोहे वास राधा रानीरे ॥
धन धन यह गोकुल गांम जो महारानोरे ।
धन वरसानो यह ठाम राधारानोरे ॥
धन नन्द गाम गोवर्द्धन महारानोरे ।
धन व्रज चौरासो धाम राधा रानोरे ॥
कृष्णानन्द जाए वारने महारानोरे ।
मुने श्रीकृष्ण मिलननो आस राधारानोरे ॥

२

नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द प्रगट थयूं व्रज माहोजो ॥
अन्धकार सब दूर गयुं माहे
आनन्द भयुं मन याहोजो ।
रुड़ी पेठे लोलामृत जो गातं
कृष्णानन्दते वलवल जाहोजो ॥

सोरठ

माहे मोटूं थयूंछे आनन्द आए साँवलिया
माहे मननो पूरो आस ।
मैं गाऊंरूड़ो तान
माहे मनमें छे अव ध्यान आए० ॥
सङ्खचक्र गदा पदम सोहै
निज भक्तजनको मन मोहै आए० ।
कृष्णानन्दने सुख पाया
राग रङ्गते घण जाम्यूं आए० ॥

धानी

माहे मनमें थयुं आनन्दरे आज सोहलो ।
माहे घर आव्या व्रजनाथरे आज मोहलो ॥
पूरव्या मनना सबहो काजरे
निरख्या नैना श्रीव्रजराजरे आ० ।
धन वृन्दावन मथुरा धामरे
धन धन गोकुलियो यह गामरे० ॥
कृष्णानन्द निरख व्रज चन्दरे
काप्या जनन जन्मना दुखदन्दरे आ० ॥

राग—मङ्गर

आज आनन्द माहे अति घनु आव्या व्रजना नाथ
मङ्गल गावूंरे ।
आजनो दिन रलियां उमानूं सबें पूरो
मननो वात मङ्गल गावूंरे ॥
पलकन थो मग आमो झारस्यूं भेंट करूं माहरो
नाथ म० ।
कृष्णानन्द जाए वारने धन धन माहरा नाथ म० ॥

धानी

आज मोर हो माहरा नाथजो आया छो म्हांरे द्वार जो ।
क्यां क्यां तुमो रातो रम रह्या
कुड़ी नथो बोलो म्हांसे बात जो ॥
रूड़ी पेठे पोठे कङ्कनादा गोयो नैना तंबोल लखात जो ।
घरनो पगे तें डगमगस्यूं धरो कृष्णानन्द
झूठो सोहै खात जो ॥

राग—गौरी

दाड़े दाड़े माखन चोरो करो छों तुम घनारे ।
नेदाड़ाना आव्याछो म्हांरे हाथ जो
ओछारे तू नन्द अहीरनारे ॥
नन्दगाम सों कान्ह तुमो आबियारे मागे छे
महोड़ानो दान जो श्यामा टे एटलो घेरनारे ।
मथुरातें ग्वालनो चलोरे कहीं माथे छे महोडानो माठ
जो बीच रोके छे नन्दनन्दनारे ॥
मागे छे जोबन दान जो ओछारे तूं नन्द अहीरना
कान्ह गढ़ सुरे ग्वालन उतारनारे ।
नहीं दे छे महोड़ा दान जो कृष्णानन्द जाए वारनेरे ॥

मटौयाल

माहे मोटूं थयूं छे आनन्द जो हरिना जन पावनारे
लोल ।

माझे मोतियां बुठूछें मेह हरिना जन पावणारे
लोल पुरवलं उदयो छे पुण्य हरि० ॥
रूड़ी पैठे छापा तिलक शोभतां जो कण्ठे सुन्दरते
तुलसीनी माल हरि० ।
छणानन्द आनन्द डोलतां वलिहारो जावे छणाजोना
माझे घणुं थयूंछे आनन्द जो हरिजनना
पावणारे लोल ॥

भूपाली

आनन्द माझे मन थयूं सखी निरख्याते नन्दना नन्दरे ।
अतीते हरख्या आल्हादमें सखी
आव्या श्रीगोकुलचन्दरे ॥
नैनें ढाल निरखारे श्रीव्रजना नाथ श्रीगोकुलनाथ
गावो सखी आज सोहलो ।
घरघरते बन्दन माल सोभित गावे छे मङ्गलचाररे ॥
धा धा किटतक धुमकिट धा धिलाङ्ग
बाजे छे वीन मृदङ्गरे ।
बीच वसरी डफ झांझ झनकन गावे छे छणानन्दरे ॥

लावनी

सुन रे मन क्यों फिरे भटकता
कर ले ध्यान जगदम्बेका ।
सुख सम्पत नित बढ़े पियारे होगा जनम सुफल तेरा ॥
वड़ा कठिन है मनुवा मेरे रस्ता प्रेमनगरकारे ।
समझ बूझ पग राख संभल कर
चाख प्रेमको रस प्यारे ॥
मधु जोबनमें फिरो दिवाना
कुछ नहीं ख्याल खबर तुजकों ।
औसर गया हाथ नहीं आवै
समै पाय मत गाफिल हो ॥
सुमर भवानी सब जग जानी
कहा भरोसा इस तनका ॥
प्रेम सखीको रहे आसरा सदा उसके हो चरणनका ॥

२

जे काली कलराण करे सन्तन प्रतपाली सदा खुशाली ॥
मङ्गल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खरे ।
पान सोपारी ध्वजा नारियर ले ज्वाला तेरे भेट करे ॥
बुद्ध विधाता तूं जगमाता मेरा कारज तूं सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा चरण तुमारे आन परे ॥
ज्यों ज्यों भीर परे भक्तनमें त्यों त्यों आनके सहाय करे ।
गुरूबारते सब जग मोहो चरण अनोखे रूप धरे ॥
मात्र होयके पुत्र खेलावे आप हो जननो सहाय करे ।
शुक्र सुखदाई सदा महाई सन्तनके जय कार्ज करे ॥
ब्रह्मा शेष महेश सहसफनि लिये वेद तेरे द्वार खरे ।
तुमरी महिमा कबलग वरणों छिनमें संकट दूर करे ॥
वार सनीश्वरकूं का बरणों जब कालीका हुकम करे ।
खपर त्रसूल मण्डधारणी जब रक्तवीजकूं भस्म करे ॥
तेरी महिमा कब लग बरनू महीषासुरकों पकर दले ।
आदित्यबार सुनि आदि भवानी
अपने जबके दुःख हरे ॥
बड़े बड़े सब दानव मारे चण्डमुण्ड सब चूर करे ।
जब तूं देखे दयारूप होय छिनमें संकट दूर करे ॥
सोम सुभाव धरे मेरी मैया जबको अरज कबूल करे ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज करे ॥
दरसन पावे मङ्गल गावे सदासन्त तेरे ध्यान धरे ॥

२

कैसे करूं साजन पिया विन जाता है जोबन मेरा ।
कोन देशमें जाय विलम रहे नहीं आया दिलवर मेरा ॥
बार बार गजमोती परोए सुरत बनाए गुलदारा ।
चन्दबदन सा बदन जो उसका
हुवा बादलमें उजियारा ॥
छतीस पान का बीरा चावतो नीर बरसता नैनोंमें ।
बाला जोबन मदनकी मस्ती घड़ गई प्यारे इश्कोंमें ॥
आसमान सो परी जो उतरी
ज्यों बीजल चमके बादलोंमें ।
सोले सिङ्गार बतीसों आभरण करके बैठो मेहलोंमें ॥
लावो जहरका प्याला पीजिए
अब नहीं जीवना मुल्कोंमें ।

बेदरदी सों प्रीत कर के नफा न पाया यारोंमें ॥
मदनमोहन को आन मिलावे उन विन मेरा जी तरसे।
रागरङ्ग सों तान सुनोंगी जासो हियरा अत हरसे ॥

४

खड़ी दरसन देखन को तिहारे दरसन दे जारे।
अरे जलदी आव मेरी जान सांवरे नैन मिला जारे ॥
विन दरसन मन मानत नाहीं जसोदानन्दवारे।
करना प्यार हमारे प्यारे अबहीं आ जारे ॥
तुम तो बड़े प्रवीने हमकों प्रेम प्रीत भारे।
अरे श्रीवृन्दावन-चन्द-विलासी पूरन अवतारे ॥
यही चाह चित बढ़ी उमंग उर टरत नहीं टारे।
मिलिये धाय धाय पिय अपने मोहन मतवारे ॥
करिए केल कुञ्ज कुञ्जनमें गह गह्वर वन ठारे।
ख्याल खुशाल भरे अंग अङ्गमें वेग ही प्रगटारे ॥

तथा रागसागर-रचिते

प्रथम भए रवनी बस प्यारे विम्बके उदे आए
राम किरिया खात।
बिबस भए देखियत गात अदेशकार कौन तोय
ललित वचन बोलत हो तुतरात ॥
वेला वेर बीत गई आलो आस पूज गई देव
गरीब नवाज का को भो सङ्गम खट पट भई रात।
दे शाख सुघर तोय सुआ वस्त्र पहर खड़ो
सुघराई जानि परात ॥
हम आसवारी सारी रैन तुम देवगन्धारी गावत
गुजरी सुन बीती परभात।
तोड़ो हमसों प्रीत जोनपुर बसत है नवल तोय
दे शीख उने जाय लाचार हो बहादुरो डरात ॥
जङ्गल जङ्गल ढूंढत हारी झिझवट जिन करो
मेरे प्यारे आसा जोवत विहात।
सारङ्गनयनी पास जावो मधु माधवी बड़ हंसनी
सामन्त प्यारे वृन्दावन मध रहां लङ्क दहात ॥
धन धन श्री मूलतान मन्त्र पढ़ डाखो अभी मैं
पल छन निरखत तुमकों पुरिया बड़ भाग गात।

जैतश्री वाकी पूरब पूरे पुण्यफल जाकों पूरवा लखात ॥
मार वाने दई है कामकी श्रीमहाराज
गोरी गोरी टंकरात।
एमन होत कलाणकों चाहत भूपाल बड़े
हमीर पूरी रात ॥
को मोदीयत कर छाया पग डगमगात।
ऐड़ात जभात बहु नायक हो जु कान्हर बागे केसरो
कण्ठमाल कौस्तुभमणि सहाना बोल सुहात ॥
वाके दरबारमें मए बहार करन हिंडोरे
पांचमे वसत हो भंवर नाम कहात।
विहागत मई मेरी खम्भा पकर ठाढ़ो रहत
पर जो दुख बीतो मारू कासे कहूं बात ॥
सो रटन लागो सास मेरो जय जय बतियां करार कर गए
सोहनो मोहनो कर घात।
मोहे अहोरो जान गोकुल ग्वालिया एराको चाल
चलत छलक छांद कहीं जात ॥
कपोल कहां पीक लागी जानि है जु जानी दीपक
चन्द प्रकाश भए नीलाम्बर आढ़ आए कलि
गये अवध दे रात।
हे घनश्याम मोलार नटवर हे वाहीके गोड़े पग धरात ॥
बांके श्रीविहारी लहर लोम पहाड़ पै
कङ्कन गड़ात खड़ो ता नायकाकी बात।
बेजु बावरी रावरी हितू हितारी रागसागर गावत
तीन तिलक शिर मांझ देखात ॥

इति रागसागर।

सोरठ

मेरा दिल है बेकरार सांवनमें पी तू आ जा।
कारी घटा डरावे विरहा मुझे सतावे
तेरा है इन्तज़ार सा० ॥
कोयल कुहुक सुनावे बिजुरी चमके देखावे
बरसे है बारबार सा०।
बोले हैं दादुर मोर करते हैं झींगर शोर
वरषा नई है बहार सा० ॥

बेताब हूं सुन ए दिल भाता नहीं कुछ तुम बिन
आंसू है जार जार सा० ॥

२

परदेशी पी कब आवेंगे बमना सगुन बिचार ।
कारी घटा सब छाईं नदीयां सबी भर आईं
पड़ने लगी फुहार ॥
सुनियो वीर बटोही पियासों कहियो यों हो
रोती है जार जार ॥

३

केसरिया बालम राज तू म्हांरे डेरे होता जा ।
सेज दिलकी सूनी है सोनेके मन्दिरमें
चैनो खुसी पाई न कहीं विरहा नगरमें
यहु दुख सुखक उन बिना होता है तराज तू० ॥
पण्डित जी पूछतो हूं ब्रह्मा जीत बामना
कहो शुभ घरी सों आवे सजन मेरे आंगना
मदका माता आवे मेरे वसलका सिरताज ॥

सोरठ

निगह बह तीर जिसको है जुल्फ जञ्जीर जिसको है।
फिरश्ते देखकर हैरां कि यह तसवीर जिसको है ॥
कन्हैया हुस्नका सागर लहर गम्भीर जिसको है ।
अजब महबूब है बांका अदा शमशीर जिसको है ॥
मरे आशक जिलाने को हंसी अक्सीर जिसको है ।
सलोना सांवरा प्यारा कि राधा मीर जिसको है ॥
तगाफुल ऐसे सुन्दर पर बड़ी तक्सीर जिसको है ॥

२

छवि देखि कन्हैयाको दिल हो गया दीवाना ।
ज्यों गुल पर भ्रमर घूमे ज्यों शमा पर घरवाना ॥
ज्यों चन्दमें बादल तैसे जुल्फोंका घुमड आना ।
वह बांकी निगाहें और कछु मन्द सा मुसकाना ॥
वह सांवरे तन ऊपर गहनोंका झमक आना ।
ज्यों श्यामघटा भीतर बिजुलीका तड़प जाना ॥
ज्यों कृष्णका दरसाना ज्यों राधिकाका आना ।
यह दोनोंकी छब ऊपर सुन्दर हुवा कुर्बाना ॥

३

करुणानिधान सुनिए कछु करुणा कान्ह मेरो ।
निशदिन रट लाग रही है जिय मांझ याद तेरो ॥
प्रहलादके हितकारो । खम्भ फार देहधारो ॥
नृसिंह नाम पाए । सब सन्तनके मन भाए ॥
गजको जो अरज मानो । सो तो अविदित वानो ॥
ग्राहके जो फन्द काटे । अघ कोट कोट डाटे ॥
जुग जुग पतित तारे । कबि गिनत गिनत हारे ॥
टुक मेरो ओर देखो । तुम सोवत हो के जागो ॥
मैं बार बार टेरों । टुक बाट तिहारो हेरों ॥
महाराज अवध-विहारो । मिल राम सखो बलिहारो ॥

भगवत्स्तुति

करुणामृतैकजलधे शृणु कृपया मे सुवाचम् ।
करुणासुतोसि साधो, कमलेश दीनबन्धो,
प्रह्लादमेव पातु, दितिजासुरं निहन्तु,
कृष्णानन्दं पातु लक्ष्मीपते शरणं त्वम् ॥

२

भुवनगुप्तये ब्रह्मणार्चितम्,
दशरथालये व्यक्तिमागतम्,
जनकनन्दिनीलक्ष्मणान्वितम्,
भज मनः सदा राममद्भुतम् ।
कमललोचनं पापमोचनम्
खजनरञ्जनं दैतभञ्जनम्,
षड्रिपुमर्दनं बुद्धिवर्द्धनम्
भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥
अमरकिन्नरैः सिद्धचारणैः
मुनिभिरर्चितैरप्सरोगणैः
परमविद्यया स्वेच्छया चितं
भज मनः सदा राममद्भुतम् ॥

३

अच्युतं केशवं रामनारायणम्
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभम्
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

खरजं शेषपं सत्यभामाधवं श्रीपतिं श्रीकरं
राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं
नन्दजं संदधे ॥
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे रुक्मिणीनायके
जानकीवल्लभे ।
वल्लभो-वल्लभायान्वितायात्मने कंसविध्वंसिने
कृष्ण केशिहृते असुरनिकन्दिने ॥
कृष्ण गोविन्द हरे भक्तपते नरहरे
वनमालिन् विट्ठल वृन्दावनचन्द्र हे ।
द्वारकानायक द्रौपदीसहायक
असुरविदारक यशोदानन्द हे ॥
राक्षसादखिंत सीतया शोभित
लक्ष्मणेनार्चित वानरै सेवित
सर्व्वविश्ववन्दितागस्तिना पूजित
राघव-रावणमस्तकहनन हे ।
धेनुकारिष्टकानिष्टकृत् प्राणदून
भूमिभारदूरकृत् गोब्राह्मणपालन हे ॥

इति श्रीकृष्णानन्द-व्यासदेव-सङ्कलित रागसागरोद्भव सङ्गीत-रागकल्पद्रुमे
मूलतानी-बरवा-कहरवा-दादरा-विहारी-सोरठ-रेखता-गजलियात
धवलगर्भादि रङ्गीन गान सम्पूर्ण ।